FL. JOSEPHI
JUDAEI
OPERA OMNIA.

TEXTUM EDIDIT

M. CAROL. ERNEST. RICHTER,

DIACONUS AD AED. ST. MARIAE ZWICKAVIENSIUM.

VOL. V.

FLAV. JOS. VITAM, ET BELLI JUD. LIB. I—IV. CONTINENS.

ACCESSIT INDEX RERUM TOTIUS OPERIS LOCUPLETISSIMUS.

LIPSIAE

SUMTIBUS E. B. SCHWICKERTI.

1827.

BIBLIOTHECA SACRA

PATRUM ECCLESIAE GRAECORUM.

PARS I.

FL. JOSEPHI

JUDAEI

OPERA OMNIA.

VOL. V.

LIPSIAE

SUMTIBUS E. B. SCHWICKERTI.

1827.

EMENDANDA.

Vol. I. Pag. X. l. 4. lege J e s u s. Pag. 15 adde lin. 9. num. pag. Hav. 12. Pag. 49. l. 5. lege εἶναι. Pag. 61. l. 17 lege καταγγελλόμενα. Pag. 67 l. 23 lege ὥστε. Pag. 73 l. 29 lege φησ. Pag. 75 l. 31. lege ἤ. Pag. 80 l. 14 lege εἶχε. l. 28 lege Ἰακώβου. Pag. 83 l. 1 lege κινδυνεύειν. l. 13 lege οἳ. l. 30 lege πραχθὲν, τοσοῦτον. l. ult. lege τιμωρίαν. Pag. 84 l. 4 lege ἧκον. Pag. 85 l. 1 lege Ῥούβηλος. Pag. 86 l. 7 lege ἑπτακόσιν. Pag. 87 l. ult. lege βεβλαφέναι. Pag. 88 l. 11 lege ἡδέως. l. 13 lege ἀγωνιζόμενος. Pag. 90 l. 32 lege εἶναι. l. 35 lege οὖν. Pag. 91. l. 11 lege ἦσαν. l. 27 lege ἦν. Pag. 95 l. 3 lege εὖ. Pag. 96 l. 13 lege τοῖς. Pag. 116 l. 26 lege ἀμηχάνων. Pag. 117 l. 8 lege αἰγιαλῷ. Pag. 119. l. pen. lege Ὡς. Pag. 120 l. 14 lege ἀγγειῶν. Pag. 121 l. 13 lege ἔμπροσθεν. Pag. 143 l. 19 lege πρόσωπον. l. 22 lege ἑκατόν. Pag. 144 l. 4 lege ἑκάστην. l. 5 lege ᾧ. l. 28 lege ὥσπερεί. Pag. 147 l. pen. lege ὁ. Pag. 150 l. 4 lege ἐμπεριείληφε. Pag. 160 l. 13 lege δεκάτη. Pag. 173 l. 17 lege καί. Pag. 177 l. 34 lege εἶχε. Pag. 180 l. 24 lege πρόθυμον. Pag. 182 adde lin. 26 num. pag. Hav. 202. Pag. 190 l. 21 lege Ἱεριχοῦντος et sic in seqq. Pag. 198 l. 26 lege οἷς. Pag. 200 l. 15 lege φυλῆς. Pag. 202 l. 10 et p. 203 l. 4 lege . . ιέναι. Pag. 207 l. 21 lege συνιόντες. Pag. 213 l. 28 lege ἀπιέναι. Pag. 216 l. 6 lege ἀπίτω. Pag. 217 l. 31 lege τήν τε. Pag. 218 l. 29 lege ἀπαγόμενος. Pag. 220 l. ult. lege καὶ ἐν. Pag. 227 l. 23 lege ὥσθ᾽: ead. ἀκρο. . Pag. 231 l. 28 lege τοῦ. Pag. 234 l. 7 lege κέρδος. Pag. 251 l. 27 lege ἀπιέναι. Pag. 275 l. pen. lege ἤ. Pag. 279 l. ult. lege γεγεννημένους, Χελλίωνα.

Vol. II. Pag. 20 l. 6 lege Ἰησοῦ. Pag. 27 l. 5 lege θεόν. l. 11 lege αὐτὸν, ἤ. Pag. 32 l. 25 lege ἀπιέναι. Pag. 54 l. ult. lege παραγίνεται· εἰς. Pag. 56 l. 26 lege ἀμπείχετο· με. . . Pag. 63 l. 15 lege . . άσσετο· φοβηθεὶς. Pag. 66 l. 2 lege κελεύσαντος. Pag. 77 l. 14 lege Παρεμβολὰς. Pag. 120 l. 26 lege εἰς. Pag. 126 l. pen. lege Βενιαμίτιδος. Pag. 134 l. 3 dele virgulam post τρεῖς. Pag. 135 l. 14 lege ἀπήγγελλε. Pag. 136 l. 26 lege ἁπλότητος. Pag. 151 l. 7 lege Ἀδωνία. Pag. 154 l. 24 lege . . κείμενον. Pag. 169 l. 8 lege τάς. Pag. 183 l. 31 lege Ἱεροσόλυμα. Pag. 202 l. 8 lege Ἱεροσ. . Pag. 207 l. 27 lege Ἰωσ. . Pag. 227 l. 19 lege Ἀζα. . Pag. 231 l. 2 lege δικαιοσύνῃ. Pag. 255 l. 20 lege ἂν. Pag. 257 l. 19 lege ὀπὴν. Pag. 160 l. 15 lege ἀπιέναι. Pag. 272 l. ult. lege ἄρας. Pag. 279 l. 11 lege . . τητος· ὅταν. Pag. 280 l. 18 lege . . ρωσύνην. Pag. 287 l. 22 lege . . νεν· ἀλλ᾽. Pag. 289 l. κανόνι. l. 27 lege . . ίσθαι· περιϊὼν. Pag. 294 l. 3 lege Ἱερεμίας, et sic in seqq. Pag. 297 l. 14 lege μὲν Νοεστῆς. Pag. 300 l. 30 lege ὄντες. Pag. 305 l. 30 lege συμβάντων. Pag. 324 l. 2 lege εἴη· τόν.

Vol. III. Pag. 1 l. ult. lege θεός. Pag. 10 l. 28 lege θεοῦ. Pag. 12 l. 11 lege μή. l. 20 lege ἑορτάζοντες. Pag. 56 l. 11 lege Ἰου. . Pag. 82 l. 7 lege ἐδέξατο. l. 10 lege Ὀνίας βραχύς. Pag. 83 l. pen. lege διετέλεσε. Pag. 92 l. 29 lege ἑνός. Pag. 98 l. 34 lege ὁ κληθείς. Pag. 103 l. 17 lege διήκοντα. Pag. 114 l. 5 dele virg. post Ἰουδαί-

ων. Pag. 136 l. 9 lege κατέλαβεν, ἔτη βασιλεύσαντα. Pag. 157 l. 2 lege ὑπόνοιαν. Pag. 159 l. 29 lege βασιλέως· ἄρτι γὰρ. Pag. 161 l. 17 lege ὥστε. Pag. 175 l. 31 lege κατωρθ.. Pag. 193 l. 11 lege κατωρθώσαντο. Pag. 253. l. pen. lege ἐπάνω. Pag. 260 l. 32 lege αὐτὸν, Ἡρώδης. Pag. 266 l. 34 lege καταλιπὼν. Pag. 306 l. 33 dele virg. post περιόντος. Pag. 318 l. 4 lege τῶν.

Vol. IV. Pag. 28 l. 33 lege ἐμὲ (pro ἐν) l. 34 dele virg. post βουλήμασιν. Pag. 31 l. 1 lege ἐπιδόντος, εἰς. Pag. 51 l. 12 lege ἀπολέσθαι. Pag. 54 l. 18 lege ἀμυνομένου, Νάκεβον. Pag. 59 l. 32 lege ..νόσειν. Pag. 69 l. 6 lege αὐτῶν, ἐπινοοῦσιν. Pag. 86 l. 31 lege ἠπείγοντο. Pag. 112 l. 7 lege ἡγεμόνες. Pag. 118 l. 30 lege ἀφικνεῖται, Ἰωαζ.. Pag. 119 add. lin. 21 num. pag. Hav. 866. Pag. 153 l. 7 lege ὅντινα. Pag. 178 l. 27 lege ἀποδειχθεῖσα. Pag. 208 l. 33 dele virg. post πάτρωα. Pag. 248 l. 6 lege Ταπεινὸς et l. 7 lege ἰδιώ-. Pag. 256 l. 7 lege καὶ (pro ταὶ). Pag. 265 adde lin. 2 num. pag. Hav. 973. Pag. 273 l. 12 lege Μωϋσέως. Pag. 278 l. pen. lege νομί-. et ult. τοῖς.

Vol. V. Pag. 6 l. 11 lege παρεστῶτος. Συγκατ.. Pag. 15 l. 27 lege Ἱεροσόλυμα. Pag. 39 l. 23 lege Ἱερεμίαν. id. pag. 62 l. 31. Pag. 63 l. 12 lege γενομένοι. Pag. 68 l. ult. lege καὶ. Pag. 76 l. 31 lege τὸν. Pag. 85 l. 10 lege γενομένης. Pag. 86 l. 24 lege συγκατα..; ibid. lege παλλακίσιν. Pag. 91 l. ult. lege ἐλπίδα. Pag. 94 l. 12 lege Χαλεπὸν. Pag. 102 l. penult. lege παρατάξει σὺν ὅ. τ. δ. κέρατι, ῥύεται etc. Pag. 158 l. 34 lege ψεῦδος. Pag. 166 l. 25 lege ὥσπερ. Pag. 167 l. 10 lege δικαστήριον. Pag. 173 l. 2 lege ὑβρίσαι. Pag. 178 l. 15 lege ἀπέχω. Pag. 199 l. 24 lege οὗτοι. Pag. 216 l. 7 lege πονήρων. Pag. 247 l. 9 lege τετειχισμένους. Pag. 259 l. 9 lege 197. Pag. 260 l. 32 lege οὓς δὲ. Pag. 302 l. 9 lege παντελῶς. Pag. 307 l. 21 lege ἤδη. Pag. 313 l. 34 lege τοῦ. Pag. 322 l. 3 lege εἰσπεσούσης. Pag. 326 l. 25 lege τῆς. Pag. 362 l. 34 lege ἄγεσι. Pag. 374 l. 31 lege κελευόντων. Pag. 378 l. ult. lege ἱκετεύουσι. Pag. 389 l. 3 lege ἁρπαγῶν.

Vol. VI. Pag. 6 lege 6 ibid. l. 3 lege ἂν. Pag. 13 lin. 8 adde num. pag. ed. Hav. 323. Pag. 41 l. 23 lege πάλαι· τοῖς etc. Pag. 48 l. 11 et 15 lege Ἱερεμ.. Pag. 56 l. 21 lege 355. Pag. 61 l. 16 lege βόρειον. Pag. 76 l. 35 lege 372. Pag. 84 l. 23 lege ἤλπισαν. Pag. 97 l. 16 lege ὁρμῇ τινι χ. ἀ. μ. ἐ. τ. φλεγομένης ὕλης ἀ. etc. ibid. l. 29 lege 386. Pag. 103 l. 32 lege τοῦτο. Pag. 123 l. 13 lege 460. Pag. 126 l. 5 lege ἄλλους. Pag. 157 l. 14 lege κακῶν. Pag. 159 l. 31 adde 430. Pag. 162 l. 21 lege δακρύοντες. Ὁμοῦ. Pag. 165 l. 27 lege 434. Pag. 173 l. 9 lege Ἀλλ'. Pag. 175 l. 14 adde 441. Pag. 178 l. 30 lege ..ρηκότας; Οἱ etc. Pag. 183 l. 13 lege ἅπαντα τείχει. Pag. 184 l. 8 lege Μανεθῶνος. Pag. 187 l. 3 lege ..σκευήν. Τὸν etc. Pag. 204 l. 26 lege πεντήκοντα. Pag. 211 l. 23 lege φησίν. Pag. 214 l. 23 lege Ἴσιδος. Pag. 234 l. 30 adde 477. Pag. 238 l. 13 adde 479. Pag. 240 l. 1 adde 480. Pag. 242 l. penult. lege βεβαιοτάτην. Pag. 253 l. 17 lege τις ἂν. Pag. 287 l. 33 adde 515. Pag. 295 l. 7 adde 520.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΒΙΟΣ.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ ΒΙΟΣ.

(*Fol. 1. Tom. II. ed. Haverc.*)

1. Ἐμοὶ δὲ γένος ἐστὶν οὐκ ἄσημον, ἀλλ' ἐξ ἱερέων ἄνωθεν καταβεβηκός. Ὥσπερ δὴ παρ' ἑκάστοις ἄλλη τίς ἐστιν εὐγενείας ὑπόθεσις, οὕτως παρ' ἡμῖν ἡ τῆς ἱερωσύνης μετουσία τεκμήριόν ἐστι γένους λαμπρότητος. Ἐμοὶ δὲ οὐ μόνον ἐξ ἱερέων ἐστὶ τὸ γένος, ἀλλὰ καὶ ἐκ τῆς πρώτης ἐφημερίδος τῶν εἰκοσιτεσσάρων, πολλὴ δὲ καὶ ἐν τούτῳ διαφορὰ, καὶ τῶν ἐν ταύτῃ φυλῶν ἐκ τῆς ἀρίστης. Ὑπάρχω δὲ καὶ τοῦ βασιλικοῦ γένους ἀπὸ τῆς μητρός· οἱ γὰρ Ἀσαμωναίου παῖδες, ὧν ἔκγονος ἐκείνη, τοῦ ἔθνους ἡμῶν ἐπὶ μήκιστον χρόνον ἠρχιεράτευσαν καὶ ἐβασίλευσαν. Ἐρῶ δὲ τὴν διαδοχήν. Ὁ πρόπαππος ἦν ἐμοὶ Σίμων ὁ Ψελλὸς ἐπικαλούμενος. Οὗτος ἐγένετο καθ' ὃν καιρὸν ἠρχιεράτευσε Σίμωνος ἀρχιερέως ὁ παῖς, ὃς πρῶτος ἀρχιερέων Ὑρκανὸς ὠνομάσθη. Γίνονται δὲ τῷ Ψελλῷ Σίμωνι παῖδες ἐννέα. Τούτων εἷς ἐστι Ματθίας ὁ Ἠφλίου λεγόμενος. Οὗτος ἠγάγετο πρὸς γάμον θυγατέρα Ἰωνάθου ἀρχιερέως, τοῦ πρώτου ἐκ τῶν Ἀσαμωναίου παίδων γένους ἀρχιερατεύσαντος, τοῦ ἀδελφοῦ Σίμωνος τοῦ ἀρχιερέως. Καὶ γίνεται παῖς αὐτῷ Ματθίας ὁ Κυρτὸς ἐπικληθεὶς, ἄρχοντος Ὑρκανοῦ τὸν πρῶτον ἐνιαυτόν. Τούτου γίνεται Ἰώσηπος ἐννάτῳ ἔτει τῆς Ἀλεξάνδρας ἀρχῆς, καὶ Ἰωσήπου Ματθίας βασιλεύοντος Ἀρχελάου τὸ δέκατον, Ματθία δὲ ἐγὼ τῷ πρώτῳ τῆς Γαΐου Καίσαρος ἡγεμονίας. Ἐμοὶ δὲ παῖδές εἰσι τρεῖς, Ὑρκανὸς μὲν ὁ πρεσβύτατος ἔτει τετάρτῳ τῆς Οὐεσπασιανοῦ Καίσαρος ἡγεμονίας, ἑβδόμῳ δὲ Ἰοῦστος, ἐννάτῳ δὲ Ἀγρίππας. Τὴν μὲν οὖν τοῦ γένους ἡμῶν διαδοχὴν, ὡς ἐν ταῖς δημοσίαις δέλτοις ἀναγεγραμμένην εὗρον, οὕτως παρατίθεμαι, τοῖς διαβάλλειν ἡμᾶς πειρωμένοις χαίρειν φράσας.

2 2. Ὁ πατὴρ δέ μου Ματθίας οὐ διὰ μόνην τὴν εὐγένειαν ἐπίσημος ἦν, ἀλλὰ πλέον διὰ τὴν δικαιοσύνην ἐπῃνεῖτο, γνωριμώτατος ὢν ἐν τῇ μεγίστῃ πόλει τῶν παρ᾽ ἡμῖν τοῖς Ἱεροσολύμοις. Ἐγὼ δὲ συμπαιδευόμενος ἀδελφῷ Ματθίᾳ τὸ ὄνομα, ἐγεγόνει γάρ μοι γνήσιος ἐξ ἀμφοῖν τῶν γονέων, εἰς μεγάλην παιδείας προέκοπτον ἐπίδοσιν, μνήμῃ τε καὶ συνέσει δοκῶν διαφέρειν. Ἔτι δ᾽ ἄρα παῖς ὢν περὶ τεσσαρεσκαιδέκατον ἔτος διὰ τὸ φιλογράμματον ὑπὸ πάντων ἐπῃνούμην, συνιόντων ἀεὶ τῶν ἀρχιερέων καὶ τῶν τῆς πόλεως πρώτων ὑπὲρ τοῦ παρ᾽ ἐμοῦ περὶ τῶν νομίμων ἀκριβέστερόν τι γνῶναι. Περὶ ἑκκαίδεκα δὲ ἔτη γενόμενος ἐβουλήθην τῶν παρ᾽ ἡμῖν αἱρέσεων ἐμπειρίαν λαβεῖν. Τρεῖς δ᾽ εἰσὶν αὗται· Φαρισαίων μὲν ἡ πρώτη, καὶ Σαδδουκαίων ἡ δευτέρα, τρίτη δὲ ἡ Ἐσσηνῶν, καθὼς πολλάκις εἴπαμεν. Οὕτως γὰρ ᾠόμην αἱρήσεσθαι τὴν ἀρίστην, εἰ πάσας καταμάθοιμι. Σκληραγωγήσας γοῦν ἐμαυτὸν, καὶ πολλὰ πονηθεὶς τὰς τρεῖς διῆλθον. Καὶ μηδὲ τὴν ἐντεῦθεν ἐμπειρίαν ἱκανὴν ἐμαυτῷ νομίσας εἶναι, πυθόμενός τινα Βανοῦν ὄνομα κατὰ τὴν ἐρημίαν διατρίβειν, ἐσθῆτι μὲν ἀπὸ δένδρων χρώμενον, τροφὴν δὲ τὴν αὐτομάτως φυομένην προσφερόμενον, ψυχρῷ δὲ ὕδατι τὴν ἡμέραν καὶ τὴν νύκτα πολλάκις λουόμενον πρὸς ἁγνείαν, ζηλωτὴς ἐγενόμην αὐτοῦ. Καὶ διατρίψας παρ᾽ αὐτῷ ἐνιαυτοὺς τρεῖς, καὶ τὴν ἐπιθυμίαν τελειώσας εἰς τὴν πόλιν ὑπέστρεφον. Ἐννεακαίδεκα δ᾽ ἔτη ἔχων ἠρξάμην τε πολιτεύεσθαι τῇ Φαρισαίων αἱρέσει κατακολουθῶν, ἣ παραπλήσιός ἐστι τῇ παρ᾽ Ἕλλησι Στωϊκῇ λεγομένῃ.

3. Μετ᾽ εἰκοστὸν δὲ καὶ ἕκτον ἐνιαυτὸν εἰς Ῥώμην μοι συνέπεσεν ἀναβῆναι, διὰ τὴν λεχθησομένην αἰτίαν. Καθ᾽ ὃν χρόνον Φῆλιξ τῆς Ἰουδαίας ἐπετρόπευεν ἱερεῖς τινας συνήθεις ἐμοὶ, καλοὺς κἀγαθοὺς, διὰ μικρὰν καὶ τὴν τυχοῦσαν αἰτίαν δήσας

εἰς τὴν Ῥώμην ἔπεμψεν, λόγον ὑφέξοντας τῷ Καί-
σαρι. Οἷς ἐγὼ πόρον εὑρέσθαι βουλόμενος σωτη-
ρίας, μάλιστα δὲ πυθόμενος ὅτι, καίπερ ἐν κακοῖς
ὄντες, οὐκ ἐξελάθοντο τῆς εἰς τὸ θεῖον εὐσεβείας,
διατρέφοιντο δὲ σύκοις καὶ καρύοις, ἀφικόμην εἰς
Ῥώμην πολλάκις κινδυνεύσας κατὰ θάλασσαν. Βα-
πτισθέντος γὰρ ἡμῶν τοῦ πλοίου κατὰ μέσον τὸν
Ἀδρίαν, περὶ ἑξακοσίους τὸν ἀριθμὸν ὄντες δι' ὅλης
τῆς νυκτὸς ἐνηξάμεθα. Καὶ περὶ ἀρχομένην ἡμέ-
ραν ἐπιφανέντος ἡμῖν κατὰ θεοῦ πρόνοιαν Κυρη-
ναϊκοῦ πλοίου, φθάσαντες τοὺς ἄλλους ἐγώ τε καὶ
τινες ἕτεροι, ὀγδοήκοντα σύμπαντες, ἀνελήφθημεν
εἰς τὸ πλοῖον. Διασωθεὶς δ' εἰς τὴν Δικαιαρχίαν,
ἣν Ποτιόλους Ἰταλοὶ καλοῦσιν, διὰ φιλίας ἀφικό-
μην Ἀλιτύρῳ, — μιμολόγος δ' ἦν οὗτος μάλιστα
τῷ Νέρωνι καταθύμιος, Ἰουδαῖος τὸ γένος, — καὶ
δι' αὐτοῦ Ποππηΐᾳ τῇ τοῦ Καίσαρος γυναικὶ γνω-
σθεὶς, προνοῶ ὡς τάχιστα παρακαλέσας αὐτὴν τοὺς
ἱερεῖς λυθῆναι. Μεγάλων δὲ δωρεῶν πρὸς τῇ εὐ-
εργεσίᾳ ταύτῃ τυχὼν παρὰ τῆς Ποππηΐας, ὑπέστρε-
φον ἐπὶ τὴν οἰκείαν.

4. Καταλαμβάνω δ' ἤδη νεωτερισμῶν ἀρχὰς,
καὶ πολλοὺς ἐπὶ τῇ Ῥωμαίων ἀποστάσει μέγα φρο-
νοῦντας. Καταστέλλειν οὖν ἐπειρώμην τοὺς στασιώ-
δεις καὶ μετανοεῖν ἔπειθον, ποιησάμενος πρὸ ὀφ-
θαλμῶν ‘πρὸς οὓς πολεμήσουσιν, ὅτι Ῥωμαίων οὐ 3
κατ' ἐμπειρίαν μόνην πολεμικὴν, ἀλλὰ καὶ κατ' εὐ-
τυχίαν ἐλαττοῦνται· καὶ μὴ προπετῶς καὶ παντά-
πασιν ἀνοήτως πατρίσι καὶ γενεαῖς καὶ σφίσιν αὐ-
τοῖς τὸν περὶ τῶν ἐσχάτων κακῶν κίνδυνον ἐπά-
γειν.’ Ταῦτα δ' ἔλεγον, καὶ λιπαρῶς ἐνεκείμην ἀπο-
τρέπων, δυστυχέστατον ἡμῖν τοῦ πολέμου τὸ τέλος
γενήσεσθαι προορώμενος. Οὐ μὴν ἔπεισα· πολὺ
γὰρ ἡ τῶν ἀπονοηθέντων ἐπεκράτησε μανία.

5. Δείσας γοῦν, μὴ ταῦτα συνεχῶς λέγων διὰ
μίσους ἀφικοίμην καὶ ὑποψίας, ὡς τὰ τῶν πολεμίων

φρονῶν, καὶ κινδυνεύσω ληφθεὶς ὑπ᾽ αὐτῶν ἀναιρεθῆναι, ἐχομένης ἤδη τῆς Ἀντωνίας, ὅπερ ἦν φρούριον, εἰς τὸ ἐνδοτέρω ἱερὸν ὑπεχώρησα. Μετὰ δὲ τὴν ἀναίρεσιν Μαναήμου καὶ τῶν πρώτων τοῦ λῃστρικοῦ στίφους, ὑπεξελθὼν τοῦ ἱεροῦ πάλιν τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς πρώτοις τῶν Φαρισαίων συνδιέτριβον. Φόβος δ᾽ οὐκέτι μέτριος εἶχεν ἡμᾶς, ὁρῶντας τὸν μὲν δῆμον ἐν τοῖς ὅπλοις, αὐτοὶ δ᾽ ὄντες ἐν ἀπόρῳ, τί ποιήσωμεν, καὶ τοὺς νεωτεριστὰς παύειν οὐ δυνάμενοι, προδήλου δὲ ἡμῖν τοῦ κινδύνου παρεστῶτος, συγκατανεύειν μὲν αὐτῶν ταῖς γνώμαις ἐλέγομεν, συνεβουλεύομεν δὲ μένειν ἐφ᾽ αὑτῶν, καὶ τοὺς πολεμίους ἀπελθόντας ἐᾶν, ἐλπίζοντες, οὐκ εἰς μακρὰν Κέστιον μετὰ μεγάλης δυνάμεως ἀναβάντα παύσειν τὸν νεωτερισμόν.

6. Ὁ δ᾽ ἐπελθὼν καὶ συμβαλὼν μάχῃ ἐνικήθη, πολλῶν τῶν μετ᾽ αὐτοῦ πεσόντων. Καὶ γίνεται τὸ Κεστίου πταῖσμα συμφορὰ τοῦ παντὸς ἡμῶν ἔθνους· ἐπήρθησαν γὰρ ἐπὶ τούτῳ μᾶλλον οἱ τὸν πόλεμον ἀγαπήσαντες, καὶ νικήσαντες τοὺς Ῥωμαίους εἰς τέλος ἤλπισαν, προσγενομένης καὶ ἑτέρας τινὸς τοιαύτης αἰτίας. Οἱ τὰς πέριξ τῆς Συρίας πόλεις κατοικοῦντες τοὺς παρ᾽ ἑαυτοῖς Ἰουδαίους συλλαμβάνοντες σὺν γυναιξὶ καὶ τέκνοις ἀνῄρουν, οὐδὲ μίαν αὐτοῖς αἰτίαν ἐπικαλεῖν ἔχοντες· οὔτε γὰρ ἐπὶ Ῥωμαίων ἀποστάσει νεώτερόν τι πεφρονήκεσαν, οὔτε πρὸς αὐτοὺς ἐκείνους ἐχθρὸν ἢ ἐπίβουλον. Σκυθοπολῖται δὲ πάντων ἀσεβέστατα καὶ παρανομώτατα διεπράξαντο· ἐπελθόντων γὰρ αὐτοῖς Ἰουδαίων ἔξωθεν πολεμίων, τοὺς παρ᾽ αὐτοῖς Ἰουδαίους ἐβιάσαντο κατὰ τῶν ὁμοφύλων ὅπλα λαβεῖν, ὅπερ ἐστὶν ἡμῖν ἀθέμιτον. Καὶ μετ᾽ ἐκείνων συμβαλόντες ἐκράτησαν τῶν ἐπελθόντων· ἐπειδὴ δ᾽ ἐνίκησαν, ἐκλαθόμενοι τῆς πρὸς τοὺς ἐνοίκους καὶ συμμάχους πίστεως, πάντας αὐτοὺς διεχρήσαντο, πολλὰς μυριάδας ὄντας. Ὅμοια δ᾽ ἔπαθον καὶ οἱ τὴν Δαμασκὸν Ἰουδαῖοι κατοι-

κοῦντες. Ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων ἀκριβέστερον ἐν ταῖς περὶ Ἰουδαϊκοῦ πολέμου βίβλοις δεδηλώκαμεν· νῦν δ᾽ αὐτῶν ἐπεμνήσθην, βουλόμενος παραστῆσαι τοῖς ἀναγινώσκουσιν, ὅτι οὐ προαίρεσις ἐγένετο τοῦ πολέμου πρὸς Ῥωμαίους Ἰουδαίοις, ἀλλὰ τὸ πλέον ἀνάγκη.

7. Νικηθέντος οὖν, ὡς ἔφαμεν, τοῦ Κεστίου, τῶν Ἱεροσολυμιτῶν οἱ πρῶτοι θεασάμενοι τοὺς μὲν λῃστὰς ἅμα τοῖς νεωτερισταῖς εὐπορουμένους ὅπλων, δείσαντες δὲ αὐτοὶ μὴ ἄνοπλοι καθεστηκότες ὑποχείριοι γένωνται τοῖς ἐχθροῖς, — ὃ καὶ μετὰ ταῦτα συνέβη, — καὶ πυθόμενοι τὴν Γαλιλαίαν οὔπω πᾶσαν Ῥωμαίων ἀφεστάναι, μέρος δὲ αὐτῆς ἠρεμεῖν ἔτι, πέμπουσιν ἐμὲ καὶ δύο ἄλλους τῶν ἱερέων, καλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ἄνδρας, Ἰωάζαρον καὶ Ἰούδαν, πείσοντας τοὺς πονηροὺς καταθέσθαι τὰ ὅπλα, καὶ διδάξοντας, ὡς ἐστιν ἄμεινον τοῖς κρατίστοις τοῦ ἔθνους αὐτὰ τηρεῖσθαι. Ἔγνωστο δὲ τούτοις ἀεὶ μὲν ἔχειν τὰ ὅπλα πρὸς τὸ μέλλον ἕτοιμα, περιμένειν δέ, τί πράξουσιν Ῥωμαῖοι, μαθεῖν.

8. Λαβὼν οὖν ἐγὼ τὰς ὑποθήκας ταύτας ἀφι- 4
κόμην εἰς τὴν Γαλιλαίαν. Καὶ Σεπφωρίτας μὲν οὐκ ἐν ὀλίγῳ περὶ τῆς πατρίδος ἀγῶνι καθεστῶτας εὗρον, διαρπάσαι κεκρικότων αὐτὴν τῶν Γαλιλαίων, διὰ τὴν πρὸς Ῥωμαίους ἐκείνων φιλίαν, καὶ ὅτι καὶ Κεστίῳ Γάλλῳ τῷ τῆς Συρίας ἡγεμονεύοντι δεξιάν τε καὶ πίστιν προτείνειεν. Ἀλλὰ τούτους μὲν ἐγὼ πάντας ἀπήλλαξα τοῦ φόβου, πείσας ὑπὲρ αὐτῶν τὰ πλήθη, καὶ ἐπιτρέψας, ὁσάκις θέλουσι, διαπέμπεσθαι πρὸς τοὺς ἐν Δώροις οἰκείους ὁμηρεύοντας Κεστίῳ. Τὰ δὲ Δῶρα πόλις ἐστὶ τῆς Φοινίκης. Τοὺς ἐν Τιβεριάδι δὲ κατοικοῦντας εὗρον ἐφ᾽ ὅπλα κεχωρηκότας ἤδη δι᾽ αἰτίαν τοιαύτην.

9. Στάσεις τρεῖς ἦσαν κατὰ τὴν πόλιν. Μία μὲν ἀνδρῶν εὐσχημόνων, ἦρχε δ᾽ αὐτῆς Ἰούλιος Καπέλλος. Οὗτος δὴ καὶ οἱ σὺν αὐτῷ πάντες, Ἡρώ-

θης ὁ Μιαροῦ, καὶ Ἡρώδης ὁ τοῦ Γαμάλου, καὶ Κομψὸς ὁ τοῦ Κομψοῦ — Κρίσπος γὰρ ἀδελφὸς αὐτοῦ, τοῦ μεγάλου βασιλέως γενόμενός ποτε ἔπαρχος, ἐν ταῖς ἰδίαις κτήσεσιν ἐτύγχανεν, πέραν τοῦ Ἰορδάνου — πάντες οὖν οἱ προειρημένοι κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον ἐμμένειν συνεβούλευον τῇ πρὸς τοὺς Ῥωμαίους καὶ τὸν βασιλέα πίστει. Τῇ γνώμῃ δὲ οὐ συνηρέσκετο Πιστὸς, παραγενόμενος ὑπὸ Ἰούστου τοῦ παιδός· καὶ γὰρ ἦν φύσει πως ἐπιφανής. Ἡ δευτέρα δὲ στάσις, ἐξ ἀσημοτάτων συνεστηκυῖα, πολεμεῖν ἔκρινεν. Ἰοῦστος ὁ Πιστοῦ παῖς, ὁ τῆς τρίτης μερίδος πρῶτος, ὑπεκρίνετο μὲν ἐνδοιάζειν πρὸς τὸν πόλεμον· νεωτέρων δ' ἐπεθύμει πραγμάτων, ἐκ τῆς μεταβολῆς οἰόμενος δύναμιν ἑαυτῷ περιποιήσειν. Παρελθὼν οὖν εἰς μέσους διδάσκειν ἐπειρᾶτο τὸ πλῆθος, ὡς ʻἡ πόλις ἔστιν ἀεὶ τῆς Γαλιλαίας, ἄρξειεν δὲ ἐπί γε τῶν Ἡρώδου χρόνων, τοῦ τετράρχου, καὶ κτίστου γενομένου, βουληθέντος αὐτοῦ τὴν Σεπφωριτῶν πόλιν τῇ Τιβεριέων ὑπακούειν· ἀποβάλλειν δὲ τὸ πρωτεῖον αὐτοὺς μηδὲ ἐπὶ τοῦ βασιλέως Ἀγρίππα τοῦ πατρὸς, διαμεῖναι δὲ καὶ μέχρι Φήλικος προϊσταμένου τῆς Ἰουδαίας. Νῦν δὲ, ἔλεγεν, αὐτοὺς ἠτυχηκέναι, τῷ νεωτέρῳ δωρεὰν Ἀγρίππᾳ δοθέντας ὑπὸ Νέρωνος· ἄρξαι γὰρ εὐθὺς τὴν μὲν Σέπφωριν, ἐπειδὴ Ῥωμαίοις ὑπήκουσε, τῆς Γαλιλαίας, καταλυθῆναι δὲ παρ' αὐτοῖς τήν τε βασιλικὴν τράπεζαν καὶ τὰ ἀρχαῖα.' Ταῦτα καὶ πρὸς τούτοις ἕτερα πολλὰ κατὰ βασιλέως Ἀγρίππα λέγων, ὑπὲρ τοῦ τὸν δῆμον εἰς τὴν ἀποστασίαν ἐρεθίσαι, προςετίθει ʻνῦν εἶναι καιρὸν ἀραμένους ὅπλα, καὶ Γαλιλαίους συμμάχους προςλαβόντας — ἄρξειν γὰρ αὐτῶν ἑκόντων διὰ τὸ πρὸς τοὺς Σεπφωρίτας μῖσος ὑπάρχειν αὐτοῖς, ὅτι τὴν πρὸς Ῥωμαίους πίστιν διαφυλάσσουσιν μεγάλῃ χειρὶ πρὸς τὴν ὑπὲρ αὐτῶν τιμωρίαν τρέπεσθαι.' Ταῦτα λέγων προετρέψατο τὸ πλῆθος· ἦν γὰρ ἱκανὸς δημαγωγεῖν, καὶ

τῶν ἀντιλεγόντων τὰ βελτίω περιεῖναι γοητείᾳ καὶ ἀπάτῃ τῇ διὰ λόγων. Καὶ γὰρ οὐδ' ἄπειρος ἦν παιδείας τῆς παρ' Ἕλλησιν, ᾗ θαῤῥῶν ἐπεχείρησεν καὶ τὴν ἱστορίαν τῶν πραγμάτων τούτων ἀναγράφειν, ὡς τῷ λόγῳ τούτῳ περιεσόμενος τῆς ἀληθείας. Ἀλλὰ περὶ μὲν τούτου τοῦ ἀνδρὸς, ὡς φαῦλος τὸν βίον ἐγένετο, καὶ ὡς σὺν τῷ ἀδελφῷ μικροῦ δεῖν καταστροφῆς αἴτιος ὑπῆρξεν, προϊόντος τοῦ λόγου δηλώσομεν. Τότε δὲ πείσας Ἰοῦστος τοὺς πολίτας ἀναλαβεῖν τὰ ὅπλα, πολλοὺς δὲ καὶ μὴ θελήσαντας ἀναγκάσας, ἐξελθὼν σὺν πᾶσι τούτοις ἐμπίπρησι τάς τε Γαδαρηνῶν καὶ Ἱππηνῶν κώμας, αἳ δὴ μεθόριοι τῆς Τιβεριάδος καὶ τῆς τῶν Σκυθοπολιτῶν γῆς ἐτύγχανον κείμεναι.

10. Καὶ Τιβεριὰς μὲν ἐν τούτοις ἦν. Τὰ περὶ Γίσχαλα δὲ εἶχεν τὸν τρόπον τοῦτον. Ἰωάννης ὁ τοῦ Λευΐ τῶν πολιτῶν τινας ὁρῶν διὰ τὴν ἀποστασίαν τὴν ἀπὸ Ῥωμαίων μέγα φρονοῦντας, κατέχειν αὐτοὺς ἐπειρᾶτο, καὶ τὴν πίστιν ἠξίου διαφυλάττειν. Οὐ μὴν ἠδυνήθη, καίτοι πάνυ προθυμούμενος· τὰ γὰρ πέριξ ἔθνη, Γαδαρηνοὶ καὶ Γαβαρηνοὶ, Σωγαναῖοι καὶ Τύριοι, πολλὴν ἀθροίσαντες δύναμιν, καὶ τοῖς Γισχάλοις ἐπιπεσόντες λαμβάνουσι τὰ Γίσχαλα κατὰ κράτος· καὶ πυρπολήσαντες, εἶτα δὲ καὶ προσκατασκάψαντες εἰς τὴν οἰκείαν ἀνέζευξαν. Ἰωάννης δὲ ἐπὶ τούτῳ παροξυνθεὶς ὁπλίζει πάντας τοὺς μετ' αὐτοῦ, καὶ συμβαλὼν τοῖς προειρημένοις ἔθνεσιν, τά τε Γίσχαλα κρείττονα πάλιν ἀνακτίσας τείχεσιν ὑπὲρ ἀσφαλείας τῆς εἰς ὕστερον ὠχύρωσεν.

11. Γάμαλα δὲ πίστει τῇ πρὸς Ῥωμαίους ἐνέμεινε δι' αἰτίαν τοιαύτην. Φίλιππος ὁ Ἰακίμου παῖς, ἔπαρχος δὲ τοῦ βασιλέως Ἀγρίππα, σωθεὶς παρὰ δόξαν ἐκ τῆς ἐν Ἱεροσολύμοις βασιλικῆς αὐλῆς πολιορκουμένης, καὶ διαφυγὼν, εἰς ἕτερον ἐνέπεσε κίνδυνον, ὥστε ὑπὸ Μαναήμου καὶ τῶν σὺν αὐτῷ λη-

στῶν ἀναρεθῆναι. Διεκώλυσαν δὲ Βαβυλώνιοί τινες, συγγενεῖς αὐτοῦ ἐν Ἱεροσολύμοις ὄντες, πρᾶξαι τοὺς λῃστὰς τὸ ἔργον. Ἐπιμείνας οὖν ἡμέρας τέσσαρας ὁ Φίλιππός ἐκεῖ, τῇ πέμπτῃ φεύγει περιθετῇ χρησάμενος κόμῃ, τοῦ μὴ κατάδηλος γενέσθαι. Καὶ παραγενόμενος εἴς τινα τῶν ἑαυτοῦ κωμῶν κατὰ τοὺς ὅρους Γάμαλα τοῦ φρουρίου κειμένην, πέμπει πρός τινας τῶν ὑπ' αὐτοῦ προςτάσσων ὡς αὐτὸν ἀφικέσθαι. Τὸν Φίλιππον δὲ ταῦτα ἐννοούμενον ἐμποδίζει τὸ θεῖον ἐπὶ συμφέροντι· μὴ γὰρ τούτου γενομένου πάντως ἂν ἀπολώλει. Πυρετοῦ δὴ κατασχόντος αὐτὸν ἐξαίφνης, γράψας ἐπιστολὰς τοῖς παισὶν Ἀγρίππα καὶ Βερενίκῃ δίδωσι τῶν ἐξελευθέρων τινὶ κομίζειν πρὸς Οὔαρον. Ἦν δὲ οὗτος κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον ὁ τὴν βασιλείαν διοικῶν, καταστησάντων αὐτὸν τῶν βασιλέων· αὐτοὶ γὰρ εἰς Βηρυτὸν ἀφικνοῦντο, ὑπαντῆσαι βουλόμενοι Κεστίῳ. Λαβὼν οὖν ὁ Οὔαρος τὰ παρὰ Φιλίππου γράμματα, καὶ πυθόμενος αὐτὸν διασεσῶσθαι, βαρέως ἤνεγκεν, ἀχρεῖος τὸ λοιπὸν αὐτὸς νομίζων φανεῖσθαι τοῖς βασιλεῦσιν, ἀφικομένου τοῦ Φιλίππου. Προαγαγὼν οὖν εἰς τὸ πλῆθος τὸν τὰς ἐπιστολὰς κομίζοντα, καὶ ʽπλαστογραφίαν ἐπικαλέσας, ψεύδεσθαί τε φήσας αὐτὸν ἀπαγγείλαντα, ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις Φίλιππον
6 μετὰ τῶν Ἰουδαίων Ῥωμαίοις πολεμεῖν,ʼ ἀπέκτεινε. Μὴ ὑποστρέψαντος δὲ τοῦ ἐξελευθέρου, Φίλιππος ἀπορῶν τὴν αἰτίαν δεύτερον ἐκπέμπει μετ' ἐπιστολῶν πάλιν τὸν ἀπαγγελοῦντα πρὸς αὐτόν, ʽτί τὸ συμβεβηκὸς εἴη τῷ ἀποσταλέντι, δι' ὃ βραδύνειεν.ʼ Καὶ τοῦτον δὲ παραγενόμενον ὁ Οὔαρος συκοφαντήσας ἀνεῖλεν· καὶ γὰρ ὑπὸ τῶν ἐν Καισαρείᾳ Σύρων ἐπῆρτο μέγα φρονεῖν; ʽἀναιρεθήσεσθαι μὲν λεγόντων ὑπὸ Ῥωμαίων Ἀγρίππα διὰ τὰς ὑπὸ Ἰουδαίων ἁμαρτίας· λήψεσθαι δ' αὐτὸν τὴν ἀρχήν, ἐκ βασιλέων ὄντα.ʼ Καὶ γὰρ ἦν ὁμολογουμένως ὁ Οὔαρος βασιλικοῦ γένους, ἔγγονος Σοέμου τοῦ περὶ

τὸν Λίβανον τετραρχοῦντος. Διὰ τοῦτ᾽ οὖν ὁ Οὔαρος τυφούμενος τὰς μὲν ἐπιστολὰς παρ᾽ ἑαυτῷ κατέσχε, μηχανώμενος μὴ ἐντυχεῖν τοῖς γράμμασι τὸν βασιλέα, τὰς ἐξόδους δὲ πάσας ἐφρούρει, μὴ διαδράς τις ἀπαγγείλειε τῷ βασιλεῖ τὰ πραττόμενα. Καὶ δὴ χαριζόμενος τοῖς κατὰ τὴν Καισάρειαν Σύροις, πολλοὺς τῶν Ἰουδαίων ἀπέκτεινεν. Ἐβουλήθη δὲ καὶ μετὰ τῶν ἐν Βαταναίᾳ Τραχωνιτῶν ἀναλαβὼν τὰ ὅπλα ἐπὶ τοὺς ἐν Ἐκβατάνοις Βαβυλωνίους Ἰουδαίους — ταύτην γὰρ τὴν προςηγορίαν ἔχουσιν — ὁρμῆσαι. Καλέσας οὖν τῶν κατὰ τὴν Καισάρειαν Ἰουδαίων δώδεκα τοὺς δοκιμωτάτους, προςέτασσεν αὐτοῖς ἀφικομένοις εἰς Ἐκβάτανα πρὸς τοὺς ἐκεῖ κατοικοῦντας αὐτῶν ὁμοφύλους εἰπεῖν, ὅτι ʻΟὔαρος ἀκούσας ὑμᾶς ἐπὶ βασιλέα μέλλειν ὁρμᾶν, καὶ μὴ πιστεύσας, πέπομφεν ἡμᾶς πείσοντας ὑμᾶς τὰ ὅπλα καταθέσθαι· τοῦτο γὰρ αὐτῷ τεκμήριον ἔσεσθαι καὶ τοῦ καλῶς μὴ πιστεῦσαι τοῖς περὶ ὑμῶν λέγουσιν.᾽ Ἐκέλευε δὲ καὶ τοὺς πρώτους αὐτῶν ἄνδρας ἑβδομήκοντα πέμπειν, ἀπολογησομένους περὶ τῆς ἐπηνεγμένης αἰτίας. Ἐλθόντες οὖν οἱ δώδεκα πρὸς τοὺς ἐν Ἐκβατάνοις ὁμοφύλους, καὶ καταλαβόντες αὐτοὺς μηδὲν ἐπὶ νεωτερισμῷ φρονοῦντας, ἔπεισαν καὶ τοὺς ἑβδομήκοντα πέμπειν. Οἱ δὲ μηδὲν ὑποπτεύσαντες τοιοῦτον, οἷον ἔμελλεν ἀποβήσεσθαι, ἐξαπέστειλαν. Καταβαίνουσι δὲ οὗτοι μετὰ τῶν δώδεκα πρέσβεων εἰς τὴν Καισάρειαν. Ὑπαντήσας οὖν ὁ Οὔαρος μετὰ τῆς βασιλικῆς δυνάμεως σὺν τοῖς πρέσβεσιν πάντας ἀπέκτεινε, καὶ τὴν πορείαν ἐπὶ τοὺς ἐν Ἐκβατάνοις Ἰουδαίους ἐποιεῖτο. Φθάσας δέ τις ἐκ τῶν ἑβδομήκοντα σωθεὶς ἀπήγγειλεν αὐτοῖς, καὶ ἐκεῖνοι τὰ ὅπλα λαβόντες σὺν γυναιξὶ καὶ τέκνοις εἰς Γάμαλα τὸ φρούριον ὑπεχώρησαν, καταλιπόντες τὰς κώμας πολλῶν ἀγαθῶν πλήρεις καὶ βοσκημάτων πολλὰς μυριάδας ἐχούσας. Φίλιππος δὲ πυθόμενος ταῦτα, καὶ αὐτὸς εἰς Γάμαλα τὸ φρούριον

ἧκεν. Παραγενομένου δὲ, κατεβόα τὸ πλῆθος 'ἄρχειν αὐτὸν παρακαλοῦντες, καὶ πολεμεῖν πρὸς Οὔαρον καὶ τοὺς ἐν τῇ Καισαρείᾳ Σύρους.' Διεδέχετο γὰρ ὑπὸ τούτων τὸν βασιλέα τεθνάναι. Φίλιππος δ' αὐτῶν κατεῖχε τὰς ὁρμὰς, ὑπομιμνήσκων 'τῶν τε τοῦ βασιλέως εἰς αὐτοὺς εὐεργεσιῶν, καὶ τὴν Ῥωμαίων διηγούμενος ὅση τίς ἐστιν ἡ δύναμις, συμφέρειν οὐκ ἔλεγεν ἄρασθαι πρὸς τούτους πόλεμον.' Καὶ τέλος ἔπεισεν. Ὁ δὲ βασιλεὺς πυθόμενος, ὅτι Οὔαρος μέλλει τοὺς ἐπὶ τῆς Καισαρείας σὺν γυναιξὶ καὶ τέκνοις πολλὰς ὄντας μυριάδας ἀναιρεῖν ἡμέρᾳ μιᾷ, μεταπέμπεται πρὸς αὐτὸν Αἴκουον Μόδιον, πέμψας αὐτὸν διάδοχον, ὡς ἐν ἄλλοις ἐδηλώσαμεν. Ὁ δὴ Φίλιππος Γάμαλα τὸ φρούριον κατέσχεν, καὶ τὴν πέριξ χώραν πίστει τῇ πρὸς Ῥωμαίους ἐμμένουσαν.

7 12. Ἐπεὶ δ' εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἀφικόμην ἐγὼ, καὶ ταῦτα παρὰ τῶν ἀπαγγειλάντων ἔμαθον, γράφω τῷ συνεδρίῳ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν περὶ τούτων, καὶ 'τί με πράττειν κελεύουσιν' ἐρωτῶ. Οἱ δὲ προσμεῖναι παρεκάλεσαν, καὶ τοὺς συμπρέσβεις, εἰ θέλοιεν, κατασχόντα πρόνοιαν ποιήσασθαι τῆς Γαλιλαίας. Οἱ δὲ συμπρέσβεις εὐπορήσαντες πολλῶν χρημάτων ἐκ τῶν διδομένων αὐτοῖς δεκάτων, ἃς ὄντες ἱερεῖς ὀφειλομένας ἀπελάμβανον, εἰς τὴν οἰκείαν ὑποστρέφειν γῆν ἔκριναν. Ἐμοῦ δὲ αὐτοὺς προσμεῖναι παρακαλέσαντος, ἕως οὗ τὰ πράγματα καταστήσωμεν, πείθονται. Ἄρας οὖν μετ' αὐτῶν ἀπὸ τῆς Σεπφωριτῶν πόλεως εἰς κώμην τινὰ, Βηθμαοὺς λεγομένην, ἀπέχουσαν Τιβεριάδος στάδια τέσσαρα, παραγίνομαι. Καὶ πέμψας ἐντεῦθεν τοὺς πρὸς τὴν Τιβεριέων βουλὴν, καὶ τοὺς πρώτους τοῦ δήμου παρεκάλουν ἀφικέσθαι πρός με. Καὶ παραγενομένων — ἐληλύθει δὲ καὶ Ἰοῦστος σὺν αὐτοῖς — ἔλεγον 'ὑπὸ τοῦ κοινοῦ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν πρεσβεύσων μετὰ τούτων πεπέμφθαι πρὸς αὐτοὺς, πείσων

καθαιρεθῆναι τὸν οἶκον ὑπὸ Ἡρώδου τοῦ τετράρχου κατασκευασθέντα, ζώων μορφὰς ἔχοντα, τῶν νόμων οὕτως τι κατασκευάζειν ἀπαγορευόντων, καὶ παρεκάλουν αὐτούς, ἐᾶν ἡμῖν ᾗ τάχος τοῦτο πράττειν.' Ἐπιπολὺ μὲν οὖν οἱ περὶ τὸν Καπέλλον καὶ τοὺς πρώτους αὐτῶν ἐπιτρέπειν οὐκ ἤθελον, βιαζόμενοι δὲ ὑφ' ἡμῶν συγκατατίθενται. Φθάνει δὲ Ἰησοῦς ὁ τοῦ Σαπφία παῖς, ὃν τῆς τῶν ναυτῶν καὶ τῶν ἀπόρων στάσεως πρῶτον ἔφαμεν ἄρξαι, παραλαβών τινας Γαλιλαίους, καὶ τὴν πᾶσαν αὐλὴν ἐμπρήσας, πολλῶν οἰόμενος εὐπορήσειν ἐξ αὐτῆς χρημάτων, ἐπειδή τινας οἴκων ὀροφὰς κεχρυσωμένας εἶδεν. Καὶ διήρπασαν πολλά, παρὰ γνώμην τὴν ἡμετέραν πράξαντες· ἡμεῖς γὰρ μετὰ τὴν πρὸς Καπέλλον καὶ τοὺς πρώτους Τιβεριέων ὁμιλίαν εἰς τὴν ἄνω Γαλιλαίαν ἀπὸ Βηθμαῶν ἀνεχωρήσαμεν. Ἀναιροῦσιν δὲ οἱ περὶ τὸν Ἰησοῦν πάντας τοὺς ἐνοικοῦντας Ἕλληνας, ὅσοι τε πρὸ τοῦ πολέμου γεγόνασιν αὐτῶν ἐχθροί.

13. *Πυθόμενος δ' ἐγὼ ταῦτα παρωξύνθην σφόδρα. Καὶ καταβὰς εἰς Τιβεριάδα πρόνοιαν εἰςενεγκάμην τῶν βασιλικῶν σκευῶν, ὅσα δυνατὸν ἦν τοὺς ἁρπάσαντας ἀφελέσθαι. Λυχνίαι δὲ ἦσαν Κορίνθιαι ταῦτα, καὶ τράπεζαι τῶν βασιλικῶν, καὶ ἀσήμου ἀργυρίου σταθμὸς ἱκανός. Πάντα δὲ, ὅσα παρέλαβον, φυλάσσειν τῷ βασιλεῖ ἔκρινα. Μεταπεμψάμενος οὖν τοὺς τῆς βουλῆς πρώτους δέκα καὶ Καπέλλον τὸν Ἀντύλλου, τὰ σκεύη παρέδωκα, μηδενὶ παραγγείλας ἑτέρῳ πλὴν ἐμοῦ δοῦναι. Καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὰ Γίσχαλα πρὸς τὸν Ἰωάννην μετὰ τῶν συμπρέσβεων ἀφικόμην, βουλόμενος γνῶναι, τί ποτε φρονεῖ. Κατεῖδον δὲ αὐτὸν ταχέως νεωτέρων ὀρεγόμενον πραγμάτων, καὶ τῆς ἀρχῆς ἐπιθυμίαν ἔχοντα. Παρεκάλει γάρ με τὸν Καίσαρος σῖτον κείμενον ἐν ταῖς τῆς ἄνωθεν Γαλιλαίας κώμαις ἐξουσίαν αὐτῷ δοῦναι ἐκφορῆσαι· θέλειν γὰρ ἔφασκεν εἰς ἐπι-*

σκευὴν τῶν τῆς πατρίδος τειχῶν αὐτὸν ἀναλῶσαι.' Κατανοήσας δὲ ἐγὼ τὴν ἐπιχείρησιν αὐτοῦ, καὶ τί διανοοῖτο πράσσειν, οὐκ ἔφην αὐτῷ συγχωρεῖν· ἢ γὰρ Ῥωμαίοις αὐτὸν ἐνενοούμην φυλάττειν, ἢ ἐμοὶ αὐτῷ, διὰ τὸ καὶ τὴν ἐξουσίαν τῶν ἐκεῖ πραγμάτων αὐτὸς παρὰ τοῦ κοινοῦ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν πεπιστεῦσθαι. Μὴ πείθων δέ με περὶ τούτων, καὶ ἐπὶ τοὺς συμπρέσβεις ἐτράπετο· καὶ γὰρ ἦσαν ἀπρονόητοι τῶν ἐσομένων, καὶ λαβεῖν ἑτοιμότατοι. Φθεί-
8 ρει δὲ χρήμασιν αὐτοὺς ψηφίσασθαι πάντα τὸν σῖτον αὐτῷ παραδοθῆναι, τὸν ἐν τῇ αὐτοῦ ἐπαρχίᾳ κείμενον. Καὶ ἐγὼ μόνος, ἡττώμενος ὑπὸ δύο, τὴν ἡσυχίαν ἦγον. Καὶ δευτέραν Ἰωάννης ἐπεισέφερεν πανουργίαν. Ἔφη γὰρ ‘Ἰουδαίους, τοὺς τὴν Φιλίππου Καισάρειαν κατοικοῦντας, συγκεκλεισμένους κατὰ προσταγὴν τοῦ βασιλέως ὑποδίκου τοῦ τὴν δυναστείαν διοικοῦντος, πεπομφέναι πρὸς αὐτὸν παρακαλοῦντας, ἐπειδὴ οὐκ ἔχουσιν ἔλαιον ᾧ χρήσονται καθαρὸν, ποιησάμενον πρόνοιαν εὐπορίαν αὐτοῖς τούτου παρασχεῖν, μὴ δι' ἀνάγκην Ἑλληνικῷ χρώμενοι τὰ νόμιμα παραβαίνωσιν.' Ταῦτα δ' οὐχ ὑπὲρ εὐσεβείας ἔλεγεν Ἰωάννης, δι' αἰσχροκέρδειαν δὲ φανερωτάτην. Γινώσκων γὰρ παρὰ μὲν ἐκείναις κατὰ τὴν Καισάρειαν τοὺς δύο ξέστας δραχμῆς μιᾶς πωλουμένους, ἐν δὲ τοῖς Γισχάλοις τοὺς ὀγδοήκοντα ξέστας δραχμῶν τεσσάρων, πᾶν τὸ ἔλαιον, ὅσον ἦν ἐκεῖ, διεπέμψατο, λαβὼν ἐξουσίαν καὶ παρ' ἐμοῦ τῷ δοκεῖν· οὐ γὰρ ἑκὼν ἐπέτρεπον, ἀλλὰ διὰ φόβον τὸν ὑπὸ τοῦ πλήθους, μὴ κωλύων καταλευσθείην ὑπ' αὐτῶν. Συγχωρήσαντος οὖν μου, πλείστων χρημάτων ὁ Ἰωάννης ἐκ τῆς κακουργίας ταύτης εὐπόρησεν.

14. Τοὺς δὲ συμπρέσβεις ἀπὸ τῶν Γισχάλων ἀπολύσας εἰς τὰ Ἱεροσόλυμα, πρόνοιαν ἐποιούμην ὅπλων τε κατασκευῆς καὶ πόλεων ὀχυρότητος. Μεταπεμψάμενος δὲ τῶν λῃστῶν τοὺς ἀνδρειοτάτους,

ἀφελέσθαι μὲν αὐτῶν τὰ ὅπλα οὐχ οἷόν τε ὂν ἑώρων· ἔπεισα δὲ τὸ πλῆθος μισθοφορίαν αὐτοῖς παρέχειν, ἄμεινον εἶναι λέγων ἑκόντας ὀλίγον διδόναι μᾶλλον, ἢ τὰς κτήσεις διαρπαζομένας ὑπ' αὐτῶν περιορᾶν. Καὶ λαβὼν παρ' αὐτῶν ὅρκους μὴ ἀφίξεσθαι πρότερον εἰς τὴν χώραν, ἐὰν μὴ μετακληθῶσιν, ἢ ὅταν τὸν μισθὸν μὴ λάβωσιν, ἀπέλυσα, παραγγείλας μήτε Ῥωμαίοις πολεμεῖν μήτε τοῖς περιοίκοις. Εἰρηνεύεσθαι γὰρ πρὸ πάντων τὴν Γαλιλαίαν ἐφρόντιζον· τοὺς δ' ἐν τέλει τῶν Γαλιλαίων, ὅσον ἑβδομήκοντα πάντας, βουλόμενος ἐν προφάσει φιλίας καθάπερ ὅμηρα τῆς πίστεως ἔχειν, φίλους τε καὶ συνεκδήμους ἐποιησάμην, ἐπί τε κρίσεις παρελάμβανον, καὶ μετὰ γνώμης τῆς ἐκείνων τὰς ἀποφάσεις ἐποιούμην, μήτε προπετείᾳ πειρώμενος τοῦ δικαίου διαμαρτάνειν, καθαρεύειν δὲ παντὸς ἐν αὐταῖς λήμματος.

15. Περὶ τριακοστὸν γοῦν ἔτος ὑπάρχων, ἐν ᾧ χρόνῳ, καὶ ἐὰν ἀπέχηταί τις παρανόμων ἐπιθυμιῶν, δύσκολον τὰς ἐκ τοῦ φθόνου διαβολὰς φεύγειν, ἄλλως τε καὶ ἐξουσίας ὄντα μεγάλης, γυναῖκα μὲν πᾶσαν ἀνύβριστον ἐφύλαξα, πάντων δὲ τῶν διδομένων ὡς μὴ χρήζων κατεφρόνησα. Ἀλλ' οὐδὲ τὰς ὀφειλομένας μοι ὡς ἱερεῖ δεκάτας ἀπελάμβανον παρὰ τῶν κομιζόντων· ἐκ μέντοι τῶν λαφύρων μέρους, τοὺς Σύρους τοὺς τὰς πέριξ πόλεις κατοικοῦντας νικήσας, ἔλαβον, ἃ καὶ εἰς Ἱεροσόλυμα τοῖς συγγενέσιν ὁμολογῶ πεπομφέναι. Καὶ δὶς μὲν κατὰ κράτος ἑλὼν Σεπφωρίτας, Τιβεριεῖς δὲ τετράκις, Γαδαρεῖς δ' ἅπαξ, καὶ τὸν Ἰωάννην πολλάκις ἐπιβουλεύσαντά μοι λαβὼν ὑποχείριον, οὔτ' αὐτὸν οὔτε τινὰς τῶν προειρημένων ἐθνῶν ἐτιμωρησάμην, ὡς προϊὼν ὁ λόγος παραστήσει. Διὰ τοῦτ' οἶμαι καὶ τὸν θεόν — οὐ γὰρ λελήθασιν αὐτὸν οἱ τὰ δέοντα πράττοντες — καὶ ἐκ τῆς ἐκείνων ῥύσασθαί με χει-

ρός, καὶ μετὰ ταῦτα πολλοῖς περιπεσόντα κινδύνοις διαφυλάξαι. Περὶ ὧν ὕστερον ἀπαγγελοῦμεν.

16. Τοσαύτη δ' ἦν πρός με τοῦ πλήθους τῶν
9 Γαλιλαίων εὔνοια καὶ πίστις, ὥςτε, ληφθεισῶν αὐτῶν κατὰ κράτος τῶν πόλεων, γυναικῶν δὲ καὶ τέκνων ἀνδραποδισθέντων, οὐχ οὕτως ταῖς ἑαυτῶν ἐπεστέναζον συμφοραῖς, ὥςπερ τῆς ἐμῆς ἐφρόντισαν σωτηρίας. Ταῦτα δὲ ὁρῶν Ἰωάννης ἐφθόνησε, καὶ γράφει πρός με παρακαλῶν ἐπιτρέψαι καταβάντι χρήσασθαι τοῖς ἐν Τιβεριάδι θερμοῖς ὕδασι, τῆς τοῦ σώματος ἕνεκα θεραπείας. Καὶ ἐγὼ μηδὲν ὑποπτεύσας πράξειν αὐτὸν πονηρὸν οὐκ ἐκώλυσα· πρὸς δὲ καὶ τοῖς τῆς Τιβεριάδος τὴν διοίκησιν ὑπ' ἐμοῦ πεπιστευμένοις κατ' ὄνομα γράφω, κατάλυσιν ἑτοιμάσαι τῷ Ἰωάννῃ καὶ τοῖς ἀφιξομένοις σὺν αὐτῷ, πάντων τε τῶν ἐπιτηδείων ἀφθονίαν παρασχεῖν. Διέτριβον δὲ κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον ἐν κώμῃ τῆς Γαλιλαίας, ἣ προςαγορεύεται Κανά.

17. Ὁ δὲ Ἰωάννης, ἀφικόμενος εἰς τὴν Τιβερίεων πόλιν, ἔπειθε τοὺς ἀνθρώπους ἀποστάντας τῆς πρός με πίστεως προςτίθεσθαι αὐτῷ. Καὶ πολλοὶ τὴν παράκλησιν ἡδέως ἐδέξαντο, νεωτέρων ἐπιθυμοῦντες ἀεὶ πραγμάτων, καὶ φύσει πρὸς μεταβολὰς ἐπιτηδείως ἔχοντες, καὶ στάσεσι χαίροντες. Μάλιστα δὲ Ἰοῦστος καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ Πιστὸς ὡρμήκεσαν ἀποστάντες ἐμοῦ προςτίθεσθαι τῷ Ἰωάννῃ. Διεκώλυσα δὲ αὐτοὺς φθάσας· ἧκεν γάρ ἄγγελός μοι παρὰ Σίλα, ὃν ἐγὼ καθεστάκειν τῆς Τιβεριάδος στρατηγὸν, ὡς προεῖπον, τὴν τῶν Τιβεριέων γνώμην ἀπαγγέλλων, καὶ ἐμὲ 'σπεύδειν παρακαλῶν, βραδύναντος γὰρ ὑπὸ τὴν ἑτέρων ἐξουσίαν γενέσθαι τὴν πόλιν.' Ἐντυχὼν οὖν τοῖς γράμμασι τοῦ Σίλα, καὶ διακοσίους ἀναλαβὼν ἄνδρας, δι' ὅλης τῆς νυκτὸς τὴν πορείαν ἐποιούμην, προπέμψας ἄγγελον τὸν τὴν ἐμὴν παρουσίαν τοῖς ἐν τῇ Τιβεριάδι σημανοῦντα. Πρωῒ δὲ πλησιάζοντός μου τῇ πόλει, τὸ

πλῆθος ὑπηντίαζεν, καὶ Ἰωάννης σὺν αὐτοῖς, ὃς καὶ πάνυ με τεταραγμένως ἀσπασάμενος, δείσας, μὴ εἰς ἔλεγχον αὐτοῦ τῆς πράξεως ἀφικομένης ἀπολέσθαι κινδυνεύσῃ, ὑπεχώρησε μετὰ σπουδῆς εἰς τὴν ἑαυτοῦ κατάλυσιν. Καὶ ἐγὼ δὲ γενόμενος κατὰ τὸ στάδιον, τοὺς περὶ ἐμὲ σωματοφύλακας ἀπολύσας πλὴν ἑνὸς, καὶ μετὰ τούτου κατασχὼν δέκα τῶν ὁπλιτῶν δημηγορεῖν ἐπειρώμην τῷ πλήθει τῶν Τιβεριέων, στὰς ἐπὶ θριγκοῦ τινὸς ὑψηλοῦ, παρεκάλουν τε ‘μὴ οὕτως αὐτοὺς ταχέως ἀφίστασθαι· κατάγνωσιν γὰρ αὐτοῖς οἴσειν τὴν μεταβολὴν, καὶ τῶν μετὰ ταῦτα προϊσταμένων δι᾽ ὑποψίας γενήσεσθαι δικαίας, ὡς μήτε τὴν πρὸς ἐκείνους πίστιν φυλαξόντων.’

18. Οὔπω δέ μοι πάντα λελάλητο, καί τινος ἐξήκουσα τῶν οἰκείων καταβαίνειν κελεύοντος, ‘οὐ γάρ μοι καιρὸν εἶναι φροντίζειν τῆς παρὰ Τιβεριέων εὐνοίας, ἀλλὰ περὶ τῆς ἰδίας σωτηρίας, καὶ πῶς τοὺς ἐχθροὺς ἐκφύγω.’ Ἐπεπόμφει δὲ ὁ Ἰωάννης τῶν περὶ αὐτὸν ὁπλιτῶν ἐπιλέξας τοὺς πιστοτάτους ἐκ τῶν χιλίων, οἵπερ ἦσαν αὐτῷ, καὶ προςέταξε τοῖς πεμφθεῖσιν ἀνελεῖν με, πεπυσμένος ὡς ἐνῆν μετὰ τῶν οἰκείων μεμονωμένος. Ἧκον δ᾽ οἱ πεμφθέντες, καὶ ἂν ἐπεπράχεισαν τὸ ἔργον, εἰ μὴ τοῦ θριγκοῦ θᾶττον ἀφαλλόμενος ἐγὼ μετὰ τοῦ σωματοφύλακος Ἰακώβου, καὶ ὑπό τινος Τιβεριέως Ἡρώδου προςανακουφισθεὶς, ὁδηγηθεὶς τε ὑπὸ τούτου ἐπὶ τὴν λίμνην, καὶ πλοίου λαβόμενος καὶ ἐπιβὰς, παρὰ δόξαν τοὺς ἐχθροὺς διαφυγὼν εἰς Ταριχέας ἀφικόμην.

19. Οἱ δὲ τὴν πόλιν ταύτην κατοικοῦντες ὡς ἐπύθοντο τὴν τῶν Τιβεριέων ἀπιστίαν, σφόδρα παρωξύνθησαν. Ἁρπάσαντες οὖν τὰ ὅπλα παρεκάλουν ‘σφᾶς ἄγειν ἐπ᾽ αὐτοὺς, θέλειν γὰρ ἔφασκον ὑπὲρ τοῦ στρατηγοῦ δίκας λαβεῖν παρ᾽ αὐτῶν.’ Διήγγελλόν τε τὰ γεγονότα καὶ τοῖς κατὰ τὴν Γαλιλαίαν

πᾶσαν, ἐρεθίσαι καὶ τούτους κατὰ τῶν Τιβεριέων διὰ σπουδῆς ἔχοντες. Παρεκάλουν τε πλείστους συναχθέντας ἀφικέσθαι πρὸς αὐτούς, ἵνα μετὰ γνώμης τοῦ στρατηγοῦ πράττωσι τὸ δόξαν. Ἧκον οὖν οἱ Γαλιλαῖοι πολλοὶ πανταχόθεν μεθ᾽ ὅπλων, καὶ παρεκελεύοντό μοι προσβαλεῖν τῇ Τιβεριάδι, καὶ κατὰ κράτος αὐτὴν ἐξελεῖν, καὶ πᾶσαν ἔδαφος ποιήσαντα τοὺς ἐνοίκους σὺν γυναιξὶ καὶ τέκνοις ἀνδραποδίσασθαι. Συνεβούλευον δὲ ταῦτα καὶ τῶν φίλων οἱ ἐκ τῆς Τιβεριάδος διασωθέντες. Ἐγὼ δὲ οὐ συνεπένευον, δεινὸν ἡγούμενος ἐμφυλίου πολέμου κατάρχειν· μέχρι λόγων γὰρ ᾤμην εἶναι δεῖν τὴν φιλονεικίαν. Καὶ μὴν οὐδ᾽ αὐτοῖς ἔφασκον συμφέρειν τοῦτο πρᾶξαι, Ῥωμαίων ταῖς πρὸς ἀλλήλους στάσεσιν αὐτοὺς ἀπολέσθαι προσδοκώντων. Ταῦτα δὲ λέγων ἔπαυσα τῆς ὀργῆς τοὺς Γαλιλαίους.

20. Ὁ δὲ Ἰωάννης, ἀπράκτου τῆς ἐπιβουλῆς αὐτῷ γενομένης, ἔδεισε περὶ ἑαυτοῦ· καὶ τοὺς περὶ αὑτὸν ὁπλίτας ἀναλαβὼν, ἀπῆρεν ἐκ τῆς Τιβεριάδος εἰς τὰ Γίσχαλα, καὶ γράφει πρός με περὶ τῶν πεπραγμένων ἀπολογούμενος, ὡς μὴ κατὰ γνώμην τὴν αὑτοῦ γενομένων. Παρεκάλει τε μηδὲν ὑπονοεῖν κατ᾽ αὐτοῦ, προςτιθεὶς ὅρκους καὶ δεινάς τινας ἀρὰς, δι᾽ ὧν ᾤετο πιστευθήσεσθαι περὶ ὧν ἐπέστειλεν.

21. Οἱ δὲ Γαλιλαῖοι — πολλοὶ γὰρ ἕτεροι πάλιν ἐκ τῆς χώρας πάσης ἀνήχθησαν μεθ᾽ ὅπλων, εἰδότες τὸν ἄνθρωπον, ὡς πονηρός ἐστι καὶ ἐπίορκος — παρεκάλουν 'ἀγαγεῖν σφᾶς ἐπ᾽ αὐτὸν, ἄρδην ἀφανίσειν ἐπαγγελλόμενοι σὺν αὐτῷ καὶ τὰ Γίσχαλα.' Χάριν μὲν οὖν ἔχειν αὐτῶν ταῖς προθυμίαις ὡμολόγουν ἐγὼ, καὶ νικήσειν αὐτῶν τὴν εὔνοιαν ἐπηγγελλόμην, παρεκάλουν δὲ ὅμως 'ἐπισχεῖν αὐτοὺς ἀξιῶν, καὶ συγγινώσκειν μοι δεόμενος προῃρημένῳ τὰς ταραχὰς χωρὶς φόνων καταστέλλειν.' Καὶ πεί-

σας τὸ πλῆθος τῶν Γαλιλαίων εἰς τὴν Σέπφωριν ἀφικνούμην.

22. Οἱ δὲ τὴν πόλιν ταύτην κατοικοῦντες ἄνδρες, κεκρικότες τῇ πρὸς Ῥωμαίους ἐμμεῖναι πίστει, δεδιότες δὲ τὴν ἐμὴν ἄφιξιν, ἐπειράθησαν, ἑτέρᾳ με πράξει περισπάσαντες ἀδεεῖς εἶναι περὶ αὑτῶν. Καὶ δὴ πέμψαντες πρὸς Ἰησοῦν τὸν ἀρχιληστὴν εἰς τὴν Πτολεμαΐδος μεθορίαν, ὑπέσχοντο δώσειν πολλὰ χρήματα θελήσαντι μετὰ τῆς σὺν αὐτῷ δυνάμεως, ἦσαν δὲ ὀκτακόσιοι τὸν ἀριθμόν, πόλεμον ἐξάψαι εἰς ἡμᾶς. Ὁ δὲ ὑπακούσας αὐτῶν ταῖς ὑποσχέσεσιν, ἠθέλησεν ἐπιπεσεῖν ἡμῖν ἀνετοίμοις καὶ μηδὲν προγινώσκουσιν. Πέμψας γοῦν πρός με παρεκάλει λαβεῖν ἐξουσίαν ἀσπασόμενον ἀφικέσθαι. Συγχωρήσαντος δέ μου, τῆς γὰρ ἐπιβουλῆς οὐδὲν προηπιστάμην, ἀναλαβὼν τὸ σύνταγμα τῶν λῃστῶν ἔσπευδεν εἰς ἐμέ. Οὐ μὴν ἔφθασεν αὐτοῦ τέλος λαβεῖν ἡ κακουργία. Πλησιάζοντος γὰρ ἤδη, τῶν σὺν αὐτῷ τις αὐτομολήσας ἧκεν πρός με τὴν ἐπιχείρησιν αὐτοῦ φράζων. Καὶ ἐγὼ πυθόμενος ταῦτα προῆλθον εἰς τὴν ἀγοράν, σκηψάμενος ἀγνοεῖν τὴν ἐπιβουλήν. Ἐπηγόμην δὲ πολλοὺς ὁπλίτας Γαλιλαίους, τινὰς δὲ καὶ Τιβεριέων. Εἶτα προςτάξας τὰς ὁδοὺς πάσας ἀσφαλέστατα φρουρεῖσθαι, παρήγγειλα τοῖς ἐπὶ 11
τῶν πυλῶν, μόνον Ἰησοῦν, ἐπειδὰν παραγένηται, μετὰ τῶν πρώτων εἰςελθεῖν ἐᾶσαι, ἀποκλεῖσαι δὲ τοὺς ἄλλους, βιαζομένους δὲ τύπτειν. Τῶν δὲ τὸ προςταχθὲν ποιησάντων, εἰςῆλθεν ὁ Ἰησοῦς μετ' ὀλίγων. Καὶ κελεύσαντος ἐμοῦ ῥίψαι τὰ ὅπλα θᾶττον, εἰ γὰρ ἀπειθοίη τεθνήξεσθαι, περιεστῶτας ἰδὼν πανταχόθεν αὐτῷ τοὺς ὁπλίτας φοβηθεὶς ὑπήκουσεν. Οἱ δ' ἀποκλεισθέντες τῶν ἐπακολουθούντων, αὐτοῦ πυθόμενοι τὴν σύλληψιν ἔφυγον. Καὶ ἐγὼ προςκαλεσάμενος τὸν Ἰησοῦν κατ' ἰδίαν, ‘οὐκ ἀγνοεῖν ἔφην τὴν ἐπ' ἐμὲ συσκευασθεῖσαν ἐπιβουλήν, οὐδ' ὑπὸ τίνων πεμφθείη· συγγνώσεσθαι δ' ὅμως

αὐτῷ τῶν πεπραγμένων, εἰ μέλλοι μετανοήσειν καὶ πιστὸς ἐμοὶ γενήσεσθαι.' Ὑπισχνουμένου δὴ πάντα ποιήσειν ἐκείνου, ἀπέλυσα, συγχωρήσας αὐτῷ συναγαγεῖν πάλιν οὓς πρότερον εἶχεν. Σεπφωρίταις δ' ἠπείλησα, εἰ μὴ παύσαιντο τῆς ἀγνωμοσύνης, λήψεσθαι παρ' αὐτῶν δίκας.

23. Κατὰ τοῦτον τὸν καιρὸν ἀφικνοῦνται πρός με δύο μεγιστᾶνες τῶν ὑπὸ τὴν ἐξουσίαν τοῦ βασιλέως ἐκ τῆς τῶν Τραχωνιτῶν χώρας, ἐπαγόμενοι τοὺς ἑαυτῶν ἵππους, καὶ ὅπλα καὶ χρήματα δ' ὑποκομίζοντες. Τούτους περιτέμνεσθαι τῶν Ἰουδαίων ἀναγκαζόντων, εἰ θέλουσιν εἶναι παρ' αὐτοῖς, οὐκ εἴασα βιασθῆναι, 'φάσκων δεῖν ἕκαστον ἄνθρωπον κατὰ τὴν ἑαυτοῦ προαίρεσιν τὸν θεὸν εὐσεβεῖν, ἀλλὰ μὴ μετὰ βίας, χρῆναι δὲ τούτους δι' ἀσφάλειαν πρὸς ἡμᾶς καταφεύγοντας μὴ μετανοεῖν.' Πεισθέντος δὲ τοῦ πλήθους, τοῖς ἥκουσιν ἀνδράσι τὰ πρὸς τὴν συνήθη δίαιταν ἅπαντα παρεῖχον δαψιλῶς.

24. Πέμπει δὲ ὁ βασιλεὺς Ἀγρίππας δύναμιν, καὶ στρατηγὸν ἐπ' αὐτῆς Αἴκουον Μόδιον, Γάμαλα τὸ φρούριον ἐξαιρήσοντας. Οἱ δὲ πεμφθέντες κυκλώσασθαι μὲν τὸ φρούριον οὐκ ἤρκεσαν, ἐν δὲ τοῖς φανεροῖς τῶν τόπων ἐφεδρεύοντες ἐπολιόρκουν τὰ Γάμαλα. Αἰβούτιος δὲ ὁ δεκάδαρχος, ὁ τοῦ Μεγάλου πεδίου τὴν προστασίαν πεπιστευμένος, ἀκούσας, ὅτι παρείην εἰς Σιμωνιάδα κώμην ἐν μεθορίοις κειμένην τῆς Γαλιλαίας, αὐτοῦ δ' ἀπέχουσαν ἑξήκοντα σταδίους, νυκτὸς ἀναλαβὼν τοὺς ἑκατὸν ἱππεῖς, οὓς εἶχεν σὺν αὐτῷ, καί τινας πεζοὺς περὶ διακοσίους, καὶ τοὺς ἐν Γαβᾷ πόλει κατοικοῦντας ἐπαγόμενος συμμάχους, νυκτὸς ὁδεύσας, ἧκεν εἰς τὴν κώμην, ἐν ᾗ διέτριβον. Ἀντιπαραταξαμένου δὲ καὶ ἐμοῦ μετὰ δυνάμεως πολλῆς, ὁ μὲν Αἰβούτιος εἰς τὸ πεδίον ὑπάγειν ἡμᾶς ἐπειρᾶτο· σφόδρα γὰρ τοῖς ἱππεῦσιν ἐπεποίθει. Οὐ μὴν ὑπηκούσα-

μεν· ἐγὼ γὰρ τὸ πλεονέκτημα συνιδὼν τὸ γενησό-
μενον τοῖς ἱππεῦσιν, εἰ καταβαίημεν εἰς τὸ πεδίον,
πεζοὶ γὰρ ἡμεῖς σύμπαντες ἦμεν, ἔγνων αὐτοῦ τοῖς
πολεμίοις συνάπτειν, καὶ μέχρι μὲν τινος γενναίως
ἀντέσχεν σὺν τοῖς περὶ αὐτὸν ὁ Αἰβούτιος. Ἀχρεῖον
δὲ ὁρῶν κατὰ τὸν τόπον τοῦτον οὖσαν αὐτῷ τὴν
ἱππικὴν δύναμιν, ἀναζεύγνυσιν ἄπρακτος εἰς Γαβὰν
πόλιν, τρεῖς ἄνδρας ἀποβαλὼν κατὰ τὴν μάχην.
Εἱπόμην δὲ κατὰ πόδας ἐγὼ, δισχιλίους ἐπαγόμενος
ὁπλίτας. Καὶ περὶ Βησαρὰν πόλιν γενόμενος ἐν
μεθορίοις τῆς Πτολεμαΐδος κειμένην, εἴκοσι δ' ἀπέ-
χουσαν στάδια τῆς Γαβᾶς, ἔνθα διέτριβεν ὁ Αἰ- 12
βούτιος, στήσας τοὺς ὁπλίτας ἔξωθεν τῆς κώμης,
καὶ φρουρεῖν αὐτοῖς ἀσφαλῶς τὰς ὁδοὺς προστάξας
ὑπὲρ τοῦ μὴ ἐνοχλῆσαι τοὺς πολεμίους ἡμῖν, ἕως
τὸν σῖτον ἐκφορήσομεν, — πολὺς γὰρ ἀπέκειτο Βε-
ρενίκης τῆς βασιλίδος ἐκ τῶν πέριξ κωμῶν εἰς τὴν
Βησαρὰν συλλεγόμενος, — πληρώσας καμήλους καὶ
τοὺς ὄνους, πολλοὺς δὲ ἐπηγόμην, διέπεμψα τὸν
σῖτον εἰς τὴν Γαλιλαίαν. Τοῦτο δὲ πράξας, προσ-
καλούμην εἰς μάχην τὸν Αἰβούτιον. Οὐχ ὑπακού-
σαντος δ' ἐκείνου, — κατεπέπληκτο γὰρ τὴν ἡμε-
τέραν ἑτοιμότητα καὶ τὸ θάρσος, — ἐπὶ Νεοπο-
λιτανὸν ἐτραπόμην, τὴν Τιβεριέων χώραν ἀκούσας
ὑπ' αὐτοῦ λεηλατεῖσθαι. Ἦν δὲ ὁ Νεοπολιτανὸς
εἴλης μὲν ἔπαρχος, παρειλήφει δὲ τὴν Σκυθόπολιν
εἰς φυλακὴν τὴν ἀπὸ τῶν πολεμίων. Τοῦτον οὖν
κωλύσας ἐπὶ πλέον τὴν Τιβεριάδα κακοῦν, περὶ τὴν
τῆς Γαλιλαίας πρόνοιαν ἐγινόμην.

25. Ὁ δὲ τοῦ Λευὶ παῖς Ἰωάννης, ὃν ἔφαμεν ἐν τοῖς Γισχάλοις διατρίβειν, πυθόμενος πάντα κατὰ νοῦν μοι προχωρεῖν, καὶ δι' εὐνοίας μὲν εἶναί με τοῖς ὑπηκόοις, τοῖς πολεμίοις δὲ δι' ἐκπλήξεως, οὐκ εὖ τὴν γνώμην ἐτέθη. Κατάλυσιν δ' αὐτῷ τὴν ἐμὴν εὐπραγίαν φέρειν νομίζων, εἰς φθόνον ἐξώκειλεν οὔ τι μέτριον· καὶ παύσειν με τῆς εὐτυχίας ἐλπίσας,

εἰ παρὰ τῶν ὑπηκόων μῖσος ἐξάψειεν, ἔπειθεν τοὺς τὴν Τιβεριάδα κατοικοῦντας καὶ τοὺς τὴν Σεπφῶριν, νομίζων πρὸς τούτοις καὶ τοὺς Γαβαρὰ, πόλεις δ' εἰσὶν αὗται τῶν κατὰ τὴν Γαλιλαίαν αἱ μέγισται, τῆς πρός με πίστεως ἀποστάντας αὐτῷ προςτίθεσθαι, 'κρεῖττον γὰρ ἐμοῦ στρατηγήσειν αὐτῶν' ἔφασκεν. Καὶ Σεπφωρεῖς μὲν, οὐδ' ἑτέρῳ γὰρ ἡμῶν προςεῖχον διὰ τὸ Ῥωμαίους ᾑρῆσθαι δεσπότας, οὐκ ἐπένευον αὐτῷ, Τιβεριεῖς δὲ τὴν μὲν ἀπόστασιν οὐκ ἐδέχοντο, καὶ αὐτοῦ δὲ συγκατένευον γενήσεσθαι φίλοι. Οἱ δὲ Γάβαρα κατοικοῦντες προςτίθενται τῷ Ἰωάννῃ. Σίμων δ' ἦν ὁ παρακαλῶν αὐτοὺς, πρωτεύων μὲν τῆς πόλεως, ὡς φίλῳ δὲ καὶ ἑταίρῳ τῷ Ἰωάννῃ χρώμενος. Ἐκ μὲν οὖν τοῦ φανεροῦ τὴν ἀπόστασιν οὐχ ὡμολόγουν, σφόδρα γὰρ ἐδεδοίκεσαν τοὺς Γαλιλαίους, ἅτε δὴ πεῖραν αὐτῶν τῆς πρὸς ἐμὲ πολλάκις εὐνοίας λαβόντες. Ἐκ τοῦ λεληθότος δὲ καιρὸν παραφυλάσσοντες ἐπιτήδειον ἐπεβούλευον. Καὶ δὴ ἀφικόμην εἰς κίνδυνον τὸν μέγιστον διὰ τοιαύτην αἰτίαν.

26. Νεανίσκοι τινὲς θρασεῖς, Δαβαριττηνοὶ γένος, ἐπιτηρήσαντες τὴν Πτολεμαίου γυναῖκα, τοῦ βασιλέως ἐπιτρόπου, μετὰ πολλῆς παρασκευῆς καί τινων ἱππέων ἀσφαλείας χάριν ἑπομένων, διὰ τοῦ Μεγάλου πεδίου τὴν πορείαν ποιουμένην, ἐκ τῆς τοῖς βασιλεῦσι ὑποτελοῦς χώρας εἰς τὴν Ῥωμαίων ἐπικράτειαν, ἐπιπίπτουσιν αὐτοῖς ἄφνω. Καὶ τὴν μὲν γυναῖκα φεύγειν ἠνάγκασαν, ὅσα δ' ἐπεφέρετο πάντα διήρπασαν. Καὶ ἧκον εἰς Ταριχέας πρός με τέσσαρας ἡμιόνους καταφόρτους ἄγοντες ἐσθῆτος καὶ σκευῶν· ἦν δὲ καὶ ἀργυρίου σταθμὸς οὐκ ὀλίγος, καὶ χρυσοῖ πεντακόσιοι. Ταῦτ' ἐγὼ βουλόμενος διαφυλάξαι τῷ Πτολεμαίῳ — καὶ γὰρ ἦν ὁμόφυλος, ἀπηγόρευται δ' ἡμῖν ὑπὸ τῶν νόμων μηδὲ τοὺς ἐχθροὺς ἀποστερεῖν — 'πρὸς μὲν τοὺς κομίσαντας ἔφην αὐτὰ φυλάττειν δεῖν, ἵνα ἐκ τῆς πράσεως αὐ-

τῶν ἐπισκευασθῇ τὰ τείχη τῶν Ἱεροσολύμων.’ Οἱ
δὲ νεανίαι χαλεπῶς ἔσχον, οὐ λαβόντες μοῖραν ἐκ
τῶν λαφύρων, καθάπερ προςεδόκησαν. Καὶ πορευ-
θέντες εἰς τὰς πέριξ τῆς Τιβεριάδος κώμας, ‘προ-
διδόναι μέλλειν με Ῥωμαίοις τὴν χώραν αὐτῶν ἔλε- 13
γον. κεχρῆσθαι γὰρ σοφίσματι πρὸς αὐτοὺς, λέ-
γοντα, τὰ ἐκ τῆς ἁρπαγῆς κομισθέντα φυλάττειν εἰς
τὴν ἐπισκευὴν τῶν τειχῶν τῆς Ἱεροσολυμιτῶν πό-
λεως, ἐγνωκέναι δὲ πάλιν τῷ δεσπότῃ ἀποδοῦναι τὰ
ἡρπασμένα.’ Καὶ κατὰ τοῦτό γε τῆς ἐμῆς γνώμης
οὐ διήμαρτον· ἀπαλλαγέντων γὰρ αὐτῶν, μεταπεμ-
ψάμενος δύο τοὺς πρώτους Δασσίωνα καὶ Ἰανναῖον
τὸν τοῦ Λευῒ, φίλους ἐν τοῖς μάλιστα τοῦ βασιλέ-
ως καθεστῶτας, τὰ ἐκ τῆς ἁρπαγῆς σκεύη λαβόντας
διαπέμψασθαι πρὸς ἐκεῖνον ἐκέλευον, θάνατον ἀπει-
λήσας αὐτοῖς τὴν ζημίαν, εἰ πρὸς ἕτερον ταῦτα
ἀπαγγελοῦσιν.

27. Ἐπισχούσης δὲ φήμης τὴν Γαλιλαίαν ἅπασαν, ὡς τῆς χώρας αὐτῶν μελλούσης ὑπ᾽ ἐμοῦ ταῖς Ῥωμαίοις προδίδοσθαι, καὶ πάντων παροξυνθέντων ἐπὶ τὴν ἐμὴν τιμωρίαν, οἱ τὰς Ταριχέας κατοικοῦντες, καὶ αὐτοὶ τοὺς νεανίσκους ἀληθεύειν ὑπολαμβάνοντες, πείθουσι τοὺς σωματοφύλακας καὶ τοὺς ὁπλίτας, κοιμώμενόν με καταλιπόντας παραγενέσθαι θᾶττον εἰς ἱππόδρομον, ὡς ἐκεῖ βουλευσομένους μετὰ πάντων κατὰ τοῦ στρατηγοῦ. Πειθομένων δὲ τούτων καὶ συνελθόντων, πολὺς ὄχλος ἤδη προσυνήθροιστο, μίαν τε πάντες ἐποιοῦντο φωνὴν, κολάζειν τὸν προδότην πονηρὸν περὶ αὐτοὺς γεγενημένον. Μάλιστα δὲ αὐτοὺς ἐξέκαιεν ὁ τοῦ Σαπφία παῖς Ἰησοῦς, ἄρχων τότε τῆς Τιβεριάδος, πονηρὸς ἄνθρωπος, καὶ ταράξαι μεγάλα πράγματα φύσιν ἔχων, στασιοποιός τε καὶ νεωτεριστὴς ὡς οὐχ ἕτερος. Καὶ τότε δὴ λαβὼν εἰς χεῖρας τοὺς Μωϋσέως νόμους, καὶ προςελθὼν εἰς μέσον, “Εἰ μὴ ὑπὲρ αὐτῶν,” ἔφη, “πολῖται, μισεῖν δύνασθε Ἰώσηπον, εἰς τοὺς

*πατρίους ἀποβλέψαντες νόμους, ὧν ὁ πρῶτος ὑμῶν
στρατηγὸς προδότης ἔμελλε γίνεσθαι, καὶ μισοπονη-
ρήσαντες ὑπὲρ τούτων, τιμωρήσασθε τὸν τοιαῦτα
τολμήσαντα."*

28. *Ταῦτ' εἰπὼν, καὶ τοῦ πλήθους ἐπιβοήσαν-
τος, ἀναλαβὼν τινας ὁπλίτας, ἐπὶ τὴν οἰκίαν, ἐν
ᾗ κατηγόμην, ἔσπευδεν ὡς ἀναιρήσων. Ἐγὼ δ'
οὐδὲν προαισθόμενος διὰ κόπον πρὸ τῆς ταραχῆς
κατεσχήμην. Σίμων δὲ, ὁ τοῦ σώματός μου τὴν
φυλακὴν πεπιστευμένος, ὁ καὶ μόνος παραμείνας,
ἰδὼν τὴν ἐπιδρομὴν τῶν πολιτῶν, διεγείρει με καὶ
τὸν ἐφεστῶτά μοι κίνδυνον ἐξαγγέλλει. Ἠξίου τε
'γενναίως θνήσκειν ὡς στρατηγὸν ὑπ' αὐτοῦ, πρὶν
διελθεῖν τοὺς ἐχθροὺς ἀναγκάσοντας, ἢ κτενοῦντας.'
Ὁ μὲν ταῦτα ἔλεγεν, ἐγὼ δὲ, τῷ θεῷ τὰ κατ' ἐμαυ-
τὸν ἐπιτρέψας, εἰς τὸ πλῆθος ὡρμήθην προελθεῖν.
Μετενδὺς οὖν μέλαιναν ἐσθῆτα, καὶ τὸ ξίφος ἀπαρ-
τησάμενος ἐκ τοῦ αὐχένος, καθ' ὁδὸν ἑτέραν, ᾗ
μηδένα μοι τῶν πολεμίων ὑπαντιάσειν ᾤμην, ᾔειν
εἰς τὸν ἱππόδρομον· ἄφνω τε φανεὶς, καὶ πρηνὴς
πεσὼν, καὶ τὴν γῆν δάκρυσι φύρων, ἐλεεινὸς ἔδοξα
πᾶσιν. Συνεὶς δὲ τοῦ πλήθους τὴν μεταβολὴν διϊ-
στάναι τὰς γνώμας αὐτῶν ἐπειρώμην πρὸ τοῦ τοὺς
ὁπλίτας ἀπὸ τῆς οἰκίας ὑποστρέψαι. Καὶ συνεχώ-
ρουν μὲν 'ἀδικεῖν, ὡς αὐτοὶ νομίζουσιν· ἐδεόμην
δὲ διδάξαι πρότερον, εἰς τίνα χρείαν ἐφύλαττον τὰ
ἐκ τῆς ἁρπαγῆς κομισθέντα χρήματα, καὶ τότε θνή-
14 σκειν, εἰ κελεύοιεν.' Τοῦ δὲ πλήθους λέγειν κελεύ-
οντος, ἐπῆλθον οἱ ὁπλῖται, καὶ θεασάμενοί με,
προσέτρεχον ὡς κτενοῦντες. Ἐπισχεῖν δὲ τοῦ πλή-
θους κελεύοντος, ἐπείσθησαν, προσδοκῶντες, ἐπει-
δὰν ὁμολογήσω πρὸς αὐτοὺς τὰ χρήματα τῷ βασι-
λεῖ τετηρηκέναι, ὡς ὡμολογηκότα τὴν προδοσίαν
ἀναιρήσειν.*

29. *Σιγῆς οὖν παρὰ πάντων γενομένης, "Ἄν-
δρες," εἶπον, "ὁμόφυλοι, θανεῖν μὲν, εἰ δίκαιόν*

ἐστιν, οὐ παραιτοῦμαι. Βούλομαι δὲ ὅμως πρὸ τοῦ τελευτῆσαι τὴν ἀλήθειαν φράσαι πρὸς ὑμᾶς. Τὴν γὰρ πόλιν ταύτην φιλοξενωτάτην οὖσαν ἐπιστάμενος, πληθύουσάν τε τοσούτων ἀνδρῶν, οἳ τὰς ἑαυτῶν πατρίδας καταλιπόντες ἀφίκοντο κοινωνοὶ τῆς ὑμετέρας γενόμενοι τύχης, ἐβουλήθην τείχη κατασκευάσαι ἐκ τῶν χρημάτων τούτων, περὶ ὧν ἡ παρ' ὑμῶν ἐστιν ὀργὴ δαπανωμένων εἰς τὴν οἰκοδομίαν αὐτῶν." Πρὸς ταῦτα παρὰ μὲν τῶν Ταριχεατῶν καὶ ξένων ἐγείρεται φωνὴ, χάριν ἔχειν ὁμολογούντων καὶ θαῤῥεῖν προτρεπομένων. Γαλιλαῖοι δὲ καὶ Τιβεριεῖς τοῖς θυμοῖς ἐπέμενον, καὶ γίνεται στάσις πρὸς ἀλλήλους, τῶν μὲν κόλασιν ἀπειλούντων, τῶν δὲ καταφρονεῖν. Ἐπεὶ δὲ ἐπηγγειλάμην καὶ Τιβεριάδι κατασκευάσειν τείχη, καὶ ταῖς ἄλλαις πόλεσιν αὐτῶν ταῖς ἀναγκαίαις, πιστεύσαντες ὑπεχώρουν ἕκαστος εἰς τὴν ἑαυτοῦ· καὶ ἐγὼ παρὰ πᾶσαν ἐλπίδα διαφυγὼν τὸν προειρημένον κίνδυνον, μετὰ τῶν φίλων καὶ ὁπλιτῶν εἴκοσιν εἰς τὴν οἰκίαν ὑπέστρεψα.

30. Πάλιν δὲ οἱ λῃσταὶ καὶ τῆς στάσεως αἴτιοι δείσαντες περὶ ἑαυτῶν, μὴ δίκας εἰςπραχθῶσιν ὑπ' ἐμοῦ τῶν πεπραγμένων, ἀναλαβόντες ἑξακοσίους ὁπλίτας ἧκον ἐπὶ τὴν οἰκίαν, ἔνθα διέτριβον, ἐμπρήσοντες αὐτήν. Ἀπαγγελθείσης δέ μοι τῆς ἐφόδου, φεύγειν μὲν ἀπρεπὲς ἡγησάμην. Ἔκρινα δὲ παραβαλλόμενος χρήσασθαί τι καὶ τόλμῃ. Προστάξας οὖν ἀποκλεῖσαι τῆς οἰκίας τὰς θύρας, αὐτὸς ἐπὶ τὸ ὑπερῷον ἀναβὰς παρεκάλουν εἰςπέμψαι τινὰς ληψομένους τὰ χρήματα, 'παύσασθαι γὰρ οὕτως τῆς ὀργῆς αὐτοὺς ἔφην.' Εἰςπεμψάντων δὲ τὸν θρασύτατον αὐτῶν μάστιξιν αἰκισάμενος, τὴν ἑτέραν τε τῶν χειρῶν ἀποκόψαι κελεύσας, καὶ κρεμάσας ἐκ τοῦ τραχήλου, τοιοῦτον ἐξέβαλον πρὸς τοὺς ἀποστείλαντας. Τοὺς δ' ἔλαβεν ἔκπληξις, καὶ φόβος οὔ τι μέτριος. Δείσαντες οὖν καὶ αὐτοὶ ταὐτὰ πείσεσθαι, εἰ μένοιεν, εἴκαζον γὰρ ἔνδον ἔχειν με πλεί-

ους αὐτῶν ὁπλίτας, εἰς φυγὴν ὥρμησαν· καὶ ἐγὼ τοιούτῳ στρατηγήματι χρησάμενος τὴν δευτέραν ἐπιβουλὴν διέφυγον.

31. Πάλιν δὲ τὸν ὄχλον τινὲς ἠρέθιζον, τοὺς ἀφικομένους πρός με βασιλικοὺς μεγιστάνας οὐκ ὀφείλειν ζῆν λέγοντες, μὴ μεταβῆναι θέλοντας εἰς τὰ παρ᾽ αὐτοῖς ἔθη, πρὸς οὓς σωθησόμενοι πάρεισι. Διέβαλλόν τε φαρμακέας εἶναι λέγοντες, καὶ κελεύοντας τοὺς Ῥωμαίους παραγενέσθαι. Ταχὺ δὲ τὸ πλῆθος ἐπείθετο, ταῖς τῶν λεγομένων πρὸς χάριν αὐτοῖς πιθανότησιν ἀπατώμενοι. Πυθόμενος δὲ περὶ τούτων, ἐγὼ πάλιν τὸν δῆμον ἀνεδίδασκον ʽμὴ δεῖν διώκεσθαι τοὺς καταφυγόντας πρὸς αὐτούς· τὸ δὲ φλύαρον τῆς περὶ τῶν φαρμάκων αἰτίας διέσυρον, οὐκ ἂν τοσαύτας μυριάδας στρατιωτῶν Ῥωμαίους λέγων τρέφειν, εἰ διὰ φαρμακέων ἦν νικᾶν τοὺς πολεμίους.᾽ Ταῦτα λέγοντος ἐμοῦ, πρὸς ὀλίγον μὲν ἐπείθοντο· πάλιν δ᾽ ἀναχωρήσαντες ὑπὸ τῶν πονηρῶν ἐξηρεθίζοντο κατὰ τῶν μεγιστάνων. Καί ποτε μεθ᾽ ὅπλων ἐπὶ τὴν οἰκίαν αὐτῶν τὴν ἐν Ταριχέᾳ ἐπῆλθον, ὡς ἀναιρήσοντες. Ἔδεισα δ᾽ ἐγὼ πυθόμενος, μὴ, τοῦ μύσους τέλος λαβόντος, ἀνεπίβατος γένηται τοῖς καταφυγεῖν εἰς αὐτὴν θέλουσιν. Παρεγενόμην οὖν εἰς τὴν τῶν μεγιστάνων οἰκίαν μετά τινων ἑτέρων, καὶ κλείσας, διώρυγά τε ποιήσας ἀπ᾽ αὐτῆς ἐπὶ τὴν λίμνην ἄγουσαν, μεταπεμψάμενός τε πλοῖον, καὶ σὺν αὐτοῖς ἐμβὰς, ἐπὶ τὴν μεθόριον τῶν Ἱππηνῶν διεπέρασα, καὶ δοὺς αὐτοῖς τὴν τιμὴν τῶν ἵππων — οὐ γὰρ ἠδυνήθην αὐτοὺς ἐπαγαγέσθαι, τοιαύτης γενομένης τῆς ἀποδράσεως — ἀπέλυσα, πολλὰ παρακαλέσας τὴν προσπεσοῦσαν ἀνάγκην γενναίως ἐνεγκεῖν. Αὐτός τε μεγάλως ἠχθόμην, βιασθεὶς τοὺς προσφυγόντας ἐκθεῖναι πάλιν εἰς τὴν πολεμίαν, ἄμεινον δ᾽ εἶναι νομίσας παρὰ Ῥωμαίοις ἀποθανεῖν αὐτοὺς, εἰ συμπέσοι, μᾶλλον ἢ κατὰ τὴν ἐμὴν χώραν. Οἱ δ᾽ ἄρα

διεσώθησαν· συνεχώρησε γὰρ αὐτοῖς βασιλεὺς Ἀγρίππας τὰ ἡμαρτημένα. Καὶ τὰ μὲν περὶ ἐκείνους τοῦτ᾽ ἔσχε τὸ τέλος.

32. Οἱ δὲ τὴν τῶν Τιβεριέων πόλιν κατοικοῦντες γράφουσι πρὸς τὸν βασιλέα, παρακαλοῦντες 'πέμψαι δύναμιν τὴν φυλάξουσαν αὐτῶν τὴν χώραν· θέλειν γὰρ αὐτῷ προςτίθεσθαι.' Καὶ ἐκείνῳ μὲν ταῦτ᾽ ἔγραφον. Ἀφικόμενον δέ με πρὸς αὐτοὺς παρεκάλουν τὰ τείχη κατασκευάζειν αὐτοῖς, ὡς ὑπεσχόμην· ἠκηκόεσαν δὲ τὰς Ταριχέας ἤδη τετειχίσθαι. Κατανεύσας οὖν ἐγὼ, καὶ πάντα τὰ πρὸς τὴν οἰκοδομίαν παρασκευασάμενος, τοὺς ἀρχιτέκτονας ἐκέλευον ἐνεργεῖν. Μετὰ δὲ τρίτην ἡμέραν εἰς Ταριχέας ἀπερχομένου μου, τῆς Τιβεριάδος ἀπεχούσας στάδια τριάκοντα, συνέβη τινὰς Ῥωμαίων ἱππεῖς οὐ πόῤῥωθεν τῆς πόλεως ὁδοιποροῦντας ὀφθῆναι, οἳ δόξαν παρέσχον τὴν παρὰ τοῦ βασιλέως δύναμιν ἥκειν. Εὐθέως γοῦν εἰς μὲν τὸν βασιλέα μετὰ πολλῶν ἐπαίνων ἠφίεσαν φωνὰς, κατ᾽ ἐμοῦ δὲ βλασφήμους. Καὶ ἐπιδραμών τις ἀπήγγειλέν μοι τὴν διάνοιαν αὐτῶν, ὡς ἀφίστασθαί μου διεγνώκασιν. Ἐγὼ δ᾽ ἀκούσας ἐταράχθην μὲν σφόδρα· τοὺς γὰρ ὁπλίτας ἔτυχον ἐκ τῶν Ταριχεῶν ἐπὶ τὰς αὐτῶν οἰκήσεις ἀφεικὼς, διὰ τὸ τὴν ἐπιοῦσαν ἡμέραν σάββατον ὑπάρχειν· οὐ γὰρ ἐβουλόμην ὑπὸ τοῦ στρατιωτικοῦ πλήθους ἐνοχλεῖσθαι τοὺς ἐν ταῖς Ταριχέαις. Ὁσάκις γοῦν ἐν αὐταῖς διέτριβον, οὐδὲ τῆς περὶ τὸ σῶμα φυλακῆς ἐποιούμην πρόνοιαν, πεῖραν παρὰ τῶν ἐνοικούντων τῆς πρός με πίστεως λαβὼν πολλάκις. Μόνους δ᾽ ἔχων περὶ ἐμαυτὸν ἑπτὰ τῶν ὁπλιτῶν καὶ τοὺς φίλους, ἠπόρουν, ὅ πράξω· μεταπέμπεσθαι γὰρ τὴν ἐμὴν δύναμιν διὰ τὸ λήγειν ἤδη τὴν ἐνεστῶσαν ἡμέραν οὐκ ἐδοκίμαζον, οὐδὲ γὰρ ἀφικομένης αὐτῆς εἰς τὴν ἐπιοῦσαν ὅπλα λαβεῖν, κωλυόντων ἡμᾶς τῶν νόμων, καὶ ἐὰν μεγάλη τις ἐπείγειν ἀνάγκη δοκῇ. Εἰ δὲ ταῖς Ταριχεάταις καὶ

16 τοῖς παρ᾽ αὐτοῖς ξένοις ἐπιτρέψαιμι τὴν πόλιν διαρπάζειν, ἑώρων οὐχ ἱκανοὺς ἐσομένους, τὴν δὲ ἐμὴν ὑπέρθεσιν ἑώρων μακροτάτην· φθήσεσθαι γὰρ καὶ τὴν παρὰ βασιλέως δύναμιν ἀφικνουμένην, καὶ ἐκπεσεῖσθαι τῆς πόλεως ᾠόμην. Ἐβουλευόμην οὖν στρατηγήματι χρῆσθαί τινι κατ᾽ αὐτῶν. Παραχρῆμα δὴ τοὺς πιστοτάτους τῶν φίλων ταῖς πύλαις τῶν Ταριχεῶν ἐπιστήσας φυλάξοντας μετ᾽ ἀσφαλείας τοὺς ἐξιέναι θέλοντας, καὶ τοὺς πρώτους τῶν οἴκων προςκαλεσάμενος, αὐτῶν ἕκαστον ἐκέλευσα καθελκύσαντα πλοῖον, ἐμβάντα συνεπαγόμενον τὸν κυβερνήτην ἕπεσθαί μοι πρὸς τὴν Τιβεριέων πόλιν. Καὶ αὐτὸς δὲ μετὰ τῶν φίλων καὶ ὁπλιτῶν, οὓς ἔφην ἑπτὰ τὸν ἀριθμὸν εἶναι, ἐμβὰς ἔπλεον ἐπὶ τὴν Τιβεριάδα.

33. Τιβεριεῖς δὲ τὴν παρὰ τοῦ βασιλέως δύναμιν ὡς ἔγνωσαν οὐχ ἥκουσαν αὐτοῖς, πλοίων δὲ τὴν λίμνην πᾶσαν ἐθεάσαντο πλήρη, δείσαντες περὶ τῇ πόλει καὶ καταπλαγέντες, ὡς ἐπιβατῶν πλήρεις εἶεν αἱ νῆες, μετατίθενται τὰς γνώμας. Ῥίψαντες οὖν τὰ ὅπλα, μετὰ γυναικῶν καὶ παίδων ὑπηντίαζον, πολλὰς μετ᾽ ἐπαίνων φωνὰς εἰς ἐμὲ ἀφιέντες, — εἴκαζον γὰρ οὐ προπεπύσθαι με τὴν διάνοιαν αὐτῶν, — καὶ παρεκάλουν φείσασθαι τῆς πόλεως. Ἐγὼ δὲ πλησίον γενόμενος, ἀγκύρας μὲν ἔτι πόῤῥω τῆς γῆς ἐκέλευον βαλέσθαι τοὺς κυβερνήτας, ὑπὲρ τοῦ μὴ κατάδηλα τοῖς Τιβεριεῦσιν εἶναι τὰ πλοῖα κενὰ τῶν ἐπιβατῶν ὄντα. Πλησιάσας δ᾽ αὐτὸς ἔν τινι πλοίῳ κατεμεμφόμην αὐτῶν τὴν ἄγνοιαν, καὶ ὅτι δὴ οὕτως εὐχερεῖς εἶεν πάσης δικαίας ἄνευ προφάσεως ἐξίστασθαι τῆς πρός με πίστεως. Ὡμολόγουν δ᾽ εἴς τε τὸ λοιπὸν αὐτοῖς συγγνώσεσθαι βεβαίως, εἰ πέμψειαν δέκα τοῦ πλήθους προεστῶτας. Ὑπακουσάντων δὲ ἑτοίμως καὶ πεμψάντων ἄνδρας, οὓς προεῖπον, ἐμβιβάσας ἀπέλυον εἰς Ταριχέας φυλαχθησομένους.

34. Τῷ στρατηγήματι δὲ τούτῳ τὴν βουλὴν πᾶσαν κατ᾽ ὀλίγους λαβὼν, εἰς τὴν προειρημένην

πόλιν καὶ μετ᾽ αὐτῶν τοὺς πολλοὺς τοῦ δήμου πρώτους ἄνδρας οὐκ ἐλάττους ἐκείνων ὄντας διεπεμψάμην. Τὸ δὲ πλῆθος, ὡς εἶδον, εἰς οἵων κακῶν ἥκουσι μέγεθος, παρεκάλουν με τὸν αἴτιον τῆς στάσεως τιμωρήσασθαι. Κλεῖτος δ᾽ ἦν ὄνομα τούτῳ, θρασύς τε καὶ προπετὴς νεανίας. Ἐγὼ δ᾽ ἀποκτεῖναι μὲν οὐχ ὅσιον ἡγούμενος ὁμόφυλον ἄνδρα, κολάσαι δ᾽ ἀνάγκην ἔχων, τῶν περὶ ἐμέ τινι σωματοφυλάκων Λευί προςέταξα προςελθόντι κόψαι τοῦ Κλείτου τὴν ἑτέραν τῶν χειρῶν. Δείσαντος δὲ τοῦ κελευσθέντος εἰς τοσοῦτο πλῆθος προδιελθεῖν μόνου, τὴν δειλίαν τοῦ στρατιώτου μὴ βουληθεὶς κατάδηλον γενέσθαι τοῖς Τιβεριεῦσιν, αὐτὸν Κλεῖτον φωνήσας, "Ἐπειδὴ καὶ ἄξιος," εἶπον, "ὑπάρχεις ἀμφοτέρας τὰς χεῖρας ἀποβαλεῖν, οὕτως ἀχάριστος εἰς ἐμὲ γενόμενος, γενοῦ σαυτοῦ δήμιος, μὴ καὶ ἀπειθήσας χείρονα τιμωρίαν ὑπόσχῃς." Τοῦ δὲ τὴν ἑτέραν αὐτῷ συγχωρῆσαι πολλὰ δεομένου, μόλις κατένευσα. Καὶ ἐκεῖνος ἄσμενος, ὑπὲρ τοῦ μὴ τὰς δύο χεῖρας ἀποβαλεῖν, λαβὼν μάχαιραν κόπτει τὴν ἀριστερὰν ἑαυτοῦ. Καὶ τοῦτο τὴν στάσιν ἔπαυσεν.

35. Τιβεριεῖς δὲ, ὡς εἰς τὰς Ταριχέας ἀφικόμην, γνόντες τὴν στρατηγίαν, ᾗ κατ᾽ αὐτῶν ἐχρησάμην, ἀπεθαύμαζον, ὅτι χωρὶς φόνων ἔπαυσα τὴν 17
ἀγνωμοσύνην αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ τοὺς ἐκ τῆς εἱρκτῆς μεταπεμψάμενος τοῦ πλήθους τῶν Τιβεριέων, ἦν δὲ σὺν αὐτοῖς Ἰοῦστος καὶ ὁ πατὴρ αὐτοῦ Πιστὸς, συνδείπνους ἐποιησάμην· καὶ παρὰ τὴν ἑστίασιν ἔλεγον, ὅτι 'τὴν Ῥωμαίων δύναμιν οὐδ᾽ αὐτὸς ἀγνοῶ πασῶν διαφέρουσαν, σιγώην μέντοι διὰ τοὺς λῃστὰς περὶ αὐτῆς.' Καὶ αὐτοῖς δὲ ταὐτὰ συνεβούλευον ποιεῖν 'τὸν ἐπιτήδειον περιμένουσι καιρὸν, καὶ μὴ δυςανασχετεῖν ἐμοὶ στρατηγῷ· μηδενὸς γὰρ αὐτοὺς ἑτέρου δυνήσεσθαι ῥᾳδίως ἐπιεικοῦς ὁμοίως τυχεῖν. Τὸν Ἰοῦστον δὲ καὶ ὑπεμίμνησκον, ὅτι πρόσθεν ἢ με παραγενέσθαι ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων οἱ Γαλιλαῖοι

τοῦ ἀδελφοῦ τὰς χεῖρας ἀποκόψειαν αὐτοῦ, πρὸ τοῦ πολέμου πλαστῶν αὐτῷ γραμμάτων κακουργίαν ἐπικαλέσαντες· καὶ ὅτι μετὰ τὴν ἀναχώρησιν τὴν Φιλίππου Γαμαλῖται πρὸς Βαβυλωνίους στασιάζοντες ἀνέλοιεν Χάρητα, — συγγενὴς δ' ἦν οὗτος τοῦ Φιλίππου, — καὶ ὡς Ἰησοῦν τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ, ἄνδρα τῆς ἀδελφῆς Ἰούστου, σωφρόνως κολάσειαν.' Ταῦτα παρὰ τὴν ἑστίασιν διαλεχθεὶς, τοὺς περὶ τὸν Ἰοῦστον ἕωθεν ἐκέλευσα πάντας τῆς φυλακῆς ἀπολυθῆναι.

36. Πρὸ δὲ τούτων συνέβη τὸν Ἰακίμου Φίλιππον ἀπελθεῖν ἐκ Γάμαλα τοῦ φρουρίου, τοιαύτης αἰτίας γενομένης. Φίλιππος, πυθόμενος μεταστῆναι μὲν Οὔαρον ἀπὸ τοῦ βασιλέως Ἀγρίππα, διάδοχον δὲ ἀφῖχθαι Μόδιον Αἴκουον, ἄνδρα φίλον αὐτῷ καὶ συνήθη πάλαι, γράφει πρὸς τοῦτον τὰς καθ' ἑαυτὸν τύχας ἀπαγγέλλων, καὶ παρακαλῶν τὰ παρ' αὐτοῦ πεμφθέντα γράμματα πρὸς τοὺς βασιλέας ἀποστεῖλαι. Καὶ Μόδιος δεξάμενος τὰς ἐπιστολὰς ἐχάρη σφόδρα, σώζεσθαι τὸν Φίλιππον ἐξ αὐτῶν ἐπιγνοὺς, καὶ πρὸς τοὺς βασιλέας ἔπεμψε τὰ γράμματα, περὶ Βηρυτὸν ὄντας. Ὁ δὲ βασιλεὺς Ἀγρίππας ὡς ἔγνω ψευδῆ τὴν περὶ Φιλίππου φήμην γενομένην, — λόγος γὰρ διῆλθεν, ὡς στρατηγοίη τῶν Ἰουδαίων ἐπὶ τὸν πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον, — ἔπεμψεν ἱππεῖς τοὺς παραπέμψαντας τὸν Φίλιππον. Καὶ παραγενόμενον ἀσπάζεταί τε φιλοφρόνως, τοῖς τε Ῥωμαίων ἡγεμόσιν ἐπεδείκνυεν, ὅτι δὴ Φίλιππος οὗτός ἐστιν, περὶ οὗ διεξήει λόγος ὡς Ῥωμαίων ἀποστάντος. Κελεύει δὲ αὐτὸν ἱππεῖς τινας ἀναλαβόντα θᾶττον εἰς Γάμαλα τὸ φρούριον πορευθῆναι, τοὺς οἰκείους αὐτῷ πάντας ἐκεῖθεν ἐξάξοντα, καὶ τοὺς Βαβυλωνίους εἰς τὴν Βαταναίαν πάλιν ἀποκαταστήσοντα. Παρήγγειλε δὲ καὶ πᾶσαν ποιήσασθαι πρόνοιαν ὑπὲρ τοῦ μὴ γίνεσθαί τινα νεωτερισμὸν παρὰ τῶν ὑπηκόων. Φίλιππος μὲν οὖν, ταῦ-

τα τοῦ βασιλέως ἐπιστείλαντος, ἔσπευδε ποιήσων ἃ προςέταξεν.

37. Ἰώσηπος δὲ τῆς ἰατρίνης πολλοὺς νεανίσκους θρασεῖς προτρεψάμενος αὐτῷ συνάρασθαι, καὶ ἐπαναστὰς τοῖς ἐν Γάμαλα πρώτοις, ἔπειθεν αὐτοῖς ἀφίστασθαι τοῦ βασιλέως, καὶ ἀναλαβεῖν τὰ ὅπλα, ὡς δι' αὐτοῦ τὴν ἐλευθερίαν ἀποληψομένους. Καί τινας μὲν ἐβιάσαντο, τοὺς δὲ μὴ συναρεσκομένους αὐτῶν ταῖς γνώμαις ἀνήρουν. Κτείνουσι δὲ καὶ Χάρητα, καὶ μετ' αὐτοῦ τινα τῶν συγγενῶν Ἰησοῦν, καὶ Ἰούστου δὲ τοῦ Τιβεριέως ἀδελφὸν ἀνεῖλον, καθὼς ἤδη προείπομεν. Γράφουσι δὲ καὶ πρός με, παρακαλοῦντες πέμψαι δύναμιν αὐτοῖς ὁπλιτῶν, καὶ τοὺς ἀναστήσοντας αὐτῶν τῇ πόλει 18
τείχη. Καὶ ἐγὼ πρὸς οὐδέτερον ἀντεῖπον ὧν ἠξίωσαν. Ἀφίσταται δὲ τοῦ βασιλέως καὶ ἡ Γαυλανῖτις χώρα μέχρι κώμης Σολύμης. Σελευκείᾳ δὲ καὶ Σωγάνῃ φύσει κώμαις ὀχυρωτάταις ᾠκοδόμησα τείχη. Τάς τε κατὰ τὴν ἄνω Γαλιλαίαν κώμας, καὶ πάνυ πετρώδεις οὔσας, ἐτείχισα παραπλησίως. Ὀνόματα δ' αὐταῖς Ἰάμνια, Μηρὼθ, Ἀχαβάρη. Ὠχύρωσα, δὲ καὶ τὰς ἐν τῇ κάτω Γαλιλαίᾳ, πόλεις μὲν Ταριχέας, Τιβεριάδα, Σεπφῶριν, κώμας δὲ Ἀρβήλων σπήλαιον, Βηρσοβὲ, Σελαμὶν, Ἰωτάπατα, Καφαρεκχὼ, καὶ Σιγὼ, καὶ Ἰαφὰ, καὶ τὸ Ἰταβύριον ὄρος. Εἰς ταύτας καὶ σῖτον ἀπεθέμην πολὺν, καὶ ὅπλα πρὸς ἀσφάλειαν τὴν μετὰ ταῦτα.

38. Ἰωάννῃ δὲ τῷ τοῦ Λευῒ τὸ κατ' ἐμοῦ μῖσος μᾶλλον προςηύξετο, βαρέως φέροντι τὴν ἐμὴν εὐπραγίαν. Προθέμενος οὖν πάντως ἐκποδὼν με ποιήσασθαι, τῇ μὲν αὐτοῦ πατρίδι τοῖς Γισχάλοις κατασκευάζει τείχη. Τὸν ἀδελφὸν δὲ Σίμωνα, καὶ τὸν τοῦ Σισέννα Ἰωνάθην, καὶ ὁπλίτας περὶ ἑκατὸν εἰς Ἱεροσόλυμα πέμπει πρὸς τὸν τοῦ Γαμαλιήλου Σίμωνα, παρακαλέσοντας αὐτὸν πεῖσαι τὸ κοινὸν τῶν Ἱεροσολυμιτῶν, τὴν ἀρχὴν ἀφελομένους

ἐμὲ τῶν Γαλιλαίων, αὐτῷ ψηφίσασθαι τὴν ἐξουσίαν
τούτων. Ὁ δὲ Σίμων οὗτος ἦν πόλεως μὲν Ἱερο-
σολύμων, γένους δὲ σφόδρα λαμπροῦ, τῆς τῶν Φα-
ρισαίων αἱρέσεως, οἳ περὶ τὰ πάτρια νόμιμα δοκοῦσι
τῶν ἄλλων ἀκριβείᾳ διαφέρειν. Ἦν δὲ οὗτος ἀνὴρ
πλήρης συνέσεώς τε καὶ λογισμοῦ, δυνάμενός τε πρά-
γματα κακῶς κείμενα φρονήσει τῇ ἑαυτοῦ διορθώσα-
σθαι, φίλος τε παλαιὸς τῷ Ἰωάννῃ καὶ συνήθης,
πρός με δὲ τότε διαφόρως εἶχεν. Δεξάμενος οὖν
τὴν παράκλησιν, ἔπειθεν τοὺς ἀρχιερεῖς Ἄνανον καὶ
Ἰησοῦν τὸν τοῦ Γαμαλᾶ, τινάς τε τῶν τῆς αὐτῶν
στάσεως ἐκείνης, ἐκκόπτειν με φυόμενον, καὶ μὴ
περιϊδεῖν ἐπὶ μήκιστον αὐξηθέντα δόξης, 'συνοίσειν
αὐτοῖς λέγων, εἰ τῆς Γαλιλαίας ἀφαιρεθείην· μὴ
μέλλειν δὲ παρεκάλει τοὺς περὶ τὸν Ἄνανον, μὴ
καὶ φθάσας γνῶναι μετὰ πολλῆς ἐπέλθω τῇ πόλει
δυνάμεως.' Ὁ μὲν Σίμων ταῦτα συνεβούλευεν. Ὁ
δὲ ἀρχιερεὺς Ἄνανος 'οὐ ῥᾴδιον εἶναι τὸ ἔργον ἀπέ-
φαινεν· πολλοὺς γὰρ τῶν ἀρχιερέων καὶ τοῦ πλή-
θους προεστῶτας μαρτυρεῖν, ὅτι καλῶς ἐγὼ στρα-
19 τηγῶ· ποιεῖσθαι δὲ κατηγορίαν ἀνδρὸς, καθ' οὗ
μηδὲν λέγειν δύνανται, φαύλων ἔργον εἶναι.'

39. Σίμων δὲ ὡς ἤκουσε ταῦτα παρὰ τοῦ Ἀνάνου, σιωπᾶν μὲν ἐκείνους ἠξίωσεν, μηδ' εἰς πολλοὺς ἐκφέρειν τοὺς λόγους αὐτῶν· προνοήσασθαι γὰρ αὐτὸς ἔφασκεν, ἵνα θᾶττον μετασταθεῖεν ἐκ τῆς Γαλιλαίας. Προςκαλεσάμενος δὲ τὸν ἀδελφὸν τοῦ Ἰωάννου, προςέταξε πέμπειν δωρεὰς τοῖς περὶ τὸν Ἄνανον· τάχα γὰρ οὕτως ἔφη πείσειν αὐτοὺς μεταθέσθαι τὰς γνώμας. Καὶ τέλος ἔπραξεν ὁ Σίμων ὃ προέθετο. Ὁ γὰρ Ἄνανος καὶ οἱ σὺν αὐτῷ, τοῖς χρήμασι διαφθαρέντες, συντίθενται τῆς Γαλιλαίας ἐκβαλεῖν με, μηδενὸς ἄλλου τῶν κατὰ τὴν πόλιν τοῦτο γινώσκοντος. Καὶ δὴ ἔδοξεν αὐτοῖς πέμπειν ἄνδρας κατὰ γένος μὲν διαφέροντας, τῇ παιδείᾳ δὲ ὁμοίους. Ἦσαν δὲ αὐτῶν οἱ μὲν δημοτικοὶ δύο,

Ἰωνάθης καὶ Ἀνανίας, Φαρισαῖοι τὴν αἵρεσιν, ὁ δὲ τρίτος Ἰόζαρος ἱερατικοῦ γένους, Φαρισαῖος καὶ αὐτός· Σίμων δ᾽ ἐξ ἀρχιερέων νεώτατος ἐκείνων. Τούτους ἐκέλευον ἀφικομένους εἰς τὸ πλῆθος τῶν Γαλιλαίων πυθέσθαι παρ᾽ αὐτῶν τὴν αἰτίαν, δι᾽ ἣν ἐμὲ φιλοῦσιν· εἰ δὲ φαῖεν, ὅτι πόλεως εἴην τῆς Ἱεροσολύμων, καὶ αὐτοὺς ἐξ ἐκείνων λέγειν ὑπάρχειν τοὺς τέσσαρας· εἰ δὲ διὰ τὴν ἐμπειρίαν τῶν νόμων, μηδ᾽ αὐτοὺς ἀγνοεῖν ἔθη τὰ πάτρια φάσκειν· εἰ δ᾽ αὖ διὰ τὴν ἱερωσύνην λέγοιεν ἀγαπᾶν με, καὶ αὐτῶν ἀποκρίνασθαι δύο ἱερεῖς ὑπάρχειν.

40. Ταῦθ᾽ ὑποθέμενοι τοῖς περὶ τὸν Ἰωνάθην, τέσσαρας μυριάδας ἀργυρίου διδόασιν αὐτοῖς ἐκ τῶν δημοσίων χρημάτων. Ἐπεὶ δέ τινα Γαλιλαῖον ἤκουσαν, Ἰησοῦν ὄνομα, περὶ αὐτὸν τάξιν ἑξακοσίων ὁπλιτῶν ἔχειν, ἐπιδημοῦντα τοῖς Ἱεροσολύμοις, τότε μεταπεμψάμενοι τοῦτον, καὶ τριῶν μηνῶν μισθὸν δόντες, ἐκέλευσαν ἕπεσθαι τοῖς περὶ τὸν Ἰωνάθην πειθαρχοῦντα αὐτοῖς, καὶ τῶν πολιτῶν δὲ τριακοσίοις ἀνδράσι δόντες ἀργύριον εἰς τροφὴν τῶν ὅλων, προςέταξαν ἀκολουθεῖν τοῖς πρέσβεσιν. Πεισθέντων οὖν αὐτῶν, καὶ πρὸς τὴν ἔξοδον εὐτρεπισθέντων, ἐξῄεσαν οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην σὺν τούτοις, ἐπαγόμενοι καὶ τὸν ἀδελφὸν τὸν Ἰωάννου καὶ ὁπλίτας ἑκατὸν, λαβόντες ἐντολὰς παρὰ τῶν πεμψάντων, εἰ μὲν ἑκὼν καταθείμην τὰ ὅπλα, ζῶντα πέμπειν εἰς τὴν τῶν Ἱεροσολυμιτῶν πόλιν, εἰ δ᾽ ἀντιτασσοίμην, ἀποκτεῖναι μηδὲν δεδιότας· αὐτῶν γὰρ εἶναι τὸ πρόςταγμα. Ἐγεγράφεσαν δὲ καὶ τῷ Ἰωάννῃ πρὸς τὸν κατ᾽ ἐμοῦ πόλεμον ἑτοιμάζεσθαι, τοῖς τε Σεπφώριν καὶ Γάβαρα κατοικοῦσι καὶ Τιβεριεῦσι προςέταττον συμμαχίαν τῷ Ἰωάννῃ πέμπειν.

41. Ταῦτά μοι τοῦ πατρὸς γράψαντος, — ἐξεῖπε δὲ πρὸς αὐτὸν Ἰησοῦς ὁ τοῦ Γαμαλᾶ τῶν ἐν αὐτῇ τῇ βουλῇ γενομένων εἷς, φίλος ὢν καὶ συνήθης ἐμοὶ, — σφόδρα περιήλγησα, τούς τε πολίτας οὕτω περὶ

ἐμὲ γενομένους ἀχαρίστους ἐπιγνοὺς διὰ φθόνον ἀναιρεθῆναί με προστάξαι, καὶ τῷ τὸν πατέρα διὰ τῶν γραμμάτων πολλά με παρακαλεῖν ἀφικέσθαι πρὸς αὐτὸν, ποθεῖν γὰρ ἔφη θεάσασθαι τὸν υἱὸν πρὸ τοῦ τελευτῆσαι. Ταῦτα δὴ πρὸς τοὺς φίλους εἶπον, καὶ ὅτι μετὰ τρίτην ἡμέραν καταλιπὼν τὴν χώραν αὐτῶν εἰς τὴν πατρίδα πορευσοίμην. Λύπη δὲ ἅπαντας τοὺς ἀκούσαντας κατέσχε, παρεκάλουν τε κλαίοντες μὴ ἐγκαταλιπεῖν αὐτοὺς ἀπολουμένους, εἰ τῆς ἐμῆς στρατηγίας ἀποστερηθεῖεν. Οὐ κατανεύοντος δέ μου ταῖς ἱκετείαις αὐτῶν, ἀλλὰ περὶ τῆς ἐμαυτοῦ φροντίζοντος σωτηρίας, δείσαντες οἱ Γαλιλαῖοι, μὴ ἀπελθόντος εὐκαταφρόνητοι τοῖς λῃσταῖς γένοιντο, πέμπουσιν εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἅπασαν τοὺς σημανοῦντας τὴν ἐμὴν γνώμην περὶ τῆς ἀπαλλαγῆς. Πολλοὶ δὲ καὶ πανταχόθεν συνήχθησαν, ὡς ἤκουσαν, μετὰ γυναικῶν καὶ τέκνων, οὐ πόθῳ, δοκῶ μοι, τῷ πρὸς ἐμὲ μᾶλλον, ἢ τῷ περὶ αὐτῶν δέει, ταῦτο πράττοντες. Ἐμοῦ γὰρ παραμένοντος, πείσεσθαι κακὸν οὐδὲν ὑπελάμβανον. Ἧκον οὖν πάντες εἰς τὸ Μέγα πεδίον, ἐν ᾧ διέτριβον, Ἀσωχὶς ἐστιν ὄνομα τούτῳ.

42. Θαυμάσιον δὲ οἷον ὄνειρον διὰ τῆς νυκτὸς ἐκείνης ἐθεασάμην. Ἐπεὶ γὰρ εἰς κοίτην ἐτραπόμην διὰ τὰ γραφέντα λυπούμενος καὶ τεταραγμένος, ἔδοξά τινα λέγειν ἐπιστάντα μοι, „Παῦσαι τὴν ψυχὴν, ὦ οὗτος, ἀλγῶν, παντός τ' ἀπαλλάσσου φόβου. Τὰ γὰρ λυποῦντά σε μέγιστον ποιήσει, καὶ ἐν πᾶσιν εὐτυχέστατον. Κατορθώσεις δὲ οὐ μόνον ταῦτα, ἀλλὰ καὶ πολλὰ ἕτερα. Μὴ κάμνε δή. Μέμνησο δὲ, ὅτι καὶ Ῥωμαίοις δεῖ σε πολεμῆσαι.“ Τοῦτον δὴ τὸν ὄνειρον θεασάμενος, διανίσταμαι καταβῆναι προθυμούμενος εἰς τὸ πεδίον. Πρὸς δὲ τὴν ἐμὴν ὄψιν πᾶν τὸ πλῆθος τῶν Γαλιλαίων, ἦσαν δ' ἐν αὐτοῖς γυναῖκές τε καὶ παῖδες, ἐπὶ στόμα ῥίψαντες ἑαυτοὺς, καὶ δακρύοντες ἱκέτευον μὴ σφᾶς

ἐγκαταλιπεῖν τοῖς πολεμίοις, μηδ' ἀπελθεῖν ἐάσαντα τὴν χώραν αὐτῶν ἐνύβρισμα τοῖς ἐχθροῖς ἐσομένην. Ὡς δὲ ταῖς δεήσεσιν οὐκ ἔπειθον, κατηνάγκαζον ὅρκοις μένειν παρ' ἑαυτοῖς. Ἐλοιδοροῦντό τε τῷ δήμῳ πολλὰ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν, ὡς εἰρηνεύεσθαι τὴν χώραν αὐτῶν οὐκ ἐῶντι.

43. Ταῦτα δὴ καὶ ἐπακούων αὐτῶν, καὶ βλέπων τοῦ πλήθους τὴν κατήφειαν, ἐκλάσθην πρὸς ἔλεον, ἄξιον εἶναι νομίζων ὑπὲρ τοσούτου πλήθους καὶ προδήλους κινδύνους ὑπομένειν. Κατένευον δὲ μένειν, καὶ πεντακισχιλίους ἐξ αὐτῶν ὁπλίτας ἥκειν κελεύσας ἔχοντας ἑαυτοῖς τροφὰς, ἐπὶ τὰς οἰκήσεις διαφῆκα τοὺς ἄλλους. Ἐπεὶ δὲ οἱ πεντακισχίλιοι παρεγένοντο, τούτους ἀναλαβὼν καὶ τρισχιλίους τοὺς σὺν ἐμαυτῷ στρατιώτας, ἱππεῖς δ' ὀγδοήκοντα, τὴν πορείαν εἰς Χαβωλὼ κώμην, Πτολεμαΐδος μεθόριον οὖσαν, ἐποιησάμην. Καὶ ἐκεῖ τὰς δυνάμεις συνεῖχον, ἑτοιμάζεσθαι σκηπτόμενος ἐπὶ τὸν πρὸς Πλακίδον πόλεμον. Ἀφίκετο δὲ οὗτος μετὰ δύο σπειρῶν πεζοῦ στρατεύματος καὶ ἱππέων εἴλης μιᾶς ὑπὸ Κεστίου Γάλλου πεμφθεὶς, ἵν' ἐμπρήσῃ τὰς κώμας τῶν Γαλιλαίων, αἳ πλησίον ἦσαν Πτολεμαΐδος. Βαλλομένου δ' ἐκείνου χάρακα πρὸ τῆς Πτολεμαέων πόλεως, τίθεμαι καὶ ἐγὼ στρατόπεδον, τῆς κώμης ὅσον ἑξήκοντα σταδίους ἀποσχών. Πολλάκις μὲν οὖν τὰς δυνάμεις προηγάγομεν ὡς εἰς μάχην, πλέον δ' οὐδὲν ἀκροβολισμῶν ἐπράξαμεν. Ὁ γὰρ Πλακίδος ὅσον περ ἐγίνωσκε σπεύδοντά με πρὸς μάχην, αὐτὸς καταπληττόμενος ὑπεστέλλετο· τῆς μέντοι Πτολεμαΐδος οὐκ ἐχωρίζετο.

44. Κατὰ τοῦτον δὲ τὸν καιρὸν ἀφικόμενος Ἰωνάθης μετὰ τῶν συμπρέσβεων, οὓς ἔφαμεν ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων ὑπὸ τῶν περὶ Σίμωνα καὶ Ἄνανον τὸν ἀρχιερέα πεπέμφθαι, λαβεῖν με δι' ἐνέδρας ἐπεβούλευεν· φανερῶς γὰρ ἐπιχειρεῖν οὐκ ἐτόλμα. Γράφει δὲ πρός με τοιαύτην ἐπιστολήν· "Ἰωνάθης 21

καὶ οἱ σὺν αὐτῷ πεμφθέντες ὑπὸ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν Ἰωσήπῳ χαίρειν. Ἡμεῖς ὑπὸ τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις πρώτων, ἀκουσάντων, τὸν ἀπὸ Γισχάλων Ἰωάννην ἐπιβεβουλευκέναι σοι πολλάκις, ἐπέμφθημεν ἐπιπλήξοντες αὐτῷ, καὶ παραινέσοντες εἰς τὸ λοιπὸν ὑπακούειν σοι. Βουλεύσασθαί δὴ σὺν σοὶ θέλοντες περὶ τῶν κοινῇ πρακτέων, παρακαλοῦμεν ἥκειν θᾶττον πρὸς ἡμᾶς, καὶ μὴ μετὰ πολλῶν· οὐδὲ γὰρ ἡ κώμη δύναιτ᾽ ἂν στρατιωτῶν πλῆθος ἐπιδέξασθαι." Ταῦτα δ᾽ ἔγραφον προςδοκῶντες δυοῖν θάτερον, ἢ ὅτι χωρὶς ὅπλων ἀφικόμενον πρὸς αὐτοὺς ἕξουσιν ὑποχείριον, ἢ πολλοὺς ἐπαγόμενον κρινοῦσι πολέμιον. Ἧκε δέ μοι τὴν ἐπιστολὴν ἱππεὺς κομίζων, θρασὺς ἄλλως νεανίας τῶν παρὰ βασιλεῖ ποτε στρατευσαμένων. Ἦν δὲ ὥρα νυκτὸς ἤδη δευτέρα, καθ᾽ ἣν ἐτύγχανον μετὰ τῶν φίλων καὶ τῆς Γαλιλαίας πρώτων ἑστιώμενος. Οὗτος δὴ, προςαγγείλαντος οἰκέτου μοι ἥκειν τινὰ ἱππέα Ἰουδαῖον, εἰςκληθεὶς, ἐμοῦ κελεύσαντος, ἠσπάσατο μὲν οὐδ᾽ ὅλως. Τὴν δὲ ἐπιστολὴν προτείνας, "Ταύτην," εἶπεν, "οἱ ἐξ Ἱεροσολύμων ἥκοντες πεπόμφασί σοι. Γράφε δὴ τάχιστα καὶ σύ. Καὶ γὰρ ἐπείγομαι πρὸς αὐτοὺς ὑποστρέφειν." Οἱ μὲν οὖν κατακείμενοι τὴν τοῦ στρατιώτου τόλμαν ἐθαύμασαν. Ἐγὼ δὲ καθίζεσθαι παρεκάλουν, καὶ συνδειπνεῖν ἡμῖν. Ἀρνησαμένου δὲ, τὴν μὲν ἐπιστολὴν μετὰ χεῖρας ὡς ἐδεξάμην, πρὸς δὲ τοὺς φίλους περὶ πραγμάτων ἑτέρων τὴν ὁμιλίαν ἐποιούμην. Μετ᾽ οὐ πολλὴν δὲ ὥραν ἐξαναστὰς, καὶ τοὺς μὲν ἄλλους ἀπολύσας ἐπὶ κοίτην, τέσσαρας δέ μοι μόνων τῶν ἀναγκαίων φίλους προςμεῖναι κελεύσας, καὶ τῷ παιδὶ προςτάξας οἶνον ἑτοιμάσαι, τὴν ἐπιστολὴν ἀναπτύξας μηδενὸς ἐμβλέποντος, καὶ ἐξ αὐτῆς ταχὺ συνεὶς τὴν τῶν γεγραφότων ἐπίνοιαν, πάλιν αὐτὴν ἐσημηνάμην. Καὶ ὡς μὴ προανεγνωκὼς, ἀλλὰ μετὰ χεῖρας αὐτὴν ἔχων, προςέταξα τῷ στρατιώτῃ δραχμὰς

εἴκοσιν ἐφόδιον δοθῆναι. Τοῦ δὲ λαβόντος καὶ χάριν ἔχειν φήσαντος, συνεὶς τὴν αἰσχροκερδίαν αὐτοῦ, καὶ ὡς ταύτῃ μάλιστά ἐστιν ἁλώσιμος, "Ἀλλ' εἰ συμπιεῖν ἡμῖν," ἔφην, "θελήσειας, λήψει κατὰ κύαθον δραχμὴν μίαν." Ὁ δ' ἀσμένως ὑπήκουσεν, καὶ πολὺν τὸν οἶνον προςφερόμενος ὑπὲρ τοῦ πλεῖον λαβεῖν ἀργύριον, καὶ μεθυσθεὶς, οὐκέτι τὰ ἀπόῤῥητα στέγειν ἐδύνατο, ἀλλ' ἔφραζεν οὐκ ἐρωτώμενος τήν τε συνεσκευασμένην ἐπιβουλὴν, καὶ ὡς κατεψηφισμένος εἴην θάνατον παρ' αὐτοῖς. Ταῦτα ἀκούσας ἀντιγράφω τὸν τρόπον τοῦτον· "Ἰώσηπος Ἰωνάθῃ καὶ τοῖς σὺν αὐτῷ χαίρειν. Ἐῤῥωμένους ὑμᾶς εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἥκειν πυθόμενος ἥδομαι, μάλιστα δὲ, ὅτι δυνήσομαι παραδοὺς ὑμῖν τὴν τῶν ἐνθάδε πραγμάτων ἐπιμέλειαν εἰς τὴν πατρίδα πορευθῆναι· τοῦτο γὰρ καὶ πάλαι ποιεῖν ἤθελον. Ἔδει μὲν οὖν μὴ μόνον εἰς Ξαλὼθ παραγενέσθαι με πρὸς ὑμᾶς, ἀλλὰ πόῤῥω, καὶ μηδὲ κελευσάντων. Συγγνώμης δὲ τυχεῖν ἀξιῶ μὴ δυνάμενος τοῦτο ποιῆσαι· παραφυλάσσω γὰρ ἐν Χαβωλὼ Πλακίδον εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἀναβῆναι δι' ἐννοίας ἔχοντα. Ἥκετε οὖν ὑμεῖς πρός με τὴν ἐπιστολὴν ἀναγνόντες. Ἔῤῥωσθε."

45. Ταῦτα γράψας καὶ δοὺς τῷ στρατιώτῃ φέρειν, συνεξέπεμψα τριάκοντα τῶν Γαλιλαίων δοκιμωτάτους, ὑποθέμενος αὐτοῖς ἀσπάσασθαι μὲν ἐκείνους, ἕτερον δὲ μηδὲν λέγειν. Ἔταξα δὲ καθ' 22
ἕκαστον αὐτῶν πιστῶν ὁπλιτῶν ἕνα παραφυλάξοντα, μή τις τοῖς πεμφθεῖσιν ὑπ' ἐμοῦ πρὸς τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην ὁμιλία γένηται. Καὶ οἱ μὲν ἐπορεύθησαν. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰωνάθην, τῆς πρώτης πείρας ἁμαρτόντες, ἑτέραν ἐπιστολήν μοι τοιαύτην ἔπεμψαν· "Ἰωνάθης καὶ οἱ σὺν αὐτῷ Ἰωσήπῳ χαίρειν. Παραγγέλλομέν σοι χωρὶς ὁπλιτῶν εἰς τρίτην παραγενέσθαι πρὸς ἡμᾶς εἰς Γαβαρὼθ κώμην, ἵνα διακούσωμεν τῶν πρὸς Ἰωάννην ἐγκλημά-

των σοι γεγονότων." Ταῦτα γράψαντες, καὶ ἀσπασάμενοι τοὺς Γαλιλαίους οὓς πέπομφα, ἀφίκοντο εἰς Ἰάφαν κώμην μεγίστην οὖσαν τῶν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, τείχεσιν ὀχυρωτάτην, καὶ πολλῶν οἰκητόρων μεστήν. Ὑπηντίαζεν δὲ τὸ πλῆθος αὐτοὺς μετὰ γυναικῶν καὶ τέκνων, καὶ κατεβόων κελεύοντες ἀπιέναι καὶ μὴ φθονεῖν αὐτοῖς ἀγαθοῦ τοῦ στρατηγοῦ. Παρηρεθίζοντο δὲ ταῖς φωναῖς οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην, καὶ φανεροῦν μὲν τὴν ὀργὴν οὐκ ἐτόλμων. Οὐκ ἀξιώσαντες δὲ αὐτοὺς ἀποκρίσεως εἰς τὰς ἄλλας κώμας ἐπορεύοντο. Ὅμοιαι δὲ ὑπήντων αὐτοῖς παρὰ πάντων αἱ καταβοήσεις, μεταπείσειν αὐτοὺς βοώντων οὐδένα περὶ τοῦ στρατηγὸν ἔχειν Ἰώσηπον. Ἄπρακτοι δὲ παρὰ τούτων ἀπελθόντες οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην, εἰς Σεπφῶριν μεγίστην τῶν ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ πόλιν ἀφικνοῦνται. Οἱ δ' ἐντεῦθεν ἄνθρωποι, πρὸς Ῥωμαίους ταῖς γνώμαις ἀποβλέποντες, ἐκείνοις μὲν ὑπήντων, ἐμὲ δὲ οὔτε ἐπῄνουν, οὔτε ἐβλασφήμουν. Παρὰ δὲ Σεπφωριτῶν εἰς Ἀσωχὶν καταβάντες, οἱ ἐντεῦθεν παραπλησίως τοῖς Ἰαφηνοῖς κατεβόων αὐτῶν. Οἱ δὲ τὴν ὀργὴν οὐκέτι κατασχόντες, κελεύουσι τοῖς μετ' αὐτῶν ὁπλίταις τύπτειν ξύλοις τοὺς καταβοῶντας. Κατὰ Γάβαρα δὲ γενομένους ὑπαντιάζει μετὰ τρισχιλίων ὁπλιτῶν Ἰωάννης. Ἐγὼ δ' ἐκ τῆς ἐπιστολῆς ἤδη συνηκὼς, ὅτι διεγνώκασι πρός με πολεμεῖν, ἀναστὰς ἀπὸ Χαβωλὼ μετὰ τρισχιλίων ὁπλιτῶν, καταλιπὼν ἐν τῷ στρατοπέδῳ τὸν πιστότατον τῶν φίλων, εἰς Ἰωτάπατα παραγενόμην, πλησίον αὐτῶν εἶναι βουλόμενος ὅσον ἀπὸ τεσσαράκοντα σταδίων. Καὶ γράφω πρὸς αὐτοὺς τάδε· "Εἰ πάντως με πρὸς ὑμᾶς ἐλθεῖν βούλεσθε, διακόσιαι καὶ τέσσαρες κατὰ τὴν Γαλιλαίαν εἰσὶ πόλεις καὶ κῶμαι. Τούτων εἰς ἣν θελήσετε παραγενήσομαι χωρὶς Γαβάρων καὶ Γισχάλων· ἡ μὲν γὰρ πατρίς ἐστιν Ἰωάννου, ἡ δὲ σύμμαχος καὶ φίλη."

46. Ταῦτα τὰ γράμματα λαβόντες οἱ περὶ τὸν

Ἰωνάθην, οὐκ ἔτι μὲν ἀντιγράφουσιν· συνέδριον δὲ τῶν φίλων καθιστάντες, καὶ τὸν Ἰωάννην παραλαβόντες, ἐβουλεύοντο, τίνα τρόπον ἐπιχειρήσωσί μοι. Καὶ Ἰωάννῃ μὲν ἐδόκει γράφειν πρὸς πάσας τὰς ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ πόλεις καὶ κώμας· εἶναι γὰρ ἐν ἑκάστῃ πάντως ἕνα γοῦν καὶ δεύτερον διάφορον ἐμοὶ, καὶ καλεῖν τούτους ὡς ἐπὶ πολέμιον. Πέμπειν δ᾽ ἐκέλευε τὸ δόγμα τοῦτο καὶ εἰς τὴν τῶν Ἱεροσολυμιτῶν πόλιν, ἵνα καὶ ἐκεῖνοι γνόντες ὑπὸ τῶν Γαλιλαίων κεκρίσθαι με πολέμιον, καὶ αὐτοὶ ψηφίσωνται. Γενομένου γὰρ τούτου, καὶ τοὺς εὐνόως ἔχοντάς μοι Γαλιλαίους ἐγκαταλείψειν ἔφη φοβηθέντας. Ταῦτα συμβουλεύσαντος Ἰωάννου, σφόδρα καὶ τοῖς ἄλλοις ἤρεσε τὰ λεχθέντα. Περὶ δὲ ὥραν τῆς νυκτὸς τρίτην εἰς γνῶσιν ἧκέ μοι ταῦτα, Σακχαίου τῶν σὺν αὐτοῖς τινὸς αὐτομολήσαντος πρός με, καὶ τὴν ἐπιχείρησιν αὐτῶν ἀπαγγείλαντος. Οὐκ ἔτι δὲ ᾔδειν 23 ὑπερτίθεσθαι τὸν καιρόν. Ἄξιον δὲ κρίνας Ἰάκωβον ὁπλίτην τῶν περὶ ἐμὲ πιστῶν, κελεύω διακοσίους ὁπλίτας λαβόντα φρουρεῖν τὰς ἀπὸ Γαβάρων εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἐξόδους, καὶ τοὺς παριόντας συλλαμβάνοντα πρὸς ἐμὲ πέμπειν, μάλιστα δὲ τοὺς μετὰ γραμμάτων ἁλισκομένους. Ἱερεμίαν δὲ καὶ αὐτὸν ἐκ τῶν φίλων μου μετὰ ἑξακοσίων ὁπλιτῶν εἰς τὴν μεθόριον τῆς Γαλιλαίας ἔπεμψα, τὰς ἀπὸ ταύτης εἰς τὴν Ἱεροσολυμιτῶν πόλιν ὁδοὺς παραφυλάξοντα, πρόσταγμα δοὺς καὶ ἐκείνῳ τοὺς μετ᾽ ἐπιστολῶν ὁδεύοντας συλλαμβάνειν, καὶ τοὺς μὲν ἄνδρας ἐν δεσμοῖς ἐπὶ τόπου φυλάττειν, τὰ δὲ γράμματα πρὸς ἐμὲ διαπέμπειν.

47. Ταῦτα τοῖς πεμπομένοις ἐντειλάμενος, Γαλιλαίοις διήγγειλα κελεύων εἰς τὴν ἐπιοῦσαν ἀναλαβόντας τὰ ὅπλα καὶ τριῶν ἡμερῶν τροφὴν εἰς Γαβαρὼθ κώμην παραγενέσθαι πρός με. Τῶν δὲ περὶ ἐμὲ ὁπλιτῶν μοίρας τέτταρας νείμας, τοὺς πιστοτάτους αὐτῶν περὶ τὴν τοῦ σώματος φυλακὴν ἔταξα,

ταξιάρχους αὐτοῖς ἐπιστήσας, καὶ φροντίζειν κελεύσας, ὑπὲρ τοῦ μηδένα στρατιώτην ἄγνωστον αὐτοῖς συναναμίγνυσθαι. Τῇ δ' ἐπιούσῃ περὶ πέμπτην ὥραν ἐν Γαβαρὼθ γενόμενος εὑρίσκω πᾶν τὸ πεδίον τὸ πρὸ τῆς κώμης ὁπλιτῶν πλῆρες, τῶν ἐκ τῆς Γαλιλαίας ἐπὶ τὴν συμμαχίαν παρόντων, ὡς αὐτοῖς παρηγγέλκειν. Πολὺς δὲ καὶ ἄλλος ἐκ τῶν κωμῶν ὄχλος συνέτρεχεν. Ἐπεὶ δὲ καταστὰς εἰς αὐτοὺς λέγειν ἠρξάμην, ἐβόων ἅπαντες εὐεργέτην καὶ σωτῆρα τῆς χώρας αὐτῶν καλοῦντες. Καὶ ἐγὼ χάριν αὐτοῖς ἔχειν ὁμολογήσας συνεβούλευον πρὸς μηδένα μήτε πολεμεῖν, μήτε ἁρπαγῇ λαμβάνειν τὰς χώρας, ἀλλὰ σκηνοῦν κατὰ τὸ πεδίον ἀρκουμένους τοῖς ἑαυτῶν ἐφοδίοις· θέλειν γὰρ ἔφασκον τὰς ταραχὰς χωρὶς φόνων καταστεῖλαι. Συνέβη δὲ αὐθημερὸν εἰς τὰς ὑπ' ἐμοῦ κατασταθείσας τῶν ὁδῶν φυλακὰς τοὺς παρὰ τοῦ Ἰωνάθου πεμφθέντας μετὰ τῶν ἐπιστολῶν ἐμπεσεῖν. Καὶ οἱ μὲν ἄνδρες ἐφυλάχθησαν ἐπὶ τῶν τόπων, ὡς παρήγγειλα. Τοῖς δὲ γράμμασιν ἐντυχὼν πλήρεσι βλασφημιῶν καὶ ψευσμάτων, οὐδενὶ ταῦτα φράσας, ὁρμᾶν ἐπ' αὐτοὺς διενοούμην.

48. Ἀκούσαντες δὲ οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην περὶ τῆς ἐμῆς ἀφίξεως, τοὺς ἰδίους πάντας ἀναλαβόντες καὶ τὸν Ἰωάννην, ὑπεχώρησαν εἰς τὴν Ἰησοῦ οἰκίαν· βάρις δ' ἦν αὕτη μεγάλη, καὶ οὐδὲν ἀκροπόλεως ἀποδέουσα. Κρύψαντες οὖν λόχον ὁπλιτῶν ἐν αὐτῇ, καὶ τὰς ἄλλας ἀποκλείσαντες θύρας, μίαν δὲ ἀνοίξαντες, προςεδόκων ἥκειν ἐκ τῆς ὁδοῦ με πρὸς αὐτοὺς ἀσπασόμενον. Καὶ δὴ διδόασιν ἐντολὰς τοῖς ὁπλίταις, ἐπειδὰν παραγένωμαι, μόνον εἰςελθεῖν ἐᾶσαι, τοὺς ἄλλους ἀπείρξαντας· οὕτως γὰρ ᾤοντό με γενήσεσθαι ῥᾳδίως αὐτοῖς ὑποχείριον. Ἐψεύσαντο δὲ τῆς ἐλπίδος. Ἐγὼ γὰρ τὴν ἐπιβουλὴν προαισθόμενος, ὡς ἐκ τῆς ὁδοῦ παρεγενόμην, καταλύσας ἄντικρυς αὐτῶν καθεύδειν ἐσκηπτόμην. Καὶ οἱ

περὶ τὸν Ἰωνάθην, ὑπολαμβάνοντες ὄντως ἀναπαύε-
σθαί με καθυπνωμένον, ὥρμησαν καταβάντες εἰς τὸ
πεδίον μεταπείθειν αὐτοὺς ὡς ἐμοῦ κακῶς στρατη-
γοῦντος. Τὰ ἐναντία δὲ αὐτοῖς συνέπεσεν· ὀφθέν-
των γὰρ εὐθὺς ἐγένετο βοὴ παρὰ τῶν Γαλιλαίων,
πρὸς ἐμὲ τὸν στρατηγὸν εὐνοίας ἀξία. Κατάμεμψίν
τε ἐποιοῦντο τῶν περὶ τὸν Ἰωνάθην, ὅτι πάρεισιν,
οὐδὲν μὲν αὐτοὶ κακὸν προπεπονθότες, ἀνατρέψαν-
τες δὲ τὰ ἐκείνων πράγματα. Καὶ παρεκελεύοντο
ἀπιέναι· μὴ γὰρ ἄν ποτε μεταπεισθῆναι, προστά- 24
την ἕτερον ἀντ' ἐμοῦ λαβεῖν. Τούτων ἀπαγγελθέν-
των μοι, προελθεῖν εἰς μέσους οὐκ ὤκνησα. Κατέ-
βαινον οὖν εὐθέως αὐτὸς, τί λέγουσιν οἱ περὶ τὸν
Ἰωνάθην ἀκουσόμενος. Προελθόντος δέ μου, κρό-
τος παρὰ παντὸς τοῦ πλήθους εὐθὺς ἦν, καὶ μετ'
εὐφημιῶν ἐπιβοήσεις χάριν ἔχειν ὁμολογούντων τῇ
ἐμῇ στρατηγίᾳ.

49. Ταῦτα δὲ οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην ἀκούοντες,
ἐφοβήθησαν, μὴ καὶ κινδυνεύσωσιν ἀποθανεῖν, ἐπ'
αὐτοὺς ὁρμησάντων τῶν Γαλιλαίων κατὰ τὴν πρὸς
ἐμὲ χάριν. Δρασμὸν οὖν ἐπενόουν. Μὴ δυνηθέν-
τες δὲ ἀπελθεῖν, προςμεῖναι γὰρ αὐτοὺς ἠξίωσα,
κατηφεῖς ὑπέμειναν ἐκστησάμενοι τῷ λόγῳ. Προς-
τάξας οὖν τῷ μὲν πλήθει τὰς εὐφημίας κατασχεῖν,
καὶ τῶν ὁπλιτῶν τοὺς πιστοτάτους ταῖς ὁδοῖς ἐπι-
στήσας ὑπὲρ τοῦ φρουρεῖν, μὴ ἀπροσδοκήτως ἡμῖν
ὁ Ἰωάννης ἐπιπέσῃ, παραινέσας δὲ τοῖς Γαλιλαίοις
ἀναλαβεῖν τὰ ὅπλα, μὴ πρὸς τὴν ἔφοδον τῶν πολε-
μίων, ἐὰν γένηταί τις αἰφνίδιος, ταραχθῶσιν, πρῶ-
τον τῆς ἐπιστολῆς τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην ὑπεμί-
μνησκον, ὃν τρόπον γράψειαν ὑπὸ τοῦ κοινοῦ τῶν
Ἱεροσολυμιτῶν πεπέμφθαι, διαλύσοντές μου τὰς
πρὸς τὸν Ἰωάννην φιλονεικίας, ὡς παρακαλέσειάν
με πρὸς αὐτοὺς ἀφικέσθαι. Καὶ ταῦτα διεξιὼν τὴν
ἐπιστολὴν εἰς μέσους προέτεινον, ἵνα μηδὲν ἀρνήσα-
σθαι δυνηθῶσιν, ἐλεγχόντων αὐτοὺς τῶν γραμμάτων.

"Καὶ μὴν," ἔφην, "Ἰωνάθη, ὑμεῖς τε οἱ συμπρέσβεις, εἰ πρὸς Ἰωάννην κρινόμενος ὑπὲρ τοῦ παραστῆσαι τὸν ἐμαυτοῦ βίον δύο τινὰς ἢ τρεῖς μάρτυρας καλοὺς καὶ ἀγαθοὺς ἤγαγον, δῆλον ὡς ἀνάγκην εἴχετε, προεξετάσαντες καὶ τοὺς τούτων βίους, ἀπαλλάξαι με τῶν ἐγκλημάτων. Ἵν' οὖν γνῶτέ καλῶς πεπρᾶχθαί μοι τὰ κατὰ τὴν Γαλιλαίαν, τρεῖς μὲν μάρτυρας ὀλίγους εἶναι νομίζω τῷ καλῶς βεβιωκότι. Τούτους δὲ πάντας ὑμῖν δίδωμι. Παρὰ τούτων οὖν πύθεσθε, τίνα τρόπον ἐβίωσα, εἰ μετὰ πάσης σεμνότητος καὶ πάσης δὲ ἀρετῆς ἐνθάδε ποπολίτευμαι. Καὶ δὴ ὁρκίζω ὑμᾶς, ὦ Γαλιλαῖοι, μηδὲν ἐπικρύψασθαι τῆς ἀληθείας, λέγειν δ' ἐπὶ τούτων, ὡς δικαστῶν, εἴ τι μὴ καλῶς πέπρακται."

50. Ταῦτ' ἔτι λέγοντός μου, κοιναὶ παρὰ πάντων ἐγίνοντο φωναὶ, καλούντων εὐεργέτην με καὶ σωτῆρα. Καὶ περὶ μὲν τῶν πεπραγμένων ἐμαρτύρουν, περὶ δὲ τῶν πραχθησομένων παρεκάλουν. Πάντες δ' ὤμνυον ἀνυβρίστους μὲν ἔχειν τὰς γυναῖκας, λελυπῆσθαι δὲ μηδέποτε μηδένα ὑπ' ἐμοῦ. Μετὰ τοῦτο δύο τῶν ἐπιστολῶν, ἃς οἱ κατασταθέντες ὑπ' ἐμοῦ φρουροὶ, πεμφθείσας ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Ἰωνάθην ἑλόντες, ἀπεστάλκεισαν πρὸς ἐμὲ, παρανεγίνωσκον τοῖς Γαλιλαίοις, πολλῶν βλασφημιῶν πλήρεις, καὶ καταψευδομένας, ὅτι τυραννίδι μᾶλλον ἢ στρατηγίᾳ χρῶμαι κατ' αὐτῶν. Ἕτερά τε πολλὰ πρὸς τούτοις ἐνεγέγραπτο μηδὲν παραλειπόντων ἀναισχύντου ψευδολογίας. Ἔφην δ' ἐγὼ πρὸς τὸ πλῆθος τὰ γράμματα λαβεῖν, δόντων ἑκουσίως τῶν κομιζόντων· οὐ γὰρ ἐβουλόμην αὐτοὺς τὰ περὶ τὰς φρουρὰς τοὺς ἐναντίους εἰδέναι, μὴ δείσαντες τοῦ γράφειν ἀποστῶσιν.

51. Ταῦτα ἀκοῦσαν τὸ πλῆθος σφόδρα παροξυνθὲν ἐπὶ τὸν Ἰωνάθην ὥρμα καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ συμπαρόντας, ὡς διαφθεροῦντες· καὶ ἂν ἐπεπράχεισαν τὸ ἔργον, εἰ μὴ τοὺς μὲν Γαλιλαίους ἔπαυσα

τῆς ὀργῆς, τοῖς περὶ τὸν Ἰωνάθην δ' ἔφην συγγινώσκειν τῶν ἤδη πεπραγμένων, εἰ μέλλοιεν μετανοήσειν, καὶ πορευθέντες εἰς τὴν πατρίδα λέγοιεν τοῖς πέμψασι τὰ ἀληθῆ περὶ τῶν ἐμοὶ πεπολιτευμένων. Ταῦτ' εἰπὼν ἀπέλυον αὐτούς, καίτοι γινώσκων, ὅτι μηδὲν ὧν ὑπέσχηντο ποιήσουσιν. Τὸ πλῆθος δὲ εἰς ὀργὴν ἐξεκαίετο κατ' αὐτῶν, καὶ ἐμὲ παρεκάλουν ἐπιτρέπειν αὐτοῖς τιμωρήσασθαι τοὺς τοιαῦτα τολμήσαντας. Παντοῖος μὲν οὖν ἐγενόμην πείθων αὐτοὺς φείσασθαι τῶν ἀνδρῶν· πᾶσαν γὰρ ᾔδειν στάσιν ὄλεθρον οὖσαν τοῦ κοινῇ συμφέροντος. Τὸ δὲ πλῆθος ἔσχεν τὴν κατ' αὐτῶν ὀργὴν ἀμετάβλητον, καὶ πάντες ὥρμησαν ἐπὶ τὴν οἰκίαν, ἐν ᾗ κατέλυον οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην. Ἐγὼ δὲ συνορῶν τὴν ὁρμὴν οὖσαν αὐτῶν ἀνεπίσχετον, ἀναπηδήσας ἐφ' ἵππον ἐκέλευσα τοῖς πλήθεσιν πρὸς Σωγάνην κώμην ἕπεσθαι, Γαβάρων ἀπέχουσαν εἴκοσι στάδια. Καὶ τοιούτῳ στρατηγήματι χρησάμενος παρέσχον ἐμαυτῷ τὸ μὴ δοκεῖν ἐμφυλίου πολέμου κατάρχειν.

52. Ἐπεὶ δὲ περὶ τοὺς Σωγανέας ἐγενόμην, ἐπιστήσας τὸ πλῆθος καὶ παραινέσει χρησάμενος περὶ τοῦ μὴ πρὸς τὰς ὀργὰς, καὶ τὰς ἐπανηκέστους τιμωρίας ὀξέως φέρεσθαι, κελεύω τοὺς καθ' ἡλικίαν ἤδη προβεβηκότας καὶ πρώτους παρ' αὐτοῖς ἑκατὸν ἄνδρας, ὡς πορευομένους εἰς τὴν Ἱεροσολυμιτῶν πόλιν εὐτρεπίζεσθαι, μέμψιν ποιησομένους ἐπὶ τοῦ δήμου τῶν τὴν χώραν διαστασιαζόντων. „Καὶ ἂν ἐπικλασθῶσιν," ἔφην, „πρὸς τοὺς λόγους ὑμῶν, παρακαλέσετε τὸ κοινὸν γράψαι πρὸς ἐμὲ, μένειν κελεύοντας ἐπὶ τῇ Γαλιλαίᾳ, τοὺς δὲ περὶ τὸν Ἰωνάθην ἀναχωρεῖν ἐκεῖθεν." Ταύτας αὐτοῖς τὰς ὑποθήκας δοὺς, ἐναρμοσαμένων τε ταχέως ἐκείνων, ἡμέρᾳ τρίτῃ μετὰ τὴν ἐκκλησίαν τὴν ἀποστολὴν ἐποιησάμην, συμπέμψας ὁπλίτας πεντακοσίους. Ἔγραψα δὲ καὶ τοῖς ἐν Σαμαρείᾳ φίλοις προνοήσασθαι τοῦ ἀσφαλῆ γενέσθαι τὴν πορείαν αὐτοῖς· ἤδη γὰρ ὑπὸ

Ῥωμαίοις ἦν ἡ Σαμάρεια. Καὶ πάντως ἔδει τοὺς ταχὺ βουλομένους ἀπελθεῖν δι᾽ ἐκείνης πορεύεσθαι· τρισὶ γὰρ ἡμέραις ἀπὸ Γαλιλαίας ἔνεστιν οὕτως εἰς Ἱεροσόλυμα καταλῦσαι. Συμπαρέπεμψα δὲ τοὺς πρέσβεις καὶ ἐγὼ μέχρι τῶν τῆς Γαλιλαίας ὅρων, φυλακὰς ἐπιστήσας ταῖς ὁδοῖς, ὑπὲρ τοῦ μὴ ῥᾳδίως τινὰ μαθεῖν ἀπαλλαττομένους. Καὶ ταῦτα πράξας ἐν Ἰάφοις τὴν διατριβὴν ἐποιούμην.

53. Οἱ δὴ περὶ τὸν Ἰωνάθην διαμαρτάνοντες τῆς κατ᾽ ἐμοῦ πράξεως Ἰωάννην ἀπέλυσαν εἰς τὰ Γίσχαλα, αὐτοὶ δὲ εἰς τὴν Τιβεριέων πόλιν πεπόρευντο λήψεσθαι προςδοκῶντες αὐτὴν ὑποχείριον· ἐπειδὴ καὶ Ἰησοῦς ὁ κατὰ τὸν καιρὸν τοῦτον ἐκείνων ἄρχων ἐγεγράφει πρὸς αὐτοὺς, πείσειν ἐπαγγελλόμενος τὸ πλῆθος ἐλθόντας ὑποδέχεσθαι, καὶ αὐτοῖς ἑλέσθαι προςτεθῆναι. Ἐκεῖνοι μὲν ἐπὶ τοιαύταις ἐλπίσιν ἀπῆλθον. Ἀπαγγέλλει δέ μοι ταῦτα Σίλας διὰ γραμμάτων, ὃν ἔφην τῆς Τιβεριάδος ἐπιμελητὴν καταλελοιπέναι, καὶ σπεύδειν ἠξίου. Καὶ ἐγὼ ταχέως ὑπακούσας αὐτῷ παραγενόμενος εἰς κίνδυνον ἀπωλείας κατέστην ἐξ αἰτίας τοιαύτης. Οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην γενόμενοι παρὰ
26 τοῖς Τιβεριεῦσι, καὶ πολλοὺς πείσαντες ἀποστῆναί μου διαφόρους ὄντας, ὡς ἤκουσαν τὴν ἐμὴν παρουσίαν, δείσαντες περὶ αὐτῶν ἧκον πρὸς ἐμέ. Καὶ ἀσπασάμενοι ‘μακαρίζειν ἔλεγον οὕτως περὶ τὴν Γαλιλαίαν ἀναστραφέντα, συνήδεσθαί τε διὰ τιμῆς ἀγομένῳ· κόσμον γὰρ ἑαυτῶν εἶναι τὴν ἐμὴν δόξαν ἔφασαν, ὡς ἂν διδασκάλων τ᾽ ἐμοῦ γενομένων καὶ πολιτῶν. Δικαιοτέραν τε τῆς Ἰωάννου τὴν ἐμὴν πρὸς αὐτοὺς φιλίαν ὑπάρχειν ἔλεγον· καὶ σπεύδειν μὲν εἰς τὴν οἰκείαν ἀπελθεῖν, περιμένειν δὲ, ὡς ὑποχείριον τὸν Ἰωάννην ἐμοὶ ποιήσουσιν.’ Καὶ ταῦτα λέγοντες ἐπώμοσαν τοὺς φρικωδεστάτους ὅρκους παρ᾽ ἡμῖν, δι᾽ οὓς ἀπιστεῖν οὐ θεμιτὸν ἡγούμην. Καὶ δὴ παρακαλοῦσί με τὴν κατάλυσιν ἀλλαχοῦ ποιήσα-

σθαι, διὰ τὸ τὴν ἐπιοῦσαν ἡμέραν εἶναι σάββατον· ὀχλεῖσθαι δὲ μὴ δεῖν ὑπ' αὐτῶν τὴν πόλιν τῶν Τιβεριέων ἔφασκον.

54. Καὶ ἐγὼ μηδὲν ὑπονοήσας ἐς τὰς Ταριχέας ἀπῆλθον, καταλιπὼν ὅμως ἐν τῇ πόλει τοὺς πολυπραγμονήσοντας, εἴ τι περὶ ἡμῶν λέγοιτο. Διὰ πάσης δὲ τῆς ὁδοῦ, τῆς ἀπὸ Ταριχεῶν εἰς Τιβεριάδα φερούσης, ἐπέστησα πολλοὺς, ἵνα μοι δι' ἀλλήλων σημήνωσιν, ἅπερ ἂν παρὰ τῶν ἐν τῇ πόλει καταλειφθέντων πυνθάνωνται. Κατὰ τὴν ἐπιοῦσαν οὖν ἡμέραν συνάγονται πάντες εἰς τὴν προςευχὴν, μέγιστον οἴκημα πολὺν ὄχλον ἐπιδέξασθαι δυνάμενον. Εἰςελθὼν δὲ ὁ Ἰωνάθης φανερῶς μὲν περὶ τῆς ἀποστάσεως οὐκ ἐτόλμα λέγειν, ἔφη δὲ 'στρατηγοῦ κρείττονος χρείαν τὴν πόλιν αὐτῶν ἔχειν.' Ἰησοῦς δ' ἄρχων οὐδὲν ὑποστειλάμενος ἀναφανδὸν εἶπεν· "Ἄμεινόν ἐστιν, ὦ πολῖται, τέσσαρσιν ἡμᾶς ἀνδράσιν ὑπακούειν, ἢ ἑνὶ, καὶ κατὰ γένος λαμπροῖς, καὶ κατὰ σύνεσιν οὐκ ἀδόξοις." Ὑπεδείκνυε δὲ τοὺς περὶ Ἰωνάθην. Ταῦτ' εἰπόντα τὸν Ἰησοῦν ἐπῄνει παρελθὼν Ἰοῦστος, καί τινας ἐκ τοῦ δήμου συνέπειθεν. Οὐκ ἠρέσκετο δὲ τοῖς λεχθεῖσιν τὸ πλῆθος, καὶ πάντως ἂν εἰς στάσιν ἐχώρησαν, εἰ μὴ τὴν σύνοδον διέλυσεν ἐπελθοῦσα ἕκτη ὥρα, καθ' ἣν τοῖς σάββασιν ἀριστοποιεῖσθαι νόμιμόν ἐστιν ἡμῖν. Καὶ οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην, εἰς τὴν ἐπιοῦσαν ὑπερθέμενοι τὴν βουλὴν, ἀπῄεσαν ἄπρακτοι. Εὐθὺς δέ μοι τούτων ἀπαγγελθέντων, πρωῒ διέγνων εἰς τὴν Τιβεριέων πόλιν ἀφικέσθαι. Καὶ τῇ ἐπιούσῃ περὶ πρώτην ὥραν ἧκον ἀπὸ τῶν Ταριχεῶν, καταλαμβάνω δὲ συναγόμενον ἤδη τὸ πλῆθος εἰς τὴν προςευχήν. Ἐφ' ὅ τι δ' ἦν αὐτοῖς σύνοδος οὐκ ἐγίνωσκον οἱ συλλεγόμενοι, οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰωνάθην ἀπροςδοκήτως θεασάμενοί με παρόντα διεταράχθησαν. Εἶτ' ἐπινοοῦσιν διαδοῦναι λόγον, ὅτι Ῥωμαίων ἱππεῖς ἐν τῇ μεθορίῳ πόῤῥω τριάκοντα σταδίων ἀπὸ τῆς πό-

λεως, κατὰ τόπον λεγόμενον Ὁμόνοιαν, εἰσὶν ἑωραμένοι. Καὶ προςαγγελθέντων τούτων, ἐξ ὑποβολῆς παρεκάλουν οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην, μὴ περιϊδεῖν ὑπὸ τῶν πολεμίων λεηλατουμένην αὐτῶν τὴν γῆν. Ταῦτα δ' ἔλεγον δι' ἐννοίας ἔχοντες, ἐμὲ προφάσει τῆς κατεπειγούσης βοηθείας μεταστήσαντες, αὐτοὶ τὴν πόλιν ἔχθραν μοι κατασκευάσαι.

55. Ἐγὼ δὲ, καίπερ εἰδὼς αὐτῶν τὸ ἐνθύμημα, ὅμως ὑπήκουσα, μὴ δόξαν παράσχω τοῖς Τιβεριεῦσιν οὐ προνοούμενος αὐτῶν τῆς ἀσφαλείας. Ἐξῆλθον οὖν, καὶ γενόμενος κατὰ τὸν τόπον, ὡς οὐδ' ἴχνος πολεμίων εὗρον ὑποστρέφω συντόνως ὁδεύσας. Καὶ καταλαμβάνω τήν τε βουλὴν πᾶσαν συνεληλυθυῖαν καὶ τὸν δημοτικὸν ὄχλον, ποιουμένους τε πολ-
27 λὴν κατηγορίαν μου τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην, ὡς τοῦ μὲν τὸν πόλεμον ἐπελαφρύνειν αὐτοῖς ἀμελοῦντος, ἐν τρυφαῖς δὲ διάγοντος. Ταῦτα δὲ λέγοντες προέφερον ἐπιστολὰς τέσσαρας ὡς ἀπὸ τῶν ἐν τῇ μεθορίᾳ τῆς Γαλιλαίας γεγραμμένας πρὸς αὐτοὺς, ἐπὶ βοήθειαν ἥκειν παρακαλούντων· Ῥωμαίων γὰρ δύναμιν μέλλειν ἱππέων τε καὶ πεζῶν εἰς τρίτην ἡμέραν τὴν χώραν αὐτῶν λεηλατεῖν, ἐπισπεύδειν τε καὶ μὴ περιοφθῆναι δεομένων. Ταῦτ' ἀκούσαντες οἱ Τιβεριεῖς, λέγειν ἀληθῆ δόξαντες αὐτοὺς, καταβοήσεις ἐποιοῦντο 'μὴ καθέζεσθαί με δεῖν λέγοντες, ἀλλ' ἀπελθεῖν ἐπικουρήσοντα τοῖς ὁμοεθνέσιν αὐτῶν.' Πρὸς ταῦτα ἐγὼ — συνῆκα γὰρ τὴν ἐπίνοιαν τῶν περὶ τὸν Ἰωνάθην — 'ὑπακούσεσθαι μὲν ἔφην ἑτοίμως καὶ χωρὶς ἀναβολῆς ὁρμήσειν πρὸς τὸν πόλεμον ἐπηγγειλάμην. Συνεβούλευον δ' ὅμως, καὶ ἐπεὶ τὰ γράμματα κατὰ τέσσαρας τόπους Ῥωμαίους σημαίνει προςβαλεῖν, εἰς πέντε μοίρας διελόντας τὴν δύναμιν ἑκάστη τούτων ἐπιστῆσαι τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην καὶ τοὺς ἑταίρους αὐτοῦ· πρέπειν γὰρ ἀνδράσιν ἀγαθοῖς μὴ μόνον συμβουλεύειν, ἀλλὰ καὶ χρείας ἐπειγούσης ἡγουμένους βοηθεῖν· ἐγὼ γὰρ

πλὴν μιᾶς μοίρας οὐκ ἔφην ἀφηγεῖσθαι δυνατὸς εἶναι.' Σφόδρα τῷ πλήθει συνήρεσεν ἡ ἐμὴ συμβουλία. Καὶ ἐκείνους οὖν ἠνάγκαζον ἐπὶ τὸν πόλεμον ἐξιέναι. Τοῖς δ' οὐχὶ μετρίως συνεχύθησαν αἱ γνῶμαι, μὴ κατεργασαμένοις ἃ διενοήθησαν, ἐμοῦ τοῖς ἐπιχειρήμασιν αὐτῶν ἀντιστρατηγήσαντος.

56. Εἷς δέ τις ἐξ αὐτῶν Ἀνανίας τὸ ὄνομα, πονηρὸς ἀνὴρ καὶ κακοῦργος, εἰςηγεῖτο τοῖς πλήθεσι πανδημεὶ νηστείαν εἰς τὴν ἐπιοῦσαν τῷ θεῷ προθέσθαι. Καὶ κατὰ τὴν αὐτὴν ὥραν ἐκέλευσεν εἰς τὸν αὐτὸν τόπον ἀνόπλους παρεῖναι, τῷ θεῷ φανερὸν ποιήσοντας, ὅτι μὴ τῆς παρ' ἐκείνου τυγχάνοντες βοηθείας, πᾶν ὅπλον ἄχρηστον εἶναι νομίζουσιν. Ταῦτα δ' ἔλεγεν οὐ δι' εὐσέβειαν, ἀλλ' ὑπὲρ τοῦ λαβεῖν ἄνοπλόν με καὶ τοὺς ἐμούς. Καὶ ἐγὼ δι' ἀνάγκην ὑπήκουον, μὴ δόξω καταφρονεῖν τῆς περὶ τὴν εὐσέβειαν ὑποθήκης. Ὡς οὖν ἀνεχωρήσαμεν ἐπὶ τὰ ἑαυτῶν, οἱ μὲν περὶ τὸν Ἰωνάθην γράφουσι τῷ Ἰωάννῃ 'πρὸς αὐτοὺς ἕωθεν ἀφικέσθαι κελεύοντες μεθ' ὅσων ἂν στρατιωτῶν δυνηθῇ· λήψεσθαι γὰρ εὖ ἐμὲ ὑποχείριον, καὶ ποιήσειν ὅπερ ἔχοι δι' εὐχῆς.' Δεξάμενος δὲ τὴν ἐπιστολὴν ἐκεῖνος ὑπακούειν ἔμελλεν. Ἐγὼ δὲ τῆς ἐπιούσης ἡμέρας δύο τῶν περὶ ἐμὲ σωματοφυλάκων, τοὺς κατ' ἀνδρείαν δοκιμωτάτους καὶ κατὰ πίστιν βεβαίους, κελεύω ξιφίδια κρύψαντας ὑπὸ τὰς ἐσθῆτας, ἐμοὶ συμπροελθεῖν, ἵνα εἰ γένοιτο παρὰ τῶν ἐχθρῶν ἐπίθεσις ἀμυνώμεθα. Θώρακα δ' ἔλαβον αὐτὸς, καὶ μάχαιραν ὑπεζωσάμην ὡς οἷον ἦν ἀφανέστατα, καὶ ἦλθον εἰς τὴν προςευχήν.

57. Τοὺς μὲν οὖν σὺν ἐμοὶ πάντας ἐκκλεῖσαι προςέταξεν Ἰησοῦς ὁ ἄρχων, — αὐτὸς γὰρ ταῖς θύραις ἐφειστήκει, — μόνον δὲ μετὰ τῶν φίλων εἰςελθεῖν εἴασεν. Ἤδη δὲ ἡμῶν τὰ νόμιμα ποιούντων, καὶ εἰς εὐχὰς τραπομένων, ἀναστὰς ὁ Ἰησοῦς

'περὶ τῶν ληφθέντων ἐκ τοῦ ἐμπρησμοῦ τῆς βασι-
λικῆς σκευῶν τοῦ ἀσήμου ἀργυρίου ἐπυνθάνετό μου,
παρὰ τίνι τυγχάνει κείμενα;' Ταῦτα δ' ἔλεγε δια-
τρίβειν τὸν χρόνον βουλόμενος, ἕως ἂν ὁ Ἰωάννης
παραγένηται. Καὶ ἐγὼ 'πάντα Καπέλλον ἔχειν ἔφην,
καὶ τοὺς δέκα πρώτους Τιβεριέων, ἀνακρῖναι δ'
αὐτοὺς ἔφην, εἰ ψεύδομαι.' Τῶν δὲ παρ' ἑαυτοῖς
εἶναι λεγόντων, "Οἱ δὲ εἴκοσιν," εἶπεν, "χρυσοῖ,
οὓς ἔλαβες πωλήσας τινὰ σταθμὸν ἀσήμου, τί γεγό-
28 νασιν;" — 'Καὶ τούτους ἔφην δεδωκέναι πρέσβεσιν
αὐτῶν ἐφόδιον πεμφθεῖσιν εἰς Ἱεροσόλυμα.' Πρὸς
ταῦτα οἱ μὲν περὶ τὸν Ἰωνάθην 'οὐ καλῶς ἔφασαν
πεποιηκέναι με, δόντα τοῖς πρέσβεσι τὸν μισθὸν
ἐκ τοῦ κοινοῦ.' Παροξυνθέντος δὲ τοῦ πλήθους
ἐπὶ τούτοις, ἐνόησαν γὰρ τῶν ἀνθρώπων τὴν πο-
νηρίαν, συνεὶς ἐγὼ στάσιν μέλλουσαν ἐξάπτεσθαι,
καὶ προςεξερεθίσαι μᾶλλον βουλόμενος τὸν δῆμον
ἐπὶ τοὺς ἀνθρώπους, "Ἀλλ' εἴ γε μὴ ὀρθῶς," εἶ-
πον, "ἔπραξα δοὺς τὸν μισθὸν ἐκ τοῦ κοινοῦ τοῖς
πρέσβεσιν ἡμῶν, παύεσθε χαλεπαίνοντες, ἐγὼ γὰρ
τοὺς εἴκοσι χρυσοῦς αὐτὸς ἀποτίσω."

58. Ταῦτ' εἰπόντος, οἱ μὲν περὶ τὸν Ἰωνάθην ἡσύχασαν. Ὁ δὲ δῆμος ἔτι μᾶλλον κατ' αὐτῶν παρωξύνθη, φανερὰν ἐπιδεικνυμένων τὴν ἄδικον πρὸς ἐμὲ δυςμένειαν. Συνιδὼν δὲ τὴν μεταβολὴν Ἰησοῦς, τὸν μὲν δῆμον ἐκέλευεν ἀναχωρεῖν, προςμεῖναι δὲ τὴν βουλὴν ἠξίωσεν· 'οὐ γὰρ δύνασθαι θορυβουμένους περὶ πραγμάτων τοιούτων τὴν ἐξέτασιν ποιεῖσθαι.' Τοῦ δὲ δήμου βοῶντος, μὴ καταλείψειν παρ' αὐτοῖς ἐμὲ μόνον, ἧκέν τις ἀγγέλλων κρύφα τοῖς περὶ τὸν Ἰησοῦν, Ἰωάννην μετὰ τῶν ὁπλιτῶν πλησιάζειν. Καὶ οἱ περὶ τὸν Ἰωνάθην οὐκ ἔτι κατασχόντες αὑτούς, — τάχα καὶ τοῦ θεοῦ προνοοῦντος τῆς ἐμῆς σωτηρίας, μὴ γὰρ ἂν γενομένου τούτου, πάντως ὑπὸ τοῦ Ἰωάννου διεφθάρην, — "Παύσασθε," φησίν, "ὦ Τιβεριεῖς, τὴν

ζήτησιν εἴκοσι χρυσῶν ἕνεκεν· διὰ τούτους μὲν γὰρ οὐκ ἄξιός ἐστιν Ἰώσηπος ἀποθανεῖν, ὅτι δὲ τυραννεῖν μὲν ἐπεθύμησε, καὶ τὰ Γαλιλαίων πλήθη λόγοις ἀπατήσας τὴν ἀρχὴν αὐτῷ κατεκτήσατο." Ταῦτα δὲ λέγοντες, εὐθύς μοι τὰς χεῖρας ἐπέβαλλον, ἀναιρεῖν τε ἐπειρῶντο. Ὡς δὲ εἶδον οἱ σὺν ἐμοὶ τὸ γινόμενον, σπασάμενοι τὰς μαχαίρας καὶ παίειν ἀπειλήσαντες, εἰ βιάζοιντο, τοῦ τε δήμου λίθους αραμένου, καὶ βάλλειν ἐπὶ τὸν Ἰωνάθην ὁρμήσαντος, ἐξαρπάζουσί με τῆς τῶν πολεμίων βίας.

59. Ἐπεὶ δὲ προελθὼν ὀλίγον ὑπαντιάζειν ἔμελλον τὸν Ἰωάννην ἰόντα μετὰ τῶν ὁπλιτῶν, δείσας ἐκεῖνον μὲν ἐξέκλινα· διὰ στενωποῦ δέ τινος ἐπὶ τὴν λίμνην σωθεὶς καὶ πλοίου λαβόμενος, ἐμβὰς εἰς τὰς Ταριχέας διεπεραιώθην ἀπροςδοκήτως τὸν κίνδυνον διαφυγών. Μεταπέμπομαί τε εὐθὺς τοὺς πρωτεύοντας τῶν Γαλιλαίων, καὶ φράζω τὸν τρόπον, ᾧ παρασπονδηθεὶς ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Ἰωνάθην καὶ τοὺς Τιβερεῖς, παρ' ὀλίγον διαφθαρείην παρ' αὐτῶν. Ὀργισθὲν δ' ἐπὶ τούτοις τῶν Γαλιλαίων τὸ πλῆθος παρεκελεύετό μοι, μηκέτι μέλλειν τὸν πρὸς αὐτοὺς πόλεμον ἐκφέρειν, ἀλλ' ἐπιτρέπειν αὐτοῖς ἐλθοῦσιν ἐπὶ τὸν Ἰωάννην, ἄρδην αὐτὸν ἀφανίσαι καὶ τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην. Ἐπεῖχον δὲ ὅμως αὐτοὺς ἐγὼ, καίπερ οὕτως ὀργιζομένους, περιμένειν αὐτοὺς κελεύων, ἕως μάθωμεν, τί οἱ πεμφθέντες ὑπ' αὐτῶν εἰς τὴν Ἱεροσολυμιτῶν πόλιν ἀπαγγελοῦσιν, 'μετὰ τῆς ἐκείνων γὰρ γνώμης τὰ δοκοῦντα πράττειν αὐτοὺς ἔφην.' Καὶ ταῦτ' εἰπὼν ἔπεισα. Τότε δὴ καὶ Ἰωάννης, οὐ λαβούσης αὐτοῦ τέλος τῆς ἐνέδρας, ἀνεζεύγνυεν εἰς τὰ Γίσχαλα.

60. Μετ' οὐ πολλὰς δὲ ἡμέρας ἀφικνοῦνται πάλιν οὓς ἐπέμψαμεν, καὶ ἀπήγγελλον 'σφόδρα τὸν δῆμον ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Ἄνανον καὶ τὸν Σίμωνα τὸν τοῦ Γαμαλιήλου παροξύνθαι, ὅτι χωρὶς γνώμης τοῦ κοινοῦ πέμψαντες εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἐκπε- 29

σεῖν με παρεσκεύασαν. Ἔφασαν δὲ οἱ πρέσβεις, ὅτι καὶ τὰς οἰκίας αὐτῶν ὁ δῆμος ὥρμησεν ἐμπιπράναι. Ἔφερον δὲ καὶ γράμματα, δι᾽ ὧν οἱ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν πρῶτοι, πολλὰ τοῦ δήμου δεηθέντος αὐτῶν, ἐμοὶ μὲν τῆς Γαλιλαίας ἀρχὴν ἐβεβαίουν, τοῖς δὲ περὶ τὸν Ἰωνάθην προςέτασσον εἰς τὴν οἰκίαν ὑποστρέφειν θᾶσσον. Ἐντυχὼν οὖν ταῖς ἐπιστολαῖς εἰς Ἄρβηλα κώμην ἀφικόμην. Ἔνθα σύνοδον τῶν Γαλιλαίων ποιησάμενος, ἐκέλευσα τοὺς πρέσβεις διηγήσασθαι τὴν [τῶν Ἱεροσολυμιτῶν] ἐπὶ τοῖς πεπραγμένοις ὑπὸ τῶν περὶ τὸν Ἰωνάθην ὀργὴν καὶ μισοπονηρίαν, καὶ ὡς κυρώσειαν ἐμοὶ τῆς χώρας αὐτῶν τὴν προστασίαν, τά τε πρὸς τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην γεγραμμένα περὶ ἀπαλλαγῆς. Πρὸς οὓς δὴ καὶ τὴν ἐπιστολὴν εὐθέως διεπεμψάμην, πολυπραγμονῆσαι τὸν κομίσαντα κελεύσας, τί ποιεῖν μέλλουσιν.

61. Δεξάμενοι δ᾽ ἐκεῖνοι τὴν ἐπιστολὴν, καὶ ταραχθέντες οὐχὶ μετρίως, μεταπέμπονται τὸν Ἰωάννην καὶ τοὺς ἐκ τῆς βουλῆς τῶν Τιβεριέων, τούς τε πρωτεύοντας Γαβάρων, βουλήν τε προτιθέασιν, σκοπεῖσθαι κελεύοντες, τί πρακτέον ἐστὶν αὐτοῖς. Τιβεριεῦσι μὲν οὖν ἀντέχεσθαι μᾶλλον ἐδόκει τῶν πραγμάτων· οὐ δεῖν γὰρ ἔφασαν ἐγκαταλιπέσθαι τὴν πόλιν αὐτῶν ἅπαξ ἐκείνοις προςτεθειμένην, ἄλλως τε μηδ᾽ ἐμοῦ μέλλοντος αὐτῶν ἀφέξεσθαι· τοῦτο γὰρ ὡς ἠπειληκότος ἐμοῦ κατεψεύδοντο. Ὁ δὲ Ἰωάννης οὐ μόνον τούτοις συνηρέσκετο, πορευθῆναι δὲ συνεβούλευεν αὐτῶν τοὺς δύο κατηγορήσοντάς μου πρὸς τὸ πλῆθος, ὅτι μὴ καλῶς τὰ κατὰ τὴν Γαλιλαίαν διοικῶ, καὶ πείσειν ῥᾳδίως αὐτοὺς ἔφη διά τε τὸ ἀξίωμα, καὶ παντὸς πλήθους εὐτρεπτῶς ἔχοντος. Δόξαντος οὖν τοῦ Ἰωάννου κρατίστην εἰςενηνοχέναι γνώμην, ἔδοξε δύο μὲν ἀπιέναι πρὸς τοὺς Ἱεροσολυμίτας, Ἰωνάθην καὶ Ἀνανίαν, τοὺς ἑτέρους δὲ δύο μένοντας ἐν τῇ Τιβεριάδι καταλιπεῖν.

Συνεπηγάγοντο δὲ φυλακῆς ἕνεκα τῆς ἑαυτῶν ὁπλίτας ἑκατόν.

62. *Τιβεριεῖς δὲ τὰ μὲν τείχη προενόησαν ἀσφαλισθῆναι, τοὺς ἐνοίκους δὲ κελεύουσιν ἀναλαβεῖν τὰ ὅπλα. Καὶ παρ' Ἰωάννου δὲ μετεπέμψαντο στρατιώτας οὐκ ὀλίγους συμμαχήσοντας, εἰ δεήσειεν αὐτοῖς τὰ πρὸς ἐμέ. Ἦν δὲ ὁ Ἰωάννης ἐν Γισχάλοις. Οἱ τοίνυν περὶ τὸν Ἰωνάθην ἀναζεύξαντες ἀπὸ τῆς Τιβεριάδος, ὡς ἧκον εἰς Δαβάριττα κώμην ἐν ταῖς ἐσχατιαῖς τῆς Γαλιλαίας κειμένην ἐν τῷ Μεγάλῳ πεδίῳ, περὶ μέσην νύκτα τοῖς ἐμοῖς φύλαξιν ἐμπίπτουσιν. Οἳ καὶ κελεύσαντες αὐτοὺς τὰ ὅπλα καταθέσθαι, ἐφύλασσον ἐν δεσμοῖς ἐπὶ τόπου καθὼς αὐτοῖς ἐνετετάλμην. Γράφει δὲ πρός με ταῦτα δηλῶν Λευῒς, ᾧ τὴν φυλακὴν ἐπεπιστεύκειν. Παραλιπὼν οὖν ἡμέρας δύο, καὶ μηδὲν ἐγνωκέναι προςποιησάμενος, πέμψας πρὸς τοὺς Τιβεριεῖς συνεβούλευον αὐτοῖς, τὰ ὅπλα καταθεμένους ἀπολύειν τοὺς ἀνθρώπους εἰς τὴν ἑαυτῶν. Οἱ δὲ — δόξαν γὰρ εἶχον τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην εἰς τὰ Ἱεροσόλυμα ἤδη διαπεπορεῦσθαι — βλασφήμους ἐποιήσαντο τὰς ἀποκρίσεις. Μὴ καταπλαγεὶς δ' ἐγὼ καταστρατηγεῖν αὐτοὺς ἐπενόουν· πρὸς γὰρ τοὺς πολίτας ἐξάπτειν πόλεμον οὐκ ἐνόμιζον εὐσεβὲς εἶναι. Βουλόμενος δὲ αὐτοὺς ἀποσπάσαι τῶν Τιβεριέων, μυρίους ὁπλίτας τοὺς ἀρίστους ἐπιλέξας εἰς τρεῖς μοίρας διεῖλον, καὶ τούτους μὲν ἀφανῶς ἐν κώμαις προςέταξα λοχῶντας περιμένειν, χιλίους δὲ εἰς ἑτέραν κώμην, ὀρεινὴν μὲν ὁμοίως, ἀπέχουσαν δὲ τῆς Τιβεριάδος τέσσαρας σταδίους, εἰςήγαγον, κελεύσας ἐκείνους ἐπειδὰν λάβωσι σημεῖον εὐθὺς καταβαίνειν. Αὐτὸς δὲ τῆς κώμης προελθὼν ἐν προὔπτῳ καθεζόμην. Οἱ δὲ Τιβεριεῖς ὁρῶντες ἐξέτρεχον συνεχῶς, καὶ πολλὰ κατεκερτόμουν· τοσαύτη γοῦν ἀφροσύνη κατέσχεν αὐτοὺς, ὥςτε ποιήσαντες εὐπρεπῆ κλίνην προέθεσαν, καὶ περὶ αὐτὴν ἱστάμενοι ὠδύροντό με*

μετὰ παιδιᾶς καὶ γέλωτος. Διετιθέμην δ' ἐγὼ τὴν ψυχὴν ἡδέως τὴν ἄνοιαν αὐτῶν ἐπιβλέπων.

63. Βουλόμενος δὲ δι' ἐνέδρας λαβεῖν τὸν Σίμωνα, καὶ σὺν αὐτῷ τὸν Ἰωάζαρον, πέμψας πρὸς αὐτοὺς, παρεκάλουν ὀλίγον τῆς πόλεως πορρωτέρω μετὰ φίλων πολλῶν τε τῶν φυλαξόντων αὐτοὺς ἐλθεῖν· βούλεσθαι γὰρ ἔφην καταβὰς, σπείσασθαι πρὸς αὐτοὺς καὶ διανείμασθαι τὴν προστασίαν τῆς Γαλιλαίας. Σίμων μὲν οὖν, διά τε ἄνοιαν καὶ πρὸς ἐλπίδι κέρδους ἀπατηθεὶς, οὐκ ὤκνησεν ἐλθεῖν. Ὁ δὲ Ἰωάζαρος ἐνέδραν ὑποπτεύσας, ἔμεινεν. Ἀναβάντα δὴ τὸν Σίμωνα μετὰ φίλων τῶν παραφυλασσόντων αὐτὸν, ὑπαντιάσας ἠσπαζόμην φιλοφρόνως, καὶ χάριν ἔχειν ὡμολόγουν ἀναβάντι. Μετ' οὐ πολὺ δὲ συμπεριπατῶν, ὡς καταμόνας τι βουλόμενος εἰπεῖν, ἐπεὶ πορρωτέρω τῶν φίλων ἀπήγαγον, μέσον ἀράμενος ἀγαγεῖν εἰς τὴν κώμην τοῖς μετ' ἐμοῦ φίλοις ἔδωκα. Τοὺς ὁπλίτας δὲ καταβῆναι κελεύσας, προςέβαλλον μετ' αὐτῶν τῇ Τιβεριάδι. Μάχης δὲ γενομένης ἀμφοτέρωθεν καρτερᾶς, καὶ ὅσον οὔπω τῶν Τιβεριέων νικώντων, ἐπεφεύγεισαν γὰρ οἱ παρ' ἡμῖν ὁπλῖται, τὸ γινόμενον ἰδὼν, καὶ τοὺς μετ' ἐμαυτοῦ παρακαλέσας, νικῶντας ἤδη τοὺς Τιβεριεῖς εἰς τὴν πόλιν συνεδίωξα. Ἑτέραν δὲ δύναμιν εἰςπέμψας διὰ τῆς λίμνης, προςέταξα τὴν πρώτην λαβοῦσιν οἰκίαν, ἐμπρῆσαι. Τούτου δὲ γενομένου, νομίσαντες οἱ Τιβεριεῖς εἰλῆφθαι κατὰ κράτος αὐτῶν τὴν πόλιν, ὑπὸ φόβου ῥίπτουσι τὰ ὅπλα, μετὰ γυναικῶν δὲ καὶ τέκνων ἱκέτευον φείσασθαι τῆς πόλεως αὐτῶν. Ἐγὼ δὲ πρὸς τὰς δεήσεις ἐπικλασθεὶς, τοὺς μὲν στρατιώτας τῆς ὁρμῆς ἐπέσχον, αὐτὸς δὲ, καὶ γὰρ ἑσπέρα κατέλαβεν, μετὰ τῶν ὁπλιτῶν ἀπὸ τῆς πολιορκίας ὑποστρέψας, περὶ τὴν τοῦ σώματος θεραπείαν ἐγινόμην. Καλέσας δὲ ἐπὶ τὴν ἑστίασιν τὸν Σίμωνα παρεμυθούμην περὶ τῶν

γεγονότων, ὑπισχνούμην τε δοὺς ἐφόδια αὐτῷ παραπέμψειν εἰς Ἱεροσόλυμα μετὰ πάσης ἀσφαλείας.

64. Κατὰ δὲ τὴν ἐπιοῦσαν ἡμέραν μυρίους ἐπαγόμενος ὁπλίτας ἧκον εἰς Τιβεριάδα, καὶ μεταπεμψάμενος εἰς τὸ στάδιον τοὺς πρώτους αὐτῶν τοῦ πλήθους, ἐκέλευσα φράζειν, οἵτινες εἶεν αἴτιοι τῆς ἀποστάσεως. Ἐνδειξαμένων δὲ τοὺς ἄνδρας, ἐκείνους μὲν δεδεμένους εἰς τὴν Ἰωταπάτην πόλιν ἐξέπεμψα, τοὺς δὲ περὶ τὸν Ἰωνάθην καὶ Ἀνανίαν λύσας τῶν δεσμῶν, καὶ δοὺς ἐφόδια, μετὰ Σίμωνος καὶ Ἰωαζάρου καὶ ὁπλιτῶν πεντακοσίων, οἳ παραφυλάξουσιν αὐτούς, ἐξέπεμψα εἰς τὰ Ἱεροσόλυμα. Τιβεριεῖς δὲ πάλιν προσελθόντες συγγινώσκειν αὐτοῖς παρεκάλουν περὶ τῶν πεπραγμένων, ἐπανορ- 31
θώσασθαι τὰς ἁμαρτίας τῇ μετὰ ταῦτα πρὸς ἐμὲ πίστει λέγοντες· τὰ δὲ ἐκ τῆς διαρπαγῆς περισσεύσαντα σῶσαί με τοῖς ἀπολέσασιν ἐδέοντο. Καὶ ἐγὼ τοῖς ἔχουσιν προσέταττον εἰς μέσον πάντα φέρειν, ἀπειθούντων δὲ μέχρι πολλοῦ, θεασάμενός τινα τῶν περὶ ἐμὲ στρατιωτῶν λαμπροτέραν τοῦ συνήθους περικείμενον στολήν, ἐπυθόμην 'πόθεν ἔχοι.' Εἰπόντος δὲ 'ἐκ τῆς κατὰ πόλιν ἁρπαγῆς' ἐκεῖνον μὲν πληγαῖς ἐκόλασα, τοῖς δὲ ἄλλοις ἅπασιν ἠπείλησα μείζω τιμωρίαν ἐπιθήσειν, μὴ κομίσασιν εἰς ἐμφανὲς ὅσα ἡρπάκεισαν. Πολλῶν δὲ συναχθέντων, ἑκάστῳ τῶν Τιβεριέων τὸ ἐπιγνωσθὲν ἀποδέδωκα.

65. Γεγονὼς δ' ἐνταῦθα τῆς διηγήσεως, βούλομαι πρὸς Ἰοῦστον, καὶ αὐτὸν τὴν περὶ τούτων πραγματείαν γεγραφότα, πρός τε τοὺς ἄλλους τοὺς ἱστορίαν μὲν γράφειν ὑπισχνουμένους, περὶ δὲ τὴν ἀλήθειαν ὀλιγώρους, καὶ δι' ἔχθραν ἢ καὶ χάριν τὸ ψεῦδος οὐκ ἐντρεπομένους, μικρὰ διελθεῖν. Πράττουσι μὲν γὰρ ὅμοιόν τι τοῖς περὶ συμβολαίων πλαστὰ γράμματα συντιθεῖσιν, τῷ δὲ μηδεμίαν ὁμοίως τιμωρίαν ἐκείνοις δεδιέναι, καταφρονοῦσι τῆς ἀληθείας. Ἰοῦστος γοῦν συγγράφειν τὰς περὶ τούτων,

ἐπιχειρήσας πράξεις, καὶ τὸν πόλεμον, ὑπὲρ τοῦ δοκεῖν φιλόπονος εἶναι, ἐμοῦ μὲν κατέψευσται, ἠλήθευσε δὲ οὐδὲ περὶ τῆς πατρίδος. Ὅθεν, ἀπολογήσασθαι γὰρ νῦν ἀνάγκην ἔχω καταψευδομαρτυρούμενος, ἐρῶ τὰ μέχρι νῦν σεσιωπημένα. Καὶ μὴ θαυμάσῃ τὶς, ὅτι μὴ πάλαι περὶ τούτων ἐδήλωσα· τῷ γὰρ ἱστορίαν ἀναγράφοντι τὸ μὲν ἀληθεύειν ἀναγκαῖον, ἔξεστι δὲ ὅμως μὴ πικρῶς τὰς τινων πονηρίας ἐλέγχειν, οὐ διὰ τὴν πρὸς ἐκείνους χάριν, ἀλλὰ διὰ τὴν αὐτοῦ μετριότητα. "Πῶς οὖν," ἵνα φῶ πρὸς αὐτὸν ὡς παρόντα, "Ἰοῦστε, δεινότατε συγγραφέων, τοῦτο γὰρ αὔχεις περὶ σεαυτοῦ, αἴτιοι γεγόναμεν ἐγώ τε καὶ Γαλιλαῖοι τῇ πατρίδι σου τῆς πρὸς Ῥωμαίους καὶ πρὸς τὸν βασιλέα στάσεως; Πρότερον γὰρ ἢ ἐμὲ τῆς Γαλιλαίας στρατηγὸν ὑπὸ τοῦ κοινοῦ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν χειροτονηθῆναι, σὺ καὶ πάντες Τιβεριεῖς, οὐ μόνον ἀνειλήφατε τὰ ὅπλα, ἀλλὰ καὶ τὰς ἐν τῇ Συρίᾳ Δέκα πόλεις ἐπολεμεῖτε. Σὺ γοῦν τὰς κώμας αὐτῶν ἐνέπρησας, καὶ ὁ σὸς οἰκέτης ἐπὶ τῆς παρατάξεως ἐκείνης ἔπεσεν. Ταῦτα δὲ οὐκ ἐγὼ λέγω μόνος, ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς Οὐεσπασιανοῦ τοῦ αὐτοκράτορος ὑπομνήμασιν οὕτως γέγραπται, καὶ τίνα τρόπον ἐν Πτολεμαΐδι Οὐεσπασιανοῦ κατεβόησαν οἱ τῶν Δέκα πόλεων ἔνοικοι, τιμωρίαν ὑποσχεῖν σε τὸν αἴτιον ἀξιοῦντες. Καὶ ἐδεδώκεις ἂν δίκην Οὐεσπασιανοῦ κελεύσαντος, εἰ μὴ βασιλεὺς Ἀγρίππας, λαβὼν ἐξουσίαν ἀποκτεῖναί σε, πολλὰ τῆς ἀδελφῆς Βερνίκης δεηθείσης, οὐκ ἀνελὼν δεδεμένον ἐπὶ πολὺν χρόνον ἐφύλαξεν. Καὶ αἱ μετὰ ταῦτα δὲ πολιτεῖαί σου σαφῶς ἐμφανίζουσιν τόν τε βίον τὸν ἄλλον, καὶ ὅτι σὺ τὴν πατρίδα Ῥωμαίων ἀπέστησας· ὧν τὰ τεκμήρια καὶ ἐγὼ δηλώσω μετ' ὀλίγον. Βούλομαι δ' εἰπεῖν καὶ πρὸς τοὺς ἄλλους Τιβεριεῖς ὀλίγα διά σε, καὶ παραστῆσαι τοῖς ἐντυγχάνειν μέλλουσι ταῖς ἱστορίαις, ὅτι μήτε φιλορώμαιοι μήτε φιλοβασιλεῖς γεγόνατε. Τῶν ἐν τῇ Γα-

λιλαίᾳ πόλεων αἱ μέγισται Σέπφωρις καὶ Τιβεριὰς,
ἡ σὴ πατρὶς, ὦ Ἰοῦστε. Ἀλλὰ Σέπφωρις μὴν ἐν
τῷ μεσαιτάτῳ τῆς Γαλιλαίας κειμένη, καὶ περὶ αὐτὴν 32
κώμας ἔχουσα πολλὰς, καί τι θρασύνεσθαι δυναμένη
πρὸς Ῥωμαίους εἴπερ ἠθέλησεν, εὐχερῶς, διεγνω-
κυῖα τῇ πρὸς τοὺς δεσπότας ἐμμένειν πίστει, καὶ
ἐμὲ τῆς πόλεως αὐτῶν ἐξέκλεισε, καὶ στρατεύσασθαί
τινα τῶν πολιτῶν Ἰουδαίοις ἐκώλυσεν. Ὅπως δὲ
καὶ τὰ πρὸς ἡμᾶς ἀσφαλὴς εἴη, ἠπάτησάν με τείχε-
σιν αὐτῶν τὴν πόλιν ὀχυρῶσαι προτρέψαντες. Καὶ
παρὰ Κεστίου Γάλλου τοῦ τῶν ἐν Συρίᾳ Ῥωμαϊ-
κῶν ταγμάτων ἡγεμονεύσαντος φρουρὰν ἑκόντες ἐνε-
δέξαντο, καταφρονήσαντες ἐμοῦ τότε μέγα δυναμέ-
νου, καὶ πᾶσι δι' ἐκπλήξεως ὄντος. Πολιορκουμέ-
νης δὲ τότε τῆς μεγίστης ἡμῶν πόλεως Ἱεροσολύμων,
καὶ τοῦ κοινοῦ πάντων ἱεροῦ κινδυνεύοντος ἐν τῇ
τῶν πολεμίων ἐξουσίᾳ γενέσθαι, συμμαχίαν οὐκ ἔπεμ-
ψαν μὴ βουλόμενοι δοκεῖν κατὰ Ῥωμαίων ὅπλα λα-
βεῖν. Ἡ δὲ σὴ πατρὶς, ὦ Ἰοῦστε, κειμένη ἐν τῇ
Γεννησαρίτιδι λίμνῃ, καὶ ἀπέχουσα Ἵππου μὲν στά-
δια τριάκοντα, Γαδάρων δὲ ἑξήκοντα, Σκυθοπό-
λεως δὲ εἴκοσι καὶ ἑκατὸν τῆς ὑπηκόου βασιλείας,
μηδὲ μιᾶς δὲ πόλεως Ἰουδαίων παρακειμένης, εἰ
ἤθελεν τὴν πρὸς Ῥωμαίους πίστιν φυλάττειν ῥᾴως
ἐδύνατο. Καὶ γὰρ πολὺς ἦτε δῆμος, καὶ ὅπλων
ηὐπορεῖτε. 'Ἀλλ', ὡς σὺ φὴς, αἴτιος ἤμην ἐγὼ τότε.'
Μετὰ ταῦτα δὲ, τίς, ὦ Ἰοῦστε; Πρὸ γὰρ τῆς Ἱε-
ροσολύμων πολιορκίας οἶδας ὑπὸ Ῥωμαίοις ἐμὲ γε-
νόμενον, καὶ Ἰωτάπατα κατὰ κράτος ληφθέντα,
φρούριά τε πολλὰ, πολύν τε Γαλιλαίων ὄχλον κατὰ
τὴν μάχην πεσόντα. Τότε οὖν ἐχρῆν ὑμᾶς, πάν-
τως ἀπηλλαγμένους τοῦ δι' ἐμὲ φόβου, ῥίψασθαι τὰ
ὅπλα καὶ παραστῆναι τῷ βασιλεῖ καὶ Ῥωμαίοις, ὅτε
δὲ οὐχ ἑκόντες, ἀλλ' ἀναγκασθέντες ἐπὶ τὸν πρὸς
αὐτοὺς ὡρμήσατε πόλεμον. Ὑμεῖς δὲ καὶ περιεμεί-
νατε Οὐεσπασιανὸν, ἕως αὐτὸς ἀφικόμενος μετὰ

πάσης τῆς δυνάμεως προςέλθῃ τοῖς τείχεσι, καὶ τότε διὰ φόβον τὰ ὅπλα κατέθεσθε· καὶ πάντως ἂν ὑμῶν ἡ πόλις ἥλω κατὰ κράτος, εἰ μὴ τῷ βασιλεῖ δεομένῳ καὶ τὴν ἄνοιαν ὑμῶν παραιτουμένῳ συνεχώρησεν Οὐεσπασιανός. Οὐκ ἐγὼ τοίνυν αἴτιος, ἀλλ' ὑμεῖς οἱ πολεμικὰ φρονήσαντες. Ἢ οὐ μέμνησθε, ὅτι τοσαυτάκις ὑμῶν ἐγκρατὴς γενόμενος, οὐδένα διέφθειρα; Στασιάζοντες δὲ ὑμεῖς πρὸς ἀλλήλους, οὐ διὰ τὴν πρὸς τὸν βασιλέα καὶ Ῥωμαίους εὔνοιαν, διὰ δὲ τὴν ὑμετέραν αὐτῶν πονηρίαν ἑκατὸν ὀγδοήκοντα πέντε τῶν πολιτῶν ἀπεκτείνατε, κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον ἐμοῦ πολιορκουμένου ἐν Ἰωταπάτοις ὑπὸ Ῥωμαίων. Τί δ' οὐχὶ κατὰ τὴν τῶν Ἱεροσολύμων πολιορκίαν δισχίλιοι Τιβεριέων ἐξητάσθησαν, οἱ μὲν πεπτωκότες, οἱ δὲ ληφθέντες αἰχμάλωτοι; Ἀλλὰ σὺ πολέμιος οὐ γεγονέναι φήσεις, ὅτι πρὸς βασιλέα τότ' ἔφυγες. Καὶ τοῦτο δὲ διὰ τὸν ἐξ ἐμοῦ φόβον φημί σε πεποιηκέναι. 'Καὶ ἐγὼ μὴν πονηρός,' ὡς λέγεις. Ὁ δὲ βασιλεὺς Ἀγρίππας, ὁ τὴν ψυχήν σοι συγχωρήσας ὑπὸ Οὐεσπασιανοῦ θανεῖν κατακριθέντι, ὁ τοσούτοις δωρησάμενος χρήμασιν, τίνος ἕνεκεν ὕστερον δὶς μὲν ἔδησε, τοσαυτάκις δὲ φυγεῖν τὴν πατρίδα προςέταξε; Καὶ ἀποθανεῖν δὲ κελεύσας ἅπαξ, τῇ ἀδελφῇ Βερνίκῃ, πολλὰ δεηθείσῃ, τὴν σωτηρίαν ἐχαρίσατο; Καὶ μετὰ τοσαῦτα δὲ
33 τὰ κακουργήματα τάξιν ἐπιστολῶν σοι πιστεύσας, ὡς καὶ ταύτας σὲ εὗρε ῥᾳδιουργοῦντα, ἀπήλασεν τῆς ὄψεως. Ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων ἐλέγχειν ἐπ' ἀκριβὲς ἐῶ. Θαυμάζειν δ' ἔπεισί μοι τὴν σὴν ἀναίδειαν, ὅτι τολμᾷς λέγειν, ἁπάντων τῶν τὴν πραγματείαν ταύτην γεγραφότων αὐτὸς ἄμεινον ἐξηγγελκέναι, μήτε τὰ πραχθέντα κατὰ τὴν Γαλιλαίαν ἐπιστάμενος, ἦς γὰρ ἐν Βηρυτῷ τότε παρὰ βασιλεῖ, μήθ', ὅσα ἔπαθον Ῥωμαῖοι ἐπὶ τῆς Ἰωταπατῶν πολιορκίας ἢ ἔδρασαν ἡμᾶς, παρακολουθήσας, μήθ', ὅσα κατ' ἐμαυτὸν ἔπραξα πολιορκούμενος, δυ-

νηθεὶς πυθέσθαι· πάντες γὰρ οἱ ἀπαγγείλαντες ἂν διεφθάρησαν ἐπὶ τῆς παρατάξεως ἐκείνης. Ἀλλ' ἴσως τὰ κατὰ Ἱεροσολυμιτῶν πραχθέντα μετὰ ἀκριβείας φήσεις συγγεγραφέναι. Καὶ πῶς οἷόν τε; Οὔτε γὰρ τῷ πολέμῳ παρέτυχες, οὔτε τὰ Καίσαρος ἀνέγνως ὑπομνήματα. Μέγιστον δὲ τεκμήριον, τοῖς Καίσαρος ὑπομνήμασιν ἐναντίαν πεποίησαι τὴν γραφήν. Εἰ δὲ θαῤῥεῖς ἄμεινον ἁπάντων συγγεγραφέναι, διὰ τί, ζώντων Οὐεσπασιανοῦ καὶ Τίτου τῶν αὐτοκρατόρων τοῦ πολέμου γενομένων, καὶ βασιλέως Ἀγρίππα περιόντος ἔτι καὶ τῶν ἐκ γένους αὐτοῦ πάντων, ἀνδρῶν τῆς Ἑλληνικῆς παιδείας ἐπὶ πλεῖστον ἡκόντων, τὴν ἱστορίαν οὐκ ἔφερες εἰς μέσον; Πρὸ γὰρ εἴκοσιν ἐτῶν εἶχες γεγραμμένην, καὶ παρ' εἰδότων ἔμελλες τῆς ἀκριβείας τὴν μαρτυρίαν ἀποφέρεσθαι. Νῦν δὲ, ὅτε ἐκεῖνοι μὲν οὐκ ἔτι εἰσὶ μεθ' ἡμῶν, ἐλεγχθῆναι δ' οὐ νομίζεις, τεθάῤῥηκας. Οὐ μὴν ἐγώ σοι τὸν αὐτὸν τρόπον, περὶ τῆς ἐμαυτοῦ γραφῆς ἔδεισα, ἀλλ' αὐτοῖς ἐπέδωκα τοῖς αὐτοκράτορσι τὰ βιβλία, μόνον οὐ τῶν ἔργων ἤδη βλεπομένων· συνῄδειν γὰρ ἐμαυτῷ τετηρηκότι τὴν τῆς ἀληθείας παράδοσιν, ἐφ' ᾗ μαρτυρίας τεύξεσθαι προςδοκήσας οὐ διήμαρτον. Καὶ ἄλλοις δὲ πολλοῖς εὐθὺς ἐπέδωκα τὴν ἱστορίαν, ὧν ἔνιοι καὶ παρετετυχήκεισαν πολέμῳ, καθάπερ βασιλεὺς Ἀγρίππας καί τινες αὐτοῦ τῶν συγγενῶν. Ὁ μὲν γὰρ αὐτοκράτωρ Τίτος οὕτως ἐκ μόνων αὐτῶν ἐβουλήθη τὴν γνῶσιν τοῖς ἀνθρώποις παραδοῦναι τῶν πράξεων, ὥςτε χαράξας τῇ ἑαυτοῦ χειρὶ, τὰ βιβλία δημοσιεύεσθαι, προςέταξεν. Ὁ δὲ βασιλεὺς Ἀγρίππας ἑξήκοντα δύο γέγραφεν ἐπιστολὰς, τὴν τῆς ἀληθείας παράδοσιν μαρτυρῶν. Ὧν δὴ καὶ δύο ὑπέταξα, καὶ βουληθέντι σοὶ τὰ γεγραμμένα γνῶναι πάρεστιν ἐξ αὐτῶν. Βασιλεὺς Ἀγρίππας Ἰωσήπῳ τῷ φιλτάτῳ χαίρειν. Ἥδιστα διῆλθον τὴν βίβλον, καί μοι πολὺ ἐπιμελέστερον ἔδοξας τῶν ταῦτα

συγγραψάντων ἠκριβωκέναι. Πέμπε δέ μοι καὶ τὰς λοιπάς. Ἔῤῥωσο φίλτατε.' ‚Βασιλεὺς Ἀγρίππας Ἰωσήπῳ τῷ φιλτάτῳ χαίρειν. Ἐξ ὧν ἔγραψας οὐδὲ μιᾶς ἔοικας χρήζειν διδασκαλίας ὑπὲρ
34 τοῦ μαθεῖν ἡμᾶς ὅλους ἀρχῆθεν. Ὅτ' ἂν μέντοι συντύχῃς μοι, καὶ αὐτός σε πολλὰ κατηχήσω τῶν ἀγνοουμένων.' Ἐμοὶ δὲ ἀπαρτισθείσης τῆς ἱστορίας, ἀληθείᾳ, οὐ κολακεύων, — οὐδὲ γὰρ ἐπέβαλλεν αὐτῷ, — οὐδὲ εἰρωνευόμενος, ὡς σὺ φήσεις, — πόῤῥω γὰρ ἦν ἐκεῖνος τοιαύτης κακοηθείας, — ἀλλὰ τὴν ἀλήθειαν ἐμαρτύρει, καθάπερ πάντες οἱ ταῖς ἱστορίαις ἐντυγχάνοντες." Ἀλλὰ τὰ μὲν πρὸς τὸν Ἰοῦστον, ἀναγκαίαν λαβόντα τὴν παρέκβασιν, μέχρι τούτων λελέχθω.

66. Διοικήσας δ' ἐγὼ τὰ κατὰ τὴν Τιβεριάδα, καὶ καθίσας τῶν φίλων συνέδριον, ἐβουλευόμην περὶ τῶν πρὸς Ἰωάννην πραχθησομένων. Ἐδόκει μὲν οὖν πᾶσι τοῖς Γαλιλαίοις ὁπλίσαντα πάντας ἀπελθεῖν ἐπὶ τὸν Ἰωάννην, καὶ λαβεῖν παρ' αὐτοῦ δίκας ὡς πάσης τῆς στάσεως αἰτίου γεγονότος. Οὐκ ἠρεσκόμην δ' ἐγὼ ταῖς γνώμαις αὐτῶν, προαίρεσιν ἔχων τὰς ταραχὰς χωρὶς φόνου καταστέλλειν. Ὅθεν δὴ παρῄνεσα πᾶσαν εἰςενέγκασθαι πρόνοιαν ὑπὲρ τοῦ γνῶναι τὰ ὀνόματα τῶν ὑπὸ τὸν Ἰωάννην ὄντων. Ποιησάντων δὲ ἐκείνων, γνοὺς ἐγὼ τοὺς ἀνθρώπους, οἵτινες ἦσαν, ἐξέθηκα πρόγραμμα, διὰ τούτου πίστιν καὶ δεξιὰν προτείνων τοῖς μετὰ Ἰωάννου θελήσασι λαβεῖν μετάνοιαν, καὶ ἡμερῶν εἴκοσι χρόνον προὔτεινα τοῖς βουλεύσασθαι θέλουσι περὶ τῶν ἑαυτοῖς συμφερόντων. Ἠπείλουν δὲ, εἰ μὴ ῥίψωσιν τὰ ὅπλα, καταπρήσειν αὐτῶν τὰς οἰκήσεις καὶ δημοσιώσειν τὰς οὐσίας. Ταῦτα δὲ ἀκούσαντες οἱ ἄνθρωποι, καὶ ταραχθέντες οὔ τι μετρίως καταλείπουσι μὲν τὸν Ἰωάννην, τὰ δ' ὅπλα ῥίψαντες ἧκον πρός με τετρακιςχίλιοι τὸν ἀριθμόν. Μόνοι δὲ τῷ Ἰωάννῃ παρέμειναν οἱ πολῖται, καὶ ξένοι τινὲς ἐκ

τῆς Τυρίων μητροπόλεως ὡς χίλιοι καὶ πεντακόσιοι. Ἰωάννης μὲν, οὕτω καταστρατηγηθεὶς ὑπ᾽ ἐμοῦ, τὸ λοιπὸν ἐν τῇ πατρίδι περίφοβος ἔμεινεν.

67. Κατὰ τοῦτον δὲ τὸν καιρὸν Σεπφωρῖται θαῤῥήσαντες ἀναλαμβάνουσιν ὅπλα, πεποιθότες τῇ τε τῶν τειχῶν ὀχυρότητι, καὶ τῷ πρὸς ἑτέροις ὄντα με ὁρᾶν. Πέμπουσι δὴ πρὸς Κέστιον Γάλλον, Συρίας δ᾽ ἦν οὗτος ἡγεμὼν, παρακαλοῦντες ἢ αὐτὸν ἥκειν θᾶττον παραληψόμενον αὐτῶν τὴν πόλιν, ἢ πέμψαι τοὺς φρουρήσοντας. Ὁ δὲ Γάλλος ἐλεύσεσθαι μὲν ὑπέσχετο, πότε δὲ, οὐ διεσάφησεν. Καὶ ἐγὼ ταῦτα πυθόμενος, ἀναλαβὼν τοὺς σὺν ἐμοὶ στρατιώτας, καὶ ὁρμήσας ἐπὶ τοὺς Σεπφωρίτας, εἷλον αὐτῶν τὴν πόλιν κατὰ κράτος. Λαβόμενοι δ᾽ ἀφορμῆς οἱ Γαλιλαῖοι, καὶ παρεῖναι τοῦ μίσους τὸν καιρὸν οἰηθέντες, εἶχον γὰρ ἀπεχθῶς καὶ πρὸς ταύτην τὴν πόλιν, ὥρμησαν ὡς ἄρδην ἀφανίσοντες πάντας σὺν τοῖς ἐποίκοις. Εἰςδραμόντες οὖν ἐνεπίμπρησαν αὐτῶν τὰς οἰκίας, ἐρήμους καταλαμβάνοντες· οἱ γὰρ ἄνθρωποι δείσαντες εἰς τὴν ἀκρόπολιν συνέφυγον. Διήρπαζον δὲ πάντα, καὶ τρόπον οὐδένα πορθήσεως κατὰ τῶν ὁμοφύλων παρελίμπανον. Ταῦτ᾽ ἐγὼ θεασάμενος, σφόδρα διετέθην ἀνιαρῶς, καὶ παύεσθαι προςέταττον αὐτοῖς, ὑπομιμνήσκων, ὅτι τοιαῦτα δρᾷν ὁμοφύλους οὐκ ἔστιν ὅσιον. Ἐπεὶ δ᾽ οὔτε παρακαλοῦντος οὔτε προςτάσσοντος ἤκουον, ἐνίκα δὲ τὸ μῖσος τὰς παραινέσεις, τοὺς πιστοτάτους τῶν περὶ ἐμὲ φίλων ἐκέλευσα διαδοῦναι λόγους, ὡς Ῥωμαίων μετὰ μεγάλης δυνάμεως κατὰ τὸ ἕτερον μέρος τῆς πόλεως εἰςβεβληκότων. Ταῦτα δ᾽ ἐποίουν ὑπὲρ τοῦ τῆς φήμης ἐμπεσούσης ἐπισχεῖν μὲν τῶν Γαλιλαίων τὰς 35
ὁρμὰς, διασῶσαι δὲ τὴν τῶν Σεπφωριτῶν πόλιν. Καὶ τέλος προεχώρησε τὸ στρατήγημα· τῆς γὰρ ἀγγελίας ἀκούσαντες, ἐφοβήθησαν ὑπὲρ αὑτῶν, καὶ καταλιπόντες τὰς ἁρπαγὰς ἔφυγον, μάλιστα δὲ, ἐπεὶ

καὶ ἐμὲ τὸν στρατηγὸν ἑώρων ταῦτα ποιοῦντα· πρὸς γὰρ τὸ πιστὸν τῆς φήμης, ἐσκηπτόμην ὁμοίως αὐτοῖς διατίθεσθαι. Σεπφωρῖται δὲ, παρ' ἐλπίδα τὴν ἑαυτῶν, ὑπὸ τοῦ ἐμοῦ σοφίσματος ἐσώθησαν.

68. Καὶ Τιβεριὰς δὲ παρ' ὀλίγον διηρπάσθη ὑπὸ Γαλιλαίων, τοιαύτης αἰτίας ὑποπεσούσης. Τῶν ἐκ τῆς βουλῆς οἱ πρῶτοι γράφουσι πρὸς τὸν βασιλέα, παρακαλοῦντες ἀφικέσθαι πρὸς αὐτοὺς παραληψόμενον τὴν πόλιν. Ὑπέσχετο βασιλεὺς ἔρχεσθαι, καὶ τὰς ἐπιστολὰς ἀντιγράφει, καὶ τῶν περὶ τὸν κοιτῶνά τινι, Κρίσπῳ μὲν τὸ ὄνομα, τὸ δὲ γένος Ἰουδαίῳ, δίδωσι πρὸς τοὺς Τεβεριεῖς φέρειν. Τοῦτον κομίσαντα γράμματα γνωρίσαντες οἱ Γαλιλαῖοι, καὶ συλλαβόντες ἄγουσιν ἐπ' ἐμέ. Τὸ δὲ πᾶν πλῆθος, ὡς ἤκουσε, παροξυνθὲν, ἐφ' ὅπλα τρέπεται. Συναχθέντες δὲ πολλοὶ πανταχόθεν κατὰ τὴν ἐπιοῦσαν, ἧκον εἰς Ἀσωχὶν πόλιν, ἔνθα δὲ τὴν κατάλυσιν ἐποιούμην, καταβοήσεις τε σφόδρα ἐποιοῦντο, προδότιν ἀποκαλοῦντες τὴν Τιβεριάδα καὶ βασιλέως φίλην. Ἐπιτρέπειν τε ἠξίουν αὐτοῖς καταβᾶσιν ἄρδην ἀφανίσαι· καὶ γὰρ πρὸς τοὺς Τιβεριεῖς ἔσχον ἀπεχθῶς, ὡς πρὸς τοὺς Σεπφωρίτας.

69. Ἐγὼ δὲ ἀκούσας ἠπόρουν, τίνα τρόπον ἐξαρπάσω τὴν Τιβεριάδα τῆς Γαλιλαίων ὀργῆς ἐπ' αὐτούς. Ἀρνήσασθαι γὰρ οὐκ ἐδυνάμην, μὴ γεγραφέναι τοὺς Τιβεριεῖς καλοῦντας τὸν βασιλέα· ἤλεγχον γὰρ αἱ παρ' ἐκείνου πρὸς αὐτοὺς ἀντιγραφαὶ τὴν ἀλήθειαν. Σύννους οὖν πολλὴν ὥραν γενόμενος, "Ὅτι μὲν ἠδικήκασιν," εἶπον, "Τιβεριεῖς, οἶδα καὶ ἐγώ· τὴν πόλιν δὲ αὐτῶν ὑμᾶς οὐ κωλύσω διαρπάσαι. Δεῖ δὲ ὅμως καὶ μετὰ κρίσεως τὰ τηλικαῦτα πράττειν· οὐ γὰρ μόνοι Τιβεριεῖς προδόται τῆς ἐλευθερίας ἡμῶν γεγόνασιν, ἀλλὰ πολλοὶ καὶ τῶν ἐν Γαλιλαίᾳ δοκιμωτάτων. Προσμείνατε δὲ, μέχρι τοὺς αἰτίους ἀκριβῶς ἐκμάθω, καὶ τότε πάντας ὑποχειρίους ἕξετε, καὶ ὅσους ἰδίᾳ ἐπάξαι δυνή-

σεσθε αὐτῶν." Καὶ ταῦτα εἰπὼν ἔπεισα τὸ πλῆθος, καὶ παυσάμενοι τῆς ὀργῆς διελύθησαν. Τὸν παρὰ βασιλέως δὲ πεμφθέντα δῆσαι κελεύσας, μετ' οὐ πολλὰς ἡμέρας ἐπί τινα τῶν ἐμαυτοῦ χρειῶν ἐπείγουσαν σκηψάμενος ἐκδημεῖν τῆς βασιλείας, καλέσας τὸν Κρίσπον λάθρα, προςέταξα μεθύσαι τὸν στρατιώτην φύλακα, καὶ φυγεῖν πρὸς βασιλέα· μὴ γὰρ διωχθήσεσθαι. Καὶ ὁ μὲν ταῖς ὑποθήκαις πεισθεὶς διέφυγε. Τιβεριὰς δὲ μέλλουσα δεύτερον ἀφανίζεσθαι, στρατηγίᾳ τῇ ἐμῇ καὶ προνοίᾳ τῇ περὶ αὐτῆς ὀξὺν οὕτως κίνδυνον διέφυγεν.

70. Κατὰ τοῦτον δὲ τὸν καιρὸν Ἰοῦστος ὁ Πιστοῦ παῖς λαθὼν ἐμὲ διαδιδράσκει πρὸς τὸν βασιλέα. Τὴν αἰτίαν δὲ, δι' ἣν τοῦτο ἔπραξεν, ἀφηγήσομαι. Λαβόντος ἀρχὴν Ἰουδαίοις τοῦ πρὸς Ῥωμαίους πολέμου, Τιβεριεῖς διεγνώκεισαν ὑπακούειν βασιλεῖ, καὶ Ῥωμαίων μὴ ἀφίστασθαι. Πείθει δὲ αὐτοὺς Ἰοῦστος ἐφ' ὅπλα χωρῆσαι, νεωτέρων αὐτὸς ἐφιέμενος πραγμάτων, καὶ δι' ἐλπίδος ἔχων ἄρξειν Γαλιλαίων τε καὶ τῆς ἑαυτοῦ πατρίδος. Οὐ μὴν τῶν προςδοκηθέντων ἐπέτυχεν. Γαλιλαῖοί τε γὰρ ἐχθρῶς ἔχοντες πρὸς τοὺς Τιβεριεῖς διὰ μῆνιν, ὧν 36
ὑπ' αὐτοῦ πρὸ τοῦ πολέμου ἐπεπόνθεισαν, οὐκ ἠνείχοντο στρατηγοῦντος αὐτῶν Ἰούστου. Καὶ ἐγὼ δὲ τὴν προστασίαν τῆς Γαλιλαίας πιστευθεὶς ὑπὸ τοῦ κοινοῦ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν, πολλάκις εἰς τοσαύτην ἧκον ὀργὴν, ὡς ὀλίγου δεῖν ἀποκτεῖναι τὸν Ἰοῦστον, φέρειν αὐτοῦ τὴν μοχθηρίαν οὐ δυνάμενος. Δείσας οὖν ἐκεῖνος, μὴ καὶ λάβῃ τέλος ἅπαξ ὁ θυμὸς, ἔπεμψε πρὸς βασιλέα, κρεῖσσον καὶ ἀσφαλέστερον οἰκήσειν παρ' ἐκείνῳ νομίζων.

71. Σεπφωρῖται δὲ, παραδόξως τὸν πρῶτον κίνδυνον διαφυγόντες, πρὸς Κέστιον Γάλλον ἔπεμψαν, καὶ ἥκειν παρεκάλουν ὡς αὐτοὺς θᾶττον παραληψόμενον τὴν πόλιν, ἢ πέμπειν δύναμιν τὴν ἀνακόψουσαν τὰς ἐπ' αὐτοὺς τῶν πολεμίων ἐπιδρομάς.

Καὶ τέλος ἔπεισαν τὸν Γάλλον πέμψαι δύναμιν αὐτοῖς ἱππικήν τε καὶ πεζικὴν πάλιν συχνήν, ἣν ἐλθοῦσαν νυκτὸς εἰςεδέξαντο. Κακουμένης δὲ ὑπὸ τῆς Ῥωμαϊκῆς στρατιᾶς τῆς πέριξ χώρας, ἀναλαβὼν ἐγὼ τοὺς περὶ ἐμὲ στρατιώτας, ἧκον εἰς Γαρὶς κώμην. Ἔνθα βαλλόμενος χάρακα πόῤῥω τῆς Σεπφωριτῶν πόλεως ἀπέχων σταδίων εἴκοσι νυκτὸς ἐπ᾽ αὐτὴν προςέμιξα, καὶ τοῖς τείχεσι προςέβαλλον. Καὶ διὰ κλιμάκων ἐμβήσας συχνοὺς τῶν στρατιωτῶν, ἐγκρατὴς τοῦ πλείστου τῆς πόλεως μέρους ἐγενόμην. Μετ᾽ οὐ πολὺ δὲ διὰ τὴν τῶν τόπων ἄγνοιαν ἀναγκασθέντες ἀνεχωρήσαμεν, ἀνελόντες μὲν δύο καὶ δέκα Ῥωμαίων πεζοὺς, δύο δὲ ἱππεῖς, ὀλίγους δὲ Σεπφωριτῶν, αὐτοὶ δὲ ἕνα μόνον ἀπεβάλομεν. Γενομένης δὲ ὕστερον ἡμῖν κατὰ τὸ πεδίον μάχης πρὸς τοὺς ἱππεῖς, μέχρι πολλοῦ καρτερῶς διακινδυνεύσαντες ἡττήθημεν. Περιελθόντων γάρ με τῶν Ῥωμαίων, οἱ μετ᾽ ἐμοῦ δείσαντες ἔφυγον εἰς τὸ ὀπίσω. Πίπτει δὲ τῆς παρατάξεως ἐκείνης εἷς τῶν πεπιστευμένων τὴν τοῦ σώματός μου φυλακὴν, Ἰοῦστος τὸ ὄνομα, καὶ παρὰ βασιλεῖ τότε τὴν αὐτὴν τάξιν ἐσχηκώς. Κατὰ τοῦτον δὲ τὸν καιρὸν ἡ παρὰ βασιλέως δύναμις ἧκεν ἱππική τε καὶ πεζικὴ, καὶ Σύλλας ἐπ᾽ αὐτῆς ἡγεμὼν, ὁ ἐπὶ τῶν σωματοφυλάκων. Οὗτος οὖν βαλλόμενος στρατόπεδον Ἰουλιάδος ἀπέχον σταδίους πέντε, φρουρὰν ἐπέστησε ταῖς ὁδοῖς, τῇ τε εἰς Κανὰ ἀγούσῃ, καὶ τῇ εἰς Γάμαλα τὸ φρούριον, ὑπὲρ τοῦ τὰς παρὰ τῶν Γαλιλαίων ὠφελείας τοῖς ἐνοίκοις ἀποκλείειν.

72. *Ταῦτα δὲ ὡς ἐγὼ ἐπυθόμην, πέμπω διςχιλίους ὁπλίτας, καὶ στρατηγὸν αὐτῶν Ἰερεμίαν. Οἱ δὴ καὶ χάρακα θέντες ἀπὸ σταδίου τῆς Ἰουλιάδος πλησίον τοῦ Ἰορδάνου ποταμοῦ, πλέον ἀκροβολισμῶν οὐδὲν ἔπραξαν, μέχρι τριςχιλίους ἐγὼ στρατιώτας ἀναλαβὼν ἧκον πρὸς αὐτούς. Κατὰ δὲ τὴν ἐπιοῦσαν ἡμέραν, ἔν τινι φάραγγι καθίσας λόχον*

οὐκ ἄπωθεν αὐτῶν τοῦ χάρακος, προεκαλούμην
τοὺς βασιλικοὺς εἰς μάχην, παραινέσας τοῖς μετ'
ἐμοῦ στρατιώταις στρέψαι τὰ νῶτα, μέχρις ἂν ἐπι-
σπάσωνται τοὺς πολεμίους προελθεῖν· ὅπερ καὶ ἐγέ-
νετο. Σύλλας γὰρ, εἰκάσας ταῖς ἀληθείαις τοὺς
ἡμετέρους φεύγειν, προελθὼν ἐπιδιώκειν οἷός τε ἦν.
Κατὰ νώτου δ' αὐτὸν λαμβάνουσιν οἱ ἐκ τῆς ἐνέ-
δρας, καὶ σφόδρα πάντας ἐθορύβησαν. Ἐγὼ δὲ
εὐθὺς ὀξείᾳ χρησάμενος ὑποστροφῇ μετὰ τῆς δυνά-
μεως ὑπήντησα τοῖς βασιλικοῖς, καὶ εἰς φυγὴν ἔτρεψα.
Καὶ ἂν κατώρθωτό μοι κατὰ τὴν ἡμέραν ἐκείνην ἡ
πρᾶξις, μὴ ἐμποδὼν γενομένου δαίμονός τινος· ὁ 37
γὰρ ἵππος, ἐν ᾧ τὴν μάχην ἐποιούμην, εἰς τελμα-
τώδη τόπον ἐμπεσὼν, συγκατήνεγκέ με ἐπὶ τοῦ ἐδά-
φους. Θραύσεως δὲ τῶν ἄρθρων γενομένης ἐπὶ τὸν
καρπὸν τῆς χειρὸς, ἐκομίσθην εἰς κώμην Κεφαρνώ-
μην λεγομένην. Οἱ δὲ ἐμοὶ ταῦτ' ἀκούσαντες, καὶ
δεδοικότες, μή τι χεῖρον ἔπαθον, τῆς μὲν ἐπὶ πλεῖον
διώξεως ἀπέσχοντο, ὑπέστρεφον δὲ περὶ ἐμὲ λίαν
ἀγωνιῶντες. Μεταπεμψάμενος οὖν ἰατροὺς καὶ θε-
ραπευθεὶς, τὴν ἡμέραν ἐκείνην αὐτοῦ κατέμεινα
πυρέξας, δόξαν τε τοῖς ἰατροῖς, τῆς νυκτὸς εἰς Τα-
ριχέας μετεκομίσθην.

73. Σύλλας δὲ καὶ οἱ μετ' αὐτοῦ, πυθόμενοι τὰ κατ' ἐμὲ, πάλιν ἐθάρσησαν. Καὶ γνόντες ἀμελεῖσθαι τὰ περὶ τὴν φυλακὴν τοῦ στρατοπέδου, διὰ νυκτὸς ἱππέων λόχον ἱδρύσαντες ἐν τῷ πέραν τοῦ Ἰορδάνου, γενομένης ἡμέρας εἰς μάχην ἡμᾶς προεκαλέσαντο. Τῶν δ' ὑπακουσάντων καὶ μέχρι τοῦ πεδίου διελθόντων, ἐπιφανέντες οἱ ἐκ τῆς ἐνέδρας ἱππεῖς, καὶ ταράξαντες αὐτοὺς εἰς φυγὴν ἔτρεψαν, ἓξ τε τῶν ἡμετέρων ἔκτειναν, οὐ μὴν μέχρι τέλους τὴν νίκην ἤγαγον. Καταπεπλευκέναι γάρ τινας ὁπλίτας ἀκούσαντες ἀπὸ Ταριχεῶν εἰς Ἰουλιάδα, φοβηθέντες ἀνεχώρησαν.

74. Μετ' οὐ πολὺν δὲ χρόνον Οὐεσπασιανὸς εἰς

Τύρον ἀφικνεῖται, καὶ σὺν αὐτῷ ὁ βασιλεὺς Ἀγρίππας. Καὶ οἱ Τύριοι βλασφημεῖν ἤρξαντο τὸν βασιλέα, Τυρίων αὐτὸν καλοῦντες καὶ Ῥωμαίων πολέμιον. Τὸν γὰρ στρατοπεδάρχην αὐτοῦ Φίλιππον ἔλεγον προδεδωκέναι τὴν βασιλικὴν αὐλὴν, καὶ τὰς Ῥωμαίων δυνάμεις τὰς οὔσας ἐν Ἱεροσολύμοις κατὰ τὴν αὐτοῦ πρόσταξιν. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἀκούσας Τυρίοις μὲν ἐπέπληξεν, ὑβρίζουσιν ἄνδρα, καὶ βασιλέα καὶ Ῥωμαίοις φίλον, τῷ δὲ βασιλεῖ παρῄνεσεν πέμψαι Φίλιππον εἰς Ῥώμην ὑφέξοντα λόγον Νέρωνι περὶ τῶν πεπραγμένων. Φίλιππος δὲ πεμφθεὶς οὐχ ἧκεν εἰς ὄψιν Νέρωνι. Καταλαβὼν γὰρ αὐτὸν ἐν τοῖς ἐσχάτοις ὄντα διὰ τὰς ἐμπεσούσας ταραχὰς καὶ τὸν ἐμφύλιον πόλεμον, ὑπέστρεψε πρὸς τὸν βασιλέα. Ἐπεὶ δὲ Οὐεσπασιανὸς εἰς Πτολεμαΐδα παρεγένετο, οἱ πρῶτοι τῶν τῆς Συρίας Δέκα πόλεων κατεβόων Ἰούστου τοῦ Τιβεριέως, ὅτι τὰς κώμας αὐτῶν ἐνέπρησεν. Παρέδωκεν οὖν αὐτὸν Οὐεσπασιανὸς τῷ βασιλεῖ κολασθησόμενον ὑπὸ τῶν τῆς βασιλείας ὑποτελῶν. Ὁ βασιλεὺς δὲ αὐτὸν ἔδησεν, ἐπικρυψάμενος τοῦτο Οὐεσπασιανὸν, ὡς ἀνωτέρω δεδήλωται. Σεπφωρῖται δ' ὑπαντήσαντες, καὶ ἀσπασάμενοι Οὐεσπασιανὸν, λαμβάνουσι δύναμιν καὶ στρατηγὸν Πλακίδον, ἀναβάντες δὲ μετὰ τούτων, ἑπομένου μου, ἄχρι τῆς εἰς Γαλιλαίαν Οὐεσπασιανοῦ ἀφίξεως. Περὶ ἧς, τίνα τρόπον ἐγένετο, καὶ πῶς περὶ Γαρὶς κώμην τὴν πρώτην πρὸς ἐμὲ μάχην ἐποιήσατο, καὶ ὡς ἐκεῖθεν εἰς τὰ Ἰωτάπατα ἀνεχώρησα, καὶ τὰ πεπραγμένα μοι κατὰ τὴν ταύτης πολιορκίαν, καὶ ὃν τρόπον ζῶν ληφθεὶς ἐδέθην, καὶ πῶς ἐλύθην, πάντα τε τὰ πεπραγμένα μοι κατὰ τὸν Ἰουδαϊκὸν πόλεμον καὶ τὴν Ἱεροσολύμων πολιορκίαν, μετὰ ἀκριβείας ἐν ταῖς περὶ τοῦ Ἰουδαϊκοῦ πολέμου βίβλοις ἀπήγγελκα. Ἀναγκαῖον δ' ἐστὶν, ὡς οἶμαι, καὶ ὅσα μὴ κατὰ τὸν Ἰουδαϊκὸν πόλεμον

ἀνέγραψα τῶν ἐν τῷ βίῳ μου πεπραγμένων νῦν προσαναγράψαι.

75. Τῆς γὰρ τῶν Ἰωταπάτων πολιορκίας λαβούσης τέλος, γενόμενος παρὰ Ῥωμαίοις μετὰ πάσης ἐπιμελείας ἐφυλασσόμην, τὰ πολλὰ διὰ τιμῆς ἄγοντός με Οὐεσπασιανοῦ. Καὶ δὴ κελεύσαντος αὐτοῦ ἤγαγον μέν τινα παρθένον ἐκ τῶν αἰχμαλωτίδων 38
τῶν κατὰ Καισάρειαν ἁλουσῶν ἐγχώριον. Οὐ παρέμεινεν δὲ αὕτη μοι πολὺν χρόνον, ἀλλά, λυθέντος καὶ μετὰ Οὐεσπασιανοῦ πορευθέντος εἰς τὴν Ἀλεξάνδρειαν, ἀπηλλάγη. Γυναῖκα δ' ἑτέραν ἤγαγον κατὰ τὴν Ἀλεξάνδρειαν. Καὶ ἐκεῖθεν ἐπὶ την Ἱεροσολύμων πολιορκίαν συμπεμφθεὶς Τίτῳ, πολλάκις ἀποθανεῖν ἐκινδύνευσα, τῶν τε Ἰουδαίων διὰ σπουδῆς ἐχόντων ὑποχείριόν με λαβεῖν τιμωρίας ἕνεκεν, καὶ Ῥωμαίων, ὁσάκις νικηθεῖεν, πάσχειν τοῦτο κατ' ἐμὴν προδοσίαν δοκούντων, συνεχεῖς καταβοήσεις ἐπὶ τοῦ αὐτοκράτορος ἐγίνοντο, κολάζειν με ὡς καὶ αὐτῶν προδότην ἀξιούντων. Τίτος δὲ Καῖσαρ, τὰς τοῦ πολέμου τύχας οὐκ ἀγνοῶν, σιγῇ τὰς ἐπ' ἐμὲ τῶν στρατιωτῶν ἐξέλυεν ὁρμάς. Ἤδη δὲ κατὰ κράτος τῆς τῶν Ἱεροσολυμιτῶν πόλεως ἐχομένης, Τίτος Καῖσαρ ἔπειθέν με πολλάκις ἐκ τῆς κατασκαφῆς τῆς πατρίδος πᾶν ὅ τι θέλοιμι λαβεῖν· συγχωρεῖν γὰρ αὐτὸς ἔφασκεν. Ἐγὼ δὲ τῆς πατρίδος πεσούσης μηδὲν ἔχων τιμιώτερον, ὃ τῶν ἐμαυτοῦ συμφορῶν εἰς παραμυθίαν λαβὼν φυλάξαιμι, σωμάτων ἐλευθέρων, τὴν αἴτησιν ἐποιούμην Τίτον, καὶ βιβλίων ἱερῶν ἔλαβον, χαρισαμένου Τίτου. Μετ' οὐ πολὺ δὲ καὶ τὸν ἀδελφὸν μετὰ πεντήκοντα φίλων αἰτησάμενος, οὐκ ἀπέτυχον. Καὶ εἰς τὸ ἱερὸν δὲ πορευθείς, Τίτου τὴν ἐξουσίαν δόντος, ἔνθα πολὺ πλῆθος αἰχμαλώτων ἐγκέκλειστο γυναικῶν τε καὶ τέκνων, ὅσους ἐπέγνων φίλων ἐμῶν καὶ συνήθων ὑπάρχοντας ἐῤῥυσάμην, περὶ ἑκατὸν καὶ ἐνενήκοντα ὄντας τὸν ἀριθμόν, καὶ οὐδὲ λύτρα καταθεμένους ἀπέ-

λυσα συγχωρήσας αὐτοὺς τῇ προτέρᾳ τύχῃ. Πεμφθεὶς δὲ ὑπὸ Τίτου Καίσαρος σὺν Κερεαλίῳ καὶ χιλίοις ἱππεῦσιν εἰς κώμην τινὰ Θεκώαν λεγομένην, πρὸς κατανόησιν, εἰ τόπος ἐπιτήδειός ἐστι χάρακα δέξασθαι, ὡς ἐκεῖθεν ὑποστρέφων εἶδον πολλοὺς αἰχμαλώτους ἀνεσταυρωμένους, καὶ τρεῖς γνωρίσας συνήθεις μοι γενομένους, ἤλγησα τὴν ψυχὴν, καὶ μετὰ δακρύων προςελθὼν Τίτῳ εἶπον. Ὁ δ' εὐθὺς ἐκέλευσεν καθαιρεθέντας αὐτοὺς θεραπείας ἐπιμελεστάτης τυχεῖν. Καὶ οἱ μὲν δύο τελευτῶσιν θεραπευόμενοι, ὁ δὲ τρίτος ἔζησεν.

76. Ἐπεὶ δὲ κατέπαυσεν τὰς ἐν τῇ Ἰουδαίᾳ ταραχὰς Τίτος, εἰκάσας τοὺς ἀγροὺς, οὓς εἶχον ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις, ἀνονήτους ἐσομένους μοι, διὰ τὴν μέλλουσαν ἐκεῖ Ῥωμαίων φρουρὰν ἐγκαθέζεσθαι, ἔδωκεν ἑτέραν χώραν ἐν πεδίῳ. Μέλλων τε ἀπαίρειν εἰς τὴν Ῥώμην, σύμπλουν ἐδέξατό με πᾶσαν τιμὴν ἀπονέμων. Ἐπεὶ δὲ εἰς τὴν Ῥώμην ἥκομεν, πολλῆς ἔτυχον παρὰ Οὐεσπασιανοῦ προνοίας, καὶ γὰρ καὶ κατάλυσιν ἔδωκεν ἐν τῇ οἰκίᾳ τῇ πρὸ τῆς ἡγεμονίας αὐτῷ γενομένῃ, πολιτείᾳ τε Ῥωμαίων ἐτίμησεν, καὶ σύνταξιν χρημάτων ἔδωκεν. Καὶ τιμῶν διετέλει μέχρι τῆς ἐκ τοῦ βίου μεταστάσεως, οὐδὲν τῆς πρὸς ἐμὲ χρηστότητος ὑφελὼν, ὅ μοι διὰ τὸν φθόνον ἤνεγκε κίνδυνον. Ἰουδαῖος γάρ τις, Ἰωνάθης τὸ ὄνομα, στάσιν ἐξεγείρας ἐν Κυρήνῃ, καὶ δισχιλίους τῶν ἐγχωρίων συναναπείσας, ἐκείνοις μὲν αἴτιος ἀπωλείας ἐγένετο, αὐτὸς δὲ ὑπὸ τοῦ τῆς χώ-
39 ρας ἡγεμονεύοντος δεθεὶς, καὶ ἐπὶ τὸν αὐτοκράτορα πεμφθεὶς, ἔφασκεν, ἐμὲ αὐτῷ ὅπλα πεπομφέναι καὶ χρήματα. Οὐ μὴν Οὐεσπασιανὸν ψευδόμενος ἔλαθεν, ἀλλὰ κατέγνω θάνατον αὐτοῦ, καὶ παραδοθεὶς ἀπέθανεν. Πολλάκις δὲ καὶ μετὰ ταῦτα τῶν βασκαινόντων μοι τῆς εὐτυχίας κατηγορίας ἐπ' ἐμὲ συνθέντων, θεοῦ προνοίᾳ πάσας διέφυγον. Ἔλαβον δὲ παρὰ Οὐεσπασιανοῦ δωρεὰν γῆν οὐκ ὀλίγην ἐν τῇ

Ἰουδαίᾳ. Καθ' ὃν δὴ καιρὸν καὶ τὴν γυναῖκα, μὴ ἀρεσκόμενος αὐτῆς τοῖς ἤθεσιν, ἀπεπεμψάμην, τριῶν παίδων γενομένην μητέρα, ὧν οἱ μὲν δύο ἐτελεύτησαν, εἷς δὲ, ὃν Ὑρκανὸν προςηγόρευσα, περίεστιν. Μετὰ ταῦτα ἠγαγόμην γυναῖκα κατῳκηκυῖαν μὲν ἐν Κρήτῃ, τὸ δὲ γένος Ἰουδαίαν, γονέων εὐγενεστάτων καὶ τῶν κατὰ τὴν χώραν ἐπιφανεστάτων, ἤθει πολλῶν γυναικῶν διαφέρουσαν, ὡς ὁ μετὰ ταῦτα βίος αὐτῆς ἀπέδειξεν. Ἐκ ταύτης δή μοι γίνονται παῖδες δύο. Πρεσβύτερος μὲν Ἰοῦστος, Σιμωνίδης δὲ μετ' ἐκεῖνον, ὁ καὶ Ἀγρίππας ἐπικληθείς. Ταῦτα μέντοι τὰ κατὰ τὸν οἶκον. Διέμεινεν δέ μοι ὅμοια καὶ τὰ παρὰ τῶν αὐτοκρατόρων. Οὐεσπασιανοῦ γὰρ τελευτήσαντος, Τίτος, τὴν ἀρχὴν διαδεξάμενος, ὁμοίαν τῷ πατρὶ τὴν τιμήν μοι διεφύλαξεν, πολλάκις τε κατηγορηθέντος οὐκ ἐπίστευσεν. Διαδεξάμενος δὲ τοῦτον Δομετιανὸς, καὶ προςηύξησεν τὰς εἰς ἐμὲ τιμάς· τούς τε γὰρ κατηγορήσαντάς μου Ἰουδαίους ἐκόλασεν, καὶ δοῦλον εὐνοῦχον, παιδαγωγὸν τοῦ παιδός μου, κατηγορήσαντα, κολασθῆναι προςέταξεν. Ἐμοί τε τῆς ἐν Ἰουδαίᾳ χώρας ἀτέλειαν ἔδωκεν, ἥπερ ἐστὶ μεγίστη τιμὴ τῷ λαβόντι. Ἡ δὲ τοῦ Καίσαρος γυνὴ Δομετία διετέλεσεν εὐεργετῆσαί με. Ταῦτα μὲν τὰ πεπραγμένα μοι διὰ παντὸς τοῦ βίου ἐστίν. Κρινέτωσαν δ' ἐξ αὐτῶν τὸ ἦθος, ὅπως ἂν ἐθέλωσιν, ἕτεροι. Σοὶ δ' ἀποδεδωκὼς, κράτιστε ἀνδρῶν Ἐπαφρόδιτε, τὴν πᾶσαν τῆς ἀρχαιολογίας ἀναγραφὴν, ἐπὶ τοῦ παρόντος ἐνταῦθα καταπαύω τὸν λόγον.

40-46

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ
Η
ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ʽΙΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ʽΑΛΩΣΕΩΣ
ΛΟΓΟΣ Α΄.

Argumentum Lib. 1.

Προοίμιον. (1) ῞Οπως ᾑρεῖτο ῾Ιεροσολύμων πόλις, καὶ περὶ τῶν Μακκαβαίων Ματθία καὶ ᾿Ιούδα. (2) Περὶ ᾿Ιωνάθου, Σίμωνος καὶ ᾿Ιωάννου τοῦ ῾Υρκανοῦ. (3) ῾Ως ᾿Αριστόβουλος τελευτᾷ. (4) Περὶ ᾿Αλεξάνδρου ᾿Ιανναίου. (5) Περὶ ᾿Αλεξάνδρας καὶ περὶ Φαρισαίων τὴν ἀρχὴν ἐχόντων. (6) Περὶ ῾Υρκανοῦ καὶ ᾿Αριστοβούλου, καὶ ὡς Πομπήϊος αὐτῶν διαφορῶν γίνεται διαιτητής. (7) Οἷα Πομπήϊος ἐν Ιουδαίᾳ ἔπραξεν. (8) Περὶ Γαβινίου καὶ Κράσσου καὶ Κασσίου. (9) ᾿Αριστόβουλος καὶ ᾿Αλέξανδρος ἀναιροῦνται. ᾿Αντίπατρος θεραπεύει Καίσαρα. (10) Οἷα ᾿Αντίπατρος ἐν ᾿Ιουδαίᾳ ἔπραξεν. (11) ῾Ηρώδης ἀποδείκνυται Συρίας ἁπάσης ἐπιμελητής. (12) ῾Ηρώδην καὶ Φασάηλον ᾿Αντώνιος τετράρχας ἀποδείκνυσι. (13) Οἷα ἔπασχον ῾Υρκανὸς καὶ Φασάηλος ὑπὸ Πάρθων. (14) ᾿Αντώνιος καὶ Καῖσαρ συμπράττονται ῾Ηρώδην βασιλέα καθιστᾶν ᾿Ιουδαίων. (15) Οἷα ῾Ηρώδης ἀπὸ ῾Ρώμης ἐπανελθὼν ἐν ᾿Ιουδαίᾳ ἔπραξεν. (16) ῾Ηρώδης Σέπφωριν αἱρεῖ, καὶ τοὺς λῃστὰς χειροῦται. (17) ῾Ηρώδης ῾Ιεροσόλυμα πολιορκεῖ, καὶ Μαριάμμην γαμεῖ. (18) ῾Ηρώδης ῾Ιεροσόλυμα κατὰ κράτος αἱρεῖ, (19) καὶ νικᾷ τοὺς ῎Αραβας. Περὶ σεισμοῦ μεγάλου. (20) ῾Ηρώδης ὑπὸ Καίσαρος βασιλεύειν κελεύεται, (21) καὶ πολλὰς πόλεις οἰκοδομεῖ. (22) ᾿Αριστοβούλου καὶ ῾Υρκανοῦ καὶ Μαριάμμης τελευτή. (23) Διαβολαὶ εἰς υἱοὺς Μαριάμμης. (24) ῎Εχθραι τῶν ῾Ηρώδου συγγενῶν πρὸς ἀλλήλους. (25) ᾿Αλέξανδρον καὶ Φερώραν τῷ ῾Ηρώδῃ διαλλάττει ᾿Αρχέλαος. (26) ῾Ως τοὺς Μαριάμμης υἱοὺς διαβάλλει Εὐρυκλῆς. (27) Τελευτὴ τῶν ῾Ηρώδου υἱῶν. (28) ῞Οπως ᾿Αντίπατρος ἐμισήθη παρὰ πάντων, καὶ περὶ ῾Ηρώδου γάμων καὶ παίδων. (29) ᾿Αντίπατρος εἰς ῾Ρώμην πέμπεται τὴν ῾Ηρώδου διαθήκην κομίζων. Φερώρας οἴκοι τελευτᾷ. (30) ῾Ηρώδης εὑρίσκει ᾿Αντίπατρον φάρμακον αὐτῷ σκευάσαντα, (31) καὶ δίκην αὐτῷ ἐπάγει. (32) Τιμωρίαν ᾿Αντιπάτρου. ῾Ηρώδης ἀνεβάλλετο ἕως ῥαΐσῃ, κα

ἐν τούτῳ τὴν διαθήκην μεταγράφει. (33) Ἡρώδης καὶ ἄλλους πολλοὺς καὶ Ἀντίπατρον κτείνεσθαι κελεύει, καὶ ὡς αὐτὸς ἐπιβιοὺς πέντε ἡμέρας τελευτᾷ.

Προοίμιον. 47

Ἐπειδὴ τὸν Ἰουδαίων πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον συ-
στάντα μέγιστον, οὐ μόνον τῶν καθ' ἡμᾶς, σχεδὸν
δὲ καὶ ὧν ἀκοῇ παρειλήφαμεν, ἢ πόλεων πρὸς πό-
λεις ἢ ἐθνῶν ἔθνεσι συῤῥαγέντων, οἱ μὲν οὐ παρα-
τυχόντες τοῖς πράγμασιν, ἀλλ' ἀκοῇ συλλέγοντες εἰ-
καῖα καὶ ἀσύμφωνα διηγήματα, σοφιστικῶς ἀναγρά-
φουσιν, οἱ παραγενόμενοι δὲ, ἢ κολακείᾳ τῇ πρὸς
Ῥωμαίους, ἢ μίσει τῷ πρὸς Ἰουδαίους, καταψεύ-
δονται τῶν πραγμάτων, περιέχει δὲ αὐτοῖς ὅπου
μὲν κατηγορίαν, ὅπου δὲ ἐγκώμιον τὰ συγγράμματα,
τὸ δὲ ἀκριβὲς τῆς ἱστορίας οὐδαμοῦ· προεθέμην ἐγὼ
τοῖς κατὰ τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν Ἑλλάδι γλώσσῃ
μεταβαλὼν, ἃ τοῖς ἄνω βαρβάροις τῇ πατρίῳ συν- 48
τάξας ἀνέπεμψα πρότερον, ἀφηγήσασθαι, Ἰώσηπος
Ματθίου παῖς, γένει Ἑβραῖος, ἐξ Ἱεροσολύμων, ἱε-
ρεὺς, αὐτός τε Ῥωμαίοις πολεμήσας τὰ πρῶτα, καὶ
τοῖς ὕστερον παρατυχὼν ἐξ ἀνάγκης.

2. Γενομένου γὰρ, ὡς ἔφην, μεγίστου τοῦδε τοῦ κινήματος, ἐν Ῥωμαίοις μὲν ἐνόσει τὰ οἰκεῖα, Ἰουδαίων τε τὸ νεωτερίζον τότε τεταραγμένοις ἐπανέστη τοῖς καιροῖς, ἀκμάζον κατά τε χεῖρα καὶ χρήμασιν, ὡς δι' ὑπερβολὴν θορύβων, τοῖς μὲν ἐν ἐλπίδι κτήσεως, τοῖς δ' ἐν ἀφαιρέσεως δέει γίνεσθαι τὰ πρὸς τὴν ἀνατολήν· ἐπειδὴ Ἰουδαῖοι μὲν ἅπαν τὸ ὑπὲρ Εὐφράτην ὁμόφυλον ἡμῖν συνεπαρθήσεσθαι σφίσιν ἤλπισαν, Ῥωμαίους δὲ οἵ τε γείτονες Γαλάται παρεκίνουν, καὶ τὸ Κελτικὸν οὐκ ἠρέμει, μεστὰ δὲ ἦν πάντα θορύβων μετὰ Νέρωνα, καὶ πολλοὺς μὲν βασιλειᾶν ὁ καιρὸς ἀνέπειθε, τὰ στρατιωτικὰ δὲ ἤρα μεταβολῆς ἐλπίδι λημμάτων. Ἄτοπον οὖν

ἡγησάμην περιϊδεῖν πλαζομένην ἐπὶ τηλικούτοις πράγμασι τὴν ἀλήθειαν, καὶ Πάρθους μὲν, καὶ Βαβυλωνίους, Ἀράβων τε τοὺς πορρωτάτω, καὶ τὸ ὑπὲρ Εὐφράτην ὁμόφυλον ἡμῖν, Ἀδιαβηνούς τε γνῶναι διὰ τῆς ἐμῆς ἐπιμελείας ἀκριβῶς, ὅθεν τε ἤρξατο, καὶ δι' ὅσων ἐχώρησε παθῶν ὁ πόλεμος, καὶ ὅπως κατέστρεψεν, ἀγνοεῖν δὲ Ἕλληνας ταῦτα καὶ Ῥωμαίων τοὺς μὴ ἐπιστρατευσαμένους, ἐντυγχάνοντας ἢ κολακείαις ἢ πλάσμασι.

3. Καίτοι γε ἱστορίας αὐτὰς ἐπιγράφειν τολμῶσιν, ἐν αἷς, πρὸς τῷ μηδὲν ὑγιὲς δηλοῦν, καὶ τοῦ σκοποῦ δοκοῦσιν ἐμοί γε διαμαρτάνειν. Βούλονται γὰρ μεγάλους μὲν τοὺς Ῥωμαίους ἀποδεικνύειν, καταβάλλουσι δὲ ἀεὶ τὰ Ἰουδαίων καὶ ταπεινοῦσιν· οὐχ ὁρῶσι δὲ, πῶς ἂν εἶναι μεγάλοι δοκοῖεν οἱ μικροὺς νενικηκότες. Καὶ οὔτε τὸ μῆκος αἰδοῦνται τοῦ πολέμου, οὔτε τὸ πλῆθος τῆς καμούσης Ῥωμαίων στρατιᾶς, οὔτε τὸ μέγεθος τῶν στρατηγῶν, οἳ πολλὰ παρὰ τοῖς Ἱεροσολύμοις ἱδρώσαντες, οἶμαι, ταπεινουμένου τοῦ κατορθώματος αὐτοῖς, ἀδοξοῦσιν.

4. Οὐ μὴν ἐγὼ τοῖς ἐπαίρουσι τὰ Ῥωμαίων ἀντιφιλονεικῶν, αὔξειν τὰ τῶν ὁμοφύλων διέγνων, ἀλλὰ τὰ μὲν ἔργα μετ' ἀκριβείας ἑκατέρων διέξειμι, τοὺς δ' ἐπὶ τοῖς πράγμασι λόγους ἀνατίθημι τῇ διαθέσει, καὶ τοῖς ἐμαυτοῦ πάθεσι διδοὺς ἐπολοφύρεσθαι ταῖς τῆς πατρίδος συμφοραῖς. Ὅτι γὰρ αὐτὴν στάσις οἰκεία καθεῖλε, καὶ τὰς Ῥωμαίων χεῖρας ἀκούσας καὶ τὸ πῦρ ἐπὶ τὸν ἅγιον ναὸν εἵλκυσαν οἱ Ἰουδαίων τύραννοι, μάρτυς αὐτὸς ὁ πορθήσας Τίτος Καῖσαρ, ἐν παντὶ τῷ πολέμῳ τὸν μὲν δῆμον ἐλεήσας ὑπὸ στασιαστῶν φρουρούμενον, πολλάκις δὲ ἑκὼν τὴν ἅλωσιν τῆς πόλεως ὑπερτιθέμενος,
49 καὶ διδοὺς τῇ πολιορκίᾳ χρόνον εἰς μετάνοιαν τῶν αἰτίων. Εἰ δέ τις ὅσα πρὸς τοὺς τυράννους ἢ τὸ λῃστρικὸν αὐτῶν κατηγορικῶς λέγομεν, ἢ τοῖς ἀτυ-

χήμασι τῆς πατρίδος ἐπιστένοντες συκοφαντοίη, διδότω παρὰ τὸν τῆς ἱστορίας νόμον συγγνώμην τῷ πάθει. Πόλιν γὰρ δὴ τῶν ὑπὸ Ῥωμαίους πασῶν τὴν ἡμετέραν ἐπὶ πλεῖστόν τε εὐδαιμονίας συνέβη προελθεῖν, καὶ πρὸς ἔσχατον συμφορῶν αὖθις καταπεσεῖν. Τὰ γοῦν πάντων ἀπ᾽ αἰῶνος ἀτυχήματα πρὸς τὰ Ἰουδαίων ἡττᾶσθαί μοι δοκεῖ κατὰ σύγκρισιν, καὶ τούτων αἴτιος οὐδεὶς ἀλλόφυλος, ὥστε ἀμήχανον ἦν ὀδυρμῶν ἐπικρατεῖν. Εἰ δέ τις οἴκτου σκληρότερος εἴη δικαστὴς, τὰ μὲν πράγματα τῇ ἱστορίᾳ προςκρινέτω, τὰς δ᾽ ὀλοφύρσεις τῷ γράφοντι.

5. Καίτοι γε ἐπιτιμήσαιμι ἂν αὐτὸς δικαίως τοῖς Ἑλλήνων λογίοις, οἳ τηλικούτων κατ᾽ αὐτοὺς πραγμάτων γεγενημένων, ἃ κατὰ σύγκρισιν ἐλαχίστοις ἀποδείκνυσι τοὺς πάλαι πολέμους, τούτων μὲν κάθηνται κριταὶ τοῖς φιλοτιμουμένοις ἐπηρεάζοντες, ὧν εἰ καὶ τῷ λόγῳ πλεονεκτοῦσι, λείπονται τῇ προαιρέσει. Αὐτοὶ δὲ τὰ Ἀσσυρίων ἢ τὰ Μήδων συγγράφουσιν, ὥςπερ ἧττον καλῶς ὑπὸ τῶν ἀρχαίων συγγραφέων ἀπηγγελμένα· καίτοι τοσούτῳ τῆς ἐκείνων ἡττῶνται δυνάμεως ἐν τῷ γράφειν, ὅσῳ καὶ τῆς γνώμης. Τὰ γὰρ καθ᾽ αὑτοὺς ἐσπούδαζον ἕκαστοι γράφειν, ὅπου καὶ τὸ παρατυχεῖν τοῖς πράγμασιν ἐποίει τὴν ἐπαγγελίαν ἐναργῆ, καὶ τὸ ψεύδεσθαι παρ᾽ εἰδόσιν αἰσχρὸν ἦν. Τό γε μὴν μνήμῃ τὰ μὴ προϊστορηθέντα διδόναι, καὶ τὰ κατὰ τὸν ἴδιον χρόνον τοῖς μεθ᾽ ἑαυτὸν συνιστάνειν, ἐπαίνου καὶ μαρτυρίας ἄξιον· φιλόπονος δὲ οὐχ ὁ μεταποιῶν οἰκονομίαν καὶ τάξιν ἀλλοτρίαν, ἀλλ᾽ ὁ μετὰ τοῦ καινὰ λέγειν καὶ τὸ σῶμα τῆς ἱστορίας κατασκευάζων ἴδιον. Καὶ ἐγὼ μὲν ἀναλώμασι καὶ πόνοις μεγίστοις, ἀλλόφυλος ὢν, Ἕλλησί τε καὶ Βαρβάροις τὴν μνήμην τῶν κατορθωμάτων ἀνατίθημι· τοῖς δὲ γνησίοις, πρὸς μὲν τὰ λήμματα καὶ τὰς δίκας, κέχηνεν εὐθέως τὸ στόμα καὶ ἡ γλῶσσα λέλυται, πρὸς δὲ τὴν ἱστορίαν, ἔνθα χρὴ τὰ ἀληθῆ λέγειν, καὶ μετὰ πολλοῦ πόνου

τὰ πράγματα συλλέγειν, πεφίμωνται, παρέντες τοῖς ἀσθενεστέροις καὶ μὴ γινώσκουσι τὰς πράξεις τῶν ἡγεμόνων γράφειν. Τιμάσθω δὴ παρ᾽ ἡμῖν τὸ τῆς ἱστορίας ἀληθὲς, ἐπεὶ παρ᾽ Ἕλλησιν ἀμελεῖται.

6. Ἀρχαιολογεῖν μὲν δὴ τὰ Ἰουδαίων, τίνες τε ὄντες, καὶ ὅπως ἀπανέστησαν Αἰγυπτίων, χώραν τε ὅσην ἐπῆλθον ἀλώμενοι, καὶ πόσα ἑξῆς κατέλαβον, καὶ πῶς μετανέστησαν, νῦν ἄκαιρον ᾠήθην εἶναι καὶ ἄλλως περιττόν· ἐπειδὴ καὶ Ἰουδαίων πολλοὶ πρὸ ἐμοῦ τὰ τῶν προγόνων συνετάξαντο μετὰ ἀκριβείας, καί τινες Ἑλλήνων, ἐκεῖνα τῇ πατρίῳ φωνῇ μεταβάλλοντες, οὐ πολὺ τῆς ἀληθείας διήμαρτον. Ὅπου δὲ οἵ τε τούτων συγγραφεῖς ἐπαύσαντο καὶ οἱ ἡμέτεροι προφῆται, ἐκεῖθεν τὴν ἀρχὴν ποιήσομαι τῆς συντάξεως· τούτων δὲ τὰ μὲν τοῦ κατ᾽ ἐμαυτὸν πολέμου διεξοδικώτερον, καὶ μεθ᾽ ὅσης ἂν ἐξεργασίας δύνωμαι δίειμι, τὰ δὲ προγενέστερα τῆς ἐμῆς ἡλικίας ἐπιδραμῶ συντόμως.

7. Ὡς Ἀντίοχος, ὁ κληθεὶς Ἐπιφανὴς, ἑλὼν κατὰ κράτος Ἱεροσόλυμα, καὶ κατασχὼν ἔτεσι τρισὶ καὶ μησὶν ἓξ, ὑπὸ τῶν Ἀσαμωναίου παίδων ἐκβάλλεται τῆς χώρας· ἔπειθ᾽ ὡς οἱ τούτων ἔγγονοι, περὶ τῆς βασιλείας διαστασιάσαντες, εἵλκυσαν εἰς τὰ πράγματα Ῥωμαίους καὶ Πομπήϊον· καὶ ὡς Ἡρώδης ὁ Ἀντιπάτρου κατέλυσε τὴν δυναστείαν αὐτῶν, ἐπαγαγὼν Σόσιον· ὅπως τε ὁ λαὸς μετὰ τὴν Ἡρώδου τελευτὴν κατεστασίασεν, Αὐγούστου μὲν Ῥωμαίων ἡγεμονεύοντος, Κουϊντιλίου δὲ Οὐάρου κατὰ τὴν χώραν ὄντος· καὶ ὡς ἔτει δωδεκάτῳ τῆς Νέρωνος ἀρχῆς ὁ πόλεμος ἀνεῤῥάγη, τά τε συμβάντα κατὰ Κέστιον, καὶ ὅσα παρὰ τὰς πρώτας ὁρμὰς ἐπῆλθον οἱ Ἰουδαῖοι τοῖς ὅπλοις·

8. Ὅπως τε τὰς περιοίκους ἐτειχίσαντο· καὶ ὡς Νέρων, ἐπὶ τοῖς Κεστίου πταίσμασι δείσας περὶ τῶν ὅλων, Οὐεσπασιανὸν ἐφίστησι τῷ πολέμῳ· καὶ ὡς οὗτος μετὰ τοῦ πρεσβυτέρου τῶν παίδων εἰς τὴν

Ἰουδαίων χώραν ἐνέβαλεν, ὅση τε χρώμενος Ῥωμαίων στρατιᾷ, καὶ ὅσοι σύμμαχοι ἐκόπησαν εἰς ὅλην τὴν Γαλιλαίαν· καὶ ὡς τῶν πόλεων αὐτῆς ἃς μὲν ὁλοσχερῶς καὶ κατὰ κράτος, ἃς δὲ δι' ὁμολογίας ἔλαβεν· ἔνθα δὴ καὶ τὰ περὶ τῆς τῶν Ῥωμαίων ἐν πολέμοις εὐταξίας, καὶ τὴν ἄσκησιν τῶν ταγμάτων, τῆς τε Γαλιλαίας ἑκατέρας τὰ διαστήματα, καὶ τὴν φύσιν, καὶ τοὺς τῆς Ἰουδαίας ὅρους, ἔτι τε τῆς χώρας τὴν ἰδιότητα, λίμνας τε καὶ πηγὰς τὰς ἐν αὐτῇ, καὶ τὰ περὶ ἑκάστην πόλιν τῶν ἁλισκομένων πάθη μετ' ἀκριβείας, ὡς εἶδον ἢ ἔπαθον, δίειμι. Οὐδὲ γὰρ τῶν ἐμαυτοῦ τι συμφορῶν ἀποκρύψομαι, μέλλων γε πρὸς εἰδότας ἐρεῖν.

9. Ἔπειθ' ὡς, ἤδη καμνόντων Ἰουδαίοις τῶν πραγμάτων, θνήσκει μὲν Νέρων, Οὐεσπασιανὸς δὲ ἐπὶ Ἱεροσολύμων ὡρμημένος, ὑπὸ τῆς ἡγεμονίας ἀνθέλκεται· τά τε γενόμενα περὶ ταύτης αὐτῷ σημεῖα, καὶ τὰς ἐπὶ Ῥώμης καταβάσεις, καὶ ὡς αὐτὸς ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν ἄκων αὐτοκράτωρ ἀποδείκνυται· καὶ ὡς, τούτου ἀποχωρήσαντος ἐπὶ διοικήσει τῶν ὅλων εἰς τὴν Αἴγυπτον, ἐστασιάσθη τὰ Ἰουδαίων· ὅπως τε ἐπανέστησαν αὐτοῖς οἱ τύραννοι, καὶ τὰς τούτων πρὸς ἀλλήλους διαφοράς.

10. Καὶ ὡς ἄρας ἀπὸ τῆς Αἰγύπτου Τίτος δεύτερον εἰς τὴν χώραν ἐνέβαλεν· ὅπως τε τὰς δυνάμεις, καὶ ὅπου, καὶ πόσας συνήγαγε· καὶ ὅπως ἐκ τῆς στάσεως ἡ πόλις διέκειτο παρόντος αὐτοῦ, προσβολάς τε ὅσας ἐποιήσατο, καὶ πόσα χώματα, περιβόλους τε τῶν τριῶν τειχῶν καὶ τὰ μέτρα τούτων, τήν τε τῆς πόλεως ὀχυρότητα, καὶ τοῦ ἱεροῦ καὶ τοῦ ναοῦ τὴν διάθεσιν· ἔτι δὲ καὶ τούτων καὶ τοῦ βωμοῦ τὰ μέτρα, πάντα μετ' ἀκριβείας, ἔθη τε ἑορτῶν ἔνια, καὶ τὰς ἑπτὰ ἁγνείας, καὶ τὰς τῶν ἱερέων λειτουργίας· ἔτι δὲ καὶ τὰς ἐσθῆτας τῶν ἱερέων καὶ τοῦ ἀρ- 51
χιερέως, καὶ οἷον ἦν τοῦ ναοῦ τὸ ἅγιον, οὐδὲν οὔτε ἀποκρυπτόμενος οὔτε προστιθεὶς τοῖς πεφωραμένοις.

11. Ἔπειτα διέξειμι τήν τε τῶν τυράννων πρὸς τοὺς ὁμοφύλους ὠμότητα, καὶ τὴν Ῥωμαίων φειδὼ πρὸς τοὺς ἀλλοφύλους· καὶ ὁσάκις Τίτος σῶσαι τὴν πόλιν καὶ τὸν ναὸν ἐπιθυμῶν, ἐπὶ δεξιὰς τοὺς στασιάζοντας προεκαλέσατο, διακρίνων τὰ πάθη τοῦ δήμου καὶ τὰς συμφορὰς, ὅσα τε ὑπὸ τοῦ πολέμου, καὶ ὅσα ὑπὸ τῆς στάσεως, καὶ ὅσα ὑπὸ τοῦ λιμοῦ κακωθέντες ἑάλωσαν. Παραλείψω δὲ οὐδὲ τὰς τῶν αὐτομόλων ἀτυχίας, οὐδὲ τὰς τῶν αἰχμαλώτων κολάσεις· ὅπως τε ὁ ναὸς ἄκοντος ἐνεπρήσθη Καίσαρος, καὶ ὅσα τῶν ἱερῶν κειμηλίων ἐκ τοῦ πυρὸς ἡρπάγη, τήν τε τῆς ὅλης πόλεως ἅλωσιν, καὶ τὰ πρὸ ταύτης σημεῖα καὶ τέρατα, καὶ τὴν αἰχμαλωσίαν τῶν τυράννων, τῶν τε ἀνδραποδισθέντων τὸ πλῆθος, καὶ εἰς ἣν ἕκαστοι τύχην διενεμήθησαν· καὶ ὡς Ῥωμαῖοι μὲν ἐπεξῆλθον τὰ λείψανα τοῦ πολέμου, καὶ τὰ ἐρύματα τῶν χωρίων καθεῖλον, Τίτος δὲ πᾶσαν ἐπελθὼν τὴν χώραν κατεστήσατο· τήν τε ὑποστροφὴν αὐτοῦ τὴν εἰς Ἰταλίαν, καὶ τὸν θρίαμβον.

12. Ταῦτα πάντα περιλαβὼν ἐν ἑπτὰ βιβλίοις, καὶ μηδεμίαν τοῖς ἐπισταμένοις τὰ πράγματα, καὶ παρατυχοῦσι τῷ πολέμῳ καταλιπὼν ἢ μέμψεως ἀφορμὴν ἢ κατηγορίας, τοῖς γε τὴν ἀλήθειαν ἀγαπῶσιν, ἀλλὰ μὴ πρὸς ἡδονὴν, ἀνέγραψα. Ποιήσομαι δὲ ταύτης τῆς ἐξηγήσεως ἀρχὴν, ἣν καὶ τῶν κεφαλαίων ἐποιησάμην.

CAP. I. 1. Στάσεως τοῖς δυνατοῖς Ἰουδαίων ἐμπεσούσης, καθ᾽ ὃν καιρὸν Ἀντίοχος, ὁ κληθεὶς Ἐπιφανὴς, διεφέρετο περὶ ὅλης Συρίας πρὸς Πτολεμαῖον τὸν ἕκτον, — ἡ φιλοτιμία δ᾽ ἦν αὐτοῖς περὶ δυναστείας, ἑκάστου τῶν ἐν ἀξιώματι μὴ φέροντος
52 τοῖς ὁμοίοις ὑποτετάχθαι, — Ὀνίας μὲν εἷς τῶν ἀρχιερέων, ἐπικρατήσας, ἐξέβαλε τῆς πόλεως τοὺς

υἱοὺς Τωβία. Οἱ δὲ καταφυγόντες πρὸς Ἀντίοχον ἱκέτευσαν αὐτοῖς ἡγεμόσι χρώμενον εἰς τὴν Ἰουδαίαν εἰςβαλεῖν. Πείθεται δὲ ὁ βασιλεὺς ὡρμημένος πάλαι, καὶ μετὰ πλείστης δυνάμεως αὐτὸς ὁρμήσας τήν τε πόλιν αἱρεῖ κατὰ κράτος, καὶ πολύ τι πλῆθος τῶν τῷ Πτολεμαίῳ προςεχόντων ἀνεῖλε, ταῖς τε ἁρπαγαῖς ἀνέδην ἐπαφεὶς τοὺς στρατιώτας αὐτὸς καὶ τὸν ναὸν ἐσύλησε, καὶ τὸν ἐνδελεχισμὸν τῶν καθ᾽ ἡμέραν ἐναγιασμῶν ἔπαυσεν ἐπ᾽ ἔτη τρία καὶ μῆνας ἕξ. Ὁ δὲ ἀρχιερεὺς Ὀνίας πρὸς Πτολεμαῖον διαφυγὼν, καὶ παρ᾽ αὐτοῦ λαβὼν τόπον ἐν τῷ Ἡλιουπολίτῃ νομῷ πολίχνην τε τοῖς Ἱεροσολύμοις ἀπεικασμένην, καὶ ναὸν ἔκτισεν ὅμοιον· περὶ οὗ αὖθις κατὰ χώραν δηλώσομεν.

2. Ἀντιόχῳ γε μὴν οὔτε τὸ παρ᾽ ἐλπίδα κρατῆσαι τῆς πόλεως, οὔθ᾽ αἱ ἁρπαγαὶ καὶ ὁ τοσοῦτος φόνος ἤρκεσεν, ὑπὸ δὲ ἀκρασίας παθῶν, καὶ κατὰ μνήμην ὧν περὶ τὴν πολιορκίαν ἔπαθεν, ἠνάγκαζεν Ἰουδαίους καταλύσαντας τὰ πάτρια, βρέφη τε αὐτῶν φυλάττειν ἀπερίτμητα, καὶ σῦς ἐπιθύειν τῷ βωμῷ· πρὸς ἃ πάντες μὲν ἠπείθουν, ἐσφάττοντο δὲ οἱ δοκιμώτατοι. Καὶ Βακχίδης, ὁ πεμφθεὶς ὑπ᾽ Ἀντιόχου φρούραρχος, τῇ φυσικῇ προςλαβὼν ὠμότητι τὰ ἀσεβῆ παραγγέλματα, παρανομίας οὐδεμίαν παρέλιπεν ὑπερβολὴν, καὶ κατ᾽ ἄνδρα τοὺς ἀξιολόγους αἰκιζόμενος, καὶ κοινῇ καθ᾽ ἡμέραν ἐνδεικνύμενος ὄψιν ἁλώσεως τῇ πόλει, μέχρι ταῖς ὑπερβολαῖς τῶν ἀδικημάτων τοὺς πάσχοντας εἰς ἀμύνης τόλμαν ἠρέθισε.

3. Ματθίας γοῦν υἱὸς Ἀσαμωναίου, τῶν ἱερέων εἷς, ἀπὸ κώμης Μωδεεὶν ὄνομα, συνασπίσας μετὰ χειρὸς οἰκείας, πέντε γὰρ υἱεῖς ἦσαν αὐτῷ, κοπίσιν ἀναιρεῖ τὸν Βακχίδην. Καὶ παραχρῆμα μὲν δείσας τὸ πλῆθος τῶν φρουρῶν εἰς τὰ ὄρη καταφεύγει. Προςγενομένων δὲ ἀπὸ τοῦ δήμου πολλῶν αὐτῷ, ἀναθαῤῥήσας κάτεισι, καὶ συμβαλὼν μάχῃ

53 νικᾷ τοὺς Ἀντιόχου στρατηγοὺς, καὶ τῆς Ἰουδαίας ἐξελαύνει. Παρελθὼν δὲ ἀπὸ τῆς εὐπραγίας εἰς δυναστείαν, καὶ διὰ τὴν ἀπαλλαγὴν τῶν ἀλλοφύλων ἄρξας τῶν σφετέρων ἑκόντων, τελευτᾷ, Ἰούδᾳ τῷ πρεσβυτάτῳ τῶν παίδων καταλιπὼν τὴν ἀρχήν.

4. Ὁ δὲ — οὐδὲ γὰρ ἠρεμήσειν Ἀντίοχον ὑπελάμβανε — τάς τ' ἐπιχωρίους συνεκρότει δυνάμεις, καὶ πρὸς Ῥωμαίους πρῶτος ἐποιήσατο φιλίαν, καὶ τὸν Ἐπιφανῆ, πάλιν εἰς τὴν χώραν εἰςβαλόντα, μετὰ καρτερᾶς πληγῆς ἀνέστειλεν. Ἀπὸ δὲ θερμοῦ τοῦ κατορθώματος ὥρμησεν ἐπὶ τὴν ἐν τῇ πόλει φρουρὰν, οὔπω γὰρ ἐκκέκοπτο, καὶ ἐκβαλὼν ἀπὸ τῆς ἄνω πόλεως, συνωθεῖ τοὺς στρατιώτας εἰς τὴν κάτω, — τοῦτο δὲ τοῦ ἄστεως τὸ μέρος Ἄκρα κέκληται, — κυριεύσας δὲ τοῦ ἱεροῦ, τόν τε χῶρον ἐκάθηρε πάντα, καὶ περιετείχισε, καὶ τὰ πρὸς τὰς λειτουργίας σκεύη καινὰ κατασκευάσας εἰς τὸν ναὸν εἰςήνεγκεν, ὡς τῶν προτέρων μεμιασμένων, βωμόν τε ᾠκοδόμησεν ἕτερον, καὶ τῶν ἐναγισμῶν ἤρξατο. Λαμβανούσης δὲ ἄρτι τὸ ἱερὸν κατάστημα τῆς πόλεως, τελευτᾷ μὲν Ἀντίοχος, κληρονόμος δὲ τῆς βασιλείας αὐτοῦ, καὶ τῆς πρὸς Ἰουδαίους ἀπεχθείας ὁ υἱὸς Ἀντίοχος γίνεται.

5. Συναγαγὼν οὖν πεζῶν μυριάδας πέντε, ἱππεῖς δὲ εἰς πεντακιςχιλίους, ἐλέφαντας δὲ ὀγδοήκοντα ἐμβάλλει διὰ τῆς Ἰουδαίας εἰς τὴν ὀρεινὴν, Βηθσουρὰν μὲν οὖν πολίχνην αἱρεῖ, κατὰ δὲ τὸν τόπον, ὃς καλεῖται Βεθζαχαρίας, στενῆς οὔσης τῆς παρόδου, Ἰούδας ὑπήντα μετὰ τῆς δυνάμεως. Πρὶν δὲ συνάψαι τὰς φάλαγγας Ἐλεάζαρος ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, προϊδὼν τὸ ὑψηλότατον τῶν ἐλεφάντων, πύργῳ τε μεγάλῳ καὶ περιχρύσοις προτειχίσμασι κεκοσμημένον, ὑπολαβὼν ἐπ' αὐτοῦ τὸν Ἀντίοχον εἶναι, τῶν τε ἰδίων προεκτρέχει πολὺ, καὶ διακόψας τὸ στῖφος τῶν πολεμίων ἐπὶ τὸν ἐλέφαντα διήνυσεν. Ἐφικέσθαι μὲν οὖν τοῦ δοκοῦντος εἶναι βασιλέως οὐχ

οἷός τε ἦν διὰ τὸ ὕψος, ὁ δὲ τὸ θηρίον ὑπὸ τὴν γαστέρα πλήξας, ἐπικατέσεισεν ἑαυτῷ, καὶ συντριβεὶς ἐτελεύτησε, μηδὲν πλέον δράσας τοῦ μεγάλοις ἐπιβαλέσθαι, θέμενος εὐκλείας ἐν δευτέρῳ τὸ ζῆν. Ὅ γε μὴν κυβερνῶν τὸν ἐλέφαντα ἰδιώτης ἦν· καὶ ἂν εἰ συνέβη δὲ εἶναι τὸν Ἀντίοχον, οὐδὲν πλέον ἤνυσεν ἂν ὁ τολμήσας τοῦ δοκεῖν, ἐπ' ἐλπίδι μόνῃ λαμπροῦ κατορθώματος ἑλέσθαι τὸν θάνατον. Γίνεται δὲ καὶ κληδὼν τῷ ἀδελφῷ τῆς ὅλης παρατάξεως· καρτερῶς μὲν γὰρ Ἰουδαῖοι καὶ μέχρι πολλοῦ διηγωνίσαντο, πλήθει δὲ ὑπερέχοντες οἱ βασιλικοὶ, καὶ δεξιᾷ χρησάμενοι τύχῃ, κρατοῦσι. Καὶ πολλῶν ἀναιρεθέντων, τοὺς λοιποὺς ἔχων Ἰούδας εἰς τὴν Γοφνιτικὴν τοπαρχίαν φεύγει. Ἀντίοχος δὲ παρελθὼν εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ καθίσας ὀλίγας ἡμέρας ἐν αὐτῇ, κατὰ σπάνιν τῶν ἐπιτηδείων ἀπανί- 54
σταται, καταλιπὼν μὲν φρουρὰν, ὅσην ἀποχρήσειν ὑπελάμβανε, τὴν δὲ λοιπὴν δύναμιν ἀπαγαγὼν, χειμεριοῦσαν εἰς τὴν Συρίαν.

6. Πρὸς δὲ τὴν ὑποχώρησιν τοῦ βασιλέως Ἰούδας οὐκ ἠρέμει· προσγενομένων δ' ἐκ τοῦ ἔθνους πολλῶν, καὶ τοὺς διασωθέντας ἐκ τῆς μάχης ἐπισυγκροτήσας, κατὰ κώμην Ἀδασὰν συμβάλλει τοῖς Ἀντιόχου στρατηγοῖς, καὶ φανεὶς ἄριστος κατὰ τὴν μάχην, πολλούς τε τῶν πολεμίων ἀποκτείνας, ἀναιρεῖται· καὶ μεθ' ἡμέρας ὀλίγας ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ Ἰωάννης, ἐπιβουλευθεὶς ὑπὸ τῶν τὰ Ἀντιόχου φρονούντων τελευτᾷ.

CAP. II. 1. Διαδεξάμενος δὲ τοῦτον ὁ ἀδελφὸς Ἰωνάθης, τά τε ἄλλα πρὸς τοὺς ἐπιχωρίους καὶ διὰ φυλακῆς ἦγεν ἑαυτὸν, καὶ τῇ πρὸς Ῥωμαίους φιλίᾳ τὴν ἀρχὴν ἐκρατύνατο, πρός τε τὸν Ἀντίοχον παῖδα διαλλαγὰς ἐποιήσατο. Οὐ μὴν δέ τι τούτων ἤρκεσεν αὐτῷ πρὸς ἀσφάλειαν. Τρύφων γὰρ ὁ τύραννος, ἐπίτροπος μὲν ὢν τοῦ Ἀντιόχου παιδὸς ἐπι-

βουλεύων δ' αὐτῷ καὶ πρόσθεν ἀποσκευάζεσθαι τοὺς φίλους αὐτοῦ πειρώμενος, ἥκοντα τὸν Ἰωνάθην σὺν ὀλίγοις εἰς Πτολεμαΐδα πρὸς Ἀντίοχον δόλῳ συλλαμβάνει, καὶ δήσας ἐπὶ Ἰουδαίων στρατεύει· εἶτ' ἀπελαθεὶς ὑπὸ τοῦ Σίμωνος, ὃς ἦν ἀδελφὸς τοῦ Ἰωνάθου, καὶ πρὸς τὴν ἧτταν ὠργισμένος, κτείνει τὸν Ἰωνάθην.

2. Σίμων δὲ γενναίως ἀφηγούμενος τῶν πραγμάτων, αἱρεῖ μὲν Γάζαρά τε καὶ Ἰόππην καὶ Ἰάμ-
55 νειαν τῶν προσοίκων, κατέσκαψε δὲ καὶ τὴν Ἄκραν, τῶν φρουρῶν κρατήσας. Αὖθις δὲ γίνεται καὶ Ἀντιόχῳ σύμμαχος κατὰ Τρύφωνος, ὃν ἐν Δώροις πρὸ τῆς ἐπὶ Μήδους στρατείας ἐπολιόρκει. Ἀλλ' οὐκ ἐδυσώπησε τὴν τοῦ βασιλέως πλεονεξίαν, συνεξελὼν Τρύφωνα· μετ' οὐ πολὺ γὰρ Ἀντίοχος Κενδεβαῖον τὸν αὐτοῦ στρατηγὸν μετὰ δυνάμεως δηϊώσοντα τὴν Ἰουδαίαν ἀνέπεμψε καὶ καταδουλωσόμενον Σίμωνα. Ὁ δὲ, καίτοι γηραιὸς ὢν, νεανικώτερον ἀφηγήσατο τοῦ πολέμου· τοὺς μέντοι γε υἱεῖς ἐπ' αὐτὸν μετὰ τῶν ἐῤῥωμενεστάτων προεκπέμπει, αὐτὸς δὲ μοῖραν τῆς δυνάμεως ἀναλαβὼν ἐπῄει κατ' ἄλλο μέρος. Πολλοὺς δὲ πολλαχοῦ καὶ ἐν τοῖς ὄρεσι προλοχίσας, πάσαις κρατεῖ ταῖς ἐπιβολαῖς, καὶ νικήσας λαμπρῶς ἀρχιερεὺς ἀποδείκνυται, καὶ τῆς τῶν Μακεδόνων ἐπικρατείας μετὰ ἑκατὸν καὶ ἑβδομήκοντα ἔτη Ἰουδαίους ἀπαλλάττει.

3. Θνήσκει δὲ καὶ αὐτὸς ἐπιβουλευθεὶς ἐν συμποσίῳ ὑπὸ Πτολεμαίου τοῦ γαμβροῦ, ὃς, αὐτοῦ τήν τε γυναῖκα καὶ τοὺς δύο παῖδας ἐγκαθείρξας, ἐπὶ τὸν τρίτον Ἰωάννην, ὃς καὶ Ὑρκανὸς ἐκαλεῖτο, τοὺς ἀναιρήσοντας ἔπεμψε. Προγνοὺς δὲ τὴν ἔφοδον ὁ νεανίσκος παραγενέσθαι εἰς τὴν πόλιν ἠπείγετο, πλεῖστον τῷ λαῷ πεποιθὼς, κατά τε μνήμην τῶν πατρῴων κατορθωμάτων, καὶ μῖσος τῆς Πτολεμαίου παρανομίας. Ὥρμησε δὲ καὶ Πτολεμαῖος εἰσελθεῖν καθ' ἑτέραν πύλην, ἐξεκρούσθη γε μὴν

ὑπὸ τοῦ δήμου ταχέως δεδεγμένου ἤδη τὸν Ὑρκανόν· καὶ ὁ μὲν παραχρῆμα ἀνεχώρησεν ἐπί τι τῶν ὑπὲρ Ἱεριχοῦντος ἐρυμάτων, ὃ Δαγὼν καλεῖται. Κομισάμενος δὲ τὴν πατρῴαν ἀρχιερωσύνην Ὑρκανὸς, καὶ θύσας τῷ Θεῷ, μετὰ τάχους ἐπὶ Πτολεμαῖον ὥρμησε, τιμωρήσων τῇ μητρὶ καὶ τοῖς ἀδελφοῖς.

4. Προςβαλὼν δὲ τῷ φρουρίῳ τὰ μὲν ἄλλα κρείττων ἦν, ἡττᾶτο δὲ δικαίου πάθους. Ὁ γὰρ Πτολεμαῖος, ὁπότε καταπονοῖτο, τήν τε μητέρα καὶ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ προανάγων ἐπὶ τοῦ τείχους εἰς εὐσύνοπτον ᾐκίζετο, καὶ διακρημνιεῖν, εἰ μὴ θᾶττον ἀπαναστταίη, διηπείλει. Πρὸς ἃ τὸν μὲν Ὑρκανὸν ὀργῆς πλείων οἶκτος εἰςῄει καὶ δέος, ἡ δὲ μήτηρ οὐδὲν οὔτε πρὸς τὰς αἰκίας, οὔτε πρὸς τὸν ἀπειλούμενον αὐτῇ θάνατον ἐνδιδοῦσα, χεῖρας ὤρεγε, καὶ κατηντιβόλει τὸν παῖδα, μὴ πρὸς τὴν αὐτῆς ὕβριν ἐπικλασθέντα φείσασθαι τοῦ δυςσεβοῦς, ὡς αὐτῇ γε κρείττονα τὸν ἐκ Πτολεμαίου θάνατον ἀθανασίας εἶναι, διδόντος δίκας ἐφ᾽ οἷς εἰς τὸν οἶκον αὐτῶν παρηνόμησεν. Ὁ δὲ Ἰωάννης, ὁπότε μὲν ἐνθυμηθείη τὸ παράστημα τῆς μητρὸς, καὶ κατακούσειε τῆς ἱκεσίας, ὥρμητο προςβάλλειν· ἐπειδὰν 56
δὲ κατίδοι τυπτομένην τε καὶ σπαραττομένην, ἐθηλύνετο, καὶ τοῦ πάθους ὅλος ἦν. Τριβομένης δὲ διὰ ταῦτα τῆς πολιορκίας, ἐπέστη τὸ ἀργὸν ἔτος, ὃ κατὰ ἑπταετίαν ἀργεῖται παρὰ Ἰουδαίοις ὁμοίως ταῖς ἑβδομάσιν ἡμέραις. Καὶ ἐν τούτῳ Πτολεμαῖος ἀνεθεὶς τῆς πολιορκίας ἀναιρεῖ τοὺς ἀδελφοὺς Ἰωάννου σὺν τῇ μητρὶ, καὶ φεύγει πρὸς Ζήνωνα, τὸν ἐπικληθέντα Κοτυλᾶν, Φιλαδελφείας δ᾽ ἦν τύραννος.

5. Ἀντίοχος δὲ, κατ᾽ ὀργὴν ὧν ὑπὸ Σίμωνος ἔπαθε, στρατεύσας εἰς τὴν Ἰουδαίαν, ἐπολιόρκει τὸν Ὑρκανὸν προςκαθεζόμενος τοῖς Ἱεροσολύμοις. Ὁ δὲ τὸν Δαυΐδου τάφον ἀνοίξας, ὃς δὴ πλουσιώτατος βασιλέων ἐγένετο, καὶ ἀνελόμενος ὑπὲρ τριςχι-

λια τάλαντα χρημάτων, τόν τε Ἀντίοχον ἀπανίστησι τῆς πολιορκίας πείσας τριακοσίοις ταλάντοις. Καὶ δὴ καὶ ξενοτροφεῖν πρῶτος Ἰουδαίων ἐκ τῆς περιουσίας ἤρξατο.

6. Αὖθίς γε μὴν ὡς Ἀντίοχος, ἐπὶ Μήδους στρατεύσας, καιρὸν ἀμύνης αὐτῷ παρεῖχεν, εὐθέως ὥρμησεν ἐπὶ τὰς ἐν Συρίᾳ πόλεις, κενάς, ὅπερ ἦν, ὑπολαμβάνων εὑρήσειν τῶν μαχιμωτέρων. Μεδάβην μὲν οὖν καὶ Σαμαίαν ἅμα ταῖς πλησίον, ἔτι δὲ Σίκιμα καὶ Γαριζὶν αὐτὸς αἱρεῖ. Πρὸς αἷς τὸ Χουθαίων γένος, οἳ περιῴκουν τὸ εἰκασθὲν τῷ ἐν Ἱεροσολύμοις ἱερῷ. Αἱρεῖ δὲ καὶ τῆς Ἰδουμαίας τε ἄλλας τε οὐκ ὀλίγας, καὶ Ἀδωρεὸν καὶ Μάρισσαν.

7. Προελθὼν δὲ καὶ μέχρι Σαμαρείας, ἔνθα δὴ νῦν ἐστι Σεβαστὴ πόλις, ὑφ' Ἡρώδου κτισθεῖσα τοῦ βασιλέως, καὶ πάντοθεν αὐτὴν ἀποτειχίσας, τοὺς υἱεῖς ἐπέστησε τῇ πολιορκίᾳ, Ἀριστόβουλον καὶ Ἀντίγονον· ὧν οὐδὲν ἀνιέντων, λιμοῦ μὲν εἰς τοσοῦτον προῆλθον οἱ κατὰ τὴν πόλιν, ὡς ἅψασθαι καὶ τῶν ἀηθεστάτων. Ἐπεκαλοῦντο δὲ βοηθὸν Ἀντίοχον τὸν ἐπικληθέντα Κυζικηνόν· καὶ ἐκεῖνος ἑτοί-
57 μως ὑπακούσας ὑπὸ τῶν περὶ Ἀριστόβουλον ἡττᾶται. Καὶ ὁ μὲν μέχρι Σκυθοπόλεως διωχθεὶς ὑπὸ τῶν ἀδελφῶν ἐκφεύγει, οἱ δ' ἐπὶ τῆς Σαμαρείας ὑποστρέψαντες, τό τε πλῆθος πάλιν εἰς τὸ τεῖχος συγκλείουσι, καὶ τὴν πόλιν ἑλόντες αὐτήν τε κατασκάπτουσι, καὶ τοὺς ἐνοικοῦντας ἐξηνδραποδίσαντο. Προχωρούντων δὲ τῶν κατορθωμάτων, τὴν ὁρμὴν οὐ κατέψυξαν, ἀλλὰ προελθόντες ἅμα τῇ δυνάμει μέχρι τῆς Σκυθοπόλεως, ταύτην τε κατέδραμον, καὶ τὴν ἐντὸς Καρμήλου τοῦ ὄρους χώραν ἅπασαν κατενείμαντο.

8. Πρὸς δὲ τὰς εὐπραγίας αὐτοῦ τε Ἰωάννου καὶ τῶν παίδων φθόνος ἐγείρει στάσιν τῶν ἐπιχωρίων, καὶ πολλοὶ κατ' αὐτῶν συνελθόντες οὐκ ἠρέμουν, μέχρι καὶ πρὸς φανερὸν πόλεμον ἐκριπισθέν-

τες ἡττῶνται. Τὸ λοιπὸν δ' ἐπιβιοὺς ἐν εὐδαιμονίᾳ Ἰωάννης, καὶ τὰ κατὰ τὴν ἀρχὴν κάλλιστα διοικήσας, ἐν τρισὶν καὶ τριάκοντα ὅλοις ἔτεσιν, ἐπὶ πέντε υἱέσι τελευτᾷ, μακαριστότατος ὄντως καὶ κατὰ μηδὲν ἐάσας ἐφ' ἑαυτῷ μεμφθῆναι τὴν τύχην. Τρία γοῦν τὰ κρατιστεύοντα μόνος εἶχε, τήν τε ἀρχὴν τοῦ ἔθνους, καὶ ἀρχιερωσύνην, καὶ προφητείαν· ὡμίλει γὰρ αὐτῷ τὸ δαιμόνιον, ὡς μηδὲν τῶν μελλόντων ἀγνοεῖν, ὥς γε καὶ περὶ δύο τῶν πρεσβυτάτων υἱῶν, ὅτι μὴ διαμενοῦσι κύριοι τῶν πραγμάτων, προεῖδέ τε καὶ προεφήτευσεν· ὧν τὴν καταστροφὴν ἄξιον ἀφηγήσασθαι, παρόσον τῆς πατρῴας εὐδαιμονίας ἀπέκλιναν.

CAP. III. 1. Μετὰ γὰρ τὴν τοῦ πατρὸς τελευτὴν ὁ πρεσβύτερος αὐτῶν Ἀριστόβουλος τὴν ἀρχὴν εἰς βασιλείαν μεταθεὶς, περιτίθεται μὲν διάδημα πρῶτος μετὰ τετρακοσιοστὸν καὶ ἑβδομηκοστὸν πρῶτον ἔτος, πρὸς δὲ μῆνας τρεῖς, ἐξ οὗ κατῆλθεν ὁ λαὸς εἰς τὴν χώραν, ἀπαλλαγεὶς τῆς ἐν Βαβυλῶνι δουλείας· τῶν δὲ ἀδελφῶν τὸν μὲν μετ' αὐτὸν Ἀντίγονον — ἐδόκει γὰρ ἀγαπᾶν — ἦγεν ἰσοτίμως, τοὺς δ' ἄλλους εἴργνυσι δήσας· δεσμεῖ δὲ καὶ τὴν μητέρα 58
διενεχθεῖσαν περὶ τῆς ἐξουσίας — ταύτην γὰρ δὴ κυρίαν τῶν ὅλων ὁ Ἰωάννης ἀπολελοίπει, — καὶ μέχρι τοσαύτης ὠμότητος προῆλθεν, ὥστε καὶ λιμῷ διαφθεῖραι δεδεμένην.

2. Περιέρχεται δὲ αὐτὸν ἡ τίσις εἰς τὸν ἀδελφὸν Ἀντίγονον, ὃν ἠγάπα τε καὶ τῆς βασιλείας κοινωνὸν εἶχε· κτείνει γὰρ καὶ τοῦτον ἐκ διαβολῶν, ἃς οἱ πονηροὶ τῶν κατὰ τὸ βασίλειον ἐνεσκευάσαντο. Τὰ μὲν οὖν πρῶτα διηπίστει τοῖς λεγομένοις ὁ Ἀριστόβουλος, ἅτε δὴ καὶ τὸν ἀδελφὸν ἀγαπῶν, καὶ διδοὺς φθόνῳ τὰ πολλὰ τῶν λογοποιουμένων. Ὡς δὲ ὁ Ἀντίγονος λαμπρὸς ἀπὸ τῆς στρατιᾶς ἦλθεν εἰς τὴν ἑορτὴν, ἐν ᾗ σκηνοποιεῖσθαι πάτριον τῷ

θεῷ, συνέβη μὲν κατ' ἐκείνας τὰς ἡμέρας, νόσῳ χρήσασθαι τὸν Ἀριστόβουλον· τὸν δὲ Ἀντίγονον ἐπὶ τέλει τῆς ἑορτῆς ἀναβάντα μετὰ τῶν περὶ αὐτὸν ὁπλιτῶν, ὡς ἐνῆν μάλιστα κεκοσμημένον, προςκυνῆσαι τὸ πλέον ὑπὲρ τοῦ ἀδελφοῦ. Καὶ ἐν τούτῳ προςιόντες οἱ πονηροὶ τῷ βασιλεῖ τήν τε πομπὴν τῶν ὁπλιτῶν ἐδήλουν, καὶ τὸ παράστημα τοῦ Ἀντιγόνου, μεῖζον ἢ κατ' ἰδιώτην, ὅτι τε παρείη μετὰ μεγίστου συντάγματος ἀναιρήσων αὐτὸν, 'οὐ γὰρ ἀνέχεσθαι τιμὴν μόνον ἐκ βασιλείας ἔχειν, παρὸν αὐτὴν κατασχεῖν.'

3. Τούτοις κατὰ μικρὸν ἄκων ἐπίστευσεν Ἀριστόβουλος, καὶ προνοῶν τοῦ μήθ' ὑποπτεύων φανερὸς γενέσθαι καὶ προησφαλίσθαι πρὸς τὸ ἄδηλον, καθίστησι μὲν τοὺς σωματοφύλακας ἔν τινι τῶν ὑπογαίων ἀλαμπεῖ. Κατέκειτο δ' ἐν τῇ Βάρει πρότερον καλουμένῃ, αὖθις δ' Ἀντωνίᾳ μετονομασθείσῃ, προςτάξας ἀνόπλου μὲν ἀπέχεσθαι, κτείνειν δὲ τὸν Ἀντίγονον, εἰ μετὰ ὅπλων προςίοι. Καὶ πρὸς αὐτὸν ἔπεμψε τοὺς προεροῦντας ἄνοπλον ἐλθεῖν. Πρὸς τοῦτο πάνυ πανούργως ἡ βασίλισσα συντάσσεται μετὰ τῶν ἐπιβούλων· τοὺς γὰρ πεμφθέντας πείθουσι τὰ μὲν παρὰ τοῦ βασιλέως σιωπῆσαι, λέγειν δὲ πρὸς τὸν Ἀντίγονον, ὡς 'ἀδελφὸς ἀκούσας ὅπλα τε αὐτῷ κατεσκευακέναι κάλλιστα, καὶ πολεμικὸν κόσμον ἐν τῇ Γαλιλαίᾳ, διὰ μὲν τὴν ἀσθένειαν αὐτὸς ἐπιδεῖν ἕκαστα κωλυθείη, νῦν δ' ἐπεὶ καὶ χωρίζεσθαι μέλλοις, θεάσαιτ' ἂν ἥδιστά σε ἐν τοῖς ὅπλοις.'

4. Ταῦτ' ἀκούσας ὁ Ἀντίγονος, ἐνῆγε δὲ ἡ τοῦ ἀδελφοῦ διάθεσις μηδὲν ὑποπτεύειν πονηρὸν, ἐχώρει μετὰ τῶν ὅπλων ὡς πρὸς ἐπίδειξιν. Γενόμενος δὲ κατὰ τὴν σκοτεινὴν πάροδον, ἣ Στράτωνος ἐκαλεῖτο πύργος, ὑπὸ τῶν σωματοφυλάκων ἀναιρεῖται, βέβαιον ἀποδείξας, ὅτι πᾶσαν εὔνοιαν καὶ φύσιν κόπτει διαβολὴ, καὶ οὐδὲν οὕτω τῶν ἀγαθῶν παθῶν ἰσχυρὸν, ὃ τῷ φθόνῳ μέχρι παντὸς ἀντέχει.

5. Θαυμάσαι δ' ἄν τις ἐν τούτῳ καὶ Ἰούδαν, — Ἐσσαῖος ἦν γένος, οὐκ ἔστιν ὅτε πταίσας ἢ ψευσθεὶς ἐν προαγγέλμασιν, — ὃς ἐπειδὴ καὶ τότε τὸν Ἀντίγονον ἐθεάσατο παριόντα διὰ τοῦ ἱεροῦ, πρὸς τοὺς γνωρίμους ἀνέκραγεν, ἦσαν δ' οὐκ ὀλίγοι παρεδρεύοντες αὐτῷ τῶν μανθανόντων, "Παπαί! Νῦν 59
ἐμοὶ καλὸν," ἔφη, "τὸ θανεῖν, ὅτι μοι προτέθνηκεν ἡ ἀλήθεια, καί τι τῶν ὑπ' ἐμοῦ προῤῥηθέντων διέψευσται! Ζῇ γὰρ Ἀντίγονος οὑτοσὶ σήμερον ὀφείλων ἀποθανεῖν. Χωρίον δὲ αὐτῷ πρὸς σφαγὴν Στράτωνος πύργος εἵμαρτο· καὶ τοῦτο μὲν ἀφ' ἑξακοσίων σταδίων ἐντεῦθεν ἐστίν· ὧραι δὲ τῆς ἡμέρας ἤδη τέσσαρες, ὅδε δὴ χρόνος ἐκκρούει τὸ μάντευμα!" Ταῦτ' εἰπὼν, σκυθρωπὸς ὑπὸ συννοίας ὁ γέρων διεκαρτέρει, καὶ μετ' ὀλίγον ἀνῃρημένος Ἀντίγονος ἠγγέλλετο κατὰ τὸ ὑπόγαιον χωρίον, ὃ δὴ καὶ αὐτὸ Στράτωνος ἐκαλεῖτο πύργος, ὁμωνύμως τῇ παραλίῳ Καισαρείᾳ. Τοῦτο γοῦν τὸν μάντιν διετάραξεν.

6. Ἀριστοβούλῳ γε μὴν εὐθὺς ἡ περὶ τοῦ μύσους μεταμέλεια νόσον ἐνσκήπτει, καὶ πρὸς ἐννοίαις τοῦ φόνου τὴν ψυχὴν ἔχων ἀεὶ τεταραγμένην συνετήκετο, μέχρι τῶν σπλάγχνων ὑπ' ἀκράτου τῆς λύπης σπαραττομένων ἄθρουν αἷμα ἀναβάλλει. Τοῦτό τις τῶν πρὸς τῇ θεραπείᾳ παίδων ἐκφέρων, δαιμονίῳ προνοίᾳ σφάλλεται, καθ' ὃν τόπον ὁ Ἀντίγονος ἔσφακτο, καὶ φαινομένοις ἔτι τοῖς ἀπὸ τοῦ φόνου σπίλοις τὸ αἷμα τοῦ κτείναντος ἐπεξέχεεν. Ἤρθη δ' εὐθὺς οἰμωγὴ τῶν θεασαμένων, ὥςπερ ἐπίτηδες τοῦ παιδὸς ἐκεῖ ἐπικατασπείσαντος τὸ αἷμα· τῆς δὲ βοῆς ἀκούσας ὁ βασιλεὺς, τὴν αἰτίαν ἐπυνθάνετο, καὶ μηδενὸς τολμῶντος εἰπεῖν, μᾶλλον ἐνέκειτο μαθεῖν ἐθέλων. Τέλος δ' ἀπειλοῦντι καὶ βιαζομένῳ τὸ ἀληθὲς εἶπον. Ὁ δὴ τούς τε ὀφθαλμοὺς ἐμπίπλησι δακρύων, καὶ στενάξας, ὅσον ἦν αὐτῷ δύναμις, εἶπεν· "Οὐκ ἄρα θεοῦ μέγαν ὀφθαλμὸν ἐπ' ἔργοις ἀθεμίτοις λήσειν ἔμελλον, ἀλλά με ταχεῖα μέτεισι

δίκη φόνου συγγενοῦς! Μέχρι ποῦ μοι σῶμα ἀναιδέστατον τὴν ἀδελφῷ καὶ μητρὶ κατάκριτον ψυχὴν καθέξεις; Μέχρι ποῦ δ' αὐτὸς ἐπισπείσω· κατὰ μέρος τὸ ἐμὸν αἷμα; Λαβέτωσαν ἀθρόον τοῦτο, καὶ μηκέτι ταῖς ἐκ τῶν ἐμῶν σπλάγχνων χοαῖς ἐπειρωνευέσθω τὸ δαιμόνιον." Ταῦτ' εἰπὼν, εὐθέως τελευτᾷ, βασιλεύσας οὐ πλεῖον ἐνιαυτοῦ.

CAP. IV. 1. *Λύσασα* δὲ ἡ γυνὴ τοὺς ἀδελφοὺς αὐτοῦ βασιλέα καθίστησιν Ἀλέξανδρον, τὸν καὶ καθ' ἡλικίαν καὶ μετριότητα προέχειν δοκοῦντα. Ὁ δὲ παρελθὼν εἰς τὴν ἐξουσίαν τὸν ἕτερον μὲν τῶν ἀδελφῶν βασιλειῶντα κτείνει, τὸν δὲ καταλειπόμενον, ἀγαπῶντα τὸ ζῆν δίχα πραγμάτων, εἶχεν ἐν τιμῇ.

2. Γίνεται δ' αὐτῷ καὶ πρὸς τὸν Λάθουρον ἐπικληθέντα Πτολεμαῖον συμβολὴ, πόλιν Ἀσωχὶν
60 ᾑρηκότα, καὶ πολλοὺς μὲν ἀνεῖλε τῶν πολεμίων, ἡ δὲ νίκη πρὸς Πτολεμαῖον ἔῤῥεψεν· ἐπεὶ δὲ οὗτος ὑπὸ τῆς μητρὸς Κλεοπάτρας διωχθεὶς εἰς Αἴγυπτον ἀνεχώρησεν, Ἀλέξανδρος Γαδάρων τε πολιορκίᾳ κρατεῖ, καὶ Ἀμαθοῦντος, ὃ δὴ μέγιστον μὲν ἦν ἔρυμα τῶν περὶ Ἰορδάνην, τὰ τιμιώτατα δὲ τῶν Θεοδώρου τοῦ Ζήνωνος κτημάτων ἦν ἐν αὐτῷ. Ἐπελθὼν δ' ἐξαίφνης ὁ Θεόδωρος, τά τε σφέτερα καὶ τοῦ βασιλέως ἀποσκευὴν αἱρεῖ, τῶν τε Ἰουδαίων εἰς μυρίους κτείνει. Γίνεται δ' ἐπάνω τῆς πληγῆς Ἀλέξανδρος, καὶ τραπόμενος εἰς τὴν παραλίαν, αἱρεῖ Ῥαφίαν τε καὶ Γάζαν, καὶ Ἀνθηδόνα, τὴν αὖθις ὑφ' Ἡρώδου τοῦ βασιλέως Ἀγριππιάδα ἐπικληθεῖσαν.

3. Ἐξανδραποδισαμένῳ δὲ ταύτας ἐπανίσταται τὸ Ἰουδαϊκὸν ἐν ἑορτῇ· μάλιστα γὰρ ἐν ταῖς εὐωχίαις αὐτῶν στάσις ἅπτεται. Καὶ ἐδόκει μὴ ἂν κρείττων γίνεσθαι τῆς ἐπιβουλῆς, εἰ μὴ τὸ ξενικὸν αὐτῷ παρεβοήθει, — Πισίδαι καὶ Κίλικες ἦσαν. Σύρους γὰρ οὐκ ἐδέχετο μισθοφόρους, διὰ τὴν ἔμ-

φυτον αὐτῶν πρὸς τὸ ἔθνος ἀπέχθειαν. Κτείνας δὲ τῶν ἐπαναστάντων ὑπὲρ ἑξακιςχιλίους, Ἀραβίας ἥπτετο· καὶ ταύτην ἑλὼν Γαλααδίτας τε καὶ Μωαβίτας, φόρον τε αὐτοῖς ἐπιτάξας, ἀνέστρεψεν ἐπὶ Ἀμαθοῦντα. Θεοδώρου δὲ πρὸς τὰς εὐπραγίας αὐτοῦ καταπλαγέντος, ἔρημον λαβὼν τὸ φρούριον κατέσκαψεν.

4. Ἔπειτα συμβαλὼν Ὀβάδῃ τῷ Ἀράβων βασιλεῖ προλοχίσαντι κατὰ τὴν Γαυλάνην, ἐνέδρας αὐτῷ γενομένης, πᾶσαν ἀποβάλλει τὴν στρατιὰν, συνωθεῖσαν κατὰ βαθείας φάραγγος, καὶ πλήθει καμήλων συντριβεῖσαν. Διαφυγὼν δὲ αὐτὸς εἰς Ἱεροσόλυμα, τῷ μεγέθει τῆς συμφορᾶς πάλαι μισοῦν τὸ ἔθνος ἠρέθισεν εἰς ἐπανάστασιν. Γίνεται δὲ καὶ τότε κρείττων, καὶ μάχαις ἐπαλλήλοις οὐκ ἔλαττον πεντακισμυρίους Ἰουδαίων ἀνεῖλεν ἐν ἓξ ἔτεσιν· οὐ μὴν ηὐφραίνετό γε ταῖς νίκαις, τὴν ἑαυτοῦ βασιλείαν ἀναλίσκων, ὥςτε, παυσάμενος τῶν ὅπλων, λόγοις ἐπεχείρει διαλύεσθαι πρὸς τοὺς ὑποτεταγμένους. Οἱ δὲ μᾶλλον ἐμίσουν τὴν μετάνοιαν αὐτοῦ, καὶ τοῦ τρόπου τὸ ἀνώμαλον. Πυνθανομένῳ τε τὸ αἴτιον, ‘τί ἂν ποιήσας καταστείλειεν αὐτοὺς,’ ‘ἀποθανὼν ἔλεγον· νεκρῷ γὰρ ἂν διαλλαγῆναι μόλις τῷ τοσαῦτα δράσαντι.’ Ἅμα δὲ καὶ τὸν Εὔκαιρον ἐπικληθέντα Δημήτριον ἐπεκαλοῦντο. Ῥᾳδίως δ' ὑπακούσαντος κατ' ἐλπίδα μειζόνων, καὶ μετὰ στρατιᾶς ἥκοντος, συνέμισγον οἱ Ἰουδαῖοι τοῖς συμμάχοις περὶ Σίκιμα.

5. Δέχεται δ' ἑκατέρους Ἀλέξανδρος, ἱππεῦσι 61
μὲν χιλίοις, μισθοφόροις δὲ πεζοῖς ὀκτακιςχιλίοις· παρῆν δὲ αὐτῷ καὶ τὸ εὖνουν Ἰουδαϊκὸν εἰς μυρίους. Τῶν δ' ἐναντίων ἱππεῖς μὲν ἦσαν τριςχίλιοι, πεζῶν δὲ μύριοι τετρακιςχίλιοι. Καὶ πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν διακηρύσσοντες οἱ βασιλεῖς ἐπειρῶντο τῶν παρ' ἀλλήλοις ἀποστάσεων· Δημήτριος μὲν τοὺς Ἀλεξάνδρου μισθοφόρους, Ἀλέξανδρος δὲ τοὺς ἅμα

Δημητρίῳ Ἰουδαίους μεταπείσειν ἐλπίσας. Ὡς δ' οὔτε οἱ Ἰουδαῖοι θυμῶν, οὔθ' οἱ Ἕλληνες ἐπαύοντο πίστεως, διεκρίνοντο ἤδη τοῖς ὅπλοις συμπεσόντες. Κρατεῖ δὲ τῇ μάχῃ Δημήτριος, καίπερ πολλὰ τῶν Ἀλεξάνδρου μισθοφόρων καὶ ψυχῆς ἔργα καὶ χειρὸς ἐπιδειξαμένων. Χωρεῖ δὲ τὸ τέλος τῆς παρατάξεως παρὰ δόξαν ἀμφοτέροις· οὔτε γὰρ Δημητρίῳ παρέμειναν νικῶντι οἱ καλέσαντες, καὶ κατ' οἶκτον τῆς μεταβολῆς Ἀλεξάνδρῳ προσεχώρησαν, εἰς τὰ ὄρη καταφυγόντι, Ἰουδαίων ἑξακισχίλιοι. Ταύτην τὴν ῥοπὴν οὐκ ἤνεγκε Δημήτριος, ἀλλ' ὑπολαβὼν ἤδη μὲν ἀξιόμαχον εἶναι πάλιν Ἀλέξανδρον, μεταῤῥεῖν δὲ καὶ πᾶν τὸ ἔθνος εἰς αὐτὸν, ἀνεχώρησεν.

6. Οὐ μὴν τό γε λοιπὸν πλῆθος, ἀναχωρησάντων τῶν συμμάχων, κατέθεντο τὰς διαφοράς· συνεχὴς δὲ πρὸς Ἀλέξανδρον ἦν αὐτοῖς ὁ πόλεμος, μέχρι πλείστους ἀποκτείνας τοὺς λοιποὺς ἀπήλασεν εἰς Βεμέσελιν πόλιν, καὶ ταύτην καταστρεψάμενος αἰχμαλώτους ἀνήγαγεν εἰς Ἱεροσόλυμα. Προέκοψε δ' αὐτῷ δι' ὑπερβολὴν ὀργῆς εἰς ἀσέβειαν τὰ τῆς ὠμότητος· τῶν γὰρ ληφθέντων εἰς ὀκτακοσίους ἀνασταυρώσας ἐν μέσῃ τῇ πόλει, γυναῖκάς τε καὶ τέκνα αὐτῶν ἀπέσφαξε ταῖς ὄψεσι· καὶ ταῦτα πίνων καὶ συγκατακείμενος ταῖς παλλακίσιν ἀφεωρᾶτο. Τοσαύτη δὲ κατάπληξις ἔσχε τὸν δῆμον, ὥστε τῶν ἀντιστασιαστῶν κατὰ τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα φυγεῖν ὀκτακισχιλίους ἐξ Ἰουδαίας ὅλης, οἷς ὅρος τῆς φυγῆς ὁ Ἀλεξάνδρου θάνατος κατέστη. Τέλος δὲ, τοιούτοις ἔργοις ὀψὲ καὶ μόλις ἡσυχίαν τῇ βασιλείᾳ πορίσας, ἀνεπαύσατο τῶν ὅπλων.

7. Γίνεται δὲ αὐτῷ πάλιν ἀρχὴ θορύβων Ἀντίοχος, ὁ καὶ Διόνυσος ἐπικληθεὶς, Δημητρίου μὲν ἀδελφὸς ὢν, τελευταῖος δὲ τῶν ἀπὸ Σελεύκου. Τοῦτον γὰρ δείσας, στρατεύεσθαι ἐπὶ τοὺς Ἄραβας ὡρμημένον, τὸ μὲν μεταξὺ τῆς Ἀντιπατρίδος παρωρείου καὶ τῶν Ἰόππης αἰγιαλῶν διαταφρεύει φά-

φάραγγι βαθείᾳ, πρὸ δὲ τῆς τάφρου τεῖχος ἤγειρεν ὑψηλὸν, καὶ ξυλίνους πύργους ἐνετεκτήνατο, τὰς εὐμαρεῖς ἐμβολὰς ἀποφράττων. Οὐ μὴν εἶρξαί γε τὸν Ἀντίοχον ἴσχυσεν· ἐμπρήσας γὰρ τοὺς πύργους καὶ τὴν τάφρον χώσας, διήλαυνε μετὰ τῆς δυνάμεως. Θέμενος δ' ἐν δευτέρῳ τὴν πρὸς τὸν κωλύσαντα ἄμυναν, εὐθὺς ἐπὶ τοὺς Ἄραβας ᾔει. Τῶν δὲ ὁ βασιλεὺς, ἀναχωρῶν εἰς τὰ χρησιμώτερα τῆς 62
χώρας πρὸς τὴν μάχην, ἔπειτα τὴν ἵππον ἐξαίφνης ἐπιστρέψας, μυρία δ' ἦν τὸν ἀριθμὸν, ἀτάκτοις ἐπιπίπτει τοῖς περὶ τὸν Ἀντίοχον. Καρτερᾶς δὲ μάχης γενομένης, ἕως μὲν περιῆν Ἀντίοχος, ἀντεῖχεν ἡ δύναμις αὐτοῦ, καίπερ ἀνέδην ὑπὸ τῶν Ἀράβων φονευόμενοι. Πεσόντος δὲ, καὶ γὰρ προεκινδύνευεν ἀεὶ τοῖς ἡττωμένοις παραβοηθῶν, ἐκκλίνουσι πάντες, καὶ τὸ μὲν πλεῖστον αὐτῶν, ἐπί τε τῆς παρατάξεως, καὶ ἐν τῇ φυγῇ διαφθείρεται, τοὺς δὲ λοιποὺς, καταφυγόντας εἰς Κανὰ κώμην, σπάνει τῶν ἐπιτηδείων ἀναλωθῆναι συνέβη πλὴν ὀλίγων ἅπαντας.

8. Ἐκ τούτου Δαμασκηνοὶ διὰ τὸ πρὸς Πτολεμαῖον τὸν Μενναίου μῖσος, Ἀρέταν ἐπάγονται, καὶ καθιστῶσι Κοίλης Συρίας βασιλέα. Στρατεύεται δὲ οὗτος ἐπὶ τὴν Ἰουδαίαν, καὶ μάχῃ νικήσας Ἀλέξανδρον, κατὰ συνθήκας ἀνεχώρησεν. Ἀλέξανδρος δὲ, Πέλλαν ἑλὼν, ἐπὶ Γέρασαν ᾔει πάλιν, τῶν Θεοδώρου κτημάτων γλιχόμενος. Καὶ τρισὶ τοὺς φρουροὺς περιβόλοις ἀποτειχίσας, διὰ μάχης τὸ χωρίον παραλαμβάνει. Καταστρέφεται δὲ καὶ Γαυλάνην, καὶ Σελεύκειαν, καὶ τὴν Ἀντιόχου φάραγγα καλουμένην· πρὸς οἷς Γάμαλα φρούριον καρτερὸν ἑλὼν, τὸν ἄρχοντα Δημήτριον ἐν αὐτῷ περιδύσας ἐκ πολλῶν ἐγκλημάτων, ἐπάνεισιν εἰς Ἰουδαίαν, τρία πληρώσας ἔτη τῆς στρατείας. Ἀσμένως δὲ ὑπὸ τοῦ ἔθνους προσεδέχθη διὰ τὴν εὐπραγίαν, καὶ λαμβάνει τὴν ἀνάπαυσιν τοῦ πολεμεῖν, ἀρχὴν νόσου.

Τεταρταίαις δὲ περιόδοις πυρετῶν ἐνοχλούμενος, ᾠήθη διακρούσασθαι τὴν νόσον, πάλιν ἁψάμενος πραγμάτων. Διὸ δὴ στρατείαις ἀκαίροις ἑαυτὸν ἐπιδιδοὺς, καὶ βιαζόμενος παρὰ δύναμιν τὸ σῶμα πρὸς τὰς ἐνεργείας, ἀπήλλαξε. Τελευτᾷ γοῦν ἐν μέσοις τοῖς θορύβοις στρεφόμενος, βασιλεύσας ἑπτὰ πρὸς τοῖς εἴκοσιν ἔτη.

CAP. V. 1. Καταλείπει δὲ τὴν βασιλείαν Ἀλεξάνδρᾳ τῇ γυναικὶ, πεπεισμένος ταύτῃ μάλιστα νῦν ὑπακοῦσαι τοὺς Ἰουδαίους, ἐπειδὴ τῆς ὠμότητος αὐτοῦ μακρὰν ἀποδέουσα, καὶ ταῖς παρανομίαις ἀνθισταμένη, τὸν δῆμον εἰς εὔνοιαν προσηγάγετο. Καὶ οὐ διήμαρτε τῆς ἐλπίδος· ἐκράτησε γὰρ τῆς ἀρχῆς τὸ γύναιον, διὰ δόξαν εὐσεβείας· ἠκρίβου γὰρ δὴ
63 τοῦ ἔθνους μάλιστα τὰ πάτρια, καὶ τοὺς πλημμελοῦντας εἰς τοὺς ἱεροὺς νόμους ἐξ ἀρχῆς ἀπεβάλλετο. Δύο δὲ αὐτῇ παίδων ὄντων ἐξ Ἀλεξάνδρου, τὸν μὲν πρεσβύτερον Ὑρκανὸν, διά τε τὴν ἡλικίαν ἀποδείκνυσιν ἀρχιερέα, καὶ ἄλλως ὄντα νωθέστερον, ἢ ὥστε ἐνοχλεῖν περὶ τῶν ὅλων· τὸν δὲ νεώτερον Ἀριστόβουλον, διὰ θερμότητα κατεῖχεν ἰδιώτην.

2. Παραφύονται δὲ αὐτῇ εἰς τὴν ἐξουσίαν Φαρισαῖοι, σύνταγμά τι Ἰουδαίων, δοκοῦν εὐσεβέστερον εἶναι τῶν ἄλλων, καὶ τοὺς νόμους ἀκριβέστερον ἀφηγεῖσθαι. Τούτοις περισσὸν δή τι προσεῖχεν ἡ Ἀλεξάνδρα, σεβομένη περὶ τὸ θεῖον. Οἱ δὲ τὴν ἁπλότητα τῆς ἀνθρώπου κατὰ μικρὸν ὑπιόντες, ἤδη καὶ διοικηταὶ τῶν ὅλων ἐγίνοντο, διώκειν τε καὶ κατάγειν οὓς ἐθέλοιεν, λύειν τε καὶ δεῖν. Καθόλου δὲ αἱ μὲν ἀπολαύσεις τῆς βασιλείας ἐκείνων ἦσαν, τὰ δὲ ἀναλώματα καὶ αἱ δυσχέρειαι τῆς Ἀλεξάνδρας. Δεινὴ δὲ ἦν τὰ μείζω διοικεῖν, δύναμίν τε ἀεὶ συγκροτοῦσα, διπλασίονα κατέστησε, καὶ ξενικὴν συνήγαγεν οὐκ ὀλίγην· ὡς μὴ μόνον κρατύνεσθαι τὸ οἰκεῖον ἔθνος, ἀλλὰ καὶ φοβερὰν τοῖς ἔξωθεν εἶναι

δυνάσταις. Ἐκράτει δὲ τῶν μὲν ἄλλων αὐτὴ, Φα-
ρισαῖοι δὲ αὐτῆς.

3. Διογένην γοῦν τινα τῶν ἐπισήμων, φίλον
Ἀλεξάνδρῳ γεγενημένον, κτείνουσιν αὐτοὶ, σύμβουλον
ἐγκαλοῦντες γεγονέναι περὶ τῶν ἀνασταυρωθέντων
ὑπὸ τοῦ βασιλέως ὀκτακοσίων. Ἐνῆγον δὲ τὴν Ἀλε-
ξάνδραν εἰς τὸ καὶ τοὺς ἄλλους διαχειρίσασθαι τῶν
παροξυνάντων ἐπ᾽ ἐκείνους τὸν Ἀλέξανδρον. Ἐνδι-
δούσης δ᾽ ὑπὸ δεισιδαιμονίας, ἀνῄρουν οὓς ἐθέλοιεν
δ᾽ αὐτοί. Προσφεύγουσι δὲ Ἀριστοβούλῳ τῶν κιν-
δυνευόντων οἱ προύχειν δοκοῦντες. Καὶ ἐκεῖνος
πείθει τὴν μητέρα, φείσασθαι μὲν διὰ τὸ ἀξίωμα
τῶν ἀνδρῶν, ἐκπέμψαι δὲ αὐτοὺς, εἰ μὴ καθαροὺς
ὑπείληφεν, ἐκ τῆς πόλεως. Οἱ μὲν οὖν, δοθείσης
ἀδείας, ἐσκεδάσθησαν ἀνὰ τὴν χώραν. Ἀλεξάνδρα
δὲ ἐκπέμψασα ἐπὶ Δαμασκὸν στρατιὰν, πρόφασις δ᾽
ἦν Πτολεμαῖος ἀεὶ θλίβων τὴν πόλιν, ταύτην μὲν
ὑπεδέξατο μηδὲν ἀξιόλογον ἐργασαμένην. Τιγράνην
δὲ τὸν Ἀρμενίων βασιλέα, προςκαθεζόμενον Πτο-
λεμαΐδι, καὶ πολιορκοῦντα Κλεοπάτραν, συνθήκαις
καὶ δώροις ὑπηγάγετο. Φθάνει δ᾽ ἐκεῖνος ἀπανα-
στὰς διὰ τὰς οἴκοι ταραχὰς, ἐμβεβληκότος εἰς τὴν
Ἀρμενίαν Λευκούλλου.

4. Καὶ ἐν τούτῳ νοσούσης Ἀλεξάνδρας, ὁ νεώ-
τερος τῶν παίδων Ἀριστόβουλος, τὸν καιρὸν ἁρπά-
σας, μετὰ τῶν οἰκετῶν, εἶχε δὲ πολλοὺς καὶ πάν-
τας εὔνους διὰ τὴν θερμότητα, κρατεῖ μὲν τῶν
ἐρυμάτων ἁπάντων. Τοῖς δ᾽ ἐκ τούτων χρήμασι
μισθοφόρους ἀθροίσας ἑαυτὸν ἀποδείκνυσι βασιλέα.
Πρὸς ταῦτα ὀδυρόμενον τὸν Ὑρκανὸν ἡ μήτηρ οἰ-
κτείρασα, τήν τε γυναῖκα καὶ τοὺς παῖδας Ἀριστο-
βούλου καθείργνυσιν εἰς Ἀντωνίαν, — φρούριον 64
δ᾽ ἦν τῷ βορείῳ κλίματι τοῦ ἱεροῦ προςκείμενον,
πάλαι μὲν, ὡς ἔφην, Βᾶρις ὀνομαζόμενον, αὖθις δὲ
ταύτης τυχὸν τῆς προςηγορίας, ἐπικρατήσαντος Ἀν-
τωνίου, καθάπερ ἀπό τε τοῦ Σεβαστοῦ καὶ Ἀγρίπ-

πα Σεβαστὴ καὶ Ἀγριππιὰς, πόλεις ἕτεραι, μετωνομάσθησαν. Πρὶν δ' ἐπεξελθεῖν Ἀλεξάνδραν τὸν Ἀριστόβουλον τῆς τοῦ ἀδελφοῦ καταλύσεως, τελευτᾷ, διοικήσασα τὴν ἀρχὴν ἔτεσιν ἐννέα.

CAP. VI. 1. Καὶ κληρονόμος μὲν ἦν τῶν ὅλων Ὑρκανὸς, ᾧ καὶ ζῶσα τὴν βασιλείαν ἐνεχείρισε, δυνάμει δὲ καὶ φρονήματι προεῖχεν ὁ Ἀριστόβουλος. Γενομένης δὲ αὐτοῖς περὶ τῶν ὅλων συμβολῆς περὶ Ἱεριχοῦντα, καταλιπόντες οἱ πλεῖστοι τὸν Ὑρκανὸν, μεταβαίνουσι πρὸς τὸν Ἀριστόβουλον. Ὁ δὲ μετὰ τῶν συμμεινάντων φθάνει συμφυγὼν ἐπὶ τὴν Ἀντωνίαν, καὶ κυριεύσας τῶν πρὸς σωτηρίαν ὁμήρων, ταῦτα δ' ἦν ἡ Ἀριστοβούλου γυνὴ μετὰ τῶν τέκνων, ἀμέλει πρὶν ἀνηκέστου πάθους, διελύθησαν, ὥστε βασιλεύειν μὲν Ἀριστόβουλον, Ὑρκανὸν δ' ἐκστάντα τῆς ἄλλης ἀπολαύειν τιμῆς, ὥσπερ ἀδελφὸν βασιλέως. Ἐπὶ τούτοις διαλλαγέντες ἐν τῷ ἱερῷ, καὶ τοῦ λαοῦ περιεστῶτος φιλοφρόνως ἀλλήλους ἀσπασάμενοι, διήμειψαν τὰς οἰκίας· Ἀριστόβουλος μὲν γὰρ εἰς τὰ βασίλεια, Ὑρκανὸς δ' ἀνεχώρησεν εἰς τὴν Ἀριστοβούλου οἰκίαν.

2. Δέος δὲ τοῖς τε ἄλλοις τῶν Ἀριστοβούλου διαφόρων ἐμπίπτει παρ' ἐλπίδα κρατήσαντος, καὶ μάλιστα Ἀντιπάτρῳ πάλαι διαμισουμένῳ. Γένος δ' ἦν Ἰδουμαῖος, προγόνων τε ἕνεκα καὶ πλούτου καὶ τῆς ἄλλης ἰσχύος πρωτεύων τοῦ ἔθνους. Ὁ αὐτὸς δὲ ἅμα καὶ τὸν Ὑρκανὸν, Ἀρέτᾳ προσφυγόντα τῷ βασιλεῖ τῆς Ἀραβίας, ἀνακτήσασθαι τὴν βασιλείαν ἔπειθε, καὶ τὸν Ἀρέταν δέξασθαί τε τὸν Ὑρκανὸν, καὶ καταγαγεῖν ἐπὶ τὴν ἀρχήν. Πολλὰ μὲν τὸν Ἀριστόβουλον εἰς τὸ ἦθος διαβάλλων, πολλὰ δ' ἐπαινῶν τὸν Ὑρκανὸν, παρῄνει δέξασθαι, καὶ ὡς πρέπον εἴη τὸν οὕτω λαμπρᾶς προεστῶτα βασιλείας, ὑπερέχειν χεῖρα τοῖς ἀδικουμένοις, ἀδικεῖσθαι δὲ
65 Ὑρκανὸν, στερηθέντα τῆς κατὰ τὸ πρεσβεῖον αὐτῷ

προςηκούσης ἀρχῆς. Προκατασκευάσας δὲ ἀμφοτέρους, νύκτωρ ἀναλαβὼν Ὑρκανὸν τῆς πόλεως ἀποδιδράσκει, καὶ συντόνῳ φυγῇ χρώμενος εἰς τὴν καλουμένην Πέτραν διασώζεται· βασίλειον αὕτη τῆς Ἀραβίας ἐστίν. Ἔνθα τῷ Ἀρέτᾳ τὸν Ὑρκανὸν ἐγχειρίσας, καὶ πολλὰ μὲν καθομιλήσας, πολλοῖς δὲ δώροις ὑπελθὼν, δοῦναι δύναμιν αὐτῷ πείθει τὴν κατάξουσαν αὐτόν. Ἦν δὲ αὕτη πεζῶν τε καὶ ἱππέων πέντε μυριάδες, πρὸς ἣν οὐκ ἀντέσχεν Ἀριστόβουλος, ἀλλ' ἐν τῇ πρώτῃ συμβολῇ λειφθεὶς, εἰς Ἱεροσόλυμα συνελαύνεται. Καὶ ἂν ἔφθη κατὰ κράτος ληφθεὶς, εἰ μὴ Σκαῦρος ὁ Ῥωμαίων στρατηγὸς, ἐπαναστὰς αὐτῶν τοῖς καιροῖς, ἔλυσε τὴν πολιορκίαν· ὃς ἐπέμφθη μὲν εἰς Συρίαν ἀπὸ Ἀρμενίας ὑπὸ Πομπηΐου Μάγνου, πολεμοῦντος πρὸς Τιγράνην. Παραγενόμενος δὲ εἰς Δαμασκὸν, ἑαλωκυῖαν προςφάτως ὑπὸ Μετέλλου καὶ Λολλίου, καὶ τούτους μεταστήσας, ἐπεὶ καὶ τὰ κατὰ τὴν Ἰουδαίαν ἐπύθετο, καθάπερ ἐφ' ἕρμαιον ἠπείχθη.

3. Παρελθόντος γοῦν εἰς τὴν χώραν, πρέσβεις εὐθέως ἧκον παρὰ τῶν ἀδελφῶν ἑκατέρων, ἑκάστου δεομένου βοηθεῖν αὐτῷ. Γίνεται δ' ἐπίπροσθεν τοῦ δικαίου τὰ παρὰ Ἀριστοβούλου τριακόσια τάλαντα. Τοσοῦτον γὰρ λαβὼν Σκαῦρος ἐπικηρυκεύεται πρός τε Ὑρκανὸν καὶ τοὺς Ἄραβας, ἀπειλῶν Ῥωμαίους καὶ Πομπήϊον, εἰ μὴ λύσειαν τὴν πολιορκίαν. Ἀνεχώρησε δ' ἐκ τῆς Ἰουδαίας εἰς Φιλαδέλφειαν Ἀρέτας καταπλαγεὶς, καὶ πάλιν εἰς Δαμασκὸν Σκαῦρος. Ἀριστοβούλῳ δ' οὐκ ἀπέχρησε τὸ μὴ ἁλωθῆναι, πᾶσαν δὲ τὴν δύναμιν ἐπισυλλέξας, εἵπετο τοῖς πολεμίοις, καὶ περὶ τὸν καλούμενον Παπυρῶνα συμβαλὼν αὐτοῖς, ὑπὲρ ἑξακιςχιλίους κτείνει, μεθ' ὧν καὶ τὸν ἀδελφὸν τὸν Ἀντιπάτρου, Φαλίωνα.

4. Ὑρκανὸς δὲ καὶ Ἀντίπατρος, τῶν Ἀράβων ἀφαιρεθέντες, μετέφερον ἐπὶ τοὺς ἐναντίους τὴν ἐλπίδα. Καὶ ἐπειδὴ Πομπήϊος ἐπιὼν τὴν Συρίαν

εἰς Δαμασκὸν ἧκεν, ἐπ᾽ αὐτὸν καταφεύγουσι. Καὶ δίχα δώρων, ταῖς καὶ πρὸς Ἀρέταν δικαιολογίαις χρώμενοι κατηντιβόλουν, μισῆσαι μὲν τὴν Ἀριστοβούλου βίαν, κατάγειν δ᾽ ἐπὶ τὴν βασιλείαν τὸν καὶ τῷ τρόπῳ καὶ καθ᾽ ἡλικίαν προςήκοντα. Οὐ μὴν οὐδ᾽ ὁ Ἀριστόβουλος ὑστέρει, πεποιθὼς τῇ Σκαύρου δωροδοκίᾳ. Παρῆν τε καὶ αὐτὸς, ὡς οἷόν τε ἦν βασιλικώτατα κεκοσμηκὼς ἑαυτόν. Ἀδοξήσας δὲ πρὸς τὰς θεραπείας, καὶ μὴ φέρων δουλεύειν ταῖς χρείαις ταπεινότερον τοῦ σχήματος, ἀπὸ Διοςπόλεως χωρίζεται.

66 5. Πρὸς ταῦτ᾽ ἀγανακτήσας Πομπήϊος, πολλὰ καὶ τῶν περὶ Ὑρκανὸν ἱκετευόντων, ὥρμησεν ἐπ᾽ Ἀριστόβουλον, ἀναλαβὼν τήν τε Ῥωμαϊκὴν δύναμιν, καὶ πολλοὺς ἐκ τῆς Συρίας συμμάχους. Ἐπεὶ δὲ παρελαύνων Πέλλαν καὶ Σκυθόπολιν ἧκεν εἰς Κορέας, ὅθεν ἡ Ἰουδαίων ἄρχεται χώρα κατὰ τὴν μεσόγειον ἀνιόντων, ἀκούσας συμπεφευγέναι τὸν Ἀριστόβουλον εἰς Ἀλεξάνδρειον, — τοῦτο δέ ἐστι φρούριον τῶν πάνυ φιλοτίμως ἐξησκημένων, ὑπὲρ ὄρους ὑψηλοῦ κείμενον, — πέμψας καταβαίνειν αὐτὸν ἐκέλευε. Τῷ δὲ ἦν μὲν ὁρμὴ, καλουμένῳ δεσποτικώτερον, διακινδυνεύειν μᾶλλον ἢ ὑπακοῦσαι, καθεώρα δὲ τὸ πλῆθος ὀῤῥωδοῦν, καὶ παρῄνουν οἱ φίλοι σκέπτεσθαι τὴν Ῥωμαίων ἰσχὺν, οὖσαν ἀνυπόστατον. Οἷς πεισθεὶς κάτεισι πρὸς Πομπήϊον, καὶ πολλὰ περὶ τοῦ δικαίως ἄρχειν ἀπολογηθεὶς, ὑπέστρεψε πρὸς τὸ ἔρυμα. Πάλιν τε τοῦ ἀδελφοῦ προκαλουμένου καταβὰς, καὶ διαλεχθεὶς περὶ τῶν δικαίων, ἄπεισι μὴ κωλύοντος τοῦ Πομπηΐου. Μέσος δ᾽ ἦν ἐλπίδος καὶ δέους, καὶ κατῄει μὲν, ὡς δυςωπήσων Πομπήϊον πάντ᾽ ἐπιτρέπειν αὐτῷ, πάλιν δ᾽ ἀνέβαινεν εἰς τὴν ἄκραν, ὡς μὴ προκαταλύειν δόξειν ἑαυτόν. Ἐπεὶ μέντοι Πομπήϊος ἐξίστασθαί τε τῶν φρουρίων ἐκέλευσεν αὐτῷ, καὶ, παράγγελμα τῶν φρουράρχων ἐχόντων μόναις πειθαρχεῖν ταῖς

αὐτογράφοις ἐπιστολαῖς, ἠνάγκαζεν αὐτὸν, ἑκάστοις γράφειν ἐκχωρεῖν, ποιεῖ μὲν τὸ προςταχθὲν, ἀγανακτήσας δὲ ἀνεχώρησεν εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ παρεσκευάζετο πολεμεῖν πρὸς Πομπήϊον.

6. Ὁ δὲ — οὐ γὰρ ἐδίδου χρόνον ταῖς παρασκευαῖς — εὐθέως εἵπετο, καὶ προςεπέῤῥωσε τὴν ὁρμὴν ὁ Μιθραδάτου θάνατος ἀγγελθεὶς αὐτῷ περὶ Ἱεριχοῦντα, ἔνθα τὸ τῆς Ἰουδαίας πιότατον φοινικά τε πάμπολυν καὶ βάλσαμον τρέφει. Τοῦτο λίθοις ὀξέσιν ἐπιτέμνοντες τὰ πρέμνα, συλλέγουσι κατὰ τὰς τομὰς ἐκ δακρύων. Καὶ στρατοπεδευσάμενος ἐν τῷ χωρίῳ μίαν ἑσπέραν, ἕωθεν ἠπείγετο πρὸς τὰ Ἱε- 67
ροσόλυμα. Καταπλαγεὶς δὲ τὴν ἔφοδον Ἀριστόβουλος, ἱκέτης ὑπήντα, χρημάτων τε ὑποσχέσει, καὶ τῷ μετὰ τῆς πόλεως ἐπιτρέπειν καὶ ἑαυτὸν, χαλεπαίνοντα καταστέλλει τὸν Πομπήϊον. Οὐ μήν τι τῶν ὡμολογημένων ἔπραττε· τὸν γὰρ ἐπὶ τῇ κομιδῇ τῶν χρημάτων πεμφθέντα Γαβίνιον οἱ τὰ Ἀριστοβούλου φρονοῦντες οὐδ' ἐν τῇ πόλει δέχονται.

CAP. VII. 1. Πρὸς ταῦτα ἀγανακτήσας Πομπήϊος Ἀριστόβουλον μὲν ἐφρούρει, πρὸς δὲ τὴν πόλιν ἐλθὼν περιεσκόπει, ποῖ προςβάλλῃ, τήν τε ὀχυρότητα τῶν τειχῶν δυςμεταχείριστον ὁρῶν, καὶ τὴν πρὸ τούτων φάραγγα φοβερὰν, τό τε ἱερὸν ἐντὸς τῆς φάραγγος ὀχυρώτατα τετειχισμένον, ὥςτε, τοῦ ἄστεος ἁλισκομένου, δευτέραν εἶναι καταφυγὴν τοῦτο τοῖς πολεμίοις.

2. Διαπορεῦντος δ' ἐπὶ πολὺν χρόνον, στάσις τοῖς ἔνδον ἐμπίπτει, τῶν μὲν Ἀριστοβούλου πολεμεῖν ἀξιούντων καὶ ῥύεσθαι τὸν βασιλέα, τῶν δὲ τὰ Ὑρκανοῦ φρονούντων ἀνοίγειν Πομπηΐῳ τὰς πύλας. Πολλοὺς δὲ τούτους ἐποίει τὸ δέος, ἀφορῶντας εἰς τὴν τῶν Ῥωμαίων εὐταξίαν. Ἡττώμενον δὲ τὸ Ἀριστοβούλου μέρος εἰς τὸ ἱερὸν ἀνεχώρει, καὶ τὴν συνάπτουσαν ἀπ' αὐτοῦ τῇ πόλει γέφυραν ἀποκό-

ψαντες ἀντισχεῖν εἰς ἔσχατον παρεσκευάζοντο. Τῶν δὲ ἑτέρων δεχομένων Ῥωμαίους τῇ πόλει, καὶ τὰ βασίλεια παραδιδόντων, ἐπὶ μὲν ταῦτα Πομπήϊος ἕνα τῶν ὑφ' ἑαυτὸν στρατηγῶν Πείσωνα εἰςπέμπει μετὰ στρατιᾶς· ὃς διαλαβὼν φρουρᾷ τὴν πόλιν, ἐπειδὴ τῶν εἰς τὸ ἱερὸν καταπεφευγότων οὐδένα λόγοις ἔπειθε συμβῆναι, τὰ πέριξ εἰς προςβολὰς ηὐτρέπιζεν, ἔχων τοὺς περὶ τὸν Ὑρκανὸν εἴς τε τὰς ἐπινοίας καὶ τὰς ὑπηρεσίας προθύμους.

3. Αὐτὸς δὲ κατὰ τὸ προςάρκτιον κλίμα τήν τε τάφρον ἔχου καὶ τὴν φάραγγα πᾶσαν, ὕλην συμφορούσης τῆς δυνάμεως. Χαλεπὸν δ' ἦν τὸ ἀναπληροῦν διὰ βάθους ἄπειρον, καὶ τῶν Ἰουδαίων πάντα τρόπον εἰργόντων ἄνωθεν. Καὶ ἂν ἀτέλεστος ἔμεινε τοῖς Ῥωμαίοις ὁ πόνος, εἰ μὴ τὰς ἑβδομάδας ἐπιτηρῶν ὁ Πομπήϊος, ἐν αἷς παντὸς ἔργου διὰ τὴν θρησκείαν χεῖρας ἀπίσχουσιν Ἰουδαῖοι, τὸ χῶμα ὕψου, τῆς κατὰ χεῖρα συμβολῆς εἴργων τοὺς στρατιώτας. Ὑπὲρ μόνου γὰρ τοῦ σώματος ἀμύνονται καὶ τοῖς σάββασιν. Ἤδη δ' ἀναπεπληρωμένης τῆς φάραγγος, πύργους ὑψηλοὺς ἐπιστήσας τῷ χώματι,
68 καὶ προςαγαγὼν τὰς ἐκ Τύρου κομισθείσας μηχανὰς, ἐπειρᾶτο τοῦ τείχους. Ἀνέστελλον δὲ οἱ πετροβόλοι τοὺς καθύπερθε κωλύοντας. Ἀντεῖχον δ' ἐπὶ πλεῖστον οἱ κατὰ τοῦτο τὸ μέρος πύργοι, μεγέθει τε καὶ κάλλει διαφέροντες.

4. Ἔνθα δὴ, τῶν Ῥωμαίων πολλὰ κακοπαθούντων, ὁ Πομπήϊος τά τε ἄλλα τῆς καρτερίας τοὺς Ἰουδαίους ἀπεθαύμασε, καὶ μάλιστα τοῦ μηδὲν παραλῦσαι τῆς θρησκείας ἐν μέσοις τοῖς βέλεσιν ἀνειλουμένους. Ὥςπερ γὰρ εἰρήνης βαθείας κατεχούσης τὴν πόλιν, αἵ τε θυσίαι καθ' ἡμέραν, καὶ οἱ ἐναγισμοὶ, καὶ πᾶσα θεραπεία κατὰ τὸ ἀκριβὲς ἐξετελεῖτο τῷ θεῷ. Καὶ οὐδὲ κατ' αὐτὴν τὴν ἅλωσιν, περὶ τῷ βωμῷ φονευόμενοι καθ' ἡμέραν, τῶν νομίμων εἰς τὴν θρησκείαν ἀπέστησαν. Τρίτῳ γὰρ μηνὶ

τῆς πολιορκίας, μόλις ἕνα τῶν πύργων καταῤῥίψαντες εἰςέπιπτον εἰς τὸ ἱερόν. Ὁ δὲ πρῶτος ὑπερβῆναι τολμήσας τὸ τεῖχος, Σύλλα παῖς ἦν Φαῦστος Κορνήλιος, καὶ μετ' αὐτὸν ἑκατοντάρχαι δύο, Φούριος καὶ Φάβιος. Εἵπετο δὲ ἑκάστῳ τὸ ἴδιον στῖφος, καὶ περισχόντες πανταχῇ τοὺς Ἰουδαίους, ἔκτεινον, οὓς μὲν τῷ ναῷ προςφεύγοντας, οὓς δὲ ἀμυνομένους πρὸς ὀλίγον.

5. Ἔνθα πολλοὶ τῶν ἱερέων ξιφήρεις τοὺς πολεμίους ἐπιόντας βλέποντες, ἀθορύβως ἐπὶ τῆς θρησκείας ἔμειναν. Σπένδοντες δὲ καὶ θυμιῶντες ἀπεσφάττοντο, καὶ τῆς πρὸς τὸ θεῖον θεραπείας ἐν δευτέρῳ τὴν σωτηρίαν τιθέμενοι. Πλεῖστοι δὲ ὑπὸ τῶν ὁμοφύλων ἀντιστασιαστῶν ἀνῃροῦντο, καὶ κατὰ τῶν κρημνῶν ἐῤῥίπτουν ἑαυτοὺς ἄπειροι. Καὶ τὰ περὶ τὸ τεῖχος δ' ἔνιοι, μανιῶντες ἐν ταῖς ἀμηχανίαις, ὑπέπρησαν καὶ συγκαταφλέγονται. Ἰουδαίων μὲν οὖν ἀνῃρέθησαν μύριοι καὶ δισχίλιοι. Ῥωμαίων δὲ ὀλίγοι μὲν πάνυ νεκροί, τραυματίαι δ' ἐγένοντο πλείους.

6. Οὐδὲν δὲ οὕτως ἐν ταῖς τότε συμφοραῖς καθήψατο τοῦ ἔθνους, ὡς τὸ τέως ἀόρατον ἅγιον ἐκκαλυφθὲν ὑπὸ τῶν ἀλλοφύλων. Παρελθὼν γοῦν σὺν τοῖς περὶ αὐτὸν ὁ Πομπήϊος εἰς τὸν ναὸν, ἔνθα μόνῳ θεμιτὸν ἦν παριέναι τῷ ἀρχιερεῖ, τὰ ἔνδον ἐθεάσατο, λυχνίαν τε καὶ λύχνους, καὶ τράπεζαν, καὶ σπονδεῖα, καὶ θυμιατήρια, ὁλόχρυσα πάντα, πλῆθός τε ἀρωμάτων σεσωρευμένων, καὶ τῶν ἱερῶν χρημάτων εἰς τάλαντα δισχίλια. Οὔτε δὲ τούτων, οὔτ' ἄλλου τινὸς τῶν ἱερῶν κειμηλίων ἥψατο· ἀλλὰ καὶ μετὰ μίαν τῆς ἁλώσεως ἡμέραν, καθᾶραί τε τὸ ἱερὸν τοῖς νεωκόροις ἐκέλευσε, καὶ τὰς ἐξ ἔθους ἐπιτελεῖν θυσίας, αὖθις δὲ ἀποδείξας τὸν Ὑρκανὸν ἀρχιερέα, τά τε ἄλλα προθυμότατον ἑαυτὸν ἐν τῇ πολιορκίᾳ παρασχόντα, καὶ διότι τὸ κατὰ τὴν χώραν πλῆθος ἀπείρησεν Ἀριστοβούλῳ συμπολεμεῖν

ὡρμημένον. Ἐκ τούτου, ὅπερ ἦν προςῆκον ἀγαθῷ
στρατηγῷ, τὸν λαὸν εὐνοίᾳ πλέον ἢ δέει, προς-
69 ηγάγετο. Ἐν δὲ τοῖς αἰχμαλώτοις ἐλήφθη καὶ ὁ
Ἀριστοβούλου πενθερὸς, ὁ δ' αὐτὸς καὶ θεῖος αὐτῷ.
Καὶ τοὺς μὲν αἰτιωτάτους τοῦ πολέμου πελέκει κο-
λάζει. Φαῦστον δὲ καὶ τοὺς μετ' αὐτοῦ γενναίως
ἀγωνισαμένους, λαμπροῖς ἀριστείοις δωρησάμενος,
τῇ τε χώρᾳ καὶ τοῖς Ἱεροσολύμοις ἐπιτάττει φόρον.

7. Ἀφελόμενος δὲ τοῦ ἔθνους καὶ τὰς ἐν Κοίλῃ Συρίᾳ πόλεις, ὅσας εἷλεν, ὑπέταξε τῷ κατ' ἐκεῖνον καιροῦ Ῥωμαίων στρατηγῷ κατατεταγμένῳ, καὶ τοῖς ἰδίοις ὅροις περιέκλεισεν. Ἀνακτίζει δὲ καὶ Γάδαρα, ὑπὸ Ἰουδαίων κατεστραμμένην, Γαδαρίτῃ τινὶ τῶν ἰδίων ἀπελευθέρων Δημητρίῳ χαριζόμενος. Ἠλευθέρωσε δ' ἀπ' αὐτῶν καὶ τὰς ἐν τῇ μεσογείῳ πόλεις, ὅσας μὴ φθάσαντες κατέσκαψαν, Ἵππον, Σκυθόπολίν τε καὶ Πέλλαν, καὶ Σαμάρειαν, καὶ Μάρισσαν, πρὸς αἷς Ἄζωτον, καὶ Ἰάμνειαν, καὶ Ἀρέθουσαν, ὁμοίως δὲ καὶ τὰς παραλίους, Γάζαν, Ἰόππην, Δῶρα, καὶ τὴν πάλαι μὲν Στράτωνος πύργον καλουμένην, ὕστερον δὲ μετακτισθεῖσαν ὑφ' Ἡρώδου βασιλέως λαμπροτάτοις κατασκευάσμασι, καὶ μετονομασθεῖσαν Καισάρειαν. Ἃς πάσας τοῖς γνησίοις ἀποδοὺς πολίταις, κατέταξεν εἰς τὴν Συριακὴν ἐπαρχίαν. Παραδοὺς δὲ ταύτην τε καὶ τὴν Ἰουδαίαν καὶ τὰ μέχρις Αἰγύπτου καὶ Εὐφράτου Σκαύρῳ διέπειν, καὶ δύο τῶν ταγμάτων, αὐτὸς διὰ Κιλικίας εἰς Ῥώμην ἠπείγετο, τὸν Ἀριστόβουλον ἄγων μετὰ τῆς γενεᾶς αἰχμάλωτον. Δύο δὲ ἦσαν αὐτῷ θυγατέρες, καὶ δύο υἱεῖς, ὧν ὁ ἕτερος μὲν, Ἀλέξανδρος, ἐκ τῆς ὁδοῦ διαδιδράσκει, σὺν δὲ ταῖς ἀδελφαῖς ὁ νεώτερος Ἀντίγονος εἰς Ῥώμην ἐκομίζετο.

CAP. VIII. 1. Καὶ ἐν τούτῳ Σκαῦρος, εἰς τὴν Ἀραβίαν ἐμβαλὼν, τῆς μὲν Πέτρας εἴργετο ταῖς δυσχωρίαις. Ἐπόρθει δὲ τὰ περὶ Πέλλαν, καὶ ἐν

τούτῳ κακοπαθῶν· ἐλίμωττε γὰρ ἡ στρατιά, καὶ πρὸς τοῦτο Ὑρκανὸς ἐπεβοήθει δι' Ἀντιπάτρου τὰ ἐπιτήδεια πέμπων, ὃν καὶ καθίησι Σκαῦρος ὄντα συνήθη πρὸς Ἀρέταν, ὅπως ἐπὶ χρήμασι διαλύσαιτο τὸν πόλεμον. Πείθεται δὲ ὁ Ἄραψ τριακόσια δοῦναι τάλαντα, καὶ ἐπὶ τούτοις Σκαῦρος ἐξῆγε τῆς Ἀραβίας δύναμιν.

2. Ὁ δὲ ἀποδρὰς τῶν Ἀριστοβούλου παίδων 70
Πομπήϊον Ἀλέξανδρος, χρόνῳ συναγαγὼν χεῖρα συχνὴν, βαρὺς ἦν Ὑρκανῷ καὶ τὴν Ἰουδαίαν κατέτρεχεν. Ἐδόκει δ' ἂν ταχέως καταλῦσαι αὐτὸν, ὅς γε ἤδη καὶ τὸ καταῤῥιφθὲν ὑπὸ Πομπηΐου τεῖχος ἐν Ἱεροσολύμοις ἀνακτίζειν ἐθάῤῥει προςελθὼν, εἰ μὴ Γαβίνιος εἰς Συρίαν πεμφθεὶς Σκαύρῳ διάδοχος, τά τε ἄλλα γενναῖον ἀπέδειξεν ἑαυτὸν ἐν πολλοῖς, καὶ ἐπ' Ἀλέξανδρον ὥρμησεν. Ὁ δὲ δείσας πρὸς τὴν ἔφοδον δύναμίν τε πλείω συνέλεγεν, ὡς γενέσθαι μυρίους μὲν ὁπλίτας, χιλίους δὲ καὶ πεντακοσίους ἱππεῖς. Καὶ τὰ ἐπιτήδεια τῶν χωρίων ἐτείχιζεν, Ἀλεξάνδρειόν τε καὶ Ὑρκάνιον, καὶ Μαχαιροῦντα πρὸς τοῖς Ἀραβίοις ὄρεσι.

3. Γαβίνιος δὲ μετὰ μέρους τῆς στρατιᾶς Μάρκον Ἀντώνιον προπέμψας, αὐτὸς εἵπετο τὴν ὅλην ἔχων δύναμιν. Οἱ δὲ περὶ Ἀντίπατρον ἐπίλεκτοι, καὶ τὸ ἄλλο τάγμα τῶν Ἰουδαίων, ὧν Μάλιχος ἦρχε καὶ Πειθόλαος, συμμίξαντες τοῖς περὶ Μάρκον Ἀντώνιον ἡγεμόσιν, ὑπήντων Ἀλεξάνδρῳ. Καὶ μετ' οὐ πολὺ παρῆν ἅμα τῇ φάλαγγι Γαβίνιος. Ἑνουμένην δὲ τὴν τῶν πολεμίων δύναμιν οὐχ ὑπομείνας Ἀλέξανδρος ἀνεχώρει, καὶ πλησίον ἤδη Ἱεροσολύμων γενόμενος ἀναγκάζεται συμβαλεῖν, καὶ κατὰ τὴν μάχην ἑξακιςχιλίους ἀποβαλὼν, ὧν τριςχίλιοι μὲν ἔπεσον, τριςχίλιοι δὲ ἐζωγρήθησαν, φεύγει σὺν τοῖς καταλειφθεῖσιν εἰς Ἀλεξάνδρειον.

4. Γαβίνιος δὲ πρὸς τὸ Ἀλεξάνδρειον ἐλθὼν,

ἐπειδὴ πολλοὺς εὗρεν ἐστρατοπεδευμένους, ἐπειρᾶτο
συγγνώμης ὑποσχέσει περὶ τῶν ἡμαρτημένων, πρὸ
μάχης αὐτοὺς προςαγαγέσθαι. Μηδὲν δὲ μέτριον
φρονούντων ἀποκτείνας πολλοὺς, τοὺς λοιποὺς κατ-
έκλεισεν εἰς τὸ ἔρυμα. Κατὰ ταύτην ἀριστεύει τὴν
μάχην ὁ ἡγεμὼν Μάρκος Ἀντώνιος, πανταχοῦ μὲν
γενναῖος φανεὶς, οὐδαμοῦ δὲ οὕτως. Γαβίνιος δὲ,
τοὺς ἐξαιρήσοντας τὸ φρούριον καταλιπὼν, αὐτὸς
ἀπῄει, τὰς μὲν ἀπορθήτους πόλεις καθιστάμενος,
τὰς δὲ κατεστραμμένας ἀνακτίζων. Συνεπολίσθη-
σαν γοῦν, τούτου κελεύσαντος, Σκυθόπολίς τε καὶ
Σαμάρεια, καὶ Ἀνθηδὼν, καὶ Ἀπολλωνία, καὶ Ἰάμ-
νεια, καὶ Ῥαφία, καὶ Μάρισσα, καὶ Ἀδώρεος, καὶ
Γάμαλα, καὶ Ἄζωτος, ἄλλαι τε πολλαὶ, τῶν οἰκητό-
ρων ἀσμένως ἐφ᾽ ἑκάστην συνθεόντων.

5. Μετὰ δὲ τὴν τούτων ἐπιμέλειαν ἐπανελθὼν
πρὸς τὸ Ἀλεξάνδρειον, ἐπέῤῥωσε τὴν πολιορκίαν,
ὥςτε Ἀλέξανδρος, ἀπογνοὺς περὶ τῶν ὅλων, ἐπι-
κηρυκεύεται πρὸς αὐτὸν, συγγνωσθῆναί τε τῶν ἡμαρ-
71 τημένων δεόμενος, καὶ τὰ συμμένοντα φρούρια πα-
ραδιδοὺς Ὑρκάνιον καὶ Μαχαιροῦντα. Αὖθις δὲ
καὶ τὸ Ἀλεξάνδρειον ἐνεχείρισεν· ἃ πάντα Γαβίνιος,
ἐναγούσης τῆς Ἀλεξάνδρου μητρὸς, κατέσκαψεν, ὡς
μὴ πάλιν ὁρμητήριον γένοιτο δευτέρου πολέμου·
παρῆν δὲ μειλισσομένη τὸν Γαβίνιον κατὰ δέος τῶν
ἐπὶ τῆς Ῥώμης αἰχμαλώτων, τοῦ τε ἀνδρὸς καὶ τῶν
ἄλλων τέκνων. Μετὰ δὲ ταῦτα εἰς Ἱεροσόλυμα Γα-
βίνιος Ὑρκανὸν καταγαγὼν, καὶ τὴν τοῦ ἱεροῦ πα-
ραδοὺς κηδεμονίαν αὐτῷ, καθίστησι τὴν ἄλλην πο-
λιτείαν ἐπὶ προστασίᾳ τῶν ἀρίστων. Διεῖλε δὲ πᾶν
τὸ ἔθνος εἰς πέντε συνόδους, τὸ μὲν Ἱεροσολύμοις
προςτάξας, τὸ δὲ Γαδάροις, οἱ δ᾽ ἵνα συντελῶσιν
εἰς Ἀμαθοῦντα, τὸ δὲ τέταρτον εἰς Ἱεριχοῦντα κε-
κλήρωτο, καὶ τῷ πέμπτῳ Σέπφωρις ἀπεδείχθη πό-
λις τῆς Γαλιλαίας. Ἀσμένως δὲ τῆς ἐξ ἑνὸς ἐπι-

κρατείας ἐλευθερωθέντες, τὸ λοιπὸν ἀριστοκρατείᾳ διῳκοῦντο.

6. Μετ' οὐ πολύ γε μὴν αὐτοῖς ἀρχὴ γίνεται θορύβων Ἀριστόβουλος, ἀποδρὰς ἐκ Ῥώμης, ὃς αὖθις πολλοὺς Ἰουδαίων ἐπισυνίστη, τοὺς μὲν ἐπιθυμοῦντας μεταβολῆς, τοὺς δ' ἀγαπῶντας αὐτὸν πάλαι. Καὶ τὸ μὲν πρῶτον καταλαβόμενος τὸ Ἀλεξάνδρειον, ἀνατειχίζειν ἐπειρᾶτο. Ὡς δὲ Γαβίνιος ὑπὸ Σισέννᾳ καὶ Ἀντωνίῳ καὶ Σερουϊλίῳ στρατιὰν ἔπεμψεν ἐπ' αὐτὸν, γνοὺς ἀνεχώρει ἐπὶ Μαχαιροῦντος. Καὶ τὸν μὲν ἄχρηστον ὄχλον ἀπεφορτίσατο, μόνους δ' ἐπήγετο τοὺς ὡπλισμένους, ὄντας εἰς ὀκτακισχιλίους, ἐν οἷς καὶ Πειθόλαος ἦν ὁ ἐξ Ἱεροσολύμων ὑποστράτηγος αὐτομολήσας μετὰ χιλίων. Ῥωμαῖοι δ' ἐπηκολούθουν, καὶ γενομένης συμβολῆς, μέχρι πολλοῦ μὲν οἱ περὶ τὸν Ἀριστόβουλον διεκαρτέρουν γενναίως ἀγωνιζόμενοι. Τέλος δὲ βιασθέντες ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων, πίπτουσι μὲν πεντακισχίλιοι, περὶ δὲ δισχιλίους ἀνέφυγον εἴς τινα λόφον, οἱ δὲ λοιποὶ χίλιοι σὺν Ἀριστοβούλῳ, διακόψαντες τὴν φάλαγγα τῶν Ῥωμαίων, εἰς Μαχαιροῦντα συνελαύνονται. Ἔνθα δὲ τὴν πρώτην ἑσπέραν ὁ βασιλεὺς τοῖς ἐρειπίοις ἐναυλισάμενος, ἐν ἐλπίσι μὲν ἦν ἄλλην συναθροίσειν δύναμιν, ἀνοχὴν τοῦ πολέμου διδόντος, καὶ τὸ φρούριον κακῶς ὠχύρου. Προσπεσόντων δὲ Ῥωμαίων, ἐπὶ δύο ἡμέρας ἀντισχὼν ὑπὲρ δύναμιν, ἁλίσκεται, καὶ μετ' Ἀντιγόνου τοῦ παιδὸς, ὃς ἀπὸ Ῥώμης αὐτῷ συναπέδρα, δεσμώτης ἐπὶ Γαβίνιον ἀνήχθη, καὶ ἀπὸ Γαβινίου πάλιν εἰς Ῥώμην. Τοῦτον μὲν οὖν ἡ σύγκλητος εἶρξε, τὰ τέκνα δὲ αὐτοῦ διῆγεν εἰς Ἰουδαίαν, Γαβινίου δι' ἐπιστολῶν δηλώσαντος, τῇ Ἀριστοβούλου γυναικὶ τοῦτο ἀντὶ τῆς παραδόσεως τῶν ἐρυμάτων ὡμολογηκέναι.

7. Γαβινίῳ δ' ἐπὶ Πάρθους ὡρμημένῳ στρατεύειν γίνεται Πτολεμαῖος ἐμπόδιον, ὃν ὑποστρέψας

ἀπ' Εὐφράτου κατῆγεν εἰς Αἴγυπτον, ἐπιτηδείοις εἰς ἅπαντα χρώμενος κατὰ τὴν στρατιὰν Ὑρκανῷ καὶ Ἀντιπάτρῳ. Καὶ γὰρ χρήματα, καὶ ὅπλα, καὶ σῖ-
72 τον, καὶ ἐπικούρους ὁ Ἀντίπατρος προςῆγε. Καὶ τοὺς ταύτῃ Ἰουδαίους, φρουροῦντας τὰς κατὰ τὸ Πηλούσιον ἐμβολὰς, παρεᾶσαι Γαβίνιον ἔπεισε. Τῆς δ' ἄλλης Συρίας πρὸς τὸν Γαβινίου χωρισμὸν κινηθείσης, καὶ Ἰουδαίους πάλιν ἀπέστησεν Ἀλέξανδρος ὁ Ἀριστοβούλου. Μεγίστην οὖν συγκροτήσας δύναμιν, ὥρμητο πάντας τοὺς κατὰ τὴν χώραν Ῥωμαίους ἀνελεῖν. Πρὸς ὃ Γαβίνιος δείσας, ἤδη δὲ παρῆν ἀπ' Αἰγύπτου τοῖς τῇδε θορύβοις ἠπειγμένος, ἐπί τινας μὲν τῶν ἀφεστώτων Ἀντίπατρον προπέμψας μετέπεισε. Συνέμενον δὲ Ἀλεξάνδρῳ τρεῖς μυριάδες, καὶ ἐκεῖνος ὥρμητο πολεμεῖν. Οὕτως ἔξεισι πρὸς μάχην. Ὑπήντων δὲ οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ συμβαλόντων περὶ τὸ Ἰταβύριον ὄρος, μύριοι μὲν ἀναιροῦνται, τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος ἐσκεδάσθη φυγῇ. Καὶ Γαβίνιος ἐλθὼν εἰς Ἱεροσόλυμα, πρὸς τὸ Ἀντιπάτρου βούλημα κατεστήσατο τὴν πολιτείαν. Ἔνθεν ὁρμήσας, Ναβαταίων τε μάχῃ κρατεῖ, καὶ Μιθραδάτην καὶ Ὀρσάνην φυγόντας ἐκ Πάρθων κρύφα μὲν ἀπέπεμψε, παρὰ δὲ τοῖς στρατιώταις ἔλεγεν ἀποδράναι.

8. Καὶ ἐν τούτῳ Κράσσος αὐτῷ διάδοχος ἐλθὼν παραλαμβάνει Συρίαν. Οὗτος εἰς τὴν ἐπὶ Πάρθους στρατιὰν, τόν τε ἄλλον τοῦ ἐν Ἱεροσολύμοις ναοῦ χρυσὸν πάντα περιεῖλε, καὶ τὰ διςχίλια τάλαντα ἦρεν, ὧν ἀπέσχετο Πομπήϊος. Διαβὰς δὲ τὸν Εὐφράτην αὐτός τε ἀπώλετο, καὶ ὁ στρατὸς αὐτοῦ. Περὶ ὧν οὐ νῦν καιρὸς λέγειν.

9. Πάρθους δὲ, μετὰ τὸν Κράσσον ἐπιδιαβαίνειν εἰς Συρίαν ὡρμημένους ἀνέκοπτε Κάσσιος, εἰς τὴν ἐπαρχίαν διαφυγών. Περιποιησάμενος δὲ αὐτὴν ἐπὶ Ἰουδαίαν ἠπείγετο, καὶ Ταριχαίας μὲν ἑλὼν εἰς τριςμυρίους Ἰουδαίων ἀνδραποδίζεται. Κτείνει δὴ

καὶ Πειθόλαον, τοὺς Ἀριστοβούλου στασιαστὰς ἐπισυνιστάντα. Τοῦ φόνου δὲ ἦν σύμβουλος Ἀντίπατρος. Τούτῳ γήμαντι γυναῖκα τῶν ἐπισήμων ἐξ Ἀραβίας, Κύπρον τὸ ὄνομα, τέσσαρες μὲν υἱεῖς γίγνονται, Φασάηλος, καὶ ὁ βασιλεὺς αὖθις Ἡρώδης, πρὸς οἷς Ἰώσηπος καὶ Φερώρας, Σαλώμη δὲ θυγάτηρ. Ἐξοικειούμενος δὲ τοὺς πανταχοῦ δυνατοὺς φιλίαις τε καὶ ξενίαις, μάλιστα προςηγάγετο τὸν Ἀράβων βασιλέα διὰ τὴν ἐπιγαμίαν. Καὶ ἐπειδὴ τὸν πρὸς Ἀριστόβουλον ἀνείλετο πόλεμον, ἐκείνῳ παρακαταθήκην ἔπεμψε τὰ τέκνα. Κάσσιος δὲ κατὰ συνθήκας ἡσυχάζειν Ἀλέξανδρον ἀναγκάσας, ἐπὶ τὸν Εὐφράτην ὑπέστρεψε, Πάρθους διαβαίνειν ἀνείρξων. Περὶ ὧν ἐν ἑτέροις ἐροῦμεν.

CAP. IX. 1. Καῖσαρ δὲ, Πομπηΐου καὶ τῆς συγ- 73
κλήτου φυγόντων ὑπὲρ τὸν Ἰόνιον, Ῥώμης τε καὶ τῶν ὅλων κρατήσας, ἀνίησι μὲν τῶν δεσμῶν τὸν Ἀριστόβουλον· παραδοὺς δὲ αὐτῷ δύο τάγματα, κατὰ τάχος ἔπεμψεν εἰς Συρίαν, ταύτην τε ῥᾳδίως ἐλπίσας, καὶ τὰ περὶ τὴν Ἰουδαίαν δι' αὐτοῦ προςάξεσθαι. Φθάνει δὲ ὁ φθόνος καὶ τὴν Ἀριστοβούλου προθυμίαν καὶ τὰς Καίσαρος ἐλπίδας. Φαρμάκῳ γοῦν ἀναιρεθεὶς ὑπὸ τῶν τὰ Πομπηΐου φρονούντων, μέχρι πολλοῦ μὲν οὐδὲ ταφῆς ἐν τῇ πατρῴᾳ μετεῖχεν· ἔκειτο δ' ἐν μέλιτι συντηρούμενος ὁ νεκρὸς αὐτοῦ, ἕως ὑπ' Ἀντωνίου Ἰουδαίοις ἐπέμφθη, τοῖς βασιλικοῖς μνημείοις ἐνταφησόμενος.

2. Ἀναιρεῖται δὲ καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Ἀλέξανδρος πελέκει ὑπὸ Σκηπίωνος ἐν Ἀντιοχείᾳ, Πομπηΐου τοῦτ' ἐπιστείλαντος, καὶ γενομένης κατηγορίας πρὸ τοῦ βήματος ὧν Ῥωμαίους ἔβλαψε. Τοὺς δ' ἀδελφοὺς αὐτοῦ Πτολεμαῖος ὁ Μινναίου παραλαβὼν, ὃς ἐκράτει τῆς ὑπὸ τῷ Λιβάνῳ Χαλκίδος, Φιλιππίωνα τὸν υἱὸν ἐπ' αὐτοὺς εἰς Ἀσκάλωνα πέμπει. Καὶ ἐκεῖνος ἀποσπάσας τῆς Ἀριστοβούλου γυναικὸς Ἀν-

τίγονον, καὶ τὰς ἀδελφὰς αὐτοῦ πρὸς τὸν πατέρα ἀνήγαγεν. Ἀλοὺς δ᾽ ἔρωτι γαμεῖ τὴν νεωτέραν, καὶ μετὰ ταῦθ᾽ ὑπὸ τοῦ πατρὸς δι᾽ αὐτὴν κτείνεται· γαμεῖ γὰρ Πτολεμαῖος τὴν Ἀλεξάνδραν, ἀνελὼν τὸν υἱὸν, καὶ διὰ τὸν γάμον κηδεμονικώτερος ἦν αὐτὸς πρὸς τοὺς αὐτῆς ἀδελφούς.

3. Ἀντίπατρος δὲ μετὰ τὴν Πομπηΐου τελευτὴν μεταβὰς ἐθεράπευε Καίσαρα· καὶ ἐπειδή περ Μιθραδάτης ὁ Περγαμηνὸς, μεθ᾽ ἧς ἦγεν ἐπ᾽ Αἴγυπτον δυνάμεως, εἰργόμενος τῶν κατὰ τὸ Πηλούσιον ἐμβολῶν, ἐν Ἀσκάλωνι κατείχετο, τούς τε Ἄραβας ξένος ὢν ἔπεισεν ἐπικουρῆσαι, καὶ αὐτὸς ἧκεν ἄγων Ἰουδαίων εἰς τριςχιλίους ὁπλίτας. Παρώρμησε δὲ καὶ τοὺς ἐν Συρίᾳ δυνατοὺς ἐπὶ τὴν βοήθειαν, τῶν τ᾽ ἐποίκων τοῦ Λιβάνου Πτολεμαῖον, καὶ Ἰάμβλιχον, καὶ Πτολεμαῖον· δι᾽ οὓς αἱ ταύτῃ
74 πόλεις ἑτοίμως συνεφήψαντο τοῦ πολέμου. Καὶ θαῤῥῶν ἤδη Μιθραδάτης τῇ προςγενομένῃ δι᾽ Ἀντίπατρον ἰσχύϊ, πρὸς τὸ Πηλούσιον ἐξελαύνει, κωλυόμενός τε διεξελθεῖν, ἐπολιόρκει τὴν πόλιν. Γίνεται καὶ ἐν τῇ προςβολῇ διασημότατος Ἀντίπατρος· τὸ γὰρ καθ᾽ αὑτὸν μέρος τοῦ τείχους διαῤῥήξας, πρῶτος εἰςεπήδησεν εἰς τὴν πόλιν μετὰ τῶν σὺν αὐτῷ.

4. Καὶ Πηλούσιον μὲν ἑάλω· πρόσω δ᾽ αὐτοὺς ἰόντας, εἶργον αὖθις οἱ τὴν Ὀνίου προςαγορευομένην χώραν κατέχοντες Ἰουδαῖοι Αἰγύπτιοι. Τούτους δὲ Ἀντίπατρος οὐ μόνον μὴ κωλύειν ἔπεισεν, ἀλλὰ καὶ τὰ ἐπιτήδεια τῇ δυνάμει παρασχεῖν. Ὅθεν οὐδ᾽ οἱ κατὰ τὴν Μέμφιν ἔτι εἰς χεῖρας ἦλθον, ἑκούσιοι δὲ προςέθεντο Μιθραδάτῃ. Καὶ ἐκεῖνος ἤδη τὸ Δέλτα περιελθὼν, συνέβαλλε τοῖς λοιποῖς Αἰγυπτίοις εἰς μάχην κατὰ χῶρον, ὃς Ἰουδαίων στρατόπεδον καλεῖται. Κινδυνεύοντα δὲ αὐτὸν ἐν τῇ παρατάξει, σὺν ὅλῳ τῷ δεξιῷ κέρατι. Ῥύεται περιελθὼν Ἀντίπατρος παρὰ τὸν αἰγιαλὸν τοῦ ποτα-

μοῦ· τῶν γὰρ καθ' ἑαυτὸν ἐκράτει τὸ λαιὸν ἔχων κέρας. Ἔπειτα προςπεσὼν τοῖς διώκουσι Μιθραδάτην, ἀπέκτεινέ τε πολλοὺς, καὶ μέχρι τοσούτου τοὺς καταλειπομένους ἐδίωξεν, ὡς καὶ τὸ στρατόπεδον αὐτῶν ἑλεῖν. Ὀγδοήκοντα δὲ μόνους τῶν ἰδίων ἀπέβαλε, καὶ Μιθραδάτης ἐν τῇ τροπῇ περὶ ὀκτακοσίους. Σωθεὶς δὲ αὐτὸς παρ' ἐλπίδα, μάρτυς ἀβάσκανος γίνεται πρὸς Καίσαρα τῶν Ἀντιπάτρου κατορθωμάτων.

5. Ὁ δὲ τότε μὲν τὸν ἄνδρα τοῖς ἐπαίνοις καὶ ταῖς ἐλπίσιν εἰς τοὺς ὑπὲρ ἑαυτοῦ κινδύνους ἐπέῤῥωσεν· ἐν οἷς πᾶσι παραβολώτατος ἀγωνιστὴς γενόμενος, καὶ πολλὰ τρωθεὶς, ἐφ' ὅλου σχεδὸν τοῦ σώματος, εἶχε τὰ σημεῖα τῆς ἀρετῆς. Αὖθις δὲ καταστησάμενος τὰ κατὰ τὴν Αἴγυπτον, ὡς ἐπανῆκεν εἰς Συρίαν, πολιτείᾳ τε αὐτὸν τῇ Ῥωμαίων ἐτίμησε καὶ ἀτελείᾳ, τῆς τε ἄλλης τιμῆς καὶ φιλοφρονήσεως ἕνεκεν ζηλωτὸν ἐποίησε, καὶ τὴν ἀρχιερωσύνην δὲ δι' αὐτὸν ἐπεκύρωσεν Ὑρκανῷ.

CAP. X. 1. Κατὰ ταὐτὸ δὲ καὶ Ἀντίγονος ὁ Ἀρι- 75
στοβούλου, πρὸς τὸν Καίσαρα παρὼν, γίνεται παραδόξως Ἀντιπάτρῳ μείζονος προκοπῆς αἴτιος. Δέον γοῦν ἀποδύρεσθαι περὶ τοῦ πατρὸς πεφαρμάχθαι δοκοῦντος ἐκ τῶν πρὸς Πομπήϊον διαφορῶν, καὶ περὶ τοῦ ἀδελφοῦ τὴν Σκηπίωνος ὠμότητα μέμφεσθαι, καὶ μηδὲν εἰς τὸν ἔλεον παραμίξαι φθονερὸν πάθος, ὁ δ' ἐπὶ τούτοις Ὑρκανοῦ καὶ Ἀντιπάτρου κατηγόρει παρελθὼν, ὡς 'παρανομώτατα μὲν αὐτὸν μετὰ τῶν ἀδελφῶν πάσης ἀπελαύνοιεν τῆς πατρίου γῆς, πολλὰ δ' εἰς τὸ ἔθνος αὐτοὶ διὰ κόρον ἐξυβρίζοιεν· καὶ ὅτι τὴν εἰς Αἴγυπτον συμμαχίαν οὐκ ἐπ' εὐνοίᾳ αὐτῷ πέμψειαν, ἀλλὰ κατὰ δέος τῶν πάλαι διαφορῶν, καὶ τὴν πρὸς τὸν Πομπήϊον φιλίαν ἀποσκευαζόμενοι.'

2. Πρὸς ταῦθ' ὁ Ἀντίπατρος ἀποῤῥίψας τὴν

ἐσθῆτα, τὸ πλῆθος ἐπεδείκνυε τῶν τραυμάτων, καὶ ‘περὶ μὲν τῆς εἰς Καίσαρα εὐνοίας οὐκ ἔφη λόγου δεῖν αὐτῷ, κεκραγέναι γὰρ τὸ σῶμα σιωπῶντος· Ἀντιγόνου δὲ θαυμάζειν τὴν τόλμαν, εἰ πολεμίου Ῥωμαίων υἱὸς ὢν καὶ Ῥωμαίων δραπέτου, καὶ τὸ νεωτεροποιὸς εἶναι καὶ στασιώδης αὐτὸς πατρῷον ἔχων, παρὰ τῷ Ῥωμαίων ἡγεμόνι κατηγορεῖν ἐπικεχείρηκεν ἑτέρων, καὶ πειρᾶται τυχεῖν ἀγαθοῦ τινος, δέον ἀγαπᾶν, ὅτι ζῇ· καὶ γὰρ νῦν ἐφίεσθαι πραγμάτων οὐ τοσοῦτον δι᾽ ἀπορίαν, ἀλλ᾽ ἵνα Ἰουδαίους διαστασιάσῃ παρελθὼν, καὶ χρήσηται κατὰ τῶν δόντων ταῖς ἀφορμαῖς.’

3. Τούτων Καῖσαρ ἀκούσας Ὑρκανὸν μὲν ἀξιώτερον τῆς ἀρχιερωσύνης ἀπεφήνατο, Ἀντιπάτρῳ δὲ δυναστείας αἵρεσιν ἔδωκεν. Ὁ δ᾽ ἐπὶ τῷ τιμήσαντι τὸ μέτρον τῆς τιμῆς θέμενος, πάσης ἐπίτροπος Ἰουδαίας ἀποδείκνυται, καὶ προσεπιτυγχάνει τὰ τείχη τῆς πατρίδος ἀνακτίσαι κατεστραμμένα. Τὰς μὲν δὴ τιμὰς ταύτας Καῖσαρ ἀπέστελλεν ἐν τῷ Καπετωλίῳ χαραχθῆναι, τῆς τε αὐτοῦ δικαιοσύνης σημεῖον, καὶ τῆς τοῦ ἀνδρὸς ἀρετῆς ἐσόμενον.

4. Ἀντίπατρος δὲ, Καίσαρα προπέμψας ἐκ τῆς Συρίας, εἰς Ἰουδαίαν ὑπέστρεψεν. Καὶ πρῶτον μὲν τὸ τεῖχος ἀνεδείματο τῆς πατρίδος ὑπὸ Πομπηΐου κατεστραμμένον, καὶ τοὺς ἀνὰ τὴν χώραν θορύβους ἐπιὼν κατέστελλεν, ἀπειλητὴς ἅμα καὶ σύμ-
76 βουλος ὢν ἑκάστοις, ὅτι ‘τὰ μὲν Ὑρκανοῦ φρονοῦντες ἐν ὄλβῳ καὶ καθ᾽ ἡσυχίαν βιώσονται, τῶν τε ἰδίων κτημάτων καὶ κοινῆς εἰρήνης ἀπολαύσονται· εἰ δὲ πείθοιντο ταῖς ψυχραῖς ἐλπίσι τῶν νεωτερίζειν ἐπὶ κέρδεσιν οἰκείοις ἐθελόντων, αὐτόν τε πειράσουσιν ἀντὶ κηδεμόνος δεσπότην, καὶ Ὑρκανὸν ἀντὶ βασιλέως τύραννον, Ῥωμαίους γε μὴν καὶ Καίσαρα πολεμίους ἀνθ᾽ ἡγεμόνων καὶ φίλων· οὐ γὰρ ἀνέξεσθαι μετακινούμενον ἐκ τῆς ἀρχῆς, ὃν αὐτοὶ κατέστησαν.’ Ἅμα δὲ ταῦτα λέγων δι᾽ ἑαυτοῦ κα-

θίστατο τὴν χώραν ὁρῶν τὸν Ὑρκανὸν νωθῆ τε καὶ βασιλείας ἀτονώτερον. Φασάηλον μὲν δὴ, τῶν παίδων τὸν πρεσβύτατον, Ἱεροσολύμων καὶ τῶν πέριξ στρατηγὸν καθίστησι· τὸν δὲ μετ᾽ αὐτὸν Ἡρώδην ἐπὶ τοῖς ἴσοις ἔστειλεν εἰς τὴν Γαλιλαίαν κομιδῇ νέον.

5. Ὁ δὲ, ὢν φύσει δραστήριος, ὕλην εὐθέως εὑρίσκει τῷ φρονήματι. Καταλαβὼν οὖν Ἐζεκίαν τὸν ἀρχιληστὴν, τὰ προσεχῆ τῇ Συρίᾳ κατατρέχοντα μετὰ μεγίστου στίφους, αὐτόν τε συλλαβὼν ἀποκτείνει καὶ πολλοὺς τῶν λῃστῶν. Ὃ δὴ μάλιστα τοῖς Σύροις κατώρθωκε κεχαρισμένον· ὑμνεῖτο γοῦν ἀνά τε τὰς κώμας καὶ ἐν ταῖς πόλεσιν Ἡρώδης, ὡς εἰς εἰρήνην αὐτοῖς παρὼν καὶ τὰς κτήσεις ἀνασεσωκώς. Γίνεται δ᾽ ἐκ τούτου καὶ Σέξτῳ Καίσαρι γνώριμος, ὄντι συγγενεῖ τοῦ μεγάλου Καίσαρος, καὶ διοικοῦντι τὴν Συρίαν. Πρὸς δὲ τὸν ἀδελφὸν εὐδοκιμοῦντα καὶ Φασάηλος ἐφιλοτιμεῖτο τὴν ἀγαθὴν ἔριν, τοὺς ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις εὐνουστέρους καθιστάμενος, καὶ δι᾽ αὑτοῦ μὲν ἔχων τὴν πόλιν, μηδὲν δ᾽ ἀπειροκάλως εἰς τὴν ἐξουσίαν ἐξυβρίζων. Ἔνθεν Ἀντιπάτρῳ θεραπεία τε ἦν ἐκ τοῦ ἔθνους βασιλικὴ, καὶ τιμαὶ παρὰ πάντων ὡς δεσπότῃ τῶν ὅλων. Οὐ μὴν αὐτὸς τῆς πρὸς Ὑρκανὸν εὐνοίας ἢ πίστεως τι μετεκίνησεν.

6. Ἀμήχανον δ᾽ ἐν εὐπραγίαις φθόνον διαφυγεῖν. Ὑρκανὸς γοῦν ἤδη μὲν καὶ καθ᾽ ἑαυτὸν ἡσυχῇ πρὸς τὸ κλέος τῶν νεανίσκων ἐδάκνετο, μάλιστα δ᾽ ἐλύπει τὰ Ἡρώδου κατορθώματα. Καὶ κήρυκες ἐπάλληλοι τῆς καθ᾽ ἕκαστον εὐδοξίας προτρέχοντες, πολλοὶ δὲ τῶν ἐν τοῖς βασιλείοις βασκάνων ἠρέθιζον, οἷς ἢ τὸ τῶν παίδων ἢ τὸ Ἀντιπάτρου σωφρονικὸν προσίστατο, λέγοντες, ὡς „Ἀντιπάτρῳ καὶ τοῖς υἱοῖς αὐτοῦ παραχωρήσας τῶν πραγμάτων, καθέζοιτο τὸ ὄνομα μόνον βασιλέως ἔχων ἔρημον ἐξουσίας. Καὶ μέχρι ποῦ πλανηθήσεται καθ᾽ ἑαυτοῦ 77

βασιλεῖς ἐπιτρέφων; Οὐδὲ γὰρ εἰρωνεύεσθαι τὴν ἐπιτροπὴν αὐτοὺς ἔτι, φανεροὺς δ' εἶναι δεσπότας παρωσαμένους ἐκεῖνον· εἴ γε μήτε ἐντολὰς δόντος, μήτε ἐπιστείλαντος αὐτοῦ, τοσούτους παρὰ τὸν Ἰουδαίων νόμον ἀνήρηκεν Ἡρώδης, ὃν, εἰ μὴ βασιλεύς ἐστιν ἀλλ' ἔτι ἰδιώτης, δεῖν ἐπὶ δίκην ἥκειν, ἀποδώσοντα λόγον αὐτῷ τε καὶ τοῖς πατρίοις νόμοις, οἳ κτείνειν ἀκρίτως οὐκ ἀφιᾶσι.

7. Τούτοις κατὰ μικρὸν Ὑρκανὸς ἐξεκαίετο, καὶ τὴν ὀργὴν τελευταῖον ἐκρήξας, ἐκάλει κριθησόμενον τὸν Ἡρώδην. Ὁ δὲ καὶ τοῦ πατρὸς παραινοῦντος, καὶ τῶν πραγμάτων διδόντων παῤῥησίαν, ἀνήει, φρουραῖς διαλαβὼν πρότερον τὴν Γαλιλαίαν· ἧει δὲ μετὰ καρτεροῦ στίφους, ὡς μήτε καταλύειν δόξειν Ὑρκανὸν ἁδρὰν ἄγων δύναμιν, μήτε γυμνὸς ἐμπέσαι τῷ φθόνῳ. Σέξτος δὲ Καῖσαρ δείσας περὶ τῷ νεανίᾳ, μή τι παρὰ τοῖς ἐχθροῖς ἀποληφθεὶς πάθῃ, πέμπει πρὸς τὸν Ὑρκανὸν τοὺς παραγγελοῦντας διαῤῥήδην, ἀπολύειν Ἡρώδην τῆς φονικῆς δίκης. Ὁ δὲ καὶ ἄλλως ὡρμημένος, ἠγάπα γὰρ Ἡρώδην, ἀποψηφίζεται.

8. Καὶ ὃς, ὑπολαμβάνων ἄκοντος τοῦ βασιλέως διαφυγεῖν, εἰς Δαμασκὸν ἀνεχώρησε πρὸς Σέξτον, παρασκευαζόμενος οὐδ' αὖθις ὑπακοῦσαι καλοῦντι. Καὶ πάλιν οἱ πονηροὶ παρώξυνον Ὑρκανὸν, κατ' ὀργήν τε οἴχεσθαι τὸν Ἡρώδην λέγοντες, καὶ παρεσκευασμένον κατ' αὐτοῦ. Πιστεύων δὲ ὁ βασιλεὺς οὐκ εἶχεν ὅ τι χρὴ δρᾶν, ὡς ἑώρα μείζονα τὸν διάφορον. Ἐπεὶ δὲ ὑπὸ Σέξτου Καίσαρος στρατηγὸς ἀνεδείχθη Κοίλης Συρίας καὶ Σαμαρείας, οὐ μόνον τε κατ' εὔνοιαν τὴν ἐκ τοῦ ἔθνους, ἀλλ' ὅτι δυνάμει φοβερὸς ἦν, εἰς ἔσχατον δέους κατέπεσεν, ὅσον οὔπω προσδοκῶν ἐπ' αὐτὸν ὁρμήσειν μετὰ στρατιᾶς.

9. Καὶ οὐ διήμαρτε τῆς οἰήσεως· Ὁ γὰρ Ἡρώδης κατ' ὀργὴν τῆς περὶ τὴν δίκην ἀπειλῆς στρα-

τιὰν ἀθροίσας, ἐπὶ Ἱεροσολύμων ἦγε, καταλύσων τὸν Ὑρκανόν. Καὶ ἂν ἔφθη τοῦτο ποιήσας, εἰ μὴ συνεξελθόντες ὅ τε πατὴρ καὶ ἀδελφὸς, ἔκλασαν αὐτοῦ τὴν ὁρμὴν, παρακαλοῦντες αὐτὸν ʻἀπειλῇ καὶ ἀνατάσει μόνῃ μετρῆσαι τὴν ἄμυναν, φείσασθαι δὲ τοῦ βασιλέως, ὑφ᾽ ᾧ μέχρι τοσαύτης δυνάμεως προῆλθε· δεῖν τε, εἰ κληθεὶς ἐπὶ δίκην παρώξυνται, καὶ περὶ τῆς ἀφέσεως εὐχαριστεῖν, καὶ μὴ πρὸς μὲν τὸ σκυθρωπὸν ἀπαντᾶν, περὶ δὲ τῆς σωτηρίας ἀχάριστον εἶναι. Εἰ δὲ δὴ λογιστέον εἴη καὶ πολέμου ῥοπὰς βραβεύεσθαι τῷ Θεῷ, πλεῖον εἶναι τῆς στρα- 78
τιᾶς τὸ ἄδικον. Διὸ δὴ καὶ περὶ τῆς νίκης οὐ χρῆναι κατὰ πᾶν εὔελπιν εἶναι, μέλλοντά τε συμβάλλειν βασιλεῖ, καὶ συντρόφῳ, καὶ πολλάκις μὲν εὐεργέτῃ, χαλεπῷ δὲ οὐδέποτε, πλὴν ὅσον πονηροῖς συμβούλοις χρώμενος ἐπισείσειεν αὐτῷ σκιὰν ἀδικήματος.᾽ Πείθεται δὲ τούτοις Ἡρώδης, ὑπολαβὼν εἰς τὰς ἐλπίδας αὔταρκες εἶναι, καὶ τὸ τὴν ἰσχὺν ἐπιδείξασθαι τῷ ἔθνει.

10. Καὶ ἐν τούτῳ γίνεται περὶ Ἀπάμειαν ταραχὴ Ῥωμαίων, καὶ πόλεμος ἐμφύλιος, Κεκιλίου μὲν Βάσσου, διὰ τὴν εἰς Πομπήϊον εὔνοιαν, δολοφονήσαντος Σέξτον Καίσαρα, καὶ τὴν ἐκείνου δύναμιν παραλαβόντος, τῶν δ᾽ ἄλλων Καίσαρος στρατηγῶν ἐπὶ τιμωρίᾳ τοῦ φόνου Βάσσῳ συμβαλόντων μετὰ πάσης τῆς δυνάμεως. Οἷς καὶ διὰ τὸν ἀνῃρημένον, καὶ διὰ τὸν περιόντα Καίσαρα, φίλους ὄντας ἀμφοτέρους, ὁ Ἀντίπατρος διὰ τῶν παίδων ἔπεμψε συμμαχίαν. Μηκυνομένου δὲ τοῦ πολέμου, Μάρκος μὲν ἀπὸ τῆς Ἰταλίας Σέξτου παραγίνεται διάδοχος.

CAP. XI. 1. Συνίσταται δὲ Ῥωμαίοις κατὰ τοῦτον τὸν καιρὸν ὁ μέγας πόλεμος, Κασσίου καὶ Βρούτου ἄφνω κτεινάντων δόλῳ Καίσαρα, κατασχόντα τὴν ἀρχὴν ἐπ᾽ ἔτη τρία καὶ μῆνας ἑπτά. Μεγίστου

δὲ ἐπὶ τῷ φόνῳ γενομένου κινήματος, καὶ διαστασιασθέντων τῶν δυνατῶν, ἕκαστος ἐλπίσιν οἰκείαις ἐχώρει πρὸς ὃ συμφέρειν ὑπελάμβανε. Καὶ δὴ ἧκε Κάσσιος εἰς Συρίαν, καταληψόμενος τὰς περὶ Ἀπάμειαν δυνάμεις. Ἔνθα Βάσσῳ τε Μάρκον καὶ τὰ διεστῶτα τάγματα διαλλάξας, ἐλευθεροῖ μὲν Ἀπά-
79 *μειαν τῆς πολιορκίας, ἡγούμενος δὲ αὐτὸς τῆς στρατιᾶς ἐπῄει φορολογῶν τὰς πόλεις, καὶ παρὰ δύναμιν τὰς εἰςπράξεις ποιούμενος.*

2. *Κελευσθὲν δὲ καὶ Ἰουδαίοις εἰςενεγκεῖν ἑπτακόσια τάλαντα, δείσας Ἀντίπατρος τὴν ἀπειλὴν τοῦ Κασσίου, τοῖς τε υἱοῖς διεῖλεν εἰςπράττειν τὰ χρήματα καὶ τισιν ἄλλοις τῶν ἐπιτηδείων κατὰ τάχος, ἐν οἷς καὶ Μαλίχῳ τινὶ τῶν διαφόρων. Οὕτως ἤπειγεν ἡ ἀνάγκη. Πρῶτος δ' ἀπεμειλίξατο Κάσσιον Ἡρώδης, τὴν ἑαυτοῦ μοῖραν ἐκ τῆς Γαλιλαίας κομίσας ἑκατὸν τάλαντα, καὶ διὰ τοῦτο ἐν τοῖς μάλιστα φίλος ἦν. Τοὺς δὲ λοιποὺς εἰς βραδυτῆτα κακίσας, αὐταῖς ἐθυμοῦτο ταῖς πόλεσι. Γόφναν γοῦν καὶ Ἀμμαοῦν καὶ δύο ἑτέρας τῶν ταπεινοτέρων ἐξανδραποδισάμενος, ἐχώρει μὲν ὡς καὶ Μάλιχον ἀναιρήσων, ὅτι μὴ σπεύσας εἰςέπραξεν. Ἐπέσχε δὲ τήν τε τούτου καὶ τῶν ἄλλων πόλεων ἀπώλειαν Ἀντίπατρος, ταχέως ἑκατὸν ταλάντοις θεραπεύσας Κάσσιον.*

3. *Οὐ μὴν Μάλιχος, ἀναχωρήσαντος Κασσίου, τῆς χάριτος ἀπεμνημόνευεν Ἀντιπάτρῳ. Κατὰ δὲ τοῦ πολλάκις σωτῆρος ἐπιβουλὴν ἀνεσκευάζετο, σπεύδων ἀνελεῖν τὸν ἐμπόδιον αὐτοῦ τοῖς ἀδικήμασιν ὄντα. Ἀντίπατρος δὲ, τήν τε ἰσχὺν καὶ τὸ πανοῦργον τοῦ ἀνδρὸς ὑποδείσας, διαβαίνει τὸν Ἰορδάνην, στρατὸν ἀθροίσων εἰς τὴν τῆς ἐπιβουλῆς ἄμυναν. Φωραθεὶς δὲ Μάλιχος, ἀναιδείᾳ τῶν Ἀντιπάτρου παίδων περιγίνεται. Τόν τε γὰρ Ἱεροσολύμων φρουρὸν Φασάηλον, καὶ Ἡρώδην πεπιστευμένον τὰ ὅπλα, πολλαῖς ἀπολογίαις καὶ ὅρκοις*

ἐκγοητεύσας, διαλλακτὰς αὐτῷ πρὸς τὸν πατέρα πείθει γενέσθαι. Πάλιν γοῦν ὑπ' Ἀντιπάτρου σώζεται, πείσαντος Μάρκον τὸν τότε στρατηγοῦντα Συρίας, ὃς ὥρμητο κτεῖναι Μάλιχον ἐφ' οἷς ἐνεωτέρισε.

4. Συστάντος δὲ τοῦ πρὸς Κάσσιον καὶ Βροῦτον πολέμου Καίσαρί τε τῷ νέῳ καὶ Ἀντωνίῳ, Κάσσιος καὶ Μάρκος στρατιὰν ἀθροίσαντες ἐκ τῆς Συρίας, ἐπειδὴ μέγα μέρος εἰς τὰς χρείας Ἡρώδης ἔδοξε συμβεβλῆσθαι, τότε μὲν αὐτὸν Συρίας ἁπάσης ἐπιμελητὴν καθιστᾶσι, δύναμιν πεζήν τε καὶ ἱππικὴν δόντες. Μετὰ δὲ τὴν τοῦ πολέμου κατάλυσιν ἀποδείξειν Κάσσιος ὑπέσχετο καὶ Ἰουδαίας βασιλέα. Συνέβη δ' Ἀντιπάτρῳ τήν τε ἰσχὺν τοῦ παιδὸς καὶ τὴν ἐλπίδα αἰτίαν ἀπωλείας γενέσθαι. Ταῦτα γὰρ δείσας ὁ Μάλιχος, διαφθείρει τινὰ τῶν βασιλικῶν οἰνοχόων χρήμασι, δοῦναι φάρμακον Ἀντιπάτρῳ. Καὶ ὁ μὲν, ἀγώνισμα τῆς Μαλίχου παρανομίας γενόμενος, κατὰ τὸ συμπόσιον θνήσκει, τά τε ἄλλα δραστήριος ἀνὴρ ἐν ἀφηγήσει πραγμάτων, καὶ τὴν ἀρχὴν ἀνακτησάμενός τε Ὑρκανῷ καὶ διαφυλάξας.

5. Μάλιχος δὲ, καθ' ὑπόνοιαν τῆς φαρμακείας, ὀργιζόμενον τὸ πλῆθος ἀρνούμενος ἔπειθεν. Καὶ δυνατώτερον ἑαυτὸν κατεσκεύαζεν, ὁπλίτας συγκροτῶν· οὐ γὰρ ἠρεμήσειν Ἡρώδην ὑπελάμβανεν· ὃς δὲ καὶ παρῆν αὐτίκα στρατὸν ἄγων ἐπὶ τιμωρίᾳ τοῦ πατρός. Φασαήλου δὲ τοῦ ἀδελφοῦ συμβουλεύσαντος αὐτῷ, μὴ φανερῶς τὸν ἄνδρα μετιέναι, διαστασιάσειν γὰρ τὸ πλῆθος, τότε μὲν ἀπολογούμενόν τε προςίεται τὸν Μάλιχον, καὶ τῆς ὑπονοίας ἀπολύειν 80
ὁμολογεῖ, λαμπρὰν δὲ πομπὴν ἐπὶ τῷ πατρὶ κηδείας ἐτέλεσεν.

6. Τραπεὶς δ' ἐπὶ Σαμάρειαν, στάσει τεταραγμένην, κατεστήσατο τὴν πόλιν. Ἔπειτα καθ' ἑορτὴν ὑπέστρεφεν εἰς Ἱεροσόλυμα, τοὺς ὁπλίτας ἄγων.

Καὶ πέμπων Ὑρκανὸς, ἐνῆγε γὰρ δεδοικὼς τὴν ἔφοδον Μάλιχος, ἐκώλυε τοὺς ἀλλοφύλους εἰςαγαγεῖν ἐφ᾽ ἁγνεύοντας τοὺς ἐπιχωρίους. Ὁ δὲ, τῆς προφάσεως καταφρονήσας καὶ τοῦ προστάσσοντος, εἰςέρχεται διὰ νυκτός. Καὶ πάλιν Μάλιχος προσιὼν ἔκλαιεν Ἀντίπατρον· ἀνθυπεκρίνετο δὲ μόλις Ἡρώδης τὸν θυμὸν ἐπέχων, καὶ Κασσίῳ δι᾽ ἐπιστολῶν τὴν τοῦ πατρὸς ἀναίρεσιν ἐπωδύρετο, καὶ ἄλλως μισοῦντι Μάλιχον. Ὁ δὲ αὐτῷ μετιέναι τὸν φονέα τοῦ πατρὸς ἀντεπιστείλας, καὶ τοῖς ὑφ᾽ ἑαυτὸν χιλιάρχοις λάθρα προςέταξεν Ἡρώδῃ βοηθεῖν εἰς πρᾶξιν δικαίαν.

7. Καὶ ἐπειδὴ Λαοδίκειαν ἑλόντος αὐτοῦ συνήεσαν οἱ πανταχόθεν δυνατοὶ, δωρεάς τε καὶ στεφάνους φέροντες, Ἡρώδης μὲν τοῦτον τῇ τιμωρίᾳ τὸν καιρὸν ἀφώρισε. Μάλιχος δ᾽ ὑποπτεύσας, ὡς ἐν Τύρῳ γίνεται, τόν τε υἱὸν ὁμηρεύοντα παρὰ τοῖς Τυρίοις ὑπεξαγαγεῖν ἔγνω λάθρα, καὶ αὐτὸς εἰς τὴν Ἰουδαίαν ἀποδράναι παρεσκευάζετο. Παρώξυνε δ᾽ αὐτὸν ἡ τῆς σωτηρίας ἀπόγνωσις, ἐνθυμεῖσθαι καὶ μείζονα. Τότε γὰρ ἔθνος ἐπαναστήσειν Ῥωμαίοις ἤλπισε, Κασσίου τῷ πρὸς Ἀντώνιον πολέμῳ περισπωμένου, καὶ βασιλεύσειν αὐτὸς, Ὑρκανὸν καταλύσας εὐμαρῶς.

8. Ἐπεγέλα δὲ ἄρα τὸ χρεὼν αὐτοῦ ταῖς ἐλπίσιν. Ὁ γοῦν Ἡρώδης, προειδόμενος αὐτοῦ τὴν ὁρμὴν, τόν τε Ὑρκανὸν καὶ ἐκεῖνον ἐπὶ δεῖπνον καλεῖ. Παρεστῶτα δ᾽ ἔπειτα τῶν οἰκετῶν τινα πρὸς ἑαυτὸν καλέσας, ἐξέπεμψεν ὡς ἐπὶ τὴν τοῦ δείπνου παρασκευὴν, τῷ δὲ ὄντι προειπεῖν τοῖς χιλιάρχοις ἐξελθεῖν ἐπὶ τὴν ἐνέδραν. Καὶ ἐκεῖνοι, τῶν Κασσίου προσταγμάτων ἀναμνησθέντες, ἐπὶ τὸν πρὸ τῆς πόλεως αἰγιαλὸν ἐξῄεσαν ξιφήρεις. Ἔνθα περιστάντες τὸν Μάλιχον, πολλοῖς τραύμασιν ἀναιροῦσιν. Ὑρκανὸς δὲ παραχρῆμα μὲν ἐκλυθεὶς ὑπ᾽ ἐκπλήξεως ἔπεσε, μόλις δ᾽ ἀνενεγκὼν Ἡρώδην διηρώτα, τίς ὁ κτείνας

εἴη Μάλιχον. Ἀποκριναμένου δέ τινος τῶν χιλιάρχων τοῦ Κασσίου πρόςταγμα, "Κάσσιος ἄρα," ἔφη, "καὶ ἐμὲ καὶ τὴν πατρίδα μου σώζει, τὸν ἀμφοτέρων ἐπίβουλον ἀνελών." Εἴτε δὲ φρονῶν Ὑρκανὸς οὕτως, εἴθ' ὑπὸ δέους ὁμόσε τῇ γε πράξει χωρῶν εἶπεν, ἄδηλον ἦν. Ἀλλὰ γὰρ Μάλιχον μὲν οὕτως Ἡρώδης μετῆλθε.

CAP. XII. 1. Κασσίου δὲ ἀναχωρήσαντος ἐκ τῆς 81
Συρίας, πάλιν στάσις ἐν Ἱεροσολύμοις γίνεται, Ἕλικος μετὰ στρατιᾶς ἐπαναστάντος Φασαήλῳ, καὶ κατὰ τὴν ὑπὲρ Μαλίχου τιμωρίαν ἀμύνεσθαι θέλοντος Ἡρώδην εἰς τὸν ἀδελφόν. Ἡρώδης δὲ ἔτυχε μὲν ὢν παρὰ Φαβίῳ τῷ στρατηγῷ κατὰ Δαμασκὸν, ὡρμημένος δὲ βοηθεῖν ὑπὸ νόσου κατείχετο. Καὶ ἐν τούτῳ Φασάηλος, καθ' ἑαυτὸν Ἕλικος περιγενόμενος, Ὑρκανὸν ὠνείδιζεν εἰς ἀχαριστίαν, ὧν τε Ἕλικι συμπράξειε, καὶ ὅτι περιορῴη τὸν ἀδελφὸν τὸν Μαλίχου τὰ φρούρια καταλαμβάνοντα. Πολλὰ γὰρ ἤδη κατείληπτο, καὶ τὸ πάντων ὀχυρώτατον, Μάσαδα.

2. Οὐ μὴν αὐτῷ τι πρὸς τὴν Ἡρώδου βίαν ἤρκεσεν, ὃς ἀναῤῥωσθεὶς τά τε ἄλλα παραλαμβάνει, καὶ ἐκεῖνον ἐκ τῆς Μασάδας ἱκέτην ἀφῆκεν. Ἐξήλασε δὲ καὶ ἐκ τῆς Γαλιλαίας Μαρίωνα τὸν Τυρίων τύραννον, ἤδη τρία κατεσχηκότα τῶν ἐρυμάτων. Τοὺς δὲ ληφθέντας Τυρίους ἔσωσε μὲν πάντας, ἔστι δ' οὓς καὶ δωρησάμενος ἀπέπεμψεν, εὔνοιάν τε ἑαυτῷ παρὰ τῆς πόλεως καὶ τῷ τυράννῳ μῖσος παρασκευαζόμενος. Ὁ δὲ Μαρίων ἠξίωτο μὲν τῆς τυραννίδος ὑπὸ Κασσίου, τυραννίσι πᾶσαν διαλαβόντος τὴν Συρίαν. Κατὰ δὲ τὸ πρὸς Ἡρώδην ἔχθος, συνέλαβεν Ἀντιγόνῳ τῷ Ἀριστοβούλου, καὶ τὸ πλέον διὰ Φάβιον, ὃν Ἀντίγονος χρήμασι προςποιησάμενος βοηθὸν εἶχε τῆς καθόδου. Χορηγὸς δὲ ἦν ἁπάντων ὁ κηδεστὴς Πτολεμαῖος Ἀντιγόνῳ.

3. Πρὸς οὓς Ἡρώδης ἀντιταξάμενος, ἐπὶ τῶν ἐμβολῶν τῆς Ἰουδαίας, κρατεῖ τῇ μάχῃ, καὶ τὸν Ἀντίγονον ἐξελάσας, ὑπέστρεψεν εἰς Ἱεροσόλυμα πᾶσιν ἀγαπητὸς ὢν ἐπὶ τῷ κατορθώματι. Καὶ γὰρ οἱ μὴ προσέχοντες πάλαι, τότε ᾠκείωντο διὰ τὴν πρὸς Ὑρκανὸν ἐπιγαμίαν αὐτῷ. Πρότερον μὲν γὰρ ἦκτο γυναῖκα τῶν ἐπιχωρίων, οὐκ ἄσημον, Δωρὶς ἐκαλεῖτο, ἐξ ἧς ἐγέννησεν Ἀντίπατρον. Τότε δὲ γήμας τὴν Ἀλεξάνδρου τοῦ Ἀριστοβούλου θυγατέρα, θυγατριδῆν τε Ὑρκανοῦ Μαριάμμην, οἰκεῖος τῷ βασιλεῖ γίνεται.

4. Ἐπεὶ δὲ Κάσσιον περὶ Φιλίππους ἀνελόντες ἀνεχώρησαν, εἰς μὲν Ἰταλίαν Καῖσαρ, ἐπὶ δὲ τὴν
82 Ἀσίαν Ἀντώνιος, πρεσβευομένων τῶν ἄλλων πόλεων πρὸς Ἀντώνιον εἰς Βιθυνίαν, ἧκον καὶ Ἰουδαίων οἱ δυνατοὶ, κατηγοροῦντες Φασαήλου τε καὶ Ἡρώδου, βίᾳ μὲν αὐτοὺς κρατεῖν τῶν πραγμάτων, ὄνομα δὲ μόνον περιεῖναι Ὑρκανῷ τίμιον. Πρὸς ἃ παρὼν Ἡρώδης, καὶ τεθεραπευκὼς οὐκ ὀλίγοις Ἀντώνιον χρήμασιν οὕτω διέθηκεν, ὡς μηδὲ λόγου τῶν ἐχθρῶν ἀνέχεσθαι. Καὶ τότε μὲν οὕτω διελύθησαν.

5. Αὖθις δὲ οἱ ἐν τέλει Ἰουδαίων ἑκατὸν ἄνδρες ἧκον εἰς τὴν πρὸς Ἀντιόχειαν Δάφνην ἐπ' Ἀντώνιον, ἤδη τῷ Κλεοπάτρας ἔρωτι δεδουλωμένον· οἳ, προστησάμενοι τοὺς ἀξιώματι καὶ λόγῳ σφῶν δυνατωτάτους, κατηγόρουν τῶν ἀδελφῶν. Ὑπήντα δὲ Μεσσαλᾶς ἀπολογούμενος, συμπαρεστῶτος Ὑρκανοῦ διὰ τὸ κῆδος. Καὶ Ἀντώνιος, ἀκούσας ἑκατέρων, Ὑρκανοῦ διεπυνθάνετο τοὺς ἐπιτηδειοτέρους ὄντας ἄρχειν. Τοῦ δὲ τοὺς περὶ τὸν Ἡρώδην προκρίναντος, ἡσθεὶς — ἦν γὰρ ἤδη καὶ ξένος αὐτοῖς πατρῷος, δεχθεὶς ὑπ' Ἀντιπάτρου φιλοφρόνως, ὅτε εἰς τὴν Ἰουδαίαν σὺν Γαβινίῳ παρέβαλε — τετράρχας ἀποδείκνυσι τοὺς ἀδελφοὺς, πᾶσαν διοικεῖν τὴν Ἰουδαίαν ἐπιτρέπων.

6. Προσαγανακτούντων δὲ τῶν πρέσβεων, πεντεκαίδεκα μὲν συλλαβὼν εἴργνυσιν, οὓς καὶ ἀνελεῖν ὥρμησε· τοὺς δὲ λοιποὺς μεθ' ὕβρεως ἀπήλασε. Πρὸς ὃ μείζων ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις γίνεται ταραχή· χιλίους γοῦν πάλιν ἔπεμψαν πρέσβεις εἰς Τύρον, ἔνθα διέτριβεν Ἀντώνιος ἐπὶ Ἱεροσολύμων ὡρμημένος· ἐπὶ τούτους κεκραγότας ἐκπέμπει τὸν ἄρχοντα τῶν Τυρίων, κολάζειν προστάξας, οὓς ἂν λάβῃ, συγκατασκευάζειν τε τὴν ἀρχὴν τοῖς ὑπ' αὐτοῦ κατασταθεῖσι τετράρχαις.

7. Πρὸ δὲ τούτου πολλὰ παρῄνει προελθὼν ἐπὶ τὸν αἰγιαλὸν Ἡρώδης σὺν Ὑρκανῷ, μήθ' ἑαυτοῖς ἀπωλείας αἰτίους, μήτε τῇ πατρίδι πολέμου γίνεσθαι φιλονεικοῦντας ἀκρίτως. Τῶν δὲ ἔτι μᾶλλον ἀγανακτούντων, Ἀντώνιος ἐκπέμψας ὁπλίτας πολλοὺς μὲν ἀπέκτεινε, πολλοὺς δὲ ἔτρωσεν· ὧν οἵτε πεσόντες ταφῆς, καὶ οἱ τραυματίαι θεραπείας ἠξιώθησαν ὑπὸ Ὑρκανοῦ· οὐ μὴν οἱ διαφυγόντες ἠρέμουν, ἀλλὰ τὰ κατὰ τὴν πόλιν συνταράσσοντες, παρώξυναν τὸν Ἀντώνιον, ὥστε καὶ τοὺς δεσμώτας ἀποκτεῖναι.

CAP. XIII. 1. Μετὰ δὲ ἔτη δύο, Βαρζαφάρνου, 83
τοῦ Πάρθων σατράπου, σὺν Πακόρῳ τῷ βασιλέως υἱῷ Συρίαν κατασχόντος, Λυσανίας διαδεδεγμένος ἤδη τὴν ἀρχήν, τοῦ πατρὸς τελευτήσαντος, Πτολεμαῖος δ' ἦν οὗτος ὁ Μινναίου, πείθει τὸν σατράπην, ὑποσχέσει χιλίων ταλάντων καὶ πεντακοσίων γυναικῶν, καταγαγεῖν ἐπὶ βασιλείᾳ τὸν Ἀντίγονον, καταλῦσαι δὲ τὸν Ὑρκανόν. Τούτοις ὑπαχθεὶς Πάκορος αὐτὸς μὲν ᾔει κατὰ τὴν παράλιον, Βαρζαφάρνην δὲ διὰ τῆς μεσογείου προσέταξεν ἐμβαλεῖν. Τῶν δ' ἐπιθαλαττίων Τύριοι Πάκορον οὐκ ἐδέξαντο, καίτοι Πτολεμαέων καὶ Σιδωνίων δεδεγμένων. Ὁ δὲ οἰνοχόῳ τινὶ τῶν βασιλικῶν ὁμωνύμῳ μοῖραν τῆς ἵππου παραδούς, ἐμβαλεῖν ἐκέλευσεν εἰς τὴν Ἰου-

δαίαν, κατασκεψόμενόν τε τὰ τῶν πολεμίων, καὶ πρὸς ἃ δέοι βοηθήσοντα Ἀντιγόνῳ.

2. Τῶν δὲ ληϊζομένων τὸν Κάρμηλον, πολλοὶ Ἰουδαῖοι συνδραμόντες πρὸς Ἀντίγονον, προθύμους ἑαυτοὺς ἐπὶ τὴν εἰςβολὴν παρεῖχον. Ὁ δὲ αὐτοὺς ἐπὶ τὸν καλούμενον Δρυμὸν προέπεμψε, τὸ χωρίον καταλαβεῖν· ἐν ᾧ γενομένης συμβολῆς, ὠσάμενοι τοὺς πολεμίους καὶ διώξαντες, ἐπὶ Ἱεροσολύμων ἔθεον· γενόμενοι δὲ πλείους, μέχρι τῶν βασιλείων προῆλθον. Ὑρκανοῦ δὲ καὶ Φασαήλου δεξαμένων αὐτοὺς κρατερῷ στίφει, μάχη κατὰ τὴν ἀγορὰν συῤῥήγνυται· καθ' ἣν τρεψάμενοι τοὺς πολεμίους οἱ περὶ Ἡρώδην, κατακλείουσιν εἰς τὸ ἱερὸν, καὶ φρουροὺς αὐτῶν ἄνδρας ἑξήκοντα ταῖς πλησίον οἰκίαις ἐγκατέστησαν. Τούτους μὲν οὖν ὁ στασιάζων πρὸς τοὺς ἀδελφοὺς λαὸς ἐπελθὼν ἐμπίπρησιν. Ἡρώδης δὲ τοῦ δήμου πολλοὺς κατ' ὀργὴν τῶν ἀπολωλότων ἀναιρεῖ συμβαλὼν, καὶ καθ' ἡμέραν ἐπεκθεόντων ἀλλήλοις κατὰ λόχους φόνος ἦν ἀδιάλειπτος.

3. Ἐνστάσης δὲ ἑορτῆς, ἣ Πεντηκοστὴ καλεῖται, τά τε περὶ τὸ ἱερὸν πάντα, καὶ ἡ πόλις ὅλη πλήθους τῶν ἀπὸ τῆς χώρας ἀναπίμπλαται τὸ πλέον ὁπλιτῶν. Καὶ Φασάηλος μὲν τὸ τεῖχος, Ἡρώδης δὲ μετ' οὐ πολλῶν ἐφρούρει τὰ βασίλεια, καὶ τοῖς πολεμίοις ἐπιδραμὼν ἀσυντάκτοις κατὰ τὸ προσάρ-
84 κτιον, πλείστους μὲν ἀναιρεῖ, τρέπεται δὲ πάντας· καὶ τοὺς μὲν εἰς τὴν πόλιν, τοὺς δὲ εἰς τὸ ἱερὸν, τοὺς δὲ εἰς τὸ ἔξω χαράκωμα συγκλείει. Καὶ ἐν τούτῳ διαλλακτὴν μὲν Ἀντίγονος παρακαλεῖ Πάκορον εἰςαφεῖναι. Φασάηλος δὲ πεισθεὶς τῇ πόλει καὶ ξενίᾳ τὸν Πάρθον εἰςδέχεται μετὰ πεντακοσίων ἱππέων, προφάσει μὲν ἥκοντα τοῦ παῦσαι τὴν στάσιν, τὸ δ' ἀληθὲς Ἀντιγόνῳ βοηθεῖν. Τὸν γοῦν Φασάηλον ἐνεδρεύων ἀνέπεισε πρὸς Βαρζαφάρνην πρεσβεύσασθαι περὶ καταλύσεως, καίτοι γε πολλὰ ἀποτρέ-

ποντος Ἡρώδου, καὶ παραινοῦντος ἀνελεῖν τὸν ἐπίβουλον, ἀλλὰ μὴ ταῖς ἐπιβουλαῖς ἑαυτὸν ἐκδιδόναι· φύσει γὰρ ἀπίστους εἶναι τοὺς Βαρβάρους. Ἔξεισι δὲ Ὑρκανὸν παραλαβὼν καὶ Πάκορος, ὡς ἧττον ὑποπτεύοιτο, καὶ καταλιπὼν παρ' Ἡρώδῃ τινὰς τῶν Ἐλευθέρων καλουμένων ἱππέων, τοῖς λοιποῖς προέπεμπε Φασάηλον.

4. Ὡς δ' ἐγένοντο κατὰ τὴν Γαλιλαίαν, τοὺς μὲν ἐπιχωρίους ἀφεστῶτας καὶ ἐν τοῖς ὅπλοις ὄντας καταλαμβάνουσιν, τῷ σατράπῃ δ' ἐνετύγχανον πανούργως σφόδρα, καὶ ταῖς φιλοφρονήσεσι τὴν ἐπιβουλὴν καλύπτειν ἐνεκελεύοντο. Δῶρα γοῦν δοὺς αὐτοῖς, ἔπειτ' ἀναχωροῦντας ἐλόχα. Τοῖς δὲ αἴσθησις γίνεται τῆς ἐπιβουλῆς, καταχθεῖσιν εἴς τι τῶν παραθαλασσίων χωρίων, ὃ καλεῖται Ἐκδίππων· ἐκεῖ γὰρ τήν τε ὑπόσχεσιν ἤκουσαν τῶν χιλίων ταλάντων, καὶ ὡς Ἀντίγονος τὰς πλείστας τῶν παρ' αὐτοῖς γυναικῶν ἐν ταῖς πεντακοσίαις καθωσίωσε Πάρθοις. Ὅτι δὲ προλοχίζοιντο μὲν αὐτοῖς αἱ νύκτες ὑπὸ τῶν Βαρβάρων ἀεὶ, πάλαι δ' ἂν καὶ συνελήφθησαν, εἰ μὴ περιέμενον ἐν Ἱεροσολύμοις Ἡρώδην πρότερον λαβεῖν, ὡς μὴ προπυθόμενος τὰ κατ' αὐτοὺς φυλάξαιτο. Ταῦτ' οὐκ ἔτι λόγος ἦν μόνον, ἀλλὰ καὶ φύλακας ἤδη οὐ πόῤῥωθεν αὐτῶν ἔβλεπον.

5. Οὐ μὴν Φασάηλος — καίτοι πολλὰ παραινοῦντος Ὀφελλίου φεύγειν, πέπυστο γὰρ οὗτος παρὰ Σαραμάλλα τοῦ πλουσιωτάτου τότε Σύρων τὴν σύνταξιν τῆς ἐπιβουλῆς ὅλην — καταλιπεῖν Ὑρκανὸν ὑπέμεινεν, ἀλλὰ τῷ σατράπῃ προσελθὼν ἄντικρυς ὠνείδιζε τὴν ἐπιβουλὴν, καὶ μάλισθ' ὅτι γένοιτο τοιοῦτος χρημάτων ἕνεκεν. Πλείω γε μὴν αὐτὸς ὑπὲρ σωτηρίας δώσειν ὑπισχνεῖτο, ὧν Ἀντίγονος ὑπὲρ βασιλείας ὑπέσχηται. Πρὸς ταῦτα πανοῦργος ὁ Πάρθος ἀπολογίαις τε καὶ ὅρκοις ἀποσκευασάμενος τὴν ὑποψίαν, ᾤχετο πρὸς Πάκορον. Εὐθέως δὲ

τῶν καταλειφθέντων Πάρθων οἷς προςετέτακτο Φασάηλόν τε καὶ Ὑρκανὸν συνελάμβανον, τά τε ἄλλα πρὸς τῇ ἐπιορκίᾳ καὶ τὸ ἄπιστον αὐτοῖς καταρωμένους.

6. Ἐν δὲ τούτῳ καὶ τὸν Ἡρώδην ὁ πεμφθεὶς οἰνοχόος ἐπεβούλευε συλλαβεῖν, ἔξω τοῦ τείχους
85 ἀπατήσας προελθεῖν, ὥςπερ ἐντολὰς εἶχεν. Ὁ δ' ἀπ' ἀρχῆς ὑποπτεύων τοὺς Βαρβάρους, καὶ τότε πεπυσμένος εἰς τοὺς πολεμίους ἐμπεπτωκέναι τὰ μηνύοντα τὴν ἐπιβουλὴν αὐτῷ γράμματα, προελθεῖν οὐκ ἐβούλετο, καίτοι μάλα ἀξιοπίστως τοῦ Πακόρου φάσκοντος, δεῖν αὐτὸν ὑπαντῆσαι τοῖς τὰς ἐπιστολὰς κομίζουσιν· οὔτε γὰρ ἑαλωκέναι τοῖς πολεμίοις αὐτὰς, καὶ περιέχειν οὐκ ἐπιβουλὴν, ἀλλ' ὁπόσα διεπράξατο Φασάηλος. Ἔτυχεν δὲ παρ' ἄλλων προακηκοὼς τὸν ἀδελφὸν συνειλημμένον, καὶ προςήει Ὑρκανοῦ θυγάτηρ Μαριάμμη, συνετωτάτη γυναικῶν, καταντιβολοῦσα μὴ προϊέναι, μηδὲ πιστεύειν ἑαυτὸν ἤδη φανερῶς ἐπιχειροῦσι τοῖς Βαρβάροις.

7. Ἔτι δὲ τῶν περὶ Πάκορον σκεπτομένων, πῶς ἂν κρύφα τὴν ἐπιβουλὴν ἀπαρτίσειαν, οὐ γὰρ ἐκ τοῦ φανεροῦ οἷόν τε ἦν ἀνδρὸς οὕτω συνετοῦ περιγενέσθαι, προλαβὼν Ἡρώδης μετὰ τῶν οἰκειοτάτων προςώπων, νύκτωρ ἐπὶ Ἰδουμαίας ἐχώρει λάθρα τῶν πολεμίων. Αἰσθόμενοι δὲ οἱ Πάρθοι κατεδίωκον. Καὶ ἐκεῖνος τὴν μὲν μητέρα καὶ τὴν ἀδελφὴν καὶ τὴν καθωμολογημένην παῖδα μετὰ τῆς μητρὸς καὶ τοῦ νεωτάτου τῶν ἀδελφῶν προςτάξας ὁδεύειν, αὐτὸς ἀσφαλῶς μετὰ τῶν θεραπόντων ἀνέκοπτε τοὺς Βαρβάρους· καὶ πολλοὺς κατὰ πᾶσαν προςβολὴν ἀποκτείνας, εἰς Μασάδαν τὸ φρούριον ἀφῖκτο.

8. Καὶ βαρυτέρους κατὰ τὴν φυγὴν Πάρθων Ἰουδαίους ἐπείρασεν, ἐνοχλήσαντας μὲν διηνεκῶς, ἀπὸ δ' ἑξήκοντα τῆς πόλεως σταδίων καὶ παραταξαμένους ἐπιεικῶς πολὺν χρόνον. Ἔνθα κρατήσας

Ἡρώδης καὶ πολλοὺς αὐτῶν ἀποκτείνας, αὖθις εἰς μνήμην τοῦ κατορθώματος ἔκτισε τὸ χωρίον, καὶ βασιλείοις τε πολυτελεστάτοις ἐκόσμησε, καὶ ἀκρόπολιν ὀχυρωτάτην ἀνεδείματο, Ἡρώδειόν τε ἐκάλεσεν ἀφ' ἑαυτοῦ. Τηνικαῦτά γε μὴν φεύγοντες, καθ' ἡμέραν αὐτῷ προςεγίνοντο πολλοί. Καὶ κατὰ Θρῆσσαν γενομένῳ τῆς Ἰδουμαίας Ἰώσηπος ἀδελφὸς ὑπαντήσας, συνεβούλευε 'τοὺς πολλοὺς τῶν ἑπομένων ἀποφορτίσασθαι· μὴ γὰρ ἂν τοσοῦτον ὄχλον δέξασθαι τὴν Μασάδαν.' Ἦσαν δ' ὑπὲρ ἐννεακιςχιλίους. Πεισθεὶς οὖν Ἡρώδης τοὺς μὲν βαρυτέρους τῆς χρείας διαφῆκεν ἀνὰ τὴν Ἰδουμαίαν, δοὺς ἐφόδια· 86
μετὰ δὲ τῶν ἀναγκαιοτάτων τοὺς ἀλκιμωτάτους κατασχὼν, εἰς τὸ φρούριον διασώζεται. Καταλιπὼν δ' ἐνταῦθα ταῖς γυναιξὶν ὀκτακοσίους φύλακας, καὶ διαρκῆ τὰ ἐπιτήδεια πρὸς πολιορκίαν, αὐτὸς εἰς τὴν Ἀραβικὴν Πέτραν ἠπείγετο.

9. Πάρθοι δ' ἐν Ἱεροσολύμοις ἐφ' ἁρπαγὴν τραπόμενοι, τῶν φυγόντων εἰς τὰς οἰκίας εἰςέπιπτον καὶ τὸ βασίλειον, ἀπεχόμενοι μόνων τῶν Ὑρκανοῦ χρημάτων. Ἦν δ' οὐ πλείω τριακοσίων ταλάντων. Ἐπετύγχανον δὲ καὶ τῶν ἄλλων, οὐχ ὅσοις ἤλπισαν· ὁ γὰρ Ἡρώδης ἐκ πολλοῦ τὴν ἀπιστίαν τῶν Βαρβάρων ὑφορώμενος, εἰς τὴν Ἰδουμαίαν τὰ λαμπρότατα τῶν κειμηλίων προανεσκεύαστο, καὶ τῶν αὐτῷ προςεχόντων ὁμοίως ἕκαστος. Πάρθοι δὲ μετὰ τὰς ἁρπαγὰς ἐπὶ τοσοῦτον ὕβρεως ἐχώρησαν, ὡς ἐμπλῆσαι μὲν ἀκηρύκτου πολέμου τὴν χώραν ἅπασαν, ἀνάστατον δὲ ποιῆσαι τὴν Μαρισσαίων πόλιν, μὴ μόνον τε καταστῆσαι βασιλέα Ἀντίγονον, ἀλλὰ καὶ παραδοῦναι αὐτῷ Φασάηλον καὶ Ὑρκανὸν δεσμώτας αἰκίσασθαι. Ὁ δὲ Ὑρκανοῦ μὲν προςπεσόντος αὐτὸς τὰ ὦτα λωβᾶται τοῖς ὀδοῦσιν, ὡς μηδὲ αὖθις ἐν μεταβολῇ ποτὲ δύναιτο τὴν ἀρχιερωσύνην ἀναλαβεῖν· δεῖ γὰρ ὁλοκλήρους ἀρχιερᾶσθαι.

10. Τῆς Φασαήλου δὲ ἀρετῆς ὑστερίζει, φθά-

σαντος πέτρᾳ προσαράξαι τὴν κεφαλὴν, ὥς γε σιδήρου καὶ χειρῶν εἴργετο. Καὶ ἐκεῖνος μὲν, Ἡρώδου γνήσιον ἑαυτὸν ἀποδείξας ἀδελφὸν, καὶ Ὑρκανὸν ἀγεννέστατον, ἀνδρειότατα θνήσκει, ποιησάμενος, τὴν καταστροφὴν τοῖς κατὰ τὸν βίον ἔργοις πρέπουσαν. Κατέχει δὲ καὶ ἄλλος λόγος, ὡς ἀνενέγκαι μὲν ἐκ τῆς τότε πληγῆς, πεμφθεὶς δ' ἰατρὸς ὑπ' Ἀντιγόνου, θεραπεῦσαι δῆθεν αὐτὸν, ἐμπλήσειε τὸ τραῦμα δηλητηρίων φαρμάκων, καὶ διαφθείρειεν αὐτόν. Ὁπότερον δ' ἂν ἀληθὲς ᾖ, τὴν ἀρχὴν ἔχει λαμπράν. Φασὶ γοῦν αὐτὸν, καὶ πρὶν ἐκπνεῦσαι, πυθόμενον παρὰ γυναίου τινὸς, ὡς Ἡρώδης διαφύγοι, "Νῦν," εἰπεῖν, "εὔθυμος ἄπειμι, τὸν μετελευσόμενον τοὺς ἐχθροὺς ζῶντα καταλιπών."

11. Ὁ μὲν οὖν οὕτως τελευτᾷ. Πάρθοι δὲ, καίτοι διημαρτηκότες, ὧν μάλιστα ἐπεθύμουν, γυναικῶν, καθιστᾶσι μὲν ἐν Ἱεροσολύμοις Ἀντιγόνῳ τὰ πράγματα, δεσμώτην δὲ Ὑρκανὸν ἀνάγουσιν εἰς τὴν Παρθυηνήν.

87 *CAP. XIV.* 1. Ἡρώδης δὲ συντονώτερον ἤλαυνεν εἰς τὴν Ἀραβίαν, ὡς ἔτι τοῦ ἀδελφοῦ ζῶντος ἐπειγόμενος χρήματα παρὰ τοῦ βασιλέως λαβεῖν, οἷς μόνοις πείσειν ὑπὲρ Φασαήλου τὴν τῶν Βαρβάρων ἤλπισε πλεονεξίαν. Ἐλογίζετο γὰρ, εἰ τῆς πατρῴας φιλίας ἀμνημονέστερος ὁ Ἄραψ γένοιτο, καὶ τοῦ δοῦναι δωρεὰν μικρολογώτερος, δανείσασθαι παρ' αὐτοῦ τὰ λύτρα ῥύσιον θεὶς τὸν τοῦ λυτρουμένου παῖδα· καὶ γὰρ ἐπήγετο τὸν ἀδελφιδοῦν ὄντα ἐτῶν ἑπτὰ, τάλαντα δὲ ἦν ἕτοιμος τριακόσια δοῦναι, προστησόμενος Τυρίους παρακαλοῦντας. Τὸ χρεὼν δ' ἄρα τὴν αὐτοῦ σπουδὴν ἐφθάκει, καὶ Φασαήλου τεθνηκότος εἰς κενὸν Ἡρώδης φιλάδελφος ἦν· οὐ μὴν οὐδὲ παρὰ Ἄραψιν ηὕρισκε φιλίαν μένουσαν. Ὁ γοῦν βασιλεὺς αὐτῶν Μάλιχος, προπέμψας κατὰ τάχος ἐκ τῆς χώρας προσέτασσεν ἀναστρέφειν, προ-

φάσει μὲν χρώμενος Πάρθοις, ἐπικηρυκεύσασθαι
γὰρ αὐτοὺς ἐκβαλεῖν Ἡρώδην τῆς Ἀραβίας, τῷ δὲ
ὄντι προαιρούμενος κατασχεῖν τὰ Ἀντιπάτρου χρέα,
καὶ μηδὲν εἰς τὰς ἐκείνου δωρεὰς ἀντιπαρασχεῖν
χρήζουσι τοῖς τέκνοις δυςωπεῖσθαι. Συμβούλοις δ'
ἐχρῆτο τῆς ἀναιδείας τοῖς ὁμοίως ἀποστερεῖν τὰς
Ἀντιπάτρου παρακαταθήκας ἐθέλουσιν· ἦσαν δὲ περὶ
αὐτὸν οἱ δυνατώτατοι.

2. Ἡρώδης μὲν δὴ πολεμίους τοὺς Ἄραβας εὑ-
ρὼν, δι' ἃ φιλτάτους ἤλπισε, καὶ τοῖς ἀγγέλοις ἀπο-
κρινάμενος, ὡς ὑπηγόρευε τὸ πάθος, ὑπέστρεψεν
ἐπ' Αἴγυπτον. Καὶ τὴν μὲν πρώτην ἑσπέραν κατά
τι τῶν ἐπιχωρίων ἱερῶν αὐλίζεται, τοὺς ἀπολει-
φθέντας ἀναλαβών· τῇ δ' ἑξῆς εἰς Ῥινοκούρουραν
προελθόντι τὰ περὶ τὴν τοῦ ἀδελφοῦ τελευτὴν ἀπαγ-
γέλλεται. Προςλαβὼν δὲ πένθους ὅσον ἦν, ὡς ἀπε- 88
θήκατο φροντίδας, ᾔει προσωτέρω. Καὶ δὴ βρα-
δέως ὁ Ἄραψ μετανοήσας, ἔπεμψε διὰ τάχους τοὺς
ἀνακαλέσοντας τὸν ὑβρισμένον. Ἔφθανε δὲ καὶ
τούτους Ἡρώδης εἰς Πηλούσιον ἀφικόμενος, ἔνθα
τῆς παρόδου μὴ τυγχάνων ὑπὸ τῶν ἐφορμούντων,
τοῖς ἡγεμόσιν ἐντυγχάνει. Καὶ ἐκεῖνοι, τήν τε φή-
μην καὶ τὸ ἀξίωμα τοῦ ἀνδρὸς αἰδεσθέντες, προ-
πέμπουσιν αὐτὸν εἰς Ἀλεξάνδρειαν. Ὁ δὲ παρελ-
θὼν εἰς τὴν πόλιν ἐδέχθη μὲν λαμπρῶς ὑπὸ Κλε-
οπάτρας, στρατηγὸν ἐλπιζούσης ἕξειν εἰς ἃ παρε-
σκευάζετο. Διακρουσάμενος δὲ τὰς παρακλήσεις τῆς
βασιλίδος, καὶ μήτε τὴν ἀκμὴν τοῦ χειμῶνος ὑπο-
δείσας, μήτε τοὺς κατὰ τὴν Ἰταλίαν θορύβους, ἐπὶ
Ῥώμης ἔπλει.

3. Κινδυνεύσας δὲ περὶ τὴν Παμφυλίαν, καὶ
τοῦ φόρτου τὸ πλεῖον ἐκβαλὼν, μόλις εἰς Ῥόδον
διασώζεται, σφόδρα τῷ πρὸς Κάσσιον πολέμῳ τετρυ-
χωμένην. Δεχθεὶς δὲ ὑπὸ Πτολεμαίου καὶ Σαππι-
νίου τῶν φίλων, καίπερ ἐν ἀπορίᾳ χρημάτων ὢν,
ναυπηγεῖται τριήρη μεγίστην· ἐν ᾗ μετὰ τῶν φίλων

εἰς Βρεντέσιον καταπλεύσας, καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ῥώμην ἐπειχθεὶς, πρώτῳ διὰ τὴν πατρῴαν φιλίαν ἐνετύγχανεν Ἀντωνίῳ, καὶ τάς τε αὑτοῦ καὶ τοῦ γένους συμφορὰς ἐκδιηγεῖται· ὅτι τε, τοὺς οἰκειοτάτους ἐν φρουρίῳ καταλιπὼν πολιορκουμένους, διὰ χειμῶνος πλεύσειεν ἐπ' αὐτὸν ἱκέτης.

4. Ἀντωνίου δὲ ἥπτετο πρὸς τὴν μεταβολὴν οἶκτος, καὶ κατὰ μνήμην μὲν τῆς Ἀντιπάτρου ξενίας, τὸ δὲ ὅλον, καὶ διὰ τὴν αὐτοῦ τοῦ παρόντος ἀρετὴν, ἔγνωκε τότε βασιλέα καθιστᾶν Ἰουδαίων, ὃν πρότερον αὐτὸς ἐποίησε τετράρχην. Ἐνῆγε δ' οὐκ ἔλαττον τῆς εἰς Ἡρώδην φιλοτιμίας ἡ πρὸς Ἀντίγονον διαφορά· τοῦτον γὰρ δὴ στασιώδη τε καὶ Ῥωμαίων ἐχθρὸν ὑπελάμβανε. Καίσαρα μὲν οὖν εἶχεν ἑτοιμότερον αὐτοῦ, τὰς Ἀντιπάτρου στρατείας ἀνανεούμενον, ἃς κατ' Αἴγυπτον αὐτοῦ τῷ πατρὶ συνδιήνεγκε, τήν τε ξενίαν, καὶ τὴν ἐν ἅπασιν εὔνοιαν, ὁρῶντά γε μὴν καὶ τὸ Ἡρώδου δραστήριον. Συνῆγε δὲ καὶ τὴν βουλὴν, ἐν ᾗ Μεσσάλας καὶ μετ' αὐτὸν Ἀτρατῖνος, παραστησάμενοι τὸν Ἡρώδην, τάς τε πατρῴας εὐεργεσίας, καὶ τὴν αὐτοῦ πρὸς Ῥωμαίους εὔνοιαν διεξῄεσαν, ἀποδεικνύντες ἅμα καὶ πολέμιον τὸν Ἀντίγονον, ἐξ ὧν οὐ μόνον διηνέχθη τάχιον, ἀλλ' ὅτι καὶ τότε διὰ Πάρθων λάβοι τὴν ἀρχὴν, Ῥωμαίους ὑπεριδών. Τῆς δὲ συγκλήτου πρὸς ταῦτα κεκινημένης, ὡς παρελθὼν Ἀντώνιος καὶ πρὸς τὸν κατὰ Πάρθων πόλεμον βασιλεύειν Ἡρώδην συμφέρειν ἔλεγεν, ἐπιψηφίζονται πάντες. Λυθείσης δὲ τῆς βουλῆς, Ἀντώνιος μὲν καὶ Καῖσαρ μέσον ἔχοντες Ἡρώδην ἐξῄεσαν· προῆγον δὲ σὺν ταῖς
89 ἄλλαις ἀρχαῖς οἱ ὕπατοι, θύσοντές τε καὶ τὸ δόγμα ἀναθήσοντες εἰς τὸ Καπετώλιον. Τὴν δὲ πρώτην Ἡρώδου τῆς βασιλείας ἡμέραν Ἀντώνιος εἱστία αὐτόν.

CAP. XV. 1. Παρὰ δὲ τὸν χρόνον τοῦτον Ἀντίγονος ἐπολιόρκει τοὺς ἐν Μασάδᾳ, τοῖς μὲν ἄλλοις

ἐπιτηδείοις διαρκουμένους, σπανίζοντας δὲ ὕδατος. Διὸ καὶ Ἰώσηπος, ὁ ἀδελφὸς Ἡρώδου, σὺν διακοσίοις τῶν οἰκείων δρασμὸν ἐβουλεύετο εἰς Ἄραβας, ἀκηκοὼς τῶν εἰς Ἡρώδην ἁμαρτημάτων Μαλίχῳ μεταμέλειν. Καὶ ἂν ἔφθη καταλιπὼν τὸ φρούριον, εἰ μὴ περὶ τὴν νύκτα τῆς ἐξόδου συνέβη πλεῖστον ὗσαι· τῶν γὰρ ἐκδοχείων ὕδατος ἀναπλησθέντων, οὐκ ἔτ' ἔχρῃζε φυγῆς, ἀλλ' ἐπεξῄεσαν ἤδη τοῖς περὶ Ἀντίγονον, καὶ τὰ μὲν φανερῶς συμπλεκόμενοι, τὰ δὲ λοχῶντες συχνοὺς διέφθειρον. Οὐ μὴν ἐν ἅπασιν εὐστόχουν, ἔστι δ' ὅπῃ καὶ αὐτοὶ πταίοντες ἀνέστρεφον.

2. Καὶ ἐν τούτῳ Βεντίδιος ὁ Ῥωμαίων στρατηγὸς, πεμφθεὶς ἐκ Συρίας Πάρθους ἀνείργειν, μετ' ἐκείνους εἰς Ἰουδαίαν παρέβαλεν, λόγῳ μὲν ὡς βοηθήσων τοῖς περὶ Ἰώσηπον, ἔργῳ δ' Ἀντίγονον ἀργυριούμενος. Ἔγγιστα γοῦν Ἱεροσολύμων αὐλισάμενος, ὡς ἐνεπλήσθη χρημάτων, αὐτὸς μὲν ἀνεχώρει μετὰ τῆς πλείστης δυνάμεως, Σίλωνα δὲ σὺν μέρει τινὶ καταλέλοιπεν, ὡς μὴ κατάφωρον τὸ λῆμμα ποιήσειε πάντας ἀπαναστήσας. Ἀντίγονος δὲ πάλιν ἐλπίζων Πάρθους ἐπαμύνειν αὐτῷ, καὶ Σίλωνα τέως ἐθεράπευσεν, ὡς μηδὲν ἐνοχλοίη πρὸς τὰς ἐλπίδας.

3. Ἤδη δὲ Ἡρώδης καταπεπλευκὼς ἐκ τῆς Ἰταλίας εἰς Πτολεμαΐδα, καὶ συναγηοχὼς δύναμιν οὐκ ὀλίγην ξένων τε καὶ ὁμοφύλων, ἤλαυνε διὰ τῆς Γαλιλαίας ἐπ' Ἀντίγονον, συλλαμβανόντων Βεντιδίου τε καὶ Σίλωνος, οὓς Δέλλιος, ὑπ' Ἀντωνίου πεμφθεὶς, Ἡρώδην συγκατάγειν ἔπεισεν. Ἐτύγχανε δὲ Βεντίδιος μὲν ἐν ταῖς πόλεσι τὰς διὰ Πάρθους ταραχὰς καθιστάμενος. Σίλων δ' ἐν Ἰουδαίᾳ, χρήμασιν ὑπ' Ἀντιγόνου διεφθαρμένος. Οὐ μὴν Ἡρώδης ἰσχύος ἠπόρει, προϊόντι δὲ αὐτῷ καθ' ἡμέραν ηὔξετο τὰ τῆς δυνάμεως, καὶ πλὴν ὀλίγων πᾶσα Γαλιλαία προσέθετο. Προέκειτο μὲν οὖν τὸ ἀναγκαιό- 90
τατον ἀγώνισμα, Μασάδα, καὶ τὸ ῥύσασθαι πρῶ-

τον τοὺς οἰκείους ἐκ τῆς πολιορκίας. Γίνεται δ' ἐμπόδιον Ἰόππη· ταύτην γὰρ ἐχρῆν πολεμίαν οὖσαν ἐξελεῖν πρότερον, ὡς μὴ χωροῦντος ἐπὶ Ἱεροσολύμων κατὰ νώτου τι τοῖς ἐχθροῖς ἔρυμα καταλίποιτο. Συνῆπτε δὲ καὶ Σίλων ἀσμένως τῆς ἀπαναστάσεως πρόφασιν εὑρών. Ὡς δὲ προσέκειντο Ἰουδαῖοι διώκοντες, ἐπὶ τούτους Ἡρώδης ἐκδραμὼν μετ' ὀλίγου στίφους τρέπεται ταχέως, καὶ Σίλωνα διασώζει κακῶς ἀμυνόμενον.

4. Ἔπειτα Ἰόππην ἑλὼν, πρὸς τὴν Μασάδαν ῥυσόμενος τοὺς οἰκείους ἠπείγετο. Καὶ τῶν ἐπιχωρίων, οὓς μὲν πατρῴα φιλία προςῆγεν, οὓς δὲ τὸ αὐτοῦ κλέος, οὓς δὲ τῆς ἐξ ἀμφοῖν εὐεργεσίας ἀμοιβὴ, πλείστους γε μὴν ἐλπὶς, ὡς ἐκ βασιλέως βεβαίου. Δυςκίνητος δὲ ἤδη δύναμις ἤθροιστο. Προϊόντα δ' Ἀντίγονος ἐνήδρευε, τὰ ἐπιτήδεια τῶν παρόδων προλοχίζων, ἐν οἷς οὐδὲν ἢ μικρὰ τοὺς πολεμίους ἔβλαπτεν. Ἡρώδης δὲ τούς τε ἐκ Μασάδας οἰκείους παραλαβὼν ῥᾳδίως καὶ Ῥῆσσαν τὸ φρούριον, ᾔει πρὸς τὰ Ἱεροσόλυμα. Συνῆπτε δὲ αὐτῷ τὸ μετὰ Σίλωνος στρατιωτικὸν, καὶ πολλλοὶ τῶν ἐκ τῆς πόλεως, τὴν ἰσχὺν καταπλαγέντες.

5. Στρατοπεδευσαμένου δὲ κατὰ τὸ πρὸς δύσιν κλίμα τοῦ ἄστεος, οἱ ταύτῃ φύλακες ἐτόξευόν τε καὶ ἐξηκόντιζον αὐτούς· ἄλλοι δὲ, κατὰ στίφος ἐκθέοντες, ἀπεπειρῶντο τῶν προτεταγμένων. Ἡρώδης δὲ τὸ μὲν πρῶτον κηρύσσειν ἐπὶ τὸ τεῖχος ἐκέλευεν, ὡς ἐπ' ἀγαθῷ τε πάρῃει τοῦ δήμου καὶ ἐπὶ σωτηρίᾳ τῆς πόλεως, μηδὲν μήτε τοὺς φανεροὺς ἐχθροὺς ἀμυνόμενος, δώσων δὲ καὶ τοῖς διαφορωτάτοις ἀμνηστίαν. Ἐπεὶ δὲ ἀντιπαρηγοροῦντες οἱ περὶ τὸν Ἀντίγονον, οὔτε κατακούειν τῶν κηρυγμάτων εἴων τινὰς, οὔτε μεταβάλλεσθαι, τὸ λοιπὸν ἀμύνασθαι τοὺς ἀπὸ τοῦ τείχους ἐπέτρεπε τοῖς σφετέροις· οἱ δὲ ταχέως ἅπαντας ἀπὸ τῶν πύργων ἐτρέψαντο τοῖς βέλεσιν.

6. Ἔνθα δὴ καὶ Σίλων ἀπεκαλύψατο τὴν δω-
ροδοκίαν. Ἐπισκευασάμενος γὰρ πολλοὺς τῶν στρα-
τιωτῶν, σπάνιν ἐπιτηδείων ἀναβοᾷν, καὶ χρήματά
τε εἰς τροφὰς ἀπαιτεῖν, ἀπαγαγεῖν τε σφᾶς χειμε-
ριοῦντας εἰς τοὺς ἐπιτηδείους τόπους, ἐπειδὴ τὰ
περὶ τὴν πόλιν ἦν ἔρημα, πάντα τῶν περὶ Ἀντί-
γονον προανασκευασαμένων, ἐκίνει τε τὸ στρατόπε-
δον, καὶ ἀναχωρεῖν ἐπειρᾶτο. Ἡρώδης δ' ἐντυγ- 91
χάνων τοῖς τε ὑπὸ τὸν Σίλωνα ἡγεμόσι, καὶ κατὰ
πλῆθος τοῖς στρατιώταις, ἐδεῖτο 'μὴ καταλιπεῖν αὐ-
τὸν, ὑπό τε Καίσαρος καὶ Ἀντωνίου καὶ τῆς συγ-
κλήτου προπεμφθέντα· λύσειν γὰρ αὐθημερὸν αὐ-
τῶν τὰς ἀπορίας.' Καὶ μετὰ τὴν δέησιν εὐθέως
ὁρμήσας αὐτὸς εἰς τὴν χώραν, τοσαύτην αὐτοῖς ἐπι-
τηδείων ἀφθονίαν ἐκόμισεν, ὡς πάσας ἀποκόψαι
τὰς Σίλωνος προφάσεις. Εἴς τε τὰς ἑξῆς ἡμέρας
μὴ διαλιπεῖν τὴν χορηγίαν προνοούμενος, ἐπέστελλε
τοῖς περὶ Σαμάρειαν — ᾠκείωτο δὲ ἡ πόλις αὐτῷ —
σῖτον καὶ οἶνον καὶ ἔλαιον καὶ βοσκήματα κατάγειν
εἰς Ἱεριχοῦντα. Ταῦτ' ἀκούσας Ἀντίγονος διέπεμ-
ψε κατὰ τὴν χώραν, εἴργειν καὶ λοχᾷν τοὺς σιτη-
γοὺς κελεύων. Οἱ δ' ὑπήκουον, καὶ πολὺ πλῆθος
ὁπλιτῶν ὑπὸ τὴν Ἱεριχοῦντα συνηθροίσθη· διεκα-
θίζοντο δ' ἐπὶ τῶν ὀρέων παραφυλάσσοντες τοὺς τὰ
ἐπιτήδεια ἐκκομ[illegible]ας. Οὐ μὴν Ἡρώδης ἠρέμει,
δέκα δὲ σπείρας [illegible]λαβὼν, ὧν πέντε μὲν Ῥωμαϊ-
καὶ, πέντε δὲ Ἰουδαίων ἦσαν, ἔχουσαι καὶ μισθο-
φόρους μιγάδας, πρὸς οἷς ὀλίγους τῶν ἱππέων πα-
ραλαβὼν, ἐπὶ τὴν Ἱεριχοῦντα παραγίνεται. Καὶ
τὴν μὲν πόλιν καταλελειμμένην εὑρίσκει, πεντακο-
σίους δὲ τὰ ἄκρα κατειληφότας σὺν γυναιξὶ καὶ
γενεαῖς. Αὐτοὺς μὲν οὖν ἀπολύει λαβών· Ῥωμαῖοι
δ' εἰςπεσόντες, τὸ λοιπὸν ἄστυ διήρπασαν, πλήρεις
καταλαμβάνοντες τὰς οἰκίας παντοίων κειμηλίων.
Ἱεριχοῦντος μὲν οὖν φρουρὰν ὁ βασιλεὺς καταλι-
πὼν ὑπέστρεψε, καὶ χειμεριοῦσαν τὴν Ῥωμαίων

στρατιὰν εἰς τὰς προςκεχωρηκυίας πόλεις διαφῆκεν, Ἰδουμαίαν καὶ Γαλιλαίαν καὶ Σαμάρειαν. Ἐπέτυχε δὲ καὶ Ἀντίγονος παρὰ τῆς Σίλωνος δωροδοκίας, ὑποδέξασθαι τοῦ στρατοῦ· μοῖραν ἐν Λύδδοις, θεραπεύων Ἀντώνιον.

CAP. XVI. 1. Καὶ Ῥωμαῖοι μὲν ἐν ἀφθόνοις διῆγον, ἀνειμένοι τῶν ὅπλων. Ἡρώδης δ' οὐκ ἠρέμει, ἀλλὰ τὴν μὲν Ἰδουμαίαν διςχιλίοις πεζοῖς, καὶ τετρακοσίοις ἱππεῦσι διελάμβανε, πέμψας τὸν ἀδελφὸν Ἰώσηπον, ὡς μή τι νεωτερισθείη πρὸς Ἀντιγόνου· αὐτὸς δὲ τὴν μητέρα, καὶ ὅσους ἐκ Μασάδας οἰκείους ἐξήγαγε, μεταγαγὼν εἰς Σαμάρειαν, καὶ καταστησάμενος ἀσφαλῶς, ᾔει τὰ λοιπὰ τῆς Γαλιλαίας καταστρεψόμενος, καὶ τὰς Ἀντιγόνου φρουρὰς ἐξελάσων.

92 2. Πρὸς δὲ τὴν Σέπφωριν ἐν νιφετῷ σφοδροτάτῳ διανύσας, ἀκμητὶ παραλαμβάνει τὴν πόλιν, πρὸ τῆς ἐφόδου τῶν φυλάκων ἐκφυγόντων. Ἔνθα τοὺς ἑπομένους ὑπὸ τοῦ χειμῶνος κακωθέντας ἀναλαβὼν, πολλὴ δ' ἦν ἀφθονία τῶν ἐπιτηδείων, ἐπὶ τοὺς ἐν τοῖς σπηλαίοις ὥρμητο λῃστὰς, οἳ, πολλὴν τῆς χώρας κατατρέχοντες, οὐκ ἐλάττω κακὰ πολέμου διετίθεσαν τοὺς ἐπιχωρίους. Προπέμψας δὲ πεζῶν τρία τέλη, καὶ μίαν ἴλην ἱππέων π[illegible] Ἄρβηλα κώμην, αὐτὸς μετὰ τεσσαράκοντα ἡμέρ[illegible] ἐπῆλθε μετὰ τῆς λοιπῆς δυνάμεως. Οὐ μὴν πρὸς τὴν ἔφοδον ἔδεισαν οἱ πολέμιοι, μετὰ δὲ τῶν ὅπλων ἀπήντων, τὴν μὲν ἐμπειρίαν πολεμικὴν ἔχοντες, τὸ δὲ θράσος λῃστρικόν. Συμβαλόντες γοῦν τῷ σφετέρῳ δεξιῷ τὸ εὐώνυμον κέρας τῶν Ἡρώδου τρέπονται. Περιελθὼν δὲ ταχέως Ἡρώδης ἐκ τοῦ καθ' ἑαυτὸν δεξιοῦ, προςεβοήθει, καὶ τὸ μὲν οἰκεῖον ἐπέστρεφεν ἐκ τῆς φυγῆς, τοῖς δὲ διώκουσιν ἐμπίπτων, ἀνέκοψε τὴν ὁρμὴν, μέχρι τὰς κατὰ στόμα προςβολὰς μὴ φέροντες ἐνέκλιναν.

3. Ὁ δὲ ἕως Ἰορδάνου κτείνειν εἵπετο, καὶ πολὺ μὲν αὐτῶν μέρος διέφθειρεν, οἱ λοιποὶ δ' ὑπὲρ τὸν ποταμὸν ἐσκεδάσθησαν, ὥςτε τὴν Γαλιλαίαν κεκαθάρθαι φόβων, πλὴν καθόσον οἱ τοῖς σπηλαίοις ἐμφωλεύοντες ὑπελείποντο, καὶ ἐπὶ τούτοις ἔδει διατριβῆς. Διὸ δὴ πρῶτον τοῖς στρατιώταις τὰς ἐκ τῶν πεπονημένων ἐπικαρπίας ἀπεδίδου, διανέμων ἑκάστῳ δραχμὰς ἑκατὸν πεντήκοντα ἀργυρίου, καὶ τοῖς ἡγεμόσι πολυπλασίονα διέπεμψεν εἰς οὓς ἐχειμέριζον σταθμούς. Φερώρᾳ δὲ τῷ νεωτάτῳ τῶν ἀδελφῶν ἐπέστελλε, τῆς τε ἀγορᾶς αὐτοῖς ποιεῖσθαι πρόνοιαν, καὶ τειχίζειν Ἀλεξάνδρειον. Καὶ ἐκεῖνος ἀμφοτέρων ἐπεμελήθη.

4. Ἐν δὲ τούτῳ περὶ μὲν Ἀθήνας διῆγεν Ἀντώνιος· Βεντίδιος δ' ἐπὶ τὸν πρὸς Πάρθους πόλεμον Σίλωνά τε καὶ Ἡρώδην μετεπέμπετο, καταστήσασθαι πρότερον ἐπιστέλλων τὰ περὶ Ἰουδαίαν. Ἡρώδης μὲν ἀσμένως Σίλωνα πρὸς Βεντίδιον ἀπολύσας, αὐτὸς ἐπὶ τοὺς ἐν τοῖς σπηλαίοις ἐστράτευσεν. Τὰ δὲ σπήλαια ταῦτα πρὸς ἀποκρήμνοις ὄρεσιν ἦν οὐδαμόθεν προςιτὰ, πλαγίας δὲ ἀνόδους μόνον ἔχοντα στενωτάτας. Ἡ δὲ κατὰ μέτωπον αὐτῶν πέτρα κατέτεινεν εἰς βαθυτάτας φάραγγας, ὄρθιος ἐπιῤῥέπουσα ταῖς χαράδραις, ὥςτε τὸν βασιλέα μέχρι πολλοῦ μὲν ἀπορεῖν πρὸς τὸ ἀμήχανον τοῦ τόπου, τελευταῖον δ' ἐπινοίᾳ χρήσασθαι σφαλερωτάτῃ. Τοὺς γοῦν ἀλκίμους καθιμῶν ἐν λάρναξιν ἐνίει τοῖς στομίοις· οἱ δὲ ἀπέσφαττόν τε αὐτοὺς σὺν γενεαῖς, καὶ πῦρ ἐνίεσαν τοῖς ἀμυνομένοις. Βουληθεὶς δ' ἐξ αὐτῶν καὶ περισῶσαί τινας Ἡρώδης, ἐκήρυξεν ἀποχωρεῖν πρὸς αὐτόν. Τῶν δὲ ἐθελουσίως μὲν οὐδεὶς προςέθετο, καὶ τῶν βιαζομένων δὲ 93
πολλοὶ τῆς αἰχμαλωσίας προείλοντο θάνατον. Ἔνθα καὶ τῶν γηραιῶν τις ἑπτὰ παίδων πατὴρ, μετὰ τῆς μητρὸς δεομένους τοὺς παῖδας, ἐπιτρέψαι σφίσιν ἐξελθεῖν ἐπὶ δεξιᾷ, κτείνει τρόπῳ τοιῷδε. Καθ' ἕνα

προϊέναι κελεύσας, αὐτὰς ἵστατο παρὰ τὸ στόμιον, καὶ τὸν ἀεὶ προϊόντα τῶν υἱῶν ἀπέσφαττεν. Ἐξ ἀπόπτου δὲ Ἡρώδης ἀποβλέπων, τῷ τε πάθει συνεχεῖτο, καὶ τῷ πρεσβύτῃ δεξιὰν ὤρεγε, φείσασθαι τῶν τέκνων παρακαλῶν. Ὁ δὲ, πρὸς οὐδὲν ἐνδοὺς τῶν λεγομένων, ἀλλὰ καὶ προςονειδίσας τὸν Ἡρώδην εἰς ταπεινότητα, ἐπὶ τοῖς παισὶν ἀναιρεῖ καὶ τὴν γυναῖκα, καὶ καταβαλὼν κατὰ τοῦ κρημνοῦ τοὺς νεκροὺς τὸ τελευταῖον καὶ ἑαυτὸν ἔῤῥιψεν.

5. Χειροῦται μὲν οὕτω τὰ σπήλαια καὶ τοὺς ἐν αὐτοῖς Ἡρώδης. Καταλιπὼν δὲ τοῦ στρατοῦ μοῖραν, ὅσην ἀποχρήσειν ὑπελάμβανε πρὸς τὰς ἐπαναστάσεις, καὶ Πτολεμαῖον ἐπ' αὐτῆς, ἐπὶ Σαμάρειαν ὑπέστρεφεν, ὁπλίτας μὲν τριςχιλίους, ἱππεῖς δὲ ἄγων ἑξακοσίους ἐπ' Ἀντίγονον. Ἔνθα πρὸς τὴν ἀποχώρησιν αὐτοῦ λαβόντες ἄδειαν, οἷς ἔθος ἦν θορυβεῖν τὴν Γαλιλαίαν, κτείνουσι μὲν Πτολεμαῖον τὸν στρατηγὸν ἀδοκήτως προςπεσόντες, ἐπόρθουν δὲ τὴν χώραν ποιούμενοι τὰς ἀναφυγὰς εἰς τὰ ἕλη καὶ τὰ δυςερεύνητα τῶν χωρίων. Πυθόμενος δὲ Ἡρώδης τὴν ἐπανάστασιν, διὰ τάχους ἐπεβοήθει, καὶ πολὺ μὲν αὐτῶν πλῆθος διέφθειρε, τὰ φρούρια δὲ πάντα πολιορκίας ἐξελὼν, ἐπιτίμιον τῆς μεταβολῆς εἰςεπράξατο παρὰ τῶν πολεμίων ἑκατὸν τάλαντα.

6. Ἤδη δὲ Πάρθων μὲν ἐξεληλαμένων, ἀνῃρημένου δὲ Πακόρου, Βεντίδιος, ἐπιστείλαντος Ἀντωνίου συμμάχους, πέμπει Ἡρώδῃ κατὰ Ἀντιγόνου χιλίους ἱππεῖς καὶ δύο τάγματα. Τούτων τὸν στρατηγὸν Μαχαιρᾶν Ἀντίγονος ἱκέτευε δι' ἐπιστολῶν ἑαυτῷ βοηθὸν ἀφικέσθαι, πολλὰ περί τε τῆς Ἡρώδου βίας, καὶ ἐπηρείας τῆς βασιλείας ἀποδυρόμενος, καὶ χρήματα δώσειν ὑπισχνούμενος. Ὁ δὲ — οὐ γὰρ κατεφρόνει τοῦ πέμψαντος, ἄλλως τε καὶ πλέον Ἡρώδου διδόντος — εἰς μὲν τὴν προδοσίαν οὐχ ὑπήκουσεν, ὑποκρινόμενος δὲ φιλίαν, κατάσκοπος ᾔει τῶν Ἀντιγόνου πραγμάτων, Ἡρώδῃ μὴ πει-

σθεὶς ἀποτρέποντι. Προαισθόμενος δὲ αὐτοῦ τὴν διάνοιαν Ἀντίγονος, τήν τε πόλιν ἀπέκλεισε, καὶ ἀπὸ τῶν τειχῶν ὡς πολέμιον ἠμύνατο, μέχρις αἰδούμενος Μαχαιρᾶς εἰς Ἀμμαοῦντα πρὸς Ἡρώδην ἐχώρει, καὶ πρὸς τὴν διαμαρτίαν τεθυμωμένος, ὅσοις ἐπετύγχανεν Ἰουδαίοις, ἀνῄρει, μηδεμίαν τῶν Ἡρωδείων φειδὼ ποιούμενος, ἀλλ᾽ ὡς Ἀντιγονείοις χρώμενος ἅπασιν.

7. Ἐφ᾽ οἷς χαλεπήνας Ἡρώδης ὥρμησε μὲν
ἀμύνασθαι Μαχαιρᾶν ὡς πολέμιον. Κρατήσας δὲ
τῆς ὀργῆς ἤλαυνε πρὸς Ἀντώνιον κατηγορήσων τῆς
Μαχαιρᾶ παρανομίας. Ὁ δὲ ἐν ἐπιλογισμῷ τῶν
ἡμαρτημένων γενόμενος, ταχέως μεταδιώκει τε τὸν
βασιλέα, καὶ πολλὰ δεηθεὶς ἑαυτῷ διαλλάττει. Οὐ 94
μὴν Ἡρώδης ἐπαύσατο τῆς πρὸς Ἀντώνιον ὁρμῆς·
ἀκηκοὼς δὲ αὐτὸν μετὰ πολλῆς δυνάμεως προςπο-
λεμοῦντα Σαμοσάτοις, πόλις δέ ἐστιν Εὐφράτου πλη-
σίον καρτερὰ, θᾶττον ἠπείγετο, τὸν καιρὸν ἐπιτή-
δειον ὁρῶν πρός τε ἐπίδειξιν ἀνδρείας, καὶ τοῦ
μᾶλλον ἀρέσασθαι τὸν Ἀντώνιον. Γίνεται γοῦν
ἐπελθὼν τέλος αὐτοῖς τῆς πολιορκίας, πολλοὺς μὲν
τῶν Βαρβάρων ἀποκτείνας, πολλὴν δὲ ἀποτεμόμε-
νος λείαν· ὥστε τὸν μὲν Ἀντώνιον, θαυμάζοντα καὶ
πάλαι τὰ τῆς ἀρετῆς αὐτοῦ, τότε μᾶλλον οὕτως
ἔχειν, καὶ πολὺ προςθεῖναι ταῖς τε ἄλλαις τιμαῖς
αὐτοῦ καὶ ταῖς εἰς τὴν βασιλείαν ἐλπίσιν, Ἀντίο-
χον δὲ τὸν βασιλέα ἀναγκασθῆναι τὰ Σαμόσατα
παραδοῦναι.

CAP. XVII. 1. Καὶ ἐν τούτῳ θραύεται τὰ κατὰ τὴν Ἰουδαίαν Ἡρώδου πράγματα. Κατελελοίπει μὲν Ἰώσηπον τὸν ἀδελφὸν ἐπὶ τῶν ὅλων, παραγγείλας μηδὲν μέχρι τῆς ὑποστροφῆς αὐτοῦ παρακινεῖν πρὸς Ἀντίγονον· οὐ γὰρ δὴ βέβαιον εἶναι Μαχαιρᾶν σύμμαχον, ἐξ ὧν ἔδρασεν. Ὁ δὲ ὡς ἤκουσεν ὄντα πορρωτάτω τὸν ἀδελφὸν, ἀμελήσας τῶν παραγγελ-

μάτων ἐπὶ Ἱεριχοῦντος ἐχώρει μετὰ πέντε σπειρῶν, ἃς συνέπεμψε Μαχαιρᾶς· ᾔει δὲ τὸν σῖτον ἁρπάσων ἐν ἀκμῇ τοῦ θέρους. Ἐπιθεμένων δ' ἐν τοῖς ὄρεσι καὶ ταῖς δυςχωρίαις τῶν ἐναντίων, αὐτός τε θνήσκει, μάλα γενναῖος ἐν τῇ μάχῃ φανεὶς, καὶ τὸ Ῥωμαϊκὸν πᾶν διαφθείρεται· νεοσύλλεκτοι γὰρ ἐκ τῆς Συρίας ἦσαν αἱ σπεῖραι, καὶ οὐδὲν αὐταῖς ἀνεκέκρατο τῶν πάλαι στρατιωτῶν καλουμένων, ἐπαμύνειν τοῖς ἀπείροις πολέμου δυναμένον.

2. Ἀντιγόνῳ δὲ οὐκ ἀπέχρησεν ἡ νίκη, προῆλθε δὲ εἰς τοσοῦτον ὀργῆς, ὥςτε καὶ νεκρὸν αἰκίσασθαι τὸν Ἰώσηπον. Κρατήσας γοῦν τῶν σωμάτων ἀποτέμνει τὴν κεφαλὴν αὐτοῦ, καίτοι πεντήκοντα τάλαντα λύτρον αὐτῆς Φερώρα τοῦ ἀδελφοῦ διδόντος. Τὰ δὲ τῆς Γαλιλαίας μετὰ τὴν Ἀντιγόνου νίκην ἐνεωτερίσθη πρὸς τοσοῦτον, ὥςτε τοὺς τὰ Ἡρώδου φρονοῦντας τῶν δυνατῶν προςάγοντες εἰς τὴν λίμνην κατέδυσαν οἱ προςέχοντες Ἀντιγόνῳ. Μετεβάλλετο δὲ πολλὰ καὶ τῆς Ἰδουμαίας, ἔνθα Μα-
95 χαιρᾶς ἀνετείχιζέ τι τῶν ἐρυμάτων, ὃ Γιτθᾶ καλεῖται. Τούτων δὲ οὐδέπω πέπυστο Ἡρώδης. Μετὰ γὰρ τὴν Σαμοσάτων ἅλωσιν Ἀντώνιος μὲν καταστήσας ἐπὶ τῆς Συρίας Σόσιον, καὶ προςτάξας Ἡρώδῃ βοηθεῖν ἐπ' Ἀντίγονον, αὐτὸς εἰς Αἴγυπτον ἀνεχώρησε, Σόσιος δὲ δύο μὲν τάγματα προαπέστειλεν εἰς Ἰουδαίαν Ἡρώδῃ συμμαχῶν, αὐτὸς δὲ μετὰ τῆς λοιπῆς δυνάμεως ἠκολούθει σχεδόν.

3. Ὄντι δὲ Ἡρώδῃ κατὰ τὴν πρὸς Ἀντιόχειαν Δάφνην, ὄνειροι σαφεῖς τὸν τοῦ ἀδελφοῦ θάνατον προσημαίνουσι, καὶ μετὰ ταραχῆς ἐκθορόντι τῆς κοίτης εἰςῄεσαν ἄγγελοι τῆς συμφορᾶς. Ὁ δὲ ὀλίγον μὲν προςοιμώξας τῷ πάθει, τὸ πλεῖον δὲ τοῦ πένθους ὑπερθέμενος, ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς ἠπείγετο. Ποιούμενος δὲ τὴν πορείαν ὑπὲρ δύναμιν, καὶ διανύσας ἐπὶ τὸν Λίβανον, ὀκτακοσίους μὲν τῶν περὶ τὸ ὄρος προςλαμβάνει συμμάχους, Ῥωμαίων

δὲ ἓν τάγμα ταύτῃ συνάψας. Μεθ' ὧν οὐ περιμείνας ἡμέραν εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἐνέβαλε, τούς τε πολεμίους ὑπαντιάσαντας εἰς ὃ καταλελοίπεσαν χωρίον τρέπεται. Καὶ προςέβαλλε μὲν συνεχῶς τῷ φρουρίῳ, πρὶν δὲ ἑλεῖν, χειμῶνι βιασθεὶς χαλεπωτάτῳ, ταῖς πλησίον ἐνστρατοπεδεύεται κώμαις. Ἐπεὶ δὲ αὐτῷ μετ' ὀλίγας μὲν ἡμέρας καὶ τὸ δεύτερον παρ' Ἀντωνίῳ τάγμα συνέμιξε, δείσαντες τὴν ἰσχὺν οἱ πολέμιοι, διὰ νυκτὸς ἐξέλιπον τὸ ἔρυμα.

4. Καὶ τὸ λοιπὸν ᾔει διὰ Ἱεριχοῦντος σπεύδων ᾗ τάχιστα τοὺς τοῦ ἀδελφοῦ φονεῖς μετελθεῖν. Ἔνθα δὴ καὶ δαιμόνιον αὐτῷ συμβαίνει τέρας, ἐξ οὗ παρ' ἐλπίδα σωθεὶς ἀνδρὸς θεοφιλεστάτου δόξαν ἀπηνέγκατο. Πολλοὶ μὲν γὰρ αὐτῷ τῶν ἐν τέλει κατ' ἐκείνην συνειστιάθησαν τὴν ἑσπέραν. Διαλυθέντος δὲ τοῦ συμποσίου, μετὰ τὸ πάντας ἐξελθεῖν, εὐθέως ὁ οἶκος συνέπεσεν. Τοῦτο καὶ κινδύνων καὶ σωτηρίας κοινὸν ἐπὶ τῷ μέλλοντι πολέμῳ κρίνας εἶναι σημεῖον, ὑπὸ τὴν ἕω διεκίνει τὴν στρατιάν. Καὶ τῶν ἐναντίων εἰς ἑξακιςχιλίους ἀπὸ τῶν ὀρῶν κατατρέχοντες ἀπεπειρῶντο τῶν προτεταγμένων, κατὰ χεῖρα μὲν συμπλέκεσθαι τοῖς Ῥωμαίοις οὐ σφόδρα θαῤῥοῦντες, πόῤῥωθεν δὲ χερμάσι καὶ παλτοῖς ἔβαλλον, ὥςτε συχνοὺς κατατιτρώσκειν. Ἐν ᾧ καὶ αὐτὸς Ἡρώδης παρελαύνων παλτῷ κατὰ τὴν πλευρὰν ἀκοντίζεται.

5. Βουλόμενος δὲ ὁ Ἀντίγονος μὴ μόνον τόλμῃ τῶν σφετέρων, ἀλλὰ καὶ πλήθει περιεῖναι δοκεῖν, Πάππον τινὰ τῶν ἑταίρων μετὰ στρατιᾶς ἐπὶ Σαμάρειαν ἐπιπέμπει. Τούτων μὲν οὖν ἦν Μαχαιρᾶς ἀγώνισμα. Ἡρώδης δὲ τὴν πολεμίαν καταδραμὼν, πέντε μὲν πολίχνας καταστρέφεται, διςχιλίους δὲ τῶν ἐν αὐταῖς διαφθείρει, καὶ τὰς οἰκίας ἐμπρήσας ὑπέστρεψεν ἐπὶ τὸ στρατόπεδον· ηὔλιστο δὲ περὶ τὴν 96
καλουμένην Κανᾶ κώμην.

6. Προςεγίνετο δὲ αὐτῷ καθ' ἡμέραν πολὺ πλῆ-

θος Ἰουδαίων, ἔκ τε αὐτῆς Ἱεριχοῦντος, καὶ τῆς ἄλλης χώρας, οἱ μὲν διὰ μῖσος τὸ πρὸς Ἀντίγονον, οἱ δ' ἐπὶ τοῖς αὐτοῦ κατορθώμασι κεκινημένοι. Τούς γε μὴν πολλοὺς ἐνῆγεν ἐπιθυμία μεταβολῆς ἄλογος· καὶ ὁ μὲν ἠπείγετο συμβαλεῖν, οἱ δὲ περὶ Πάππον, οὔτε πρὸς τὸ πλῆθος, οὔτε περὶ τὴν ὁρμὴν ὑποδείσαντες αὐτοῦ προθύμως ἀντεπεξῆλθον. Γενομένης δὲ τῆς παρατάξεως, τὰ μὲν ἄλλα μέρη πρὸς ὀλίγον ἀντέσχον. Ἡρώδης δὲ κατὰ μῆνιν τοῦ φονευθέντος ἀδελφοῦ παραβαλλόμενος, ὡς ἂν τίσαιτο τοὺς αἰτίους τοῦ φόνου, ταχέως τῶν καθ' ἑαυτὸν ἐκράτει, καὶ μετ' ἐκείνους ἐπὶ τὸ συνεστὸς αἰεὶ τρεπόμενος ἅπαντας διώκει. Φόνος τε ἦν πολὺς, τῶν μὲν εἰς τὴν κώμην συνεξωθουμένων, ἐξ ἧς ὥρμηντο, τοῦ δὲ προςκειμένου τοῖς ὑστάτοις καὶ κτείνοντος ἀπείρους. Συνειςπίπτει δὲ τοῖς πολεμίοις εἴσω, καὶ πᾶσα μὲν ὁπλιτῶν οἰκία νένακτο, τὰ τέγη δὲ ἦν ὕπερθεν ἀμυνομένων κατάπλεα. Καὶ ἐπειδὴ περιῆν τῶν ἔξωθεν, τὰς οἰκήσεις σπαράττων εἷλκε τοὺς ἔνδοθεν. Καὶ τοῖς μὲν πολλοῖς ἐπικατασείων τοὺς ὀρόφους, ἀθρόως ἀνῄρει, τοὺς ὑποφυγόντας δὲ τῶν ἐρειπίων οἱ στρατιῶται ξιφήρεις ἀνεδέχοντο, καὶ τοσούτων ἐσωρεύθη νεκρῶν πλῆθος, ὥςτε τὰς ὁδοὺς ἀποφραγῆναι τοῖς κρατοῦσι. Ταύτην τὴν πληγὴν οὐκ ἤνεγκαν οἱ πολέμιοι· τὸ γοῦν ἐπισυλλεγόμενον αὐτῶν πλῆθος, ὡς ἐθεάσατο τοὺς ἀνὰ τὴν κώμην διεφθαρμένους, εἰς φυγὴν διεσκεδάσθη. Καὶ ἂν εὐθέως τῇ νίκῃ τεθαῤῥηκὼς Ἡρώδης ἐπὶ Ἱεροσολύμων ἤλασεν, εἰ μὴ χειμῶνι διεκωλύθη σφοδροτάτῳ. Τοῦτο τὸ ἐμπόδιον ἐκείνῳ τε παντελοῦς κατορθώματος καὶ ἥττης τῷ Ἀντιγόνῳ κατέστη, βουλευομένῳ καταλιπεῖν ἤδη τὴν πόλιν.

7. Ἡρώδης δὲ πρὸς ἑσπέραν ἤδη τοὺς φίλους κεκμηκότας ἐπὶ θεραπείᾳ τοῦ σώματος διαφεὶς, καὶ αὐτὸς ὡς ἦν ἔτι θερμὸς ἐκ τῶν ὅπλων λουσόμενος ᾔει στρατιωτικώτερον. Εἷς γοῦν αὐτῷ παῖς εἵπετο.

Καὶ πρὶν εἰς τὸ βαλανεῖον εἰςελθεῖν, ἐναντίον αὐτοῦ τις ἐκτρέχει τῶν πολεμίων ξιφήρης, ἔπειτα δεύτερος, καὶ τρίτος, καὶ ἑξῆς πλείους. Οὗτοι καταπεφεύγεσαν μὲν ἐκ τῆς παρατάξεως εἰς τὸ βαλανεῖον ὡπλισμένοι. Τέως δὲ ὑποπεπτηκότες, καὶ διαλανθάνοντες, ὡς ἐθεάσαντο τὸν βασιλέα, λυθέντες ὑπ' ἐκπλήξεως αὐτὸν μὲν παρέτρεχον γυμνὸν ὄντα τρέμοντες, ἐπὶ δὲ τὰς ἐξόδους ἐχώρουν. Τῶν μὲν οὖν ἄλλων οὐδεὶς παρῆν κατὰ τύχην ὁ συλληψόμενος τοὺς ἄνδρας, Ἡρώδῃ δὲ ἀπέχρησε τὸ μηδὲν παθεῖν, ὥςτε διαφεύγουσι πάντες.

8. *Τῇ δ' ὑστεραίᾳ Πάππον μὲν τὸν Ἀντιγόνου στρατηγὸν καρατομήσας, ἀνῄρητο δὲ ἐπὶ τῆς παρατάξεως, πέμπει τὴν κεφαλὴν Φερώρᾳ τῷ ἀδελ-* 97
φῷ, ποινὴν τοῦ φονευθέντος αὐτῶν ἀδελφοῦ· καὶ γὰρ οὗτος ἦν ὁ τὸν Ἰώσηπον ἀνελών. Λωφήσαντος δὲ τοῦ χειμῶνος, ἤλαυνεν ἐπὶ Ἱεροσολύμων, καὶ μέχρι τοῦ τείχους ἀγαγὼν τὴν δύναμιν — συνήγετο δὲ αὐτῷ τρίτον ἔτος, ἐξ οὗ βασιλεὺς ἐν Ῥώμῃ ἀπεδέδεικτο — πρὸ τοῦ ἱεροῦ στρατοπεδεύεται· ταύτῃ γὰρ ἦν ἐπίμαχον, καὶ καθ' ὃ πρὶν εἷλε Πομπήϊος τὴν πόλιν. Διελὼν δὲ εἰς ἔργα τὴν στρατιὰν, καὶ τεμὼν τὰ προάστεια, τρία μὲν ἐγείρει χώματα, καὶ πύργους ἐποικοδομεῖν αὐτοῖς κελεύσας, καταλιπὼν τοὺς ἀνυστικωτάτους τῶν ἑταίρων ἐπὶ τῶν ἔργων, αὐτὸς εἰς Σαμάρειαν ᾔει, τὴν Ἀλεξάνδρου τοῦ Ἀριστοβούλου μετιὼν θυγατέρα, κατωμολογημένην, ὡς ἔφαμεν, αὐτῷ. Καὶ πάρεργον ποιεῖται τῆς πολιορκίας τὸν γάμον· ἤδη γὰρ ὑπερηφάνει τοὺς πολεμίους.

9. *Γήμας δὲ ὑπέστρεψεν ἐπὶ Ἱεροσολύμων μετὰ μείζονος δυνάμεως· συνῆπτε δὲ αὐτῷ καὶ Σόσσιος μετὰ πλείστης στρατιᾶς, ἱππέων τε καὶ πεζῶν, ἣν προεκπέμψας διὰ τῆς μεσογείου, τὴν πορείαν αὐτὸς διὰ Φοινίκης ἐποιήσατο. Συναθροισθείσης δὲ τῆς ὅλης δυνάμεως εἰς ἕνδεκα μὲν τέλη πεζῶν, ἱππεῖς δὲ*

ἑξακισχιλίους δίχα τῶν ἀπὸ Συρίας συμμάχων, οἳ μέρος οὐκ ὀλίγον ἦσαν, καταστρατοπεδεύονται τοῦ βορείου τείχους πλησίον, αὐτὸς μὲν πεποιθὼς τοῖς τῆς συγκλήτου δόγμασι, δι᾽ ὧν βασιλεὺς ἀπεδέδεικτο, Σόσιος δὲ Ἀντωνίῳ, τῷ πέμψαντι τὴν ὑπ᾽ αὐτῷ στρατιὰν Ἡρώδῃ σύμμαχον.

CAP. XVIII. 1. Τῶν δὲ ἀνὰ τὴν πόλιν Ἰουδαίων τὸ πλῆθος ποικίλως ἐτετάρακτο. Καὶ γὰρ ἐπὶ τὸν ναὸν ἀθροιζόμενον τὸ ἀσθενέστερον εὐδαίμονα καὶ πολλῷ θειωδέστερον τὸν τελευτήσοντα πρὸς τοὺς καιροὺς ἐλογοποίει· καὶ τῶν τολμηροτέρων κατὰ στίφος ἦσαν λῃστεῖαι πολύτροποι, καὶ μάλιστα περὶ τὴν πόλιν ἁρπαζόντων, ἐπειδὴ μήτε ἵπποις μήτε ἀνδράσιν ὑπελέλειπτο τροφή. Τοῦ γε μὴν μαχίμου οἱ εὐτακτότερον ἐτέτακτο πρὸς ἄμυναν τῆς πολιορκίας, τούς τε χωνεύοντας εἶργον ἀπὸ τοῦ τείχους, καὶ τοῖς ὀργάνοις ἀντιμηχανώμενον ἀεί τι κώλυμα
98 καινότερον· ἐν οὐδενὶ δὲ οὕτως ὡς ἐν ταῖς μεταλλείαις περιῆσαν τῶν πολεμίων.

2. Τῷ δὲ βασιλεῖ πρὸς μὲν τὰς λῃστείας ἀντεπενοήθησαν λόχοι, δι᾽ ὧν ἀνέστελλε τὰς ἐκδρομάς· πρὸς δὲ τὴν τῶν ἐπιτηδείων ἀπορίαν, αἱ πόῤῥωθεν συγκομιδαί. Τῶν δὲ μαχομένων περιῆν τῇ Ῥωμαίων ἐμπειρίᾳ, καίτοι τόλμης οὐδεμίαν καταλιπόντων ὑπερβολήν. Φανερῶς μὲν οὖν οὐ συνεῤῥήγνυντο τοῖς Ῥωμαίοις ἐπὶ προὔπτῳ τῷ θανάτῳ, διὰ δὲ τῶν ὑπονόμων ἐν μέσοις αὐτοῖς ἐξαπίνης ἐφαίνοντο, καὶ πρὶν κατασεισθῆναί τε τοῦ τείχους, ἕτερον ἀντωχύρουν· καθόλου τε εἰπεῖν οὔτε χερσὶν οὔτε ἐπινοίαις ἔκαμνον, εἰς ἔσχατον ἀντισχεῖν διεγνωκότες. Ἀμέλει τηλικαύτης δυνάμεως περικαθεζομένης, πέντε μησὶ διήνεγκαν τὴν πολιορκίαν, ἕως τῶν Ἡρώδου τινὲς ἐπιλέκτων ἐπιβῆναι τοῦ τείχους θαῤῥήσαντες, εἰσπίπτουσιν εἰς τὴν πόλιν, ἐφ᾽ οἷς ἑκατοντάρχαι Σοσίου. Πρῶτα μὲν οὖν τὰ περὶ τὸ ἱερὸν ἡλίσκετο,

καὶ τῆς δυνάμεως ἐπιχυθείσης πανταχοῦ φόνος ἦν μυρίος, τῶν μὲν Ῥωμαίων ἐπὶ τῇ τριβῇ τῆς πολιορκίας διωργισμένων, τοῦ δὲ περὶ Ἡρώδην Ἰουδαϊκοῦ μηδένα ὑπολιπέσθαι σπεύδοντος ἀντίπαλον. Ἐσφάττοντο δὲ παμπληθεῖς ἔν τε τοῖς στενωποῖς, καὶ κατὰ τὰς οἰκίας συνωθούμενοι, καὶ τῷ ναῷ προςφεύγοντες· ἦν δὲ οὔτε νηπίων οὔτε γηραιῶν ἔλεος, οὔτε ἀσθενείας γυναικῶν, ἀλλὰ καίτοι γε περιπέμποντος τοῦ βασιλέως καὶ φείδεσθαι παρακαλοῦντος, οὐδεὶς ἐκράτησε τῆς δεξιᾶς, ἀλλ' ὥςπερ μεμηνότες πᾶσαν ἡλικίαν ἐπεξῄεσαν. Ἔνθα καὶ Ἀντίγονος μήτε τῆς πάλαι μήτε τῆς τότε τύχης ἔννοιαν λαβὼν, κάτεισι μὲν ἀπὸ τῆς βάρεως, προςπίπτει δὲ τοῖς Σοσίου ποσί. Καὶ ἐκεῖνος μηδὲν αὐτὸν οἰκτείρας πρὸς τὴν μεταβολὴν, ἐπεγέλασέ τε ἀκρατῶς, καὶ Ἀντιγόνην ἐκάλεσεν· οὐ μὴν ὡς γυναῖκά τε καὶ φρουρᾶς ἐλεύθερον ἀφῆκεν, ἀλλ' ὁ μὲν δεθεὶς ἐφυλάττετο.

3. Πρόνοια δὲ ἦν Ἡρώδῃ κρατοῦντι τῶν πολεμίων τότε, κρατῆσαι καὶ τῶν ἀλλοφύλων συμμάχων· ὥρμητο γὰρ τὸ ξενικὸν πλῆθος ἐπὶ θέαν τε τοῦ ἱεροῦ καὶ τῶν κατὰ τὸν ναὸν ἁγίων. Ὁ δὲ βασιλεὺς τοὺς μὲν παρακαλῶν, τοῖς δὲ ἀπειλούμενος, ἔστι δὲ οὓς καὶ τοῖς ὅπλοις ἀνέστελλεν, ἥττης χαλεπωτέραν τὴν νίκην ὑπολαμβάνων, εἴ τι τῶν ἀθεάτων παρ' αὐτῶν ὀφθείη. Διεκώλυσε δὲ ἤδη καὶ τὰς κατὰ τὴν πόλιν ἁρπαγὰς, πολλὰ διατεινάμενος πρὸς Σόσιον, εἰ χρημάτων τε καὶ ἀνδρῶν τὴν πόλιν Ῥωμαῖοι κενώσαντες, καταλείψουσιν αὐτὸν ἐρημίας βασιλέα, καὶ ὡς ἐπὶ τοσούτων πολιτῶν φόνῳ, βραχὺ καὶ τὴν τῆς οἰκουμένης ἡγεμονίαν ἀντάλλαγμα κρίνοι. Τοῦ δὲ ἀντὶ τῆς πολιορκίας τὰς ἁρπαγὰς δικαίως τοῖς στρατιώταις ἐπιτρέπειν φαμένου, αὐτὸς ἔφη διανέμειν ἐκ τῶν ἰδίων χρημάτων τοὺς μισθοὺς ἑκάστοις. Οὕτω τε τὴν λοιπὴν ἐξωνησάμενος πατρίδα, τὰς ὑποσχέσεις ἐπλήρωσε. Λαμπρῶς μὲν γὰρ ἕκα- 99

στον στρατιώτην, ἀναλόγως δὲ τοὺς ἡγεμόνας, βασιλικώτατα δὲ αὐτὸν ἐδωρήσατο Σόσιον, ὡς μηδένα χρημάτων ἀπελθεῖν δεόμενον. Σόσιος δὲ χρυσοῦν ἀναθεὶς τῷ θεῷ στέφανον, ἀνέζευξεν ἀπὸ Ἱεροσολύμων, ἄγων δεσμώτην Ἀντίγονον Ἀντωνίῳ. Τοῦτον οὖν φιλοψυχήσαντα μέχρις ἐσχάτου διὰ ψυχρᾶς ἐλπίδος, ἄξιος τῆς ἀγεννείας πέλεκυς ἐκδέχεται.

4. Βασιλεὺς δὲ Ἡρώδης διακρίνας τὸ κατὰ τὴν πόλιν πλῆθος, τοὺς μὲν τὰ αὐτοῦ φρονήσαντας εὐνουστέρους ταῖς τιμαῖς καθίστατο, τοὺς δὲ Ἀντιγονείους ἀνῄρει. Καὶ κατὰ σπάνιν ἤδη χρημάτων ὅσον εἶχε κόσμον κατανομιστεύσας, Ἀντωνίῳ καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν ἀνέπεμψεν. Οὐ μὴν εἰςάπαξ ἐξωνήσατο τὸ μηδὲν παθεῖν· ἤδη γὰρ Ἀντώνιος τῷ Κλεοπάτρας ἔρωτι διεφθαρμένος, ἥττων ἦν ἐν πᾶσι τῆς ἐπιθυμίας. Κλεοπάτρα δὲ διεξελθοῦσα τὴν γενεὰν τὴν ἑαυτῆς, ὡς μηδένα τῶν ἀφ᾽ αἵματος ὑπολείπεσθαι, τὸ λοιπὸν περὶ τοὺς ἔξωθεν ἐφόνα· καὶ τοὺς ἐν τέλει Σύρων διαβάλλουσα πρὸς τὸν Ἀντώνιον ἀναιρεῖν ἔπειθεν, ὡς ἂν τῶν κτήσεων ἑκάστου ῥᾳδίως γενομένη δεσπότις. Ἔτι δὲ ἐκτείνουσα τὴν πλεονεξίαν ἐπὶ Ἰουδαίους καὶ Ἄραβας, ὑπειργάζετο τοὺς ἑκατέρων βασιλεῖς Ἡρώδην καὶ Μάλιχον ἀναιρεθῆναι.

5. Μέχρι γοῦν τῶν προσταγμάτων ἐπινεύσας Ἀντώνιος, τὸ κτεῖναι μὲν ἄνδρας ἀγαθοὺς καὶ βασιλεῖς τηλικούτους ἀνόσιον ἡγεῖτο, τὸ δὲ τούτων ἔγγιον φίλος εἶναι διεκρούσατο. Πολλὰ δὲ τῆς χώρας αὐτῶν ἀποτεμόμενος, καὶ δὴ καὶ τὸν ἐν Ἱεριχοῦντι φοινικῶνα, ἐν ᾧ γεννᾶται τὸ βάλσαμον, δίδωσιν αὐτῇ, πόλεις τε, πλὴν Τύρου καὶ Σιδῶνος, τὰς ἐντὸς Ἐλευθέρου ποταμοῦ πάσας. Ὧν γενομένη κυρία, καὶ προπέμψασα μέχρις Εὐφράτου τὸν Ἀντώνιον ἐπιστρατεύοντα Πάρθοις, ἧκεν εἰς Ἰουδαίαν δι᾽ Ἀπαμείας καὶ Δαμασκοῦ. Καὶ ἐνταῦθα μεγάλαις μὲν αὐτῆς τὴν δυσμένειαν δωρεαῖς Ἡρώ-

δης ἐκμειλίσσεται· μισθοῦται δὲ καὶ τὰ τῆς βασιλείας ἀποῤῥαγέντα χωρία διακοσίων ταλάντων εἰς ἕκαστον ἐνιαυτόν. Προπέμπει δὲ αὐτὴν μέχρι Πηλουσίου, πάσῃ θεραπείᾳ καταχρώμενος. Καὶ μετ' οὐ πολὺ παρῆν ἐκ Πάρθων Ἀντώνιος, ἄγων αἰχμάλωτον Ἀρταβάζην τὸν Τιγράνου παῖδα, δῶρον Κλεοπάτρᾳ· μετὰ γὰρ τῶν χρημάτων καὶ τῆς λείας ἁπάσης ὁ Πάρθος εὐθὺς αὐτῇ ἐχαρίσθη.

CAP. XIX. 1. *Τοῦ δὲ Ἀκτιακοῦ πολέμου συνεῤ-* 100
ῥωγότος, παρεσκεύαστο μὲν Ἡρώδης Ἀντωνίῳ συνεξορμᾷν, ὡς ἤδη τῶν τε ἄλλων τῶν κατὰ Ἰουδαίαν ἀπηλλαγμένος θορύβων, καὶ κεκρατηκὼς Ὑρκανίας, ὃ δὴ χωρίον ἡ Ἀντιγόνου κατεῖχεν ἀδελφή. Διεκλείσθη γε μὴν πανούργως ὑπὸ τῆς Κλεοπάτρας συμμετασχεῖν τῶν κινδύνων Ἀντωνίῳ· τοῖς γὰρ βασιλεῦσιν, ὡς ἔφαμεν, ἐπιβουλεύουσα, πείθει τὸν Ἀντώνιον Ἡρώδῃ ἐμπιστεῦσαι τὸν πρὸς Ἄραβας πόλεμον, ἵν' ἢ κρατήσαντος, Ἀραβίας, ἢ κρατηθέντος, Ἰουδαίας γένηται δεσπότις, καὶ θατέρῳ τῶν δυναστῶν καταλῦσαι τὸν ἕτερον.

2. *Ἔῤῥεψε μέντοι καθ' Ἡρώδην τὸ βούλευμα. Πρῶτον μὲν γὰρ ῥύσιον πολεμίων ἄγων, καὶ πολὺ συγκροτήσας ἱππικὸν, ἐπαφίησιν αὐτοῖς περὶ Διόςπολιν, ἐκράτησέ τε καίτοι καρτερῶς ἀντιπαραταξαμένων. Πρὸς δὲ τὴν ἧτταν γίνεται μέγα κίνημα τῶν Ἀράβων· καὶ συναθροισθέντες εἰς Κάναθα τῆς Κοίλης Συρίας, ἄπειροι τὰ πλῆθος τοὺς Ἰουδαίους ἔμενον. Ἔνθα μετὰ τῆς δυνάμεως Ἡρώδης ἐπελθὼν, ἐπειρᾶτο προμηθέστερον ἀφηγεῖσθαι τοῦ πολέμου, καὶ στρατόπεδον ἐκέλευσε τειχίζειν. Οὐ μὴν ὑπήκουσε τὸ πλῆθος, ἀλλὰ, τῇ προτέρᾳ νίκῃ τεθαῤῥηκότες, ὥρμησαν ἐπὶ τοὺς Ἄραβας, καὶ πρὸς τὴν πρώτην ἐμβολὴν τραπέντας ἐδίωκον. Ἐπιβουλεύεται δὲ Ἡρώδης ἐν τῇ διώξει, τοὺς ἐκ τῶν Κανάθων ἐπιχωρίους ἀνέντος Ἀθηνίωνος, ὃς ἦν αὐτῷ*

τῶν Κλεοπάτρας στρατηγῶν ἀεὶ διάφορος. Πρὸς γὰρ τὴν τούτων ἐπίθεσιν ἀναθαῤῥήσαντες οἱ Ἄραβες ἐπιστρέφονται, καὶ συνάψαντες τὸ πλῆθος περὶ πετρώδη καὶ δύςβατα χωρία, τρέπονται τοὺς Ἡρώδου, πλεῖστόν τε αὐτῶν φόνον εἰργάσαντο· οἱ δὲ διασωθέντες ἐκ τῆς μάχης εἰς Ὄρμιζα καταφεύγουσιν, ὅπου καὶ τὸ στρατόπεδον αὐτῶν περισχόντες αὔτανδρον εἷλον οἱ Ἄραβες.

3. Μετ᾽ οὐ πολὺ δὲ τῆς συμφορᾶς, βοήθειαν ἄγων Ἡρώδης παρῆν τῆς χρείας ὕστερος. Ταύτης τῆς πληγῆς αἴτιον αὐτῷ τὸ τῶν ταξιαρχῶν ἀπειθὲς κατέστη· μὴ γὰρ ἐξαπιναίου τῆς συμβολῆς γενομένης, οὐκ ἂν Ἀθηνίων εὗρε καιρὸν ἐπιβουλῆς. Ἐτιμωρήσατο μέντοι τοὺς Ἄραβας αὖθις ἀεὶ τὴν χώραν κατατρέχων, ὡς ἀνακαλέσασθαι τὴν μίαν αὐτοῖς νίκην πολλάκις. Ἀμυνομένῳ δὲ τοὺς ἐχθροὺς
101 ἐπιπίπτει συμφορὰ δαιμόνιος ἄλλη, κατ᾽ ἔτος μὲν τῆς βασιλείας ἕβδομον, ἀκμάζοντος δὲ τοῦ περὶ Ἄκτιον πολέμου. Κατὰ γὰρ ἀρχομένου ἔαρος ἡ γῆ σεισθεῖσα βοσκημάτων μὲν πλῆθος ἄπειρον, ἀνθρώπων δὲ τρεῖς διέφθειρε μυριάδας, τὸ δὲ στρατιωτικὸν ἔμεινεν ἀβλαβές· ὕπαιθρον γὰρ ηὐλίζετο. Καὶ ἐν τούτῳ τοὺς Ἄραβας ἐπὶ μεῖζον θάρσος ἦρεν ἡ φήμη, προςλογοποιοῦσα τοῖς σκυθρωποῖς ἀεί τι χαλεπώτερον, ὡς πάσης Ἰουδαίας κατεῤῥιμμένης. Οἰηθέντες γοῦν ἐρήμου τῆς χώρας κρατήσειν, ὥρμησαν εἰς αὐτὴν προθυσάμενοι τοὺς πρέσβεις, οἳ παρὰ Ἰουδαίων ἔτυχον ἥκοντες πρὸς αὐτούς. Πρὸς δὲ τὴν ἐμβολὴν καταπλαγὲν τὸ ἔθνος, καὶ μεγέθει συμφορῶν ἐπαλλήλων ἔκλυτον συναγαγὼν Ἡρώδης, ἐπειρᾶτο παρορμᾶν ἐπὶ τὴν ἄμυναν, λέγων τοιάδε·

4. "Παραλογώτατά μοι δοκεῖ τὸ παρὸν ὑμῶν καθάπτεσθαι δέος· πρὸς μὲν γὰρ τὰς δαιμονίους πληγὰς ἀθυμεῖν εἰκὸς ἦν· τὸ δὲ αὐτὸ καὶ πρὸς ἀνθρωπίνην ἔφοδον πάσχειν, ἄνανδρον. Ἐγὼ γὰρ τοσοῦτον ἀποδέω κατεπτηχέναι τοὺς πολεμίους μετὰ

τὸν σεισμὸν, ὥςτε ὑπολαμβάνειν τὸν θεὸν Ἄραψι δέλεαρ τοῦτο καθεῖναι τοῦ δοῦναι δίκας ἡμῖν· οὐ γὰρ τοσοῦτον ὅπλοις ἢ χερσὶ πεποιθότες, ὅσον ταῖς αὐτομάτοις ἡμῶν συμφοραῖς ἥκον. Σφαλερὰ δὲ ἐλπὶς οὐκ ἐξ ἰδίας ἰσχύος, ἀλλ᾽ ἐξ ἀλλοτρίας ἠρτημένη κακοπραγίας· οὔτε γὰρ τὸ δυςτυχεῖν οὔτε τὸ ἐναντίον ἐν ἀνθρώποις βέβαιον, ἀλλ᾽ ἔστιν ἰδεῖν ἐπαμειβομένην εἰς ἑκάτερον τὴν τύχην. Καὶ τοῦτο μάθοιτε ἂν ἐξ οἰκείων ὑποδειγμάτων· τῇ γοῦν προτέρᾳ μάχῃ κρατούντων ἐκράτησαν ἡμῶν οἱ πολέμιοι, καὶ κατὰ τὸ εἰκὸς νῦν ἁλώσονται κρατήσειν δοκοῦντες. Τὸ μὲν γὰρ ἄγαν πεποιθὸς, ἀφύλακτον· οἱ φόβοι δὲ διδάσκουσι προμήθειαν, ὥςτε ἔμοιγε καὶ ἐκ τοῦ δεδοικότος ὑμῶν παρίστασθαι θαῤῥεῖν. Ὅτε γὰρ ἐθρασύνεσθε πέρα τοῦ δέοντος κατὰ τῶν ἐχθρῶν, καὶ παρὰ τὴν ἐμὴν γνώμην ἐξωρμήσατε, καιρὸν ἔσχεν ἡ Ἀθηνίωνος ἐνέδρα· νυνὶ δὲ ὁ ὄκνος ὑμῶν, καὶ τὸ δοκοῦν ἄθυμον ἀσφάλειαν ἐμοὶ νίκης ἐγγυᾶται. Χρὴ μέντοι μέχρι τοῦ μέλλειν οὕτως ἔχειν, ἐν δὲ τοῖς ἔργοις ἐγεῖραί τε τὰ φρονήματα καὶ πεῖσαι τοὺς ἀσεβεστάτους, ὡς οὔτε ἀνθρώπειόν τι κακὸν, οὔτε δαιμόνιόν ποτε ταπεινώσει τὴν Ἰουδαίων ἀνδραγαθίαν, ἐφ᾽ ὅσον τὰς ψυχὰς ἔχουσιν, οὐδὲ περιόψεταί τις Ἄραβα τῶν ἑαυτοῦ ἀγαθῶν δεσπότην γενόμενον, ὃν παρ᾽ ὀλίγον πολλάκις αἰχμάλωτον ἔλαβεν. Μηδὲ ὑμᾶς ταρασσέτω τὰ τῶν ἀψύχων κινήματα, μηδὲ ὑπολαμβάνετε τὸν σεισμὸν ἑτέρας συμφορᾶς ἕτερον γεγονέναι σημεῖον· φυσικὰ γὰρ τὰ τῶν στοιχείων πάθη, καὶ οὐδὲν ἀνθρώποις πλέον ἢ τὴν 102
ἐν αὐτοῖς βλάβην ἐπιφέρει. Λοιμοῦ μὲν γὰρ καὶ λιμοῦ καὶ τῶν χθονίων βρασμῶν προγένοιτο ἄν τι σημεῖον βραχύτερον· αὐτὰ δὲ ταῦτα περιγραφὴν ἔχει τὸ μέγεθος. Ἐπεὶ τί δύναται τοῦ σεισμοῦ μεῖζον ἡμᾶς βλάψαι καὶ κρατήσας ὁ πόλεμος; Τέρας μέντοι μέγιστον ἁλώσεως γέγονε τοῖς ἐχθροῖς, οὐκ αὐτομάτως οὐδὲ διὰ χειρὸς ἀλλοτρίας, οἱ πρέσβεις

ἡμετέρους παρὰ τὸν πάντων ἀνθρώπων νόμον ὠμῶς ἀπέκτειναν, καὶ τοιαῦτα τῷ θεῷ θύματα περὶ τοῦ πολέμου κατέστρεψεν. Ἀλλ' οὐ διαφεύξονται τὸν μέγαν ὀφθαλμὸν αὐτοῦ, καὶ τὴν ἀνίκητον δεξιάν· δώσουσι δὲ ἡμῖν αὐτίκα δίκας, ἄν τι τοῦ πατρίου φρονήματος ἤδη ἔχοντες τιμωροὶ τῶν παρεσπονδημένων ἀναστῶμεν. Ἴτω τις οὐχ ὑπὲρ γυναικὸς, οὐδὲ τέκνων, οὐδ' ὑπὲρ κινδυνευούσης πατρίδος, ἀλλ' ὑπὲρ τῶν πρέσβεων ἀμυνόμενος. Ἐκεῖνοι στρατηγοῦσι τοῦ πολέμου τῶν ζώντων ἡμῶν ἄμεινον. Προκινδυνεύσω δὲ καὶ ἐγὼ χρώμενος ὑμῖν πειθηνίοις· εὖ γὰρ ἴστε τὴν ἑαυτῶν ἀνδρείαν ἀνυπόστατον, ἐὰν μὴ προπετείᾳ τινὶ βλαβῆτε."

5. Τούτοις παρακροτήσας τὸν στρατὸν, ὡς ἑώρα προθύμους, ἔθυε τῷ θεῷ, καὶ μετὰ τὴν θυσίαν διέβαινε τὸν Ἰορδάνην ποταμὸν μετὰ τῆς δυνάμεως. Στρατοπεδευσάμενος δὲ περὶ Φιλαδελφίαν, ἐγγὺς τῶν πολεμίων, περὶ τοῦ μεταξὺ φρουρίου, πρὸς αὐτοὺς ἠκροβολίζετο, βουλόμενος ἐν τάχει συμβαλεῖν· ἔτυχον γὰρ καὶ ἐκεῖνοί τινας προπεπομφότες, τοὺς καταληψομένους τὸ ἔρυμα. Τούτους μὲν οὖν ἀπεκρούσαντο ταχέως οἱ πεμφθέντες ὑπὸ τοῦ βασιλέως, καὶ τὸν λόφον κατέσχον. Αὐτὸς δὲ καθ' ἡμέραν προάγων τὴν δύναμιν εἰς μάχην, παρέτασσε, καὶ προεκαλεῖτο τοὺς Ἄραβας. Ὡς δὲ οὐδεὶς ἐπεξῄει — δεινὴ γάρ τις αὐτοὺς κατάπληξις εἶχε, καὶ πρὸ τοῦ πλήθους ὁ στρατηγὸς Ἔλθεμος αὖος ἦν τῷ δέει — προσελθὼν ἐσπάρασσεν αὐτῶν τὸ χαράκωμα. Καὶ ἐν τούτῳ συναναγκασθέντες ἐξίασιν ἐπὶ τὴν μάχην ἄτακτοι, καὶ πεφυρμένοι τοῖς ἱππεῦσιν οἱ πεζοί. Πλήθει μὲν οὖν τῶν Ἰουδαίων περιῆσαν, ἐλείποντο δὲ ταῖς προθυμίαις, καίτοι διὰ τὴν ἀπόγνωσιν τῆς νίκης ἦσαν καὶ αὐτοὶ παράβολοι.

6. Διὸ μέχρι μὲν ἀντεῖχον, οὐ πολὺς ἦν αὐτῶν φόνος· ὡς δὲ ὑπέδειξαν αὐτῶν τὰ νῶτα, πολλοὶ μὲν ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων, πολλοὶ δὲ ὑπὸ σφῶν

αὐτῶν συμπατούμενοι διεφθείροντο. Πεντακισχίλιοι γοῦν ἔπεσον ἐν τῇ τροπῇ, τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος 103 ἔφθη συνωσθὲν εἰς τὸ χαράκωμα. Τούτους περισχὼν ἐπολιόρκει· καὶ μέλλοντας ἁλώσεσθαι τοῖς ὅπλοις προκατήπειγεν ἡ δίψα, τῶν ὑδάτων ἐπιλιπόντων. Ὑπερηφάνει δὲ πρεσβευομένους ὁ βασιλεὺς, καὶ λύτρα διδόντων πεντακόσια τάλαντα μᾶλλον ἐνέκειτο. Τοῦ δὲ δίψους ἐκκαίοντος, ἐξιόντες κατὰ πλῆθος ἐνεχείριζον σφᾶς αὐτοὺς τοῖς Ἰουδαίοις ἑκόντες· ὡς πέντε μὲν ἡμέραις τετρακισχιλίους δεθῆναι, τῇ δὲ ἕκτῃ τὸ λειπόμενον πλῆθος ὑπ᾽ ἀπογνώσεως ἐξελθεῖν ἐπὶ μάχην. Οἷς συμβαλὼν Ἡρώδης πάλιν εἰς ἑπτακισχιλίους κτείνει. Τηλικαύτῃ δὲ πληγῇ τὴν Ἀραβίαν ἀμυνόμενος, καὶ σβέσας τῶν ἀνδρῶν τὰ φρονήματα, προέκοψεν, ὥστε καὶ προστάτης ὑπὸ τοῦ ἔθνους αἱρεθῆναι.

CAP. XX. 1. Μεταλαμβάνει δὲ αὐτὸν εὐθέως ἡ περὶ τῶν ὅλων πραγμάτων φροντὶς διὰ τὴν πρὸς Ἀντώνιον φιλίαν, Καίσαρος ἤδη περὶ Ἄκτιον νενικηκότος. Παρεῖχε μέντοι δέους πλέον, ἢ ἔπασχεν· οὔπω γὰρ ἑαλωκέναι Καῖσαρ Ἀντώνιον ἔκρινεν, Ἡρώδου συμμένοντος. Ὅ γε μὴν βασιλεὺς ὁμόσε χωρῆσαι τοῖς κινδύνοις διέγνω· καὶ πλεύσας εἰς Ῥόδον, ἔνθα διέτριβε Καῖσαρ, πρόσεισιν αὐτῷ δίχα διαδήματος, τὴν μὲν ἐσθῆτα καὶ τὸ σχῆμα ἰδιώτης, τὸ δὲ φρόνημα βασιλεύς. Μηδὲν γοῦν τῆς ἀληθείας ὑποστειλάμενος, ἄντικρυς εἶπεν· "Ἐγὼ, Καῖσαρ, ὑπ᾽ Ἀντωνίου τῶν Ἰουδαίων βασιλεὺς γενόμενος, ἐν πᾶσιν ὁμολογῶ γεγονέναι βασιλεὺς χρήσιμος Ἀντωνίῳ. Καὶ οὐδὲ τοῦτο ἂν ὑπεστειλάμην εἰπεῖν, ὅτι πάντως ἄν με μετὰ τῶν ὅπλων ἐπείρασας ἀχώριστον, εἰ μὴ διεκώλυσαν Ἄραβες. Καὶ συμμαχίαν μέντοι γε αὐτῷ κατὰ τὸ δυνατὸν, καὶ σίτου πολλὰς ἔπεμψα μυριάδας· ἀλλ᾽ οὐδὲ μετὰ τὴν ἐν Ἀκτίῳ πληγὴν κατέλιπον τὸν εὐεργέτην. Ἐγενόμην δὲ σύμ-

βοῦλος ἄριστος, ὡς οὐκέτι χρήσιμος ἤμην σύμμαχος,
μίαν εἶναι λέγων τῶν πταισθέντων διόρθωσιν, τὸν
Κλεοπάτρας θάνατον· ἣν ἀνελόντι, καὶ χρήματα
καὶ τείχη πρὸς ἀσφάλειαν, καὶ στρατιὰν καὶ ἐμαυ-
τὸν ὑπισχνούμην κοινωνὸν τοῦ πρὸς σὲ πολέμου. Τοῦ
δὲ ἄρα τὰς ἀκοὰς ἀπέφραξαν οἱ Κλεοπάτρας ἵμεροι,
καὶ θεὸς ὁ σοὶ τὸ κρατεῖν χερισάμενος. Συνήττη-
μαι δὴ Ἀντωνίῳ, καὶ τέθεικα μετὰ τῆς ἐκείνου τύ-
χης τὸ διάδημα. Πρὸς σὲ δὲ ἦλθον, ἔχων τὴν ἀρε-
104 τὴν τῆς σωτηρίας ἐλπίδα, καὶ προλαβὼν ἐξετασθή-
σεσθαι, ποταπὸς φίλος, οὐ τίνος, ἐγενόμην."

2. Πρὸς ταῦτα Καῖσαρ, "Ἀλλὰ σώζου γε," ἔφη, "καὶ βασίλευε νῦν βεβαιότερον· ἄξιος γὰρ εἶ πολλῶν ἄρχειν, οὕτω φιλίας προϊστάμενος. Πειρῶ δὲ καὶ τοῖς εὐτυχεστέροις διαμένειν πιστὸς, ὡς ἔγωγε λαμπροτάτας ὑπὲρ τοῦ σοῦ φρονήματος ἐλπίδας ἔχω. Καλῶς μέντοι γε ἐποίησεν Ἀντώνιος Κλεοπάτρᾳ πεισθεὶς μᾶλλον, ἢ σοί· καὶ γὰρ σὲ κεκερδήκαμεν ἐκ τῆς ἀνοίας αὐτοῦ. Κατάρχεις δὲ, ὡς ἔοικεν, εὐποιΐας· διό μοι γράφει Κΰϊντος Δίδιος, συμμαχίαν σε πεπομφέναι πρὸς τοὺς μονομάχους αὐτῷ. Νῦν μὲν οὖν δόγματι τὸ βέβαιον σοῦ τῆς βασιλείας ἐξαγγέλλω· πειράσομαι δὲ καὶ αὖθις ἀγαθόν σέ τι ποιεῖν, ὡς μὴ ζητοίης Ἀντώνιον."

3. Τούτοις φιλοφρονησάμενος τὸν βασιλέα, καὶ περιθεὶς αὐτῷ τὸ διάδημα, δόγματι διεσήμαινε τὴν δωρεὰν, ἐν ᾧ πολλὰ μεγαλοφρόνως εἰς ἔπαινον τοῦ ἀνδρὸς ἐφθέγξατο. Ὁ δὲ δώροις ἐπιμειλιξάμενος αὐτὸν, ἐξῃτεῖτό τινα τῶν Ἀντωνίου φίλων Ἀλέξανδρον, ἱκέτην γενόμενον. Ἐνίκα δὲ ἡ Καίσαρος ὀργὴ, πολλὰ καὶ χαλεπὰ μεμφομένου τὸν ἐξαιτούμενον, οἷς διεκρούσατο τὴν δέησιν. Μετὰ δὲ ταῦτα πορευόμενον ἐκ Αἰγύπτου διὰ Συρίας Καίσαρα παντὶ τῷ βασιλικῷ πλούτῳ δεξάμενος Ἡρώδης, τότε πρῶτον καὶ συνιππάσατο ποιουμένῳ περὶ Πτολεμαΐδα τῆς δυνάμεως ἐξέτασιν, εἱστίασέ τε σὺν ἅπασι

τοῖς φίλοις· μεθ' οὓς καὶ τῇ λοιπῇ στρατιᾷ πρὸς εὐωχίαν πάντα διέδωκε. Προενόησε δὲ καὶ διὰ τῆς ἀνύδρου πορευομένοις μέχρι Πηλουσίου παρασχεῖν ὕδωρ ἄφθονον, ἐπανιοῦσί τε ὁμοίως. Οὐδὲ ἔστιν ὅ τι τῶν ἐπιτηδείων ἐνεδέησε τῇ δυνάμει. Δόξα γοῦν αὐτῷ τε Καίσαρι καὶ τοῖς στρατιώταις παρέστη, πολλῷ βραχυτέραν Ἡρώδη περιεῖναι βασιλείαν, πρὸς ἃ παρέσχεν. Διὰ τοῦτο, ὡς ἧκεν εἰς Αἴγυπτον, ἤδη Κλεοπάτρας καὶ Ἀντωνίου τεθνεώτων, οὐ μόνον αὐτοῦ ταῖς ἄλλαις τιμαῖς, ἀλλὰ καὶ τῇ βασιλείᾳ προςέθηκε, τήν τε ὑπὸ Κλεοπάτρας ἀποτμηθεῖσαν χώραν, καὶ ἔξωθεν Γάδαρα, καὶ Ἵππον, καὶ Σαμάρειαν, πρὸς δὲ τούτοις τῶν παραλίων Γάζαν, καὶ Ἀνθηδόνα, καὶ Ἰόππην, καὶ πύργον Στράτωνος. Ἐδωρήσατο δὲ αὐτῷ καὶ πρὸς φυλακὴν τοῦ σώματος τετρακοσίους Γαλάτας, οἳ πρότερον ἐδορυφόρουν Κλεοπάτραν. Οὐδὲν δὲ οὕτως ἐνῆγεν αὐτὸν εἰς τὰς δωρεὰς, ὡς τὸ μεγαλόφρον τοῦ λαμβάνοντος.

4. Μετὰ δὲ τὴν πρώτην Ἀκτιάδα προςτίθησιν 105
αὐτοῦ τῇ βασιλείᾳ, τόν τε Τράχωνα καλούμενον, καὶ τὴν προςεχῆ Βαταναίαν τε καὶ Αὐρανῖτιν χώραν, ἐξ αἰτίας τοιᾶςδε. Ζηνόδωρος, ὁ τὸν Λυσανίου μεμισθωμένος οἶκον, οὐ διέλειπεν ἐπαφεὶς τοὺς ἐκ τοῦ Τράχωνος λῃστὰς Δαμασκηνοῖς. Οἱ δὲ ἐπὶ Οὐάῤῥωνα τὸν ἡγεμόνα τῆς Συρίας καταφυγόντες, ἐδεήθησαν δηλῶσαι τὴν συμφορὰν αὐτῶν Καίσαρι. Καῖσαρ δὲ γνοὺς ἀντεπέστελλεν ἐξαιρεθῆναι τὸ λῃστήριον. Στρατεύσας οὖν Οὐάῤῥων καθῆρέ τε τῶν ἀνδρῶν τὴν γῆν, καὶ ἀφαιρεῖται Ζηνόδωρον, ἣν ὕστερον Καῖσαρ, ὡς μὴ γένοιτο πάλιν ὁρμητήριον τοῖς λῃσταῖς ἐπὶ τὴν Δαμασκὸν, Ἡρώδῃ δίδωσιν. Κατέστησε δὲ αὐτὸν καὶ Συρίας ὅλης ἐπίτροπον, ἔτει δεκάτῳ πάλιν ἐλθὼν εἰς τὴν ἐπαρχίαν, ὡς μηδὲν ἐξεῖναι, δίχα τῆς ἐκείνου συμβουλίας, τοῖς ἐπιτρόποις διοικεῖν. Ἐπεὶ δὲ τελευτᾷ Ζηνόδωρος,

προςένειμεν αὐτῷ καὶ τὴν μεταξὺ Τράχωνος καὶ τῆς Γαλιλαίας γῆν ἅπασαν. Ὁ δὲ τούτων Ἡρώδῃ μεῖζον ἦν, ὑπὸ μὲν Καίσαρος ἐφιλεῖτο μετ᾽ Ἀγρίππαν, ὑπ᾽ Ἀγρίππα δὲ μετὰ Καίσαρα. Ἔνθεν ἐπὶ πλεῖστον μὲν εὐδαιμονίας προέκοψεν, εἰς μεῖζον δὲ ἐξήρθη φρόνημα, καὶ τὸ πλέον τῆς μεγαλονοίας ἐπέτεινεν εἰς εὐσέβειαν.

CAP. XXI. 1. Πεντεκαιδεκάτῳ γοῦν ἔτει τῆς βασιλείας, αὐτόν τε τὸν ναὸν ἐπεσκεύασε, καὶ τὴν περὶ αὐτὸν ἀνετειχίσατο χώραν, τῆς οὔσης διπλασίαν, ἀμέτροις μὲν χρησάμενος τοῖς ἀναλώμασιν, ἀνυπερβλήτῳ δὲ τῇ πολυτελείᾳ. Τεκμήριον δὲ ἦσαν αἱ μεγάλαι στοαὶ περὶ τὸ ἱερὸν, καὶ τὸ βόρειον ἐπ᾽ αὐτῷ φρούριον· ἃς μὲν γὰρ ἀνῳκοδόμησεν ἐκ θεμελίων, τὸ δὲ ἐπεσκεύασε πλούτῳ δαψιλεῖ, κατ᾽ οὐδὲν τῶν βασιλείων ἔλαττον, ὃ Ἀντωνίαν ἐκάλεσεν εἰς τὴν Ἀντωνίου τιμήν. Τό γε μὴν ἑαυτοῦ βα-
106 σίλειον κατὰ τὴν ἄνω δειμάμενος πόλιν, δύο τοὺς μεγίστους καὶ περικαλλεστάτους οἴκους, οἷς οὐδὲ ναός πη συνεκρίνετο, προςηγόρευσεν ἀπὸ τῶν φίλων τὸν μὲν Καισάρειον, τὸν δὲ Ἀγρίππειον.

2. Ἀλλὰ γὰρ οὐκ οἴκοις μόνον τὴν μνήμην αὐτῶν καὶ τὰς ἐπικλήσεις περιέγραψε, διέβη δὲ εἰς ὅλας πόλεις αὐτῷ τὸ φιλότιμον. Ἐν μέν γε τῇ Σαμαρείτιδι, πόλιν καλλίστῳ περιβόλῳ τειχισάμενος ἐπὶ σταδίους εἴκοσι, καὶ καταγαγὼν ἑξακιςχιλίους εἰς αὐτὴν οἰκήτορας, γῆν τε τούτοις προςνείμας λιπαρωτάτην; καὶ ἐν μέσῳ τῷ κτίσματι ναόν τε ἐνιδρυσάμενος τῷ Καίσαρι μέγιστον, καὶ περὶ αὐτὸν τέμενος ἀποδείξας τριῶν ἥμισυ σταδίων, τὸ ἄστυ Σεβαστὴν ἐκάλεσεν. Ἐξαίρετον δὲ τοῖς ἐν αὐτῷ παρέσχεν εὐνομίαν.

3. Ἐπὶ τούτοις δωρησαμένου τοῦ Καίσαρος αὐτὸν ἑτέρας προςθέσει χώρας, ὅδε καὶ ἐν ταύτῃ ναὸν αὐτῷ λευκῆς μαρμάρου καθιδρύσατο παρὰ τὰς

Ἰορδάνου πηγάς· καλεῖται δὲ Πάνιον ὁ τόπος. Ἔνθα κορυφὴ μέν τις ὄρους εἰς ἄπειρον ὕψος ἀνατείνεται· παρὰ δὲ τὴν ὑπώρειον λαγόνα συνηρεφὲς ἄντρον ὑπανοίγει, δι' οὗ βαραθρώδης κρημνὸς εἰς ἀμέτρητον ἀποῤῥῶγα βαθύνεται, πλήθει τε ὕδατος ἀσαλεύτου, καὶ τοῖς καθιμῶσί τι πρὸς ἔρευναν γῆς οὐδὲν μῆκος ἐξαρκεῖ. Τοῦ δὲ ἄντρου κατὰ τὰς ἔξωθεν ῥίζας ἀνατέλλουσιν αἱ πηγαί· καὶ γένεσις μέν, ὡς ἔνιοι δοκοῦσιν, ἔνθεν Ἰορδάνου. Τὸ δὲ ἀκριβὲς ἐν τοῖς ἑξῆς δηλώσομεν.

4. Ὁ δὲ βασιλεὺς καὶ ἐν Ἱεριχοῖ μεταξὺ Κύπρου τοῦ φρουρίου καὶ τῶν προτέρων βασιλείων, ἄλλα κατασκευασάμενος ἀμείνω καὶ χρησιμώτερα πρὸς τὰς ἐπιδημίας, ἀπὸ τῶν αὐτῶν ὠνόμασε φίλων. Καθόλου τε εἰπεῖν οὐκ ἔστιν ὅντινα τῆς βασιλείας ἐπιτήδειον τόπον τῆς πρὸς Καίσαρα τιμῆς γυμνὸν εἴασεν. Ἐπειδὴ δὲ τὴν ἰδίαν χώραν ἐπλήρωσε ναῶν, εἰς τὴν ἐπαρχίαν αὐτοῦ τὰς τιμὰς ὑπερεξέχεε, καὶ πολλαῖς πόλεσιν ἐνιδρύσατο Καισάρεια.

5. Κατιδὼν δὲ καὶ ἐν τοῖς παραλίοις πόλιν, ἤδη μὲν κάμνουσαν, Στράτωνος ἐκαλεῖτο πύργος, διὰ δὲ εὐφυΐαν τοῦ χωρίου δέξασθαι δυναμένην τὸ φιλότιμον αὐτοῦ, πᾶσαν ἀνέκτισε λευκῷ λίθῳ, καὶ λαμπροτάτοις ἐκόσμησε βασιλείοις, ἐν ᾗ μάλιστα τὸ φύσει μεγαλόνουν ἐπεδείξατο. Μεταξὺ γὰρ Δώρων καὶ Ἰόππης, ὧν ἡ πόλις μέση κεῖται, πᾶσαν εἶναι συμβέβηκε τὴν παραλίαν ἀλίμενον, ὡς πάντα τὸν τὴν Φοινίκην ἐπ' Αἴγυπτον παραπλέοντα σαλεύειν ἐν πελάγει, διὰ τὴν ἐκ λιβὸς ἀπειλήν· ᾧ καὶ μετρίως ἐπαυρίζοντι τηλικοῦτον ἐγείρεται κῦμα πρὸς ταῖς πέτραις, ὥστε τὴν ὑποστροφὴν τοῦ κύματος ἐπὶ πλεῖστον ἐξαγριοῦν τὴν θάλασσαν. Ἀλλ' ὁ βασιλεὺς 107
τοῖς ἀναλώμασι καὶ τῇ φιλοτιμίᾳ νικήσας τὴν φύσιν, μείζονα μὲν τοῦ Πειραιέως λιμένα κατεσκεύασεν, ἐν δὲ τοῖς μυχοῖς αὐτοῦ βαθεῖς ὅρμους ἑτέρους.

6. Καθάπαν δὲ ἔχων ἀντιπράσσοντα τὸν τόπον, ἐφιλονείκησε πρὸς τὴν δυσχέρειαν, ὡς τὴν μὲν ὀχυρότητα τῆς δομήσεως δυσάλωτον εἶναι τῇ θαλάσσῃ, τὸ δὲ κάλλος ὡς ἐπὶ μηδενὶ δυσκόλῳ κεκοσμῆσθαι. Συμμετρησάμενος γὰρ ὅσον εἰρήκαμεν τῷ λιμένι μέγεθος, καθίει λίθους ἐπ᾽ ὀργυιὰς εἴκοσιν εἰς τὸ πέλαγος, ὧν ἦσαν οἱ πλεῖστοι μῆκος ποδῶν πεντήκοντα, βάθος ἐννέα, εὖρος δέκα, τινὲς δὲ καὶ μείζους. Ἐπεὶ δὲ ἀνεπληρώθη τὸ βάθος, οὕτως ἤδη τὸ ὑπερέχον τοῦ πελάγους τεῖχος ἐπὶ διακοσίους πόδας ηὐρύνετο· ὧν οἱ μὲν ἑκατὸν προεδεδόμηντο πρὸς τὴν ἀνακοπὴν τοῦ κύματος, — προκυμαία γοῦν ἐκλήθη, — τὸ δὲ λοιπὸν ὑπόκειται τῷ περιθέοντι λιθίνῳ τείχει. Τοῦτο δὲ πύργοις διείληπται μεγίστοις, ὧν ὁ προέχων καὶ περικαλλέστατος ἀπὸ τοῦ Καίσαρος προγόνου Δρυσίων κέκληται.

7. Ψαλίδες δὲ πυκναὶ πρὸς καταγωγὴν τῶν ἐνορμιζομένων· καὶ τὸ πρὸ αὐτῶν πᾶν κύκλῳ νάγμα, τοῖς ἀποβαίνουσι πλατὺς περίπατος. Ὁ δὲ εἴσπλους βόρειος, αἰθριώτατος γὰρ ἀνέμων τῷ τόπῳ βορέας, καὶ ἐπὶ τοῦ στόματος κολοσσοὶ τρεῖς ἑκατέρωθεν ὑπεστηριγμένοι κίοσιν, ὧν τοὺς μὲν ἐκ λαιᾶς χειρὸς εἰσπλέοντος πύργος ναστὸς ἀνέχει, τοὺς δὲ ἐκ δεξιοῦ δύο ὀρθοὶ λίθοι συνεζευγμένοι, τοῦ κατὰ θάτερον χεῖλος πύργου μείζονες. Προσεχεῖς δὲ οἰκίαι τῷ λιμένι, λευκοῦ καὶ αὐταὶ λίθου, καὶ κατατείνοντες ἐπ᾽ αὐτὸν οἱ στενωποὶ τοῦ ἄστεος, πρὸς ἓν διάστημα μεμετρημένοι. Καὶ τοῦ στόματος ἄντικρυς ναὸς Καίσαρος ἐπὶ γηλόφου, κάλλει καὶ μεγέθει διάφορος· ἐν δὲ αὐτῷ κολοσσὸς Καίσαρος, οὐκ ἀποδέων τοῦ Ὀλυμπιάσι Διὸς ᾧ καὶ προσείκασται, Ῥώμης δὲ ἴσος Ἥρᾳ τῇ κατ᾽ Ἄργος. Ἀνέθηκε δὲ τῇ μὲν ἐπαρχίᾳ τὴν πόλιν, τοῖς ταύτῃ δὲ πλοϊζομένοις τὸν λιμένα, Καίσαρι δὲ τὴν τιμὴν τοῦ κτίσματος· Καισάρειαν γοῦν ὠνόμασεν αὐτήν.

108 8. Τά γε μὴν λοιπὰ τῶν ἔργων, ἀμφιθέατρον,

καὶ θέατρον, καὶ ἀγορὰν, ἄξια τῆς προςηγορίας ἐνιδρύσατο. Καὶ πενταετηρικοὺς ἀγῶνας καταστησάμενος, ὁμοίως ἐκάλεσεν ἀπὸ τοῦ Καίσαρος, πρῶτος αὐτὸς ἆθλα μέγιστα προθεὶς ἐπὶ τῆς ἑκατοστῆς ἐνενηκοστῆς καὶ δευτέρας Ὀλυμπιάδος, ἐν οἷς οὐ μόνον οἱ νικῶντες, ἀλλὰ καὶ οἱ μετ᾽ αὐτοὺς, καὶ οἱ τρίτοι τοῦ βασιλικοῦ πλούτου μετελάμβανον. Ἀνακτίσας δὲ καὶ Ἀνθηδόνα τὴν παράλιον καταῤῥιφεῖσαν ἐν πολέμοις, Ἀγρίππειον προςηγόρευσεν· τοῦ δὲ αὐτοῦ φίλου δι᾽ ὑπερβολὴν εὐνοίας καὶ ἐπὶ τῆς πύλης ἐχάραξε τὸ ὄνομα, ἣν αὐτὸς ἐν τῷ ναῷ κατεσκεύασεν.

9. Φιλοπάτωρ γε μὴν, εἰ καί τις ἕτερος. Καὶ γὰρ τῷ πατρὶ μνημεῖον κατέστησε, πόλιν, ἣν ἐν τῷ καλλίστῳ τῆς βασιλείας πεδίῳ κτίσας, ποταμοῖς τε καὶ δένδρεσι πλουσίαν, ὠνόμασεν Ἀντιπατρίδα. Καὶ τὸ ὑπὲρ Ἱεριχοῦντος φρούριον ὀχυρότητι καὶ κάλλει διάφορον, τειχίσας, ἀνέθηκε τῇ μητρὶ προςειπὼν Κύπρον· Φασαήλῳ δὲ τῷ ἀδελφῷ τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις ὁμώνυμον πύργον, οὗ τό τε σχῆμα καὶ τὴν ἐν τῷ μεγέθει πολυτέλειαν διὰ τῶν ἑξῆς δηλώσομεν. Καὶ πόλιν ἄλλην κτίσας κατὰ τὸν ἀπὸ Ἱεριχοῦς ἰόντων αὐλῶνα πρὸς βορέαν, Φασαηλίδα ὠνόμασεν.

10. Παραδοὺς δὲ αἰῶνι τούς τε οἰκείους καὶ φίλους, οὐδὲ τῆς αὐτοῦ μνήμης ἠμέλησεν, ἀλλὰ φρούριον ἐπιτειχίσας τῷ πρὸς Ἀραβίαν ὄρει, προςηγόρευσεν Ἡρώδιον ἀφ᾽ ἑαυτοῦ. Τὸν δὲ μαστοειδῆ κολωνὸν ὄντα χειροποίητον, ἑξήκοντα σταδίων ἄποθεν Ἱεροσολύμων, ἐκάλεσε μὲν ὁμοίως, ἐξήσκησε δὲ φιλοτιμώτερον. Στρογγύλοις μὲν γὰρ τὴν ἄκραν πύργοις περιέσχεν, ἐπλήρωσε δὲ τὸν περίβολον βασιλείοις πολυτελεστάτοις, ὡς μὴ μόνον τὴν ἔνδον τῶν οἰκημάτων ὄψιν εἶναι λαμπρὰν, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἔξωθεν τοίχοις, καὶ θριγκοῖς, καὶ στέγαις, περικεχύσθαι τὸν πλοῦτον δαψιλῆ· πόῤῥωθεν δὲ μεγίστοις

ἀναλώμασιν ὑδάτων πλῆθος εἰςήγαγε, καὶ βαθμοῖς διακοσίοις λευκοτάτης μαρμάρου τὴν ἄνοδον διέλαβεν· ἦν γὰρ δὴ τὸ γεώλοφον ἐπιεικῶς ὑψηλὸν, καὶ πᾶν χειροποίητον. Κατεσκεύασε δὲ καὶ περὶ τὰς ῥίζας ἄλλα βασίλεια, τήν τε ἀποσκευὴν καὶ τοὺς φίλους δέξασθαι δυνάμενα· ὥςτε, τῷ μὲν πάντα ἔχειν, πόλιν εἶναι δοκεῖν τὸ ἔρυμα, τῇ περιγραφῇ δὲ βασίλειον.

11. Τοσαῦτα δ' οὖν κτίσας, πλείσταις καὶ τῶν ἔξω πόλεων τὸ μεγαλόψυχον ἐπεδείξατο. Τριπόλει
109 μὲν γὰρ καὶ Δαμασκῷ καὶ Πτολεμαΐδι γυμνάσια, Βύβλῳ δὲ τεῖχος, ἐξέδρας τε καὶ στοὰς καὶ ναοὺς καὶ ἀγορὰς Βηρυτῷ κατασκευάσας καὶ Τύρῳ, Σιδῶνί γε μὴν καὶ Δαμασκῷ θέατρα, Λαοδικεῦσι δὲ τοῖς παραλίοις ὑδάτων εἰςαγωγὴν, Ἀσκαλωνίταις δὲ βαλανεῖα καὶ κρήνας πολυτελεῖς, πρὸς δὲ περίστυλα, θαυμαστὰ τήν τε ἐργασίαν καὶ τὸ μέγεθος. Εἰσὶ δὲ οἷς ἄλση καὶ λειμῶνας ἀνέθηκεν. Πολλαὶ δὲ πόλεις, ὥςπερ κοινωνοὶ τῆς βασιλείας, καὶ χώραν ἔλαβον παρ' αὐτοῦ· γυμνασιαρχίας δὲ ἄλλας ἐπετησίοις τε καὶ διηνεκέσιν ἐδωρήσατο προςόδοις, κατατάξας, ὥςπερ Κώοις, ἵνα μηδέποτε ἐκλείπῃ τὸ γέρας. Σιτόν γε μὴν πᾶσιν ἐχορήγησε τοῖς δεομένοις, καὶ τῇ Ῥόδῳ χρήματα μὲν εἰς ναυτικοῦ κατασκευὴν παρέσχε πολλαχοῦ καὶ πολλάκις. Ἐμπρησθὲν δὲ τὸ Πύθιον ἰδίοις ἀναλώμασιν ἄμεινον ἀνεδείματο. Τί δεῖ λέγειν τὰς εἰς Λυκίους ἢ Σαμίους δωρεὰς, ἢ τὴν δι' ὅλης τῆς Ἰωνίας, ἐν οἷς ἐδεήθησαν ἕκαστοι, δαψίλειαν; Ἀλλὰ Ἀθηναῖοι καὶ Λακεδαιμόνιοι, Νικοπολῖταί τε καὶ τὸ κατὰ Μυσίαν Πέργαμον, οὐ τῶν Ἡρώδου γέμουσιν ἀναθημάτων; Τὴν δὲ Ἀντιοχέων τῶν ἐν Συρίᾳ πλατεῖαν, οὐ, φευκτὴν οὖσαν ὑπὸ βορβόρου, κατέστρωσέ τε σταδίων εἴκοσι τὸ μῆκος οὖσαν ξεστῇ μαρμάρῳ, καὶ πρὸς τὰς ὑετῶν ἀποφυγὰς ἐκόσμησεν ἰσομήκει στοᾷ; —

12. Ταῦτα μὲν ἄν τις εἴποι ἴδια τῶν εὖ πα-

θόντων δήμων ἑκάστου, τὸ δὲ Ἠλείοις χαρισθὲν, οὐ μόνον κοινὸν τῆς Ἑλλάδος, ἀλλ' ὅλης τῆς οἰκουμένης δῶρον, εἰς ἣν ἡ δόξα τῶν ἐν Ὀλυμπιάσιν ἀγώνων διϊκνεῖται. Τούτους γὰρ δὴ καταλυομένους ἀπορίᾳ χρημάτων ὁρῶν, καὶ τὸ μόνον λείψανον τῆς ἀρχαίας Ἑλλάδος ὑποῤῥέον, οὐ μόνον ἀγωνοθέτης ἧς ἐπέτυχε πενταετηρίδος εἰς Ῥώμην παραπλέων ἐγένετο, ἀλλὰ καὶ πρὸς τὸ διηνεκὲς πόρους χρημάτων ὑπέδειξεν, ὡς μηδέποτε ἀγωνοθετοῦσαν τὴν μνήμην αὐτοῦ ἐπιλιπεῖν. Ἀνήνυτον δ' ἂν εἴη χρεῶν διαλύσεις ἢ φόρων ἐπεξιέναι, καθάπερ Φασαηλίταις καὶ Βαλανεώταις, καὶ τοῖς περὶ τὴν Κιλικίαν πολιχνίοις, τὰς ἐτησίους εἰςφορὰς ἐπεξεκούφισεν. Πλεῖστόν γε μὴν αὐτοῦ τῆς μεγαλονοίας ἔθραυσεν ὁ φόβος, ὡς μὴ δόξειεν ἐπίφθονος, ἤ τι θηρᾶσθαι μεῖζον, εὐεργετῶν τὰς πόλεις πλέον τῶν ἐχόντων.

13. Ἐχρήσατο δὲ καὶ σώματι πρὸς τὴν ψυχὴν ἀναλόγῳ, κυνηγέτης μὲν ἄριστος ἀεὶ γενόμενος, ἐν ᾧ μάλιστα δι' ἐμπειρίας ἱππικῆς ἐπετύγχανε. Μιᾷ γοῦν ἡμέρᾳ ποτὲ τεσσαράκοντα θηρίων ἐκράτησεν. Ἔστι δὲ καὶ συοτρόφος μὲν ἡ χώρα, τὸ πλέον δ' ἐλάφων καὶ ὄνων ἀγρίων εὔπορος. Πολεμιστὴς δὲ ἀνυπόστατος· πολλοὶ γοῦν καὶ ἐν ταῖς γυμνασίαις αὐτὸν κατεπλάγησαν, ἀκοντιστήν τε ἰθυβολώτατον καὶ τοξότην εὐστοχώτατον ἰδόντες. Πρὸς δὲ τοῖς ψυχικοῖς, καὶ τοῖς σωματικοῖς προτερήμασιν ἐχρή- 110
σατο δεξιᾷ καὶ τύχῃ· καὶ γὰρ σπανίως ἔπταισεν ἐν πολέμῳ, καὶ τῶν πταισμάτων οὐκ αὐτὸς αἴτιος, ἀλλ' ἢ προδοσία τινῶν, ἢ προπέτεια στρατιωτῶν ἐγένετο.

CAP. XXII. 1. Τάς γε μὴν ὑπαίθρους εὐπραγίας ἡ τύχη τοῖς κατ' οἶκον ἀνιαροῖς ἐνεμέσησε, καὶ κακοδαιμονᾶν ἐκ γυναικὸς ἤρξατο, περὶ ἣν μάλιστα ἐσπούδασεν. Ἐπεὶ γὰρ εἰς τὴν ἀρχὴν παρῆλθεν, ἀποπεμψάμενος ἣν ἰδιώτης ὢν ἤκτο γαμετὴν, ἣ γέ-

νος ἦν ἐξ Ἱεροσολύμων, Δωρὶς ὄνομα, γαμεῖ Μαριάμμην τὴν Ἀλεξάνδρου τοῦ Ἀριστοβούλου θυγατέρα, δι᾽ ἣν αὐτῷ στασιασθῆναι συνέβη τὸν οἶκον, καὶ τάχιον μὲν, μάλιστα δὲ μετὰ τὴν ἐκ Ῥώμης ἄφιξιν. Πρῶτον μὲν γὰρ τὸν ἐκ τῆς Δωρίδος υἱὸν Ἀντίπατρον διὰ τοὺς ἐκ Μαριάμμης ἐφυγάδευσε τῆς πόλεως, μόναις ταῖς ἑορταῖς ἀφεὶς κατιέναι. Ἔπειτα τὸν πάππον τῆς γυναικὸς Ὑρκανὸν, ἐκ Πάρθων πρὸς αὐτὸν ἐλθόντα, δι᾽ ὑπόνοιαν ἐπιβουλῆς ἀνεῖλεν, ὃν ᾐχμαλωτίσατο μὲν Βαρζαφάρνης καταδραμὼν Συρίαν, ἐξῃτήσαντο δὲ κατ᾽ οἶκτον οἱ ὑπὲρ Εὐφράτην ὁμοεθνεῖς. Καὶ εἴ γε τούτοις ἐπείσθη, παραινοῦσι μὴ διαβῆναι πρὸς Ἡρώδην, οὐκ ἂν παραπώλετο. Δέλεαρ δὲ αὐτῷ θανάτου τῆς υἱωνῆς ὁ γάμος κατέστη· τούτῳ γὰρ πεποιθὼς, καὶ περισσόν τι τῆς πατρίδος ἐφιέμενος, ἧκε. Παρώξυνε δὲ Ἡρώδην, οὐκ αὐτὸς ἀντιποιούμενος βασιλείας, ἀλλ᾽ ἐπειδὴ τὸ βασιλεύειν ἐπέβαλλεν αὐτῷ.

2. Τῶν δὲ ἐκ Μαριάμμης πέντε τέκνων αὐτῷ γενομένων, δύο μὲν θυγατέρες, τρεῖς δὲ ἦσαν υἱεῖς. Καὶ τούτων ὁ νεώτατος μὲν, ἐν Ῥώμῃ παιδευόμενος, τελευτᾷ· δύο δὲ τοὺς πρεσβυτέρους βασιλικῶς ἦγε, διά τε τὴν μητρῴαν εὐγένειαν, καὶ ὅτι βασιλεύοντι γεγόνεισαν αὐτῷ. Τὸ δὲ τούτων ἰσχυρότερον ὁ Μαριάμμης ἔρως συνήργει, καθ᾽ ἡμέραν ἐκκαίων Ἡρώδην λαβρότερον, ὡς μηδενὸς τῶν διὰ τὴν στεργομένην λυπηρῶν αἰσθάνεσθαι. Τοσοῦτον δὲ ἦν μῖσος εἰς αὐτὸν τῆς Μαριάμμης, ὅσος ἐκείνου πρὸς αὐτὴν ἔρως. Ἔχουσα δὲ τὴν μὲν ἀπέχθειαν ἐκ τῶν πραγμάτων εὔλογον, τὴν δὲ παῤῥησίαν ἐκ τοῦ φιλεῖσθαι, φανερῶς ὠνείδιζεν αὐτῷ τὰ κατὰ τὸν πάππον Ὑρκανὸν καὶ τὸν ἀδελφὸν Ἀριστόβουλον· οὐδὲ γὰρ τούτου, καίπερ ὄντος παιδὸς, ἐφείσατο, δοὺς μὲν αὐτῷ τὴν ἀρχιερωσύνην ἑπτακαιδεκαέτει, μετὰ δὲ τὴν τιμὴν κτείνας εὐθέως. Ἐπειδὴ τὴν ἱερὰν ἐσθῆτα λαβόντι, καὶ τῷ βωμῷ προσελ-

θόντι καθ' ἑορτὴν, ἄθρουν ἐπεδάκρυε τὸ πλῆθος· πέμπεται μὲν οὖν ὁ παῖς διὰ νυκτὸς εἰς Ἱεριχοῦντα, ἐκεῖ δὲ, κατ' ἐντολὴν ὑπὸ τῶν Γαλατῶν βαπτιζόμενος ἐν κολυμβήθρᾳ, τελευτᾷ.

3. Διὰ ταῦτα Ἡρώδην τε ὠνείδισεν ἡ Μαρι- 111
άμμη, καὶ τὴν ἀδελφὴν αὐτοῦ καὶ τὴν μητέρα δειναῖς ἐξύβριζε λοιδορίαις. Ἀλλ' ὁ μὲν πεφίμωτο τοῖς ἱμέροις· δεινὴ δὲ τὰς γυναῖκας ἀγανάκτησις εἰσῄει, καὶ, πρὸς ὃ μάλιστα κινήσειν τὸν Ἡρώδην ἔμελλον, εἰς μοιχείαν διέβαλλον αὐτὴν, ἄλλα τε πολλὰ πρὸς τὸ πιθανὸν ἐνσκευαζόμεναι, καὶ κατηγοροῦσαι, διότι τὴν εἰκόνα τὴν ἑαυτῆς πέμψειεν εἰς Αἴγυπτον Ἀντωνίῳ, καὶ δι' ὑπερβολὴν ἀσελγείας ἀποῦσαν δείξειεν ἑαυτὴν ἀνθρώπῳ γυναικομανοῦντι καὶ βιάζεσθαι δυναμένῳ. Τοῦτο, ὥσπερ σκηπτὸς ἐμπεσὼν, ἐτάραξεν Ἡρώδην, μάλιστα μὲν διὰ τὸν ἔρωτα ζηλοτύπως ἔχοντα, λογιζόμενον δὲ καὶ τὴν Κλεοπάτρας δεινότητα, δι' ἣν Λυσανίας τε ὁ βασιλεὺς ἀνῄρητο, καὶ Μάλιχος ὁ Ἄραψ· οὐ γὰρ ἀφαιρέσει γαμετῆς ἐμέτρει τὸν κίνδυνον, ἀλλὰ θανάτῳ.

4. Μέλλων οὖν ἀποδημεῖν, Ἰωσήπῳ τῷ ἀνδρὶ Σαλώμης τῆς ἀδελφῆς αὐτοῦ, πιστὸς δὲ ἦν καὶ διὰ τὸ κῆδος εὔνους, παρατίθεται τὴν γυναῖκα, κρύφα δοὺς ἐντολὰς ἀναιρεῖν αὐτὴν, εἰ καὶ ἐκεῖνον Ἀντώνιος. Ὁ δὲ Ἰώσηπος, οὔτι κακοήθως, ἀλλὰ τὸν ἔρωτα τοῦ βασιλέως παραστῆσαι τῇ γυναικὶ βουλόμενος, ὥστε οὐδὲ ἀποθανὼν αὐτῆς ὑπομένοι διαζευχθῆναι, τὸ ἀπόῤῥητον ἐκφέρει. Καὶ ἐκείνη πρὸς ἐπανήκοντα τὸν Ἡρώδην, πολλά τε περὶ τοῦ πρὸς αὐτὴν πόθου ἐν ταῖς ὁμιλίαις ἐπομνύμενον, καὶ ὡς οὐδὲ ἐρασθείη ποτὲ γυναικὸς ἄλλης, "Πάνυ γοῦν," εἶπε, "ταῖς πρὸς Ἰώσηπον ἐντολαῖς ἐπεδείξω τὸν εἰς ἡμᾶς ἔρωτα, κτεῖναί με προστάξας."

5. Ἔκφρων εὐθέως ἀκούσας τὸ ἀπόῤῥητον ἦν, καὶ οὐκ ἄν ποτε τὸν Ἰώσηπον ἐξαγγεῖλαι τὴν ἐντολὴν φάμενος, εἰ μὴ διαφθείρειεν αὐτὴν, ἐνεθουσία

τῷ πάθει, καὶ τῆς κοίτης ἐξαλλόμενος, ἀνέδην ἐν τοῖς βασιλείοις ἀνειλεῖτο. Καὶ ἐν τούτῳ Σαλώμη ἡ ἀδελφὴ, τὸν καιρὸν εἰς τὰς διαβολὰς ἁρπάσασα, τὴν εἰς τὸν Ἰώσηπον ἐβεβαίωσεν ὑποψίαν. Ὁ δὲ ὑπ' ἀκράτου ζηλοτυπίας ἐκμανεὶς, παραχρῆμα κτείνειν προςέταξεν ἀμφοτέρους. Μετάνοια δ' εὐθέως εἵπετο τῷ πάθει, καὶ τοῦ θυμοῦ πεσόντος, ὁ ἔρως πάλιν ἀνεζωπυρεῖτο. Τοσαύτη δὲ ἦν φλεγμονὴ τῆς ἐπιθυμίας, ὡς μηδὲ τεθνάναι δοκεῖν αὐτὴν, ὑπὸ δὲ κακώσεως ὡς ζώσῃ προςλαλεῖν, μέχρι τῷ χρόνῳ διδαχθεὶς τὸ πένθος ἀνάλογον καὶ λύπην ἔσχε τῇ πρὸς περιοῦσαν διαθέσει.

112 CAP. XXIII. 1. Κληρονομοῦσι δὲ τῆς μητρῴας οἱ παῖδες ὀργῆς, καὶ τοῦ μύσους ἔννοιαν λαμβάνοντες, ὡς πολέμιον ὑφεώρων τὸν πατέρα, καὶ πρότερον μὲν ἐπὶ Ῥώμης παιδευόμενοι, πλέον δὲ ὡς εἰς Ἰουδαίαν ὑπέστρεψαν. Συνηνδρωτο δ' αὐτῶν ταῖς ἡλικίαις ἡ διάθεσις. Ἐπεὶ δὲ γάμων ἔχοντες ὥραν, ὁ μὲν τῆς τηθίδος Σαλώμης, ἣ τῆς μητρὸς αὐτῶν κατηγόρησεν, ὁ δὲ ἔγημεν Ἀρχελάου τοῦ Καππαδοκῶν βασιλέως θυγατέρα, προςελάμβανον ἤδη τῷ μίσει καὶ παῤῥησίαν. Ἐκ δὲ τοῦ θράσους αὐτῶν ἀφορμὰς οἱ διαβάλλοντες ἐλάμβανον, καὶ φανερώτερον ἤδη τῷ βασιλεῖ διελέγοντό τινες, ὡς ἐπιβουλεύοιτο μὲν ὑπ' ἀμφοτέρων τῶν υἱῶν· ὁ δὲ Ἀρχελάῳ κηδεύσας καὶ φεύγειν παρασκευάζοιτο, τῷ πενθερῷ πεποιθὼς, ἵνα ἐπὶ Καίσαρος αὐτοῦ κατηγορήσῃ. Ἀναπλησθεὶς δὲ τῶν διαβολῶν Ἡρώδης, ὥςπερ ἐπιτείχισμα τοῖς υἱοῖς, κατάγει τὸν ἐκ τῆς Δωρίδος Ἀντίπατρον, καὶ πάντα τρόπον προτιμᾷν ἄρχεται.

2. Τοῖς δὲ ἀφόρητος ἦν ἡ μεταβολὴ, καὶ τὸν ἐξ ἰδιώτιδος μητρὸς ὁρῶντες προκόπτοντα, διὰ τὴν αὐτῶν εὐγένειαν οὐκ ἐκράτουν τῆς ἀγανακτήσεως. Ἐφ' ἑκάστου δὲ τῶν ἀνιαρῶν τὴν ὀργὴν ἐξέφαινον,

ὡς δὲ οἱ μὲν καθ' ἡμέραν προςίσταντο μᾶλλον, ὁ δὲ Ἀντίπατρος ἤδη καὶ δι' αὐτὸν ἐσπουδάζετο, δεινότατος μὲν ὢν ἐν ταῖς πρὸς τὸν πατέρα κολακείαις, διαβολὰς δὲ κατὰ τῶν ἀδελφῶν ποικίλας ἐνσκευαζόμενος, καὶ τὰ μὲν αὐτὸς λογοποιῶν, τὰ δὲ τοὺς ἐπιτηδείους φημίζειν καθιεὶς, μέχρι παντάπασι τοὺς ἀδελφοὺς ἀπέῤῥηξε τῆς βασιλικῆς ἐλπίδος. Καὶ γὰρ ἐν ταῖς διαθήκαις καὶ φανερῶς αὐτὸς ἦν ἤδη διάδοχος, ὡς βασιλεὺς γοῦν ἐπέμφθη καὶ πρὸς Καίσαρα, τῷ τε κόσμῳ καὶ ταῖς ἄλλαις θεραπείαις, πλὴν διαδήματος, χρώμενος. Χρόνῳ δὲ ἐξίσχυσεν εἰςαγαγεῖν ἐπὶ τὴν Μαριάμμης κοίτην τὴν μητέρα. Δυσὶ δὲ ὅπλοις κατὰ τῶν ἀδελφῶν χρώμενος, κολακείᾳ καὶ διαβολῇ, τὸν βασιλέα καὶ περὶ θανάτου τῶν υἱῶν ὑπειργάσατο.

3. Τὸν γοῦν Ἀλέξανδρον σύρας μέχρι Ῥώμης ὁ πατὴρ, τῆς ἐφ' ἑαυτῷ φαρμακείας ἔκρινεν ἐπὶ Καίσαρος. Ὁ δὲ εὑρὼν μόλις ὀλοφυρμοῦ παῤῥησίαν, καὶ δικαστὴν ἐμπειρότερον Ἀντιπάτρου, καὶ Ἡρώδου φρονιμώτερον, τὰ μὲν ἁμαρτήματα τοῦ πατρὸς αἰδημόνως ὑπεστείλατο, τὰς δὲ αὐτοῦ διαβολὰς ἰσχυρῶς ἀπεδύσατο. Καθαρὸν δὲ καὶ τὸν ἀδελφὸν ἀποδείξας κοινωνοῦντα τῶν κινδύνων, οὕτως ἤδη τό τε 113
Ἀντιπάτρου πανοῦργον καὶ τὴν αὐτῶν ἀτιμίαν ἀπωδύρετο. Συνήργει δὲ αὐτῷ μετὰ καθαροῦ τοῦ συνειδότος ἡ περὶ λόγους ἰσχύς· ἦν γὰρ δὴ δεινότατος εἰπεῖν. Καὶ τὸ τελευταῖον φάμενος, ὡς τῷ πατρὶ κτείνειν αὐτούς ἐστιν, εἰ δὴ προτίθεται τὸ ἔγκλημα, προήγαγε μὲν εἰς δάκρυα πάντας· τὸν δὲ Καίσαρα διέθηκεν οὕτως, ὡς ἀπογνῶναι μὲν αὐτῶν τὰ κατηγορημένα, διαλλάξαι δὲ Ἡρώδην εὐθέως. Αἱ διαλλαγαὶ δὲ ἐπὶ τούτοις ἦσαν, ὥςτε ἐκείνους μὲν τῷ πατρὶ πάντα πειθαρχεῖν, τὸν δὲ τὴν βασιλείαν καταλιπεῖν ᾧ βούλεται.

4. Μετὰ ταῦτα δὲ ἀπὸ Ῥώμης ὑπέστρεφεν ὁ βασιλεὺς, τῶν μὲν ἐγκλημάτων ἀφηκέναι τοὺς υἱεῖς

δοκῶν, τῆς δὲ ὑπονοίας οὐκ ἀπηλλαγμένος. Παρηκολούθει δὲ Ἀντίπατρος, ἡ τοῦ μίσους ὑπόθεσις, ἀλλ' εἴς γε τὸ φανερὸν τὴν ἀπέχθειαν οὐκ ἐξέφερε, τὸν διαλλακτὴν αἰδούμενος. Ὡς δὲ τὴν Κιλικίαν παραπλέων κατῆρεν εἰς Ἐλεοῦσαν, εἱστία μὲν αὐτοὺς φιλοφρόνως Ἀρχέλαος, ὑπὲρ τῆς τοῦ γαμβροῦ σωτηρίας εὐχαριστῶν, καὶ ταῖς διαλλαγαῖς ἐφηδόμενος, ὡς ἂν καὶ τάχιον γεγραφὼς τοῖς ἐπὶ Ῥώμης φίλοις, συλλαμβάνεσθαι περὶ τὴν δίκην Ἀλεξάνδρῳ. Προπέμπει δὲ μέχρι Ζεφυρίου, δῶρα δοὺς μέχρι τριάκοντα ταλάντων.

5. Ὡς δὲ εἰς Ἱεροσόλυμα Ἡρώδης ἀφικνεῖται, συναγαγὼν τὸν λαὸν, καὶ τοὺς τρεῖς υἱεῖς παραστησάμενος, ἀπελογεῖτο περὶ τῆς ἀποδημίας, καὶ πολλὰ μὲν ηὐχαρίστει τῷ θεῷ, πολλὰ δὲ Καίσαρι καταστησαμένῳ τὸν οἶκον αὐτοῦ τεταραγμένον, καὶ μεῖζόν τι τοῖς υἱοῖς παρασχόντι τῆς βασιλείας τὴν ὁμόνοιαν, ἣν "Αὐτὸς," ἔφη, "συναρμόσω μᾶλλον· ὁ μὲν γὰρ κύριον ἐμὲ τῆς ἀρχῆς καὶ δικαστὴν τοῦ διαδόχου κατέστησεν, ἐγὼ δὲ, μετὰ τοῦ συμφέροντος ἐμαυτῷ· καὶ ἐκεῖνον ἀμειβόμενος, τούσδε τοὺς τρεῖς παῖδας ἀποδείκνυμι βασιλέας, καὶ τῆς γνώμης πρῶτον τὸν θεὸν σύμψηφον, ἔπειτα καὶ ὑμᾶς παρακαλῶ γενέσθαι. Τῷ μὲν γὰρ ἡλικία, τοῖς δὲ εὐγένεια τὴν διαδοχὴν προξενεῖ· τό γε μὴν μέγεθος τῆς βασιλείας ἀρκεῖ καὶ πλείοσιν. Οὓς δὲ Καῖσαρ μὲν ἥνωσε, καθίστησι δὲ πατὴρ, ὑμεῖς τηρήσατε, μήτε ἀδίκους μήτε ἀνωμάλους τὰς τιμὰς διδόντες, ἑκάστῳ δὲ κατὰ πρεσβεῖον· οὐ γὰρ τοσοῦτον εὐφρανεῖ τις τὸν παρ' ἡλικίαν θεραπευόμενον, ὅσον ὀδυνήσει τὸν ἀτιμούμενον. Οὓς γε μὴν ἑκάστῳ συνεῖναι δεήσει συγγενεῖς καὶ φίλους, ἐγὼ διανεμῶ, καὶ τῆς ὁμονοίας ἐκείνους ἐγγυητὰς καταστήσομαι, σαφῶς ἐπιστάμενος, ὅτι τὰς στάσεις καὶ τὰς φιλονεικίας γεννῶσιν αἱ τῶν συνδιατριβόντων κακοήθειαι· καὶ ἐὰν ὦσιν οὗτοι χρηστοὶ, τηροῦσι τὰς στοργάς. Ἀξιῶ

δὲ αὖ μόνον τούτους, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐν τῇ στρα- 114
τιᾷ μου ταξιάρχους, ἐν ἐμοὶ μόνῳ τὰς ἐλπίδας ἔχειν ἐπὶ τοῦ παρόντος. Οὐ γὰρ βασιλείαν, ἀλλὰ τιμὴν βασιλείας τοῖς υἱοῖς παραδίδωμι· καὶ τῶν μὲν ἡδέων ὡς ἄρχοντες ἀπολαύσουσι, τὸ βάρος δὲ τῶν πραγμάτων ἐμόν ἐστι, καὶ ἐὰν μὴ θέλω. Σκεπτέσθω δὲ ἕκαστος τήν τε ἡλικίαν μου καὶ τὴν ἀγωγὴν τοῦ βίου, καὶ τὴν εὐσέβειαν; οὔτε γὰρ οὕτως εἰμὶ γέρων, ὥστ' ἂν ἀπελπισθῆναι ταχέως, οὔτε εἰς τρυφὴν ἐκδιαιτώμενος, ἣ καὶ νέους ὑποτέμνεται, τό τε θεῖον οὕτω τεθεραπεύκαμεν, ὥστε ἂν ἐπὶ μήκιστον βίου προελθεῖν. Ὁ δὲ τοὺς ἐμοὺς παῖδας θεραπεύων ἐπὶ τῇ ἐμῇ καταλύσει, δώσει μοι καὶ περὶ ἐκείνων δίκας· οὐ γὰρ ἐγὼ, φθονῶν τοῖς ἐξ ἐμοῦ γεγεννημένοις, ἀνακόπτω τὴν εἰς αὐτοὺς φιλοτιμίαν, ἐπιστάμενος δὲ τοῖς νέοις γίνεσθαι τὰς σπουδὰς θράσους ἐφόδιον. Εἴ γε μὴν ἕκαστος ἐνθυμηθείη τῶν προσιόντων, ὅτι χρηστὸς μὲν ὢν παρ' ἐμοῦ λήψεται τὴν ἀμοιβὴν, στασιάζων δὲ καὶ παρὰ τῷ θεραπευομένῳ τὸ κακόηθες ἀνόνητον ἕξει, πάντας οἶμαι τὰ ἐμὰ φρονήσειν, τουτέστι τὰ τῶν ἐμῶν υἱῶν· καὶ γὰρ τούτοις συμφέρει κρατεῖν ἐμὲ, καὶ ἐμὲ τούτοις ὁμονοεῖν. Ὑμεῖς δὲ, ὦ παῖδες ἀγαθοὶ, πρῶτον ἐνθυμούμενοι τὴν ἱερὰν φύσιν, ἧς καὶ παρὰ θηρίοις αἱ στοργαὶ μένουσιν, ἔπειτα τὸν ποιησάμενον ἡμῶν τὰς διαλλαγὰς Καίσαρα, τρίτον ἐμὲ τὸν, ἐν οἷς ἔξεστιν ἐπιτάσσειν, παρακαλοῦντα, μείνατε ἀδελφοί. Δίδωμι δὲ ὑμῖν ἐσθῆτά τε ἤδη καὶ θεραπείαν βασιλικήν· ἐπεύχομαι δὲ καὶ τῷ θεῷ τηρῆσαι τὴν ἐμὴν κρίσιν, ἂν ὁμονοῆτε." Ταῦτα εἰπὼν, καὶ φιλοφρόνως ἕκαστον κατασπασάμενος τῶν υἱῶν, διέλυσε τὸ πλῆθος, τοὺς μὲν, συνευχομένους τοῖς εἰρημένοις, ὅσοι δὲ ἐπεθύμουν μεταβολῆς, μηδὲ ἀκηκοέναι προσποιουμένους.

CAP. XXIV. 1. Συναπήει δὲ τοῖς ἀδελφοῖς ἡ στάσις, καὶ χείρους τὰς ἐπ' ἀλλήλοις ὑπονοίας ἔχοντες ἀπηλλάγησαν. Ἀλέξανδρος μὲν καὶ Ἀριστόβουλος ὀδυνώμενοι κεκυρωμένον Ἀντιπάτρῳ τὸ πρεσβεῖον, Ἀντίπατρος δὲ καὶ τοῦ δευτερεύειν νεμεσῶν τοῖς ἀδελφοῖς. Ἀλλ' ὁ μὲν, ποικιλώτατος ὢν τὸ ἦθος, ἐχεμυθεῖν τε ᾔδει, καὶ πολλῷ τῷ πανούργῳ χρώμενος, τὸ πρὸς αὐτοὺς ἐκάλυπτε μῖσος· τοῖς δὲ δι' εὐγένειαν πᾶν τὸ νοηθὲν ἦν ἐπὶ γλώσσης. Καὶ παροξύνοντες μὲν ἐνέκειντο πολλοὶ, πλείους δὲ τῶν φίλων παρεδύνοντο κατάσκοποι. Πᾶν δὲ τὸ παρ' Ἀλεξάνδρῳ λαληθὲν εὐθέως ἦν παρ' Ἀντιπάτρῳ, καὶ μετὰ προσθήκης μετέβαινεν ἀπὸ Ἀντιπάτρου πρὸς Ἡρώδην. Οὔτε δὲ ἁπλῶς φθεγξάμενος ὁ νεανίας ἀνυπεύθυνος ἦν, ἀλλ' εἰς διαβολὴν τὸ ῥηθὲν ἐστρέφε-
115 το, καὶ μετρίως παῤῥησιασαμένου μέγιστα τοῖς ἐλαχίστοις προσεπλάττετο. Καθίει δὲ Ἀντίπατρος ἀεὶ τοὺς ἐρεθίζοντας, ὅπως αὐτὸ τὸ ψεῦδος ἔχοι τὰς ἀφορμὰς ἀληθεῖς· καὶ ἐκ τῶν φημιζομένων ἕν τι διελεγχθὲν ἅπασι πίστιν ἐπετίθει. Καὶ τῶν αὐτῷ μὲν φίλων ἢ φύσει στεγανώτατος ἦν ἕκαστος, ἢ κατεσκευάζετο δωρεαῖς, ὡς μηδὲν ἐκφέρεσθαι τῶν ἀποῤῥήτων. Καὶ τὸν Ἀντιπάτρου βίον οὐκ ἂν ἁμάρτοι τις εἰπὼν κακίας μυστήριον· τοὺς γὰρ Ἀλεξάνδρῳ συνόντας χρήμασι διαφθείρων, ἢ κολακείαις ὑπιὼν, αἷς πάντα κατειργάσατο, ἐπεποιήκει προδότας, καὶ τῶν πραττομένων ἢ λαλουμένων φῶρας. Πάντα δὲ περιεσκεμμένως δραματουργῶν, τὰς πρὸς Ἡρώδην ὁδοὺς ταῖς διαβολαῖς ἐποιεῖτο τεχνικωτάτας· αὐτὸς μὲν ἀδελφοῦ προσωπεῖον ἐπικείμενος, καθιεὶς δὲ μηνυτὰς ἑτέρους. Καὶ ἐπειδὰν ἀπαγγελθείη τι κατὰ Ἀλεξάνδρου, παρελθὼν ὑπεκρίνετο, καὶ διασύρειν τὸ ῥηθὲν ἀρξάμενος, ἔπειτα κατεσκεύαζεν ἡσυχῇ, καὶ πρὸς ἀγανάκτησιν ἐξῆγε τὸν βασιλέα. Πάντα δ' εἰς ἐπιβουλὴν ἀνήγετο, καὶ τὸ δοκεῖν τῇ σφαγῇ τοῦ

πατρὸς ἐφεδρεύειν Ἀλέξανδρον· οὐδὲν γὰρ οὕτω πίστιν ἐχορήγει ταῖς διαβολαῖς, ὡς ἀπολογούμενος Ἀντίπατρος ὑπὲρ αὐτοῦ.

2. Τούτοις Ἡρώδης ἐξαγριούμενος, ὅσον ὑφῄρει καθ' ἡμέραν τῆς πρὸς τὰ μειράκια στοργῆς, τοσοῦτον Ἀντιπάτρῳ προςετίθει. Συναπέκλιναν δὲ καὶ τῶν κατὰ τὸ βασίλειον οἱ μὲν ἑκόντες, οἱ δὲ ἐξ ἐπιτάγματος, ὥςπερ Πτολεμαῖος ὁ τιμιώτατος τῶν φίλων, οἵ τε ἀδελφοὶ τοῦ βασιλέως, καὶ πᾶσα ἡ γενεά· πάντα γὰρ Ἀντίπατρος ἦν. Καί, τὸ πικρότατον Ἀλεξάνδρῳ, πάντα ἦν ἡ Ἀντιπάτρου μήτηρ, σύμβουλος καθ' αὐτῶν, μητρυιᾶς χαλεπωτέρα, καὶ πλεῖόν τι προγόνων μισοῦσα τοὺς ἐκ βασιλίδος. Πάντες μὲν οὖν ἐπὶ ταῖς ἐλπίσιν ἐθεράπευον Ἀντίπατρον ἤδη, συναφίστα δὲ ἕκαστον τὰ βασιλέως προςτάγματα, παραγγείλαντος τοῖς τιμιωτάτοις, μήτε προςιέναι, μήτε προςέχειν τοῖς περὶ Ἀλέξανδρον. Φοβερὸς δὲ ἦν οὐ μόνον τοῖς ἐκ τῆς βασιλείας, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἔξωθεν φίλοις· οὐδενὶ γὰρ βασιλέων τοσαύτην Καῖσαρ ἔδωκε τιμήν, ὥςτε τὸν ἀπ' αὐτοῦ φεύγοντα καὶ μὴ προςηκούσης πόλεως ἐξαγαγεῖν. Τὰ δὲ μειράκια τὰς μὲν διαβολὰς ἠγνόει, παρ' ὃ καὶ μᾶλλον ἀφυλάκτως ἐνέπιπτον αὐταῖς· οὐδενὶ γὰρ ὁ πατὴρ φανερῶς ἀπεμέμφετο. Συνίει δὲ κατὰ μικρὸν ἐκ τοῦ ψύγματος, καὶ ὅτι πρὸς τὸ λυποῦν μᾶλλον ἐτραχύνετο. Διέθηκε δὲ πρὸς αὐτὰ καὶ τὸν θεῖον Φερώραν Ἀντίπατρος ἐχθρωδῶς, καὶ τὴν τηθίδα Σαλώμην, ὡς ἂν γαμετὴν οὖσαν, καθομιλῶν ἀεὶ καὶ παροξύνων. Συνήργει δὲ καὶ πρὸς τὴν ταύτης ἀπέχθειαν ἡ Ἀλεξάνδρου γυνὴ Γλαφύρα, γενεαλογοῦσα τὴν αὑτῆς εὐγένειαν, καὶ ὡς πασῶν τῶν κατὰ τὸ βασίλειον εἴη δεσπότις, κατὰ πατέρα μὲν ἀπὸ
Τημένου, κατὰ μητέρα δὲ ἀπὸ Δαρείου τοῦ 116
Ὑστάσπεως οὖσα. Πολλὰ δὲ ὠνείδιζεν εἰς δυςγένειαν, τήν τε ἀδελφὴν τὴν Ἡρώδου, καὶ τὰς γυναῖκας, ὧν ἑκάστη δι' εὐμορφίαν, οὐκ ἀπὸ γένους,

ηρέθη. Πολλαὶ δὲ ἦσαν, ὡς ἂν ἐφιεμένου τε πατρίως Ἰουδαίοις γαμεῖν πλείους, καὶ τοῦ βασιλέως ἡδομένου πλείοσιν, αἳ πᾶσαι διὰ τὸ μεγάλαυχον τῆς Γλαφύρας καὶ τὰς λοιδορίας ἐμίσουν Ἀλέξανδρον.

3. Τὴν δὲ Σαλώμην, καίτοι πενθερὰν οὖσαν, αὐτὸς Ἀριστόβουλος ἑαυτῷ διεστασίασεν, ὠργισμένην καὶ πρότερον ἐπὶ ταῖς ἐκ Γλαφύρας βλασφημίαις· ὠνείδιζε γὰρ τῇ γυναικὶ συνεχῶς τὴν ταπεινότητα, καὶ ὡς αὐτὸς μὲν ἰδιῶτιν, ὁ δὲ ἀδελφὸς αὐτοῦ Ἀλέξανδρος γήμαι βασιλίδα. Τοῦτο κλαίουσα τῇ Σαλώμῃ διήγγειλεν ἡ θυγάτηρ, προςετίθει δὲ, ὅτι καὶ τῶν ἄλλων ἀδελφῶν τὰς μὲν μητέρας ἀπειλοῖεν οἱ περὶ Ἀλέξανδρον, ἐπειδὰν παραλάβωσι τὴν βασιλείαν, ἱστουργοὺς ἅμα ταῖς δούλαις ποιήσειν, αὐτοὺς δὲ κωμῶν γραμματεῖς, ἐπισκώπτοντες, ὡς παιδευομένους ἐπιμελῶς. Πρὸς ἃ τὴν ὀργὴν οὐ κατέχουσα Σαλώμη πάντα διήγγειλεν Ἡρώδῃ· σφόδρα δ' ἦν ἀξιόπιστος κατὰ γαμβροῦ λέγουσα. Καί τις ἑτέρα διαβολὴ συνέδραμεν, ἡ τὸν θυμὸν ὑπεκκαύσασα τοῦ βασιλέως. Ἤκουσε γὰρ αὐτοὺς συνεχῶς ἀνακαλεῖσθαι μὲν τὴν μητέρα, καὶ κατοιμώζειν δὲ ἐπαρωμένους αὐτῷ, πολλάκις δὲ αὐτῷ, διαδιδόντος τῶν Μαριάμμης ἐσθήτων τινὰ ταῖς μεταγενεστέραις γυναιξὶν, ἀπειλεῖν, ὡς ἀντὶ τῶν βασιλικῶν ἐν τάχει περιθήσουσιν ἑαυταῖς ἐκ τριχῶν πεποιημένας.

4. Διὰ ταῦτα, καίτοι τὸ φρόνημα τῶν νεανίσκων ὑποδείσας, ὅμως οὐκ ἀπέκοπτε τὴν ἐλπίδα τῆς διορθώσεως· ἀλλὰ προςκαλεσάμενος αὐτοὺς, καὶ γὰρ εἰς Ῥώμην ἐκπλεύσειν ἔμελλε, βραχέα μὲν ἠπείλησεν ὡς βασιλεὺς, τὰ πολλὰ δὲ ἐνουθέτησεν ὡς πατὴρ, καὶ φιλεῖν τοὺς ἀδελφοὺς παρεκάλει, διδοὺς τῶν προημαρτημένων ἄφεσιν, εἰ πρὸς τὸ μέλλον ἀμείνους γένοιτο. Οἱ δὲ τὰς μὲν διαβολὰς ἀπεσκευάζοντο, ψευδεῖς εἶναι λέγοντες, πιστώσασθαι δὲ τὴν ἀπολογίαν τοῖς ἔργοις ἔφασκον· δεῖν μέντοι καὶ ἐκεῖνον ἀποφράττειν τὰς λογοποιΐας, τῷ μὴ

πιστεύειν ῥᾳδίως· οὐ γὰρ ἐπιλείψειν τοὺς καταψευσομένους αὐτῶν, ἕως ἂν ὁ πειθόμενος ᾖ.'

5. Τούτοις ὡς πατέρα πείσαντες ταχέως, τὸν μὲν ἐν χερσὶ φόβον διεκρούσαντο, τὴν δὲ εἰς τὰ μέλλοντα λύπην προςέλαβον· ἔγνωσαν γὰρ τήν τε Σαλώμην ἐχθρὰν καὶ τὸν θεῖον Φερώραν. Ἦσαν δὲ βαρεῖς μὲν ἀμφότεροι καὶ χαλεποὶ, Φερώρας δὲ μεί- 117
ζων, ὃς πάσης μὲν ἐκοινώνει τῆς βασιλείας πλὴν διαδήματος, προςόδου δὲ ἰδίας ἑκατὸν εἶχε τάλαντα, τὴν δὲ πέραν Ἰορδάνου πᾶσαν ἐκαρποῦτο χώραν, λαβὼν παρὰ τοῦ ἀδελφοῦ δῶρον· ὃς αὐτὸν ἐποίησε καὶ τετράρχην, αἰτησάμενος παρὰ Καίσαρος, βασιλικῶν τε γάμων ἠξίωσε συνοικίσας ἀδελφὴν τῆς ἰδίας γυναικός· μετὰ δὲ τὴν ἐκείνης τελευτὴν καθωσίωσε τὴν πρεσβυτάτην τῶν αὐτοῦ θυγατέρων, ἐπὶ προικὶ τριακοσίοις ταλάντοις. Ἀλλ' ἀπέδρα Φερώρας τὸν βασιλικὸν γάμον πρὸς ἔρωτα δούλης· ἐφ' ᾧ χαλεπήνας Ἡρώδης, την μὲν θυγατέρα τῷ πρὸς Πάρθων ὕστερον ἀναιρεθέντι συνέζευξεν ἀδελφιδῷ. Φερώρᾳ δὲ μετ' οὐ πολὺ τὴν ὀργὴν ἀνίει, διδοὺς συγγνώμην τῇ νόσῳ.

6. Διεβάλλετο δὲ καὶ πάλαι μὲν, ἔτι ζώσης τῆς βασιλίδος, ἐπιβουλεύειν αὐτῷ φαρμάκοις. Τότε δὲ πλεῖστοι μηνυταὶ προςήεσαν, ὡς, καίπερ φιλαδελφότατον ὄντα Ἡρώδην, εἰς πίστιν ὑπαχθῆναι τῶν λεγομένων καὶ δέος. Πολλοὺς δὲ τῶν ἐν ὑπονοίᾳ βασανίσας, τελευταῖον ἦλθεν ἐπὶ τοὺς Φερώρα φίλους. Ὧν ἐπιβουλὴν μὲν ἄντικρυς ὡμολόγησεν οὐδεὶς, ὅτι δὲ τὴν ἐρωμένην ἁρπασάμενος εἰς Πάρθους ἀποδράναι παρεσκευάζετο, συμμέτοχος δὲ τοῦ σκέμματος αὐτῷ καὶ τῆς φυγῆς Κοστόβαρος ὁ Σαλώμης ἀνὴρ, ᾧ συνῴκισεν αὐτὴν ὁ βασιλεὺς ἐπὶ μοιχείᾳ τοῦ προτέρου διαφθαρέντος. Ἦν δὲ ἐλευθέρα διαβολῆς οὐδὲ Σαλώμη. Καὶ γὰρ αὐτῆς Φερώρας ὁ ἀδελφὸς κατηγόρει, συνθήκας περὶ γάμου ποιουμένης πρὸς Συλλαῖον, τὸν Ὀβόδα τοῦ Ἀρά-

βων βασιλέως ἐπίτροπον, ὃς ἦν ἐχθρότατος Ἡρώδῃ. Διελεγχθεῖσα δὲ καὶ τοῦτο, καὶ πάντα, ὅσα Φερώρας ἐνεκάλει, συγγινώσκεται. Καὶ αὐτὸν δὲ Φερώραν ὁ βασιλεὺς ἀπέλυσε τῶν ἐγκλημάτων.

7. Μετέβαινε δὲ ἐπ' Ἀλέξανδρον ὁ χειμὼν τῆς οἰκίας, καὶ περὶ τὴν ἐκείνου κεφαλὴν ὅλος ἀπηρείσατο. Τρεῖς ἦσαν εὐνοῦχοι τῷ βασιλεῖ τιμιώτατοι, καὶ δῆλον ἐξ ὧν ἐλειτούργουν· τῷ μὲν γὰρ οἰνοχοεῖν προςετέτακτο, τῷ δὲ δεῖπνον προςφέρειν, ὁ δὲ αὐτὸν κατεκοίμιζέ τε καὶ συγκατεκλίνετο. Τούτους εἰς τὰ παιδικὰ δώροις μεγάλοις ὑπήγετο ὁ Ἀλέξανδρος. Μηνυθὲν δὲ τῷ βασιλεῖ, διηλέγχοντο βασάνοις. Καὶ τὴν μὲν συνουσίαν εὐθέως ὡμολόγουν, ἐξέφερον δὲ καὶ τὰς εἰς αὐτὴν ὑποσχέσεις, ὃν τρόπον ἀπατηθεῖεν ὑπ' Ἀλεξάνδρου, λέγοντος, 'ὡς οὐκ ἐν Ἡρώδῃ δέοι τὰς ἐλπίδας ἔχειν, ἀναιδεῖ γέροντι, καὶ βαπτομένῳ τὰς κόμας, εἰ μὴ διὰ τοῦτο αὐτὸν οἴονται καὶ νέον, αὐτῷ δὲ προςέχειν, ὃς καὶ παρὰ ἄκοντος διαδέξεται τὴν βασιλείαν, οὐκ εἰς μακρὰν τε τοὺς μὲν ἐχθροὺς ἀμυνεῖται, τοὺς φίλους δ' εὐδαίμονας ποιήσει καὶ μακαρίους, πρὸ πάντων δ' αὐτούς· εἶναι δὲ καὶ θεραπείαν τῶν δυνατῶν περὶ τὸν Ἀλέξανδρον λαθραίαν, τούς τε ἡγεμόνας τοῦ στρατιωτικοῦ καὶ τοὺς ταξιάρχους κρύφα πρὸς αὐτὸν συνιέναι.'

118 8. Ταῦτα τὸν Ἡρώδην οὕτως ἐξεφόβησεν, ὡς μηδὲ παραχρῆμα τολμῆσαι τὰς μηνύσεις ἐκφέρειν· ἀλλὰ κατασκόπους ὑποπέμπων νύκτωρ καὶ μεθ' ἡμέραν, ἕκαστα τῶν πραττομένων ἢ λεγομένων διηρεύνα, καὶ τοὺς ἐν ταῖς ὑποψίαις εὐθέως ἀνῄρει. Δεινῆς δὴ ἀνομίας ἐπλήσθη τὸ βασίλειον· κατὰ γὰρ ἔχθραν ἢ μῖσος ἴδιον ἕκαστος ἔπλασσε τὰς διαβολὰς, καὶ πολλοὶ πρὸς τοὺς διαφόρους φονῶντι τῷ βασιλικῷ θυμῷ κατεχρῶντο. Καὶ τὸ μὲν ψεῦδος εἶχε παραχρῆμα πίστιν, αἱ κολάσεις δὲ τῶν διαβολῶν ἦσαν ὠκύτεραι. Κατηγόρητο γοῦν τις ἄρτι κατηγορήσας, καὶ τῷ πρὸς αὐ-

τοῦ διελεγχθέντι συναπήγετο· τὰς γὰρ ἐξετάσεις τοῦ βασιλέως ὁ περὶ τῆς ψυχῆς κίνδυνος ὑπετέμνετο. Προέβη δὲ εἰς τοσοῦτον πικρίας, ὡς μηδὲ τῶν ἀκαταιτιάτων τινὶ προςβλέπειν ἡμέρως, εἶναι δὲ καὶ τοῖς φίλοις ἀπηνέστατος. Πολλοῖς γοῦν αὐτῶν ἀπεῖπε τὸ βασίλειον. Καὶ πρὸς οὓς οὐκ εἶχε χειρὸς ἐξουσίαν, τῷ λόγῳ χαλεπὸς ἦν. Ἐπανέβη δὲ Ἀντίπατρος ἐν ταῖς συμφοραῖς Ἀλεξάνδρῳ, καὶ στῖφος ποιήσας τῶν συγγενῶν οὐκ ἔστιν ἥντινα διαβολὴν παρέλιπε. Προήχθη γέ τοι πρὸς τοσοῦτον δέους ὁ βασιλεὺς ὑπὸ τῆς τερατείας αὐτοῦ καὶ τῶν συνταγμάτων, ὥςτε ἐφιστάναι δοκεῖν αὐτῷ τὸν Ἀλέξανδρον ξιφήρη. Συλλαβὼν γοῦν αὐτὸν ἔδησεν ἐξαπίνης, καὶ πρὸς βάσανον ἐχώρει τῶν φίλων αὐτοῦ. Σιγῶντες δὲ ἀπέθνησκον οἱ πολλοὶ, καὶ μηδὲν ὑπὲρ τὸ συνειδὸς εἰπόντες· οἱ δὲ ὑπὸ τῶν ἀλγηδόνων ψεύσασθαι βιασθέντες ἔλεγον, ὡς ἐπιβουλεύοι τε αὐτῷ μετὰ Ἀριστοβούλου τοῦ ἀδελφοῦ, καὶ παραφυλάττοι κυνηγοῦντα κτείνας εἰς Ῥώμην ἀποδράναι. Τούτοις, καίπερ οὐ πιθανοῖς οὖσιν, ἀλλ᾽ ὑπὸ τῆς ἀνάγκης ἐσχεδιασμένοις, ὁ βασιλεὺς ἐπίστευεν ἡδέως, παραμυθίαν λαμβάνων τοῦ δῆσαι τὸν υἱὸν τὸ μὴ δοκεῖν ἀδίκως.

CAP. XXV. 1. Ὁ δὲ Ἀλέξανδρος ἐπεὶ τὸν πατέρα μεταπεῖσθειν ἀμήχανον ἑώρα, τοῖς δεινοῖς ὁμόσε χωρεῖν διέγνω· καὶ τέσσαρας κατὰ τῶν ἐχθρῶν βίβλους συνταξάμενος, προςωμολόγει μὲν τὴν ἐπιβουλὴν, κοινωνοὺς δὲ ἀπεδείκνυε τοὺς πλείστους αὐτῶν, πρὸ δὲ πάντων Φερώραν καὶ Σαλώμην· ταύτην γὰρ δὴ καὶ μιγῆναί ποτε αὐτῷ καὶ μὴ θέλοντι, νύκτωρ εἰςβιασαμένην. Αἵ τε οὖν βίβλοι παρῆσαν εἰς χεῖρας Ἡρώδῃ, πολλὰ καὶ δεινὰ κατὰ τῶν δυνατῶν βοῶσαι. Καὶ διὰ τάχους εἰς Ἰουδαίαν Ἀρχέλαος ἀφικνεῖται, περὶ τῷ γαμβρῷ καὶ τῇ θυγατρὶ δείσας. Γίνεται δὲ βοηθὸς αὐτοῖς μάλα προμηθὴς, καὶ τέχνῃ 119

τὴν τοῦ βασιλέως ἀπειλὴν διεκρούσατο. Συμβαλὼν γὰρ εὐθέως αὐτῷ, "Ποῦ ποτέ ἐστιν ὁ ἀλιτήριός μου γαμβρὸς;" — ἐβόα — "ποῦ δὲ τὴν πατροκτόνον ὄψομαι κεφαλὴν, ἣν ταῖς ἐμαυτοῦ χερσὶ διασπαράξω; Προςθήσω δὲ καὶ τὴν θυγατέρα μου τῷ καλῷ νυμφίῳ, καὶ γὰρ, εἰ μὴ κεκοινώνηκε τοῦ σκέμματος, ὅτι τοιούτου γέγονε γυνὴ, μεμίανται. Θαυμάζω δὲ καὶ σὲ τὸν ἐπιβουλευθέντα τῆς ἀνεξικακίας, εἰ ζῇ μέχρι νῦν Ἀλέξανδρος· ἐγὼ γὰρ ἠπειγόμην ἀπὸ Καππαδοκίας, ὡς τὸν μὲν εὑρήσων πάλαι δεδωκότα δίκας, μετὰ δὲ σοῦ περὶ τῆς θυγατρὸς ἐξετάσων, ἣν καὶ ἐκείνῳ, σὲ καὶ τὸ σὸν ἀξίωμα βλέπων, ἐνηγγύησα. Νῦν δὲ περὶ ἀμφοῖν ἡμῖν βουλευτέον, καὶ ἂν ᾖς λίαν πατὴρ τοῦ κολάζειν υἱὸν ἐπίβουλον ἀτονώτερος, ἀμείψωμεν τὰς δεξιὰς, καὶ γενώμεθα τῆς ἀλλήλων ὀργῆς διάδοχοι."

2. Τούτοις περικομπήσας, καίπερ παρατεταγμένον, Ἡρώδην ὑπάγεται. Δίδωσι γοῦν αὐτῷ τὰς συνταχθείσας ὑπ' Ἀλεξάνδρου βίβλους ἀναγνῶναι, καὶ καθ' ἕκαστον ἐφιστὰς κεφάλαιον, συνεσκέπτετο. Λαμβάνει δὲ ὁ Ἀρχέλαος ἀφορμὴν τοῦ στρατηγήματος, καὶ κατὰ μικρὸν εἰς τοὺς ἐγγεγραμμένους καὶ Φερώραν μετῆγε τὴν αἰτίαν. Ὡς δὲ ἑώρα πιστεύοντα τὸν βασιλέα, "Σκεπτέον," ἔφη, "μή ποτε τὸ μειράκιον ὑπὸ τοσούτων εἴη πονηρῶν ἐπιβουλευόμενον, οὐχ ὑπὸ τοῦ μειρακίου σύ· καὶ γὰρ οὐδὲ ὁρᾶν αἰτίαν, ἐξ ἧς ἂν εἰς τηλικοῦτον μῦσος προςέπεσεν, ἀπολαῦον μὲν ἤδη βασιλείας, ἐλπίζον δὲ καὶ διαδοχῆς, εἰ μή τινες ἦσαν ἀναπείθοντες, καὶ τὸ τῆς ἡλικίας εὔκολον ἐπὶ κακῷ μεταχειριζόμενοι. Διὰ γὰρ τῶν τοιούτων ἐξαπατᾶσθαι μὲν οὐ νέους μόνον, ἀλλὰ καὶ γέροντας, οἴκους δὲ λαμπροτάτους καὶ βασιλείας ὅλας ἀνατρέπεσθαι."

3. Συνήνει τοῖς λεγομένοις Ἡρώδης, καὶ τὴν μὲν πρὸς Ἀλέξανδρον ὀργὴν ἐπανίει κατ' ὀλίγον, πρὸς δὲ Φερώραν παρωξύνετο· τῶν γὰρ τεσσάρων βιβλίων

αὐτὸς ἦν ἡ ὑπόθεσις. Ὃς κατιδὼν τό τε τοῦ βασιλέως ὀξύῤῥοπον, καὶ τὴν Ἀρχελάου φιλίαν παρ' αὐτῷ πάντων κρατοῦσαν, ὡς οὐκ ἐνῆν εὐσχήμων σωτηρία, τὴν δι' ἀναιδείας ἐπορίζετο. Καταλείψας γοῦν Ἀλέξανδρον προςέφευγεν Ἀρχελάῳ, καὶ ἐκεῖνος, 'οὐχ ὁρᾶν, ἔφη, πῶς ἂν αὐτὸν ἐξαιτήσαιτο, τοσούτοις ἐνεχόμενον ἐγκλήμασιν, ἐξ ὧν σαφῶς ἀποδείκνυται τοῦ βασιλέως ἐπίβουλος, καὶ τῶν παρόντων τῷ μειρακίῳ κακῶν αἴτιος γεγονώς, εἰ μὴ βούληται, τὸ πανοῦργον καὶ τὰς ἀρνήσεις ἀφεὶς, προςομολογῆσαι μὲν τὰ κατηγορημένα, συγγνώμην δὲ αἰτήσασθαι παρὰ τοῦ ἀδελφοῦ καὶ φιλοῦντος· εἰς γὰρ τοῦτο πάντα τρόπον αὐτῷ συνεργήσειν.'

4. Πείθεται Φερώρας, καὶ κατασκευάσας αὐτὸν, ὡς ἂν οἰκτρότατος φανείη, μελαίνη τε ἐσθῆτι καὶ δακρύοις, προςπίπτει τοῖς Ἡρώδου ποσὶν, ὡς πολλάκις ἔτυχε, συγγνώμην αἰτούμενος, καὶ 'μιαρὸν μὲν ἑαυτὸν ὁμολογῶν, δεδρακέναι γὰρ πάντα, ὅσα 120
κατηγόρητο· παρακοπὴν δὲ φρενῶν καὶ μανίαν ὀδυρόμενος, ἧς αἴτιον εἶναι τὸν ἔρωτα τῆς γυναικὸς ἔλεγε.' Παραστήσας δὲ κατήγορον καὶ μάρτυν αὐτοῦ Φερώραν Ἀρχέλαος, οὕτως ἤδη παρῃτεῖτο, καὶ τὴν Ἡρώδου κατέστελλεν ὀργὴν, χρώμενος οἰκείοις ὑποδείγμασι· 'καὶ γὰρ αὐτὸς, πολλῷ χαλεπώτερα πάσχων ὑπὸ ἀδελφοῦ, τῆς ἀμύνης ἐπίπροσθεν τίθεσθαι τὸ τῆς φύσεως δίκαιον· ἐν γὰρ ταῖς βασιλείαις, ὥςπερ ἐν μεγάλοις σώμασιν, ἀεί τι μέρος φλεγμαίνειν ὑπὸ τοῦ βάρους, ὅπερ ἀποκόπτειν μὲν οὐ χρῆναι, θεραπεύειν δὲ πρᾳότερον.'

5. Πολλὰ τοιαῦτα λέγων, Ἡρώδην μὲν ἐπὶ Φερώρᾳ μειλίσσεται. Διέμενε δὲ αὐτὸς ἀγανακτῶν πρὸς Ἀλέξανδρον, καὶ τὴν θυγατέρα διαζεύξας ἀπάξειν ἔφασκεν, ἕως περιέστησεν Ἡρώδην ἀντιπαρακαλεῖν ὑπὲρ τοῦ μειρακίου, καὶ πάλιν αὐτῷ μνηστεύεσθαι τὴν θυγατέρα. Σφόδρα δὲ ἀξιοπίστως Ἀρχέλαος ᾧ βούλεται συνοικίζειν αὐτὴν ἐπέτρεπε,

πλὴν Ἀλεξάνδρου· περὶ πλείστου γὰρ ποιεῖσθαι τηρεῖν πρὸς αὐτὸν τὰ τῆς ἐπιγαμίας δίκαια. Φαμένου δὲ τοῦ βασιλέως ‘δῶρον ἕξειν παρ᾽ αὐτοῦ τὸν υἱὸν, εἰ μὴ λύσειε τὸν γάμον, ὄντων μὲν αὐτοῖς ἤδη καὶ τέκνων, στεργομένης δὲ οὕτως ὑπὸ τοῦ μειρακίου τῆς γυναικὸς, ἣν παραμένουσαν μὲν ἔσεσθαι δυςώπημα τῶν ἡμαρτημένων, ἀποῤῥαγεῖσαν δὲ αἰτίαν τῆς εἰς ἅπαντα ἀπογνώσεως· μαλακωτέρας γὰρ γίνεσθαι τὰς τόλμας, πάθεσιν οἰκείοις περισπωμένας,’ κατανεύσας μόγις Ἀρχέλαος διαλλάσσεταί τε καὶ διαλλάσσει τῷ νεανίσκῳ τὸν πατέρα, ‘δεῖν μέντοι πάντως, ἔφη, πέμπειν αὐτὸν εἰς Ῥώμην, Καίσαρι διαλεξόμενον· γεγραφέναι γὰρ αὐτὸς ἐκείνῳ περὶ πάντων.’

6. Τὸ μὲν οὖν Ἀρχελάου στρατήγημα, δι᾽ οὗ τὸν γαμβρὸν ἐῤῥύσατο, πέρας εἶχε· μετὰ δὲ τὰς διαλλαγὰς ἐν εὐωχίαις καὶ φιλοφρονήσεσι διῆγον. Ἀπιόντα δὲ αὐτὸν Ἡρώδης δωρεῖται ταλάντων ἑβδομήκοντα δώροις, θρόνῳ τε χρυσῷ διαλίθῳ, καὶ εὐνούχοις, καὶ παλλακίδι, ἥτις ἐκαλεῖτο Παννυχὶς, τῶν τε φίλων ἐτίμησεν ἕκαστον κατ᾽ ἀξίαν. Ὁμοίως δὲ καὶ οἱ συγγενεῖς, προςτάξαντος τοῦ βασιλέως, πάντες Ἀρχελάῳ λαμπρὰ δῶρα ἔδοσαν. Προεπέμφθη δὲ ὑπό τε Ἡρώδου καὶ τῶν δυνατῶν μέχρις Ἀντιοχείας.

121 CAP. XXVI. 1. Μετ᾽ οὐ πολὺ δὲ εἰς τὴν Ἰουδαίαν παρέβαλεν ἀνὴρ, πολὺ τῶν Ἀρχελάου στρατηγημάτων δυνατώτερος, ὃς οὐ μόνον τὰς ὑπ᾽ ἐκείνῳ πολιτευθείσας Ἀλεξάνδρῳ διαλλαγὰς ἀνέτρεψεν, ἀλλὰ καὶ ἀπωλείας αἴτιος αὐτῷ κατέστη. Ὅς ἦν Λάκων, Εὐρυκλῆς τὸ ὄνομα, πόθῳ χρημάτων εἰς τὴν βασιλείαν προςφθαρείς· οὐ γὰρ ἀντεῖχεν ἔτι ἡ Ἑλλὰς αὐτοῦ τῇ πολυτελείᾳ. Λαμπρὰ δὲ Ἡρώδῃ δῶρα προςενεγκὼν, δέλεαρ ὧν ἐθηρᾶτο, καὶ παραχρῆμα πολλαπλασίω λαβὼν, οὐδὲν ἡγεῖτο τὴν καθαρὰν δό-

σιν, εἰ μὴ δι' αἵματος ἐμπορεύσαιτο τὴν βασιλείαν. Περιέρχεται γοῦν τὸν βασιλέα κολακείᾳ καὶ δεινότητι λόγων, καὶ περὶ αὐτοῦ ψευδέσιν ἐγκωμίοις. Ταχέως δὲ συνιδὼν τὸν Ἡρώδου τρόπον, καὶ πάντα λέγων τε καὶ πράττων τὰ πρὸς ἡδονὴν αὐτῷ, φίλος ἐν τοῖς πρώτοις γίνεται. Καὶ γὰρ ὁ βασιλεὺς διὰ τὴν πατρίδα, καὶ πάντες οἱ περὶ αὐτὸν ἡδέως προετίμων τὸν Σπαρτιάτην.

2. Ὁ δὲ, ἐπεὶ τὰ σαθρὰ τῆς οἰκίας κατέμαθε, τάς τε τῶν ἀδελφῶν διαφορὰς, καὶ ὅπως διέκειτο πρὸς ἕκαστον ὁ πατὴρ, Ἀντιπάτρου μὲν ξενίᾳ προκατείληπτο, φιλίᾳ δὲ Ἀλέξανδρον ὑπεκρίνετο, ψευσάμενος ἑταῖρον αὐτὸν εἶναι καὶ Ἀρχελάου πάλαι. Διὸ δὴ καὶ ταχέως ὡς δεδοκιμασμένος ἐδέχθη. Συνίστα δὲ ἑαυτὸν εὐθέως καὶ Ἀριστοβούλῳ τῷ ἀδελφῷ. Πάντων δὲ ἀποπειραθεὶς τῶν προσώπων ἄλλῳ ἄλλως ὑπήει. Γίνεται δὲ προηγουμένως μισθωτὸς Ἀντιπάτρου, καὶ προδότης Ἀλεξάνδρου· τῷ μὲν ὀνειδίζων, εἰ πρεσβύτατος ὢν περιόψεται τοὺς ἐφεδρεύοντας αὐτοῦ ταῖς ἐλπίσιν· Ἀλεξάνδρῳ δὲ, εἰ γεγεννημένος ἐκ βασιλίδος, καὶ βασιλίδι συνοικῶν, ἐάσει διαδέχεσθαι τὴν ἀρχὴν τὸν ἐξ ἰδιώτιδος, καὶ ταῦτα μεγίστην ἀφορμὴν ἔχων Ἀρχέλαον. Ἦν δὲ πιστὸς τῷ μειρακίῳ σύμβουλος, τὴν Ἀρχελάου φιλίαν πλασάμενος· δι' ὃ μηδὲν ὑποστελλόμενος Ἀλέξανδρος, τά τε κατὰ Ἀντίπατρον ἀπωδύρετο πρὸς αὐτὸν, καὶ ὡς Ἡρώδης αὐτῶν τὴν μητέρα κτείνας, οὐ παράδοξον, εἰ καὶ αὐτοὺς ἀφαιρεῖται τὴν ἐκείνης βασιλείαν. Ἐφ' οἷς Εὐρυκλῆς οἰκτείρειν τε καὶ συναλγεῖν ὑπεκρίνετο· τὰ δὲ αὐτὰ καὶ τὸν Ἀριστόβουλον εἰπεῖν δελεάσας, καὶ ταῖς κατὰ τοῦ πατρὸς μέμψεσιν ἐνδυσάμενος ἀμφοτέρους, ᾤχετο φέρων Ἀντιπάτρῳ τὰ ἀπόῤῥητα. Προσεψεύδετο δ' ἐπιβουλὴν, ὡς ἐνεδρευόντων αὐτῷ τῶν ἀδελφῶν, καὶ μόνον οὐκ ἐπιφερόντων ἤδη τὰ ξίφη. Λαβὼν δὲ ἐπὶ τούτοις χρημάτων πλῆθος, ἐπαινέτης ἦν Ἀντιπάτρου πρὸς

122 τὸν πατέρα. Τὸ δὲ τελευταῖον ἐργολαβήσας τὸν Ἀριστοβούλου καὶ Ἀλεξάνδρου θάνατον, κατήγορος αὐτῶν ἐπὶ τοῦ πατρὸς γίνεται. Καὶ προςελθὼν, ἀντιδιδόναι τὸ ζῆν, ἔφασκεν, Ἡρώδῃ, τῶν εἰς αὐτὸν εὐεργεσιῶν, καὶ τὸ φῶς ἀμοιβὴν τῆς ξενίας ἀντιπαρέχειν. Πάλαι γὰρ ἐπ' αὐτὸν ἠκονῆσθαι ξίφος, καὶ τὴν Ἀλεξάνδρου τετονῶσθαι δεξιὰν, ἐμποδὼν δὲ αὐτὸς γεγονέναι τῷ τάχει, συνεργεῖν ὑποκριθείς. Φάναι γὰρ τὸν Ἀλέξανδρον, ὡς οὐκ ἀγαπᾷ βασιλεύσας αὐτὸς Ἡρώδης ἐν ἀλλοτρίοις, καὶ μετὰ τὸν τῆς μητρὸς αὐτῶν φόνον τὴν ἐκείνης ἀρχὴν σπαθήσας· ἀλλ' ἔτι καὶ νόθον εἰςάγει διάδοχον, Ἀντιπάτρῳ τῷ φθόρῳ τὴν παππῴαν αὐτῶν βασιλείαν προτείνων. Τιμωρήσειν γε μὴν αὐτὸν τοῖς Ὑρκανοῦ καὶ Μαριάμμης δαίμοσιν· οὐδὲ γὰρ πρέπειν αὐτὸν διαδέξασθαι παρὰ τοιούτου πατρὸς τὴν ἀρχὴν, δίχα φόνου. Πολλὰ δὲ εἶναι τὰ παροξύνοντα καθ' ἡμέραν, ὥςτε μηδὲ λαλίας τινὰ τρόπον ἀσυκοφάντητον καταλελεῖφθαι. Περὶ μὲν γὰρ εὐγενείας ἑτέρων μνείας γινομένης, αὐτὸς ἀλόγως ὑβρίζεσθαι, τοῦ πατρὸς λέγοντος, ὁ μόνος εὐγενὴς Ἀλέξανδρος, καὶ τὸν πατέρα διὰ ἀγένειαν ἀδοξῶν. Κατὰ δὲ τὰς θήρας προςκρούειν μὲν σιωπῶν, ἐπαινέσας δὲ προςακούειν εἴρων. Πανταχοῦ δὲ ἀμείλικτον εὑρίσκειν τὸν πατέρα, καὶ μόνῳ φιλόστοργον Ἀντιπάτρῳ· δι', ὧν ἡδέως καὶ τεθνήξεσθαι, μὴ κρατήσας τῆς ἐπιβουλῆς. Κτείναντι δὲ εἶναι σωτηρίας ἀφορμὴν, πρῶτον μὲν Ἀρχέλαον ὄντα κηδεστὴν, πρὸς ὃν διαφεύξεσθαι ῥᾳδίως, ἔπειτα Καίσαρα, μέχρι νῦν ἀγνοοῦντα τὸν Ἡρώδου τρόπον· οὐ γὰρ ὡς πρότερον αὐτῷ παραστήσεσθαι πεφρικὼς τὸν ἐφεστῶτα πατέρα, οὐδὲ φθέγξασθαι περὶ τῶν αὐτοῦ μόνον ἐγκλημάτων. Ἀλλὰ πρῶτον μὲν κηρύξειν τὰς τοῦ ἔθνους συμφορὰς, καὶ τοὺς μέχρι ψυχῆς φορολογουμένους, ἔπειτα εἰς οἵας τρυφὰς καὶ πράξεις τὰ δι' αἵματος πορισθέντα χρήματα ἀναλωθείη, τούς τε

ἐξ ἡμῶν πλουτήσαντας, οἷοι, καὶ τὰς θεραπευθείσας πόλεις; ἐπὶ τίσιν· ζητήσειν δὲ καὶ τὸν πάππον ἐκεῖ καὶ τὴν μητέρα, καὶ τὰ τῆς βασιλείας μύση πάντα κηρύξειν· ἐφ' οἷς οὐ κριθήσεσθαι πατροκτόνος.'

3. Τοιαῦτα κατὰ Ἀλεξάνδρου τερατευσάμενος ὁ Εὐρυκλῆς, ἐπῄνει πολλὰ τὸν Ἀντίπατρον, ὡς ἄρα μόνος τε εἴη φιλοπάτωρ, καὶ διὰ τοῦτο μέχρι νῦν τῆς ἐπιβουλῆς ἐμπόδιον. Μήπω δὲ καλῶς ὁ βασιλεὺς ἐπὶ τοῖς πρώτοις κατεσταλμένος, εἰς ἀνήκεστον ὀργὴν ἐξαγριοῦται. Καὶ πάλιν λαβὼν καιρὸν Ἀντίπατρος, ἑτέρους κατὰ τῶν ἀδελφῶν ὑπέπεμπε κατηγόρους, λέγειν, ὅτι Ἰουκούνδῳ καὶ Τυράννῳ 123
λάθρα διαλέγοιντο, τοῖς ἱππάρχαις μέν ποτε τοῦ βασιλέως γενομένοις, τότε δ' ἔκ τινων προςκρουσμάτων ἀποπεπτωκόσι τῆς τάξεως. Ἐφ' οἷς Ἡρώδης ὑπεραγανακτήσας, εὐθέως ἐβασάνισε τοὺς ἄνδρας. Ἀλλ' οἱ μὲν οὐδὲν τῶν διαβληθέντων ὡμολόγουν. Προςεκομίσθη δέ τις πρὸς τὸν Ἡρώδου φρούραρχον ἐπιστολὴ παρὰ Ἀλεξάνδρου, παρακαλοῦντος, ἵνα αὐτὸν δέξηται τῷ φρουρίῳ μετὰ Ἀριστοβούλου τοῦ ἀδελφοῦ κτείναντα τὸν πατέρα, καὶ παράσχῃ τοῖς ὅπλοις χρήσασθαι καὶ ταῖς ἄλλαις ἀφορμαῖς. Ταύτην Ἀλέξανδρος μὲν ἔλεγε τέχνασμα εἶναι Διοφάντου. Γραμματεὺς δὲ ὁ Διόφαντος τοῦ βασιλέως, τολμηρὸς ἀνὴρ καὶ δεινὸς μιμήσασθαι πάσης χειρὸς γράμματα· πολλὰ γοῦν παραχαράξας, τελευταῖον ἐπὶ τούτῳ καὶ κτείνεται. Βασανίσας δὲ τὸν φρούραρχον Ἡρώδης οὐδὲν ἤκουσεν οὐδὲ παρ' ἐκείνου τῶν διαβεβλημένων.

4. Ἀλλὰ καίτοι τοὺς ἐλέγχους εὑρίσκων ἀσθενεῖς, τοὺς υἱοὺς ἐκέλευσε τηρεῖν ἔτι μέντοι λελυμένους· τὸν δὲ λυμεῶνα τῆς οἰκίας καὶ δραματουργὸν ὅλου τοῦ μύσους Εὐρυκλέα, σωτῆρα καὶ εὐεργέτην καλῶν, πεντήκοντα δωρεῖται ταλάντοις. Ὁ δὲ τὴν ἀκριβῆ φήμην φθάσας εἰς Καππαδοκίαν, ἀργυρίζε-

ται καὶ παρὰ Ἀρχελάου, τολμήσας εἰπεῖν, ὅτι καὶ διαλλάξειεν Ἡρώδην Ἀλεξάνδρῳ. Διάρας δὲ εἰς τὴν Ἑλλάδα, τοῖς ἐκ κακῶν κτηθεῖσιν εἰς ὅμοια κατεχρήσατο· δὶς γοῦν ἐπὶ Καίσαρος κατηγορηθεὶς ἐπὶ τῷ στάσεως ἐμπλῆσαι τὴν Ἀχαΐαν, καὶ περιδύειν τὰς πόλεις, φυγαδεύεται. Καὶ ἐκεῖνον μὲν οὕτως ἡ Ἀριστοβούλου καὶ Ἀλεξάνδρου ποινὴ περιῆλθεν.

5. Ἄξιον δὲ ἀντιθεῖναι τὸν Κῷον Εὐάρατον τῷ Σπαρτιάτῃ· καὶ γὰρ οὗτος ὢν ἐν τοῖς μάλιστα φίλοις Ἀλεξάνδρῳ, καὶ κατὰ τὸν αὐτὸν Εὐρυκλεῖ καιρὸν ἐπιδημήσας, πυνθανομένῳ τῷ βασιλεῖ, περὶ ὧν ἐκεῖνος διέβαλλεν, ὅρκοις μηδὲν ἀκηκοέναι παρὰ τῶν μειρακίων ἐπιστώσατο. Οὐ μὴν ὤνησέ γέ τι τοὺς ἀθλίους· μόνον γὰρ ἦν τῶν κακῶν ἀκροατὴς ἑτοιμότατος Ἡρώδης, καὶ κεχαρισμένος αὐτῷ πᾶς ὁ συμπιστεύων καὶ συναγανακτῶν.

CAP. XXVII. 1. Παρώξυνε δὲ αὐτοῦ καὶ Σα-
124 λώμη τὴν ἐπὶ τοῖς τέκνοις ὠμότητα. Ταύτην γὰρ συνδήσασθαι τοῖς κινδύνοις ὁ Ἀριστόβουλος θέλων, οὖσαν ἑκυρὰν καὶ τηθίδα, διαπέμπεται, 'σώζειν αὑτὴν παραινῶν· παρεσκευάσθαι γὰρ βασιλέα κτείνειν αὐτὴν διαβληθεῖσαν ἐφ' οἷς καὶ πρότερον, Συλλαίῳ τῷ Ἄραβι γήμασθαι σπουδάζουσαν, λάθρα τὰ τοῦ βασιλέως ἀπόῤῥητα διαγγέλλειν πρὸς αὐτὸν ἐχθρὸν ὄντα.' Τοῦθ' ὥσπερ τελευταία θύελλα χειμαζομένους τοὺς νεανίσκους ἐπεβάπτισεν· ἡ γὰρ Σαλώμη, δραμοῦσα πρὸς βασιλέα, τὴν παραίνεσιν ἐμήνυσε. Καὶ ἐκεῖνος μηκέτι καρτερήσας, δεσμεῖ μὲν ἀμφοτέρους τοὺς υἱεῖς, καὶ διαχωρίζει ἀπ' ἀλλήλων. Πέμπει δὲ πρὸς Καίσαρα διὰ τάχους Οὐολούμνιόν τε τὸν στρατοπεδάρχην, καὶ τὸν φίλον Ὄλυμπον, ἐγγράφως τὰς μηνύσεις φέροντας. Οἱ δὲ ὡς εἰς Ῥώμην πλεύσαντες ἀπέδοσαν τὰ ἀπὸ τοῦ βασιλέως γράμματα, σφόδρα μὲν ἠχθέσθη Καῖσαρ ἐπὶ τοῖς νεανίσκοις. Οὐ μὴν ᾤετο δεῖν ἀφελέσθαι τὸν πατέρα τὴν

κατὰ τῶν υἱῶν ἐξουσίαν. Ἀντιγράφει γοῦν κύριον μὲν αὐτὸν καθιστὰς, ‘εὖ μέντοι ποιήσειν, λέγων, εἰ μετὰ κοινοῦ συνεδρίου, τῶν τε ἰδίων συγγενῶν, καὶ τῶν κατὰ τὴν ἐπαρχίαν ἡγεμόνων, ἐξετάσειε τὴν ἐπιβουλήν. Καὶ ἂν μὲν ἐνέχωνται, κτείνειν, ἂν δὲ μόνον ὦσι δρασμὸν βεβουλευμένοι, κολάσειν μετριώτερον.’

2. Τούτοις Ἡρώδης πείθεται, καὶ παραγενόμενος εἰς Βηρυτὸν, ἔνθα προςέταξε Καῖσαρ, συνήγαγε τὸ δικαστήριον. Προκαθέζονται δὲ οἱ ἡγεμόνες, γραφὲν αὐτοῖς ὑπὸ Καίσαρος, Σατουρνῖνός τε καὶ οἱ περὶ Πεδάνιον πρέσβεις· σὺν οἷς καὶ Οὐολούμνιος ὁ ἐπίτροπος, ἔπειτα οἱ τοῦ βασιλέως συγγενεῖς καὶ φίλοι, Σαλώμη τε καὶ Φερώρας, μεθ᾽ οὓς οἱ πάσης Συρίας ἄριστοι, πλὴν Ἀρχελάου τοῦ βασιλέως· τοῦτον γὰρ, ὄντα κηδεστὴν Ἀλεξάνδρου, δι᾽ ὑποψίας εἶχεν Ἡρώδης. Τοὺς γε μὴν υἱεῖς οὐ προήγαγεν εἰς τὴν δίκην μάλα προμηθῶς, — ᾔδει γὰρ, ὅτι καὶ μόνον ὀφθέντες ἐλεηθήσονται πάντως· εἰ δὲ δὴ καὶ λόγου μεταλάβοιεν, ῥᾳδίως Ἀλέξανδρον ἀπολύσεσθαι τὰς αἰτίας, — ἀλλ᾽ οἱ μὲν ἐν Πλατάνῃ, κώμῃ Σιδωνίων, ἐφρουροῦντο.

3. Καταστὰς δὲ ὁ βασιλεὺς, ὡς πρὸς παρόντας διετείνετο. Κατηγόρει τε τὴν μὲν ἐπιβουλὴν ἀσθενῶς, ὡς ἂν ἀπορούμενος εἰς αὐτὴν ἐλέγχων, λοιδορίας τε καὶ σκώμματα καὶ ὕβρεις καὶ πλημμελείας μυρίας εἰς αὐτὸν, ἃ καὶ θανάτου χαλεπώτερα, τοῖς συνέδροις ἀπέφαινεν. Ἔπειτα μηδενὸς ἀντιλέγοντος, ἐποικτισάμενος, ὡς αὐτὸς ἁλίσκοιτο, καὶ νικῴη νίκην πικρὰν κατὰ τέκνων, ἐπηρώτα τὴν γνώμην ἕκαστον. Καὶ πρῶτος Σατουρνῖνος ἀπεφήνατο ‘κατακρίνειν μὲν τῶν νεανίσκων, ἀλλ᾽ οὐ θάνατον· οὐ γὰρ εἶναι θεμιτὸν αὐτῷ, τριῶν παρεστώτων 125
τέκνων, ἑτέρου τέκνοις ἀπώλειαν ἐπιψηφίσασθαι.’ Σύμψηφοι δὲ αὐτῷ καὶ οἱ δύο πρεσβευταὶ γίνονται, καὶ τούτοις ἕτεροί τινες ἠκολούθησαν. Οὐολούμνιος

δὲ τῆς σκυθρωπῆς ἀποφάσεως ἤρξατο· καὶ μετ' αὐτὸν πάντες θάνατον κατακρίνουσι τῶν μειρακίων, οἱ μὲν κολακεύοντες, οἱ δὲ μισοῦντες Ἡρώδην, καὶ οὐδεὶς δι' ἀγανάκτησιν. Ἔνθα δὴ μετέωρος ἥ τε Συρία πᾶσα καὶ τὸ Ἰουδαϊκὸν ἦν, ἐκδεχομένων τὸ τέλος τοῦ δράματος· οὐδεὶς μέντοι ὑπελάμβανεν ἔσεσθαι μέχρι τεκνοκτονίας ὠμὸν Ἡρώδην. Ὁ δὲ σύρας τοὺς υἱεῖς εἰς Τύρον, καὶ ἐκεῖθεν διαπλεύσας εἰς Καισάρειαν, τρόπον ἀναιρέσεως τοῖς μειρακίοις ἐσκέπτετο.

4. Παλαιὸς δέ τις τοῦ βασιλέως στρατιώτης ὄνομα Τήρων, ἔχων υἱὸν σφόδρα συνήθη καὶ φίλον Ἀλεξάνδρῳ, καὶ αὐτὸς ἠγαπηκὼς ἰδίᾳ τὰ μειράκια, δι' ὑπερβολὴν ἀγανακτήσεως ἔκφρων ἐγένετο, καὶ τὸ μὲν πρῶτον ἐβόα περιϊὼν 'πεπατῆσθαι τὸ δίκαιον, ἀπολωλέναι τὴν ἀλήθειαν, συγκεχύσθαι τὴν φύσιν, ἀνομίας γέμειν τὸν βίον, καὶ πάνθ' ὅσα μὴ φειδομένῳ τοῦ ζῆν ὑπηγόρευε τὸ πάθος.' Τέλος δὲ καὶ τῷ βασιλεῖ τολμήσας προςελθεῖν, "Ἀλλ' ἐμοὶ μὲν," ἔφη, "κακοδαιμονέστατος εἶναι δοκεῖς, ὅςτις κατὰ τῶν φιλτάτων πείθῃ τοῖς πονηροτάτοις, εἴ γε Φερώρα καὶ Σαλώμης καταγνοὺς πολλάκις θάνατον, πιστεύεις τούτοις κατὰ τῶν τέκνων, οἵ σε τῶν γνησίων περικόπτοντες διαδόχων, ἐπ' Ἀντιπάτρῳ καταλείπουσι μόνῳ, τὸν αὐτοῖς εὐμεταχείριστον αἱρούμενοι βασιλέα. Σκέψαι μέντοι γε, μή ποτε καὶ ἐκείνῳ γένηται μῖσος ἐν τοῖς στρατιώταις ὁ τῶν ἀδελφῶν θάνατος· οὐ γάρ ἐστιν, ὅςτις οὐκ ἐλεεῖ τὰ μειράκια· τῶν δὲ ἡγεμόνων καὶ φανερῶς ἀγανακτοῦσι πολλοί." Ταῦθ' ἅμα λέγων, ὠνόμαζε τοὺς ἀγανακτοῦντας. Ὁ δὲ βασιλεὺς εὐθέως ἐκείνους τε καὶ αὐτὸν καὶ τὸν υἱὸν αὐτοῦ συνελάμβανεν.

5. Ἐφ' ᾧ τῶν ἐκ τῆς αὐλῆς τις κουρέων, Τρύφων ὄνομα, προεκπηδήσας ἔκ τινος φρενοβλαβείας, ἑαυτοῦ μηνυτὴς γίνεται. "Καὶ ἐμὲ γάρ," ἔφη, "Τήρων οὗτος ἀνέπειθεν, ὅταν θεραπεύω τῷ ξυρῷ

σε διαχρήσασθαι μεγάλας τέ μοι παρὰ Ἀλεξάνδρου δωρεὰς ὑπισχνεῖτο." Ταῦτα ἀκούσας Ἡρώδης τόν τε Τήρωνα σὺν τῷ παιδὶ, καὶ τὸν κουρέα βασάνοις διήλεγχε. Καὶ τῶν μὲν ἀρνουμένων, τοῦ δὲ μηδὲν πλέον λέγοντος, στρεβλοῦν ἐκέλευε τὸν Τήρωνα σφοδρότερον. Ὁ δὲ υἱὸς οἰκτείρας ‘ὑπέσχετο τῷ βασιλεῖ πάντα μηνύσειν, εἰ χαρίσαιτο τὸν πατέρα αὐτῷ.’ Καὶ ἐκείνου δόντος, εἶπεν ‘ὡς ὁ πατὴρ αὐτοῦ, πεισθεὶς Ἀλεξάνδρῳ, θελήσειεν αὐτὸν ἀνελεῖν.’ Τοῦτο οἱ μὲν εἰς ἀπαλλαγὴν τῆς τοῦ πατρὸς αἰκίας πεπλάσθαι, τινὲς δὲ ἀληθὲς ἔλεγον.

6. Ἡρώδης γε μὴν ἐν ἐκκλησίᾳ τῶν τε ἡγεμόνων καὶ Τήρωνος κατηγορήσας, τὸν λαὸν ἐπ' αὐτοὺς ἐστρατολόγησεν. Αὐτόθι γοῦν ἀναιροῦνται μετὰ τοῦ κουρέως, ξύλοις βαλλόμενοι καὶ λίθοις. Πέμψας δὲ καὶ τοὺς υἱεῖς εἰς Σεβαστὴν, οὖσαν οὐ πόῤῥω τῆς Καισαρείας, προςέταξεν ἀποπνῖξαι. Καὶ τελεσθέντος αὐτῷ ταχέως τοῦ προςτάγματος, τοὺς νεκροὺς εἰς Ἀλεξάνδρειον ἐκέλευσεν ἀνακομισθῆναι τὸ φρούριον, συνταφησομένους Ἀλεξάνδρῳ τῷ μητροπάτορι. Τὸ μὲν οὖν Ἀλεξάνδρου καὶ Ἀριστοβούλου τέλος τοιοῦτον.

CAP. XXVIII. 1. Ἀντιπάτρῳ δὲ, ἀδήριτον ἔχον- 126
τι τὴν διαδοχὴν, μῖσος ἀφόρητον ἐκ τοῦ ἔθνους ἐπεγείρεται, πάντων ἐπισταμένων, ὅτι τὰς διαβολὰς τοῖς ἀδελφοῖς πάσας ἐπισυντάξειεν οὗτος. Ὑποικούρει δὲ καὶ δέος οὐ μέτριον αὐξανομένην ὁρῶντι τὴν τῶν ἀνῃρημένων γενεάν· ἦσαν γὰρ Ἀλεξάνδρῳ μὲν ἐκ Γλαφύρας υἱεῖς δύο Τιγράνης καὶ Ἀλέξανδρος, Ἀριστοβούλῳ δὲ ἐκ Βερνίκης τῆς Σαλώμης θυγατρὸς Ἡρώδης μὲν καὶ Ἀγρίππας καὶ Ἀριστόβουλος υἱοὶ, θυγατέρες δὲ Ἡρωδιὰς καὶ Μαριάμμη. Τὴν μὲν οὖν Γλαφύραν Ἡρώδης μετὰ τῆς προικὸς ἀπέπεμψεν εἰς Καππαδοκίαν, ὡς ἀνεῖλεν Ἀλέξανδρον. Τὴν Ἀριστοβούλου δὲ Βερνίκην συνῴ-

κισε θείῳ πρὸς μητρὸς Ἀντιπάτρου· τὴν γὰρ Σαλώμην οὖσαν διάφορον ἐξοικειούμενος ὁ Ἀντίπατρος, τοῦτον ἐπραγματεύσατο τὸν γάμον. Περιέθει δὲ καὶ Φερώραν δώροις τε καὶ ταῖς ἄλλαις θεραπείαις, καὶ τοὺς Καίσαρος φίλους, οὐκ ὀλίγα πέμπων εἰς τὴν Ῥώμην χρήματα. Οἵ γε μὴν περὶ Σατουρνῖνον ἐν Συρίᾳ πάντες ἐπλήσθησαν τῶν ἀπ' αὐτοῦ δώρεων. Ἐμισεῖτο δὲ διδοὺς πλεῖον, ὡς ἂν οὐκ ἐκ τοῦ μεγαλοψύχου χαριζόμενος, ἀλλὰ ἀναλίσκων κατὰ δέος. Συνέβαινε δὴ τοὺς μὲν λαμβάνοντας οὐδὲν μᾶλλον εὔνους γίνεσθαι, χαλεπωτέρους δὲ ἐχθροὺς οἷς μὴ διδῴη· λαμπροτέρας δὲ καθ' ἡμέραν ἐποιεῖτο τὰς διαδόσεις, ὁρῶν τὸν βασιλέα, παρ' ἃς αὐτὸς ἐλπίδας εἶχεν, ἐπιμελούμενον τῶν ὀρφανῶν, καὶ τὴν ἐπὶ τοῖς ἀνῃρημένοις μετάνοιαν συνεμφαίνοντα, δι' ὧν ἠλέει τοὺς ἐξ ἐκείνων.

2. Συναγαγὼν γάρ ποτε Ἡρώδης συγγενεῖς τε καὶ τοὺς φίλους, παραστησάμενός τε τὰ παιδία, καὶ δακρύων ἐμπλήσας τοὺς ὀφθαλμούς, εἶπεν· "Ἐμὲ τοὺς πατέρας τούτων σκυθρωπὸς ἀφείλετο δαίμων, ταῦτα δέ μοι μετὰ τῆς φύσεως συνίστησιν ἔλεος ὀρφανίας. Πειρῶμαι δὲ, εἰ καὶ πατὴρ ἐγενόμην ἀτυχέστατος, πάππος γοῦν φανῆναι μετριώτερος, καὶ μετ' ἐμὲ κηδεμόνας αὐτοῖς καταλιπεῖν τοὺς ἐμοὶ φιλτάτους. Ἐγγυῶ δὲ τὴν μὲν σὴν, Φερώρα, θυγατέρα τῷ πρεσβυτέρῳ τῶν ἀδελφῶν Ἀλεξάνδρου παίδων, ἵνα ᾖς αὐτῷ κηδεμὼν ἀναγκαῖος, τῷ σῷ δὲ παιδὶ, Ἀντίπατρε, τὴν Ἀριστοβούλου θυγατέρα. Γένοιο γὰρ ἂν οὕτω πατὴρ τῆς ὀρφανῆς. Καὶ τὴν
127 ἀδελφὴν αὐτῆς ὁ ἐμὸς Ἡρώδης λήψεται, πρὸς μητρὸς ὢν ἀρχιερέως πάππου. Ὁ ἀγαπῶν μὲν οὖν ἐμὲ, ταύτην ἐχέτω τὴν γνώμην, ἣν διακόψει μηδεὶς ἐμὲ φιλῶν. Ἐπεύχομαι δὲ καὶ τῷ θεῷ συναρμόσασθαι τοὺς γάμους ἐπὶ συμφέροντι τῆς ἐμῆς βασιλείας καὶ τῶν ἐμῶν ἐγγόνων, τά τε παιδία ταυτὶ

γαληνοτέροις ἐπιδεῖν ὄμμασιν, ἢ τοὺς πατέρας αὐτῶν."

3. Ἔτι ταῦτα εἰπὼν ἐδάκρυσέ τε καὶ τῶν παίδων συνήρμοσε τὰς δεξιὰς, ἔπειτα κατασπασάμενος ἕκαστον φιλοφρόνως, διέλυσε τὸν σύλλογον. Ἐπαχνώθη δὲ εὐθὺς Ἀντίπατρος, καὶ δῆλος ἦν ἅπασιν ὀδυνώμενος. Ὑπελάμβανε γὰρ εἶναι, καὶ παρὰ τῷ πατρὶ, τὴν τῶν ὀρφανῶν τιμὴν ἑαυτοῦ κατάλυσιν, αὖθίς τε κινδυνεύσειν περὶ τῶν ὅλων, εἰ πρὸς Ἀρχελάῳ καὶ Φερώραν ὄντα τετράρχην βοηθὸν ἔχοιεν οἱ Ἀλεξάνδρου παῖδες. Συνελογίζετο δὲ τὸ καθ' ἑαυτοῦ μῖσος, καὶ τὸν τῶν ὀρφανῶν ἔλεον ἐκ τοῦ ἔθνους, ὅση τε σπουδὴ ζώντων, καὶ ὅση μνήμη παρὰ Ἰουδαίοις τῶν δι' αὐτὸν ἀπολωλότων ἦν ἀδελφῶν. Ἔγνω δὴ πάντα τρόπον διακόπτειν τὰς ἐγγύας.

4. Καὶ τὸ μὲν ὑπεῖναι πανούργως, ἔδεισε τὸν πατέρα χαλεπὸν ὄντα, καὶ πρὸς τὰς ὑποψίας κινούμενον εὐθέως. Ἐτόλμησε δὲ προσελθὼν ἱκετεύειν ἄντικρυς 'μὴ στερίσκειν αὐτὸν ἧς ἠξίωσε τιμῆς, μηδὲ αὐτῷ μὲν ὄνομα βασιλείας, δύναμιν δὲ ὑπάρχειν ἄλλοις· οὐ γὰρ κρατήσειν τῶν πραγμάτων, εἰ πρὸς Ἀρχελάῳ πάππῳ καὶ Φερώραν κηδεστὴν ὁ Ἀλεξάνδρου παῖς προσλάβοι· κατηντιβόλει δὲ πολλῆς οὔσης γενεᾶς κατὰ τὸ βασίλειον, μεταθεῖναι τοὺς γάμους'· — ἦσαν γὰρ δὴ τῷ βασιλεῖ γυναῖκες μὲν ἐννέα, τέκνα δὲ ἐκ τῶν ἑπτά. Αὐτὸς μὲν Ἀντίπατρος ἐκ Δωρίδος, Ἡρώδης δὲ ἐκ Μαριάμμης τῆς τοῦ ἀρχιερέως θυγατρὸς, Ἀντίπας δὲ καὶ Ἀρχέλαος ἐκ Μαλθάκης τῆς Σαμαρείτιδος, καὶ θυγάτηρ Ὀλυμπιὰς, ἣν ὁ ἀδελφιδοῦς αὐτοῦ Ἰώσηπος εἶχεν. ἐκ δὲ τῆς Ἱεροσολυμίτιδος Κλεοπάτρας Ἡρώδης καὶ Φίλιππος, ἐκ δὲ Παλλάδος Φασάηλος. Ἐγένοντο δὲ αὐτῷ καὶ ἄλλαι θυγατέρες, Ῥωξάνη τε καὶ Σαλώμη, ἡ μὲν ἐκ Φαίδρας, ἡ δὲ ἐξ Ἐλπίδος. Δύο δὲ εἶχεν ἀτέκνους, ἀνεψιάν τε καὶ ἀδελφιδῆν. Χωρὶς δὲ τούτων δύο ἀδελφὰς Ἀλεξάνδρου καὶ Ἀρι-

128 στοβούλου τὰς ἐκ Μαριάμμης. Οὔσης δὲ πολυπροσώπου τῆς γενεᾶς, ὁ Ἀντίπατρος ἐδεῖτο μετατεθῆναι τοὺς γάμους. —

5. Χαλεπῶς δὲ ὁ βασιλεὺς ἠγανάκτησε, καταμαθὼν αὐτοῦ τὸ πρὸς τοὺς ὀρφανοὺς ἦθος, ἔννοιά τε αὐτῷ παρέστη περὶ τῶν ἀνῃρημένων, μή ποτε καὶ ἐκεῖνοι γένοιντο τῶν Ἀντιπάτρου διαβολῶν ἀγώνισμα. Τότε μὲν οὖν πολλὰ πρὸς ὀργὴν ἀποκρινάμενος, ἀπελαύνει τὸν Ἀντίπατρον. Αὖθις δὲ ὑπαχθεὶς αὐτοῦ ταῖς κολακείαις, μεθηρμόσατο· καὶ αὐτῷ μὲν τὴν Ἀριστοβούλου συνῴκισε θυγατέρα, τὸν δὲ υἱὸν αὐτοῦ τῇ Φερώρα θυγατρί.

6. Καταμάθοι δ' ἄν τις, ὅσον ἴσον ἴσχυσεν ἐν τούτῳ κολακεύων Ἀντίπατρος, ἐκ τοῦ Σαλώμην ἐν ὁμοίοις οὖσαν ἀποτυχεῖν. Ταύτην γὰρ δή, καίπερ οὖσαν ἀδελφήν, καὶ πολλὰ διὰ Ἰουλίας τῆς Καίσαρος γυναικὸς ἱκετεύουσαν γαμηθῆναι τῷ Ἄραβι Συλλαίῳ, διωμόσατο μὲν ἐχθροτάτην ἕξειν, εἰ μὴ παύσαιτο τῆς σπουδῆς. Τὸ δὲ τελευταῖον ἄκουσαν Ἀλεξᾷ τινι τῶν φίλων συνῴκισεν, καὶ τῶν θυγατέρων αὐτῆς τὴν μὲν τῷ Ἀλέξα παιδί, τὴν δὲ ἑτέραν τῷ πρὸς μητρὸς Ἀντιπάτρου θείῳ. Τῶν δὲ ἐκ Μαριάμμης θυγατέρων ἡ μὲν ἀδελφῆς υἱὸν Ἀντίπατρον εἶχεν, ἡ δὲ ἀδελφοῦ Φασάηλον.

CAP. XXIX. 1. Διακόψας δὲ τὰς τῶν ὀρφανῶν ἐλπίδας ὁ Ἀντίπατρος, καὶ πρὸς τὸ συμφέρον αὐτῷ τὰς ἐπιγαμίας ποιησάμενος, ὡς ἐπὶ βεβαίοις μὲν ὥρμει ταῖς ἐλπίσι. Προςλαβὼν δὲ τῇ κακίᾳ τὸ πεποιθὸς, ἀφόρητος ἦν· τὸ γὰρ ἑκάστου μῖσος ἀποσκευάσασθαι μὴ δυνάμενος, ἐκ τοῦ φοβερὸς εἶναι τὴν ἀσφάλειαν ἐπορίζετο. Συνήργει δὲ καὶ Φερώρας ὡς ἂν ἤδη βασιλεῖ βεβαίῳ. Γίνεται δὲ καὶ γυναικῶν σύνταγμα κατὰ τὴν αὐλήν, ὃ νεωτέρους ἐκίνησε θορύβους. Ἡ γὰρ Φερώρα γυνή, μετὰ τῆς μητρὸς καὶ τῆς ἀδελφῆς προςλαβοῦσα τὴν Ἀντιπάτρου μη-

τέρα, πολλὰ μὲν ἠσέλγαινε κατὰ τὸ βασίλειον, ἐτόλμησε δὲ καὶ τοῦ βασιλέως ὑβρίσαι δύο θυγατέρας. Διὸ μάλιστα αὐτὴν ἐκεῖνος προβέβλητο· μισούμεναί γε μὴν ὑπ' αὐτοῦ, τῶν ἄλλων ἐπεκράτουν. Μόνη δὲ τῆς ὁμονοίας αὐτῶν ἀντίπαλος ἦν Σαλώμη, καὶ βασιλεῖ διέβαλλε τὴν σύνοδον, ὡς οὐκ ἐπ' ἀγαθῷ τῶν αὐτοῦ πραγμάτων εἴη. Γνοῦσαι δὲ ἐκεῖναι τὴν διαβολὴν, καὶ ὡς ἀγανακτήσειεν Ἡρώδης, τῆς μὲν φανερᾶς συνόδου καὶ τῶν φιλοφρονήσεων ἐπαύσαντο, τὸ ἐναντίον δὲ ὑπεκρίνοντο καὶ διαφέρεσθαι πρὸς 129
ἀλλήλας ἀκούοντος βασιλέως, αἷς συνυπεκρίνετο καὶ Ἀντίπατρος, ἐν τῷ φανερῷ προσκρούων Φερώρᾳ. Συνουσίαι δὲ ἦσαν αὐτῶν λάθρα, καὶ κῶμοι νυκτερινοὶ, τήν τε ὁμόνοιαν ἡ παρατήρησις ἐπέτεινεν. Ἠγνόει δὲ οὐδὲν Σαλώμη τῶν πραττομένων, καὶ πάνθ' Ἡρώδῃ διήγγελλεν.

2. Ἐξεκαίετο δ' ἐκεῖνος εἰς ὀργὴν, καὶ μάλιστα δ' ἐπὶ τὴν Φερώρα γυναῖκα· ταύτην γὰρ πλέον ἡ Σαλώμη διέβαλλεν. Ἀθροίσας γοῦν συνέδριον τῶν τε φίλων καὶ συγγενῶν, ἄλλα τε πολλὰ τῆς ἀνθρώπου κατηγόρει, καὶ τὴν εἰς τὰς αὐτοῦ θυγατέρας ὕβριν. Ὅτε τε Φαρισαίοις μὲν χορηγήσειε μισθοὺς κατ' αὐτοῦ, καὶ τὸν ἀδελφὸν αὐτῷ κατασκευάσειε πολέμιον, ἐνδυσαμένη φαρμάκοις. Τελευταῖον δὲ, εἰς Φερώραν ἀπέστρεψε τὸν λόγον, δυοῖν θάτερον ἑλέσθαι λέγων, ἢ αὐτὸν ἀδελφὸν, ἢ τὴν γυναῖκα. Τοῦ δὲ 'θᾶττον ἀπολείψειν τὸ ζῆν, ἢ τὴν γυναῖκα' φήσαντος, οὐκ ἔχων ὅ τι χρὴ δρᾶν, μετέβαινεν ἐπ' Ἀντίπατρον, ᾧ παρήγγειλε μήτε τῇ Φερώρα γυναικὶ μήτε αὐτῷ μήτε ἄλλῳ τινὶ τῶν ἐκείνης διαλέγεσθαι. Ὁ δὲ φανερῶς μὲν οὐ μετέβαινε τὸ πρόσταγμα, λάθρα δὲ διενυκτέρευε σὺν ἐκείνοις. Καὶ δεδοικὼς ἐπιτηροῦσαν τὴν Σαλώμην, πραγματεύεται διὰ τῶν ἐπὶ τῆς Ἰταλίας φίλων τὴν εἰς Ῥώμην ἀποδημίαν αὐτῷ· γραψάντων γὰρ ἐκείνων, δεῖν Ἀντίπατρον πεμφθῆναι διὰ χρόνου πρὸς Καίσαρα, ὁ δὲ οὔ τι

μελλήσας ἐξέπεμψε, θεραπείαν τε λαμπρὰν καὶ πλεῖστα δοὺς χρήματα, τήν τε διαθήκην κομίζειν, ἐν ᾗ βασιλεὺς μὲν Ἀντίπατρος ἐγέγραπτο, Ἀντιπάτρου δὲ Ἡρώδης διάδοχος, ὁ ἐκ Μαριάμμης τῆς τοῦ ἀρχιερέως θυγατρὸς γεγονώς.

3. Ἔπλευσε δὲ καὶ Συλλαῖος ὁ Ἄραψ ἐπὶ Ῥώμης, ἠμεληκὼς μὲν τῶν Καίσαρος προςταγμάτων, ἀγωνιούμενος δὲ πρὸς Ἀντίπατρον, περὶ ὧν ἐδεδίκαστο Νικολάῳ τάχιον. Οὐ μικρὸς δὲ αὐτῷ καὶ πρὸς Ἀρέταν ἦν ἀγὼν τὸν αὐτοῦ βασιλέα· τούτου γὰρ ἄλλους τε φίλους ἀνῃρήκει, καὶ Σόεμον, τῶν ἐν Πέτρᾳ τὸν δυνατώτατον. Πείσας δὲ πολλοῖς χρήμασι Φαβάτον τὸν Καίσαρος διοικητὴν, ἐχρῆτο βοηθῷ καὶ καθ' Ἡρώδου. Πλείονα δὲ δοὺς Ἡρώδης, ἀφίστησί τε ἀπὸ Συλλαίου Φαβάτον, καὶ δι' αὐτοῦ τὰ κελευσθέντα ὑπὸ Καίσαρος εἰςέπραττεν. Ὁ δὲ μηδὲν ἀποδοὺς, ἔτι καὶ κατηγόρει Φαβάτου πρὸς Καίσαρα, διοικητὴν εἶναι λέγων, οὐ τῶν ἐκείνου, τῶν δὲ Ἡρώδου συμφερόντων. Ἐφ' οἷς ὀργισθεὶς Φαβάτος — ἦν δὲ ἔτι παρ' Ἡρώδῃ μάλιστα τιμώμενος — γίνεται προδότης Συλλαίου τῶν ἀποῤῥήτων, τῷ τε βασιλεῖ φησὶ, ὅτι Συλλαῖος διαφθείρειεν αὐτοῦ τὸν σωματοφύλακα Κόρινθον χρήμασιν· ὃν δεῖ φυλάττεσθαι. Πείθεται δὲ ὁ βασιλεύς· καὶ γὰρ ἐτέθραπτο μὲν ὁ Κόρινθος ἐν τῇ
130 βασιλείᾳ, γένος δ' ἦν Ἄραψ. Συλλαμβάνει δ' εὐθέως οὐκ αὐτὸν μόνον, ἀλλὰ καὶ δύο ἑτέρους Ἄραβας, εὑρὼν παρ' αὐτῷ τὸν μὲν φίλον Συλλαίου, τὸν δὲ φύλαρχον. Οἱ δὲ βασανιζόμενοι 'πεῖσαι Κόρινθον, ὡμολόγησαν, ἐπὶ πολλοῖς χρήμασιν Ἡρώδην ἀνελεῖν.' Οὗτοι μὲν οὖν ἀνακριθέντες καὶ παρὰ Σατουρνίνῳ τῷ διέποντι τὴν Συρίαν, ἀνεπέμφθησαν εἰς Ῥώμην.

4. Ἡρώδης δ' οὐκ ἀνίει Φερώραν, βιαζόμενος ἀπαλλαγῆναι τῆς γυναικός· οὐδ' ἐπενόει μηχανὴν, δι' ἧς ἂν τιμωρήσαιτο τὴν ἄνθρωπον, πολλὰς τοῦ μίσους ἔχων αἰτίας, ἕως ὑπεραλγήσας σὺν αὐτῇ καὶ

τὸν ἀδελφὸν ἐκβάλλει. Φερώρας δὲ, ἀγαπήσας τὴν ὕβριν, ἀπαλλάσσεται μὲν εἰς τὴν ἑαυτοῦ τετραρχίαν, ὀμόσας ἕξειν ἕνα τῆς φυγῆς ὅρον, τὸν Ἡρώδου θάνατον, καὶ μηδέποτε πρὸς ζῶντα ὑποστρέψειν. Ἐπανῆλθε δὲ οὐδὲ πρὸς νοσοῦντα τὸν ἀδελφὸν, καίτοι λιπαρῶς μεταπεμπόμενον· ἐβούλετο γὰρ αὐτῷ τινας ἐντολὰς καταλείψειν, ὡς τεθνηξόμενος. Ἀλλ᾽ ὁ μὲν παρ᾽ ἐλπίδα σώζεται. Μετ᾽ οὐ πολὺ δὲ νοσεῖ Φερώρας, εὑρίσκετο δὲ Ἡρώδης μετριώτερος· καὶ γὰρ ἧκει πρὸς αὐτὸν, καὶ συμπαθῶς ἐθεράπευεν. Οὐ μὴν ὑπερίσχυσε τὸ πάθος· μετὰ γὰρ ἡμέρας ὀλίγας ἀποθνήσκει Φερώρας. Ὃν καίπερ ἀγαπήσας Ἡρώδης μέχρι τελευταίας ἡμέρας, ὅμως καὶ αὐτὸν ἀνελεῖν ἐφημίσθη φαρμάκῳ. Τόν γε μὴν νεκρὸν εἰς Ἱεροσόλυμα κομίσας, πένθος τε μέγιστον ὅλῳ τῷ ἔθνει κατήγγειλε, καὶ κηδείας ἠξίωσε λαμπροτάτης. Ἕνα μὲν δὴ τῶν Ἀλεξάνδρου καὶ Ἀριστοβούλου φονέων τοιοῦτον περιέρχεται τέλος.

CAP. XXX. 1. Μετέβαινε δ᾽ ἐπὶ τὸν αὐθέντην Ἀντίπατρον ἡ ποινὴ, τὸν Φερώρα θάνατον ἀρχὴν λαβοῦσα· τῶν τούτου γάρ τινες ἀπελευθέρων, κατηφεῖς τῷ βασιλεῖ προςελθόντες 'τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ διεφθάρθαι φαρμάκοις ἔλεγον· προςενεγκεῖν μὲν γὰρ αὐτῷ τι τὴν γυναῖκα τῶν οὐ συνήθως ἐσκευασμένων, φαγόντα δὲ αὐτὸν εὐθέως εἰς τὴν νόσον καταπεσεῖν· ἀγηοχέναι τε πρὸ δυοῖν ἡμερῶν τὴν μητέρα ταύτης καὶ τὴν ἀδελφὴν, γύναιον ἐκ τῆς Ἀραβίας, φαρμάκων ἔμπειρον, ὅπως φίλτρον σκευάσῃ τῷ Φερώρᾳ, δεδωκέναι δὲ ἀντὶ τούτου θανάσιμον, Συλλαίου πραγματευσαμένου· τούτῳ γὰρ ἦν γνώριμον.'

2. Πληγεὶς οὖν ὁ βασιλεὺς ὑποψίαις πλείοσι, θεραπαίνας τε καί τινας τῶν ἐλευθέρων ἐβασάνιζεν. Ἐβόα δέ τις ἐν ταῖς ἀλγηδόσι· "Θεὸς, ὁ γῆν καὶ οὐρανὸν διέπων, μετέλθοι τὴν τούτων ἡμῖν τῶν κακῶν αἰτίαν, τὴν Ἀντιπάτρου μητέρα!" Ταύτης τῆς

ἀρχῆς ὁ βασιλεὺς λαβόμενος, ἐπεξῄει πρόσω τὴν ἀλήθειαν ἐπιζητῶν. Ἡ δὲ γυνὴ τήν τε φιλίαν τῆς Ἀντιπάτρου μητρὸς πρὸς Φερώραν καὶ τὰς ἐκείνου
131 γυναῖκας ἐδήλου, καὶ τὰς λαθραίας αὐτῶν συνόδους, ὅτι τε Φερώρας καὶ Ἀντίπατρος σὺν ἐκείναις πίνοιεν ὑποστρέφοντες ἀπὸ τοῦ βασιλέως, δι' ὅλης νυκτὸς, μηδένα μήτε οἰκέτην μήτε θεράπαιναν ἐῶντες παρατυγχάνειν.' Μία δὴ τῶν ἐλευθέρων ταῦτα μηνύει.

3. Τὰς δὲ δούλας χωρὶς ἑκάστην Ἡρώδης ἐβασάνιζεν. Ἐῤῥήθη δὲ παρὰ πάσαις τὰ προειρημένα συμφώνως, καὶ διότι κατὰ συνθήκην Ἀντίπατρος μὲν εἰς Ῥώμην, Φερώρας δὲ ὑποχωρήσειεν εἰς τὴν Περαίαν. Πολλάκις γὰρ αὐτοὺς διαλαλεῖν, ὡς μετὰ Ἀλέξανδρον καὶ Ἀριστόβουλον ἐπ' αὐτοὺς Ἡρώδης διαβήσεται, καὶ τὰς αὐτῶν γυναῖκας. Οὐ γὰρ φείσασθαι μετὰ Μαριάμμην καὶ τοὺς ἐξ ἐκείνης ἑτέρου τινὸς, ὥςτε ἄμεινον εἶναι, ὡςποῤῥωτάτω φυγεῖν τοῦ θηρίου. Πολλάκις δὲ ἀποδυρόμενον πρὸς τὴν μητέρα, τὸν Ἀντίπατρον εἰπεῖν, ὡς αὐτὸς μὲν εἴη πολιὸς ἤδη, νεάζοι δὲ καθ' ἡμέραν ὁ πατὴρ, φθάσαι δ' ἂν τάχα καὶ τελευτήσας, πρὶν ἄρξασθαι βασιλείας ἀληθοῦς. Εἰ δὲ καί ποτε ἐκεῖνος τελευτήσειε, — πότε δ' ἂν γενέσθαι τοῦτο; — παντάπασιν αὐτῷ τὴν ἀπόλαυσιν τῆς διαδοχῆς γενέσθαι σύντομον. Ὑποβλαστάνειν δὲ τὰς τῆς ὕδρας κεφαλὰς, τοὺς Ἀριστοβούλου καὶ Ἀλεξάνδρου παῖδας. Ἀφῃρῆσθαι δὲ αὐτὸν ὑπὸ τοῦ πατρὸς καὶ τὴν ἐπὶ τέκνοις ἐλπίδα· διάδοχον γὰρ οὐ τῶν αὐτοῦ τινα παίδων μετὰ τὴν τελευτὴν, ἀλλὰ τὸν Μαριάμμης Ἡρώδην γεγραφέναι. Καὶ κατὰ τοῦτό γε παντάπασι παραγηρᾶν, οἰόμενον, αὐτοῦ καὶ διαθήκας μένειν κυρίας· αὐτὸν γὰρ προνοήσειν μηδένα τῆς γενεᾶς ἀπολιπεῖν. Ὄντα γε μὴν τῶν πώποτε πατέρων μισοτεκνότατον Ἡρώδην, πολλῷ μᾶλλον εἶναι μισάδελφον. Δοῦναι γοῦν αὐτῷ πρῴην ἑκατὸν τάλαντα, ἐπὶ τῷ μὴ διαλέγεσθαι Φερώρᾳ. Τοῦ δὲ εἰπόντος

'τί γὰρ αὐτὸν ἐβλάπτομεν;' ἀποκρίνασθαι τὸν Ἀντίπατρον, εἴθε πάνθ' ἡμᾶς ἀφελόμενος, γυμνοὺς ἐάσει γε ζῶντας. Ἀλλὰ ἀμήχανον ἐκφυγεῖν οὕτω φονικὸν θηρίον, παρ' ᾧ μήτε φιλεῖν τινας ἔξεστι φανερῶς. Λάθρα γοῦν ἀλλήλοις σύνεσμεν, ἐξέσται δὲ φανερῶς, ἐὰν σχῶμέν ποτε ἀνδρῶν φρόνημα καὶ χεῖρας.'

4. Ταῦτα ἔλεγον αἱ βασανιζόμεναι, καὶ ὅτι Φερώρας βουλεύσαιτο φεύγειν μετ' αὐτῶν εἰς Περαίαν. Ἐπίστευσε δὲ πᾶσιν Ἡρώδης τοῖς λεγομένοις ἐκ τῶν ἑκατὸν ταλάντων· μόνῳ γὰρ Ἀντιπάτρῳ διείλεκτο περὶ αὐτῶν. Ἀποσκήπτει δὲ εἰς τὴν πρώτην ὁ θυμὸς Δωρίδα, τὴν Ἀντιπάτρου μητέρα· καὶ γυμνώσας αὐτὴν παντὸς οὗ ἐδεδώρητο κόσμου, πολλῶν δ' ἦν ταλάντων, ἐκβάλλει δεύτερον. Τὰς δὲ Φερώρα γυναῖκας ἀπὸ τῶν βασάνων ἐτημέλει διηλλαγμένος. Ἐπτόητο δὲ τῷ φόβῳ, καὶ πρὸς πᾶσαν ὑπόνοιαν ἐξεῤῥιπίζετο· πολλούς τε τῶν οὐκ αἰτίων εἷλκεν εἰς βασάνους, δεδοικὼς, μή τινα τῶν αἰτίων παραλίπῃ.

5. Καὶ ἐν τούτῳ τρέπεται πρὸς τὸν Σαμαρείτην Ἀντίπατρον, ὃς ἦν ἐπίτροπος Ἀντιπάτρου. Βασανίζων δὲ αὐτὸν ἤκουσεν, ὅτι 'μεταπέμψαιτο μὲν Ἀντίπατρος ἐξ Αἰγύπτου δηλητήριον φάρμακον ἐπ' 132
αὐτὸν διά τινος τῶν ἑταίρων Ἀντιφίλου, λάβοι δὲ παρ' ἐκείνου Θευδίων ὁ θεῖος Ἀντιπάτρου, καὶ παραδοῖ Φερώρᾳ· τούτῳ γὰρ ἐντείλασθαι τὸν Ἀντίπατρον Ἡρώδην ἀνελεῖν, ἕως αὐτός ἐστιν ἐν Ῥώμῃ τῆς ὑπονοίας κεχωρισμένος· Φερώραν δὲ παραθέσθαι τῇ γυναικὶ τὸ φάρμακον.' Ταύτην ὁ βασιλεὺς μεταπεμψάμενος αὐτίκα τὸ ληφθὲν ἐκέλευσε κομίζειν. Ἡ δὲ ἔξεισιν ὡς κομιοῦσα, ῥίπτει δὲ αὐτὴν ἀπὸ τοῦ τέγους, τόν τε ἔλεγχον καὶ τὴν ἐκ τοῦ βασιλέως αἰκίαν φθάνουσα· προνοίᾳ δὴ, ὡς ἔοικε, θεοῦ, μετιόντος Ἀντίπατρον, οὐκ ἐπὶ κεφαλὴν ἀλλ' ἐπὶ θάτερα πεσοῦσα διασώζεται. Κομισθεῖσαν δὲ αὐτὴν ὁ βασιλεὺς ἀνακτησάμενος — κεκάρωτο γὰρ ἐκ τοῦ πτώματος — ἠρώτα, 'δι' ἣν αἰτίαν ῥίψειεν ἑαυτήν; εἰ μὲν εἴποι

τὸ ἀληθὲς, ἀφήσειν πάσης τιμωρίας ἐπομνύμενος, εἰ δὲ ὑποστείλαιτο, δαπανήσειν αὐτῆς ἐν βασάνοις τὸ σῶμα, καὶ μηδὲ τάφῳ καταλείψειν.'

6. Πρὸς ταῦτα ἡ γυνὴ διαλιποῦσα μικρὸν, "Καὶ τί γὰρ," εἶπεν, "ἔτι φείδομαι τῶν ἀποῤῥήτων, Φερώρα τεθνεῶτος, ἢ σώζουσα τὸν ἀπολέσαντα πάντας ἡμᾶς Ἀντίπατρον; Ἄκουε, βασιλεῦ, καὶ μετὰ σοῦ θεὸς, μάρτυς ἐμοὶ τῆς ἀληθείας, πλανηθῆναι μὴ δυνάμενος. Ὅτε ἀποθνήσκοντι Φερώρᾳ παρεκαθέζου δεδακρυμένος, τότε με προςκαλεσάμενος ἐκεῖνος, 'ἦ πολύ γε, ἔφη, γύναι, τῆς εἰς ἐμαυτὸν διανοίας τοῦ ἀδελφοῦ διήμαρτον, τὸν οὕτω στέργοντα μισήσας, καὶ κτεῖναι βουλευσάμενος τὸν οὕτως ἐπ' ἐμοὶ μηδὲ τεθνεῶτί πω συγχεόμενον. Ἀλλ' ἐγὼ μὲν ἀπέχω τῆς ἀσεβείας τὸ ἐπιτίμιον· σὺ δὲ ὃ φυλάττεις κατ' αὐτοῦ φάρμακον ὑπ' Ἀντιπάτρου καταλειφθὲν ἡμῖν φέρε, καὶ βλέποντός μου ταχέως ἀφάνισον, ἵνα μὴ καὶ καθ' ᾅδου φέροιμι τὸν ἀλάστορα.' Κελεύσαντος ἐκόμισα, καὶ πλεῖστον μὲν εἰς τὸ πῦρ ὁρῶντος αὐτοῦ κατεκένωσα, βραχὺ δὲ ἐμαυτῇ πρὸς τὰ ἄδηλα καὶ τὸν ἐκ σοῦ φόβον ἐτήρησα."

7. Ταῦτα εἰποῦσα προςκομίζει τὴν πυξίδα, βραχὺ παντάπασιν ἔχουσαν τοῦ φαρμάκου. Βασιλεὺς δ' ἐπὶ τὴν μητέρα τὴν Ἀντιφίλου καὶ τὸν ἀδελφὸν τὰς βασάνους μετέφερε. Καὶ ἐκεῖνοι τὸν Ἀντίφιλον κομίσαι τε ἀπ' Αἰγύπτου τὴν πυξίδα ὡμολόγουν, καὶ λαβεῖν παρ' ἀδελφοῦ τὸ φάρμακον ἔφασκον, ἰατρεύοντος ἐν Ἀλεξανδρείᾳ. Περιϊόντες δὲ οἱ Ἀλεξάνδρου καὶ Ἀριστοβούλου δαίμονες ἅπαν τὸ βασίλειον, ἐρευνηταί τε καὶ μηνυταὶ τῶν ἀδήλων ἐγένοντο, τούς τε ποῤῥωτάτω τῆς ὑποψίας ὄντας ἔσυρον εἰς τοὺς ἐλέγχους. Εὑρίσκεται γοῦν καὶ ἡ τοῦ ἀρχιερέως θυγάτηρ Μαριάμμη τῆς ἐπιβουλῆς συνίστωρ· βασανιζόμενοι τοῦτο ἀπέδειξαν καὶ αὐτῆς οἱ ἀδελφοί. Βασιλεὺς δὲ τῆς μητρῴας τόλμης καὶ τὸν υἱὸν ἠμύνατο· τὸν γοῦν ἐξ αὐτῆς Ἡρώδην,

ὄντα διάδοχον Ἀντιπάτρου, τῆς διαθήκης ἐξήλειψεν.

CAP. XXXI. 1. Ἐπὶ τούτοις καὶ Βάθυλλος εἰς 133
τοὺς ἐλέγχους συνέδραμεν, ἡ τελευταία πίστις τῶν Ἀντιπάτρῳ βεβουλευμένων· ἦν μὲν γὰρ ἀπελεύθερος αὐτοῦ. Κομίζων δὲ ἧκεν ἄλλο δηλητήριον, ἰοὺς ἀσπίδων, καὶ χυλοὺς ἑτέρων ἑρπετῶν, ἵνα εἰ τὸ πρῶτον ἀσθενήσῃ φάρμακον, τούτῳ Φερώρας μετὰ τῆς γυναικὸς ὁπλίσαιτο κατὰ τοῦ βασιλέως. Πάρεργον δὲ τῆς ἐπὶ τὸν πατέρα τόλμης ἐκόμιζε τὰς κατὰ τῶν ἀδελφῶν ἐσκευωρημένας ἐπιστολὰς ὑπ' Ἀντιπάτρου. Ἦσαν δὲ Ἀρχέλαος καὶ Φίλιππος βασιλέως παῖδες ἐπὶ Ῥώμης παιδευόμενοι, μειράκιά τε ἤδη καὶ φρονήματος μεστοί. Τούτους ἐπανακύπτοντας αὐτοῦ ταῖς ἐλπίσιν ἀποσκευάσασθαι σπεύδων Ἀντίπατρος, ἃς μὲν πλάσσεται κατ' αὐτῶν ἐπιστολὰς ἐξ ὀνόματος τῶν ἐπὶ Ῥώμης φίλων, οὓς δὲ πείθει γράψαι διαφθείρας χρήμασιν, ὡς πολλὰ μὲν βλασφημοῖεν τὸν πατέρα, φανερῶς δὲ Ἀλέξανδρον καὶ Ἀριστόβουλον ὀδύροιντο, πρός τε τὴν μετάκλησιν ἀγανακτοῖεν. Ἤδη δὲ αὐτοὺς ὁ πατὴρ μετεπέμπετο, καὶ τοῦτο ἦν μάλιστα ταράσσον Ἀντίπατρον.

2. Ἔτι δὲ καὶ πρὸ τῆς ἀποδημίας ἐν Ἰουδαίᾳ μένων τοιαύτας κατ' αὐτῶν ἀπὸ Ῥώμης ἠγόραζεν ἐπιστολὰς, καὶ προσιὼν τέως ἀνύποπτος ἦν τῷ πατρὶ, περὶ τῶν ἀδελφῶν δὲ ἀπελογεῖτο, τὰ μὲν ψευδῆ λέγων εἶναι τῶν γραφομένων, τὰ δὲ νεότητος ἁμαρτήματα. Τηνικαῦτά γε μὴν τοῖς γράφουσι κατὰ τῶν ἀδελφῶν πλεῖστα δοὺς χρήματα, συμφύρειν ἐπειρᾶτο τὸν ἔλεγχον, ἐσθῆτας πολυτελεῖς, καὶ στρωμνὰς ποικίλας, ἐκπώματά τε ἀργυρᾶ καὶ χρυσᾶ συνωνούμενος, ἄλλα τε πολλὰ τῶν κειμηλίων, ἵνα τῷ πλήθει τῆς εἰς ταῦτα δαπάνης τοὺς εἰς ἐκεῖνα μισθοὺς ἐγκατακρύψῃ. Διακόσια γοῦν ἀναλώματος ἀνή-

νεγκε τάλαντα, καὶ τούτων μεγίστη πρόφασις ἦν ἡ
πρὸς Συλλαῖον δίκη. Πάντων δὲ αὐτοῦ τότε καὶ
τῶν βραχυτέρων ἐν τῷ μείζονι κακῷ διακαλυφθέν-
των, ὅτε αἱ μὲν βάσανοι πᾶσαι τὴν πατροκτονίαν,
αἱ δὲ ἐπιστολαὶ δευτέρας ἀδελφοκτονίας κεκράγεισαν,
ὅμως οὐδεὶς τῶν εἰς Ῥώμην ἀφικνουμένων ἀπήγ-
γειλεν αὐτῷ τὰς ἐν Ἰουδαίᾳ τύχας, καίτοι μεταξὺ
τῶν ἐλέγχων καὶ τῆς ἐπανόδου διελθόντων ἑπτὰ μη-
νῶν· τοσοῦτον πρὸς αὐτὸν ἐκ πάντων μῖσος ἦν. Τάχα
δὲ καὶ τοὺς ἀπαγγέλλειν προαιρουμένους οἱ τῶν ἀνῃ-
ρημένων δαίμονες ἀδελφῶν ἐφίμουν. Γράφει γοῦν
ἀπὸ Ῥώμης ἄφιξιν αὐτοῦ ταχεῖαν εὐαγγελιζόμενος,
καὶ ὡς ὑπὸ Καίσαρος μετὰ τιμῆς ἀπολυθείη.

3. Βασιλεὺς δὲ εἰς χεῖρας λαβεῖν σπεύδων τὸν
ἐπίβουλον, καὶ δεδοικὼς, μή ποτε προγνοὺς φυλά-
ξηται, δι᾽ ἐπιστολῶν ἀνθυπεκρίνετο, τά τε ἄλλα φι-
134 λοφρονούμενος, καὶ ‛σπεύδειν παρακαλῶν· θήσεσθαι
γὰρ αὐτοῦ καὶ τὰς πρὸς τὴν μητέρα μέμψεις ἐπει-
χθέντος.᾽ Οὐ γὰρ ἠγνόει τὴν ἐκβολὴν τῆς μητρὸς
Ἀντίπατρος. Πρότερον μὲν οὖν εἰλήφει τὴν περὶ
τῆς Φερώρα τελευτῆς ἐπιστολὴν ἐν Τάραντι, καὶ
μέγιστον ἐποιήσατο πένθος, ὃ καί τινες ὡς ἐπὶ θείῳ
καθύμνουν· ἦν δὲ, ὡς ἔοικεν, ἐπὶ διαμαρτίᾳ τῆς
ἐπιβουλῆς ἡ σύγχυσις, καὶ οὐ Φερώραν κλαίοντος,
ἀλλὰ τὸν ὑπηρέτην. Ἤδη δὲ καὶ φόβος ἐπῄει τις
αὐτὸν τῶν τετελεσμένων, μή ποτε φωραθείη τὸ φάρ-
μακον. Τότε δὲ ἐν Κιλικίᾳ λαβὼν ἣν προειρήκαμεν
παρὰ τοῦ πατρὸς ἐπιστολὴν, παραχρῆμα μὲν ἔσπευ-
δεν. Ὡς δὲ εἰς Κελένδεριν κατέπλει, λαμβάνει τις
αὐτὸν ἔννοια τῶν περὶ τὴν μητέρα κακῶν, προμαν-
τευομένης ἤδη καθ᾽ ἑαυτὴν τῆς ψυχῆς. Οἱ μὲν οὖν
προμηθέστεροι τῶν φίλων συνεβούλευον ‛μὴ πρότε-
ρον ἐμπίπτειν τῷ πατρὶ, πρὶν πυθέσθαι σαφῶς, δι᾽
ἃς αἰτίας ἐξέβαλεν αὐτοῦ τὴν μητέρα· δεδιέναι γὰρ,
μή ποτε προςθήκη γένοιτο τῶν κατ᾽ ἐκείνης διαβο-
λῶν.᾽ Οἱ δὲ ἀσκεπτότεροι, καὶ τὴν πατρίδα σπεύ-

δοντες ἰδεῖν μᾶλλον, ἢ τὸ συμφέρον Ἀντιπάτρῳ σκοποῦντες, ἐπείγεσθαι παρῄνουν, καὶ μὴ τῇ μελλήσει παρασχεῖν τῷ πατρὶ μὲν ὑποψίαν φαύλην, τοῖς διαβάλλουσι δ' ἀφορμήν· καὶ γὰρ νῦν, εἴ τι κεκίνηται κατ' αὐτοῦ, παρὰ τὴν ἀπουσίαν γεγονέναι· μηδὲ γὰρ ἂν τολμῆσαι, παρόντος. Ἄτοπον δὲ εἶναι, δι' ἀδήλους ὑποψίας προδήλων ἀγαθῶν στερίσκεσθαι, καὶ μὴ θᾶττον ἀποδοῦναι μὲν ἑαυτὸν τῷ πατρὶ, κομίσασθαι δὲ τὴν βασιλείαν, ἐπ' αὐτῷ μόνῳ σαλεύουσαν.' Πείθεται τούτοις, ἐνῆγε γὰρ τὸ δαιμόνιον. Καὶ διαπεράσας εἰς τὸν Σεβαστὸν τὸν λιμένα τῆς Καισαρείας κατάγεται.

4. Παρυπήντησε δὲ αὐτῷ παρὰ δόξαν ἐρημία πολλὴ, πάντων ἐκτρεπομένων, καὶ μηδενὸς προσιέναι τολμῶντος· ἐμισεῖτο μὲν γὰρ ἐπίσης, καὶ τότε φανῆναι τὸ μῖσος ἔσχε παῤῥησίαν. Πολλοὺς δὲ ὁ ἐκ τοῦ βασιλέως φόβος ἀπέστρεφεν, ἐπειδὴ πᾶσα πόλις ἤδη τῆς κατὰ Ἀντιπάτρου φήμης πεπλήρωτο, καὶ μόνος ἠγνόει τὰ καθ' ἑαυτὸν Ἀντίπατρος· οὔτε γὰρ προεπέμφθη λαμπρότερόν τις ἐκείνου πλέοντος ἐπὶ Ῥώμης, οὔτε ἀτιμότερον ὑπεδέχθη. Ὁ δὲ ἤδη μὲν ὑπενόει τὰς οἴκοι συμφορὰς, ἔτι δὲ πανουργίᾳ ὑπεκρύπτετο. Καὶ τῷ δέει τεθνηκὼς ἔνδοθεν, σοβαρὸς εἶναι τὸ πρόςωπον ἐβιάζετο. Φυγὴ δὲ ἦν οὐκέτι, οὐδὲ ἐκ τῶν περιεχόντων ἀνάδυσις, καὶ σαφὲς μὲν οὐδὲ ἐκεῖ τι τῶν οἴκοθεν ἀπηγγέλλετο διὰ τὴν ἐκ τοῦ βασιλέως ἀπειλήν. Ὑπελείπετο δ' ἐλπὶς ἱλαρωτέρα, τάχα μὲν μηδὲν πεφωρᾶσθαι, τάχα δὲ, εἴ τι καὶ πεφώραται, διασκεδάσειν ἀναιδείᾳ καὶ δόλοις, ἅπερ ἦν αὐτῷ μόνα τῆς σωτηρίας ἐφόδια.

5. Φραξάμενος οὖν αὐτοῖς ἧκεν εἰς τὸ βασίλειον δίχα τῶν φίλων· οὗτοι γὰρ ὑβρισθέντες ἐπὶ τοῦ πρώτου πυλῶνος εἴρχθησαν. Ἔτυχε δὲ ἔνδον ὢν ὁ τῆς Συρίας ἡγεμὼν Οὔαρος. Ὁ δὲ εἴςεισι πρὸς τὸν πατέρα, καὶ τῇ τόλμῃ παρακροτήσας 135
ἑαυτὸν, ἤγγισεν ὡς ἀσπασόμενος. Καὶ ἐκεῖνος τὰς

χεῖρας προβαλὼν καὶ τὴν κεφαλὴν παρακλίνας, "Ἔστιν," ἐξεβόησε, "καὶ τοῦτο πατροκτόνου, τὸ περιπλέκεσθαί μοι θέλειν, ἐν τηλικαύταις αἰτίαις ὄντα! Φθεῖρου, δυσσεβεστάτη κεφαλή, μηδέ μου ψαύσῃς, πρὶν ἀποσκευάσασθαι τὰ ἐγκλήματα. Δίδωμι δέ σοι δικαστήριον καὶ δικαστὴν εὐκαίρως ἥκοντα, Οὔαρον. Ἴθι, καὶ σκέπτου τὴν ἀπολογίαν εἰς αὔριον. Παρέχω γάρ σοι καιρὸν τοῖς πανουργήμασι." Πρὸς ταῦτα μηδὲν ὑπ' ἐκπλήξεως ἀποκρίνασθαι δυνηθεὶς αὐτὸς, ὑπέστρεψε. Παραγενόμεναι δὲ πρὸς αὐτὸν διηγήσαντο πάντας τοὺς ἐλέγχους ἥ τε μήτηρ καὶ ἡ γυνή· καὶ τότε μὲν ἀνανήψας ἐν σκέψει τῆς ἀπολογίας ἦν.

CAP. XXXII. 1. Τῇ δὲ ἐπιούσῃ συνέδριον μὲν ὁ βασιλεὺς ἀθροίζει τῶν συγγενῶν καὶ φίλων, εἰςκαλεῖ δὲ καὶ τοὺς Ἀντιπάτρου φίλους. Προκαθέζεται δὲ αὐτὸς ἅμα Οὐάρῳ, καὶ τοὺς μηνυτὰς ἅπαντας ἐκέλευσεν εἰςαγαγεῖν· ἐν οἷς εἰςήχθησαν καὶ τῆς Ἀντιπάτρου μητρὸς οἰκέται τινὲς, οὐ πρὸ πολλοῦ συνειλημμένοι, γράμματα κομίζοντες ἀπ' αὐτῆς πρὸς τὸν υἱὸν τοιάδε· "Ἐπείπερ πεφώραται πάντα ἐκεῖνα παρὰ τῷ πατρί σου, μὴ παραγίνου πρὸς αὐτὸν, ἂν μή τινα πορίσῃ παρὰ Καίσαρος δύναμιν." Τούτων σὺν τοῖς ἄλλοις εἰςηγμένων, Ἀντίπατρος εἰςέρχεται, καὶ πεσὼν πρηνὴς πρὸ τῶν ποδῶν τοῦ πατρὸς, "Ἱκετεύω, πάτερ," ἔφη, "μηδέν μου προκατεγνωκέναι, παρασχεῖν δέ μοι τὰς ἀκοὰς ἀκεραίους εἰς τὴν ἀπολογίαν· ἀποδείξω γὰρ ἐμαυτὸν καθαρὸν, ἂν σὺ θέλῃς."

2. Ὁ δὲ αὐτῷ σιγᾷν ἐγκραγὼν πρὸς τὸν Οὔαρον εἶπεν· "Ἀλλ' ὅτι μὲν καὶ σὺ, Οὔαρε, καὶ πᾶς δικαστὴς ὅσιος Ἀντίπατρον ἐξώλη κρινεῖ, πέπεισμαι. Δέδοικα δὲ, μὴ καὶ ἐμοῦ μισήσῃς τὴν τύχην, καὶ ἐμὲ κρίνῃς πάσης ἄξιον συμφορᾶς, τοιούτους υἱοὺς γεγεννηκότα. Χρὴ δέ με διὰ τοῦτο ἐλεεῖσθαι μᾶλ-

λον, ὅτι πρὸς οὕτω μιαροὺς καὶ φιλοστοργότατος πατὴρ ἐγενόμην. Τοὺς μὲν γὰρ προτέρους βασιλείας τε ἔτι νέους ἀξιώσας, καὶ πρὸς τοῖς ἐν Ῥώμῃ τροφείοις φίλους Καίσαρος, ζηλωτούς τε ποιήσας βασιλεῦσιν ἑτέροις, εὗρον ἐπιβούλους, οἳ τεθνήκασι τὸ πλέον Ἀντιπάτρῳ· νέῳ γὰρ ὄντι καὶ διαδόχῳ, τούτῳ μάλιστα τὴν ἀσφάλειαν ἐποριζόμην. Τὸ δὲ μιαρὸν τοῦτο θηρίον, τῆς ἐμῆς ὑπερεμπλησθὲν ἀνεξικακίας, ἤνεγκε κατ᾽ ἐμοῦ τὸν κόρον· ἔδοξα γὰρ αὐτῷ πολὺν ζῆν χρόνον, καὶ τὸ ἐμὸν γῆρας ἐβαρύνθη, βασιλεύς τ᾽ οὐχ ὑπέμενεν, εἰ μὴ διὰ πατροκτονίας, γενέσθαι. Δίκαια τε βουλευσάμενος, ὅτι καταγαγὼν αὐτὸν ἐκ τῆς χώρας ἀπεῤῥιμμένον, καὶ 136 παρωσάμενος τοὺς ἐκ βασιλίδος μοι γεγεννημένους, ἀπέδειξα τῆς ἀρχῆς διάδοχον. Ἐξομολογοῦμαί σοι, Οὔαρε, τὴν ἐμαυτοῦ φρενοβλάβειαν. Ἐγὼ τοὺς υἱοὺς ἐκείνους κατ᾽ ἐμαυτοῦ παρώξυνα, δικαίας αὐτῶν ἀποκόψας ἐλπίδας δι᾽ Ἀντίπατρον. Καὶ τί μὲν ἐκείνους ηὐεργέτησα τηλικοῦτον, ἡλίκον τοῦτον; Ὧι γε ζῶν μὲν ὀλίγου δεῖν παρεχώρησα τῆς ἐξουσίας, φανερῶς δὲ ταῖς διαθήκαις ἐνέγραψα τῆς ἀρχῆς διάδοχον, καὶ πρόσοδον μὲν ἰδίᾳ πεντήκοντα ταλάντων ἔνειμα, τῶν δὲ ἐμῶν ἐχορήγησα χρημάτων ἀνέδην, πλέουσι δὲ νῦν εἰς Ῥώμην ἔδωκα τριακόσια τάλαντα, Καίσαρι δὲ ἐξ ὅλης τῆς γενεᾶς μόνον ὡς σωτῆρα τοῦ πατρὸς παρεθέμην. Τί δὲ ἐκεῖνοι τοιοῦτον ἠσέβησαν, οἷον Ἀντίπατρος; Ἢ τίς ἔλεγχος ἠνέχθη κατ᾽ αὐτῶν, ἡλίκος ἀποδείκνυσι τοῦτον ἐπίβουλον; Ἀλλὰ φθέγγεσθαί τι τετόλμηκεν ὁ πατροκτόνος, καὶ πάλιν δόλοις τὴν ἀλήθειαν ἐπικαλύψειν ἐλπίζει. Οὔαρε, σοὶ φυλακτέον. Ἐγὼ γὰρ οἶδα τὸ θηρίον, καὶ προορῶμαι τὴν μέλλουσαν ἀξιοπιστίαν, καὶ τὸν ἐπίπλαστον ὀλοφυρμόν. Οὗτός ἐστιν ὁ παραινῶν ἐμοί ποτε φυλάττεσθαι ζῶντα Ἀλέξανδρον, καὶ μὴ πᾶσι πιστεύειν τὸ σῶμα. Οὗτος ὁ μέχρι τῆς κοίτης εἰςάγων, καὶ μή μέ τις ἐνεδρεύοι περιβλέπων. Οὗτος

ὁ ταμίας τῶν ὕπνων, καὶ χορηγὸς τῆς ἀμεριμνίας, ὁ παραμυθούμενος τὴν ἐπὶ τοῖς ἀνῃρημένοις λύπην, καὶ διακρίνων τὴν τῶν ζώντων εὔνοιαν ἀδελφῶν, ὁ ὑπερασπιστὴς ὁ ἐμὸς, ὁ σωματοφύλαξ. Ὅταν ἀναμνησθῶ, Οὔαρε, τὸ πανοῦργον ἐν ἑκάστῳ καὶ τὴν ὑπόκρισιν, ἀπιστία με τοῦ ζῆν εἰςέρχεται, καὶ θαυμάζω, πῶς οὕτω βαθὺν ἐπίβουλον διέφυγον. Ἀλλ' ἐπεὶ δαίμων τις ἐξερημοῖ τὸν ἐμὸν οἶκον, καί μοι τοὺς φιλτάτους ἐπανίστησιν ἀεὶ, κλαύσομαι μὲν ἐγὼ τὴν ἄδικον εἱμαρμένην, καὶ κατ' ἐμαυτὸν στενάξω τὴν ἐρημίαν. Διαφεύξεται δὲ οὐδεὶς διψήσας τὸ ἐμὸν αἷμα, καὶ ἂν διὰ πάντων μου τῶν τέκνων ὁ ἔλεγχος ἔλθῃ."

3. *Τοιαῦτα λέγων, αὐτὸς μὲν ὑπὸ συγχύσεως ἐνεκόπη. Νικολάῳ δὲ, ἑνὶ τῶν φίλων, λέγειν τὰς ἀποδείξεις ἐκέλευε. Μεταξὺ δὲ ὁ Ἀντίπατρος ἐπάρας τὴν κεφαλὴν, ἔμενε γὰρ δὴ βεβλημένος πρὸ τῶν ποδῶν τοῦ πατρὸς, ἐβόα· "Σὺ, πάτερ, ὑπὲρ ἐμοῦ πεποίηκας τὴν ἀπολογίαν. Πῶς γὰρ ἐγὼ πατροκτόνος, ὃν ὁμολογεῖς αὐτὸς φύλακα διὰ παντὸς ἐσχηκέναι; Τερατείαν δέ μου καὶ ὑπόκρισιν λέγεις τὴν εὐσέβειαν. Πῶς οὖν ὁ πανοῦργος οὕτως ἐν τοῖς ἄλλοις ἄφρων ἐγενόμην, ὡς μὴ νοεῖν, ὅτι λαθεῖν οὐδὲ ἀνθρώπους ῥᾴδιον τηλικοῦτον μῦσος ἐνσκευαζόμενον, τὸν δὲ ἀπ' οὐρανοῦ δικαστὴν ἀμήχανον, ὃς ἐφορᾷ πάντα, καὶ πανταχοῦ πάρεστιν; Ἢ τὸ τῶν ἀδελφῶν τέλος ἠγνόουν, οὓς ὁ θεὸς οὕτω μετῆλθε τῆς εἰς σὲ κακοβουλίας; Τί δέ με καὶ παρώξυνε κατὰ σοῦ; Βασιλείας ἐλπίς; Ἀλλ' ἐβασίλευον. Ὑπόνοια μίσους; Οὐ γὰρ ἐστεργόμην; Φόβος ἐκ σοῦ τις ἄλλος; Ἀλλὰ μὴν σὲ τηρῶν, ἑτέροις φοβερὸς
137 ἤμην. Ἔνδεια χρημάτων; Καὶ τίνι μᾶλλον ἐξῆν ἀναλίσκειν; Εἰ δ' ἐξωλέστατος πάντων ἀνθρώπων ἐγενόμην, καὶ θηρίου ψυχὴν εἶχον ἀνημέρου, πάτερ, οὐκ ἂν ταῖς σαῖς εὐεργεσίαις ἐνικήθην, ὃν κατήγαγες μὲν, ὡς ἔφης αὐτὸς, προέκρινας δὲ τοσούτων*

τέκνων, ἀπέδειξας δὲ ζῶν βασιλέα, δι᾽ ὑπερβολὴν δὲ τῶν ἄλλων ἀγαθῶν ἐποίησας ἐπίφθονον; Ὤμοι τάλας ἐγὼ τῆς πικρᾶς ἀποδημίας! Ὡς πολὺν ἔδωκα καιρὸν τῷ φθόνῳ, καὶ μακρὰν τοῖς ἐπιβουλεύουσι διωρίαν! Σοὶ δὲ, πάτερ, καὶ τοῖς σοῖς ἀγῶσιν ἀπεδήμουν, ἵνα μὴ Συλλαῖος τοῦ σοῦ γήρως καταφρονήσῃ. Ῥώμη μοι μάρτυς τῆς εὐσεβείας, καὶ ὁ τῆς οἰκουμένης προστάτης Καῖσαρ, ὁ φιλοπάτορά με πολλάκις εἰπών. Λάβε, πάτερ, τὰ παρ᾽ αὐτοῦ γράμματα· ταῦτα τῶν ἐνθάδε διαβολῶν πιστότερα· ταῦτα ἀπολογία μοι μόνη· τούτοις τῆς εἰς σὲ φιλοστοργίας τεκμηρίοις χρῶμαι. Μέμνησο δὲ ὡς οὐχ ἑκὼν ἔπλεον, ἐπιστάμενος τὴν ἐμφωλεύουσαν τῆς βασιλείας κατ᾽ ἐμοῦ δυσμένειαν. Σὺ δὲ με, πάτερ, ἄκων ἀπώλεσας, ἀναγκάσας καιρὸν διαβολῆς δοῦναι τῷ φθόνῳ. Πάρειμι δὲ, ἐπὶ τοὺς ἐλέγχους πάρειμι, διὰ γῆς καὶ θαλάσσης οὐδὲν οὐδαμῆ παθὼν ὁ πατροκτόνος. Ἀλλὰ μήπω τούτῳ ὠφέλημαι τῷ τεκμηρίῳ· κατέγνωσμαι γὰρ καὶ παρὰ θεῷ καὶ παρὰ σοὶ, πάτερ. Κατεγνωσμένος δὲ δέομαι, μὴ ταῖς ἄλλων βασάνοις πιστεύειν, ἀλλὰ κατ᾽ ἐμοῦ φερέσθω τὸ πῦρ, ὁδευέτω διὰ τῶν ἐμῶν σπλάγχνων τὰ ὄργανα, μὴ φειδέσθε ὀλοφυρμοῦ τοῦ μιαροῦ σώματος. Εἰ γάρ εἰμι πατροκτόνος, οὐκ ὀφείλω θνήσκειν ἀβασανίστως." Τοιαῦτα μετὰ ὀλολυγμοῦ καὶ δακρύων ἐκβοῶν, τούς τε ἄλλους ἅπαντας καὶ τὸν Οὔαρον εἰς οἶκτον προεκαλέσατο. Μόνον δὲ ὁ θυμὸς Ἡρώδην ἀδάκρυν διεκράτει, τοὺς ἐλέγχους ἀληθεῖς ἐπιστάμενον.

4. Ἐν τούτῳ, τοῦ βασιλέως κελεύσαντος, Νικόλαος, πολλὰ πρὸς τὸ πανοῦργον τὸ Ἀντιπάτρου προειπὼν, καὶ τὸν ἐπ᾽ αὐτῷ διαχέας ἔλεον, ἔπειτα πικρὰν κατηγορίαν κατετείνετο, πάντα μὲν τὰ κατὰ τὴν βασιλείαν κακουργήματα περιτιθεὶς αὐτῷ, μάλιστα δὲ τὴν ἀναίρεσιν τῶν ἀδελφῶν, ἀποδεικνὺς ταῖς ἐκείνου διαβολαῖς ἀπολωλότας. Ἐπιβουλεύειν δὲ αὐτὸν ἔλεγε καὶ τοῖς περιοῦσιν, ὡς ἐφέδροις τῆς

διαδοχῆς· τὸν γὰρ παρασκευάσαντα πατρὶ φάρμακον πότε ἂν ἀδελφῶν ἀποσχέσθαι; Προελθὼν δὲ ἐπὶ τὸν ἔλεγχον τῆς φαρμακείας, τάς τε μηνύσεις ἑξῆς ἀπεδείκνυε, καὶ περὶ Φερώρα κατεσχετλίαζεν, ὅτι καὶ ἐκεῖνον Ἀντίπατρος ποιήσειεν ἀδελφοκτόνον, καὶ τοὺς φιλτάτους τῷ βασιλεῖ διαφθείρας, ὅλον τοῦ μύσους ἀναπλήσειε τὸν οἶκον.' Ἄλλα τε πολλὰ πρὸς τούτοις εἰπὼν καὶ ἀποδείξας, καταπαύει τὸν λόγον.

5. Οὔαρος δὲ κελεύσας ἀπολογεῖσθαι τὸν Ἀντί-
138 πατρον, καὶ ὃς οὐδὲν πλέον εἰπὼν ἢ 'θεός ἐστι
μοι τοῦ μηδὲν ἀδικεῖν μάρτυς' ἔκειτο σιγῶν, αἰτήσας τὸ φάρμακον, δίδωσί τινι τῶν ἐπὶ θανάτῳ κατακρίτων δεσμώτῃ πιεῖν. Τοῦ δὲ παραχρῆμα τελευτήσαντος, ὁ μὲν Οὔαρος, ἀποῤῥήτους ποιήσας τὰς πρὸς Ἡρώδην ὁμιλίας, καὶ τὰ περὶ τὸ συνέδριον Καίσαρι γράψας, μετὰ μίαν ἡμέραν χωρίζεται. Δεσμεῖ δὲ ὁ βασιλεὺς Ἀντίπατρον, καὶ πρὸς Καίσαρα τοὺς δηλώσοντας τὴν συμφορὰν ἐξέπεμψεν.

6. Μετὰ δὲ ταῦτα καὶ κατὰ Σαλώμης ἐπίβουλος Ἀντίπατρος εὑρίσκεται. Τῶν γὰρ Ἀντιφίλου τις οἰκετῶν ἧκεν, ἐπιστολὰς κομίζων ἀπὸ Ῥώμης παρὰ Ἰουλίας θεραπαινίδος, Ἀκμῆς τὸ ὄνομα. Καὶ παρὰ μὲν ταύτης ἐπέσταλτο βασιλεῖ, τὰς παρὰ Σαλώμης ἐπιστολὰς ἐν τοῖς Ἰουλίας εὑρηκέναι γράμμασι, πεπομφέναι τε αὐτῷ λάθρα δι' εὔνοιαν. Αἱ δὲ τῆς Σαλώμης λοιδορίας τε τοῦ βασιλέως περιεῖχον πικροτάτας, καὶ κατηγορίαν μεγίστην. Ταύτας δὲ πλάσας ὁ Ἀντίπατρος, καὶ τὴν Ἀκμὴν διαφθείρας, ἔπεισεν Ἡρώδῃ πέμψαι. Διηλέγχθη δὲ ἐκ τῆς πρὸς αὐτὸν ἐπιστολῆς· καὶ γὰρ ἐκείνῳ τὸ γύναιον ἔγραψεν· "Ὡς ἠβουλήθης, ἔγραψά σου τῷ πατρὶ, καὶ τὰς ἐπιστολὰς ἐκείνας ἔπεμψα, πεπεισμένη τὸν βασιλέα μὴ φείσασθαι τῆς ἀδελφῆς, ὅταν ἀναγνῷ. Καλῶς δὲ ποιήσεις, ἐπειδὰν ἀπαρτισθῇ πάντα, μνημονεύσας ὧν ὑπέσχου."

7. *Ταύτης φωραθείσης τῆς ἐπιστολῆς, καὶ τῶν κατὰ Σαλώμην ἐνσκευασθεισῶν, ἔννοια μὲν ἐμπίπτει τῷ βασιλεῖ, τάχα καὶ κατὰ Ἀλεξάνδρου πλασθῆναι γράμματα. Περιαλγὴς δὲ ἦν ὑπὸ τοῦ πάθους, ὡς παρ' ὀλίγον καὶ τὴν ἀδελφὴν ἀποκτείνας δι' Ἀντίπατρον. Οὐκέτι οὖν ἀνεβάλλετο λαβεῖν τιμωρίαν ὑπὲρ ἁπάντων. Ὡρμημένος δὲ ἐπὶ τὸν Ἀντίπατρον, ἐπεσχέθη νόσῳ χαλεπῇ. Περὶ μέντοι τῆς Ἀκμῆς καὶ τῶν κατὰ Σαλώμης ἐσκευωρημένων, ἐπέστειλε Καίσαρι. Τήν τε διαθήκην αἰτήσας, μετέγραφε, καὶ βασιλέα μὲν ἀπεδείκνυεν Ἀντίπαν, ἀμελῶν τῶν πρεσβυτάτων, Ἀρχελάου καὶ Φιλίππου· διεβεβλήκει γὰρ καὶ τούτους Ἀντίπατρος. Καίσαρι δὲ σὺν τοῖς δίχα χρημάτων δώροις κατέλιπε χίλια τάλαντα, τῇ τε γυναικὶ καὶ τέκνοις αὐτοῦ καὶ φίλοις καὶ ἀπελευθέροις περὶ πεντακόσια· ἀπένειμε δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασι τῆς τε χώρας οὐκ ὀλίγα καὶ τῶν χρημάτων, λαμπροτάταις τε δωρεαῖς ἐτίμα Σαλώμην τὴν ἀδελφήν. Ἐν μὲν οὖν ταῖς διαθήκαις ταῦτα διωρθώσατο.*

CAP. XXXIII. 1. *Προήει δὲ αὐτῷ πρὸς τὸ* 139
χαλεπώτερον ἡ νόσος, ἅτε δὴ τῶν ἀῤῥωστημάτων ἐν γήρᾳ καὶ ἀθυμίᾳ ἐπιπεσόντων. Ἦν μὲν γὰρ ἤδη σχεδὸν ἐτῶν ἑβδομήκοντα, τεταπείνωτο δὲ τὴν ψυχὴν ταῖς περὶ τῶν τέκνων συμφοραῖς, ὡς μηδὲ ἐν ὑγιείᾳ τι τῶν ἡδέων προςίεσθαι. Τῆς νόσου δὲ ἦν ἐπίτασις ζῶν Ἀντίπατρος, ὃν οὐκ ἐν παρέργῳ, ῥαΐσας δὲ προῄρητο ἀνελεῖν.

2. *Γίνεται δ' ἐν ταῖς συμφοραῖς αὐτοῦ καὶ δημοτική τις ἐπανάστασις. Δύο ἦσαν σοφισταὶ κατὰ τὴν πόλιν, μάλιστα δοκοῦντες ἀκριβοῦν τὰ πάτρια, καὶ διὰ τοῦτο ἐν ἅπαντι τῷ ἔθνει μεγίστης ἠξιωμένοι δόξης, Ἰούδας τε υἱὸς Σεπφωραίου, καὶ Ματθίας ἕτερος Μαργάλου. Τούτοις οὐκ ὀλίγοι προςῄεσαν τῶν νέων ἐξηγουμένοις τοὺς νόμους, καὶ συν-*

ἦγον ὁσημέραι τῶν ἡβώντων στρατόπεδον. Οἳ τότε τὸν βασιλέα πυνθανόμενοι ταῖς ἀθυμίαις ὑπεκρέοντα καὶ τῇ νόσῳ, λόγον καθίεσαν εἰς τοὺς γνωρίμους, ὡς 'ἄρα καιρὸς ἐπιτηδειότατος εἴη, τιμωρεῖν ἤδη τῷ θεῷ, καὶ τὰ κατασκευασθέντα παρὰ τοὺς πατρίους νόμους ἔργα κατασπᾶν. Ἀθέμιτον γὰρ εἶναι, κατὰ τὸν ναὸν ἢ εἰκόνας ἢ προτομὰς ἢ ζώου τινὸς ἐπώνυμον ἔργον εἶναι.' Κατεσκευάκει δὲ ὁ βασιλεὺς ὑπὲρ τὴν μεγάλην πύλην ἀετὸν χρυσοῦν· ὃν δὴ τότε παρῄνουν ἐκκόπτειν οἱ σοφισταί, 'καλὸν εἶναι λέγοντες, εἰ καί τις γένοιτο κίνδυνος, ὑπὲρ τοῦ πατρίου νόμου θνήσκειν· τοῖς γὰρ οὕτω τελευτῶσιν ἀθάνατόν τε τὴν ψυχήν, καὶ τὴν ἐν ἀγαθοῖς αἴσθησιν αἰώνιον παραμένειν· τοὺς δὲ ἀγεννεῖς, καὶ τῆς αὐτῶν σοφίας ἀπείρους, ἀγνοοῦντας φιλοψυχεῖν, καὶ πρὸ τοῦ δι' ἀρετῆς τὸν ἐκ νόσου θάνατον αἱρεῖσθαι.'

3. Ἅμα δὲ τοῖς ἐκείνων λόγοις διεφημίσθη καὶ θνήσκειν ὁ βασιλεύς, ὥςτε θαῤῥαλεώτερον ἥπτοντο τῆς ἐπιχειρήσεως οἱ νέοι. Μέσης γοῦν ἡμέρας, καὶ πολλῶν κατὰ τὸ ἱερὸν ἀναστρεφομένων, σχοίνοις παχείαις καθιμήσαντες σφᾶς αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ τέ-
140 γους τὸν χρυσοῦν ἐκεῖνον ἀετὸν ἐξέκοπτον πελέκεσιν. Ἠγγέλθη δὲ εὐθέως τῷ βασιλέως στρατηγῷ, καὶ ἐκεῖνος μετὰ χειρὸς οὐκ ὀλίγης ἀναδραμὼν περὶ τεσσαράκοντα νεανίας συλλαμβάνει, καὶ κατήγαγε πρὸς τὸν βασιλέα. Πυνθανομένῳ δὲ αὐτῷ πρῶτον, 'εἰ τολμήσειαν τὸν χρυσοῦν ἀετὸν ἐκκόπτειν,' ὡμολόγουν. Ἔπειτα, 'τίνος κελεύσαντος,' ἀπεκρίναντο· 'τοῦ πατρίου νόμου.' 'Τί δὲ οὕτω γεγήθασι' διερωτήσαντος, 'ἀναιρεῖσθαι μέλλοντες, ἔλεγον, ὅτι πλειόνων ἀγαθῶν ἀπολαύσουσι μετὰ τὴν τελευτήν.'

4. Ἐπὶ τούτοις ὁ βασιλεὺς δι' ὑπερβολὴν ὀργῆς κρείττων τῆς νόσου γενόμενος, πρόεισιν εἰς ἐκκλησίαν, καὶ πολλὰ τῶν ἀνδρῶν κατηγορήσας ὡς ἱεροσύλων, καὶ προφάσει τοῦ νόμου πειραζόντων τι

μεῖζον, κολάζειν ἠξίου ὡς ἀσεβεῖς. Ὁ δὲ δῆμος δείσας, μὴ διὰ πολλῶν ὁ ἔλεγχος ἔλθῃ, παρεκάλει πρῶτον μὲν τοὺς ὑποθεμένους τὴν πρᾶξιν, ἔπειτα τοὺς ἐν αὐτῇ συλληφθέντας κολάσαντα, τοῖς λοιποῖς τὴν ὀργὴν ἀφεῖναι. Πείθεται μόγις ὁ βασιλεὺς, καὶ τοὺς μὲν καθιμήσαντας ἑαυτοὺς ἅμα τοῖς σοφισταῖς κατέκαυσε ζῶντας, τοὺς λοιποὺς δὲ τῶν συλληφθέντων παρέδωκε τοῖς ὑπηρέταις ἀνελεῖν.

5. Ἔνθεν αὐτοῦ τὸ σῶμα πᾶν ἡ νόσος διαλαβοῦσα, ποικίλοις πάθεσι διεμερίζετο. Πυρετὸς μὲν γὰρ ἦν οὐ λάβρος, κνησμὸς δ' ἀφόρητος τῆς ἐπιφανείας ὅλης, καὶ κώλου συνεχεῖς ἀλγηδόνες, περί τε τοὺς πόδας ὥςπερ ὑδρωπιῶντος οἰδήματα, τοῦ τε ἤτρου φλεγμονὴ, καὶ δι' αἰδοίου σηπεδὼν σκώληκας γεννῶσα. Πρὸς τούτοις ὀρθόπνοια, καὶ δύςπνοια, καὶ σπασμὸς ἁπάντων τῶν μελῶν, ὥςτε τοὺς ἐπιθειάζοντας ποινὴν εἶναι τῶν σοφιστῶν τὰ νοσήματα λέγειν. Ὁ δὲ παλαίων τοσούτοις πάθεσιν, ὅμως τοῦ ζῆν ἀντείχετο, σωτηρίαν τε ἤλπιζε, καὶ θεραπείας ἐπενόει. Διαβὰς γοῦν τὸν Ἰορδάνην, τοῖς κατὰ Καλλιρόην θερμοῖς ἐκέχρητο· ταῦτα δὲ ἔξεισι μὲν εἰς τὴν Ἀσφαλτῖτιν λίμνην, ὑπὸ γλυκύτητος δ' ἐστὶ καὶ πότιμα. Δόξαν δ' ἐνταῦθα τοῖς ἰατροῖς ἐλαίῳ θερμῷ πᾶν ἀναθάλψαι τὸ σῶμα, χαλασθὲν εἰς ἐλαίου πλήρη πύελον, ἐκλύει δὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς, καὶ ὡς τεθνεὼς ἀνέστρεψε. Θορύβου δὲ τῶν θεραπόντων γενομένου, πρὸς μὲν τὴν φωνὴν ἀνήνεγκεν· εἰς δὲ τὸ λοιπὸν ἀπογνοὺς τὴν σωτηρίαν, τοῖς τε στρατιώταις ἀνὰ δραχμὰς πεντήκοντα ἐκέλευσε διανεῖμαι, καὶ πολλὰ χρήματα τοῖς ἡγεμόσι καὶ τοῖς φίλοις.

6. Αὐτὸς δὲ ὑποστρέφων ὡς εἰς Ἱεριχοῦντα 441
παραγίνεται, μελαγχολῶν ἤδη, καὶ μονονουχὶ αὐτῷ τι τῷ θανάτῳ ἀπειλῶν, προέκοψεν εἰς ἐπιβολὴν ἀθεμίτου πράξεως. Τοὺς γὰρ ἀφ' ἑκάστης κώμης ἐπισήμους ἄνδρας ἐξ ὅλης Ἰουδαίας συναγαγὼν εἰς

τὸν καλούμενον Ἱππόδρομον ἐκέλευσε συγκλεῖσαι. Προςκαλεσάμενος δὲ Σαλώμην τὴν ἀδελφὴν, καὶ τὸν ἄνδρα ταύτης Ἀλεξᾶν, "Οἶδα," ἔφη, "Ἰουδαίους τὸν μὲν ἐμὸν ἑορτάσοντας θάνατον, δύναμαι δὲ πενθεῖσθαι δι᾽ ἑτέρων, καὶ λαμπρὸν ἐπιτάφιον σχεῖν, ἂν ὑμεῖς θελήσητε ταῖς ἐμαῖς ἐντολαῖς ὑπουργῆσαι. Τούςδε τοὺς φρουρουμένους ἄνδρας, ἐπειδὰν ἐκπνεύσω, τάχιστα κτείνατε περιστήσαντες τοὺς στρατιώτας, ἵνα πᾶσα Ἰουδαία, καὶ πᾶς οἶκος, ἄκων ἐπ᾽ ἐμοὶ δακρύσῃ."

7. Ταῦτα ἐνετέλλετο, καὶ παρὰ τῶν ἐν Ῥώμῃ πρέσβεων ἧκον ἐπιστολαὶ, δι᾽ ὧν Ἀκμὴ μὲν ἀνῃρημένη κελεύσαντος Καίσαρος ἐδηλοῦτο, θανάτῳ δὲ Ἀντίπατρος κατάκριτος· ἔγραφόν γε μὴν, ὡς, εἰ καὶ φυγαδεύειν αὐτὸν ἐθελήσειεν ὁ πατὴρ, ἐπιτρέποι Καῖσαρ. Ὁ δὲ βραχὺ μὲν πρὸς τὴν ἐπιθυμίαν ἀνήνεγκεν, αὖθις δὲ, καὶ γὰρ ἐνδείᾳ τροφῆς καὶ βηχὶ σπασμώδει διετείνετο, τῶν ἀλγηδόνων ἡττηθεὶς, φθάσαι τὴν εἱμαρμένην ἐπεβάλλετο. Λαβὼν δὲ μῆλον, ᾔτησε καὶ μαχαίριον, — εἰώθει γὰρ ἀποτέμνων ἐσθίειν, — ἔπειτα περιαθρήσας, μή τις ὁ κωλύων εἴη, ἐπῆρε τὴν δεξιὰν, ὡς πλήξων ἑαυτόν. Προςδραμὼν δὲ ἐκώλυσεν Ἀχίαβος ὁ ἀνεψιὸς αὐτοῦ, τὴν χεῖρα κατασχών. Οἰμωγὴ δ᾽ εὐθὺς ἤρθη μεγίστη κατὰ τὸ βασίλειον ὡς οἰχομένου τοῦ βασιλέως· καὶ ταχέως ἀκούσας Ἀντίπατρος, ἀνεθάῤῥει τε καὶ γεγηθὼς τοὺς φύλακας ἱκέτευεν, ἐπὶ χρήμασιν ἐξαφιέναι λύσαντας αὐτόν. Ὁ δὲ ἡγεμὼν οὐ μόνον ἐκώλυσεν, ἀλλὰ καὶ βασιλεῖ δραμὼν ἀνήγγειλε τὴν ἐπιβουλήν. Ἀνέκραγεν δὲ ἐκεῖνος ἰσχυρότερον τῆς νόσου, καὶ παραχρῆμα πέμψας τοὺς δορυφόρους, ἀπέκτεινε τὸν Ἀντίπατρον. Θάψαι δὲ τὸν νεκρὸν αὐτοῦ προςτάξας ἐν Ὑρκανίῳ, πάλιν τὰς διαθήκας ἐπανορθοῦται, καὶ διάδοχον μὲν Ἀρχέλαον, τὸν πρεσβύτατον υἱὸν, ἀδελφὸν Ἀντίπα, γράφει, τετράρχην δὲ Ἀντίπαν.

8. *Μετὰ δὲ τὴν ἀναίρεσιν τοῦ παιδὸς ἐπιβιοὺς πέντε ἡμέρας τελευτᾷ, βασιλεύσας ἀφ' οὗ μὲν ἀποκτείνας Ἀντίγονον ἐκράτησε τῶν πραγμάτων ἔτη τέσσαρα καὶ τριάκοντα, ἀφ' οὗ δὲ ὑπὸ Ῥωμαίων ἀπεδείχθη 142 βασιλεὺς, ἑπτὰ καὶ τριάκοντα. Καὶ κατὰ μὲν τὰ ἄλλα πάντα τύχῃ δεξιᾷ χρησάμενος, εἰ καί τις ἕτερος, ὅστις γε κατεκτήσατο βασιλείαν ἰδιώτης ὢν, καὶ, τοσούτῳ χρόνῳ φυλάξας, ἰδίοις τέκνοις κατέλιπεν. Ἐν δὲ τοῖς κατ' οἶκον ἀτυχέστατος. Πρὶν δὲ γνῶναι τὴν τελευτὴν αὐτοῦ τὸ στρατιωτικὸν, προελθοῦσα μετ' ἀνδρὸς ἡ Σαλώμη, διαφῆκε τοὺς δεσμώτας οὓς κτείνειν ὁ βασιλεὺς ἐνετείλατο, μεταπεισθῆναι αὐτὸν λέγουσα. καὶ πάλιν ἀναπέμπειν ἕκαστον εἰς τὰ ἴδια. Τούτων δὲ οἰχομένων, ἐδήλου ἤδη τοῖς στρατιώταις, καὶ συνῆγεν αὐτοὺς εἰς ἐκκλησίαν μετὰ τοῦ λοιποῦ πλήθους ἐν τῷ καθ' Ἱεριχοῦντα ἀμφιθεάτρῳ. Ἔνθα παρελθὼν Πτολεμαῖος, ὁ καὶ τὸν σημαντῆρα δακτύλιον παρὰ τοῦ βασιλέως πεπιστευμένος, τόν τε βασιλέα κατευδαιμονίζει, καὶ τὸ πλῆθος παρακαλεῖ, τήν τε ἀπολειφθεῖσαν τοῖς στρατιώταις ἀνεγίνωσκεν ἐπιστολὴν, ἐν ᾗ πολλὰ περὶ τῆς εἰς τὸν διάδοχον εὐνοίας παρεκάλει. Μετὰ δὲ τὴν ἐπιστολὴν λύσας τὰς διαθήκας ἀνεγίνωσκεν, ἐν αἷς Φίλιππος μὲν τοῦ Τράχωνος, καὶ τῶν γειτνειώντων χωρίων κληρονόμος, τετράρχης δὲ, ὡς προείπομεν, Ἀντίπας, βασιλεὺς δὲ Ἀρχέλαος ἀπεδείκνυτο. Τούτῳ δὲ τόν τε δακτύλιον τὸν ἑαυτοῦ Καίσαρι φέρειν ἐνετέλλετο, καὶ τὰς διοικήσεις τῆς βασιλείας σεσημασμένας· κύριον γὰρ ἁπάντων, ὧν διατάξειε, καὶ βεβαιωτὴν τῶν διαθηκῶν εἶναι Καίσαρα· τά γε μὴν λοιπὰ κατὰ τὰς προτέρας διαθήκας φυλάττειν.*

9. *Βοὴ δὲ εὐθὺς ἐγένετο τῶν Ἀρχελάῳ συνηδομένων, καὶ κατὰ στίφος οἱ στρατιῶται μετὰ τοῦ πλήθους περιϊόντες, ὑπισχνοῦντο μὲν τὴν ἑαυτῶν εὔνοιαν, συνηύχοντο δὲ καὶ τὴν παρὰ τοῦ θεοῦ.*

Μετὰ ταῦτα πρὸς ταφὴν ἐτράποντο τοῦ βασιλέως. Παρέλιπε δὲ οὐδὲν ὁ Ἀρχέλαος εἰς πολυτέλειαν, ἀλλὰ πάντα τὸν βασίλειον κόσμον προήνεγκε, συμπομπεύσοντα τῷ νεκρῷ. Κλίνη μὲν ὁλόχρυσος ἦν διάλιθος, στρωμνὴ δὲ ἁλουργὶς ποικίλη, τὸ σῶμα δὲ ἐπ' αὐτῆς πορφύρᾳ κεκαλυμμένον, καὶ διάδημα μὲν ἐπέκειτο τῇ κεφαλῇ, στέφανος δὲ ὑπὲρ αὐτοῦ χρυσοῦς, τὸ δὲ σκῆπτρον παρὰ τὴν δεξιάν. Καὶ περὶ μὲν τὴν κλίνην οἵ τε υἱεῖς, καὶ τὸ πλῆθος τῶν συγγενῶν, ἐφ' οἷς οἱ δορυφόροι, καὶ τὸ Θράκιον στῖφος, Γερμανοί τε καὶ Γαλάται, διεσκευασμένοι πάντες ὡς εἰς πόλεμον. Προῆγε δὲ ἡ λοιπὴ δύναμις, ὡπλισμένοι τοῖς ἡγεμόσι καὶ ταξιάρχοις ἀκολουθοῦντες ἐν κόσμῳ. Πεντακόσιοι δὲ ὑπ' αὐτοῖς τῶν οἰκετῶν καὶ ἀπελευθέρων ἀρωματοφόροι. Σταδίους
143 *δὲ ἐκομίσθη τὸ σῶμα διακοσίους εἰς Ἡρώδειον, ὅπου κατὰ τὰς ἐντολὰς ἐτάφη. Καὶ τὰ μὲν περὶ Ἡρώδην τοιοῦτον ἔσχε πέρας.*

144-146

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ

Η

ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ἹΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ἉΛΩΣΕΩΣ

ΛΟΓΟΣ Β'.

Argumentum Lib. II.

(1) *Ἀρχέλαος ἐπιτάφιον ἑστίασιν ὑπὲρ Ἡρώδου τῷ λαῷ παρέχει. Μεγάλη στάσις ὑπὸ τοῦ πλήθους ἐγερθεῖσα.* (2) *Ἀρχέλαος εἰς Ῥώμην πορεύεται.* (3) *Μάχην καρτερὰν τοῖς Σαβίνου στρατιώταις συνάπτουσιν οἱ Ἰουδαῖοι.* (4) *Στάσις τῶν πάλαι στρατευσαμένων ὑφ' Ἡρώδου. Περὶ Ἰούδα καὶ Σίμωνος καὶ Ἀθρογγαίου.* (5) *Ἰουδαίους θορυβοῦντας κατέστειλεν Οὔαρος.* (6) *Καῖσαρ τοῖς Ἡρώδου τέκνοις τὰ πα-*

τρῷα ὡς βούλοιτο διανέμει. (7) Περὶ Ψευδαλεξάνδρου. Φυγαδεύεται Ἀρχέλαος, καὶ τελευτᾷ Γλαφύρα. (8) Στάσις Ἰούδα Γαλιλαίου. Τρεῖς Ἰουδαίων αἱρέσεις. (9) Σαλώμης τελευτή. Ταραχὰς κινεῖ Πίλατος. Ἡρώδης Ἀντίπας φυγαδεύεται. (10) Γάϊος τὸν ἀνδριάντα αὐτοῦ τῷ ναῷ ἐγκαθιδρύεσθαι κελεύει. (11) Περὶ Ἀγρίππα καὶ Ἡρώδου τελευτῆς. (12) Πολλοὶ θόρυβοι ἐπὶ Κουμάνου. Φῆλιξ Ἰουδαίας ἐπίτροπος. (13) Σικάριοι, Μάγοι, καὶ ψευδοπροφήτης Αἰγύπτιος ταραχὰς συνιστᾶσι. (14 et 15) Περὶ Φήστου καὶ Ἀλβίνου καὶ Φλώρου, ὃς διὰ τὴν αὐτοῦ ὠμότητα Ἰουδαίους εἰς πόλεμον ἀναγκάζει. (16) Κέστιος πέμπει Νεαπολιτανὸν χιλίαρχον τὰ τῶν Ἰουδαίων κατασκεψόμενον. (17) Ὡς Ἰουδαῖοι ἤρξαντο τοῦ πρὸς Ῥωμαίους πολέμου. (18) Ἰουδαίων συμφοραὶ καὶ φόνοι ἑκάστοτε. (19) Ὅσα Κέστιος κατὰ τῶν Ἰουδαίων ἔπραξε. (20) Κέστιος πρὸς Νέρωνα πρέσβεις ἀναπέμπει. Ἱεροσολυμῖται στρατηγοὺς ἀποδεικνῦσι πολλούς, καὶ αὐτὸν τὸν συγγραφέα, Ἰώσηπον. (21) Περὶ Ἰωάννου ἀπὸ Γισχάλων. (22) Ἰουδαῖοι παρεσκευάζοντο τὰ πρὸς πόλεμον.

CAP. I. 1. Ἀρχελάῳ δὲ νέων ἦρξε θορύβων ἡ τῆς 147
ἐπὶ Ῥώμην ἀποδημίας ἀνάγκη· πενθήσας γὰρ ἡμέρας ἑπτὰ τὸν πατέρα, καὶ τὴν ἐπιτάφιον ἑστίασιν πολυτελῆ τῷ πλήθει παρασχών, — ἔθος δὲ τοῦτο παρὰ Ἰουδαίοις πολλοῖς πενίας αἴτιον, διὰ τὸ πλῆθος ἑστιᾶν οὐκ ἄνευ ἀνάγκης· εἰ γὰρ παραλίποι τις, οὐχ ὅσιος, — μεταλαμβάνει μὲν ἐσθῆτα λευκήν, πρόεισι δὲ εἰς τὸ ἱερόν, ἔνθα ποικίλαις αὐτὸν εὐφημίαις ὁ λαὸς ἐκδέχεται. Καὶ ἐκεῖνος τὸ πλῆθος ἀφ᾽ ὑψηλοῦ βήματος καὶ χρυσοῦ θρόνου δεξιωσάμενος, τῆς τε σπουδῆς, ἣν ἐνεδείξαντο περὶ τὴν κηδείαν τοῦ πατρός, εὐχαριστεῖ, καὶ τῆς πρὸς αὐτὸν θεραπείας ὡς πρὸς βέβαιον ἤδη βασιλέα· ‘φείδεσθαί γε μὴν ἐπὶ τοῦ παρόντος οὐ μόνον, ἔφη, τῆς ἐξουσίας, ἀλλὰ καὶ τῶν ὀνομάτων, ἕως ἂν αὐτῷ Καῖσαρ ἐπικυρώσῃ τὴν διαδοχήν, ὁ κατὰ τὰς διαθήκας τῶν ὅλων δεσπότης. Οὐδὲ γὰρ ἐν Ἱερι- 148
χοῦντι τῆς στρατιᾶς τὸ διάδημα περιαπτούσης αὐτῷ

δέχεσθαι· τοῦ μέντοι προθύμου καὶ τῆς εὐνοίας ὥςπερ τοῖς στρατιώταις οὕτω καὶ τῷ δήμῳ πλήρεις ἀποδώσειν τὰς ἀμοιβὰς, ὁπότ᾽ ἂν ὑπὸ τῶν κρατούντων βασιλεὺς ἀποδειχθῇ βέβαιος. Σπουδάσειν γὰρ ἐν πᾶσι πρὸς αὐτοὺς φανῆναι τοῦ πατρὸς ἀμείνων.'

2. Ἐπὶ τούτοις ἡδόμενον τὸ πλῆθος εὐθέως ἀπεπειρᾶτο τῆς διανοίας αὐτοῦ μεγάλοις αἰτήμασιν. Οἱ μὲν γὰρ ἐβόων ἐπικουφίζειν τὰς εἰςφορὰς, οἱ δὲ ἀναιρεῖν τὰ τέλη, τινὲς δὲ ἀπολύειν τοὺς δεσμώτας. Ἐπένευε δ᾽ ἑτοίμως ἅπασι, θεραπεύων τὸ πλῆθος. Ἔπειτα θύσας μετὰ τῶν φίλων ἐν εὐωχίᾳ ἦν. Ἔνθα δὴ περὶ δείλην ἀθροισθέντες οὐκ ὀλίγοι τῶν νεωτερίζειν προαιρουμένων, ἤρξαντο τοῦ ἰδίου πένθους, ὅτε τὸ κοινὸν ἐπὶ τῷ βασιλεῖ πέπαυτο, κατολοφυρόμενοι τοὺς κολασθέντας ὑφ᾽ Ἡρώδου διὰ τὸν ἐκκοπέντα χρυσοῦν ἀετὸν τῆς πύλης τοῦ ναοῦ. Ἦν δὲ τὸ πένθος οὐχ ὑπεσταλμένον, ἀλλ᾽ οἰμωγαὶ διαπρύσιοι, καὶ θρῆνος ἐγκέλευστος, κοπετοί τε περιηχοῦντες ὅλην τὴν πόλιν, ὡς ἂν ἐπ᾽ ἀνδράσιν, οὓς ἔφασκον ὑπὲρ τῶν πατρίων νόμων καὶ τοῦ ναοῦ παραπολέσθαι. ʻΤιμωρεῖν δὲ αὐτοῖς ἀνεβόων ἐκ τῶν ὑφ᾽ Ἡρώδου τετιμημένων χρῆναι, καὶ πρῶτον τὸν ὑπ᾽ ἐκείνου κατασταθέντα παύειν ἀρχιερέα· προςήκειν γὰρ αὐτοῖς εὐσεβέστερον αἱρεῖσθαι, καὶ καθαρώτερον.'

3. Πρὸς ἃ παρωξύνετο μὲν Ἀρχέλαος, ἐπείχετο δὲ τὴν ἄμυναν ὑπὸ τῆς περὶ τὴν ἔξοδον ἐπείξεως, δεδοικὼς, μή ποτε τὸ πλῆθος ἐκπολεμώσας κατασχεθείη τῷ κινήματι. Διὸ πειθοῖ μᾶλλον, ἢ βίᾳ, καταστέλλειν ἐπειρᾶτο τοὺς νεωτερίζοντας, καὶ τὸν στρατηγὸν ὑποπέμψας παύσασθαι παρεκάλει. Τοῦτον εἰς τὸ ἱερὸν παρελθόντα, πρὶν φθέγξασθαί τι, λίθοις ἀπήλαυνον οἱ στασιασταὶ, καὶ τοῖς μετ᾽ αὐτὸν ἐπὶ σωφρονισμῷ προςιοῦσιν, ἐνίει δὲ πολλοὺς Ἀρχέλαος, πάντα πρὸς ὀργὴν ἀπεκρίναντο. Δῆλοί τε

ἦσαν οὐκ ἠρεμήσοντες, εἰ πλήθους ἀπολάβοιντο. Καὶ δὴ τῆς τῶν ἀζύμων ἐνστάσης ἑορτῆς, Φάσχα παρὰ τοῖς Ἰουδαίοις καλεῖται, πολύ τι θυμάτων πλῆθος ἐκδεχομένη, κάτεισι μὲν ἄπειρος ἐκ τῆς χώρας λεὼς ἐπὶ τὴν θρησκείαν. Οἱ δὲ τοὺς σοφιστὰς πενθοῦντες ἐν τῷ ἱερῷ συνειστήκεισαν, τροφὴν τῇ στάσει πορίζόμενοι. Πρὸς ὃ δείσας Ἀρχέλαος, πρὶν δι᾽ ὅλου τοῦ πλήθους δραμεῖν τὴν νόσον, ὑποπέμπει μετὰ σπείρας χιλίαρχον, προστάξας βίᾳ τοὺς ἐξάρχοντας τῆς στάσεως κατασχεῖν. Πρὸς οὓς τὸ πλῆθος ἅπαν παροξύνεται, καὶ τοὺς μὲν πολλοὺς τῆς σπείρας βάλλοντες λίθοις διέφθειραν· ὁ δὲ χιλίαρχος ἐκφεύγει τραυματίας μόγις. Ἔπειθ᾽ οἱ μὲν, ὡς μηδενὸς 149
δεινοῦ γεγονότος, ἐτράποντο πρὸς τὴν θυσίαν· οὐ μὴν Ἀρχελάῳ δίχα φόνου καθεκτὸν ἔτι τὸ πλῆθος ἐφαίνετο. Τὴν δὲ στρατιὰν ἐπαφίησιν αὐτοῖς ὅλην, τοὺς μὲν πεζοὺς, διὰ τῆς πόλεως ἀθρόους, τοὺς δὲ ἱππεῖς, ἀνὰ τὸ πεδίον· οἳ θύουσιν ἑκάστοις ἐξαίφνης προσπεσόντες διαφθείρουσι μὲν περὶ τρισχιλίους, τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος εἰς τὰ πλησίον ὄρη διεσκέδασαν. Εἵποντο δὲ κήρυκες Ἀρχελάου, κελεύοντες ἕκαστον ἀναχωρεῖν ἐπ᾽ οἴκου, καὶ πάντες ᾤχοντο τὴν ἑορτὴν ἀπολιπόντες.

CAP. II. 1. Αὐτὸς δὲ μετὰ τῆς μητρὸς καὶ τῶν φίλων Ποπλᾷ καὶ Πτολεμαίου καὶ Νικολάου κατῄει πρὸς θάλασσαν, καταλιπὼν ἐπίτροπόν τε τῶν βασιλείων καὶ κηδεμόνα τῶν οἰκείων, Φίλιππον. Συνεξῄει δὲ ἅμα τοῖς τέκνοις Σαλώμη, καὶ οἱ τοῦ βασιλέως ἀδελφοί τε καὶ γαμβροί· τὸ μὲν δοκεῖν, συναγωνιούμενοι περὶ τῆς διαδοχῆς Ἀρχελάῳ, τὸ δ᾽ ἀληθὲς, κατηγορήσοντες περὶ τῶν κατὰ τὸ ἱερὸν παρανομηθέντων.

2. Συναντᾷ δὲ αὐτοῖς κατὰ Καισάρειαν Σαβῖνος ὁ τῆς Συρίας ἐπίτροπος, εἰς Ἰουδαίαν ἀνιὼν ἐπὶ φυλακῇ τῶν Ἡρώδου χρημάτων. Τοῦτον ἐπι-

σχε προσωτέρω χωρεῖν Οὔαρος ἐπελθὼν, ὃν διὰ Πτολεμαίου πολλὰ δεηθεὶς Ἀρχέλαος μετεπέμψατο. Τότε μὲν οὖν Σαβῖνος Οὐάρῳ χαριζόμενος, οὔτ' ἐπὶ τὰς ἄκρας ἔσπευσεν, οὔτε τὰ ταμιεῖα τῶν πατρῴων χρημάτων ἀπέκλεισεν Ἀρχελάῳ, μέχρι δὲ τῆς Καίσαρος διαγνώσεως ἠρεμήσειν ὑπέσχετο· διέτριβε δὲ ἐπὶ τῆς Καισαρείας. Ὡς δὲ τῶν ἐμποδιζόντων ὁ μὲν εἰς Ἀντιόχειαν ἀπῆρεν, Ἀρχέλαος δὲ εἰς Ῥώμην ἀνήχθη, διὰ τάχους ἐπὶ Ἱεροσολύμων ὁρμήσας, παραλαμβάνει τὰ βασίλεια. Καὶ μεταπεμπόμενος τούς τε φρουράρχους καὶ διοικητὰς, ἐπειρᾶτο διερευνᾶν τοὺς τῶν χρημάτων ἀναλογισμοὺς, τάς τε ἄκρας παραλαμβάνειν. Οὐ μὴν οἱ φρούραρχοι τῶν Ἀρχελάου κατημέλουν ἐντολῶν, ἔμενον δὲ φρουροῦντες ἕκαστα, καὶ τὴν φρουρὰν ἀνατιθέντες Καίσαρι μᾶλλον ἢ Ἀρχελάῳ.

3. Καὶ ἐν τούτῳ πάλιν Ἀντίπας ἀμφισβητῶν περὶ τῆς βασιλείας ἐπέξεισιν, ἀξιῶν τῆς ἐπιδιαθήκης τὴν διαθήκην εἶναι κυριωτέραν, ἐν ᾗ βασιλεὺς αὐτὸς ἐγέγραπτο. Συλλήψεσθαι δὲ αὐτῷ προϋπέσχετο Σαλώμη, καὶ πολλοὶ τῶν σὺν Ἀρχελάῳ πλεόντων συγγενῶν. Ἐπήγετο καὶ τὴν μητέρα, καὶ τὸν ἀδελφὸν Νικολάου Πτολεμαῖον, ῥοπὴν εἶναι δοκοῦντα διὰ τὴν παρ' Ἡρώδῃ πίστιν· ἐγεγόνει γὰρ
150 δὴ τῶν φίλων τιμιώτατος ἐκείνῳ. Πλεῖστον μέντοι ἐπεποίθει διὰ δεινότητα λόγων Εἰρηναίῳ τῷ ῥήτορι· δι' ὃν καὶ τοὺς νουθετοῦντας εἴκειν Ἀρχελάῳ, κατὰ τὰ πρεσβεῖον καὶ τὰς ἐπιδιαθήκας, διεκρούσατο. Μεθίστατο δὲ ἐν Ῥώμῃ πάντων πρὸς αὐτὸν ἡ σπουδὴ τῶν συγγενῶν, οἷς διὰ μίσους ἦν Ἀρχέλαος. Καὶ προηγουμένως μὲν ἕκαστος αὐτονομίας ἐπεθύμει, στρατηγῷ Ῥωμαίων διοικουμένης· εἰ δὲ τούτου διαμαρτάνοιεν, βασιλεύειν Ἀντίπαν ἤθελον.

4. Συνήργει δὲ αὐτοῖς εἰς τοῦτο καὶ Σαβῖνος δι' ἐπιστολῶν, κατηγορήσας μὲν Ἀρχελάου παρὰ Καίσαρι, πολλὰ δ' ἐπαινέσας Ἀντίπαν. Συντάξαν-

τες δὴ τὰ ἐγκλήματα οἱ περὶ Σαλώμην, ἐνεχείρισαν Καίσαρι. Καὶ μετ' αὐτοὺς Ἀρχέλαος τά τε κεφάλαια τῶν ἑαυτοῦ δικαίων γράψας, καὶ τὸν δακτύλιον τοῦ πατρὸς καὶ τοὺς λόγους εἰςπέμπει διὰ Πτολεμαίου. Προσκεψάμενος δὲ ὁ Καῖσαρ τὰ παρὰ ἀμφοῖν κατ' ἰδίαν, τό τε μέγεθος τῆς βασιλείας, καὶ τὸ πλῆθος τῆς προςόδου, πρὸς οἷς τὸν ἀριθμὸν τῆς Ἡρώδου γενεᾶς· προςαναγνοὺς δὲ καὶ τὰ παρὰ Οὐάρου καὶ Σαβίνου περὶ τούτων ἐπεσταλμένα, συνέδριον μὲν ἀθροίζει τῶν ἐν τέλει Ῥωμαίων, ἐν ᾧ καὶ τὸν ἐξ Ἀγρίππα καὶ Ἰουλίας τῆς θυγατρὸς θετὸν παῖδα Γάϊον πρώτως ἐκάθισεν. Ἀποδίδωσι δὲ λόγον αὐτοῖς.

5. Ἔνθα καταστὰς ὁ Σαλώμης υἱὸς Ἀντίπατρος, ἦν δὲ τῶν ἐναντιουμένων Ἀρχελάῳ δεινότατος εἰπεῖν, κατηγόρει φάσκων, 'τοῖς μὲν λόγοις ἀμφισβητεῖν ἄρτι περὶ βασιλείας Ἀρχέλαον, τοῖς δ' ἔργοις πάλαι γεγονέναι βασιλέα, κατειρωνεύεσθαι δὲ νῦν τῶν Καίσαρος ἀκοῶν. Ὃν δικαστὴν τῆς διαδοχῆς οὐ περιέμεινεν, εἴ γε μετὰ τὴν Ἡρώδου τελευτὴν ἐγκαθέτους μὲν ὑποπέμψας τοὺς περιθήσοντας αὐτῷ τὸ διάδημα, προκαθίσας δὲ ἐπὶ θρόνου καὶ χρηματίσας ὡς βασιλεὺς, τάξεις τε τῆς στρατιᾶς ἀμείψας, καὶ προκοπὰς χαρισάμενος, ἔτι δὲ τῷ δήμῳ πάντα κατανεύσας, ὅσων ὡς παρὰ βασιλέως τυχεῖν ἠξίουν, καὶ τοὺς ἐπὶ μεγίσταις αἰτίαις ὑπὸ τοῦ πατρὸς δεδεμένους λύσας, νῦν ἥκει παρὰ τοῦ δεσπότου σκιὰν αἰτησόμενος βασιλείας, ἧς ἥρπασεν ἑαυτῷ τὸ σῶμα, καὶ ποιῶν οὐ τῶν πραγμάτων, ἀλλὰ τῶν ὀνομάτων, κύριον Καίσαρα. Προςωνείδιζε δὲ, ὡς καὶ τὸ πένθος κατειρωνεύσατο τοῦ πατρὸς, μεθ' ἡμέραν μὲν ἐπισχηματίζων τὸ πρόςωπον εἰς λύπην, νύκτωρ δὲ μέχρι κώμων μεθυσκόμενος, ἐν ᾧ καὶ τὴν ταραχὴν τοῦ πλήθους ἐκ τῆς ἐπὶ τούτοις ἀγανακτήσεως ἔλεγε γεγονέναι. Καὶ τὸν ἀγῶνα παντὸς τοῦ λόγου ἐναπηρείσατο τῷ πλήθει τῶν περὶ τὸν ναὸν φονευθέν-

των· οὓς ἐληλυθέναι μὲν ἐφ᾽ ἑορτὴν, παρὰ δὲ ταῖς ἰδίαις θυσίαις ὠμῶς ἀπεσφάχθαι. Καὶ τοσοῦτον ἐν τῷ ἱερῷ σεσωρεῦσθαι νεκρῶν πλῆθος, ὅσον οὐδ᾽ ἂν
154 ἀλλόφυλος ἐσώρευσε πόλεμος ἐπελθὼν ἀκήρυκτος. Ταύτην μέντοι τὴν ὠμότητα προσκεψάμενον αὐτοῦ καὶ τὸν πατέρα, μηδ᾽ ἐλπίδος αὐτὸν ἀξιῶσαί ποτε βασιλικῆς, ἢ ὅτε χεῖρον τὴν ψυχὴν κάμνων τοῦ σώματος ἀκρατὴς ἦν ὑγιαίνοντος λογισμοῦ, καὶ οὔτε ὃν ἔγραφεν ἐν ταῖς ἐπιδιαθήκαις ᾔδει διάδοχον, καὶ ταῦτα μηδὲν τὸν ἐν ταῖς διαθήκαις μέμψασθαι δυνάμενος, ὃν ἔγραψεν ὑγιαίνων μὲν τὸ σῶμα, καθαρὰν δὲ τὴν ψυχὴν ἔχων πάθους παντός. Εἰ μέντοι καὶ κυριωτέραν τὴν τοῦ κάμνοντος κρίσιν τιθείη τις, ἀποκεχειροτονῆσθαι βασιλείας Ἀρχέλαον ὑφ᾽ ἑαυτοῦ, τοῖς εἰς αὐτὴν παρανομηθεῖσιν· Ἢ ποταπόν γε ἄρα ἂν γενέσθαι λαβόντα τὴν ἀρχὴν παρὰ Καίσαρος, τὸν πρὶν λαβεῖν τοσούτους ἀνῃρηκότα;᾽

6. Πολλὰ τοιαῦτα διεξελθὼν Ἀντίπατρος, καὶ τοὺς πλείστους τῶν συγγενῶν παραστησάμενος ἐφ᾽ ἑκάστῳ τῶν κατηγορημένων μάρτυρας, καταπαύει τὸν λόγον. Ἀνίσταται δὲ Νικόλαος ὑπὲρ Ἀρχελάου, ‘καὶ τὸν μὲν ἐν τῷ ἱερῷ φόνον ἀναγκαῖον ἀπέφαινε, πολεμίους γὰρ γεγονέναι τοὺς ἀνῃρημένους, οὐ τῆς βασιλείας μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῦ δικάζοντος αὐτὸν Καίσαρος· τῶν δὲ ἄλλων ἐγκλημάτων συμβούλους ἀπεδείκνυεν αὐτοὺς τοὺς κατηγόρους γεγονέναι. Τήν γε μὴν ἐπιδιαθήκην ἠξίου διὰ τοῦτο μάλιστα εἶναι κυρίαν, ὅτι βεβαιωτὴν ἐν αὐτῇ Καίσαρα καθίστατο τοῦ διαδόχου. Ὁ γὰρ σωφρονῶν, ὥστε τῷ δεσπότῃ τῶν ὅλων παραχωρεῖν τῆς ἐξουσίας, οὐδέ που περὶ κληρονόμου κρίσιν ἐσφάλλετο· σωφρονῶν δὲ ᾕρειτο καὶ τὸν καθιστάμενον, ὁ γινώσκων τὸν καθιστάντα.᾽

7. Διεξελθόντος δὲ πάντα καὶ Νικολάου, παρελθὼν ὁ Ἀρχέλαος, προπίπτει τῶν Καίσαρος γονάτων ἡσυχῇ. Καὶ ἐκεῖνος αὐτὸν μάλα φιλοφρόνως

ἀναστήσας, ἐνέφηνε μὲν, ὡς ἄξιος εἴη τῆς πατρῴας διαδοχῆς, οὐ μὴν τι βέβαιον ἀπεφήνατο. Διαλύσας δὲ τοὺς συνέδρους ἐκείνης τῆς ἡμέρας, καθ' ἑαυτὸν περὶ ὧν διήκουσεν ἐσκέπτετο, εἴτε χρὴ τῶν ἐν ταῖς διαθήκαις καταστῆσαί τινα διάδοχον, εἴτε καὶ πάσῃ τῇ γενεᾷ διανεῖμαι τὴν ἀρχήν· ἐδόκει γὰρ ἐπικουρίας χρῄζειν τὸ πλῆθος τῶν προσώπων.

CAP. III. 1. Πρὶν δὲ ὁρίσαι τι περὶ τούτων Καί-
σαρα, τελευτᾷ μὲν ἡ Ἀρχελάου μήτηρ Μαλθακὴ νο-
σήσασα. Παρὰ Οὐάρου δ' ἐκομίσθησαν ἐκ Συρίας
ἐπιστολαὶ περὶ τῆς Ἰουδαίων ἀποστάσεως, ἣν προ-
ειδόμενος Οὔαρος — ἀνέβη γὰρ δὴ μετὰ τὸν Ἀρ-
χελάου πλοῦν εἰς Ἱεροσόλυμα τοὺς παρακινοῦντας
καθέξων, ἐπειδὴ πρόδηλον ἦν τὸ ἔθνος οὐκ ἠρεμή-
σον — ἕν τι τῶν τριῶν ἀπὸ Συρίας ταγμάτων, ὅπερ
ἧκεν ἄγων, ἐν τῇ πόλει καταλείπει, καὶ αὐτὸς μὲν 152
ὑπέστρεψεν εἰς Ἀντιόχειαν. Ἐπελθὼν δὲ Σαβῖνος
ἀφορμὴν αὐτοῖς παρέσχε νεωτεροποιΐας· τούς τε γὰρ
φρουροὺς παραδιδόναι τὰς ἄκρας ἐβιάζετο, καὶ πι-
κρῶς τὰ βασίλεια χρήματα διηρεύνα, πεποιθὼς οὐ
μόνον τοῖς ὑπὸ Οὐάρου καταλειφθεῖσι στρατιώταις,
ἀλλὰ καὶ πλήθει δούλων ἰδίων, οὓς ἅπαντας ὁπλί-
σας, ὑπηρέταις ἐχρῆτο τῆς πλεονεξίας. Ἐνστάσης
δὲ Πεντηκοστῆς — οὕτω καλοῦσι τινὰ ἑορτὴν Ἰου-
δαῖοι παρ' ἑπτὰ γινομένην ἑβδομάδας, κατὰ τὸν
ἀριθμὸν τῶν ἡμερῶν προσηγορίαν ἔχουσαν — οὐχ
ἡ συνήθης θρησκεία συνήγαγε τὸν δῆμον, ἀλλὰ
ἀγανάκτησις. Συνέδραμε γοῦν πλῆθος ἄπειρον ἔκ
τε τῆς Γαλιλαίας καὶ Ἰδουμαίας, Ἱεριχοῦντός τε
καὶ τῆς ὑπὲρ Ἰορδάνην Περαίας. Ὑπερεῖχε δὲ πλή-
θει τε καὶ προθυμίαις ἀνδρῶν ὁ γνήσιος ἐξ αὐτῆς
Ἰουδαίας λαός. Διανείμαντες δὲ σφᾶς ἑαυτοὺς εἰς
τρία μέρη, τριχῇ στρατοπεδεύονται, πρός τε τῷ
βορείῳ τοῦ ἱεροῦ κλίματι, καὶ πρὸς τῷ μεσημβρι-
νῷ κατὰ τὸν Ἱππόδρομον, ἡ δὲ τρίτη μοῖρα πρὸς

τοῖς βασιλείοις κατὰ δύσιν. Περικαθεζόμενοι δὲ πάντοθεν τοὺς Ῥωμαίους ἐπολιόρκουν.

2. Ὁ δὲ Σαβῖνος πρός τε τὸ πλῆθος αὐτῶν ὑποδείσας καὶ τὰ φρονήματα, συνεχεῖς μὲν ἀγγέλους ἔπεμπε παρὰ Οὔαρον, ἐπαμύνειν ἐν τάχει δεόμενος, ὡς εἰ βραδύνοι, κατακοπησομένου τοῦ τάγματος. Αὐτὸς δὲ ἐπὶ τὸν ὑψηλότατον τοῦ φρουρίου πύργον ἀναβὰς, ὃς ἐκαλεῖτο Φασάηλος, ἐπώνυμον ἔχων ἀδελφὸν Ἡρώδου διαφθαρέντα ὑπὸ Πάρθων, ἐντεῦθεν κατέσειε τοῖς ἐν τῷ τάγματι στρατιώταις, ἐπιχειρεῖν τοῖς πολεμίοις· δι' ἔκπληξιν γὰρ οὐδὲ εἰς τοὺς σφετέρους καταβαίνειν ἐθάῤῥει. Παραπεισθέντες δὲ οἱ στρατιῶται προπηδῶσιν εἰς τὸ ἱερὸν, καὶ μάχην καρτερὰν τοῖς Ἰουδαίοις συνάπτουσιν, ἐν ᾗ, μέχρι μὲν οὐδεὶς καθύπερθεν ἐπήμυνε, περιῆσαν ἐμπειρίᾳ πολέμου τῶν ἀπείρων. Ἐπεὶ δὲ πολλοὶ Ἰουδαίων ἀναβάντες ἐπὶ τὰς στοὰς, κατὰ κεφαλῆς αὐτῶν ἠφίεσαν τὰ βέλη, συνετρίβοντο πολλοὶ, καὶ οὔτε τοὺς ἄνωθεν βάλλοντας ἀμύνασθαι ῥᾴδιον ἦν, οὔτε τοὺς συστάδην μαχομένους ὑπομένειν.

3. Καταπονούμενοι δὲ πρὸς ἀμφοτέρων ὑπεμπιπρᾶσι τὰς στοὰς, ἔργα θαυμάσια μεγέθους τε καὶ πολυτελείας ἕνεκεν. Οἱ δὲ ἐπ' αὐτῶν ὑπὸ τῆς φλογὸς ἐξαίφνης περισχεθέντες, πολλοὶ μὲν ἐν αὐτῇ διεφθείροντο, πολλοὶ δὲ ὑπὸ τῶν πολεμίων, πηδῶντες εἰς αὐτοὺς, τινὲς δ' εἰς τὸ ὀπίσω κατὰ τοῦ τείχους κατεκρημνίζοντο, ἔνιοι δ' ὑπ' ἀμηχανίας τοῖς ἰδίοις ξίφεσι τὸ πῦρ ἔφθανον. Ὅσοι δὲ καθερπύσαντες ἀπὸ τῶν τειχῶν ἧξαν εἰς τοὺς Ῥωμαίους, εὐμεταχείριστοι διὰ τὴν ἔκπληξιν ἦσαν, μέχρι, τῶν μὲν ἀπολωλότων, τῶν δ' ὑπὸ τοῦ δέους σκεδασθέντων, ἐρήμῳ τῷ τοῦ θεοῦ θησαυρῷ προςπεσόντες οἱ στρατιῶται περὶ τετρακόσια τάλαντα διήρπασαν· ὧν ὅσα μὴ διεκλάπη, Σαβῖνος ἤθροισεν.

153 4. Ἰουδαίους δὴ ἥ τε τῶν ἔργων καὶ ἡ τῶν
ἀνδρῶν φθορὰ πολὺ πλείους καὶ μαχιμωτέρους ἐπι-

συνέστησε Ῥωμαίοις. Καὶ περισχόντες τὰ βασίλεια ἅπαντας ἠπείλουν διαφθείρειν, εἰ μὴ θᾶττον ἀπίοιεν· ὑπισχνοῦντο γὰρ ἄδειαν τῷ Σαβίνῳ, βουλομένῳ μετὰ τοῦ τάγματος ἐξιέναι. Συνελάμβανον δὲ αὐτοῖς οἱ πλεῖστοι τῶν βασιλικῶν αὐτομολήσαντες. Τὸ μέντοι πολεμικώτατον μέρος Σεβαστηνοὶ τρισχίλιοι, Ῥοῦφός τε καὶ Γρᾶτος ἐπὶ τούτοις, ὁ μὲν τοὺς πεζοὺς τῶν βασιλικῶν ἔχων ὑφ' ἑαυτὸν, Ῥοῦφος δὲ τοὺς ἱππεῖς, ὧν ἑκάτερος καὶ χωρὶς ὑπηκόου δυνάμεως δι' ἀλκὴν καὶ σύνεσιν, ἡ πολέμου ῥοπὴ, ἄξιος ἦν, προσέθεντο Ῥωμαίοις. Ἰουδαῖοι μὲν οὖν ἐνέκειντο τῇ πολιορκίᾳ, τῶν τειχέων ἅμα πειρώμενοι τοῦ φρουρίου, καὶ τοῖς περὶ τὸν Σαβῖνον ἐμβοῶντες ἀπιέναι, μηδ' ἐμποδὼν αὐτοῖς γίνεσθαι, διὰ χρόνου πολλοῦ κομιζομένοις τὴν πάτριον αὐτονομίαν. Σαβίνῳ δὲ ἀγαπητὸν μὲν ἦν ὑπεξελθεῖν, ἠπίστει δὲ ταῖς ὑποσχέσεσι, καὶ τὸ πρᾶον αὐτῶν δέλεαρ εἰς ἐνέδραν ὑπώπτευεν, ἅμα δὲ καὶ τὴν ἐξ Οὐάρου βοήθειαν ἐλπίζων, διέφερε τὴν πολιορκίαν.

CAP. IV. 1. Ἐν δὲ τούτῳ καὶ τὰ κατὰ τὴν χώραν πολλαχόθεν ἐταράσσετο, καὶ συχνοὺς βασιλειᾶν ὁ καιρὸς ἀνέπειθε. Κατὰ μέν γε τὴν Ἰδουμαίαν δισχίλιοι τῶν ὑφ' Ἡρώδου πάλαι στρατευσαμένων συστάντες ἔνοπλοι, διεμάχοντο τοῖς βασιλικοῖς, οἷς Ἀχίαβος, ὁ ἀνεψιὸς βασιλέως, ἀπὸ τῶν ἐρυμνοτάτων χωρίων ἐπολέμει, ἀποφεύγων τὴν ἐν τοῖς πεδίοις συμπλοκήν. Ἐν δὲ Σεπφώρει τῆς Γαλιλαίας Ἰούδας υἱὸς Ἐζεκίου, τοῦ κατατρέχοντός ποτε τὴν χώραν ἀρχιληστοῦ, καὶ χειρωθέντος ὑφ' Ἡρώδου τοῦ βασιλέως, συστήσας πλῆθος οὐκ ὀλίγον ἀναῤῥήγνυσι τὰς βασιλικὰς ὁπλοθήκας, καὶ τοὺς περὶ αὐτὸν ὁπλίσας τοῖς τὴν δυναστείαν ζηλοῦσιν ἐπεχείρει.

2. Κατὰ δὲ τὴν Περαίαν Σίμων τις τῶν βα-

σιλικῶν δούλων εὐμορφίᾳ σώματος καὶ μεγέθει πεποιθὼς περιτίθησι μὲν ἑαυτῷ καὶ διάδημα, περιϊὼν δὲ μεθ' ὧν ἤθροισε λῃστῶν τά τε ἐν Ἱεριχοῖ βασίλεια καταπίμπρησι, καὶ πολλὰς ἑτέρας τῶν πολυτελῶν ἐπαύλεις, ἁρπαγὰς ῥᾳδίους ἐκ τοῦ πυρὸς ποριζόμενος ἑαυτῷ. Καὶ ἂν ἔφθη πᾶσαν οἴκησιν εὐπρεπῆ καταφλέξας, εἰ μὴ Γρᾶτος, ὁ τῶν βασιλικῶν πεζῶν ἡγεμὼν, τούς τε Τραχωνίτας τοξότας καὶ τὸ
154 μαχιμώτατον τῶν Σεβαστηνῶν ἀναλαβὼν, ὑπηντίασε τὸν ἄνδρα. Τῶν μὲν οὖν πεζῶν συχνοὶ διεφθάρησαν ἐν τῇ μάχῃ, τὸν Σίμωνα δὲ αὐτὸν, ἀναφεύγοντα δι' ὀρθίου φάραγγος, ὁ Γρᾶτος ὑποτέμνεται, καὶ φεύγοντος ἐκ πλαγίου τὸν αὐχένα πλήξας ἀπέῤῥαξε. Κατεφλέγη δὲ καὶ τὰ πλησίον Ἰορδάνου βασίλεια κατὰ Βηθαράμαθον, στασιασάντων ἑτέρων τινῶν ἐκ τῆς Περαίας.

3. Τότε καὶ ποιμήν τις ἀντιποιήσασθαι βασιλείας ἐτόλμησεν, Ἀθρογγαῖος ἐκαλεῖτο. Προεξένει δὲ αὐτῷ τὴν ἐλπίδα σώματος ἰσχὺς, καὶ ψυχὴ θανάτου καταφρονοῦσα, πρὸς δὲ τούτοις ἀδελφοὶ τέσσαρες ὅμοιοι. Τούτων ἑκάστῳ λόχον ὑποζεύξας ἔνοπλον, ὥςπερ στρατηγοῖς ἐχρῆτο καὶ σατράπαις ἐπὶ τὰς καταδρομάς· αὐτὸς δὲ, καθάπερ βασιλεὺς, τῶν σεμνοτέρων ἥπτετο πραγμάτων. Τότε μὲν οὖν ἑαυτῷ περιτίθησι διάδημα, διέμεινε δὲ ὕστερον οὐκ ὀλίγῳ χρόνῳ τὴν χώραν κατατρέχων σὺν τοῖς ἀδελφοῖς· καὶ τὸ κτείνειν αὐτοῖς προηγούμενον μὲν ἦν Ῥωμαίους τε καὶ τοὺς βασιλικοὺς, διέφευγε δ' οὔτε Ἰουδαίων εἴ τις εἰς χεῖρας ἔλθοι φέρων κέρδος. Ἐτόλμησε δέ ποτε Ῥωμαίων λόχον ἄθρουν περισχεῖν κατ' Ἐμμαοῦντα· σῖτα δὲ οὗτοι καὶ ὅπλα διεκόμιζον τῷ τάγματι. Τὸν μὲν οὖν ἑκατοντάρχην αὐτῶν Ἄρειον, καὶ τεσσαράκοντα τοὺς γενναιοτάτους κατηκόντισαν. Οἱ δὲ λοιποὶ κινδυνεύοντες τὸ αὐτὸ παθεῖν, Γράτου σὺν τοῖς Σεβαστηνοῖς ἐπιβοηθήσαντος, ἐξέφυγον. Πολλὰ τοιαῦτα τοὺς ἐπιχωρίους καὶ

τοὺς ἀλλοφύλους παρ' ὅλον τὸν πόλεμον ἐργασάμε-
νοι, μετὰ χρόνον οἱ μὲν τρεῖς ἐχειρώθησαν, ὑπ'
Ἀρχελάου μὲν ὁ πρεσβύτατος, οἱ δὲ ἑξῆς δύο, Γρά-
τῳ καὶ Πτολεμαίῳ περιπεσόντες· ὁ δὲ τέταρτος Ἀρ-
χελάῳ προσεχώρησε κατὰ δεξιάν. Τοῦτο μὲν δὴ τὸ
τέλος αὐτοὺς ὕστερον ἐξεδέχετο· τότε δὲ λῃστρικοῦ
πολέμου τὴν Ἰουδαίαν πᾶσαν ἐνέπλησαν.

CAP. V. 1. Οὐάρῳ δὲ δεξαμένῳ τὰ παρὰ Σαβίνου
καὶ τῶν ἡγεμόνων γράμματα, δεῖσαί τε περὶ τοῦ
τάγματος ὅλου παρέστη, καὶ σπεύδειν ἐπὶ τὴν βοή-
θειαν. Ἀναλαβὼν δὲ τὰ λοιπὰ δύο τάγματα, καὶ
τὰς σὺν αὐτοῖς τέσσαρας ἴλας ἱππέων, ἐπὶ Πτολε-
μαΐδος ᾔει, προστάξας ἐκεῖ καὶ τοὺς παρὰ τῶν βα-
σιλέων καὶ δυναστῶν ἐπικούρους συνελθεῖν. Προσ-
έλαβε δὲ καὶ παρὰ Βηρυτίων, διερχόμενος τὴν 155
πόλιν, χιλίους καὶ πεντακοσίους ὁπλίτας. Ἐπεὶ δὲ
εἰς τὴν Πτολεμαΐδα, τό τε ἄλλο συμμαχικὸν πλῆθος
αὐτῷ παρῆν, καὶ κατὰ τὸ πρὸς Ἡρώδην ἔχθος Ἀρέ-
τας ὁ Ἄραψ οὐκ ὀλίγην ἄγων δύναμιν ἱππικήν τε
καὶ πεζικὴν, μέρος τῆς στρατιᾶς εὐθέως ἔπεμπεν
εἰς τὴν Γαλιλαίαν γειτνιῶσαν τῇ Πτολεμαΐδι, καὶ
Γάϊον ἡγεμόνα τῶν αὐτοῦ φίλων· ὃς τούς τε ὑπαν-
τιάσαντας τρέπεται, καὶ Σέπφωριν πόλιν ἑλὼν, αὐ-
τὴν μὲν ἐμπίπρησι, τοὺς δὲ ἐνοικοῦντας ἀνδραποδί-
ζεται. Μετὰ δὲ τῆς ὅλης δυνάμεως αὐτὸς Οὔαρος
εἰς Σαμάρειαν ἐλάσας, τῆς μὲν πόλεως ἀπέσχετο,
μηδὲν ἐν τοῖς τῶν ἄλλων θορύβοις παρακεκινηκυῖαν
εὑρών· αὐλίζεται δὲ περί τινα κώμην, Ἀροῦν κα-
λουμένην. Κτῆμα δὲ ἦν Πτολεμαίου, καὶ διὰ τοῦτο
ὑπὸ τῶν Ἀράβων διηρπάσθη, μηνιώντων καὶ τοῖς
Ἡρώδου φίλοις. Ἔνθεν εἰς Σαμφὼ πρόεισι κώμην
ἑτέραν ἐρυμνὴν, ἣν ὁμοίως διήρπασαν, τάς τε προσ-
όδους πάσας, ὅσαις ἐπετύγχανον. Πυρὸς δὲ καὶ
φόνου ἐπεπλήρωτο πάντα, καὶ πρὸς τὰς ἁρπαγὰς
τῶν Ἀράβων οὐδὲν ἀντεῖχε. Κατεφλέγη δὲ καὶ Ἐμ-

μαοῦς, φυγόντων τῶν οἰκητόρων, Οὐάρου δὲ ὀργὴν τῶν περὶ Ἄρειον ἀποσφαγέντων κελεύσαντος.

2. Ἔνθεν εἰς Ἱεροσόλυμα προελθὼν, ὀφθείς τε μόνον μετὰ τῆς δυνάμεως, τὰ στρατόπεδα τῶν Ἰουδαίων διεσκέδασε. Καὶ οἱ μὲν ᾤχοντο φυγόντες ἀνὰ τὴν χώραν· δεξάμενοι δὲ αὐτὸν οἱ κατὰ τὴν πόλιν, ἀπεσκευάζοντο τὰς αἰτίας τῆς ἀποστάσεως, αὐτοὶ μὲν μηδὲν παρακινῆσαι λέγοντες, διὰ δὲ τὴν ἑορτὴν ἀναγκαίως δεξάμενοι τὸ πλῆθος, συμπολιορκηθῆναι μᾶλλον Ῥωμαίοις, ἢ συμπολεμῆσαι τοῖς ἀποστᾶσι. Προϋπηντήκεσαν δὲ αὐτῷ Ἰώσηπός τε ὁ ἀνεψιὸς Ἀρχελάου, καὶ σὺν Ῥούφῳ Γρᾶτος, ἄγοντες ἅμα τῷ βασιλικῷ στρατῷ καὶ τοὺς Σεβαστηνοὺς, οἵ τε ἀπὸ τοῦ Ῥωμαϊκοῦ τάγματος τὸν συνήθη τρόπον κεκοσμημένοι. Σαβῖνος γὰρ οὐδ' εἰς ὄψιν ὑπομείνας ἐλθεῖν Οὐάρῳ, προεξῆλθε τῆς πόλεως ἐπὶ θάλασσαν. Οὔαρος δὲ μοῖραν τῆς στρατιᾶς ἐπὶ τοὺς αἰτίους τοῦ κινήματος ἔπεμπε περὶ τὴν χώραν· καὶ πολλῶν ἀγομένων, τοὺς μὲν ἧττον θορυβώδεις φανέντας ἐφρούρει, τοὺς δ' αἰτιωτάτους ἀνεσταύρωσε περὶ δισχιλίους.

3. Ἠγγέλη δὲ αὐτῷ περὶ τὴν Ἰδουμαίαν ἔτι συμμένειν μυρίους ὁπλίτας. Ὁ δὲ τοὺς μὲν Ἄραβας εὑρὼν οὐ συμμάχων ἦθος ἔχοντας, ἀλλ' ἰδίῳ πάθει στρατευομένους, καὶ πέρα τῆς αὐτοῦ προαιρέσεως τὴν χώραν κακοῦντας ἔχθει τῷ πρὸς Ἡρώδην ἀποπέμπεται. Μετὰ δὲ τῶν ἰδίων ταγμάτων ἐπὶ τοὺς ἀφεστῶτας ἠπείγετο. Καὶ ἐκεῖνοι πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν, Ἀχιάβου συμβουλεύσαντος, σφᾶς αὐτοὺς παρέδοσαν. Οὔαρος δὲ τῷ πλήθει μὲν ἠφίει τὰς αἰτίας, τοὺς δὲ ἡγεμόνας ἐξετασθησομένους ἔπεμ-
156 ψεν ἐπὶ Καίσαρα. Καῖσαρ δὲ τοῖς μὲν ἄλλοις συνέγνω, τινὰς δὲ τῶν τοῦ βασιλέως συγγενῶν — ἦσαν γὰρ σὺν αὐτοῖς ἔνιοι προσήκοντες Ἡρώδῃ κατὰ γένος — κολάσαι προσέταξεν, ὅτι κατ' οἰκείου βασιλέως ἐστρατεύσαντο. Οὔαρος μὲν οὖν τούτων τὸν

τρόπον καταστησάμενος τὰ ἐν Ἱεροσολύμοις, καὶ φρουρὰν καταλιπὼν τὸ καὶ πρότερον τάγμα, εἰς Ἀντιόχειαν ἐπάνεισιν.

CAP. VI. 1. Ἀρχελάῳ δ' ἐπὶ Ῥώμης πάλιν ἄλλη συνίστατο δίκη πρὸς Ἰουδαίους, οἳ πρὸ τῆς ἀποστάσεως, ἐπιτρέψαντος Οὐάρου, πρέσβεις ἐξεληλύθεισαν περὶ τῆς τοῦ ἔθνους αὐτονομίας· ἦσαν δὲ πεντήκοντα μὲν οἱ παρόντες, συμπαρίσταντο δὲ αὐτοῖς τῶν ἐπὶ Ῥώμης Ἰουδαίων ὑπὲρ ὀκτακισχιλίους. Ἀθροίσαντος δὲ Καίσαρος συνέδριον τῶν ἐν τέλει Ῥωμαίων καὶ τῶν φίλων ἐν τῷ κατὰ τὸ Παλάτιον Ἀπόλλωνος ἱερῷ, κτίσμα δ' ἦν ἴδιον αὐτοῦ θαυμασίῳ πολυτελείᾳ κεκοσμημένον, μετὰ μὲν τῶν πρεσβευτῶν τὸ Ἰουδαϊκὸν πλῆθος ἔστη, σὺν δὲ τοῖς φίλοις ἄντικρυς Ἀρχέλαος. Τῶν δὲ τούτου συγγενῶν οἱ φίλοι παρ' οὐδετέροις, συμπαρίστασθαι μὲν γὰρ Ἀρχελάῳ διὰ μῖσος καὶ φθόνον οὐχ ὑπομένοντες, ὀφθῆναι δὲ μετὰ τῶν κατηγόρων ὑπὸ Καίσαρος αἰδούμενοι. Ἐπὶ τούτοις παρῆν καὶ Φίλιππος ὁ ἀδελφὸς Ἀρχελάου, προπεμφθεὶς κατ' εὔνοιαν ὑπὸ Οὐάρου, δυοῖν ἕνεκα, Ἀρχελάῳ τε συναγωνίσασθαι, καὶ, ἐὰν διανέμῃ τὸν Ἡρώδου Καῖσαρ οἶκον πᾶσι τοῖς ἐκγόνοις, κλήρου τινὸς ἀξιωθῆναι.

2. Ἐπιτραπὲν δὲ λέγειν τοῖς κατηγόροις τὰς Ἡρώδου παρανομίας πρῶτον διεξῄεσαν, 'οὐ βασιλέα, λέγοντες, ἀλλὰ τῶν πώποτε τυραννησάντων ὠμότατον ἐνηνοχέναι τύραννον. Πλείστων γοῦν ἀνῃρημένων ὑπ' αὐτοῦ, τοιαῦτα πεπονθέναι τοὺς καταλειφθέντας, ὥστε μακαρίζεσθαι τοὺς ἀπολωλότας· βεβασανικέναι γὰρ οὐ μόνον τὰ σώματα τῶν ὑποτεταγμένων, ἀλλὰ καὶ τὰς πόλεις· τὰς μὲν γὰρ ἰδίας λελωβῆσθαι, τὰς δὲ τῶν ἀλλοφύλων κεκοσμηκέναι, καὶ τὸ τῆς Ἰουδαίας αἷμα κεχαρίσθαι τοῖς ἔξωθεν δήμοις. Ἀντὶ δὲ τῆς παλαιᾶς εὐδαιμονίας καὶ τῶν πατρίων νόμων πενίας τὸ ἔθνος καὶ παρα-

νομίας ἐσχάτης πεπληρωκέναι· καθόλου τε πλείους ὑπομεμενηκέναι τὰς ἐξ Ἡρώδου συμφορὰς ἐν ὀλίγοις ἔτεσιν Ἰουδαίους, ὧν ἐν ἅπαντι τῷ χρόνῳ μετὰ τὴν ἐκ Βαβυλῶνος ἀναχώρησιν ἔπαθον οἱ πρόγονοι Ξέρξου βασιλεύοντος ἐπαναστραφέντες. Εἰς τοῦτο μέντοι ταπεινότητος ἐκ τοῦ δυςτυχεῖν ἔθους προελ-
157 θεῖν, ὥςτε ὑπομεῖναι τῆς πικρᾶς δουλείας καὶ διαδοχὴν αὐθαίρετον. Ἀρχέλαον γοῦν, τὸν τηλικούτου τυράννου παῖδα, μετὰ τὴν τοῦ πατρὸς τελευτὴν βασιλέα τε προςειπεῖν ἑτοίμως, καὶ συμπενθῆσαι τὸν Ἡρώδου θάνατον αὐτῷ, καὶ συνεύξασθαι περὶ τῆς διαδοχῆς· τὸν δὲ, ὥςπερ ἀγωνιάσαντα, μὴ νόθος υἱὸς δόξειεν Ἡρώδου, προοιμιάσασθαι τὴν βασιλείαν τριςχιλίων πολιτῶν φόνῳ, καὶ τοσαῦτα μὲν παρεστακέναι θύματα περὶ τῆς ἀρχῆς τῷ θεῷ, τοσούτοις δὲ ἐμπεπληκέναι νεκροῖς τὸ ἱερὸν ἐν ἑορτῇ. Τοὺς μέντοι περιλειφθέντας ἐκ τῶν τοσούτων κακῶν εἰκότως ἐπεστράφθαι ἤδη ποτὲ πρὸς τὰς συμφορὰς, καὶ πολέμου νόμῳ ἐθέλειν τὰς πληγὰς κατὰ πρόςωπον δέχεσθαι, δεῖσθαι δὲ Ῥωμαίων ἐλεῆσαί τε τὰ τῆς Ἰουδαίας λείψανα, καὶ μὴ τὸ περισσὸν αὐτῆς ἀποῤῥίψαι τοῖς ὠμῶς σπαράσσουσι, συνάψαντας δὲ τῇ Συρίᾳ τὴν χώραν αὐτῶν διοικεῖν ὑπὸ ἰδίοις ἡγεμόσιν· ἐπιδείξεσθαι γὰρ, ὡς οἱ νῦν στασιώδεις διαβαλλόμενοι καὶ πολεμικοὶ, φέρειν οἴδασι μετρίους ἡγεμόνας.' Ἰουδαῖοι μὲν οὖν ἐκ τῆς κατηγορίας κατέληξαν εἰς τὴν τοιαύτην ἀξίωσιν. Ἀναστὰς δὲ Νικόλαος ἀπεδύσατο μὲν τὰς εἰς τοὺς βασιλεῖς αἰτίας, κατηγόρει δὲ τοῦ ἔθνους τό τε δύςαρκτον καὶ δυςπειθὲς φύσει πρὸς τοὺς βασιλέας· συνδιέβαλλε δὲ καὶ τοὺς Ἀρχελάου συγγενεῖς, ὅσοι πρὸς τοὺς κατηγόρους ἀφειστήκεισαν.

3. Τότε μὲν οὖν Καῖσαρ ἀκούσας ἑκατέρων διέλυσε τὸ συνέδριον· μετὰ δὲ ὀλίγας ἡμέρας, τὸ μὲν ἥμισυ μέρος τῆς βασιλείας Ἀρχελάῳ δίδωσιν, ἐθνάρχην προςειπὼν, ὑποσχόμενός τε καὶ βασιλέα ποι-

ήσειν, ἐὰν ἄξιον ἑαυτὸν παράσχῃ, τὸ δὲ λοιπὸν ἥμισυ διελὼν εἰς δύο τετραρχίας, δυσὶν ἑτέροις παισὶν Ἡρώδου δίδωσι, τὴν μὲν Φιλίππῳ, τὴν δὲ Ἀντίπᾳ τῷ πρὸς Ἀρχέλαον ἀμφισβητοῦντι περὶ τῆς βασιλείας. Ἐγένετο δὲ ὑπὸ τούτῳ μὲν ἥ τε Περαία καὶ Γαλιλαία, πρόσοδος διακοσίων ταλάντων· Βαταναία τε καὶ Τράχων, Αὐρανίτις τε καὶ μέρη τινὰ τοῦ Ζήνωνος οἴκου τὰ περὶ Ἰάμνιαν, πρόσοδον ἔχοντα ταλάντων ἑκατὸν, ὑπὸ Φιλίππῳ ἐτέτακτο. Τῆς Ἀρχελάου δ᾽ ἐθναρχίας Ἰδουμαία τε καὶ Ἰουδαία πᾶσα, καὶ Σαμαρεῖτις ἦν, κεκουφισμένη τετάρτῳ μέρει τῶν φόρων εἰς τιμὴν τοῦ μὴ μετὰ τῶν ἄλλων ἀποστῆναι. Πόλεις δὲ ὑπηκόους παρέλαβε Στράτωνός τε πύργον καὶ Σεβαστὴν καὶ Ἰόππην καὶ Ἱεροσόλυμα· τὰς γὰρ Ἑλληνίδας Γάζαν καὶ Γάδαρα καὶ Ἵππον, ἀποτεμνόμενος τῆς βασιλείας, προσέθηκε Συρίᾳ. Πρόσοδος δὲ ἦν τῆς Ἀρχελάῳ δο- 158 θείσης χώρας τετρακοσίων ταλάντων. Σαλώμη δὲ, πρὸς οἷς ὁ βασιλεὺς ἐν ταῖς διαθήκαις κατέλιπεν, Ἰαμνίας τε καὶ Ἀζώτου καὶ Φασαηλίδος ἀποδείκνυται δεσπότις· χαρίζεται δὲ αὐτῇ Καῖσαρ καὶ τὰ ἐν Ἀσκάλωνι βασίλεια. Συνήγετο δὲ ἐκ πάντων ἑξήκοντα προσόδου τάλαντα· τὸν δὲ οἶκον αὐτῆς ὑπὸ τὴν Ἀρχελάου ἐθναρχίαν ἔταξε. Τῆς δὲ ἄλλης Ἡρώδου γενεᾶς ἕκαστος τὸ καταλειφθὲν ἐν ταῖς διαθήκαις ἐκομίζετο. Δυσὶ δὲ αὐτοῦ θυγατράσι παρθένοις Καῖσαρ ἔξωθεν χαρίζεται πεντήκοντα μυριάδας ἀργυρίου, καὶ συνῴκισεν αὐτὰς τοῖς Φερώρα παισί. Μετὰ δὲ τὸν οἶκον ἐπιδιένειμεν αὐτοῖς τὴν αὐτῷ καταλειφθεῖσαν ὑφ᾽ Ἡρώδου δωρεὰν, οὖσαν χιλίων ταλάντων, εὐτελῆ τινα τῶν κειμηλίων εἰς τὴν τοῦ κατοιχομένου τιμὴν ἐξελόμενος.

CAP. VII. 1. Καὶ ἐν τούτῳ νεανίας τις, Ἰουδαῖος μὲν τὸ γένος, τραφεὶς δ᾽ ἐν Σιδῶνι παρά τινι τῶν Ῥωμαϊκῶν ἀπελευθέρων, δι᾽ ὁμοιότητα μορ-

φῆς ψευδόμενος ἑαυτὸν Ἀλέξανδρον τὸν ἀναιρεθέντα ὑφ' Ἡρώδου, κατ' ἐλπίδα τοῦ λήσειν, ἧκεν εἰς Ῥώμην. Συνεργὸς δὲ ἦν τὶς ὁμόφυλος αὐτῷ πάντα τὰ κατὰ τὴν βασιλείαν ἐπιστάμενος, ὑφ' οὗ διδαχθεὶς ἔλεγεν, ὡς οἱ πεμφθέντες ἐπὶ τὴν ἀναίρεσιν αὐτοῦ τε καὶ Ἀριστοβούλου, δι' οἶκτον ἐκκλέψειαν αὐτοὺς ὁμοίων ὑποβολῇ σωμάτων. Τούτοις γροῦν τοὺς ἐν Κρήτῃ Ἰουδαίους ἐξαπατήσας, καὶ λαμπρῶς ἐφοδιασθεὶς, διέπλευσεν εἰς Μῆλον. Ἔνθα συναγείρας πολλῷ πλέον δι' ὑπερβολὴν ἀξιοπιστίας, ἀνέπεισε καὶ τοὺς ἰδιοξένους εἰς Ῥώμην αὐτῷ συνεκπλεῦσαι. Καταχθεὶς δὲ εἰς Δικαιαρχίαν, δῶρά τε παμπληθῆ παρὰ τῶν ἐκεῖ Ἰουδαίων λαμβάνει, καὶ καθάπερ βασιλεὺς ὑπὸ τῶν πατρῴων προεπέμφθη φίλων. Προεληλύθει δ' εἰς τοσοῦτον πίστεως τὸ τῆς μορφῆς ὅμοιον, ὥςτε τοὺς ἑωρακότας Ἀλέξανδρον, καὶ σαφῶς ἐπισταμένους, διόμνυσθαι τοῦτον εἶναι. Τό γε μὴν Ἰουδαϊκὸν ἐν Ῥώμῃ πᾶν ἐξεχύθη πρὸς τὴν θέαν αὐτοῦ, καὶ πλῆθος ἄπειρον ἦν περὶ τοὺς στενωποὺς, δι' ὧν κομίζοιτο. Καὶ γὰρ δὴ προῆλθον εἰς τοσοῦτον φρενοβλαβείας οἱ Μήλιοι, ὥςτε φορείῳ τε αὐτὸν κομίζειν, καὶ θεραπείαν βασιλικὴν ἰδίοις παρασχεῖν ἀναλώμασι.

2. Καῖσαρ δὲ γινώσκων ἀκριβῶς τοὺς Ἀλεξάνδρου χαρακτῆρας, κατηγόρητο γὰρ ὑφ' Ἡρώδου παρ' αὐτῷ, συνεώρα μὲν καὶ πρὶν ἰδεῖν τὸν ἄνθρωπον τὴν τῆς ὁμοιότητος ἀπάτην· διδοὺς δέ τι καὶ
159 πίστεως ταῖς ἱλαρωτέραις ἐλπίσι, Κέλαδόν τινα πέμπει τῶν σαφῶς ἐπισταμένων Ἀλέξανδρον, κελεύσας ἀγαγεῖν αὐτῷ τὸν νεανίσκον. Ὁ δὲ, ὡς εἶδεν, ἐτεκμήρατο μὲν τάχιστα καὶ τὰς διαφορὰς τοῦ προςώπου· τὸ δὲ ὅλον σῶμα σκληρότερόν τε καὶ δουλοφανὲς καταμαθὼν, ἐνόησε πᾶν τὸ σύνταγμα. Πάνυ δὲ αὐτὸν παρώξυνεν ἡ τόλμα τῶν ὑπ' αὐτοῦ λεγομένων· τοῖς γὰρ πυνθανομένοις περὶ Ἀριστοβούλου, σώζεσθαι μὲν καὶ ἐκεῖνον ἔλεγεν, ἀπολελεῖφθαι δ'

ἐπίτηδες ἐν Κύπρῳ τὰς ἐπιβουλὰς φυλασσόμενον· ἧττον γὰρ ἐπιχειρεῖσθαι διεζευγμένους. Ἀπολαβόμενος δὲ αὐτὸν κατ᾽ ἰδίαν, ‘μισθὸν ἔφη παρὰ Καίσαρος ἔχειν τὸ ζῆν, τοῦ μηνύσαι τὸν ἀναπείσαντά σε πλάσασθαι τηλικαῦτα.’ Καὶ ἐκεῖνος αὐτῷ δηλώσειν εἰπὼν, ἕπεται πρὸς Καίσαρα, καὶ τὸν Ἰουδαῖον ἐνδείκνυται, ‘καταχρησάμενον αὐτοῦ τῇ ὁμοιότητι πρὸς ἐργασίαν· τοσαῦτα γὰρ εἰληφέναι δῶρα καθ᾽ ἑκάστην πόλιν, ὅσα ζῶν Ἀλέξανδρος οὐκ ἔλαβε.’ Γελάσας δὲ Καῖσαρ ἐπὶ τούτοις, τὸν μὲν Ψευδαλέξανδρον δι᾽ εὐεξίαν σώματος ἐγκατέταξε τοῖς ἐρέταις, τὸν ἀναπείσαντα δὲ ἐκέλευσεν ἀναιρεθῆναι. Μηλίοις δὲ ἤρκεσεν ἐπιτίμιον τῆς ἀνοίας τὰ ἀναλώματα.

3. Παραλαβὼν δὲ τὴν ἐθναρχίαν Ἀρχέλαος, καὶ κατὰ μνήμην τῶν πάλαι διαφορῶν, οὐ μόνον Ἰουδαίοις, ἀλλὰ καὶ Σαμαρεῦσι χρησάμενος ὠμῶς, πρεσβευσαμένων ἑκατέρων κατ᾽ αὐτοῦ πρὸς Καίσαρα, ἔτει τῆς ἀρχῆς ἐννάτῳ φυγαδεύεται μὲν εἰς Βίενναν πόλιν τῆς Γαλατίας αὐτὸς, ἡ οὐσία δὲ αὐτοῦ τοῖς Καίσαρος θησαυροῖς ἐγκατατάσσεται. Πρὶν κληθῆναι δὲ αὐτὸν ὑπὸ τοῦ Καίσαρος, ὄναρ ἰδεῖν φασι τοιόνδε. Ἔδοξεν ὁρᾶν στάχυς ἐννέα, πλήρεις καὶ μεγάλους, ὑπὸ βοῶν καταβιβρωσκομένους. Μεταπεμψάμενος δὲ τοὺς μάντεις καὶ τῶν Χαλδαίων τινὰς, ἐπυνθάνετο, τί σημαίνειν δοκοῖεν. Ἄλλων δὲ ἄλλως ἐξηγουμένων, Σίμων τις Ἐσσαῖος τὸ γένος ἔφη, ‘τοὺς μὲν στάχυς, ἐνιαυτοὺς νομίζειν, τοὺς δὲ βοῦς, μεταβολὰς πραγμάτων, διὰ τὸ τὴν χώραν ἀροτριῶντας ἀλλάσσειν· ὥςτε βασιλεύσειν μὲν αὐτὸν τὸν τῶν σταχύων ἀριθμὸν, ἐν ποικίλαις δὲ πραγμάτων μεταβολαῖς γενόμενον τελευτήσειν.’ Ταῦτα ἀκούσας Ἀρχέλαος, μετὰ πέντε ἡμέρας ἐπὶ τὴν δίκην μετεκλήθη.

4. Ἄξιον δὲ μνήμης ἡγησάμην καὶ τὸ τῆς γυ- 160
ναικὸς αὐτοῦ Γλαφύρας ὄναρ, ἥπερ ἦν θυγάτηρ

μὲν Ἀρχελάου τοῦ Καππαδοκῶν βασιλέως, γυνὴ δ' Ἀλεξάνδρου γεγονυῖα τὸ πρῶτον, ὃς ἦν ἀδελφὸς μὲν Ἀρχελάου, περὶ οὗ διεξήειμεν, υἱὸς δὲ Ἡρώδου τοῦ βασιλέως, ὑφ' οὗ καὶ ἀνηρέθη, καθάπερ προδεδηλώκαμεν. Μετὰ δὲ τὸν ἐκείνου θάνατον συνῴκησεν Ἰόβᾳ τῷ βασιλεύοντι Λιβύης, οὗ τελευτήσαντος ἐπανελθοῦσαν αὐτὴν καὶ χηρεύουσαν παρὰ τῷ πατρὶ θεασάμενος ὁ ἐθνάρχης Ἀρχέλαος, ἐπὶ τοσοῦτον ἔρωτος ἦλθεν, ὥστε παραχρῆμα, τὴν συνοικοῦσαν αὐτῷ Μαριάμμην ἀποπεμψάμενος, ἐκείνην ἀγαγέσθαι. Παραγενομένη τοίνυν εἰς Ἰουδαίαν, μετ' ὀλίγον τῆς ἀφίξεως χρόνον, ἔδοξεν ἐπιστάντα τὸν Ἀλέξανδρον αὐτῇ λέγειν, "Ἀπέχρη μὲν ὁ κατὰ Λιβύην σοι γάμος, σὺ δὲ οὐκ ἀρκεσθεῖσα τούτῳ, πάλιν ἐπὶ τὴν ἐμὴν ἑστίαν ἀνακάμπτεις, τρίτον ἄνδρα, καὶ ταῦτα τὸν ἀδελφὸν, ὦ τολμηρὰ, τὸν ἐμὸν ᾑρημένη. Πλὴν οὐ περιόψομαι τὴν ὕβριν, ἀπολήψομαι δέ σε καὶ μὴ θέλουσαν." Τοῦτο διηγησαμένη τὸ ὄναρ, δύο μόγις ἡμέρας ἐβίω.

CAP. VIII. 1. Τῆς δὲ Ἀρχελάου χώρας εἰς ἐπαρχίαν περιγραφείσης, ἐπίτροπός τις ἱππικῆς παρὰ Ῥωμαίοις τάξεως Κωπώνιος πέμπεται, μέχρι τοῦ κτείνειν λαβὼν παρὰ τοῦ Καίσαρος ἐξουσίαν. Ἐπὶ τούτου τὶς ἀνὴρ Γαλιλαῖος Ἰούδας ὄνομα εἰς ἀπόστασιν ἐνῆγε τοὺς ἐπιχωρίους, κακίζων, εἰ φόρον τε Ῥωμαίοις τελεῖν ὑπομένουσι, καὶ μετὰ τὸν θεὸν οἴσουσι θνητοὺς δεσπότας. Ἦν δὲ οὗτος σοφιστὴς ἰδίας αἱρέσεως, οὐδὲν τοῖς ἄλλοις προσεοικώς.

2. Τρία γὰρ παρὰ Ἰουδαίοις εἴδη φιλοσοφεῖται, καὶ τοῦ μὲν αἱρετισταὶ Φαρισαῖοι, τοῦ δὲ Σαδδουκαῖοι, τρίτον δὲ, ὃ δὴ καὶ δοκεῖ σεμνότητα ἀσκεῖν, Ἐσσηνοὶ καλοῦνται, Ἰουδαῖοι μὲν γένος ὄν-
161 τες, φιλάλληλοι δὲ καὶ τῶν ἄλλων πλέον. Οὗτοι
τὰς μὲν ἡδονὰς ὡς κακίαν ἀποστρέφονται, τὴν δὲ

ἐγκράτειαν, καὶ τὸ μὴ τοῖς πάθεσιν ὑποπίπτειν, ἀρετὴν ὑπολαμβάνουσι. Καὶ γάμου μὲν ὑπεροψία παρ᾽ αὐτοῖς, τοὺς δ᾽ ἀλλοτρίους παῖδας ἐκλαμβάνοντες, ἁπαλοὺς ἔτι πρὸς τὰ μαθήματα, συγγενεῖς ἡγοῦνται, καὶ τοῖς ἤθεσι τοῖς ἑαυτῶν ἐντυποῦσι· τὸν μὲν γάμον, καὶ τὴν ἐξ αὐτοῦ διαδοχὴν, οὐκ ἀναιροῦντες, τὰς δὲ τῶν γυναικῶν ἀσελγείας φυλασσόμενοι, καὶ μηδεμίαν τηρεῖν πεπεισμένοι τὴν πρὸς ἕνα πίστιν.

3. Καταφρονηταὶ δὲ πλούτου, καὶ θαυμάσιον παρ᾽ αὐτοῖς τὸ κοινωνητικὸν, οὐδὲ ἔστιν εὑρεῖν κτήσει τινὰ παρ᾽ αὐτοῖς ὑπερέχοντα· νόμος γὰρ τοὺς εἰς τὴν αἵρεσιν εἰςιόντας δημεύειν τῷ τάγματι τὴν οὐσίαν, ὥςτε ἐν ἅπασι μήτε πενίας ταπεινότητα φαίνεσθαι, μηδ᾽ ὑπεροχὴν πλούτου, τῶν δὲ ἑκάστου κτημάτων ἀναμεμιγμένων μίαν ὥςπερ ἀδελφοῖς ἅπασιν οὐσίαν εἶναι. Κηλῖδα δὲ ὑπολαμβάνουσι τὸ ἔλαιον, καὶ ἐὰν ἀλιφῇ τις ἄκων, σμήχεται τὸ σῶμα· τὸ γὰρ αὐχμεῖν ἐν καλῷ τίθενται, λευχειμονεῖν τε διαπαντός. Χειροτονητοὶ δὲ οἱ τῶν κοινῶν ἐπιμεληταὶ, καὶ ἀδιαίρετοι πρὸς ἁπάντων εἰς τὰς χρείας ἕκαστοι.

4. Μία δὲ οὐκ ἔστιν αὐτῶν πόλις, ἀλλ᾽ ἐν ἑκάστῃ κατοικοῦσι πολλοί. Καὶ τοῖς ἑτέρωθεν ἥκουσιν αἱρετισταῖς ἀναπέπταται τὰ παρ᾽ αὐτοῖς ὁμοίως, ὥςπερ ἴδια, καὶ πρὸς οὓς οὐ πρότερον εἶδον εἰςίασιν ὡς συνηθεστάτους· διὸ καὶ ποιοῦνται τὰς ἀποδημίας οὐδὲν μὲν ὅλως ἐπικομιζόμενοι, διὰ δὲ τοὺς λῃστὰς ἔνοπλοι. Κηδεμὼν δὲ ἐν ἑκάστῃ πόλει τοῦ τάγματος ἐξαιρέτως τῶν ξένων ἀποδείκνυται, ταμιεύων ἐσθῆτα καὶ τὰ ἐπιτήδεια. Καταστολὴ δὲ καὶ σχῆμα σώματος ὅμοιον τοῖς μετὰ φόβου παιδαγωγουμένοις παισίν. Οὔτε δὲ ἐσθῆτας, οὔτε ὑποδήματα ἀμείβουσι, πρὶν ἢ διαῤῥαγῆναι τὸ πρότερον παντάπασιν, ἢ δαπανηθῆναι τῷ χρόνῳ. Οὐδὲν δὲ ἐν ἀλλήλοις οὔτε ἀγοράζουσιν, οὔτε πωλοῦσιν, ἀλλὰ

τῷ χρήζοντι διδοὺς ἕκαστος τὰ παρ' αὐτοῦ, τὸ παρ'
ἐκείνου χρήσιμον ἀντικομίζεται· καὶ χωρὶς δὲ τῆς
ἀντιδόσεως, ἀκώλυτος ἡ μετάληψις αὐτοῖς παρ' ὧν
ἂν ἐθελήσωσι.

5. Πρός γε μὴν τὸ θεῖον ἰδίως εὐσεβεῖς· πρὶν
γὰρ ἀνασχεῖν τὸν ἥλιον οὐδὲν φθέγγονται τῶν βε-
162 βήλων, πατρίους δέ τινας εἰς αὐτὸν εὐχὰς ὥςπερ
ἱκετεύοντες ἀνατεῖλαι. Μετὰ ταῦτα πρὸς ἃς ἕκαστοι
τέχνας ἴσασιν ὑπὸ τῶν ἐπιμελητῶν διαφίενται, καὶ
μέχρι πέμπτης ὥρας ἐργασάμενοι συντόνως, ἔπειτα
πάλιν εἰς ἓν ἀθροίζονται χωρίον, ζωσάμενοί τε σκε-
πάσμασι λινοῖς, οὕτως ἀπολούονται τὸ σῶμα ψυχροῖς
ὕδασι· καὶ μετὰ ταύτην τὴν ἁγνείαν εἰς ἴδιον οἴκη-
μα συνίασιν, ἔνθα μηδενὶ τῶν ἑτεροδόξων ἐπιτέ-
τραπται παρελθεῖν· αὐτοί τε καθαροὶ καθάπερ εἰς
ἅγιόν τι τέμενος παραγίνονται τὸ δειπνητήριον. Καὶ
καθισάντων μεθ' ἡσυχίας, ὁ μὲν σιτοποιὸς ἐν τά-
ξει παρατίθησιν ἄρτους, ὁ δὲ μάγειρος ἓν ἀγγεῖον
ἐξ ἑνὸς ἐδέσματος ἑκάστῳ παρατίθησι. Προκατεύ-
χεται δὲ ὁ ἱερεὺς τῆς τροφῆς, καὶ γεύσασθαί τινα
πρὸ τῆς εὐχῆς ἀθέμιτον· ἀριστοποιησάμενος ἐπεύ-
χεται πάλιν· ἀρχόμενοί τε καὶ παυόμενοι γεραίρουσι
τὸν θεὸν, ὡς χορηγὸν τῆς τροφῆς. Ἔπειτα ὡς ἱερὰς
καταθέμενοι τὰς ἐσθῆτας, πάλιν ἐπ' ἔργα μέχρι δεί-
λης τρέπονται. Δειπνοῦσι δὲ ὑποστρέψαντες ὁμοί-
ως συγκαθεζομένων τῶν ξένων, οἳ τύχοιεν αὐτοῖς
παρόντες. Οὐδὲ κραυγή ποτε τὸν οἶκον οὔτε θόρυ-
βος μολύνει, τὰς δὲ λαλιὰς ἐν τάξει παραχωροῦσιν
ἀλλήλοις· καὶ τοῖς ἔξωθεν ὡς μυστήριόν τι φρικτὸν
ἡ τῶν ἔνδον σιωπὴ καταφαίνεται· τούτου δὲ αἴτιον
ἡ διηνεκὴς νῆψις, καὶ τὸ μετρεῖσθαι παρ' αὐτοῖς
τροφὴν καὶ ποτὸν μέχρι κόρου.

6. Τῶν μὲν οὖν ἄλλων οὐκ ἔστιν ὅ τι μὴ τῶν
ἐπιμελητῶν προςταξάντων ἐνεργοῦσι. Δύο δὲ ταῦτα
παρ' αὐτοῖς αὐτεξούσια, ἐπικουρία καὶ ἔλεος· βοη-
θεῖν τε γὰρ τοῖς ἀξίοις, ὁπόταν δέωνται, καὶ κατ'

αὐτοὺς ἀφίεται, καὶ τροφὰς ἀπορουμένοις ὀρέγειν. Τὰς δὲ εἰς τοὺς συγγενεῖς μεταδόσεις οὐκ ἔξεστι ποιεῖσθαι δίχα τῶν ἐπιτρόπων. Ὀργῆς ταμίαι δίκαιοι, θυμοῦ καθεκτικοὶ, πίστεως προστάται, εἰρήνης ὑπουργοί. Καὶ πᾶν μὲν τὸ ῥηθὲν ὑπ᾽ αὐτῶν ἰσχυρότερον ὅρκου· τὸ δὲ ὀμνύειν αὐτοῖς περιΐσταται, χεῖρόν τι τῆς ἐπιορκίας ὑπολαμβάνοντες· ἤδη γὰρ κατεγνῶσθαί φασι τὸν ἀπιστούμενον, δίχα θεοῦ. Σπουδάζουσι δὲ ἐκτόπως περὶ τὰ τῶν παλαιῶν συγγράμματα, μάλιστα τὰ πρὸς ὠφέλειαν ψυχῆς καὶ σώματος ἐκλέγοντες. Ἔνθεν αὐτοῖς πρὸς θεραπείαν παθῶν ῥίζαι τε ἀλεξιτήριοι, καὶ λίθων ἰδιότητες ἀνερευνῶνται.

7. Τῷ δὲ ζηλοῦντι τὴν αἵρεσιν αὐτῶν οὐκ 163
εὐθὺς ἡ πάροδος, ἀλλ᾽ ἐπ᾽ ἐνιαυτὸν ἔξω μένοντι τὴν αὐτὴν ὑποτίθενται δίαιταν, ἀξινάριόν τε καὶ τὸ προειρημένον περίζωμα καὶ λευκὴν ἐσθῆτα δόντες. Ἐπειδὰν δὲ τούτῳ τῷ χρόνῳ πεῖραν ἐγκρατείας δῷ, πρόσεισι μὲν ἔγγιον τῇ διαίτῃ, καὶ καθαρωτέρων τῶν πρὸς ἁγνείαν ὑδάτων μεταλαμβάνει· παραλαμβάνεται δὲ εἰς τὰς συμβιώσεις οὐδέπω. Μετὰ γὰρ τὴν τῆς καρτερίας ἐπίδειξιν, δυσὶν ἄλλοις ἔτεσι τὸ ἦθος δοκιμάζεται· καὶ φανεὶς ἄξιος, οὕτως εἰς τὸν ὅμιλον ἐγκρίνεται. Πρὶν δὲ τῆς κοινῆς ἅψασθαι τροφῆς, ὅρκους αὐτοῖς ὄμνυσι φρικώδεις, πρῶτον μὲν εὐσεβήσειν τὸ θεῖον· ἔπειτα τὰ πρὸς ἀνθρώπους δίκαια φυλάξειν, καὶ μήτε κατὰ γνώμην βλάψειν τινὰ, μήτε ἐξ ἐπιτάγματος, μισήσειν δὲ ἀεὶ τοὺς ἀδίκους καὶ συναγωνιεῖσθαι τοῖς δικαίοις· τὸ πιστὸν ἀεὶ παρέξειν πᾶσι, μάλιστα δὲ τοῖς κρατοῦσιν, οὐ γὰρ δίχα θεοῦ περιγίνεσθαί τινι τὸ ἄρχειν. Καὶ ἂν αὐτὸς ἄρχῃ, μηδὲ πώποτε ἐξυβρίζειν εἰς τὴν ἐξουσίαν, μηδὲ ἐσθῆτι, ἤ τινι πλείονι κόσμῳ τοὺς ὑποτεταγμένους ὑπερλαμπρύνεσθαι. Τὴν ἀλήθειαν ἀγαπᾶν ἀεὶ, καὶ τοὺς ψευδομένους ἐλέγχειν προβάλλεσθαι· χεῖρας κλοπῆς, καὶ ψυχὴν ἀνοσίου κέρδους καθαρὰν

φυλάξειν· καὶ μήτε κρύψειν τι τοὺς αἱρετιστὰς, μήτε ἑτέροις αὐτῶν τι μηνύσειν, καὶ ἂν μέχρι θανάτου τὶς βιάζηται. Πρὸς τούτοις ὀμνύουσι μηδενὶ μὲν μεταδοῦναι τῶν δογμάτων ἑτέρως, ἢ ὡς αὐτὸς μετέλαβεν· ἀφέξεσθαι δὲ λῃστείας, καὶ συντηρήσειν ὁμοίως τά τε τῆς αἱρέσεως αὐτῶν βιβλία, καὶ τὰ τῶν ἀγγέλων ὀνόματα. Τοιούτοις μὲν ὅρκοις τοὺς προσιόντας ἐξασφαλίζονται.

8. Τοὺς δὲ ἐπ' ἀξιοχρέοις ἁμαρτήμασιν ἁλόντας ἐκβάλλουσι τοῦ τάγματος. Ὁ δὲ ἐκκριθεὶς οἰκτίστῳ πολλάκις μόρῳ διαφθείρεται· τοῖς γὰρ ὅρκοις καὶ τοῖς ἔθεσιν ἐνδεδεμένος, οὐδὲ τῆς παρὰ τοῖς ἄλλοις τροφῆς δύναται μεταλαμβάνειν, ποηφαγῶν δὲ καὶ λιμῷ τὸ σῶμα τηκόμενος διαφθείρεται. Διὸ δὴ πολλοὺς ἐλεήσαντες ἐν ταῖς ἐσχάταις ἀναπνοαῖς ἀνέλαβον, ἱκανὴν ἐπὶ τοῖς ἁμαρτήμασιν αὐτῶν τὴν μέχρι θανάτου βάσανον ἡγούμενοι.

9. Περὶ δὲ τὰς κρίσεις ἀκριβέστατοι καὶ δίκαιοι, καὶ δικάζουσι μὲν οὐκ ἐλάττους τῶν ἑκατὸν συνελ-
164 θόντες. Τὸ δὲ ὁρισθὲν ὑπ' αὐτῶν ἀκίνητον. Σέβας δὲ μέγιστον παρ' αὐτοῖς, μετὰ τὸν Θεὸν, τὸ ὄνομα τοῦ νομοθέτου· καὶ ἂν βλασφημήσῃ τις εἰς τοῦτον, κολάζεσθαι θανάτῳ. Τοῖς δὲ πρεσβυτέροις ὑπακούειν καὶ τοῖς πλείοσιν, ἐν καλῷ τίθενται· δέκα γοῦν συγκαθεζομένων οὐκ ἂν λαλήσειέ τις ἀκόντων τῶν ἐννέα. Καὶ τὸ πτύσαι δὲ εἰς μέσους ἢ τὸ δεξιὸν μέρος φυλάσσονται. Καὶ ταῖς ἑβδομάσιν ἔργων ἐφάπτεσθαι, διαφορώτατα Ἰουδαίων ἁπάντων· οὐ μόνον γὰρ τροφὰς ἑαυτοῖς πρὸ ἡμέρας μιᾶς παρασκευάζουσιν, ὡς μηδὲ πῦρ ἐναύοιεν ἐκείνῃ τῇ ἡμέρᾳ, ἀλλ' οὐδὲ σκεῦός τι μετακινῆσαι θαῤῥοῦσιν, οὐδὲ ἀποπατεῖν. Ταῖς δὲ ἄλλαις ἡμέραις βόθρον ὀρύσσοντες βάθος ποδιαῖον τῇ σκαλίδι, τοιοῦτον γάρ ἐστι τὸ διδόμενον ὑπ' αὐτῶν ἀξινίδιον τοῖς νεοσυστάτοις, καὶ περικαλύψαντες τῷ ἱματίῳ, ὡς μὴ τὰς αὐγὰς ὑβρίζοιεν τοῦ Θεοῦ, θακεύουσιν εἰς αὐτὸν,

ἔπειτα τὴν ἀνορυχθεῖσαν γῆν ἐφέλκουσιν εἰς τὸν βόθρον· καὶ τοῦτο ποιοῦσι τοὺς ἐρημοτέρους τόπους ἐκλεγόμενοι. Καίπερ δὴ φυσικῆς οὔσης τῆς τῶν σωματικῶν λυμάτων ἐκκρίσεως, ἀπολούεσθαι μετ' αὐτὴν, καθάπερ μεμιασμένοις, ἔθιμον.

10. *Διῄρηνται* δὲ κατὰ χρόνον τῆς ἀσκήσεως εἰς μοίρας τέσσαρας· καὶ τοσοῦτον οἱ μεταγενέστεροι τῶν προγενεστέρων ἐλαττοῦνται, ὥςτε, εἰ ψαύσειαν αὐτῶν, ἐκείνους ἀπολούεσθαι, καθάπερ ἀλλοφύλῳ συμφυρέντας. Καὶ μακρόβιοι μὲν, ὡς τοὺς πολλοὺς ὑπὲρ ἑκατὸν παρατείνειν ἔτη, διὰ τὴν ἁπλότητα τῆς διαίτης, ἐμοί γε δοκεῖν καὶ τὴν εὐταξίαν. Καταφρονηταὶ δὲ τῶν δεινῶν, καὶ τὰς μὲν ἀλγηδόνας νικῶντες τοῖς φρονήμασι, τὸν δὲ θάνατον, εἰ μετ' εὐκλείας προςίοι, νομίζοντες ἀθανασίας ἀμείνω. Διήλεγξε δὲ αὐτῶν ἐν ἅπασι τὰς ψυχὰς ὁ πρὸς Ῥωμαίους πόλεμος· ἐν ᾧ στρεβλούμενοι καὶ λυγιζόμενοι, καιόμενοί τε καὶ κλώμενοι, καὶ διὰ πάντων ὁδεύοντες τῶν βασανιστηρίων ὀργάνων, ἵνα ἢ βλασφημήσωσι τὸν νομοθέτην, ἢ φάγωσί τι τῶν ἀσυνήθων, οὐδέτερόν τι ὑπέμειναν παθεῖν, ἀλλ' οὐδὲ κολακεῦσαί ποτε τοὺς αἰκιζομένους ἢ δακρῦσαι. Μειδιῶντες δὲ ἐν ταῖς ἀλγηδόσι, καὶ κατειρωνευόμενοι τῶν τὰς βασάνους προςφερόντων, εὔθυμοι τὰς ψυχὰς ἠφίεσαν, ὡς πάλιν κομιούμενοι.

11. Καὶ γὰρ ἔῤῥωται παρ' αὐτοῖς ἥδε ἡ δόξα, φθαρτὰ μὲν εἶναι τὰ σώματα, καὶ τὴν ὕλην οὐ μόνιμον αὐτοῖς, τὰς δὲ ψυχὰς ἀθανάτους ἀεὶ διαμένειν, καὶ συμπλέκεσθαι μὲν, ἐκ τοῦ λεπτοτάτου φοιτώσας αἰθέρος, ὥςπερ εἱρκταῖς τοῖς σώμασιν ἴυγγι 165
τινι φυσικῇ κατασπωμένας. Ἐπειδὰν δὲ ἀνεθῶσι τῶν κατὰ σάρκα δεσμῶν, οἷα δὴ μακρᾶς δουλείας ἀπηλλαγμένας, τότε χαίρειν καὶ μετεώρους φέρεσθαι· καὶ ταῖς μὲν ἀγαθαῖς, ὁμοδοξοῦντες παισὶν Ἑλλήνων, ἀποφαίνονται τὴν ὑπὲρ ὠκεανὸν δίαιταν ἀποκεῖσθαι, καὶ χῶρον οὔτε ὄμβροις οὔτε νιφετοῖς

οὔτε καύμασι βαρυνόμενον, ἀλλ᾽ ὃν ἐξ ὠκεανοῦ πραῢς ἀεὶ ζέφυρος ἐπιπνέων ἀναψύχει· ταῖς δὲ φαύλαις ζοφώδη καὶ χειμέριον ἀφορίζονται μυχὸν, γέμοντα τιμωριῶν ἀδιαλείπτων. Δοκοῦσι δέ μοι κατὰ τὴν αὐτὴν ἔννοιαν Ἕλληνες τοῖς τε ἀνδρείοις αὐτῶν, οὓς Ἥρωας καὶ Ἡμιθέους καλοῦσι, τὰς μακάρων νήσους ἀνατεθεικέναι, ταῖς δὲ τῶν πονηρῶν ψυχαῖς καθ᾽ ᾅδου τὸν ἀσεβῶν χῶρον· ἔνθα καὶ κολαζομένους τινὰς μυθολογοῦσι, Σισύφους καὶ Ταντάλους, καὶ Ἰξίονας καὶ Τιτυοὺς, πρῶτον μὲν ἀϊδίους ὑφιστάμενοι τὰς ψυχὰς, ἔπειτα εἰς προτροπὴν ἀρετῆς καὶ κακίας ἀποτροπήν. Τούς τε γὰρ ἀγαθοὺς γίνεσθαι κατὰ τὸν βίον ἀμείνους ἐλπίδι τιμῆς καὶ μετὰ τὴν τελευτὴν, τῶν τε κακῶν ἐμποδίζεσθαι τὰς ὁρμὰς δέει, προσδοκώντων, εἰ καὶ λάθοιεν ἐν τῷ ζῆν, μετὰ τὴν διάλυσιν ἀθάνατον τιμωρίαν ὑφέξειν. Τάδε μὲν οὖν Ἐσσηνοὶ περὶ ψυχῆς θεολογοῦσιν, ἄφυκτον δέλεαρ τοῖς ἅπαξ γευσαμένοις τῆς σοφίας αὐτῶν ἐγκαθιέντες.

12. Εἰσὶ δὲ ἐν αὐτοῖς οἳ καὶ τὰ μέλλοντα προγινώσκειν ὑπισχνοῦνται, βίβλοις ἱεραῖς, καὶ διαφόροις ἁγνείαις, καὶ προφητῶν ἀποφθέγμασιν ἐμπαιδοτριβούμενοι· σπάνιον δὲ, εἴ ποτε ἐν ταῖς προαγορεύσεσιν ἀστοχήσουσιν.

13. Ἔστι δὲ καὶ ἕτερον Ἐσσηνῶν τάγμα, ὃ δίαιταν μὲν καὶ ἔθη καὶ νόμιμα τοῖς ἄλλοις ὁμοφρονοῦν, διεστὸς δὲ τῇ κατὰ γάμον δόξῃ. Μέγιστον γὰρ ἀποκόπτειν οἴονται τοῦ βίου μέρος, τὴν διαδοχὴν, τοὺς μὴ γαμοῦντας· μᾶλλον δὲ, εἰ πάντες τὸ αὐτὸ φρονήσειαν, ἐκλιπεῖν ἅπαν τὸ γένος τάχιστα. Δοκιμάζοντες μέντοι τριετίᾳ τὰς γαμετὰς, ἐπειδὰν τρὶς καθαρθῶσιν εἰς πεῖραν τοῦ δύνασθαι τίκτειν, οὕτως ἄγονται. Ταῖς δὲ ἐγκύμοσιν οὐχ ὁμιλοῦσιν, ἐνδεικνύμενοι, τὸ μὴ δι᾽ ἡδονὴν, ἀλλὰ τέκνων χρείαν γαμεῖν. Λουτρὰ δὲ ταῖς γυναιξὶν ἀμ-

πεχομέναις ἐνδύματα, καθάπερ τοῖς ἀνδράσιν ἐν περιζώματι. Τοιαῦτα μὲν ἔθη τοῦδε τοῦ τάγματος.

14. Δύο δὲ τῶν προτέρων, Φαρισαῖοι μὲν, οἱ δοκοῦντες μετὰ ἀκριβείας ἐξηγεῖσθαι τὰ νόμιμα, καὶ 166
τὴν πρώτην ἐπάγοντες αἵρεσιν, εἱμαρμένῃ τε καὶ θεῷ προσάπτουσι πάντα, καὶ τὸ μὲν πράττειν τὰ δίκαια, καὶ μὴ, κατὰ τὸ πλεῖστον ἐπὶ τοῖς ἀνθρώποις κεῖσθαι, βοηθεῖν δὲ εἰς ἕκαστον καὶ τὴν εἱμαρμένην· ψυχὴν δὲ πᾶσαν μὲν ἄφθαρτον, μεταβαίνειν δὲ εἰς ἕτερον σῶμα τὴν τῶν ἀγαθῶν μόνην, τὴν δὲ τῶν φαύλων ἀϊδίῳ τιμωρίᾳ κολάζεσθαι. Σαδδουκαῖοι δὲ, τὸ δεύτερον τάγμα, τὴν μὲν εἱμαρμένην παντάπασιν ἀναιροῦσι, καὶ τὸν θεὸν ἔξω τοῦ δρᾷν τι κακὸν ἢ μὴ δρᾷν τίθενται· φασὶ δὲ ἐπ' ἀνθρώπων ἐκλογῇ τό τε καλὸν καὶ τὸ κακὸν προκεῖσθαι, καὶ τὸ κατὰ γνώμην ἑκάστῳ τούτων ἑκατέρῳ προσιέναι. Ψυχῆς τε τὴν διαμονὴν, καὶ τὰς καθ' ᾅδου τιμωρίας καὶ τιμὰς ἀναιροῦσι. Καὶ Φαρισαῖοι μὲν φιλάλληλοί τε, καὶ τὴν εἰς τὸ κοινὸν ὁμόνοιαν ἀσκοῦντες· Σαδδουκαίων δὲ καὶ πρὸς ἀλλήλους τὸ ἦθος ἀγριώτερον, αἵ τε ἐπιμιξίαι πρὸς τοὺς ὁμοίους ἀπηνεῖς ὡς πρὸς ἀλλοτρίους. Τοιαῦτα μὲν περὶ τῶν ἐν Ἰουδαίοις φιλοσοφούντων εἶχον εἰπεῖν.

CAP. IX. 1. Τῆς Ἀρχελάου δὲ ἐθναρχίας μεταπεσούσης εἰς ἐπαρχίαν, οἱ λοιποὶ, Φίλιππός τε καὶ Ἡρώδης ὁ κληθεὶς Ἀντίπας, διῴκουν τὰς ἑαυτῶν τετραρχίας. Σαλώμη γὰρ τελευτῶσα Ἰουλίᾳ τῇ τοῦ Σεβαστοῦ γυναικὶ τήν τε αὐτῆς τοπαρχίαν καὶ Ἰάμνειαν, καὶ τοὺς ἐν Φασαηλίδι φοινικῶνας κατέλιπεν. Μεταβάσης δὲ εἰς Τιβέριον τὸν Ἰουλίας υἱὸν τῆς Ῥωμαίων ἡγεμονίας, μετὰ τὴν Αὐγούστου τελευτὴν, ἀφηγησαμένου τῶν πραγμάτων ἔτεσιν ἑπτὰ καὶ πεντήκοντα, πρὸς δὲ μησὶν ἓξ ἡμέραις δυοῖν, διαμείναντες ἐν ταῖς τετραρχίαις ὅ τε Ἡρώδης, καὶ Φίλιππος, ὁ μὲν πρὸς ταῖς Ἰορδάνου πηγαῖς ἐν Πα-

νεάδι πόλιν κτίζει Καισάρειαν, καὶ ἐν τῇ κάτω Γαυ-
167 λανιτικῇ Ἰουλιάδα, Ἡρώδης δὲ ἐν μὲν τῇ Γαλι-
λαίᾳ Τιβεριάδα, ἐν δὲ τῇ Περαίᾳ φερώνυμον Ἰου-
λίας.

2. Πεμφθεὶς δὲ εἰς Ἰουδαίαν ἐπίτροπος ὑπὸ Τιβερίου Πιλάτος, νύκτωρ κεκαλυμμένας εἰς Ἱεροσόλυμα παρεισκομίζει τὰς Καίσαρος εἰκόνας, σημαῖαι καλοῦνται. Τοῦτο μεθ' ἡμέραν μεγίστην ταραχὴν ἤγειρεν Ἰουδαίων· οἵ τε γὰρ ἐγγὺς πρὸς τὴν ὄψιν ἐξεπλάγησαν, ὡς πεπατημένων αὐτοῖς τῶν νόμων· οὐδὲν γὰρ ἀξιοῦσιν ἐν τῇ πόλει δείκηλον τίθεσθαι. Καὶ πρὸς τὴν ἀγανάκτησιν τῶν κατὰ τὴν πόλιν ἄθρους ἐκ τῆς χώρας λαὸς συνέῤῥευσεν. Ὁρμήσαντες δὲ πρὸς τὸν Πιλάτον εἰς Καισάρειαν, ἱκέτευον ἐξενεγκεῖν Ἱεροσολύμων τὰς σημαίας, καὶ τηρεῖν αὐτοῖς τὰ πάτρια. Πιλάτου δ' ἀρνουμένου περὶ τὴν ἱκεσίαν, πρηνεῖς καταπεσόντες, ἐπὶ πέντε ἡμέρας καὶ νύκτας ἴσας ἀκίνητοι διεκαρτέρουν.

3. Τῇ δὲ ἑξῆς ὁ Πιλάτος καθίσας ἐπὶ βήματος ἐν τῷ μεγάλῳ σταδίῳ, καὶ προσκαλεσάμενος τὸ πλῆθος, ὡς ἀποκρίνεσθαι δῆθεν αὐτοῖς θέλων, δίδωσι τοῖς στρατιώταις σημεῖον, ἐκ συντάγματος κυκλώσασθαι τοὺς Ἰουδαίους τοῖς ὅπλοις. Περιστάσης δὲ τριστοιχεὶ τῆς φάλαγγος, οἱ Ἰουδαῖοι μὲν ἀχανεῖς ἦσαν, πρὸς τὸ ἀδόκητον τῆς ὄψεως· Πιλάτος δὲ κατακόψειν εἰπὼν αὐτούς, εἰ μὴ προσδέξαιντο τὰς Καίσαρος εἰκόνας, γυμνοῦν τὰ ξίφη τοῖς στρατιώταις ἔνευεν. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι καθάπερ ἐκ συνθήματος ἀθρόοι καταπεσόντες, καὶ τοὺς αὐχένας παρακλίναντες, ἑτοίμους εἰς ἀναίρεσιν σφᾶς ἐβόων μᾶλλον, ἢ τὸν νόμον παραβῆναι. Ὑπερθαυμάσας δὲ ὁ Πιλάτος τὸ τῆς δεισιδαιμονίας ἄκρατον, ἐκκομίσαι μὲν αὐτίκα τὰς σημαίας Ἱεροσολύμων κελεύει.

4. Μετὰ δὲ ταῦτα ταραχὴν ἑτέραν ἐκίνει, τὸν

ἱερὸν θησαυρὸν — καλεῖται δὲ Κορβανᾶς — εἰς
καταγωγὴν ὑδάτων ἐξαναλίσκων. Κατῆγε δὲ ἀπὸ
τετρακοσίων σταδίων. Πρὸς τοῦτο τοῦ πλήθους
ἀγανάκτησις ἦν, καὶ τοῦ Πιλάτου παρόντος εἰς Ἱε-
ροσόλυμα, περιστάντες τὸ βῆμα κατεβόων. Ὁ δὲ,
προῄδει γὰρ αὐτῶν τὴν ταραχὴν, καὶ τῷ πλήθει
τοὺς στρατιώτας ἐνόπλους ἐσθήσεσιν ἰδιωτικαῖς κε-
καλυμμένους ἐγκαταμίξας, καὶ ξίφει μὲν χρήσασθαι
κωλύσας, ξύλοις δὲ παίειν τοὺς κεκραγότας ἐγκελευ-
σάμενος, σύνθημα δίδωσιν ἀπὸ τοῦ βήματος· 168
τυπτόμενοι δὲ οἱ Ἰουδαῖοι πολλοὶ μὲν ὑπὸ τῶν πλη-
γῶν, πολλοὶ δὲ ὑπὸ σφῶν αὐτῶν ἐν τῇ φυγῇ κατα-
πατηθέντες ἀπώλοντο. Πρὸς δὲ τὴν συμφορὰν τῶν
ἀνῃρημένων καταπλαγὲν τὸ πλῆθος ἐσιώπησε.

5. Καὶ ἐν τούτῳ κατήγορος Ἡρώδου τοῦ τε-
τραρχοῦντος Ἀγρίππας υἱὸς Ἀριστοβούλου, ὃν ὁ πα-
τὴρ Ἡρώδης ἀπέκτεινε, παραγίνεται πρὸς Τιβέριον.
Τοῦ δὲ μὴ προςδεξαμένου τὴν κατηγορίαν, μένων
ἐπὶ Ῥώμης, τούς τε ἄλλους τῶν γνωρίμων ἐθερά-
πευε, καὶ μάλιστα τὸν Γερμανικοῦ παῖδα Γάϊον,
ἰδιώτην ἔτι ὄντα. Καὶ δή ποτε ἑστιῶν αὐτὸν, τά
τε ἄλλα ποικίλως ἐφιλοφρονεῖτο, καὶ τελευταῖον τὰς
χεῖρας ἀνατείνας, φανερῶς ηὔξατο θᾶττον αὐτὸν
θεάσασθαι τῶν ὅλων δεσπότην, ἀποθανόντος Τιβε-
ρίου. Τοῦτό τις τῶν οἰκετῶν αὐτοῦ διαγγέλλει Τι-
βερίῳ, καὶ ὃς ἀγανακτήσας εἵργνυσι τὸν Ἀγρίππαν,
καὶ μετ' αἰκίας εἶχεν ἐπὶ μῆνας ἓξ ἐν δεσμωτηρίῳ,
μέχρις αὐτὸς ἐτελεύτησεν ἡγεμονεύσας ἔτη δύο πρὸς
τοῖς εἴκοσι, καὶ τρεῖς ἡμέρας ἐπὶ μησὶν ἕξ.

6. Ἀποδειχθεὶς δὲ Γάϊος Καῖσαρ, ἀνίησί τε
τῶν δεσμῶν τὸν Ἀγρίππαν, καὶ τῆς Φιλίππου τε-
τραρχίας, ἐτεθνήκει γὰρ οὗτος, καθίστησι βασιλέα.
Παραγενόμενος δὲ εἰς τὴν ἀρχὴν Ἀγρίππας, φθόνῳ
τὰς Ἡρώδου τοῦ τετράρχου διήγειρεν ἐπιθυμίας.
Ἐνῆγε δὲ μάλιστα τοῦτον εἰς ἐλπίδα βασιλείας Ἡρω-
διὰς ἡ γυνὴ, κατονειδίζουσα τὴν ἀργίαν, καὶ φα-

μένη ‘παρὰ τὸ μὴ βούλεσθαι πλεῖν ἐπὶ Καίσαρα, στερίσκεσθαι μείζονος ἀρχῆς· ὅπου γὰρ Ἀγρίππαν ἐξ ἰδιώτου βασιλέα πεποίηκεν, ἦπου γε ἂν ἐκεῖνον διαναστήσειεν ἐκ τετράρχου.’ Τούτοις ἀναπεισθεὶς Ἡρώδης, ἧκε πρὸς Γάϊον, ὑφ’ οὗ τῆς πλεονεξίας ἐπιτιμᾶται φυγῇ εἰς Ἱσπανίαν. Ἠκολούθησε γὰρ αὐτῷ κατήγορος Ἀγρίππας, ᾧ καὶ τὴν τετραρχίαν τὴν ἐκείνου προςέθηκε Γάϊος. Καὶ Ἡρώδης μὲν ἐν Ἱσπανίᾳ, συμφυγούσης αὐτῷ καὶ τῆς γυναικὸς, τελευτᾷ.

169 CAP. X. 1. Γάϊος δὲ Καῖσαρ ἐπὶ τοσοῦτον ἐξύβρισεν εἰς τὴν τύχην, ὥςτε θεὸν μὲν αὑτὸν καὶ δοκεῖν, καὶ βούλεσθαι καὶ καλεῖσθαι, τῶν τε εὐγενεστάτων ἀνδρῶν ἀκροτομῆσαι τὴν πατρίδα, ἐκτεῖναι δὲ τὴν ἀσέβειαν καὶ ἐπὶ Ἰουδαίους. Πετρώνιον γοῦν μετὰ στρατιᾶς ἐπὶ Ἱεροσολύμων ἔπεμψεν ἐγκαθιδρύσοντα τῷ ναῷ τοὺς ἀνδριάντας αὐτοῦ, προςτάξας, εἰ μὴ δέξοιντο Ἰουδαῖοι, τούς τε κωλύοντας ἀνελεῖν, καὶ πᾶν τὸ λοιπὸν ἔθνος ἐξανδραποδίσασθαι. Θεῷ δὲ ἄρα τῶν προςταγμάτων ἔμελε. Καὶ Πετρώνιος μὲν, σὺν τρισὶ τάγμασι καὶ πολλοῖς ἐκ τῆς Συρίας συμμάχοις, εἰς τὴν Ἰουδαίαν ἤλαυνεν ἐκ τῆς Ἀντιοχείας. Ἰουδαίων δὲ οἱ μὲν ἠπίστουν ἔτι ταῖς τοῦ πολέμου φήμαις, οἱ δὲ πιστεύοντες ἦσαν ἐν ἀμηχάνῳ πρὸς τὴν ἄμυναν. Ταχὺ δὲ ἐχώρει διὰ πάντων τὸ δέος, ἤδη γὰρ οὔσης εἰς τὴν Πτολεμαΐδα τῆς στρατιᾶς.

2. Πρόςεστι δὲ ἡ πόλις αὕτη τῆς Γαλιλαίας παράλιος κατὰ τὸ μέγα πεδίον ἐκτισμένη. Περιέχεται δὲ ὄρεσιν, ἐκ μὲν τοῦ πρὸς ἀνατολὴν κλίματος ἀπὸ σταδίων ἑξήκοντα, τῷ τῆς Γαλιλαίας, ἀπὸ δὲ τοῦ μεσημβρινοῦ, τῷ Καρμήλῳ διέχοντι σταδίους ἑκατὸν εἴκοσι. Τῷ δὲ ὑψηλοτάτῳ, κατ’ ἄρκτον, ὃ καλοῦσι κλίμακα Τυρίων οἱ ἐπιχώριοι, καὶ τοῦτο δὲ σταδίους ἀφέστηκεν ἑκατόν. Τοῦ δὲ ἄστεως ἀπὸ δύο σταδίων ὁ καλούμενος Βήλεος ποταμὸς πα-

ῥαῤῥεῖ παντάπασιν ὀλίγος, παρ' ᾧ τὸ Μέμνονος
μνημεῖόν ἐστιν, ἔχον ἐγγὺς αὐτοῦ τόπον ἑκατοντά-
πηχυν θαύματος ἄξιον. Κυκλοτερὴς μὲν γάρ ἐστι
καὶ κοῖλος, ἀναδίδωσι δὲ τὴν ὑαλικὴν ψάμμον, ἣν
ὅταν ἐκκενώσῃ πολλὰ πλοῖα προσχόντα, πάλιν ἀνα-
πληροῦται τὸ χωρίον, κατασυρόντων μὲν ὥσπερ
ἐπίτηδες τότε τῶν ἀνέμων εἰς αὐτὸ τὴν ἔξωθεν ἀρ-
γὴν ψάμμον· τοῦ δὲ μετάλλου πᾶσαν εὐθέως μετα-
βάλλοντος εἰς ὕαλον, θαυμασιώτερον τοῦτό μοι δο-
κεῖν, τὸ τὴν ὑπερχυθεῖσαν ὕαλον ἐκ τοῦ τόπου πά-
λιν γίνεσθαι ψάμμον εἰκαίαν. Τὸ μὲν οὖν χωρίον
τοῦτο τοιαύτην εἴληφε φύσιν.

3. Ἰουδαῖοι δὲ, μετὰ γυναικῶν καὶ τέκνων ἀθροι-
σθέντες εἰς τὸ πεδίον τὸ πρὸς Πτολεμαΐδα, καθι- 170
κέτευον τὸν Πετρώνιον, ὑπὲρ τῶν πατρίων νόμων
πρῶτον, ἔπειτα ὑπὲρ ἑαυτῶν. Ὁ δὲ πρός τε τὸ
πλῆθος καὶ τὰς δεήσεις ἐνδοὺς, τὴν μὲν στρατιὰν
καὶ τοὺς ἀνδριάντας ἐν Πτολεμαΐδι καταλείπει· προ-
ελθὼν δὲ εἰς τὴν Γαλιλαίαν, καὶ συγκαλέσας τὸ
πλῆθος, καὶ τοὺς γνωρίμους πάντας εἰς τὴν Τιβε-
ριάδα, τήν τε Ῥωμαίων διεξῄει δύναμιν, καὶ τὰς
Καίσαρος ἀπειλὰς, ἔτι δὲ καὶ 'τὴν ἀξίωσιν ἀπέφη-
νεν ἀγνώμονα· πάντων γὰρ τῶν ὑποτεταγμένων ἐθ-
νῶν κατὰ πόλιν συγκαθιδρυκότων τοῖς ἄλλοις θεοῖς
καὶ τὰς Καίσαρος εἰκόνας, τὸ μόνους ἐκείνους ἀν-
τιτάσσεσθαι πρὸς τοῦτο σχεδὸν ἀφισταμένων εἶναι
καὶ μετ' ὕβρεως.'

4. Τῶν δὲ τὸν νόμον καὶ τὸ πάτριον ἔθος προ-
τειναμένων, καὶ ὡς οὐδὲ θεοῦ τι δείκηλον, οὐχ ὅπως
ἀνδρὸς, οὐ κατὰ τὸν ναὸν μόνον, ἀλλ' οὐδὲ ἐν εἰ-
καίῳ τινὶ τόπῳ τῆς χώρας θέσθαι θεμιτὸν εἴη,
ὑπολαβὼν ὁ Πετρώνιος, "Ἀλλὰ μὴν καὶ ἐμοὶ φυ-
λακτέος ὁ τοῦ ἐμοῦ δεσπότου νόμος," ἔφη· "παρα-
βὰς γὰρ αὐτὸν, καὶ φεισάμενος ὑμῶν, ἀπολοῦμαι
δικαίως. Πολεμήσει δὲ ὑμᾶς ὁ πέμψας ἐμὲ, οὐκ
ἐγώ· καὶ γὰρ αὐτὸς, ὥσπερ ὑμεῖς, ἐπιτάσσομαι."

Πρὸς ταῦτα τὸ πλῆθος πᾶν ἐβόα, 'πρὸ τοῦ νόμου πάσχειν ἑτοίμως ἔχειν.' Καταστείλας δὲ ὁ Πετρώνιος αὐτῶν τὴν βοήν, "Πολεμήσετε," εἶπεν, "ἄρα Καίσαρι;" Καὶ Ἰουδαῖοι, 'περὶ μὲν Καίσαρος καὶ τοῦ δήμου τῶν Ῥωμαίων δὶς τῆς ἡμέρας θύειν, ἔφασαν. Εἰ δὲ βούλεται τὰς εἰκόνας ἐγκαθιδρύειν, πρότερον αὐτὸν δεῖν ἅπαν τὸ Ἰουδαίων ἔθνος προθύσασθαι· παρέχειν δὲ σφᾶς αὐτοὺς ἑτοίμους εἰς σφαγὴν ἅμα τέκνοις καὶ γυναιξίν.' Ἐπὶ τούτοις θαῦμα καὶ οἶκτος εἰσῄει τὸν Πετρώνιον, τῆς τε ἀνυπερβλήτου θρησκείας τῶν ἀνδρῶν, καὶ τοῦ πρὸς θάνατον ἑτοίμου παραστήματος. Καὶ τότε μὲν ἄπρακτοι διελύθησαν.

5. Ταῖς δὲ ἑξῆς ἀθροίσας τε τοὺς δυνατοὺς κατ' ἰδίαν, καὶ τὸ πλῆθος ἐν κοινῷ συλλέγων ποτὲ μὲν παρεκάλει ποτὲ δὲ συνεβούλευεν, τὸ μέντοι πλέον διηπείλει, τήν τε Ῥωμαίων ἐπανατεινόμενος ἰσχύν, καὶ τοὺς Γαΐου θυμούς, τήν τε ἰδίαν πρὸς τούτοις ἀνάγκην. Πρὸς δὲ μηδεμίαν πεῖραν ἐνδιδόντων, ὡς ἑώρα καὶ τὴν χώραν κινδυνεύουσαν ἄσπορον μεῖναι, κατὰ γὰρ ὥραν σπόρου πεντήκοντα ἡμέρας ἀργὰ διέτριβεν αὐτῶν τὰ πλήθη, τελευταῖον ἀθροίσας αὐτούς, καὶ "Παρακινδυνευτέον ἐμοὶ μᾶλλον" εἰπών, "ἢ γάρ, τοῦ θεοῦ συνεργοῦντος, πείσας Καίσαρα, σωθήσομαι μεθ' ὑμῶν ἡδέως, ἢ παροξυνθέντος, ὑπὲρ τοσούτων ἑτοίμως ἐπιδώσω τὴν ἐμαυτοῦ ψυχήν," διαφῆκε τὸ πλῆθος, πολλὰ κατευχόμενον αὐτῷ, καὶ παραλαβὼν τὴν στρατιὰν ἐκ τῆς Πτολεμαΐδος ἐπέστρεψεν εἰς Ἀντιόχειαν. Ἔνθεν εὐθέως ἐπέστελλε Καίσαρι, τήν τε ἐμβολὴν τὴν εἰς Ἰουδαίαν ἑαυτοῦ, καὶ τὰς τοῦ ἔθνους ἱκετείας, ὅτι τε, εἰ μὴ βούλοιτο πρὸς τοῖς ἀνδράσι καὶ τὴν χώραν ἀπολέσαι, δέον φυλάττειν τε αὐτοὺς τὸν νόμον, καὶ παριέναι τὸ πρόσταγμα. Ταύταις ταῖς ἐπιστολαῖς οὐ σφόδρα μετρίως Γάϊος ἀντέγραψεν, ἀπειλῶν Πετρωνίῳ θάνατον, ὅτι τῶν προσταγμάτων αὐτοῦ βρα-

δὺς ὑπηρέτης ἐγένετο. Ἀλλὰ τοὺς μὲν τούτων γραμ-
ματοφόρους συνέβη χειμασθῆναι τρεῖς μῆνας ἐν τῇ 171
θαλάσσῃ, τὸν δὲ Γαΐου θάνατον ἄλλοι καταγγέλ-
λοντες εὐπλόουν. Ἔφθη γοῦν τὰς περὶ τούτου λα-
βεῖν Πετρώνιος ἐπιστολὰς, ἑπτὰ καὶ εἴκοσιν ἡμέρας,
ἢ τὰς καθ' ἑαυτοῦ.

CAP. XI. 1. Γαΐου δὲ ἡγεμονεύσαντος ἔτη τρία καὶ μῆνας ὀκτὼ, καὶ δολοφονηθέντος, ἁρπάζεται μὲν ὑπὸ τῶν ἐν Ῥώμῃ στρατευμάτων εἰς τὴν ἀρχὴν Κλαύδιος. Ἡ δὲ σύγκλητος, ἐξηγουμένων τῶν ὑπάτων, Σεντίου Σατουρνίνου καὶ Πομπωνίου Σεκούνδου, τρισὶ ταῖς συμμενούσαις σπείραις ἐπιτρέψασα φυλάττειν τὴν πόλιν, εἰς τὸ Καπιτώλιον ἠθροίσθη, καὶ διὰ τὴν ὠμότητα τοῦ Γαΐου Κλαυδίῳ πολεμεῖν ἐψηφίζετο· καταστήσεσθαι γὰρ δι' ἀριστοκρατίας, ὥςπερ οὖν πάλαι διῳκεῖτο, τὴν ἀρχὴν, ἢ κρίνειν ψήφῳ τὸν ἄξιον τῆς ἡγεμονίας.

2. Συνέβη δὲ τηνικαῦτα προςεπιδημοῦντα τὸν Ἀγρίππαν, τήν τε σύγκλητον καλοῦσαν εἰς συμβουλίαν πέμψαι, καὶ Κλαύδιον ἐκ τῆς παρεμβολῆς, ὅπως πρὸς ἃ δέοι χρήσιμος αὐτῷ γένοιτο. Καὶ ἐκεῖνος συνιδὼν τὸν ἤδη τῇ δυνάμει Καίσαρα, πρὸς Κλαύδιον ἄπεισιν. Ὁ δὲ αὐτὸν πρεσβευτὴν πρὸς τὴν σύγκλητον ἀναπέμπει, δηλοῦντα τὴν αὐτοῦ προαίρεσιν, ὅτι ‘πρῶτον μὲν ἄκων ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν ἁρπαγείη, καὶ οὔτε τὴν ἐκείνων σπουδὴν ἐγκαταλιπεῖν δίκαιον, οὔτε ἀσφαλὲς τὴν αὐτοῦ τύχην κρίνοι· καὶ γὰρ καὶ τὸ τυχεῖν τῆς ἡγεμονικῆς κλήσεως, ἐπικίνδυνον εἶναι· ἔπειτα ὅτι διοικήσοι τὴν ἀρχὴν, ὥςπερ ἀγαθὸς προστάτης, οὐχ ὡς τύραννος· ἀρκεῖσθαι γὰρ τῇ τιμῇ τῆς προςηγορίας, τὴν δὲ ἐφ' ἑκάστῳ τῶν πραγμάτων βουλὴν πᾶσιν ἀποδώσειν. Καὶ γὰρ εἰ μὴ φύσει μέτριος ἦν, ἱκανὸν ὑπόδειγμα σωφροσύνης αὐτῷ προκεῖσθαι τὸν Γαΐου θάνατον.’

3. Ταῦτα ἀπήγγελλεν Ἀγρίππας. Ἡ δὲ βουλὴ ἀπεκρίνατο, ʻκαὶ στρατῷ καὶ γνώμαις ἀγαθαῖς πεποιθυῖα δουλείαν ἑκούσιον οὐχ ὑπομένειν.ʼ Καὶ Κλαύδιος, ὡς ἤκουσε τὰ παρὰ τῆς βουλῆς, πάλιν ἔπεμψε τὸν Ἀγρίππαν ἀπαγγελοῦντα αὐτοῖς, ὅτι ʻπροδοῦναι μὲν τοὺς εἰς αὐτὸν ὀμόσαντας οὐχ ὑπομένει, πολεμήσει δὲ ἄκων πρὸς οὓς ἥκιστα βούλοιτο. Δεῖν μέντοι προαποδειχθῆναι τῷ πολέμῳ χωρίον ἔξω τῆς πόλεως· οὐ γὰρ ὅσιον, διὰ τὴν αὐτῶν κακοβουλίαν, ὁμοφύλῳ φόνῳ μιαίνεσθαι τὰ τεμένη πατρίδος.ʼ Ὁ μὲν οὖν ἀκούσας ταῦτα τοῖς βουλευταῖς ἀπήγγειλεν.

172 4. Μεταξὺ δὲ τῶν μετὰ τῆς συγκλήτου στρατιωτῶν τις, ʻσπασάμενος τὸ ξίφος, "Ἄνδρες," ἐβόησε, "συστρατιῶται, τί παθόντες ἀδελφοκτονεῖν αἱρούμεθα, καὶ κατὰ τῶν μετὰ Κλαυδίου συγγενῶν ὁρμᾶν, ἔχοντες μὲν αὐτοκράτορα μηδὲν μεμφθῆναι δυνάμενον, τοσαῦτα δὲ δίκαια πρὸς οὓς μετὰ τῶν ὅπλων χωρεῖν μέλλομεν;" Ταῦτα εἰπὼν διὰ μέσης ὥρμησε τῆς βουλῆς πάντας τοὺς στρατιώτας ἐφελκόμενος. Οἱ δὲ εὐπατρίδαι παραχρῆμα μὲν πρὸς τὴν ἀπόλειψιν περιδεῶς ἔσχον. Αὖθις δὲ ὡς ἀποστροφὴ σωτήριος οὐ κατεφαίνετο, τὴν τῶν στρατιωτῶν ὁδὸν ἠπείγοντο πρὸς Κλαύδιον. Ὑπήντων δὲ αὐτοῖς πρὸ τοῦ τείχους γυμνοῖς τοῖς ξίφεσιν, οἱ σφοδρότερον κολακεύοντες τὴν τύχην. Καὶ ἂν συνέβη κινδυνεῦσαι τοὺς προάγοντας, πρὶν γνῶναι τὴν ὁρμὴν τῶν στρατιωτῶν Κλαύδιον, εἰ μὴ προςδραμὼν Ἀγρίππας αὐτῷ ʻτὸ κινδύνευμα τῆς πράξεως ἐδήλωσεν· ὅτι τε, εἰ μὴ κατάσχοι τὴν ὁρμὴν τῶν ἐπὶ τοὺς εὐπατρίδας λελυσσηκότων, ἀπολέσας δι᾽ οὓς τὸ κρατεῖν ἐστι περίοπτον, ἐρημίας ἔσοιτο βασιλεύς.ʼ

5. Ταῦτα ἀκούσας Κλαύδιος ἐπέσχε τὰς ὁρμὰς τοῦ στρατιωτικοῦ, προςδέχεταί τε τὴν σύγκλητον εἰς τὸ στρατόπεδον, καὶ φιλοφρονησάμενος ἔξεισι σὺν

αὐτοῖς αὐτίκα, θύσων τῷ θεῷ τὰ περὶ τῆς ἡγεμο-
νίας χαριστήρια. Καὶ τὸν Ἀγρίππαν εὐθέως ἐδω-
ρεῖτο τῇ πατρῴᾳ βασιλείᾳ πάσῃ, προστιθεὶς ἔξωθεν
καὶ τὰς ὑπ' Αὐγούστου δοθείσας Ἡρώδῃ, Τραχω-
νῖτιν καὶ Αὐρανῖτιν, χωρὶς δὲ τούτων ἑτέραν βασι-
λείαν τὴν Λυσανίου καλουμένην. Καὶ τῷ μὲν δήμῳ
διατάγματι τὴν δωρεὰν ἐδήλου, τοῖς ἄρχουσι δὲ προς-
έταξεν, ἐγχαράξαντας δέλτοις χαλκαῖς τὴν δόσιν εἰς
τὸ Καπετώλιον ἀναθεῖναι· δωρεῖται δὲ αὐτοῦ καὶ
τὸν ἀδελφὸν Ἡρώδην, ὁ δὲ αὐτὸς καὶ γαμβρὸς ἦν
Βερνίκῃ συνοικῶν, βασιλείᾳ τῇ Χαλκίδι.

6. Ταχέως δὲ, ὡς ἂν ἐκ τοσαύτης ἀρχῆς, πλοῦ-
τος Ἀγρίππᾳ προσέῤῥει, καὶ τοῖς χρήμασιν αὐτὸς
οὐκ εἰς μικρὰ κατεχρῆτο· τηλικοῦτον δὲ περιβάλλειν
ἤρξατο τοῖς Ἱεροσολύμοις τεῖχος, ἡλίκον ἂν τελε-
σθὲν, ἀνήνυτον τὴν ἐν Ῥωμαίοις ἐποίησε πολιορ-
κίαν. Ἀλλ' ἔφθη, πρὶν ὑψῶσαι τὸ ἔργον, τελευτή-
σας ἐν Καισαρείᾳ, βεβασιλευκὼς μὲν ἔτη τρία, πρό-
τερον δὲ τῶν τετραρχιῶν τρισὶν ἑτέροις ἔτεσιν ἀφη-
γησάμενος. Καταλείπει δὲ τρεῖς μὲν θυγατέρας ἐκ
Κύπρου γεγεννημένας, Βερνίκην, Μαριάμμην, Δρού-
σιλλαν· υἱὸν δὲ ἐκ τῆς αὐτῆς, Ἀγρίππαν. Οὗ παν-
τάπασιν ὄντος νηπίου, πάλιν τὰς βασιλείας Κλαύ- 173
διος ἐπαρχίαν ποιήσας ἐπίτροπον πέμπει Κούσπιον
Φάδον, ἔπειτα Τιβέριον Ἀλέξανδρον· οἳ, μηδὲν πα-
ρακινοῦντες τῶν πατρίων ἐθῶν, ἐν εἰρήνῃ τὸ ἔθ-
νος διεφύλαξαν. Μετὰ ταῦτα καὶ ὁ βασιλεύων τῆς
Χαλκίδος Ἡρώδης τελευτᾷ, καταλιπὼν ἐκ μὲν τῆς
ἀδελφιδῆς Βερνίκης δύο παῖδας, Βερνικιανόν τε καὶ
Ὑρκανὸν, ἐκ δὲ τῆς προτέρας Μαριάμμης, Ἀριστό-
βουλον. Ἐτεθνήκει δὲ αὐτῷ καὶ ἕτερος ἀδελφὸς
Ἀριστόβουλος ἰδιώτης, καταλιπὼν Ἰωτάπην θυγα-
τέρα. Οὗτοι μὲν οὖν ἦσαν, ὡς προεῖπον, Ἀριστο-
βούλου τοῦ Ἡρώδου παῖδες. Ἀριστόβουλος δὲ καὶ
Ἀλέξανδρος ἐκ Μαριάμμης Ἡρώδῃ ἐγεγόνεισαν, οὓς

ὁ πατὴρ ἀνεῖλεν· ἡ δὲ Ἀλεξάνδρου γενεὰ τῆς μεγάλης Ἀρμενίας ἐβασίλευσε.

CAP. XII. 1. Μετὰ δὲ τὴν Ἡρώδου τελευτὴν, ὃς ἦρξε τῆς Χαλκίδος, καθίστησι Κλαύδιος εἰς τὴν βασιλείαν τοῦ θείου τὸν Ἀγρίππαν, υἱὸν Ἀγρίππα. Τῆς δὲ ἄλλης ἐπαρχίας διαδέχεται τὴν ἐπιτροπὴν ἀπὸ Ἀλεξάνδρου Κούμανος, ἐφ' οὗ θόρυβοί τε ἤρξαντο, καὶ φθορὰ πάλιν Ἰουδαίων ἐγένετο. Συνεληλυθότος γὰρ τοῦ πλήθους ἐπὶ τὴν ἑορτὴν τῶν ἀζύμων εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ τῆς Ῥωμαϊκῆς σπείρας ὑπὲρ τὴν τοῦ ἱεροῦ στοὰν ἐφεστώσης, — ἔνοπλοι δὲ ἀεὶ τὰς ἑορτὰς παραφυλάττουσιν, ὡς μή τι νεωτερίζοι τὸ πλῆθος συνηθροισμένον, — εἷς τις τῶν στρατιωτῶν ἀνασυράμενος τὴν ἐσθῆτα, καὶ κατακύψας ἀσχημόνως, προςαπέστρεψε τοῖς Ἰουδαίοις τὴν ἕδραν, καὶ τῷ σχήματι φωνὴν ὁμοίαν ἐπεφθέγξατο. Πρὸς τοῦτο πᾶν μὲν τὸ πλῆθος ἠγανάκτησε, καὶ κατεβόων τοῦ Κουμάνου κολάζειν τὸν στρατιώτην. Οἱ δὲ ἧττον νήφοντες τῶν νέων, καὶ τὸ φύσει στασιῶδες ἐκ τοῦ ἔθνους, ἐχώρουν ἐπὶ μάχην, λίθους τε ἁρπάσαντες εἰς τοὺς στρατιώτας ἔβαλλον. Καὶ Κούμανος, δείσας, μὴ τοῦ λαοῦ παντὸς ἐπ' αὐτὸν ὁρμὴ γένοιτο, πλείους ὁπλίτας μεταπέμπεται. Τῶν δὲ ταῖς στοαῖς ἐπιχεομένων, φόβος ἐμπίπτει τοῖς Ἰουδαίοις ἀκατάσχετος· καὶ τραπέντες ἐκ τοῦ ἱεροῦ διέφυγον εἰς τὴν πόλιν. Τοσαύτη δὲ περὶ τὰς ἐξόδους βία συνωθουμένων ἐγένετο, ὥςτε πατηθέντας ἀπ' ἀλλήλων καὶ συντριβέντας ὑπὲρ τοὺς μυρίους ἀποθανεῖν,
174 γενέσθαι δὲ τὴν ἑορτὴν πένθος μὲν ὅλῳ τῷ ἔθνει, θρῆνον δὲ καθ' ἑκάστην οἰκίαν.

2. Μεταλαμβάνει δὲ ταύτην τὴν συμφορὰν λῃστρικὸς ἄλλος θόρυβος. Κατὰ γὰρ τὴν Βαιθωρὼ δημοσίαν ὁδὸν Στεφάνου τινὸς, δούλου Καίσαρος, ἀποσκευὴν κομιζομένην διήρπασαν λῃσταὶ προςπεσόντες. Κούμανος δὲ περιπέμψας, τοὺς ἐκ τῶν πλη-

σίον κωμῶν δεσμώτας ἐκέλευσεν ἀνάγεσθαι πρὸς αὐτὸν, ἐπικαλῶν, ὅτι μὴ διώξαντες τοὺς λῃστὰς συλλάβοιεν. Ἔνθα στρατιωτῶν τις, εὑρὼν ἔν τινι κώμῃ τὸν ἱερὸν νόμον, διέῤῥηξέ τε τὸ βιβλίον, καὶ εἰς πῦρ κατέβαλεν. Ἰουδαῖοι δὲ, ὡς ὅλης αὐτοῖς τῆς χώρας καταφλεγείσης, συνεχύθησαν, καὶ καθάπερ ὀργάνῳ τινὶ τῇ δεισιδαιμονίᾳ συνελκόμενοι, εἰς ἓν κήρυγμα πάντες εἰς Καισάρειαν ἐπὶ Κούμανον συνέδραμον, ἱκετεύοντες τὸν οὕτως εἰς τὸν θεὸν καὶ τὸν νόμον αὐτοῦ ἐξυβρίσαντα μὴ περιϊδεῖν ἀτιμώρητον. Ὁ δὲ, οὐ γὰρ ἠρεμήσειν τὸ πλῆθος, εἰ μὴ τύχοι παραμυθίας, συνιδὼν, ἠξίου προςάγειν τε τὸν στρατιώτην, καὶ διὰ μέσων τῶν αἰτιωμένων ἀπαχθῆναι ἐπὶ θανάτῳ κελεύει. Καὶ Ἰουδαῖοι μὲν ἀνεχώρουν.

3. Αὖθις δὲ Γαλιλαίων καὶ Σαμαρέων γίνεται συμβολή. Κατὰ γὰρ τὴν Γημὰν καλουμένην κώμην, ἥτις ἐν τῷ μεγάλῳ πεδίῳ κεῖται τῆς Σαμαρείτιδος, πολλῶν ἀναβαινόντων Ἰουδαίων ἐπὶ τὴν ἑορτὴν, ἀναιρεῖταί τις Γαλιλαῖος. Πρὸς τοῦτο πλεῖστοι μὲν ἐκ τῆς Γαλιλαίας συνέδραμον, ὡς πολεμήσοντες τοῖς Σαμαρεῦσιν. Οἱ γνώριμοι δὲ αὐτῶν, ἐλθόντες πρὸς Κούμανον, ἠντιβόλουν, ʻπρὶν ἀνηκέστου πάθους εἰς τὴν Γαλιλαίαν διαβάντα, τιμωρήσασθαι τοὺς αἰτίους τοῦ φόνου· μόνως γὰρ ἂν οὕτως διαλυθῆναι πρὸ πολέμου τὸ πλῆθος.᾿ Κούμανος μὲν οὖν ἐν δευτέρῳ τὰς ἐκείνων ἱκεσίας τῶν ἐν χερσὶ πραγμάτων θέμενος, ἀπράκτους ἀπέπεμψε τοὺς ἱκέτας.

4. Ἀγγελθὲν δὲ τὸ πάθος εἰς Ἱεροσόλυμα τοῦ πεφονευμένου τὰ πλήθη συνετάραξε, καὶ τῆς ἑορτῆς ἀφέμενοι πρὸς τὴν Σαμάρειαν ἐξώρμησαν ἀστρατήγητοι, καὶ μηδενὶ τῶν ἀρχόντων κατέχοντι πειθόμενοι. Τοῦ λῃστρικοῦ δὲ αὐτῶν καὶ στασιώδους Δειναίου τις υἱὸς Ἐλεάζαρος καὶ Ἀλέξανδρος ἐξῆρχον, οἳ τοῖς ὁμόροις τῆς Ἀκραβατηνῆς τοπαρχίας προςπεσόντες, αὐτούς τε ἀνῄρουν μηδεμιᾶς ἡλικίας φειδὼ ποιούμενοι, καὶ τὰς κώμας ἀνεπίμπρασαν.

5. Κούμανος δὲ ἀναλαβὼν ἀπὸ τῆς Καισαρείας μίαν ἴλην ἱππέων καλουμένην Σεβαστηνῶν, ἐξεβοή-
175 θει τοῖς πορθουμένοις. Καὶ τῶν περὶ τὸν Ἐλεάζαρον πολλοὺς μὲν συνέλαβε, πλείστους δὲ ἀπέκτεινε. Πρὸς δὲ τὸ λοιπὸν πλῆθος τῶν πολεμεῖν τοῖς Σαμαρεῦσιν ὡρμημένων, οἱ ἄρχοντες τῶν Ἱεροσολύμων ἐκδραμόντες, σάκκους ἀμπεχόμενοι καὶ τέφραν τῶν κεφαλῶν καταχέοντες, ἱκέτευον ἀναχωρεῖν, καὶ μὴ διὰ τὴν εἰς Σαμαρεῖς ἄμυναν ἐπὶ Ἱεροσόλυμα Ῥωμαίους παροξύνειν· ἐλεῆσαι δὲ τὴν πατρίδα, καὶ τὸν ναὸν, τέκνα τε καὶ γυναῖκας ἰδίας, καὶ μὴ πάντα κινδυνεύειν δι᾽ ἑνὸς ἐκδικίαν Γαλιλαίου παραπολέσθαι.᾽ Τούτοις πεισθέντες οἱ Ἰουδαῖοι διελύθησαν· ἐτράποντο δὲ πολλοὶ πρὸς λῃστείαν διὰ τὴν ἄδειαν, καὶ κατὰ πᾶσαν τὴν χώραν ἁρπαγαί τε ἦσαν, καὶ τῶν θρασυτέρων ἐπαναστάσεις. Καὶ τῶν Σαμαρέων οἱ δυνατοὶ πρὸς Οὐμμίδιον Κουαδράτον, ὃς ἦν ἡγεμὼν τῆς Συρίας, εἰς Τύρον παραγενόμενοι, δίκην τινὰ παρὰ τῶν πορθησάντων τὴν χώραν λαβεῖν ἠξίουν. Παρόντες δὲ καὶ οἱ γνώριμοι τῶν Ἰουδαίων, καὶ ὁ ἀρχιερεὺς Ἰωνάθης υἱὸς Ἀνάνου, κατάρξαι μὲν ἔλεγον τῆς ταραχῆς Σαμαρέας διὰ τὸν φόνον, αἴτιον δὲ τῶν ἀποβεβηκότων Κούμανον γεγονέναι, μὴ θελήσαντα τοὺς αὐθέντας τοῦ σφαγέντος ἐπεξελθεῖν.

6. Κουαδράτος δὲ τότε μὲν ἑκατέρους ὑπερτίθεται, φήσας, ἐπειδὰν εἰς τοὺς τόπους παραγένηται, διερευνήσειν ἕκαστα. Αὖθις δὲ προελθὼν εἰς Καισάρειαν τοὺς ὑπὸ Κουμάνου ζωγρηθέντας ἀνεσταύρωσε πάντας· ἐκεῖθέν τε εἰς Λύδδαν παραγενόμενος πόλιν, διήκουσε τῶν Σαμαρέων, καὶ μεταπεμψάμενος ὀκτωκαίδεκα τῶν Ἰουδαίων, οὓς ἐπέπυστο μετεσχηκέναι τῆς μάχης, πελέκει διεχρήσατο. Δύο δὲ ἑτέρους τῶν δυνατωτάτων, καὶ τοὺς ἀρχιερεῖς Ἰωνάθην, καὶ Ἀνανίαν, τόν τε τούτου παῖδα Ἄνανον, καί τινας ἄλλους Ἰουδαίων γνωρίμους, ἀνέπεμψεν ἐπὶ Καίσαρα, ὁμοίως δὲ καὶ Σαμαρέων τοὺς

ἐπιφανεστάτους. Παρήγγειλε δὲ καὶ Κουμάνῳ καὶ Κέλερι τῷ χιλιάρχῳ πλεῖν ἐπὶ Ῥώμης, δώσοντας Κλαυδίῳ λόγον ὑπὲρ τῶν γεγενημένων. Ταῦτα διαπραξάμενος ἀπὸ Λυδδῶν ἀνέβαινεν εἰς Ἱεροσόλυμα· καὶ καταλαβὼν τὸ πλῆθος ἄγον τὴν τῶν ἀζύμων ἑορτὴν ἀθορύβως, εἰς Ἀντιόχειαν ἐπανήει.

7. Κατὰ δὲ τὴν Ῥώμην Καῖσαρ ἀκούσας Κουμάνου καὶ Σαμαρέων, — παρῆν δὲ καὶ Ἀγρίππας ἐκθύμως ὑπεραγωνιζόμενος Ἰουδαίων, ἐπειδὴ καὶ Κουμάνῳ πολλοὶ τῶν δυνατῶν παρίσταντο· — Σαμαρέων μὲν καταγνοὺς, τρεῖς ἀνελεῖν προςέταξε τοὺς δυνατωτάτους, Κούμανον δὲ ἐφυγάδευσε. Κέλερα δὲ δεσμώτην ἀναπέμψας εἰς Ἱεροσόλυμα παραδοθῆναι Ἰουδαίοις πρὸς αἰκίαν ἐκέλευσε, καὶ περισυ- 176
ρέντα τὴν πόλιν οὕτω τὴν κεφαλὴν ἀποκοπῆναι.

8. Μετὰ ταῦτα Ἰουδαίας μὲν ἐπίτροπον Φήλικα τὸν Πάλλαντος ἀδελφὸν ἐκπέμπει τῆς τε Γαλιλαίας καὶ Σαμαρείας καὶ Περαίας· ἐκ δὲ τῆς Χαλκίδος Ἀγρίππαν εἰς μείζονα βασιλείαν μετατίθησι, δοὺς αὐτῷ τήν τε Φιλίππου γενομένην τετραρχίαν· αὕτη δὲ ἦν Βαταναία καὶ Τραχωνῖτις καὶ Γαυλανῖτις· προςέθηκε δὲ τήν τε Λυσανίου βασιλείαν, καὶ τὴν Οὐάρου γενομένην ἐπαρχίαν. Αὐτὸς δὲ διοικήσας τὴν ἡγεμονίαν ἔτεσι τρισὶ καὶ δέκα, πρὸς δὲ μησὶν ὀκτὼ καὶ εἴκοσιν ἡμέραις, τελευτᾷ, καταλιπὼν Νέρωνα τῆς ἀρχῆς διάδοχον, ὃν ταῖς Ἀγριππίνης τῆς γυναικὸς ἀπάταις ἐπὶ κληρονομίᾳ τῆς ἀρχῆς εἰςεποιήσατο, καίπερ υἱὸν ἔχων γνήσιον Βρεττανικὸν ἐκ Μεσσαλίνης τῆς προτέρας γυναικὸς, καὶ Ὀκταουΐαν θυγατέρα τὴν ὑπ' αὐτοῦ ζευχθεῖσαν Νέρωνι· ἐγεγόνει δὲ αὐτῷ καὶ ἐκ Πετίνης Ἀντωνία.

CAP. XIII. 1. [d]Ὅσα μὲν οὖν Νέρων, δι' ὑπερβολὴν εὐδαιμονίας τε καὶ πλούτου παραφρονήσας, ἐξύβρισεν εἰς τὴν τύχην, ἢ τίνα τρόπον τόν τε ἀδελφὸν καὶ τὴν γυναῖκα καὶ τὴν μητέρα διεξῆλθεν, ἀφ' ὧν

εἰς τοὺς συγγενεστάτους μετήνεγκε τὴν ὠμότητα, καὶ ὡς τελευταῖον ὑπὸ φρενοβλαβείας ἐξώκειλεν εἰς σκηνὴν καὶ θέατρον, ἐπειδὴ δι' ὄχλου πᾶσίν ἐστι, παραλείψω. Τρέψομαι δὲ ἐπὶ τὰ Ἰουδαίοις κατ' αὐτὸν γενόμενα.

2. Τὴν μὲν οὖν μικρὰν Ἀρμενίαν δίδωσι μὲν βασιλεύειν Ἀριστοβούλῳ τῷ Ἡρώδου· τῇ δὲ Ἀγρίππα βασιλείᾳ τέσσαρας πόλεις προςτίθησι σὺν ταῖς τοπαρχίαις, Ἄβιλαν μὲν καὶ Ἰουλιάδα κατὰ τὴν Περαίαν, Ταριχαίας δὲ καὶ Τιβεριάδα τῆς Γαλιλαίας. Εἰς δὲ τὴν λοιπὴν Ἰουδαίαν Φήλικα κατέστησεν ἐπίτροπον· οὗτος τὸν ἀρχιληστὴν Ἐλεάζαρον ἔτεσιν εἴκοσι τὴν χώραν δηωσάμενον, καὶ πολλοὺς τοὺς σὺν αὐτῷ ζωγρήσας ἀνέπεμψεν εἰς Ῥώμην. Τῶν δὲ ἀνασταυρωθέντων ὑπ' αὐτοῦ λῃστῶν, καὶ τῶν ἐπὶ κοινωνίᾳ φωραθέντων οὓς ἐκόλασεν, ἄπειρόν τι πλῆθος ἦν.

177 3. Καθαρθείσης δὲ τῆς χώρας, ἕτερον εἶδος λῃστῶν ἐν Ἱεροσολύμοις ὑπεφύετο, οἱ καλούμενοι σικάριοι, μεθ' ἡμέραν καὶ ἐν μέσῃ τῇ πόλει φονεύοντες ἀνθρώπους· μάλιστα δὲ ἐν ταῖς ἑορταῖς μισγόμενοι τῷ πλήθει, καὶ ταῖς ἐσθήσεσιν ὑποκρύπτοντες μικρὰ ξιφίδια, τούτοις ἔνυττον τοὺς διαφόρους· ἔπειτα πεσόντων, μέρος ἐγίνοντο τῶν ἐπαγανακτούντων οἱ πεφονευκότες, διὸ καὶ παντάπασιν ὑπ' ἀξιοπιστίας ἦσαν ἀνεύρετοι. Πρῶτος μὲν οὖν ὑπ' αὐτῶν Ἰωνάθης ὁ ἀρχιερεὺς ἀποσφάζεται· μετὰ δὲ αὐτὸν καθ' ἡμέραν ἀνῃροῦντο πολλοί, καὶ τῶν συμφορῶν ὁ φόβος ἦν χαλεπώτερος, ἑκάστου καθάπερ ἐν πολέμῳ καθ' ὥραν τὸν θάνατον προςδεχομένου. Προεσκοποῦντο δὲ πόῤῥωθεν τοὺς διαφόρους, καὶ οὐδὲ τοῖς φίλοις προςιοῦσιν ἔτι πίστις ἦν· ἐν μέσαις δὲ ταῖς ὑπονοίαις καὶ ταῖς φυλακαῖς ἀνῃροῦντο, τοσοῦτον τῶν ἐπιβουλευόντων τὸ τάχος ἦν, καὶ τοῦ λαθεῖν ἡ τέχνη.

4. Συνέστη δὲ πρὸς τούτοις στῖφος ἕτερον πονηρῶν, χειρὶ μὲν καθαρώτερον, ταῖς γνώμαις δὲ ἀσεβέστερον,

ὅπερ οὐδὲν ἧττον τῶν σφαγίων τὴν εὐδαιμονίαν τῆς πόλεως ἐλυμήνατο· πλάνοι γὰρ ἄνθρωποι καὶ ἀπατεῶνες, προσχήματι θειασμοῦ νεωτερισμοὺς καὶ μεταβολὰς πραγματευόμενοι, δαιμονᾶν τὸ πλῆθος ἀνέπειθον, καὶ προῆγον εἰς τὴν ἐρημίαν, ὡς ἐκεῖ τοῦ θεοῦ δείξαντος αὐτοῖς σημεῖα ἐλευθερίας. Ἐπὶ τούτοις ὁ Φῆλιξ — ἐδόκει γὰρ ἀποστάσεως εἶναι καταβολή — πέμψας ἱππεῖς καὶ πεζοὺς ὁπλίτας πολὺ πλῆθος διέφθειρε.

5. Μείζονι δὲ ταύτης πληγῇ Ἰουδαίους ἐκάκωσεν ὁ Αἰγύπτιος ψευδοπροφήτης. Παραγενόμενος γὰρ εἰς τὴν χώραν ἄνθρωπος γόης, καὶ προφήτου πίστιν ἐπιθεὶς ἑαυτῷ, περὶ τρισμυρίους μὲν ἀθροίζει τῶν ἠπατημένων. Περιαγαγὼν δὲ αὐτοὺς ἐκ τῆς ἐρημίας εἰς τὸ Ἐλαιῶν καλούμενον ὄρος, ἐκεῖθεν οἷός τε ἦν εἰς Ἱεροσόλυμα παρελθεῖν βιάζεσθαι, καὶ κρατήσας τῆς τε Ῥωμαϊκῆς φρουρᾶς καὶ τοῦ δήμου τυραννεῖν, χρώμενος τοῖς συνειςπεσοῦσι δορυφόροις. Φθάνει δὲ αὐτοῦ τὴν ὁρμὴν Φῆλιξ ὑπαντιάσας μετὰ τῶν Ῥωμαϊκῶν ὁπλιτῶν, καὶ πᾶς ὁ δῆμος συνεφήψατο τῆς ἀμύνης· ὥςτε, συμβολῆς γενομένης, τὸν μὲν Αἰγύπτιον φυγεῖν μετ᾽ ὀλίγων, διαφθαρῆναι δὲ 178 καὶ ζωγρηθῆναι πλείστους τῶν σὺν αὐτῷ, τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος σκεδασθὲν ἐπὶ τὴν ἑαυτῶν ἕκαστον διαλαθεῖν.

6. Κατεσταλμένων δὲ καὶ τούτων, ὥςπερ ἐν νοσοῦντι σώματι, πάλιν ἕτερον μέρος ἐφλέγμαινεν. Οἱ γὰρ γόητες καὶ λῃστρικοὶ συναχθέντες πολλοὺς εἰς ἀπόστασιν ἐνῆγον, καὶ πρὸς ἐλευθερίαν παρεκρότουν, θάνατον ἐπιτιμῶντες τοῖς πειθαρχοῦσι τῇ Ῥωμαίων ἡγεμονίᾳ, καὶ πρὸς βίαν ἀφαιρεθήσεσθαι λέγοντες τοὺς ἑκουσίως δουλεύειν προαιρουμένους. Μεριζόμενοι γὰρ εἰς τὴν χώραν κατὰ λόχους, διήρπαζόν τε τὰς τῶν δυνατῶν οἰκίας, καὶ αὐτοὺς ἀνῄρουν, καὶ τὰς κώμας ἐνεπίμπρασαν, ὥςτε τῆς ἀπο-

νοίας αὐτῶν πᾶσαν τὴν Ἰουδαίαν ἀναπίμπλασθαι· καὶ οὗτος μὲν ὁ πόλεμος καθ' ἡμέραν ἀνεῤῥιπίζετο.

7. Ἑτέρα δὲ ταραχὴ συνίσταται περὶ Καισάρειαν, τῶν ἀναμεμιγμένων Ἰουδαίων πρὸς τοὺς ἐν αὐτῇ Σύρους στασιασάντων. Οἱ μὲν γὰρ ἠξίουν σφετέραν εἶναι τὴν πόλιν, Ἰουδαῖον γεγονέναι τὸν κτίστην αὐτῆς λέγοντες· ἦν δὲ Ἡρώδης ὁ βασιλεύς. Οἱ δὲ ἕτεροι τὸν οἰκιστὴν μὲν προςωμολόγουν Ἰουδαῖον, αὐτὴν μέντοι γε τὴν πόλιν Ἑλλήνων ἔφασαν· οὐ γὰρ ἂν ἀνδριάντας καὶ ναοὺς ἐγκαθιδρῦσαι, Ἰουδαίοις αὐτὴν ἀνατιθέντα. Διὰ ταῦτα μὲν ἠμφισβήτουν ἑκάτεροι, προῄει δὲ αὐτοῖς τὸ φιλόνεικον εἰς ὅπλα, καὶ καθ' ἡμέραν οἱ θρασύτεροι παρ' ἀμφοῖν προεπήδων ἐπὶ μάχην· οὔτε γὰρ Ἰουδαίων οἱ γεραιοὶ τοὺς ἰδίους στασιαστὰς κατέχειν οἷοί τε ἦσαν, καὶ τοῖς Ἕλλησιν αἶσχος ἐδόκει Ἰουδαίων ἐλαττοῦσθαι. Προεῖχον δὲ οἱ μὲν πλούτῳ καὶ σωμάτων ἀλκῇ, τὸ δὲ Ἑλληνικὸν τῇ παρὰ τῶν στρατιωτῶν ἀμύνῃ· τὸ γὰρ πλέον Ῥωμαίοις τῆς ἐκεῖ δυνάμεως ἐκ Συρίας ἦν κατειλεγμένον, καὶ καθάπερ συγγενεῖς ἦσαν εἰς τὰς βοηθείας ἕτοιμοι. Τοῖς γε μὴν ἐπάρχοις φροντὶς ἦν ἀναστέλλειν τὴν ταραχὴν, καὶ τοὺς μαχιμωτέρους ἑκατέρωθεν ἀεὶ συλλαμβάνοντες ἐκόλαζον μάστιξι καὶ δεσμοῖς· οὐ μὴν τὰ πάθη τῶν συλλαμβανομένων ἐνεποίει τοῖς καταλειπομένοις ἀνακοπὴν ἢ δέος, ἀλλ' ἔτι μᾶλλον παρωξύνοντο πρὸς τὴν στάσιν. Νικῶντας δέ ποτε τοὺς Ἰουδαίους παρελθὼν εἰς τὴν ἀγορὰν ὁ Φῆλιξ μετὰ ἀπειλῆς ἐκέλευσεν ἀναχωρεῖν· τῶν δὲ μὴ πειθομένων ἐπιπέμψας τοὺς στρατιώτας ἀναιρεῖ συχνοὺς, ὧν διαρπαγῆναι συνέβη καὶ τὰς οὐσίας. Μενούσης δὲ τῆς στάσεως, ἐπιλέξας ἑκατέρωθεν τοὺς γνωρίμους ἔπεμψε πρέσβεις ἐπὶ Νέρωνα, διαλεξομένους περὶ τῶν δικαίων.

179 *CAP. XIV.* 1. Διαδεξάμενος δὲ παρὰ τούτου τὴν ἐπιτροπὴν Φῆστος, τὸ μάλιστα λυμαινόμενον τὴν

χώραν ἐπεξῄει· τῶν γοῦν λῃστῶν συνέλαβε τοὺς πλείστους, καὶ διέφθειρεν οὐκ ὀλίγους. Ἀλλ' οὐχ ὁ μετὰ Φῆστον Ἀλβῖνος τὸν αὐτὸν τρόπον ἐξηγήσατο τῶν πραγμάτων· οὐκ ἔστι δὲ ἥντινα κακουργίας ἰδέαν παρέλιπεν. Οὐ μόνον γοῦν ἐν τοῖς πολιτικοῖς πράγμασιν ἔκλεπτε καὶ διήρπαζε τὴν ἑκάστων οὐσίαν, οὐδὲ τὸ πᾶν ἔθνος ἐβάρει ταῖς εἰςφοραῖς, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐπὶ λῃστείᾳ δεδεμένους, ὑπὸ τῆς παρ' ἑκάστοις βουλῆς, ἢ τῶν προτέρων ἐπιτρόπων, ἀπελύτρου τοῖς συγγενέσι. Καὶ μόνος ὁ μὴ δοὺς τοῖς δεσμωτηρίοις ὡς πονηρὸς ἐγκατελείπετο. Τηνικαῦτα καὶ τῶν νεωτερίζειν βουλομένων ἐν Ἱεροσολύμοις ἐθάρσησαν αἱ τόλμαι, καὶ χρήμασι μὲν οἱ δυνατοὶ τὸν Ἀλβῖνον προςελάμβανον, ὥςτε τοῦ στασιάζειν αὐτοῖς παρέχειν ἄδειαν. Τοῦ δημοτικοῦ δὲ τὸ μὴ χαῖρον ἡσυχίᾳ πρὸς τοὺς Ἀλβίνου κοινωνοὺς ἀπέκλινεν· ἕκαστος δὲ τῶν πονηρῶν ἴδιον στίφος ὑπεζωσμένος, αὐτὸς μὲν ὥςπερ ἀρχιλῃστὴς ἢ τύραννος προανεῖχεν ἐκ τοῦ λόχου, τοῖς δορυφοροῦσι δὲ πρὸς ἁρπαγὰς τῶν μετρίων κατεχρῆτο. Συνέβαινε δὲ τοὺς μὲν ἀφῃρημένους, ὑπὲρ ὧν ἀγανακτεῖν ἐχρῆν, σιωπᾶν, τοὺς ἀπλῆγας δὲ, δέει τοῦ μὴ τὰ αὐτὰ παθεῖν, καὶ κολακεύειν τὸν ἄξιον κολάσεως. Καθόλου δὲ ἡ μὲν παῤῥησία πάντων περιεκέκοπτο, τυραννὶς δὲ ἦν διὰ πλειόνων. Καὶ τὰ σπέρματα τῆς μελλούσης ἁλώσεως ἐκ τότε τῇ πόλει κατεβάλλετο.

2. Τοιοῦτον δὲ ὄντα τὸν Ἀλβῖνον ἀπέδειξεν ὁ μετὰ τοῦτον ἐλθὼν Γέσσιος Φλῶρος ἀγαθώτατον κατὰ σύγκρισιν. Ὁ μὲν γε λάθρα τὰ πολλὰ, καὶ μεθ' ὑποστολῆς ἐκακούργησε, Γέσσιος δὲ τὰς εἰς τὸ ἔθνος παρανομίας ἐπόμπευσε. Καὶ ὥςπερ ἐπὶ τιμωρίᾳ κατακρίτων πεμφθεὶς δήμιος, οὔτε ἁρπαγῆς τινα τρόπον, οὔτε αἰκίας παρέλιπεν. Ἦν δὲ ἐν μὲν τοῖς ἐλεεινοῖς ὠμότατος, ἐν δὲ τοῖς αἰσχροῖς ἀναιδέστατος. Οὔτε δὲ πλείω τις ἀπιστίαν τῆς ἀληθείας κατέχεεν, οὔτε ἐν τῷ πανουργεῖν δολιωτέρας ὁδοὺς

ἐπενόησεν· ᾧ τὸ μὲν κατ᾽ ἄνδρα κερδαίνειν, μικρὸν ἐδόκει, πόλεις δὲ ὅλας ἐξεδίδυσκε, καὶ δήμους ἀθρόους ἐλυμαίνετο, καὶ μόνον οὐκ ἐκήρυξεν ἀνὰ τὴν χώραν πᾶσιν ἐξεῖναι λῃστεύειν, ἐφ᾽ ᾧ μέρος αὐτὸς λήψεται τῶν λαφύρων. Διὰ γοῦν τὴν ἐκείνου πλεονεξίαν πάσας ἐρημωθῆναι συνέβη τὰς τοπαρχίας, καὶ
180 πολλοὺς τῶν πατρίων ἐθῶν ἐξαναστάντας φυγεῖν εἰς τὰς ἀλλοφύλους ἐπαρχίας.

3. Μέχρι μὲν οὖν ἐν Συρίᾳ Κέστιος Γάλλος ἦν προδιέπων τὴν ἐπαρχίαν, οὐδὲ πρεσβεύσασθαί τις πρὸς αὐτὸν ἐτόλμησε κατὰ τοῦ Φλώρου. Παραγενόμενον δὲ εἰς Ἱεροσόλυμα, τῆς τῶν ἀζύμων ἑορτῆς ἐνστάσης, περιστὰς ὁ δῆμος, οὐκ ἐλάττους τριακοσίων μυριάδων, ἱκέτευον ἐλεῆσαι τὰς τοῦ ἔθνους συμφορὰς, καὶ τὸν λυμεῶνα τῆς χώρας Φλῶρον ἐκεκράγεσαν. Ὁ δὲ παρὼν, καὶ τῷ Κεστίῳ παρεστὼς, διεχλεύαζε τὰς φωνάς· ὅ γε μὴν Κέστιος, τὴν ὁρμὴν τοῦ πλήθους καταστείλας, καὶ δοὺς ἔμφασιν, ὡς πρὸς τὸ μέλλον αὐτοῖς τὸν Φλῶρον κατασκευάσειε μετριώτερον, ὑπέστρεψεν εἰς Ἀντιόχειαν. Προέπεμπε δὲ αὐτὸν μέχρι Καισαρείας Φλῶρος ἐξαπατῶν, καὶ πόλεμον ἤδη τῷ ἔθνει θυμούμενος ἐπορίζετο, ᾧ μόνῳ συγκρύψειν τὰς αὐτοῦ παρανομίας ὑπελάμβανεν. Εἰρήνης μὲν γὰρ οὔσης, κατηγόρους ἕξειν ἐπὶ Καίσαρος Ἰουδαίους προςεδόκα· πραγματευσάμενος δὲ ἀπόστασιν αὐτῶν τῷ μείζονι κακῷ περισπάσειν τὸν ἔλεγχον αὐτῶν ἀπὸ τῶν μετριωτέρων. Ὁ μὲν οὖν, ὡς ἂν ἀποῤῥαγείη τὸ ἔθνος, καθ᾽ ἡμέραν ἐπέτεινεν αὐτοῖς τὰς συμφοράς.

4. Ἐν δὲ τούτῳ καὶ οἱ Καισαρέων Ἕλληνες, νικήσαντες παρὰ Νέρωνι τῆς πόλεως ἄρχειν, τὰ τῆς κρίσεως ἐκόμισαν γράμματα, καὶ προςελάμβανε τὴν ἀρχὴν ὁ πόλεμος δωδεκάτῳ μὲν ἔτει τῆς Νέρωνος ἡγεμονίας, ἑπτακαιδεκάτῳ δὲ τῆς Ἀγρίππα βασιλείας, Ἀρτεμισίου μηνός. Πρὸς δὲ τὸ μέγεθος τῶν ἐξ αὐτοῦ συμφορῶν οὐκ ἀξίαν ἔσχε πρόφασιν. Οἱ

γὰρ ἐν Καισαρείᾳ Ἰουδαῖοι, συναγωγὴν ἔχοντες παρὰ χωρίον, οὗ δεσπότης ἦν τις Ἕλλην Καισαρεὺς, πολλάκις μὲν κτήσασθαι τὸν τόπον ἐσπούδασαν, τιμὴν πολλαπλασίονα τῆς ἀξίας διδόντες. Ὡς δὲ ὑπερορῶν τὰς δεήσεις, πρὸς ἐπήρειαν ἔτι καὶ προςῳκοδόμει τὸ χωρίον ἐκεῖνος, ἐργαστήρια κατασκευαζόμενος, στενὴν δὲ καὶ παντάπασι βιαίαν πάροδον ἀπέλιπεν αὐτοῖς. Τὸ μὲν πρῶτον οἱ θερμότεροι τῶν νέων προπηδῶντες οἰκοδομεῖν ἐκώλυον. Ὡς δὲ τούτους εἶργε τῆς βίας Φλῶρος, ἀμηχανοῦντες οἱ δυνατοὶ τῶν Ἰουδαίων, σὺν οἷς ὁ τελώνης Ἰωάννης, πείθουσι τὸν Φλῶρον ἀργυρίου ταλάντοις ὀκτὼ, διακωλῦσαι τὸ ἔργον. Ὁ δὲ πρὸς μόνον τὸ λαβεῖν ὑποσχόμενος πάντα συμπράξειν, λαβὼν ἔξεισι τῆς Καισαρείας εἰς Σεβαστὴν, καὶ καταλείπει τὴν στάσιν αὐτεξούσιον, ὥςπερ ἄδειαν πεπρακὼς Ἰουδαίοις τοῦ μάχεσθαι.

5. Τῆς δὲ ἐπιούσης ἡμέρας ἑβδομάδος οὔσης, τῶν Ἰουδαίων εἰς τὴν συναγωγὴν ἀθροισθέντων, στασιαστής τις Καισαρεὺς γάστραν καταστρέψας, καὶ παρὰ τὴν εἴςοδον αὐτῶν θέμενος ἐπέθυεν ὄρνεις. Τοῦτο τοὺς Ἰουδαίους ἀνηκέστως παρώξυνεν, ὡς 181
ὑβρισμένων μὲν αὐτοῖς τῶν νόμων, μεμιαμμένου δὲ τοῦ χωρίου. Τὸ μὲν οὖν εὐσταθὲς καὶ πρᾷον ἐπὶ τοὺς ἡγεμόνας καταφεύγειν πάλιν ᾤετο χρῆναι, τὸ στασιῶδες δὲ καὶ ἐν νεότητι φλεγμαῖνον ἐξεκαίετο πρὸς μάχην. Παρεσκευασμένοι δὲ εἱστήκεσαν οἱ τῶν Καισαρέων στασιασταὶ, τὸν γὰρ ἐπιθύσαντα προπεπόμφεσαν ἐκ συντάγματος. Καὶ ταχέως ἐγένετο ἡ συμβολή. Προςελθὼν δὲ Ἰουκοῦνδος ὁ διακωλύειν τεταγμένος ἱππάρχης, τήν τε γάστραν αἱρεῖ καὶ καταπαύειν ἐπειρᾶτο τὴν στάσιν. Ἡττωμένου δὲ αὐτοῦ τῆς τῶν Καισαρέων βίας, Ἰουδαῖοι τοὺς νόμους ἁρπάσαντες ἀνεχώρησαν εἰς Νάρβατα· χώρα τις αὐτῶν οὕτω καλεῖται, σταδίους ἑξήκοντα διέχουσα τῆς Καισαρείας. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰωάννην

δυνατοὶ δώδεκα πρὸς Φλῶρον ἐλθόντες εἰς Σεβαστὴν, ἀπωδύροντο περὶ τῶν πεπραγμένων, καὶ βοηθεῖν ἱκέτευον, αἰδημόνως ὑπομιμνήσκοντες τῶν ὀκτὼ ταλάντων. Ὁ δὲ καὶ συλλαβὼν ἔδησε τοὺς ἄνδρας, αἰτιώμενος ὑπὲρ τοῦ τοὺς νόμους ἐξενεγκεῖν τῆς Καισαρείας.

6. Πρὸς τοῦτο τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις ἀγανάκτησις ἦν. Ἔτι μέντοι καὶ τοὺς θυμοὺς κατεῖχον. Ὁ δὲ Φλῶρος, ὥςπερ ἐργολαβηκὼς, ἐκριπίζει τὸν πόλεμον· καὶ πέμψας ἐπὶ τὸν ἱερὸν θησαυρὸν, ἐξαίρει ἑπτακαίδεκα τάλαντα, σκηψάμενος εἰς τὰς Καίσαρος χρείας. Σύγχυσις δὲ εὐθέως εἶχε τὸν δῆμον, καὶ συνδραμόντες εἰς τὸ ἱερὸν βοαῖς διαπρυσίοις καὶ τὸ Καίσαρος ἀνεκάλουν ὄνομα, καὶ τῆς Φλώρου τυραννίδος ἐλευθεροῦν σφᾶς ἱκέτευον. Ἔνιοι δὲ τῶν στασιαστῶν λοιδορίας αἰσχίστους εἰς τὸν Φλῶρον ἐκεκράγεσαν, καὶ κανοῦν περιφέροντες ἐπήτουν αὐτῷ κέρμα, καθάπερ ἀκλήρῳ καὶ ταλαιπώρῳ. Τούτοις οὐκ ἐνετράπη τὴν φιλαργυρίαν, ἀλλ' ἐπὶ τῷ μᾶλλον χρηματίσασθαι προσωργίσθη. Δέον γοῦν εἰς Καισάρειαν ἐλθόντα σβέσαι τὸ τοῦ πολέμου πῦρ ἐκεῖθεν ἀρχόμενον, καὶ τῆς ταραχῆς ἀνελεῖν τὰς αἰτίας, ἐφ' ᾧ καὶ μισθὸν ἔλαβεν, ὁ δὲ μετὰ στρατιᾶς ἱππικῆς τε καὶ πεζικῆς ἐπὶ Ἱεροσολύμων ὥρμησεν, ἵνα τοῖς Ῥωμαίων ὅπλοις ἐργάζηται τὸ βουλόμενον, καὶ τῷ δέει καὶ ταῖς ἀπειλαῖς περιδύσῃ τὴν πόλιν.

7. Ὁ δὲ δῆμος προδυςωπῆσαι τὴν ὁρμὴν αὐτοῦ βουλόμενος, ὑπαντᾷ τοῖς στρατιώταις μετ' εὐφημίας, καὶ τὸν Φλῶρον θεραπευτικῶς ἐκδέχεσθαι παρεσκεύαστο. Καὶ ἐκεῖνος προπέμψας σὺν ἱππεῦσιν πεντήκοντα Καπίτωνα ἑκατοντάρχην, ἀναχωρεῖν αὐτοὺς ἐκέλευσε, καὶ μὴ πρὸς ὃν οὕτως ἐλοιδόρησαν αἰσχρῶς, εἰρωνεύεσθαι τὰς νῦν φιλοφρονήσεις· δεῖν γὰρ αὐτοὺς, εἴπερ γενναῖοί εἰσι καὶ παῤῥησιασταί, σκώπτειν μὲν αὐτὸν καὶ παρόντα· φαίνεσθαι δὲ μὴ

μόνον ἐν τοῖς λόγοις, ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς ὅπλοις φι-
λελευθέρους.' Τούτοις καταπλαγὲν τὸ πλῆθος, ἅμα
καὶ τῶν περὶ Καπίτωνα ἱππέων εἰς μέσους φερομέ-
νων, διεσκεδάσθη, πρὶν ἀσπάσασθαι τὸν Φλῶρον, 182
ἢ τοῖς στρατιώταις φανερὸν ποιῆσαι τὸ πειθήνιον.
Ἀναχωρήσαντες δὲ εἰς τὰς οἰκίας μετὰ δέους καὶ
ταπεινότητος διενυκτέρευσαν.

8. Φλῶρος δὲ τότε μὲν ἐν τοῖς βασιλείοις αὐλίζεται, τῇ δὲ ὑστεραίᾳ βῆμα πρὸ αὐτῶν θέμενος καθέζεται, καὶ προσελθόντες οἵ τε ἀρχιερεῖς καὶ δυνατοὶ, τό τε γνωριμώτατον τῆς πόλεως πᾶν, παρέστησαν τῷ βήματι. Τούτοις ὁ Φλῶρος ἐκέλευσε ‘τοὺς λοιδορήσαντας αὐτὸν ἐκδοῦναι, φάμενος αὐτοὺς ἀπολαύσειν τῆς ἀμύνης, εἰ μὴ προσάγοιεν τοὺς αἰτίους.' Οἱ δὲ ‘τὸν μὲν δῆμον ἀπέφαινον εἰρηνικὰ φρονοῦντα, τοῖς δὲ παραφθεγξαμένοις ᾐτοῦντο συγγνώμην· ἐν γὰρ τοσούτῳ πλήθει θαυμαστὸν οὐδὲν εἶναί τινας θρασυτέρους, καὶ δι' ἡλικίαν ἄφρονας· ἀμήχανον δὲ τῶν ἡμαρτηκότων τὴν διάκρισιν γενέσθαι, ἑκάστου μετανοοῦντός τε, καὶ δὲ ἃ δέδοικεν ἀρνουμένου· δεῖν μέντοι γε ἐκεῖνον προνοεῖν τῆς κατὰ τὸ ἔθνος εἰρήνης, καὶ βουλεύεσθαι Ῥωμαίοις περισώζειν τὴν πόλιν, καὶ μᾶλλον διὰ τοὺς πολλοὺς ἀκαταιτιάτους συγγνῶναι καὶ τοῖς ὀλίγοις πλημμελήσασιν, ἢ δι' ὀλίγους πονηροὺς ταράξαι δῆμον ἀγαθὸν τοσοῦτον.'

9. Πρὸς ταῦτα μᾶλλον παροξυνθεὶς ἐμβοᾷ τοῖς στρατιώταις, διαρπάζειν τὴν ἄνω καλουμένην ἀγορὰν, καὶ κτείνειν τοὺς ἐντυγχάνοντας. Οἱ δὲ, ἐπιθυμίᾳ κέρδους προσλαμβάνοντες ἡγεμονικὴν παρακέλευσιν, οὐ μόνον ἐφ' ὃν ἐπέμφθησαν τόπον ἥρπαζον, ἀλλ' εἰς πάσας ἐμπηδῶντες τὰς οἰκίας, ἔσφαζον τοὺς οἰκήτορας. Φυγὴ δὲ ἦν ἐκ τῶν στενωπῶν, καὶ φόνος τῶν καταλαμβανομένων, τρόπος τε ἁρπαγῆς οὐδεὶς παρελιμπάνετο. Καὶ πολλοὺς τῶν μετρίων συλλαμβάνοντες ἐπὶ τὸν Φλῶρον ἦγον, οὓς μάστιξι

προαικισάμενος ἀνεσταύρωσεν. Ὁ γοῦν σύμπας τῶν ἐκείνης ἀπολομένων τῆς ἡμέρας ἀριθμὸς σὺν γυναιξὶν καὶ παιδίοις, οὐδὲ γὰρ νηπίων ἀπέσχοντο, περὶ τρισχιλίους καὶ ἑξακοσίους συνήχθη. Βαρυτέραν δὲ ἐποίει τὴν συμφορὰν τὸ καινὸν τῆς Ῥωμαίων ὠμότητος· ὃ γὰρ μηδεὶς πρότερον τότε Φλῶρος ἐτόλμησεν, ἄνδρας ἱππικοῦ τάγματος μαστιγῶσαι πρὸ τοῦ βήματος, καὶ σταυρῷ προσηλῶσαι, ὧν εἰ καὶ τὸ γένος Ἰουδαῖον, ἀλλὰ τὸ γοῦν ἀξίωμα Ῥωμαϊκὸν ἦν.

CAP. XV. 1. Κατὰ τοῦτον τὸν καιρὸν ὁ μὲν βασιλεὺς Ἀγρίππας ἔτυχεν εἰς τὴν Ἀλεξάνδρειαν πεπορευμένος, ὅπως Ἀλεξάνδρῳ συνησθείη πεπιστευμένῳ τὴν Αἴγυπτον ὑπὸ Νέρωνος, καὶ πεμφθέντι διέ-
183 πειν. Τὴν δὲ ἀδελφὴν αὐτοῦ Βερνίκην παροῦσαν ἐν Ἱεροσολύμοις, καὶ τὴν παρανομίαν τῶν στρατιωτῶν ἀποθεωμένην, δεινὸν εἰσῄει πάθος. Καὶ πολλάκις τούς τε ἱππάρχας αὐτῆς καὶ σωματοφύλακας πέμπουσα πρὸς Φλῶρον ἐδεῖτο παύσασθαι τοῦ φόνου. Καὶ ὁ μὲν οὔτε εἰς τὸ πλῆθος τῶν ἀναιρουμένων, οὔτε εἰς τὴν εὐγένειαν τῆς παρακαλούσης, ἀλλ᾽ εἰς μόνον τὸ λυσιτελὲς τὸ ἐκ τῶν ἁρπαγῶν ἀποβλέπων παρήκουσεν. Ἡ δὲ ὁρμὴ τῶν στρατιωτῶν ἐλύσσησε καὶ κατὰ τῆς βασιλίδος· οὐ μόνον γοῦν ἐν ὄμμασιν αὐτῆς ᾐκίζοντο τοὺς ἁλισκομένους καὶ διέφθειρον, ἀλλὰ καὶ ἂν αὐτὴν ἀνεῖλον, εἰ μὴ καταφυγεῖν εἰς τὴν βασιλικὴν αὐλὴν ἔφθη· καὶ ἐκεῖ διενυκτέρευσε μετὰ φυλακῆς, δεδοικυῖα τὴν τῶν στρατιωτῶν ἔφοδον. Ἐπεδήμει δὲ ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις, εὐχὴν ἐκτελοῦσα τῷ θεῷ· τοὺς γὰρ ἢ νόσῳ καταπονουμένους, ἤ τισιν ἄλλαις ἀνάγκαις, ἔθος εὔχεσθαι πρὸ τριάκοντα ἡμερῶν, ἧς ἀποδώσειν μέλλοιεν θυσίας, οἴνου τε ἀφέξεσθαι, καὶ ξυρήσασθαι τὰς κόμας. Ἃ δὴ τότε τελοῦσα Βερνίκη, γυμνόπους τε πρὸ τοῦ βήματος ἱκέτευσε τὸν Φλῶρον, καὶ πρὸς

τὸ μὴ τυχεῖν αἰδοῦς αὐτὴν, τὸν περὶ τοῦ ζῆν κίνδυνον ἐπείρασεν.

2. Ταῦτα μὲν οὖν ἑκκαιδεκάτῃ μηνὸς Ἀρτεμισίου συνέβη· τῇ δὲ ἐπιούσῃ τὸ μὲν πλῆθος ὑπερπαθῆσαν εἰς τὴν ἄνω συνέῤῥευσεν ἀγορὰν, καὶ βοαῖς ἐξαισίοις περὶ τῶν ἀπολωλότων ἀνωδύροντο. Τὸ πλέον δὲ ἦσαν εἰς τὸν Φλῶρον ἐπίφθονοι φωναί· πρὸς ὃ δείσαντες οἱ δυνατοὶ σὺν τοῖς ἀρχιερεῦσι τὰς ἐσθῆτας περιεῤῥήξαντο, καὶ προσπίπτοντες ἑκάστοις, ἐδέοντο παύσασθαι, καὶ μὴ πρὸς οἷς πεπόνθασιν εἰς ἀνήκεστόν τι τὸν Φλῶρον ἐρεθίζειν. Ἐπείσθη δὲ τὸ πλῆθος ταχέως, αἰδοῖ τε τῶν παρακαλούντων, καὶ κατ᾿ ἐλπίδα τοῦ μηδὲν ἔτι τὸν Φλῶρον εἰς αὐτοὺς παρανομήσειν.

3. Ὁ δὲ σβεσθείσης τῆς ταραχῆς ἤχθετο, καὶ πάλιν αὐτὴν ἀνάψαι πραγματευόμενος, τούς τε ἀρχιερεῖς σὺν τοῖς γνωρίμοις μεταπέμπεται, καὶ ‘μόνον, ἔφη, τεκμήριον ἔσεσθαι τοῦ μηδὲν ἔτι τὸν δῆμον νεωτερίσειν, εἰ προελθόντες ὑπαντήσουσι τοῖς ἀπὸ Καισαρείας ἀνιοῦσι στρατιώταις·’ παρεγένοντο δὲ δύο σπεῖραι. Τῶν δὲ ἔτι συγκαλούντων τὸ πλῆθος, προπέμψας διεδήλου τοῖς τῶν σπειρῶν ἑκατοντάρχαις, ὅπως παραγγείλωσι τοῖς ὑφ᾿ ἑαυτοὺς, μήτε ἀντασπάσασθαι τοὺς Ἰουδαίους, καὶ ἐάν τι κατ᾿ αὐτοῦ φθέγξωνται, χρήσασθαι τοῖς ὅπλοις. Οἱ δὲ ἀρχιερεῖς εἰς τὸ ἱερὸν τὴν πληθὺν συναγαγόντες ὑπαντᾷν τοῖς Ῥωμαίοις παρεκάλουν, καὶ πρὸ ἀνηκέστου πάθους τὰς σπείρας δεξιοῦσθαι. Τούτοις τὸ στασιῶδες ἠπείθει, καὶ διὰ τοὺς ἀπολωλότας τὸ πλῆθος ἔῤῥεπε πρὸς τοὺς θρασυτέρους.

4. Ἔνθα δὴ πᾶς μὲν ἱερεὺς, πᾶς δὲ ὑπηρέτης τοῦ θεοῦ, τὰ ἅγια σκεύη προκομίσαντες, καὶ τὸν κόσμον, ἐν ᾧ λειτουργεῖν ἔθος ἦν αὐτοῖς, ἀναλαβόντες, κιθαρισταί τε καὶ ὑμνῳδοὶ, μετὰ τῶν ὀργάνων προσπίπτοντες, κατηντιβόλουν φυλάξαι τὸν ἱερὸν κόσμον αὐτοῖς, καὶ μὴ πρὸς ἁρπαγὴν τῶν θείων

κειμηλίων Ῥωμαίους ἐρεθίσαι. Τοὺς δὲ ἀρχιερεῖς
αὐτοὺς ἦν ἰδεῖν καταμωμένους μὲν τῆς κεφαλῆς κό-
νιν, γυμνοὺς δὲ τὰ στέρνα τῶν ἐσθήτων περιεῤῥη-
γμένων. Ὀνομαστὶ δὲ ἕκαστον τῶν γνωρίμων καὶ
κοινῇ τὸ πλῆθος ἱκέτευον, 'μὴ δι' ἐλαχίστης πλημ-
184 μελείας προδοῦναι τὴν πατρίδα τοῖς ἐπιθυμοῦσι
πορθῆσαι. Τίνα γὰρ ἢ τοῖς στρατιώταις φέρειν
ὠφέλειαν τὸν ἀπὸ Ἰουδαίων ἀσπασμὸν, ἢ διόρθω-
σιν αὐτοῖς τῶν συμβεβηκότων, τὸ μὴ νῦν προελ-
θεῖν; Εἰ δὲ δὴ δεξιώσαιντο τοὺς προσιόντας, ὡς
ἔθος, Φλώρου μὲν ἀποκοπήσεσθαι τὴν ἀφορμὴν τοῦ
πολέμου, κερδήσειν δὲ αὐτοὺς τὴν πατρίδα, καὶ τὸ
μηδὲν παθεῖν πλέον. Ἄλλως τε καὶ τὸ πείθεσθαι
στασιάζουσιν ὀλίγοις, δέον αὐτοὺς δῆμον ὄντας το-
σοῦτον συναναγκάζειν καὶ ἐκείνους συγγνωμονεῖν,
δεινῆς ἀκρασίας εἶναι.'

5. Τούτοις μειλισσόμενοι τὸ πλῆθος, ἅμα καὶ
τῶν στασιαστῶν οὓς μὲν ἀπειλαῖς οὓς δὲ αἰδοῖ κατ-
έστειλαν. Ἔπειτα ἐξηγούμενοι μεθ' ἡσυχίας τε καὶ
κόσμου τοῖς στρατιώταις ὑπήντων, καὶ πλησίον γε-
νομένους ἠσπάσαντο. Τῶν δὲ μηδὲν ἀποκριναμένων,
οἱ στασιασταὶ Φλώρου κατεβόων· τοῦτο δὲ ἦν σύν-
θημα κατ' αὐτῶν δεδομένων. Αὐτίκα γοῦν οἱ στρα-
τιῶται, περισχόντες αὐτοὺς, ἔπαιον ξύλοις, καὶ φεύ-
γοντας οἱ ἱππεῖς καταδιώκοντες συνεπάτουν. Ἔπι-
πτον δὲ πολλοὶ μὲν ὑπὸ Ῥωμαίων τυπτόμενοι, πλεί-
ους δὲ ὑπ' ἀλλήλων βιαζόμενοι. Δεινὸς δὲ περὶ τὰς
πύλας ὠθισμὸς ἦν· καὶ φθάνειν ἑκάστου σπεύδον-
τος, βραδυτέρα μὲν ἡ φυγὴ πᾶσιν ἐγίνετο, τῶν δὲ
σφαλέντων ἀπώλεια δεινή. Πνιγόμενοι γὰρ καὶ κλώ-
μενοι πλήθει τῶν ἐπιβαινόντων ἠφανίζοντο, καὶ οὐδὲ
πρὸς ταφήν τις γνώριμος τοῖς ἰδίοις κατελείπετο.
Συνέπιπτον δὲ καὶ στρατιῶται παίοντες ἀνέδην τοὺς
καταλαμβανομένους, καὶ διὰ τῆς Βεζεθὰ καλουμέ-
νης ἀνώθουν τὸ πλῆθος, βιαζόμενοι παρελθεῖν καὶ
κρατῆσαι τοῦ τε ἱεροῦ καὶ τῆς Ἀντωνίας· ὧν καὶ

Φλῶρος ἐφιέμενος ἐξήγαγεν ἐκ τῆς βασιλικῆς αὐλῆς τοὺς σὺν αὐτῷ, καὶ πρὸς τὸ φρούριον ἐλθεῖν ἠγωνίζετο. Διήμαρτέ γε μὴν τῆς ἐπιβολῆς· ὁ γὰρ δῆμος ἄντικρυς ἐπιστραφεὶς εἶργε τὴν ὁρμὴν, καὶ διαστάντες ἐπὶ τῶν τεγῶν τοὺς Ῥωμαίους ἔβαλλον. Καταπονούμενοι δὴ τοῖς ὕπερθε βέλεσι, καὶ διακόψαι τὸ τοὺς στενωποὺς ἐμφράξαν πλῆθος ἀσθενήσαντες, ἀνεχώρουν εἰς τὸ πρὸς τοῖς βασιλείοις στρατόπεδον.

6. Οἱ δὲ στασιασταὶ, δείσαντες, μὴ πάλιν ἐπελθὼν ὁ Φλῶρος κρατήσῃ τοῦ ἱεροῦ διὰ τῆς Ἀντωνίας, ἀναβάντες εὐθέως τὰς συνεχεῖς στοὰς τοῦ ἱεροῦ πρὸς τὴν Ἀντωνίαν διέκοψαν. Τοῦτο ἔψυξε τὴν Φλώρου πλεονεξίαν· τῶν γὰρ τοῦ θεοῦ θησαυρῶν ἐφιέμενος, καὶ διὰ τοῦτο παρελθεῖν ἐπιθυμῶν εἰς τὴν Ἀντωνίαν, ὡς ἀπεῤῥάγησαν αἱ στοαὶ, τὴν ὁρμὴν ἀνετράπη. Καὶ μεταπεμψάμενος τούς τε ἀρχιερεῖς καὶ τὴν βουλὴν, αὐτὸν μὲν ἐξιέναι τῆς πόλεως ἔφη, φρουρὰν δὲ καταλείψειν αὐτοῖς ὅσην ἂν ἀξιώσωσι. Τῶν δὲ πάντα περὶ ἀσφαλείας καὶ τοῦ μηδὲν νεωτερίσειν ὑποσχομένων, εἰ μίαν αὐτοῖς καταλείψοι σπεῖραν, μὴ μέντοι τὴν μαχεσαμένην· πρὸς γὰρ ταύτην ἀπεχθῶς δι' ἃ πέπονθεν ἔχειν τὸ πλῆθος· ἀλλάξας τὴν σπεῖραν, ὡς ἠξίουν, μετὰ τῆς λοιπῆς δυνάμεως ὑπέστρεψεν εἰς Καισάρειαν.

CAP. XVI. 1. Ἑτέραν δὲ ἐπιβολὴν τῷ πολέμῳ 185
πορίζόμενος, ἐπέστελλε Κεστίῳ, Ἰουδαίων ἀπόστασιν καταψευδόμενος, τήν τε ἀρχὴν τῆς μάχης περιθεὶς αὐτοῖς, καὶ δρᾶσαι λέγων ἐκείνους ἃ πεπόνθασιν. Οὐ μὴν οὐδ' οἱ τῶν Ἱεροσολύμων ἄρχοντες ἐσίγησαν, ἀλλ' αὐτοί τε καὶ Βερνίκη τῷ Κεστίῳ, περὶ ὧν Φλῶρος εἰς τὴν πόλιν παρηνόμησεν, ἔγραφον. Ὁ δὲ τὰ παρ' ἀμφοῖν ἀναγνοὺς, μετὰ ἡγεμόνων ἐβουλεύετο, καὶ τοῖς μὲν αὐτῶν ἐδόκει, Κέστιον μετὰ στρατιᾶς ἀναβαίνειν, ἢ τιμωρησόμενον τὴν ἀπόστασιν, εἰ γέγονεν, ἢ βεβαιοτέρους καταστήσοντα

Ἰουδαίους καὶ συμμένοντας· αὐτῷ δὲ προπέμψαι τινὰ τῶν ἑταίρων τὸν κατασκεψόμενον τὰ πράγματα, καὶ τὰ φρονήματα τῶν Ἰουδαίων πιστῶς ἀγγελοῦντα. Πέμπει οὖν δή τινα τῶν χιλιάρχων Νεαπολιτανὸν, ὃς, ἀπὸ τῆς Ἀλεξανδρείας ὑποστρέψαντι περιτυχὼν Ἀγρίππᾳ τῷ βασιλεῖ κατὰ Ἰάμνειαν, τὸν πέμψαντα καὶ τὰς αἰτίας ἐδήλωσεν.

2. Ἔνθα καὶ Ἰουδαίων οἵ τε ἀρχιερεῖς ἅμα τοῖς δυνατοῖς, καὶ ἡ βουλὴ παρῆν, δεξιουμένη τὸν βασιλέα. Μετὰ δὲ τὴν εἰς ἐκεῖνον θεραπείαν ἀπωδύροντο τὰς ἑαυτῶν συμφορὰς, καὶ τὴν Φλώρου διεξήεσαν ὠμότητα. Πρὸς ἣν ἠγανάκτει μὲν Ἀγρίππας, στρατηγικῶς δὲ τὴν ὀργὴν εἰς οὓς ἠλέει Ἰουδαίους μετέφερε, ταπεινοῦν αὐτῶν βουλόμενος τὰ φρονήματα, καὶ τῷ μὴ δοκεῖν ἀδίκως τι παθεῖν, τῆς ἀμύνης ἀποτρέπων. Οἱ μὲν οὖν, ὡς ἂν ὄντες ἔκκριτοι, καὶ διὰ τὰς αὐτῶν κτήσεις ἐπιθυμοῦντες εἰρήνης, συνίεσαν εὐνοϊκὴν τὴν ἐπίπληξιν τοῦ βασιλέως. Ὁ δὲ δῆμος ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων, ἐπὶ ἑξήκοντα προελθὼν σταδίους, ἐδεξιοῦτο τὸν Ἀγρίππαν, καὶ τὸν Νεαπολιτανόν. Ἐκώκυον δὲ αἱ τῶν ἀπεσφαγμένων γυναῖκες προεκθέουσαι, καὶ πρὸς τὴν τούτων οἰμωγὴν ὁ δῆμος, εἰς ὀλοφυρμοὺς τραπόμενος, ἐπικουρεῖν τὸν Ἀγρίππαν ἱκέτευε. Τῷ τε Νεαπολιτανῷ κατεβόων, ὅσα πάθοιεν ὑπὸ Φλώρου, καὶ παρελθοῦσιν εἰς τὴν πόλιν τήν τε ἀγορὰν ἠρημωμένην ὑπεδείκνυον, καὶ πεπορθημένας τὰς οἰκίας. Ἔπειτα δι' Ἀγρίππα πείθουσι τὸν Νεαπολιτανὸν σὺν ἑνὶ θεράποντι περιελθεῖν μέχρι τοῦ Σιλοᾶ τὴν πόλιν, ἵνα γνῷ Ἰουδαίους τοῖς μὲν ἄλλοις ἅπασι Ῥωμαίοις εἴκοντας, μόνῳ δὲ ἀπεχθανομένους Φλώρῳ δι' ὑπερβολὴν τῆς εἰς αὐτοὺς ὠμότητος. Ὁ δὲ, ὡς διοδεύσας πεῖραν ἔλαβεν ἱκανὴν τῆς πραότητος αὐτῶν, εἰς τὸ ἱερὸν ἀνέβαινεν. Ἔνθα συγκαλέσας τὸ πλῆθος, καὶ πολλὰ μὲν εἰς πίστιν αὐτοὺς τὴν πρὸς Ῥωμαίους ἐπαινέσας, πολλὰ δὲ εἰς τὸ τηρεῖν τὴν εἰρήνην

προτρεψάμενος, καὶ τοῦ θεοῦ προςκυνήσας, ὅσον ἐξῆν, τὰ ἅγια, πρὸς Κέστιον ἐπανήει.

3. Τὸ δὲ πλῆθος τῶν Ἰουδαίων ἐπί τε τὸν βα- 186
σιλέα καὶ τοὺς ἀρχιερεῖς τραπόμενον, πρέσβεις κατὰ Φλώρου πέμπειν ἠξίου πρὸς Νέρωνα, καὶ μὴ σιωπήσαντας ἐπὶ τοσούτῳ φόνῳ καταλιπεῖν ἑαυτοῖς ὑπόνοιαν ἀποστάσεως· δόξειν γὰρ αὐτοὺς κατάρξαι τῶν ὅπλων, εἰ μὴ φθάσαντες ἐνδείξαιντο τὸν κατάρξαντα. Φανεροὶ δὲ ἦσαν οὐκ ἠρεμήσοντες, εἰ τὴν πρεσβείαν τις ἀποκωλύοι. Ἀγρίππα δὲ τὸ μὲν χειροτονεῖν Φλώρου κατηγόρους ἐπίφθονον ἐδόκει· τὸ περιϊδεῖν δὲ Ἰουδαίους εἰς πόλεμον ἐκριπισθέντας, οὐδὲ αὐτῷ λυσιτελὲς κατεφαίνετο. Προςκαλεσάμενος δὴ εἰς τὸν ξυστὸν τὸ πλῆθος, καὶ παραστησάμενος ἐν περιόπτῳ τὴν ἀδελφὴν Βερνίκην ἐπὶ τῆς Ἀσαμωναίων οἰκίας, — αὕτη γὰρ ἦν ἐπάνω τοῦ ξυστοῦ πρὸς τὸ πέραν τῆς ἄνω πόλεως, καὶ γέφυρα τῷ ξυστῷ τὸ ἱερὸν συνῆπτεν, — ἔλεξε τοιάδε.

4. „Εἰ μὲν ἑώρων πάντας ὑμᾶς πολεμεῖν Ῥωμαίοις ὡρμημένους, καὶ μὴ τοῦ δήμου τὸ καθαρώτατον καὶ εἰλικρινέστατον εἰρήνην ἄγειν προῃρημένους, οὔτ' ἂν παρῆλθον εἰς ὑμᾶς, οὔτε συμβουλεύειν ἐθάρσησα· περισσὸς γὰρ ὑπὲρ τοῦ τὰ δέοντα ποιεῖν πᾶς λόγος, ὅταν ἡ τῶν ἀκουόντων πάντων πρὸς τὸ χεῖρον ὁμόνοια ᾖ. Ἐπεὶ δέ τινας μὲν ἡλικία τῶν ἐν πολέμῳ κακῶν ἀπείρατος, τινὰς δὲ ἐλπὶς ἀλόγιστος ἐλευθερίας, ἐνίους δὲ πλεονεξία τις παροξύνει, καὶ τὸ παρὰ τῶν ἀσθενεστέρων, ἐὰν τὰ πράγματα συγχυθῇ, κέρδος, ὅπως αὐτοί τε σωφρονισθέντες μεταβάλωνται, καὶ μὴ τῆς ἐνίων κακοβουλίας οἱ ἀγαθοὶ παραπολαύσωσιν, ᾠήθην δεῖν ἐπὶ τὸ αὐτὸ πάντας ὑμᾶς συναγαγὼν εἰπεῖν, ἃ νομίζω συμφέρειν. Θορυβήσῃ δέ μοι μηδείς, ἐὰν μὴ τὰ πρὸς ἡδονὴν ἀκούῃ· τοῖς μὲν γὰρ ἀνηκέστως ἐπὶ τὴν ἀπόστασιν ὡρμημένοις ἔνεστι, καὶ μετὰ τὴν ἐμὴν παραίνεσιν, τὰ αὐτὰ φρονεῖν· ἐμοὶ δὲ διαπίπτει καὶ

πρὸς τοὺς ἀκούειν ἐθέλοντας ὁ λόγος, ἐὰν μὴ παρὰ πάντων ἡσυχία γένηται. Οἶδα μὲν οὖν, ὅτι πολλοὶ τὰς ἐκ τῶν ἐπιτρόπων ὕβρεις καὶ τὰ τῆς ἐλευθερίας ἐγκώμια τραγῳδοῦσιν. Ἐγὼ δὲ πρὶν ἐξετάζειν, τίνες ὄντες, καὶ τίσιν ἐπιχειρεῖτε πολεμεῖν, πρῶτον διαζεύξω τὴν συμπλοκὴν τῶν προφάσεων. Εἰ μὲν ἀμύνεσθε τοὺς ἀδικοῦντας, τί σεμνύνετε τὴν ἐλευθερίαν; Εἰ δὲ τὸ δουλεύειν ἀφόρητον ἡγεῖσθε, περισσὴ πρὸς τοὺς ἡγεμόνας ἡ μέμψις· καὶ γὰρ ἐκείνων μετριαζόντων, αἰσχρὸν ὁμοίως τὸ δουλεύειν. Σκοπεῖτε δὲ καὶ καθ' ἕκαστον τούτων, ὡς ἔστι μικρὰ τοῦ πολεμεῖν ἡ ὑπόθεσις· καὶ πρῶτά γε τὰ τῶν ἐπιτρόπων ἐγκλήματα. Θεραπεύειν δὲ, οὐκ ἐρεθίζειν, δεῖ τὰς ἐξουσίας· ὅταν δὲ τῶν μικρῶν ἁμαρτημάτων τοὺς ἐξονειδισμοὺς ποιεῖσθε μεγάλους, καθ' ἑαυτῶν τοὺς ὀνειδιζομένους ἀπελέγχετε· καὶ παρέντες τὸ λάθρα καὶ μετ' αἰδοῦς ὑμᾶς βλάπτειν, πορθοῦσι φανερῶς. Οὐδὲν δὲ οὕτω τὰς πληγὰς, ὡς τὸ φέρειν, ἀναστέλλει. Καὶ τὸ τῶν ἀδικουμένων ἡσύχιον τοῖς ἀδικοῦσι γίνεται διατροπή. Φέρε δὲ, εἶναι τοὺς Ῥωμαίων ὑπηρέτας ἀνηκέστως χαλεπούς· οὔπω Ῥωμαῖοι πάντες ἀδικοῦσιν ὑμᾶς, οὐδὲ Καῖσαρ, πρὸς οὓς αἱρεῖσθε τὸν πόλεμον· οὐ γὰρ ἐξ
187 ἐντολῆς ἥκει τις πονηρὸς ἀπ' ἐκείνων, οὐδέ γε τοὺς ὑπὸ τὴν ἀνατολὴν οἱ ἀφ' ἑσπέρας ἐπιβλέπουσιν. Ἀλλ' οὐδ' ἀκούειν ταχέως τὰ ἐντεῦθεν ἐκεῖ ῥᾴδιον· ἄτοπον δὲ, καὶ δι' ἕνα πολλοῖς, καὶ διὰ μικρὰς αἰτίας τηλικούτοις, καὶ μηδὲ γινώσκουσιν, ἃ μεμφόμεθα, πολεμεῖν. Καὶ τῶν μὲν ἡμετέρων ἐγκλημάτων ταχεῖα γένοιτ' ἂν ἡ διόρθωσις· οὔτε γὰρ ὁ αὐτὸς ἐπίτροπος μενεῖ διὰ παντὸς, καὶ τοὺς διαδεξομένους εἰκὸς ἐλεύσεσθαι μετριωτέρους. Κινηθέντα δ' ἅπαξ τὸν πόλεμον οὔτ' ἀποθέσθαι ῥᾴδιον δίχα συμφορῶν, οὔτε βαστάσαι. Ἀλλὰ μὴν τό γε νῦν ἐλευθερίας ἐπιθυμεῖν ἄωρον, δέον ὑπὲρ τοῦ μηδὲ ἀποβαλεῖν αὐτὴν ἀγωνίζεσθαι πρότερον· ἡ γὰρ πεῖρα τῆς δου-

λείας χαλεπὴ, καὶ περὶ τοῦ μηδὲ ἄρξασθαι ταύτης ὁ ἀγὼν δίκαιος. Ὁ δὲ ἅπαξ χειρωθεὶς, ἔπειτα ἀφιστάμενος, αὐθάδης δοῦλός ἐστιν, οὐ φιλελεύθερος. Τότε γὰρ οὖν ἐχρῆν πάντα ὑπὲρ τοῦ μὴ δέξασθαι Ῥωμαίους ποιεῖν, ὅτε τὴν ἀρχὴν ἐπέβαινε τῆς χώρας ὁ Πομπήϊος. Ἀλλ' οἱ μὲν ἡμέτεροι πρόγονοι, καὶ οἱ βασιλεῖς αὐτῶν, καὶ χρήμασι καὶ σώμασι καὶ ψυχαῖς ἄμεινον ὑμῶν πολλῷ διακείμενοι, πρὸς μοῖραν ὀλίγην τῆς Ῥωμαίων δυνάμεως οὐκ ἀντέσχον. Ὑμεῖς δὲ, οἱ τὸ μὲν ὑπακούειν ἐκ διαδοχῆς παρειληφότες, τοῖς πράγμασι δὲ τῶν πρώτων ἀκουσάντων τοσοῦτον ἐλαττούμενοι, πρὸς ὅλην ἀνθίστασθε τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν. Καὶ Ἀθηναῖοι μὲν, οἱ περὶ τῆς τῶν Ἑλλήνων ἐλευθερίας παραδόντες ποτὲ καὶ πυρὶ τὴν πόλιν, οἱ τὸν ὑπερήφανον Ξέρξην διὰ γῆς πλεύσαντα, καὶ διὰ θαλάσσης ὁδεύσαντα, καὶ μὴ χωρούμενον μὲν τοῖς πελάγεσι, πλατυτέραν δὲ τῆς Εὐρώπης τὴν στρατιὰν ἄγοντα, δραπέτην ἐπὶ μιᾶς νεὼς διώξαντες, περὶ δὲ τῇ σμικρᾷ Σαλαμῖνι τὴν τοσαύτην Ἀσίαν κλάσαντες, νῦν δουλεύουσι Ῥωμαίοις, καὶ τὴν ἡγεμονίδα τῆς Ἑλλάδος πόλιν διοικεῖ τὰ ἀπὸ τῆς Ἰταλίας προστάγματα. Λακεδαιμόνιοί τε μετὰ Θερμοπύλας καὶ Πλαταιὰς, καὶ τὸν ἐρευνήσαντα τὴν Ἀσίαν Ἀγησίλαον, ἀγαπῶσι τοὺς αὐτοὺς δεσπότας. Καὶ Μακεδόνες, ἔτι φανταζόμενοι Φίλιππον καὶ σὺν Ἀλεξάνδρῳ παρασπείροντα αὐτοῖς τὴν τῆς οἰκουμένης ἡγεμονίαν ὁρῶντες, φέρουσι τὴν τοσαύτην μεταβολὴν, καὶ πρὸς οὓς μεταβέβηκεν ἡ τύχη προσκυνοῦσιν. Ἄλλα τε ἔθνη μυρία, πλείονος γέμοντα πρὸς ἐλευθερίαν παῤῥησίας, εἴκει· μόνοι δὲ ὑμεῖς ἀδοξεῖτε δουλεύειν, οἷς ὑποτέτακται τὰ πάντα. Ποίᾳ στρατιᾷ, ποίοις πεποιθότες ὅπλοις; Ποῦ μὲν ὁ στόλος ὑμῶν διαληψόμενος τὰς Ῥωμαίων θαλάσσας; Ποῦ δὲ οἱ ταῖς ἐπιβολαῖς ἐξαρκέσοντες θησαυροί; Πρὸς Αἰγυπτίους ἄρα καὶ πρὸς Ἄραβας οἴεσθε κινεῖν τὸν πόλεμον; Οὐ περισκέψεσθε τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν;

Οὐ μετρήσετε τὴν ἑαυτῶν ἀσθένειαν; Οὐ τὰ μὲν ὑμέτερα πρὸς τῶν προςοίκων ἐθνῶν ἡττήθη πολλάκις; Ἡ δὲ ἐκείνων ἰσχὺς διὰ τῆς οἰκουμένης ἀνίκητος. Μᾶλλον δὲ καὶ ταύτης ἐζήτησάν τι πλέον· οὐ
188 γὰρ ἐξήρκεσεν αὐτοῖς ὅλος Εὐφράτης ὑπὸ τὴν ἀνατολὴν, οὐδὲ τῶν προςαρκτίων Ἴστρος, ἥ τε μεσημβρινὴ μέχρι τῶν ἀοικήτων ἐρευνηθεῖσα Λιβύη, καὶ Γάδειρα πρὸς ἑσπέραν· ἀλλ' ὑπὲρ ὠκεανὸν ἑτέραν ἐζήτησαν οἰκουμένην, καὶ μέχρι τῶν ἀνιστορήτων πρότερον Βρεττανῶν διήνεγκαν τὰ ὅπλα. Τί οὖν; Ὑμεῖς πλουσιώτεροι Γαλατῶν, ἰσχυρότεροι Γερμανῶν, Ἑλλήνων συνετώτεροι, πλείους τῶν κατὰ τὴν οἰκουμένην ἐστὲ πάντων; Τί τὸ πεποιθὸς ὑμᾶς κατὰ Ῥωμαίων ἐπαίρει; Χαλεπὸν τὸ δουλεύειν, ἐρεῖ τις. Πόσῳ μᾶλλον Ἕλλησιν, οἳ τῶν ὑφ' ἥλιον πάντων εὐγενείᾳ προέχειν δοκοῦντες, καὶ τοσαύτην νεμόμενοι χώραν, ἓξ Ῥωμαίων ὑπείκουσι ῥάβδοις! Τοσαύταις δὲ Μακεδόνες, οἱ δικαιότερον ὑμῶν ὀφείλοντες ἐλευθερίας ἀντιποιεῖσθαι. Τί δὲ αἱ πεντακόσιαι τῆς Ἀσίας πόλεις; Οὐχὶ δίχα φρουρᾶς ἕνα προςκυνοῦσιν ἡγεμόνα, καὶ τὰς ὑπατικὰς ῥάβδους; Τί δεῖ λέγειν Ἡνιόχους τε καὶ Κόλχους, καὶ τὸ τῶν Ταύρων φῦλον, Βοσπορανούς τε καὶ τὰ περίοικα τοῦ Πόντου καὶ τῆς Μαιώτιδος ἔθνη, παρ' οἷς πρὶν μὲν οὐδὲ οἰκεῖος ἐγινώσκετο δεσπότης, νῦν δὲ τριςχιλίοις ὁπλίταις ὑποτάσσεται, καὶ τεσσαράκοντα νῆες μακραὶ τὴν πρὶν ἄπλωτον καὶ ἀγρίαν εἰρηνεύουσι θάλασσαν; Πόσα Βιθυνία καὶ Καππαδοκία καὶ τὸ Παμφύλιον ἔθνος, Λύκιοί τε καὶ Κίλικες ὑπὲρ ἐλευθερίας ἔχοντες εἰπεῖν, χωρὶς ὅπλων φορολογοῦνται; Τί δὲ Θρᾷκες, οἳ πέντε μὲν εὖρος, ἑπτὰ δὲ μῆκος ἡμερῶν χώραν διειληφότες, τραχυτέραν τε καὶ πολλῷ τῆς ὑμετέρας ὀχυροτέραν, καὶ βαθεῖ κρυμῷ τοὺς ἐπιστρατεύοντας ἀνακόπτουσαν, οὐχὶ διςχιλίοις Ῥωμαίων ὑπακούουσι φρουροῖς; Οἱ δὲ ἀπὸ τούτων Ἰλλυριοὶ τὴν μέχρι Δαλματίας ἐκτεινομένην ἐν δὲ Ἴστρῳ

κατοικοῦντες, οὐ δυσὶ μόνοις τάγμασιν ὑπείκουσι,
μεθ' ὧν αὐτοὶ τὰς Δακῶν ἀνακόπτουσιν ὁρμάς;
Οἱ δὲ τοσαυτάκις πρὸς ἐλευθερίαν ἀναχαιτίσαντες
Δαλμάται, καὶ πρὸς τοῦτο μόνον ἀεὶ χειρωθέντες,
ὥςτε συλλεξάμενοι τὴν ἰσχὺν πάλιν ἀποστῆναι, νῦν
οὐχ ὑφ' ἑνὶ τάγματι Ῥωμαίων ἡσυχίαν ἄγουσιν;
Ἀλλὰ μὴν εἴ γέ τινας εἰς ἀπόστασιν ὤφειλον ἀφορμαὶ
μεγάλαι παροξύνειν, μάλιστα Γαλάτας ἐχρῆν,
τοὺς οὕτως ὑπὸ τῆς φύσεως τετειχισμένους, ἐξ ἀνατολῆς
μὲν ταῖς Ἄλπεσι, πρὸς ἄρκτῳ δὲ Ῥήνῳ ποταμῷ,
μεσημβρινοῖς δὲ τοῖς Πυῤῥηναίοις ὄρεσιν,
ὠκεανῷ δὲ πρὸς δυσμαῖς. Ἀλλὰ καίτοι τηλικαῦτα
μὲν ἕρκη προβεβλημένοι, πέντε δὲ καὶ τριακοσίοις
πληθύνοντες ἔθνεσι, τὰς δὲ πηγὰς, ὡς ἄν τις εἴποι,
τῆς εὐδαιμονίας ἐπιχωρίους ἔχοντες, καὶ τοῖς
ἀγαθοῖς σχεδὸν ὅλην ἐπικλύζοντες τὴν οἰκουμένην,
ἀνέχονται Ῥωμαίων πρόςοδος ὄντες, καὶ ταμιευόμενοι
παρ' αὐτῶν τὴν οἰκείαν εὐδαιμονίαν. Καὶ τοῦτο
ὑπομένουσιν, οὐ διὰ φρονημάτων μαλακίαν, οὐδὲ 189
δι' ἀγένειαν, οἵ γε διήνεγκαν ὀγδοήκοντα ἔτη πόλεμον
ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας, ἀλλὰ μετὰ τῆς δυνάμεως Ῥωμαίων
καὶ τὴν τύχην καταπλαγέντες, ἥτις αὐτοῖς
κατορθοῖ πλείονα τῶν ὅπλων. Τοιγαροῦν ὑπὸ χιλίοις
καὶ διακοσίοις στρατιώταις δουλεύουσιν, ὧν
ὀλίγου δεῖν πλείους ἔχουσι πόλεις. Οὐδὲ Ἴβηρσιν
ὁ γεωργούμενος χρυσὸς εἰς τὸν ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας
πόλεμον ἐξήρκεσεν, οὐδὲ τὸ τοσοῦτον ἀπὸ Ῥωμαίων
γῆς καὶ θαλάσσης διάστημα, φῦλά τε Λυσιτανῶν
καὶ Καντάβρων ἀρειμάνια, οὐδὲ γείτων ὠκεανὸς φοβερὰν
καὶ τοῖς ἐπιχωρίοις ἄμπωτιν ἐπάγων. Ἀλλ'
ὑπὲρ τὰς Ἡρακλείους στήλας ἐκτείναντες τὰ ὅπλα,
καὶ διὰ νεφῶν ὁδεύσαντες τὰ Πυῤῥηναῖα ὄρη, καὶ
τούτους ἐδουλώσαντο Ῥωμαῖοι· φρουρὰ δὲ ἤρκεσε
τῶν οὕτω δυςμάχων καὶ τοσοῦτον ἀπῳκισμένων ἓν
τάγμα. Τίς ὑμῶν οὐκ ἀκοῇ παρείληφε τὸ Γερμανῶν
πλῆθος; Ἀλκὴν μὲν γὰρ καὶ μεγέθη ἴδετε δή-

που πολλάκις, ἐπεὶ πανταχοῦ Ῥωμαῖοι τοὺς τούτων αἰχμαλώτους ἔχουσιν. Ἀλλ' οὗτοι γῆν μὲν ἄπειρον νεμόμενοι, μείζω δὲ τῶν σωμάτων ἔχοντες τὰ φρονήματα, καὶ τὴν μὲν ψυχὴν θανάτου καταφρονοῦσαν, τοὺς δὲ θυμοὺς τῶν ἀγριωτάτων θηρίων σφοδροτέρους, Ῥῆνον τῆς ὁρμῆς ὅρον ἔχουσι, καὶ Ῥωμαίων ὀκτὼ τάγμασι δαμαζόμενοι, δουλεύουσι μὲν ἁλόντες, τὸ δὲ ὅλον αὐτῶν ἔθνος φυγῇ διασώζεται. Σκέψασθε δὲ καὶ τὸ Βρεττανῶν τεῖχος, οἱ τοῖς Ἱεροσολύμων τείχεσι πεποιθότες· καὶ γὰρ ἐκείνους περιβεβλημένους ὠκεανὸν, καὶ τῆς καθ' ἡμᾶς οἰκουμένης οὐκ ἐλάσσονα νῆσον οἰκοῦντας, πλεύσαντες ἐδουλώσαντο Ῥωμαῖοι· τέσσαρα δὲ τάγματα τὴν τοσαύτην νῆσον διαφυλάττει. Καὶ τί δεῖ πολλὰ λέγειν, ὅπου καὶ Πάρθοι, τὸ πολεμικώτατον φῦλον, τοσούτων ἄρχοντες ἐθνῶν, καὶ τηλικαύτην περιβεβλημένοι δύναμιν, ὁμήρους πέμπουσι Ῥωμαίοις, καὶ ἔστιν ἐπὶ τῆς Ἰταλίας ἰδεῖν ἐν εἰρήνης προφάσει δουλεύουσαν τὴν ἀπὸ τῆς ἀνατολῆς εὐγένειαν. Πάντων δὴ σχεδὸν τῶν ὑφ' ἥλιον τὰ Ῥωμαίων ὅπλα προσκυνούντων, ὑμεῖς μόνοι πολεμήσετε, μηδὲ τὸ Καρχηδονίων τέλος σκοποῦντες, οἳ τὸν μέγαν αὐχοῦντες Ἀννίβαν, καὶ τὴν ἀπὸ Φοινίκων εὐγένειαν, ὑπὸ τὴν Σκιπίωνος δεξιὰν ἔπεσον. Οὔτε δὲ Κυρηναῖοι τὸ Λακώνων γένος, οὔτε Μαρμαρίδαι, τὸ μέχρι τῆς διψάδος ἐκτεταμένον φῦλον, οὔθ' αἱ φοβεραὶ καὶ τοῖς ἀκούουσι Σύρτεις, Νασαμῶνές τε καὶ Μαῦροι, καὶ τὸ Νομάδων ἄπειρον πλῆθος, τὰς Ῥωμαίων ἀνέκοψαν ἀρετάς. Τὴν δὲ τρίτην τῆς οἰκουμένης μοῖραν, ἧς οὐδὲ ἐξαριθμήσασθαι τὰ ἔθνη ῥᾴδιον, ὁριζομένην Ἀτλαντικῷ τε πελάγει καὶ στήλαις Ἡρακλείοις, καὶ μέχρι τῆς Ἐρυθρᾶς θαλάσσης τοὺς ἀπείρους νέμουσαν Αἰθίοπας, ἐχειρώσαντο μὲν ὅλην. Χωρὶς δὲ τῶν ἐτησίων καρπῶν, οἳ μησὶν ὀκτὼ τὸ κατὰ τὴν Ῥώμην πλῆ-
190 θος τρέφουσι, καὶ ἔξωθεν παντοίως φορολογοῦνται,

καὶ ταῖς χρείαις τῆς ἡγεμονίας παρέχουσιν ἑτοίμους τὰς εἰςφορὰς, οὐδὲν τῶν ἐπιταγμάτων, ὥςπερ ὑμεῖς, ὕβριν ἡγούμενοι, καίπερ ἑνὸς τάγματος αὐτοῖς παραμένοντος. Καὶ τί δεῖ πόῤῥωθεν ὑμῖν ὑποδεικνύειν τὴν Ῥωμαίων δύναμιν, παρὸν ἐξ Αἰγύπτου τῆς γειτνιώσης, ἥτις ἐκτεινομένη μέχρις Αἰθιόπων καὶ τῆς εὐδαίμονος Ἀραβίας, ὅμορός τε οὖσα τῆς Ἰνδικῆς, πεντήκοντα πρὸς ταῖς ἑπτακοσίαις ἔχουσα μυριάδας ἀνθρώπων, δίχα τῶν Ἀλεξάνδρειαν κατοικούντων, ὡς ἔνεστιν ἐκ τῆς καθ᾽ ἑκάστην κεφαλὴν εἰςφορᾶς τεκμήρασθαι, τὴν Ῥωμαίων ἡγεμονίαν οὐκ ἀδοξεῖ, καίτοι πηλίκον ἀποστάσεως κέντρον ἔχουσα τὴν Ἀλεξάνδρειαν, πλήθους τε ἀνδρῶν ἕνεκα καὶ πλούτου, πρὸς δὲ καὶ μεγέθους, μῆκος μέν γε αὐτῆς τριάκοντα σταδίων, εὖρος δὲ οὐκ ἔλαττον δέκα· τοῦ δὲ ἐνιαυσίου παρ᾽ ὑμῶν φόρου καθ᾽ ἕνα μῆνα πλέον Ῥωμαίοις παρέχει, καὶ, τῶν χρημάτων ἔξωθεν, τῇ Ῥώμῃ σῖτον μηνῶν τεσσάρων· τετείχισται δὲ πάντοθεν ἢ δυςβάτοις ἐρημίαις, ἢ θαλάσσαις ἀλιμένοις, ἢ ποταμοῖς, ἢ ἕλεσιν. Ἀλλ᾽ οὐδὲν τούτων ἰσχυρότερον εὑρέθη τῆς Ῥωμαίων τύχης· δύο δ᾽ ἐγκαθήμενα τῇ πόλει τάγματα τὴν βαθεῖαν Αἴγυπτον ἅμα τῇ Μακεδόνων εὐγενείᾳ χαλινοῖ. Τίνας οὖν ἐπὶ τὸν πόλεμον ἐκ τῆς ἀοικήτου παραλήψεσθε συμμάχους; Οἱ μὲν γὰρ ἐπὶ τῆς οἰκουμένης πάντες εἰσὶ Ῥωμαῖοι, εἰ μή τις ὑπὲρ Εὐφράτην ἐκτείνει τὰς ἐλπίδας, καὶ τοὺς ἐκ τῆς Ἀδιαβηνῆς ὁμοφύλους οἴεται προςαμύνειν. Οἱ δὲ οὔτε δι᾽ αἰτίαν ἄλογον τηλικούτῳ πολέμῳ συμπλέξουσιν ἑαυτοὺς, οὔτε βουλευσαμένοις κακῶς ὁ Πάρθος ἐπιτρέψει· πρόνοια γὰρ αὐτῷ τῆς πρὸς Ῥωμαίους ἐκεχειρίας, καὶ παραβαίνειν οἰήσεται τὰς σπονδὰς, καὶ ἄν τις τῶν ὑπ᾽ αὐτὸν ἐπὶ Ῥωμαίους ἴῃ. Λοιπὸν οὖν ἐπὶ τὴν ἐκ τοῦ θεοῦ συμμαχίαν καταφευκτέον· ἀλλὰ καὶ τοῦτο παρὰ Ῥωμαίοις τέτακται, δίχα γὰρ θεοῦ συστῆναι τηλικαύτην ἡγεμονίαν ἀδύνατον. Σκέψασθε

δὲ, ὡς ὑμῖν τὸ τῆς θρησκείας ἄκρατον, εἰ καὶ πρὸς εὐχειρώτους πολεμοίητε, δυςδιοίκητον. Καὶ δι' ἃ ἂν μάλιστα τὸν θεὸν ἐλπίζετε σύμμαχον, ταῦτα ἀναγκαζόμενοι παραβαίνειν ἀποστρέφετε. Τηροῦντες μέν γε τὰ τῶν ἑβδομάδων ἔθη, καὶ πρὸς μηδεμίαν πρᾶξιν κινούμενοι, ῥᾳδίως ἁλώσεσθε; καθάπερ οἱ πρόγονοι Πομπηΐῳ, ταύτας μάλιστα τὰς ἡμέρας ἐνεργοὺς ποιησαμένῳ τῆς πολιορκίας, ἐν αἷς ἤργουν οἱ πολιορκούμενοι. Παραβαίνοντες δὲ ἐν τῷ πολέμῳ τὸν πάτριον νόμον, οὐκ οἶδα, ὑπὲρ ὅτου λοιπὸν ποιήσεσθε τὸν ἀγῶνα· σπουδὴ γὰρ ὑμῖν μία, τὸ μὴ τῶν πατρίων τι καταλῦσαι. Πῶς δὲ ἐπικαλέσεσθε τὸ θεῖον εἰς ἄμυναν, οἱ παραβαίνοντες ἑκουσίως τὴν εἰς αὐτὸν θεραπείαν; Ἐπαναιροῦνται δὲ ἕκαστοι πόλεμον, ἢ θείᾳ πεποιθότες, ἢ ἀνθρωπείᾳ βοηθείᾳ· ὅταν δὲ τὴν παρ' ἀμφοῖν τὸ νεῖκος ἀπο-
191 *κόπτῃ, φανερὰν ἅλωσιν οἱ πολεμοῦντες αἱροῦνται. Τί δὲ κωλύει ταῖς ἑαυτῶν χερσὶ διαχρήσασθαι τέκνα καὶ γυναῖκας, καὶ τὴν περικαλλεστάτην πατρίδα ταύτην καταφλέξαι; Μανέντες γὰρ οὕτω τό γε τῆς ἥττης ὄνειδος κερδήσετε. Καλὸν, ὦ φίλοι, καλὸν, ἕως ἔτι ἐν ὅρμῳ τὸ σκάφος, προσκέπτεσθαι τὸν μέλλοντα χειμῶνα, μηδὲ εἰς μέσας τὰς θυέλλας ἀπὸ λιμένος ἀναχθῆναι· τοῖς μὲν γὰρ ἐξ ἀδήλων ἐπιπεσοῦσι δεινοῖς τὸ γοῦν ἐλεεῖσθαι περίεστιν, ὁ δὲ εἰς πρόδηλον ἀπώλειαν ὁρμήσας καὶ προςονειδίζεται. Πλὴν εἰ μή τις ὑπολαμβάνει κατὰ συνθήκας πολεμήσειν, καὶ Ῥωμαίους κρατήσαντας ὑμῶν μετριάσειν, ἀλλ' οὐκ εἰς ὑπόδειγμα τῶν ἄλλων ἐθνῶν καταφλέξειν μὲν τὴν ἱερὰν πόλιν, ἀναιρήσειν δὲ πᾶν ὑμῶν τὸ φῦλον· οὐδὲ γὰρ περιλειφθέντες φυγῆς εὑρήσετε τόπον, ἁπάντων ἐχόντων Ῥωμαίους δεσπότας, ἢ δεδοικότων σχεῖν. Ὁ δὲ κίνδυνος οὐ τῶν ἐνθάδε μόνον, ἀλλὰ καὶ τῶν κατὰ τὰς ἄλλας πόλεις κατοικούντων· οὐ γάρ ἐστιν ἐπὶ τῆς οἰκουμένης δῆμος, ὁ μὴ μοῖραν ὑμετέραν ἔχων. Οὓς ἅπαντας*

πολεμησάντων ὑμῶν ἕνεκα κατασφάξουσιν οἱ διάφοροι, καὶ δι' ὀλίγων ἀνδρῶν κακοβουλίαν πᾶσα πληρωθήσεται πόλις Ἰουδαϊκοῦ φόνου. Καὶ συγγνώμη μὲν τοῖς τοῦτο πράξασιν· ἂν δὲ μὴ πραχθῇ, λογίσασθε, πῶς πρὸς οὕτω φιλανθρώπους ὅπλα κινεῖν ἀνόσιον. Εἰςελθέτω δὲ οἶκτος ὑμᾶς, εἰ μὴ καὶ τέκνων καὶ γυναικῶν, ἀλλὰ τῆς μητροπόλεως ταύτης, καὶ τῶν ἱερῶν περιβόλων. Φείσασθε τοῦ ἱεροῦ, καὶ τὸν ναὸν ἑαυτοῖς μετὰ τῶν ἁγίων τηρήσατε· ἀφέξονται γὰρ οὐκ ἔτι Ῥωμαῖοι τούτων κρατήσαντες, ὧν φεισάμενοι πρότερον ἠχαρίστηνται. Μαρτύρομαι δὲ ἐγὼ μὲν ὑμῶν τὰ ἅγια, καὶ τοὺς ἱεροὺς ἀγγέλους τοῦ Θεοῦ, καὶ πατρίδα τὴν κοινήν, ὡς οὐδὲν τῶν σωτηρίων ὑμῖν καθυφηκάμην. Ὑμεῖς δὲ, βουλευσάμενοι μὲν τὰ δέοντα, κοινὴν σὺν ἐμοὶ τὴν εἰρήνην ἕξετε· προαχθέντες δὲ τοῖς θυμοῖς, χωρὶς ἐμοῦ κινδυνεύσετε."

5. Τοσαῦτα εἰπὼν ἐπεδάκρυσέ τε μετὰ τῆς ἀδελφῆς, καὶ τὸ πολὺ τῆς ὁρμῆς αὐτῶν ἔπαυσε τοῖς δάκρυσιν. Ἀνεβόων δὲ 'οὐ Ῥωμαίοις, ἀλλὰ Φλώρῳ, δι' ἃ πεπόνθασι, πολεμεῖν.' Πρὸς ταῦτα ὁ βασιλεὺς Ἀγρίππας, "Ἀλλὰ τὰ ἔργα," ἔφη, "Ῥωμαίοις ἤδη πολεμούντων ἐστίν· οὔτε γὰρ τῷ Καίσαρι δεδώκατε τὸν φόρον, καὶ τὰς στοὰς ἀπεκόψατε τῆς Ἀντωνίας. Ἀποσκευάσεσθε δ' ἂν τὴν αἰτίαν τῆς ἀποστάσεως, εἰ ταύτας τε συνάψετε πάλιν, καὶ τελέσετε τὴν εἰςφοράν· οὐ γὰρ ἤδη γε Φλώρου τὸ φρούριόν ἐστιν, ἢ Φλώρῳ τὰ χρήματα δώσετε."

CAP. XVII. 1. Τούτοις ὁ δῆμος ἐπείθετο, καὶ 192
μετὰ τοῦ βασιλέως τῆς τε Βερνίκης ἀναβάντες εἰς τὸ ἱερὸν, κατήρξαντο τῆς τῶν στοῶν δομήσεως. Εἰς δὲ τὰς κώμας οἵ τε ἄρχοντες καὶ οἱ βουλευταὶ μερισθέντες τοὺς φόρους συνέλεγον. Ταχέως δὲ τὰ τεσσαράκοντα τάλαντα, τοσοῦτον γὰρ ἔλειπεν, ἠθροίσθη. Καὶ τοῦ μὲν πολέμου τότε τὴν ἀπειλὴν οὕτω

κατέστειλεν Ἀγρίππας. Αὖθις δὲ ἐπειρᾶτο πείθειν τὸ πλῆθος ὑπακούειν Φλώρῳ, ἄχρις ἂν ἀντ' αὐτοῦ πέμψῃ Καῖσαρ διάδοχον. Προςπαροξυνθέντες δὲ ἐβλασφήμουν εἰς τὸν βασιλέα, καὶ τῆς πόλεως αὐτὸν ἐξεκήρυσσον. Ἐτόλμων δέ τινες τῶν στασιαστῶν καὶ λίθους ἐπ' αὐτὸν βάλλειν. Ὁ δὲ βασιλεὺς τὴν ὁρμὴν τῶν νεωτεριζόντων ἀκατάσχετον ὁρῶν, καὶ χαλεπήνας ἐφ' οἷς προπεπηλάκιστο, τοὺς μὲν ἄρχοντας ἅμα τοῖς δυνατοῖς αὐτῶν ἔπεμπε πρὸς Φλῶρον εἰς Καισάρειαν, ἵνα ἐκεῖνος ἐξ αὐτῶν ἀποδείξῃ τοὺς τὴν χώραν φορολογήσοντας· αὐτὸς δὲ ἀνεχώρησεν εἰς τὴν βασιλείαν αὐτοῦ.

2. Καὶ ἐν τούτῳ τινὲς τῶν μάλιστα κινούντων τὸν πόλεμον συνελθόντες, ὥρμησαν ἐπὶ φρούριόν τι καλούμενον Μασάδαν· καὶ καταλαβόντες αὐτὸ λάθρα, τοὺς μὲν Ῥωμαίους ἀπέσφαξαν, ἑτέρους δὲ κατέστησαν ἰδίους. Ἅμα δὲ καὶ κατὰ τὸ ἱερὸν Ἐλεάζαρος υἱὸς Ἀνανία τοῦ ἀρχιερέως, νεανίας θρασύτατος, στρατηγῶν τότε, τοὺς κατὰ τὴν λατρείαν λειτουργοῦντας ἀναπείθει, μηδενὸς ἀλλοφύλου δῶρον ἢ θυσίαν προςδέχεσθαι. Τοῦτο δὲ ἦν τοῦ πρὸς Ῥωμαίους πολέμου καταβολή, τὴν γὰρ ὑπὲρ τούτων θυσίαν Καίσαρος ἀπέῤῥιψαν· καὶ πολλὰ τῶν τε ἀρχιερέων καὶ τῶν γνωρίμων παρακαλούντων 'μὴ παραλιπεῖν τὸ ὑπὲρ τῶν ἡγεμόνων ἔθος,' οὐκ ἐνέδοσαν, πολὺ μὲν καὶ τῷ σφετέρῳ πλήθει πεποιθότες, καὶ γὰρ τὸ ἀκμαιότατον τῶν νεωτεριζόντων συνήργει, μάλιστα δὲ ἀφορῶντες εἰς τὸν Ἐλεάζαρον στρατηγοῦντα.

3. Συνελθόντες οὖν οἱ δυνατοὶ τοῖς ἀρχιερεῦσιν συνίσταντο, καὶ τῶν Φαρισαίων οἱ γνώριμοι, ὡς ἐπ' ἀνηκέστοις ἤδη συμφοραῖς, ἐβουλεύοντο περὶ τῶν ὅλων. Καὶ δόξαν ἀποπειραθῆναι τῶν στασιαστῶν λόγοις, πρὸ τῆς χαλκῆς πύλης ἀθροίζουσι τὸν δῆμον, ἥτις ἦν τοῦ ἔνδον ἱεροῦ τετραμμένη πρὸς ἀνατολὴν ἡλίου. Καὶ πρῶτον αὐτῶν πολλὰ πρὸς τὴν

τόλμαν τῆς ἀποστάσεως χαλεπήναντες, καὶ τὸ τηλικοῦτον ἐπισείειν τῇ πατρίδι πόλεμον, ἔπειτα τῆς προφάσεως τὸ ἄλογον διήλεγχον, φάμενοι, 'τοὺς μὲν προγόνους αὐτῶν κεκοσμηκέναι τὸν ναὸν ἐκ τῶν ἀναθημάτων τῶν ἀλλοφύλων τὸ πλέον, ἀεὶ προςδεχομένους τὰς ἀπὸ τῶν ἔξωθεν ἐθνῶν δωρεάς. Καὶ οὐ μόνον οὐ διακεκωλυκέναι θυσίας τινῶν, τοῦτο 193
γὰρ ἀσεβέστατον, ἀλλὰ καὶ τὰ βλεπόμενα καὶ τὰ παραμένοντα τὸν τοσοῦτον χρόνον ἀναθήματα περὶ τῷ ἱερῷ καθιδρυκέναι. Αὐτοὺς δὲ νῦν ἐρεθίζοντας τὰ Ῥωμαίων ὅπλα, καὶ μνηστευομένους τὸν ἀπ' ἐκείνων πόλεμον, καινοτομεῖν θρησκείαν ξένην, καὶ μετὰ τοῦ κινδύνου καταψηφίσασθαι τῆς πόλεως ἀσέβειαν, εἰ παρὰ μόνοις Ἰουδαίοις οὔτε θύσει τις ἀλλότριος, οὔτε προςκυνήσει. Καὶ ἐὰν μὲν ἐπὶ ἰδιώτου τις ἑνὸς τοῦτον εἰςφέρῃ τὸν νόμον, ἀγανακτεῖν, ὡς ὁριζομένης ἀπανθρωπίας· περιορᾶν δὲ, ὅτε Ῥωμαῖοι καὶ ὁ Καῖσαρ ἔκσπονδοι γίνονται. Δεδοικέναι μέντοι, μὴ τὰς ὑπὲρ ἐκείνων ἀποῤῥίψαντες θυσίας κωλυθῶσι θύειν καὶ τὰς ὑπὲρ ἑαυτῶν, γένηταί τε ἔκσπονδος τῆς ἡγεμονίας ἡ πόλις, εἰ μὴ ταχέως σωφρονήσαντες ἀποδώσουσι τὰς θυσίας, καὶ πρὶν ἐξελθεῖν ἐφ' οὓς ὑβρίκασι τὴν φήμην, διορθώσονται τὴν ὕβριν.'

4. Ἅμα ταῦτα λέγοντες παρῆγον τοὺς ἐμπείρους τῶν πατρίων ἱερεῖς, ἀφηγουμένους, ὅπως πάντες οἱ πρόγονοι τὰς ἀπὸ τῶν ἀλλογενῶν θυσίας ἀπεδέχοντο. Προςεῖχε δὲ οὐδεὶς τῶν νεωτεριζόντων, ἀλλ' οὐδὲ προςήεσαν οἱ λειτουργοὶ, τὴν τοῦ πολέμου καταβολὴν ἐνσκευαζόμενοι. Συνειδότες οὖν οἱ δυνατοὶ, τήν τε στάσιν ἤδη δυςκαθαίρετον ὑπ' αὐτῶν οὖσαν, καὶ τὸν ἀπὸ τῶν Ῥωμαίων κίνδυνον ἐπὶ πρώτους αὐτοὺς ἀφιξόμενον, ἀπεσκευάζοντο τὰς αἰτίας· καὶ πρέσβεις οὓς μὲν πρὸς Φλῶρον ἔπεμψαν, ὧν ἦρχεν υἱὸς Ἀνανίου Σίμων, οὓς δὲ πρὸς Ἀγρίππαν, ἐν οἷς καὶ ἦσαν ἐπίσημοι, Σαῦλός τε καὶ Ἀντίπας καὶ Κοστά-

βαρὸς, προςήκοντες τῷ βασιλεῖ κατὰ γένος. Ἐδέοντο δὲ ἀμφοτέρων ἀναβῆναι μετὰ δυνάμεως εἰς τὴν πόλιν, καὶ, πρὶν γενέσθαι δυςκαθαίρετον, ἐπικόψαι τὴν στάσιν. Φλώρῳ μὲν οὖν τοῦτο δεινὸν εὐαγγέλιον ἦν, καὶ προῃρημένος ἐξάπτειν τὸν πόλεμον, οὐδὲν ἀπεκρίνατο τοῖς πρεσβευταῖς. Ἀγρίππας δὲ κηδόμενος ἐπ᾽ ἴσης τῶν τε ἀφισταμένων, καὶ πρὸς οὓς ὁ πόλεμος ἠγείρετο, βουλόμενός τε Ῥωμαίοις μὲν Ἰουδαίους σώζεσθαι, Ἰουδαίοις δὲ τὸ ἱερὸν καὶ τὴν μητρόπολιν, ἀλλ᾽ οὐδὲ αὐτῷ λυσιτελήσειν τὴν ταραχὴν ἐπιστάμενος, ἔπεμψε τοὺς ἐπαμυνοῦντας τῷ δήμῳ τριςχιλίους ἱππεῖς, Αὐρανίτας τε καὶ Βαταναίους καὶ Τραχωνίτας, ὑπὸ Δαρείῳ μὲν ἱππάρχῳ, στρατηγῷ δὲ τῷ Ἰακίμου Φιλίππῳ.

5. Τούτοις θαρσήσαντες οἱ δυνατοὶ σὺν τοῖς ἀρχιερεῦσι, καὶ πᾶν ὅσον τοῦ πλήθους εἰρήνην ἠγάπα, τὴν ἄνω καταλαμβάνονται πόλιν· τῆς κάτω γὰρ τὸ στασιάζον ἐκράτει, καὶ τοῦ ἱεροῦ. Χερμάσι μὲν οὖν καὶ τοῖς ἑκηβόλοις ἀδιαλείπτως ἐκέχρηντο, καὶ συνεχεῖς ἦσαν βελῶν ἀφέσεις ἐξ ἑκατέρων τῶν κλιμάτων. Ἔστι δὲ ὅτε καὶ κατὰ λόχους ἐκτρέχοντες συστάδην ἐμάχοντο, τόλμαις μὲν οἱ στασιασταὶ προέχοντες, ἐμπειρίᾳ δὲ οἱ βασιλικοί. Καὶ τούτοις μὲν ἦν ἀγὼν τοῦ ἱεροῦ κρατῆσαι μάλιστα, καὶ τοὺς μιαίνοντας τὸν ναὸν ἐξελάσαι, τοῖς δὲ περὶ τὸν Ἐλεάζαρον στασιασταῖς, πρὸς οἷς εἶχον καὶ τὴν ἄνω
194 πόλιν προςλαβεῖν. Ἑπτὰ μὲν οὖν ἡμέραις συχνὸς ἀμφοτέρων φόνος ἐγίνετο· οὐδέτεροι δὲ τοῦ καταληφθέντος μέρους εἶκον.

6. Τῇ δὲ ἑξῆς τῶν ξυλοφορίων ἑορτῆς οὔσης, — ἐν ᾗ πᾶσιν ἔθος ὕλην τῷ βωμῷ προςφέρειν, ὅπως μήποτε τροφὴ τῷ πυρὶ λίποιτο, διαμένει γὰρ ἄσβεστον ἀεὶ, — τοὺς μὲν διαφόρους τῆς θρησκείας ἐξέκλεισαν· τῷ δὲ ἀσθενεῖ λαῷ συνειςρυέντας πολλοὺς τῶν σικαρίων — οὕτω γὰρ ἐκάλουν τοὺς λῃστὰς ἔχοντας ὑπὸ τοῖς κόλποις ξίφη — προςλαβόν-

τες, θαῤῥαλεώτερον ἥπτοντο τῆς ἐπιθέσεως. Ἡττῶντο δὲ οἱ βασιλικοὶ, πλήθει τε καὶ τόλμῃ, καὶ βιασαμένοις εἶκον ἐκ τῆς ἄνω πόλεως. Οἱ δὲ ἐπιπεσόντες τήν τε Ἀνανίου τοῦ ἀρχιερέως οἰκίαν, καὶ τὰ Ἀγρίππα καὶ τὰ Βερνίκης βασίλεια κατέκαυσαν· μεθ' ἃ τὸ πῦρ ἐπὶ τὰ ἀρχεῖα ἔφερον, ἀφανίσαι σπεύδοντες τὰ συμβόλαια τῶν δεδανεικότων, καὶ τὰς εἰςπράξεις ἀποκόψαι τῶν χρεῶν, ὅπως αὐτοί τε πλῆθος προςλάβωσι τῶν ὠφεληθέντων, καὶ μετ' ἀδείας τοῖς εὐπόροις ἐπαναστήσωσι τοὺς ἀπόρους· φυγόντων δὲ τῶν πρὸς τῷ γραμματοφυλακείῳ, τὸ πῦρ ἐνίεσαν. Ἐπεὶ δὲ τὰ νεῦρα τῆς πόλεως κατέφλεξαν, ἐπὶ τοὺς ἐχθροὺς ἐχώρουν. Ἔνθα δὴ τῶν δυνατῶν καὶ τῶν ἀρχιερέων οἱ μὲν εἰς τοὺς ὑπονόμους καταδύντες διελάνθανον· οἱ δὲ σὺν τοῖς βασιλικοῖς εἰς τὴν ἀνωτέρω φεύγοντες αὐλὴν ταχέως ἀπέκλεισαν τὰς πύλας, σὺν οἷς Ἀνανίας ὁ ἀρχιερεὺς, Ἐζεκίας τε ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ, καὶ οἱ πρεσβεύσαντες πρὸς Ἀγρίππαν ἦσαν. Τότε μὲν οὖν τῇ νίκῃ καὶ τοῖς ἐμπρησθεῖσιν ἀρκεσθέντες ἀνεπαύσαντο.

7. Τῇ δὲ ἑξῆς, πεντεκαιδεκάτη δὲ ἦν Λώου μηνὸς, ὥρμησαν ἐπὶ τὴν Ἀντωνίαν, καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ φρουροὺς δυσὶν ἡμέραις πολιορκήσαντες, αὐτούς τε εἷλον καὶ κατέσφαξαν, καὶ τὸ φρούριον ἐνέπρησαν. Ἔπειτα μετέβαινον εἰς τὴν αὐλὴν, εἰς ἣν οἱ βασιλικοὶ κατέφυγον, καὶ διανείμαντες σφᾶς αὐτοὺς εἰς τέσσαρα μέρη τῶν τειχῶν ἐπειρῶντο. Τῶν δὲ ἔνδον πρὸς ἐκδρομὴν μὲν οὐδεὶς ἐθάῤῥει διὰ τὸ πλῆθος τῶν ἐφεστώτων, διϊστάμενοι δὲ ἐπὶ τὰ θωράκια καὶ τοὺς πύργους, ἔβαλλον τοὺς προςιόντας, καὶ συχνοὶ τῶν λῃστῶν ὑπὸ τοῖς τείχεσιν ἔπιπτον. Οὔτε δὲ νυκτὸς οὔτε ἡμέρας διέλιπεν ἡ συμβολὴ, τῶν μὲν στασιαστῶν ἀπαγορεύσειν τοὺς ἔνδον οἰομένων ἐνδείᾳ τροφῆς, τῶν δὲ ἔνδον καμάτῳ τοὺς πολιορκοῦντας.

8. Καὶ ἐν τούτῳ Μαναΐμός τις, υἱὸς Ἰούδα

τοῦ καλουμένου Γαλιλαίου, ὃς ἦν σοφιστὴς δεινό-
τατος, καὶ ἐπὶ Κυρηνίου ποτὲ Ἰουδαίους ὀνειδίσας,
ὅτι Ῥωμαίοις ὑπετάσσοντο μετὰ τὸν Θεὸν, ἀναλα-
βὼν τοὺς γνωρίμους, ἀνεχώρησεν εἰς Μασάδαν· ἔν-
θα τὴν Ἡρώδου τοῦ βασιλέως ὁπλοθήκην ἀναῤῥή-
ξας, καὶ πρὸς τοῖς δημόταις ἑτέρους λῃστὰς καθο-
195 πλίσας, τούτοις δὴ χρώμενος δορυφόροις, οἷα δὴ
βασιλεὺς ἐπάνεισιν εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ γενόμενος
ἡγεμὼν τῆς στάσεως διέτασσε τὴν πολιορκίαν. Ἀπο-
ρία δὲ ἦν ὀργάνων, καὶ φανερῶς ὑπορύσσειν τὸ
τεῖχος οὐχ οἷόν τε ἦν ἄνωθεν βαλλομένους. Ὑπό-
νομον δὴ πόῤῥωθεν ἐφ᾽ ἕνα τῶν πύργων διορύξαν-
τες ἀνακρημνᾶσιν αὐτὸν, ἔπειτα τὴν ἔχουσαν ὕλην
ἐμπρήσαντες ἐξῆλθον. Ὑποκαέντων δὲ τῶν στηρι-
γμάτων, ὁ μὲν πύργος ἐξαίφνης κατασείεται, τεῖχος
δὲ ἕτερον ἔνδοθεν ἀντῳκοδομημένον διεφάνη. Τὴν
γὰρ ἐπιβουλὴν αὐτῶν προαισθόμενοι, τάχα καὶ τοῦ
πύργου κινηθέντος ὡς ὑπωρύττετο, δεύτερον ἑαυ-
τοῖς ἔρυμα κατεσκεύασαν· πρὸς ὃ τῶν μὲν ἀδοκή-
τως ἰδόντων, καὶ κρατεῖν ἤδη πεπεισμένων, κατά-
πληξις ἦν. Οἱ δὲ ἔνδοθεν πρός τε τὸν Μανάϊμον
καὶ τοὺς ἐξάρχοντας τῆς στάσεως ἔπεμπον, ἀξιοῦν-
τες ἐξελθεῖν ὑπόσπονδοι. Καὶ δοθὲν μόνοις τοῖς
βασιλικοῖς καὶ τοῖς ἐπιχωρίοις, οἱ μὲν ἐξῄεσαν. Ἀθυ-
μία δὲ τοὺς Ῥωμαίους καταλειφθέντας μόνους ὑπέ-
λαβεν· οὔτε γὰρ βιάσασθαι τοσοῦτον πλῆθος ἐδύ-
ναντο, καὶ τὸ δεξιὰν αἰτεῖν ὄνειδος ὑπελάμβανον,
πρὸς τὸ μηδὲ πιστεύειν, εἰ διδῷτο. Καταλιπόντες
δὴ τὸ στρατόπεδον, ὡς εὐάλωτον, ἐπὶ τοὺς βασι-
λικοὺς ἀνέφυγον πύργους, τόν τε Ἱππικὸν καλού-
μενον, καὶ τὸν Φασάηλον, καὶ τὸν Μαριάμμην. Οἱ
δὲ περὶ τὸν Μανάϊμον, εἰςπεσόντες ὅθεν οἱ στρα-
τιῶται διέφυγον, ὅσους τε αὐτῶν κατέλαβον, μὴ
φθάσαντας ἀνελθεῖν διέφθειραν, καὶ τὰς ἀποσκευὰς
διαρπάσαντες ἐνέπρησαν τὸ στρατόπεδον. Ταῦτα
μὲν οὖν ἕκτῃ Γορπιαίου μηνὸς ἐπράχθη.

9. *Κατὰ δὲ τὴν ἐπιοῦσαν ὅ τε ἀρχιερεὺς Ἀνα-
νίας περὶ τὸν τῆς βασιλικῆς αὐλῆς εὔριπον διαλαν-
θάνων ἁλίσκεται, καὶ πρὸς τῶν λῃστῶν ἀναιρεῖται
σὺν Ἐζεκίᾳ τῷ ἀδελφῷ. Καὶ τοὺς πύργους ἐπι-
σχόντες οἱ στασιασταὶ παρεφύλαττον, μή τις τῶν
στρατιωτῶν διαφύγῃ. Τὸν δὲ Μανάϊμον ἥ τε τῶν
ὀχυρῶν καταστροφὴ χωρίων, καὶ ὁ τοῦ ἀρχιερέως
Ἀνανίου θάνατος ἐτύφωσεν εἰς ὠμότητα, καὶ μηδέ-
να νομίζων ἔχειν ἐπὶ τοῖς πράγμασιν ἀντίπαλον,
ἀφόρητος ἦν τύραννος. Ἐπανίστανται δὲ οἱ περὶ
τὸν Ἐλεάζαρον αὐτῷ, καὶ λόγον ἀλλήλοις δόντες,
ὡς ‛οὐ χρὴ Ῥωμαίων ἀποστάντας δι' ἐλευθερίας
πόθον καταπροέσθαι ταύτην οἰκείῳ δήμῳ, καὶ δε-
σπότην φέρειν, εἰ καὶ μηδὲν πράττοι βίαιον, ἀλλ'
οὖν ἑαυτῶν ταπεινότερον· εἰ γὰρ καὶ δέοι τινὰ τῶν
ὅλων ἀφηγεῖσθαι, παντὶ μᾶλλον, ἢ ἐκείνῳ, προς-
ήκειν συντίθενται.' Καὶ κατὰ τὸ ἱερὸν ἐπεχείρουν
αὐτῷ· σοβαρὸς γὰρ ἀνεβεβήκει προςκυνήσων, ἐσθῆ-
τί τε βασιλικῇ κεκοσμημένος, καὶ τοὺς ζηλωτὰς
ἐνόπλους ἐφελκόμενος. Ὡς δὲ οἱ περὶ τὸν Ἐλεά-
ζαρον ἐπ' αὐτὸν ὥρμησαν, ὅ τε λοιπὸς δῆμος ἐπὶ
τὰς ὁρμὰς λίθους ἁρπάσαντες τὸν σοφιστὴν ἔβαλ-
λον, οἰόμενοι, τούτου καταλυθέντος, διαῤῥίψειν
ὅλην τὴν στάσιν. Πρὸς ὀλίγον δὲ οἱ περὶ τὸν Μα-
νάϊμον ἀντισχόντες, ὡς εἶδον πᾶν ἐπ' αὐτοὺς τὸ
πλῆθος ὁρμῆσαν, ἔφυγεν ὅπῃ τις ἴσχυεν. Καὶ φό- 196
νος μὲν ἦν τῶν καταληφθέντων, ἔρευνα δὲ τῶν απο-
κρυπτομένων. Καὶ διεσώθησαν ὀλίγοι, λάθρα δια-
δράντες εἰς Μασάδαν, σὺν οἷς Ἐλεάζαρος, ὁ υἱὸς
Ἰαείρου, προςήκων τῷ Μαναΐμῳ κατὰ γένος, ὃς
ὕστερον ἐτυράννησε τῆς Μασάδας. Αὐτόν τε τὸν
Μανάϊμον εἰς τὸν καλούμενον Ὀφλᾶν συμφυγόντα,
καὶ ἐκεῖ ταπεινῶς ὑπολανθάνοντα ζωγρήσαντες, εἰς
τὸ φανερὸν ἐξείλκυσαν, καὶ πολλαῖς αἰκισάμενοι βα-
σάνοις ἀνεῖλον, ὁμοίως δὲ καὶ τοὺς ὑπ' αὐτὸν ἡγε-*

μόνας, τόν τε ἐπισημότατον τῆς τυραννίδος ὑπηρέτην Ἀψάλωμον.

10. *Ὁ μὲν οὖν δῆμος, ὡς ἔφην, εἰς ταῦτα συνήργησεν, ἐλπίζων τινὰ τῆς ὅλης στάσεως λαμβάνειν διόρθωσιν. Οἱ δὲ οὐ καταλῦσαι τὸν πόλεμον σπεύδοντες, ἀλλ' ἀδεέστερον πολεμεῖν, Μαναΐμον ἀνῃρήκεσαν. Ἀμέλει τοῦ δήμου πολλὰ τοῖς στρατιώταις ἀνεῖναι τὴν πολιορκίαν παρακαλοῦντος, οἱ δὲ προσέκειντο χαλεπώτερον, μέχρι μηκέτι ἀντέχοντες οἱ περὶ τὸν Μετίλιον — οὗτος γὰρ ἦν τῶν Ῥωμαίων ἔπαρχος — διαπέμπονται πρὸς τοὺς περὶ τὸν Ἐλεάζαρον, ἐξαιτούμενοι μόνας τὰς ψυχὰς ὑποσπόνδους, τὰ δὲ ὅπλα καὶ τὴν λοιπὴν κτῆσιν παραδώσειν λέγοντες. Οἱ δὲ καὶ τὴν ἱκεσίαν ἁρπάσαντες, ἀπέπεμψαν πρὸς αὐτοὺς Γωρίωνά τε Νικομήδους υἱὸν, καὶ Ἀνανίαν Σαδδουκὶ, καὶ Ἰούδαν Ἰωνάθου, δεξιάς τε καὶ ὅρκους δώσοντας. Ὧν γενομένων, κατῆγε τοὺς στρατιώτας ὁ Μετίλιος. Οἱ δὲ μέχρι μὲν ἦσαν ἐν τοῖς ὅπλοις, οὔτε ἐπεχείρει τις τῶν στασιαστῶν αὐτοῖς, οὔτε ἐνέφαινεν ἐπιβουλήν. Ὡς δὲ κατὰ τὰς συνθήκας ἅπαντες ἀπέθεντο τοὺς θυρεοὺς καὶ τὰ ξίφη, καὶ μηδὲν ἔτι ὑποπτεύοντες ἀνεχώρουν, ὥρμησαν ἐπ' αὐτοὺς οἱ περὶ τὸν Ἐλεάζαρον, καὶ περισχόντες ἀνῄρουν, οὔτε ἀμυνομένους, οὔτε ἱκετεύοντας, μόνας δὲ τὰς συνθήκας καὶ τοὺς ὅρκους ἀναβοῶντας. Καὶ οἱ μὲν οὕτως ὠμῶς ἀπεσφάγησαν ἅπαντες πλὴν Μετιλίου· τοῦτον γὰρ ἱκετεύσαντα, καὶ μέχρι περιτομῆς ἰουδαΐσειν ὑποσχόμενον, διέσωσαν μόνον. Τὸ δὲ πάθος Ῥωμαίοις μὲν ἦν κοῦφον· ἐκ γὰρ ἀπλέτου δυνάμεως ἀπανηλώθησαν ὀλίγοι, Ἰουδαίοις δὲ προοίμιον ἁλώσεως ἔδοξε. Καὶ κατιδόντες ἀνηκέστους μὲν ἤδη τὰς αἰτίας τοῦ πολέμου, τὴν δὲ πόλιν τηλικούτῳ μιάσματι πεφυρμένην, ἐξ οὗ δαιμόνιόν τι μήνιμα προσδοκᾶν εἰκὸς ἦν, εἰ καὶ μὴ τὴν ἐκ Ῥωμαίων ἄμυναν, ἐπένθουν δημοσίᾳ, καὶ πλήρης μὲν κατηφείας ἦν ἡ πό-*

λις. Ἕκαστος δὲ τῶν μετρίων, ὡς αὐτὸς ὑπὲρ τῶν στασιαστῶν δίκας δώσων, ἐτετάρακτο· καὶ γὰρ δὴ σαββάτῳ συνέβη πραχθῆναι τὸν φόνον, ἐν ᾧ διὰ τὴν θρησκείαν τῶν ὁσίων ἔργων ἔχουσιν ἐκεχειρίαν.

CAP. XVIII. 1. Τῆς δὲ αὐτῆς ἡμέρας καὶ ὥρας, ὥσπερ ἐκ δαιμονίου προνοίας, ἀνῄρουν οἱ Καισαρεῖς τοὺς παρ' αὐτοῖς Ἰουδαίους, ὡς ὑπὸ μίαν ὥραν ἀποσφαγῆναι μὲν ὑπὲρ δισμυρίους, κενωθῆναι δὲ 179
πᾶσαν Ἰουδαίων τὴν Καισάρειαν· καὶ γὰρ τοὺς διαφεύγοντας ὁ Φλῶρος συλλαβὼν, κατήγαγε δεσμώτας εἰς τὰ νεώρια. Πρὸς δὲ τὴν ἐκ τῆς Καισαρείας πληγὴν ὅλον τὸ ἔθνος ἐξαγριοῦται· καὶ διαμερισθέντες τάς τε κώμας τῶν Σύρων καὶ τὰς προσεχεῖς ἐπόρθουν πόλεις, Φιλαδέλφειάν τε καὶ Σεβωνῖτιν καὶ Γέρασαν καὶ Πέλλαν καὶ Σκυθόπολιν. Ἔπειτα Γαδάροις καὶ Ἵππῳ καὶ τῇ Γαυλανίτιδι προσπεσόντες, τὰς μὲν καταστρεψάμενοι, τὰς δὲ ὑποπρήσαντες, ἐχώρουν ἐπὶ Κέδασαν τὴν Τυρίων, καὶ Πτολεμαΐδα, Γάβαν τε καὶ Καισάρειαν. Ἀντέσχε δὲ οὐδὲ Σεβαστὴ ταῖς ὁρμαῖς αὐτῶν, οὐδὲ Ἀσκάλων· ἀλλ' ἐπὶ ταύταις πυρποληθείσαις Ἀνθηδόνα καὶ Γάζαν κατέσκαπτον. Πολλαὶ δὲ περὶ ἑκάστην τούτων τῶν πόλεων ἀνηρπάζοντο κῶμαι, καὶ τῶν ἁλισκομένων ἀνδρῶν φόνος ἦν ἄπειρος.

2. Οὐ μὴν οἱ Σύροι τῶν Ἰουδαίων ἔλαττον πλῆθος ἀνῄρουν, ἀλλὰ καὶ αὐτοὶ τοὺς ἐν ταῖς πόλεσι λαμβανομένους ἀπέσφαττον, οὐ μόνον κατὰ μῖσος, ὡς πρότερον, ἀλλ' ἤδη καὶ τὸν ἐφ' ἑαυτοῖς κίνδυνον φθάνοντες. Δεινὴ δὲ ὅλην τὴν Συρίαν ἐπέσχε ταραχὴ, καὶ πᾶσα πόλις εἰς δύο διῄρητο στρατόπεδα· σωτηρία δὲ τοῖς ἑτέροις ἦν τὸ τοὺς ἑτέρους φθάσαι. Καὶ τὰς μὲν ἡμέρας ἐν αἵματι διῆγον, τὰς δὲ νύκτας δέει χαλεπωτέρας· ἀπεσκευάσθαι γὰρ τοὺς Ἰουδαίους δοκοῦντες ἕκαστοι, τοὺς

ἰουδαΐζοντας εἶχον ἐν ὑποψίᾳ, καὶ τὸ παρ' ἑκάστοις ἀμφίβολον οὔτε ἀνελεῖν τις προχείρως ὑπέμενε, καὶ μεμιγμένον ὡς βεβαίως ἀλλόφυλον ἐφοβεῖτο. Προεκαλεῖτο δὲ ἐπὶ τὰς σφαγὰς τῶν διαφόρων καὶ τοὺς πάλαι πρᾳοτάτους εἶναι δοκοῦντας ἡ πλεονεξία· τὰς γὰρ οὐσίας τῶν ἀναιρεθέντων ἀδεῶς διήρπαζον, καὶ καθάπερ ἐκ παρατάξεως τὰ σκῦλα τῶν ἀνῃρημένων εἰς τοὺς σφετέρους οἴκους μετέφερον. Ἔνδοξός τε ἦν ὁ πλεῖστα κερδάνας, ὡς κατισχύσας πλειόνων. Ἦν δὲ ἰδεῖν τὰς πόλεις μεστὰς ἀτάφων σωμάτων, καὶ νεκροὺς ἅμα νηπίοις γέροντας ἐῤῥιμμένους, γύναιά τε μήτε τῆς ἐπ' αἰδῶ σκέπης μετειληφότα, καὶ πᾶσαν μὲν τὴν ἐπαρχίαν μεστὴν ἀδιηγήτων συμφορῶν, μείζονα δὲ τῶν ἑκάστοτε τολμωμένων τὴν ἐπὶ τοῖς ἀπειλουμένοις μετάστασιν.

3. Μέχρι μὲν δὴ τούτων Ἰουδαίοις πρὸς τὸ ἀλλόφυλον ἦσαν συμβολαί. Κατατρέχοντες δὲ εἰς Σκυθόπολιν τοὺς παρ' ἐκείνῃ Ἰουδαίους ἐπειράσαντο πολεμίους· ταξάμενοι γὰρ μετὰ τῶν Σκυθοπολιτῶν,
198 καὶ τῆς ἑαυτῶν ἀσφαλείας ἐν δευτέρῳ θέμενοι τὴν συγγένειαν, ὁμόσε τοῖς ὁμοφύλοις ἐχώρουν. Ὑπωπτεύθη δὲ αὐτῶν καὶ τὸ λίαν πρόθυμον· οἱ γοῦν Σκυθοπολῖται δείσαντες, μὴ νύκτωρ ἐπιχειρήσωσι τῇ πόλει, καὶ μετὰ μεγάλης αὐτῶν συμφορᾶς τοῖς οἰκείοις ἀπολογήσωνται περὶ τῆς ἀποστάσεως, ἐκέλευον αὐτοὺς, εἰ βούλονται τὴν ὁμόνοιαν βεβαιῶσαι, καὶ τὸ πρὸς τοὺς ἀλλοεθνεῖς πιστὸν ἐπιδείξασθαι, μεταβαίνειν ἅμα ταῖς γενεαῖς εἰς τὸ ἄλσος. Τῶν δὲ ποιησάντων τὸ προσταχθὲν χωρὶς ὑποψίας, δύο μὲν ἡμέρας ἠρέμησαν οἱ Σκυθοπολῖται, τὴν πίστιν αὐτῶν δελεάζοντες· τῇ δὲ τρίτῃ νυκτὶ παρατηρήσαντες οὓς μὲν ἀφυλάκτους οὓς, δὲ κοιμωμένους πάντας ἀπέσφαξαν, ὄντας τὸν ἀριθμὸν ὑπὲρ μυρίους καὶ τρισχιλίους, τάς τε κτήσεις διήρπασαν ἁπάντων.

4. Ἄξιον καὶ ἀφηγήσασθαι καὶ τὸ τοῦ Σίμω-

νος πάθος, ὃς υἱὸς μὲν ἦν Σαούλου τινὸς τῶν οὐκ ἀσήμων, ῥώμῃ δὲ σώματος καὶ τόλμῃ διαφέρων, ἐπὶ κακῷ τῶν ὁμοφύλων ἀμφοτέροις κατεχρήσατο. Προςιὼν γοῦν ἑσημέραι πολλοὺς μὲν ἀνῄρει τῶν πρὸς τῇ Σκυθοπόλει Ἰουδαίων, τρεπόμενος δὲ πολλάκις αὐτοὺς πάντας μόνος ἦν ῥοπὴ τῆς παρατάξεως. Περιέρχεται δὲ αὐτὸν ἀξία ποινὴ τοῦ συγγενικοῦ φόνου· ἐπεὶ γὰρ περισχόντες οἱ Σκυθοπολῖται κατηκόντιζον αὐτοὺς ἀνὰ τὸ ἄλσος, σπασάμενος τὸ ξίφος ἐπ' οὐδένα μὲν τρέπεται τῶν πολεμίων, καὶ γὰρ ἑώρα τὸ πλῆθος ἀνήνυτον, ἀναβοήσας δὲ μάλα ἐκπαθῶς, "Ἄξιά γε ὧν ἔδρασα πάσχω, Σκυθοπολῖται, καθ' ὑμῶν, ὅτι τοσούτῳ φόνῳ συγγενῶν τὴν πρὸς αὐτοὺς εὔνοιαν ἐπιστωσάμην. Τοιγαροῦν οἷς ἄπιστον μὲν εὐλόγως εὕρηται τὸ ἀλλόφυλον, ἠσέβηται δὲ εἰς ἔσχατα τὸ οἰκεῖον. Θνήσκω μὲν ὡς ἐναγὴς χερσὶν ἰδίαις· οὐ γὰρ πρέπον ἐν ταῖς τῶν πολεμίων. Τὸ δὲ αὐτὸ ἂν εἴη μοι καὶ ποινὴ τοῦ μιάσματος ἀξία, καὶ πρὸς ἀνδρείαν ἔπαινος, ἵνα μηδεὶς τῶν ἐχθρῶν τὴν ἐμὴν αὐχήσῃ σφαγὴν, μηδὲ ἐπαλαζονεύσηται πεσόντι." Ταῦτα εἰπὼν, ἐλεοῦσιν ἅμα καὶ τεθυμωμένοις ὄμμασι περισκέπτεται τὴν ἑαυτοῦ γενεάν· ἦν δὲ αὐτῷ καὶ γυνὴ καὶ τέκνα καὶ γηραιοὶ γονεῖς. Ὁ δὲ πρῶτον τὸν πατέρα τῆς πολιᾶς ἐπισπασάμενος διελαύνει τῷ ξίφει, μεθ' ὃν οὐκ ἄκουσαν τὴν μητέρα, καὶ ἐπὶ τούτοις τήν τε γυναῖκα καὶ τὰ τέκνα, μονονουχὶ ὑπαντῶντος ἑκάστου τῷ ξίφει, καὶ σπεύδοντος φθάσαι τοὺς πολεμίους. Ὁ δὲ διελθὼν πᾶσαν τὴν γενεὰν, καὶ περίοπτος ἐπιστὰς τοῖς σώμασι, τήν τε δεξιὰν ἀνατείνας, ὡς μηδένα λαθεῖν, ὅλον εἰς τὴν ἑαυτοῦ σφαγὴν ἐβάπτισε τὸ ξίφος. Ἄξιος μὲν ἐλέους ὁ νεανίας δι' ἀλκὴν σώματος, καὶ ψυχῆς παράστημα, τῆς δὲ πρὸς ἀλλοφύλους πίστεως ἕνεκεν ἀκολούθοις πάθεσι χρησάμενος.

5. Πρὸς δὲ τὴν ἐν Σκυθοπόλει φθορὰν αἱ λοι-

καὶ πόλεις ἐπανίσταντο τοῖς καθ' ἑαυτὴν Ἰουδαίοις ἑκάστη, καὶ πεντακοσίους μὲν ἐπὶ δισχιλίους Ἀσκαλωνῖται, Πτολεμαιεῖς δὲ δισχιλίους ἀνεῖλον, ἔδησάν
199 τε οὐκ ὀλίγους. Καὶ Τύριοι μὲν συχνοὺς διεχρήσαντο, τὸ πλεῖον δὲ αὐτῶν δεσμώτας ἐφρούρουν. Ἱππηνοί τε καὶ Γαδαρεῖς ὁμοίως τοὺς μὲν θρασυτέρους ἀπεσκευάσαντο, τοὺς δὲ φοβεροὺς διὰ φυλακῶν εἶχον· αἵ τε λοιπαὶ πόλεις τῆς Συρίας, ὅπως ἑκάστη πρὸς τὸ Ἰουδαϊκὸν ἢ μίσους ἢ δέους εἶχον. Μόνοι δὲ Ἀντιοχεῖς καὶ Σιδώνιοι καὶ Ἀπαμεῖς ἐφείσαντο τῶν μετοικούντων, καὶ οὔτε ἀνελεῖν τινα Ἰουδαίων ὑπέμειναν, οὔτε δῆσαι, τάχα μὲν καὶ διὰ τὸ σφέτερον πλῆθος ὑπερορῶντες αὐτῶν πρὸς τὰ κινήματα, τὸ πλέον δὲ, ἔμοιγε δοκεῖ, οἴκτῳ πρὸς οὓς οὐδὲν ἑώρων νεωτερίζοντας. Γερασηνοί τε οὔτε εἰς τοὺς ἐμμείναντας ἐπλημμέλησαν, καὶ τοὺς ἐξελθεῖν ἐθελήσαντας προέπεμψαν μέχρι τῶν ὅρων.

6. Συνέστη δὲ καὶ κατὰ τὴν Ἀγρίππα βασιλείαν ἐπιβουλὴ κατὰ Ἰουδαίων. Αὐτὸς γὰρ ἐπεπόρευτο πρὸς Κέστιον Γάλλον εἰς Ἀντιόχειαν, καταλελοίπει δὲ διοικεῖν τὰ πράγματά τινα τῶν ἑταίρων τὸ ὄνομα Νόαρον, Σοέμῳ τῷ βασιλεῖ προσήκοντα κατὰ γένος. Ἧκον δὲ ἐκ τῆς Βαταναίας ἑβδομήκοντα τὸν ἀριθμὸν ἄνδρες, οἱ κατὰ γένος καὶ σύνεσιν τῶν πολιτῶν δοκιμώτατοι, στρατιὰν αἰτοῦντες, ἵνα, εἴ τι γένοιτο κίνημα, καὶ περὶ σφᾶς ἔχοιεν ἀξιόχρεων φυλακὴν, κωλύειν τοὺς ἐπανισταμένους. Τούτους ὁ Νόαρος, ἐκπέμψας νύκτωρ τῶν βασιλικῶν ὁπλιτῶν τινας, ἅπαντας ἀναιρεῖ, τολμήσας μὲν τὸ ἔργον δίχα τῆς Ἀγρίππα γνώμης, διὰ δὲ φιλαργυρίαν ἄμετρον εἰς τοὺς ὁμοφύλους ἑλόμενος ἀσεβεῖν, τὴν βασιλείαν διέφθειρεν. Διετέλει τε ὠμῶς εἰς τὸ ἔθνος παρανομῶν, μέχρι πυθόμενος Ἀγρίππας; ἀνελεῖν μὲν αὐτὸν ᾐδέσθη διὰ Σόεμον, ἔπαυσε δὲ τῆς ἐπιτροπῆς. Οἱ δὲ στασιασταὶ καταλαβόμενοι φρούριον, ὃ καλεῖται μὲν Κύπρος, καθύπερθε δὲ ἦν Ἱεριχοῦντος, τοὺς

μὲν φρουροὺς ἀπέσφαξαν, τὰ δὲ ἐρύματα κατέῤῥιψαν εἰς γῆν. Κατὰ δὲ τὰς αὐτὰς ἡμέρας, καὶ τῶν ἐν Μαχαιροῦντι Ἰουδαίων τὸ πλῆθος ἔπειθον τοὺς φρουροῦντας Ῥωμαίους ἐκλείπειν τὸ χωρίον, καὶ παραδιδόναι σφίσιν. Οἱ δὲ τὴν ἐκ βίας ἀφαίρεσιν εὐλαβηθέντες, συντίθενται πρὸς αὐτοὺς ἐκχωρήσειν ὑπόσπονδοι. Καὶ λαβόντες τὰ πιστὰ παραδιδόασι τὸ φρούριον, ὅπερ φυλακῇ κρατυνόμενον κατεῖχον οἱ Μαχαιρῖται.

7. Κατὰ δὲ τὴν Ἀλεξάνδρειαν ἀεὶ μὲν ἦν στάσις πρὸς τὸ Ἰουδαϊκὸν τοῖς ἐπιχωρίοις, ἀφ' οὗ χρησάμενος προθυμοτάτοις κατὰ τῶν Αἰγυπτίων Ἰουδαίοις Ἀλέξανδρος, γέρας τῆς συμμαχίας ἔδωκε τὸ μετοικεῖν κατὰ τὴν πόλιν ἐξ ἰσοτιμίας πρὸς Ἕλληνας. Διέμεινε δὲ αὐτοῖς ἡ τιμὴ καὶ παρὰ τῶν διαδόχων, οἳ καὶ τόπον ἴδιον αὐτοῖς ἀφώρισαν, ὅπως καθαρωτέραν ἔχοιεν τὴν δίαιταν, ἧττον ἐπιμισγομένων τῶν ἀλλοφύλων, καὶ χρηματίζειν ἐπέτρεψαν Μακεδόνας. Ἐπεὶ δὲ Ῥωμαῖοι κατεκτήσαντο τὴν Αἴγυπτον, οὔτε Καῖσαρ ὁ πρῶτος οὔτε τῶν μετ' αὐτόν τις ὑπέμεινε τὰς ἀπὸ Ἀλεξάνδρου τιμὰς Ἰουδαίων ἐλαττῶσαι. Συμβολαὶ δὲ ἦσαν αὐτῶν ἀδιά- 200
λειπτοι πρὸς τοὺς Ἕλληνας, καὶ τῶν ἡγεμόνων πολλοὺς ὁσημέραι παρ' ἀμφοῖν κολαζόντων, ἡ στάσις μᾶλλον παρωξύνετο. Τότε δὲ ὡς καὶ παρὰ τοῖς ἄλλοις ἐτετάρακτο, μᾶλλον ἐξήφθη τὰ παρ' ἐκείνοις. Καὶ δὴ τῶν Ἀλεξανδρέων ἐκκλησιαζόντων περὶ ἧς ἔμελλον ἐκπέμπειν πρεσβείας ἐπὶ Νέρωνα, συνεῤῥύησαν μὲν εἰς τὸ ἀμφιθέατρον ἅμα τοῖς Ἕλλησι συχνοὶ Ἰουδαίων. Κατιδόντες δὲ αὐτοὺς οἱ διάφοροι, παραχρῆμα ἀνεβόων, πολεμίους καὶ κατασκόπους λέγοντες, ἔπειτα ἀναπηδήσαντες ἐπέβαλλον τὰς χεῖρας αὐτοῖς. Οἱ μὲν οὖν λοιποὶ φεύγοντες διεφθάρησαν· τρεῖς δὲ ἄνδρας συλλαβόντες ἔσυρον ὡς ζῶντας καταφλέξοντες. Ἤρθη δὲ πᾶν τὸ Ἰουδαϊκὸν ἐπὶ τὴν ἄμυναν. Καὶ τὸ μὲν πρῶτον λίθοις τοὺς

Ἕλληνας ἔβαλλον· αὖθις δὲ λαμπάδας ἁρπασάμενοι πρὸς τὸ ἀμφιθέατρον ὥρμησαν, ἀπειλοῦντες καταφλέξειν ἐν αὐτῷ τὸν δῆμον αὔτανδρον. Καὶ ἂν ἔφθησαν τοῦτό δράσαντες, εἰ μὴ τοὺς θυμοὺς αὐτῶν ἀνέκοψε Τιβέριος Ἀλέξανδρος ὁ τῆς πόλεως ἡγεμών. Οὐ μὴν οὗτός τε ἀπὸ τῶν ὅπλων ἤρξατο σωφρονίζειν, ἀλλ' ὑποπέμψας τοὺς γνωρίμους αὐτοῖς, παύσασθαι παρεκάλει, καὶ μὴ καθ' ἑαυτῶν ἐρεθίζειν τὸ Ῥωμαίων στράτευμα. Καταχλευάζοντες δὲ τῆς παρακλήσεως οἱ στασιώδεις, ἐβλασφήμουν τὸν Τιβέριον.

8. Καὶ ἐκεῖνος συνιδὼν, ὡς χωρὶς μεγάλης συμφορᾶς οὐκ ἂν παύσαιντο νεωτερίζοντες, ἐπαφίησιν αὐτοῖς τὰ κατὰ τὴν πόλιν Ῥωμαίων δύο τάγματα, καὶ σὺν αὐτοῖς πεντακισχιλίους στρατιώτας, κατὰ τύχην παρόντας εἰς τὸν Ἰουδαίων ὄλεθρον ἐκ Λιβύης· ἐπέτρεψε δὲ οὐ μόνον ἀναιρεῖν, ἀλλὰ καὶ τὰς κτήσεις αὐτῶν διαρπάζειν, καὶ τὰς οἰκίας καταφλέγειν. Οἱ δὲ ὁρμήσαντες εἰς τὸ καλούμενον Δέλτα, συνῴκιστο γὰρ ἐκεῖ τὸ Ἰουδαϊκὸν, ἐτέλουν τὰς ἐντολὰς, οὐ μὴν ἀναιμωτί· συστραφέντες γὰρ οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ τοὺς ἄμεινον ὡπλισμένους αὐτῶν προτάξαντες, μέχρι πλείστου μὲν ἀντέσχον. Ἅπαξ δὲ κλίναντες ἀνέδην διεφθείροντο· καὶ παντελὴς ἦν αὐτῶν ὄλεθρος, τῶν μὲν ἐν τῷ πεδίῳ καταλαμβανομένων, τῶν δὲ εἰς τὰς οἰκίας συνωθουμένων. Ὑπεπίμπρασαν δὲ καὶ ταύτας οἱ Ῥωμαῖοι, προδιαρπάζοντες τὰ ἔνδον. Καὶ οὔτε νηπίων ἔλεος αὐτοῖς, οὔτε αἰδὼς εἰςῄει γερόντων, ἀλλὰ διὰ πάσης ἡλικίας ἐχώρουν κτείνοντες, ὡς ἐπικλυσθῆναι μὲν αἵματι πάντα τὸν χῶρον, πέντε δὲ μυριάδας σωρευθῆναι νεκρῶν. Περιελείφθη δ' ἂν οὔτε τὸ λοιπὸν, εἰ μὴ πρὸς ἱκετείαν ἐτράποντο· κατοικτείρας δὲ αὐτοὺς Ἀλέξανδρος, ἀναχωρεῖν τοὺς Ῥωμαίους ἐκέλευσεν. Καὶ οἱ μὲν ἐξ ἔθους ἔχοντες τὸ πειθήνιον, ἅμα νεύματι τοῦ φονεύειν ἐπαύσαντο· τὸ δημοτικὸν δὲ

τῶν Ἀλεξανδρέων δι' ὑπερβολὴν μίσους δυςανάκλητον ἦν, καὶ μόλις ἀπεσπᾶτο τῶν σωμάτων.

9. Τοιοῦτο μὲν τὸ κατὰ τὴν Ἀλεξάνδρειαν πάθος συνηνέχθη. Κεστίῳ δὲ οὐκ ἔτι ἠμερεῖν ἐδόκει, πανταχοῦ τῶν Ἰουδαίων ἐκπεπολεμωμένων. Ἀναλαβὼν δὲ ἀπὸ τῆς Ἀντιοχείας τὸ μὲν δωδέκατον τάγμα πλῆρες, ἀπὸ δὲ τῶν λοιπῶν ἀνὰ διςχιλίους ἐπιλέκτους, πεζῶν δὲ ἓξ σπείρας, καὶ τέσσαρας ἴλας ἱπ- 201
πέων, πρὸς αἷς τὰς παρὰ τῶν βασιλέων συμμαχίας, Ἀντιόχου μὲν διςχιλίους ἱππεῖς, καὶ πεζοὺς τριςχιλίους, τοξότας πάντας, Ἀγρίππα δὲ πεζοὺς μὲν τοὺς ἴσους, ἱππεῖς δὲ διςχιλίων ἐλάττους, — εἵπετο δὲ καὶ ὁ Σόεμος μετὰ τετρακιςχιλίων, ὧν ἦσαν ἱππεῖς ἡ τρίτη μοῖρα, καὶ τὸ πλέον τοξόται, — προῆλθεν εἰς Πτολεμαΐδα. Πλεῖστοι δὲ καὶ ἐκ τῶν πόλεων ἐπίκουροι συνελέγησαν, ἐμπειρίᾳ μὲν ἡττώμενοι τῶν στρατιωτῶν, ταῖς δὲ προθυμίαις καὶ τῷ κατὰ Ἰουδαίων μίσει τὸ λεῖπον ἐν ταῖς ἐπιστήμαις ἀντιπληροῦντες. Συμπαρῆν δὲ καὶ αὐτὸς Ἀγρίππας Κεστίῳ, τῆς τε ὁδοῦ καὶ τῶν συμφερόντων ἐξηγούμενος. Ἀναλαβὼν δὲ μέρος τῆς δυνάμεως Κέστιος, ὥρμησεν ἐπὶ πόλιν καρτερὰν τῆς Γαλιλαίας Ζαβουλὼν, ἣ καλεῖται ἀνδρῶν, διορίζει δὲ ἀπὸ τοῦ ἔθνους τὴν Πτολεμαΐδα. Καταλαβὼν δὲ αὐτὴν ἔρημον μὲν ἀνδρῶν, καταπεφεύγει γὰρ τὸ πλῆθος εἰς τὰ ὄρη, πλήρη δὲ παντοίων κτημάτων, τὰ μὲν ἐφῆκε τοῖς στρατιώταις διαρπάζειν, τὸ δὲ ἄστυ, καίτοι θαυμαστοῦ κάλλους ἔχον τὰς οἰκίας, ὁμοίως ταῖς ἐν Τύρῳ καὶ Σιδῶνι καὶ Βηρυτῷ δεδομημένας, ἐνέπρησεν. Ἔπειτα τὴν χώραν καταδραμὼν, καὶ διαρπάσας μὲν πᾶν τὸ προςπίπτον, καταφλέξας δὲ τὰς πέριξ κώμας, ὑπέστρεφεν εἰς τὴν Πτολεμαΐδα. Πρὸς δὲ ταῖς ἁρπαγαῖς ἔτι τῶν Σύρων ὄντων, καὶ τὸ πλέον Βηρυτίων, ἀναθαρσήσαντες οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ γὰρ ἀποκεχωρηκότα συνίεσαν Κέστιον, τοῖς ἀπο-

*λειφθεῖσιν ἀδοκήτως ἐπέπεσον, καὶ περὶ δισχιλίους
αὐτῶν διέφθειραν.*

10. *Ὁ δὲ Κέστιος ἀναζεύξας ἀπὸ τῆς Πτολε-
μαΐδος, αὐτὸς μὲν εἰς Καισάρειαν ἀφικνεῖται, μοῖ-
ραν δὲ τῆς στρατιᾶς προέπεμψεν εἰς Ἰόππην, προς-
τάξας, εἰ μὲν ἐγκαταλαβέσθαι δυνηθεῖεν τὴν πόλιν,
φρουρεῖν· εἰ δὲ προαίσθοιντο τὴν ἔφοδον, περιμέ-
νειν αὐτόν τε καὶ τὴν ἄλλην δύναμιν. Τῶν δὲ οἱ
μὲν κατὰ θάλασσαν, οἱ δὲ κατὰ γῆν ἐπειχθέντες,
ἀμφοτέρωθεν αἱροῦσι τὴν πόλιν ῥᾳδίως· καὶ μηδὲ
φυγεῖν φθασάντων τῶν οἰκητόρων, οὐχ ὅπως παρα-
σκευάσασθαι πρὸς μάχην, ἐμπεσόντες ἅπαντας ἀνεῖ-
λον σὺν ταῖς γενεαῖς, καὶ τὴν πόλιν διαρπάσαντες
ἐνέπρησαν. Ὁ δὲ ἀριθμὸς τῶν φονευθέντων τετρα-
κόσιοι πρὸς ὀκτακισχιλίους. Ὁμοίως δὲ καὶ εἰς τὴν
ὅμορον τῆς Καισαρείας Ναρβατηνὴν τοπαρχίαν ἔπεμ-
ψε συχνοὺς τῶν ἱππέων, οἳ τήν τε γῆν ἔτεμον, καὶ
πολὺ πλῆθος διέφθειραν τῶν ἐπιχωρίων, τάς τε
κτήσεις διήρπασαν, καὶ τὰς κώμας κατέφλεξαν.*

11. *Εἰς δὲ τὴν Γαλιλαίαν ἔστειλε Κέστιος Γάλ-
λον ἡγεμόνα τοῦ δωδεκάτου τάγματος, παραδοὺς
δύναμιν, ὅσην ἀρκέσειν πρὸς τὸ ἔθνος ὑπελάμβα-
νεν. Τοῦτον ἡ καρτερωτάτη τῆς Γαλιλαίας πόλις
202 Σεπφώρις μετ' εὐφημίας δέχεται, καὶ πρὸς τὴν
ταύτης εὐβουλίαν αἱ λοιπαὶ πόλεις ἠρέμουν. Τὸ δὲ
στασιῶδες καὶ λῃστρικὸν πᾶν ἔφυγεν εἰς τὸ μεσαί-
τατον τῆς Γαλιλαίας ὄρος, ὃ κεῖται μὲν ἄντικρυς
τῆς Σεπφώρεως, καλεῖται δὲ Ἀσαμών. Τούτοις ὁ
Γάλλος ἐπῆγε τὴν δύναμιν· οἱ δέ, ἕως μὲν ἦσαν
ὑπερδέξιοι, ῥᾳδίως τοὺς Ῥωμαίους ἔβαλλον προς-
ιόντας, καὶ πρὸς διακοσίους αὐτῶν ἀνεῖλον· περι-
ελθόντων δὲ καὶ γενομένων ἐν τοῖς ὑψηλοτέροις ἡτ-
τῶντο ταχέως, καὶ οὔτε γυμνῆται τοὺς ὁπλίτας
συστάδην ἔφερον, οὔτε ἐν τῇ τροπῇ τοὺς ἱππεῖς
ἐξέφυγον, ὥςτε ὀλίγους μὲν ἐν ταῖς δυςχωρίαις δια-
λαθεῖν, ἀναιρεθῆναι δὲ ὑπὲρ δισχιλίους.*

CAP. XIX. 1. Γάλλος μὲν οὖν, ὡς οὐδὲν ἔτι ἑώρα κατὰ τὴν Γαλιλαίαν νεωτεριζόμενον, ὑπέστρεψε μετὰ τῆς στρατιᾶς εἰς Καισάρειαν. Κέστιος δὲ μετὰ πάσης τῆς δυνάμεως ἀναζεύξας, ἐνέβαλεν εἰς Ἀντιπατρίδα· καὶ πυθόμενος ἔν τινι πύργῳ Ἀφεκοῦ καλουμένῳ συνηθροῖσθαι Ἰουδαίων δύναμιν οὐκ ὀλίγην, προέπεμψε τοὺς συμβαλοῦντας. Οἱ δὲ πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν δέει τοὺς Ἰουδαίους διεσκέδασαν, ἐπελθόντες δὲ ἔρημον τὸ στρατόπεδον καὶ τὰς πέριξ κώμας ἐνέπρησαν. Ἀπὸ δὲ τῆς Ἀντιπατρίδος Κέστιος εἰς Λύδδα προελθὼν κενὴν ἀνδρῶν τὴν πόλιν καταλαμβάνει· διὰ γὰρ τὴν τῆς σκηνοπηγίας ἑορτὴν ἀναβεβήκει πᾶν τὸ πλῆθος εἰς Ἱεροσόλυμα. Πεντήκοντα δὲ τῶν παραφανέντων διαφθείρας, καὶ τὸ ἄστυ κατακαύσας, ἐχώρει πρόσω, καὶ διὰ Βαιθωρῶν ἀναβὰς στρατοπεδεύεται κατά τινα χῶρον Γαβαὼ καλούμενον, ἀπέχοντα τῶν Ἱεροσολύμων πεντήκοντα σταδίους.

2. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι κατιδόντες ἤδη πλησιάζοντα τῇ μητροπόλει τὸν πόλεμον, ἀφέμενοι τῆς ἑορτῆς ἐχώρουν ἐπὶ τὰ ὅπλα, καὶ μέγα τῷ πλήθει θαῤῥοῦντες, ἄτακτοι καὶ μετὰ κραυγῆς ἐξεπήδων ἐπὶ τὴν μάχην, μηδὲ τῆς ἀργῆς ἑβδομάδος ἔννοιαν λαβόντες· ἦν γὰρ δὴ τὸ μάλιστα παρ᾽ αὐτοῖς θρησκευόμενον σάββατον. Ὁ δὲ ἐκσείσας αὐτοὺς τῆς εὐσεβείας θυμὸς ἐποίησε πλεονεκτῆσαι καὶ κατὰ τὴν μάχην· μετὰ τοιαύτης γοῦν ὁρμῆς τοῖς Ῥωμαίοις προσέπεσον, ὡς διαῤῥῆξαι τὰς τάξεις αὐτῶν, καὶ διὰ μέσων χωρεῖν ἀναιροῦντας. Εἰ δὲ δὴ τῷ μὴ 203
χαλασθέντι τῆς φάλαγγος οἵ τε ἱππεῖς ἐκπεριελθόντες ἐπήμυναν, καὶ τῶν πεζῶν τὸ μὴ σφόδρα καμὸν, καὶ ἂν ἐκινδύνευσεν ὅλῃ τῇ δυνάμει Κέστιος. Ἀπέθανον δὲ Ῥωμαίων πεντακόσιοι δεκαπέντε, τούτων ἦσαν οἱ τετρακόσιοι πεζοὶ, τὸ δὲ λοιπὸν ἱππεῖς· τῶν δὲ Ἰουδαίων δύο πρὸς τοῖς εἴκοσι. Γενναιότατοι

δὲ αὐτῶν ἔδοξαν οἱ Μονοβάζου τοῦ τῆς Ἀδιαβηνῆς βασιλέως συγγενεῖς, Μονόβαζός τε καὶ Κενεδαῖος, μεθ᾽ οὓς ὁ Περαΐτης Νίγερ, καὶ Σίλας ὁ Βαβυλώνιος, αὐτομολήσας εἰς τοὺς Ἰουδαίους ἀπὸ Ἀγρίππα τοῦ βασιλέως· ἐστρατεύετο γὰρ παρ᾽ αὐτῷ. Κατὰ πρόςωπον μὲν οὖν ἀνακοπέντες οἱ Ἰουδαῖοι πρὸς τὴν πόλιν ὑπέστρεφον· κατόπιν δὲ τοῖς Ῥωμαίοις ἐπὶ τὴν Βαιθωρῶν ἀνιοῦσι προςπεσὼν ὁ τοῦ Γιώρα Σίμων, πολὺ τῆς οὐραγίας ἐσπάραξε, καὶ συχνὰ τῶν σκευοφόρων ἐξαρπάσας ἤγαγεν εἰς τὴν πόλιν. Μένοντος δὲ τοῦ Κεστίου κατὰ χώραν τρισὶν ἡμέραις, οἱ Ἰουδαῖοι τὰ μετέωρα κατειληφότες ἐπετήρουν τὰς παρόδους· δῆλοί τε ἦσαν οὐκ ἠρεμήσοντες, ἀρξαμένων τῶν Ῥωμαίων ὁδεύειν.

3. Ἔνθα δὴ κατιδὼν Ἀγρίππας οὐδὲ τὰ Ῥωμαίων ἀκίνδυνα, πλήθους ἀπείρου πολεμίων τὰ ὄρη περιέχοντος, ἔκρινεν ἀποπειραθῆναι τῶν Ἰουδαίων λόγοις, ἢ γὰρ πάντας πείσειν καταθέσθαι τὸν πόλεμον, ἢ τῶν ἐναντίων ἀποστῆσαι τὸ μὴ συμφρονοῦν. Ἔπεμψεν οὖν τῶν παρ᾽ ἑαυτῷ τοὺς μάλιστα γνωρίμους ἐκείνοις, Βορκαῖόν τε καὶ Φοῖβον, δεξιάς τε παρὰ Κεστίου καὶ συγγνώμην παρὰ Ῥωμαίων ἀσφαλῆ περὶ τῶν ἡμαρτημένων ὑπισχνούμενος, εἰ τὰ ὅπλα ῥίψαντες πρὸς αὐτοὺς μεταβάλοιντο. Δείσαντες δὲ οἱ στασιασταὶ, μὴ πᾶν τὸ πλῆθος ἀδείας ἐλπίδι πρὸς τὸν Ἀγρίππαν μεταβάληται, τοὺς ἀπ᾽ αὐτοῦ πρεσβεύοντας ὥρμησαν ἀνελεῖν. Καὶ πρὶν ἢ φθέγξασθαι τὸν μὲν Φοῖβον διέφθειραν, ὁ δὲ Βορκαῖος τρωθεὶς ἔφθη διαφυγεῖν· τοῦ δήμου δὲ τοὺς ἐπαγανακτήσαντας λίθοις καὶ ξύλοις παίοντες εἰς τὸ ἄστυ συνήλασαν.

4. Κέστιος δὲ τὴν πρὸς ἀλλήλους αὐτῶν ταραχὴν εὔκαιρον ἰδὼν εἰς ἐπίθεσιν, ἅπασαν ἐπῆγε τὴν δύναμιν, καὶ τραπέντας μέχρι Ἱεροσολύμων κατεδίωξεν. Στρατοπεδευσάμενος δὲ ἐπὶ τοῦ καλουμένου Σκοποῦ, διέχει δὲ οὗτος ἑπτὰ τῆς πόλεως στα-

δίους, τρισὶ μὲν ἡμέραις οὐκ ἐπεχείρει τῇ πόλει, τάχα τι παρὰ τῶν ἔνδον ἐνδοθήσεσθαι προςδοκῶν, εἰς δὲ τὰς πέριξ κώμας ἐφ' ἁρπαγὴν σίτου πολλοὺς διαφῆκε τῶν στρατιωτῶν. Τῇ τετάρτῃ δὲ, ἥτις ἦν τριακὰς Ὑπερβερεταίου μηνὸς, διατάξας τὴν στρατιὰν, εἰςήγαγεν εἰς τὴν πόλιν. Ὁ μὲν οὖν δῆμος ὑπὸ τοῖς στασιασταῖς ἔμφρουρος ἦν· οἱ δὲ στασιασταὶ τὴν εὐταξίαν τῶν Ῥωμαίων καταπλαγέντες, τῶν μὲν ἔξω τῆς πόλεως μερῶν εἶκον, εἰς δὲ τὴν ἐνδοτέραν καὶ τὸ ἱερὸν ἀνεχώρουν. Κέστιος δὲ παρελθὼν ὑπεμπίμπρησι τήν τε Βεζεθὰν προςαγορευομένην, καὶ τὴν Καινόπολιν, καὶ τὸ καλούμενον 204
Δοκῶν ἀγοράν. Ἔπειτα πρὸς τὴν ἄνω πόλιν ἐλθὼν ἀντικρὺ τῆς βασιλικῆς αὐλῆς ἐστρατοπεδεύετο. Καὶ ἂν, εἴπερ ἠθέλησε κατ' αὐτὴν ἐκείνην τὴν ὥραν ἐντὸς τῶν τειχῶν βιάσασθαι, παραυτίκα τὴν πόλιν ἔσχε, καὶ τὸν πόλεμον συνέβη καταλελῦσθαι· ἀλλὰ γὰρ ὅ τε στρατοπεδάρχης Τυράννιος Πρίσκος, καὶ τῶν ἱππάρχων οἱ πλεῖστοι, χρήμασιν ὑπὸ Φλώρου δελεασθέντες ἀπέστρεψαν αὐτὸν τῆς ἐπιχειρήσεως. Καὶ παρὰ τὴν αἰτίαν ταύτην ὅ τε πόλεμος ἐπὶ τοσοῦτον μῆκος προέβη, καὶ Ἰουδαίους ἀνηκέστων συμφορῶν ἀναπλησθῆναι συνέπεσεν.

5. Ἐν δὲ τούτῳ πολλοὶ τῶν γνωρίμων δημοτῶν Ἀνάνῳ τῷ Ἰωνάθου παιδὶ πεισθέντες, ἐκάλουν τὸν Κέστιον ὡς ἀνοίξοντες αὐτῷ τὰς πύλας. Ὁ δὲ καὶ πρὸς ὀργὴν ὑπεριδὼν, καὶ μὴ πάνυ πιστεύσας διεμέλλησεν, ἕως οἱ στασιασταὶ, τὴν προδοσίαν αἰσθόμενοι, τοὺς μὲν περὶ τὸν Ἄνανον ἀπὸ τοῦ τείχους κατέβαλον, καὶ λίθοις παίοντες συνήλασαν εἰς τὰς οἰκίας· αὐτοὶ δὲ διαστάντες ἐπὶ τῶν πύργων τοὺς ἀποπειρωμένους τοῦ τείχους ἔβαλλον. Πέντε μὲν οὖν ἡμέραις πάντοθεν ἐπιχειροῦσι τοῖς Ῥωμαίοις ἀμήχανος ἦν ἡ προςβολή· τῇ δὲ ἐπιούσῃ ἀναλαβὼν ὁ Κέστιος τῶν τε ἐπιλέκτων συχνοὺς καὶ τοὺς τοξότας, κατὰ τὸ προςάρκτιον ἐπιχειρεῖ κλίμα τῷ

ἱερῷ. Ἰουδαῖοι δὲ ἀπὸ τῆς στοᾶς εἶργον, καὶ πολλάκις μὲν ἀπεκρούσαντο τοὺς τῷ τείχει προςελθόντας. Τέλος δὲ τῷ πλήθει τῶν βελῶν ἀνακοπέντες ὑπεχώρησαν· τῶν δὲ Ῥωμαίων οἱ πρῶτοι τοὺς θυρεοὺς εἰς τὸ τεῖχος ἐξερείσαντες, καὶ κατὰ τούτων οἱ κατόπιν ἄλλους, οἵ τε ἑξῆς ὁμοίως, τὴν καλουμένην παρ' αὐτοῖς χελώνην ἐφράξαντο. Καθ' ἧς τὰ βέλη φερόμενα περιωλίσθαινεν ἄπρακτα, μηδὲν δὲ οἱ στρατιῶται κακούμενοι τὸ τεῖχος ὑπώρυσσον, καὶ τοῦ ἱεροῦ τὴν πύλην ὑποπιμπράναι παρεσκευάζοντο.

6. Δεινὴ δὲ τοὺς στασιαστὰς ἔκπληξις κατέλαβεν· ἤδη δὲ πολλοὶ διεδίδρασκον ἀπὸ τῆς πόλεως, ὡς ἁλωσομένης αὐτίκα. Τὸν δὲ δῆμον συνέβαινεν ἐπὶ τούτοις θαῤῥεῖν, καὶ καθὸ παρείκοιεν οἱ πονηροὶ, προςῄεσαν αὐτοὶ τὰς πύλας ἀνοίξαντες, καὶ δεξόμενοι τὸν Κέστιον ὡς εὐεργέτην· ὃς, εἰ βραχὺ τῇ πολιορκίᾳ προςελιπάρησεν, καὶ ἂν εὐθέως τὴν πόλιν παρέλαβεν. Ἀλλ' οἶμαι διὰ τοὺς πονηροὺς ἀπεστραμμένος ὁ θεὸς ἤδη καὶ τὰ ἅγια, τέλος λαβεῖν ἐπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἐκώλυσε τὸν πόλεμον.

7. Ὁ γοῦν Κέστιος οὔτε τὴν τῶν πολιορκουμένων ἀπόγνωσιν, οὔτε τὸ φρόνημα τοῦ δήμου συνιδὼν, ἐξαίφνης ἀνεκάλεσε τοὺς στρατιώτας, καὶ καταγνοὺς ἐπ' οὐδεμιᾷ πληγῇ τῶν ἐλπίδων, παραλογώτατα ἀπὸ τῆς πόλεως ἀνέζευξεν. Πρὸς δὲ τὴν ἀδόκητον αὐτοῦ τροπὴν ἀναθαῤῥήσαντες οἱ λῃσταὶ κατὰ τῶν ὑστάτων ἐξέδραμον, καὶ συχνοὺς τῶν ἱππέων καὶ πεζῶν διέφθειραν. Τότε μὲν οὖν ἐν τῷ κατὰ τὸν Σκοπὸν στρατοπέδῳ αὐλίζεται Κέστιος, τῇ δὲ ἐπιούσῃ προσωτέρω χωριζόμενος, μᾶλλον ἐξεκαλέσατο τοὺς πολεμίους. Καὶ τοὺς ὑστάτους αὐτῶν προςκείμενοι διέφθειρον, καθ' ἕτερον δὲ τῆς ὁδοῦ προςιόντες ἠκόντιζον εἰς πλαγίους. Οὔτε δὲ ἐπιστραφῆναι πρὸς τοὺς κατόπιν τιτρώσκοντας ἐθάῤῥουν οἱ τελευταῖοι, ἄπειρόν τι πλῆθος οἰόμενοι διώ-

κειν, καὶ τοὺς κατὰ πλευρὰν ἐγκειμένους ἀναστέλ- 205
λειν οὐχ ὑπέμενον, αὐτοὶ μὲν ὄντες βαρεῖς, καὶ δεδοικότες τὴν τάξιν διασπᾶν, τοὺς δὲ Ἰουδαίους ὁρῶντες κούφους, καὶ πρὸς τὰς ἐπιδρομὰς εὐκόλους, ὥςτε συνέβαινεν αὐτοῖς πολλὰ κακοῦσθαι μηδὲν ἀντιβλάπτουσι τοὺς ἐχθρούς. Παρ' ὅλην δὲ τὴν ὁδὸν παιόμενοι, καὶ τῆς φάλαγγος ἐκσειόμενοι κατέπιπτον, μέχρι πολλῶν διαφθαρέντων, ἐν οἷς ἦν Πρίσκος μὲν στρατάρχης τάγματος ἕκτου, Λογγῖνος δὲ χιλίαρχος, ἔπαρχος δὲ ἴλης Αἰμίλιος Ἰουκοῦνδος ὄνομα, μόγις εἰς Γαβαὼ κατήντησαν ἐπὶ τὸ πρότερον στρατόπεδον, τὰ πολλὰ καὶ τῶν σκευῶν ἀποβαλόντες. Ἔνθα δύο μὲν ἡμέρας ἐπέμεινεν ὁ Κέστιος, ἀμηχανῶν, ὅ τι χρὴ ποιεῖν· τῇ τρίτῃ δὲ πολλῷ πλείους τοὺς πολεμίους θεασάμενος, καὶ πάντα τὰ κύκλῳ μεστὰ Ἰουδαίων, ἔγνω καθ' ἑαυτοῦ τε βραδύνας, καὶ ἐὰν ἔτι μένοι πλείοσι χρησόμενος ἐχθροῖς.

8. Ἵνα δὴ συντομωτέρᾳ χρήσαιτο φυγῇ, τὰ τὴν στρατιὰν ἀνθέλκοντα περικόπτειν προςέταξε. Διαφθαρέντων δὲ τῶν ὀρέων καὶ τῶν ὑποζυγίων, πλὴν ὅσα βέλη παρεκόμιζε καὶ μηχανὰς, τούτων γὰρ ἐπὶ χρείαν περιείχοντο, καὶ μάλιστα δεδοικότες, μὴ Ἰουδαίοις κατ' αὐτῶν ἁλῴη, προῆγε τὴν δύναμιν ἐπὶ Βαιθώρας. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι μετὰ μὲν τὰς εὐρυχωρίας ἧττον ἐπέκειντο· συνειληθέντων δὲ εἰς τὴν κατὰ στενὰ κατάβασιν, οἱ μὲν φθάσαντες εἶργον αὐτοὺς τῆς ἐξόδου, ἄλλοι δὲ τοὺς ὑστάτους κατεώθουν εἰς τὴν φάραγγα. Τὸ δὲ πᾶν πλῆθος παρεκταθὲν ὑπὲρ τὸν αὐχένα τῆς ὁδοῦ, κατεκάλυπτε τὴν φάλαγγα τοῖς βέλεσιν. Ἔνθα καὶ τῶν πεζῶν ἀμηχανούντων προςαμύνειν ἑαυτοῖς, ἐπισφαλέστερος τοῖς ἱππεῦσιν ὁ κίνδυνος ἦν· οὔτε γὰρ ἐν τάξει κατὰ τῆς ὁδοῦ βαδίζειν ἐδύναντο βαλλόμενοι, καὶ τὸ πρόςαντες ἐπὶ τοὺς πολεμίους ἱππάσιμον οὐκ ἦν. Τὸ δὲ ἐπὶ θάτερα κρημνοὶ καὶ φάραγγες, εἰς οὓς ἀποσφαλέντες κατεφέροντο, καὶ οὔτε φυγῆς τό-

πον, οὔτε ἀμύνης εἶχον ἐπίνοιαν, ἀλλ' ὑπ' ἀμηχανίας ἐπ' οἰμωγὴν ἐτράποντο, καὶ τοὺς ἐν ἀπογνώσεσιν ὀδυρμούς. Ἀντήχει δὲ αὐτοῖς τὸ παρὰ Ἰουδαίων ἐγκέλευσμα, καὶ κραυγὴ χαιρόντων ἅμα καὶ τεθυμωμένων. Ὀλίγου δὲ δεῖν πᾶσαν ἥρπασαν τὴν ἅμα Κεστίῳ δύναμιν, εἰ μὴ νὺξ ἐπέλαβεν, ἐν ᾗ Ῥωμαῖοι μὲν εἰς τὴν Βαιθώραν κατέφυγον, Ἰουδαῖοι δὲ πάντα τὰ κύκλῳ περισχόντες ἐφρούρουν αὐτῶν τὴν ἔξοδον.

9. Ἔνθα δὴ Κέστιος τὴν φανερὰν ὁδὸν ἀπογνοὺς, δρασμὸν ἐβουλεύετο, καὶ διακρίνας τοὺς εὐψυχοτάτους στρατιώτας εἰς τετρακοσίους ἐπέστησε τοῖς ὀχυρώμασι, προστάξας ἀναβάντας σημαίας τῶν ἐν τοῖς στρατοπέδοις φυλάκων ἱστᾶν, ὅπως οἱ Ἰου-
206 δαῖοι πᾶσαν οἴωνται τὴν δύναμιν κατὰ χώραν μένειν· αὐτὸς δὲ τοὺς λοιποὺς ἀναλαβὼν ἡσυχῇ τριάκοντα πρόεισι σταδίους. Ἕωθεν δὲ Ἰουδαῖοι κατιδόντες ἔρημον τὴν ἔπαυλιν αὐτῶν, ἐπὶ τοὺς ἐξαπατήσαντας τετρακοσίους ἔδραμον, καὶ ἐκείνους μὲν ταχέως κατηκόντισαν, ἐδίωκον δὲ τὸν Κέστιον. Ὁ δὲ τῆς νυκτὸς οὐκ ὀλίγον προειλήφει, καὶ συντονώτερον ἤλαυνεν μεθ' ἡμέραν, ὥστε τοὺς στρατιώτας, ὑπ' ἐκπλήξεως καὶ δέους, τάς τε ἑλεπόλεις καὶ τοὺς ὀξυβελεῖς καὶ τὰ πολλὰ τῶν ἄλλων ὀργάνων καταλιπεῖν, ἃ τότε Ἰουδαῖοι λαβόντες αὖθις ἐχρήσαντο κατὰ τῶν ἀφέντων. Προῆλθον δὲ τοὺς Ῥωμαίους διώκοντες μέχρις Ἀντιπατρίδος. Ἔπειτα ὡς οὐ κατελάμβανον, ὑποστρέφοντες τάς τε μηχανὰς ἦρον, καὶ τοὺς νεκροὺς ἐσύλων, τήν τε ἀπολειφθεῖσαν λείαν συνῆγον, καὶ μετὰ παιάνων εἰς τὴν μητρόπολιν ἐπαλινδρόμουν, αὐτοὶ μὲν ὀλίγους ἀποβεβλημένοι παντάπασι, τῶν δὲ Ῥωμαίων καὶ τῶν συμμάχων πεζοὺς μὲν πεντακισχιλίους καὶ τριακοσίους ἀνῃρηκότες, ἱππεῖς δὲ τριακοσίους καὶ ὀγδοήκοντα. Ταῦτα μὲν οὖν ἐπράχθη Δίου μηνὸς ὀγδόῃ, δωδεκάτῳ ἔτει τῆς Νέρωνος ἡγεμονίας.

CAP. XX. 1. Μετὰ δὲ τὴν Κεστίου συμφορὰν πολλοὶ τῶν ἐπιφανῶν Ἰουδαίων, ὥσπερ βαπτιζομένης νεὼς, ἀπενήχοντο τῆς πόλεως. Κοστόβαρος οὖν καὶ Σαοῦλος ἀδελφοὶ σὺν Φιλίππῳ τῷ Ἰακίμου — στρατοπεδάρχης δὲ ἦν οὗτος Ἀγρίππα τοῦ βασιλέως — διαδράντες ἐκ τῆς πόλεως, ᾤχοντο πρὸς Κέστιον. Ὁ δὲ σὺν τούτοις κατὰ τὴν βασιλικὴν αὐλὴν πολιορκηθεὶς Ἀντίπας, ὑπεριδὼν τὴν φυγὴν, αὖθις, ὡς ὑπὸ τῶν στασιαστῶν διεφθάρη, δηλώσομεν. Κέστιος δὲ τοὺς περὶ Σαοῦλον ἀξιώσαντας ἀνέπεμψεν εἰς Ἀχαΐαν πρὸς Νέρωνα, τήν τε αὐτῶν δηλώσοντας ἀνάγκην, καὶ τὰς αἰτίας τοῦ πολέμου τρέψοντας εἰς Φλῶρον· τῇ γὰρ ἐπ' ἐκεῖνον ὀργῇ κουφίσειν καὶ τοὺς ἑαυτοῦ κινδύνους ἤλπισεν.

2. Καὶ ἐν τούτῳ Δαμασκηνοὶ τὴν τῶν Ῥωμαίων φθορὰν πυθόμενοι, τοὺς παρ' ἑαυτοῖς Ἰουδαίους ἀνελεῖν ἐσπούδασαν. Καὶ καθὸ μὲν εἶχον αὐτοὺς ἐν τῷ γυμνασίῳ πάλαι συνηθροισμένους διὰ 207
τῆς ὑποψίας, τοῦτο πραγματευσάμενοι, ῥᾴστην τὴν ἐπιχείρησιν ἐδόκουν. Ἐδεδοίκεσαν δὲ τὰς ἑαυτῶν γυναῖκας, ἁπάσας πλὴν ὀλίγων ὑπηγμένας τῇ Ἰουδαϊκῇ θρησκείᾳ. Διὸ μέγιστος αὐτοῖς ἀγὼν ἐγένετο λαθεῖν ἐκείνας· τοὺς δὲ Ἰουδαίους, ὡς ἂν ἐν στενῷ χωρίῳ, τὸν ἀριθμὸν ὄντας μυρίους καὶ πάντας ἀνόπλους, ἐπελθόντες, ὑπὸ μίαν ὥραν ἀδεῶς ἔσφαξαν.

3. Οἱ δὲ διώξαντες τὸν Κέστιον ὡς ὑπέστρεψαν εἰς Ἱεροσόλυμα, τοὺς μὲν βίᾳ τῶν ἔτι Ῥωμαϊζόντων, τοὺς δὲ πειθοῖ προσήγοντο, καὶ συναθροισθέντες εἰς τὸ ἱερὸν, στρατηγοὺς ἀπέδειξαν τοῦ πολέμου πλείονας. Ἡιρέθη δὲ Ἰώσηπος υἱὸς Γωρίωνος, καὶ ὁ ἀρχιερεὺς Ἄνανος, τῶν τε κατὰ τὴν πόλιν ἁπάντων αὐτοκράτορες, καὶ μάλιστα τὰ τείχη τῆς πόλεως ἀνεγείρειν· τὸν γὰρ τοῦ Σίμωνος υἱὸν Ἐλεάζαρον, καίπερ ὑφ' ἑαυτῷ πεποιημένον τὴν Ῥω-

μαίων λείαν, καὶ τὰ ἁρπαγέντα Κεστίου χρήματα,
πρὸς οἷς πολλὰ τῶν δημοσίων θησαυρῶν, ὅμως οὐκ
ἐπέστησαν ταῖς χρείαις, αὐτόν τε τυραννικὸν ὁρῶν-
τες, καὶ τοὺς ὑπ' αὐτῷ ζηλωτὰς δορυφόρων ἔθεσι
χρωμένους. Κατ' ὀλίγον γε μὴν ἥ τε χρεία τῶν
χρημάτων, καὶ γοητεύων Ἐλεάζαρος ἐκπεριῆλθε τὸν
δῆμον, ὥςτε αὐτῷ πειθαρχεῖν περὶ τῶν ὅλων.

4. Εἰς δὲ τὴν Ἰδουμαίαν ἑτέρους ἐπέλεξαν στρα-
τηγοὺς, Ἰησοῦν τε τὸν υἱὸν Σαπφία τῶν ἀρχιερέων
ἕνα, καὶ Ἐλεάζαρον ἀρχιερέως υἱὸν Ἀνανίου. Τῷ
δὲ ἄρχοντι τότε τῆς Ἰδουμαίας Νίγερι — γένος δὲ
ἦν ἐκ τῆς περὶ Ἰορδάνην Περαίας, διὸ καὶ Περαΐ-
της ἐπεκαλεῖτο — προςέταξαν ὑποτάσσεσθαι τότε
τοῖς στρατηγοῖς. Ἠμέλουν δὲ οὐδὲ τῆς ἄλλης χώ-
ρας, ἀλλ' εἰς μὲν Ἱεριχοῦντα Ἰώσηπος ὁ Σίμωνος,
εἰς δὲ τὴν Περαίαν Μανασσῆς, Θαμνᾶ δὲ τοπαρ-
χίας Ἰωάννης ὁ Ἐσσαῖος στρατηγήσων ἐπέμφθη·
προςκεκλήρωτο δὲ αὐτῷ Λύδδα καὶ Ἰόππη καὶ Ἀμ-
μαοῦς. Τῆς δὲ Γοφνιτικῆς καὶ Ἀκραβατηνῆς ὁ
Ἀνανίου Ἰωάννης ἡγεμὼν ἀποδείκνυται, καὶ τῆς
Γαλιλαίας ἑκατέρας Ἰώσηπος Ματθίου· προςώριστο
δὲ τῇ τούτου στρατηγίᾳ καὶ Γάμαλα, τῶν ταύτῃ
πόλεων ὀχυρωτάτη.

5. Τῶν μὲν οὖν ἄλλων στρατηγῶν ἕκαστος, ὡς
εἶχε προθυμίας ἢ συνέσεως, διῴκει τὰ πεπιστευμένα.
Ἰώσηπος δὲ εἰς τὴν Γαλιλαίαν ἐλθὼν πρῶτον ἐφρόν-
τισε τῆς εἰς αὐτὸν εὐνοίας τῶν ἐπιχωρίων, εἰδὼς,
ὅτι ταύτῃ πλεῖστα κατορθώσει, καὶ ἐὰν τὰ ἄλλα
διαμαρτάνῃ. Συνιδὼν δὲ, ὅτι τοὺς μὲν δυνατοὺς
οἰκειώσεται, μεταδιδοὺς τῆς ἐξουσίας αὐτοῖς, τὸ δὲ
πᾶν πλῆθος, εἰ δι' ἐγχωρίων καὶ συνήθων τὰ πολ-
λὰ προστάσσοι, τῶν μὲν γηραιῶν ἑβδομήκοντα τοὺς
208 σωφρονεστάτους ἐπιλέξας ἐκ τοῦ ἔθνους, κατέ-
στησεν ἄρχοντας ὅλης τῆς Γαλιλαίας, ἑπτὰ δὲ ἐν
ἑκάστῃ πόλει δικαστὰς τῶν εὐτελεστέρων διαφορῶν·
τὰ γὰρ μείζω πράγματα καὶ τὰς φονικὰς δίκας

ἐφ' ἑαυτὸν ἀναπέμπειν ἐκέλευσε καὶ τοὺς ἑβδομήκοντα.

6. Καταστησάμενος δὲ τὰ πρὸς ἀλλήλους νόμιμα τῶν κατὰ πόλιν, ἐπὶ τὴν ἔξωθεν αὐτῶν ἀσφάλειαν ἐχώρει. Καὶ γινώσκων Ῥωμαίους προσβαλοῦντας εἰς τὴν Γαλιλαίαν, τὰ ἐπιτήδεια τῶν χωρίων ἐτείχιζεν, Ἰωτάπατα καὶ Βηρσαβεὲ καὶ Σελαμὶν, ἔτι δὲ Καφαρεκχὼ καὶ Ἰαφὰ καὶ Σιγὼ, τό τε Ἰταβύριον καλούμενον ὄρος, καὶ Ταριχαίας καὶ Τιβεριάδα· πρὸς δὲ τούτοις τὰ περὶ Γεννησὰρ τὴν λίμνην σπήλαια κατὰ τὴν κάτω καλουμένην Γαλιλαίαν ἀνετειχίσατο, τῆς τε ἄνω Γαλιλαίας τήν τε προσαγορευομένην Ἀχαβάρων πέτραν, καὶ Σὲφ καὶ Ἰαμνὶθ καὶ Μηρώθ. Κατὰ δὲ τὴν Γαυλανῖτιν, Σελεύκειάν τε καὶ Σωγάνην καὶ Γάμαλαν ὠχύρωσεν· μόνοις δὲ Σεπφωρίταις ἀφῆκε καθ' ἑαυτοὺς τεῖχος ἀναδείμασθαι, χρημάτων τε εὐπόρους ὁρῶν ὄντας, καὶ προθύμους ἐπὶ τὸν πόλεμον δίχα προστάγματος. Ὁμοίως γε καὶ Γίσχαλα Ἰωάννης ὁ Λευΐου υἱὸς καθ' ἑαυτὸν ἐτείχιζεν, Ἰωσήπου κελεύσαντος· τοῖς δὲ ἄλλοις ἐρύμασιν αὐτὸς ἅπασι συμπονῶν ἅμα καὶ προστάσσων παρῆν. Κατέλεξε δὲ καὶ δύναμιν ἐκ τῆς Γαλιλαίας ὑπὲρ δέκα μυριάδας νέων ἀνδρῶν, οὓς πάντας, ἐκ τῶν συλλεγομένων παλαιῶν ὅπλων αὐτοὺς ἐγκατασκευαζόμενος, ὥπλιζεν.

7. Ἔπειτα συνιδὼν ἀήττητον τὴν Ῥωμαίων ἰσχὺν γεγενημένην, εὐπειθείᾳ μάλιστα καὶ μελέτῃ τῶν ὅπλων, τὴν μὲν διδασκαλίαν ἀπέγνω τῇ χρείᾳ διωκομένην. Τὸ δὲ εὐπειθὲς ὁρῶν περιγινόμενον ἐκ τοῦ πλήθους τῶν ἡγεμόνων, Ῥωμαϊκώτερον ἔτεμνε τὴν στρατιὰν, καὶ πλείους καθίστατο ταξιάρχους. Στρατιωτῶν δὲ ἀπεδείκνυ διαφορὰς, καὶ τούτους μὲν ὑπέτασσε δεκαδάρχαις, καὶ ἑκατοντάρχαις, ἔπειτα χιλιάρχοις, καὶ ἐπὶ τούτοις ἡγεμόσι ταγμάτων ἀδροτέρων ἀφηγουμένοις. Ἐδίδασκέ τε σημείων παραδόσεις, καὶ σαλπίγγων προσκλήσεις τε καὶ ἀνα-

κλήσεις, προσβολάς τε κεράτων καὶ περιαγωγὰς, καὶ πῶς δεῖ πρὸς μὲν τὸ κάμνον ἐπιστρέφειν ἐκ τοῦ
209 περιόντος, ἐν δὲ τῷ πονοῦντι συναμύνειν. Ὅσα τε εἰς παράστημα ψυχῆς, καὶ σώματος καρτερίαν συνεχῶς ἀφηγεῖτο· μάλιστα δὲ αὐτοὺς ἤσκει πρὸς τὸν πόλεμον, παρ᾽ ἕκαστα τὴν Ῥωμαίων εὐταξίαν διηγούμενος, καὶ ὡς πολεμήσουσι πρὸς ἄνδρας, οἳ δι᾽ ἀλκὴν σώματος καὶ ψυχῆς παράστημα πάσης ὀλίγου δεῖν τῆς οἰκουμένης κρατοῦσιν. Ἔφη δὲ πεῖραν αὐτῶν λαβεῖν τῆς κατὰ τὸν πόλεμον εὐταξίας, καὶ πρὸ παρατάξεως, εἰ τῶν συνήθων ἀδικημάτων ἀπόσχοιντο, κλοπῆς τε καὶ λῃστείας καὶ ἁρπαγῆς, τοῦ τε ἐξαπατᾶν τὸ ὁμόφυλον, τό τε κέρδος οἰκεῖον ἡγεῖσθαι τὴν βλάβην τῶν συνηθεστάτων· διοικεῖσθαι γὰρ κάλλιστα τοὺς πολέμους, παρ᾽ οἷς ἂν ἀγαθὸν τὸ συνειδὸς ἔχωσιν οἱ στρατευόμενοι· τοὺς δὲ οἴκοθεν φαύλους, οὐ μόνον τοῖς ἐπιοῦσιν ἐχθροῖς, ἀλλὰ καὶ τῷ θεῷ χρῆσθαι πολεμίῳ.

8. Πολλὰ τοιαῦτα παραινῶν διετέλει. Καὶ τὸ μὲν ἕτοιμον εἰς παράταξιν αὐτῷ συγκεκρότητο, πεζῶν μὲν ἓξ μυριάδες, ἱππεῖς δὲ διακόσιοι καὶ πεντήκοντα· χωρὶς δὲ τούτων, οἷς ἐπεποίθει μάλιστα, μισθοφόροι περὶ τετρακισχιλίους καὶ πεντακοσίους. Ἐπιλέκτους δὲ περὶ αὐτὸν εἶχεν ἑξακοσίους φύλακας τοῦ σώματος. Ἔτρεφον δὲ πλὴν τῶν μισθοφόρων τὴν ἄλλην στρατιὰν αἱ πόλεις ῥᾳδίως· τῶν γὰρ καταλεγέντων ἑκάστη, τοὺς ἡμίσεις ἐπὶ τὴν στρατιὰν ἐκπέμπουσα, τοὺς λοιποὺς ἐπὶ συμπορισμὸν αὐτοῖς τῶν ἐπιτηδείων κατεῖχεν· ὥστε τοὺς μὲν εἰς ὅπλα, τοὺς δὲ εἰς ἐργασίαν διῃρῆσθαι, καὶ τοῖς τὰ σῖτα πέμπουσιν ἀντιχορηγεῖσθαι παρὰ τῶν ὁπλιτῶν τὴν ἀσφάλειαν.

CAP. XXI. 1. Διοικοῦντι δὲ οὕτω τῷ Ἰωσήπῳ τὰ κατὰ τὴν Γαλιλαίαν παρανίσταταί τις ἐπίβουλος ἀνὴρ ἀπὸ Γισχάλων, υἱὸς Λευΐου, Ἰωάννης ὄνομα·

πανουργότατος μὲν καὶ δολιώτατος τῶν ἐπισήμων, ἐν δὲ τοῖς πονηρεύμασιν ἁπάντων. Πένης δὲ τὰ πρῶτα, καὶ μέχρι πολλοῦ κώλυμα ἔχων τῆς κακίας τὴν ἀπορίαν, ἕτοιμος μὲν ψεύδεσθαι, δεινὸς δὲ ἐπιθεῖναι πίστιν τοῖς ἐψευσμένοις, ἀρετὴν ἡγούμενος τὴν ἀπάτην, καὶ ταύτῃ κατὰ τῶν φιλτάτων χρώμενος, ὑποκριτὴς φιλανθρωπίας, καὶ δι' ἐλπίδα κέρδους φονικώτατος, ἀεὶ μὲν ἐπιθυμήσας μεγάλων, τρέφων δὲ τὰς ἐλπίδας ἐκ τῶν ταπεινῶν κακουργημάτων. Λῃστὴς γὰρ ἦν μονότροπος, ἔπειτα καὶ 210
συνοδίαν εὗρε τῆς τόλμης, τὸ μὲν πρῶτον ὀλίγην, προκόπτων δὲ ἀεὶ πλείονα. Φροντὶς δὲ ἦν αὐτῷ μηδένα προςλαμβάνειν εὐάλωτον, ἀλλὰ τοὺς εὐεξίᾳ σώματος, καὶ ψυχῆς παραστήματι, καὶ πολέμων ἐμπειρίᾳ διαφέροντας ἐξελέγετο. Μέχρι γοῦν τετρακοσίων ἀνδρῶν στῖφος συνεκρότησεν, οἳ τὸ πλέον ἐκ τῆς Τυρίων χώρας, καὶ τῶν ἐν αὐτῇ κωμῶν φυγάδες ἦσαν, δι' ὧν ἐληΐζετο πᾶσαν τὴν Γαλιλαίαν, καὶ μετεώρους ὄντας ἐπὶ τῷ μέλλοντι πολέμῳ τοὺς πολλοὺς ἐσπάρασσεν.

2. Ἤδη δὲ αὐτὸν στρατηγιῶντα, καὶ μειζόνων ἐφιέμενον, ἔνδεια χρημάτων κατεῖχεν. Ἐπεὶ δὲ τὸν Ἰώσηπον ὁρῶν αὐτοῦ σφόδρα χαίροντα τῷ δραστηρίῳ, πείθει μὲν πρῶτον αὐτῷ πιστεῦσαι τὸ τεῖχος ἀνοικοδομῆσαι τῆς πατρίδος, ἐν ᾧ πολλὰ παρὰ τῶν πλουσίων ἐκέρδησεν· ἔπειτα συνθεὶς σκηνὴν πανουργοτάτην, ὡς ἄρα φυλάττοιντο πάντες οἱ κατὰ τὴν Συρίαν Ἰουδαῖοι ἐλαίῳ χρῆσθαι, μὴ δι' ὁμοφύλων ἐγκεχειρισμένῳ, πέμπειν αὐτοῖς ἐπὶ τὴν μεθορίαν ἐξῃτήσατο. Συνωνούμενος δὲ τοῦ Τυρίου νομίσματος, ὃ τέσσαρας Ἀττικὰς δύναται, τέσσαρας ἀμφορεῖς, τῆς αὐτῆς ἐπίπρασκε τιμῆς ἡμιαμφόριον. Οὔσης δὲ τῆς Γαλιλαίας ἐλαιοφόρου, μάλιστα καὶ τότε εὐφορηκυίας, εἰς σπανίζοντας πέμπων πολὺ καὶ μόνος, ἄπειρόν τι πλῆθος συνήγαγε χρημάτων, οἷς εὐθέως ἐχρῆτο κατὰ τοῦ τὴν ἐργασίαν παρασχόντος.

Καὶ ὑπολαβὼν, εἰ καταλύσειε τὸν Ἰώσηπον, αὐτὸς ἡγήσεσθαι τῆς Γαλιλαίας, τοῖς μὲν ὑφ' αὐτὸν λησταῖς προςέταξεν εὐτονώτερον ἐγχειρεῖν ταῖς ἁρπαγαῖς, ὅπως, πολλῶν νεωτεριζόντων κατὰ τὴν χώραν, ἢ διαχρήσαιτό που τὸν στρατηγὸν ἐκβοηθοῦντα λοχήσας, ἢ περιορῶντα τοὺς λῃστὰς διαβάλοι πρὸς τοὺς ἐπιχωρίους. Ἔπειτα διεφήμιζε πόῤῥωθεν, ὡς ἄρα προδιδῴη Ῥωμαίοις τὰ πράγματα Ἰώσηπος· καὶ πολλὰ τοιαῦτα πρὸς κατάλυσιν τοῦ ἀνδρὸς ἐπραγματεύετο.

3. Καθ' ὃν καιρὸν ἀπὸ Δαβαρίττων κώμης νεανίσκοι τινὲς τῶν ἐν τῷ Μεγάλῳ πεδίῳ καθεζομένων φυλάκων, ἐνεδρεύοντες Πτολεμαῖον τὸν Ἀγρίππα καὶ Βερνίκης ἐπίτροπον, ἀφείλοντο πᾶσαν ὅσην ἦγεν ἀποσκευὴν, ἐν ᾗ πολυτελεῖς ἐσθῆτες οὐκ ὀλίγαι, καὶ πλῆθος ἐκπωμάτων ἀργυρῶν, χρυσοί τε ἦσαν ἑξακόσιοι. Μὴ δυνάμενοι δὲ διαθέσθαι κρύφα τὴν ἁρπαγὴν, πάντα πρὸς Ἰώσηπον εἰς Ταριχαίας ἐκόμισαν. Ὁ δὲ μεμψάμενος αὐτῶν τὸ πρὸς τοὺς βασιλικοὺς βίαιον, τίθησι τὰ κομισθέντα παρὰ τῷ δυνατωτάτῳ τῶν Ταριχαιατῶν Αἰνέᾳ, πέμψαι κατὰ καιρὸν τοῖς δεσπόταις προαιρούμενος. Ὃ δὴ μέγι-
211 στον αὐτῷ κίνδυνον ἐπήγαγεν. Οἱ γὰρ ἁρπάσαντες, ἅμα μὲν ἐπὶ τῷ μηδεμιᾶς τυχεῖν μερίδος ἐκ τῶν κεκομισμένων ἀγανακτοῦντες, ἅμα δὲ καὶ προσκεψάμενοι τοῦ Ἰωσήπου τὴν διάνοιαν, ὅτι μέλλοι τοῖς βασιλεῦσι τὸν πόνον αὐτῶν χαρίζεσθαι, νύκτωρ εἰς τὰς κώμας αὐτῶν διέδραμον, καὶ πᾶσιν ἐπεδείκνυντο τὸν Ἰώσηπον ὡς προδότην. Ἐνέπλησαν δὲ καὶ τὰς πλησίον πόλεις ταραχῆς, ὥςτε ὑπὸ τὴν ἕω δέκα μυριάδας ὁπλιτῶν ἐπ' αὐτὸν συνδραμεῖν. Καὶ τὸ μὲν πλῆθος ἐν τῷ κατὰ Ταριχαίας ἱπποδρόμῳ συνηθροισμένον, πολλὰ πρὸς ὀργὴν ἀνεβόα· καὶ οἱ μὲν καταλύειν, οἱ δὲ καίειν τὸν προδότην ἐκεκράγεσαν. Παρώξυνε δὲ τοὺς πολλοὺς Ἰωάννης, καὶ σὺν αὐτῷ Ἰησοῦς τις υἱὸς Σαπφία, τότε ἄρχων

τῆς Τιβεριάδος. Οἱ μὲν οὖν φίλοι καὶ σωματοφύλακες τοῦ Ἰωσήπου, καταπλαγέντες τὴν ὁρμὴν τοῦ πλήθους, ἔφυγον πλὴν τεσσάρων πάντες. Αὐτὸς δὲ κοιμώμενος ἤδη προςφερομένου τοῦ πυρὸς διανίσταται, καὶ, παραινούντων φεύγειν τῶν τεσσάρων, οἳ παρέμειναν, οὔτε πρὸς τὴν καθ᾽ αὑτὸν ἐρημίαν, οὔτε πρὸς τὸ πλῆθος τῶν ἐφεστώτων καταπλαγεὶς, προπηδᾷ, περιῤῥηξάμενος μὲν τὴν ἐσθῆτα, καταμησάμενος δὲ τῆς κεφαλῆς κόνιν, ἀποστρέψας δὲ ὀπίσω τὰς χεῖρας, καὶ τὸ ἴδιον ξίφος ἐπιδήσας τῷ τένοντι. Πρὸς ἃ τῶν μὲν οἰκείως ἐχόντων, καὶ μάλιστα Ταριχαιατῶν, οἶκτος ἦν· οἱ δὲ ἀπὸ τῆς χώρας, καὶ τῶν πλησίον ὅσοις ἐδόκει φορτικὸς, ἐβλασφήμουν, προφέρειν τε τὰ κοινὰ χρήματα θᾶττον ἐκέλευον, καὶ τὰς προδοτικὰς συνθήκας ἐξομολογεῖσθαι· προςειλήφεσαν γὰρ ἐκ τοῦ σχήματος οὐδὲν αὐτὸν ἀρνήσεσθαι τῶν ὑπονοηθέντων, ἀλλὰ ἐπὶ συγγνώμης πορισμῷ, πάντα πεποιηκέναι τὰ πρὸς τὸν ἔλεον. Τῷ δὲ ἦν ἡ ταπείνωσις προκατασκευὴ στρατηγήματος· καὶ τεχνιτεύων τοὺς ἀγανακτοῦντας καθ᾽ αὐτοῦ κατ᾽ ἀλλήλων στασιάσαι, ἐφ᾽ οἷς ὠργίζοντο, πάντα ὁμολογήσειν ὑπισχνεῖτο. Εἶτα δοθὲν αὐτῷ λέγειν, "Ἐγὼ ταῦτα," ἔφη, "τὰ χρήματα οὔτε ἀναπέμπειν Ἀγρίππᾳ προῃρούμην, οὔτε κερδαίνειν αὐτός· μὴ γὰρ ἡγησάμην ποτὲ φίλον τὸν ὑμῖν διάφορον, ἢ κέρδος τὸ φέρον τῷ κοινῷ βλάβην. Ὁρῶν δὲ, ὦ Ταριχαιᾶται, μάλιστα τὴν ὑμετέραν πόλιν ἀσφαλείας δεομένην, καὶ πρὸς τὴν κατασκευὴν τείχους χρῄζουσαν ἀργυρίου, δεδοικὼς δὲ τῶν Τιβεριέων δῆμον, καὶ τὰς ἄλλας πόλεις ἐφεδρευούσας τοῖς ἡρπασμένοις, κατασχεῖν ἡσυχῇ τὰ χρήματα προειλόμην, ἵνα ὑμῖν περιβάλωμαι τεῖχος. Εἰ δὲ μὴ δοκεῖ, προφέρω τὰ κεκομισμένα, καὶ παρέχω διαρπάζειν· εἰ δὲ καλῶς ὑμῖν ἐβουλευσάμην, κολάζετε τὸν εὐεργέτην."

4. Ἐπὶ τούτοις οἱ Ταριχαιᾶται μὲν αὐτὸν ἀνευ-

212 φήμουν· οἱ δὲ ἀπὸ τῆς Τιβεριάδος σὺν τοῖς ἄλλοις ἐκάκιζον, καὶ διηπείλουν. Καταλιπόντες δὲ ἑκάτεροι τὸν Ἰώσηπον, ἀλλήλοις διεφέροντο. Καὶ ἐκεῖνος θαῤῥῶν ἤδη τοῖς ᾠκειωμένοις, ἦσαν δὲ εἰς τετρακισμυρίους Ταριχαιάται, παντὶ τῷ πλήθει παῤῥησιαστικώτερον ὡμίλει. Καὶ πολλὰ τὴν προπέτειαν αὐτῶν κατονειδίσας, 'ἐκ μὲν τῶν παρόντων Ταριχαίας, ἔφη, τειχίσειν, ἀσφαλιεῖσθαι δὲ ὅμως καὶ τὰς ἄλλας πόλεις· οὐ γὰρ ἀπορήσειν χρημάτων, ἐὰν ὁμονοῶσιν ἐφ' οὓς δεῖ πορίζειν, καὶ μὴ παροξύνωνται κατὰ τοῦ πορίζοντος.'

5. Ἔνθα δὴ τὸ μὲν ἄλλο πλῆθος τῶν ἠπατημένων ἀπανεχώρει, καίτοι διωργισμένον· δισχίλιοι δὲ ἐπ' αὐτὸν ὥρμησαν ἔνοπλοι, καὶ φθάσαντος εἰς τὸ δωμάτιον παρελθεῖν ἀπειλοῦντες ἐφεστήκεσαν. Ἐπὶ τούτοις πάλιν Ἰώσηπος ἀπάτῃ δευτέρᾳ χρῆται· ἀναβὰς γὰρ ἐπὶ τὸ τέγος, καὶ τῇ δεξιᾷ καταστείλας τὸν θόρυβον αὐτῶν, 'ἀγνοεῖν, ἔφη, τίνων ἀξιοῦσι τυχεῖν· οὐ γὰρ κατακούειν διὰ τὴν τῆς βοῆς σύγχυσιν. Ὅσα δ' ἂν κελεύσωσι, πάντα ποιήσειν, εἰ τοὺς διαλεξομένους ἡσυχῇ πέμψειαν εἴσω πρὸς αὐτόν.' Ταῦτα ἀκούσαντες οἱ γνώριμοι σὺν τοῖς ἄρχουσιν εἰςῄεσαν. Ὁ δὲ σύρας αὐτοὺς εἰς τὸ μυχαίτατον τῆς οἰκίας, καὶ τὴν αὔλειον ἐπικλείσας, ἐμαστίγωσεν, μέχρι πάντων τὰ σπλάγχνα γυμνῶσαι. Περιειστήκει δὲ τέως τὸ πλῆθος, δικαιολογεῖσθαι μακρότερα τοὺς εἰςελθόντας οἰόμενον. Ὁ δὲ τὰς θύρας ἐξαπίνης ἀνοίξας, ᾑμαγμένους ἐξαφῆκε τοὺς ἄνδρας, καὶ τοσαύτην τοῖς ἀπειλοῦσιν ἐνειργάσατο κατάπληξιν, ὥςτε ῥίψαντας τὰ ὅπλα φεύγειν.

6. Πρὸς ταῦτα Ἰωάννης ἐπετείνετο τὸν φθόνον, καὶ δευτέραν ἤρτυεν ἐπιβουλὴν κατὰ τοῦ Ἰωσήπου. Σκηψάμενος δὲ νόσον, ἱκέτευε δι' ἐπιστολῆς τὸν Ἰώσηπον, ἐπιτρέψαι πρὸς θεραπείαν αὐτῷ χρήσασθαι τοῖς ἐν Τιβεριάδι θερμοῖς ὕδασιν. Ὁ δὲ, οὔπω γὰρ ὑπώπτευε τὸν ἐπίβουλον, γράφει τοῖς

κατὰ τὴν πόλιν ἐπάρχοις, ξενίαν τε καὶ τὰ ἐπιτή-
δεια Ἰωάννῃ παρασχεῖν. Ὧν ἀπολαύσας μετὰ δύο
ἡμέρας ἐφ' ᾧ παρῆν διεπράττετο. Καὶ τοὺς μὲν
ἀπάταις τοὺς δὲ χρήμασι διαφθείρων, ἀνέπειθεν
ἀποστῆναι Ἰωσήπου. Καὶ γνοὺς ταῦτα Σίλας, ὁ
φυλάσσειν τὴν πόλιν ὑπὸ Ἰωσήπου καθιστάμενος,
γράφει τὰ κατὰ τὴν ἐπιβουλὴν αὐτῷ κατὰ τάχος.
Ὁ δὲ Ἰώσηπος, ὡς ἔλαβε τὴν ἐπιστολὴν, νυκτὸς
ὁδεύσας συντόνως, ἑωθινὸς παρῆν ἐπὶ τὴν Τιβεριά-
δα. Καὶ τὸ μὲν ἄλλο πλῆθος αὐτῷ ὑπήντα, Ἰω-
άννης δὲ, καίτοι τὴν παρουσίαν ὑποπτεύων ἐπ' αὐ-
τὸν, ὅμως πέμψας τινὰ τῶν γνωρίμων, ὑπεκρίνατο
τὴν ἀσθένειαν, καὶ κλινήρης ὢν ὑστερῆσαι τῆς θε-
ραπείας ἔλεγεν. Ὡς δὲ εἰς τὸ στάδιον τοὺς Τιβε-
ριεῖς ἀθροίσας Ἰώσηπος ἐπειρᾶτο διαλέγεσθαι περὶ
τῶν ἐπεσταλμένων, ὑποπέμψας ὁπλίτας προςέταξεν
αὐτὸν ἀνελεῖν. Τούτους τὰ ξίφη γυμνοῦντας ὁ δῆ- 213
μος προϊδὼν ἀνεβόησεν· πρὸς δὲ τὴν κραυγὴν Ἰώ-
σηπος ἐπιστραφεὶς, καὶ θεασάμενος ἐπὶ τῆς σφαγῆς
ἤδη τὸν σίδηρον, ἀπεπήδησεν εἰς τὸν αἰγιαλὸν, —
εἱστήκει δὲ δημηγορῶν ἐπὶ βουνοῦ τινος ἑξαπήχους
τὸ ὕψος, — καὶ παρορμῶντος ἐπιπηδήσας σκάφους,
σὺν δυσὶ σωματοφύλαξιν εἰς μέσην τὴν λίμνην ἀνέ-
φευγεν.

7. Οἱ στρατιῶται δὲ αὐτοῦ ταχέως ἁρπάσαντες ὅπλα, κατὰ τῶν ἐπιβούλων ἐχώρουν. Ἔνθα δείσας Ἰώσηπος, μὴ, πολέμου κινηθέντος ἐμφυλίου, δι' ὀλίγων φθόνον παραναλώσῃ τὴν πόλιν, πέμπει τοῖς σφετέροις ἀγγέλλων, μόνης προνοεῖν τῆς αὐτῶν ἀσφαλείας, μήτε δὲ κτείνειν τινὰ, μήτε ἀπελέγχειν τῶν αἰτίων. Καὶ οἱ μὲν τῷ παραγγέλματι πεισθέντες ἠρέμησαν· οἱ δὲ ἀνὰ τὴν πέριξ χώραν πυθόμενοι τήν τε ἐπιβουλὴν καὶ τὸν συσκευάσαντα, συνηθροίζοντο κατὰ τοῦ Ἰωάννου. Φθάνει δὲ ἐκεῖνος εἰς Γίσχαλα φυγὼν τὴν πατρίδα. Συνέῤῥεον δὲ πρὸς τὸν Ἰώσηπον οἱ Γαλιλαῖοι κατὰ πόλεις, καὶ πολλαὶ

μυριάδες ὁπλιτῶν γενόμεναι, ‘παρεῖναι σφᾶς ἐπὶ Ἰωάννην τὸν κοινὸν ἐπίβουλον ἐβόων· συγκαταφλέξειν γὰρ αὐτῷ καὶ τὴν ὑποδεξαμένην πόλιν.’ Ὁ δὲ ἀποδέχεσθαι μὲν αὐτῶν ἔφασκε τὴν εὔνοιαν, εἶργε δὲ τὴν ὁρμὴν, χειρώσασθαι συνέσει τοὺς ἐχθροὺς μᾶλλον, ἢ κτεῖναι προαιρούμενος. Ἐκλαβὼν δὲ τοὺς ἀφ᾽ ἑκάστης πόλεως Ἰωάννῃ συναφεστῶτας Ἰώσηπος κατ᾽ ὄνομα, — προθύμως δὲ ἐνεδείκνυντο τοὺς σφετέρους οἱ δημόται, — καὶ διὰ κηρύκων ἀπειλήσας, τῶν ἐντὸς ἡμέρας πέμπτης μὴ καταλιπόντων τὸν Ἰωάννην, τάς τε οὐσίας διαρπάσειν, καὶ τὰς οἰκίας ἅμα ταῖς γενεαῖς καταφλέξειν, τρισχιλίους μὲν ἀπέστησεν εὐθέως, οἳ παραγενόμενοι τὰ ὅπλα παρὰ τοῖς ποσὶν ἔῤῥιψαν αὐτοῦ. Σὺν δὲ τοῖς καταλειφθεῖσιν, ἦσαν δὲ ὅσον εἰς δισχιλίους Σύρων φυγάδες, ἀνέστελλεν Ἰωάννης πάλιν εἰς τὰς λαθραίους ἐπιβουλὰς ἐκ τῶν φανερωτέρων. Κρύφα γοῦν ἔπεμψεν ἀγγέλους εἰς Ἱεροσόλυμα, διαβάλλων τὸν Ἰώσηπον ἐπὶ τῷ μεγέθει τῆς δυνάμεως, φάσκων ὅσον οὐδέπω τύραννον ἐλεύσεσθαι τῆς μητροπόλεως, εἰ μὴ προκαταληφθείη. Ταῦθ᾽ ὁ μὲν δῆμος ἦν προειδὼς, οὐ προςεῖχον δέ. Οἱ δυνατοὶ δὲ κατὰ φθόνον, καὶ τῶν ἀρχόντων τινὲς λάθρα τῷ Ἰωάννῃ χρήματα πρὸς συλλογὴν μισθοφόρων ἔπεμψαν, ὅπως πολεμῇ πρὸς Ἰώσηπον· ἐψηφίσαντο δὲ καθ᾽ ἑαυτοὺς, καὶ μετακαλεῖν αὐτὸν ἀπὸ τῆς στρατηγίας. Οὐ μὴν ἠξίουν ἀποχρήσειν τὸ δόγμα· δισχιλίους δὲ καὶ πεντακοσίους ὁπλίτας, καὶ τέσσαρας τῶν ἐπιφανῶν ἄνδρας ἔστειλαν, τόν τε τοῦ Νομικοῦ Ἰωάζαρον, καὶ Ἀνανίαν Σαδδουκὶ, καὶ Σίμωνα καὶ Ἰούδην Ἰωνάθου, πάντας εἰπεῖν δυνατωτάτους, ἵνα οὗτοι τὴν πρὸς τὸν Ἰώσηπον εὔνοιαν ἀποστρέψωσι,
214 ‘καὶ ἐὰν μὲν ἑκὼν παραγένηται, λόγον ὑποσχεῖν ἐᾶν αὐτόν· εἰ δὲ βιάζοιτο μένειν, ὡς πολεμίῳ χρῆσθαι.’ Ἰωσήπῳ δὲ παραγενέσθαι μὲν στρατιὰν ἐπεστάλκεσαν οἱ φίλοι· τὴν δὲ αἰτίαν οὐ προεδήλουν, ἅτε

δὴ τῶν ἐχθρῶν λάθρα βεβουλευμένων. Διὸ καὶ μὴ προφυλαξαμένου, τέσσαρες πόλεις εὐθέως πρὸς τοὺς διαφόρους ἀπέστησαν ἐλθόντας, Σεπφῶρίς τε καὶ Γάμαλα καὶ Γίσχαλα καὶ Τιβεριάς. Ταχέως δὲ καὶ ταύτας προσηγάγετο δίχα τῶν ὅπλων, καὶ χειρωσάμενος στρατηγήματι τοὺς τέσσαρας ἡγεμόνας, τῶν τε ὁπλιτῶν τοὺς δυνατωτάτους, ἀνέπεμψεν εἰς Ἱεροσόλυμα. Πρὸς οὓς ὁ δῆμος ἠγανάκτησεν οὐ μετρίως, καὶ σὺν αὐτοῖς ὥρμησε τοὺς προπέμψαντας ἀνελεῖν, εἰ μὴ φθάσαντες ἀπέδρασαν.

8. Ἰωάννην δὲ τὸ λοιπὸν ἐντὸς τοῦ Γισχάλων τείχους ὁ παρὰ Ἰωσήπου φόβος ἐφρούρει. Καὶ μετ᾽ ὀλίγας ἡμέρας πάλιν ἀπέστη Τιβεριὰς, ἐπικαλεσαμένων τῶν ἔνδον Ἀγρίππαν τὸν βασιλέα. Καὶ τοῦ μὲν μὴ καταντήσαντος ἐφ᾽ ἣν συνετέτακτο προθεσμίαν, Ῥωμαϊκῶν δὲ ἱππέων ὀλίγων κατ᾽ ἐκείνην τὴν ἡμέραν παραφανέντων, τὸν Ἰώσηπον ἐξεκήρυσσον. Τῶν δὲ ἠγγέλη μὲν εἰς Ταριχαίας ἡ ἀπόστασις εὐθέως. Ἐκπεπομφὼς δὲ τοὺς στρατιώτας πάντας ἐπὶ σίτου συλλογὴν, οὔτε μόνος ἐξορμᾶν ἐπὶ τοὺς ἀποστάντας, οὔτε μένειν ὑπέμενε, δεδοικὼς, μὴ, βραδύνοντος αὐτοῦ, φθάσωσιν οἱ βασιλικοὶ παρελθεῖν εἰς τὴν πόλιν· οὐδὲ γὰρ τὴν ἐπιοῦσαν ἐνεργὸν ἕξειν ἔμελλεν, ἐπέχοντος σαββάτου. Δόλῳ δὴ περιελθεῖν ἐπενόει τοὺς ἀποστάντας. Καὶ τὰς μὲν πύλας τῶν Ταριχαιῶν ἀποκλεῖσαι κελεύσας, ὡς μὴ προεξαγγείλοι τις τὸ σκέμμα τοῖς ἐπιχειρουμένοις, τὰ δὲ ἐπὶ τῆς λίμνης σκάφη πάντα συναθροίσας — διακόσια δὲ καὶ τριάκοντα εὑρέθη, καὶ ναῦται τεσσάρων οὐ πλείους ἦσαν ἐν ἑκάστῳ — διὰ τάχους ἐλαύνει πρὸς τὴν Τιβεριάδα. Καὶ τοσοῦτον ἀποσχὼν τῆς πόλεως, ἐξ ὅσου συνιδεῖν οὐ ῥᾴδιον ἦν, κενὰς τὰς ἁλιάδας μετεώρους σαλεύειν ἐκέλευσεν, αὐτὸς δὲ, μόνους ἑπτὰ τῶν σωματοφυλάκων ἀνόπλους ἔχων, ἔγγιον ὀφθῆναι προσῄει. Θεασάμενοι δὲ αὐτὸν ἀπὸ τῶν τειχῶν ἔτι βλασφημοῦντες οἱ διάφοροι, καὶ διὰ

τὴν ἔκπληξιν πάντα τὰ σκάφη γέμειν ὁπλιτῶν νομίσαντες, ἔῤῥιψαν τὰ ὅπλα, καὶ κατασείοντες ἱκετηρίας ἐδέοντο φείσασθαι τῆς πόλεως.

9. Ὁ δὲ Ἰώσηπος πολλὰ διαπειλησάμενος αὐτοῖς, καὶ κατονειδίσας, εἰ πρῶτα μὲν ἀράμενοι τὸν πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον, εἰς στάσεις ἐμφυλίους προαναλίσκουσι τὴν ἰσχὺν, καὶ τὰ εὐκταιότατα ποιοῦσι τοῖς ἐχθροῖς, ἔπειτα τὸν κηδεμόνα τῆς ἀσφαλείας αὐτῶν ἀναρπάσαι σπεύδουσι, καὶ κλείειν οὐκ αἰδοῦνται τὴν πόλιν αὐτῶν τῷ τειχίσαντι, προςδέχεσθαι τοὺς ἀπολογησομένους ἔφασκε, καὶ δι' ὧν βεβαιώσαιτο τὴν πόλιν. Κατέβαινον δὲ εὐθέως δέκα τῶν Τιβεριέων οἱ δυνατώτατοι· καὶ τοὺς μὲν ἀναλαβὼν μιᾷ τῶν ἁλιάδων ἀνήγαγε ποῤῥωτάτω. Πεντήκοντα δὲ ἑτέρους τῆς βουλῆς τοὺς μάλιστα γνω-
245 ρίμους κελεύει προςελθεῖν, ὡς καὶ παρ' ἐκείνων πίστιν τινὰ βουλόμενος λαβεῖν. Ἔπειτα καινοτέρας σκήψεις ἐπινοῶν, ἄλλους ἐπ' ἄλλοις ὡς ἐπὶ συνθήκαις προςεκαλεῖτο. Τοῖς δὲ κυβερνήταις ἐκέλευσε τῶν πληρουμένων διὰ τάχους εἰς Ταριχαίας ἀναπλεῖν, καὶ συγκλείειν τοὺς ἄνδρας εἰς τὸ δεσμωτήριον, μέχρι πᾶσαν μὲν τὴν βουλὴν οὖσαν εἰς ἑξακοσίους, περὶ δὲ διςχιλίους τῶν ἀπὸ τοῦ δήμου συλλαβὼν, ἀνήγαγε σκάφεσιν εἰς Ταριχαίας.

10. Βοώντων δὲ τῶν λοιπῶν, 'αἴτιον εἶναι μάλιστα τῆς ἀποστάσεως Κλεῖτόν τινα, καὶ παρακαλούντων εἰς ἐκεῖνον ἀπερείδεσθαι τὴν ὀργὴν,' ὁ Ἰώσηπος ἀνελεῖν μὲν οὐδένα προῄρητο, Λευΐαν δέ τινα τῶν αὐτοῦ φυλάκων ἐκέλευσεν ἐξελθεῖν, ἵνα ἀποκόψῃ τὰς χεῖρας τοῦ Κλείτου. Δείσας δὲ ἐκεῖνος εἰς ἐχθρῶν στῖφος ἀποβήσεσθαι μόνος, οὐκ ἔφη. Σχετλιάζοντα δὲ τὸν Ἰώσηπον ἐπὶ τοῦ σκάφους ὁ Κλεῖτος ὁρῶν, καὶ προθυμούμενον ἀποπηδᾷν αὐτὸν ἐπὶ τὴν τιμωρίαν, ἱκέτευεν ἀπὸ τῆς ἀκτῆς τὴν ἑτέραν τῶν χειρῶν καταλιπεῖν. Καὶ ἐκείνου κατανεύσαντος, ἐφ' ᾧ τὴν ἑτέραν αὐτὸς ἀπο-

κόψειεν ἑαυτοῦ, σπασάμενος τῇ δεξιᾷ τὸ ξίφος ἀπέκοψε τὴν λαιάν· εἰς τοσοῦτον δέους ὑπ' αὐτοῦ Ἰωσήπου προήχθη. Τότε μὲν δὴ κενοῖς σκάφεσι, καὶ δορυφόροις ἑπτὰ τὸν δῆμον αἰχμαλωτισάμενος, πάλιν τὴν Τιβεριάδα προσηγάγετο. Μετὰ δὲ ἡμέρας ὀλίγας Γίσχαλα Σεπφωρίταις συναφεστᾶσαν ἑλὼν, ἐπέτρεψε διαρπάσαι τοῖς στρατιώταις. Συναγαγὼν μέντοι πάντα τοῖς δημόταις δέδωκε, τοῖς τε κατὰ Σέπφωριν ὁμοίως καὶ Τιβεριάδα· καὶ γὰρ καὶ ἐκείνους χειρωσάμενος, νουθετῆσαι διὰ τῆς ἁρπαγῆς ἠθέλησε, καὶ τῇ ἀποδόσει τῶν χρημάτων πάλιν εἰς εὔνοιαν προσηγάγετο.

CAP. XXII. 1. Τὰ μὲν οὖν κατὰ Γαλιλαίαν ἐπέπαυτο κινήματα. Καὶ τῶν ἐμφυλίων παυσάμενοι θορύβων, ἐπὶ τὰς πρὸς Ῥωμαίους ἐτράποντο παρασκευάς. Ἐν δὲ τοῖς Ἱεροσολύμοις Ἀνανός τε ὁ ἀρχιερεὺς, καὶ τῶν δυνατῶν ὅσοι μὴ τὰ Ῥωμαίων ἐφρόνουν τό τε τεῖχος ἐπεσκεύαζον, καὶ πολλὰ τῶν πολεμιστηρίων ὀργάνων. Καὶ διὰ πάσης μὲν τῆς πόλεως ἐχαλκεύετο βέλη, καὶ πανοπλία. Πρὸς ἀτάκτοις δὲ γυμνασίαις τὸ τῶν νέων πλῆθος ἦν, καὶ μεστὰ ἦν πάντα θορύβου. Δεινὴ δὲ κατήφεια τῶν μετρίων, καὶ πολλοὶ, τὰς μελλούσας προορώμενοι συμφορὰς, ἀπωλοφύροντο. Θειασμοὶ δὲ τοῖς εἰρήνην ἀγαπῶσι δύσφημοι· τοῖς δὲ τὸν πόλεμον ἐξάψασιν ἐσχεδιάζοντο πρὸς ἡδονὴν, καὶ τὸ κατάστημα τῆς πόλεως πρὶν ἐπελθεῖν Ῥωμαίους ἦν οἷα 216
ἀπολουμένης. Ἀνάνῳ γε μὴν φροντὶς ἦν, κατὰ μικρὸν ἀφισταμένῳ τῶν εἰς τὸν πόλεμον παρασκευῶν, κάμψαι πρὸς τὸ συμφέρον τούς τε στασιαστὰς, καὶ τὴν τῶν κληθέντων ζηλωτῶν ἀφροσύνην. Ἥττητο δὲ τῆς βίας, καὶ ἐν τοῖς ἑξῆς οἵου τέλους ἔτυχε δηλώσομεν.

2. Κατὰ δὲ τὴν Ἀκραβατηνὴν τοπαρχίαν ὁ Γιώρα Σίμων, πολλοὺς τῶν νεωτεριζόντων συστη-

σάμενος, ἐφ' ἁρπαγὰς ἐτράπετο, καὶ οὐ μόνον τὰς οἰκίας ἐσπάρασσε τῶν πλουσίων, ἀλλὰ καὶ τὰ σώματα κατῃκίζετο, δῆλός τε ἦν ἤδη πόῤῥωθεν ἀρχόμενος τυραννεῖν. Πεμφθείσης δὲ ἐπ' αὐτὸν ὑπ' Ἀνάνου καὶ τῶν ἀρχόντων στρατιᾶς, πρὸς τοὺς ἐν Μασσάδᾳ λῃστὰς μεθ' ὧν εἶχε κατέφυγε, καὶ ἐκεῖ μέχρι τῆς Ἀνάνου καὶ τῶν ἄλλων ἐχθρῶν ἀναιρέσεως μένων συνελῄζετο τὴν Ἰδουμαίαν· ὥστε τοὺς ἄρχοντας τοῦ ἔθνους διὰ τὸ πλῆθος τῶν φονευομένων, καὶ τὰς συνεχεῖς ἁρπαγὰς, στρατιὰν ἀθροίσαντας ἐμφρούρους τὰς κώμας ἔχειν. Καὶ τὰ μὲν κατὰ τὴν Ἰουδαίαν ἐν τούτοις ἦν.

---

217 218 *ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ*

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ

Η

ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ἹΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ἉΛΩΣΕΩΣ

ΛΟΓΟΣ Γ'.

Argumentum Lib. III.

(1) Οὐεσπασιανὸς ὑπὸ Νέρωνος πέμπεται ἐπὶ τοὺς Ἰουδαίους. (2) Μεγάλη Ἰουδαίων σφαγὴ περὶ Ἀσκάλωνα. (3) Ἔκφρασις Γαλιλαίας, Σαμαρείας καὶ Ἰουδαίας. (4) Τίτος σὺν μεγάλῃ δυνάμει εἰς Πτολεμαΐδα ἀφικνεῖται. (5) Ἀναγραφὴ τῶν Ῥωμαϊκῶν στρατευμάτων. (6) Οὐεσπασιανὸς εἰσβάλλει εἰς Γαλιλαίαν, καὶ (7) Ἰωτάπατα αἱρεῖ. (8) Ὁποῖα Ἰώσηπος πρὸς Οὐεσπασιανὸν ἀχθεὶς εἶπε, καὶ ὅπως ἐκεῖνος αὐτῷ ἐχρήσατο. (9) Ὡς ἑάλω Ἰόππη, καὶ ἐνεδόθη Τιβεριάς. (10) Ὡς ἑάλωσαν αἱ Ταριχαῖαι.

---

249 *CAP. I.* 1. Νέρωνι δὲ ὡς ἠγγέλη τὰ κατὰ τὴν Ἰουδαίαν πταίσματα, λεληθυῖα μὲν, ὡς εἰκὸς, ἐκ-

πληξις ἐμπίπτει καὶ δέος, φανερῶς δὲ ὑπερηφάνει καὶ προσωργίζετο, ‘στρατηγοῦ μὲν ῥᾳστώνῃ μᾶλλον, ἢ ταῖς τῶν πολεμίων ἀρεταῖς, γεγονέναι τὰ συμβάντα, λέγων· πρέπειν δὲ ἡγούμενος αὐτῷ διὰ τὸν ὄγκον τῆς ἡγεμονίας κατασοβαρεύεσθαι τῶν σκυθρωπῶν, καὶ δοκεῖν δεινοῦ παντὸς ἐπάνω τὴν ψυχὴν ἔχειν.’ Διηλέγχετό γε μὴν ὁ τῆς ψυχῆς θόρυβος ὑπὸ τῶν φροντίδων.

2. Σκεπτόμενος δὲ, τίνι πιστεύσειε κινουμένην τὴν ἀνατολὴν, ὃς τιμωρήσεται μὲν τὴν Ἰουδαίων ἐπανάστασιν, προκαταλήψεται δὲ αὐτοῖς ἤδη καὶ τὰ πέριξ ἔθνη συννοσοῦντα, μόνον εὑρίσκει Οὐεσπασιανὸν ταῖς χρείαις ἀναλογοῦντα, καὶ τηλικούτου πολέμου μέγεθος ἀναδέξασθαι δυνάμενον· ἄνδρα ταῖς ἀπὸ νεότητος στρατείαις ἐγγεγηρακότα, καὶ προειρηνεύσαντα μὲν πάλαι Ῥωμαίοις τὴν ἑσπέραν ὑπὸ Γερμανῶν ταρασσομένην, προσκτησάμενον δὲ τοῖς ὅπλοις Βρεττανίαν τέως λανθάνουσαν· ὅθεν αὐτοῦ 220 καὶ τῷ πατρὶ Κλαυδίῳ παρέσχε, χωρὶς ἱδρῶτος ἰδίου θρίαμβον καταγαγεῖν.

3. Ταῦτά τε δὴ προκληδονιζόμενος, καὶ σταθερὰν μετ᾽ ἐμπειρίας τὴν ἡλικίαν ὁρῶν, μετὰ δὲ πίστεως αὐτοῦ τοὺς υἱοὺς ὅμηρον, καὶ τὰς τούτων ἀκμὰς χεῖρα τῆς πατρῴας συνέσεως, τάχα τι καὶ περὶ τῶν ὅλων ἤδη τοῦ θεοῦ προοικονομουμένου, πέμπει τὸν ἄνδρα διαληψόμενον τὴν ἡγεμονίαν τῶν ἐπὶ Συρίας στρατευμάτων, πολλὰ πρὸς τὸ ἐπεῖγον, οἷα κελεύουσιν αἱ ἀνάγκαι, μειλιξάμενός τε καὶ προθεραπεύσας. Ὁ δὲ ἀπὸ τῆς Ἀχαΐας, ἔνθα συνῆν τῷ Νέρωνι, τὸν μὲν υἱὸν Τίτον ἔστειλεν ἐπ᾽ Ἀλεξανδρείας, τό τε πέμπτον καὶ τὸ δέκατον ἐκεῖθεν ἀναστήσοντα τάγμα. Περάσας δὲ αὐτὸς τὸν Ἑλλήσποντον, πεζὸς εἰς Συρίαν ἀφικνεῖται, καὶ ἐκεῖ τάς τε Ῥωμαϊκὰς δυνάμεις συνῆγε, καὶ συχνοὺς παρὰ τῶν γειτνιώντων βασιλέων συμμάχους.

CAP. II. 1. Ἰουδαῖοι δὲ μετὰ τὴν Κεστίου πληγὴν ἐπηρμένοι ταῖς ἀδοκήτοις εὐπραγίαις, ἀκρατεῖς ἦσαν ὁρμῆς, καὶ ὥςπερ ἐκριπιζόμενοι τῇ τύχῃ προσωτέρω τὸν πόλεμον ἐξῆγον. Πᾶν γοῦν εὐθέως ὅσον ἦν μαχιμώτατον αὐτῶν ἀθροισθέντες, ὥρμησαν ἐπ' Ἀσκάλωνα. Πόλις ἐστὶν ἀρχαία, τῶν Ἱεροσολύμων εἴκοσι πρὸς τοῖς πεντακοσίοις ἀπέχουσα σταδίους, αἰεὶ διὰ μίσους Ἰουδαίοις γεγενημένη, διὸ καὶ τότε ταῖς πρώταις ὁρμαῖς ἐγγιεῖν ἔδοξεν. Ἐξηγοῦντο δὲ τῆς καταδρομῆς τρεῖς ἄνδρες, ἀλκήν τε κορυφαῖοι καὶ σύνεσιν, Νίγερ τε ὁ Περαΐτης, καὶ ὁ Βαβυλώνιος Σίλας, πρὸς οἷς Ἰωάννης ὁ Ἐσσαῖος. Ἡ δὲ Ἀσκάλων ἐτετείχιστο μὲν καρτερῶς, βοηθείας δὲ ἦν σχεδὸν ἔρημος· ἐφρουρεῖτο γὰρ ὑπό τε σπείρας πεζῶν, καὶ ὑπὸ μιᾶς ἴλης ἱππέων, ἧς ἐπῆρχεν Ἀντώνιος.

2. Οἱ μὲν οὖν πολὺ ταῖς ὀργαῖς συντονώτερον ὁδεύσαντες, ὡς ἐγγύθεν ὡρμημένοι καὶ δὴ παρῆσαν. Ὁ δὲ Ἀντώνιος, οὐ γὰρ ἠγνόει μέλλουσαν ἔτι τὴν ἔφοδον αὐτῶν, προεξήγαγε τοὺς ἱππεῖς, καὶ οὐδὲν οὔτε πρὸς τὸ πλῆθος, οὔτε πρὸς τὴν τόλμαν ὑποδείσας τῶν πολεμίων, καρτερῶς τὰς πρώτας ὁρμὰς ἀνεδέξατο, καὶ τοὺς ἐπὶ τὸ τεῖχος ὠθουμένους ἀνέστειλεν. Οἱ δὲ πρὸς ἐμπείρους γε πολέμων ἄπειροι, καὶ πεζοὶ πρὸς ἱππεῖς, ἀσύντακτοί τε πρὸς ἡνωμένους, καὶ πρὸς ὁπλίτας ἐξηρτυμένους εἰκαιότερον ὡπλισμένοι, θυμῷ τε πλέον ἢ βουλῇ στρατηγούμενοι, πρὸς εὐπειθεῖς καὶ νεύματι πάντα πράττοντας ἀντιτασσόμενοι, πονοῦσι ῥᾳδίως· ὡς γὰρ αὐτῶν ἅπαξ ἤδη συνεταράχθησαν αἱ πρῶται φάλαγγες,
221 ὑπὸ τῆς ἵππου τρέπονται, καὶ τοῖς κατόπιν αὐτῶν ἐπὶ τὸ τεῖχος βιαζομένοις περιπίπτοντες, ἀλλήλων ἦσαν πολέμιοι, μέχρι πάντες, ταῖς τῶν ἱππέων εἰςβολαῖς εἴξαντες, ἐσκεδάσθησαν ἀνὰ πᾶν τὸ πεδίον. Τὸ δὲ ἦν πλατὺ, καὶ πᾶν ἱππάσιμον, ὃ δὴ καὶ τοῖς

Ῥωμαίοις συνεργῆσαν πλεῖστον εἰργάσατο τῶν Ἰουδαίων φόνον· τούς τε γὰρ φεύγοντας αὐτῶν φθάνοντες ἐπέστρεφον, καὶ τῶν ὑπὸ τοῦ δρόμου συνειλουμένων διεκπαίοντες, ἀπείρους ἀνῄρουν. Ἄλλοι δὲ ἄλλους, ὅπη τρέποιντο, κυκλούμενοι καὶ περιελαύνοντες κατηκόντιζον ῥᾳδίως. Καὶ τοῖς μὲν Ἰουδαίοις τὸ ἴδιον πλῆθος ἐρημία παρὰ τὰς ἀμηχανίας κατεφαίνετο, Ῥωμαῖοι δ᾽ ἐν ταῖς εὐπραγίαις, καίπερ ὄντες ὀλίγοι τῷ πολέμῳ, καὶ περισσεύειν σφᾶς αὐτοὺς ὑπελάμβανον. Καὶ τῶν μὲν προςφιλονεικούντων τοῖς πταίσμασιν, αἰδοῖ τε φυγῆς ταχείας καὶ μεταβολῆς ἐλπίδι, τῶν δὲ μὴ κοπιώντων ἐν οἷς εὐτύχουν, παρέτεινεν ἡ μάχη μέχρι δείλης, ἕως ἀνῃρέθησαν μὲν μύριοι τῶν Ἰουδαίων ἀριθμὸν ἄνδρες, καὶ δύο τῶν ἡγεμόνων, Ἰωάννης τε καὶ Σίλας· οἱ λοιποὶ δὲ τραυματίαι τὸ πλέον, σὺν τῷ περιλειπομένῳ τῶν ἡγεμόνων Νίγερι, τῆς Ἰδουμαίας εἰς πολίχνην τινὰ, Σάλλις καλεῖται, συνέφυγον. Ὀλίγοι δέ τινες καὶ τῶν Ῥωμαίων ἐπὶ τῇςδε τῆς παρατάξεως ἐτρώθησαν.

3. Οὐ μὴν οἱ Ἰουδαῖοι τηλικαύτῃ συμφορᾷ κατεστάλησαν τὰ φρονήματα· μᾶλλον δὲ αὐτῶν τὸ πάθος ἤγειρε τὰς τόλμας. Ὑπερορῶντές τε τοὺς ἐν ποσὶ νεκροὺς, ἐδελεάζοντο τοῖς προτέροις κατορθώμασιν ἐπὶ πληγὴν δευτέραν. Διαλιπόντες γοῦν οὐδὲ ὅσον ἰάσασθαι τὰ τραύματα, καὶ τὴν δύναμιν πᾶσαν ἐπισυλλέξαντες, ὀργιλώτεροι καὶ πολλῷ πλείους ἐπαλινδρόμουν ἐπὶ τὴν Ἀσκάλωνα. Παρείπετο δὲ αὐτοῖς, μετὰ τῆς ἀπειρίας καὶ τῶν ἄλλων πρὸς πόλεμον ἐλασσωμάτων, ἡ προτέρα τύχη· τοῦ γὰρ Ἀντωνίου τὰς παρόδους προλοχίσαντος, ἀδόκητοι ταῖς ἐνέδραις ἐμπεσόντες, καὶ ὑπὸ τῶν ἱππέων, πρὶν εἰς μάχην συντάξασθαι, κυκλωθέντες, πάλιν πίπτουσι μὲν ὑπὲρ ὀκτακιςχιλίους· οἱ λοιποὶ δὲ πάντες ἔφυγον, σὺν οἷς καὶ Νίγερ, πολλὰ κατὰ τὴν φυγὴν εὐτολμίας ἐπιδειξάμενος ἔργα. Συνελαύνον-

ται δ' οὖν, προσκειμένων τῶν πολεμίων, εἴς τινα πύργον ὀχυρὸν κώμης Βεζεδὲλ καλουμένης. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἀντώνιον, ὡς μήτε τρίβοιντο περὶ τὸν πύργον ὄντα δυςάλωτον, μήτε ζῶντα τὸν ἡγεμόνα καὶ γενναιότατον τῶν πολεμίων περιίδοιεν, ὑποπιμπρᾶσι τὸ τεῖχος. Φλεγομένου δὲ τοῦ πύργου, Ῥωμαῖοι μὲν ἀναχωροῦσι γεγηθότες, ὡς διεφθαρμένου καὶ Νίγερος. Ὁ δὲ εἰς τὸ μυχαίτατον τοῦ φρουρίου σπήλαιον καταπηδήσας ἐκ τοῦ πύργου διασώζεται, καὶ μεθ' ἡμέραν τρίτην τοῖς μετ' ὀλοφυρμῶν πρὸς κηδείαν αὐτὸν ἐρευνῶσιν ὑποφθέγγεται. Προελθὼν δὲ χαρᾶς ἀνελπίστου πάντας ἐπλήρωσεν Ἰουδαίους, ὡς προνοίᾳ θεοῦ σωθεὶς αὐτοῖς στρατηγὸς εἰς τὰ μέλλοντα.

4. Οὐεσπασιανὸς δὲ τὰς δυνάμεις ἀναλαβὼν ἐκ τῆς Ἀντιοχείας, — ἣ μητρόπολίς ἐστι τῆς Συρίας,
222 μεγέθους τε ἕνεκα καὶ τῆς ἄλλης εὐδαιμονίας, τρίτον ἀδηρίτως ἐπὶ τῆς ὑπὸ Ῥωμαίοις οἰκουμένης ἔχουσα τόπον, — ἔνθα κατὰ πάσης τῆς ἰδίας ἰσχύος ἐκδεχόμενον αὐτοῦ τὴν ἄφιξιν καὶ Ἀγρίππαν τὸν βασιλέα κατειλήφει, ἐπὶ Πτολεμαΐδος ἠπείγετο. Καὶ κατὰ ταύτην ὑπαντῶσιν αὐτῷ τὴν πόλιν οἱ τῆς Γαλιλαίας Σεπφώριν νεμόμενοι, τῶν τῇδε εἰρηνικὰ φρονοῦντες, οἳ καὶ τῆς ἑαυτῶν σωτηρίας, καὶ τῆς Ῥωμαίων ἰσχύος οὐκ ἀπρονόητοι, πρὶν ἀφικέσθαι Οὐεσπασιανὸν, Κεστίῳ Γάλλῳ πίστεις τε ἔδοσαν, καὶ δεξιὰς ἔλαβον, καὶ παρεδέξαντο φρουράν. Τότε γε μὴν φιλοφρόνως ἐκδεξάμενοι τὸν ἡγεμόνα, προθύμως σφᾶς αὐτοὺς ὑπέσχοντο κατὰ τῶν ὁμοφύλων συμμάχους· οἷς ὁ στρατηγὸς ἀξιώσασι τέως πρὸς ἀσφάλειαν ἱππεῖς τε καὶ πεζοὺς παραδίδωσιν, ὅσους ἀνθέξειν ταῖς καταδρομαῖς, εἴ τι Ἰουδαῖοι παρακινοῖεν, ὑπελάμβανεν· καὶ γὰρ οὐδὲ μικρὸν ἐδόκει τὸ κινδύνευμα πρὸς τὸν μέλλοντα πόλεμον, ἀφαιρεθῆναι τὴν Σεπφώριν, μεγίστην μὲν οὖσαν τῆς Γαλι-

λαίας πόλιν, ἐρυμνοτάτῳ δὲ ἐπεκτισμένην χωρίῳ, καὶ φρουρὰν ὅλου τοῦ ἔθνους ἐσομένην.

CAP. III. 1. Δύο δ᾽ οὔσας τὰς Γαλιλαίας, τήν τε ἄνω, καὶ τὴν κάτω προσαγορευομένην, περιίσχει μὲν ἡ Φοινίκη καὶ Συρία. Διορίζει δὲ ἀπὸ μὲν δύσεως ἡλίου Πτολεμαΐς τοῖς τῆς χώρας τέρμασι, καὶ Κάρμηλος, τὸ πάλαι μὲν Γαλιλαίων, νῦν δὲ Τυρίων ὄρος, — ᾧ προςίσχει Γαβὰ, πόλις ἱππέων, οὕτως ἀγορευομένη διὰ τὸ τοὺς ὑφ᾽ Ἡρώδου τοῦ βασιλέως ἀπολυομένους ἱππεῖς ἐν αὐτῇ κατοικεῖν· — ἀπὸ δὲ μεσημβρίας Σαμαρίς τε, καὶ Σκυθόπολις μέχρι τῶν Ἰορδάνου ῥείθρων. Πρὸς ἕω δὲ Ἱππηνή τε καὶ Γαδαρὶς ἀποτέμνεται, καὶ ἡ Γαυλανῖτις αὕτη, καὶ τῆς Ἀγρίππα βασιλείας οἱ ὅροι. Τὰ προσάρκτια δὲ αὐτῆς Τύρῳ τε καὶ Τυρίων χώρᾳ περατοῦται. Καὶ τῆς μὲν κάτω καλουμένης Γαλιλαίας ἀπὸ Τιβεριάδος μέχρι Ζαβουλὼν, ἧς ἐν τοῖς παραλίοις Πτολεμαΐς 223 γείτων, τὸ μῆκος ἐκτείνεται. Πλατύνεται δὲ ἀπὸ τῆς ἐν τῷ Μεγάλῳ πεδίῳ κειμένης κώμης, ἡ Ξαλὼθ καλεῖται, μέχρι Βηρσάβης, ἧ καὶ τῆς ἄνω Γαλιλαίας εἰς εὖρος ἀρχὴ μέχρι Βακὰ κώμης· αὕτη δὲ τὴν τῶν Τυρίων γῆν ὁρίζει. Μηκύνεται δὲ μέχρι Μηρὼθ ἀπὸ Θελλᾶ κώμης Ἰορδάνου γείτονος.

2. Τηλικαῦται δὲ οὖσαι τὸ μέγεθος, καὶ τοσούτοις ἔθνεσιν ἀλλοφύλοις κεκυκλωμέναι, πρὸς πᾶσαν ἀεὶ πολέμου πεῖραν ἀντέσχον· μάχιμοί τε γὰρ ἐκ νηπίων, καὶ πολλοὶ πάντοτε Γαλιλαῖοι, καὶ οὔτε δειλία ποτὲ τοὺς ἄνδρας, οὔτε λειπανδρεία τὴν χώραν κατέσχεν, ἐπειδὴ πίων τε πᾶσα καὶ εὔβοτος, καὶ δένδρεσι παντοίοις κατάφυτος, ὡς ὑπὸ τῆς εὐπαθείας προςκαλέσασθαι καὶ τὸν ἥκιστα γῆς φιλόπονον. Προςησκήθη γοῦν ὑπὸ τῶν οἰκητόρων πᾶσα, καὶ μέρος αὐτῆς οὐδὲν ἀργόν· ἀλλὰ καὶ πόλεις πυκναὶ, καὶ τὸ τῶν κωμῶν πλῆθος πανταχοῦ πολυάνθρωπον διὰ τὴν εὐθηνίαν, ὡς τὴν ἐλαχίστην ὑπὲρ

πεντακιςχιλίους πρὸς τοῖς μυρίοις ἔχειν οἰκήτορας.

3. *Καθόλου δὲ, εἰ καὶ τῷ μεγέθει τις ἐλαττώσειε τῆς Περαίας τὴν Γαλιλαίαν, προέλοιτο δ' ἂν τῇ δυνάμει· ἡ μὲν γὰρ ἐνεργὸς ὅλη, καὶ συνεχὴς ἐστι καρποφόρος, ἡ Περαία δὲ πολὺ μὲν μείζων, ἔρημος δὲ καὶ τραχεῖα τὸ πλέον, πρός τε καρπῶν ἡμέρων αὔξησιν ἀγριωτέρα. Τό γε μὴν μαλθακὸν αὐτῆς καὶ πάμφορον, καὶ τὰ πεδία δένδρεσι κατάφυτα ποικίλοις, τὸ πλεῖστον δὲ εἰς ἐλαίαν τε καὶ ἄμπελον καὶ φοινικῶνας ἤσκηται, διαρδομένη χειμάρροις τε τοῖς ἀπὸ τῶν ὀρῶν καὶ πηγαῖς ἀεννάοις ἅλις, εἴ ποτε ἐκεῖνοι σειρίῳ φθίνοιεν. Μῆκος μὲν οὖν αὐτῆς ἀπὸ Μαχαιροῦντος εἰς Πέλλαν, εὖρος δὲ ἀπὸ Φιλαδελφείας μέχρις Ἰορδάνου. Καὶ Πέλλῃ μὲν, ἣν προειρήκαμεν, τὰ πρὸς ἄρκτον ὁρίζεται, τὰ πρὸς ἑσπέραν δὲ Ἰορδάνῃ· μεσημβρινὸν δὲ αὐτῆς πέρας ἡ Μωαβῖτις, καὶ πρὸς ἀνατολὴν Ἀραβίᾳ τε καὶ Σιλβωνίτιδι, πρὸς δὲ Φιλαδελφηνῇ καὶ Γεράσοις ἀποτέμνεται.*

4. *Ἡ δὲ Σαμαρεῖτις χώρα μέση μὲν τῆς Ἰουδαίας ἐστὶ καὶ τῆς Γαλιλαίας· ἀρχομένη γὰρ ἀπὸ τῆς ἐν τῷ Μεγάλῳ πεδίῳ κειμένης Γιναίας ὄνομα κώμης, ἐπιλήγει τῆς Ἀκραβατηνῶν τοπαρχίας. Φύ-*
224 *σιν δὲ τῆς Ἰουδαίας κατ' οὐδὲν διάφορος· ἄμφω τε γὰρ ὀρειναὶ καὶ πεδιάδες, εἴς τε γεωργίαν μαλθακαὶ, καὶ πολύφοροι, κατάδενδροί τε, καὶ ὀπώρας ὀρεινῆς καὶ ἡμέρου μεσταί. Προςάρδεσθαι δὲ οὐδαμοῦ μὲν φύσει δαψιλὲς, ὕονται δὲ τὸ πλέον· γλυκὺ δὲ νᾶμα πᾶν διαφόρως ἐν αὐταῖς, καὶ διὰ πλῆθος πόας ἀγαθῆς τὰ κτήνη πλέον, ἢ παρ' ἄλλοις, γαλακτοφόρα· μέγιστόν γε μὴν τεκμήριον ἀρετῆς καὶ εὐθηνίας τὸ πληθύειν ἀνδρῶν ἑκατέραν.*

5. *Μεθόριος δὲ αὐτῶν ἡ Ἀνουὰθ Βορκέως προςαγορευομένη κώμη, πέρας αὕτη τῆς Ἰουδαίας τὸ πρὸς βορέαν· τὰ νότια δὲ αὐτῆς ἐπὶ μῆκος μετρου-*

μένης ὁρίζει, προςκυροῦσα τοῖς Ἀράβων ὅροις κώμη, καλοῦσι δὲ αὐτὴν Ἰαρδὰν οἱ τῇδε Ἰουδαῖοι. Εὖρός γε μὴν ἀπὸ Ἰορδάνου ποταμοῦ μέχρις Ἰόππης ἀναπέπταται. Μεσαιτάτη δὲ αὐτῆς πόλις τὰ Ἱεροσόλυμα κεῖται, παρ' ὃ καί τινες οὐκ ἀσκόπως ὀμφαλὸν τὸ ἄστυ τῆς χώρας ἐκάλεσαν. Ἀφῄρηται δὲ οὐδὲ τῶν ἐκ θαλάσσης τερπνῶν ἡ Ἰουδαία, τοῖς παραλίοις κατατείνουσα μέχρι Πτολεμαΐδος. Μερίζεται δὲ εἰς ἕνδεκα κληρουχίας, ὧν ἄρχει μὲν ὡς βασίλειον τὰ Ἱεροσόλυμα, προανίσχουσα τῆς περιοίκου πάσης, ὥςπερ ἡ κεφαλὴ σώματος· αἱ λοιπαὶ δὲ μετ' αὐτὴν διῄρηνται τὰς τοπαρχίας. Γόφνα δευτέρα, καὶ μετ' αὐτὴν Ἀκραβαττὰ, Θαμνὰ πρὸς ταύταις, καὶ Λύδδα καὶ Ἀμμαοῦς καὶ Πέλλη καὶ Ἰδουμαία καὶ Ἐγγαδδαὶ καὶ Ἡρώδειον καὶ Ἱεριχοῦς, μεθ' ἃς Ἰάμνεια καὶ Ἰόππη τῶν περιοίκων ἀφηγοῦνται, καὶ ἐπὶ ταύταις ἥ τε Γαμαλιτικὴ καὶ Γαυλανῖτις, Βαταναία τε καὶ Τραχωνῖτις, αἳ καὶ τῆς Ἀγρίππα βασιλείας εἰσὶ μοῖραι. Ἀρχομένη δὲ ἀπὸ Λιβάνου ὄρους καὶ τῶν Ἰορδάνου πηγῶν ἡ χώρα, μέχρι τῆς Τιβεριάδος λίμνης εὐρύνεται. Ἀπὸ δὲ κώμης καλουμένης Ἀρφᾶς μέχρις Ἰουλιάδος ἐκτείνεται τὸ μῆκος. Οἰκοῦσι δὲ αὐτὴν μιγάδες Ἰουδαῖοί τε καὶ Σύροι. Τὰ μὲν δὴ περὶ τῆς Ἰουδαίων τε καὶ τῶν πέριξ χώρας, ὡς ἐνῆν μάλιστα συντόμως ἀπηγγέλκαμεν.

CAP. IV. 1. Ἡ δὲ ὑπὸ Οὐεσπασιανοῦ πεμφθεῖσα Σεπφωρίταις βοήθεια χίλιοι μὲν ἱππεῖς, ἑξακιςχίλιοι δὲ πεζοὶ, Πλακίδου χιλιαρχοῦντος αὐτῶν, ἐν τῷ Μεγάλῳ πεδίῳ στρατοπεδευσάμενοι διαιροῦνται. Καὶ 225
τὸ μὲν πεζὸν ἐν τῇ πόλει πρὸς φυλακὴν αὐτῆς, τὸ δὲ ἱππικὸν ἐπὶ τῆς παρεμβολῆς αὐλίζεται. Προϊόντες δὲ ἑκατέρωθεν συνεχῶς, καὶ τὰ πέριξ τῆς χώρας κατατρέχοντες, μεγάλα τοὺς περὶ τὸν Ἰώσηπον

ἐκάκουν ἀτρεμοῦντας, τά τε κατὰ πόλιν ἔξωθεν ληϊζόμενοι, καὶ προθέοντας, ὁπότε θαῤῥήσειαν, ἀνακόπτοντες. Ὥρμησέ γε μὴν ὁ Ἰώσηπος ἐπὶ τὴν πόλιν, αἱρήσειν ἐλπίσας ἣν αὐτὸς πρὶν ἀποστῆναι Γαλιλαίων ἐτείχισεν, ὡς καὶ Ῥωμαίοις δυσάλωτον εἶναι. Διὸ καὶ τῆς ἐλπίδος ἀφήμαρτε, τοῦ τε βιάζεσθαι καὶ τοῦ μεταπείθειν Σεπφωρίτας ἀσθενέστερος εὑρεθείς. Παρώξυνε δὲ μᾶλλον τὸν πόλεμον ἐπὶ τὴν χώραν· καὶ οὔτε νύκτωρ, οὔτε μεθ᾽ ἡμέραν, ὀργῇ τῆς ἐπιβουλῆς οἱ Ῥωμαῖοι διέλιπον δῃοῦντες αὐτῶν τὰ πεδία, καὶ διαρπάζοντες τὰ ἐπὶ τῆς χώρας κτήματα, καὶ κτείνοντες μὲν ἀεὶ τὸ μάχιμον, ἀνδραποδιζόμενοι δὲ τοὺς ἀσθενεστέρους. Πυρὶ δὲ ἡ Γαλιλαία καὶ αἵματι πεπλήρωτο πᾶσα, πάθους τε οὐδενὸς ἢ συμφορᾶς ἀπείρατος ἦν· μία γὰρ καταφυγὴ διωκομένοις αἱ ὑπὸ τοῦ Ἰωσήπου τειχισθεῖσαι πόλεις ἦσαν.

2. Ὁ δὲ Τίτος περαιωθεὶς ἀπὸ τῆς Ἀχαΐας εἰς τὴν Ἀλεξάνδρειαν, ὠκύτερον ἢ κατὰ χειμῶνος ὥραν παραλαμβάνει μὲν ἐφ᾽ ἣν ἔσταλτο δύναμιν. Συντόνῳ δὲ χρώμενος πορείᾳ, διὰ τάχους εἰς Πτολεμαΐδα ἀφικνεῖται. Καὶ ἐκεῖ καταλαβὼν τὸν πατέρα δυσὶ τοῖς ἅμα αὐτῷ τάγμασιν, ἦν δὲ τὰ ἐπισημότατα τὸ πέμπτον καὶ τὸ δέκατον, ζεύγνυσι καὶ τὸ ἀχθὲν ὑπ᾽ αὐτοῦ πεντεκαιδέκατον. Τούτοις εἵποντο ὀκτωκαίδεκα σπεῖραι· προσεγένοντο δὲ καὶ ἀπὸ Καισαρείας πέντε, καὶ ἱππέων ἴλη μία, πέντε δὲ ἕτεραι τῶν ἀπὸ Συρίας ἱππέων. Τῶν δὲ σπειρῶν αἱ δέκα μὲν εἶχον ἀνὰ χιλίους μὲν πεζούς, αἱ δὲ λοιπαὶ δεκατρεῖς ἀνὰ ἑξακοσίους μὲν πεζούς, ἱππεῖς δὲ ἑκατὸν εἴκοσι. Συχνὸν δὲ καὶ παρὰ τῶν βασιλέων συνήχθη συμμαχικόν, Ἀντιόχου μὲν καὶ Ἀγρίππα καὶ Σοέμου παρασχομένων ἀνὰ δισχιλίους πεζοὺς τοξότας καὶ χιλίους ἱππεῖς, τοῦ δὲ Ἄραβος Μάλχου χιλίους πέμψαντος ἱππεῖς ἐπὶ πεζοῖς πεντακισχιλίοις, ὧν τὸ πλέον ἦσαν τοξόται· ὡς τὴν πᾶσαν δύναμιν,

συνεξαριθμουμένων τῶν βασιλικῶν, ἱππέας τε καὶ πεζοὺς, εἰς ἓξ ἀθροίζεσθαι μυριάδας δίχα θεραπόντων, οἳ παμπληθεῖς μὲν εἵποντο, διὰ δὲ συνάσκησιν πολεμικὴν οὐκ ἂν ἀποτάσσοιντο τοῦ μαχίμου, κατὰ μὲν εἰρήνην ἐν ταῖς μελέταις τῶν δεσποτῶν ἀεὶ στρεφόμενοι, συγκινδυνεύοντες δ' ἐν πολέμοις, ὡς μήτε ἐμπειρίᾳ μήτ' ἀλκῇ τινος πλὴν τῶν δεσποτῶν ἐλαττοῦσθαι.

CAP. V. 1. Καὶ ἐν τούτῳ μὲν οὖν θαυμάσαιτό τις 226 ἂν Ῥωμαίων τὸ προμηθὲς, κατασκευαζομένων ἑαυτοῖς τὸ οἰκετικὸν, οὐ μόνον εἰς τὰς τοῦ βίου διακονίας, ἀλλὰ καὶ πρὸς τοὺς πολέμους χρήσιμον. Εἰ δέ τις αὐτῶν καὶ εἰς τὴν ἄλλην τῆς στρατιᾶς σύνταξιν ἀπίδοι, γνώσεται τὴν τοσήνδε ἡγεμονίαν αὐτοὺς ἀρετῆς κτῆμα ἔχοντας, οὐ δῶρον τύχης· οὐ γὰρ αὐτοῖς ἀρχὴ τῶν ὅπλων ὁ πόλεμος, οὐδὲ ἐπὶ μόνας τὰς χρείας τὼ χεῖρε κινοῦσιν, ἐν εἰρήνῃ ἀπειρηκότες· ἀλλ' ὥςπερ συμπεφυκότες τοῖς ὅπλοις, οὐδέποτε τῆς ἀσκήσεως λαμβάνουσιν ἐκεχειρίαν, οὐδὲ ἀναμένουσι τοὺς καιρούς. Αἱ μελέται δὲ αὐτοῖς οὐδὲν τῆς κατὰ ἀλήθειαν εὐτονίας ἀποδέουσιν, ἀλλ' ἕκαστος ὁσημέραι στρατιώτης πάσῃ προθυμίᾳ καθάπερ ἐν πολέμῳ γυμνάζεται. Διὸ κουφότατα τὰς μάχας διαφέρουσιν· οὔτε γὰρ ἀταξία διασκίδνησιν αὐτοὺς ἀπὸ τῆς ἐν ἔθει συντάξεως, οὔτε δέος ἐξίστησιν, οὔτε δαπανᾷ πόνος. Ἕπεται δὲ τὸ κρατεῖν ἀεὶ κατὰ τῶν οὐχ ὁμοίων βέβαιον· καὶ οὐκ ἂν ἁμάρτοι τις εἰπὼν τὰς μὲν μελέτας αὐτῶν χωρὶς αἵματος παρατάξεις, τὰς παρατάξεις δὲ μεθ' αἵματος μελέτας. Οὐδὲ γὰρ ἐξ ἐπιδρομῆς εὐάλωτοι πολεμίοις· ὅπῃ δ' ἂν ἐμβάλωσιν εἰς ἐχθρῶν γῆν, οὐ πρὶν ἅπτονται μάχης ἢ τειχίσαι στρατόπεδον. Τὸ δ' οὐκ εἰκαῖον οὐδὲ ἀνώμαλον ἐγείρουσιν, οὐδὲ πάντες ἢ ἀτάκτως διαλαβόντες, ἀλλ' εἰ μὲν ἀνώμαλος ὢν τύχοι χῶρος, ἐξομαλίζεται· διαμετρεῖται δὲ πα-

ῥεμβολὴ τετράγωνος αὐτοῖς. Καὶ τεκτόνων πλῆθος ἕπεται, τά τε πρὸς δόμησιν ἐργαλεῖα.

2. Καὶ τὸ μὲν ἔνδον εἰς σκηνὰς διαλαμβάνουσιν· ἔξωθεν δὲ ὁ κύκλος τείχους ὄψιν ἐπέχει, πύργοις ἐξ ἴσου διαστήματος κεκοσμημένος. Ἐπὶ δὲ τῶν μεταπυργίων τούς τε ὀξυβελεῖς καὶ καταπέλτας καὶ λιθοβόλα καὶ πᾶν ἀφετήριον ὄργανον τιθέασιν, ἅπαντα πρὸς τὰς βολὰς ἕτοιμα. Πύλαι δὲ ἐνοικοδομοῦνται τέσσαρες, καθ' ἕκαστον τοῦ περιβόλου κλίμα, πρός τε εἰσόδους τῶν ὑποζυγίων εὐμαρεῖς, καὶ πρὸς ἐκδρομὰς αὐτῶν, εἰ κατεπείγοι, πλατεῖαι. Ῥυμοτομοῦσι δὲ εὐδιαθέτως εἴσω τὸ στρατόπεδον· καὶ μέσας μὲν τὰς τῶν ἡγεμόνων σκηνὰς τίθενται, με-
227 σαίτατον δὲ τούτων τὸ στρατήγιον, ναῷ παραπλήσιον· ὥσπερ δὲ ἐν σχεδίῳ πόλις καὶ ἀγορά τις ἀποδείκνυται, καὶ χειροτέχναις χωρίον, θῶκοί τε λοχαγοῖς καὶ ταξιάρχοις, ὅπη δικάζοιεν, εἴ τινες διαφέροιντο. Τειχίζεται δὲ ὁ περίβολος, καὶ τὰ ἐν αὐτῷ πάντα θᾶσσον ἐπινοίας πλήθει καὶ ἐπιστήμῃ τῶν πονούντων. Εἰ δὲ ἐπείγοι, καὶ τάφρος ἔξωθεν περιβάλλεται, βάθος τετράπηχυς, καὶ εὖρος ἴσον.

3. Φραξάμενοι δὲ αὐλίζονται κατὰ συντάξεις ἕκαστοι μεθ' ἡσυχίας τε καὶ κόσμου. Πάντα δὲ αὐτοῖς καὶ τὰ ἄλλα μετ' εὐταξίας ἀνύεται καὶ ἀσφαλείας· ξυλεία καὶ ἐπισιτισμὸς, εἰ δέοιντο, καὶ ὑδρεία κατὰ συντάξεις ἑκάστοις· οὔτε γὰρ δεῖπνον ἢ ἄριστον, ὁπότε θελήσειαν, αὐτεξούσιον ἑκάστῳ, πᾶσι δὲ ὁμοῦ. Τούς τε ὕπνους αὐτοῖς, καὶ τὰς φυλακὰς, καὶ τὰς ἐξεγέρσεις σάλπιγγες προσημαίνουσιν· οὐδ' ἐστὶν ὅ τι γίνεται δίχα παραγγέλματος. Ὑπὸ δὲ τὴν ἕω τὸ στρατιωτικὸν μὲν ἐπὶ τοὺς ἑκατοντάρχας ἕκαστοι, πρὸς δὲ τοὺς χιλιάρχους οὗτοι συνίασιν ἀσπασόμενοι, μεθ' ὧν πρὸς τὸν ἡγεμόνα τῶν ὅλων οἱ ταξιάρχαι πάντες. Ὁ δὲ αὐτοῖς τότε ἐξ ἔθους σημεῖον καὶ τὰ ἄλλα παραγγέλματα δίδωσι διαφέρειν εἰς τοὺς ὑποτεταγμένους· ὃ δὴ καὶ ἐπὶ παρατάξεως

πράττοντες, ἐπιστρέφονται ταχέως, ἵνα δέοι καὶ πρὸς τὰς ἐφόδους αὐτοῖς, καὶ πρὸς τὰς ἀνακλήσεις ὑποχωροῦσιν ἀθρόοι.

4. Ἐξιέναι δὲ τοῦ στρατοπέδου δέον ὑποσημαίνει μὲν ἡ σάλπιγξ· ἠρεμεῖ δὲ οὐδεὶς, ἀλλὰ ἅμα νεύματι τὰς μὲν σκηνὰς ἀναιροῦσιν, πάντα δὲ ἐξαρτύονται πρὸς τὴν ἔξοδον, καὶ πάλιν αἱ σάλπιγγες ὑποσημαίνουσι παρεσκευάσθαι. Οἱ δὲ ἐν τάχει τοῖς τε ὀρεῦσι καὶ τοῖς ὑποζυγίοις ἐπιτιθέντες τὴν ἀποσκευὴν, ἑστᾶσιν ὥςπερ ἐφ' ὕσπληγγος ἐξορμᾶν ἕτοιμοι, ὑποτιμπρᾶσι τε ἤδη τὴν παρεμβολὴν, ὡς αὐτοῖς μὲν ῥᾴδιον ἐκεῖ πάλιν τειχίσασθαι, μὴ γένοιτο δὲ ἐκεῖνό ποτε τοῖς πολεμίοις χρήσιμον. Καὶ τρίτον δὲ ὁμοίως αἱ σάλπιγγες προσημαίνουσι τὴν ἔξοδον, ἐπισπέρχουσαι τοὺς δι' αἰτίαν τινὰ βραδύνοντας, ὡς μή τις ἀπολειφθείη τάξεως. Ὅ τε κῆρυξ δεξιὸς τῷ πολεμάρχῳ παραστὰς, εἰ πρὸς πόλεμόν εἰσιν ἕτοιμοι, τῇ πατρίῳ γλώσσῃ τρὶς ἀναπυνθάνεται. Καὶ ἐκεῖνοι τοσαυτάκις ἀντιβοῶσι μέγα τι καὶ πρόθυμον, ἕτοιμοι λέγοντες· φθάνουσί τε τὸν ἐπερωτῶντα, καί τινος ἀρηΐου πνεύματος ὑποπιμπλάμενοι τῇ βοῇ συνεξαίρουσι τὰς δεξιάς.

5. Ἔπειτα προϊόντες ὁδεύουσιν ἡσυχῇ καὶ μετὰ κόσμου πάντες, ὥςπερ ἐν πολέμῳ τὴν ἰδίαν τάξιν ἕκαστος φυλάσσων. Οἱ μὲν πεζοὶ θώραξί τε πεφραγμένοι καὶ κράνεσι, καὶ μαχαιροφοροῦντες ἀμφοτέρωθεν· μακρότερον δὲ αὐτῶν τὸ λαιὸν ξίφος πολλῷ, τὸ γὰρ κατὰ δεξιὸν σπιθαμῆς οὐ πλέον ἔχει μῆκος. Φέρουσι δὲ οἱ μὲν περὶ τὸν στρατηγὸν ἐπίλεκτοι πεζοὶ λόγχην καὶ ἀσπίδα· ἡ δὲ λοιπὴ φάλαγξ ξυστόν τε καὶ θυρεὸν ἐπιμήκη, πρὸς οἷς πρίονα καὶ κόφινον, ἄμην τε καὶ πέλεκυν, πρὸς δὲ ἱμάντα καὶ 228
δρέπανον καὶ ἅλυσιν, ἡμερῶν τε τριῶν ἐφόδιον· ὡς ὀλίγον ἀποδεῖν τῶν ἀχθοφορούντων ὀρέων τὸν πεζόν. Τοῖς δὲ ἱππεῦσι μάχαιρα μὲν ἐκ δεξιοῦ μακρὰ, καὶ κοντὸς ἐπιμήκης ἐν χειρὶ, θυρεὸς δὲ παρὰ

πλευρὸν ἵππου πλάγιος, καὶ κατὰ γωρυτοῦ παρήρτηνται τρεῖς ἢ πλείους ἄκοντες, πλατεῖς μὲν αἰχμὰς, οὐκ ἀποδέοντες δὲ δοράτων μέγεθος. Κράνη δὲ καὶ θώρακες ὁμοίως τοῖς πεζοῖς ἅπασιν. Οὐδενὶ δὲ ὅπλῳ διαλλάττουσιν οἱ περὶ τὸν στρατηγὸν ἐπίκριτοι τῶν ἐν ταῖς ἴλαις ἱππέων· κλήρῳ δὲ τῶν ταγμάτων ἀεὶ τὸ λαχὸν ἡγεῖται.

6. Τοιαῦται μὲν οὖν αἱ Ῥωμαίων πορεῖαί τε καὶ καταλύσεις, πρὸς δὲ ὅπλων διαφοραί· οὐδὲν δὲ ἀπροβούλευτον ἐν ταῖς μάχαις, οὐδὲ αὐτοσχέδιον, ἀλλὰ γνώμη μὲν ἀεὶ παντὸς ἔργου προάγει, τοῖς δοχθεῖσι δὲ ἕπεται τὰ ἔργα. Παρ' ὃ καὶ σφάλλονται μὲν ἥκιστα, καὶ ἂν πταίσωσι δὲ, ῥᾳδίως ἀναλαμβάνουσι τὰ σφάλματα. Ἡγοῦνταί τε τῶν ἀπὸ τύχης ἐπιτευγμάτων ἀμείνους τὰς ἐπὶ τοῖς προβουλευθεῖσι διαμαρτίας, ὡς τοῦ μὲν αὐτομάτου καλοῦ δελεάζοντος εἰς ἀπρομήθειαν, τῆς σκέψεως δὲ, καὶ ἂν ἀτυχήσῃ ποτὲ, πρὸς τὸ μὴ αὖθις καλὴν ἐχούσης μελέτην· καὶ τῶν μὲν αὐτομάτων ἀγαθῶν οὐ τὸν λαβόντα αἴτιον εἶναι, τῶν δὲ παρὰ γνώμην προσπεσόντων σκυθρωπῶν παραμυθίαν τό γε προσηκόντως βεβουλεῦσθαι.

7. Παρασκευάζουσι μὲν οὖν ἐν ταῖς μελέταις τῶν ὅπλων οὐ τὰ σώματα μόνον, ἀλλὰ καὶ τὰς ψυχὰς ἀλκίμους. Προσασκοῦνται δὲ καὶ τῷ φόβῳ· οἵ τε γὰρ νόμοι παρ' αὐτοῖς οὐ λειποταξίου μόνον, ἀλλὰ καὶ ῥᾳστώνης ὀλίγης, θανατικοί. Οἵ τε στρατηγοὶ τῶν νόμων φοβερώτεροι· ταῖς γὰρ πρὸς τοὺς ἀγαθοὺς τιμαῖς ῥύονται τὸ δοκεῖν ὠμοὶ πρὸς τοὺς κολαζομένους. Τοσοῦτον δὲ αὐτῶν τὸ πρὸς τοὺς ἡγεμόνας πειθήνιον, ὡς ἔν τε εἰρήνῃ κόσμον εἶναι, καὶ ἐπὶ παρατάξεως ἓν σῶμα τὴν ὅλην στρατιάν. Οὕτως αὐτῶν συναφεῖς μὲν αἱ τάξεις, εὔστροφοι δὲ εἰσιν αἱ περιαγωγαὶ, ὀξεῖαι δὲ ἀκοαὶ μὲν παραγγέλμασιν, ὄψεις δὲ σημείοις, ἔργοις δὲ χεῖρες. Ὅθεν δρᾶσαι μὲν ἀεὶ ταχεῖς, βραδύτατοι δὲ παθεῖν εἰσιν.

Οὐδέ ἐστιν, ὅπου συστάντες ἢ πλήθους ἡττήθησαν ἢ στρατηγημάτων ἢ δυςχωρίας, ἀλλ' οὐδὲ τύχης· καὶ γὰρ ταύτης αὐτοῖς τὸ κρατεῖν βεβαιότερον. Οἷς οὖν βουλὴ μὲν ἄρχει πράξεως, ἕπεται δὲ τοῖς βεβουλευμένοις στρατὸς οὕτω δραστήριος, τί θαυμαστὸν, εἰ πρὸς ἕω μὲν Εὐφράτης, ὠκεανὸς δὲ πρὸς ἑσπέραν, μεσημβρινὸν δὲ Λιβύης τὸ πιότατον, καὶ πρὸς ἄρκτον Ἴστρος τε καὶ Ῥῆνος τῆς ἡγεμονίας ὅροι; Δεόντως γὰρ ἄν τις εἴποι τὸ κτῆμα τῶν κτησαμένων ἔλασσον.

8. *Ταῦτα μὲν οὖν διεξῆλθον, οὐ Ῥωμαίους ἐπαινέσαι προαιρούμενος τοσοῦτον, ὅσον εἴς τε παραμυθίαν τῶν κεχειρωμένων, καὶ εἰς ἀποτροπὴν* 229 *τῶν νεωτεριζόντων. Εἴη δ' ἂν τοῖς ἀγνοοῦσι τῶν φιλοκαλούντων καὶ πρὸς ἐμπειρίαν ἡ ἀγωγὴ τῆς Ῥωμαίων στρατιᾶς. Ἐπάνειμι δὲ, ὅθεν ἐπὶ ταῦτα ἐξέβην.*

CAP. VI. 1. Οὐεσπασιανὸς μὲν ἅμα τῷ παιδὶ Τίτῳ διατρίβων τέως ἐν Πτολεμαΐδι, συνέτασσε τὰς δυνάμεις. Ὁ δὲ τὴν Γαλιλαίαν κατατρέχων Πλάκιδος ἐπεὶ πολὺ μὲν πλῆθος ἀνῃρήκει τῶν καταλαμβανομένων, — τοῦτο δὲ ἦν τὰ ἀσθενέστερον Γαλιλαίων καὶ ταῖς ψυχαῖς ἐναποκάμνον, — ὁρῶν δὲ τὸ μάχιμον ἀεὶ συμφεῦγον εἰς τὰς ὑπὸ Ἰωσήπου τειχισθείσας πόλεις, ὥρμησεν ἐπὶ τὴν ὀχυρωτάτην αὐτῶν Ἰωτάπατα, οἰόμενος ἐξ ἐφόδου μὲν αἱρήσειν ῥᾳδίως, μέγα δὲ κλέος ἑαυτῷ παρὰ τοῖς ἡγεμόσι, καὶ ἐκείνοις ὄφελος εἰς τὰ λοιπὰ παρέξειν· προςχωρήσειν γὰρ δέει τὰς ἄλλας πόλεις, τῆς καρτερωτάτης ἐχομένης. Πολύ γε μὴν διήμαρτε τῆς ἐλπίδος. Ἐπιόντα γὰρ αὐτὸν οἱ Ἰωταπατηνοὶ προαισθόμενοι, πρὸ τῆς πόλεως ἐκδέχονται· καὶ τοῖς Ῥωμαίοις συῤῥαγέντες ἀδοκήτοις, πολλοὶ καὶ πρὸς μάχην ἕτοιμοι πρόθυμοί τε, ὡς ἂν ὑπὲρ κινδυνευούσης πατρίδος καὶ γυναικῶν καὶ τέκνων, τρέπονται

ταχέως, καὶ πολλοὺς μὲν τιτρώσκουσι τῶν Ῥωμαίων, ἑπτὰ δὲ ἀναιροῦσι, διὰ τὸ μήτε ἄτακτον αὐτῶν τὴν ὑποχώρησιν γενέσθαι, καὶ τὰς πληγὰς ἐπιπολαίους, πεφραγμένων πάντοθεν τῶν σωμάτων, τούς τε Ἰουδαίους πόῤῥωθεν βάλλειν πλέον ἢ συμπλέκεσθαι θαῤῥεῖν, γυμνῆτας ὁπλίταις. Ἔπεσον δὲ καὶ τῶν Ἰουδαίων τρεῖς ἄνδρες, καὶ ἐτρώθησαν ὀλίγοι. Ὁ Πλάκιδος μὲν οὖν, τῆς ἐπὶ τὴν πόλιν ὁρμῆς ἀτονώτερος εὑρεθεὶς, φεύγει.

2. Οὐεσπασιανὸς δὲ ὡρμημένος αὐτὸς ἐμβάλλειν εἰς τὴν Γαλιλαίαν, ἐξελαύνει τῆς Πτολεμαΐδος, διατάξας τὴν στρατιὰν ὁδεύειν, καθὰ Ῥωμαίοις ἔθος. Τοὺς μέν γε ψιλοὺς τῶν ἐπικούρων καὶ τοξότας προάγειν ἐκέλευσεν, ὡς ἀνακόπτοιεν τὰς ἐξαπιναίους τῶν πολεμίων ἐπιδρομὰς, καὶ διερευνῷεν τὰς ὑπόπτους καὶ λοχᾶσθαι δυναμένας ὕλας· οἷς εἵπετο καὶ Ῥωμαίων ὁπλιτικὴ μοῖρα, πεζοί τε καὶ ἱππεῖς. Τούτοις ἀφ᾽ ἑκάστης ἑκατονταρχίας ἠκολούθουν δέκα, τήν τε αὑτῶν σκευὴν καὶ τὰ μέτρα τῆς παρεμβολῆς φέροντες. Καὶ μετ᾽ αὐτοὺς ὁδοποιοὶ, τά τε σκολιὰ τῆς λεωφόρου κατευθύνειν καὶ χθαμαλοῦν τὰ δύσβατα, καὶ τὰς ἐμποδίους ὕλας προανακόπτειν, ὡς μὴ ταλαιπωροῖτο δυσποροῦν τὸ στράτευμα. Κατόπιν δὲ τούτων τάς τε ἰδίας, καὶ τὰς
230 τῶν ὑπ᾽ αὐτῷ ἡγεμόνων ἔταξεν ἀποσκευὰς, καὶ συχνοὺς ἐπὶ τούτοις πρὸς ἀσφάλειαν τῶν ἱππέων. Μεθ᾽ οὓς αὐτὸς ἐξήλαυνε, τούς τε ἐπιλέκτους τῶν πεζῶν καὶ ἱππέων καὶ τοὺς λογχοφόρους ἔχων. Εἵπετο δὲ αὐτῷ τὸ ἴδιον τοῦ τάγματος ἱππικόν· ἴδιοι γὰρ ἑκάστου τάγματος εἴκοσι πρὸς τοῖς ἑκατὸν ἱππεῖς. Τούτοις δὲ ἠκολούθουν οἱ τὰς ἑλεπόλεις φέροντες ὀρεῖς, καὶ τὰ λοιπὰ μηχανήματα. Μετὰ τούτους ἡγεμόνες τε καὶ σπειρῶν ἔπαρχοι σὺν χιλιάρχοις, ἐπιλέκτους περὶ σφᾶς στρατιώτας ἔχοντες· ἔπειτα αἱ σημαῖαι περιΐσχουσαι τὸν ἀετὸν, ὃς παντὸς ἄρχει Ῥωμαίοις τάγματος, βασιλεύς τε οἰωνῶν

ἁπάντων, καὶ ἀλκιμώτατος ἄν· ὃ δὴ καὶ τῆς ἡγεμονίας τεκμήριον αὐταῖς, καὶ κληδὼν, ἐφ' οὓς ἂν ἴωσι, τοῦ κρατήσειν δοκεῖ. Τοῖς ἱεροῖς δὲ ἠκολούθουν οἱ σαλπιγκταὶ, καὶ κατόπιν αὐτῶν ἡ φάλαγξ τὸ στῖφος εἰς ἓξ πλατύνασα. Τούτοις παρείπετό τις ἑκατοντάρχης ἐξ ἔθους τὴν τάξιν ἐπισκοπούμενος. Τὸ δὲ οἰκετικὸν ἑκάστου τάγματος ἅπαν τοῖς πεζοῖς εἵπετο, τὰς ἀποσκευὰς τῶν στρατιωτῶν ἐπὶ τοῖς ὀρεῦσι καὶ τοῖς ὑποζυγίοις ἄγοντες· κατόπιν δὲ πάντων τῶν ταγμάτων ὁ μίσθιος ὄχλος, οἷς οὐραγοὶ πρὸς ἀσφάλειαν ἠκολούθουν, πεζοί τε καὶ ὁπλῖται καὶ τῶν ἱππέων πολλοί.

3. Οὕτως ὁδεύσας Οὐεσπασιανὸς μετὰ τῆς δυνάμεως πρὸς τοὺς ὅρους ἀφικνεῖται τῆς Γαλιλαίας, ἔνθα καταστρατοπεδευσάμενος ὡρμημένους εἰς πόλεμον τοὺς στρατιώτας κατεῖχεν, ἐπιδεικνύμενός τε τὴν στρατιὰν εἰς κατάπληξιν τοῖς πολεμίοις, καὶ μετανοίας διδοὺς καιρὸν, εἰ πρὸ μάχης μεταβάλλοιντο. Ἅμα δὲ καὶ πρὸς πολιορκίαν τῶν ἐρυμάτων ἐξηρτύετο. Μετάνοιαν μὲν οὖν τῆς ἀποστάσεως ὀφθεὶς ὁ στρατηγὸς πολλοῖς ἐνειργάσατο, κατάπληξιν δὲ πᾶσιν· οἱ γὰρ περὶ τὸν Ἰώσηπον ἐστρατοπεδευκότες, οὐκ ἄποθεν τῆς Σεπφώρεως παρὰ πόλιν Γαρὶν καλουμένην, ἐπεὶ πλησιάζοντα τὸν πόλεμον ἤκουσαν, ὅσον τε οὔπω τοὺς Ῥωμαίους συμμίξοντας σφίσιν, οὐ μόνον πρὸ μάχης, ἀλλὰ καὶ πρὶν ἰδεῖν τοὺς ἐχθροὺς, διασκίδνανται φυγῇ. Καταλείπεται δὲ ὁ Ἰώσηπος μετ' ὀλίγων, καὶ κατιδὼν, ὡς οὔτε δέχεσθαι τοὺς πολεμίους ἀρκετὴν ἔχει δύναμιν, καὶ πεπτωκότα τὰ φρονήματα τῶν Ἰουδαίων, ἄσμενοί τε ἂν, εἰ πιστεύοιντο, χωροῖεν οἱ πλείους ἐπὶ σπονδὰς, ἐδεδίει μὲν ἤδη περὶ παντὸς τοῦ πολέμου, τότε δὲ ὡς πορρωτάτω χωρίζεσθαι τῶν κινδύνων ἔκρινεν. Ἀναλαβὼν δὲ τοὺς συμμείναντας εἰς Τιβεριάδα καταφεύγει.

CAP. VII. 1. Οὐεσπασιανὸς δὲ τῇ πόλει τῶν Γαδαρέων ἐπελθὼν, αἱρεῖ τε κατὰ πρώτην ἔφοδον αὐτὴν, μαχίμου πλήθους ἔρημον καταλαβών. Καὶ παρελθὼν εἴσω, πάντας ἡβηδὸν ἀναιρεῖ, μηδεμιᾶς
231 τῶν Ῥωμαίων ἡλικίας ἔλεον ποιουμένων, μίσει τε πρὸς τὸ ἔθνος, καὶ μνήμῃ τῆς κατὰ τὸν Κέστιον αὐτῶν παρανομίας. Ἐμπίμπρησι δὲ οὐ μόνον αὐτὴν τὴν πόλιν, ἀλλὰ καὶ τὰς πέριξ κώμας πάσας τε καὶ πολίχνας, ἃς μὲν παντελῶς ἐκλελειμμένας, ἔστι δὲ ἃς αὐτὸς ἐξανδραποδιζόμενος.

2. Ὁ δὲ Ἰώσηπος ἣν πρὸς ἀσφάλειαν εἵλετο πόλιν, αὐτὸς ἐνέπλησε δέους καταφυγών. Οἱ δὲ ἀπὸ τῆς Τιβεριάδος οὐκ ἄν, εἰ μὴ πρὸς ἅπαν ἀπεγνώκει τὸν πόλεμον, τραπῆναί ποτε αὐτὸν ᾤοντο· καὶ κατὰ τοῦτό γε οὐ διημάρτανον αὐτοῦ τῆς γνώμης. Ἑώρα μὲν γὰρ, οἷ ῥέψειε τὰ Ἰουδαίων τέλους, καὶ μίαν αὐτῶν ᾔδει σωτηρίαν, εἰ μεταβάλλοιντο. Αὐτὸς δὲ, καίπερ συγγνωσθήσεσθαι παρὰ Ῥωμαίοις προσδοκῶν, ὅμως τεθνάναι μᾶλλον εἵλετο πολλάκις, ἢ καταπροδοὺς τὴν πατρίδα, καὶ τὴν ἐμπιστευθεῖσαν αὐτῷ στρατηγίαν ὑβρίσας, εὐτυχεῖν παρ᾽ οἷς πολεμήσων ἐπέμφθη. Γράφειν οὖν τοῖς ἐν τέλει τῶν Ἱεροσολύμων διέγνω μετὰ ἀκριβείας τὰ πράγματα, ὡς μήτε ἐπὶ μεῖζον ἐξάρας τὴν πολεμίων ἰσχὺν αὖθις εἰς δειλίαν κακίζοιτο, μήτε ἐνδεέστερον ἀπαγγείλας, καὶ ἂν μετανοήσαντας ἴσως θρασύνειεν, ἵνα τε ἢ σπονδὰς αἱρούμενοι ταχέως ἀντιγράψωσιν, ἢ πολεμεῖν ἐγνωκότες, ἀξιόμαχον πρὸς Ῥωμαίους πέμψωσιν αὐτῷ δύναμιν. Ὁ μὲν οὖν ταῦτα ἐπιστείλας, πέμπει διὰ τάχους ἐπὶ Ἱεροσολύμων τοὺς τὰ γράμματα κομίζοντας.

3. Οὐεσπασιανὸς δὲ ὁρμώμενος ἐξαιρεῖν τὴν Ἰωτάπατα, — πέπυστο γὰρ εἰς αὐτὴν πλείστους τῶν πολεμίων συμπεφευγέναι, καὶ ἄλλως ὁρμητήριον ἰσχυρὸν οὖσαν αὐτῶν, — πέμπει πεζούς τε καὶ ἱπ-

πεῖς προεξομαλιοῦντας τὴν ὁδὸν, ὀρεινὴν ὑπάρχουσαν, καὶ πετρώδη, δύςβατόν τε καὶ πεζοῖς, ἱππεῦσι δὲ ἀμήχανον. Οἱ μὲν οὖν τέσσαρσιν ἡμέραις ἐξειργάσαντο, καὶ πλατεῖαν ἤνοιξαν τῇ στρατιᾷ λεωφόρον. Τῇ πέμπτῃ δὲ ὁ Ἰώσηπος, αὕτη δὲ ἦν Ἀρτεμισίου μηνὸς εἰκοστὴ πρώτη, φθάνει παρελθὼν εἰς τὴν Ἰωτάπατα ἐκ τῆς Τιβεριάδος, καὶ πεπτωκότα τοῖς Ἰουδαίοις ἀνίστησι τὰ φρονήματα. Οὐεσπασιανῷ δέ τις εὐαγγελίζεται τὴν μετάβασιν τοῦ ἀνδρὸς αὐτόμολος, καὶ κατήπειγεν ἐπὶ τὴν πόλιν, ὡς μετ᾽ ἐκείνης αἱρήσοντα πᾶσαν Ἰουδαίαν, εἰ λάβοι τὸν Ἰώσηπον ὑποχείριον. Ὁ δὲ ἁρπάσας ὥςπερ μέγιστον εὐτύχημα τὴν ἀγγελίαν, καὶ προνοίᾳ θεοῦ τὸν συνετώτατον εἶναι δοκοῦντα τῶν πολεμίων οἰόμενος εἰς αὐθαίρετον εἱρκτὴν παρελθεῖν, εὐθέως μὲν σὺν χιλίοις ἱππεῦσι πέμπει Πλάκιδον, καὶ δεκαδάρχην Ἐβούτιον, ἄνδρα τῶν ἐπισήμων κατὰ χεῖρα καὶ σύνεσιν, περικατασχεῖν κελεύσας τὴν πόλιν, ὡς μὴ λάθοι διαδρὰς ὁ Ἰώσηπος.

4. Αὐτὸς δὲ μετὰ μίαν ἡμέραν ἀναλαβὼν πᾶσαν τὴν δύναμιν εἵπετο, καὶ μέχρι δείλης ὁδεύσας πρὸς τὴν Ἰωτάπατα ἀφικνεῖται. Ἀναλαβὼν δὲ τὴν
στρατιὰν τὸ προςάρκτιον αὐτῆς μέρος πρός τινι λό- 232
φῳ στρατοπεδεύεται, διέχοντι σταδίους ἑπτὰ τῆς πόλεως, πειρώμενος ὡς μάλιστα τοῖς πολεμίοις εὐσύνοπτος εἶναι πρὸς ἔκπληξιν· ἣ καὶ παραχρῆμα τοσαύτη τοὺς Ἰουδαίους κατέσχεν, ὡς μηδένα τοῦ τείχους τολμῆσαι προελθεῖν. Ῥωμαῖοι δὲ εὐθὺς μὲν ἀπώκνησαν προςβαλεῖν δι᾽ ὅλης ὡδευκότες ἡμέρας· διπλῇ δὲ τῇ φάλαγγι κυκλοῦνται τὴν πόλιν, καὶ τρίτην ἔξωθεν περιΐστᾶσι τὴν ἵππον, πάσας ἀποφράσσοντες αὐτοῖς τὰς ἐξόδους. Τοῦτό γε ἐν ἀπογνώσει σωτηρίας παρώξυνε τοὺς Ἰουδαίους πρὸς τόλμαν· οὐδὲν γὰρ ἀνάγκης ἐν πολέμῳ μαχιμώτερον.

5. Γενομένης δὲ μεθ᾽ ἡμέραν προςβολῆς, τὸ μὲν πρῶτον Ἰουδαῖοι κατὰ χώραν μένοντες ἀντεῖχον

ἀντικρὺ τῶν Ῥωμαίων, ἐξεστρατοπεδευκότες πρὸ τοῦ τείχους. Ὡς δὲ Οὐεσπασιανὸς τούτοις μὲν τοὺς τοξότας καὶ σφενδονήτας καὶ πᾶν τὸ τῶν ἑκηβόλων πλῆθος ἐπιστήσας ἐπέτρεψε βάλλειν, αὐτὸς δὲ μετὰ τῶν πεζῶν εἰς τὸ πρόςαντες ἀνώθει, καθ᾽ ὃ τὸ τεῖχος ἦν εὐάλωτον, δείσας Ἰώσηπος περὶ τῇ πόλει προπηδᾷ, καὶ σὺν αὐτῷ πᾶν τὸ τῶν Ἰουδαίων πλῆθος. Συμπεσόντες δὲ τοῖς Ῥωμαίοις ἀθρόοι, τοῦ μὲν τείχους ἀνέστειλαν αὐτοὺς, πολλὰ δὲ ἐπεδείκνυντο χειρῶν ἔργα καὶ τόλμης. Οὐκ ἐλάσσω γε μὴν ὧν ἔδρων ἀντέπασχον· ὅσον γὰρ αὐτοὺς ἡ τῆς σωτηρίας ἀπόγνωσις, τοσοῦτον τοὺς Ῥωμαίους αἰδὼς παρεκρότει· καὶ τοὺς μὲν ἐμπειρία μετ᾽ ἀλκῆς, τοὺς δὲ θράσος ὥπλιζε τῷ θυμῷ στρατηγουμένους. Παραταξάμενοι δὲ δι᾽ ὅλης ἡμέρας νυκτὶ διαλύονται, τρώσαντες μὲν πλείστους Ῥωμαίων, τριςκαίδεκα δὲ ἀνελόντες ἄνδρας· αὐτῶν δὲ ἔπεσον μὲν δέκα καὶ ἑπτὰ, τραυματίαι δὲ ἐγένοντο ἑξακόσιοι.

6. Τῇ δὲ ὑστεραίᾳ πάλιν προςβάλλουσι τοῖς Ῥωμαίοις ἐπεξελθόντες, καὶ πολὺ καρτερώτερον ἀντιπαρετάξαντο. Θαῤῥαλεώτεροι μὲν ἐκ τοῦ παρὰ λόγον ἀντισχεῖν τῇ προτέρᾳ γεγενημένοι, χρώμενοι δὲ καὶ τοῖς Ῥωμαίοις μαχιμωτέροις· ὑπὸ γὰρ αἰδοῦς εἰς ὀργὴν ἐξεκαίοντο, τὸ μὴ ταχέως νικᾶν ἧτταν ἡγούμενοι. Καὶ μέχρι πέμπτης ἡμέρας προςβολαὶ μὲν ἐγίνοντο τῶν Ῥωμαίων ἀδιάλειπτοι, ἐκδρομαὶ δὲ τῶν Ἰωταπατηνῶν καὶ τειχομαχίαι καρτερώτεραι· καὶ οὔτε Ἰουδαῖοι τὴν τῶν πολεμίων ἰσχὺν κατωῤῥώδουν, οὔτε Ῥωμαῖοι πρὸς τὸ τῆς πόλεως δυςάλωτον ἀπέκαμνον.

7. Ἔστι δὲ Ἰωταπάτη πλὴν ὀλίγου πᾶσα κρημνὸς, ἐκ μὲν τῶν ἄλλων μερῶν πάντοθεν φάραγξιν ἀπείροις ἀπότομος, ὡς τῶν κατιδεῖν πειρωμένων τὰς ὄψεις προεξασθενεῖν τοῦ βάθους· ἀπὸ βορέου δὲ προςιτὴ μόνον, καθ᾽ ὃ λήγοντι τῷ ὄρει πλαγίῳ προςέκτισται. Καὶ τοῦτο δὲ ὁ Ἰώσηπος ἐμπεριει-

λήφει τειχίζων τὴν πόλιν, ὡς ἀκατάληπτον εἶναι πολεμίοις τὴν ὑπὲρ αὐτῆς ἀκρώρειαν. Κύκλωθεν δὲ ἄλλοις ὄρεσι καλυπτομένη, πρὶν εἰσαφίκοιτό τις αὐτὴν, παντελῶς ἀόρατος ἦν. Εἶχε μὲν οὕτως ὀχυρότητος Ἰωταπάτη.

8. Οὐεσπασιανὸς δὲ τῇ τε φύσει τοῦ χωρίου 233
καὶ ταῖς τόλμαις τῶν Ἰουδαίων ἀντιφιλονεικῶν, ἔγνω καρτερῶς ἅπτεσθαι τῆς πολιορκίας· καὶ προσκαλεσάμενος τοὺς ὑπ' αὐτὸν ἡγεμόνας, ἐβουλεύετο περὶ τῆς προσβολῆς. Δόξαν δὲ χῶσαι τὸ προσιτὸν τοῦ τείχους, ἐπὶ συγκομιδὴν ὕλης ἐκπέμπει πᾶν τὸ στράτευμα, καὶ κοπέντων τῶν περὶ τὴν πόλιν ὀρῶν, συναλισθείσης δὲ ἅμα τοῖς ξύλοις ἀπείρου χερμάδος, οἱ μὲν πρὸς ἀλεώραν τῶν ὕπερθεν ἀφιεμένων βελῶν, γέῤῥα διατείναντες ὑπὲρ χαρακωμάτων ἐχώννυον ὑπ' αὐτοῖς, οὐδὲν ἢ μικρὰ βλαπτόμενοι ταῖς ἀπὸ τοῦ τείχους βολαῖς· οἱ δὲ τοὺς πλησίον ὄχθους ἀνασπῶντες, γῆν αὐτοῖς ἀδιαλείπτως προσέφερον. Καὶ τριχῇ διῃρημένων, ἀργὸς ἦν οὐδείς. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι πέτρας τε μεγάλας ἀπὸ τῶν τειχῶν τοῖς σκεπάσμασιν αὐτῶν ἐπηφίεσαν, καὶ πᾶν εἶδος βελῶν· ἦν δὲ καὶ μὴ διϊκνουμένων πολὺς ὢν ὁ ψόφος καὶ φοβερὸς, ἐμπόδιον τοῖς ἐργαζομένοις.

9. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἐν κύκλῳ τὰς ἀφετηρίους μηχανὰς ἐπιστήσας, τὰ πάντα δὲ ἦν ἑκατὸν ἑξήκοντα ὄργανα, βάλλειν ἐκέλευσε τοὺς ἐπὶ τοῦ τείχους. Ὁμοῦ δὲ οἵ τε καταπέλται τὰς λόγχας ἀνεῤῥοίζουν, καὶ ταλανταῖοι λίθοι μέγεθος ἐκ τῶν πετροβόλων ἐβάλλοντο, πῦρ τε καὶ πλῆθος ἀθρόων οἰστῶν· ἅπερ οὐ μόνον τὸ τεῖχος ἀνεπίβατον τοῖς Ἰουδαίοις ἐποίησεν, ἀλλὰ καὶ τὴν ἐντὸς ὅσης ἀφικνεῖτο χώρας. Καὶ γὰρ τὸ τῶν Ἀράβων τοξοτῶν πλῆθος, ἀκοντισταί τε, καὶ σφενδονῆται πάντες, ἅμα τοῖς μηχανήμασιν ἔβαλλον. Οὐ μὴν εἰργόμενοι τῆς καθύπερθεν ἀμύνης ἠρέμουν· ἐκτρέχοντες γὰρ λῃστρικώτερον κατὰ λόχους, περιέσπων τε τῶν ἐργαζομένων

τὰς σκέπας, καὶ τοὺς γυμνουμένους ἔπαιον· καὶ καθ' ὃ παρείκοιεν ἐκεῖνοι διεῤῥίπτουν τὸ χῶμα, καὶ τὰ χαρακώματα σὺν τοῖς γέῤῥοις ἐνεπίμπρασαν, μέχρι συνεὶς Οὐεσπασιανὸς τὴν διαίρεσιν τῶν ἔργων αἰτίαν εἶναι τῆς βλάβης, τὰ γὰρ διαστήματα τοῖς Ἰουδαίοις προςβολῆς παρεῖχε τόπον, ἑνοῖ τὰς σκέπας· καὶ συναφθείσης ἅμα αὐτοῖς τῆς δυνάμεως, ἀνείρχθησαν αἱ τῶν Ἰουδαίων παραδύσεις.

10. Ἐγειρομένου δὲ τοῦ χώματος ἤδη, καὶ ταῖς ἐπάλξεσιν ὅσον οὔπω πλησιάζοντος, δεινὸν Ἰώσηπος νομίσας, εἰ μηδὲν ἀντιμηχανήσαιτο τῇ πόλει σωτήριον, συναθροίζει τέκτονας, καὶ τὸ τεῖχος ἐκέλευσεν ὑψοῦν. Τῶν δὲ ἀδύνατον εἶναι φαμένων οἰκοδομεῖν τοσούτοις βέλεσι βαλλομένους, σκέπην αὐτοῖς ἐπινοεῖ τοιάνδε. Δρυφάκτους πήξασθαι κελεύσας, ἐμπετάσαι τε βύρσας νεοδόρους βοῶν, ὡς ἂν δέχοιντο μὲν τοὺς ἀπὸ τῶν πετροβόλων λίθους κολπούμεναι, περιολισθαίνοι δὲ ἀπ' αὐτῶν τὰ λοιπὰ
234 βέλη, καὶ τὸ πῦρ ὑπὸ τῆς ἰκμάδος εἴργοιτο, προανίστησι τῶν τεκτόνων, ἐφ' οἷς ἀσφαλῶς ἐργαζόμενοι, δι' ἡμέρας τε καὶ νυκτὸς τὸ τεῖχος ἤγειραν, εἰς εἴκοσι πήχεις τὸ ὕψος· καὶ συχνοὺς μὲν πύργους ἐνῳκοδόμησαν αὐτῷ, καρτεράν τε ἔπαλξιν ἐφηρμόσαντο. Τοῦτο τοῖς Ῥωμαίοις, ἐντὸς ἤδη τῆς πόλεως οἰομένοις εἶναι, πολλὴν ἐποίησεν ἀθυμίαν, καὶ πρός τε τὴν ἐπίνοιαν τοῦ Ἰωσήπου, καὶ τὸ παράστημα τῶν ἐπὶ τῆς πόλεως κατεπλάγησαν.

11. Οὐεσπασιανὸς δὲ καὶ πρὸς τὸ πανοῦργον τοῦ στρατηγήματος, καὶ πρὸς τὰς τόλμας παρωξύνετο τῶν Ἰωταπατηνῶν· πάλιν γὰρ ἀναθαρσήσαντες ἐπὶ τῷ τειχισμῷ τοῖς Ῥωμαίοις ἐπεξέθεον, καὶ καθ' ἡμέραν ἐγίνοντο συμπλοκαὶ κατὰ λόχους, ἐπίνοιά τε λῃστρικὴ πᾶσα, καὶ τῶν προςτυχόντων ἁρπαγαὶ, καὶ τῶν ἄλλων ἔργων πυρπολήσεις, ἕως Οὐεσπασιανὸς, ἀναπαύσας τὴν στρατιὰν μάχης, διέγνω προςκαθεζόμενος σπάνει τῶν ἐπιτηδείων αἱρεῖν

τὴν πόλιν. Ἢ γὰρ ἀναγκαζομένους ἀπορίᾳ τῶν ἀναγκαίων ἱκετεύσειν αὐτὸν, ἢ μέχρι παντὸς ἐπαυθαδισαμένους διαφθαρήσεσθαι λιμῷ. Πολύ τε ῥᾴοσιν αὐτοῖς χρήσεσθαι ἠξίου κατὰ τὴν μάχην, εἰ διαλιπὼν αὖθις ἐκτετρυχωμένοις ἐπιπέσοι. Φρουρεῖν δὲ πάσας αὐτῶν ἐκέλευσε τὰς ἐξόδους.

12. Τοῖς δὲ σίτου μὲν ἦν πλῆθος ἔνδον, καὶ τῶν ἄλλων πλὴν ἁλὸς ἁπάντων· ἔνδεια δὲ ὕδατος, ὡς ἂν πηγῆς μὲν οὐκ οὔσης κατὰ τὴν πόλιν, τῷ ὀμβρίῳ διαρκουμένων τῶν ἐν αὐτῇ· σπάνιον δὲ, εἴ ποτε τὸ κλίμα τοῦτο θέρους ὕεται. Καὶ κατὰ ταύτην τὴν ὥραν πολιορκουμένων, ἀθυμία δεινὴ πρὸς τὴν τοῦ δίψους ἐπίνοιαν ἦν· ἤσχαλλόν τε, ὡς ἤδη ἐπιλελοιπότος καθάπαν ὕδατος· ὁ γὰρ Ἰώσηπος τήν τε πόλιν ὁρῶν τῶν ἄλλων ἐπιτηδείων εὔπορον, καὶ τὰ φρονήματα γενναῖα τῶν ἀνδρῶν, βουλόμενός τε Ῥωμαίοις παρ᾽ ἐλπίδα ἐκτεῖναι τὴν πολιορκίαν, μέτρῳ τὸ ποτὸν αὐτοῖς διένεμεν. Οἱ δὲ τὸ ταμιεύεσθαι χαλεπώτερον ἐνδείας ὑπελάμβανον, καὶ τὸ μὴ αὐτεξούσιον αὐτῶν πλέον ἐκίνει τὴν ὄρεξιν, καὶ καθάπερ εἰς ἔσχατον ἤδη δίψους προήκοντες ἀπέκαμνον. Διακείμενοι δὲ οὕτως οὐκ ἐλάνθανον τοὺς Ῥωμαίους· ἀπὸ γὰρ τοῦ κατάντους ἑώρων αὐτοὺς ὑπὲρ τὸ τεῖχος ἐφ᾽ ἕνα συῤῥέοντας τόπον, καὶ μετρουμένους τὸ ὕδωρ, ἐφ᾽ ὃν καὶ τοῖς ὀξυβελέσιν ἐξικνούμενοι πολλοὺς ἀνῄρουν.

13. Καὶ Οὐεσπασιανὸς μὲν, οὐκ εἰς μακρὰν τῶν ἐκδοχείων κενωθέντων, ἤλπιζεν ὑπὸ τῆς ἀνάγκης αὐτῷ παραδοθήσεσθαι τὴν πόλιν. Ὁ δὲ Ἰώσηπος κλάσαι μὲν τὴν ἐλπίδα ταύτην αὐτῷ προαιρούμενος, ἐμβρέξαι κελεύει πλείστους τὰ ἱμάτια, καὶ κατακρεμάσαι περὶ τὰς ἐπάλξεις, ὥστε περιῤῥεῖσθαι πᾶν ἐξαπίνης τὸ τεῖχος. Πρὸς τοῦτο ἀθυμία τῶν Ῥωμαίων καὶ κατάπληξις ἦν, θεασαμένων εἰς χλεύην τοσοῦτον παραναλίσκοντας ὕδατος, οὓς οὐδὲ ποτὸν ἔχειν ὑπελάμβανον· ὥστε καὶ τὸν στρατηγὸν, ἀπο-

γνόντα τὴν δι' ἐνδείας ἅλωσιν, τρέπεσθαι πάλιν πρὸς
235 ὅπλα καὶ βίαν· ὃ δὴ τοῖς Ἰουδαίοις δι' ἐπιθυμίας ἦν· ἀπεγνωκότες γὰρ ἑαυτοὺς καὶ τὴν πόλιν, πρὸ λιμοῦ καὶ δίψης τὸν ἐν πολέμῳ θάνατον ᾑροῦντο.

14. Ὁ μέντοι γε Ἰώσηπος πρὸς τῷδε τῷ στρατηγήματι καὶ ἕτερον ἐπενόησεν εἰς περιουσίαν αὐτῷ. Διά τινος χαράδρας δυςβάτου, καὶ διὰ τοῦτο ὑπὸ τῶν φυλάκων ἀμελουμένης, κατὰ τὰ πρὸς δύσιν μέρη τῆς φάραγγος ἐκπέμπων τινὰς, γράμματα πρὸς οὓς ἐβούλετο τῶν ἔξω Ἰουδαίων διεπέμψατο καὶ παρ' αὐτῶν ἐλάμβανε, παντός τε ἐπιτηδείου τῶν ἐπιλελοιπότων ἀνὰ τὴν πόλιν εὐπόρησεν, ἕρπειν τὰ πολλὰ παρὰ τὰς φυλακὰς κελεύσας τοῖς εἰςιοῦσι, καὶ τὰ νῶτα καλύπτειν νάκεσιν, ὡς, εἰ καὶ κατίδοι τις αὐτοὺς νύκτωρ, φαντασίαν παρέχοιεν κυνῶν· μέχρι συναισθόμενοι τὴν ἐπίνοιαν οἱ φρουροὶ, περιίσχουσι τὴν χαράδραν.

15. Καὶ τότε Ἰώσηπος μὲν τὴν πόλιν οὐκ εἰς μακρὰν ἀνθέξειν ὁρῶν, ἐν ἀπόρῳ δὲ τὴν ἑαυτοῦ σωτηρίαν, εἰ μένοι, δρασμὸν ἅμα τοῖς δυνατοῖς ἐβουλεύετο. Συναισθόμενον δὲ τὸ πλῆθος καὶ περιχυθὲν αὐτῷ κατηντιβόλουν, 'μὴ σφᾶς περιϊδεῖν ἐπ' αὐτῷ μόνῳ κειμένους· εἶναι γὰρ τῇ πόλει καὶ σωτηρίας μὲν ἐλπὶς, ὡς παραμένοντος αὐτοῦ, παντὸς ἀγωνισομένου δι' αὐτὸν προθύμως· κἂν ἁλῶσι δὲ, παραμυθία. Πρέπειν δὲ αὐτῷ μήτε φεύγειν τοὺς ἐχθροὺς, μήτε ἐγκαταλείψειν τοὺς φίλους, μηδὲ ἀποπηδᾶν, ὥςπερ χειμαζομένης νεὼς, εἰς ἣν ἐν γαλήνῃ παρῆλθεν· ἐπιβαπτίσειν γὰρ αὐτὸν τὴν πόλιν, μηδενὸς ἔτι τολμῶντος τοῖς πολεμίοις ἀνθίστασθαι, δι' ὃν ἀναθαῤῥοῖεν οἰχομένου.'

16. Ὁ δὲ Ἰώσηπος τὸ καθ' αὐτὸν ἀσφαλὲς ὑποστελλόμενος, 'ὑπὲρ αὐτῶν, ἔφασκε, ποιεῖσθαι τὴν ἔξοδον· μένων μὲν γὰρ οὔτ' ἂν ὠφελῆσαί τι μέγα σωζομένους, καὶ ἐὰν ἁλίσκωνται, συναπολέσθαι περισσός· ἐκδὺς δὲ τῆς πολιορκίας, ἔξωθεν ὠφελήσειν

αὐτοὺς μέγιστα. Τούς τε γὰρ ἐκ τῆς χώρας Γαλιλαίους συναθροίσειν ἢ τάχος, καὶ Ῥωμαίους ἑτέρῳ πολέμῳ τῆς πόλεως αὐτῶν ἀντιπερισπάσειν. Οὐχ ὁρᾶν δὲ, τί παρακαθεζόμενος αὐτοῖς χρήσιμος εἴη νῦν, πλὴν ἢ Ῥωμαίους παροξύνων μᾶλλον ἐπὶ τὴν πολιορκίαν, ὡς περὶ πλείστου ποιεῖσθαι λαβεῖν αὐτόν. Εἰ δὲ ἐκδράντα πύθοιντο, πολὺ τῆς ἐπὶ τὴν πόλιν ὁρμῆς ἀνήσειν.' Οὐκ ἔπειθέν τε αὐτοὺς, ἀλλὰ μᾶλλον ἐξέκαυσε τὸ πλῆθος αὐτῷ περιέχεσθαι. Παῖδες γοῦν καὶ γέροντες καὶ γύναια μετὰ νηπίων ὀδυρόμενα προσέπιπτον αὐτῷ, καὶ τοῖς ποσὶν ἐμπλεκόμενοι πάντες εἴχοντο, καὶ μετὰ κωκυτῶν κοινωνὸν σφίσι τῆς τύχης μένειν ἱκέτευον, οὐ φθόνῳ τῆς ἐκείνου σωτηρίας, ἔμοιγε δοκεῖν, ἀλλ᾽ ἐλπίδι τῆς αὐτῶν· οὐδὲν γὰρ ἠξίουν πείσεσθαι δεινὸν Ἰωσήπου μένοντος.

17. Ὁ δὲ πειθομένῳ μὲν ἱκετηρίαν ταῦτα νο- 236
μίσας, βιαζομένῳ δὲ φρουρὰν, πολὺ δὲ αὐτοῦ τὴν εἰς τὴν ἀπόλειψιν ὁρμὴν καὶ ὁ τῶν ὀδυρομένων ἔκλασεν οἶκτος, μένειν τε ἔγνω, καὶ τὴν κοινὴν τῆς πόλεως ἀπόγνωσιν ὁπλισάμενος, 'νῦν καιρὸς, εἰπὼν, ἄρχεσθαι μάχης, ὅτε ἐλπὶς οὐκ ἔστι σωτηρίας, καλὸν εὔκλειαν ἀντικαταλλαξάμενον τοῦ βίου, καὶ δράσαντά τι γενναῖον εἰς μνήμην ὀψιγόνων παίδων,' ἐπ' ἔργα τρέπεται. Καὶ προελθὼν μετὰ τῶν μαχιμωτάτων, διεσκίδνα τε τοὺς φρουροὺς, καὶ μέχρι τοῦ στρατοπέδου τῶν Ῥωμαίων κατέτρεχε, καὶ τὰς μὲν ἐπὶ τῶν χωμάτων δέῤῥεις, αἷς ὑπεσκήνουν, διέσπα, τοῖς δὲ ἔργοις ἐνέβαλλε πῦρ, τῇ τε ἑξῆς ὁμοίως, καὶ τῇ τρίτῃ, καὶ ἐπὶ συχνὰς ἡμέρας καὶ νύκτας πολεμῶν οὐκ ἔκαμνεν.

18. Οὐεσπασιανὸς δὲ, τῶν Ῥωμαίων κακουμένων ταῖς ἐκδρομαῖς, — τρέπεσθαί τε γὰρ ὑπὸ Ἰουδαίων ᾐδοῦντο, καὶ τραπέντων ἐπιδιώκειν βάρει τῶν ὅπλων ἦσαν βραδεῖς, οἵ τε Ἰουδαῖοι πρίν τι παθεῖν ἀεὶ δρῶντες ἀνέφευγον εἰς τὴν πόλιν, —

τοῖς μὲν ὁπλίταις τὰς ὁρμὰς αὐτῶν ἐκκλίνειν ἐκέλευσεν, καὶ ʽμὴ συμπλέκεσθαι θανατῶσιν ἀνθρώποις· οὐδὲν μὲν ἀλκιμώτερον εἶναι τῆς ἀπογνώσεως, περισβέννυσθαι δὲ αὐτοῖς τὰς ὁρμὰς, σκοπῶν ἀποῤῥυμένας, ὥςπερ ὕλης τὸ πῦρ· προςήκειν γε μὴν καὶ Ῥωμαίοις μετὰ ἀσφαλείας καὶ τὸ νικᾷν, ὡς ἂν οὐκ ἐξ ἀνάγκης πολεμοῦσιν, ἀλλὰ προςχρωμένοις.ʼ Τοῖς δὲ τῶν Ἀράβων τοξόταις, καὶ τοῖς ἀπὸ Συρίας σφενδονήταις, καὶ λιθοβόλοις, τὰ πολλὰ τοὺς Ἰουδαίους ἀνέστελλεν· ἠρέμει δὲ οὐδὲ τῶν ἀφετηρίων ὀργάνων τὸ πλῆθος. Οἱ δὲ τούτοις μὲν εἶκον κακούμενοι· τῶν δὲ πόῤῥω βαλλομένων ἐνδοτέρω γενόμενοι, προςέκειντο τοῖς Ῥωμαίοις χαλεποὶ, καὶ ψυχῆς καὶ σώματος ἀφειδοῦντες ἐμάχοντο, ἐκ διαδοχῆς ἑκάτεροι τὸ κεκμηκὸς ἑαυτῶν ἀναλαμβάνοντες.

19. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἡγούμενος τῷ μήκει τοῦ χρόνου καὶ ταῖς ἐκδρομαῖς ἀντιπολιορκεῖσθαι, τῶν χωμάτων ἤδη τοῖς τείχεσι πελαζόντων, προςάγειν ἔγγω τὸν κριόν. Ὁ δέ ἐστιν ὑπερμεγέθης δοκὸς, ἱστῷ νηὸς παραπλήσιος· ἐστόμωται δὲ παχεῖ σιδήρῳ κατ' ἄκρον, εἰς κριοῦ προτομὴν, ἀφ' οὗ καὶ καλεῖται, τετυπωμένῳ. Καταιωρεῖται δὲ κάλοις μέσος, ὥςπερ ἀπὸ πλάστιγγος ἑτέρας δοκοῦ, σταυροῖς ἑκατέρωθεν ἑδραίοις ὑπεστηριγμένης. Ἀνωθούμενος δὲ ὑπὸ πλήθους ἀνδρῶν εἰς τὸ κατόπιν, τῶν αὐτῶν ἀθρόως πάλιν εἰς τὸ ἔμπροσθεν ἐπιβρισάντων, τύπτει τὰ τείχη τῷ προανέχοντι σιδήρῳ. Καὶ οὐδεὶς οὕτω καρτερὸς πύργος, ἢ περίβολος πλατὺς, ὃς, καὶ ἂν τὰς πρώτας πληγὰς ἐνέγκαι, κατισχύει τῆς
237 ἐπιμονῆς. Ἐπὶ ταύτην τὴν πεῖραν ὁ στρατηγὸς τῶν Ῥωμαίων μετέβαινε, βίᾳ τὴν πόλιν ἑλεῖν σπεύδων, ὡς τὸ προςκαθέζεσθαι βλαβερὸν ἦν, Ἰουδαίων οὐκ ἠρεμούντων. Οἱ μὲν οὖν τούς τε καταπέλτας, καὶ τὰ λοιπὰ τῶν ἀφετηρίων, ὡς ἐξικνοῖτο τῶν ἐπὶ τοῦ τείχους κωλύειν πειρωμένων, ἔγγιον

προςαγαγόντες ἔβαλλον· ὁμοίως δὲ συνήγγιζον οἱ τοξόται καὶ σφενδονῆται. Διὰ δὲ ταῦτα μηδενὸς τῶν περιβόλων ἐπιβῆναι τολμῶντος, προςῆγόν ἕτεροι τὸν κριὸν, γέῤῥοις τε διηνεκέσι καὶ καθύπερθε πεφραγμένον δέῤῥει, πρός τε αὐτῶν καὶ τοῦ μηχανήματος ἀσφάλειαν. Καὶ κατὰ τὴν πρώτην πληγὴν διεσείσθη μὲν τὸ τεῖχος, κραυγὴ δὲ μεγίστη παρὰ τῶν ἔνδοθεν ἤρθη, καθάπερ ἑαλωκότων ἤδη.

20. Πολλάκις δὲ εἰς τὸν αὐτὸν παίοντας τόπον ὁ Ἰώσηπος ὁρῶν, καὶ ὅσον οὔπω καταῤῥιφθησόμενον τὸ τεῖχος, σοφίζεται πρὸς ὀλίγον τὴν βίαν τοῦ μηχανήματος. Σάκκους ἀχύρων πληρώσαντας ἐκέλευσε καθιμᾶν, καθ' ὃ φερόμενον ἀεὶ τὸν κριὸν ὁρῷεν, ὡς πλάζοιτό τε ἡ ἐμβολὴ, καὶ δεχόμενοι τὰς πληγὰς ἐκκενοῖεν τῇ χαυνότητι. Τοῦτο πλείστην διατριβὴν παρέσχε τοῖς Ῥωμαίοις, καθὸ μὲν τρέποιεν τὴν μηχανὴν, ἀντιπαραγόντων τοὺς σάκκους τῶν ὕπερθεν, ὑποβαλλόντων δὲ ταῖς ἐμβολαῖς, ὡς μηδὲν κατ' ἀντιτυπίαν βλάπτεσθαι τὸ τεῖχος, ἕως ἀντεπινοήσαντες κοντοὺς οἱ Ῥωμαῖοι μακροὺς, καὶ δρέπανα δήσαντες ἐπ' ἄκρων τοὺς σάκκους ἀπέτεμνον. Ἐνεργοῦ δὲ οὕτω τῆς ἑλεπόλεως γενομένης, καὶ τοῦ τείχους, νεοπαγὲς γὰρ ἦν, ἐνδιδόντος ἤδη, τὸ λοιπὸν ἐπὶ τὴν ἐκ πυρὸς ἄμυναν οἱ περὶ τὸν Ἰώσηπον ὥρμησαν· ἁψάμενοι δὲ ὅσον αὔης εἶχον ὕλης, τριχόθεν ἐπεκθέουσι, καὶ τά τε μηχανήματα, καὶ τὰ γέῤῥα, καὶ τὰ χώματα τῶν Ῥωμαίων ὑπεμπίπρασαν. Οἱ δὲ κακῶς ἐπεβοήθουν, πρός τε τὴν τόλμαν αὐτῶν καταπεπληγότες, καὶ ὑπὸ τῆς φλογὸς τὰς ἀμύνας φθανόμενοι· ξηρᾶς γὰρ ὕλης, πρὸς δὲ ἀσφάλτου τε καὶ πίσσης, ἔτι δὲ καὶ θείου, διῆπτατο τὸ πῦρ ἐπινοίας τάχιον, καὶ τὰ πολλῷ καμάτῳ πεπονημένα Ῥωμαίοις ἐπὶ μιᾶς ὥρας ἐνέμετο.

21. Ἔνθα καὶ ἀνήρ τις ἐξεφάνη Ἰουδαῖος, λόγου καὶ μνήμης ἄξιος. Σαμαίου μὲν παῖς ἦν, Ἐλεάζαρος δ' ἐκαλεῖτο, Σαὰβ δὲ πατρὶς αὐτῷ τῆς Γα-

λιλαίας. Ὑπερμεγέθη πέτραν ἀράμενος, ἀφίησιν ἀπὸ τοῦ τείχους ἐπὶ τὴν ἑλέπολιν, μετὰ τοσαύτης βίας, ὥςτε ἀποῤῥάξαι τὴν κεφαλὴν τοῦ μηχανήματος, ἣν δὴ καὶ καταπηδήσας ἐκ μέσων αἴρεται τῶν πολεμίων, καὶ μετὰ πολλῆς ἀδείας ἐπὶ τὸ τεῖχος ἔφερε. Σκοπὸς δὲ πᾶσι τοῖς ἐχθροῖς γενόμενος, καὶ γυμνῷ τῷ σώματι τὰς πληγὰς δεξάμενος, πέντε μὲν διαπείρεται βέλεσι. Πρὸς οὐδὲν δὲ τούτων ἐπιστρα-
238 φεὶς, ὅτε τὸ τεῖχος ἀνέβη, καὶ περίοπτος πᾶσι τῆς εὐτολμίας ἔστη, τότε ἰλυσπώμενος ὑπὸ τῶν τραυμάτων μετὰ τοῦ κριοῦ κατέπεσεν. Ἄριστοι μετὰ τοῦτον ἐφάνησαν ἀδελφοὶ δύο Νετίρας καὶ Φίλιππος, ἀπὸ Ῥουμᾶς κώμης, Γαλιλαῖοι καὶ αὐτοί. Προπηδῶσι μὲν εἰς τοὺς ἀπὸ τοῦ δεκάτου τάγματος, οὕτω δὲ ῥοίζῳ καὶ βίᾳ τοῖς Ῥωμαίοις συνέπεσον, ὡς διαῤῥῆξαί τε τὰς τάξεις, καὶ τρέψασθαι καθ᾽ οὓς ἂν ἐφορμήσειαν ἅπαντας.

22. Μετὰ τούτους ὅ τε Ἰώσηπος καὶ τὸ λοιπὸν πλῆθος, ἀράμενοι πολὺ πῦρ, τὰ μηχανήματα καὶ τὰς ὑποδύσεις ἅμα τοῖς ἔργοις ὑφῆψαν τοῦ τε πέμπτου καὶ τοῦ δεκάτου τραπέντος τάγματος, οἱ λοιποὶ φθάσαντες καὶ τὰ ὄργανα καὶ πᾶσαν ὕλην κατέχωσαν. Περὶ δὲ δείλην ἀναστήσαντες, προςῆγον τὸν κριὸν πάλιν, ᾗ προπεπονήκει τυπτόμενον τὸ τεῖχος. Ἔνθα τις τῶν ἀμυνομένων ἀπ᾽ αὐτοῦ βάλλει τὸν Οὐεσπασιανὸν βέλει κατὰ τὸν ταρσὸν τοῦ ποδὸς, καὶ τιτρώσκει μὲν ἐπιπολαίως, προεκλύσαντος τὸ βληθὲν τοῦ διαστήματος. Μέγιστον δὲ θόρυβον ἐνεποίησε τοῖς Ῥωμαίοις· πρὸς γὰρ τὸ αἷμα ταραχθέντων τῶν πλησίον, φήμη διὰ παντὸς ἐμπίπτει ἐπὶ τῇ πληγῇ τοῦ στρατηγοῦ, καὶ τῆς πολιορκίας οἱ πλείους ἀφέμενοι μετ᾽ ἐκπλήξεως καὶ δέους ἐπὶ τὸν στρατηγὸν συνέθεον. Πρὸ δὲ πάντων Τίτος, δείσας περὶ τῷ πατρὶ, παρῆν ὡς τὸ πλῆθος καὶ τῇ περὶ τὸν ἡγούμενον εὐνοίᾳ, καὶ τῇ τοῦ παιδὸς ἀγωνίᾳ συγχυθῆναι. Ῥᾷστα μέντοι τόν τε

υἱὸν ὁ πατὴρ δεδιώκα, καὶ τὴν στρατιὰν ἔπαυσε τοῦ θορύβου· τῶν γὰρ ἀλγηδόνων ἐπάνω γενόμενος, καὶ πᾶσι τοῖς ἐπτοημένοις δι' αὐτὸν ὀφθῆναι σπουδάσας, χαλεπώτερον Ἰουδαίοις ἐπήγειρε τὸν πόλεμον. Ἕκαστος γὰρ, ὡς τιμωρὸς τοῦ στρατηγοῦ, προκινδυνεύειν ἤθελε, καὶ βοῇ παρακροτοῦντες ἀλλήλους ἐπὶ τὸ τεῖχος ὥρμων.

23. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰώσηπον, καίπερ ἐπ' ἀλλήλοις πίπτοντες ὑπὸ τῶν καταπελτικῶν καὶ τῶν πετροβόλων, ὅμως οὐκ ἀπετρέποντο τοῦ τείχους, ἀλλὰ πυρὶ καὶ σιδήρῳ καὶ πέτραις τοὺς ἐπὶ τὰ γέῤῥα τὸν κριὸν ἐπιβρίθοντας ἔβαλλον. Καὶ ἤνυον μὲν οὐδὲν ἢ μικρὸν, αὐτοὶ δ' ἀδιαλείπτως ἔπιπτον, ὑπὸ μὴ βλεπομένων καθορώμενοι· αὐτοί τε γὰρ ὑπὸ τῆς σφετέρας περιλαμπόμενοι φλογὸς, σκοπὸς ἦσαν τοῖς πολεμίοις εὐσύνοπτος, ὥςπερ ἐν ἡμέρᾳ, καὶ τῶν ὀργάνων πόῤῥωθεν μὴ βλεπομένων, δυςφύλακτον ἦν τὸ βαλλόμενον. Ἥ τε γὰρ τῶν ὀξυβελῶν καὶ καταπελτῶν βία πολλοὺς ἅμα διήλαυνε· καὶ τῶν ὑπὸ τῆς μηχανῆς ἀφιεμένων πετρῶν ὁ ῥοῖζος ἐπάλξεις τε ἀπέσυρε, καὶ γωνίας ἀπέθρυπτε πύργων. Ἀνδρῶν μὲν γὰρ οὐκ ἦν οὕτως ἰσχυρὸν στίφος, ὃ μὴ μέχρις ἐσχάτης στρώννυται φάλαγγος, βίᾳ τε καὶ μεγέθει τοῦ λίθου. Μάθοι δ' ἄν τις τὴν τοῦ μηχανήματος ἀλκὴν, ἐκ τῶν ἐπὶ τῆςδε τῆς νυκτὸς γενομένων. Πληγεὶς γάρ τις ἀπ' αὐτοῦ τῶν περὶ τὸν Ἰώσηπον ἑστώτων ἀνὰ τὸ τεῖχος, ἀπαράσσεται τὴν κεφαλὴν ὑπὸ τῆς πέτρας, καὶ τὸ κρανίον ἀπὸ τριῶν ἐσφενδονήθη σταδίων· γυναικός τε μεθ' ἡμέραν ἐγκύμονος πληγείσης τὴν γαστέρα, προήει δὲ 239
νέον ἐξ οἰκίας, ἐξέσεισεν ἐφ' ἡμιστάδιον τὸ βρέφος· τοσαύτη ἦν τοῦ λιθοβόλου βία. Τῶν μὲν ὀργάνων φοβερώτερος ὁ ῥοῖζος, τῶν δὲ βαλλομένων ἦν ὁ ψόφος. Ἐπάλληλοι δ' ἐκτύπουν οἱ νεκροὶ κατὰ του τείχους ῥιπτόμενοι, καὶ δεινὴ μὲν ἔνδοθεν κραυγὴ γυναικῶν ἠγείρετο, συνήχουν δὲ ἔξωθεν οἰμωγαὶ

φονευομένων. Αἵματι δ' ἐῤῥεῖτο πᾶς ὁ πρὸ τῆς μάχης περίβολος, καὶ προςβατὸν ὑπὸ πτωμάτων τὸ τεῖχος ἐγίνετο. Φοβερωτέραν δὲ ἐποίουν τὴν βοὴν περιηχοῦντα τὰ ὄρη· καὶ οὐδὲν ἐπ' ἐκείνης τῆς νυκτὸς, οὔτε εἰς ἀκοῆς οὔτε εἰς ὄψεως κατάπληξιν ἀπελείφθη. Πλεῖστοι μέν γε τῶν ἐπὶ τῆς Ἰωταπάτης ἀγωνιζόμενοι γενναίως ἔπεσον, πλεῖστοι δ' ἐγένοντο τραυματίαι, καὶ μόλις περὶ τὴν ἑωθινὴν φυλακὴν ἐνδίδωσι τοῖς μηχανήμασι τὸ τεῖχος, ἀδιαλείπτως τυπτόμενον· οἱ δὲ φραξάμενοι τὰ σώματα τοῖς ὅπλοις, τὸ καταῤῥιφθὲν ἀντωχύρωσαν, πρὶν βληθῆναι τὰς ἐπιβατηρίους ὑπὸ τῶν Ῥωμαίων μηχανάς.

24. Ὑπὸ δὲ τὴν ἕω Οὐεσπασιανὸς ἐπὶ τὴν κατάληψιν τῆς πόλεως συνῆγε τὴν στρατιὰν, ὀλίγον ἀπὸ τοῦ νυκτερινοῦ πόνου διαναπαύσας. Βουλόμενος δὲ ἀπὸ τῶν καταῤῥιφθέντων περισπᾶσαι τοὺς εἴργοντας, τοὺς μὲν γενναιοτάτους τῶν ἱππέων ἀποβήσας τῶν ἵππων, τριχῆ διέταξε κατὰ τὰ πεπτωκότα τοῦ τείχους, πάντοθεν πεφραγμένους τοῖς ὅπλοις, καὶ τοὺς κοντοὺς προΐσχοντας, ὡς, ὁπότε τὰς ἐπιβατηρίους βάλλοιεν μηχανὰς, κατάρχοιντο τῆς εἰςόδου. Κατόπιν δὲ αὐτῶν ἔταξε τοῦ πεζοῦ τὸ ἀκμαιότατον, τὸ δὲ λοιπὸν ἱππικὸν ἀντιπαρεξέτεινε τῷ τείχει κατὰ πᾶσαν τὴν ὀρεινὴν, πρὸς τὸ μηδένα τῶν ἀναφευγόντων ἐκ τῆς ἁλώσεως διαφυγεῖν· κατόπιν δὲ τούτων περιέστησε τοὺς τοξότας, ἔχειν κελεύσας ἕτοιμα τὰ βέλη πρὸς ἄφεσιν, ὁμοίως δὲ σφενδονήτας, καὶ τοὺς ἐπὶ τῶν μηχανημάτων, ἑτέρους δὲ κλίμακας ἀραμένους προςφέρειν ἐπάνω τοῖς ἀκεραίοις τείχεσιν, ἵνα οἱ μὲν τούτους κωλύειν πειρώμενοι καταλίποιεν τὴν ἐπὶ τοῖς καταῤῥιφθεῖσι φυλακὴν, οἱ λοιποὶ δὲ ὑπ' ἀθρόων βιαζόμενοι τῶν βελῶν εἴξωσι τῆς εἰςόδου.

25. Ἰώσηπος δὲ συνεὶς τὴν ἐπίνοιαν, ἐπὶ μὲν τοῦ μένοντος τείχους σὺν τοῖς κεκμηκόσιν ἵστησι

τοὺς γηραιοὺς, ὡς μηδὲν ταύτῃ βλαβησομένους· κατὰ δὲ τὰ παρεῤῥωγότα τοῦ τείχους, τοὺς δυνατωτάτους, καὶ πρὸ πάντων ἀνὰ ἓξ ἄνδρας, μεθ᾽ ὧν καὶ αὐτὸς, εἰς τὸ προκινδυνεύειν ἐκληρώσατο. Ἐκέλευσέ τε πρὸς μὲν τὸν ἀλαλαγμὸν τῶν ταγμάτων ἐπιφράξαι τὰς ἀκοὰς, ὡς ἂν μὴ καταπλαγεῖεν, πρὸς δὲ τὸ πλῆθος τῶν βελῶν συνοκλάσαντας καλύπτεσθαι καθύπερθεν τοῖς θυρεοῖς, ὑποχωρῆσαί τε πρὸς ὀλίγον, ἕως τὰς φαρέτρας κενώσωσιν οἱ τοξόται. Βαλλόντων δὲ τὰς ἐπιβατηρίους μηχανὰς αὐτοὺς προπηδᾶν, καὶ διὰ τῶν ἰδίων ὀργάνων ἀπαντᾶν τοῖς πολεμίοις· ἀγωνίζεσθαί τε ἕκαστον, ὡς οὐχ ὑπὲρ σωθησομένης, ἀλλ᾽ ὥσπερ ὑπὲρ ἀπολωλυίας ἤδη τῆς 240
πατρίδος ἀμυνόμενον, λαμβάνειν τε πρὸ ὀφθαλμῶν σφαγησομένους γέροντας καὶ τέκνα, καὶ γυναῖκας ἀναιρεθησομένας ὑπὸ τῶν ἐχθρῶν ὅσον οὐδέπω, καὶ τὸν ἐπὶ ταῖς μελλούσαις συμφοραῖς θυμὸν προαλίσαντας, ἐναφεῖναι τοῖς δράσουσιν αὐτάς.

26. Ἔταξε μὲν οὖν οὕτως ἑκάτερον· τὸ δὲ ἀργὸν ἀπὸ τῆς πόλεως πλῆθος, γύναια καὶ παῖδες, ὡς ἐθεάσαντο τριπλῇ μὲν φάλαγγι τὴν πόλιν ἐζωσμένην, οὐδὲν γὰρ εἰς τὴν μάχην μετακεκίνητο τῶν πάλαι φυλάκων, πρὸς δὲ τοῖς βεβλημένοις τείχεσι τοὺς πολεμίους ξιφήρεις, καὶ τὴν καθύπερθεν ὀρεινὴν λαμπομένην ὅπλοις, τά τε βέλη τοῖς τοξόταις ἐπανέχοντα τῶν Ἀράβων, ὕστατον τινὰ κωκυτὸν ἁλώσεως συνήχησαν, ὡς οὐκ ἀπειλουμένων ἔτι τῶν κακῶν, ἀλλ᾽ ἤδη παρόντων. Ὁ δὲ Ἰώσηπος τὰ μὲν γύναια, ὡς μὴ θηλύνοιεν οἴκτῳ τὰς ὁρμὰς τῶν σφετέρων, κατακλείει ταῖς οἰκίαις, μετ᾽ ἀπειλῆς ἡσυχάζειν κελεύσας. Αὐτὸς δὲ πρὸ τῶν ἐῤῥιφθέντων, ᾗ ἔλαχε, παρῄει· τοῖς μὲν οὖν καθ᾽ ἕτερα προσφέρουσι τὰς κλίμακας οὐ προσεῖχεν, ἀπεκαραδόκει δὲ τὴν ὁρμὴν τῶν βελῶν.

27. Ὁμοῦ δὲ οἵ τε σαλπιγκταὶ τῶν ταγμάτων ἁπάντων συνήχησαν, καὶ δεινὸν ἐπηλάλαξεν ἡ στρα-

τιά· καὶ πάντοθεν ἀφιεμένων ἀπὸ συνθήματος τῶν βελῶν, τὸ φῶς ὑπετέμνετο. Μεμνημένοι γε μὴν τῶν τοῦ Ἰωσήπου προςταγμάτων οἱ σὺν αὐτῷ, τάς τε ἀκοὰς πρὸς τὴν βοὴν καὶ τὰ σώματα πρὸς τὰς ἀφέσεις ἐφράξαντο· καὶ βαλόντων τὰς μηχανὰς, ἐπεξέδραμον δι᾽ αὐτῶν, πρὶν ἐπιβῆναι τοὺς διαβαλόντας. Συμπλεκόμενοί γε μὴν τοῖς ἀνιοῦσι παντοῖα καὶ χειρῶν ἔργα καὶ ψυχῆς ἐναπεδείκνυντο, πειρώμενοι παρὰ τὰς ἐσχάτας συμφορὰς, μὴ χείρους φαίνεσθαι τῶν ἐν ἀκινδύνῳ τῶν κατὰ σφᾶς ἀνδριζομένων· ὥςτε οὐ πρότερον ἀπεῤῥήγνυντο τῶν Ῥωμαίων, πρὶν ἢ πεσεῖν ἢ διαφθεῖραι. Ὡς δὲ οἱ μὲν ἔκαμνον διηνεκῶς ἀμυνόμενοι, καὶ τοὺς ἑαυτῶν ἀμείβειν οὐκ ἔχοντες, τὸ κεκμηκὸς δὲ τῶν Ῥωμαίων ἀκραιφνεῖς διεδέχοντο, καὶ ταχέως ἀντὶ τῶν ὑποβιασθέντων ἐπέβαινον ἕτεροι, παρακελευσάμενοι ἀλλήλοις, καὶ πλευρὰν μὲν ἑνώσαντες, τοῖς δὲ θυρεοῖς καθύπερθε φραξάμενοι, στῖφος ἄῤῥηκτον ἐγένοντο, καὶ καθάπερ ἑνὶ σώματι πάσῃ τῇ φάλαγγι τοὺς Ἰουδαίους ἀνωθοῦντες, ἤδη τοῦ τείχους ἐπέβαινον.

28. Ὁ δὲ Ἰώσηπος ἐν ταῖς ἀμηχανίαις σύμβουλον λαβὼν τὴν ἀνάγκην, — ἡ δέ ἐστι δεινὴ πρὸς ἐπίνοιαν, ὅταν αὐτὴν ἀπόγνωσις ἐρεθίζῃ, — ζέον ἔλαιον ἐκέλευσε καταχεῖν τῶν συνησπικότων. Οἱ δὲ ὡς παρεσκευασμένον ἔχοντες μετὰ τάχους πολλοὶ καὶ πολὺ, πάντοθεν τῶν Ῥωμαίων κατέχεον, συνεπ-
241 αφιέντες καὶ τὰ ἀγγεῖα βρασσόμενα τῇ θέρμῃ. Τοῦτο, καιομένων τῶν Ῥωμαίων, διεσκέδασε τὴν τάξιν; καὶ μετὰ δεινῶν ἀλγηδόνων ἀπεκυλινδοῦντο τοῦ τείχους· ῥᾷστα μὲν γὰρ τὸ ἔλαιον ἀπὸ κόρσης μέχρι ποδῶν ὑπὸ τὰς πανοπλίας διέῤῥει τοῦ σώματος ὅλου, καὶ τὴν σάρκα φλογὸς οὐδὲν ἔλασσον ἐπεβόσκετο, θερμαινόμενόν τε φύσει ταχέως, καὶ ψυχόμενον βραδέως διὰ τὴν πιότητα. Τοῖς δὲ θώραξι καὶ τοῖς κράνεσιν ἐνδεδεμένων ἀπαλλαγὴ τῆς καύ-

σέως οὐκ ἦν· πηδῶντες δὲ καὶ συνειλούμενοι ταῖς ἀλγηδόσιν, ἀπὸ τῶν γεφυρωμάτων ἔπιπτον· οἱ δὲ τραπέντες εἰς τοὺς σφετέρους πρόσω βιαζομένους, εὐχείρωτοι τοῖς κατόπιν τιτρώσκουσιν ἦσαν.

29. Ἐπέλειπε δὲ οὔτε Ῥωμαίους ἐν ταῖς κακοπραγίαις ἰσχὺς, οὔτε τοὺς Ἰουδαίους σύνεσις· ἀλλ' οἱ μὲν καίπερ οἰκτρὰ πάσχοντας ὁρῶντες τοὺς καταχυθέντας, ὅμως εἰς τοὺς καταχέοντας ἐφέροντο, τὸν πρὸ αὐτοῦ κακίζων ἕκαστος ὡς ἐμπόδιον ὄντα τῆς ῥώμης. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι δόλῳ δευτέρῳ τὰς προςβάσεις αὐτῶν ἐπέσφαλλον, τῆλιν ἑφθὴν ἐπιχέοντες ταῖς σανίσιν, αἷς ἐπολισθαίνοντες ὑπεσύροντο· καὶ οὔτε τῶν τρεπομένων, οὔτε τῶν προςβαινόντων τις ὀρθὸς ἔμενεν, ἀλλ' οἱ μὲν ὑπ' αὐτῶν ὑπτιαζόμενοι τῶν ἐπιβατηρίων μηχανῶν συνεπατοῦντο, πολλοὶ δὲ ἐπὶ τὸ χῶμα κατέπιπτον· ἐπαίοντο δ' ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων οἱ πεσόντες. Ἐφαλλομένων γὰρ τῶν Ῥωμαίων, οὗτοι, τῆς κατὰ χεῖρα συμπλοκῆς ἐλευθερωθέντες, πρὸς τὰς βολὰς ἠσχόλουν. Πολλὰ δὲ κακουμένους ἐν τῇ προςβολῇ τοὺς στρατιώτας ὁ στρατηγὸς περὶ δείλην ἀνεκάλει. Ἔπεσον δὲ τούτων μὲν οὐκ ὀλίγοι, καὶ πλείους ἐτρώθησαν· τῶν δὲ ἀπὸ τῆς Ἰωταπάτης ἀπέθανον μὲν ἓξ ἄνδρες, τραυματίαι δὲ ὑπὲρ τριακοσίους ἀνεκομίσθησαν. Εἰκάδι μὲν οὖν Δαισίου μηνὸς ἡ παράταξις ἦν.

30. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἐπὶ τοῖς συμβεβηκόσι τὴν στρατιὰν παραμυθούμενος, ὡς θυμουμένους ἑώρα, καὶ οὐ προτροπῆς, ἀλλ' ἔργων δεομένους, προςυψῶσαι μὲν τὰ χώματα, πύργους δὲ τρεῖς, πεντήκοντα ποδῶν ἕκαστον τὸ ὕψος, κατασκευάσαι κελεύσας, πάντοθεν σιδήρῳ κεκαλυμμένους, ὡς ἑδραῖοί τε εἶεν ὑπὸ βρίθους, καὶ δυςάλωτοι πυρὶ, τῶν χωμάτων ἐπέστησεν, ἐπιβήσας αὐτοῖς ἀκοντιστάς τε καὶ τοξότας, καὶ τῶν ἀφετηρίων ὀργάνων τὰ κουφότερα· πρὸς δὲ τοὺς ῥωμαλεωτάτους σφενδονήτας, οἳ μὴ καθορώμενοι, διὰ τὸ ὕψος καὶ τὰ θωράκια

τῶν πύργων, εἰς καθαρωμένους τοὺς ἐπὶ τοῦ τείχους ἔβαλλον. Οἱ δὲ μήτε κατὰ κόρσης φερομένων τῶν βελῶν ἐκκλίνειν ῥᾳδίως δυνάμενοι, μήτε τοὺς ἀφανεῖς ἀμύνεσθαι, καὶ τὸ μὲν ὕψος τῶν πύργων δυσέφικτον ὁρῶντες ἐκ χειρὸς βέλει, πυρὶ δὲ τὸν περὶ αὐτοὺς σίδηρον δυσάναλωτον, ἔφευγον ἀπὸ τοῦ τείχους, καὶ προσβάλλειν πειρωμένοις ἐπεξέθεον. Καὶ οἱ μὲν ἐπὶ τῆς Ἰωταπάτης ἀντεῖχον οὕτως,
242 ἀναιρούμενοί τε καθ' ἡμέραν πολλοὶ, καὶ μηδὲν ἀντικακοῦν τοὺς πολεμίους, ὅτι μὴ μετὰ κινδύνων ἀνείργειν, ἔχοντες.

31. Κατὰ δὲ τὰς αὐτὰς ἡμέρας Οὐεσπασιανὸς ἐπί τινα τῶν τῆς Ἰωταπάτης ἀστυγειτόνων πόλιν, Ἰαφὰ καλεῖται, νεωτερίζουσαν, καὶ τῶν Ἰωταπατηνῶν παρὰ δόξαν ἀντεχόντων ἐπαιρομένην, Τραϊανὸν, ὄντα τοῦ δεκάτου τάγματος ἡγεμόνα, ἐκπέμπει, παραδοὺς αὐτῷ χιλίους μὲν ἱππεῖς, πεζοὺς δὲ δισχιλίους. Ὁ δὲ τὴν μὲν πόλιν δυσάλωτον καταλαβὼν, — πρὸς γὰρ τῷ φύσει καρτερὰ τυγχάνειν οὖσα καὶ διπλῷ περιβόλῳ τετείχιστο, — προαπηντηκότας δὲ τοὺς ἐξ αὐτῆς ἑτοίμους εἰς μάχην ἰδὼν, συμβάλλει, καὶ πρὸς ὀλίγον ἀντισχόντας ἐδίωκε. Συμφυγόντων δὲ εἰς τὸ πρῶτον τεῖχος, οἱ Ῥωμαῖοι κατὰ πόδας προσκείμενοι συνεισέπεσον. Ὁρμήσαντας δὲ πάλιν εἰς τὸ δεύτερον τεῖχος ἀποκλείουσι τῆς πόλεως οἱ σφέτεροι, δείσαντες, μὴ συνεισβάλωσιν οἱ πολέμιοι. Θεὸς δ' ἦν ἄρα ὁ Ῥωμαίοις τὰ Γαλιλαίων πάθη χαριζόμενος, ὃς καὶ τότε τὸν τῆς πόλεως λαὸν αὔτανδρον, χερσὶν οἰκείαις ἐκκλεισθέντα, πρὸς ἀπώλειαν ἔκδοτον φονῶσιν ἐχθροῖς παρέστησεν. Ἐμπίπτοντες γὰρ ἀθρόοι ταῖς πύλαις, καὶ πολλὰ τοὺς ἐπ' αὐτῶν ὀνομαστὶ καλοῦντες, ἐν μέσαις ἀπεσφάττοντο ταῖς ἱκετείαις. Καὶ τὸ μὲν πρῶτον αὐτοῖς τεῖχος οἱ πολέμιοι, τὸ δεύτερον δ' ἔκλεισαν οἱ σφέτεροι· μέσοι δὲ τῶν δυεῖν κατειλούμενοι περιβόλων βύζην, πολλοὶ μὲν τοῖς ἀλλήλων, πολλοὶ

δὲ τοῖς ἰδίοις περιεπείροντο ξίφεσιν, ἄπειροι δὲ ὑπὸ Ῥωμαίων ἔπιπτον, οὐδὲ ὅσον εἰς ἄμυναν ἀναθαῤῥοῦντες· πρὸς γὰρ τὸ καταπεπλῆχθαι τοὺς πολεμίους, τὰς ψυχὰς αὐτῶν ἔκλασεν ἡ τῶν οἰκείων προδοσία. Πέρας ἔθνησκον οὐ Ῥωμαίοις, ἀλλὰ τοῖς ἰδίοις καταρώμενοι, μέχρι πάντες ἀπώλοντο μύριοι καὶ δισχίλιοι τὸν ἀριθμὸν ὄντες. Κενὴν δὲ μαχίμων λογιζόμενος εἶναι τὴν πόλιν ὁ Τραϊανὸς, εἰ δὲ καί τινες ἔνδον εἶεν, οἰόμενος μηδὲν αὐτοὺς τολμήσειν ὑπὸ δέους, ἀνετίθει τῷ στρατηγῷ τὴν ἅλωσιν. Καὶ στείλας ἀγγέλους πρὸς Οὐεσπασιανὸν, ᾐτεῖτο πέμψαι τὸν υἱὸν αὐτοῦ Τίτον ἐπιθήσοντα τῇ νίκῃ τέλος. Ὁ δὲ συμβαλὼν ὑπολείπεσθαί τινα πόνον, μετὰ στρατιᾶς τὸν υἱὸν ἐπιπέμπει, πεντακοσίων μὲν ἱππέων, χιλίων δὲ πεζῶν. Ὁ δὲ πρὸς τὴν πόλιν ἐλθὼν διὰ τάχους, καὶ διατάξας τὴν στρατιὰν, ἐπὶ μὲν τοῦ λαιοῦ κέρως τὸν Τραϊανὸν ἵστησιν, αὐτὸς δὲ τὸ δεξιὸν ἔχων ἐξηγεῖτο πρὸς τὴν πολιορκίαν. Τῶν δὲ στρατιωτῶν κλίμακας πάντοθεν τῷ τείχει προσφερόντων, πρὸς ὀλίγον οἱ Γαλιλαῖοι καθύπερθεν ἀμυνόμενοι, λείπουσι τὸν περίβολον. Ἐπιπηδήσαντες δὲ οἱ περὶ τὸν Τίτον, τῆς μὲν πόλεως ἐκράτησαν ταχέως, πρὸς δὲ τοὺς ἔνδον αὐτοῖς συστραφέντας καρτερᾷ μάχῃ συῤῥήγνυται· καὶ γὰρ ἐν τοῖς στενωποῖς οἱ δυνατοὶ προσέπιπτον, καὶ 243
ἀπὸ τῶν οἰκιῶν αἱ γυναῖκες ἔβαλλον πᾶν τὸ προστυχὸν αὐταῖς· καὶ μέχρι μὲν ἓξ ὡρῶν ἀντεῖχον μαχόμενοι. Δαπανηθέντων δὲ τῶν μαχίμων, τὸ λοιπὸν πλῆθος ἔν τε τοῖς ὑπαιθρίοις, καὶ κατὰ τὰς οἰκίας ἀπεσφάττοντο, νέοι τε ὁμοῦ καὶ γέροντες· οὐδὲν γοῦν ἄῤῥεν ἀπελείφθη δίχα νηπίων, ἃ μετὰ γυναικῶν ἐξηνδραποδίσαντο. Τῶν μὲν οὖν ἀναιρεθέντων ἀνά τε τὴν πόλιν, καὶ ἐπὶ τῆς προτέρας παρατάξεως ἀριθμὸς μύριοι πρὸς τοῖς πεντακισχιλίοις ἦν, τὰ δὲ αἰχμάλωτα δισχίλια καὶ ἑκατὸν καὶ

τριάκοντα. Τοῦτο συνέβη τὸ πάθος Γαλιλαίοις πέμπτῃ καὶ εἰκάδι Δαισίου μηνός.

32. Ἔμειναν δὲ οὐδὲ Σαμαρεῖς ἀπείρατοι συμφορῶν. Ἀθροισθέντες γὰρ ἐπὶ τὸ Γαριζὶν καλούμενον ὄρος, ὅπερ αὐτοῖς ἐστιν ἅγιον, κατὰ χώραν μὲν ἔμενον, πολέμου δὲ εἶχεν ἀπειλὴν ἥ τε σύνοδος αὐτῶν καὶ τὰ φρονήματα· καὶ οὐδὲ τοῖς γειτνιῶσι κακοῖς ἐσωφρονίζοντο. Πρὸς δὲ τὰς Ῥωμαίων εὐπραγίας ἐν ἀλογίστῳ τῇ κατὰ σφᾶς ἀσθενείᾳ διῴδευον, καὶ μετέωροι πρὸς ταραχὴν ὑπῆρχον. Ἐδόκει δὲ Οὐεσπασιανῷ φθάσαι τὸ κίνημα, καὶ τὰς ὁρμὰς αὐτῶν ὑποτέμνεσθαι. Καὶ γὰρ ἀεὶ φρουραῖς ἡ Σαμαρεῖτις ὅλη διείληπτο, τό τε πλῆθος τῶν ἐληλυθότων καὶ ἡ σύνταξις ἦν φοβερά. Κερεάλιον οὖν, ἔπαρχον ὄντα τοῦ πέμπτου τάγματος, μεθ᾽ ἑξακοσίων ἱππέων καὶ πεζῶν τρισχιλίων πέμπει. Τούτῳ προσβαίνειν μὲν τὸ ὄρος, καὶ συνάπτειν μάχην οὐκ ἀσφαλὲς ἔδοξε, τῶν πολεμίων πολλῶν καθύπερθεν ὄντων. Κυκλωσάμενος δὲ τῇ δυνάμει πᾶσαν τὴν ὑπώρειαν δι᾽ ὅλης αὐτοὺς ἐφρούρει τῆς ἡμέρας· συνέβη δὲ, ὕδατος ἀπορουμένων τῶν Σαμαρέων, ἐκφλεγῆναι τότε καὶ καῦμα δεινόν· ὥρα δὲ ἦν θέρους, καὶ τῶν ἐπιτηδείων τὸ πλῆθος ἀπαράσκευον, ὡς τινὰς μὲν αὐθημερὸν ἀπὸ τοῦ δίψους ἀποθανεῖν, πολλοὺς δὲ, τῆς τοιαύτης ἀπωλείας τὸ δουλεύειν προελομένους, Ῥωμαίοις προσφυγεῖν. Ἐξ ὧν συνεὶς ὁ Κερεάλιος, καὶ τοὺς ἔτι συμμένοντας ὑπὸ τῶν δεινῶν κατεαγότας, ἐπαναβαίνει τῷ ὄρει, καὶ τὴν δύναμιν ἐν κύκλῳ περιστήσας τοῖς πολεμίοις, τὸ μὲν πρῶτον ἐπὶ δεξιὰς προεκαλεῖτο καὶ σώζεσθαι παρεκάλει, διαβεβαιούμενος ἀσφάλειαν τὰ ὅπλα ῥίψασιν. Ὡς δ᾽ οὐκ ἔπειθε, προσπεσὼν ἀπέκτεινε πάντας, χιλίους ἑξακοσίους ἐπὶ μυρίοις ὄντας. Δαισίου μηνὸς εἰκάδι καὶ ἑβδόμῃ ἐπράχθη. Καὶ τοιαύταις μὲν συμφοραῖς Σαμαρεῖται ἐχρήσαντο.

33. Τῶν δὲ ἀνὰ τὰ Ἰωτάπατα διακαρτερούν-

των, καὶ παρ' ἐλπίδα τοῖς δεινοῖς ἀντεχόντων, τεσ-
σαρακοστῇ μὲν ἡμέρᾳ καὶ ἑβδόμῃ τὰ χώματα τῶν
Ῥωμαίων ὑπερήρθη τὸ τεῖχος. *Αὐτομολεῖ δέ τις*
πρὸς τὸν Οὐεσπασιανὸν τῆς αὐτῆς ἡμέρας, τήν τε
ὀλιγότητα τῶν ἐπὶ τῆς πόλεως ἐξαγγέλλων καὶ τὴν
ἀσθένειαν, καὶ ὡς ἀγρυπνίᾳ διηνεκεῖ καὶ μάχαις
ἐπαλλήλοις δεδαπανημένοι, δυνατοὶ μὲν εἶεν οὐδὲ
βιαζομένους ἔτι φέρειν, καὶ δόλῳ δ' ἂν ἁλῶεν, εἴ
τις ἐπιθοῖτο. Περὶ γὰρ τὴν ἐσχάτην φυλακήν, καθ'
ἣν ἄνεσίν τε τῶν δεινῶν ἐδόκουν ἔχειν, καὶ κα- 244
θάπτεται μάλιστα κεκοπωμένων ἑωθινὸς ὕπνος, κα-
ταδαρθάνειν ἔφασκε τοὺς φύλακας, συνεβούλευέ τε
κατ' αὐτὴν τὴν ὥραν ἐπελθεῖν. Τῷ δὲ ἦν μὲν δι'
ὑπονοίας ὁ αὐτόμολος, τό τε πρὸς ἀλλήλους πιστὸν
εἰδότι τῶν Ἰουδαίων, καὶ τὴν πρὸς τὰς κολάσεις
ὑπεροψίαν· ἐπειδὴ καὶ πρότερον ληφθείς τις τῶν
ἀπὸ τῆς Ἰωταπάτης πρὸς πᾶσαν αἰκίαν βασάνων
ἀντέσχε, καὶ μηδὲν διὰ πυρὸς ἐξερευνῶσι τοῖς πο-
λεμίοις περὶ τῶν ἔνδον εἰπών, ἀνεσταυρώθη τοῦ
θανάτου καταμειδιῶν. Τά γε μὴν εἰκότα πιστὸν
ἐποίει τὸν προδότην, καὶ τάχα μὲν ἀληθεύειν ἐκεῖ-
νον, μηδὲν δὲ αὐτὸς ἐξ ἐνέδρας πείσεσθαι μέγα προσ-
δοκῶν, τὸν μὲν φυλάσσειν ἐκέλευσεν, ἐπὶ δὲ τὴν
κατάληψιν τῆς πόλεως παρεσκεύαζε τὴν στρατιάν.

34. Κατὰ δὲ τὴν μηνυθεῖσαν ὥραν ᾔεσαν ἡσυ-
χῇ πρὸς τὸ τεῖχος. Καὶ πρῶτος ἐπιβαίνει Τίτος
σὺν ἑνὶ τῶν χιλιάρχων Δομιτίῳ Σαβίνῳ, τῶν ἀπὸ
τοῦ πέμπτου καὶ δεκάτου τάγματος ὀλίγους ἄγων.
Ἀποσφάξαντες δὲ τοὺς φύλακας, εἰσίασιν εἰς τὴν
πόλιν ἡσυχῇ, μεθ' οὓς Σέξτος τις Κερεάλιος χιλί-
αρχος καὶ Πλάκιδος τοὺς ὑπὸ σφισι τεταγμένους
εἰσῆγον. Κατειλημμένης δὲ τῆς ἄκρας, καὶ τῶν πο-
λεμίων ἐν μέσῃ τῇ πόλει στρεφομένων, ἤδη δὲ καὶ
ἡμέρας οὔσης, ὅμως οὔπω τῆς ἁλώσεως τοῖς κρα-
τουμένοις αἴσθησις ἦν· καμάτῳ τε γὰρ οἱ πολλοὶ
καὶ ὕπνῳ διελέλυντο, καὶ τῶν διανισταμένων ὁμί-

χλη τὰς ὄψεις ἀπήμβλυνε πολλὴ, κατὰ τύχην τότε τῇ πόλει περιχυθεῖσα· μέχρι, πάσης τῆς στρατιᾶς εἰςπεσούσης, πρὸς μόνην τὴν τῶν κακῶν αἴσθησιν ἐξανέστησαν, καὶ τὴν ἅλωσιν ἐπίστευον ἀναιρούμενοι. Ῥωμαίους δὲ, κατὰ μνήμην ὧν περὶ τὴν πολιορκίαν ἔπαθον, οὔτε φειδὼ εἰςήει τινὸς, οὔτε ἔλεος, ἀλλ᾽ εἰς τὸ κάταντες ἀπὸ τῆς ἄκρας τὸν λεὼν συνωθοῦντες ἐφόνευον. Ἔνθα καὶ τοὺς ἔτι μάχεσθαι δυναμένους ἡ δυςχωρία τὴν ἄμυναν ἀφείλετο· θλιβόμενοι γὰρ ἐν τοῖς στενωποῖς, καὶ κατὰ τοῦ πρανοῦς ὑπολισθαίνοντες, ῥέοντι κατ᾽ ἄκρας ἐκαλύπτοντο τῷ πολέμῳ. Τοῦτο πολλοὺς, καὶ τῶν περὶ τὸν Ἰώσηπον ἐπιλέκτων, ἐπ᾽ αὐτοχειρίαν παρώξυνε· κατιδόντες γὰρ, ὡς οὐδένα τῶν Ῥωμαίων ἀνελεῖν δύνανται, τό γε μὴ πεσεῖν αὐτοὶ ὑπὸ Ῥωμαίων προέλαβον, καὶ συναθροισθέντες ἐπὶ τὰ καταλήγοντα τῆς πόλεως σφᾶς αὐτοὺς ἀνεῖλον.

35. Ὅσοι γε μὴν ὑπὸ πρώτην τῆς καταλήψεως αἴσθησιν τῶν φυλάκων διαφυγεῖν ἔφθασαν, ἀναβάντες εἴς τινα τῶν προςαρκτίων πύργων μέχρι μέν τινος ἀπημύναντο· περισχεθέντες δὲ τῷ πλήθει τῶν πολεμίων ὀψὲ παρῆσαν τὰς δεξιὰς, καὶ τοῖς ἐφεστῶσι τὴν σφαγὴν εὔθυμοι παρέσχον. Ἀναίμακτον δ᾽ ἂν ἦν αὐχῆσαι Ῥωμαίοις τὸ τέλος τῆς πολιορκίας, εἰ μὴ κατὰ τὴν ἅλωσιν εἷς ἔπεσεν ἑκατοντάρχης, ὃς ἦν Ἀντώνιος· θνήσκει δὲ ἐξ ἐνέδρας. Τῶν γάρ εἰς τὰ σπήλαιά τις συμπεφευγότων, — πολὺ δὲ οὗτοι πλῆθος ἦσαν, — ἱκέτευε τὸν Ἀντώνιον ὀρέξαι δεξιὰν αὐτῷ, πίστιν τε σωτηρίας καὶ βοήθειαν πρὸς ἄνοδον. Ὁ δὲ ἀφυλάκτως ὤρεγε τὴν χεῖρα, καὶ φθάσας αὐτὸν ἐκεῖνος, νύττει κάτωθεν ὑπὸ τὸν βουβῶνα δόρατι, καὶ παραχρῆμα διεργάζεται.

245 36. Κατ᾽ ἐκείνην μὲν οὖν τὴν ἡμέραν, τὸ φανερὸν πλῆθος ἀνεῖλον Ῥωμαῖοι· ταῖς δὲ ἐπιούσαις ἀνερευνώμενοι τὰς καταδύσεις, τοὺς ἐν τοῖς ὑπο-

νόμοις καὶ τοῖς σπηλαίοις ἐπεξήεσαν, καὶ διὰ πάσης ἐχώρουν ἡλικίας, πλὴν νηπίων καὶ γυναικῶν. Καὶ τὰ μὲν αἰχμάλωτα χίλια πρὸς τοῖς διακοσίοις συνήχθη· νεκροὶ δὲ, κατά τε τὴν ἅλωσιν, καὶ κατὰ τὰς πρότερον μάχας, συνηριθμήθησαν τετρακισμύριοι. Οὐεσπασιανὸς δὲ τήν τε πόλιν κατασκάψαι κελεύει, καὶ τὰ φρούρια πάντα προςεμπίπρησιν αὐτῆς. Ἰωτάπατα μὲν οὖν οὕτως ἑάλω, τρισκαιδεκάτῳ τῆς Νέρωνος ἡγεμονίας ἔτει, Πανέμου νουμηνίᾳ.

CAP. VIII. 1. Ῥωμαῖοι δὲ τὸν Ἰώσηπον ἀναζητοῦντες κατά τε ὀργὴν σφετέραν, καὶ σφόδρα τοῦ στρατηγοῦ φιλοτιμουμένου, — μεγίστη γὰρ ἦν μοῖρα τοῦ πολέμου ληφθεὶς, — τούς τε νεκροὺς διηρεύνων, καὶ τοὺς ἀποκρύφους τῆς πόλεως μυχούς. Ὁ δὲ, ἄρτι τῆς πόλεως ἁλισκομένης, δαιμονίῳ τινὶ συνεργίᾳ χρησάμενος, μέσον μὲν ἑαυτὸν ἐκκλέπτει τῶν πολεμίων, καθάλλεται δὲ εἴς τινα βαθὺν λάκκον, ᾧ πλατὺ σπήλαιον διέζευκτο κατὰ πλευρὰν, τοῖς ἄνωθεν ἀόρατον· ἔνθα τεσσαράκοντα μὲν τῶν ἐπισήμων ἄνδρας καταλαμβάνει λανθάνοντας, παρασκευὴν δ' ἐπιτηδείων οὐκ ὀλίγαις ἡμέραις διαρκεῖν δυναμένην. Μεθ' ἡμέραν μὲν οὖν ὑπεστέλλετο τῶν πολεμίων πάντα διειληφότων, νυκτὸς δ' ἀνιὼν ἐζήτει δρασμοῦ διάδυσιν, καὶ τὰς φυλακὰς κατεσκέπτετο. Φρουρουμένων δὲ πανταχόθεν πάντων δι' αὐτὸν, ὡς λαθεῖν οὐκ ἦν, αὖθις εἰς τὸ σπήλαιον κατήει. Δύο μὲν οὖν ἡμέρας διαλανθάνει, τῇ δὲ τρίτῃ γυναικὸς ἁλούσης τῶν ἅμα αὐτοῖς μηνύεται. Καὶ Οὐεσπασιανὸς αὐτίκα μετὰ σπουδῆς πέμπει δύο χιλιάρχους Παυλῖνον καὶ Γαλλικανὸν, δεξιάς τῷ Ἰωσήπῳ δοῦναι κελεύσας, καὶ προτρεψομένους ἀνελθεῖν.

2. Ἀφικόμενοι δὲ παρεκάλουν οὗτοι τὸν ἄνδρα, καὶ πίστεις περὶ σωτηρίας ἐδίδοσαν. Οὐ μὴν ἔπει-

θον· ἐκ γὰρ ὧν εἰκὸς ἦν τὸν τοσαῦτα δράσαντα παθεῖν, οὐκ ἐκ τοῦ φύσει τῶν παρακαλούντων ἡμέρου, τὰς ὑποψίας συνέλεγεν. Ἐδεδίει τε ὡς ἐπὶ τιμωρίαν προκαλουμένους, ἕως Οὐεσπασιανὸς τρίτον ἔτι πέμπει χιλίαρχον Νικάνορα, γνώριμον τῷ Ἰωσήπῳ καὶ συνήθη πάλαι. Παρελθὼν δὲ οὗτος τό τε φύσει Ῥωμαίων χρηστὸν, πρὸς οὓς ἂν ἅπαξ ἕλωσι, διεξῄει, καὶ ὡς δι' ἀρετὴν αὐτὸς θαυμάζοιτο μᾶλλον ἢ μισοῖτο πρὸς τῶν ἡγεμόνων, σπουδάζειν τε τὸν στρατηγὸν οὐκ ἐπὶ τιμωρίᾳ ἀγαγεῖν αὐτὸν,
246 ἐνεῖναι γὰρ ταύτην καὶ μὴ παρὰ προϊόντος λαβεῖν, ἀλλὰ σῶσαι προαιρούμενον ἄνδρα γενναῖον. Προςετίθει δὲ, ὡς οὔτ' ἂν Οὐεσπασιανὸς ἐνεδρεύων φίλον ἔπεμπεν, ἵνα τοῦ κακίστου πράγματος προστήσηται τὸ κάλλιστον, ἀπιστίας φιλίαν, οὔτ' ἂν αὐτὸς ἀπατήσων ἄνδρα φίλον,' ὑπήκουσεν ἐλθεῖν.

3. Ἐνδοιάζοντος δὲ τοῦ Ἰωσήπου καὶ πρὸς τὸν Νικάνορα, τὸ μὲν στρατιωτικὸν ὑπ' ὀργῆς ἐκκαίειν τὸ σπήλαιον ὥρμητο· κατεῖχε δὲ αὐτοὺς ὁ πολέμαρχος, ζωγρῆσαι τὸν ἄνδρα φιλοτιμούμενος. Ὡς δὲ ὅ τε Νικάνωρ προςέκειτο λιπαρῶς, καὶ τὰς ἀπειλὰς τοῦ πολεμίου πλήθους ὁ Ἰώσηπος ἔμαθεν, ἀνάμνησις αὐτῷ τῶν διὰ νυκτὸς ὀνείρων εἰςέρχεται, δι' ὧν ὁ θεὸς τάς τε μελλούσας συμφορὰς αὐτῷ προεσήμαινεν Ἰουδαίων, καὶ τὰ περὶ τοὺς Ῥωμαίων βασιλεῖς ἐσόμενα. Ἦν δὲ καὶ περὶ κρίσεις ὀνείρων ἱκανὸς συμβάλλειν τὰ ἀμφιβόλως ὑπὸ τοῦ θείου λεγόμενα· τῶν γε μὴν ἱερῶν βίβλων οὐκ ἠγνόει τὰς προφητείας, ὡς ἂν αὐτός τε ὢν ἱερεὺς καὶ ἱερέων ἔκγονος· ὃς, ἐπὶ τῆς τότε ὥρας ἔνθους γενόμενος, καὶ τὰ φρικώδη τῶν προςφάτων ὀνείρων σπάσας φαντάσματα, προςφέρει τῷ θεῷ λεληθυῖαν εὐχὴν, καὶ, "Ἐπειδὴ τὸ Ἰουδαῖον," ἔφη, "φῦλον ὀκλάσαι δοκεῖ σοι τῷ κτίσαντι, μετέβη δὲ πρὸς Ῥωμαίους ἡ τύχη πᾶσα, καὶ τὴν ἐμὴν ψυχὴν ἐπελέξω τὰ μέλλοντα εἰπεῖν, δίδωμι μὲν Ῥωμαίοις τὰς χεῖρας ἑκὼν

καὶ ζῶ, μαρτύρομαι δὲ ὡς οὐ προδότης, ἀλλὰ σὸς ἄπειμι διάκονος."

4. *Ταῦτα εἰπὼν ἐνεδίδου τῷ Νικάνορι· καὶ τῶν Ἰουδαίων οἱ συγκαταφυγόντες, ὡς τὸν Ἰώσηπον συνιέσαν εἴκοντα τοῖς παρακαλοῦσιν, ἀθρόοι περιστάντες, "Ἦ μεγάλα γε ἂν στενάξειαν," ἐβόων, "οἱ πάτριοι νόμοι, οὓς κατεψήφισε θεὸς, ὁ Ἰουδαίοις κτίσας ψυχὰς θανάτου καταφρονούσας. Φιλοζωεῖς, Ἰώσηπε, καὶ φῶς ὑπομένεις ὁρᾷν δοῦλος; Ὡς ταχέως ἐπελάθου σαυτοῦ; Πόσους ὑπὲρ ἐλευθερίας ἀποθνήσκειν ἔπεισας; Ψευδῆ μὲν ἄρα δόξαν ἀνδρείας, ψευδῆ δὲ καὶ συνέσεως εἶχες, εἴ γε σωτηρίαν μὲν ἐλπίζεις παρ' οἷς οὕτως ἐπολέμησας, σώζεσθαι δὲ ὑπ' ἐκείνων, καὶ ἂν ᾖ βέβαιον, θέλεις! Ἀλλ' εἰ καὶ σοὶ λήθην τινὰ σαυτοῦ κατέχεεν ἡ Ῥωμαίων τύχη, προνοητέον ἡμῖν τοῦ πατρῴου κλέους. Χρήσομέν σοι δεξιὰν καὶ ξίφος· σὺ δὲ ἂν μὲν ἑκὼν θνήσκεις, Ἰουδαίων στρατηγὸς, ἐὰν δὲ ἄκων, προδότης τεθνήξῃ." Ταῦθ' ἅμα λέγοντες ἐπανετείναντο τὰ ξίφη, καὶ διηπείλουν ἀναιρήσειν αὐτὸν, εἰ τοῖς Ῥωμαίοις ἐνδιδῴη.*

5. *Δείσας δὲ τὴν ἔφοδον ὁ Ἰώσηπος, καὶ προ-
δοσίαν εἶναι ἡγούμενος τῶν τοῦ θεοῦ προστα-* 247
γμάτων, εἰ προαποθάνοι τῆς διαγγελίας, ἤρχετο πρὸς αὐτοὺς φιλοσοφεῖν ἐπὶ τῆς ἀνάγκης· "Τί γὰρ τοσοῦτον," ἔφη, "σφῶν αὐτῶν, ἑταῖροι, φονῶμεν; Ἢ τί τὰ φίλτατα διαστασιάζομεν, σῶμα καὶ ψυχήν; Ἠλλάχθαί τις ἐμὲ φήσει; Ἀλλ' οἴδασι Ῥωμαῖοι τοῦτό γε. Καλὸν ἐν πολέμῳ θνήσκειν, ἀλλὰ πολέμου νόμῳ, τουτέστιν ὑπὸ τῶν κρατούντων· εἰ μὲν οὖν τὸν Ῥωμαίων ἀποστρέφομαι σίδηρον, ἄξιός εἰμι ἀληθῶς τοῦ ἐμοῦ ξίφους καὶ χειρὸς τῆς ἐμῆς. Εἰ δὲ ἐκείνους εἰσέρχεται φειδὼ πολεμίου, πόσῳ δικαιότερον ἂν ἡμᾶς ἡμῶν αὐτῶν εἰσέλθοι; Καὶ γὰρ ἠλίθιον ταῦτα δρᾷν σφᾶς αὐτοὺς, περὶ ὧν πρὸς ἐκείνους διϊστάμεθα. Καλὸν ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας ἀπο-

θνήσκειν, φημὶ καὶ ἐγὼ, μαχομένους μέντοι, καὶ ὑπὸ τῶν ἀφαιρουμένων αὐτήν. Νῦν δὲ οὔτε εἰς μάχην ἀντιάζουσιν ἡμῖν, οὔτε ἀναιροῦσιν ἡμᾶς. Δειλὸς δὲ ὁμοίως, ὅ τε μὴ βουλόμενος θνήσκειν, ὅτ' ἂν δέῃ, καὶ ὁ βουλόμενος, ὅτ' ἂν μὴ δέῃ. Τί δὲ καὶ δεδοικότες πρὸς Ῥωμαίους οὐκ ἄνιμεν; Ἆρα οὐχὶ θάνατον; Εἶτα ὃν δεδοίκαμεν ἐκ τῶν ἐχθρῶν ὑποπτευόμενον, ἑαυτοῖς βέβαιον ἐπιτιμήσομεν; Ἀλλὰ δουλείαν ἐρεῖ τις. Πάνυ γοῦν νῦν ἐσμὲν ἐλεύθεροι. Γενναῖον δὲ ἀνελεῖν ἑαυτὸν φήσει τις. Οὐ μὲν οὖν, ἀλλὰ ἀγεννέστατον, ὡς ἔγωγε καὶ κυβερνήτην ἡγοῦμαι δειλότατον, ὅς τις, χειμῶνα δεδοικὼς, πρὸ τῆς θυέλλης ἐβάπτισεν ἑκὼν τὸ σκάφος. Ἀλλὰ μὴν ἡ αὐτοχειρία καὶ τῆς κοινῆς ἁπάντων ζώων φύσεως ἀλλότριον, καὶ πρὸς τὸν κτίσαντα θεὸν ἡμᾶς ἐστιν ἀσέβεια. Τῶν μέν γε ζώων οὐθέν ἐστιν, ὃ θνήσκει μετὰ προνοίας ἢ δι' αὐτοῦ· φύσεως γὰρ νόμος ἰσχυρὸς ἐν ἅπασι, τὸ ζῆν ἐθέλειν· διὰ τοῦτο καὶ τοὺς φανερῶς ἀφαιρουμένους ἡμᾶς τούτου πολεμίους ἡγούμεθα, καὶ τοὺς ἐξ ἐνέδρας τιμωρούμεθα. Τὸν δὲ θεὸν οὐκ οἴεσθε ἀγανακτεῖν, ὅτ' ἂν ἄνθρωπος αὐτοῦ τὸ δῶρον ὑβρίζῃ; Καὶ γὰρ εἰλήφαμεν παρ' ἐκείνου τὸ εἶναι, καὶ τὸ μηκέτι εἶναι πάλιν ἐκείνῳ δίδομεν· τὰ μέν γε σώματα θνητὰ πᾶσι, καὶ ἐξ φθαρτῆς ὕλης δημιουργεῖται, ψυχὴ δὲ ἀθάνατος ἀεὶ, καὶ θεοῦ μοῖρα τοῖς σώμασιν ἐνοικίζεται. Εἶτα ἂν μὲν ἀφανίσῃ τις ἀνθρώπου παρακαταθήκην, ἢ διάθηται κακῶς, πονηρὸς εἶναι δοκεῖ καὶ ἄπιστος. Εἰ δέ τις τοῦ σφετέρου σώματος ἐκβάλῃ τὴν παρακαταθήκην τοῦ θεοῦ, λεληθέναι δοκεῖ τὸν ἀδικούμενον; Καὶ κολάζειν μὲν τοὺς ἀποδράντας οἰκέτας δίκαιον νενόμισται, καὶ ἐὰν πονηροὺς καταλίπωσι δεσπότας. Αὐτοὶ δὲ κάλλιστον δεσπότην ἀποδιδράσκοντες τὸν θεὸν, οὐ δοκοῦμεν ἀσεβεῖν; Ἆρα οὐκ ἴστε, ὅτι τῶν μὲν ἐξιόντων τοῦ βίου κατὰ τὸν τῆς φύσεως νόμον, καὶ τὸ ληφθὲν παρὰ τοῦ θεοῦ χρέος

ἐκτινόντων, ὅταν ὁ δοὺς κομίσασθαι θέλῃ, κλέος μὲν αἰώνιον, οἶκοι δὲ καὶ γενεαὶ βέβαιοι, καθαραὶ δὲ καὶ ἐπήκοοι μένουσιν αἱ ψυχαὶ, χῶρον οὐρανοῦ λαχοῦσαι τὸν ἁγιώτατον, ἔνθεν ἐκ περιτροπῆς αἰώ- 248
νων ἁγνοῖς πάλιν ἀντενοικίζονται σώμασιν; Ὅσοις δὲ καθ' ἑαυτῶν ἐμάνησαν αἱ χεῖρες, τούτων μὲν ᾅδης δέχεται τὰς ψυχὰς σκοτιώτερος, ὁ δὲ τούτων πατὴρ θεὸς εἰς ἐκγόνους τιμωρεῖται τοὺς θατέρου ὑβριστάς. Διὰ τοῦτο μεμίσηται παρὰ τῷ θεῷ τοῦτο, καὶ παρὰ τῷ σοφωτάτῳ κολάζεται νομοθέτῃ· τοὺς γοῦν ἀνελόντας ἑαυτοὺς παρὰ μὲν ἡμῖν μέχρις ἡλίου δύσεως ἀτάφους ἐκρίπτειν ἔκριναν, καίτοι καὶ πολεμίους θάπτειν θεμιτὸν ἡγούμενοι· παρ' ἑτέροις δὲ, καὶ τὰς δεξιὰς τοιούτων τῶν νεκρῶν ἀποκόπτειν ἐκέλευσαν, αἷς ἐστρατεύσαντο καθ' ἑαυτῶν, ἡγούμενοι, καθάπερ τὸ σῶμα τῆς ψυχῆς ἀλλότριον, οὕτω καὶ τὴν χεῖρα τοῦ σώματος. Καλὸν οὖν, ἑταῖροι, δίκαια φρονεῖν, καὶ μὴ ταῖς ἀνθρωπίναις συμφοραῖς προσθεῖναι τὴν εἰς τὸν κτίσαντα ἡμᾶς δυσσέβειαν. Εἰ σώζεσθαι δοκεῖ, σωζώμεθα· καὶ γὰρ οὐκ ἄδοξος ἡ σωτηρία, παρ' οἷς διὰ τοσούτων ἔργων ἐπεδειξάμεθα τὰς ἀρετάς· εἰ τεθνάναι, καλὸν ὑπὸ τῶν ἑλόντων. Οὐ μεταβήσομαι δ' ἐγὼ εἰς τὴν τῶν πολεμίων τάξιν, ἵνα ἐμαυτοῦ προδότης γένωμαι· καὶ γὰρ ἂν εἴην πολὺ τῶν αὐτομολούντων πρὸς τοὺς πολεμίους ἠλιθιώτερος· εἴ γε ἐκεῖνοι μὲν ἐπὶ σωτηρίᾳ τοῦτο πράττουσιν, ἐγὼ δ' ἐπ' ἀπωλείᾳ, καί γε τῇ ἐμαυτοῦ. Τὴν μέντοι Ῥωμαίων ἐνέδραν ἐπεύχομαι· μετὰ γὰρ δεξιὰν ἀναιρούμενος ὑπ' αὐτῶν εὐθύμως τεθνήξομαι, τὴν τῶν ψευσαμένων ἀπιστίαν νίκης μεῖζον ἀποφέρων παραμύθιον."

6. Ὁ μὲν Ἰώσηπος πολλὰ τοιαῦτα πρὸς ἀποτροπὴν τῆς αὐτοχειρίας ἔλεγεν. Οἱ δὲ πεφραγμένας ἀπογνώσει τὰς ἀκοὰς ἔχοντες, ὡς ἂν πάλαι καθοσιώσαντες ἑαυτοὺς τῷ θανάτῳ, παροξύνονται πρὸς αὐτόν· καὶ προστρέχων ἄλλος ἄλλοθεν ξιφήρης, ἐκά-

κιζόν τε εἰς ἀνανδρίαν, καὶ ὡς ἕκαστος αὐτίκα καταπλήξων δῆλος ἦν. Ὁ δὲ τὸν μὲν ὀνομαστὶ καλῶν, τῷ δὲ στρατηγικώτερον ἐμβλέπων, τοῦ δὲ δρασσόμενος τὴν δεξιὰν, ὃν δὲ δεήσει δυσωπῶν, καὶ ποικίλοις διαιρούμενος πάθεσιν, ἐπὶ τῆς ἀνάγκης εἶργεν ἀπὸ τῆς σφαγῆς πάντων τὸν σίδηρον, ὥσπερ τὰ κατακυκλωθέντα τῶν θηρίων, ἀεὶ πρὸς τὸν καθαπτόμενον ἀντιστρεφόμενος. Τῶν δὲ καὶ παρὰ τὰς ἐσχάτας συμφορὰς ἔτι τὸν στρατηγὸν αἰδουμένων παρελύοντο μὲν αἱ δεξιαὶ, περιωλίσθαινε δὲ τὰ ξίφη, καὶ πολλοὶ τὰς ῥομφαίας ἐπιφέροντες αὐτομάτως παρείθησαν.

7. Ὁ δὲ ἐν ταῖς ἀμηχανίαις οὐκ ἠπόρησεν ἐπινοίας, ἀλλὰ πιστεύων τῷ κηδεμόνι θεῷ τὴν σωτηρίαν παραβάλλεται, καὶ, "Ἐπειδὴ δέδοκται τὸ θνήσκειν," ἔφη, "φέρε κλήρῳ τὰς ἀλλήλων σφαγὰς ἐπιτρέψωμεν· ὁ λαχὼν δὲ ὑπὸ τοῦ μετ᾽ αὐτὸν πιπτέτω, καὶ διοδεύσει πάντων οὕτως ἡ τύχη, μηδὲ ἐπὶ τῆς ἰδίας κεῖσθαι δεξιᾶς ἕκαστος· ἄδικον γὰρ οἰχομένων τῶν ἄλλων τινὰ μετανοήσαντα σωθῆναι." Πιστὸς
249 ἔδοξε ταῦτα εἰπὼν, καὶ συνεκληροῦτο πείσας· ἑτοίμην δὲ ὁ λαχὼν τῷ μετ᾽ αὐτὸν παρεῖχε τὴν σφαγὴν, ὡς αὐτίκα τεθνηξομένου καὶ τοῦ στρατηγοῦ· ζωῆς γὰρ ἡδίω τὸν μετὰ τοῦ Ἰωσήπου θάνατον ἡγοῦντο. Καταλείπεται δὲ οὗτος, εἴτε ὑπὸ τύχης χρὴ λέγειν, εἴτε ὑπὸ θεοῦ προνοίας, σὺν ἑτέρῳ· καὶ σπουδάζων μήτε ὑπὸ τοῦ κλήρου καταδικασθῆναι, μήτε, εἰ τελευταῖος λίποιτο, μιᾶναι τὴν δεξιὰν ὁμοφύλῳ φόνῳ, πείθει καὶ ἐκεῖνον ἐπὶ πίστει ζῆν.

8. Ὁ μὲν οὖν οὕτω τόν τε Ῥωμαίων καὶ τὸν οἰκείων διαφυγὼν πόλεμον, ἐπὶ Οὐεσπασιανὸν ἤγετο διὰ τοῦ Νικάνορος. Οἱ δὲ Ῥωμαῖοι πάντες ἐπὶ θέαν αὐτοῦ συνέτρεχον, καὶ τοῦ πλήθους συνθλιβομένου περὶ τοῦ στρατηγοῦ θόρυβος ἦν ποικίλος, τῶν μὲν γεγηθότων ἐπὶ τῷ ληφθέντι, τῶν δὲ ἀπει-

λούντων, τῶν δὲ ἐγγύθεν ἰδεῖν βιαζομένων. Καὶ οἱ μὲν πόῤῥωθεν κολάζειν ἐβόων τὸν πολέμιον, τῶν δὲ πλησίον ἀνάμνησις αὐτοῦ τῶν ἔργων εἰςῄει, καὶ πρὸς τὴν μεταβολὴν θάμβος. Τῶν τε ἡγεμόνων οὐδεὶς ἦν, ὃς, εἰ καὶ πρότερον ὠργίζετο, τότε πρὸς τὴν ὄψιν οὐκ ἐνέδωκεν αὐτοῦ. Μάλιστα δὲ τὸν Τίτον ἐξ ἀρετῆς τό τε καρτερικὸν ἐν ταῖς συμφοραῖς ᾕρει τοῦ Ἰωσήπου, καὶ πρὸς τὴν ἡλικίαν ἔλεος. Ἀναμιμνησκομένῳ τε τὸν οὐ πάλαι μαχόμενον, καὶ τὸν ἐν χερσὶν ἐχθρῶν ἄρτι κείμενον ὁρῶντι παρῆν τε νοεῖν, ὅσον δύναται τύχη, καὶ ὡς ὀξεῖα μὲν πολέμου ῥοπὴ, τῶν δὲ ἀνθρωπίνων οὐδὲν βέβαιον· παρὸ καὶ τότε συνδιέθηκε μὲν πλείστους ἑαυτῷ, καὶ πρὸς οἶκτον τοῦ Ἰωσήπου, πλείστη δὲ αὐτῷ καὶ παρὰ τῷ πατρὶ μοῖρα σωτηρίας ἐγένετο. Ὁ μέντοι Οὐεσπασιανὸς φρουρεῖν αὐτὸν μετὰ πολλῆς ἀσφαλείας προςέτασσεν, ὡς ἀναπέμψων αὐτίκα Νέρωνι.

9. Τοῦτο ἀκούσας ὁ Ἰώσηπος, μόνῳ τι διαλεχθῆναι θέλειν ἔλεγεν αὐτῷ. Μεταστησαμένου δὲ ἐκείνου, πλὴν τοῦ παιδὸς Τίτου καὶ δυεῖν φίλων, τοὺς ἄλλους ἅπαντας, „Σὺ μὲν," εἶπεν, „Οὐεσπασιανὲ, νομίζεις αἰχμάλωτον αὐτὸν μόνον εἰληφέναι τὸν Ἰώσηπον· ἐγὼ δὲ ἄγγελλος ἥκω σοι μειζόνων. Μὴ γὰρ ὑπὸ Θεοῦ προπεμπόμενος ᾔδειν τὸν Ἰουδαίων νόμον, καὶ πῶς στρατηγοῖς ἀποθνήσκειν πρέπει; Νέρωνί με πέμπεις; Τί γάρ; Οἱ μετὰ Νέρωνα μέχρι σοῦ διάδοχοι μένουσι; Σὺ Καῖσαρ, Οὐεσπασιανὲ, καὶ αὐτοκράτωρ σὺ καὶ παῖς ὁ σὸς οὗτος. Δέσμει δέ με νῦν ἀσφαλέστερον, καὶ τήρει σαυτῷ. Δεσπότης μὲν γὰρ οὐ μόνον ἐμοῦ σὺ Καῖσαρ, ἀλλὰ καὶ γῆς καὶ θαλάσσης καὶ παντὸς ἀνθρώπων γένους. Ἐγὼ δὲ ἐπὶ τιμωρίαν δέομαι φρουρᾶς μείζονος, εἰ κατασχεδιάζω καὶ Θεοῦ." Ταῦτα εἰπόντος, παραχρῆμα μὲν Οὐεσπασιανὸς ἀπιστεῖν ἐδόκει, καὶ τὸν 250
Ἰώσηπον ὑπελάμβανε ταῦτα περὶ σωτηρίας πανουργεῖν. Κατὰ μικρὸν δὲ εἰς πίστιν ὑπήγετο, τοῦ Θεοῦ

διεγείροντος αὐτὸν εἰς τὴν ἡγεμονίαν ἤδη, καὶ τὰ σκῆπτρα δι' ἑτέρων σημείων προδεικνύντος. Ἀτρεκῆ δὲ καὶ τὸν Ἰώσηπον ἐν ἄλλοις κατελάμβανε. Τῶν γὰρ τοῖς ἀποῤῥήτοις παρατυχόντων φίλων ὁ ἕτερος, 'θαυμάζειν, ἔφη, πῶς οὔτε τοῖς ἐπὶ τῶν Ἰωταπάτων περὶ ἁλώσεως, οὔτε αὐτῷ προεμαντεύσατο περὶ αἰχμαλωσίας, εἰ μὴ ταῦτα λῆρος εἴη διακρουσομένου τὰς ἐπ' αὐτὸν ὀργάς.' Ἰώσηπος δὲ, 'καὶ τοῖς Ἰωταπατηνοῖς, ὅτι μετὰ τεσσαρακοστὴν ἑβδόμην ἡμέραν ἁλώσονται, προειπεῖν, ἔφη, καὶ ὅτι πρὸς Ῥωμαίων αὐτὸς ζωγρηθήσεται.' Ταῦτα παρὰ τῶν αἰχμαλώτων κατ' ἰδίαν ὁ Οὐεσπασιανὸς ἐκπυθόμενος, εὕρισκεν ἀληθῆ, καὶ πιστεύειν περὶ τῶν κατ' αὐτὸν ἤρχετο. Φρουρᾶς μὲν οὖν καὶ δεσμῶν οὐκ ἀνίει τὸν Ἰώσηπον, ἐδωρεῖτο δὲ ἐσθῆτι καὶ τοῖς ἄλλοις κειμηλίοις, φιλοφρονούμενός τε καὶ περιέπων διετέλει, τὰ πολλὰ Τίτου τῇ τιμῇ συνεργοῦντος.

CAP. IX. 1. Τετάρτῃ δὲ Πανέμου μηνὸς, ἀναζεύξας εἰς τὴν Πτολεμαΐδα, καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν παράλιον ἀφικνεῖται Καισάρειαν, μεγίστην τῆς τε Ἰουδαίας πόλιν, καὶ τὸ πλέον ὑφ' Ἑλλήνων ἐποικουμένην. Ἐδέχοντο δὲ καὶ τὴν στρατιὰν καὶ τὸν στρατηγὸν μετὰ πάσης εὐφημίας καὶ φιλοφροσύνης οἱ ἐπιχώριοι, καὶ κατ' εὔνοιαν μὲν τὴν πρὸς τοὺς Ῥωμαίους, τὸ δὲ πλέον ἔχθει τῶν κατεστραμμένων. Διὸ καὶ τὸν Ἰώσηπον ἀθρόοι καταβοῶντες ἠξίουν κολάζειν. Οὐεσπασιανὸς δὲ τὴν μὲν περὶ τούτου δέησιν, ὡς ὑπ' ἀκρίτου γινομένην πλήθους, ἐξέλυσεν ἡσυχίᾳ. Τῶν δὲ ταγμάτων τὰ μὲν δύο χειμερίσοντα ἐκάθισεν ἐπὶ τῆς Καισαρείας, ἐπιτήδειον ὁρῶν τὴν πόλιν· τὸ δέκατον δὲ καὶ πέμπτον εἰς Σκυθόπολιν, ὡς μὴ θλίβοι παντὶ τῷ στρατῷ τὴν Καισάρειαν. Ἀλεεινὴ δὲ ἦν καὶ ἐκείνη χειμῶνος ὥρᾳ, καθόσον ἦν πνιγώδης θέρους ὑπὸ καύματος, πεδιὰς οὖσα καὶ παράλιος.

2. Ἐν δὲ τούτῳ συναθροισθέντες οἵ τε κατὰ στάσιν ἐκπίπτοντες τῶν πολεμίων, καὶ οἱ διαφυγόντες ἐκ τῶν κατεστραμμένων, πλῆθος οὐκ ὀλίγον, ἀνακτίζουσιν Ἰόππην ὁρμητήριον σφίσιν, ἐρημωθεῖσαν ὑπὸ Κεστίου πρότερον· καὶ τῆς χώρας ἐκπεπολεμωμένης ἀνειργόμενοι, μεταβαίνειν ἔγνωσαν εἰς τὴν θάλασσαν. Πηξάμενοί τε πειρατικὰ σκάφη 251
πλεῖστα, τόν τε Συρίας καὶ Φοινίκης καὶ τὸν ἐπ' Αἴγυπτον πόρον ἐλῄστευον, ἄπλωτά τε πᾶσιν ἐποίουν τὰ τῇδε πελάγη. Οὐεσπασιανὸς δὲ ὡς ἔγνω τὴν σύνταξιν αὐτῶν, πέμπει πεζούς τε καὶ ἱππεῖς ἐπὶ τὴν Ἰόππην, οἳ νύκτωρ ὡς ἀφύλακτον εἰςέρχονται τὴν πόλιν. Οἱ δὲ ἐν αὐτῇ προῄσθοντο μὲν τὴν εἰςβολὴν, καὶ καταδείσαντες, τοῦ μὲν εἴργειν τοὺς Ῥωμαίους ἀπετρέποντο, συμφυγόντες δὲ εἰς τὰς ναῦς, ἐξωτέρω βέλους διενυκτέρευσαν.

3. Ἀλιμένου δὲ οὔσης φύσει τῆς Ἰόππης, — αἰγιαλῷ γὰρ ἐπιλήγει τραχεῖ, καὶ τὸ μὲν ἄλλο πᾶν ὀρθίῳ, βραχὺ δὲ συννεύοντι κατὰ τὰς κεραίας ἑκάτερθεν, αἱ δὲ εἰσὶ κρημνοὶ βαθεῖς καὶ προέχουσαι σπιλάδες εἰς τὸ πέλαγος, ἔνθα καὶ τῶν Ἀνδρομέδας δεσμῶν ἔτι δεικνύμενοι τύποι πιστοῦνται τὴν ἀρχαιότητα τοῦ μύθου, τύπτων δὲ τὸν αἰγιαλὸν ἀντίος βορέας, καὶ πρὸς ταῖς δεχομέναις πέτραις ὑψηλὸν ἀνακόπτων τὸ κῦμα, σφαλερώτερον ἐρημίας τὸν ὅρμον ἀπεργάζεται, — κατὰ τοῦτον σαλεύουσι τοῖς ἀπὸ τῆς Ἰόππης ὑπὸ τὴν ἕω πνεῦμα βίαιον ἐπιπίπτει· μελαμβόρειον ὑπὸ τῶν ταύτῃ πλωϊζομένων καλεῖται. Καὶ τὰς μὲν πρὸς ἀλλήλαις τῶν νεῶν αὐτόθι συνήραξε, τὰς δὲ πρὸς ταῖς πέτραις, πολλὰς δὲ πρὸς ἀντίον κῦμα βιαζομένας εἰς τὸ πέλαγος· — τόν τε γὰρ αἰγιαλὸν ὄντα πετρώδη, καὶ τοὺς ἐπ' αὐτοῦ πολεμίους ἐδεδοίκεσαν — μετέωρος ὑπεραρθεὶς ὁ κλύδων ἐβάπτισεν. Ἦν δὲ οὔτε φυγῆς που τόπος, οὔτε μένουσι σωτηρία, βίᾳ μὲν ἀνέμου τῆς θαλάσσης ἐξωθουμένοις, Ῥωμαίων δὲ τῆς πόλεως.

Καὶ πολλὴ μὲν οἰμωγὴ συῤῥηγνυμένων ἐγίνετο τῶν σκαφῶν, πολὺς δὲ ἀγνυμένων ὁ ψόφος. Καὶ τοῦ πλήθους οἱ μὲν ὑπὸ τῶν κυμάτων καλυπτόμενοι διεφθείροντο, πολλοὶ δὲ τοῖς ναυαγίοις ἐμπλεκόμενοι· τινὲς δὲ ὡς κουφοτέρῳ τὴν θάλασσαν ἔφθανον τῷ σιδήρῳ σφᾶς αὐτοὺς ἀναιροῦντες. Τό γε μὴν πλεῖστον ὑπὸ τῶν κυμάτων ἐκφερόμενον περιεξαίνετο ταῖς ἀποῤῥῶξιν, ὡς αἱμαχθῆναι μὲν ἐπὶ πλεῖστον τὸ πέλαγος, πληρωθῆναι δὲ νεκρῶν τὴν παραλίαν· καὶ γὰρ τοὺς ἐπὶ τὸν αἰγιαλὸν ἐκφερομένους ἐφεστῶτες οἱ Ῥωμαῖοι διέφθειρον. Ἦν δὲ ἀριθμὸς τῶν ἐκβρασθέντων σωμάτων τετρακιςχίλιοι πρὸς τοῖς διακοσίοις. Ῥωμαῖοι δὲ λαβόντες ἀμαχητὶ τὴν πόλιν κατασκάπτουσιν.

4. Ἰόππη μὲν οὕτως ἐν ὀλίγῳ χρόνῳ δεύτερον ὑπὸ Ῥωμαίοις ἑάλω. Οὐεσπασιανὸς δὲ, ὡς μὴ πάλιν οἱ πειραταὶ συναλισθεῖεν εἰς αὐτὴν, στρατόπεδόν τε ἐπὶ τῆς ἀκροπόλεως ἐγείρει, καὶ τὸ ἱππικὸν ἐν αὐτῷ καταλείπει μετὰ πεζῶν ὀλίγων, ἵνα οὗτοι μὲν κατὰ χώραν μένοντες φρουρῶσι τὸ στρατόπεδον, οἱ δὲ ἱππεῖς προνομεύωσι τὴν πέριξ, καὶ τὰς περιοίκους κώμας τε καὶ πολίχνας ἐξαίρωσι τῆς Ἰόππης. Οἱ μὲν οὖν κατὰ τὰ προςταχθέντα τὴν χώραν κατατρέχοντες, καθ' ἡμέραν ἔτεμνόν τε καὶ ἠρήμουν ἅπασαν.

5. Ὡς δὲ εἰς τὰ Ἱεροσόλυμα τὸ κατὰ τὴν Ἰωταπάτην πάθος ἠγγέλη, τὸ μὲν πρῶτον ἠπίστουν
252 οἱ πολλοὶ, καὶ διὰ τὸ μέγεθος τῆς συμφορᾶς καὶ διὰ τὸ μηδένα τῶν λεγομένων αὐτόπτην παρεῖναι· διεσώθη γὰρ οὐδὲ ἄγγελος, ἀλλὰ αὐτομάτη διεκήρυσσε φήμη τὴν ἅλωσιν, οἰκεία φύσει τῶν σκυθρωποτέρων. Κατ' ὀλίγον δὲ διὰ τῶν προςχώρων ὥδευε τὸ ἀληθὲς, καὶ παρὰ πᾶσιν ἀμφιβολίας ἦν ἤδη βεβαιότερον, προςεσχεδιάζετό γε μὴν τοῖς πεπραγμένοις καὶ τὰ μὴ γενόμενα· τεθνεὼς γὰρ ἐπὶ τῆς ἁλώσεως καὶ Ἰώσηπος ἠγγέλλετο. Τοῦτο μεγίστου

τὰ Ἱεροσόλυμα πένθους ἐπλήρωσε· κατὰ μέν γε οἴκους, καὶ κατὰ συγγενείας οἷς προσήκων ἦν ἕκαστος τῶν ἀπολολότων ἐθρηνεῖτο. Τὸ δὲ ἐπὶ τῷ στρατηγῷ πένθος ἐδημοσιεύθη· Καὶ οἱ μὲν ξένους, οἱ δὲ συγγενεῖς, οἱ δὲ φίλους, οἱ δὲ ἀδελφοὺς ἐθρήνουν, τὸν Ἰώσηπον δὲ πάντες· ὡς ἐπὶ τριακοστὴν μὲν ἡμέραν μὴ διαλιπεῖν τὰς ὀλοφύρσεις ἐν τῇ πόλει, πλείστους δὲ μισθοῦσθαι τοὺς αὐλητὰς, οἳ θρήνων ἐξῆρχον αὐτοῖς.

6. Ὡς δὲ τὸ ἀληθὲς διεκαλύπτετο τῷ χρόνῳ, καὶ τὰ μὲν κατὰ τὴν Ἰωταπάτην ὥςπερ εἶχεν, ἐσχεδιασμένον δὲ τὸ κατὰ τὸν Ἰώσηπον πάθος εὑρίσκετο, ζῆν δὲ αὐτὸν ἔγνωσαν, καὶ παρὰ Ῥωμαίοις ὄντα, καὶ πρὸς τῶν ἡγεμόνων ἣ κατ' αἰχμαλώτου τύχην περιέπεσθαι, τοσοῦτον ὀργῆς ἐπὶ ζῶντος, ὅσον εὐνοίας ἐπὶ τεθνάναι δοκοῦντος πρότερον ἀνελάμβανον. Καὶ παρ' οἷς μὲν εἰς ἀνανδρίαν, παρ' οἷς δὲ εἰς προδοσίαν ἐκακίζετο· πλήρης δὲ ἀγανακτήσεως ἦν καὶ τῶν κατ' αὐτοῦ βλασφημιῶν ἡ πόλις. Παρωξύνοντο δὲ ταῖς πληγαῖς, καὶ προςεξεκαίοντο ταῖς κακοπραγίαις· τό γε μὴν πταίειν, ὃ γίνεται τοῖς εὖ φρονοῦσιν ἀσφαλείας καὶ τῶν ὁμοίων φυλακῆς αἴτιον, ἐκείνοις κέντρον ἑτέρων ἐγίνετο συμφορῶν· καὶ τὸ τέλος ἀεὶ τῶν κακῶν αὖθις ἀρχή. Μᾶλλον γοῦν ὥρμουν ἐπὶ τοὺς Ῥωμαίους, ὡς καὶ Ἰώσηπον ἐν αὐτοῖς ἀμυνούμενοι. Τοὺς μὲν οὖν ἐπὶ τῶν Ἱεροσολύμων τοιοῦτοι θόρυβοι κατεῖχον.

7. Οὐεσπασιανὸς δὲ καθ' ἱστορίαν τῆς Ἀγρίππα βασιλείας — ἐνῆγε γὰρ καὶ βασιλεὺς αὐτὸς, ἅμα καὶ δεξιώσασθαι τὸν ἡγεμόνα σὺν τῇ στρατιᾷ τῷ κατὰ τὸν οἶκον ὄλβῳ προαιρούμενος, καὶ καταστεῖλαι δι' αὐτῶν τὰ νοσοῦντα τῆς ἀρχῆς — ἄρας ἀπὸ τῆς παράλου Καισαρείας, εἰς τὴν Φιλίππου καλουμένην μεταβαίνει Καισάρειαν. Ἔνθα μέχρι μὲν ἡμερῶν εἴκοσι τὴν στρατιὰν διαναπαύων καὶ αὐτὸς ἐν εὐωχίαις ἦν, ἀποδιδοὺς τῷ θεῷ χαριστήρια τῶν

κατωρθωμένων. Ὡς δὲ αὐτῷ Τιβεριὰς μὲν νεωτερίζειν, ἀφεστάναι δὲ ἠγγέλλοντο Ταριχαῖαι, — μοῖρα δὲ τῆς Ἀγρίππα βασιλείας ἦσαν ἀμφότεραι, — πανταχόθεν τοὺς Ἰουδαίους καταστρέφεσθαι διεγνωκὼς, τὴν ἐπὶ τούτοις στρατείαν εὔκαιρον ἡγεῖτο, καὶ δι'
253 Ἀγρίππαν, ὡς εἰς ξενίας ἀμοιβὴν, σωφρονίσων αὐτῷ τὰς πόλεις. Πέμπει δὲ τὸν υἱὸν Τίτον εἰς Καισάρειαν, μετάξοντα τὴν ἐκεῖθεν στρατιὰν εἰς Σκυθόπολιν· ἣ δέ ἐστι μεγίστη τῆς Δεκαπόλεως, καὶ γείτων τῆς Τιβεριάδος. Ἔνθα καὶ αὐτὸς παραγενόμενος ἐκδέχεται τὸν υἱόν· καὶ μετὰ τριῶν ταγμάτων προελθὼν, στρατοπεδεύεται μὲν ἀπὸ τριάκοντα τῆς Τιβεριάδος σταδίων, κατά τινα σταθμὸν εὐσύνοπτον τοῖς νεωτερίζουσι, Σενναβρὶς ὀνομάζεται. Πέμπει δὲ δεκαδάρχην Οὐαλεριανὸν σὺν ἱππεῦσι πεντήκοντα, διαλεχθησόμενον εἰρηνικὰ τοῖς κατὰ τὴν πόλιν, καὶ προτρεψόμενον ἐπὶ πίστεις· ἠκηκόει γὰρ, ὡς ἐπιθυμοίη μὲν εἰρήνης ὁ δῆμος, καταστασιάζοιτο δὲ ὑπό τινων πολεμεῖν βιαζομένων. Προςελάσας δὲ ὁ Οὐαλεριανὸς, ἐπεὶ πλησίον ἦν τοῦ τείχους, αὐτός τε καταβαίνει, καὶ τοὺς σὺν αὐτῷ τῶν ἱππέων ἀπέβησεν, ὡς μὴ δοκοῖεν ἀκροβολισόμενοι παρεῖναι. Καὶ πρὶν εἰς λόγους ἐλθεῖν, ἐπεκθέουσιν αὐτῷ τῶν στασιαστῶν οἱ δυνατώτεροι μετὰ ὅπλων. Ἐξηγεῖτο δὲ αὐτῶν Ἰησοῦς τις ὀνόματι, παῖς Σαφάτου, τοῦ λῃστρικοῦ στίφους ὁ κορυφαιότατος. Οὐαλεριανὸς δὲ, οὔτε παρὰ τὰς ἐντολὰς τοῦ στρατηγοῦ συμβαλεῖν ἀσφαλὲς ἡγούμενος, εἰ καὶ τὸ νικᾶν εἴη βέβαιον, καὶ σφαλερὸν τὸ μάχεσθαι πολλοῖς μετ' ὀλίγων, ἀπαρασκεύων τε πρὸς ἑτοίμους, καὶ ἄλλως ἐκπλαγεὶς πρὸς τὴν ἀδόκητον τῶν Ἰουδαίων τόλμαν, φεύγει πεζὸς, ἕτεροί τε ὁμοίως πέντε τοὺς ἵππους ἀπέλιπον· οὓς οἱ περὶ τὸν Ἰησοῦν ἀπήγαγον εἰς τὴν πόλιν, γεγηθότες ὥςπερ μάχῃ ληφθέντας, οὐκ ἐνέδρᾳ.

8. Τοῦτο καταδείσαντες οἱ γηραιοὶ τοῦ δήμου

καὶ προέχειν δοκοῦντες, φεύγουσι μὲν εἰς τὸ τῶν Ῥωμαίων στρατόπεδον· ἐπαγόμενοι δὲ τὸν βασιλέα προσπίπτουσιν ἱκέται Οὐεσπασιανῷ, ‛μὴ σφᾶς περιϊδεῖν δεόμενοι, μηδὲ τὴν ὀλίγων ἀπόνοιαν ἡγήσασθαι τῆς πόλεως ὅλης· φείσασθαι δὲ τοῦ δήμου Ῥωμαίοις φιλοφρονοῦντος ἀεὶ, καὶ τοὺς αἰτίους τιμωρήσασθαι τῆς ἀποστάσεως, ὑφ᾽ ὧν αὐτοὶ φρουρηθῆναι μέχρι νῦν ἐπὶ δεξιὰς ἐπειγόμενοι πάλαι.’ Ταύταις ἐνεδίδου ταῖς ἱκεσίαις ὁ στρατηγὸς, καίτοι διὰ τὴν ἁρπαγὴν τῶν ἵππων ἐφ᾽ ὅλην ὠργισμένος τὴν πόλιν· καὶ γὰρ ἀγωνιῶντα περὶ αὐτῆς τὸν Ἀγρίππαν ἑώρα. Λαβόντων δὲ τούτων τοῦ δήμου δεξιὰς, οἱ περὶ τὸν Ἰησοῦν, οὐκ ἔτι ἀσφαλὲς ἡγούμενοι μένειν ἐπὶ τῆς Τιβεριάδος, εἰς Ταριχαίας ἀποδιδράσκουσι. Καὶ μεθ᾽ ἡμέραν Οὐεσπασιανὸς σὺν ἱππεῦσι προπέμπει πρὸς τὴν ἀκρώρειαν Τραϊανὸν, ἀποπειραθῆναι τοῦ πλήθους, εἰ πάντες εἰρηνικὰ φρονοῖεν. Ὡς δὲ ἔγνω τὸν δῆμον ὁμονοοῦντα τοῖς ἱκέταις, ἀναλαβὼν τὴν δύναμιν ᾔει πρὸς τὴν πόλιν. Οἱ δὲ τάς τε πύλας ἀνοίγουσιν αὐτῷ, καὶ μετ᾽ εὐφημιῶν ὑπήντων, σωτῆρα καὶ εὐεργέτην ἀνακαλοῦντες. Τῆς δὲ στρατιᾶς τριβομένης περὶ τὴν τῶν εἰσόδων στενότητα, παραῤῥῆξαι τοῦ κατὰ τὴν μεσημβρίαν τείχους Οὐεσπασιανὸς κελεύσας, 254
πλατύνει τὴν εἰσβολὴν αὐτοῖς. Ἁρπαγῆς μέντοι καὶ ὕβρεως ἀπέχεσθαι παρήγγελλε, τῷ βασιλεῖ χαριζόμενος, τῶν τε τειχῶν διὰ τοῦτον ἐφείσατο, συμμένειν πρὸς τὸ λοιπὸν ἐγγυωμένου τοὺς ἐν αὐτοῖς, καὶ τὰ ἄλλα κεκακωμένην τὴν πόλιν ἐκ τῆς στάσεως ἀνελάμβανεν.

CAP. X. 1. Ἔπειτα προελθὼν αὐτῆς τε μεταξὺ καὶ Ταριχαιῶν στρατοπεδεύεται, τειχίζει δὲ τὴν παρεμβολὴν ὀχυρωτέραν, ὑφορώμενος ἐκεῖ πολέμου τριβὴν αὐτῷ γενησομένην· συνέῤῥει γὰρ εἰς τὰς Ταριχαίας πᾶν τὸ νεωτερίζον, τῇ τε τῆς πόλεως ὀχυρό-

τητι καὶ τῇ λίμνῃ πεποιθότες, ἣ καλεῖται Γεννησὰρ πρὸς τῶν ἐπιχωρίων. Ἡ μὲν γὰρ πόλις, ὥςπερ ἡ Τιβεριὰς ὑπόρειος οὖσα, καθὰ μὴ τῇ λίμνῃ προςεκλύζετο, πάντοθεν ὑπὸ τοῦ Ἰωσήπου τετείχιστο καρτερῶς, ἐλάσσω μέντοι τῆς Τιβεριάδος. Τὸν μὲν γὰρ ἐκεῖ περίβολον ἐν ἀρχῇ τῆς ἀποστάσεως δαψιλείᾳ χρημάτων καὶ δυνάμεως ἐκρατύνατο· Ταριχαῖαι δὲ αὐτοῦ τὰ λείψανα τῆς φιλοτιμίας μετέλαβον. Σκάφη δὲ ἦν αὐτοῖς ἐπὶ τῆς λίμνης παρεσκευασμένα πολλὰ, πρός τε τὸ συμφυγεῖν ἐπὶ τῆς γῆς ἡττωμένους, καὶ ἂν εἰ δέοι διαναυμαχεῖν, ἐξηρτυμένα. Περιβαλλομένων δὲ τῶν Ῥωμαίων τὸ στρατόπεδον, οἱ περὶ τὸν Ἰησοῦν, οὔτε πρὸς τὸ πλῆθος, οὔτε πρὸς τὴν εὐταξίαν τῶν πολεμίων ὑποδείσαντες, προθέουσι, καὶ πρὸς τὴν πρώτην ἔφοδον τῶν τειχοποιῶν σκεδασθέντων, ὀλίγα τῆς δομήσεως σπαράξαντες, ὡς ἑώρων τοὺς ὁπλίτας ἀθροιζομένους, πρίν τι παθεῖν, εἰς τοὺς σφετέρους ἀνέφευγον· ἐπιδιώξαντες δὲ οἱ Ῥωμαῖοι συνελαύνουσιν αὐτοὺς εἰς τὰ σκάφη. Καὶ οἱ μὲν ἀναχθέντες εἰς ὅσον ἐξικνεῖσθαι τῶν Ῥωμαίων βάλλοντες δύναιντο, τάς τε ἀγκύρας ἔβαλλον, καὶ πυκνώσαντες ὥςπερ φάλαγγας τὰς ναῦς ἐπαλλήλους, τοῖς ἐπὶ τῆς γῆς διεναυμάχουν πολεμίοις. Οὐεσπασιανὸς δὲ τὸ πολὺ πλῆθος αὐτῶν ἠθροισμένον ἀκούων ἐν τῷ πρὸ τῆς πόλεως πεδίῳ, πέμπει τὸν υἱὸν σὺν ἱππεῦσιν ἑξακοσίοις ἐπιλέκτοις.

2. Ὁ δὲ ὑπέρογκον εὑρὼν τὴν τῶν πολεμίων πληθὺν, πρὸς μὲν τὸν πατέρα πέμπει, πλείονος δυνάμεως αὐτῷ δεῖν λέγων. Αὐτὸς δὲ τοὺς μὲν πλείους τῶν ἱππέων ὡρμημένους ὁρῶν, καὶ πρὶν ἀφικέσθαι βοήθειαν, ἔστι δὲ οὓς ἡσυχῇ πρὸς τὸ πλῆθος τῶν Ἰουδαίων καταπεπληγότας, ἐν ἐπηκόῳ στὰς, "Ἄνδρες," ἔφη, "Ῥωμαῖοι, καλὸν γὰρ ἐν ἀρχῇ τῶν λόγων ὑπομνῆσαι τοῦ γένους ὑμᾶς, ἵνα εἰδῆτε, τίνες ὄντες, καὶ πρὸς τίνας μάχεσθαι μέλ-

λομεν. Τὰς μὲν γὰρ ἡμετέρας χεῖρας οὐδὲν εἰς τοῦ-
το τῶν ἐπὶ τῆς οἰκουμένης διαπέφευγεν, Ἰουδαῖοι
δὲ, ἵνα εἴπω καὶ ὑπὲρ αὐτῶν, μέχρι νῦν οὐ κοπιῶ-
σιν ἡττώμενοι. Καὶ δεινὸν, ἑστώτων ἐκείνων ἐν 255
ταῖς κακοπραγίαις, ἡμᾶς τοῖς εὐτυχήμασιν ἐγκάμ-
νειν. Προθυμίας μὲν ὑμᾶς εἰς τὸ φανερὸν εὖ ἔχον-
τας χαίρω καὶ βλέπων, δέδοικα δὲ, μή τινι τὸ πλῆ-
θος τῶν πολεμίων κατάπληξιν λεληθυῖαν ἐνεργάση-
ται. Λογισάσθω δὴ πάλιν, οἷος πρὸς οἵους παρα-
τάξεται· καὶ διότι Ἰουδαῖοι μὲν, εἰ καὶ σφόδρα
τολμηταὶ καὶ θανάτου καταφρονοῦντες, ἀλλὰ ἀσύν-
τακτοί τε καὶ πολέμων ἄπειροι, καὶ ὄχλος ἂν ἄλ-
λως μὲν, οὐ στρατιὰ, λέγοιντο. Τὰ δὲ τῆς ἡμετέ-
ρας ἐμπειρίας καὶ τάξεως τί καὶ λέγειν δεῖ; Ἐπὶ
τούτῳ μέντοι γε μόνοι καὶ κατ' εἰρήνην ἀσκούμεθα
τοῖς ὅπλοις, ἵν' ἐν πολέμῳ μὴ πρὸς τὸ ἀντίπαλον
ἀριθμῶμεν ἑαυτούς. Ἐπεὶ καὶ τίς ὄνησις τῆς διη-
νεκοῦς στρατείας, ἐὰν ἴσοι πρὸς ἀστρατεύτους ἀντι-
τασσώμεθα; Λογίζεσθε δὲ, ὅτι καὶ πρὸς γυμνήτας
ὁπλῖται, καὶ ἱππεῖς πρὸς πεζοὺς, καὶ στρατηγούμε-
νοι πρὸς ἀστρατηγήτους διαγωνίζεσθε· καὶ ὡς ὑμᾶς
μὲν ταῦτα πολλαπλασίους ποιεῖ τὰ πλεονεκτήματα,
πολὺ δὲ τῶν πολεμίων ἀριθμὸν παραιρεῖται τὰ ἐλατ-
τώματα. Κατορθοῖ δὲ τοὺς πολέμους οὐ πλῆθος
ἀνθρώπων, καὶ ἂν ᾖ μάχιμον, ἀνδρεία δὲ, καὶ ἂν
ἐν ὀλίγοις ᾖ. Οἱ μέν γε καὶ παρατάξασθαι ῥᾴδιοι,
καὶ προςαμύνειν ἑαυτοῖς· αἱ δὲ ὑπέρογκοι δυνάμεις
ὑφ' ἑαυτῶν βλάπτονται πλέον, ἢ τῶν πολεμίων.
Ἰουδαίων μὲν οὖν τόλμα καὶ θράσος ἡγεῖται, ἀπο-
νοίας πάθη, κατὰ μὲν τὰς εὐπραγίας εὔτονα, σβεν-
νύμενα δὲ ἐν ἐλαχίστοις σφάλμασιν· ἡμῶν δὲ ἀρετὴ,
καὶ εὐπείθεια, καὶ τὸ γενναῖον, ὃ καὶ ἐν τοῖς εὐ-
τυχήμασιν ἀκμάζει, καὶ τοῖς πταίσμασιν οὐ μέχρι
τέλους σφάλλεται. Καὶ ὑπὲρ μειζόνων δὲ, ἢ Ἰου-
δαῖοι, διαγωνιεῖσθε. Καὶ γὰρ εἰ περὶ ἐλευθερίας
καὶ πατρίδος ἐκείνοις ὁ πόλεμος κινδυνεύεται, τί μεῖ-

Ff

ζον ἡμῖν εὐδοξίας, καὶ τὸ μὴ δοκεῖν μετὰ τὴν τῆς οἰκουμένης ἡγεμονίαν ἐν ἀντιπάλῳ τὰ Ἰουδαίων προτίθεσθαι; Σκεπτέον δὲ, ὅτι καὶ παθεῖν μὲν ἡμῖν οὐδὲν ἀνήκεστον φόβος· πολλοὶ γὰρ οἱ βοηθήσοντες, καὶ πλησίον. Ἁρπάσαι δὲ τὴν νίκην δυνάμεθα, καὶ χρὴ τοὺς ὑπὸ τοῦ πατρὸς ἡμῖν πεμπομένους συμμάχους φθάνειν, ἵν᾽ ἀκοινώνητόν τε ᾖ τὸ κατόρθωμα καὶ μεῖζον. Νομίζω δὲ ἐγὼ ἐπὶ τῆσδε τῆς ὥρας, καὶ τὸν πατέρα τὸν ἐμὸν κρίνεσθαι καὶ ἐμὲ καὶ ὑμᾶς, εἰ τῶν μὲν προκατωρθωμένων ἄξιος ἐκεῖνος, ἐγὼ δ᾽ ἐκείνου παῖς, στρατιῶται δὲ ὑμεῖς ἐμοῦ· καὶ γὰρ ἐκείνῳ τὸ νικᾶν ἔθος, καὶ ἐγὼ πρὸς αὐτὸν ὑποστρέφειν οὐκ ἂν ὑπομείναιμι ληφθείς. Ὑμεῖς δὲ πῶς οὐκ ἂν αἰσχύνεσθε προκινδυνεύοντος ἡγεμόνος ἡττώμενοι; Προκινδυνεύσω γὰρ, εὖ ἴστε, καὶ πρῶτος εἰς τοὺς πολεμίους ἐμβαλῶ. Μὴ λείπεσθε δὲ ὑμεῖς ἐμοῦ, πεπεισμένοι τὴν ὁρμὴν ἐμὴν παρακροτεῖσθαι θεῷ συμμάχῳ· καὶ προγινώσκετε
256 σαφῶς, ὅτι τῆς ἔξω μάχης πλέον τι κατορθώσομεν."

3. Ταῦτα τοῦ Τίτου διεξιόντος, προθυμία δαιμόνιος ἐμπίπτει τοῖς ἀνδράσι, καὶ προσγενομένου πρὶν συμβαλεῖν Τραϊανοῦ μετὰ τετρακοσίων ἱππέων, ἤσχαλλον ὡς μειουμένης τῆς νίκης αὐτοῖς διὰ τὴν κοινωνίαν. Ἔπεμψε δὲ Οὐεσπασιανὸς καὶ Ἀντώνιον Σίλωνα σὺν δισχιλίοις τοξόταις, κελεύσας καταλαβόντας τὸ ἀντικρὺ τῆς πόλεως ὄρος, τοὺς ἐπὶ τοῦ τείχους ἀνείργειν. Καὶ οἱ μὲν, ὡς προσετέτακτο, τοὺς ταύτῃ πειρωμένους ἐκβοηθεῖν περιέσχον· ὁ δὲ Τίτος πρῶτος τὸν ἵππον ἤλαυνε εἰς τοὺς πολεμίους, καὶ σὺν κραυγῇ μετ᾽ αὐτὸν οἱ λοιποὶ, παρατείναντες ἑαυτοὺς εἰς ὅσον ἐπεῖχον οἱ πολέμιοι τὸ πεδίον, παρὸ καὶ πολὺ πλείους ἔδοξαν. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι, καίτοι τήν τε ὁρμὴν καὶ τὴν εὐταξίαν αὐτῶν καταπλαγέντες, πρὸς ὀλίγον μὲν ἀντέσχον ταῖς ἐμβολαῖς· νυσσόμενοι δὲ τοῖς κοντοῖς, καὶ τῷ

ῥοίζῳ τῶν ἱππέων ἀνατρεπόμενοι συνεπατοῦντο. Πολλῶν δὲ πανταχοῦ φονευομένων, διασκίδνανται, καὶ πρὸς τὴν πόλιν, ὡς ἕκαστος εἶχε τάχους, ἔφευγον. Τίτος δὲ τοὺς μὲν κατόπιν προςκείμενος ἀνῄρει, τοὺς δὲ διεκπαίων ἀθρόους, τοὺς δὲ φθάνων κατὰ στόμα διήλαυνε, πολλοὺς δὲ συνηλόα περὶ ἀλλήλοις πεσόντας ἐμπηδῶν· πᾶσι δὲ τὰς πρὸς τὸ τεῖχος φυγὰς ὑπετέμνετο, καὶ πρὸς τὸ πεδίον ἀπέστρεφεν, ἕως τῷ πλήθει βιασάμενοι καὶ διεκπεσόντες εἰς τὴν πόλιν συνέφευγον.

4. Ἐκδέχεται δὲ αὐτοὺς στάσις εἴσω χαλεπή· τοῖς μὲν γὰρ ἐπιχωρίοις διά τε τὰς κτήσεις καὶ τὴν πόλιν, οὐκ ἐδόκει πολεμεῖν ἀπ᾽ ἀρχῆς, καὶ τότε διὰ τὴν ἧτταν πλέον. Ὁ δ᾽ ἔπηλυς πολὺς ὢν πλέον ἐβιάζετο, καὶ διωργισμένων ἐπ᾽ ἀλλήλοις κραυγή τε ἦν καὶ θόρυβος, ὡς ὅσον οὔπω φερομένων εἰς ὅπλα. Κατακούσας δὲ τῆς ταραχῆς Τίτος, οὐ γὰρ ἦν ἄποθεν τοῦ τείχους, “Οὗτος ἦν ὁ καιρὸς,” ἐκβοᾷ,” καὶ τί, συστρατιῶται, μέλλομεν, ἐκδιδόντος ἡμῖν Ἰουδαίους θεοῦ; Δέξασθε τὴν νίκην, οὐκ ἀκούετε βοῆς; Στασιάζουσιν οἱ τὰς χεῖρας ἡμῶν διαφυγόντες. Ἔχομεν τὴν πόλιν, ἐὰν ταχύνωμεν. Δεῖ δὲ πόνου πρὸς τῷ τάχει καὶ λήματος· οὐδὲν γὰρ τῶν μεγάλων φιλεῖ δίχα κινδύνου κατορθοῦσθαι. Φθάνειν δὲ οὐ μόνον χρὴ τὴν τῶν πολεμίων ὁμόνοιαν, οὓς ἀνάγκη διαλλάσσει ταχέως, ἀλλὰ καὶ τὴν τῶν ἡμετέρων βοήθειαν, ἵνα πρὸς τὸ νικῆσαι τοσοῦτο πλῆθος ὀλίγοι, καὶ τὴν πόλιν ἕλωμεν μόνοι.”

5. Ταῦθ᾽ ἅμα λέγων ἐπὶ τὸν ἵππον ἀναπηδᾷ, καὶ κατέθει πρὸς τὴν λίμνην, δι᾽ ἧς ἐλάσας πρῶτος εἰς τὴν πόλιν εἰςέρχεται, καὶ μετ᾽ αὐτὸν οἱ λοι- 257
ποί. Δέος δὲ πρὸς τὴν τόλμαν αὐτοῦ τοῖς ἐπὶ τῶν τειχῶν ἐνέπεσε, καὶ μάχεσθαι μὲν ἢ διακωλύειν οὐδεὶς ὑπέμενε. Λιπόντες δὲ τὴν φρουρὰν, οἱ μὲν περὶ τὸν Ἰησοῦν διὰ τῆς χώρας ἔφυγον, οἱ δὲ ἐπὶ τὴν λίμνην καταθέοντες ὑπαντιάζουσι τοῖς πολεμίοις

περιέπιπτον. Ἐκτείνοντο δὲ οἱ μὲν ἐπιβαίνοντες τῶν σκαφῶν, οἱ δὲ τοῖς ἀναχθεῖσι προςπίπτειν πειρώμενοι· πολὺς δὲ τῶν κατὰ τὴν πόλιν ἦν φόνος, τῶν μὲν ἐπηλύδων, ὅσοι μὴ διαφεύγειν ἔφθασαν, ἀντιτασσομένων, ἀμαχητὶ δὲ τῶν ἐπιχωρίων· κατὰ γὰρ ἐλπίδα δεξιᾶς, καὶ τὸ συνειδὸς τοῦ μὴ βεβουλεῦσθαι πολεμεῖν, μάχης ἀπετρέποντο· μέχρι Τίτος τοὺς μὲν αἰτίους ἀνελὼν, οἰκτείρας δὲ τοὺς ἐπιχωρίους, ἀνεπαύσατο φόνου. Καὶ οἱ μὲν εἰς τὴν λίμνην καταφυγόντες, ἐπεὶ τὴν πόλιν ἑαλωκυῖαν εἶδον, ὡς πορρωτάτω τῶν πολεμίων ἀνήχθησαν.

6. Τίτος δὲ ἐκπέμψας τινὰ τῶν ἱππέων εὐαγγελίζεται τῷ πατρὶ τὸ ἔργον. Ὁ δὲ, ὡς εἰκὸς, ὑπερησθεὶς τῇ τε τοῦ παιδὸς ἀρετῇ καὶ τῷ κατορθώματι, — μεγίστη γὰρ ἐδόκει καθῃρῆσθαι μοῖρα τοῦ πολέμου, — τότε μὲν ἐλθὼν περισχόντας τὴν πόλιν φρουρεῖν ἐκέλευσεν, ὡς μὴ διαλάθοι τις ἐξ αὐτῆς, καὶ κτείνειν ἐκέλευσεν. Τῇ δὲ ὑστεραίᾳ πρὸς τὴν λίμνην καταβὰς, σχεδίας ἐκέλευσε πήσσειν ἐπὶ τοὺς καταπεφευγότας· αἱ δ' ἐγίνοντο ταχέως, ἀφθονίᾳ τε ὕλης καὶ πλήθει τεχνιτῶν.

7. Ἡ δὲ λίμνη Γεννησὰρ μὲν ἀπὸ τῆς προςεχοῦς χώρας καλεῖται, σταδίων δὲ εὖρος οὖσα τεσσαράκοντα, καὶ πρὸς τούτοις ἑτέρων ἑκατὸν τὸ μῆκος, γλυκεῖά τε ὅμως ἐστὶ καὶ ποτιμωτάτη· καὶ γὰρ τῆς ἑλώδους παχύτητος ἔχει τὸ νᾶμα λεπτότερον, καθαρά τε ἐστὶ πάντοθεν αἰγιαλοῖς ἐπιλήγουσα καὶ ψάμμῳ, πρὸς δὲ εὔκρατος ἀρύσασθαι· ποταμοῦ μὲν ἢ κρήνης προςηνεστέρα, ψυχροτέρα δὲ, ἢ κατὰ λίμνης διάχυσιν, ἀεὶ μένουσα. Καὶ τὸ μὲν ὕδωρ οὐκ ἀποδεῖ χιόνος ἐξαιθριασθὲν, ὅπερ θέρους νυκτὸς ποιεῖν ἔθος τοῖς ἐπιχωρίοις. Γένη δὲ ἰχθύων ἐν αὐτῇ διάφορα πρὸς τοὺς ἀλλαχοῦ γεῦσίν τε καὶ ἰδέαν· μέση τε ὑπὸ τοῦ Ἰορδάνου τέμνεται. Καὶ δοκεῖ μὲν Ἰορδάνου πηγὴ τὸ Πάνειον· φέρεται δὲ ὑπὸ γῆν εἰς τοῦτο κρυπτῶς ἐκ τῆς καλουμένης Φιάλης.

Ἡ δὲ ἐστιν ἀνιόντων εἰς τὴν Τραχωνῖτιν ἀπὸ στα-
δίων ἑκατὸν εἴκοσι Καισαρείας, τῆς ὁδοῦ κατὰ δε-
ξιὸν μέρος οὐκ ἄποθεν· ἐκ μὲν οὖν τῆς περιφερείας
ἐτύμως Φιάλη κέκληται, τροχοειδὴς οὖσα λίμνη· μέ-
νειν δὲ ἐπὶ χείλους αὐτῇ ἀεὶ τὸ ὕδωρ, μήτε ὑπο-
νοστοῦν, μήτε ὑπερχεόμενον. Ἀγνοούμενος δὲ τέως
ὁ Ἰορδάνης ἐντεῦθεν ἄρχεσθαι διὰ τοῦ τετραρχή-
σαντος Τραχωνιτῶν ἠλέγχθη Φιλίππου· βαλὼν γὰρ
οὗτος εἰς τὴν Φιάλην ἄχυρα, κατὰ τὸ Πάνειον, ἔν-
θεν ἐδόκουν οἱ πάλαι γεννᾶσθαι τὸν ποταμὸν, εὗ- 258
ρεν ἀνενεχθέντα. Τοῦ γε μὴν Πανείου τὸ φυσικὸν
κάλλος ὑπὸ τῆς βασιλικῆς προςεξήσκηται πολυτε-
λείας, τὸν Ἀγρίππα πλοῦτον κεκοσμημένον. Ἀρχόμενος
δὲ φανεροῦ ῥεύματος ὁ Ἰορδάνης ἀπὸ τοῦδε τοῦ
ἄντρου, κόπτει μὲν τὰ τῆς Σεμεχωνίτιδος λίμνης
ἕλη τε καὶ τέλματα, διαμείψας δὲ ἑτέρους ἑκατὸν
εἴκοσι σταδίους μετὰ πόλιν Ἰουλιάδα διεκτέμνει τὴν
Γεννησὰρ μέσην, ἔπειτα πολλὴν ἀναμετρούμενος
ἐρημίαν εἰς τὴν Ἀσφαλτῖτιν ἔξεισι λίμνην.

8. Παρατείνει δὲ τὴν Γεννησὰρ ὁμώνυμος χώρα, θαυμαστὴ φύσιν τε καὶ κάλλος· οὔτε γὰρ αὐτή τι φυτὸν ἀρνεῖται διὰ τὴν πιότητα, καὶ πᾶν πεφυτεύκασιν οἱ νεμόμενοι· τοῦ δὲ ἀέρος τὸ εὔκρατον ἁρμόζει καὶ τοῖς διαφόροις. Καρύαι μέν γε, φυτῶν τὸ χειμεριώτατον, ἄπειροι τεθήλασιν· ἔνθα φοίνικες, οἳ καύματι τρέφονται, συκέαι τε καὶ ἐλαῖαι πλησίον τούτων, αἷς μαλθακώτερος ἀὴρ ἀποδέδεικται. Φιλοτιμίαν ἄν τις εἴποι τῆς φύσεως, βιασαμένης εἰς ἓν συναγαγεῖν τὰ μάχιμα, καὶ τῶν ὡρῶν ἀγαθὴν ἔριν, ἑκάστης ὥςπερ ἀντιποιουμένης τοῦ χωρίου· καὶ γὰρ οὐ μόνον τρέφει παρὰ δόξαν τὰς διαφόρους ὀπώρας, ἀλλὰ καὶ διαφυλάσσει. Τὰ μέν γε βασιλικώτατα, σταφυλήν τε καὶ σῦκον, δέκα μησὶν ἀδιαλείπτως χορηγεῖ, τοὺς δὲ λοιποὺς καρποὺς δι' ἔτους ὅλου περιγηράσκοντας αὐτοῖς· πρὸς γὰρ τῇ τῶν ἀέρων εὐκρασίᾳ καὶ πηγῇ διάρδεται γο-

νιμωτάτη, Καφαρναοὺμ αὐτὴν οἱ ἐπιχώριοι καλοῦσι. Ταύτην φλέβα τοῦ Νείλου τινὲς ἔδοξαν, ἐπεὶ γεννᾷ τῷ κατὰ τὴν Ἀλεξανδρέων λίμνην κορακίνῳ παραπλήσιον. Μῆκος δὲ τοῦ χωρίου παρατείνει κατὰ τὸν αἰγιαλὸν τῆς ὁμωνύμου λίμνης ἐπὶ σταδίους τριάκοντα, καὶ εὖρος εἴκοσι. Καὶ ταῦτα μὲν οὖν οὕτω φύσεως ἔχει.

9. Οὐεσπασιανὸς δὲ, ἐπεὶ παρεσκευάσθησαν αἱ σχεδίαι, τῆς δυνάμεως ἐπιβήσας, ὅσον ᾤετο τοῖς κατὰ τὴν λίμνην αὐταρκέσειν, ἐπανήγετο. Τοῖς δὲ συνελαυνομένοις οὔτε ἐπὶ γῆν διαφεύγειν ἐνῆν, ἐκπεπολεμωμένων πάντων, οὔτε ἐξ ἴσου διαναυμαχεῖν. Τά τε γὰρ σκάφη, μικρὰ ὄντα καὶ λῃστρικὰ,* πρὸς τὰς σχεδίας ἦν ἀσθενῆ· καὶ καθ' ἕκαστον ἐμπλέοντες ὀλίγοι, πρὸς ἀθρόους ἐφεστῶτας τοὺς Ῥωμαίους ἐγγίζειν ἐδεδοίκεσαν. Ὅμως δὲ οὖν ἐμπεριπλέοντες τὰς σχεδίας, ἔστι δὲ ὅπου καὶ πλησιάζοντες πόῤῥωθεν τοὺς Ῥωμαίους ἔβαλλον λίθοις, καὶ παροξύνοντες ἐγγύθεν ἔπαιον. Ἐκακοῦντο δὲ αὐτοὶ πλέον κατ' ἀμφότερα· ταῖς γὰρ χερμάσιν οὐδὲν δρῶν-
259 τες ὅτι μὴ κτύπον ἐπάλληλον, εἰς γὰρ πεφραγμένους ἔβαλλον, καὶ ἐφικτοὶ τοῖς Ῥωμαίων ἐγίνοντο βέλεσι, καὶ πλησιάζειν τολμῶντες, πρὶν δρᾶσαί τι, παθεῖν ἔφθανον, καὶ σὺν αὐτοῖς ἐβαπτίζοντο σκάφεσι. Τῶν δὲ διεκπαίειν πειρωμένων, πολλοὺς μὲν ἐφικνούμενοι κοντοῖς διέπειρον, οὓς δὲ ξιφήρεις ἐπικαταπηδῶντες εἰς τὰ σκάφη, τινὰς δὲ συντρεχούσαις ταῖς σχεδίαις ἐναποληφθέντας μέσους εἷλον ἅμα ταῖς ἁλιάσι. Τῶν δὲ βαπτισθέντων τοὺς ἀνανεύοντας ἢ βέλος ἔφθανεν, ἢ σχεδία κατελάμβανε, καὶ προσβαίνειν ὑπ' ἀμηχανίας εἰς τοὺς ἐχθροὺς πειρωμένων, ἢ κεφαλὰς ἢ χεῖρας ἀπέκοπτον οἱ Ῥωμαῖοι. Πολλή τε ἦν αὐτῶν καὶ ποικίλη φθορὰ πανταχοῦ, μέχρι τραπέντες ἐπὶ τὴν γῆν ἐξώθησαν οἱ λοιποὶ, κεκυκλωμένων αὐτοῖς τῶν ἁλιάδων. Ἐκκλειόμενοι δὲ πολλοὶ μὲν ἐν αὐτῇ κατηκοντίζοντο τῇ λίμνῃ, πολ-

λους δὲ ἐκπηδήσαντας οἱ Ῥωμαῖοι διέφθειραν ἐπὶ γῆς. Ἦν δὲ ἰδεῖν κεκραμένην μὲν αἵματι, πεπληρωμένην δὲ νεκρῶν τὴν λίμνην ἅπασαν· διεσώθη γὰρ οὐδείς. Δεινὴ δὲ ταῖς ἑξῆς ἡμέραις περιέσχε τὴν χώραν ὀδμή τε καὶ ὄψις· οἱ μὲν γὰρ αἰγιαλοὶ ναυαγίων ἅμα καὶ διοιδούντων ἔγεμον σωμάτων. Ἐγκαιόμενοι δὲ καὶ μυδῶντες οἱ νεκροὶ τὸν ἀέρα διέφθειρον, ὡς μὴ μόνον οἰκτρὸν Ἰουδαίοις γενέσθαι τὸ πάθος, ἀλλὰ καὶ διὰ μίσους τοῖς δράσασιν ἐλθεῖν. Τοῦτο μὲν ἐκείνης τῆς ναυμαχίας τὸ τέλος. Ἀπέθανον δὲ σὺν τοῖς ἐπὶ πόλεως πρότερον πεσοῦσιν ἑξακισχίλιοι πεντακόσιοι.

10. Οὐεσπασιανὸς δὲ μετὰ τὴν μάχην καθίζει μὲν ἐπὶ τοῦ βήματος ἐν Ταριχαίαις, διακρίνων δὲ ἀπὸ τῶν ἐπιχωρίων τὴν ἔπηλυν λεὼν — κατάρξαι γὰρ οὗτος ἐδόκει πολέμου — μετὰ τῶν ἡγεμόνων, εἰ χρὴ καὶ τούτους σώζειν ἐσκέπτετο. Φαμένων δὲ τούτων, ‚βλαβερὰν ἔσεσθαι τὴν ἄφεσιν αὐτῶν· οὐ γὰρ ἠρεμήσειν ἀπολυθέντας, ἀνθρώπους ἐστερημένους μὲν πατρίδων, βιάζεσθαι δὲ καὶ πρὸς οὓς ἂν καταφύγωσι πολεμεῖν δυναμένους,' Οὐεσπασιανὸς, ὡς μὲν οὔτε ἄξιοι σωτηρίας εἶεν, καὶ διαφεύξονται κατὰ τῶν ἀφέντων ἐγίνωσκε, τὸν τρόπον τῆς ἀναιρέσεως αὐτῶν διενοεῖτο. Καὶ γὰρ αὐτόθι κτείνων, ἐκπολεμώσειν ὑφωρᾶτο τοὺς ἐπιχωρίους, οὐ γὰρ ἀνέξεσθαι φονευομένων ἱκετῶν τοσούτων παρ' αὐτοῖς· καὶ μετὰ πίστεις ἐπιθέσθαι προελθοῦσιν οὐχ ὑπέμενεν. Ἐξενίκων δὲ οἱ φίλοι, ‚μηδὲν κατὰ Ἰουδαίων ἀσεβὲς εἶναι λέγοντες, καὶ χρῆναι τὸ συμφέρον αἱρεῖσθαι πρὸ τοῦ πρέποντος, ὅταν ᾖ μὴ δυνατὸν ἄμφω.' Κατανεύσας οὖν αὐτοῖς ἄδειαν ἀμφίβολον, ἐπέτρεψεν ἐξιέναι διὰ μόνης τῆς ἐπὶ Τιβεριάδα φερούσης ὁδοῦ. Τῶν δὲ ταχέως πιστευσάντων οἷς ἤθελον, καὶ μετὰ φανερῶν ἐν ἀσφαλεῖ τῶν χρημάτων, ᾗπερ ἐπετράπη, χωρούντων, διαλαμβάνουσι μὲν οἱ Ῥωμαῖοι τὴν μέχρι Τιβεριάδος πᾶσαν, ὡς

μή τις ἀποκλίνειεν, συγκλείουσι δὲ αὐτοὺς εἰς τὴν
πόλιν. Καὶ Οὐεσπασιανὸς ἐπελθὼν ἵστησι πάντας
ἐν τῷ σταδίῳ, καὶ γηραιοὺς μὲν ἅμα τοῖς ἀχρή-
στοις, διακοσίους ἐπὶ χιλίοις ὄντας, ἀνελεῖν ἐκέλευ-
σεν· τῶν δὲ νέων ἐπιλέξας τοὺς ἰσχυροτάτους ἑξα-
260 κισχιλίους ἔπεμπεν εἰς τὸν ἰσθμὸν Νέρωνι, καὶ τὸ
λοιπὸν πλῆθος εἰς τρισμυρίους καὶ τετρακοσίους ὄν-
τας πιπράσκει, χωρὶς τῶν Ἀγρίππᾳ χαρισθέντων.
Τοὺς γὰρ ἐκ τῆς τούτου βασιλείας ἐπέτρεπεν αὐτῷ
ποιεῖν, ὅ τι βούλοιτο· πιπράσκει δὲ καὶ τούτους ὁ
βασιλεύς. Ὁ μέν γε ἄλλος ὄχλος, Τραχωνῖται, καὶ
Γαυλανῖται, καὶ Ἱππηνοὶ, καὶ οἱ ἐκ τῆς Γαδαρίτι-
δος, τὸ πλέον ἦσαν στασιασταὶ καὶ φυγάδες, καὶ
οἷς τὰ τῆς εἰρήνης ὀνείδη τὸν πόλεμον προεξένει.
Ἑάλωσαν δὲ Γορπιαίου μηνὸς ὀγδόῃ.

---

261 262

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ

Η

ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ἹΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ἉΛΩΣΕΩΣ

ΛΟΓΟΣ Δ.

Argumentum Lib. IV.

(1) Τῆς Γαμάλας πολιορκία καὶ ἅλωσις. (2) Ἡ τῶν Γισχάλων ἔκδοσις. (3) Περὶ Ἰωάννου τοῦ Γισγαληνοῦ, καὶ περὶ τῶν ζηλωτῶν. (4) Ἰδουμαῖοι ὑπὸ τῶν ζηλωτῶν κληθέντες ἔρχονται εἰς Ἱεροσόλυμα. (5) Ἰδουμαίων καὶ ζηλωτῶν ὠμότης, καὶ ὡς ἐκεῖνοι ἀνεχώρησαν ἐπ' οἴκου. (6) Ὡς ζηλωταὶ πλείονας κατὰ τὴν πόλιν ἀπέκτεινον. (7) Ὅπως Ἰωάννης ἐτυραννίωσεν, καὶ ὡς Οὐεσπασιανὸς τὴν Γάδαραν εἷλεν. (8) Ὅπως Οὐεσπασιανὸς ὥρμησε καταλύειν τὸν πόλεμον Ἰουδαϊκόν. Ἔκφρασις Ἱεριχοῦντος καὶ Μεγάλου πεδίου καὶ τῆς Ἀσφαλτίτιδος λίμνης. (9) Οὐεσπασιανοῦ παρα-

σκευαζομένου πολιορκεῖν Ἱεροσόλυμα, τελευτᾷ Νέρων. (10) Ὡς οἱ στρατιῶται ἐν Ἰουδαίᾳ καὶ Αἰγύπτῳ Οὐεσπασιανὸν ἀνηγόρευσαν αὐτοκράτορα. (11) Ὅτι, Οὐιτελλίου ἡττηθέντος καὶ ἀναιρεθέντος, Οὐεσπασιανὸς εἰς Ῥώμην ὥρμησεν.

CAP. I. 1. Ὅσοι δὲ μετὰ τὴν Ἰωταπάτων ἅλωσιν 263
Γαλιλαῖοι Ῥωμαίων ἀφεστήκεσαν, οὗτοι τῶν ἐν
Ταριχαίαις ἡττηθέντων προσεχώρουν· καὶ παρέλα-
βον πάντα Ῥωμαῖοι τὰ φρούρια, καὶ τὰς πόλεις,
πλὴν Γισχάλων καὶ τῶν τὸ Ἰταβύριον ὄρος κατει-
ληφότων. Συνέστη δὲ τούτοις καὶ Γάμαλα πόλις
Ταριχαιῶν ἄντικρυς ὑπὲρ τὴν λίμνην κειμένη. Τῆς
δὲ Ἀγρίππα λήξεως αὕτη τε ἦν, καὶ Σωγάνη καὶ
Σελεύκεια· καὶ αἱ μὲν ἐκ τῆς Γαυλανίτιδος ἀμφό-
τεραι· τοῦ γὰρ ἄνω καλουμένου Γαυλανᾶ μέρος ἦν
ἡ Σωγάνη, τοῦ κάτω δὲ ἡ Γάμαλα· Σελεύκεια δὲ
πρὸς τῇ Σεμεχωνιτῶν λίμνῃ. Ταύτῃ τριάκοντα μὲν
εὖρος, ἑξήκοντα δὲ μῆκος στάδια· διατείνει δὲ αὐ-
τῆς τὰ ἕλη μέχρι Δάφνης χωρίου, τά τε ἄλλα τρυ-
φεροῦ, καὶ πηγὰς ἔχοντος, αἳ, τρέφουσαι τὸν μι-
κρὸν καλούμενον Ἰορδάνην ὑπὸ τὸν τῆς χρυσῆς βοὸς 264
νεὼν, προςπέμπουσι τῷ μεγάλῳ. Τοὺς μὲν οὖν ἐπὶ
Σωγάνην καὶ Σελεύκειαν, παρὰ τὴν ἀρχὴν τῆς ἀπο-
στάσεως, δεξιαῖς Ἀγρίππας προςηγάγετο· Γάμαλα δὲ
οὐ προςεχώρει, πεποιθυῖα τῇ δυςχωρίᾳ πλέον τῶν
Ἰωταπάτων· τραχὺς γὰρ αὐχὴν, ἐφ' ὑψηλοῦ κατα-
τείνων ὄρους, μέσον ἐπαίρει τένοντα. Μηκύνεται
δὲ ἐκ τῆς ὑπεροχῆς εἰς τὸ ἔμπροσθεν ἐκκλίνων ὅσον
κατόπιν, ὡς εἰκάζεσθαι καμήλῳ τὸ σχῆμα, παρ' ἣν
ὠνόμασται, τὸ τρανὸν τῆς κλήσεως οὐκ ἐξακριβούν-
των τῶν ἐπιχωρίων· κατὰ πλευρὰν μὲν δὴ καὶ πρός-
ωπον εἰς φάραγγας ἀβάτους περισχίζεται, τὸ κατ'
οὐρὰν δὲ ὀλίγον ἀναφεύγει τῆς δυςχωρίας, ὅθεν
ἀπήρτηται τοῦ ὄρους, καὶ τοῦτο ἐπικαρσίᾳ παρα-
κόψαντες τάφρῳ δύςβατον οἱ ἐπιχώριοι κατεσκεύα-

σαν. Πρὸς ὀρθίῳ δὲ τῇ λαγόνι, δεδομημέναι πεπύκνωνται δεινῶς ἐπ' ἀλλήλαις αἱ οἰκίαι, κρημνιζομένῃ τε ἡ πόλις ἐοικυῖα κατέτρεχεν εἰς ἑαυτὴν ἀπὸ τῆς ὀξύτητος· καὶ πρὸς μεσημβρίαν μὲν ἔκλινεν. Ὁ νότιος δὲ αὐτῆς ὄχθος, εἰς ἄπειρον ὕψος ἀνατείνων, ἄκρα τῆς πόλεως ἦν· ἀτείχιστος δὲ ὑπὲρ αὐτὴν κρημνὸς ἦν, εἰς τὴν βαθυτάτην κατατείνων φάραγγα. Πηγὴ δὲ ἐντὸς τοῦ τείχους, ἐφ' ἣν τὸ ἄστυ κατέληγεν.

2. Οὕτως οὖσαν φύσει δύσμαχον τὴν πόλιν τειχίζων ὁ Ἰώσηπος ἐποίησεν ὀχυρωτέραν ὑπονόμοις τε καὶ διώρυξιν. Οἱ δὲ ἐν αὐτῇ φύσει μὲν τοῦ χωρίου θαῤῥαλεώτεροι τῶν κατὰ τὴν Ἰωταπάτην ἦσαν, πολὺ δὲ ἐλάττους μάχιμοι, καὶ τῷ τόπῳ πεποιθότες οὐδὲ πλείονας ὑπελάμβανον· πεπλήρωτο γὰρ ἡ πόλις διὰ τὴν ὀχυρότητα συμφυγόντων, παρὸ καὶ τοῖς ὑπ' Ἀγρίππα προπεμφθεῖσιν ἐπὶ τὴν πολιορκίαν ἀντεῖχεν ἐπὶ μῆνας ἑπτά.

3. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἄρας ἀπὸ τῆς Ἀμμαοῦς, ἔνθα πρὸ τῆς Τιβεριάδος ἐστρατοπεδεύκει, — μεθερμηνευομένη δὲ Ἀμμαοῦς θερμὰ λέγοιτ' ἄν, ἔστι γὰρ ἐν αὐτῇ πηγὴ θερμῶν ὑδάτων πρὸς ἄκεσιν ἐπιτήδειος, — ἀφικνεῖται πρὸς τὴν Γάμαλαν. Καὶ πᾶσαν μὲν κυκλώσασθαι φυλακῇ τὴν πόλιν οὐχ οἷός τε ἦν οὕτω διακειμένην· πρὸς δὲ τοῖς δυνατοῖς φρουροὺς καθίστησι, καὶ τὸ ὑπερκείμενον ὄρος καταλαμβάνεται. Τειχισαμένων δὲ, ὥςπερ ἔθος, τῶν ταγμάτων ὑπὲρ αὐτοῦ στρατόπεδον, χωμάτων ἤρχετο κατ' οὐρὰν, καὶ τὸ μὲν κατ' ἀνατολὰς αὐτῷ μέρος, ᾗπερ ὁ ἀνωτάτω τῆς πόλεως πύργος ἦν, ἐφ' οὗ τὸ πέμπτον καὶ δέκατον ἐστρατοπεδεύκει τάγμα. Καὶ τὸ πέμπτον μὲν κατὰ μέσην ἐξειργάζετο τὴν πόλιν, τὰς διώρυγας δὲ ἀνεπλήρου καὶ τὰς φάραγγας τὸ δέκατον. Καὶ ἐν τούτῳ προσελθόντα τοῖς τείχεσιν Ἀγρίππαν τὸν βασιλέα, καὶ περὶ παραδόσεως τοῖς ἐφεστῶσι πειρώμενον διαλέγεσθαι, βάλλει

*τις τῶν σφενδονητῶν κατὰ τὸν δεξιὸν ἀγκῶνα λί-
θῳ. Καὶ ὁ μὲν ὑπὸ τῶν οἰκείων θᾶττον περιε-* 265
*σχέθη· Ῥωμαίους δὲ ἐπήγειρεν εἰς τὴν πολιορκίαν
ὀργή τε περὶ τοῦ βασιλέως, καὶ περὶ σφῶν αὐτῶν
δέος· οὐ γὰρ ἀπολείψειν ὠμότητος ὑπερβολὴν κατ'
ἀλλοφύλων καὶ πολεμίων, τοὺς πρὸς ὁμόφυλον καὶ
τῶν συμφερόντων αὐτοῖς σύμβουλον οὕτως ἀγριω-
θέντας.*

*4. Συντελεσθέντων οὖν τῶν χωμάτων θᾶττον,
πλήθει χειρῶν καὶ τῶν πραττομένων ἔθει, προςῆ-
γον τὰς μηχανάς. Οἱ δὲ περὶ τὸν Χάρητα καὶ Ἰώ-
σηπον, οὗτοι γὰρ ἦσαν τῶν κατὰ τὴν πόλιν δυνα-
τώτατοι, καίπερ καταπεπληγότας τοὺς ὁπλίτας τάτ-
τουσιν, ἐπειδὴ μέχρι πολλοῦ πρὸς τὴν πολιορκίαν
ἀνθέξειν οὐχ ὑπελάμβανον, ὕδατι καὶ τοῖς ἄλλοις
ἐπιτηδείοις μὴ διαρκούμενοι. Παρακροτήσαντες δὲ
ὅμως ἐξήγαγον ἐπὶ τὸ τεῖχος· καὶ πρὸς ὀλίγον μὲν
ἀπημύναντο τοὺς προςάγοντας τὰς μηχανὰς, βαλλό-
μενοι δὲ τοῖς καταπελτικοῖς, καὶ τοῖς πετροβόλοις,
ἀνεχώρουν εἰς τὴν πόλιν. Καὶ προςάγοντες οἱ Ῥω-
μαῖοι τριχόθεν τοὺς κριοὺς, διασείουσι μὲν τὸ τεῖ-
χος. Ὑπὲρ δὲ τῶν ῥιφθέντων εἰςχεόμενοι, μετὰ
πολλοῦ σαλπίγγων ἤχου, καὶ κτύπου τῶν ὅπλων, αὐ-
τοί τε ἐπαλαλάζοντες συνεῤῥήγνυντο τοῖς κατὰ τὴν
πόλιν. Οἱ δὲ τέως μὲν κατὰ τὰς πρώτας εἰςόδους
ἐνιστάμενοι, προσωτέρω χωρεῖν ἐκώλυον, καὶ καρ-
τερῶς τοὺς Ῥωμαίους ἀνεῖργον. Βιαζόμενοί τε ὑπὸ
πολλῶν, καὶ πάντοθεν τρεπόντων, καὶ πρὸς τὰ ὑψη-
λὰ τῆς πόλεως προςκειμένοις τοῖς πολεμίοις ἐξ ὑπο-
στροφῆς ἐπιπεσόντες, συνώθουν εἰς τὸ κάταντες,
καὶ τῇ στενότητι καὶ δυςχωρίᾳ θλιβομένους ἀνῄρουν.
Οἱ δὲ μήτε τοὺς κατὰ κορυφὴν ἀμύνασθαι δυνάμε-
νοι, μήτε διεκπαίειν τῶν σφετέρων πρόσω βιαζομέ-
νων, ἐπὶ τὰς οἰκίας τῶν πολεμίων, πρόςγειοι γὰρ
ἦσαν, ἀνέφευγον. Αἱ δὲ ταχέως κατηρείποντο πλη-
ρούμεναι, καὶ τὸ βάρος μὴ φέρουσαι· κατέσειε δὲ*

πολλὰς μία τῶν ὑπ' αὐτὴν πεσοῦσα, καὶ πάλιν ἐκεῖναι τὰς ὑπ' αὐτάς. Τοῦτο πλείστους διέφθειρε τῶν Ῥωμαίων, ὑπὸ γὰρ ἀμηχανίας, καίτοι συνιζούσας ὁρῶντες, ἐπεπήδων ταῖς στέγαις. Καὶ πολλοὶ μὲν κατεχώννυντο τοῖς ἐρειπίοις, πολλοὶ δὲ ὑποφεύγοντες, μέρη τοῦ σώματος κατελαμβάνοντο, πλείστους δὲ ὁ κονιορτὸς ἄγχων ἀνῄρει. Συνεργείαν θεοῦ τοῦτο Γαμαλεῖς ὑπελάμβανον· καὶ τῆς κατὰ σφᾶς ἀμελοῦντες βλάβης ἐπέκειντο, πρός τε τὰ τέγη τοὺς πολεμίους ἀνώθουν, καὶ τοὺς κατολισθαίνοντας ἐν ὀξέσι τοῖς στενωποῖς, καὶ ἀεὶ τοὺς πίπτοντας ὕπερθεν βάλλοντες ἔκτεινον. Καὶ τὰ μὲν ἐρείπια χερμάδων πλῆθος αὐτοῖς, σίδηρον δὲ παρεῖχον οἱ τῶν πολεμίων νεκροί· παρασπῶντες γὰρ τὰ τῶν πεσόντων ξίφη, κατὰ τῶν δυςθανατώντων ἐχρῶντο. Πολλοὶ δὲ, ἀποπίπτοντες ἤδη τῶν δωμάτων, σφᾶς αὐτοὺς βάλλοντες ἔθνησκον. Ἦν δὲ οὐδὲ τραπέντων ἡ φυγὴ ῥᾴδιος· κατὰ γὰρ ἄγνοιαν τῶν ὁδῶν καὶ παχύτητα τοῦ κονιορτοῦ, μηδὲ ἀλλήλους ἐπιγινώσκοντες ἀνειλοῦντο, καὶ περὶ σφᾶς ἔπιπτον.

5. Οἱ μὲν οὖν μόλις εὑρίσκοντες τὰς ἐξόδους, ἀνεχώρησαν ἐκ τῆς πόλεως. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἀεὶ προςμένων τοῖς πονουμένοις, δεινὸν γάρ τι πάθος
266 αὐτὸν εἰςῄει κατερειπομένην ὁρῶντα περὶ τῷ στρατῷ τὴν πόλιν, ἐν λήθῃ τοῦ κατ' αὐτὸν ἀσφαλοῦς γενόμενος, λανθάνει κατὰ μικρὸν ἀνωτάτω τῆς πόλεως προελθὼν, ἔνθα μέσοις ἐγκαταλείπεται τοῖς κινδύνοις μετ' ὀλίγων παντελῶς, — οὐδὲ γὰρ ὁ παῖς αὐτῷ Τίτος τότε συμπαρῆν, τηνικαῦτα πρὸς Μουκιανὸν εἰς Συρίαν ἀπεσταλμένος, — τραπῆναι μὲν οὖν οὔτε ἀσφαλὲς, οὔτε πρέπον ἡγήσατο, μνησθεὶς δὲ τῶν ἀπὸ νεότητος αὐτῷ πεπονημένων, καὶ τῆς ἰδίας ἀρετῆς, ὥςπερ ἔνθους γενόμενος, συνασπίζει μὲν τοὺς ἅμα αὐτῷ τά τε σώματα καὶ τὰς πανοπλίας. Ἐνυφίσταται δὲ κατὰ κορυφὴν ἐπιῤῥέοντα τὸν πόλεμον, καὶ οὔτε ἀνδρῶν πλῆθος οὔτε βελῶν

ὑποπτήξας ἐπέμενε, μέχρι δαιμονίου τὸ παράστημα τῆς ψυχῆς συννοήσαντες οἱ πολέμιοι, ταῖς ὁρμαῖς ἐνέδοσαν. Ἀτονώτερον δὲ προςκειμένων, αὐτὸς ἐπὶ πόδα ἀνεχώρει, νῶτα μὴ δεικνὺς ἕως ἔξω τοῦ τείχους ἐγένετο. Πλεῖστοι μὲν οὖν Ῥωμαίων κατὰ ταύτην ἔπεσον τὴν μάχην, ἐν οἷς καὶ ὁ δεκαδάρχης Ἐβούτιος, ἀνὴρ οὐ μόνον ἐφ' ἧς ἔπεσε παρατάξεως, ἀλλὰ πανταχοῦ καὶ πρότερον γενναιότατος φανεὶς, καὶ πλεῖστα κακὰ Ἰουδαίοις ἐργασάμενος. Ἑκατοντάρχης δέ τις, Γάλλος ὀνόματι, μετὰ στρατιωτῶν δέκα περισχεθεὶς ἐν τῇ ταραχῇ, κατέδυ μέν εἴς τινος οἰκίαν. Τῶν δὲ ἐν αὐτῇ διαλαλούντων παρὰ δεῖπνον, ὅσα κατὰ τῶν Ῥωμαίων ἢ περὶ σφῶν ὁ δῆμος ἐβουλεύετο, κατακροασάμενος, — ἦν δὲ αὐτός τε καὶ οἱ σὺν αὐτῷ Σύροι, — νύκτωρ ἐπανίσταται, καὶ πάντας ἀποσφάξας μετὰ τῶν στρατιωτῶν εἰς τοὺς Ῥωμαίους διασώζεται.

6. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἀθυμοῦσαν τὴν στρατιὰν ἐννοίᾳ πταισμάτων, καὶ διότι τέως οὐδαμοῦ τηλικαύτῃ συμφορᾷ κέχρηντο, τό γε μὴν πλέον αἰδουμένους ἐπὶ τῷ τὸν στρατηγὸν μόνον τοῖς κινδύνοις ἐγκαταλιπεῖν, παρεμυθεῖτο, περὶ μὲν τοῦ καθ' αὐτὸν ὑποστελλόμενος, ὡς μηδὲ τὴν ἀρχὴν μέμφεσθαι δοκοίη, "Δεῖν δὲ τὰ κοινὰ" λέγων "ἀνδρείως φέρειν, τὴν τοῦ πολέμου φύσιν ἐννοοῦντας, ὡς οὐδαμοῦ τὸ νικᾶν ἀναιμωτὶ περιγίνεται· ἡ γὰρ παλίμπους τύχη περιΐσταται. Τοσαύτας μέντοι μυριάδας Ἰουδαίων ἀνελόντας, αὐτοὺς ὀλίγην τῷ δαίμονι δεδωκέναι συμβολήν· εἶναι δὲ, ὥςπερ ἀπειροκάλων, τὸ λίαν ἐπαίρεσθαι ταῖς εὐπραγίαις, οὕτως ἀνάνδρων, τὸ καταπτήσσειν ἐν τοῖς πταίσμασιν. Ὀξεῖα γὰρ ἐν ἀμφοτέροις ἡ μεταβολὴ, καὶ ἐκεῖνος ἄριστος, ὁ καὶ ἐν τοῖς ἀτυχήμασι νήφων, ἵνα μένῃ καὶ δι' εὐθυμίας ἀνακαλαίων τὰ σφάλματα. Τὰ μέντοι συμβεβηκότα νῦν οὔτε μαλακισθέντων ἡμῶν, οὔτε παρὰ τὴν τῶν Ἰουδαίων ἀρετὴν γέγονεν, ἀλλὰ καὶ ἐκείνοις τοῦ

πλεονεκτῆσαι, καὶ τοῦ διαμαρτεῖν ἡμῖν αἴτιον ἡ δυςχωρία. Καθ' ἣν ἄν τις ὑμῶν μέμψαιτο τῆς ὁρμῆς τὸ ἀταμίευτον· ἀναφυγόντων γὰρ ἐπὶ τὰ ὑψηλὰ
267 τῶν πολεμίων ἑαυτοὺς ὑποστέλλειν ἐχρῆν, καὶ μὴ κατὰ κορυφὴν ἱσταμένοις τοῖς κινδύνοις ἕπεσθαι· κρατοῦντας δὲ τῆς κάτω πόλεως, κατ' ὀλίγον προκαλεῖσθαι τοὺς ἀναφεύγοντας εἰς ἀσφαλῆ καὶ ἑδραίαν μάχην. Νυνὶ δὲ ἀκρατῶς ἐπὶ τὴν νίκην ἐπειγόμενοι, τῆς ἀσφαλείας ἠμελήσατε. Τὸ δὲ ἀπερίσκεπτον ἐν πολέμῳ, καὶ τῆς ὁρμῆς μανιῶδες, οὐ πρὸς Ῥωμαίων, οἳ πάντα ἐμπειρίᾳ καὶ τάξει κατορθοῦμεν, ἀλλὰ βαρβαρικὸν, καὶ ᾧ μάλιστα Ἰουδαῖοι κρατοῦνται. Χρὴ τοίνυν ἐπὶ τὴν ἑαυτῶν ἀρετὴν ἀναδραμεῖν, καὶ θυμοῦσθαι μᾶλλον, ἢ προςαθυμεῖν τῷ παρ' ἀξίαν πταίσματι. Τὴν δὲ ἀρίστην ἕκαστος ἐκ τῆς ἰδίας χειρὸς ἐπιζητείτω παραμυθίαν· οὕτω γὰρ τοῖς ἀπολωλόσι τιμωρήσασθαι, καὶ τοὺς ἀνελόντας ἀμυνεῖσθαι. Πειράσομαι δὲ ἐγὼ, καθάπερ νῦν, ἐπὶ τῆς πάσης μάχης προάγειν τε ὑμῶν εἰς τοὺς πολεμίους, καὶ τελευταῖος ἀποχωρεῖν."

7. Ὁ μὲν οὖν τοιαῦτα λέγων τὴν στρατιὰν ἀνελάμβανε. Τοῖς δὲ Γαμαλεῦσι πρὸς ὀλίγον μὲν θαῤῥῆσαι τῷ κατορθώματι παρέστη, παραλόγως τε συμβάντι καὶ μεγάλως· λογιζόμενοι δὲ ὕστερον ἀφῃρῆσθαι σφᾶς αὐτοὺς καὶ δεξιᾶς ἐλπίδα, τό τε μὴ δύνασθαι διαφεύγειν ἐννοοῦντες, — ἤδη γὰρ ἐπέλιπε τὰ ἐπιτήδεια, — δεινῶς ἠθύμουν, καὶ ταῖς ψυχαῖς ἀναπεπτώκεσαν. Οὐ μὴν εἰς τὸ δυνατὸν ἠμέλουν σωτηρίας, ἀλλὰ καὶ τὰ περιῤῥηχθέντα τοῦ τείχους οἱ γενναιότατοι, καὶ τὰ μένοντα περισχόντες ἐφύλασσον οἱ λοιποί. Τῶν δὲ Ῥωμαίων ἐπιχωννύντων τὰ χώματα, καὶ πάλιν πειρωμένων εἰςβολῆς, οἱ πολλοὶ διεδίδρασκον ἐκ τῆς πόλεως, κατά τε δυςβάτων φαράγγων, ᾗπερ οὐκ ἔκειντο φυλακαὶ, καὶ διὰ τῶν ὑπονόμων. Ὅσοι γε μὴν δέει τοῦ ληφθῆναι παρέ-

μενον, ἐν ἐνδείᾳ διεφθείροντο· πανταχόθεν γὰρ τροφὴ τοῖς μάχεσθαι δυναμένοις συνηθροίζετο.

8. Καὶ οἱ μὲν ἐν τοιούτοις πάθεσι διεκαρτέρουν. Οὐεσπασιανὸς δὲ πάρεργον ἐποιεῖτο τῆς πολιορκίας, τοὺς τὸ Ἰταβύριον κατειληφότας ὄρος, ὅ ἐστι τοῦ μεγάλου πεδίου καὶ Σκυθοπόλεως μέσον· οὗ τὸ μὲν ὕψος ἐπὶ τριάκοντα σταδίους ἀνίσχει, μόλις προσβατὸν κατὰ τὸ προσάρκτιον κλίμα, πεδίον δέ ἐστιν ἡ κορυφὴ σταδίων ἓξ καὶ εἴκοσι, πᾶν τετειχισμένον. Ἤγειρε δὲ τοσοῦτον ὄντα τὸν περίβολον ὁ Ἰώσηπος ἐν τεσσαράκοντα ἡμέραις, τῇ τε ἄλλῃ χορηγούμενος ὕλῃ κάτωθεν καὶ ὕδατι· καὶ γὰρ τοῖς ἐποίκοις μόνον ἦν ὄμβριον. Πολλοῦ οὖν πλήθους ἐπὶ τούτῳ συνειλεγμένου, Οὐεσπασιανὸς Πλάκιδον σὺν ἱππεῦσι ἑξακοσίοις πέμπει. Τούτῳ τὸ μὲν προσβαίνειν ἀμήχανον ἦν, ἐλπίδι δὲ δεξιῶν καὶ παρακλήσεως πρὸς εἰρήνην τοὺς πολλοὺς προσεκαλεῖτο. Κατῄεσαν δὲ ἀντεπιβουλεύοντες· ὅ τε γὰρ Πλάκιδος ὡμίλει πρᾳότερον, σπουδάζων αὐτοὺς ἐν τῷ πεδίῳ λαβεῖν· καὶ ἐκεῖνοι κατῄεσαν ὡς πειθόμενοι δῆθεν, ἵνα ἀφυλάκτῳ προσπέσωσιν. Ἐνίκα μέντοι τὸ Πλακίδου πανοῦργον· ἀρξαμένων γὰρ τῶν Ἰουδαίων μάχης, φυγὴν ὑποκρίνεται, καὶ διώκοντας ἑλκύσας ἐπὶ πολὺ τοῦ πεδίου, τοὺς ἱππεῖς ἐπιστρέφει. Τρεψάμενος δὲ πλείστους μὲν αὐτῶν ἀναιρεῖ, τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος ὑποτεμόμενος, εἴργει τῆς ἀνόδου. Καὶ οἱ μὲν τὸ Ἰταβύριον καταλιπόντες 268
ἐπὶ Ἱεροσολύμων ἔφευγον· οἱ δὲ ἐπιχώριοι πίστεις λαβόντες, ἐπιλελοίπει δὲ αὐτοὺς τὸ ὕδωρ, τό τε ὄρος καὶ σφᾶς αὐτοὺς Πλακίδῳ παρέδοσαν.

9. Τῶν δὲ ἐπὶ τῆς Γαμάλας οἱ παραβολώτεροι μὲν φεύγοντες διελάνθανον, οἱ δὲ ἀσθενεῖς διεφθείροντο λιμῷ· τὸ μάχιμον δὲ ἀντεῖχε τῇ πολιορκίᾳ, μέχρι δευτέρᾳ καὶ εἰκάδι μηνὸς Ὑπερβερεταίου τρεῖς τῶν ἀπὸ τοῦ πέμπτου καὶ δεκάτου τάγματος στρατιῶται περὶ τὴν ἑωθινὴν φυλακὴν ὑποδύντες, τὸν

προέχοντα κατὰ τούτους πύργον ὑπορύσσουσιν ἡσυχῇ· τοῖς δὲ ὑπὲρ αὐτοῦ φύλαξιν οὔτε προςιόντων αἴσθησις, νὺξ γὰρ ἦν, οὔτε προςελθόντων ἐγένετο. Ἐλθόντες δὲ οἱ στρατιῶται, φειδόμενοι τοῦ ψόφου, καὶ πέντε τοὺς κραταιοτάτους ἐκκυλίσαντες τῶν λίθων, ὑποπηδῶσι· καταῤῥίπτεται δὲ ὁ πύργος ἐξαίφνης μετὰ μεγίστου ψόφου. Καὶ συγκατακρημνίζονται μὲν οἱ φύλακες αὐτῷ· θορυβηθέντες δὲ οἱ κατὰ τὰς ἄλλας φυλακὰς ἔφευγον, καὶ πολλοὺς διεκπαίειν τολμῶντας οἱ Ῥωμαῖοι διέφθειραν, ἐν οἷς καὶ Ἰώσηπόν τις ὑπὲρ τὸ παρεῤῥηγμένον τοῦ τείχους ἐκδιδράσκοντα βαλὼν ἀναιρεῖ. Τῶν δ᾽ ἀνὰ τὴν πόλιν, διασεισθέντων ὑπὸ τοῦ ψόφου, διαδρομή τε ἦν, καὶ πτοία πολλὴ, καθάπερ εἰςπεπτωκότων πάντων τῶν πολεμίων. Ἔνθα καὶ Χάρης κατακείμενος καὶ νοσηλευόμενος ἐκλείπει, πολὺ τοῦ δέους συνεργήσαντος εἰς θάνατον τῇ νόσῳ. Ῥωμαῖοί γε μὴν, μεμνημένοι τοῦ προτέρου πταίσματος, οὐκ εἰςέβαλλον ἕως τρίτης καὶ εἰκάδος τοῦ προειρημένου μηνός.

10. Τίτος δὲ, ἤδη γὰρ παρῆν, ὀργῇ τῆς πληγῆς, ἣν παρ᾽ αὐτὸν ἐπλήγησαν ἀπόντα Ῥωμαῖοι, τῶν ἱππέων ἐπιλέξας διακοσίους, πρὸς οἷς καὶ πεζοὺς, εἰςέρχεται εἰς τὴν πόλιν ἡσυχῇ. Καὶ παρελθόντος οἱ μὲν φύλακες αἰσθόμενοι, μετὰ βοῆς ἐχώρουν ἐπὶ τὰ ὅπλα. Δήλης δὲ τῆς εἰςβολῆς ταχέως καὶ τοῖς εἴσω γενομένης, οἱ μὲν ἁρπάζοντες τὰ τέκνα καὶ τὰς γυναῖκας ἐπισυρόμενοι, πρὸς τὴν ἄκραν ἀνέφευγον μετὰ κωκυτοῦ καὶ βοῆς, οἱ δὲ τὸν Τίτον ὑπαντιάζοντες ἀδιαλείπτως ἔπιπτον. Ὅσοι δὲ ἀπεκωλύθησαν ἐπὶ τὴν κορυφὴν ἀναδραμεῖν, ὑπ᾽ ἀμηχανίας εἰς τὰς τῶν Ῥωμαίων φρουρὰς ἐξέπιπτον. Ἄπειρος δὲ ἦν πανταχοῦ φονευομένων ὁ στόνος, καὶ τὸ αἷμα πᾶσαν ἐπέκλυζε τὴν πόλιν κατὰ πρανοῦς χεόμενον. Πρὸς δὲ τοὺς ἀναφεύγοντας εἰς τὴν ἄκραν ἐπεβοήθει Οὐεσπασιανὸς, πᾶσαν εἰςαγαγὼν τὴν δύ-

ναμιν. Ἦν δὲ ἥ τε κορυφὴ πάντοθεν πετρώδης
καὶ δύςβατος, εἰς ἄπειρον ὕψος ἐπηρμένη, καὶ παν-
ταχόθεν τοῦ πλήθους κατέγεμε, περιειλημμένη κρη-
μνοῖς. Κατέτεμνόν τε ἐνταῦθα τοὺς προςβαίνοντας
οἱ Ἰουδαῖοι, τούς τε ἄλλους βέλεσι καὶ πέτραις κα-
τακυλινδοῦντες ἐκάκουν· αὐτοὶ δὲ δι' ὕψους ἦσαν
δυςέφικτοι βέλεσι. Γίνεται δὲ πρὸς ἀπώλειαν αὐ- 269
τῶν ἀντικρὺ θύελλα δαιμόνιος, ἣ τὰ μὲν Ῥωμαίων
ἔφερεν εἰς αὐτοὺς βέλη, τὰ δὲ αὐτῶν ἀνέστρεφε, καὶ
πλάγια παρέσυρεν. Οὔτε δὲ τοῖς ἀποκρήμνοις ἐφί-
στασθαι διὰ τὴν βίαν ἐδύναντο τοῦ πνεύματος, μη-
δὲν ἑδραῖον ἔχοντες, οὔτε τοὺς προςβαίνοντας κα-
θορᾶν. Ἐπαναβαίνουσι δὲ Ῥωμαῖοι, καὶ περισχόν-
τες, οὓς μὲν ἀμυνομένους ἔφθανον, τοὺς δὲ χεῖρας
προΐσχοντας· ἐτόνου δὲ τὸν θυμὸν αὐτοῖς ἐπὶ πάν-
τας ἡ μνήμη τῶν ἐπὶ τῆς πρώτης εἰςβολῆς ἀπολω-
λότων. Ἀπογινώσκοντες δὲ τὴν σωτηρίαν πανταχό-
θεν οἱ πολλοὶ περισχόμενοι, τέκνα καὶ γυναῖκας ἑαυ-
τούς τε κατεκρήμνιζον εἰς τὴν φάραγγα· βαθυτάτη
δὲ αὕτη κατὰ τὴν ἄκραν ὑπώρυκτο. Συνέβη δὲ τὴν
Ῥωμαίων ὀργὴν τῆς εἰς αὑτοὺς ἀπονοίας τῶν ἁλόν-
των πρᾳοτέραν φανῆναι· τετρακιςχίλιοι μὲν γε ὑπὸ
τούτων ἐσφάγησαν, οἱ δὲ ῥίψαντες ἑαυτοὺς ὑπὲρ
πεντακιςχιλίους εὑρέθησαν. Διεσώθη δὲ πλὴν δύο
γυναικῶν οὐδεὶς· τῆς Φιλίππου δὲ ἦσαν ἀδελφῆς
θυγατέρες αὗται, αὐτὸς δὲ ὁ Φίλιππος Ἰακίμου τι-
νὸς ἀνδρὸς ἐπισήμου στραταρχήσαντος Ἀγρίππᾳ τῷ
βασιλεῖ. Διεσώθησαν δὲ τὰς παρὰ τὴν ἅλωσιν ὀρ-
γὰς Ῥωμαίων λαθοῦσαι· οὐδὲ γὰρ νηπίων ἐφεί-
δοντο, πολλὰ δὲ ἕκαστος τότε ἁρπάζοντες ἐσφενδό-
νων ἀπὸ τῆς ἄκρας. Γάμαλα μὲν οὖν οὕτως ἑάλω
τρίτῃ καὶ εἰκάδι μηνὸς Ὑπερβερεταίου, τῆς ἀπο-
στάσεως ἀρξαμένης Γορπιαίου μηνὸς τετάρτῃ καὶ
εἰκάδι.

CAP. II. 1. Μόνη δὲ Γίσχαλα πολίχνη τῆς Γαλιλαίας ἀχείρωτος κατελείπετο, τοῦ μὲν πλήθους εἰρηνικὰ φρονοῦντος, — καὶ γὰρ ἦσαν τὸ πλέον γεωργοὶ, καὶ ταῖς ἀπὸ τῶν καρπῶν ἐλπίσιν ἀεὶ προςανέχοντες, — παρειςεφθαρμένου δὲ αὐτοῖς οὐκ ὀλίγου λῃστρικοῦ τάγματος, ᾧ τινες καὶ τοῦ πολιτικοῦ συνενόσουν. Ἐνῆγε δὲ τούτους εἰς τὴν ἀπόστασιν καὶ συνεκρότει Λευΐου τινὸς υἱὸς Ἰωάννης, γόης ἀνὴρ, καὶ ποικιλώτατος τὸ ἦθος, πρόχειρος μὲν ἐλπίσαι μεγάλα, δεινὸς δὲ τῶν ἐλπισθέντων περιγενέσθαι, παντί τε ὢν δῆλος ἀγαπᾶν τὸν πόλεμον εἰς δυναστείας ἐπίθεσιν. Ὑπὸ τούτῳ τὸ στασιῶδες ἐν τοῖς Γισχάλοις ἐτέτακτο, δι' οὓς τυχὸν καὶ πρε-
270 σβευσάμενον περὶ παραδόσεως τὸ δημοτικὸν, ἐν πολέμου μοίρᾳ τὴν Ῥωμαίων ἔφοδον ἐξεδέχετο. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἐπὶ μὲν τούτους Τίτον ἐκπέμπει σὺν χιλίοις ἱππεῦσι, τὸ δέκατον δὲ τάγμα ἀπαίρει εἰς Σκυθόπολιν. Αὐτὸς δὲ σὺν δυσὶ τοῖς λοιποῖς ἐπανῆλθεν εἰς Καισάρειαν, τοῦ τε συνεχοῦς καμάτου διδοὺς ἀνάπαυσιν αὐτοῖς, καὶ δι' εὐθηνίαν τῶν πόλεων τά τε σώματα καὶ τὸ πρόθυμον ὑποθρέψειν οἰόμενος ἐπὶ τοὺς μέλλοντας ἀγῶνας· οὐ γὰρ ὀλίγον ἑαυτῷ πόνον ἑώρα περὶ τοῖς Ἱεροσολύμοις λειπόμενον, ἅτε δὴ βασιλείου μὲν οὔσης τῆς πόλεως, καὶ προανεχούσης ὅλου τοῦ ἔθνους, συῤῥεόντων δὲ εἰς αὐτὴν τῶν ἐκ τοῦ πολέμου διαδιδρασκόντων. Τό γε μὴν φύσει ὀχυρὸν αὐτῆς, καὶ διὰ κατασκευὴν τειχῶν, ἀγωνίαν οὐ τὴν τυχοῦσαν ἐνεποίει· τὰ δὲ φρονήματα τῶν ἀνδρῶν, καὶ τὰς τόλμας δυςμεταχειρίστους, καὶ δίχα τειχῶν, ὑπελάμβανε· διὸ δὴ τοὺς στρατιώτας καθάπερ ἀθλητὰς προήσκει τῶν ἀγώνων.

2. Τίτῳ δὲ προςιππασαμένῳ τοῖς Γισχάλοις, εὐπετὲς μὲν ἦν ἐξ ἐφόδου τὴν πόλιν ἑλεῖν· εἰδὼς δὲ ὡς, εἰ βίᾳ ληφθείη, διαφθαρησόμενον ὑπὸ τῶν

στρατιωτῶν ἀνέδην τὸ πλῆθος, — ἦν δὲ αὐτῷ κόρος ἤδη φόνων, — καὶ δι᾽ οἴκτου τὸ πλέον ἀκρίτως συναπολούμενον τοῖς αἰτίοις, ἐβούλετο μᾶλλον ὁμολογίαις παραστήσεσθαι τὴν πόλιν. Καὶ δὴ τοῦ τείχους ἀνδρῶν καταγέμοντος, οἳ τὸ πλέον ἦσαν ἐκ τοῦ διεφθαρμένου τάγματος, ‘θαυμάζειν, ἔφη πρὸς αὐτοὺς, τίνι πεποιθότες, πάσης ἑαλωκυίας πόλεως, μόνοι τὰ Ῥωμαίων ὅπλα μένουσιν, ἑωρακότες μὲν ὀχυρωτέρας πολλῷ πόλεις ὑπὸ μίαν προσβολὴν κατεστραμμένας, ἐν ἀσφαλείᾳ δὲ τῶν ἰδίων κτημάτων ἀπολαύοντας, ὅσοι ταῖς Ῥωμαίων δεξιαῖς ἐπίστευσαν, ἃς καὶ νῦν προτείνειν αὐτοῖς, μηδὲν μνησικακῶν τῆς αὐθαδείας. Εἶναι γὰρ συγγνωστὸν ἐλευθερίας ἐλπίδα, μηκέτι μέντοι τὴν ἐν τοῖς ἀδυνάτοις ἐπιμονήν· εἰ γὰρ οὐ πεισθήσονται λόγοις φιλανθρώποις καὶ δεξιαῖς πίστεως, πειράσειν αὐτοὺς ἀφειδῆ τὰ ὅπλα, καὶ ὅσον οὐδέπω γνωσθήσεσθαι παιδιὰν ἐσόμενον τοῖς Ῥωμαίων μηχανήμασι τὸ τεῖχος, ᾧ πεποιθότες ἐπιδείκνυνται μόνοι Γαλιλαίων, ὅτι εἰσὶν αὐθάδεις αἰχμάλωτοι.’

3. Πρὸς ταῦτα τῶν μὲν δημοτικῶν οὐ μόνον οὐκ ἀποκρίνεσθαί τινι μετῆν, ἀλλ᾽ οὐδὲ ἐπὶ τὸ τεῖχος ἀναβῆναι· προδιείληπτο γὰρ ἅπαν τοῖς λῃστρικοῖς, καὶ φύλακες τῶν πυλῶν ἦσαν, ὡς μή τινες ἢ προέλθοιεν ἐπὶ τὰς σπονδὰς, ἢ δέξαιντό τινας τῶν ἱππέων εἰς τὴν πόλιν. Ὁ δὲ Ἰωάννης ‘αὐτός τε ἀγαπᾶν, ἔφη, τὰς προκλήσεις, καὶ τοὺς ἀπειθοῦντας ἢ πείσειν ἢ συναναγκάσειν· δεῖν μέντοι τὴν ἡμέραν αὐτὸν ἐκείνην, — ἑβδομὰς γὰρ ἦν, — χαρίζεσθαι τῷ Ἰουδαίων νόμῳ, καθ᾽ ἣν, ὥσπερ ὅπλα κινεῖν αὐτοῖς, οὕτω καὶ τὸ συντίθεσθαι περὶ εἰρήνης ἀθέμιτον. Οὐκ ἀγνοεῖν τε οὔτε Ῥωμαίους, ὡς ἀργὴ πάντων αὐτοῖς ἐστιν ἡ τῆς ἑβδομάδος 271
περίοδος· ἐν δὲ τῷ παραβαίνειν αὐτὴν οὐχ ἧττον ἀσεβεῖν τῶν βιασθέντων τὸν βιασάμενον· φέρειν δ᾽ ἐκείνῳ μὲν οὐδεμίαν βλάβην τὰ τῆς ὑπερθέσεως. Τί

γὰρ ἄν τις ἐν νυκτὶ βουλεύσαιτο δραςμοῦ πλέον, ἐξὸν περιστρατοπεδεύσαντα παραφυλάξαι; Μέγα δὲ κέρδος αὐτοῖς, τὸ μηδὲν παραβῆναι τῶν πατρίων νόμων. Πρέπει δὲ τῷ παρὰ προςδοκίαν εἰρήνην χαριζομένῳ, τοῖς σωζομένοις τηρεῖν καὶ τοὺς νόμους.' Τοιούτοις ἐσοφίζετο τὸν Τίτον, οὐ τοσοῦτον τῆς ἑβδομάδος στοχαζόμενος, ὅσον τῆς ἑαυτοῦ σωτηρίας· ἐδεδοίκει δὲ ἐγκαταλειφθῆναι παραχρῆμα τῆς πόλεως ἁλούσης, ἐν νυκτὶ καὶ φυγῇ τὰς ἐλπίδας ἔχων τοῦ βίου. Θεοῦ δὲ ἦν τὸ ἔργον ἄρα τοῦ σώζοντος τὸν Ἰωάννην ἐπὶ τὸν τῶν Ἱεροσολύμων ὄλεθρον, τὸ μὴ μόνον πεισθῆναι Τίτον τῇ σκήψει τῆς ὑπερθέσεως, ἀλλὰ καὶ τῆς πόλεως πορρωτέρω στρατοπεδεύσασθαι πρὸς Κυδοισσοῖς, — μεσόγειος δέ ἐστι Τυρίων κώμη καρτερὰ, διὰ μίσους ἀεὶ καὶ πολέμου Γαλιλαίοις, ἔχουσα πλῆθός τε οἰκητόρων, καὶ τὴν ὀχυρότητα τῆς πρὸς τὸ ἔθνος διαφορᾶς ἐφόδιον.

4. Νυκτὸς δὲ ὁ Ἰωάννης, ὡς οὐδεμίαν περὶ τῇ πόλει Ῥωμαίων ἑώρα φυλακὴν, τὸν καιρὸν ἁρπασάμενος, οὐ μόνον τοὺς περὶ αὐτὸν ὁπλίτας, ἀλλὰ καὶ τῶν ἀργοτέρων συχνοὺς ἅμα ταῖς γενεαῖς ἀναλαβὼν, ἐπὶ Ἱεροσολύμων ἔφευγε. Μέχρι μὲν οὖν εἴκοσι σταδίων οἷόν τε ἦν συνεξαγαγεῖν γυναικῶν καὶ παιδίων ὄχλον ἀνθρώπῳ, κατασπερχομένῳ τοῖς ὑπὲρ αἰχμαλωσίας καὶ τοῦ ζῆν φόβοις· περαιτέρω δὲ προκόπτοντος ἀπελείποντο, καὶ δειναὶ τῶν ἐωμένων ἦσαν ὀλοφύρσεις. Ὅσον γὰρ ἕκαστος τῶν οἰκείων ἐγένετο πορρωτέρω, τοσοῦτον ἐγγὺς ὑπελάμβανεν εἶναι τῶν πολεμίων· παρεῖναί τε ἤδη τοὺς αἰχμαλωτισομένους δοκοῦντες ἐπτόηντο, καὶ πρὸς τὸν ἀλλήλων ἐκ τοῦ δρόμου ψόφον ἐπεστρέφοντο, καθάπερ ἤδη παρόντων οὓς ἔφευγον· ἀνοδίαις τε ἐνέπιπτον οἱ πολλοὶ, καὶ περὶ τὴν λεωφόρον ἡ τῶν φθανόντων ἔρις συνέτριβε τοὺς πολλούς. Οἰκτρὸς δὲ γυναικῶν καὶ παιδίων ὄλεθρος ἦν, καί τινες πρὸς ἀνακλήσεις ἀνδρῶν τε καὶ συγγενῶν ἐθάρσησαν, μετὰ κωκυτῶν

ἱκετευούσαι περιμένειν. Ἀλλ' ἐνίκα τὸ Ἰωάννου παρακέλευσμα, 'σώζειν ἑαυτοὺς ἐμβοῶντος, καὶ καταφεύγειν, ἔνθα καὶ περὶ τῶν ἀπολειπομένων ἀμυνοῦνται Ῥωμαίους, ἂν ἁρπαγῶσι.' Τὸ μὲν οὖν τῶν διαδράντων πλῆθος, ὡς ἕκαστος ἰσχύος εἶχεν ἢ τάχους, ἐσκέδαστο.

5. Τίτος δὲ μεθ' ἡμέραν ἐπὶ τὰς συνθήκας πρὸς τὸ τεῖχος παρῆν. Ἀνοίγει δὲ αὐτῷ τὰς πύλας ὁ δῆμος, καὶ μετὰ τῶν τέκνων καὶ γυναικῶν προσελθόντες ἀνευφήμουν τε ὡς εὐεργέτην, καὶ φρου- 272
ρᾶς ἐλευθερώσαντα τὴν πόλιν. Ἐδήλουν γὰρ ἅμα τὴν τοῦ Ἰωάννου φυγὴν, καὶ παρεκάλουν φείσασθαί τε αὐτῶν, καὶ παρελθόντα τοὺς ὑπολειπομένους τῶν νεωτεριζόντων κολάσαι. Ὁ δὲ τὰς δεήσεις τοῦ δήμου ἐν δευτέρῳ θέμενος, μοῖραν ἔπεμπε τῶν ἱππέων Ἰωάννην διώξουσαν. Οἳ τὸν μὲν οὐ καταλαμβάνουσιν, — ἔφθη γὰρ εἰς Ἱεροσόλυμα διαφυγών, — τῶν δὲ συναπαράντων ἀποκτείνουσι μὲν εἰς ἑξακισχιλίους, γύναια δὲ καὶ παιδία, τρισχιλίων ὀλίγον ἀποδέοντα, περιελάσαντες ἐπανῆγον. Ὁ δὲ Τίτος ἤχθετο μὲν ἐπὶ τῷ μὴ παραχρῆμα τιμωρήσασθαι τὸν Ἰωάννην τῆς ἀπάτης· ἱκανὸν δὲ ἀστοχήσαντι τῷ θυμῷ παραμύθιον ἔχων τὸ πλῆθος τῶν αἰχμαλώτων καὶ τοὺς διεφθαρμένους, εἰσῄει τε ἀνευφημούμενος εἰς τὴν πόλιν· καὶ τοῖς στρατιώταις ὀλίγον τοῦ τείχους παρασπᾶσαι κελεύσας νόμῳ καταλήψεως, ἀπειλαῖς μᾶλλον ἢ κολάσεσι τοὺς ταράσσοντας τὴν πόλιν ἀνέστελλε, 'πολλοὺς γὰρ διὰ τὰ οἰκεῖα μίση καὶ διαφορὰς ἰδίας ἐνδείξασθαι τοὺς ἀναιτίους, εἰ διακρίνοι τοὺς τιμωρίας ἀξίους· ἄμεινον δὲ εἶναι, μετέωρον ἐν φόβῳ τὸν αἴτιον καταλιπεῖν, ἤ τινα τῶν οὐκ ἀξίων αὐτῷ συναπολεῖν· τὸν μὲν γὰρ ἴσως καὶ σωφρονίσαι δέει κολάσεως, τὴν ἐπὶ τοῖς παρῳχηκόσι συγγνώμην αἰδούμενον· ἀδιόρθωτον δὲ τὴν ἐπὶ τοῖς παραναλωθεῖσι τιμωρίαν εἶναι.' Φρουρᾷ μέντοι τὴν πόλιν ἠσφαλίσατο, δι' ἧς

τούς τε νεωτερίζοντας ἐφέξειν, καὶ τοὺς εἰρηνικὰ φρονοῦντας, θαῤῥαλεωτέρους καταλείψειν ἔμελλε. Γαλιλαία μὲν οὖν οὕτως ἑάλω πᾶσα, πολλοῖς ἱδρῶσι προγυμνάσασα Ῥωμαίους.

CAP. III. 1. Ἐπὶ δὲ τὰ Ἱεροσόλυμα πρὸς τὴν εἴςοδον Ἰωάννου ὁ πᾶς δῆμος ἐξεκέχυτο, καὶ περὶ ἕκαστον τῶν συμπεφευγότων μυρίος ὅμιλος συνηθροισμένος, τὰς ἔξωθεν συμφορὰς ἀνεπυνθάνετο. Τῶν δὲ τὸ μὲν ἆσθμα θερμὸν ἔτι κοπτόμενον ἐδήλου τὴν ἀνάγκην· ἠλαζονεύοντο δὲ καὶ ἐν κακοῖς, 'οὐ πεφευγέναι τοὺς Ῥωμαίους φάσκοντες, ἀλλ' ἥκειν πολεμήσοντες αὐτοὺς ἐξ ἀσφαλοῦς· ἀλογίστων γὰρ εἶναι καὶ ἀχρήστων, παραβόλως προκινδυνεύειν περὶ Γίσχαλα καὶ πολίχνας ἀσθενεῖς, δέον τὰ ὅπλα καὶ τὰς ἀκμὰς ταμιεύεσθαι τῇ μητροπόλει καὶ συμφυλάσσειν.' Ἔνθα δὴ παρεδήλουν τὴν ἅλωσιν τῶν Γι-
273 σχάλων, καὶ τὴν λεγομένην εὐσχημόνως ὑποχώρησιν αὐτῶν οἱ πολλοὶ δρασμὸν ἐνενόουν. Ὡς μέντοι τὰ περὶ τοὺς αἰχμαλωτισθέντας ἠκούσθη, σύγχυσις οὐ μετρία κατέσχε τὸν δῆμον, καὶ μεγάλα τῆς ἑαυτῶν ἁλώσεως συνελογίζοντο τεκμήρια. Ἰωάννης δὲ ἐπὶ μὲν τοῖς καταλειφθεῖσιν ἧττον ἠρυθρία, περιϊὼν δὲ ἑκάστους ἐπὶ τὸν πόλεμον ἐνῆγε ταῖς ἐλπίσι, τὰ μὲν Ῥωμαίων ἀσθενῆ κατασκευάζων, τὴν δὲ οἰκείαν δύναμιν ἐξαίρων, καὶ κατειρωνευόμενος τῆς τῶν ἀπείρων ἀγνοίας, ὡς οὐδ' ἂν πτερὰ λαβόντες ὑπερβαῖεν ποτε Ῥωμαῖοι τὸ Ἱεροσολύμων τεῖχος, οἱ περὶ ταῖς τῶν Γαλιλαίων κώμαις κακοπαθοῦντες, καὶ πρὸς τοῖς ἐκεῖ τείχεσι κατατρίψαντες τὰς μηχανάς.

2. Τούτοις τὸ πολὺ τῶν νέων προςδιεφθείρετο, καὶ πρὸς μὲν τὸν πόλεμον ἦρτο. Τῶν δὲ σωφρονούντων καὶ γηραιῶν, οὐκ ἦν ὅςτις οὐ τὰ μέλλοντα προορώμενος, ὡς ἤδη τῆς πόλεως οἰχομένης, ἐπένθει. Ὁ μὲν οὖν δῆμος ἦν ἐν τοιαύτῃ συγχύσει·

προδιέστη δὲ τὸ κατὰ τὴν χώραν πλῆθος τῆς ἐν Ἱεροσολύμοις στάσεως. Ὁ μὲν γὰρ Τίτος ἀπὸ Γισχάλων εἰς Καισάρειαν, Οὐεσπασιανὸς δὲ ἀπὸ Καισαρείας εἰς Ἰάμνιαν καὶ Ἄζωτον ἀφικόμενος παρίσταταί τε αὐτὰς, καὶ φρουροὺς ἐγκαταστήσας ὑπέστρεψε, πολὺ πλῆθος ἐπαγόμενος τῶν ἐπὶ δεξιᾷ προςκεχωρηκότων. Ἐκινεῖτο δὲ ἐν ἑκάστῃ πόλει ταραχὴ καὶ πόλεμος ἐμφύλιος, ὅσοι τε ἀπὸ Ῥωμαίων ἀνέπνεον εἰς ἀλλήλους τὰς χεῖρας ἐπέστρεφον. Ἦν δὲ τῶν ἐρώντων τοῦ πολέμου πρὸς τοὺς ἐπιθυμοῦντας εἰρήνης ἔρις χαλεπή· καὶ πρῶτον μὲν ἐν οἰκίαις ἥπτετο τῶν μὴ ὁμονοούντων πάλαι τὸ φιλόνεικον, ἔπειτα ἀφηνιάζοντες ἀλλήλων οἱ φίλτατοι λαοὶ, καὶ συνιὼν ἕκαστος πρὸς τοὺς τὰ αὐτὰ προαιρουμένους, ἤδη κατὰ πλῆθος ἀντετάσσοντο. Καὶ στάσις μὲν ἦν πανταχοῦ· τὸ νεωτερίζον δὲ καὶ τῶν ὅπλων ἐπιθυμοῦν ἐπεκράτει νεότητι καὶ τόλμῃ γηραιῶν καὶ σωφρόνων. Ἐτράποντο δὲ πρῶτον μὲν εἰς ἁρπαγὰς ἕκαστος τῶν ἐπιχωρίων, ἔπειτα συντασσόμενοι κατὰ λόχους, ἐπὶ λῃστείαν τῶν κατὰ τὴν χώραν· ὡς ὠμότητος καὶ παρανομίας ἕνεκεν μηδὲν αὐτοῖς Ῥωμαίων τοὺς ὁμοφύλους διαφέρειν, καὶ πολὺ τοῖς πορθουμένοις κουφοτέραν δοκεῖν τὴν ὑπὸ Ῥωμαίοις ἅλωσιν.

3. Οἱ φρουροὶ δὲ τῶν πόλεων, τὰ μὲν ὄκνῳ τοῦ κακοπαθεῖν, τὰ δὲ μίσει τοῦ ἔθνους, οὐδὲν ἢ μικρὰ προςήμυνον τοῖς κακουμένοις, μέχρι κόρῳ τῶν κατὰ τὴν χώραν ἁρπαγῶν ἀθροισθέντες οἱ τῶν πανταχοῦ συνταγμάτων ἀρχιλῃσταὶ, καὶ γενόμενοι πονηρίας στῖφος, εἰς τὰ Ἱεροσόλυμα συμπαρειςφθείρονται, πόλιν ἀστρατήγητον, καὶ πατρίῳ μὲν ἔθει πᾶν ἀπαρατηρήτως δεχομένην τὸ ὁμόφυλον, τότε δὲ οἰομένων ἁπάντων τοὺς ἐπειςχεομένους πάντας ἀπ' εὐνοίας ἥκειν συμμάχους. Οἳ δὴ καὶ δίχα τῆς στάσεως ὕστερον ἐβάπτισαν τὴν πόλιν· πλήθει 274
γὰρ ἀχρήστῳ καὶ ἀργῷ προεξανηλώθη τὰ τοῖς μα-

χίμοις διαρκεῖν δυνάμενα, καὶ πρὸς τῷ πολέμῳ στάσιν τε αὐτοῖς καὶ λιμὸν ἐπικατεσκεύασαν.

4. Ἄλλοι τε ἀπὸ τῆς χώρας λησταὶ παρελθόντες εἰς τὴν πόλιν, καὶ τοὺς ἔνδον προςλαβόντες χαλεπωτέρους οὐδέν τι τῶν δεινῶν παρείασαν. Οἵ γε οὐ μόνον ἁρπαγαῖς καὶ λωποδυσίαις τὴν τόλμαν ἐμέτρουν, ἀλλὰ καὶ μέχρι φόνων ἐχώρουν, οὐ νυκτὸς, ἢ λαθραίως ἢ ἐπὶ τοὺς τυχόντας, ἀλλὰ φανεροῖς καὶ μεθ' ἡμέραν, καὶ τῶν ἐπισημοτάτων καταρχόμενοι. Πρῶτον μὲν γὰρ Ἀντίπαν, ἄνδρα τοῦ βασιλείου γένους καὶ τῶν κατὰ τὴν πόλιν δυνατώτατον, ὡς καὶ τοὺς δημοσίους θησαυροὺς πεπιστεῦσθαι, συλλαβόντες εἶρξαν, ἐπὶ τούτῳ Λευΐαν τινὰ τῶν ἐπισήμων, καὶ Σωφᾶν υἱὸν Ῥαγουήλου — βασιλικὸν δὲ ἦν καὶ τούτων τὸ γένος, — πρὸς δὲ τοὺς κατὰ τὴν χώραν προέχειν δοκοῦντας. Δεινὴ δὲ κατάπληξις εἶχε τὸν δῆμον, καὶ, καθάπερ κατειλημμένης τῆς πόλεως πολέμῳ, τὴν καθ' αὑτὸν ἕκαστος σωτηρίαν ἠγάπα.

5. Τοῖς δὲ οὐκ ἀπέχρη τὰ δεσμὰ τῶν συνειλημμένων, 'οὐδὲ ἀσφαλὲς ᾤοντο μέχρι πολλοῦ δυνατοὺς ἄνδρας οὕτω φυλάσσειν· ἱκανοὺς μὲν γὰρ εἶναι καὶ τοὺς οἴκους αὐτῶν πρὸς ἄμυναν οὐκ ὀλιγάνδρους ὄντας· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ τὸν δῆμον ἐπαναστήσεσθαι τάχα κινηθέντα πρὸς τὴν παρανομίαν.' Δόξαν οὖν ἀναιρεῖν αὐτοὺς, Ἰωάννην τινὰ πέμπουσι τὸν ἐξ αὐτῶν εἰς φόνους προχειρότατον, — Δορκάδος οὗτος ἐκαλεῖτο παῖς κατὰ τὴν ἐπιχώριον γλῶσσαν, — ᾧ δέκα συνελθόντες εἰς τὴν εἱρκτὴν ξιφήρεις ἀποσφάττουσι τοὺς συνειργμένους. Παρανομήματι δ' ἐπὶ τηλικούτῳ μεγάλην ἀπεψεύδοντο πρόφασιν, 'διαλεχθῆναι γὰρ αὐτοὺς Ῥωμαίοις περὶ παραδόσεως τῶν Ἱεροσολύμων, καὶ προδότας ἀνῃρηκέναι τῆς κοινῆς ἐλευθερίας ἔφασκον,' καθόλου τ' ἐπηλαζονεύοντο τοῖς τολμήμασιν, ὡς εὐεργέται καὶ σωτῆρες τῆς πόλεως γεγενημένοι.

6. Συνέβη δὲ εἰς τοσοῦτον μὲν τὸν δῆμον ταπεινότητος καὶ δέους, ἐκείνους δὲ ἀπονοίας προελθεῖν, ὡς ἐπ' αὐτοῖς εἶναι καὶ τὰς χειροτονίας τῶν ἀρχιερέων. Ἄκυρα γοῦν τὰ γένη ποιήσαντες, ἐξ ὧν κατὰ διαδοχὰς οἱ ἀρχιερεῖς ἀπεδείκνυντο, καθίστασαν ἀσήμους καὶ ἀγεννεῖς, ἵν' ἔχοιεν συνεργοὺς τῶν ἀσεβημάτων· τοῖς γὰρ παρ' ἀξίαν ἐπιτυχοῦσι τῆς ἀνωτάτω τιμῆς, ὑπακούειν ἦν ἀνάγκη τοῖς παρασχοῦσι. Συνέκρουον δὲ καὶ τοὺς ἐν τέλει ποικίλαις ἐπινοίαις καὶ λογοποιΐαις, καιρὸν ἑαυτοῖς ἐν ταῖς πρὸς ἀλλήλους τῶν κωλυόντων φιλονεικίαις ποιούμενοι, μέχρι τῶν εἰς ἀνθρώπους ὑπερεμπλησθέντες ἀδικημάτων ἐπὶ τὸ θεῖον μετήνεγκαν τὴν ὕβριν, καὶ μεμιασμένοις τοῖς ποσὶ παρῄεσαν εἰς τὸ ἅγιον.

7. Ἐπανισταμένου δὲ αὐτοῖς ἤδη τοῦ πλή- 275
θους, — ἐνῆγε γὰρ ὁ γεραίτατος τῶν ἀρχιερέων Ἄνανος, ἀνὴρ σωφρονέστατος, καὶ τάχα ἂν διασώσας τὴν πόλιν, εἰ τὰς τῶν ἐπιβούλων χεῖρας ἐξέφυγεν, — οἵδε τὸν νεὼν τοῦ θεοῦ φρούριον αὐτοῖς καὶ τῶν ἀπὸ τοῦ δήμου ταραχῶν ποιοῦνται, καὶ καταφυγὴ καὶ τυραννεῖον ἦν αὐτοῖς τὸ ἅγιον. Παρεκίρνατο δὲ τοῖς δεινοῖς εἰρωνεία, τὸ τῶν ἐνεργουμένων ἀλγεινότερον· ἀποπειρώμενοι γὰρ τῆς τοῦ δήμου καταπλήξεως, καὶ τὴν αὐτῶν δοκιμάζοντες ἰσχὺν, κληρωτοὺς ἐπεχείρησαν ποιεῖν τοὺς ἀρχιερεῖς, οὔσης, ὡς ἔφαμεν, κατὰ γένος αὐτῶν τῆς διαδοχῆς. Ἦν δὲ πρόσχημα μὲν τῆς ἐπιβουλῆς ἔθος ἀρχαῖον, ἐπειδὴ καὶ πάλαι κληρωτὴν ἔφασαν εἶναι τὴν ἀρχιερωσύνην· τὸ δὲ ἀληθὲς τοῦ βεβαιοτέρου νόμου κατάλυσις, καὶ τέχνη πρὸς δυναστείαν, τὰς ἀρχὰς δι' αὐτῶν καθισταμένοις.

8. Καὶ δὴ μεταπεμψάμενοι μίαν τῶν ἀρχιερατικῶν φυλὴν, Ἐνιαχεὶμ καλεῖται, διεκλήρουν ἀρχιερέα· λαγχάνει δ' ἀπὸ τύχης, ὁ μάλιστα διαδείξας αὐτῶν τὴν παρανομίαν, Φαννίας τις ὄνομα, υἱὸς Σαμουήλου κώμης Ἀφθας, ἀνὴρ οὐ μόνον ἀνάξιος

ἀρχιερεὺς, ἀλλ' οὐδ' ἐπιστάμενος σαφῶς, τί ποτε ἦν ἀρχιερωσύνη, δι' ἀγροικίαν. Ἀπὸ γοῦν τῆς χώρας αὐτὸν ἄκοντα σύραντες, ὥςπερ ἐπὶ σκηνῆς, ἀλλοτρίῳ κατεκόσμουν προςωπείῳ, τήν τε ἐσθῆτα περιτιθέντες ἱερὰν, καὶ τὸ τί δεῖ ποιεῖν ἐπὶ καιροῦ διδάσκοντες, — χλεύη δ' ἦν ἐκείνοις καὶ παιδιὰ τὸ τηλικοῦτον ἀσέβημα, — τοῖς δὲ ἄλλοις ἱερεῦσιν, ἐπιθεωμένοις πόῤῥωθεν παιζόμενον τὸν νόμον, δακρύειν ἐπῄει, καὶ κατέστενον τὴν τῶν ἱερῶν τιμῶν κατάλυσιν.

9. *Ταύτην τὴν τόλμαν αὐτῶν οὐκ ἤνεγκεν ὁ δῆμος, ἀλλ' ὡς ἐπὶ τυραννίδος κατάλυσιν ὥρμηντο πάντες· καὶ γὰρ οἱ προέχειν δοκοῦντες αὐτῶν, Γωρίων τε υἱὸς Ἰωσήπου, καὶ ὁ Γαμαλιήλου Συμεὼν, παρεκρότουν ἐν ταῖς ἐκκλησίαις ἀθρόους, καὶ κατ' ἰδίαν περιϊόντες ἕκαστον, ἤδη ποτὲ τίσασθαι τοὺς λυμεῶνας τῆς ἐλευθερίας, καὶ καθᾶραι τῶν μιαιφόνων τὸ ἅγιον. Οἵ τε δοκιμώτατοι τῶν ἀρχιερέων, Γαμαλᾶ μὲν υἱὸς Ἰησοῦς, Ἀνάνου δὲ Ἄνανος, πολλὰ τὸν δῆμον εἰς νωθείαν κατονειδίζοντες ἐν ταῖς συνόδοις, ἐπήγειρον τοῖς ζηλωταῖς — τοῦτο γὰρ αὑτοὺς ἐκάλεσαν, ὡς ἐπ' ἀγαθοῖς ἐπιτηδεύμασιν, ἀλλ' οὐχὶ ζηλώσαντες τὰ κάκιστα τῶν ἔργων καὶ ὑπερβαλόμενοι.*

10. *Καὶ δὴ συνελθόντος τοῦ πλήθους εἰς ἐκ-
276 κλησίαν, καὶ πάντων ἀγανακτούντων μὲν ἐπὶ τῇ καταλήψει τῶν ἁγίων, ταῖς τε ἁρπαγαῖς, καὶ τοῖς πεφονευμένοις, οὔπω δὲ πρὸς τὴν ἄμυναν ὡρμημένων, τῷ δυςεπιχειρήτους, ὅπερ ἦν, τοὺς ζηλωτὰς ὑπολαμβάνειν, καταστὰς ἐν μέσοις ὁ Ἄνανος, καὶ πολλάκις εἰς τὸν ναὸν ἀπιδὼν, ἐμπλήσας τε τοὺς ὀφθαλμοὺς δακρύων, "Ἦ καλόν γε," εἶπεν, "ἦν ἐμοὶ τεθνᾶναι, πρὶν ἐπιδεῖν τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ τοσούτοις ἄγεσι καταγέμοντα, καὶ τὰς ἀβάτους καὶ ἁγίας χώρας ποσὶ μιαιφόνων στενοχωρουμένας! Ἀλλὰ περικείμενος τὴν ἀρχιερατικὴν ἐσθῆτα, καὶ τὸ τι-*

μιαρώτατον καλούμενος τῶν σεβασμίων ὀνομάτων, ζῶ καὶ φιλοψυχῶ, μηκέτι ὑπὲρ τοῦ ἐμοῦ γήρως ὑπομένων εὐκλεῆ θάνατον! Εἰ δὲ δὴ μόνος εἰμὶ, καὶ καθάπερ ἐν ἐρημίᾳ, τὴν ἐμαυτοῦ ψυχὴν ἐπιδώσω μόνην ὑπὲρ τοῦ θεοῦ· τί γὰρ καὶ δεῖ ζῆν ἐν δήμῳ συμφορῶν ἀναισθητοῦντι, καὶ παρ' οἷς ἀπόλωλεν ἡ τῶν ἐν χερσὶ παθῶν ἀντίληψις; Ἁρπαζόμενοι γοῦν ἀνέχεσθε, καὶ τυπτόμενοι σιωπᾶτε, καὶ τοῖς φονευομένοις οὐδὲ ἐπιστένει τις ἀναφανδόν. Ὦ τῆς πικρᾶς τυραννίδος! Τί μέμφομαι τοὺς τυράννους; Μὴ γὰρ οὐκ ἐτράφησαν ὑφ' ὑμῶν, καὶ τῆς ὑμετέρας ἀνεξικακίας; Μὴ γὰρ οὐχ ὑμεῖς περιϊδόντες τοὺς πρώτους συνισταμένους, ἔτι δὲ ἦσαν ὀλίγοι, πλείους ἐποιήσατε τῇ σιωπῇ, καὶ καθοπλιζομένων ἠρεμοῦντες καθ' ἑαυτῶν ἐπεστρέψατε τὰ ὅπλα, δέον τὰς πρώτας αὐτῶν ἐπικόπτειν ὁρμὰς, ὅτε λοιδορίαις καθήπτοντο τῶν συγγενῶν; Ὑμεῖς δὲ ἀμελήσαντες ἐφ' ἁρπαγὰς παρωξύνατε τοὺς ἀλιτηρίους· καὶ πορθουμένων οἴκων λόγος ἦν οὐδείς. Τοιγαροῦν αὐτοὺς ἥρπαζον τοὺς δεσπότας, καὶ συρομένοις διὰ μέσης τῆς πόλεως οὐδεὶς ἐπήμυνεν. Οἱ δὲ καὶ δεσμοῖς ᾐκίσαντο τοὺς ὑφ' ὑμῶν προδοθέντας, ἐῶ λέγειν πόσους καὶ ποδαποὺς, ἀλλὰ ἀκαταιτιάτους, ἀκρίτους — οὐδεὶς ἐβοήθησε τοῖς δεδεμένοις — ἀκόλουθον ἦν ἐπιδεῖν τοὺς αὐτοὺς φονευομένους. Ἐπείδομεν καὶ τοῦτο, καθάπερ ἐξ ἀγέλης ζώων ἀλόγων ἑλκομένου τοῦ κρατίστου ὄντος ἀεὶ θύματος, οὐδὲ φωνήν τις ἀφῆκεν, οὐχ ὅπως ἐκίνησε τὴν δεξιάν. Φέρετε δὴ τοίνυν, φέρετε πατούμενα βλέποντες τὰ ἅγια; Καὶ πάντας ὑποθέντες αὐτοῖς τοῖς ἀνοσίοις τοὺς τῶν τολμημάτων βαθμοὺς, μὴ βαρύνεσθε τὴν ὑπεροχήν; Καὶ γὰρ νῦν πάντως ἂν ἐπὶ μεῖζον προύκοψαν, εἴ τι τῶν ἁγίων καταλῦσαι μεῖζον εἶχον· κεκράτηται μὲν οὖν τὸ ὀχυρώτατον τῆς πόλεως, λεγέσθω γὰρ νῦν τὸ ἱερὸν, ὡς ἄκρα τις ἢ φρούριον. Ἔχοντες δ' ἐπιτετειχισμένην τυραννίδα τοσαύτην,

καὶ τοὺς ἐχθροὺς ὑπὲρ κορυφὴν βλέποντες, τί βουλεύεσθε, καὶ τίσι τὰς γνώμας προσθάλπετε; Ῥωμαίους ἄρα περιμένετε, ἵν᾽ ἡμῶν βοηθήσωσι τοῖς ἁγίοις; Ἔχει μὲν οὕτω τὰ πράγματα τῇ πόλει, καὶ πρὸς τοσοῦτον ἥκομεν συμφορῶν, ἵνα ἡμᾶς ἐλεήσωσι καὶ πολέμιοι; Οὐκ ἐξαναστήσεσθε, ὦ τλημονέστα-
277 τοι, καὶ πρὸς τὰς πληγὰς ἐπιστραφέντες, ὃ καὶ ἐπὶ τῶν θηρίων ἐστὶν ἰδεῖν, τοὺς τύπτοντας ἀμυνεῖσθε; Οὐκ ἀναμνησθήσεσθε τῶν ἰδίων ἕκαστος συμφορῶν, οὐδὲ, ἃ πεπόνθατε πρὸ ὀφθαλμῶν θέμενοι, τὰς ψυχὰς ἐπ᾽ αὐτοὺς θήξετε πρὸς τὴν ἄμυναν; Ἀπόλωλεν ἄρα παρ᾽ ὑμῖν τὸ τιμιώτατον τῶν παθῶν, καὶ φυσικώτατον, ἐλευθερίας ἐπιθυμία! Φιλόδουλοι δὲ καὶ φιλοδέσποτοι γεγόναμεν, ὥσπερ ἐκ προγόνων τὸ ὑποτάσσεσθαι παραλαβόντες! Ἀλλ᾽ ἐκεῖνοί γε πολλοὺς καὶ μεγάλους ὑπὲρ τῆς αὐτονομίας πολέμους διήνεγκαν, καὶ οὔτε τῆς Αἰγυπτίων, οὔτε τῆς Μήδων δυναστείας ἡττήθησαν, ὑπὲρ τοῦ μὴ ποιεῖν τὸ κελευόμενον. Καὶ τί δεῖ τὰ τῶν προγόνων λέγειν; Ἀλλ᾽ ὁ νῦν πρὸς Ῥωμαίους πόλεμος — ἐῶ διελέγχειν, πότερον λυσιτελὴς ὢν καὶ σύμφορος ἢ τὸ ἐναντίον, — τίνα δ᾽ οὖν ἔχει πρόφασιν; Οὐ τὴν ἐλευθερίαν; Εἶτα τοὺς τῆς οἰκουμένης δεσπότας μὴ φέροντες, τῶν ὁμοφύλων τυράννων ἀνεξόμεθα; Καίτοι τὸ μὲν τοῖς ἔξωθεν ὑπακούειν, ἐνέγκαι τις ἂν εἰς τὴν ἅπαξ ἡττηθεῖσαν τύχην· τὸ δὲ τοῖς οἰκείοις εἴκειν πονηροῖς, ἀγεννῶν ἐστι καὶ προαιρουμένων. Ἐπειδὴ δὲ ἅπαξ ἐμνήσθην Ῥωμαίων, οὐκ ἀποκρύψομαι πρὸς ὑμᾶς εἰπεῖν, ὃ μεταξὺ τῶν λόγων ἐμπεσὸν ἐπέστρεψε τὴν διάνοιαν, ὅτι, καὶ ἐὰν ἁλῶμεν ὑπ᾽ ἐκείνοις, — ἀπίη δὲ ἡ πεῖρα τοῦ λόγου! — χαλεπώτερον οὐδὲν παθεῖν ἔχομεν, ὧν ἡμᾶς διατεθείκασιν οὗτοι. Πῶς δ᾽ οὐ δακρύων ἄξιον, ἐκείνων μὲν ἐν τῷ ἱερῷ καὶ ἀναθήματα βλέπειν, τῶν δὲ ὁμοφύλων τὰ σκῦλα σεσυληκότων καὶ ἀνελόντων τὴν τῆς μητροπόλεως εὐ-

γένειαν, καὶ πεφονευμένους ἄνδρας, ὧν ἀπέσχοντο ἂν καὶ ἐκεῖνοι κρατήσαντες; Καὶ Ῥωμαίους μὲν μηδέποτε ὑπερβῆναι τὸν ὅρον τῶν βεβήλων, μηδὲ παραβῆναί τι τῶν ἱερῶν ἐθῶν, πεφρικέναι δὲ πόῤῥωθεν ὁρῶντας τοὺς τῶν ἁγίων περιβόλους, γεννηθέντας δέ τινας ἐν τῇδε τῇ χώρᾳ, καὶ τραφέντας ὑπὸ τοῖς ἡμετέροις ἔθεσι, καὶ Ἰουδαίους καλουμένους, ἐμπεριπατεῖν μέσοις τοῖς ἁγίοις, θερμὰς ἔτι τὰς χεῖρας ἐξ ὁμοφύλων ἔχοντας φόνων; Εἶτα τὶς δέδοικε τὸν ἔξωθεν πόλεμον, καὶ τοὺς ἐν συγκρίσει πολλῷ τῶν οἰκείων ἡμῖν μετριωτέρους; Καὶ γὰρ ἂν, εἰ ἑτοίμους δεῖ τοῖς πράγμασι τὰς κλήσεις ἐφαρμόζειν, τάχα ἂν εὕροι τις Ῥωμαίους μὲν ἡμῖν βεβαιωτὰς τῶν νόμων, πολεμίους δὲ τοὺς ἔνδον. Ἀλλ᾿ ὅτι μὲν ἐξώλεις οἱ ἐπίβουλοι τῆς ἐλευθερίας, καὶ πρὸς ἃ δεδράκασιν οὐκ ἂν τις ἐπινοήσειε δίκην ἀξίαν κατ᾿ αὐτῶν, οἶμαι πάντας ἥκειν πεπεισμένους οἴκοθεν, καὶ πρὸ τῶν ἐμῶν λόγων παρωξύνθαι τοῖς ἔργοις ἐπ᾿ αὐτοὺς, ἃ πεπόνθατε. Καταπλήσσονται δὲ ἴσως οἱ πολλοὶ τό τε πλῆθος αὐτῶν καὶ τὴν τόλμαν, ἔτι δὲ καὶ τὴν ἐκ τοῦ τόπου πλεονεξίαν. Ταῦτα δὲ ὥσπερ συνέστη διὰ τὴν ὑμετέραν ἀμέλειαν, καὶ νῦν αὐξηθήσεται πλέον ὑπερθεμένων· καὶ γὰρ τὸ πλῆθος αὐτοῖς ἐπιτρέφεται καθ᾿ ἡμέραν, παντὸς πονηροῦ πρὸς τοὺς ὁμοίους αὐτομολοῦντος, καὶ τὴν τόλμαν ἐξάπτει μέχρι νῦν μηδὲν ἐμπόδιον· τῷ τε τόπῳ καθύπερθεν ὄντες χρήσαιντο καὶ μετὰ παρασκευῆς, ἂν ἡμεῖς χρόνον δῶμεν. Πιστεύσατε δὲ, ὡς, ἐὰν προσβαίνωμεν ἐπ᾿ αὐτοῖς, ἔσονται τῇ συνειδήσει ταπεινότεροι, καὶ τὸ πλεονέκτημα τοῦ 278
ὕψους ὁ λογισμὸς ἀπολεῖ. Τάχα τὸ θεῖον ὑβρισμένον ἀναστρέψει κατ᾿ αὐτῶν τὰ βαλλόμενα, καὶ τοῖς σφετέροις διαφθαρήσονται βέλεσιν οἱ δυσσεβεῖς. Μόνον ὀφθῶμεν αὐτοῖς, καὶ καταλέλυνται. Καλὸν δὲ, καὶ ἂν προσῇ τις κίνδυνος, ἀποθνήσκειν πρὸς τοῖς ἱεροῖς πυλῶσι, καὶ τὴν ψυχὴν, εἰ καὶ μὴ πρὸ παί-

δων ἢ γυναικῶν, ἀλλ' ὑπὲρ τοῦ θεοῦ καὶ τῶν ἁγίων προέσθαι. Προστήσομαι δ' ἐγὼ γνώμῃ τε καὶ χειρὶ, καὶ οὔτε ἐπίνοιά τις ὑμῖν λείψει πρὸς ἀσφάλειαν ἐξ ἡμῶν, οὔτε τοῦ σώματος ὄψεσθε φειδόμενον."

11. Τούτοις ὁ Ἄνανος παρεκρότει τὸ πλῆθος ἐπὶ τοὺς ζηλωτὰς, οὐκ ἀγνοῶν μὲν, ὡς εἶεν ἤδη δυςκατάλυτοι πλήθει τε καὶ νεότητι καὶ παραστήματι ψυχῆς, τὸ πλέον δὲ συνειδήσει τῶν εἰργασμένων, οὐ γὰρ ἐνδώσειν αὐτοὺς εἰς ἔσχατον συγγνώμην ἐφ' οἷς ἔδρασαν ἐλπίσαντας· ὅμως δὲ πᾶν ὅ τι οὖν παθεῖν προῄρητο μᾶλλον, ἢ περιϊδεῖν ἐν τοιαύτῃ τὰ πράγματα συγχύσει. Τὸ δὲ πλῆθος ἄγειν αὐτοὺς ἐβόα, καθ' ὧν παρεκάλει· καὶ προκινδυνεύειν ἕκαστος ἦν ἑτοιμότατος.

12. Ἐν ὅσῳ δὲ ὁ Ἄνανος κατέλεγέ τε καὶ συνέτασσε τοὺς ἐπιτηδείους πρὸς μάχην, οἱ ζηλωταὶ πυθόμενοι τὴν ἐπιχείρησιν — παρῆσαν γὰρ οἱ ἀγγέλλοντες αὐτοῖς πάντα τὰ παρὰ τοῦ δήμου — παροξύνονται, καὶ ἐκ τοῦ ἱεροῦ προπηδῶντες ἀθρόοι τε καὶ κατὰ λόχους, οὐδενὸς ἐφείδοντο τῶν προςτυγχανόντων. Ἀθροίζεται δὲ ὑπ' Ἀνάνου ταχέως τὸ δημοτικὸν, πλήθει μὲν ὑπερέχον, ὅπλοις δὲ καὶ τῷ μὴ συγκεκροτῆσθαι λειπόμενον τῶν ζηλωτῶν. Τὸ πρόθυμον δὲ παρ' ἑκατέροις ἀνεπλήρου τὰ λείποντα, τῶν μὲν ἀπὸ τῆς πόλεως ἀνειληφότων ὀργὴν ἰσχυροτέραν τῶν ὅπλων, τῶν δὲ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ τόλμαν παντὸς πλήθους ὑπερέχουσαν· καὶ οἱ μὲν ἀοίκητον ὑπολαμβάνοντες ἑαυτοῖς τὴν πόλιν, εἰ μὴ τοὺς λῃστὰς ἐκκόψειαν αὐτῆς, οἱ ζηλωταὶ δὲ, εἰ μὴ κρατοῖεν, οὐκ ἔστιν ἧςτινος ὑστερήσειν τιμωρίας. Συνεῤῥήγνυντο δὲ στρατηγούμενοι τοῖς πάθεσι, τὸ μὲν πρῶτον κατὰ τὴν πόλιν καὶ πρὸ τοῦ ἱεροῦ λίθοις βάλλοντες ἀλλήλους, καὶ πόῤῥωθεν διακοντιζόμενοι. Κατὰ δὲ τὰς τροπὰς οἱ κρατοῦντες ἐχρῶντο τοῖς ξίφεσι· καὶ πολὺς ἦν ἑκατέρων φόνος, τραυματίαι δὲ ἐγένοντο συχνοί. Καὶ τοὺς μὲν ἀπὸ τοῦ

δήμου διεκόμιζον εἰς τὰς οἰκίας οἱ προςήκοντες, ὁ δὲ βληθεὶς τῶν ζηλωτῶν εἰς τὸ ἱερὸν ἀνῄει, καθαιμάσσων τὸ θεῖον ἔδαφος· καὶ μόνον ἄν τις εἴποι τὸ ἐκείνων αἷμα μιᾶναι τὰ ἅγια. Κατὰ μὲν οὖν τὰς συμβολὰς ἐκτρέχοντες ἀεὶ περιῆσαν οἱ ληστρικοί· τεθυμωμένοι δὲ οἱ δημοτικοὶ, καὶ πλείους ἀεὶ γινόμενοι, κακίζοντες τοὺς ἐνδιδόντας, καὶ μὴ διδόντες τοῖς τρεπομένοις ἀναχώρησιν οἱ κατόπιν βιαζόμενοι, πᾶν μὲν ἐπιστρέφουσι τὸ σφέτερον εἰς τοὺς ἐναντίους· καὶ ἐκείνων μηκέτι ἀντεχόντων τῇ βίᾳ, κατὰ μικρὸν δὲ ἀναχωρούντων εἰς τὸ ἱερὸν, συνειςπίπτουσιν οἱ περὶ τὸν Ἄνανον. Τοῖς δὲ κατάπληξις ἐμπίπτει στερουμένοις τοῦ πρώτου περιβόλου, καὶ καταφυγόντες εἰς τὸ ἐνδότερον ταχέως ἀποκλείουσι τὰς πύλας. Τῷ δὲ Ἀνάνῳ προςβάλλειν μὲν οὐκ ἐδόκει ταῖς ἱεροῖς πυλῶσιν, ἄλλως τε καὶ ἐκείνων βαλλόντων ἄνωθεν· ἀθέμιτον δ' ἡγεῖτο, καὶ ἐὰν 279
κρατήσῃ, μὴ προηγνευκὼς εἰςάγειν τὸ πλῆθος. Διακληρώσας δ' ἐκ πάντων εἰς ἑξακιςχιλίους ὁπλίτας, καθίστησιν ἐπὶ ταῖς στοαῖς φρουρούς, διεδέχοντο δ' ἄλλοι τούτους, καὶ παντὶ μὲν ἦν ἀνάγκη παρεῖναι πρὸς τὴν φυλακὴν ἐκ περιόδου· πολλοὶ δὲ τῶν ἐν ἀξιώμασιν ἀφεθέντες ὑπὸ τῶν ἄρχειν δοκούντων, μισθούμενοι πενιχροτέρους ἀνθ' ἑαυτῶν ἐπὶ τὴν φρουρὰν ἔπεμπον.

13. Γίνεται δὲ τούτοις πᾶσιν ὀλέθρου παραίτιος Ἰωάννης, ὃν ἔφαμεν ἀπὸ Γισχάλων διαδρᾶναι, δολιώτατος ἀνὴρ, καὶ δεινὸν ἔρωτα τυραννίδος ἐν τῇ ψυχῇ περιφέρων, ὃς πόῤῥωθεν ἐπεβούλευε τοῖς πράγμασι. Καὶ δὴ τότε τὰ τοῦ δήμου φρονεῖν ὑποκρινόμενος, συμπεριῄει μὲν τῷ Ἀνάνῳ, βουλευομένῳ μὲν σὺν τοῖς δυνατοῖς καθ' ἡμέραν, καὶ νύκτωρ ἐπιόντι τὰς φυλακάς· διήγγελλε δὲ τὰ ἀπόῤῥητα τοῖς ζηλωταῖς, καὶ πᾶν σκέμμα τοῦ δήμου, πρὶν καλῶς βουλευθῆναι, παρὰ τοῖς ἐχθροῖς ἐγινώσκετο δι' αὐτοῦ. Μηχανώμενος δὲ τὸ μὴ δι' ὑποψίας ἐλ-

θεῖν, ἀμέτροις ἐχρῆτο ταῖς θεραπείαις εἴς τε τὸν Ἄνανον, καὶ τοὺς τοῦ δήμου προεστῶτας. Ἐχώρει δ' εἰς τὸ ἐναντίον αὐτῷ τὸ φιλότιμον· διὰ γὰρ τὰς ἀλόγους κολακείας μᾶλλον ὑπωπτεύετο, καὶ τὸ πανταχοῦ παρεῖναι μὴ καλούμενον ἔμφασιν προδοσίας τῶν ἀποῤῥήτων παρεῖχε. Συνεώρων μὲν γὰρ αἰσθανομένους ἅπαντα τοὺς ἐχθροὺς τῶν παρ' αὐτοῖς βουλευμάτων, πιθανώτερος δ' οὐδεὶς ἦν Ἰωάννου πρὸς ὑποψίας τοῦ διαγγέλλειν. Ἀποσκευάσασθαι μὲν οὖν αὐτὸν οὐκ ἦν ῥᾴδιον, ὄντα δυνατὸν ἐκ πονηρίας, καὶ ἄλλως οὐ τῶν ἀσήμων ὑπεζωσμένον τε πολλοὺς τῶν συνεδρευόντων τοῖς ὅλοις. Ἐδόκει δὲ αὐτὸν ὅρκοις πιστώσασθαι πρὸς εὔνοιαν· ὤμνυε δὲ ὁ Ἰωάννης ἑτοίμως, εὐνοήσειν τε τῷ δήμῳ, καὶ μήτε βουλήν τινα μήτε πρᾶξιν προδώσειν τοῖς ἐχθροῖς, συγκαταλύσειν δὲ τοὺς ἐπιθεμένους καὶ χειρὶ καὶ γνώμῃ. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἄνανον πιστεύσαντες τοῖς ὅρκοις, ἤδη χωρὶς ὑπονοίας εἰς τὰς συμβουλίας αὐτὸν παρελάμβανον· καὶ δὴ καὶ πρεσβευτὴν εἰςπέμπουσι πρὸς τοὺς ζηλωτὰς περὶ διαλύσεων· ἦν γὰρ αὐτοῖς σπουδὴ τὸ παρ' αὐτοῖς μὴ μιᾶναι ἱερὸν, μηδέ τινα τῶν ὁμοφύλων ἐν αὐτῷ πεσεῖν.

14. Ὁ δὲ ὥςπερ τοῖς ζηλωταῖς ὑπὲρ εὐνοίας ὀμόσας, καὶ οὐ κατ' αὐτῶν, παρελθὼν εἴσω, καὶ καταστὰς εἰς μέσους, 'πολλάκις μὲν, ἔφη, κινδυνεῦσαι δι' αὐτοὺς, ἵνα μηδὲν ἀγνοήσωσι τῶν ἀποῤῥήτων, ὅσα κατ' αὐτῶν οἱ περὶ τὸν Ἄνανον ἐβουλεύσαντο· νῦν δὲ τὸν μέγιστον ἀναῤῥιπτεῖν κίνδυνον σὺν πᾶσιν αὐτοῖς, εἰ μή τις προςγένοιτο βοήθεια δαιμόνιος. Οὐ γὰρ ἔτι μέλλειν Ἄνανον, ἀλλὰ πείσαντα μὲν τὸν δῆμον πεπομφέναι πρέσβεις πρὸς
280 *Οὐεσπασιανὸν, ἵνα ἐλθὼν κατὰ τάχος παραλάβῃ τὴν πόλιν. Ἁγνείαν δὲ παρηγγελκέναι κατ' αὐτῶν εἰς τὴν ἑξῆς ἡμέραν, ἵνα, ἢ κατὰ θρησκείαν εἰςελθόντες, ἢ καὶ βιασάμενοι, συμμίξωσιν αὐτοῖς.*

Οὐχ ὁρᾶν δὲ, μέχρι τίνος ἢ τὴν φρουρὰν οἴσουσιν, ἢ παρατάξονται πρὸς τοσούτους. Προςετίθει δὲ, ὡς αὐτὸς εἰςπεμφθείη, κατὰ θεοῦ πρόνοιαν, ὡς πρεσβευτὴς ὑπὲρ διαλύσεων· τὸν γὰρ Ἄνανον ταύτας αὐτοῖς προτείνειν, ὅπως ἀνόπλοις ἐπέλθῃ. Δεῖν οὖν ἢ τῷ λόγῳ τοῦ ζῆν τοὺς φρουροῦντας ἱκετεύειν, ἢ πορίζεσθαί τινα παρὰ τῶν ἔξωθεν ἐπικουρίαν· τοὺς δὲ, θαλπομένους ἐλπίδι συγγνώμης, εἰ κρατηθεῖεν, ἐπιλελῆσθαι τῶν ἰδίων τολμημάτων, ἢ νομίζειν ἅμα τῷ μετανοεῖν τοὺς δεδρακότας εὐθέως ὀφείλειν διηλλάχθαι καὶ τοὺς παθόντας. Ἀλλὰ τῶν μὲν ἀδικησάντων διὰ μίσους πολλάκις γίνεσθαι καὶ τὴν μεταμέλειαν· τοῖς ἀδικηθεῖσι δὲ τὰς ὀργὰς ἐπ' ἐξουσίας χαλεπωτέρας. Ἐφεδρεύειν δὲ ἀεὶ ἐκείνοις φίλους καὶ συγγενεῖς τῶν ἀπολωλότων, καὶ δῆμον τοσοῦτον ὑπὲρ καταλύσεως νόμων καὶ δικαστηρίων τεθυμωμένον· ὅπου, καὶ ἐὰν ᾖ τι μέρος ἐλεοῦν, ὑπὸ πλείονος ἂν αὐτὸ τοῦ διαγανακτοῦντος ἀφανισθῆναι.'

CAP. IV. 1. Τοιαῦτα μὲν ἐποίκιλλεν ἀθρόως δεδισσόμενος· καὶ τὴν ἔξωθεν βοήθειαν ἀναφανδὸν μὲν οὐκ ἐθάῤῥει λέγειν, ᾐνίσσετο δὲ τοὺς Ἰδουμαίους. Ἵνα δὲ καὶ τοὺς ἡγεμόνας τῶν ζηλωτῶν ἰδίᾳ παροξύνῃ, τὸν Ἄνανον εἴς τε ὠμότητα διέβαλλε, καὶ ἀπειλεῖν ἐκείνοις ἐξαιρέτως ἔλεγεν. Ἦσαν δὲ Ἐλεάζαρος, υἱὸς Σίμωνος, ὃς δὴ καὶ πιθανώτατος ἐδόκει τῶν ἐν αὐτοῖς νοῆσαί τε τὰ δέοντα καὶ τὰ νοηθέντα πρᾶξαι, Ζαχαρίας τε, υἱὸς Φαλέκου, γένος ἐκ τῶν ἱερέων ἑκάτεροι. Οὗτοι πρὸς ταῖς κοιναῖς τὰς ἰδίας καθ' αὐτῶν ἀπειλὰς ἀκούσαντες, ἔτι δ' ὡς οἱ περὶ τὸν Ἄνανον δυναστείαν ἑαυτοῖς περιποιούμενοι Ῥωμαίους ἐπικαλοῖντο, καὶ γὰρ τοῦτο Ἰωάννης προςεψεύσατο, μέχρι πολλοῦ μὲν ἠπόρουν, τὸ τί χρὴ πράττειν εἰς ὀξὺν οὕτω καιρὸν συνεωσμένους, 'παρεσκευάσθαι μὲν γὰρ τὸν δῆμον ἐπιχειρεῖν αὐτοῖς,

οὐκ εἰς μακρὰν, αὐτῶν δὲ τὸ σύντονον τῆς ἐπιβουλῆς ὑποτετμῆσθαι τὰς ἔξωθεν ἐπικουρίας· πάντα γὰρ ἂν φθῆναι παθεῖν, πρὶν καὶ πυθέσθαι τινὰ τῶν συμμάχων.' Ἔδοξε δὲ ὅμως ἐπικαλεῖσθαι τοὺς Ἰδουμαίους. Καὶ γράψαντες ἐπιστολὴν σύντομον, ὡς 'Ἄνανος μὲν προδιδοίη Ῥωμαίοις τὴν μητρόπολιν ἐξαπατήσας τὸν δῆμον, αὐτοὶ δὲ ὑπὲρ τῆς ἐλευ-
281 θερίας ἀποστάντες ἐν τῷ ἱερῷ φρουροῖντο, ὀλίγος δ' ἔτι χρόνος αὐτοῖς βραβεύοι τὴν σωτηρίαν· εἰ δὲ μὴ βοηθήσουσιν ἐκεῖνοι κατὰ τάχος, αὐτοὶ μὲν ὑπ' Ἀνάνῳ τε καὶ τοῖς ἐχθροῖς, ἡ πόλις δ' ὑπὸ Ῥωμαίοις φθάσει γενομένη·' τὰ δὲ πολλὰ τοῖς ἀγγέλοις ἐνετέλλοντο πρὸς τοὺς ἄρχοντας τῶν Ἰδουμαίων διαλέγεσθαι. Προεβλήθησαν δ' ἐπὶ τὴν ἀγγελίαν δύο τῶν δραστηρίων ἀνδρῶν, εἰπεῖν τε ἱκανοὶ καὶ πεῖσαι περὶ πραγμάτων, τὸ δὲ τούτων χρησιμώτερον, ὠκύτητι ποδῶν διαφέροντες· τοὺς μὲν γὰρ Ἰδουμαίους αὐτόθεν ᾔδεισαν πεισθησομένους, ἅτε θορυβῶδες καὶ ἄτακτον ἔθνος, ἀεί τε μετέωρον πρὸς τὰ κινήματα, καὶ μεταβολαῖς χαῖρον, πρὸς ὀλίγην δὲ κολακείαν τῶν δεομένων τὰ ὅπλα κινοῦν, καὶ καθάπερ εἰς ἑορτὴν εἰς τὰς παρατάξεις ἐπειγόμενον. Ἔδει δὲ τάχους εἰς τὴν ἀγγελίαν· εἰς ὃ μηδὲν ἐλλείποντες προθυμίας οἱ πεμφθέντες, ἐκαλεῖτο δ' αὐτῶν Ἀνανίας ἑκάτερος, καὶ δὴ πρὸς τοὺς ἄρχοντας τῶν Ἰδουμαίων παρῆσαν.

2. Οἱ δὲ πρὸς τὴν ἐπιστολὴν καὶ τὰ ῥηθέντα παρὰ τῶν ἀφιγμένων ἐκπλαγέντες, ὥσπερ ἐμμανεῖς περιέθεόν τε τὸ ἔθνος, καὶ διεκήρυσσον τὴν στρατείαν. Ἤθροιστο δὲ ἡ πληθὺς τάχιον τοῦ παραγγέλματος, καὶ πάντες ὡς ἐπ' ἐλευθερίᾳ τῆς μητροπόλεως ἥρπαζον τὰ ὅπλα. Συνταχθέντες δὲ εἰς δύο μυριάδας, παραγίνονται πρὸς τὰ Ἱεροσόλυμα, χρώμενοι τέσσαρσιν ἡγεμόσιν, Ἰωάννῃ τε καὶ Ἰακώβῳ παιδὶ Σωσᾶ, πρὸς δὲ τούτοις ἦν Σίμων υἱὸς Καθλᾶ, καὶ Φινέας Κλουσώθου.

3. *Τὸν δὲ Ἄνανον ἡ μὲν ἔξοδος τῶν ἀγγέλων, ὥσπερ καὶ τοὺς φύλακας, ἔλαθεν, ἡ δ' ἔφοδος τῶν Ἰδουμαίων οὐκ ἔτι. Προγνοὺς γὰρ ἀποκλείει τὰς πύλας αὐτοῖς, καὶ διὰ φυλακῆς εἶχε τὰ τείχη· καθάπαν γε μὴν αὐτοὺς ἐκπολεμεῖν οὐκ ἔδοξεν, ἀλλὰ λόγοις πείθειν πρὸ τῶν ὅπλων. Στὰς οὖν ἐπὶ τὸν ἄντικρυς αὐτῶν πύργον; ὁ μετὰ Ἄνανον γεραίτατος τῶν ἀρχιερέων Ἰησοῦς, "Πολλῶν," ἔφη, "καὶ ποικίλων τὴν πόλιν κατεσχηκότων θορύβων, ἐν οὐδενὶ θαυμάσαι τὴν τύχην οὕτως, ὡς τὸ συμπράττειν τοῖς πονηροῖς καὶ τὰ παράδοξα. Παρεῖναι γὰρ ὑμᾶς ἀνθρώποις ἐξωλεστάτοις μετὰ τοσαύτης προθυμίας ἐπαμυνοῦντας καθ' ἡμῶν, μεθ' ὅσης εἰκὸς ἦν ἐλθεῖν οὐδὲ τῆς μητροπόλεως καλούσης ἐπὶ τοὺς βαρβάρους. Καὶ εἰ μὲν ἑώρων τὴν σύνταξιν ὑμῶν ἐξ ὁμοίων τοῖς καλέσασιν ἀνδρῶν, οὐκ ἂν ἄλογον τὴν ὁρμὴν ὑπελάμβανον· οὐδὲν γὰρ οὕτως συνίστησι τὰς εὐνοίας, ὡς τρόπων συγγένεια. Νῦν δὲ, εἰ μέν τις αὐτοὺς ἐξετάζοι καθ' ἕνα, μυρίων ἕκαστος εὑρεθήσεται θανάτων ἄξιος· τὰ γὰρ ἀθύρματα καὶ καθάρματα τῆς χώρας ὅλης, κατασωτευσάμενα τὰς ἰδίας οὐσίας, καὶ προγυμνάσαντα τὴν ἀπόνοιαν ἐν ταῖς πέριξ κώμαις τε καὶ πόλεσι, τελευταῖα λεληθότως παρεισέῤῥευσαν εἰς τὴν ἱερὰν πόλιν· λησταὶ, δι' ὑπερβολὴν ἀσεβημάτων, μιαίνοντες καὶ τὸ ἀβέβηλον ἔδαφος, οὓς ὁρᾶν ἐστι νῦν ἀδεεῖς ἐμμεθυσκομένους τοῖς ἁγίοις, καὶ τὰ σκῦλα τῶν πεφονευμένων καταναλίσκοντας εἰς τὰς ἀπλήστους γαστέρας.* 282
Τὸ δὲ ὑμέτερον πλῆθος, καὶ τὸν κόσμον τῶν ὅπλων ὁρᾶν ἐστιν, οἷος ἔπρεπε, καλούσης τῆς μητροπόλεως κοινῷ βουλευτηρίῳ συμμάχους κατ' ἀλλοφύλων. Τί ἂν οὖν εἴποι τοῦτό τις ἢ τύχης ἐπήρειαν, ὅταν λογάσι πονηροῖς αὔτανδρον ἔθνος ὁρᾷ συνασπίζον αὐτοῖς; Μέχρι πολλοῦ μὲν ἀπορῶ, τί δή ποτε καὶ τὸ κινῆσαν ὑμᾶς οὕτω ταχέως ἐγένετο; Μὴ γὰρ ἂν δίχα μεγάλης αἰτίας ἀναλαβεῖν τὰς πανοπλίας ὑπὲρ

λῃστῶν, καὶ κατὰ δῆμου συγγινοῦς. Ἐπεὶ δὲ ἠκούσαμεν Ῥωμαίους καὶ προδοσίαν, — ταῦτα γὰρ ὑμῶν ἐθορύβουν τινὲς ἀρτίως, καὶ τῆς μητροπόλεως ἐπ' ἐλευθερώσει παρεῖναι, — πλέον τῶν ἄλλων τολμημάτων ἐθαυμάσαμεν τοὺς ἀλιτηρίους, τῆς περὶ τὸ ψεῦδος ἐπινοίας. Ἄνδρας γὰρ φύσει φιλελευθέρους, καὶ διὰ τοῦτο μάλιστα τοῖς ἔξωθεν πολεμίοις μάχεσθαι παρεσκευασμένους, οὐκ ἐνῆν ἄλλως ἐξαγριῶσαι καθ' ἡμῶν, ἢ λογοποιήσαντας προδοσίαν τῆς ποθουμένης ἐλευθερίας. Ἀλλ' ὑμᾶς γε χρὴ σκέπτεσθαι τούς τε διαβάλλοντας, καὶ καθ' ὧν· συνάγειν τε τὴν ἀλήθειαν οὐκ ἐκ τῶν ἐπιπλάστων λόγων, ἀλλ' ἐκ τῶν κοινῶν πραγμάτων. Τί γὰρ δὴ καὶ παθόντες ἂν ἡμεῖς Ῥωμαίοις προςπωλοῖμεν ἑαυτοὺς νῦν, παρὸν ἢ μηδὲ ἀποστῆναι τὸ πρῶτον, ἢ προςχωρῆσαι ταχέως ἀποστάντας, ὄντων ἔτι τῶν πέριξ απορθήτων; Νῦν μὲν γὰρ οὐδὲ βουλομένοις διαλύσασθαι ῥάδιον, ὅτε Ῥωμαίους μὲν ὑπερόπτας πεποίηκεν ὑποχείριος ἡ Γαλιλαία, φέρει δ' αἰσχύνην ἡμῖν θανάτου χαλεπωτέραν τὸ θεραπεύειν αὐτοὺς ὄντας ἤδη πλησίον. Καὶ ἔγωγε κατ' ἐμαυτὸν μὲν ἂν εἰρήνην προτιμήσαιμι θανάτου, πολεμούμενος δ' ἅπαξ καὶ συμβαλὼν θάνατον εὐκλεᾶ τοῦ ζῆν αἰχμάλωτος. Πότερον δέ φασιν ἡμᾶς, τοὺς τοῦ δήμου προεστῶτας, πέμψαι κρύφα πρὸς Ῥωμαίους, ἢ καὶ τὸν δῆμον κοινῇ ψηφισάμενον; Εἰ μὲν ἡμᾶς, εἰπάτωσαν τοὺς πεμφθέντας φίλους, τοὺς διακονήσαντας τὴν προδοσίαν οἰκέτας. Ἐφωράθη τις ἀπιών; Ἀνακομιζόμενος ἑάλω; Γραμμάτων γεγόνασιν ἐγκρατεῖς; Πῶς δὲ τοὺς μὲν τοσούτους πολίτας ἐλάθομεν, οἷς κατὰ πᾶσαν ὥραν συναναστρεφόμεθα; Τοῖς δὲ ὀλίγοις καὶ φρουρουμένοις, καὶ μηδ' εἰς τὴν πόλιν ἐκ τοῦ ἱεροῦ προελθεῖν δυναμένοις, ἐγνώσθη τὰ κατὰ τὴν χώραν λαθραίως ἐνεργούμενα; Νῦν δ' ἔγνωσαν, ὅτι δεῖ δοῦναι δίκας τῶν τετολμημένων; Ἕως δ' ἦσαν ἀδεεῖς αὐτοὶ, προδότης ἡμῶν οὐδεὶς ὑπωπτεύετο.

Εἰ δὲ ἐπὶ τὸν δῆμον ἀναφέρουσι τὴν αἰτίαν, ἐν φα-
νερῷ δήπουθεν ἐβουλεύσαντο, οὐδ' εἷς ἀπεστάτει
τῆς ἐκκλησίας, ὥστε τάχιον ἂν τῆς μηνύσεως ἔσπευ-
σεν ἡ φήμη πρὸς ὑμᾶς φανερωτέρα. Τί δαὶ, οὐχὶ
καὶ πρέσβεις ἔδει πέμπειν ψηφισομένους τὰς διαλύ-
σεις; Καὶ τίς ὁ χειροτονηθεὶς, εἰπάτωσαν. Ἀλλὰ
τοῦτο μὲν δυσθανατώντων, καὶ πλησίον οὔσας τὰς
τιμωρίας διακρουομένων σκῆψίς ἐστιν· εἰ γὰρ δὴ
καὶ προδοθῆναι τὴν πόλιν εἵμαρται, μόνους ἂν τολ-
μῆσαι καὶ τοῦτο τοὺς διαβάλλοντας, ὧν τοῖς τολ- 283
μήμασιν ἓν μόνον κακὸν λείπει, προδοσία. Χρὴ δὲ
ὑμᾶς, ἐπειδήπερ ἅπαξ πάρεστε μετὰ τῶν ὅπλων,
τὸ μὲν δικαιότατον ἀμύνειν τῇ μητροπόλει, καὶ συν-
εξαιρεῖν τοὺς τὰ δικαστήρια καταλύσαντας τυράν-
νους, οἳ πατήσαντες τοὺς νόμους ἐπὶ τοῖς αὐτῶν
ξίφεσι πεποίηνται τὰς κρίσεις. Ἄνδρας γοῦν ἀκα-
ταιτιάτους τῶν ἐπιφανῶν ἐκ μέσης τῆς ἀγορᾶς ἁρ-
πάσαντες, δεσμοῖς τε προςῃκίσαντο, καὶ μηδὲ φω-
νῆς μηδὲ ἱκεσίας ἀνασχόμενοι διέφθειραν. Ἔξεστι
δὲ ὑμῖν, παρελθοῦσιν εἴσω μὴ πολέμου νόμῳ, θεά-
σασθαι τὰ τεκμήρια τῶν λεγομένων, οἴκους ἠρημω-
μένους ταῖς ἐκείνων ἁρπαγαῖς, καὶ γύναια καὶ γε-
νεὰς τῶν ἀπεσφαγμένων μελανειμονούσας, κωκυτὸν
δὲ καὶ θρῆνον ἀνὰ τὴν πόλιν ὅλην· οὐδεὶς γάρ
ἐστιν, ὃς οὐ γέγευται τῆς τῶν ἀνοσίων καταδρο-
μῆς. Οἵ γε ἐπὶ τοσοῦτον ἐξώκειλαν ἀπονοίας, ὥςτε
μὴ μόνον ἐκ τῆς χώρας καὶ τῶν ἔξωθεν πόλεων ἐπὶ
τὸ πρόςωπον καὶ τὴν κεφαλὴν ὅλου τοῦ ἔθνους με-
τενεγκεῖν τὴν λῃστρικὴν τόλμαν, ἀλλὰ καὶ ἀπὸ τῆς
πόλεως ἐπὶ τὸ ἱερόν. Ὁρμητήριον γοῦν αὐτοῖς τοῦτο
καὶ καταφυγὴ, ταμιεῖόν τε τῶν ἐφ' ἡμᾶς παρα-
σκευῶν γέγονεν. Ὁ δὲ ὑπὸ τῆς οἰκουμένης προς-
κυνούμενος χῶρος, καὶ τοῖς ἀπὸ περάτων γῆς ἀλ-
λοφύλοις ἀκοῇ τετιμημένος, ὑπὸ τῶν παραγεννηθέν-
των ἐνθάδε θηρίων καταπατεῖται. Νεανιεύονται δ'
ἐν ταῖς ἀπογνώσεσιν ἤδη, δήμους τε δήμοις, καὶ

πόλεις πόλεσι συγκρούειν, καὶ τῶν κατὰ ἰδίων σπλάγχνων τὸ ἔθνος στρατολογεῖν· ἀνθ᾽ ὧν τὸ μὲν κάλλιστον καὶ πρέπον ὡς ἔφην ὑμῖν, συνεξαίρειν τοὺς ἀλιτηρίους, καὶ ὑπὲρ αὐτῆς τῆς ἀπάτης ἀμυνομένους, ὅτι συμμάχους ἐτόλμησαν καλεῖν οὓς ἔδει τιμωροὺς δεδιέναι. Εἰ δὲ αἰδεῖσθε τὰς τῶν τοιούτων ἐπικλήσεις, ἀλλά τοι πάρεστι θεμένοις τὰ ὅπλα, καὶ παρελθοῦσιν εἰς τὴν πόλιν σχήματι συγγενῶν, ἀναλαβεῖν τὸ μέσον συμμάχων τε καὶ πολεμίων ὄνομα, δικαστὰς γενομένους· καίτοι λογίσασθε, πόσον κερδήσουσιν, ἐφ᾽ ὁμολογουμένοις καὶ τηλικούτοις κρινόμενοι παρ᾽ ὑμῖν, οἱ τοῖς ἀκαταιτιάτοις μηδὲ λόγου μεταδόντες· λαμβανέτωσαν δ᾽ οὖν ταύτην ἐκ τῆς ἡμετέρας ἀφίξεως τὴν χάριν. Εἰ δὲ οὔτε συναγανακτεῖν ὑμῖν, οὔτε κρίνειν δοκεῖ, τρίτον ἐστὶ καταλιπεῖν ἑκατέρους, καὶ μήτε ταῖς ἡμετέραις ἐπιβαίνειν συμφοραῖς, μήτε τοῖς ἐπιβούλοις τῆς μητροπόλεως συμμένειν. Εἰ γὰρ καὶ τὰ μάλιστα Ῥωμαίοις ὑποπτεύετε διειλέχθαι τινὰς, παρατηρεῖν ἔξεστι τὰς ἐφόδους· καὶ ἐάν τι τῶν διαβεβλημένων ἔργων διακαλύπτηται, τότε φρουρεῖν τὴν μητρόπολιν ἐλθόντας, κολάζειν τε τοὺς αἰτίους πεφωραμένους· οὐ γὰρ ἂν ὑμᾶς φθάσειαν οἱ πολέμιοι τῇ πόλει προςφκημένους. Εἰ δὲ οὐδὲν ὑμῖν τούτων εὔγνωμον ἢ μέτριον δοκεῖ, μὴ θαυμάζετε τὰ κλεῖθρα τῶν πυλῶν, ἕως ἂν φέρητε τὰ ὅπλα."

284 4. Τοιαῦτα μὲν Ἰησοῦς ἔλεγε. Τῶν δὲ Ἰδουμαίων οὐδὲν τὸ πλῆθος προςεῖχεν, ἀλλὰ τεθύμωτο μὴ τυχὸν ἑτοίμης τῆς εἰςόδου· καὶ διηγανάκτουν οἱ στρατηγοὶ πρὸς τὴν ἀπόθεσιν τῶν ὅπλων, αἰχμαλωσίαν ἡγούμενοι τὸ κελευόντων τινῶν αὐτὰ ῥίψαι. Σίμων δὲ υἱὸς Καθλᾶ τῶν ἡγεμόνων εἷς, μόλις τὸν τῶν οἰκείων καταστείλας θόρυβον, καὶ στὰς εἰς ἐπήκοον τοῖς ἀρχιερεῦσιν, "Οὐκέτι θαυμάζειν," ἔφη, "φρουρουμένων ἐν τῷ ἱερῷ τῶν προμάχων τῆς ἐλευθερίας, εἴ γε καὶ τῷ ἔθνει κλείουσί τινες ἤδη τὴν

κοινὴν πόλιν, καὶ Ῥωμαίους μὲν εἰςδέχεσθαι παρασκευάζονται, τάχα δὲ καὶ στεφανώσαντες τὰς πύλας, Ἰδουμαίοις δὲ ἀπὸ τῶν πύργων διαλέγονται, καὶ τὰ ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας ὅπλα κελεύουσι ῥίψαι. Μὴ πιστεύοντες δὲ τοῖς συγγενέσιν τὴν τῆς μητροπόλεως φυλακὴν, τοὺς αὐτοὺς δικαστὰς ποιοῦνται τῶν διαφόρων, καὶ κατηγοροῦντές τινων, ὡς ἀποκτείνειαν ἀκρίτους, αὐτοὶ καταδικάζοιεν ὅλου τοῦ ἔθνους ἀτιμίαν· τὴν γοῦν ἅπασι τοῖς ἀλλοφύλοις ἀναπεπετασμένην εἰς θρησκείαν πόλιν, τοῖς οἰκείοις νῦν ἀποτετειχίσθαι. Πάνυ γὰρ ἐπὶ σφᾶς ἐσπεύδομεν καὶ τὸν κατὰ τῶν ὁμοφύλων πόλεμον, οἱ διὰ τοῦτο ταχύναντες, ἵνα ἀτυχήσαντας ὑμᾶς τηρήσωμεν ἐλευθέρους. Τοιαῦτα μέντοι καὶ πρὸς τῶν φρουρουμένων ἠδίκησθε, καὶ πιθανὰς οὕτως ὑποψίας οἶμαι κἀκείνων συνελέξατε. Ἔπειτα τῶν ἔνδον φρουρᾷ κρατοῦντες, ὅσοι κήδονται τῶν κοινῶν πραγμάτων, καὶ τοῖς συγγενεστάτοις ἔθνεσιν ἀθρόως ἀποκλείσαντες μὲν τὴν πόλιν, ὑβριστικὰ δὲ οὕτω προςτάγματα κελεύοντες, τυραννεῖσθαι λέγετε, καὶ τὸ τῆς δυναστείας ὄνομα τοῖς ὑφ᾽ ὑμῶν τυραννουμένοις περιάπτετε. Τίς ἂν ἐνέγκαι τὴν εἰρωνείαν τῶν λόγων, ἀφορῶν εἰς τὴν ἐναντιότητα τῶν πραγμάτων; Εἰ μὴ καὶ νῦν ὑμᾶς ἀποκλείουσιν Ἰδουμαῖοι τῆς μητροπόλεως, οὓς αὐτοὶ τῶν πατρίων ἱερῶν εἴργετε. Μέμψαιτ᾽ ἄν τις εἰκότως τοὺς ἐν τῷ ἱερῷ πολιορκουμένους, ὅτι θαρσήσαντες τοὺς προδότας κολάζειν, οὓς ὑμεῖς ἄνδρας ἐπισήμους, καὶ ἀκαταιτιάτους λέγετε διὰ τὴν κοινωνίαν, οὐκ ἀφ᾽ ὑμῶν ἤρξαντο, καὶ τὰ καιριώτατα τῆς προδοσίας μέρη προαπέκοψαν. Ἀλλ᾽ εἰ καὶ ἐκεῖνοι τῆς χρείας ἐγένοντο μαλακώτεροι, τηρήσομεν Ἰδουμαῖοι τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ, καὶ τῆς κοινῆς πατρίδος προπολεμήσομεν, ἅμα τούς τε ἔξωθεν ἐπιόντας καὶ τοὺς ἔνδον προδιδόντας ἀμυνόμενοι πολεμίους. Ἐνθάδε πρὸ τῶν τειχῶν μενοῦμεν ἐν τοῖς ὅπλοις, ἕως ἂν Ῥωμαῖοι

κάμωσι προςέχοντες ὑμῖν, ἢ ὑμεῖς ἐλεύθερα φρονήσαντες μεταβάλησθε.

5. Τούτοις τὸ μὲν τῶν Ἰδουμαίων ἐπεβόα πλῆθος. Ὁ δὲ Ἰησοῦς ἀθυμῶν ἀνεχώρει, τοὺς μὲν Ἰδουμαίους μηδὲν φρονοῦντας ὁρῶν μέτριον, διχόθεν δὲ τὴν πόλιν πολεμουμένην. Ἦν δὲ οὐδὲ τοῖς Ἰδουμαίοις ἐν ἠρεμίᾳ τὰ φρονήματα· καὶ γὰρ τεθύ-
285 μωντο πρὸς τὴν ὕβριν εἰρχθέντες τῆς πόλεως· καὶ τὰ ζηλωτῶν ἰσχυρὰ δοκοῦντες, ὡς οὐδὲν ἐπαμύνοντας ἑώρων, ἠπόρηντο, καὶ μετενόουν πολλοὶ τὴν ἄφιξιν. Ἡ δὲ αἰδὼς τοῦ τέλεον ἀπράκτους ὑποστρέφειν ἐνίκα τὴν μεταμέλειαν, ὥςτε μένειν αὐτόθι πρὸ τοῦ τείχους κακῶς αὐλιζομένους· διὰ γὰρ τῆς νυκτὸς ἀμήχανος ἐκρήγνυται χειμὼν, ἄνεμοί τε βίαιοι σὺν ὄμβροις λαβροτάτοις, καὶ συνεχεῖς ἀστραπαὶ, βρονταί τε φρικώδεις, καὶ μυκήματα σειομένης τῆς γῆς ἐξαίσια. Πρόδηλον δ' ἦν, ἐπ' ἀνθρώπων ὀλέθρῳ τὸ κατάστημα τῶν ὅλων συγκεχυμένον· καὶ οὐχὶ μικροῦ τις ἂν εἰκάσαι συμπτώματος τὰ τέρατα.

6. Μία δὲ τοῖς Ἰδουμαίοις καὶ τοῖς ἐν τῇ πόλει παρέστη δόξα· τοῖς μὲν, ὀργίζεσθαι τὸν θεὸν ἐπὶ τῇ στρατείᾳ, καὶ οὐκ ἂν διαφυγεῖν ἐπενεγκόντας ὅπλα τῇ μητροπόλει· τοῖς δὲ περὶ τὸν Ἄνανον, νενικηκέναι χωρὶς παρατάξεως, καὶ τὸν θεὸν ὑπὲρ αὐτῶν στρατηγεῖν. Κακοὶ δὲ ἦσαν ἄρα τῶν μελλόντων στοχασταὶ, καὶ κατεμαντεύοντο τῶν ἐχθρῶν, ἃ τοῖς ἰδίοις αὐτῶν ἐπῄει παθεῖν. Οἱ μὲν γὰρ Ἰδουμαῖοι συσπειραθέντες τοῖς σώμασιν ἀλλήλους ἀντέθαλπον, καὶ τοὺς θυρεοὺς ὑπὲρ κεφαλῆς συμφράξαντες ἧττον ἐκακοῦντο τοῖς ὑετοῖς· οἱ δὲ ζηλωταὶ μᾶλλον τοῦ καθ' αὐτοὺς κινδύνου ὑπὲρ ἐκείνων ἐβασανίζοντο, καὶ συνελθόντες ἐσκόπουν, εἴ τινα μηχανὴν αὐτοῖς ἀμύνης ἐπινοήσειαν. Τοῖς μὲν οὖν θερμοτέροις ἐδόκει μετὰ τῶν ὅπλων βιάζεσθαι τοὺς παραφυλάσσοντας· ἔπειτα δὲ εἰςπεσόντας εἰς μέσον

τῆς πόλεως ἀναφανδὸν ἀνοίγειν τοῖς συμμάχοις τὰς πύλας, τούς τε γὰρ φύλακας εἴξειν πρὸς τὸ ἀδόκητον αὐτῶν τεταραγμένους· ἄλλως τε καὶ τοὺς πλείονας αὐτῶν ὄντας ἀνόπλους καὶ πολέμων ἀπείρους, καὶ τῶν κατὰ τὴν πόλιν δυςσύνακτον ἔσεσθαι τὸ πλῆθος κατειλημμένον ὑπὸ τοῦ χειμῶνος εἰς τὰς οἰκίας. Εἰ δὲ καί τις γένοιτο κίνδυνος, πρέπειν αὐτοῖς πᾶν ὁτιοῦν παθεῖν, ἢ περιϊδεῖν τοσοῦτον πλῆθος δι' αὐτοὺς αἰσχρῶς ἀπολλύμενον.' Οἱ δὲ συνετώτεροι βιάζεσθαι μὲν ἀπεγίνωσκον, ὁρῶντες οὐ μόνον τὴν ἑαυτῶν φρουρὰν πληθύουσαν, ἀλλὰ καὶ τὸ τῆς πόλεως τεῖχος διὰ τοὺς Ἰδουμαίους ἐπιμελῶς φυλασσόμενον· ᾤοντό τε πανταχοῦ τὸν Ἄνανον παρεῖναι, καὶ κατὰ πᾶσαν ὥραν ἐπισκέπτεσθαι τὰς φυλακάς, — ὃ δὴ ταῖς μὲν ἄλλαις νυξὶν οὕτως εἶχεν, ἀνέθη δὲ κατ' ἐκείνην, οὔτι κατὰ τὴν Ἀνάνου ῥαθυμίαν, ἀλλ' ὥςτε αὐτὸς ἐκεῖνος ἀπόλοιτο, καὶ τὸ πλῆθος τῶν φυλάκων, στρατηγούσης τῆς εἱμαρμένης ἤδη. Καὶ δὴ τῆς νυκτὸς προκοπτούσης, καὶ τοῦ χειμῶνος ἐπακμάζοντος, κοιμίζει μὲν τοὺς ἐπὶ τῇ στοᾷ φρουρούς· τοῖς ζηλωταῖς δὲ ἐπίνοιαν ἐμβάλλει, τῶν ἱερῶν αἴροντας πριόνων ἐκτεμεῖν τοὺς μοχλοὺς τῶν πυλῶν. Συνήργησε δὲ αὐτοῖς πρὸς τὸ μὴ κατακουσθῆναι τὸν ψόφον ὅ τε τῶν ἀνέμων ἦχος, καὶ τὸ τῶν βροντῶν ἐπάλληλον.

7. Διαλαθόντες δὲ ἐκ τοῦ ἱεροῦ παραγίνονται πρὸς τὸ τεῖχος, καὶ τοῖς πρίοσι χρώμενοι, τὴν κατὰ τοὺς Ἰδουμαίους ἀνοίγουσι πύλην. Τοῖς δὲ τὸ μὲν πρῶτον ἐμπίπτει ταραχὴ, τοὺς περὶ τὸν Ἄνανον 286
ἐπιχειρεῖν οἰηθεῖσι, καὶ πᾶς ἐπὶ τοῦ ξίφους ἔσχε τὴν δεξιὰν, ὡς ἀμυνούμενος· ταχέως δὲ γνωρίσαντες τοὺς ἥκοντας εἰςῄεσαν. Εἰ μὲν οὖν ἐτράποντο ἐπὶ τὴν πόλιν, οὐδὲν ἂν ἐκώλυσεν ἀπολωλέναι τὸν δῆμον αὔτανδρον· οὕτως εἶχον ὀργῆς. Νῦν δὲ πρώτους τοὺς ζηλωτὰς σπεύδοντες τῆς φρουρᾶς ἐξελέσθαι, δεομένων πολλὰ καὶ τῶν εἰςδεξαμένων, 'μὴ

περιϊδεῖν δι' οὓς ἦλθον ἐν μέσοις τοῖς δεινοῖς, μηδὲ αὐτοῖς χαλεπώτερον ἐπισεῖσαι τὸν κίνδυνον· τῶν μὲν γὰρ φρουρῶν ἁλόντων, ῥᾴδιον αὐτοῖς εἶναι χωρεῖν ἐπὶ τὴν πόλιν· εἰ δὲ ἅπαξ ταύτην προκινήσειαν, οὔτε ἂν ἔτι ἐκείνων κρατῆσαι· πρὸς γὰρ τὴν αἴσθησιν συντάξασθαι αὐτοὺς, καὶ τὰς ἀνόδους ἀποφράξειν.'

CAP. V. 1. Συνεδόκει ταῦτα τοῖς Ἰδουμαίοις, καὶ διὰ τῆς πόλεως ἀνέβαινον πρὸς τὸ ἱερὸν, μετέωροί τε οἱ ζηλωταὶ τὴν ἄφιξιν αὐτῶν ἐκαραδόκουν. Καὶ παριόντων εἴσω καὶ αὐτοὶ θαῤῥοῦντες προήεσαν ἐκ τοῦ ἐνδοτέρου ἱεροῦ· μιγέντες δὲ τοῖς Ἰδουμαίοις προςέβαλλον ταῖς φυλακαῖς. Καὶ τινὰς μὲν τῶν προκοιτούντων ἀπέσφαξαν κοιμωμένους, πρὸς δὲ τὴν τῶν ἐγρηγορότων βοὴν διανέστη πᾶν τὸ πλῆθος, καὶ μετ' ἐκπλήξεως ἁρπάζοντες τὰ ὅπλα πρὸς τὴν ἄμυναν ἐχώρουν. Ἕως μὲν οὖν μόνους τοὺς ζηλωτὰς ἐπιχειρεῖν ὑπελάμβανον, ἐθάῤῥουν, ὡς τῷ πλήθει περιεσόμενοι· κατιδόντες δὲ ἔξωθεν ἐπειςχεομένους ἄλλους, ᾔσθοντο τὴν εἰςβολὴν τῶν Ἰδουμαίων. Καὶ τὸ μὲν πλέον αὐτῶν ἅμα ταῖς ψυχαῖς κατέβαλλε τὰ ὅπλα, καὶ πρὸς οἰμωγαῖς ἦν· φραξάμενοι δὲ ὀλίγοι τῶν νέων γενναίως ἐδέχοντο τοὺς Ἰδουμαίους, καὶ μέχρι πολλοῦ τὴν γεραιτέραν πληθὺν ἔσκεπον. Οἱ δὲ κραυγῇ διεσήμαινον τοῖς κατὰ τὴν πόλιν τὰς συμφορὰς, καὶ ἐκείνων ἀμῦναι μὲν οὐδεὶς ἐτόλμησεν, ὡς ἔμαθον εἰςπεπτωκότας τοὺς Ἰδουμαίους· ἄγαν δὲ ἀντεβόων καὶ ἀντωλοφύροντο, καὶ πολὺς γυναικῶν κωκυτὸς ἠγείρετο, ἐκινδύνευόν τε ἕκαστοι τῶν φυλάκων. Οἱ δὲ ζηλωταὶ τοῖς Ἰδουμαίοις συνεπηλάλαζον, καὶ τὴν ἐκ πάντων βοὴν ὁ χειμὼν ἐποίει φοβερωτέραν. Ἐφείδοντό τε οὐδενὸς Ἰδουμαῖοι, φύσει τε ὠμότατοι φονεύειν ὄντες, καὶ τῷ χειμῶνι κεκακωμένοι, κατὰ τῶν ἀποκλεισάντων ἐχρῶντο τοῖς ὅπλοις, ἦσαν δὲ ὅμοιοι τοῖς ἱκετεύουσ

καὶ τοῖς ἀμυνομένοις· καὶ πολλοὺς τήν τε συγγένειαν ἀναμιμνήσκοντας, καὶ δεομένους τοῦ κοινοῦ ἱεροῦ λαβεῖν αἰδῶ, διήλαυνον τοῖς ξίφεσιν. Ἦν δὲ φυγῆς μὲν οὐδεὶς τόπος, οὐδὲ σωτηρίας ἐλπίς· συνω- 287
θούμενοι δὲ περὶ ἀλλήλους κατεκόπτοντο, καὶ τὸ πλέον ἐκβιαζόμενοι, ὡς οὐκ ἔτι ἦν ὑποχωρήσεως τόπος, ἐπήεσαν δὲ οἱ φονεύοντες, ὑπ' ἀμηχανίας κατεκρήμνιζον ἑαυτοὺς εἰς τὴν πόλιν, οἰκτρότερον, ἔμοιγε δοκεῖ, οὗ διέφευγον ὀλέθρου τὸν αὐθαίρετον ὑπομένοντες. Ἐπεκλύσθη δὲ τὸ ἔξωθεν ἱερὸν πᾶν αἵματι, καὶ νεκροὺς ὀκτακισχιλίους καὶ πεντακοσίους ἡ ἡμέρα κατελάμβανεν.

2. Οὐκ ἐκορέσθησαν δὲ τούτοις οἱ θυμοὶ τῶν Ἰδουμαίων, ἀλλ' ἐπὶ τὴν πόλιν τραπόμενοι πᾶσαν μὲν οἰκίαν διήρπαζον, ἔκτεινον δὲ τὸν περιτυγχάνοντα· καὶ τὸ μὲν ἄλλο πλῆθος αὐτοῖς ἐδόκει παρανάλωμα, τοὺς δ' ἀρχιερεῖς ἀνεζήτουν, καὶ κατ' ἐκείνων ἦν τοῖς πλείστοις ἡ φορὰ, ταχέως δὲ ἁλόντες διεφθείροντο· καὶ τοῖς νεκροῖς αὐτῶν ἐπιστάντες τὸν μὲν Ἄνανον τῆς πρὸς τὸν δῆμον εὐνοίας, τὸν δὲ Ἰησοῦν τῶν ἀπὸ τοῦ τείχους λόγων ἐπέσκωπτον. Προῆλθον δὲ εἰς τοσοῦτον ἀσεβείας, ὥστε καὶ ἀτάφους ῥίψαι, καίτοι τοσαύτην Ἰουδαίων περὶ τὰς ταφὰς πρόνοιαν ποιουμένων, ὥστε καὶ τοὺς ἐκ καταδίκης ἀνασταυρουμένους πρὸ δύντος ἡλίου καθελεῖν τε καὶ θάπτειν. Οὐκ ἂν ἁμάρτοιμι δὲ εἰπὼν ἁλώσεως ἄρξαι τῇ πόλει τὸν Ἀνάνου θάνατον, καὶ ἀπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας ἀνατραπῆναι τὸ τεῖχος, καὶ διαφθαρῆναι τὰ πράγματα Ἰουδαίοις, ἐν ᾗ τὸν ἀρχιερέα καὶ ἡγεμόνα τῆς ἰδίας σωτηρίας αὐτῶν ἐπὶ μέσης τῆς πόλεως εἶδον ἀπεσφαγμένον· ἦν γὰρ δὴ τά τε ἄλλα σεμνὸς ὁ ἀνὴρ καὶ δικαιότατος, καὶ παρὰ τὸν ὄγκον τῆς τε εὐγενείας καὶ τῆς ἀξίας, καὶ ἧς εἶχε τιμῆς, ἠγαπηκὼς τὸ ἰσότιμον καὶ πρὸς τοὺς ταπεινοτάτους. Φιλελεύθερος δὲ ἐκτόπως, καὶ δημοκρατίας ἐραστὴς, πρό τε τῶν ἰδίων λυσιτελῶν τὸ

κοινῇ συμφέρον ἀεὶ τιθέμενος, καὶ περὶ παντὸς ποιούμενος τὴν εἰρήνην· ἄμαχα γὰρ ᾔδει τὰ Ῥωμαίων, προσκοπούμενος δὲ ὑπ' ἀνάγκης κατὰ τὸν πόλεμον, ὅπως, εἰ μὴ διαλύσαιντο Ἰουδαῖοι δεξιῶς, διαφθείροιντο. Καθόλου δὲ εἰπεῖν, ζῶντος Ἀνάνου πάντως ἂν διελύθησαν· δεινὸς γὰρ ἦν εἰπεῖν τε καὶ πεῖσαι τὸν δῆμον. Ἤδη δ' ἐκεχείρωτο καὶ τοὺς ἐμποδίζοντας, ἢ πολεμοῦντας· πλείστην δ' ἂν τριβὴν Ῥωμαίοις παρέσχον ὑπὸ τοιούτῳ στρατηγῷ. Παρέζευκτο δὲ αὐτῷ καὶ ὁ Ἰησοῦς, αὐτοῦ μὲν λειπόμενος κατὰ σύγκρισιν, προέχων δὲ τῶν ἄλλων. Ἀλλ' οἶμαι κατακρίνας ὁ θεὸς ὡς μεμιασμένης τῆς πόλεως ἀπώλειαν, καὶ πυρὶ βουλόμενος ἐκκαθαρθῆναι τὰ ἅγια, τοὺς ἀντεχομένους αὐτῶν καὶ φιλοστοργοῦντας περιέκοψεν. Οἱ δὲ πρὸ ὀλίγου τὴν ἱερὰν ἐσθῆτα
288 περικείμενοι, καὶ τῆς κοσμικῆς θρησκείας κατάρχοντες, προσκυνούμενοί τε τοῖς ἐκ τῆς οἰκουμένης, παραβάλλουσιν εἰς τὴν πόλιν, ἐῤῥιμμένοι γυμνοὶ βορὰ κυνῶν καὶ θηρίων ἐβλέποντο. Αὐτὴν ἐπ' ἐκείνοις στενάξαι ἂν τοῖς ἀνδράσι δοκῶ τὴν ἀρετήν, ὀλοφυρομένην, ὅτι τοσοῦτον ἥττητο τῆς κακίας. Ἀλλὰ γὰρ τὸ μὲν Ἀνάνου καὶ Ἰησοῦ τέλος τοιοῦτον ἀπέβη.

3. Μετὰ δὲ ἐκείνους οἵ τε ζηλωταὶ καὶ τῶν Ἰδουμαίων τὸ πλῆθος, τὸν λαόν, ὥσπερ ἀνοσίων ζώων ἀγέλην ἐπιόντες, ἔσφαζον. Καὶ τὸ μὲν εἰκαῖον ἐφ' οὗ καταληφθείη τόπου διεφθείρετο, τοὺς δὲ εὐγενεῖς καὶ νέους συλλαμβάνοντες εἰς εἱρκτὴν κατέκλειον δεδεμένους, κατ' ἐλπίδα τοῦ προστεθήσεσθαί τινας αὐτοῖς τὴν ἀναίρεσιν ὑπερτιθέμενοι. Προσέσχε δὲ οὐδείς, ἀλλὰ πάντες τοῦ τάξασθαι μετὰ τῶν πονηρῶν κατὰ τῆς πατρίδος προείλοντο τὸν θάνατον. Δεινὰς δὲ τῆς ἀρνήσεως αἰκίας ὑπέμενον, μαστιγούμενοί τε καὶ στρεβλούμενοι· μετὰ δὲ τὸ μηκέτ' ἀρκεῖν τὸ σῶμα ταῖς βασάνοις, μόλις ἠξιοῦντο τοῦ ξίφους. Οἱ συλληφθέντες δὲ μεθ' ἡμέραν, ἀνῄ-

γοντο νύκτωρ· καὶ τοὺς μὲν νεκροὺς ἐκφοροῦντες ἐῤῥίπτουν, ὡς ἑτέροις εἴη δεσμόταις τόπος. Ἦν δὲ τοσαύτη τοῦ δήμου κατάπληξις, ὡς μηδένα τολμῆσαι μήτε κλαίειν φανερῶς τὸν προςήκοντα νεκρὸν, μήτε θάπτειν· ἀλλὰ λαθραῖα μὲν ἦν αὐτῶν κατακεκλεισμένων τὰ δάκρυα, καὶ μετὰ περισκέψεως, μή τις ἐπακούσῃ τῶν ἐχθρῶν, ἔστενον· ἴσα γὰρ τοῖς πενθουμένοις ὁ πενθήσας εὐθὺς ἔπασχε. Νύκτωρ δὲ κόνιν αἴροντες χεροῖν ὀλίγην ἐπεῤῥίπτουν τοῖς σώμασι, καὶ μεθ' ἡμέραν εἴ τις παράβολος. Μύριοι δὲ καὶ δισχίλιοι τῶν εὐγενῶν οὕτω διεφθάρησαν.

4. Οἱ δὲ ἤδη διαμεμισηκότες τὸ φονεύειν, ἀναίδην εἰρωνεύοντο δικαστήρια καὶ κρίσεις. Καὶ δή τινα τῶν ἐπιφανεστάτων ἀποκτεῖναι προθέμενοι Ζαχαρίαν υἱὸν Βαρούχου, — παρώξυνε δ' αὐτοὺς τὸ λίαν τοῦ ἀνδρὸς μισοπόνηρον καὶ φιλελεύθερον, ἦν δὲ καὶ πλούσιος, ὥςτε μὴ μόνον ἐλπίζειν τὴν ἁρπαγὴν τῆς οὐσίας, ἀλλὰ καὶ προςαποσκευάσεσθαι δυνατὸν ἄνθρωπον εἰς τὴν αὐτῶν κατάλυσιν, — συγκαλοῦσιν ἐξ ἐπιτάγματος ἑβδομήκοντα τῶν ἐν τέλει δημοτῶν, εἰς τὸ σχῆμα δικαστῶν ἔρημον ἐξουσίας. Καὶ τοῦ Ζαχαρίου κατηγόρουν, ὡς ἐνδιδοίη τὰ πράγματα Ῥωμαίοις, καὶ περὶ προδοσίας διαπέμψαιτο πρὸς Οὐεσπασιανόν. Ἦν δὲ οὔτε ἔλεγχός τις τῶν κατηγορουμένων, οὔτε τεκμήριον, ἀλλ' αὐτοὶ πεπεῖσθαι καλῶς ἔφασαν, καὶ τοῦτ' εἶναι πίστιν τῆς ἀληθείας ἠξίουν. Ὅ γε μὴν Ζαχαρίας συνιδὼν μηδεμίαν αὐτῷ καταλειπομένην σωτηρίας ἐλπίδα, κεκλῆσθαι γὰρ κατ' ἐνέδρας εἰς εἱρκτὴν, οὐκ 289
ἐπὶ δικαστήριον, ἐποιήσατο τὴν τοῦ ζῆν ἀπόγνωσιν οὐκ ἀπαῤῥησίαστον· ἀλλὰ καταστὰς τὸ μὲν πιθανὸν τῶν κατηγορουμένων διεχλεύασε, καὶ διὰ βραχέων ἀπελύσατο τὰς ἐπιφερομένας αἰτίας. Εἶτα δὲ τὸν λόγον εἰς τοὺς κατηγόρους ἀποστρέψας, ἑξῆς πάσας αὐτῶν διεξήει τὰς παρανομίας, καὶ πολλὰ περὶ τῆς

συγχύσεως κατωλοφύρατο τῶν πραγμάτων· οἱ ζηλωταὶ δὲ ἐθορύβουν, καὶ μόλις τῶν ξιφῶν ἀπεκράτουν, τὸ σχῆμα καὶ τὴν εἰρωνείαν τοῦ δικαστηρίου μέχρι τέλους πῆξαι προαιρούμενοι, καὶ ἄλλως πειρᾶσθαι θέλοντες τοὺς δικαστὰς, εἰ παρὰ τὸν αὐτῶν κίνδυνον μνησθήσονται τοῦ δικαίου. Φέρουσι δὲ οἱ ἑβδομήκοντα τῷ κρινομένῳ τὰς ψήφους ἀπολύσεως, καὶ σὺν αὐτῷ προείλοντο τεθνᾶναι μᾶλλον, ἢ τῆς ἀναιρέσεως αὐτοῦ λαβεῖν τὴν ἐπιγραφήν. Ἠίρθη δὲ βοὴ τῶν ζηλωτῶν πρὸς τὴν ἀπόλυσιν, καὶ πάντων μὲν ἦν ἀγανάκτησις ἐπὶ τοῖς δικασταῖς, ὡς μὴ συνιεῖσι τὴν εἰρωνείαν τῆς δοθείσης αὐτοῖς ἐξουσίας. Δύο δὲ τῶν τολμηροτάτων, προςπεσόντες ἐν μέσῳ τῷ ἱερῷ, διαφθείρουσι τὸν Ζαχαρίαν, καὶ πεσόντι ἐπιχλευάζοντες ἔφασαν, "Καὶ παρ' ἡμῶν τὴν ψῆφον ἔχεις, καὶ βεβαιοτέραν ἀπόλυσιν," ῥίπτουσί τε αὐτὸν εὐθέως ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ κατὰ τῆς ὑποκειμένης φάραγγος. Τοὺς δὲ δικαστὰς πρὸς ὕβριν ἀπεστραμμένοις τοῖς ξίφεσι τύπτοντες ἐξέωσαν τοῦ περιβόλου, δι' ἓν τοῦτο φεισάμενοι τῆς σφαγῆς αὐτῶν, ἵνα σκεδασθέντες ἀνὰ τὴν πόλιν ἄγγελοι πᾶσι τῆς δουλείας γένωνται.

5. Τοῖς δὲ Ἰδουμαίοις ἤδη τῆς παρουσίας μετέμελε, καὶ προςίστατο τὰ πραττόμενα. Συναγαγὼν δὲ αὐτούς τις ἀπὸ τῶν ζηλωτῶν κατ' ἰδίαν ἐλθὼν, ἐνεδείκνυτο τὰ συμπαρανομηθέντα τοῖς καλέσασι, καὶ τὰ κατὰ τῆς μητροπόλεως διεξῄει, 'παρατάσσεσθαι μὲν γὰρ ὡς ὑπὸ τῶν ἀρχιερέων προδιδομένης Ῥωμαίοις τῆς μητροπόλεως, εὑρηκέναι δὲ προδοσίας μὲν τεκμήριον οὐδέν· τοὺς δὲ ἐκείνην ὑποκρινομένους φυλάττεσθαι, καὶ πολέμου καὶ τυραννίδος ἔργα τολμῶντας. Προςήκειν μὲν οὖν αὐτοῖς διακωλύειν ἀπ' ἀρχῆς· ἐπεὶ δ' ἅπαξ εἰς κοινωνίαν ἐμφυλίου φόνου προςέπεσον, ὅρον γοῦν ἐπιθεῖναι τοῖς ἁμαρτήμασι, καὶ μὴ παραμένειν χορηγοῦντας ἰσχὺν τοῖς καταλύουσι τὰ πάτρια. Καὶ γὰρ εἴ τι-

νες χαλεπαίνουσι τὸ κλεισθῆναι τὰς πύλας καὶ τὴν
εἴςοδον, ἀλλὰ τοὺς εἴρξαντας τετιμωρῆσθαι, καὶ τε-
θνᾶναι μὲν Ἄνανον, διεφθάρθαι δὲ ἐπὶ μιᾶς νυκτὸς
ὀλίγου δεῖν πάντα τὸν δῆμον. Ἐφ᾽ οἷς τῶν μὲν οἰ-
κείων πολλοὺς αἰσθάνεσθαι μετανοοῦντας, τῶν ἐπι-
καλεσαμένων δὲ ὁρᾶν ἄμετρον τὴν ὠμότητα, μηδὲ
δι᾽ οὓς ἐσώθησαν αἰδουμένων. Ἐν ὄμμασι γοῦν τῶν
συμμάχων τὰ αἴχιστα τολμᾶν, καὶ τὰς ἐκείνων πα-
ρανομίας Ἰδουμαίοις προςάπτεσθαι, μέχρις ἂν μήτε
κωλύῃ τις, μήτε χωρίζηται τῶν δρωμένων. Δεῖν
οὖν — ἐπειδὴ διαβολὴ μὲν πέφηνε τὰ τῆς προδο- 290
σίας, ἔφοδος δὲ Ῥωμαίων οὐδεμία προςδοκᾶται,
δυναστεία τε ἐπιτετείχισται τῇ πόλει δυςκατάλυτος —
αὐτοὺς ἀναχωρεῖν ἐπ᾽ οἴκου, καὶ τοῦ μὴ κοινωνεῖν
τοῖς φαύλοις ἁπάντων ἀπολογήσασθαι περὶ ὧν φε-
νακισθέντες μετάσχοιεν.

CAP. VI. 1. Τούτοις δὲ πεισθέντες οἱ Ἰδουμαῖοι
πρῶτον μὲν λύουσι τοὺς ἐν τοῖς δεσμωτηρίοις περὶ
διςχιλίους δημότας, οἳ παραχρῆμα φυγόντες ἐκ τῆς
πόλεως ἀφικνοῦνται πρὸς Σίμωνα, περὶ οὗ μικρὸν
ὕστερον ἐροῦμεν· ἔπειτα ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων ἀνε-
χώρησαν ἐπ᾽ οἴκου. Καὶ συνέβη τὸν χωρισμὸν αὐ-
τῶν γενέσθαι παράδοξον ἀμφοτέροις· ὅ τε γὰρ δῆ-
μος ἀγνοῶν τὴν μετάνοιαν, ἐθάρσησε πρὸς ὀλίγον
ὡς ἐχθρῶν κεκουφισμένος, οἵ τε ζηλωταὶ μᾶλλον
ἐπανίστησαν, οὐχ ὡς ὑπὸ συμμάχων καταλειφθέν-
τες, ἀλλ᾽ ἀπηλλαγμένοι τῶν δυςωπούντων καὶ δια-
τρεπόντων παρανομεῖν. Οὐκ ἔτι γοῦν μέλλησις ἢ
σκέψις ἦν τῶν ἀδικημάτων, ἀλλ᾽ ὀξυτάταις μὲν
ἐχρῶντο ταῖς ἐπινοίαις εἰς ἕκαστα, τὰ δοχθέντα δὲ
τάχιον καὶ τῆς ἐπινοίας ἐνήργουν. Μάλιστα δ᾽ ἐπ᾽
ἀνδρείαν τε καὶ εὐγένειαν ἐφόνων, τὴν μὲν φθόνῳ
λυμαινόμενοι, τὴν δὲ δέει· μόνην γὰρ αὑτῶν ἀςφά-
λειαν ὑπελάμβανον τὸ μηδένα τῶν δυνατῶν κατα-
λιπεῖν. Ἀνῃρέθη γοῦν σὺν πολλοῖς ἑτέροις καὶ Γο-

ρίων, ἀξιώματι μὲν καὶ γένει προέχων, δημοκρατι-
κὸς δὲ καὶ φρονήματος ἐλευθερίου μεστὸς, εἴ καί
τις ἕτερος Ἰουδαίων. Ἀπώλεσε δὲ αὐτὸν ἡ παῤῥη-
σία μάλιστα πρὸς τοῖς ἄλλοις πλεονεκτήμασιν. Οὐδὲ
ὁ Περαΐτης Νίγερ αὐτῶν τὰς χεῖρας διέφυγεν, ἀνὴρ
ἄριστος ἐν τοῖς πρὸς Ῥωμαίους πολέμοις γενόμενος,
ὃς καὶ βοῶν πολλάκις τάς τε ὠτειλὰς ἐπιδεικνὺς διὰ
μέσης ἐσύρετο τῆς πόλεως. Ἐπεὶ δὲ ἔξω τῶν πυ-
λῶν ἦκτο, τὴν σωτηρίαν ἀπογνοὺς, περὶ ταφῆς ἱκέ-
τευεν· οἱ δὲ προαπειλήσαντες, ἧς ἐπεθύμει μάλι-
στα γῆς μὴ μεταδώσειν αὐτῷ, τὸν φόνον ἐνήργουν.
Ἀναιρούμενος δὲ ὁ Νίγερ τιμωροὺς Ῥωμαίους αὐ-
τοῖς ἐπηράσατο, λιμόν τε καὶ λοιμὸν ἐπὶ τῷ πολέ-
μῳ, καὶ πρὸς ἅπασι τὰς ἀλλήλων χεῖρας. Ἃ δὴ
πάντα κατὰ τῶν ἀσεβῶν ἐκύρωσεν ὁ θεὸς, καὶ τὸ
δικαιότατον, ὅτι γεύσασθαι τῆς ἀλλήλων ἀπονοίας
ἔμελλον οὐκ εἰς μακρὰν στασιάσαντες. Νίγερ μὲν
οὖν ἀνῃρημένος τοὺς περὶ τῆς καταλύσεως αὐτῶν
291 φόβους ἐπεκούφισε. Τοῦ λαοῦ δὲ μέρος οὐδὲν
ἦν, ᾧ μὴ πρὸς ἀπώλειαν ἐπενοεῖτο πρόφασις· τὸ
μὲν γὰρ αὐτῶν διενεχθέν τινι πάλαι διέφθαρτο, τὸ
δὲ μὴ προσκροῦσαν κατ' εἰρήνην ἐπὶ καιροὺς ἐλάμ-
βανε τὰς αἰτίας. Καὶ ὁ μὲν μηδὲ ὅλως αὐτοῖς προσ-
ιὼν, ὡς ὑπερήφανος, ὁ προσιὼν δὲ μετὰ παῤῥησίας,
ὡς καταφρονῶν, ὁ θεραπεύων δὲ ὡς ἐπίβουλος ὑπω-
πτεύετο· μία τ' ἦν τῶν τε μεγίστων καὶ τῶν μετριω-
τάτων ἐγκλημάτων τιμωρία, θάνατος. Καὶ διέφυγεν
οὐδεὶς, εἰ μὴ σφόδρα τις ἦν ταπεινὸς, ἢ δι' ἀγέ-
νειαν, ἢ διὰ τύχην.

2. Ῥωμαίων δὲ οἱ μὲν ἄλλοι πάντες ἡγεμόνες
ἕρμαιον ἡγούμενοι τὴν στάσιν τῶν πολεμίων, ὥρ-
μηντο πρὸς τὴν πόλιν, καὶ τὸν Οὐεσπασιανὸν ἤπει-
γον ὡς ἂν ὄντα κύριον τῶν ὅλων, φάμενοι, ‛πρό-
νοιαν θεοῦ σύμμαχον σφίσιν, τὸ τετράφθαι τοὺς
ἐχθροὺς κατ' ἀλλήλων· εἶναι μέντοι τὴν ῥοπὴν ὀξεῖ-
αν, καὶ ταχέως Ἰουδαίους ὁμονοήσειν, ἢ κοπιάσαν-

τας ἐν τοῖς ἐμφυλίοις κακοῖς, ἢ μετανοήσαντας.' Οὐεσπασιανὸς δὲ 'πλεῖστον αὐτοὺς, ἔφη, τοῦ δέοντος ἁμαρτάνειν, ὥςπερ ἐν θεάτρῳ χειρῶν τε καὶ ὅπλων ἐπίδειξιν ποιήσασθαι γλιχομένους, οὐκ ἀκίνδυνον· ἀλλὰ μὴ τὸ συμφέρον, καὶ τὸ ἀσφαλὲς σκοποῦντας. Εἰ μὲν γὰρ εὐθέως ὁρμήσαιεν ἐπὶ τὴν πόλιν, αἴτιοι ὁμονοίας ἔσεσθαι τοῖς πολεμίοις, καὶ τὴν ἰσχὺν αὐτῶν ἀκμάζουσαν ἐπ' αὐτοὺς ἐπιστρέψειν· εἰ δὲ περιμένοιεν, ὀλιγωτέροις χρήσεσθαι δαπανηθεῖσιν ἐν τῇ στάσει. Στρατηγεῖν μὲν γὰρ ἄμεινον αὐτοῦ τὸν θεὸν, ἀπονητὶ Ἰουδαίους Ῥωμαίοις παραδιδόντα, καὶ τὴν νίκην ἀκινδύνως τῇ στρατιᾷ χαριζόμενον· ὥςτε χρῆναι διαφθειρομένων χερσὶν οἰκείαις τῶν ἐχθρῶν, καὶ τῷ μεγίστῳ κακῷ στάσει χρωμένων, θεατὰς μᾶλλον αὐτοὺς ἀποκαθῆσθαι τῶν κινδύνων, ἢ θανατῶσιν ἀνθρώποις καὶ λελυσσηκόσι κατ' ἀλλήλων χεῖρα μίσγειν. Εἰ δέ τις οἴεται τὴν δόξαν τῆς νίκης ἑωλοτέραν ἔσεσθαι δίχα μάχης, γνώτω τοῦ διὰ τῶν ὅπλων σφαλεροῦ τὸ μεθ' ἡσυχίας κατόρθωμα λυσιτελέστερον. Καὶ γὰρ οὐχ ἧττον εὐκλεεῖς οἴεσθαι χρὴ τῶν κατὰ χεῖρα λαμπρῶν τοὺς ἐγκρατείᾳ καὶ συνέσει τὰ ἴσα διαπράξαντας. Ἅμα μέντοι μειουμένων τῶν πολεμίων, καὶ τὴν αὐτοῦ στρατιὰν, ἀναληφθεῖσαν ἐκ τῶν συνεχῶν πόνων, ἐῤῥωμενέστερον ἄξειν. Ἄλλως τε καὶ τῶν στοχαζομένων τῆς περὶ τὴν νίκην λαμπρότητος, οὐ ταῦτον εἶναι καιρόν· οὐ γὰρ περὶ κατασκευὴν ὅπλων ἢ τειχῶν, οὐδὲ περὶ συλλογὴν ἐπικούρων Ἰουδαίους ἀσχολεῖσθαι, καὶ τὴν ὑπέρθεσιν ἔσεσθαι κατὰ τῶν διδόντων, ἀλλ' ἐμφυλίῳ πολέμῳ καὶ διχονοίᾳ τραχηλιζομένους καθ' ἡμέραν οἰκτρότερα πάσχειν, ὧν ἂν ἐπελθόντες αὐτοὶ διαθεῖεν αὐτοὺς ἁλόντας. Εἴτε οὖν τὸ ἀσφαλές τις σκοποίη, χρῆναι τοὺς ὑφ' ἑαυτῶν ἀναλισκομένους ἐᾶν· εἴτε τὸ εὐκλεέστερον τοῦ 292
κατορθώματος, οὐ δεῖ τοῖς οἴκοι νοσοῦσιν ἐπιχει-

ρεῖν· ῥηθήσεται γὰρ εὐλόγως, οὐκ αὐτῶν τὴν νίκην ἀλλὰ τῆς στάσεως.

3. Ταῦτα Οὐεσπασιανῷ λέγοντι συνήνουν οἱ ἡγεμόνες, καὶ παραχρῆμα τὸ στρατηγικὸν τῆς γνώμης ἀνεφαίνετο. Πολλοὶ δὲ καθ' ἡμέραν ηὐτομόλουν τοὺς ζηλωτὰς διαδιδράσκοντες· χαλεπὴ δὲ ἦν ἡ φυγὴ, φρουραῖς διειληφότων τὰς διεξόδους πάσας, καὶ τὸν ἐν αὐταῖς ὁπωςοῦν ἁλισκόμενον ὡς πρὸς Ῥωμαίους ἀπιόντα διαχρωμένων. Ὅ γε μὴν χρήματα δοὺς ἐξηφίετο, καὶ μόνος ἦν ὁ μὴ διδοὺς προδότης· ὥςτε κατελείπετο, τῶν εὐπόρων τὴν φυγὴν ὠνουμένων, μόνους ἀποσφάττεσθαι τοὺς πένητας. Νεκροὶ δὲ κατὰ τὰς λεωφόρους πάσας ἐσωρεύοντο παμπληθεῖς, καὶ πολλοὶ τῶν ὡρμημένων αὐτομολεῖν πάλιν τὴν ἔνδον ἀπώλειαν ᾑροῦντο· τὸν γὰρ ἐπὶ τῆς πατρίδος θάνατον ἐλπὶς ταφῆς ἐποίει δοκεῖν μετριώτερον. Οἱ δὲ εἰς τοσοῦτον ὠμότητος ἐξώκειλαν, ὡς μήτε τοῖς ἔνδον ἀναιρουμένοις, μήτε τοῖς ἀνὰ τὰς ὁδοὺς μεταδοῦναι γῆς· ἀλλὰ καθάπερ συνθήκας πεποιημένοι τοῖς τῆς πατρίδος συγκαταλῦσαι καὶ τοὺς τῆς φύσεως νόμους, ἅμα τε τοῖς εἰς ἀνθρώπους ἀδικήμασι συμμιᾶναι καὶ τὸ θεῖον, ὑφ' ἡλίῳ τοὺς νεκροὺς μυδῶντας ἀπέλειπον. Τοῖς δὲ θάπτουσί τινα τῶν προσηκόντων, ὃ καὶ τοῖς αὐτομολοῦσιν, ἐπιτίμιον θάνατος ἦν· καὶ δεῖσθαι παραχρῆμα ταφῆς ἔδει τὸν ἑτέρῳ χαριζόμενον. Καθόλου τε εἰπεῖν, οὐδὲν οὕτως ἀπολώλει χρηστὸν πάθος ἐν ταῖς τότε συμφοραῖς, ὡς ἔλεος· ἃ γὰρ ἐχρῆν οἰκτείρειν, ταῦτα παρώξυνε τοὺς ἀλιτηρίους, καὶ ἀπὸ μὲν τῶν ζώντων ἐπὶ τοὺς ἀνῃρημένους, ἀπὸ δὲ τῶν νεκρῶν ἐπὶ τοὺς ζῶντας τὰς ὀργὰς μετέφερον· καὶ δι' ὑπερβολὴν δέους ὁ περιὼν τοὺς προληφθέντας ὡς ἀναπαυσαμένους ἐμακάριζεν, οἵ τε ἐν τοῖς δεσμωτηρίοις αἰκιζόμενοι, κατὰ σύγκρισιν, καὶ τοὺς ἀτάφους ἀπέφαινον εὐδαίμονας. Κατεπατεῖτο μὲν οὖν πᾶς αὐτοῖς θεσμὸς ἀνθρώπων, ἐγελᾶτο δὲ τὰ

θεῖα, καὶ τοὺς τῶν προφητῶν θεσμοὺς ὥσπερ ἀγυρτικὰς λογοποιΐας ἐχλεύαζον. Πολλὰ δὲ οὗτοι περὶ ἀρετῆς καὶ κακίας προεθέσπισαν, ἃ παραβάντες οἱ ζηλωταὶ, καὶ τὴν κατὰ τῆς πατρίδος προφητείαν τέλους ἠξίωσαν. Ἦν γὰρ δή τις παλαιὸς λόγος ἀνδρῶν, ἔνθα τότε τὴν πόλιν ἁλώσεσθαι, καὶ καταφλεγήσεσθαι τὰ ἅγια νόμῳ πολέμου, στάσις ἐὰν κατασκήψῃ, καὶ χεῖρες οἰκεῖαι προμιάνωσι τὸ τοῦ θεοῦ τέμενος· οἷς οὐκ ἀπιστήσαντες οἱ ζηλωταὶ διακόνους ἑαυτοὺς ἐπέδοσαν.

CAP. VII. 1. Ἤδη δὲ Ἰωάννῃ τυραννιῶντι τὸ 293
πρὸς τοὺς ὁμοίους ἰσότιμον ἠδοξεῖτο, καὶ κατ᾽ ὀλίγους προσποιούμενος τῶν πονηροτέρων ἀφηνίαζε τοῦ συντάγματος. Ἀεὶ δὲ τοῖς μὲν τῶν ἄλλων δόγμασιν ἀπειθῶν, τὰ δὲ αὐτοῦ προστάσσων δεσποτικώτερον, δῆλος ἦν μοναρχίας ἀντιποιούμενος. Εἶκον δὲ αὐτῷ τινὲς μὲν δέει, τινὲς δὲ κατ᾽ εὔνοιαν· δεινὸς γὰρ ἦν ἀπάτῃ καὶ δόλῳ προσαγαγέσθαι. Πολλοὶ δὲ πρὸς ἀσφαλείας ἡγούμενοι τῆς αὐτῶν, τὰς αἰτίας ἤδη τῶν τολμωμένων ἐφ᾽ ἕνα καὶ μὴ πολλοὺς ἀναφέρεσθαι· τό γε μὴν δραστήριον αὐτοῦ, κατά τε χεῖρα καὶ κατὰ γνώμην, δορυφόρους εἶχεν οὐκ ὀλίγους. Πολλὴ δὲ μοῖρα τῶν ἀντικαθισταμένων ἀπελείπετο, παρ᾽ οἷς ἴσχυε μὲν καὶ φθόνος, δεινὸν ἡγουμένων ὑποτετάχθαι τῷ πρὶν ἰσοτίμῳ· τὸ πλέον δὲ εὐλάβεια τῆς μοναρχίας ἀπέτρεπεν. Οὔτε γὰρ καταλύσειν ῥᾳδίως ἤλπιζον αὐτὸν ἅπαξ κρατήσαντα, καὶ καθ᾽ ἑαυτῶν πρόφασιν ἕξειν, τὸ τὴν ἀρχὴν ἀντιπρᾶξαι. Προηγεῖτο δὲ ἢ πολεμῶν ἕκαστος ὁτιοῦν παθεῖν, ἢ δουλεύσας ἑκουσίως ἐν ἀνδραπόδου μοίρᾳ παραπολέσθαι. Διαιρεῖται μὲν οὖν στάσις ἐκ τούτων, καὶ τοῖς ἐναντιωθεῖσιν Ἰωάννης ἀντεβασίλευσεν. Ἀλλὰ τὰ μὲν πρὸς ἀλλήλους αὐτοῖς διὰ φυλακῆς ἦν, καὶ οὐδὲν ἢ μικρὸν εἴ ποτε διηκροβολίζοντο τοῖς ὅπλοις. Ἤριζον δὲ κατὰ τοῦ δήμου, καὶ πό-

τεροι πλείονα λείαν ἀνάξουσιν ἀντεφιλονείκουν. Ἐπεὶ δὲ ἡ πόλις τρισὶ τοῖς μεγίστοις κακοῖς ἐχειμάζετο, πολέμῳ καὶ τυραννίδι καὶ στάσει, κατὰ σύγκρισιν μετριώτερον ἦν τοῖς δημοτικοῖς ὁ πόλεμος· ἀμέλει διαδιδράσκοντες ἐκ τῶν οἰκείων ἔφευγον πρὸς τοὺς ἀλλοτρίους, καὶ παρὰ Ῥωμαίοις ἧς ἀπήλπισαν ἐν τοῖς ἰδίοις σωτηρίας ἠξιοῦντο.

2. Τέταρτον δὲ ἤδη κακὸν ἐκινεῖτο πρὸς τὴν τοῦ ἔθνους κατάλυσιν. Φρούριον ἦν οὐ πόῤῥω Ἱεροσολύμων καρτερώτατον, ὑπὸ τῶν ἀρχαίων βασιλέων εἴς τε ὑπέκθεσιν κτήσεως ἐν πολέμου ῥοπαῖς, καὶ σωμάτων ἀσφάλειαν κατεσκευασμένον, ὃ ἐκαλεῖτο Μασάδα. Τοῦτο προκατειληφότες οἱ προςαγορευόμενοι σικάριοι, τέως μὲν τὰς πλησίον χώρας κατέτρεχον, οὐδὲν πλέον [ἢ χρειώδη] ποριζόμενοι· δέει γὰρ ἀνεστέλλοντο τῆς πλείονος ἁρπαγῆς. Ὡς δὲ
294 *τὴν Ῥωμαίων στρατιὰν ἠρεμοῦσαν, στάσει δὲ καὶ τυραννίδι ἰδίᾳ τοὺς ἐν Ἱεροσολύμοις Ἰουδαίους ἐπυνθάνοντο διῃρημένους, ἁδροτέρων ἥπτοντο τολμημάτων. Καὶ κατὰ τὴν ἑορτὴν τῶν ἀζύμων, ἣν ἄγουσιν Ἰουδαῖοι σωτηρίᾳ ἐξόδου τῆς ὑπ᾽ Αἰγυπτίοις δουλείας, ἀνεθέντες εἰς τὴν πάτριον γῆν, κατῆλθον νύκτωρ, τοὺς ἐμποδὼν ὄντας διαλαθόντες, καὶ πολίχνην τινὰ κατατρέχουσι καλουμένην Ἐγγαδδί. Ἐν ᾗ τὸ μὲν ἀμύνεσθαι δυνάμενον, πρὶν ὅπλων ἅψασθαι καὶ συνελθεῖν, φθάσαντες ἐσκέδασαν, καὶ τῆς πόλεως ἐξέβαλον· τὸ δὲ φυγεῖν ἧττον ὄν, γύναιά τε καὶ παῖδας, ὑπὲρ ἑπτακοσίους ἀναιροῦσιν. Ἔπειτα τούς τε οἴκους ἐξεσκευασμένοι, καὶ τῶν καρπῶν τοὺς ἀκμαίους ἁρπάσαντες ἀνήνεγκαν εἰς τὴν Μασάδαν. Καὶ οἱ μὲν ἐληΐζοντο πάσας τὰς περὶ τὸ φρούριον κώμας, καὶ τὴν χώραν ἐπόρθουν ἅπασαν, προςδιαφθειρομένων αὐτοῖς καθ᾽ ἡμέραν ἑκασταχόθεν οὐκ ὀλίγων. Ἐκινεῖτο δὲ κατὰ τὰ ἄλλα τῆς Ἰουδαίας κλίματα τότε τέως ἠρεμοῦν τὸ λῃστρικόν. Καθάπερ δὲ ἐν σώματι τοῦ κυριωτάτου φλεγμαίνοντος*

πάντα τὰ μέλη συνενόσει, διὰ γοῦν τὴν ἐν μητροπόλει στάσιν καὶ ταραχὴν ἄδειαν ἔσχον οἱ κατὰ τὴν χώραν πονηροὶ τῶν ἁρπαγῶν· καὶ τὰς οἰκείας ἕκαστοι κώμας ἁρπάσαντες, ἔπειτα εἰς τὴν ἐρημίαν ἀφίσταντο. Συναθροιζόμενοί τε καὶ συνομνύμενοι κατὰ λόχους, στρατιᾶς μὲν ὀλιγώτεροι, πλείους δὲ λῃστηρίου, προςέπιπτον ἱεροῖς καὶ πόλεσι. Καὶ κακοῦσθαι μὲν συνέβαινεν, ἐφ' οὓς ἂν ὁρμήσειαν ὡς ἐν πολέμῳ καταλειφθέντας, φθάνεσθαι δὲ τὰς ἀμύνας ὡς λῃστῶν ἅμα ταῖς ἁρπαγαῖς ἀποδιδρασκόντων. Οὐδὲν δὲ μέρος ἦν τῆς Ἰουδαίας, ὃ μὴ τῇ προανεχούσῃ πόλει συναπώλλυτο.

3. Ταῦτα Οὐεσπασιανῷ παρὰ τῶν αὐτομόλων διηγγέλλετο. Καίπερ γὰρ φρουρούντων τὰς ἐξόδους τῶν στασιαστῶν ἁπάσας, καὶ διαφθειρόντων τοὺς ὁπωςοῦν προςιόντας, ὅμως ἦσαν, οἳ διελάνθανον, καὶ καταφεύγοντες εἰς τοὺς Ῥωμαίους τὸν στρατηγὸν ἐνῆγον ʻἀμῦναι τῇ πόλει, καὶ τὰ τοῦ δήμου περισῶσαι λείψανα· διὰ γὰρ τὴν πρὸς Ῥωμαίους εὔνοιαν ἀνῃρῆσθαί τε τοὺς πολλοὺς, καὶ κινδυνεύειν τοὺς περιόντας.' Ὁ δὲ οἰκτείρων ἤδη τὰς συμφορὰς αὐτῶν, τὸ μὲν δοκεῖν ἐκπολιορκήσων ἀνίσταται τὰ Ἱεροσόλυμα, τὸ δ' ἀληθὲς ἀπαλλάξων πολιορκίας. Ἔδει δὲ προκαταστρέψασθαι τὰ λειπόμενα, καὶ μηδὲν ἔξωθεν ἐμπόδιον τῇ πολιορκίᾳ καταλιπεῖν. Ἐλθὼν γοῦν ἐπὶ τὰ Γάδαρα μητρόπολιν τῆς Περαίας καρτερὰν, τετάρτῃ Δύστρου μηνὸς εἴςεισιν εἰς τὴν πόλιν. Καὶ γὰρ ἔτυχον οἱ δυνατοὶ, λάθρα τῶν στασιωτῶν, πρεσβευσάμενοι πρὸς αὐτὸν περὶ πα- 295
ραδόσεως, πόθῳ τε εἰρήνης καὶ διὰ τὰς οὐσίας· πολλοὶ δὲ τὰ Γάδαρα κατῴκουν πλούσιοι. Τούτων τὴν πρεσβείαν ἠγνοήκεσαν οἱ διάφοροι, πλησίον δὲ ἤδη ὄντος Οὐεσπασιανοῦ διεπύθοντο. Καὶ κατασχεῖν μὲν αὐτοὶ τὴν πόλιν ἀπέγνωσαν δύνασθαι, τῶν τε ἔνδον ἐχθρῶν πλήθει λειπόμενοι, καὶ Ῥωμαίους ὁρῶντες οὐ μακρὰν τῆς πόλεως. Φεύγειν δὲ κρί-

ναντες, ἠδόξουν ἀναιμωτὶ καὶ μηδεμίαν παρὰ τῶν αἰτίων εἰςπραξάμενοι τιμωρίαν. Συλλαβόντες δὴ τὸν Δόλεσον — οὗτος γὰρ ἦν οὐ μόνον ἀξιώματι καὶ γένει τῆς πόλεως πρῶτος, ἀλλ' ἐδόκει καὶ τῆς πρεσβείας αἴτιος — κτείνουσί τε αὐτὸν, καὶ δι' ὑπερβολὴν ὀργῆς νεκρὸν αἰκισάμενοι, διέδρασαν ἐκ τῆς πόλεως. Ἐπιούσης δὲ ἤδη τῆς Ῥωμαϊκῆς δυνάμεως, ὅ τε δῆμος τῶν Γαδάρων μετ' εὐφημίας τὸν Οὐεσπασιανὸν εἰςδεξάμενοι, δεξιὰς παρ' αὐτοῦ πίστεως ἔλαβον, καὶ φρουρὰν ἱππέων τε καὶ πεζῶν, πρὸς τὰς τῶν φυγάδων καταδρομάς· τὸ γὰρ τεῖχος αὐτοὶ πρὶν ἀξιῶσαι Ῥωμαίους καθεῖλον, ὅπως εἴη πίστις αὐτοῖς τοῦ τὴν εἰρήνην ἀγαπᾶν, τὸ μηδὲ βουληθέντας πολεμεῖν.

4. Οὐεσπασιανὸς δὲ ἐπὶ μὲν τοὺς διαδράντας ἐκ τῶν Γαδάρων Πλάκιδον, σὺν ἱππεῦσιν πεντακοσίοις καὶ πεζοῖς τριςχιλίοις πέμπει· μετὰ δὲ τῆς ἄλλης στρατιᾶς αὐτὸς ὑπέστρεψεν εἰς Καισάρειαν. Οἱ δὲ φυγάδες ὡς αἰφνίδιον τοὺς διώκοντας ἱππεῖς ἐθεάσαντο, πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν, εἴς τινα κώμην συνειλοῦνται, Βηθενναβρὶν προςαγορευομένην· ἐν ᾗ νέων πλῆθος οὐκ ὀλίγον εὑρόντες, καὶ τοὺς μὲν ἑκόντας, τοὺς δὲ βίᾳ καθοπλίσαντες, εἰκαίως προπηδῶσιν ἐπὶ τοὺς περὶ τὸν Πλάκιδον. Οἱ δὲ πρὸς μὲν τὴν πρώτην ἐμβολὴν ὀλίγον εἶξαν, ἅμα καὶ προκαλέσασθαι τεχνιτεύοντες αὐτοὺς ἀπὸ τοῦ τείχους πορρωτέρω. Λαβόντες δὲ εἰς ἐπιτήδειον, περιήλαυνόν τε καὶ κατηκόντιζον· καὶ τοὺς μὲν φυγάδας αὐτῶν οἱ ἱππεῖς ὑπετέμνοντο, τὰς συμπλοκὰς δὲ τὸ πεζὸν εὐτόνως διέφθειραν. Οὐ μέντοι πλεῖόν τι τόλμης ἐπιδεικνύμενοι οἱ Ἰουδαῖοι διεφθείροντο· πεπυκνωμένοις γὰρ προςπίπτοντες τοῖς Ῥωμαίοις, καὶ ταῖς πανοπλίαις ὥςπερ τετειχισμένοις, αὐτοὶ μὲν οὐχ εὕρισκον βέλους παράδυσιν, οὐδὲ ηὐτόνουν ῥῆξαι τὴν φάλαγγα. Περιεπείροντο δὲ τοῖς ἐκείνων βέλεσι, καὶ τοῖς ἀγριωτάτοις παραπλήσιοι θηρίοις

ὥρμων ἐπὶ τὸν σίδηρον. Διεφθείροντο δὲ οἱ μὲν κατὰ στόμα παιόμενοι ταῖς ξίφεσιν, οἱ δὲ ὑπὸ τῶν ἱππέων σκεδαννύμενοι.

5. Σπουδὴ γὰρ ἦν τῷ Πλακίδῳ τὰς ἐπὶ τὴν κώμην ὁρμὰς αὐτῶν διακλείειν, καὶ συνεχῶς παρελαύνων κατ' ἐκεῖνο τὸ μέρος, ἔπειτα ἐπιστρέφων ἅμα καὶ τοῖς βέλεσι χρώμενος, εὐστόχως ἀνῄρει τοὺς πλησιάζοντας, καὶ δέει τοὺς πόῤῥωθεν ἀνέστρεφε, μέχρι βίᾳ διεκπαίοντες οἱ γενναιότατοι πρὸς τὸ τεῖχος διέφυγον. Ἀπορία δὲ εἶχε τοὺς φύλακας· οὔτε γὰρ ἀποκλεῖσαι τοὺς ἀπὸ τῶν Γαδάρων ὑπέμενον διὰ τοὺς σφετέρους, καὶ δεξάμενοι συναπολεῖσθαι προςεδόκων. Ὃ δὴ καὶ συνέβη. Συνωσθέντων γὰρ αὐτῶν εἰς τὸ τεῖχος, παρ' ὀλίγον μὲν οἱ τῶν Ῥωμαίων ἱππεῖς συνέπεσον· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ φθασάντων ἀποκλεῖσαι τὰς πύλας, προςβαλὼν ὁ Πλάκιδος, 296
καὶ μέχρι δείλης γενναίως ἀγωνισάμενος, τοῦ τείχους καὶ τῶν ἐν τῇ κώμῃ ἐκράτει. Τὰ μὲν οὖν ἀργὰ πλήθη διεφθείρετο· φυγὴ δὲ ἦν τῶν δυνατωτέρων, τὰς δὲ οἰκίας οἱ στρατιῶται διήρπασαν, καὶ τὴν κώμην ἐνέπρησαν. Οἱ δὲ διαδράντες ἐξ αὐτῆς τοὺς κατὰ τὴν χώραν συνανέστησαν, καὶ τὰς μὲν αὐτῶν συμφορὰς ἐξαίροντες ἐπὶ μεῖζον, τὴν δὲ Ῥωμαίων στρατιὰν πᾶσαν ἐπιέναι λέγοντες, πάντας πανταχόθεν ἐξέσεισαν τῷ δέει. Γενόμενοί τε παμπληθεῖς, ἔφευγον ἐπὶ Ἱεριχοῦντος· αὕτη γὰρ ἔτι μόνη τὰς ἐλπίδας αὐτῶν ἔθαλπε τῆς σωτηρίας, καρτερὰ τείχει τε καὶ πλήθει οἰκητόρων τυγχάνουσα. Πλάκιδος δὲ, τοῖς ἱππεῦσι καὶ ταῖς προαγούσαις εὐπραγίαις τεθαῤῥηκὼς, εἵπετο, καὶ μέχρι μὲν Ἰορδάνου τοὺς ἀεὶ καταλαμβανομένους ἀνῄρει. Συνελάσας δὲ πρὸς τὸν ποταμὸν πᾶν τὸ πλῆθος, εἰργομένους ἀπὸ τοῦ ῥεύματος — τραφὲν γὰρ ὑπ' ὄμβρων ἄβατον ἦν — ἀντικρὺ παρετάσσετο. Παρώξυνε δὲ ἡ ἀνάγκη πρὸς μάχην τοὺς φυγῆς τόπον οὐκ ἔχοντας· καὶ ταῖς ὄχθαις ἐπιμήκιστον παρέκ-

τείνοντες σφᾶς αὐτοὺς, ἐδέχοντο τὰ βέλη καὶ τὰς τῶν ἱππέων ἐμβολὰς, οἳ πολλοὺς αὐτῶν παίοντες εἰς τὸ ῥεῦμα κατέβαλον. Καὶ τὸ μὲν ἐν χερσὶν αὐτῶν διαφθαρὲν μύριοι πεντακιςχίλιοι, τὸ δὲ βιασθὲν ἐμπηδῆσαι ἀκουσίως εἰς τὸν Ἰορδάνην, πλῆθος ἄπειρον ἦν. Ἑάλωσαν δὲ περὶ διςχιλίους καὶ διακοσίους, λεία τε παμπληθὴς ὄνων τε καὶ προβάτων, καὶ καμήλων καὶ βοῶν.

6. Ἰουδαίοις μὲν οὖν οὐδὲν ἐλάττων ἥδε ἡ πληγὴ προςπεσοῦσα, καὶ μείζων ἔδοξεν ἑαυτῆς, διὰ τὸ μὴ μόνον τὴν χώραν ἅπασαν, δι᾽ ἧς ἔφευγον, πληρωθῆναι φόνου, μηδὲ νεκροῖς διαβατὸν γένεσθαι τὸν Ἰορδάνην, ἐμπλησθῆναι δὲ τῶν σωμάτων καὶ τὴν Ἀσφαλτῖτιν λίμνην, εἰς ἣν παμπληθεῖς ὑπὸ τοῦ ποταμοῦ κατεσύρησαν. Πλάκιδος δὲ, δεξιᾷ τύχῃ χρώμενος, ὥρμησεν ἐπὶ τὰς πέριξ πολίχνας τε καὶ κώμας, καταλαμβανόμενός τε Ἄβιλα καὶ Ἰουλιάδα καὶ Βησιμὼθ, τάς τε μέχρι τῆς Ἀσφαλτίτιδος πάσας, ἐγκαθίστησιν ἑκάστῃ τοὺς ἐπιτηδείους τῶν αὐτομόλων. Ἔπειτα σκάφεσιν ἐπιβιβάσας τοὺς στρατιώτας ἀναιρεῖ τοὺς εἰς τὴν λίμνην καταφυγόντας. Καὶ τὰ μὲν κατὰ τὴν Περαίαν προςεχώρησεν ἢ ἑάλω πάντα μέχρι Μαχαιροῦντος.

CAP. VIII. 1. Ἐν δὲ τούτῳ τὸ περὶ τὴν Γαλα-
τίαν ἀγγέλλεται κίνημα, καὶ Οὐΐνδιξ ἅμα τοῖς δυνα-
297 τοῖς τῶν ἐπιχωρίων ἀφεστὼς Νέρωνος, περὶ ὧν ἐν
ἀκριβεστέροις ἀναγέγραπται. Οὐεσπασιανὸν δὲ ἐπήγειρεν εἰς τὴν ὁρμὴν τοῦ πολέμου τὰ ἠγγελμένα, προορώμενον ἤδη τοὺς μέλλοντας ἐμφυλίους πολέμους, καὶ τὸν ὅλης κίνδυνον τῆς ἡγεμονίας, ἐν ᾧ προειρηνεύσας τὰ κατὰ τὴν ἀνατολὴν, ἐπικουφίσειν ᾤετο τοὺς κατὰ τὴν Ἰταλίαν φόβους. Ἕως μὲν οὖν ἐπεῖχεν ὁ χειμὼν, τὰς ὑπηγμένας διησφαλίζετο κώμας τε καὶ πολίχνας φρουραῖς, δεκαδάρχας μὲν κώμαις ἐγκαθιστὰς, ἑκατοντάρχας δὲ πόλεσι· πολλὰ

δὲ ἀνῴκιζε καὶ τῶν πεπορθημένων. Ὑπὸ δὲ τὴν ἀρχὴν τοῦ ἔαρος ἀναλαβὼν τὸ πλέον τῆς δυνάμεως, ἤγαγεν ἀπὸ τῆς Καισαρείας ἐπὶ Ἀντιπατρίδος. Ἔνθα δυσὶν ἡμέραις καταστησάμενος τὴν πόλιν, τῇ τρίτῃ προῄει πορθῶν καὶ καίων τὰς πέριξ πάσας. Καταστρεψάμενος δὲ τὰ περὶ τὴν Θαμνᾶ τοπαρχίαν, ἐπὶ Λύδδης καὶ Ἰαμνίας ἐχώρει· καὶ προςκεχωρημέναις ἑκατέραις ἐγκαταστήσας οἰκήτορας τῶν προςκεχωρηκότων ἱκανοὺς, εἰς Ἀμμαοῦντα ἀφικνεῖται. Καταλαβόμενος δὲ τὰς ἐπὶ τὴν μητρόπολιν αὐτῶν εἰςβολὰς, στρατόπεδόν τε τειχίζει, καὶ τὸ πέμπτον ἐν αὐτῇ τάγμα καταλιπὼν πρόςεισι μετὰ τῆς ἄλλης δυνάμεως ἐπὶ τὴν Βεθλεπτηφῶν τοπαρχίαν. Πυρὶ δὲ αὐτήν τε καὶ τὴν γειτνιῶσαν ἀνελὼν, καὶ τὰ πέριξ τῆς Ἰδουμαίας φρούρια μὲν τοῖς ἐπικαίροις τόποις ἐπετείχισε· καταλαβόμενος δὲ δύο κώμας, τὰς μεσαιτάτας τῆς Ἰδουμαίας, Βήταριν καὶ Καφάρτοβαν, κτείνει μὲν ὑπὲρ μυρίους, αἰχμαλωτίζεται δὲ ὑπὲρ χιλίους, καὶ τὸ λοιπὸν πλῆθος ἐξελάσας, ἐγκαθίστησι τῆς ἰδίας δυνάμεως οὐκ ὀλίγην, οἳ κατατρέχοντες ἐπόρθουν ἅπασαν τὴν ὀρεινήν. Αὐτὸς δὲ μετὰ τῆς λοιπῆς δυνάμεως ὑπέστρεψεν εἰς Ἀμμαοῦντα, ὅθεν διὰ τῆς Σαμαρείτιδος καὶ παρὰ τὴν Νεάπολιν καλουμένην, Μαβορθὰ δὲ ὑπὸ τῶν ἐπιχωρίων, καταβὰς εἰς Κορέαν δευτέρᾳ Δαισίου μηνὸς στρατοπεδεύεται, τῇ δὲ ἑξῆς εἰς Ἱεριχοῦντα ἀφικνεῖται, καθ' ἣν αὐτῷ συμμίσγει Τραϊανὸς εἷς τῶν ἡγεμόνων, τὴν ἐκ τῆς Περαίας ἄγων δύναμιν, ἤδη τῶν ὑπὲρ τὸν Ἰορδάνην κεχειρωμένων.

2. Τὸ μὲν οὖν πολὺ πλῆθος ἐκ τῆς Ἱεριχοῦντος φθάσαν τὴν ἔφοδον αὐτῶν, εἰς τὴν ἄντικρυς Ἱεροσολύμων ὀρεινὴν διαπεφεύγει, καὶ καταλειφθὲν δ' οὐκ ὀλίγον διαφθείρεται. Τὴν δὲ πόλιν ἔρημον κατειλήφεσαν, ἥτις ἵδρυται μὲν ἐν πεδίῳ, ψιλὸν δὲ ὑπέρκειται αὐτῆς καὶ ἄκαρπον ὄρος μήκιστον. Κατὰ

μὲν τὸ βόρειον κλίμα μέχρι τῆς Σκυθοπολιτῶν γῆς ἐκτείνεται, κατὰ δὲ τὸ μεσημβρινὸν μέχρι τῆς Σοδομιτῶν χώρας καὶ τῶν περάτων τῆς Ἀσφαλτίτιδος.
298 Ἔστι δὲ ἀνώμαλόν τε πᾶν, καὶ ἀοίκητον διὰ τὴν ἀγονίαν. Ἀντίκειται δὲ τούτῳ τὸ περὶ τὸν Ἰορδάνην ὄρος, ἀρχόμενον ἀπὸ Ἰουλιάδος καὶ τῶν βορείων κλιμάτων, παρατεῖνον δὲ εἰς μεσημβρίαν ἕως Σομόῤῥων, ἥπερ ὁρίζει τὴν Πέτραν τῆς Ἀραβίας. Ἐν τούτῳ δέ ἐστι καὶ τὸ Σιδηροῦν καλούμενον ὄρος, μηκυνόμενον μέχρι τῆς Μωαβίτιδος· ἡ μέση δὲ τῶν δύο ὀρέων χώρα τὸ Μέγα πεδίον καλεῖται, ἀπὸ κώμης Γινναβρὶν διῆκον μέχρι τῆς Ἀσφαλτίτιδος λίμνης. Ἔστι δὲ αὐτοῦ μῆκος μὲν σταδίων τριάκοντα καὶ διακοσίων, εὖρος δὲ εἰκόσι καὶ ἑκατόν. Καὶ μέσον μὲν ὑπὸ τοῦ Ἰορδάνου τέμνεται, λίμνας τε ἔχει τήν τε Ἀσφαλτῖτιν καὶ τὴν Τιβεριέων, φύσιν ἐναντίας· ἡ μὲν γὰρ ἁλμυρώδης καὶ ἄγονος, ἡ Τιβεριέων δὲ γλυκεῖα καὶ γόνιμος. Ἐκπυροῦται δὲ ὥρᾳ θέρους τὸ πεδίον, καὶ δι' ὑπερβολὴν αὐχμοῦ περιέχει νοσώδη τὸν ἀέρα· πᾶν γὰρ ἄνυδρον, πλὴν τοῦ Ἰορδάνου, παρὸ καὶ τοὺς μὲν ἐπὶ ταῖς ὄχθαις φοινικῶνας εὐθαλεστέρους καὶ πολυφορωτέρους εἶναι συμβέβηκεν, ἧττον δὲ τοὺς πόῤῥω κεχωρισμένους.

3. Παρὰ μέντοι τὴν Ἱεριχοῦντα ἐστὶ πηγὴ δαψιλής τε καὶ πρὸς ἀρδείας λιπαρωτάτη, παρὰ τὴν παλαιὰν ἀναβλύζουσα πόλιν, ἣν Ἰησοῦς ὁ Ναυῆ παῖς, στρατηγὸς Ἑβραίων, πρώτην εἷλε γῆς Χαναναίων δορίκτητον. Ταύτην τὴν πηγὴν, λόγος ἔχει, κατ' ἀρχὰς οὐ μόνον γῆς καὶ δένδρων καρποὺς ἀπαμβλύνειν, ἀλλὰ καὶ γυναικῶν γονὰς, καθόλου τε πᾶσιν εἶναι νοσώδη τε καὶ φθαρτικήν· ἐξημερωθῆναι δὲ καὶ γενέσθαι τὸ ἐναντίον ὑγιεινοτάτην τε καὶ γονιμωτάτην ὑπὸ Ἐλισσαίου τοῦ προφήτου· γνώριμος δὲ ἦν οὗτος Ἠλία καὶ διάδοχος, ὃς ἐπιξενω-

θεὶς τοῖς κατὰ τὴν Ἱεριχοῦντα, περισσὸν δή τι φιλοφρονησαμένων αὐτὸν τῶν ἀνθρώπων, αὐτούς τε ἀμείβεται καὶ τὴν χώραν αἰωνίῳ χάριτι. Προελθὼν γὰρ ἐπὶ τὴν πηγὴν, καὶ καταβαλὼν εἰς τὸ ῥεῦμα πλῆρες ἁλῶν ἀγγεῖον κεράμου, ἔπειτα εἰς οὐρανὸν δεξιὰν ἀνατείνας δικαίαν, καὶ πηγῇ σπονδὰς μειλικτηρίους χεόμενος, ʽτὴν μὲν ἠτεῖτο μαλάξαι τὸ ῥεῦμα, καὶ γλυκυτέρας φλέβας ἀνοῖξαι· τὸν δὲ ἐγκεράσασθαι τῷ ῥεύματι γονιμωτέρους ἀέρας, δοῦναί τε ἅμα καὶ καρπῶν εὐθηνίαν τοῖς ἐπιχωρίοις καὶ τέκνων διαδοχὴν, μηδὲ ἐπιλιπεῖν αὐτοῖς τὸ τούτων γεννηματικὸν ὕδωρ, ἕως μένουσι δίκαιοι.ʼ Ταύταις ταῖς εὐχαῖς, πολλὰ προχειρουργήσας ἐξ ἐπιστήμης, ἔτρεψε τὴν πηγὴν, καὶ τὸ πρὶν ὀρφανίας αὐτοῖς καὶ λιμοῦ παραίτιον ὕδωρ, ἐκ τότε εὐτεκνίας καὶ κόρου χορηγὸν κατέστη. Τοσαύτην γοῦν ἐν ταῖς ἀρδείαις ἔχει δύναμιν, ὡς, εἰ καὶ μόνον ἐφάψαιτο τῆς χώρας, νοστιμώτερον εἶναι τῶν μέχρι κόρου χρονιζόντων. Παρὸ καὶ τῶν μὲν δαψιλέστερον χρωμένων ἡ ὄνησίς ἐστιν ὀλίγη, τούτου δὲ τοῦ ὀλίγου δαψιλής. Ἄρδει γοῦν πλέονα τῶν ἄλλων ἁπάντων, καὶ πεδίον μὲν ἔπεισιν ἑβδομήκοντα σταδίων μῆκος, εὖρος δὲ εἴκοσιν, ἐκτρέφει τε ἐν αὐτῷ παραδείσους καλλίστους τε καὶ πυκνοτάτους. Τῶν δὲ φοινίκων ἐπαρδομένων γένη πολλὰ, ταῖς γεύσεσι καὶ ταῖς παρηγορίαις διάφορα. Τούτων οἱ πιότεροι 299
πατούμενοι καὶ μέλι δαψιλὲς ἀνιᾶσιν, οὐ πολλῷ τοῦ λοιποῦ χεῖρον. Καὶ μελιττοτρόφος δὲ ἡ χώρα. Φέρει δὲ καὶ ὀποβάλσαμον, ὃ δὴ τιμιώτατον τῶν τῇδε καρπῶν, κύπρον τε καὶ μυροβάλανον· ὡς οὐκ ἂν ἁμαρτεῖν τινα εἰπόντα, θεῖον εἶναι τὸ χωρίον, ἐν ᾧ δαψιλῆ τὰ σπανιώτατα καὶ κάλλιστα γεννᾶται. Τῶν μὲν γὰρ ἄλλων αὐτῷ καρπῶν ἕνεκεν οὐκ ἂν ῥᾳδίως τι παραβληθείη κλίμα τῆς οἰκουμένης· οὕτω τὸ καταβληθὲν πολύχουν ἀναδίδωσιν. Αἴτιον δέ μοι δοκεῖ τὸ θερμὸν τῶν ἀέρων καὶ τὸ τῶν ὑδάτων

εὔγονον, τῶν μὲν προκαλουμένων τὰ φυόμενα καὶ διαχεόντων, τῆς δὲ ἰκμάδος ῥιζούσης ἕκαστον ἰσχυρῶς, καὶ χορηγούσης τὴν ἐν θέρει δύναμιν. Περικαὲς δέ ἐστιν οὕτω τὸ χωρίον, ὡς μηδένα ῥᾳδίως προσιέναι. Τὸ δὲ ὕδωρ πρὸ ἀνατολῆς ἡλίου ἀντλούμενον, ἔπειτα ἐξαιθριασθὲν γίνεται ψυχρότατον, καὶ τὴν ἐναντίαν πρὸς τὸ περιέχον φύσιν λαμβάνει· χειμῶνος δὲ ἀνάπαλιν χλιαίνεται, καὶ τοῖς ἐμβαίνουσι γίνεται προσηνέστατον. Ἔστι δὲ καὶ τὸ περιέχον οὕτως εὔκρατον, ὡς λινοῦν ἀμφιέννυσθαι τοὺς ἐπιχωρίους, νιφομένης τῆς ἄλλης Ἰουδαίας. Ἀπέχει δὲ Ἱεροσολύμων μὲν σταδίους ἑκατὸν πεντήκοντα, τοῦ δὲ Ἰορδάνου ἑξήκοντα. Καὶ τὸ μὲν μέχρι Ἱεροσολύμων αὐτῆς ἔρημον καὶ πετρῶδες· τὸ δὲ μέχρι τοῦ Ἰορδάνου καὶ τῆς Ἀσφαλτίτιδος χθαμαλώτερον μέν, ἔρημον δὲ ὁμοίως καὶ ἄκαρπον. Ἀλλὰ τὰ μὲν περὶ Ἱεριχοῦντα εὐδαιμονεστάτην οὖσαν ἀποχρώντως δεδήλωται.

4. Ἄξιον δὲ ἀφηγήσασθαι καὶ τὴν φύσιν τῆς Ἀσφαλτίτιδος λίμνης, ἥτις ἐστὶ πικρὰ μέν, ὡς ἔφην, καὶ ἄγονος, ὑπὸ δὲ κουφότητος καὶ τὰ βαρύτατα τῶν εἰς αὐτὴν ῥιφέντων ἀναφέρει, καταδῦναι δὲ εἰς τὸν βυθὸν οὐδὲ ἐπιτηδεύσαντα ῥᾴδιον. Ἀφικόμενος γοῦν καθ' ἱστορίαν ἐπ' αὐτὴν Οὐεσπασιανός, ἐκέλευσέ τινας τῶν νεῖν οὐκ ἐπισταμένων δεθέντας ὀπίσω τὰς χεῖρας ῥιφῆναι κατὰ τοῦ βυθοῦ· καὶ συνέβη πάντας ἐπινήξασθαι, καθάπερ ὑπὸ πνεύματος ἄνω βιαζομένους. Ἔστι δὲ ἐπὶ τούτῳ καὶ ἡ τῆς χρόας μεταβολὴ θαυμάσιος· τρὶς γὰρ ἑκάστης ἡμέρας τὴν ἐπιφάνειαν ἀλλάσσεται, καὶ πρὸς τὰς ἡλιακὰς ἀκτῖνας ἀνταυγεῖ ποικίλως· τῆς μέντοι ἀσφάλτου κατὰ πολλὰ μέρη βώλους μέλανας ἀναδίδωσιν, αἱ δὲ ἐπινήχονται τό τε σχῆμα καὶ τὸ μέγεθος ταύροις ἀκεφάλοις παραπλήσιαι. Προσελαύνοντες δὲ οἱ τῆς λίμνης ἐργάται, καὶ δρασσόμενοι τοῦ συνεστῶτος ἕλκουσιν εἰς τὰ σκάφη· πληρώσασι

δὲ ἀποκόπτειν οὐ ῥᾴδιον, ἀλλὰ δι᾽ εὐτονίαν προσήρτηται τῷ μηρύματι τὸ σκάφος, ἕως ἂν ἐμμηνίῳ γυναικῶν αἵματι καὶ οὔρῳ διαλύσωσιν αὐτήν, οἷς μόνοις εἴκει. Καὶ χρήσιμος δὲ οὐ μόνον ἐστὶν εἰς ἁρμονίας νεῶν, ἀλλὰ καὶ πρὸς ἄκεσιν σωμάτων· εἰς πολλὰ γοῦν τῶν φαρμάκων παραμίσγεται. Ταύτης τῆς λίμνης μῆκος μὲν ὀγδοήκοντα καὶ πεντακόσιοι στάδιοι, καθὸ δὴ μέχρι Ζοάρων τῆς Ἀραβίας ἐκτείνεται, εὖρος δὲ πεντήκοντα καὶ ἑκατόν. Γειτνιᾷ δὲ ἡ Σοδομῖτις αὐτῇ, πάλαι μὲν εὐδαίμων γῆ, καρ- 300
πῶν τε ἕνεκα καὶ τῆς κατὰ πόλεις περιουσίας· νῦν δὲ κεκαυμένη πᾶσα. Φασὶ δὲ, ὡς δι᾽ ἀσέβειαν οἰκητόρων κεραυνοῖς κατεφλέγη· ἔστι γοῦν ἔτι λείψανα τοῦ θείου πυρὸς, καὶ πέντε μὲν πόλεων ἰδεῖν σκιάς· ἔστι δὲ καὶ ἐν τοῖς καρποῖς σποδιὰν ἀναγεννωμένην, οἳ χρόαν μὲν ἔχουσι τοῖς ἐδωδίμοις ὁμοίαν, δρεψαμένων δὲ χερσὶν εἰς καπνὸν ἀναλύονται καὶ τέφραν. Τὰ μὲν δὴ περὶ τὴν Σοδομῖτιν μυθευόμενα τοιαύτην ἔχει πίστιν ἀπὸ τῆς ὄψεως.

CAP. IX. 1. Ὁ δὲ Οὐεσπασιανὸς πανταχόθεν περιτειχίζων τοὺς ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις, ἔν τε τῇ Ἱεριχοῖ καὶ ἐν Ἀδίδοις ἐγείρει στρατόπεδα, καὶ φρουρὰς ἀμφοτέραις ἐγκαθίστησιν ἔκ τε τοῦ Ῥωμαϊκοῦ καὶ συμμαχικοῦ τάγματος. Πέμπει δὲ καὶ εἰς Γέρασα Λούκιον Ἄννιον, παραδοὺς μοῖραν ἱππέων καὶ συχνοὺς πεζῶν. Ὁ μὲν οὖν ἐξ ἐφόδου ἑλὼν τὴν πόλιν, ἀποκτείνει μὲν χιλίους τῶν νέων, ὅσοι μὴ διαφυγεῖν ἔφθασαν· γενεὰς δὲ ᾐχμαλωτίσατο, καὶ τὰς κτήσεις διαρπάσαι τοῖς στρατιώταις ἐπέτρεψεν. Ἔπειτα τὰς οἰκίας ἐμπρήσας, ἐπὶ τὰς πέριξ κώμας ἐχώρει. Φυγαὶ δὲ ἦσαν τῶν δυνατῶν, καὶ φθοραὶ τῶν ἀσθενεστέρων· τὸ καταλειφθὲν δὲ πᾶν ἐνεπίπρατο, καὶ, διειληφότος τοῦ πολέμου τήν τε ὀρεινὴν ὅλην καὶ τὴν πεδιάδα πᾶσαν, οἱ ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις τὰς ἐξόδους ἀφῄρηντο. Τοὺς μὲν γὰρ

αὐτομολεῖν προαιρουμένους οἱ ζηλωταὶ παρεφυλάσσοντο· τοὺς δὲ οὔπω τὰ Ῥωμαίων φρονοῦντας εἶργεν ἡ στρατιὰ, πανταχόθεν τὴν πόλιν περιέχουσα.

2. Οὐεσπασιανῷ δὲ εἰς Καισάρειαν ἐπιστρέψαντι, καὶ παρασκευαζομένῳ μετὰ πάσης τῆς δυνάμεως ἐπ' αὐτῶν τῶν Ἱεροσολύμων ἐξελαύνειν, ἀγγέλλεται Νέρων ἀνῃρημένος, τρισκαίδεκα βασιλεύσας ἔτη καὶ ἡμέρας ὀκτώ. Περὶ οὗ λέγειν, ὃν τρόπον εἰς τὴν ἀρχὴν ἐξύβρισε, πιστεύσας τὰ πράγματα τοῖς πονηροτάτοις, Νυμφιδίῳ καὶ Τιγελλίνῳ, τοῖς γε ἀναξίοις τῶν ἐξελευθέρων· καὶ ὡς ὑπὸ τούτων ἐπιβουλευθεὶς κατελείφθη μὲν ὑπὸ τῶν φυλάκων ἁπάντων, διαδρὰς δὲ σὺν τέτρασι τῶν πιστῶν ἀπελευθέρων, ἐν τοῖς προαστείοις ἑαυτὸν ἀνεῖλε· καὶ ὡς οἱ καταλύσαντες αὐτὸν οὐ μετὰ πολὺν χρόνον δίκας ἔδοσαν· τόν τε κατὰ τὴν Γαλατίαν πόλεμον, ὡς ἐτελεύτησε, καὶ πῶς Γάλβας ἀποδειχθεὶς αὐτοκράτωρ εἰς Ῥώμην ἐπανῆλθεν ἐκ τῆς Ἱσπανίας, καὶ ὡς ὑπὸ τῶν στρατιωτῶν αἰτιασθεὶς ἐπὶ ταπει-
301 *νοφροσύνῃ ἐδολοφονήθη κατὰ μέσην τὴν Ῥωμαίων ἀγορὰν, ἀπεδείχθη τε αὐτοκράτωρ Ὄθων· τήν τε τούτου στρατιὰν ἐπὶ τοὺς Οὐϊτελλίου στρατηγοὺς καὶ κατάλυσιν, ἔπειτα τοὺς κατὰ Οὐϊτέλλιον ταράχους, καὶ τὴν περὶ τὸ Καπετώλιον συμβολήν· ὅπως τε Ἀντώνιος Πρῖμος καὶ Μουκιανὸς, διαφθείραντες Οὐϊτέλλιον καὶ τὰ Γερμανικὰ τάγματα, κατέστειλαν τὸν ἐμφύλιον πόλεμον — πάντα ταῦτα διεξιέναι μὲν ἐπ' ἀκριβὲς παρῃτησάμην, ἐπειδὴ δι' ὄχλου πᾶσίν ἐστι, καὶ πολλοῖς Ἑλλήνων τε καὶ Ῥωμαίων ἀναγέγραπται. Συναφείας δὲ ἕνεκα τῶν πραγμάτων, καὶ τοῦ μὴ διηρτῆσθαι τὴν ἱστορίαν, κεφαλαιωδῶς ἕκαστον ἐπεσημηνάμην. Οὐεσπασιανὸς τοίνυν τὸ μὲν πρῶτον ἀνεβάλλετο τὴν τῶν Ἱεροσολύμων στρατείαν, καραδοκῶν, πρὸς τίνα ῥέψει τὸ κρατεῖν μετὰ Νέρωνα. Αὖθις δὲ Γάλβαν ἀκούσας αὐτοκράτορα, πρὶν ἐπιστεῖλαί τι περὶ τοῦ πολέμου καὶ ἐκεῖνον,*

οὐκ ἐπεχείρει. Πέμπει δὲ πρὸς αὐτὸν τὸν υἱὸν Τίτον, ἀσπασόμενον καὶ ληψόμενον τὰς περὶ Ἰουδαίων ἐντολάς. Τῆς αὐτῆς δὲ αἰτίας ἅμα Τίτῳ καὶ Ἀγρίππας ὁ βασιλεὺς πρὸς Γάλβαν ἔπλει, καὶ διὰ τῆς Ἀχαΐας, χειμῶνος γὰρ ἦν ὥρα, μακραῖς ναυσὶ πλεόντων, φθάνει Γάλβας ἀναιρεθεὶς μετὰ μῆνας ἑπτὰ καὶ ἴσας ἡμέρας. Ἐξ οὗ τὴν ἡγεμονίαν παρέλαβεν Ὄθων, ἀντιποιούμενος τῶν πραγμάτων. Ὁ μὲν οὖν Ἀγρίππας εἰς τὴν Ῥώμην ἀφικέσθαι διέγνω, μηδὲν ὀῤῥωδήσας πρὸς τὴν μεταβολήν. Τίτος δὲ κατὰ δαιμόνιον ὁρμὴν ἀπὸ τῆς Ἑλλάδος εἰς τὴν Συρίαν ἔπλει, καὶ κατὰ τάχος εἰς Καισάρειαν ἀφικνεῖται πρὸς τὸν πατέρα. Καὶ οἱ μὲν μετέωροι περὶ τῶν ὅλων ὄντες, ὡς ἂν σαλευομένης τῆς Ῥωμαίων ἡγεμονίας, ὑπερεώρων τὴν ἐπὶ Ἰουδαίους στρατείαν, καὶ διὰ τὸν περὶ τῆς πατρίδος φόβον τὴν ἐπὶ τοὺς ἀλλοφύλους ὁρμὴν ἄωρον ἐνόμιζον.

3. Ἐπανίσταται δὲ ἄλλος τοῖς Ἱεροσολύμοις πόλεμος. Υἱὸς ἦν Γιώρα Σίμων τις, Γερασηνὸς τὸ γένος, νεανίας πανουργίᾳ μὲν ἡττώμενος Ἰωάννου προκατέχοντος ἤδη τὴν πόλιν, ἀλκῇ δὲ σώματος καὶ τόλμῃ διαφέρων, δι᾽ ἣν καὶ ὑπὸ Ἀνάνου τοῦ ἀρχιερέως φυγαδευθεὶς ἐξ ἧς εἶχε τοπαρχίας Ἀκραβατηνῆς, πρὸς τοὺς κατειληφότας τὴν Μασάδαν λῃστὰς παραγίνεται. Τὸ μὲν οὖν πρῶτον ἦν αὐτοῖς δι᾽ ὑποψίας, εἰς τὸ κατωτέρω γοῦν φρούριον ἐπέτρεψαν αὐτῷ παρελθεῖν ἅμα ταῖς γυναιξὶν, ἃς ἄγων ἧκεν, αὐτοὶ τὸ ὑψηλότερον οἰκοῦντες. Αὖθις δὲ διὰ συγγένειαν ἠθῶν, καὶ ὅτι πιστὸς ἐδόκει, συμπροενόμευε γοῦν αὐτοῖς ἐξιὼν, καὶ συνεπόρθει τὰ περὶ τὴν Μασάδαν· οὐ μὴν ἐπὶ τὰ μείζω παρακαλῶν ἔπειθεν. Οἱ μὲν γὰρ ἐν ἔθει ὄντες τῷ φρουρίῳ, καθάπερ φωλεοῦ χωρίζεσθαι μακρὰν ἐδεδοίκεσαν· ὁ δὲ τυραννιῶν, καὶ μεγάλων ἐφιέμενος, ἐπειδὴ καὶ τὴν Ἀνάνου τελευτὴν ἤκουσεν, εἰς τὴν 302
ὀρεινὴν ἀφίσταται, καὶ προκηρύξας δούλοις μὲν

ἐλευθερίαν, γέρας δὲ ἐλευθέροις, τοὺς πανταχόθεν πονηροὺς συνήθροιζεν.

4. Ὡς δὲ ἦν αὐτῷ καρτερὸν ἤδη τὸ σύνταγμα, τὰς ἀνὰ τὴν ὀρεινὴν κώμας κατέτρεχεν· ἀεὶ δὲ πλειόνων προσγινομένων, ἐθάῤῥει καταβαίνειν εἰς τὰ χθαμαλώτερα. Καὶ ἐπειδὴ πόλεσιν ἤδη φοβερὸς ἦν, πολλοὶ πρὸς τὴν ἰσχὺν καὶ τὴν εὔροιαν τῶν κατορθωμάτων ἐφθείροντο δυνατοί. Καὶ οὐκ ἔτι ἦν δούλων μόνον, οὐδὲ λῃστῶν στρατὸς, ἀλλὰ καὶ δημοτικῶν οὐκ ὀλίγων, ὡς πρὸς βασιλέα πειθαρχία. Κατέτρεχε δὲ τὴν Ἀκραβατηνὴν τοπαρχίαν, καὶ τὰ μέχρι τῆς μεγάλης Ἰδουμαίας. Κατὰ γὰρ κώμην τινὰ καλουμένην Ναΐν τεῖχος κατασκευάσας, ὥςπερ φρουρίῳ πρὸς ἀσφάλειαν ἐχρῆτο. Κατὰ δὲ τὴν Φαρὰν προςαγορευομένην φάραγγα, πολλὰ μὲν ἀνευρύνας σπήλαια, πολλὰ δὲ εὑρὼν ἕτοιμα, ταμιείοις ἐχρῆτο θησαυρῶν καὶ τῆς λείας ἐκδοχείοις. Ἀνετίθει δὲ καὶ τοὺς ἁρπαζομένους εἰς αὐτὰ καρποὺς, οἵ τε πολλοὶ τῶν λόχων δίαιταν εἶχον ἐν ἐκείνοις· δῆλος δὲ ἦν τό τε σύνταγμα προγυμνάζων καὶ τὰς παρασκευὰς κατὰ τῶν Ἱεροσολύμων.

5. Ὅθεν οἱ ζηλωταὶ, δείσαντες αὐτοῦ τὴν ἐπιβουλὴν, καὶ προλαβεῖν βουλόμενοι τὸν κατ᾽ αὐτῶν τρεφόμενον, ἐξιᾶσι μετὰ τῶν ὅπλων οἱ πλείους· ὑπαντιάζει δὲ Σίμων, καὶ παραταξάμενος συχνοὺς μὲν αὐτῶν ἀναιρεῖ, συνελαύνει δὲ τοὺς λοιποὺς εἰς τὴν πόλιν. Οὔπω δὲ θαῤῥῶν τῇ δυνάμει τοῦ μὲν τοῖς τείχεσι προςβαλεῖν ἀπετράπη, χειρώσασθαι δὲ πρότερον τὴν Ἰδουμαίαν ἐπεβάλλετο. Καὶ δὴ διςμυρίους ἔχων ὁπλίτας, ἤλαυνεν ἐπὶ τοὺς ὅρους αὐτῆς. Οἱ δὲ ἄρχοντες τῶν Ἰδουμαίων κατὰ τάχος ἀθροίσαντες ἐκ τῆς χώρας τὸ μαχιμώτατον, περὶ πεντακιςχιλίους καὶ διςμυρίους, τοὺς δὲ λοιποὺς ἐάσαντες φρουρεῖν τὰ σφέτερα, διὰ τὰς τῶν ἐν Μασάδᾳ σικαρίων καταδρομὰς, ἐδέχοντο τὸν Σίμωνα πρὸς τοῖς ὅροις. Ἔνθα συμβαλὼν αὐτοῖς, καὶ

δι' ὅλης πολεμήσας ἡμέρας, οὔτε νενικηκὼς οὔτε νενικημένος διεκρίθη· καὶ ὁ μὲν εἰς τὴν Ναΐν, οἱ δὲ Ἰδουμαῖοι διελύθησαν ἐπ' οἴκου. Καὶ μετ' οὐ πολὺ Σίμων μείζονι δυνάμει πάλιν εἰς τὴν χώραν αὐτῶν ὥρμητο· στρατοπεδευσάμενος δὲ κατά τινα κώμην, ἣ Θεκωὲ καλεῖται, πρὸς τοὺς ἐν Ἡρωδίῳ φρουροὺς, ὅπερ ἦν πλησίον, Ἐλεάζαρόν τινα τῶν ἑταίρων ἔπεμψε, πείσοντα παραδοῦναι τὸ ἔρυμα. Τοῦτον οἱ φύλακες ἑτοίμως ἐδέξαντο, τὴν αἰτίαν ἀγνοοῦντες, δι' ἣν ἥκοι· φθεγξάμενον δὲ περὶ παραδόσεως ἐδίωκον σπασάμενοι τὰ ξίφη, μέχρι φυγῆς τόπον οὐκ ἔχων ἔῤῥιψεν ἀπὸ τοῦ τείχους ἑαυτὸν εἰς τὴν ὑποκειμένην φάραγγα. Καὶ ὁ μὲν αὐτίκα τελευτᾷ, τοῖς δὲ Ἰδουμαίοις ἤδη κατῤῥωδοῦσι τὴν ἰσχὺν τοῦ Σίμωνος, ἔδοξε πρὸ τοῦ συμβαλεῖν κατασκέψασθαι τὴν στρατιὰν τῶν πολεμίων.

6. Εἰς τοῦτο δὲ ὑπηρέτην ἑαυτὸν ἑτοίμως ἐπεδίδου Ἰάκωβος, εἷς τῶν ἡγεμόνων, προδοσίαν ἐν- 303
θυμούμενος. Ὁρμήσας γοῦν ἀπὸ τῆς Ἀλούρου — κατὰ γὰρ ταύτην συνήθροιστο τὴν κώμην τότε τῶν Ἰδουμαίων τὸ στράτευμα — παραγίνεται πρὸς Σίμωνα, καὶ πρῶτον αὐτῷ παραδώσειν συντίθεται τὴν αὑτοῦ πατρίδα, λαβὼν ὅρκους, ὡς ἀεὶ τίμιος ὢν διατελοίη, συνεργήσειν δὲ ὑπέσχετο καὶ περὶ τῆς ὅλης Ἰδουμαίας. Ἐφ' οἷς ἑστιαθεὶς φιλοφρόνως ὑπὸ τοῦ Σίμωνος, καὶ λαμπραῖς ἐπαρθεὶς ὑποσχέσεσιν, ἐπειδήπερ εἰς τοὺς σφετέρους ὑπέστρεψεν, τὸ μὲν πρῶτον πολλαπλασίονα τὴν στρατιὰν τοῦ Σίμωνος ἐψεύδετο· ἔπειτα δεξιούμενος τούς τε ἡγεμόνας, καὶ κατ' ὀλίγους πᾶν τὸ πλῆθος, ἐνῆγεν, ὥστε δέξασθαι τὸν Σίμωνα, καὶ παραδοῦναι δίχα μάχης αὐτῷ τὴν τῶν ὅλων ἀρχήν. Ἅμα δὲ ταῦτα διαπραττόμενος, καὶ Σίμωνα δι' ἀγγέλων ἐκάλει, σκεδάσειν ὑπισχνούμενος τοὺς Ἰδουμαίους· ὃ δὴ παρέσχεν. Ὡς γὰρ ἦν ἤδη πλησίον ἡ στρατιὰ, πρῶτος ἀναπηδήσας ἐπὶ τὸν ἵππον, μετὰ τῶν συν-

διεφθαρμένων ἔφευγε. Πτοία δὲ ἐμπίπτει παντὶ τῷ πλήθει, καὶ πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν λυθέντες ἐκ τῆς τάξεως ἀνεχώρουν ἕκαστοι πρὸς τὰ ἴδια.

7. Σίμων δὲ παρὰ δόξαν εἰς τὴν Ἰδουμαίαν εἰςήλασεν ἀναιμωτὶ, καὶ προςβαλὼν ἀδοκήτως πρῶτον αἱρεῖ τὴν πόλιν Χεβρὼν, ἐν ᾗ πλείστης ἐκράτησε λείας, πάμπολυν δὲ διήρπασε καρπόν· ὡς δὲ φασὶν οἱ ἐπιχώριοι τὴν Χεβρὼν, οὐ μόνον τῶν τῇδε πόλεων, ἀλλὰ καὶ τῆς ἐν Αἰγύπτῳ Μέμφεως ἀρχαιοτέραν, διςχίλια γοῦν αὐτῇ καὶ τριακόσια ἔτη συνηρίθμητο. Μυθεύουσι δὲ αὐτὴν καὶ οἰκητήριον Ἀβράμου τοῦ Ἰουδαίων προγόνου γεγονέναι, μετὰ τὴν ἐκ τῆς Μεσοποταμίας ἀπανάστασιν, τούς τε παῖδας αὐτοῦ λέγουσι καταβῆναι εἰς Αἴγυπτον ἔνθεν· ὧν καὶ τὰ μνημεῖα μέχρι τοῦ νῦν ἐν τῇδε τῇ πολίχνῃ δείκνυται, πάνυ καλῆς μαρμάρου καὶ φιλοτίμως εἰργασμένα. Δείκνυται δὲ ἀπὸ σταδίων ἓξ τοῦ ἄστεως τερέβινθος μεγίστη, καὶ φασὶ τὸ δένδρον ἀπὸ τῆς κτίσεως μέχρι νῦν διαμένειν. Ἔνθεν ὁ Σίμων διὰ πάσης ἐχώρει τῆς Ἰδουμαίας, οὐ μόνον πόλεις καὶ κώμας πορθῶν, ἀλλὰ καὶ τὴν χώραν ἅπασαν λυμαινόμενος· δίχα γὰρ τῶν ὁπλιτῶν, τέσσαρες αὐτῷ συνείποντο μυριάδες, ὡς μηδὲ τῶν ἐπιτηδείων ἐξαρκούντων πρὸς τὸ πλῆθος. Προςῆν δὲ ταῖς χρείαις ὠμότης τε αὐτοῦ, καὶ πρὸς τὸ γένος ὀργὴ, δι' ἃ μᾶλλον ἐξερημοῦσθαι συνέβαινε τὴν Ἰδουμαίαν. Καθάπερ δὲ ὑπὸ τῶν ἀκρίδων κατόπιν ὕλην ἐστὶν ἰδεῖν ἐψιλωμένην πᾶσαν, οὕτω τὸ κατὰ νώτου τῆς Σίμωνος στρατιᾶς ἐρημία κατελείπετο. Καὶ τὰ μὲν ἐμπιπράντες, τὰ δὲ κατασκάπτοντες, πᾶν δὲ τὸ πεφυκὸς ἀνὰ τὴν χώραν ἢ συμπατοῦντες ἠφάνιζον, ἢ νεμόμενοι, καὶ τὴν ἐνεργὸν ὑπὸ τῆς πορείας σκληροτέραν ἐποίουν τῆς ἀκάρπου. Καθό-
304 λου τε εἰπεῖν, οὐδὲ σημεῖόν τι κατελείπετο τοῖς πορθουμένοις τοῦ γεγονέναι.

8. Ταῦτα πάλιν τοὺς ζηλωτὰς ἐπήγειρε, καὶ

φανερῶς μὲν ἀντιπαράταξασθαι κατέδεισαν· προλοχίσαντες δὲ ἐν ταῖς παρόδοις ἁρπάζουσι τοῦ Σίμωνος τὴν γυναῖκα, καὶ τῆς περὶ αὐτὴν θεραπείας συχνούς. Ἔπειτα ὡς αὐτὸν ᾐχμαλωτισμένοι τὸν Σίμωνα, γεγηθότες εἰς τὴν πόλιν ὑπέστρεψαν, καὶ ὅσον οὐδέπω προσεδόκων καταθέμενον τὰ ὅπλα περὶ τῆς γυναικὸς ἱκετεύσειν. Τὸν δὲ οὐκ ἔλεος εἰςεισιν, ἀλλ᾿ ὀργὴ περὶ τῆς ἡρπασμένης· καὶ πρὸς τὸ τεῖχος τῶν Ἱεροσολύμων ἐλθὼν, καθάπερ τὰ τρωθέντα τῶν θηρίων, ἐπειδὴ τοὺς τρώσαντας οὐ κατέλαβεν, ἐφ᾿ οὓς εὗρε τὸν θυμὸν ἠφίει. Ὅσοι γοῦν λαχανείας ἕνεκεν ἢ φρυγανισμοῦ προεληλύθεισαν ἔξω πυλῶν, ἀνόπλους καὶ γέροντας, συλλαμβάνων ᾐκίζετο, καὶ διέφθειρε δι᾿ ὑπερβολὴν ἀγανακτήσεως, μονονουχὶ καὶ νεκρῶν γευόμενος τῶν σωμάτων. Πολλοὺς δὲ καὶ χειροκοπήσας εἰςέπεμπε, καταπλήξασθαι τοὺς ἐχθροὺς ἅμα, καὶ διαστασιάσαι τὸν δῆμον ἐπιχειρῶν πρὸς τοὺς αἰτίους. Ἐντέταλτο δὲ αὐτοῖς λέγειν, ὅτι 'Σίμων θεὸν ὄμνυσι τὸν πάντων ἔφορον, εἰ μὴ θᾶττον ἀποδώσουσιν αὐτῷ τὴν γυναῖκα, ῥήξας τὸ τεῖχος, τοιαῦτα διαθήσειν πάντας τοὺς κατὰ τὴν πόλιν, μηδεμιᾶς φεισάμενος ἡλικίας, μηδὲ ἀπὸ τῶν ἀναιτίων διακρίνας τοὺς αἰτίους.' Τούτοις οὐ μόνον ὁ δῆμος, ἀλλὰ καὶ οἱ ζηλωταὶ καταπλαγέντες, ἀποπέμπουσιν αὐτῷ τὴν γυναῖκα, καὶ τότε μὲν ἐκμειλιχθεὶς ὀλίγον, ἀνεπαύσατο τοῦ συνεχοῦς φόνου.

9. Οὐ μόνον δὲ κατὰ τὴν Ἰουδαίαν στάσις ἦν καὶ πόλεμος ἐμφύλιος, ἀλλὰ καὶ ἐπὶ τῆς Ἰταλίας. Ἀνῄρειτο μὲν γὰρ κατὰ μέσην τὴν Ῥωμαίων ἀγορὰν Γάλβας, ἀποδεδειγμένος δὲ αὐτοκράτωρ Ὄθων ἐπολέμει Οὐϊτελλίῳ βασιλειῶντι· τοῦτον γὰρ ᾕρητο τὰ κατὰ Γερμανίαν τάγματα. Καὶ γενομένης συμβολῆς κατὰ Βηδριακὸν τῆς Γαλατίας πρός τε Οὐάλεντα καὶ Καικίνναν τοὺς Οὐϊτελλίου στρατηγοὺς, τῇ πρώτῃ μὲν ἡμέρᾳ περιῆν Ὄθων, τῇ δευτέρᾳ δὲ

τοῦ Οὐϊτελλίου στρατιωτικόν· καὶ πολλοῦ φόνου γενομένου διεχρήσατο μὲν Ὄθων ἑαυτὸν, ἐν Βρεξέλλῳ τὴν ἧτταν πυθόμενος, ἡμέρας δύο καὶ τρεῖς μῆνας κρατήσας τῶν πραγμάτων. Προσεχώρησε δὲ τοῖς Οὐϊτελλίου στρατηγοῖς καὶ τοῦ Ὄθωνος ἡ στρατιὰ, καὶ κατέβαινεν αὐτὸς εἰς τὴν Ῥώμην μετὰ τῆς δυνάμεως. Ἐν δὲ τούτῳ καὶ Οὐεσπασιανὸς, ἀναστὰς ἐκ τῆς Καισαρείας πέμπτῃ Δαισίου μηνὸς, ὥρμησεν ἐπὶ τὰ μηδέπω κατεστραμμένα τῶν τῆς Ἰουδαίας χωρίων. Ἀναβὰς δὲ εἰς τὴν ὀρεινὴν αἱρεῖ δύο τοπαρχίας, τήν τε Γοφνιτικὴν καὶ τὴν Ἀκραβατηνὴν καλουμένην, μεθ' ἃς Βηθήλᾶ τε καὶ
305 Ἐφραῒμ πολίχνια, οἷς φρουροὺς ἐγκαταστήσας μέχρις Ἱεροσολύμων ἱππάζετο. Φθορὰ δὲ ἦν πολλῶν καταλαμβανομένων, καὶ πολλοὺς ᾐχμαλωτίζετο. Κερεάλιος δὲ αὐτῷ τῶν ἡγεμόνων, μοῖραν ἱππέων καὶ πεζῶν ἀναλαβὼν τὴν ἄνω καλουμένην Ἰδουμαίαν ἐπόρθει, καὶ Καφεθρᾶ μὲν ψευδοπολίχνιον ἐξ ἐφόδου λαβὼν ἐμπίπρησιν, ἑτέραν δὲ καλουμένην Καφαραβὶν προσβαλὼν ἐπολιόρκει. Πάνυ δὲ ἦν ἰσχυρὸν τὸ τεῖχος· καὶ τρίψεσθαι προσδοκῶντι πλείω χρόνον αἰφνιδίως ἀνοίγουσιν οἱ ἔνδον τὰς πύλας, καὶ μεθ' ἱκετηριῶν προσελθόντες αὑτοὺς παρέδοσαν. Κερεάλιος δὲ τούτους παραστησάμενος, ἐπὶ Χεβρὼν ἑτέρας πόλεως ἀρχαιοτάτης ἐχώρει. Κεῖται δὲ, ὡς ἔφην, αὕτη κατὰ τὴν ὀρεινὴν, οὐ πόῤῥω Ἱεροσολύμων· βιασάμενος δὲ τὰς εἰσόδους, τὸ μὲν ἐγκαταλειφθὲν πλῆθος ἡβηδὸν ἀναιρεῖ, τὸ δὲ ἄστυ καταπίμπρησι. Καὶ πάντων ἤδη κεχειρωμένων πλὴν Ἡρωδίου καὶ Μασάδας καὶ Μαχαιροῦντος, — ταῦτα δὲ ὑπὸ τῶν λῃστῶν κατείληπτο, — σκοπὸς ἤδη τὰ Ἱεροσόλυμα προέκειτο Ῥωμαίοις.

10. Ὁ δὲ Σίμων, ὡς ἐῤῥύσατο παρὰ τῶν ζηλωτῶν τὴν γυναῖκα, πάλιν ἐπὶ τὰ λείψανα τῆς Ἰδουμαίας ὑπέστρεψε· καὶ περιελαύνων πανταχόθεν τὸ ἔθνος, εἰς Ἱεροσόλυμα πολλοὺς φεύγειν συνηνά

γκασεν. Εἵπετο δὲ καὶ αὐτὸς ἐπὶ τὴν πόλιν, καὶ κυκλωσάμενος αὖθις τὸ τεῖχος, ὅντινα λάβοι τῶν προσιόντων κατὰ τὴν χώραν ἐργατῶν διέφθειρεν. Ἦν δὲ τῷ δήμῳ Σίμων μὲν ἔξωθεν Ῥωμαίων φοβερώτερος, οἱ ζηλωταὶ δὲ ἔνδον ἑκατέρων χαλεπώτεροι. Καὶ ἐν τούτοις ἐπίνοια κακῶν καὶ τόλμη τὸ σύνταγμα τῶν Γαλιλαίων διέφθειρε· τόν τε γὰρ Ἰωάννην παρῆγον εἰς ἰσχὺν οὗτοι, καὶ ἐκεῖνος αὐτοὺς ἐξ ἧς περιεποιήσατο δυναστείας ἠμείβετο, πάντα ἐπιτρέπων δρᾶν, ὧν ἕκαστος ἐπεθύμει. Πόθοι δὲ ἦσαν ἁρπαγῆς ἀπλήρωτοι, καὶ τῶν πλουσίων οἴκων ἔρευνα, φόνος τε ἀνδρῶν, καὶ γυναικῶν ὕβρεις ἐπαίζοντο, μεθ᾽ αἵματος δὲ τὰ συληθέντα κατέπινον, καὶ μετὰ ἀδείας ἐνεθηλυπάθουν τῷ κόρῳ, κόμας συνθετιζόμενοι, καὶ γυναικείας ἐσθῆτας ἀναλαμβάνοντες, καταντλούμενοι δὲ μύροις, καὶ πρὸς εὐπρέπειαν ὑπογράφοντες ὀφθαλμούς. Οὐ μόνον δὲ κόσμον, ἀλλὰ καὶ πάθη γυναικῶν ἐμιμοῦντο, καὶ δι᾽ ὑπερβολὴν ἀσελγείας ἀθεμίτους ἡδονὰς ἐπενόησαν· ἀνεφλινδοῦντο δὲ ὥσπερ πορνείῳ τῇ πόλει, καὶ πᾶσαν ἀκαθάρτοις ἐμίαναν ἔργοις. Γυναικιζόμενοι δὲ τὰς ὄψεις ἐφόνων ταῖς δεξιαῖς, θρυπτόμενοι δὲ τοῖς βαδίσμασιν ἐπιόντες ἐξαπίνης ἐγίνοντο πολεμισταί, τά τε ξίφη προφέροντες ἀπὸ τῶν βεβαμμένων χλανίδων τὸν προστυχόντα διήλαυνον. Τοὺς ἀποδιδράσκοντας δὲ Ἰωάννην Σίμων φονικώτερος ἐξεδέχετο, καὶ διαφυγών τις τὸν ἐντὸς τοῦ τείχους τύραννον ὑπὸ τοῦ πρὸ πυλῶν διεφθείρετο. Πᾶσα δὲ φυγῆς ὁδὸς τοῖς αὐτομολεῖν πρὸς Ῥωμαίους βουλομένοις ἀπεκόπτετο.

11. Διεστασιάζετο δὲ ἡ πρὸς τὸν Ἰωάννην δύναμις, καὶ πᾶν ὅσον ἦν Ἰδουμαῖον ἐν αὐτῇ χωρισθὲν ἐπεχείρει τῷ τυράννῳ φθόνῳ τε τῆς ἰσχύος 306
αὐτοῦ καὶ μίσει τῆς ὠμότητος. Συμβαλόντες δὲ ἀναιροῦσί τε πολλοὺς τῶν ζηλωτῶν, καὶ συνελαύνουσι τοὺς λοιποὺς εἰς τὴν βασιλικὴν αὐλὴν κατα-

σκευασθεῖσαν ὑπὸ Γραπτῆς, — συγγενὴς δὲ ἦν αὕτη τοῦ τῶν Ἀδιαβηνῶν βασιλέως Ἰζάτου, — συνεισπίπτουσι δὲ οἱ Ἰδουμαῖοι, καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὸ ἱερὸν ἐξώσαντες τοὺς ζηλωτὰς, ἐφ' ἁρπαγὴν ἐτράποντο τῶν Ἰωάννου χρημάτων· κατὰ γὰρ τὴν προειρημένην αὐλὴν αὐτός τε ἦν, καὶ ἐκεῖ τὰ λάφυρα τῆς τυραννίδος κατέθετο. Ἐν δὲ τούτῳ τὸ κατὰ τὴν πόλιν ἐσκεδασμένον πλῆθος τῶν ζηλωτῶν εἰς τὸ ἱερὸν πρὸς τοὺς διαπεφευγότας ἠθροίσθη, καὶ κατάγειν αὐτοὺς παρεσκευάζετο Ἰωάννης ἐπί τε τὸν δῆμον καὶ τοὺς Ἰδουμαίους. Τοῖς δὲ οὐχ οὕτω τὴν ἔφοδον αὐτῶν καταδεῖσαι παρέστη μαχιμωτέροις οὖσιν, ὡς τὴν ἀπόνοιαν, μὴ νύκτωρ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ παρεισδύντες αὐτούς τε διαφθείρωσι, καὶ τὸ ἄστυ καταπρήσωσι. Συνελθόντες οὖν μετὰ τῶν ἀρχιερέων ἐβουλεύοντο, τίνα χρὴ τρόπον φυλάξασθαι τὴν ἐπίθεσιν. Θεὸς δὲ ἄρα τὰς γνώμας αὐτῶν εἰς κακὸν ἔτρεψε, καὶ χαλεπώτερον ἀπωλείας ἐπενόησαν τὸ πρὸς σωτηρίαν φάρμακον. Ἵνα γοῦν καταλύσωσιν Ἰωάννην, ἔκριναν Σίμωνα δέχεσθαι, καὶ μεθ' ἱκετηριῶν δεύτερον εἰςαγαγεῖν ἑαυτοῖς τύραννον. Ἐπεραίνετο δὲ ἡ βουλή. Καὶ τὸν ἀρχιερέα Ματθίαν πέμψαντες ἐδέοντο Σίμωνος εἰςελθεῖν, ὃν πολλάκις ἔδεισαν. Συμπαρεκάλουν δὲ οἱ ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων τοὺς ζηλωτὰς φεύγοντες, πόθῳ τῶν οἴκων καὶ τῶν κτημάτων. Ὁ δὲ αὐτοῖς ὑπερηφάνως κατανεύσας τὸ δεσπόζειν, εἰςέρχεται μὲν ὡς ἀπαλλάξων τῶν ζηλωτῶν τὴν πόλιν, σωτὴρ ὑπὸ τοῦ δήμου καὶ κηδεμὼν εὐφημούμενος. Παρελθὼν δὲ μετὰ τῆς δυνάμεως ἐσκόπει τὰ περὶ τῆς ἑαυτοῦ δυναστείας, καὶ τοὺς καλέσαντας οὐχ ἧττον ἐχθροὺς ἐνόμιζεν, ἢ καθ' ὧν ἐκέκλητο.

12. Σίμων μὲν οὕτως ἐνιαυτῷ τρίτῳ τοῦ πολέμου Ξανθικῷ μηνὶ Ἱεροσολύμων ἐγκρατὴς ἐγένετο. Ἰωάννης δὲ καὶ τὸ τῶν ζηλωτῶν πλῆθος, εἰργόμενον τῶν ἐξόδων τοῦ ἱεροῦ, καὶ τὰ τῆς πόλεως ἀπολωλεκό-

τες — παραχρῆμα γὰρ τὰ ἐκείνων οἱ περὶ τὸν Σίμωνα διήρπασαν — ἐν ἀπόρῳ τὴν σωτηρίαν εἶχον. Προσέβαλλε δὲ τῷ ἱερῷ Σίμων, τοῦ δήμου βοηθοῦντος· καὶ ἐκεῖνοι καταστάντες ἐπὶ τῶν στοῶν καὶ τῶν ἐπάλξεων, ἠμύνοντο τὰς προςβολὰς, συχνοὶ δὲ ἔπιπτον τῶν περὶ Σίμωνα, καὶ πολλοὶ τραυματίαι κατεφέροντο· ῥᾳδίως γὰρ ἐξ ὑπερδεξίου τὰς βολὰς οἱ ζηλωταὶ, καὶ οὐκ ἀστόχους ἐποιοῦντο. Πλεονεκτοῦντες δὲ τῷ τόπῳ, καὶ πύργους ἔτι προκατεσκεύασαν τέσσαρας μεγίστους, ὡς ἀφ' ὑψηλοτέρων ποιοῖντο τὰς ἀφέσεις, τὸν μὲν κατὰ τὴν ἀνα- 307
τολικὴν καὶ βορείαν γωνίαν, τὸν δὲ τοῦ ξυστοῦ καθύπερθεν, τὸν δὲ τρίτον κατὰ γωνίαν ἄλλην ἄντικρὺ τῆς κάτω πόλεως, ὁ δὲ λοιπὸς ὑπὲρ τὴν κορυφὴν κατεσκεύαστο τῶν παστοφορίων· ἔνθα τῶν ἱερέων εἷς ἐξ ἔθους ἱστάμενος ἑκάστην ἑβδομάδα εἰςιοῦσαν προεσήμαινε σάλπιγγι δείλης, καὶ τελεσθεῖσαν αὖθις περὶ ἑσπέραν, ὅτε μὲν ἀνεργεῖν τῷ λαῷ καταγγέλλων, ὅτε δὲ ἔργων ἔχεσθαι. Διέστησαν δὲ ἐπὶ τῶν πύργων ὀξυβελεῖς τε καὶ λιθοβόλους μηχανὰς, τούς τε τοξότας καὶ σφενδονήτας. Ἔνθα δὴ τὰς μὲν προςβολὰς ὀκνηροτέρας ἐποιεῖτο ὁ Σίμων, μαλακιζομένων αὐτῷ τῶν πλειόνων, ἀντεῖχε δὲ ὅμως περιουσίᾳ δυνάμεως· τὰ δὲ ἀπὸ τῶν ὀργάνων βέλη πορρωτέρω φερόμενα πολλοὺς τῶν μαχομένων ἀνῄρει.

CAP. X. 1. Κατὰ δὲ τὸν αὐτὸν καιρὸν περιέσχε καὶ τὴν Ῥώμην πάθη χαλεπώτερα. Παρῆν μὲν γὰρ ἀπὸ Γερμανίας Οὐϊτέλλιος ἅμα τῷ στρατιωτικῷ πολὺ πλῆθος ἐπισυρόμενος ἕτερον. Μὴ χωρούμενος δὲ τοῖς ἀποδεδειγμένοις εἰς τοὺς στρατιώτας περιβόλοις, ὅλην ἐποιήσατο τὴν Ῥώμην στρατόπεδον, καὶ πᾶσαν οἰκίαν ὁπλιτῶν ἐπλήρωσεν. Οἱ δὲ ἀήθεσιν ὀφθαλμοῖς τὸν Ῥωμαίων πλοῦτον θεασάμενοι, καὶ περιλαμφθέντες πάντοθεν ἀργύρῳ τε καὶ χρυσῷ, τὰς ἐπιθυμίας μόλις κατεῖχον, ὥςτε μὴ ἐφ'

ἁρπαγὰς τρέπεσθαί τε, καὶ τοὺς ἐμποδὼν γινομένους ἀναιρεῖν. Καὶ τὰ μὲν κατὰ τὴν Ἰταλίαν ἐν τούτοις ἦν.

2. Οὐεσπασιανὸς δὲ, ὡς τὰ πλησίον Ἱεροσολύμων καταστρεψάμενος ὑπέστρεψεν εἰς Καισάρειαν, ἀκούει τὰς κατὰ τὴν Ῥώμην ταραχὰς, καὶ Οὐϊτέλλιον αὐτοκράτορα. Τοῦτο οὖν αὐτὸν, καίπερ ἄρχεσθαι καθάπερ ἄρχειν καλῶς ἐπιστάμενον, εἰς ἀγανάκτησιν προήγαγε, καὶ τὸν μὲν ὡς ἐρήμου καταμανέντα τῆς ἡγεμονίας ἠδόξει δεσπότην. Περιαλγήσας δὲ τῷ πάθει καρτερεῖν τὴν βάσανον οὐχ οἷός τε ἦν, καὶ τῆς πατρίδος πορθουμένης ἑτέροις προσευσχολεῖν πολέμοις· ἀλλ' ὅσον ὁ θυμὸς ἤπειγεν ἐπὶ τὴν ἄμυναν, τοσοῦτον εἶργεν ἡ ἔννοια τοῦ διαστήματος· πολλὰ γὰρ φθάσαι πανουργήσασαν τὴν τύχην, πρὶν αὐτὸν εἰς τὴν Ἰταλίαν περαιωθῆναι, καὶ ταῦτα χειμῶνος ὥρᾳ πλέοντα, σφαδάζουσαν ἤδη κατεῖχε τὴν ὀργήν.

3. Συνιόντες δὲ οἵ τε ἡγεμόνες καὶ οἱ στρατιῶται καθ' ἑταιρίαν, φανερῶς ἤδη μεταβολὴν ἐβου-
308 λεύοντο, καὶ διαγανακτοῦντες ἐβόων, ὡς ἐπὶ τῆς Ῥώμης στρατιῶται τρυφῶντες, καὶ μηδὲ ἀκούειν πολέμου φήμην ὑπομένοντες, διαχειροτονοῦσιν οἷς βούλονται τὴν ἡγεμονίαν, καὶ πρὸς ἐλπίδα λημμάτων ἀποδεικνύουσιν αὐτοκράτορας· αὐτοὶ δὲ διὰ τοσούτων κεχωρηκότες πόνων, καὶ γηρῶντες ὑπὸ τοῖς κράνεσιν, ἑτέροις χαρίζονται τὴν ἐξουσίαν, καὶ ταῦτα τὸν ἀξιώτερον ἄρχειν παρ' αὐτοῖς ἔχοντες. Τίνα δικαιοτέραν ποτὲ τῆς εἰς αὐτοὺς εὐνοίας ἀποδώσειν ἀμοιβὴν, εἰ τὴν νῦν καταπρόοιντο; Τοσούτῳ δὲ εἶναι Οὐεσπασιανὸν ἡγεμονεύειν Οὐϊτελλίου δικαιότερον, ὅσῳ καὶ αὐτοὺς τῶν ἐκεῖνον ἀποδειξάντων· οὐ γὰρ δὴ μικροτέρους τῶν ἀπὸ Γερμανίας διενηνοχέναι πολέμους, οὐδὲ τῶν ἐκεῖθεν καταγόντων τὸν τύραννον ἡττῆσθαι τοῖς ὅπλοις. Ἀγῶνος δ' ἐνδεήσειν οὐδέν· οὐ γὰρ τὴν σύγκλητον, ἢ

τῶν Ῥωμαίων δῆμον ἀνέξεσθαι τῆς Οὐϊτελλίου λαγνείας ἀντὶ τῆς Οὐεσπασιανοῦ σωφροσύνης· οὐδὲ ἀντὶ μὲν ἡγεμόνος ἀγαθοῦ τύραννον ὠμότατον, ἄπαιδα δὲ ἀντὶ πατρὸς αἱρεῖσθαι προστάτην· μέγιστον γὰρ δὴ πρὸς ἀσφάλειαν εἰρήνης εἶναι τὰς γνησίους τῶν βασιλέων ὑπεροχάς. Εἴτε οὖν ἐμπειρίᾳ γήρως προσήκει τὸ ἄρχειν, Οὐεσπασιανὸν αὐτοὺς ἔχειν, εἴτε νεότητος ἀλκῇ, Τίτον· καρπίσασθαι γὰρ τῆς παρ᾽ ἀμφοῖν ἡλικίας τὸ ὠφέλιμον. Χορηγήσειν δὲ οὐ μόνον αὐτοὺς τότε τὴν ἰσχὺν τοῖς ἀποδειχθεῖσιν, ἅτε τρία τάγματα καὶ τὰς παρὰ τῶν βασιλέων συμμαχίας ἔχοντας, ἀλλὰ καὶ συνεργήσειν τά τε πρὸς ἕω πάντα, καὶ τῆς Εὐρώπης ὅσα τῶν ἀπὸ Οὐϊτελλίου φόβων κεχώρισται, καὶ τοὺς ἐπὶ τῆς Ἰταλίας δὲ συμμάχους, ἀδελφὸν Οὐεσπασιανοῦ καὶ παῖδα ἕτερον, ὧν τὸν μὲν προσθήσεσθαι πολλοὺς τῶν ἐν ἀξιώματι νέων, τὸν δὲ καὶ τὴν τῆς πόλεως φυλακὴν πεπιστεῦσθαι, μέρος οὐκ ὀλίγον εἰς ἐπιβολὴν ἡγεμονίας. Καθόλου τε ἂν βραδύνωσιν αὐτοὶ, τάχα τὴν σύγκλητον ἀποδείξειν τὸν ὑπὸ τῶν συντετηρηκότων στρατιωτῶν ἀτιμούμενον.

4. Τοιαῦτα κατὰ συστροφὰς οἱ στρατιῶται διελάλουν· ἔπειτα συναθροισθέντες, καὶ παρακροτήσαντες ἀλλήλους, ἀναγορεύουσι τὸν Οὐεσπασιανὸν αὐτοκράτορα, καὶ σώζειν τὴν κινδυνεύουσαν ἡγεμονίαν παρεκάλουν· Τῷ δὲ φροντὶς μὲν ἦν πάλαι περὶ τῶν ὅλων, οὔτι γε μὴν αὐτὸς ἄρχειν προῄρητο, τοῖς μὲν ἔργοις ἑαυτὸν ἄξιον ἡγούμενος, προκρίνων δὲ τῶν ἐν λαμπρότητι κινδύνων τὴν ἐν ἰδιώταις ἀσφάλειαν. Ἀρνουμένῳ δὲ μᾶλλον οἱ ἡγεμόνες ἐπέκειντο, καὶ περιχυθέντες οἱ στρατιῶται ξιφήρεις ἀναιρεῖν αὐτὸν ἠπείλουν, εἰ μὴ βούλοιτο ζῆν ἀξίως. Πολλὰ
δὲ πρὸς αὐτοὺς διατεινάμενος ἐξ ὧν διωθεῖτο τὴν 309
ἀρχὴν, τελευταῖον, ὡς οὐκ ἔπειθεν, εἴκει τοῖς ὀνομάσασι.

5. Προτρεπομένων δὲ αὐτὸν ἤδη Μουκιανοῦ τε

καὶ τῶν ἄλλων ἡγεμόνων εἰς αὐτοκράτορα, καὶ τῆς ἄλλης στρατιᾶς ἄγειν βοώσης αὐτὴν ἐπὶ πᾶν τὸ ἀντίπαλον, αὐτὸς πρῶτον τῶν ἀπ' Ἀλεξανδρείας εἴχετο πραγμάτων, — εἰδὼς πλεῖστον τῆς ἡγεμονίας μέρος τὴν Αἴγυπτον οὖσαν διὰ τὴν τοῦ σίτου χορηγίαν, ἧς κρατήσας, εἰ παρέλκοι καὶ βίᾳ, καθαιρήσειν ἤλπιζεν Οὐϊτέλλιον· οὐ γὰρ ἀνέξεσθαι πεινῆσαν ἐπὶ Ῥώμης τὸ πλῆθος, — τά δύο τε ἐπὶ τῆς Ἀλεξανδρείας τάγματα προςποιήσασθαι βουλόμενος. Ἐνεθυμεῖτο δὲ καὶ πρόβλημα τὴν χώραν ἔχειν τῶν ἀπὸ τῆς τύχης ἀδήλων. Ἔστι γὰρ κατά τε γῆν δυςέμβολος, καὶ τὰ πρὸς θάλασσαν ἀλίμενος· κατὰ μὲν ἑσπέραν προβεβλημένη τὰ ἄνυδρα τῆς Λιβύης, κατὰ δὲ μεσημβρίαν τὴν διορίζουσαν ἀπὸ Αἰθιόπων τὴν Συήνην καὶ τοὺς ἀπλώτους τοῦ ποταμοῦ καταράκτας, ἀπὸ δὲ τῆς ἀνατολῆς ἔτι τὴν ἐρυθρὰν θάλασσαν ἀναχεομένην μέχρι Κοπτοῦ, βόρειον δὲ τεῖχος αὐτῇ ἥ τε μέχρι Συρίας γῆ, καὶ τὸ καλούμενον Αἰγύπτιον πέλαγος, πᾶν ἄπορον ὅρμων. Τετείχισται μὲν οὕτως ἡ Αἴγυπτος πάντοθεν. Τὸ μεταξὺ δὲ Πηλουσίου καὶ Συήνης μῆκος αὐτῆς σταδίων δισχιλίων, ὅ τε ἀπὸ τῆς Πλινθίνης ἀνάπλους εἰς τὸ Πηλούσιον σταδίων τριςχιλίων ἑξακοσίων· ὁ δὲ Νεῖλος ἀναπλεῖται μέχρι τῆς Ἐλεφάντων καλουμένης πόλεως, ὑπὲρ ἣν εἴργουσιν προσωτέρω χωρεῖν οὓς προειρήκαμεν καταράκτας. Δυςπρόςιτος δὲ λιμὴν ναυσὶ καὶ κατ' εἰρήνην Ἀλεξανδρείας· στενός τε γὰρ εἴςπλους, καὶ πέτραις ὑφάλοις τὸν ἐπ' εὐθὺ καμπτόμενος δρόμον. Καὶ τὸ μὲν ἀριστερὸν αὐτοῦ μέρος πέφρακται χειροκμήτοις σκέλεσιν· ἐν δεξιᾷ δὲ ἡ προςαγορευομένη Φάρος νῆσος πρόκειται, πύργον ἀνέχουσα μέγιστον, ἐκπυρσεύοντα τοῖς καταπλέουσιν ἐπὶ τριακοσίους σταδίους, ὡς ἐν νυκτὶ πόῤῥωθεν ὁρμίζοιντο πρὸς τὴν δυσχέρειαν τοῦ κατάπλου. Περὶ ταύτην τὴν νησίδα καταβέβληται χειροποίητα τείχη μέγιστα· προσαρασσόμενον δὲ τούτοις τὸ πέλαγος,

καὶ τοῖς ἄντικρυς ἕρκεσιν ἀμφηγνυμένον ἐκτραχύνει τὸν πόρον, καὶ σφαλερὰν διὰ στενοῦ τὴν εἴσοδον ἀπεργάζεται. Ὁ μέντοι γε λιμὴν ἔνδον ἀσφαλέστατος, καὶ τριάκοντα σταδίων τὸ μέγεθος, εἰς ὃν τά τε λείποντα τῇ χώρᾳ πρὸς εὐδαιμονίαν κατάγεται, καὶ τὰ περισσεύοντα τῶν ἐπιχωρίων ἀγαθῶν εἰς πᾶσαν μερίζεται τὴν οἰκουμένην.

6. Ἐφίετο μὲν οὖν εἰκότως τῶν ταύτῃ πραγμάτων Οὐεσπασιανὸς εἰς βεβαίωσιν τῆς ὅλης ἡγεμονίας. Ἐπιστέλλει δ' οὖν εὐθὺς τῷ διέποντι τὴν Αἴγυπτον καὶ τὴν Ἀλεξάνδρειαν Τιβερίῳ Ἀλεξάνδρῳ, δηλῶν τὸ τῆς στρατιᾶς πρόθυμον, καὶ ὡς αὐτὸς, ὑποδὺς ἀναγκαίως τὸ βάρος τῆς ἡγεμονίας, συνεργὸν αὐτὸν καὶ βοηθὸν προςλαμβάνοι. Προαναγνοὺς δὲ τὴν ἐπιστολὴν Ἀλέξανδρος, ἅμα προθύμως τά 310
τε τάγματα καὶ τὸ πλῆθος εἰς αὐτὸν ὥρκωσεν. Ἑκάτεροι δὲ ἀσμένως ὑπήκουσαν, τὴν ἀρετὴν τοῦ ἀνδρὸς ἐκ τῆς ἐγγὺς στρατηγίας εἰδότες. Καὶ ὁ μὲν πεπιστευμένος ἤδη τὰ περὶ τὴν ἀρχὴν, προπαρεσκεύαζεν αὐτῷ καὶ τὰ πρὸς τὴν ἄφιξιν· τάχιον δὲ ἐπινοίας διήγγελλον αἱ φῆμαι τὸν ἐπὶ τῆς ἀνατολῆς αὐτοκράτορα, καὶ πᾶσα μὲν πόλις ἑώρταζεν, εὐαγγέλια δὲ καὶ θυσίας ὑπὲρ αὐτοῦ ἐπετέλει. Τὰ δὲ κατὰ Μυσίαν καὶ Παννονίαν τάγματα, μικρῷ πρόσθεν κεκινημένα πρὸς τὴν Οὐϊτελλίου τόλμαν, μείζονι χαρᾷ Οὐεσπασιανῷ τὴν ἡγεμονίαν ὤμνυον. Ὁ δὲ ἀναζεύξας ἀπὸ Καισαρείας εἰς Βηρυτὸν παρῆν, ἔνθα πολλαὶ μὲν ἀπὸ τῆς Συρίας αὐτῷ, πολλαὶ δὲ καὶ ἀπὸ τῶν ἄλλων ἐπαρχιῶν πρεσβεῖαι συνήντων, στεφάνους παρ' ἑκάστης πόλεως καὶ συγχαρητικὰ προςφέρουσαι ψηφίσματα. Παρῆν δὲ καὶ Μουκιανὸς ὁ τῆς ἐπαρχίας ἡγεμὼν, τὸ πρόθυμον τῶν δήμων καὶ τοὺς κατὰ πόλιν ὅρκους ἀπαγγέλλων.

7. Προχωρούσης δὲ πανταχοῦ κατὰ νοῦν τῆς τύχης, καὶ τῶν πραγμάτων συννενευκότων ἐκ πλείστου μέρους, ἤδη παρίστατο τῷ Οὐεσπασιανῷ νοεῖν,

ὡς οὐ δίχα δαιμονίου προνοίας ἅψαιτο τῆς ἀρχῆς, ἀλλὰ δικαία τις εἱμαρμένη περιάγει τὸ κρατεῖν τῶν ὅλων ἐπ' αὐτόν· ἀναμιμνήσκεται γάρ τά τε ἄλλα σημεῖα — πολλὰ δὲ αὐτῷ ἐγεγόνει πανταχοῦ — προφαίνοντα τὴν ἡγεμονίαν, καὶ τὰς τοῦ Ἰωσήπου φωνάς, ὃς αὐτὸν ἔτι ζῶντος Νέρωνος αὐτοκράτορα προςειπεῖν ἐθάῤῥησεν. Ἐξεπέπληκτο δὲ τὸν ἄνδρα δεσμώτην ἔτι ὄντα παρ' αὐτῷ, καὶ προςκαλεσάμενος Μουκιανὸν ἅμα τοῖς ἄλλοις ἡγεμόσι καὶ φίλοις, πρῶτον μὲν αὐτοῦ τὸ δραστήριον ἐκδιηγεῖτο, καὶ ὅσα τοῖς Ἰωταπάτοις δι' αὐτὸν ἔκαμεν· ἔπειτα τὰς μαντείας, ἃς αὐτὸς μὲν ὑπώπτευσε τότε πλάσματα τοῦ δέους, ἀποδειχθῆναι δὲ ὑπὸ τοῦ χρόνου καὶ τῶν πραγμάτων θείας· 'αἰσχρὸν οὖν, ἔφη, τὸν προθεσπίσαντά μοι τὴν ἀρχήν, καὶ διάκονον τῆς τοῦ θεοῦ φωνῆς, ἔτι αἰχμαλώτου τάξιν ἢ δεσμώτου τύχην ὑπομένειν.' Καὶ καλέσας τὸν Ἰώσηπον, λυθῆναι κελεύει. Τοῖς μὲν οὖν ἡγεμόσιν ἐκ τῆς εἰς τὸν ἀλλόφυλον ἀμοιβῆς λαμπρὰ καὶ περὶ αὐτῶν ἐλπίζειν παρέστη. Συνὼν δὲ τῷ πατρὶ Τίτος, "Δίκαιον, ὦ πάτερ," ἔφη, "τοῦ Ἰωσήπου καὶ τὸ ὄνειδος ἀφαιρεθῆναι σὺν τῷ σιδήρῳ· γενήσεται γὰρ ὅμοιος τῷ μὴ δεθέντι τὴν ἀρχήν, ἂν αὐτοῦ μὴ λύσωμεν ἀλλὰ καὶ κόψωμεν τὰ δεσμά." Τοῦτο γὰρ ἐπὶ τῶν μὴ δεόντως δεθέντων πράττεται. Συνεδόκει δὲ ταῦτα, καὶ παρελθὼν τις πελέκει διέκοψε τὴν ἅλυσιν. Ὁ δὲ Ἰώσηπος εἰληφὼς περὶ τῶν προειρημένων γέρας τὴν ἐπιτιμίαν, ἤδη καὶ περὶ τῶν μελλόντων ἀξιόπιστος ἦν.

311 *CAP. XI.* 1. Οὐεσπασιανὸς δὲ ταῖς πρεσβείαις χρηματίσας, καὶ καταστησάμενος ἑκάστοις τὰς ἀρχὰς δικαίως καὶ διὰ τῶν ἀξίων, εἰς Ἀντιόχειαν ἀφικνεῖται. Καὶ βουλευόμενος, ποῖ χρὴ τρέπεσθαι, προυργιαίτερα τῆς εἰς Ἀλεξάνδρειαν ὁρμῆς τὰ κατὰ τὴν Ῥώμην ἔκρινε, τὴν μὲν βέβαιον οὖσαν ὁρῶν,

τὰ δὲ ὑπὸ Οὐϊτελλίου ταρασσόμενα. Πέμπει δὴ Μουκιανὸν εἰς τὴν Ἰταλίαν, παραδοὺς ἱππέων τε καὶ πεζῶν συχνὴν δύναμιν. Ὁ δὲ διὰ τὴν τοῦ χειμῶνος ἀκμὴν δείσας τὸ πλεῖν, πεζῇ τὴν στρατιὰν ἦγε διὰ Καππαδοκίας καὶ Φρυγίας.

2. Ἐν δὲ τούτῳ καὶ Ἀντώνιος Πρῖμος, ἀναλαβὼν τὸ τρίτον τάγμα τῶν κατὰ Μυσίαν, ἔτυχε δὲ ἡγεμονεύων αὐτόθι, Οὐϊτελλίῳ παραταξόμενος ἠπείγετο. Οὐϊτέλλιος δὲ αὐτῷ συναντήσοντα μετὰ πολλῆς δυνάμεως Καικίνναν ἐκπέμπει, μέγα θαῤῥῶν τῷ ἀνδρὶ διὰ τὴν ἐπ' Ὄθωνι νίκην. Ὁ δὲ ἀπὸ τῆς Ῥώμης ἐλαύνων διὰ τάχους περὶ Κρεμῶνα τῆς Γαλατίας τὸν Ἀντώνιον καταλαμβάνει· μεθόριος δέ ἐστιν ἡ πόλις αὕτη τῆς Ἰταλίας. Κατιδὼν δὲ ἐνταῦθα τὸ πλῆθος τῶν πολεμίων καὶ τὴν εὐταξίαν, συμβάλλειν μὲν οὐκ ἐθάῤῥει· σφαλερὰν δὲ τὴν ἀναχώρησιν λογιζόμενος, προδοσίαν ἐβουλεύετο. Συναγαγὼν δὲ τοὺς ὑφ' αὐτὸν ἑκατοντάρχας καὶ χιλιάρχους, ἐνῆγε μεταβῆναι πρὸς τὸν Ἀντώνιον, ταπεινῶν μὲν τὰ Οὐϊτελλίου πράγματα, τὴν Οὐεσπασιανοῦ δὲ ἰσχὺν ἐπαίρων, καὶ ‘παρ' ᾧ μὲν εἶναι, λέγων, μόνον τῆς ἀρχῆς ὄνομα, παρ' ᾧ δὲ τὴν δύναμιν, καὶ αὐτοὺς δὲ ἄμεινον προλαβόντας τὴν ἀνάγκην ποιῆσαι χάριν, καὶ μέλλοντας ἡττᾶσθαι τοῖς ὅπλοις ταῖς γνώμαις τὸν κίνδυνον φθάσαι. Οὐεσπασιανὸν μὲν γὰρ ἱκανὸν εἶναι χωρὶς αὐτῶν προςθήσεσθαι καὶ τὰ λείποντα, Οὐϊτέλλιον δὲ οὐδὲ σὺν αὐτοῖς τηρῆσαι τὰ ὄντα.

3. Πολλὰ τοιαῦτα λέγων ἔπεισε, καὶ πρὸς τὸν Ἀντώνιον αὐτομολεῖ μετὰ τῆς δυνάμεως. Τῆς δὲ αὐτῆς νυκτὸς ἐμπίπτει μετάνοια τοῖς στρατιώταις, καὶ δέος τοῦ προπέμψαντος, εἰ κρείττων γένοιτο· σπασάμενοι δὲ τὰ ξίφη, τὸν Καικίνναν ὥρμησαν ἀνελεῖν, καὶ ἂν ἐπράχθη τὸ ἔργον αὐτοῖς, εἰ μὴ προςπίπτοντες οἱ χιλίαρχοι καθικέτευσαν αὐτούς. Οἱ δὲ τοῦ κτείνειν μὲν ἀπέσχοντο, δήσαντες δὲ τὸν

προδότην, οἷοί τε ἦσαν πέμψειν Οὐϊτελλίῳ. Ταῦτα ἀκούσας ὁ Πρῖμος αὐτίκα τοὺς σφετέρους ἀνίστησι, καὶ μετὰ τῶν ὅπλων ἦγεν ἐπὶ τοὺς ἀποστάντας. Οἱ δὲ παραταξάμενοι πρὸς ὀλίγον μὲν ἀντέσχον, αὖθις δὲ τραπέντες ἔφευγον εἰς τὴν Κρεμῶνα. Καὶ τοὺς ἱππεῖς ἀναλαβὼν Πρῖμος ὑποτέμνεται τὰς εἰσόδους αὐτῶν, καὶ τὸ μὲν πολὺ πλῆθος κυκλωσάμενος πρὸ
312 *τῆς πόλεως διαφθείρει· τῷ δὲ λοιπῷ συνεισπεσὼν, διαρπάσαι τὸ ἄστυ τοῖς στρατιώταις ἐφῆκεν. Ἔνθα δὴ πολλοὶ μὲν τῶν ξένων ἔμποροι, πολλοὶ δὲ τῶν ἐπιχωρίων ἀπώλοντο, πᾶσα δὲ Οὐϊτελλίου στρατιά, μυριάδες τρεῖς ἀνδρῶν καὶ διακόσιοι· τῶν δὲ ἀπὸ τῆς Μυσίας Ἀντώνιος τετρακισχιλίους ἀποβάλλει καὶ πεντακοσίους. Λύσας δὲ τὸν Καικίνναν πέμπει πρὸς Οὐεσπασιανὸν, ἀγγελοῦντα τὰ πεπραγμένα. Καὶ ὃς ἐλθὼν ἀπεδέχθη τε ὑπ' αὐτοῦ, καὶ τὰ τῆς προδοσίας ὀνείδη ταῖς παρ' ἐλπίδα τιμαῖς ἐπεκάλυψεν.*

4. *Ἀνεθάρσει δὲ ἤδη καὶ κατὰ τὴν Ῥώμην Σαβῖνος, ὡς πλησίον Ἀντώνιος ὢν ἀπηγγέλλετο· καὶ συναθροίσας τὰ τῶν νυκτοφυλάκων στρατιωτῶν τάγματα, νύκτωρ καταλαμβάνει τὸ Καπετώλιον. Μεθ' ἡμέραν δὲ αὐτῷ πολλοὶ τῶν ἐπισήμων προσεγένοντο, καὶ Δομετιανὸς ὁ τοῦ ἀδελφοῦ παῖς, μεγίστη μοῖρα τῶν εἰς τὸ κρατεῖν ἐλπίδων. Οὐϊτελλίῳ δὲ Πρίμου μὲν ἐλάττων φροντὶς ἦν, τεθύμωτο δὲ ἐπὶ τοὺς συναποστάντας τῷ Σαβίνῳ, καὶ διὰ τὴν ἔμφυτον ὠμότητα διψῶν αἵματος εὐγενοῦς, τοῦ στρατιωτικοῦ τὴν συγκατελθοῦσαν αὐτῷ δύναμιν ἐπαφίησι τῷ Καπετωλίῳ. Πολλὰ μὲν οὖν ἔκ τε ταύτης, καὶ τῶν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ μαχομένων ἐτολμήθη· τέλος δὲ τῷ πλήθει περιόντες οἱ ἀπὸ τῆς Γερμανίας ἐκράτησαν τοῦ λόφου. Καὶ Δομετιανὸς δὲ σὺν πολλοῖς τῶν ἐν τέλει Ῥωμαίων δαιμονιώτερον διασώζεται· τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος ἅπαν κατεκόπη, καὶ Σαβῖνος ἀναχθεὶς ἐπὶ Οὐϊτέλλιον ἀναιρεῖται, διαρπάσαντές τε οἱ στρατιῶται τὰ ἀναθή-*

ματα τὸν ναὸν ἐμπιπρῶσι. Καὶ μετὰ μίαν ἡμέραν εἰςελαύνει μὲν Ἀντώνιος μετὰ τῆς δυνάμεως, ὑπηντων δὲ οἱ Οὐϊτελλίου, καὶ τριχῇ κατὰ τὴν πόλιν συμβαλόντες ἀπώλοντο πάντες. Προέρχεται δὲ μεθύων ἐκ τοῦ βασιλείου Οὐϊτέλλιος, καὶ δαψιλέστερον ὥςπερ ἐν ἐσχάτοις τῆς ἀσώτου τραπέζης κεκορεσμένος. Συρεὶς δὲ διὰ τοῦ πλήθους, καὶ παντοδαπαῖς αἰκίαις ἐξυβρισθεὶς, ἐπὶ μέσης τῆς Ῥώμης ἀποσφάττεται, μῆνας ὀκτὼ κρατήσας καὶ ἡμέρας πέντε· ὃν εἰ συνέβη πλείω χρόνον βιῶσαι, ἐπιλιπεῖν αὐτοῦ τῇ λαγνείᾳ τὴν ἡγεμονίαν οἶμαι. Τῶν δὲ ἄλλων νεκρῶν ὑπὲρ πέντε μυριάδες ἠριθμήθησαν. Ταῦτα μὲν οὖν τρίτῃ μηνὸς Ἀπελλαίου πέπρακτο· τῇ δὲ ὑστεραίᾳ Μουκιανὸς εἴςεισι μετὰ τῆς στρατιᾶς, καὶ τοὺς σὺν Ἀντωνίῳ παύσας τοῦ κτείνειν, — ἔτι γὰρ ἐξερευνώμενοι τὰς οἰκίας, πολλοὺς μὲν τῶν Οὐϊτελλίου στρατιωτῶν, πολλοὺς δὲ τῶν δημοτικῶν, ὡς ἐκείνου, ἀνῄρουν, φθάνοντες τῷ θυμῷ τὴν ἀκριβῆ διάγνωσιν, — καὶ προαγαγὼν τὸν Δομετιανὸν, συνίστησι τῷ πλήθει μέχρι τῆς τοῦ πατρὸς ἀφίξεως ἡγεμόνα. Ὁ δὲ δῆμος, ἀπηλλαγμένος ἤδη τῶν φόβων, αὐτοκράτορα Οὐεσπασιανὸν εὐφήμουν, καὶ ἅμα τήν τε τούτου βεβαίωσιν ἑώρταζε καὶ τὴν Οὐϊτελλίου κατάλυσιν.

5. Εἰς δὲ τὴν Ἀλεξάνδρειαν ἀφιγμένῳ τῷ Οὐεσπασιανῷ τὰ ἀπὸ τῆς Ῥώμης εὐαγγέλια ἧκε, καὶ πρέσβεις ἐκ πάσης τῆς ἰδίας οἰκουμένης συνηδόμενοι· μεγίστη τε οὖσα μετὰ τὴν Ῥώμην ἡ πόλις, στενοτέρα τοῦ πλήθους ἠλέγχετο. Κεκυρωμένης δὲ ἤδη τῆς ἀρχῆς ἁπάσης, καὶ σεσωσμένων παρ' ἐλ- 313
πίδα Ῥωμαίοις τῶν πραγμάτων, Οὐεσπασιανὸς ἐπὶ τὰ λείψανα τῆς Ἰουδαίας τὸν λογισμὸν ἐπέστρεφεν. Αὐτὸς μέντοι εἰς τὴν Ῥώμην ὥρμητο λήξαντος τοῦ χειμῶνος ἀνάγεσθαι, καὶ τάχος τὰ κατὰ τὴν Ἀλεξάνδρειαν διῴκει· τὸν δὲ υἱὸν Τίτον μετὰ τῆς ἐκκρίτου δυνάμεως ἀπέστειλεν ἐξαιρήσοντα τὰ Ἱερο-

σόλυμα. Ὁ δὲ προελθὼν πεζῇ μέχρι Νικοπόλεως, εἴκοσι δὲ αὕτη διέχει τῆς Ἀλεξανδρείας σταδίους, καὶ ἐκεῖθεν ἐπιβήσας τὴν στρατιὰν μακρῶν πλοίων ἀναπλεῖ διὰ τοῦ Νείλου κατὰ τὸν Μενδήσιον νόμον μέχρι πόλεως Θμούεως. Ἐκεῖθεν δὲ ἀποβὰς ὁδεύει, καὶ κατὰ πολίχνην τινὰ Τάνιν αὐλίζεται. Δεύτερος αὐτῷ σταθμὸς Ἡρακλέους πόλις, καὶ τρίτος Πηλούσιον γίνεται. Δυσὶ δὲ ἡμέραις ἐνταῦθα τὴν στρατιὰν ἀναλαβὼν, τῇ τρίτῃ διέξεισι τὰς ἐμβολὰς τοῦ Πηλουσίου, καὶ προελθὼν σταθμὸν ἕνα διὰ τῆς ἐρήμου, πρὸς τῷ τοῦ Κασίου Διὸς ἱερῷ στρατοπεδεύεται· τῇ δὲ ὑστεραίᾳ κατὰ τὴν Ὀστρακίνην — οὗτος ὁ σταθμὸς ἦν ἄνυδρος, ἐπεισάκτοις δὲ ὕδασιν οἱ ἐπιχώριοι χρῶνται. Μετὰ ταῦτα πρὸς Ῥινοκορούροις ἀναπαύεται, καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ῥάφειαν προελθὼν σταθμὸν τέταρτον, ἔστι δὲ ἡ πόλις αὕτη Συρίας ἀρχὴ, τὸ πέμπτον ἐν Γάζῃ τίθεται στρατόπεδον, μεθ᾽ ἣν εἰς Ἀσκάλωνα, καὶ ἐκεῖθεν εἰς Ἰάμνειαν, ἔπειτα εἰς Ἰόππην, καὶ ἐξ Ἰόππης εἰς Καισάρειαν ἀφικνεῖται, διεγνωκὼς αὐτόθι τὰς ἄλλας δυνάμεις ἀθροίζειν.

INDEX RERUM.

Signis I et II notantur tomus primus et secundus ed. Havercampiae, quorum ille quatuor prioribus voluminibus nostrae comprehenditur, hic duobus posterioribus; numeri adpositi indicant paginas illius editionis.

Aaron I, 106. 157 sq. 209. 978.
Abaris v. Avaris.
Abaris, m. I, 255. u. II, 425.
Abassarus I, 558.
Abbarus II, 452.
Abdastartus II, 449.
Abdemon I, 435.
Abdemonus II, 448 sq.
Abdenago I, 533.
Abdon I, 299.
Abel, Abela, u. I, 461.
Abella v. Abila.
Abellane I, 455.
Abelmachea u. I, 399.
Abelus I, 9.
Abenarus, l. — erus I, 319. 351. 363 sq. 411.
Abennerigus I, 957.
Abesace I, 406.
Abesalomus I, 371. 385 sq. 392 sq.
Abesarus I, 351.
Abesaeus I, 351. 363. 368. 389. 392. 396. 398. 402.
Abias, f. Roboami I, 393. 448. 450. 451 sq. r. Arab. I, 963.
Abiatharus I, 345 sq. 357. 376. 387. 399. 406. 415.
Abibalus II, 448 sq.
Abigaea I, 350 sq. 392.
Abigail i. q. Abigaea.
Abila, u. ad Jord. I, 226. 261. 598. 943. 969. II, 176. 296. cf. Abel.
Abilamarodachus I, 538.
Abimaëlus I, 25.
Abimelechus I, 295 sq.
Abinadabus I, 418.
Abiramus I, 197.
Abisaeus v. Abessaeus.
Abiüs I, 158.
Abramus I, 26 sq. 30 sq. 44 sq. A. habitaculum vic. I, 29.
Abuma l. Ruma, Aruma, u., I, 520.
Ἀκανθῶν αὐλών v. Vallis spinarum.
Accaron I, 278, 283. 312. 315. 474.
Ace — Acco, Ptolemaïs I, 507.
Acedasa, Ἀδασά II, 54.
Acenchères et Acenchres II, 446.
Achabare II, 18.
Achabarorum petra II, 208.
Achabus I, 457. 462 sq. 487 sq.
Achaia II, 123. 220.
Acharus al. Achan I, 266 sq.
Achazes I, 503.
Achiala I, 498.
Achias I, 442. 450. 518.
Achiba I, 315.
Achilaus I, 399.
Achilus I, 376.
Achima I, 353.
Achimanus I, 397.
Achimas I, 387. 393 sq. 528.
Achimelechus sacerd. al. Abim. I, 342 sq.
Achis v. Anchus.
Achitobus I, 415.
Achitophelus I, 387 sq. 391.
Achonius I, 562.
Achratheus I, 570.
Acme I, 841. 847. II, 138.
Acmon I, 400.

Acra I, 621. II, 55. 327. 337.
Acrabatene I, 617. II, 174. 207. 216. 223.
Acrabatta II, 224.
Acroasis legis frequens ap. Judaeos II, 483.
Actipus v. Arce.
Actium I, 750 sq. II, 100 sq.
Acusilaus histor. I, 18. II, 439.
Ada I, 10.
Adadus I, 375. hujus f. I, 463. 479. et Azaëlus, Heroes Syr. 482 sq.
Adamus I, 6 sq.
Adasa, Adasf, I, 626.
Adasan al. Acedosan II, 54.
Addida, u. I, 653. 674. II, 300.
Aderus I, 441 sq.
Adonias I, 406 sq. 418. sq.
Adonibezecus I, 282.
Adora I. 659. 674.
Adoraïm I, 448.
Adoramus I, 376. 421.
Adoreon II, 56.
Adramelechus I, 513.
Adrazarus I, 375. 442.
Adria II, 2.
adulatorum ratio I, 814.
Adullama, u. I, 343.
Adulteria vetita II, 488.
Aebutius II, 11.
Aegistha I, 406.
Aegyptius, pseudoproph. I, 972. II, 177.
Aegyptus, -ii I, 22 sq. 30 sq. 95. 97. 101 sq. 107. 419. 436. 510 sq. 522. 585. II, 190. 309. 447.
Aelane, u. I, 437.
Aelath, I, 502.
Aelius Gallus I, 771.
aemulatio regum I, 339 sq.
Aemilius Regulus I, 917.
Aeneas, l. Aretas I, 813.
aenigmata Salom. u. Hirami I, 434. II, 448.
Aeoles, ol. Elisai, I, 21.
aerea vasa potiora argenteis I, 561.
Aesopus I, 744.
Aeta I, 302.
Aethiopia, -pes I, 22 sq. 102 sq. 436 sq. 484. 510 sq. 566. II, 189. 309.
Aezelus I, 25.
Afra, -ica I, 22. 44.
Agaba I, 678.
Agagus I, 329 sq.
Agalla I, 684.
Agar, Hagar, I, 37.
Agatharchides histor. I, 585. II, 457.
Aggaeus Haggai I, 557 sq.
agones ab Herode instit. I, 766. 797. II, 108 sq.
Ἀγορὰ δοκῶν v. Forum arab.
Agrippa, Marcus I, 597. 785 sq. 800. II, 186. Claudius II, 172. f. Aristobuli I, 885. Magnus I, 885 sq. 892 sq. etc. 892 sq. 903. 940 sq. 950 sq. 966 sq. 970. II, 33. 126. 168. 172 sq. 264. Fontejus II, 411. cf. Edicta.
Agrippias v. Anthedon.
Agrippium arx II, 106.
Aïcamus I, 529.
Ain, cf. Nain, II, 302.
Aïna, -itae I, 268 sq.
Aïon, u. I, 455,
Alabarches, -ia I, 888. 899. 943. 965. 970.
Alani II, 421.
Albani I, 881.
Albinus I, 975. II, 179. 390.
Alcimus, Jacimus I, 623 sq.
Alcyon I, 931.
Alexander, Alabarcha I, 888. 965. f. Glaphyrae II, 126. Balas f. Antiochi Epiph. I, 634 sq. 643 f. Herodis M. I,

790 sq. 815. 822 sq. II, 125. f. anteced. I, 886. f. Aristobuli I, 691 sq. 885. II, 70 sq. fr. Aristobuli II, 59. 62 sq. Jannaeus I, 666. 672 sq. II, 63. Lysimachus Alabarcha I, 943. r. Maced. I, 115. 578 sq. 581 sq. 620. f. Phasaëli I, 885. Polyhistor I, 44. Tiberius I, 965. II, 173. 182. 200. 309. 384. Zebinaeus I, 660.
Alexandra I, 676 sq. filia Hyrcani I, 742 sq. 762 sq. uxor Alexandri Jannaei II, 62 sq. filia Phasaëli I, 885.
Alexandria u. -ini I, 436. 585. 593 sq. 601 sq. 638 sq. 643. 694 sq. 726. 923. 960. II, 38. 182. 199. 220 sq. 309. 312 sq. 405 sq. 412. 432 sq.
Alexandrina, -orum palus l.
Alexandrium I, 687. 691 sq. 731. 757. 785. 822. II, 66. 70 sq. 92. 258.
Alexas I, 827. II, 128. Selcias I, 886. Aliena dicta et inventa sibi vindicare injustum I, 127. 223.
Alisfragmuthosis II, 445.
Aliturus II, 2.
Alizaei v. Elisaei.
allegoriae Moysis I, 5.
Alpes m. II, 188.
in altiori loco constituti facile mutant animum I, 345.
Altare holocautom. I, 137.
Alurus vic. II, 303.
Amadathes I, 569. 575.
Amalecitis, -tae I, 68. 122 sq. 495.
Amanes I, 569. 572 sq.
Amanus m. I, 20 sq.
Amarames I, 98.
Amaramus I, 955.
Amarinus I, 456.
Amasias, f. Joasi I, 495 sq. f. Achazis 502. Praesul Hierosol. I, 517.
Amatha u. Pal. I, 520. 858.
Amathe, -aei Amathine, Epiphania u. Phoenic. I, 23. 189. 278.
Amathitis I, 650.
Amathius I, 23.
Amathus cast. ad Jud. I, 669. 672. 692. II, 60. 71.
ambitio et avaritia I, 367.
Ambivius M. I, 873.
Ambivius r. Aeg. II, 446 sq. 460 sq.
Amerytha v. Mero.
Amessas I, 392. 395 sq. 412.
Amesses, Aeg. regina II, 446.
amicitiae exemplum I, 538.
amicus nemo adeo, quin alterum sibi praeferri agre patiatur I, 319.
Aminadabus I, 313. 555.
Amitala I, 520.
Ammanitae, -tis I, 35, 297 sq. 320 sq. 549. 565. 618.
Ammata u. I, 364.
Ammaus u. I, 873. II, 79. 207. 224. 264.
amor vener. I, 51. 73. 103. 219 sq. 284. 300. 336 sq. 567 fin. 572. fraternus I, 85 sq. 603. patriae I, 55.
Ammonius I, 642.
Amnus, I. Amnon I, 371. 385 sq.
Amoraea, -ria, -ritis, -rrhaei I, 24. 209 sq. 224. 260. 298.
Amosus I, 516.
Amphitheatrum prope Hieros. I, 766. Hierichunte I, 848.
Ampheca v. Apheca.
Amraphelus I, 31.
Amygdalum stagnum II, 355.
Anacharis I, 510.
Anacharsis ob religionis mutatae suspicionem interfectus a Scythis II, 493.

Anapelus I, 742 sq.
Ananias f. Nebed. I, 965 sq. II, 195. P. II, 175. 192. Judaeus I, 559. f. Oniae I, 662 sq. f. Masambali II, 360.
Ananus f. Sethi I, 872 sq. f. Anani, P. I, 975 sq. II, 18. 275 sq. 384. f. Bamadi II, 360. satelles Simonis II, 384. Praetor templi I, 968. f. Jonathae II, 204.
Anarabaches i. q. pontifex max. I, 138.
anarchia inter Jud. I, 289.
Anathoth u. I, 524.
Anaxagoras II, 482. 493.
Anchus, l. Achis I, 352 sq.
Andreas I, 586 sq. II, 472.
Ancyre -ra I, 800.
Andromachus I, 807.
Andromedae vincula, mythus II, 251.
Andronicus I, 639.
angariae I, 568. Jud. remissae I, 636.
angeli I, 34. 37. 57. 214. 300. homines malos procreant I, 12. poenas infligunt I, 404. sic doctores rer. div. dicuntur I, 753. -orum nomina celanda Essaeis II, 163.
Anilaeus I, 906 sq.
anima in sanguine I, 17. 181. immortalis, et pars numinis divini II, 247. -mae immortales I, 42. fortium virorum ad astra evehuntur II, 370. post aeones revertuntur in corpora sanctissima II, 248. init.
animi moderatio I, 348. fortitudo I, 356. — os servos reddere I, 124.
Anna, u. v. Aïna.
Anna I, 307.
Annibas I, 955.
Annius L. II, 300. Minucianus I, 917 sq. Rufus procur. I, 873.
annus jobelus I, 184. sabbaticus 704. 736. 741. a. Hebr. ab Aegypt. repet. I, 13. a magnus DC. annorum I, 18.
Anochus, — che, u. I, 10. 13.
Antejus I, 928.
Anthedon l. Agrippias u. I, 670 sq. 691. 761. II, 60 sq. 70. 104 sq. 108. 197.
Antigonus, r. Asiae post Alexandrum I, 584. 593. f. Aristobuli I, 691 sq. 718. 722 sq. 737. 741. II, 75. 86. 98 sq. f. Hyrcani I, 661 sq. II, 58. qui ante Herodem regnavit I, 836.
Antiochi vallis, v. Vallis.
Antiochia, -eni, u. ad Daphnen I, 829. II, 82. Mygdoniae, quae et Nisibis I, 962. Syriae I, 596. 622 sq. 634. 640 sq. 653. 673. 721. 841. II, 109. 149. 169. 170 sq. 180. 199. 200. 221. 311. 407 sq.
Antiochus, r. Comagenes I, 875. 943 sq. II, 354. 420. Cyzicenus I, 660 sq. 670. II, 56. Dionysus f. Grypi I, 673 sq. II, 61 sq. Epiphanes I, 608 sq. 610 sq. 621 sq. 658. II, 51 sq. 400. Eupator I, 622 sq. II, 53. Grypus I, 661. 670. Historicus II, 439. Magnus I, 597 sq. 600. Philometor I, 666. Pius, f. Cyziceni I, 671. Pius, fr. Demetrii I, 657 sq. Nepos Seleuci (al. Alexandri f.) vulgo θεός I, 597. 646. 655. II, 55. Pius, fr. Seleuci I, 671. Soter I, 655. 660.
Antipas I, 828. 847. 852. 862. II, 138. 141 sq. 274.
Antipater, f. Herodis, 719. 791 sq. 803.

826. 835 sq. 840 sq. II, 112 sq. 129. 133 sq. 141. Idumaeus, p. Herodis I, 683. 691 sq. 695. 700. 717. II, 64. 73 sq. f. Phasaëli I, 885. f. Salomes I, 852. II, 131. Samarita I, 834. II, 131. f. sororis Herodis I, 828.
Antipatris, ol. Chabarzaba, u. I, 674. II, 61. 202 sq. 297.
Antiphilus I, 834. 841. II, 132.
Antonia, filia Claudii II, 176. mater ejd. I, 889 sq.
Antonia turris I, 664. 768. 781. 880. II, 58. 64. 105. 184. 191 sq. 330 sq. 372.
Antonius Centurio II, 226 sq. 224. L. I, 709. M. 691. 706 sq. 719. 720 sq. 731. 743. II, 70. 92. Primus II, 311.
Anuath, vic. Βορκαῖς, II, 224.
Anubis I, 878.
Apachnas II, 445.
Apame I, 552.
Apamia, u., -enses I, 656. 686. 715. II, 78. 99. 199.
Apheca l. Amph. u. I, 308. 465.
Apheci turris II, 202.
Apherima u. I, 644.
Aphra v. Afra.
Aphtha vic. II, 275.
Apion I, 899. II, 468 sq. 470. 495 sq.
Apollo v. Templum.
Apollodorus II, 475.
Apollodotus I, 670.
Apollonia u. I, 674. II, 70.
Apollonius, f. Alexandri I, 659. Daus I, 640 sq. Praef. Samar. I, 610. 613. Molo, historicus II, 475. 480. 492. 495.
Aponius I, 942.
Apophis II, 445.
Apsalomus I, 196.
Apsanes I, 299.
aqua Deo lib. a Dav. I, 402.
Aquila, aurea I, 843. II, 139. in sigillo r. Laced. I, 606. cur signum milit. Rom. II, 230.
Aquilas I, 926.
Aquileja, u. I, 793.
Ara I, 137. 327. II, 334. 456.
Arabes, -ia I, 36. 71. 108. 208. 225. 276. 292 sq. 484. 607. 619. 670 sq. 683 sq. 752. 755. 833. II, 60. 155. 329.
Aradii I, 721.
Aradus ins. I, 23. u. Phoen. I, 671.
Aramaei I, 24.
Aramatha, l. Arimanus, l. Rabatha, l. Ramoth, u. I, 225. 307. 316. 320. 378 sq. 467 sq. 485.
Aramus I, 24.
Aranes I, 27.
Arasamus I, 401.
Arasca templum I, 513.
Arbela, u. I, 627. vic. I, 731. II, 29. 92.
Arbelorum spelunca II, 18.
arca, Dei I, 135. 311 sq. 373. Noëi I, 16. -cae reliquiae I, 958.
Arcades II, 440.
Arcaea II, 411.
Arce, l. Actipus u. Phoen. I, 277 sq. 418. Arabiae, l. Petra I, 208. 223. in Libano I, 23.
arces duae Hierosol. I, 763. 768.
Archelaïs I, 865.
Archelaus, r. Cappadocum I, 809 sq. II, 118 sq. f. Herodis I, 828. 835. 848 sq. 850 sq. 860 sq. 866. II, 127. 133. 142 sq. 156 sq. 160. f. Chelciae I, 952. f. Magdati II, 384. socer Alexandri I, 816.
Areceme v. Arce Arabiae u.
Aremmantus I, 526.
Aretas, r. Arab. I, 670. 674. 683 sq. 813 sq. 832. II, 64 sq. 129. Petraeus I, 859. 882 sq.
Arethusa u. I, 690. II, 69.

Argentum non adhib. sub Salom. in commerc. mut. I, 439.
Argolicôn Scriptores II, 439.
Argos, u. Gr. II, 447.
Aria I, 25.
Aries roman. descr. II, 236 sq.
Arimanus, u. v. Aramatha.
Ariochus I, 534.
Arion I, 604 sq.
Ariphanes v. Aristophanes.
Aristaeus I, 586 sq. 593.
Aristeas II, 472.
Aristobulus, fr. r. Agrippae I, 885. 901. f. Alexandri Jannaei I, 676 sq. 682 sq. 691 sq. 695. II, 64. 69. r. Chalcid. II, 420. f. Herodis M. I, 696. 773. 785. 815 sq. 822. 827. II, 125 sq. f. Herodis r. Chalc. I, 971. II, 420. f. Hyrcani I, 661 sq. 665. f. Josephi I, 885. f. Aristobuli I, 744 sq. II, 110. f. Berenices I, 885.
aristocratia commend. a Moyse I, 235. 316. Judaeorum I, 559. II, 26. instaur. in Judaea I, 981. II, 71. - am restituere volerunt patricii rom. post C. Claudium interfectum II, 171.
Aristophanes rectius videtur esse Ariphanes II, 458.
Aristoteles II, 454 sq.
Arithaei I, 278.
Arithmetica, quomodo pervenerit ad Gr. I, 30.
Ariuchus I, 31.
Arius I, 606. 648.
Armaïs II, 446.
arma semel capta non facile ponuntur II, 187.
armamentarium, ὁπλοθήκη, Davidis I, 490.
Armatha i. q. Aramatha q. v.
Armenia I, 15 sq. 24. 677. 750. 949. II, 405. 422.
Armesses II, 446.
Arnon fl. I, 209.
Arophaeus I, 415.
Arpha vic. II, 224.
Arphaxades, - daei Chaldaei, I, 24. 25.
Arruntius, P. I, 925. Euaristus I, 930.
Arsaces I, 651. 659.
Arsamus arx I, 963.
Arsinoë I, 749. II, 99 sq.
Artabanus I, 874 sq. I, 881 sq. 907 sq. 960 sq.
Artabazes II, 90.
Artaxerxes I, 566 sq. 575.
Artaxias I, 750.
artes inventae I, 10 sq.
Artorii calliditas II, 380.
Arucaei I, 278.
Arucaeus I, 23.
Arudaeus I, 23.
Aruma v. Abuma.
Arura locus I, 344.
Arus vic. II, 155.
Asaël I, 363 sq.
Asamon m. II, 202.
Asamonaea gens I, 611—738.
Asanus I, 455 sq.
Ascalon, - itae u. I, 276. 283. 311 sq. 336. 602. 646. 650. 696 sq. 799. 809. 863. II, 73. 109. 197 sq. 220. 313.
Aschanaxus, - xi, Ῥηγῖνες I, 21.
Aschanes I, 533.
Aserymus II, 449.
Asia I, 30. 547. 596. 614. 703. 785. 931. 800. II, 82. 188.
Asinaeus I, 906 sq.
Asini caput II, 475.
Asinius I, 697.
Asiongaber u. I, 437.
Asochaeus II, 400.
Asochis, u. I, 667. II, 20 sq. 59.
Asophôs u. I, 668.

Asor rg. I, 291. 292. 501. 648.
Asonus u. 435.
Asphaltitis lacus I, 31. 473. 756. 845. II, 258. 296 sq.
Asphar lacus I, 630.
Asprenas I, 924. 927.
Assis II, 445.
Assyrii I, 24. 30. 601 sq. 515. II, 49. 348.
Astabari Sabbatheni I, 22.
Astaboras et Astapus fl. I, 103.
Astarte v. Templa Gentil.
Astartus II, 449.
Astrologia prim. hom. I, 17. Abrami I, 28. quomodo pervenerit ad Gr. I, 30.
Asuras I, 24.
Asyli jus I, 225.
atheismus quorundam philosophorum II, 484.
Athenae - ienses II, 92. 109. 187. cf. Edicta.
Athenion I, 601. 751. II, 100.
Athletica certamina v. Agones.
Athone u. I, 684.
Athrongaeus, l. -ges I, 858 sq. II, 154.
Atlanticum mare II, 189.
Atratinus I, 727.
Ἀττίδων Scriptt. II, 439.
Avaris u. II, 425.
avaritia I, 10. cupiditatum vehementissima II, 362. pontificum Jud. I, 974. 976 fin. Romanorum I, 889 sq.
Augustus Octav. I, 775. 799 sq. 812 sq. 852 sq. 873. II, 157. 166.
Aulon ἀκανθῶν v. Vallis spinarum.
Auranitis I, 774. 862. II, 105. 193.
aurea terra I, 438. – ae fibulae regum affinibus dono dari solitae I, 642. 646 fin.
aurum in ventre gestare putantur transfugae Jud. in obsid. Hieros. II, 361.
autonomia Jud. restit. I, 637.
auxilium latum infirmis I, 104.
Auza, Auzate I, 458.
Axioramus I, 528.
Aza m. I, 628.
Azaëlus I, 461. 483. 493 sq.
Azarias, P. M. I, 528. 533. 620. Vates I, 464.
Azavus I, 27.
Azeca I, 333. 448.
Azermothes I, 25.
Azizus I, 969. 971.
Azora v. Asor.
Azotus, – tii, u. I, 278. 283. 311 sq. 641. 863. II, 69.
azymorum festum v. Pascha.

B.

Baal, l. Baalim r. Ammanit. I, 360. r. Tyr. II, 452. Deus Tyr. I, 488 sq.
Baaras II, 417.
Babae filii I, 766.
Babel, l. Babylon, – nii I, 19. 23, 435. 514. 520. 537 sq. 540. 741. 906. II, 6. 17. 333. 414. 450 sq.
Baca vic. II, 223.
Bacchides I, 624. 627. 632. II, 25.
Bachures vic. I, 391.
Bactriani I, 25.
Bactrorum fines I, 964.
Badezorus II, 449.
badus mensura I, 421.
Baeon II, 445.
Baethora II, 205.
Bathoro u. II, 174.
Baethorus, l. Baethoron II, 202 sq.
Bagathous II, 568.
Bagoas I, 831.
Bagoses I, 577.
Bajae I, 898.

Balacus I, 213 sq.
Baladas I, 514.
Balamus vates I, 213 sq.
Balaneotae u. II, 109.
Balatorus II, 452.
Baleazarus II, 449.
Balenorum r. I, 30.
Baleth u. I, 435.
Ballas I, 30.
Balsamum I, 438. 688. 749. II, 66.
Baltasarus, Danielus I, 553. Naboandelus I, 539.
Banacates I, 418.
Banaeas f. Achili I, 402. 406. 418. f. Joadae I, 376.
Banaothas I, 368.
Banus, Joannis bapt. similis II, 2.
baptismatis usus qu. II, 2.
Barachias I, 505.
Baracus I, 291 sq.
barbari, I, 105. 453. 874. Arabes dicti a Jud. I, 752 fin. - a nomina a Graecis mutata I, 20 sq. - rorum est praecipites ruere in pugnam II, 267. - as uxores ducere Judaeis vetitum I, 603.
Bardanes I, 962.
Baris m. I, 16.
baris a Dan. exstructa I, 542. v. Antonia.
Barnabazus I, 568.
Barsas I, 30.
Baruchus I, 521. 529. 532.
Barzapharnes II, 83.
Basanes I, 453 sq.
Basca, u. I, 654.
Baselus torrens I, 357.
Basima I, 418.
Bassus Cecilius I, 715. II, 78. Lucilius II, 416 sq. v. Ventidius.
Batanaea, - ias I, 225. 491. 774. 829. 882. 969. II, 6. 17. 157. 193. 199. 224.
Bathyra vic. I, 829.
Bathuëlus I, 28.
Bathyllus I, 835. II, 133.
Batus mensura I, 421.
Baüris, locus I, 388.
Baüxus I, 27.
beatus quis I, 215. qui se dat deo I, 226. - i, qui fortiter pugnantes moriuntur II, 371 init.
Bedriacum II, 504.
Beethsabe I, 379. 381. 406 sq.
Bel, deus Tyr. et Babyl. I, 457. 537.
Belcus, l. Bellius fl. II, 169.
bellum quomodo inferebatur I, 249 sq. 285. semel motum non facile sopitur II, 187. civile in Italia Othonem inter et Vitellium II, 304, jud. cur longius ductum II, 204. - i leges ap. Jud. II, 488. jud., τῆς ἁλώσεως origo I, 981. II, 179 sq. 192 sq. - o de jud. liber ante antiqq. a Josepho scriptus I, 870, captos occidere licet I, 479, - orum civill. causa et finis I, 870. momentum penes deum II, 321.
Belsemus I, 550.
Belsephon, u. I, 111. 384.
Bemeselis, u. II, 61.
benefactorum optima praemia sunt conscientia bona et aeterna beatitudo II, 488.
beneficentiae laus I, 255 fin.
benevolentia verra declaratur factis I, 348.
Benjamin tribus I, 284—288.
Berenice, l. Bernice filia Agrippae I. 885. 944. II, 172. ma. Agr. I, 886. filia Archelai I, 969 sq. f. Salomes I, 785. soror Agrippae II, 182 sq.
Berenice, u. I, 437.
Berenicianus II, 173.

Beroea, u. I, 623.
Berosus histor. Chald. I, 18. 28. 513. 536. II, 331. 349. 449 sq.
Berotha u. I, 273. cf. Berytus.
Bersabe l. Barsube u. I, 36. 315. 461. 491. II, 208. 223.
Bersobe II, 18.
Berytus, -tii, u. I, 817 sq. 949. II, 5. 154. 310. 406. 411.
Berzelaeus I, 391. 397.
Besaleius et Eliabus I, 130. 161.
Besara l. Besira I, 366. II, 11 sq.
Besbius i. e. Vesuvius m. I, 970.
Besemoth II, 296.
Betaris II, 297.
Betchora u. I, 435.
Bethalaga vic. I, 634.
Betharamathus II, 154.
Betharamphta l. Julias I, 872.
Bethela l. Bethele l. -lla I, 276. 283 sq. 315 sq. 324. 445. 453. 633. II, 304.
Bethennabris II, 295.
Bethezob II, 381.
Bethleema u. I, 284. 299. 305. 341. 364. 402. 418. 448.
Bethleptephorum II, 297.
Bethmaa II, 7.
Bethmaiis II, 76.
Bethoma, u. I, 672.
Bethoron, -ra, u. I, 273. 626. 632. II, 205.
Bethsa et Bethsana v. Scythopolis.
Bethsaïda l. Julias u. I, 872.
Bethsame u. I, 313.
Bethsemera u. I, 495.
Bethsetha l. Bezetha l. Bethzetho I, 625. 627. II, 184. 327. 536.
Bethsura u. I, 448. 616 sq. 622. 635. 647. II, 53.
Bethzacharia locus I, 622. II, 53.
Bettaea u. I, 376.
Bezeca u. I, 282.
Bezedel II, 221.
Bezetha II, 203. 328.
bibendi ratio Persarum I, 567.
bigamia concessa I, 241 sq.
Bienna u. I, 866. II, 159.
Bithynia I, 719. II, 82.
Boazus I, 305 sq.
Bobelon I, 559.
Boccias I, 415.
Bocchoris II, 466.
Bochures v. Bachures.
bona propter virtutem a deo accepta virtute sunt conservanda I, 431. ampliora post mortem exsp. II, 140. -orum omnium fons deus I, 226.
bonus nemo deum latet II, 8 fin. -i viri est aliena inventa non sua facere I, 127. -os amat deus I, 457.
Borceus v. Anuath.
Βόρειον κλίμα II, 152.
Borsippus II, 452.
Boscethi u. I, 516.
Bosora u. I, 225.
Bosorrha u. I, 618.
Bosporus Thrac. I, 786.
Bosporani II, 188.
Botrys u. I, 458.
bos aurea v. templum.
boum aeneae effig. I, 441.
Britannia II, 189. 219. 392.
Britannicus f. Claudii II, 176.
Brixellum II, 304.
Brocchus I, 939.
Brentesion, l. Brundusium I, 727. II, 88.
bruta ratiocinantia II, 542.
Bruti et Cassii cum Chaerea comparatio I, 934.
Bubastis I, 638.
Bubastita fl. II, 445.
buccina inventa I, 186 sq.
Burrus I, 974.

Byblus II, 171.
Byzantium I, 786.

C.

Cadmus Milesius, histor. II, 438 sq.
Cabrothaba u. I, 188.
Caecilius v. Bassus.
Caecinna II, 311 sq.
Caena locus I, 347.
Caenopolis u. II, 204. 358.
Caesar, C. J. I, 696. 703 sq. 715 sq. 794 sq. II, 78. omnium, quae rom. reip. acciderunt, malorum auctor I, 933.
Caesarea, Sebaste, ol. Stratonis turris, u. I, 665. 772 sq. 785. 790. 797. 973. II, 6. 58. 106 sq. 250. 313. 405. Philippi, ol. Paneas I, 872. 977. II, 8. 166. 252. 405.
Caesennius Paetus II, 420.
Caesonia I, 935.
Caïs, Caïn, I, 9 sq.
Cajus, f. Agrippae et Juliae, postea Caesar I, 852. 894 sq. 900 sq. 915 sq. 921 sq. 936. II, 150. 168. 171.
calamitatibus immissis deus vult ut resipiscant homines I, 972.
Caligae II, 373.
Callaea I, 827.
Callias histor. II, 439.
calliditas muliebris I, 339.
Callimander I, 661.
Callinicus II, 420.
Callirrhoë I, 845. II, 140.
Callistus I, 921 sq.
calumnia I, 74, 663.
Cambyses I, 549 sq.
Camon u. I, 297.
Campania I, 898. 915.
Campus Magnus I, 277. 418. 614. 620. 768. 798. II, 20. 223. 298. regius I, 32.
Camuelus I, 27.
Cana, l. Canatha, u. I, 674. 751. II, 9. 36. 62. 96. 100.
Cananaeos interfici jubet Moyses I, 250.
candelabrum sacrum I, 137.
canon librorum V. T. II, 441.
Cantabri II, 180.
Canthera I, 957.
Capellus II, 7.
Capharabis II, 305.
Caphareccho II, 18. 208.
Capharnaum II, 258.
Capharsaba u. I, 798.
Capharsalama vic. I, 625.
Caphartoba II, 297.
Caphethra II, 305.
Capito II, 181.
Capitolium I, 789. II, 312. 415.
Cappadocia I, 21. 786. 791. 809. 814. II, 188. 311. 405.
Capreae Ital. I, 888. 890.
captivitas Israel. I, 506.
captos bello occidere licet I, 479.
Carchamesan, u. I, 520.
Careas I, 530.
Caria I, 578.
Cariathiarim u. I, 271. 313.
Carmelus m. I, 277. 418. 459 sq. 675. 722. II, 83.
Carnaïn fanum I, 619.
carnes ferinae, equinae, et mulorum inpurae I, 599.
Carrae rg. I, 958.
Carthago, -inienses I, 627. II, 189. 392. 448 sq. 469.
Carus I, 831.
Casii Jovis v. Templa Gentil.
Caspiae portae I, 881.
Cassander I, 584.
Cassius Longinus I, 695. 716. 719. 780. 955. II, 72. 79.
castitas I, 73.

Castor Chorographus II, 455. 475.
Castor Judaeus II, 342.
Castra, u. v. Parembolae, Stratopedon.
castra Rom. descr. II, 226.
castramentatio Hebr. I, 186.
castrare hom. aut anim. I, 248 sq.
castrati Nobiles Jud. I, 533.
castratio hominum et animalium Jud. vetita II, 493.
catapultarum vis II, 238 sq.
catena Josephi Vespasiano jubente cur securi dissecata II, 310.
Catullus II, 433 sq.
Cedesa l. Cedasa u. I, 273. 278. 647. II, 197.
Cedron, torrens et v. I, 416. 490. II, 321. 328. 337. 358.
Celadus I, 864. II, 159.
Celenderis u. I, 836. II, 134. 328.
Celtae, - ica legio I, 927.
Cendebaeus I, 656. II, 55.
Cepharnome vic. II, 37.
Cepheritae I, 271.
Cerealis, Petilius, II, 410. Sextus II, 243. 305. 376. 384.
certamina v. agones.
Cestius, Gallus, II, 20. 180. 200 sq.
Chabalon I, 434.
Chabarorum petra II, 208.
Chabarzaba v. Antipatris.
Chabolo vic. II, 20 sq.
Chabro I, 30.
Chaereas, Cassius I, 917 sq. 926. 934. 943.
Chaeremon histor. II, 466 sq.
Chaetura v. Chatura.
Chagiras II, 355.
Chalamas I, 379.
Chalceus I, 419.
Chalcidica II, 420.
Chalcis u. Phoen. I, 686. 944. sub Libano I, 696. II, 73.
Chaldaei I, 24—29. 534. II, 444 cf. Berosus.
Chalebus I, 190. 283.
Chamas I, 18. 22.
Chananaeus, - aea rg. - aei I, 22. 28. 32. 50. 276 sq. 282. 288. 497.
Charchamesa I, 520.
Chares II, 265 sq.
Charra, u. I, 27. 45. 51.
Chasphoma u. I, 619.
Chatura, Chaetura, I, 43.
Chazadus I, 27.
Chebron, r. Aeg. II, 446. u. I, 42 sq. 59. 66. 96. 190. 278. 283. 363 sq. 387. 448. 620. II, 303 sq.
Chelbes II, 452.
Chelcias I, 662. 669.
Chellio I, 304.
Chephtorimi I, 23.
Cherubicae effigies I, 135. 424.
Chesloëmi I, 23.
Chethim v. Citium.
Chethimus I, 21.
Chettaei u. I, 24.
Chidonis I, 372.
Chius ins. - ii I, 786 sq.
Choerilus II, 453 sq.
Chodollamorus I, 31.
Chosbias I, 31.
Chosbias I, 220.
Christus et Christiani I, 870 sq.
Chusaei I, 22.
Chusarthes I, 289.
Chusi I, 388. 390 sq.
Chuthaei, post Samaritani, - ia I, 507. 532. 549. 556. 578. 659. II, 56.
Chuthus, locus et fl. I, 506 sq.
Cicerum domus II, 358.
Cilices, - ia, I, 21. 497. 671 sq. II, 60. 69. 188. 402.

Cilla, Cillani, Cillitae rg. Pal. I, 346 sq.
Cinnamus I, 961.
cinyra instrum. mus. I, 401.
Circumcisio I, 33. 36. 450. 665. II, 11. 453. dissimulata I, 608. Jud. prohibita I, 609 fin. non absolute poscebatur a prosolytis II, 196. - one non opus est ad vere colendum deum I, 950.
Citium, Chetim, Cittaei I, 21. 507. cf. Cyprus civilia bella sedare majus quam hostes vincere I, 294 fin. -ium bell. causa et finis I, 870. civilia officia II, 487.
civium officia quae II, 481.
Classicus II, 401.
Claudius Caesar I, 931 sq. 942 sq. 956. 970 sq. II, 171. 176.
Κλαυθμῶνες silva I, 372.
Clearchus II, 453 sq.
Clemens I, 919.
Cleodemus v. Malchus.
Cleopatra, filia Antiochi I, 600. uxor Demetrii sec. I, 655. u. Flori I, 981. u. Herodis I, 828. II, 127. u. Ptol. Philom. I, 638. 669. 699. 721. 748 sq. 750. II, 99. 472. Selene I, 677. II, 63.
Clitus II, 16. 215.
Cluvius I, 924.
Clypeus symbolum amicitiae I, 698.
Coele-Syria I, 532. 669.
coelum crystallum I, 5. tabernaculo adumbratum I, 137.
cogitata hominum perspicit deus I, 70. 341.
Coi I, 669.
Colchi II, 188. 453.
colendi dei ratio cuilibet est libera II, 11.
Collega, Cneus II, 408.
Colles Hierosol. II, 327.
colonias deduci jubet deus I, 18.
Coluber I, 424.
columna filiorum Adami I, 11.
columnae in regia et templo Salom. I, 432. II, 331 sq.
cometa in coelo conspicuus II, 188.
Commagene I, 943. II, 420.
Commune, Κοινόν, Asiae I, 800. Hierosolym. II, 7.
concordes quando sunt audientes, plurimum efficit orator II, 186.
concordiâ nihil praestantius II, 495.
condonare peccata generosi animi I, 86.
confiscata bona I, 602.
connubiales leges I, 241. 764. II, 486.
conjuratio in Herodem I, 767.
Canon II, 538.
conscientia recte factorum I, 74.
consessus in conviviis I, 605.
ex consilio facta sunt dijudicanda I, 71. - a hum. perspicit deus I, 70. 341.
constantia Jud. in legibus observandis II, 490.
continentia I, 533.
in convicia miseri proni I, 120.
Cophene fl. I, 25.
Coponius I, 869 sq. II, 160.
Coracinus piscis II, 258.
Corbanas, thesaurus sacer I, 205. II, 167.
Corduba Iber. I, 917.
Cordyaei m. I, 16.
Corea II, 297.
Coreae u. I, 691. II, 66.
Cores I, 196. 201.
Corinthiacum opus I, 432. aes II, 332.
Corinthus I, 832. II, 129 sq.

Cornelius Faustus, f. Syllae I, 689. II, 68. fr. Longi II, 380.
cornu ad convoc. pop. I, 290.
corona pontific. I, 151 sq.
Corraea I, 315.
Corus mens. I, 192. 770.
Cos, Coi ins. I, 694. 786. II, 109.
Costobarus latro I, 977. Idumaeus I, 764. II, 117.
coturnices I, 120. 188.
Cotylas v. Zeno.
Cotys I, 949.
Coze, idol. Idum. I, 764.
Crassus I, 693 sq. II, 72.
creatarum rerum dominus homo I, 17.
Creatio mundi I, 5 sq.
Cremona u. II, 311.
Creta II, 158. 483.
cruci affigere mos Persarum I, 572.
crudelitatis exempla I, 345. 480. 515. 610. 631. 668. 672 fin. 685. II, 58. 61. 93. etc. 286 sq. 290. 292.
Ctesiphon u. I, 875. 913.
Cumanus I, 965 sq. II, 172 sq.
cupiditas rer. vener. bonos corrumpit I, 220. - tes frenandae I, 241.
Cuspius Fadus I, 780. 952. 955 sq.
Cyanei scopuli I, 786.
Cydisa u. I, 501.
Cydoessa vic. II, 271.
cymbala, instr. mus. I, 401.
Cypris II, 172.
Cypros arx I, 798. II, 106. 108.
Cypros, uxor Antip. I, 695. II, 72. filia Antip. I, 886. u. Agrippae I, 887 sq. f. Herodis M. I, 885. f. Phasaëli I, 885.
Cyprus, - ii, cf. Citium. I, 21. 796. 864.
Cyrene, - aei, - aica u. I, 694 sq. 801. II, 38. 189.
Cyrenius v. Quirinius.
Cyrus, r. Pers. I, 539. 540 sq. 547 sq. qui Gr. Artaxerxes I, 566.
Cyzicenus I, 660.

D.

Daae, Dahae, Dahi I, 881. 964.
Dabaritta - eni, vic. II, 12. 29. 210.
Dacae II, 188.
Dacica secta Essaeorum similis I, 872.
daemon i. q. infortunium II, 73. σκυθρωπός II, 126. malus II, 136. - ones Alexandri et Aristob. II, 132. 133 fin.
daemonium i. q. deus I, 791. II, 57. 59. 134. - nia I, 332. quo modo expulsa I, 420. sunt malorum hominum spiritus II, 417.
Dagon, deus Azot. I, 311. 641. arx Pal. II, 55.
Dalmatia et inc. II, 188.
Damascus, - eni, u. I, 24. 277. 375. 455. 502 sq. 673 sq. 685. 774. 887. II, 77. 99.
damnato mortis potus datur, ut appareat, num venenum sit I, 841.
Dan, - itae I, 288 sq. 445. 455.
Danielus propheta I, 533 sq. 540 sq. 617.
Danus, fons Iord. I, 31.
Daphne u. I, 721. suburb. Antioch. II, 82. 95. 263.
Dardanus I, 419.
Darius f. Astyagis I, 539 sq. 540. f. Artab. I, 882. f. Hyst. I, 550 — 559.
Dathamnes I, 197.
Dathema arx Pal. I, 618.
Davides r. I, 306. 332 sq. 310 sq.

351 sq. 365 sq. 370 sq. 380 sq. 400 sq. 411 sq. 658. 802. II, 56.
Debora vates I, 291.
Decapolis, u. Galil. II, 253. Syriae II, 31.
Declas I, 25.
decimae sacerdott. datae I, 204 sq. 505.
decreta v. Edicta.
defunctorum cura ap. Jud. II, 487.
Dei facies, locus I, 57.
Delium u. I, 687.
Dellius I, 729. 742 sq. II, 89.
Delos ins. I, 705.
Delphicae mensae I, 136.
Delta, rg. Aeg. I, 696. II, 74. 200.
Demetrius, Alexandr. Alabarcha I, 970. f. Demetr. I, 642 sq. Eucaerus I, 671 sq. II, 60. Gadarensis I, 690. II, 69. II. Nicator I, 643 sq. 651 sq. 660. Phalereus I, 585. 588. 594 sq. II, 458. 472. Soter I, 624 sq. 634. 636 sq.
Demoteles I, 648.
depravatio hominum I, 12.
Desertum, ἐρημία et ἔρημος inter Aeg. et Syr. II, 412. 316. prope Hieros. I, 632. II, 393.
Deus I, 82. 162. 245. 282. 329. 330. 400. 449. 465. 540. 542. 544. 788. unus unorum Hebraeorum I, 229. 279. creator omnium I, 5. 28. 410. 428. etiam minutissimorum II, 482. omnium dominus I, 4. 12. II, 323. unus fons omnium bonorum I, 226. summus judex II, 349. ubivis locorum versatur I, 445. non ortus, non mutabilis II, 482. etsi vario nomine, ubivis locorum idem I, 586. non decipitur I, 109. 202. cuncta videt I, 200. cogitata hom. perspicit I, 70. 341. occulta videt et audit I, 472. II, 350. res parvas auget I, 113. cito opem fert, ubi opus est II, 350. monstrat hominibus viam salutis II, 390. quibus opem fert, ii fortes et copiosi I, 753. auxiliatur miseris in extremis labor. I, 113. curat finem bellorum et regum discrimina II, 321. dux belli praestantissimus II, 291. beat pios I, 4. 76. amat justos I, 12 fin. juvat fortes I, 190. fortibus dat praemia I, 32. exaudit precantes I, 17. bene factorum memor est I, 905, quae dat, accipienda, non rejicienda I, 198. amat bonos, punit malos I, 457. punit impios I, 4. 12 sq. 17. 753. superbos I, 19. 34. ut pater parvulos I, 190 fin. non, ut homo, ira commovetur I, 191. quibus gaudeat sacris I, 9. Moysis II, 487. Judaeorum solus verus I, 542. auctor gentis Jud. II, 246. dei natura quae II, 485. mens varia I, 527. ira I, 108. nomen non eloquendum I, 106. dei colendi ratio cuilibet est libera II, 11. unius templum unum II, 485. deo qui se dat, beatus I, 226. deum factis remunerari homo non potest I, 429. in d. bella moda ab homm. I, 12. d. nemo latet I, 248. 451. qui omnia respicere credunt, non peccant II, 482. d. penes omnia possibilia I, 114. d. contra homo nihil valet I, 98. de deo

quid sapientes Graecorum statuerint II, 482 sq. loqui cur non audeant Jud. II, 484. dii patrii Rach. I, 54 sq. Chuthaeorum I, 507. alieni I, 230. 496. II, 490. deorum cultus a regibus malis inventus I, 452. deos gentilium deridere vetuit Moses II, 490. peregrinos in remp. admittere vetitum Atheniensibus II, 493. diis vitia hum. trib. a mythologis I, 4 fin. deorum multitudo nata in ingeniis poëtarum etc. II, 491. gentilium natura II, 491.
Diademata Asiae et Aeg. sumit Ptol. Philom. I, 643.
Diagoras Melius histor. II, 493.
Diana v. templa Gent.
Dicaearchia l. Puteoli u. I, 898. 915. II, 2. 158.
Dido II, 449.
Diglath fl. I, 7.
Dii v. Deus.
diligentia Jud. in sacris II, 485. et legibus II, 494.
Diluvium I, 13—15.
Dina I, 58.
Diocleus I, 418.
Diocles histor. I, 538.
Diodorus I, 659.
Diodotus I, 645.
Dionysius I, 686.
Diophantus I, 815. II, 123.
Dios l. Dion, u. Maced. I, 581. u. Syr. I, 674. 690.
Diospolis u. II, 63. 100.
Dispersio gentium I, 20. Judaeorum II, 407.
divitiae corrumpunt remp. I, 283 sq. – tiis qui se a virtute revocari patitur, deo invisus I, 227 fin.
Divortium v. connubiales leges.
Dius histor. I, 435. II, 448.
Doëcus Syr. I, 345.
dogmata Judaeorum expositurum Jos. I, 228 fin.
Δοκῶν ἀγορά II, 204.
Dolabellae litterae ad Ephes. I, 736 sq.
Dolesus II, 295.
dominatum qui semel affectavit, non facile deturbatur II, 293.
Domitianus II, 39. 312. 410.
Domitius Sabinus II, 344.
Domus saltus Libani II, 344.
dona dei sunt grato animo accipienda non rejicienda I, 198. – is ira sopitur I, 57.
Dora u. I, 278 sq. 655. 690 sq. II, 4. 55. 69. 106.
Dorienses I, 136.
Doris, uxor Herodis I, 719. mat. Antipatri II, 127. 131.
Doritae l. Dorienses in Syria I, 946.
Dorotheus I, 593.
Dortus I, 968.
Dositheus I, 756. II, 472.
Dothaim u. I, 479.
Draconis legg. II, 440.
Drusilla, filia Agrippae I, 885. soror Agrippae I, 969 sq.
Drusium turris II, 107.
Drusus, f. Agrippae I, 885. II, 172. f. Tiberii I, 893.
Drusus turris I, 773.
Drymi locus I, 722.
Drymus II, 83.
ducis magni est cohibere multitudinem turbatam I, 119.
duratio legg. Judd. II, 488 sq.

E.

Ebalus I, 25.
Eban I, 371.
Ebutius II, 231. 266.

Ecbatana I, 542. 557. II, 6.
Ecdippon II, 84.
Echarampsaris I, 5.6.
Ecnibalus II, 452.
Ecron v. Accaron.
Edicta Roman. pro Judaeis I, 627 sq. 703. 705 sq. 709. 720. 799. 800 sq. 944 sq. Atheniensium I, 698. Artax. I, 569. 575. Cyri I, 548. Darii I, 559. Petronii I, 946. Ephesiorum I, 715. Halicarnassensium I, 712 sq. Sardianorum I, 714 sq. 801.
Eglon I, 289 sq.
Ehudes I, 290.
Eiraës I, 25.
Elamaei I, 24.
Elamus I, 24.
Elanus I, 456.
Elea I, 502.
Elcanes I, 307.
Elcias l. Helcias I, 529. 901.
Eleazari domus I, 408.
Eleazarus, f. Aaronis I, 158. 209. 282. f. Anani I, 873. II, 192. 207. f. Dinaei I, 967. 971. II, 174. f. Dodejae I, 401. 408. ejector daem. I, 420. fr. Joazari I, 865. f. Judae, Auran. I, 611. 622. II, 53. dux latr. I, 955. 971. II, 176. 422. 426 sq. s. Moysis I, 107. f. Oniae I, 2. 588 sq. 600. cust. s. thes. I, 694. f. Samaeae II, 327. f. Simonis II, 207. 280. 316. 324. 384. socius Sim. II, 302. pr. templi I, 977. II, 192. vir fortis, captus II, 418.
Elei, Elii rg. II, 109.
Elephantine, u. II, 309.
Eleusa, u. I, 796. 816.
Eleutheri equites II, 84.
Eleutherus fl. I, 642. 650. 749. II, 99.
Eli P. I, 304 sq. 415.
Eliabus I, 130 sq. 161.
Eliacias P. I, 517.
Eliacimus I, 511. alius, I, 520.
Elias vates I, 457 sq. 460. 475, 484.
Eliasibus P. I, 562 sq. 577.
Elien I, 371.
Elimelichus I, 304.
Elionaeus I, 950.
Eliphale I, 371.
Elis I, 118.
Elisaei I, 21.
Elissaeus f. Saphati I, 461. 475 sq. 494. 498 sq. II, 298.
Elix l. Felix I, 718. II, 81.
Elmodadus I, 25.
Elom, u. I, 448.
Elon I, 299.
Elpis, uxor Her. I, 828. II, 127.
Elthemus II, 102.
Elutaeus I, 506.
Elymaïs rg. I, 620.
Elysas I, 21.
Emaüs l. Emmaüs I, 632. 716. 859.
Emesa, -si u. I, 885. 949. 969. 971. II, 420.
Emnos I, 371.
Emtio v. argentum.
Enaphen I, 371.
Ἐνδελεχισμός sacrorum I, 55. II, 52. 373.
Enemimi I, 23.
Engaddi, -dde, -ddae -gedene I, 348. 473. II, 224.
Eniochi, alias Heniochi II, 188.
Ennerus I, 32.
Enochus et Elias I, 474.
Enosus I, 13.
Epaphroditus I, 2. II, 39. 468. 496.
Ephesus, -sii I, 715. 786. 801.
ephodes vestis I, 143. 146. 150 sq.
Ephorus histor. I, 18. II, 439 441.

Ephraim u. II, 304.
Ephran u. I, 294.
Ephratanus ager I, 58.
Ephron I, 619.
Epicrates I, 661.
Epicurei de provid. div. I, 544 sq. a negotiis abhorrent I, 918fin. refutati ex visionibus Danieli I, 545 sq.
Epiphanes I, 952. 969. II, 420.
Epiphania l. Amathe u. I, 23.
Epistolae Jonathae I, 648 sq. Philadelphi I, 587. 589. Eleazari I, 589. Salomonis et Hirami I, 420 sq. Xerxis I, 560. Artax. I, 575 sq. Antiochi I, 598 sq. Samaritanorum I, 610 sq. Alexandri Balae I, 635. Demetrii I, 644. Oniae et Ptolemaei I, 638. J. Caes. I, 704. M. Antonii I, 720.
Epodae Salomonis c. morbos I, 420.
epulae post jusjur. I, 56.
Erebinthorum oecos II, 358.
Eremia v. Desertum.
Erica I, 502.
Eroge I, 499.
Esaïas vates I, 506. 511 sq. 514 sq. 547. II, 434.
Esavus I, 47. 66.
Escholes I, 32.
Escon I, 48.
Esdras I, 560 sq.
Esebon, -itis, Esthmonitis I, 607. 675. 768.
Esermoth locus I, 188.
Essa u. I, 674.
Essaeus I, 866.
Essaeismus expositus I, 871.
essenes I, 146. 150 sq. 164.
Esseni, l. Essaei I, 649. 776 sq. 866. 871 sq. II, 58. 160 sq. 327.
Esther I, 568. 570 sq.
Etame, al. Eita I, 448.
Ethan I, 440.
Ethanus I, 419.
Ethi I, 388. 392.
Ethnarcha, Simon I, 654. Jud. Alexandr. I, 944.
Eua I, 6 sq.
Euaeus u. I, 24.
εὐαγγέλιον δεινόν II, 193.
Euaratus Cous, I, 814. II, 123.
Euaristus v. Arruntius.
Eudaei u. I, 24.
Euemerus histor. II, 458.
Euilaei I, 22.
Euilates I, 25.
Euilmarodochus II, 451.
eunuchus, Bagoas, quem liberos procreaturum esse Pharisaei vaticinati erant, interficitur I, 831. eunuchi I, 568.
Euodus I, 893.
Eupolemus historicus II, 458. f. Joannis I, 627.
Euphrates fl. I, 7. 24. II, 393.
Europa I, 20. II, 308.
Eurycles I, 813 sq. II, 121 sq.
εὐσέβεια superstitiosa I, 689.
Eutychus, Lib. Agrippae I, 889 sq. auriga Caji Caes. I, 942.
exilii poena introducta ab Herode I, 784.
exitus Hebr. ex Aeg. I, 107 sq. II, 324.
Ἐξορκήσεις Salomonis I, 420.
Exploratores, Moysis I, 189. Jesu I, 260 sq.
exulant Judaei latrones fugientes I, 981.
Eycei I, 434.
Ezechiel v. Jezechielus.
Ezechias, latro I, 700. II, 76. rex I, 504 sq. 510 sq. 514 sq.

F.

Fabatus I, 832. II, 129.
Fabius I, 718. II, 81. centurio I, 689.

fabula ad persuadendum proposita I, 295.
facinora malorum hom. non sunt quiete ferenda II, 276.
facta declarant benevolentiam I, 348. occulta novit deus I, 472. sunt dijudicanda ex consilio I, 71.
Factiones Hieros. in B. J. II, 316 sq.
Fadus, Cuspius I, 952. 955 sq. II, 173.
fama fallax I, 437. qualis esse solet II, 252.
Fames I, 29. 47. 80. 192. 292. 400. 458. 524. 631. 661. 769. 960 sq. II, 351. 358. 381.
famulorum magna copia exercitum reg. asiat. sequebatur II, 225 fin.
Fannius I, 659. 709. v. Edicta.
farina in sacris I, 170.
fatum, εἱμαρμένη I, 540. 822. II, 136. 373. 395. 399. de f. et libert. vol. hum. quid statuerint Pharis. I, 871. f. Pharis. et Sadd. I, 649. II, 166. fatum antevertere II, 141. rerum inanimatarum II, 346 fin. πεπρωμένη I, 519. χρέων II, 87. 346. init. 363. 370 fin. fugit nemo II, 390 fin.
felicitas malorum causa I, 448. non perpetua sine virtute I, 916 fin. homines superbos reddit et pravos I, 448.
Felix, fr. Pallantis I, 969. 971 sq. II, 176. 179. v. Elix.
feminae jud. favebant Pharisaeis I, 830 fin. aliorum virorum ap. Persas conspectu prohibitae I, 567. -arum vis I, 552.
ferinae carnes impurae I, 599.
ferri natura I, 535.
festa Hebraeorum et aliorum I, 58. 73. 171 sq. 180. 563. 617. 636. 658. 664. 880. II, 173. 194. f. diebus seditiones plurimae motae II, 60. 83 fin. quia Judaeis pugnare vetitum, facilius opprimebantur II, 190 fin.
Festus, Porcius I, 974 sq.
fibulae aureae usus I, 642. 646.
fiducia in deo posita I, 52. 75.
filius a patre immolatus ad terrendos hostes I, 477. -um infantem mactat et comedit mulier II, 382.
firmiora, quae per alios facimus, esse videntur I, 366.
Flaccus, Norbanus I, 801. 887.
Florus Gessius I, 872. 953. 977. 981. II, 3. 179. 181 sq. 185.
foedus inter Ant. M. et Ptolem. I, 600.
fons pr. Hierich. II, 298 sq. -tes Jordanis II, 106.
Fontejus v. Agrippa.
fortis quis recte dicatur I, 356. -tes et copiosi sunt, quibus deus adest I, 753. -tium virorum verbis vim indit deus I, 191. -tibus praemia dat deus I, 32. omnia pervia I, 190. -tes juvat deus ib.
fortitudo, animi, I, 355 sq. cernitur non in violata lege, sed in cohibendis cupiditatibus, I, 220. cum prudentia sit juncta II, 342. -dine paratur victoria, non multitudine I, 31.
fortuna bellica efficitur concordia et obsequio II, 325 fin. Romanorum II, 397.
Forum Arab. II, 204.
fortissimus ille, qui aequa mente bonam et malam fortunam fert II, 266.
fraternus amor I, 85 sq.

fratricidium in templo peractum I, 578.
fraus sapientia dicitur I, 52.
Fronto, Aeternius II, 384. 398.
Frugi Titus II, 384.
Fullonis monumentum Hieros. II, 328.
Fulvia I, 879.
funebres pompae nimis sumtuosae paupertatis causa II, 147. ne sint sumtuosae II, 487.
furum poena I, 784 sq.
Furius centurio I, 689. II, 68.

G.

Gaa'ae I, 295 sq.
Gaamus I, 28.
Gaba, u. I, 284 sq. 324. 456. II, 11. 197. 222.
Gabala u. I, 495. 768. 979.
Gabaon, -nitae u. I, 270 sq. 284 sq. 325. 363. 398. 400. II, 202. 205.
Gabara u. II, 5. 12. 25. 29.
Gabaris I, 418 sq.
Gabaroth II, 22 sq.
Gabatha u. I, 282. 319 sq. 633.
Gabathona u. I, 456.
Gabath-Saul vic. II, 320.
Gabinius I, 686. 688. 691. II, 67. 70.
Gad trib. I, 260.
Gadara u. I, 277. 615. 669. 675. 690 sq. 761. 774 sq. 862. II, 5. 52. 60. 69 sq. 105. 197. 199. 222. 230. 260. 294. vic. Galaat. I, 672.
Gaddis v. Joannes.
Gadira l. Gades u. I, 20.
Gadus vates I, 403 sq.
Gaetuli ol. Evilaei I, 22.
Galaaditis l. Galaditis l. Galadena rg. 56. 71. 211. 225. 287. 291. 297 sq. 320. 359. 363. 392. 467. 469. 491. 501, 618 sq. 652. 671. 673. II, 60.
Galades collis I, 5..
Galatae ol. Gomarenses I, 20. 627. 761. 866. II, 48. 104. 159. 188. 409.
Galba I, 894. II, 300 sq.
Galbaath u. I, 340.
Galgala u. I, 267. 270 sq. 319. 322 sq. 330 sq. 397.
Galilaea, sup. et inf. I, 273. 278. 418. 433. 501. 647. 636. II, 18. 208. 222 sq. 263. 272 sq.
Galli II, 104. divites II, 188.
Galli eun. I, 248.
Gallia II, 311.
Gallus, Aelius I, 771. Cestius II, 20. 180. centurio II, 266. Rubrius II, 411.
Gamala, al. Gabla et Gaba u. I, 869. 883. II, 5 sq. 11. 17. 36. 222 sq. 263 sq. cf. Gaba. Gabala.
Ganges fl. I, 7.
Garesime II, 36.
Garizim, m. templ. u. I, 253. 275. 579. 582. 585. 610. 639. 659. 879. II, 56.
Garsis u. II, 555.
Gath v. Getta.
Gatherus I, 25.
gaudiorum praeteritorum recordatio levat mala praesentia I, 119.
Gaulana u. rg. inc. I, 221 sq. 418. 674. II, 18. 60. 208. 222. 224. 260. 263.
Gaza, u. et inc. I, 23. 276. 283. 303. 312. 505. 580. 647. 670 sq. 683. 690 sq. 761. 862 sq. II, 60. 69. 104. 197. 313.
Gezara v. Gadara.
Γαζοφύλακες sacerd. I, 561.
Gebonitis u. II, 197.
Gedeon I, 292 sq.
Gelboë m. I, 354.

Gella v. Gethla.
Gelmon u. I, 391.
Gemellus I, 807. 893.
generosi animi est non infirmos sed potentes vincere I, 753 fin. condonare peccata I, 86.
Gennath, porta Hieros. II, 328.
Gennesar lacus I, 277. 648. 872 sq. II, 208. 254. 257 sq.
Gennesara u. I, 648.
geometria primorum hom. I, 17 sq.
Geon i. q. Nilus fl. I, 7.
Gera I, 290.
Gerara u. I, 35. 47. 454.
Gerasa u. I, 675. II, 62. 197 sq. 223. 300.
Gerastratus II, 452.
Gergesaei I, 24.
Germani milites mercenarii in Jud. I, 848. omnium fortissimi II, 392. bellum movent c. Rom. II, 409 fin. -orum natura descr. I, 927. II, 410 init. fortitudo II, 188. 189.
Germanicus I, 875. 893. 927.
Germanus quidam vates I, 892.
Gessiri I, 365.
Gessius v. Florus.
Gesura u. I, 385.
Gethla I, 351.
Getta l. Gitta I, 278. 312 sq. 333 sq. 343. 352. 493 sq. 505. 734.
Gibalus m. I, 252.
Gigantes I, 12. 190. 283. 400 fin.
Gigantum vallis v. Vallis.
Gihon fons I, 407.
Ginaea (Geman, Nain) vic. I, 967. II, 174. 223.
Ginnabris II, 298.
Gitta v. Getta.
Gittha arx II, 95.
Gischala u. II, 5. 7. 18. 208. 263 sq.
Glaphyra I, 785. 803 sq. 816. 827. 866. II, 115 sq. 160.
gloriae causa Rom. pugnabant II, 255.
Gobolitis rg. I, 68, 122.
Goliathus I, 333. 336.
Gomarus, — renses I, 20.
Gophna arx et toparch. I, 716. II, 53. 79. 207. 224. 304. 320. 375.
Gordyaei v. Cordyaei.
Gorgias I, 616. 620.
Gorion II, 275. 290.
Graecanicae urbes (Gaza, Gadara, Hippos) I, 862.
Graeci unde I, 20. nomina barbara graeca faciunt ib. Gr. et Macedones in Mesopot. I, 651. -orum prudentia II, 188. mores imitantur Judaei I, 644. et reges Jud. I, 949. fides historica dubia II, 49.
graeca nomina sibi dare coeperunt proceres Jud. I, 608 sq. 623. -co oleo uti in sacris vetitum II, 8. -cae linguae pronunciatio difficilis Josepho I, 982. -ci mores a Jud. recepti I, 608. et ab Herode I, 766. milites mercenarii in Jud. I, 672. 676.
graeci historici raro meminerunt gentis jud. II, 438.
Graecia II, 109.
Granicus fl. I, 578 sq.
gratias deo referre factis homo non potest I, 429.
gratitudinis exempla I, 73. 892.
Gratus I, 857 sq. 890. 937 sq. II, 155.
gubernatio div. I, 28.

H.

Hades καθ' ᾅδου I, 354. II, 132. 165. 166.
Haemanus I, 419.
haereses judaicae I, 649.
Haggaeus v. Aggaeus.
Halicarnassenses v. Edicta.
Hare v. Saris.
Heberus I, 25.
Hebraei I, 22. 26. 91. 191. 194 sq. 219. 229. 419. 436. 532. 561. 586. a Babyloniis edocti I, 140. lepra infecti dicuntur egressi fuisse ex Aeg. I, 181. pace effeminati res div. negligunt I, 288 sq. -orum festa I, 171 sq. leges et instit. I, 181 sq. res militaris I, 185. 249.
Hebron u. I, 30. 33. v. Cedron.
Hecataeus histor. I, 588. II, 455 sq. 472. 588.
Hecatontomachi I, 668.
Helcias, M. I, 901. custos aer. I, 975.
Helena I, 957. 964. II, 320. 325. 337. 393.
Heliopolis, u. Aeg. I, 95. 624. II, 52. 469. u. Phoen. I, 686.
Heliopolita II, 469.
Hellanicus histor. I, 18. II, 439.
Hellespontus I, 579. 584.
Hemaon I, 419.
Henochus et -ia v. Anochus.
Heptastadium I, 594.
Heracleopolis v. Heliopolis.
Herculis templ. II, 449. columnae II, 189.
Herennius Capito I, 888.
Hermaeus II, 460.
Hermippus histor. II, 453.
Hermogenes histor. II, 458.
Herodes M. f. Antipatri I, 695 — 833. II, 72 — 143. -dis vera indoles II, 123 fin. f. Herodis I, 872. 882. 897 sq. II, 166 — 168. fr. Herodis tetr. I, 883. f. Aristob. ex Solome I, 886. f. Aristob. ex Bernice I, 827. II, 126. f. Herodis ex Mariamne I, 827. 832. 883. II, 127. 129. 132. f. Herodis ex Cleop. I, 828. II, 127. fr. Agrippae r. Chalc. I, 885. 944. 949. 951 sq. 965. II, 173. f. Phasaëli I, 885. fr. Polemonis I, 949.
Herodia u. I, 725.
Herodias, filia Aristob. I, 883. II, 126. soror Agrippae I, 807 sq. II, 168. nupta Herodi f. Herodis M. I, 885. 887.
Herodion arx I, 786. II, 85. 108. 224.
Herodis Commentarii histor. I, 756.
Herodotus pater histor. I, 436. 449. 512. II, 439. 444. 453. 480.
Hesiodus I, 18. II, 439.
Hestiaeus I, 18 sq.
hexametra carmina Moysis I, 115. 252.
Hezechias l. Ezechias I, 504.
Hiaramus l. Hiramus I, 370. 420.
Hieremias v. Jeremias.
Hierichus, v. Jericho.
Hieroboamus f. Joasi I, 497 sq. f. Nabathaei I, 442 sq. 451 sq. 500. 516.
Hieronymus Aegyptiacus histor. I, 16. 18. II, 458.
Hierosolymae u. I, 32. 272. 276. 283. 370 sq. 422. 524. 526. 529. 559 sq. 584 sq. 621. 636. 688. 690. 736 sq. 763. 778. 945. 974. II, 53. 213. 224. 292. 326 sq. 331 sq. 337. 358. 368. 374. 386 sq. 396 sq. 398.

quinquies captae, bis vastatae, 400 sq. 430. descriptio ex Hecataeo 456 sq. etymologia juxta Lysimachum 466 sq. 529.
hin mensura I, 161. 171.
Hiramus v. Hiaramus.
Hippene u. II, 15. 199. 222.
Hippica turris II, 195. 327. 329.
hippodromus Hieros. I, 848.
Hippos u. I, 761. 862. II, 104. 157. 197.
Hiromus l. Hieromus II, 448. 452.
Hispani II, 189.
historia graeca recentior orientalium II, 438. Jud. in Aegypto viventium juxta Manethonem II, 459 sq.
historici munus I, r. 682. regii ap. Pers. I, 573. orientalium II, 438. -corum graec. fides dubia II, 49.
Homerus poëta I, 371. II, 438. 469. 481. 492.
homicidium I, 234 sq.
homo opus dei praestantissimum I, 4 fin. χοῦς, πνεῦμα et ψυχή I, 6. dominus rer. creat. I, 17. nihil contra deum I, 98. Danielus instar dei habitus I, 535. -inis prudentia curta I, 99. summa in res visibiles potestas I, 551 fin. sq. -nes bella in deum movent I, 12. miseri in convicia proni I, 120. -num depravatio I, 12. stultitia I, 527.
Homonoia locus II, 26.
honoribus quibus benefacientes afficiebant reges Persarum I, 573.
hora quomodo indicabatur regibus Pers. I, 573.
Hormiza vic. II, 100.
hospitalitas I, 46.
hospites tuendi I, 285.
hosti in deserto deprehenso parcendum I, 349. hostium vires nascentes imminuendae I, 122. -stes debellatos occidere licitum I, 479. Jud. interficere jussi I, 228. terret deus I, 496 fin.
hostia humana I, 477.
humana rat. quae I, 6.
hymni Davidis I, 401.
Hyrcani II, 421.
Hyrcania l. -um I, 677. 776. 786. 847. II, 70 sq.
Hyrcanus, f. Alexandri Jann. I, 663. 676. 683 sq. 690 sq. 703 sq. 725. 741 sq. 755 sq. 757. 880. II, 55 sq. 63 sq. 75. f. Jos. Tobiae I, 603 sq. f. Simonis Matthiae I, 656 sq. 661 sq. 666.
Hystaspes I, 550.

J.

Jabata u. I, 516.
Jabesus I, 500.
Ἰαβηνοὶ I, 359.
Jabinus I, 291.
Jabissus u. I, 287. 359.
Jacimus l. Alcimus I, 623. 829.
Jacobus Patriarcha I, 47. 52 sq. 83. 93 sq. fr. Jesu Christi I, 976. f. Sosae II, 281. 337. 396. Idumaeus II, 303.
Jadelphas I, 28.
Jaddus, f. Joannis I, 578. 582.
Jadon vates I, 445 sq.
Jaïres I, 297.
Jale I, 292.
Jalus I, 410.
Jamblichus I, 696. II, 73.
Jamnia u. II, 18. 69. 297.
Jamnith u. II, 208.
Janias II, 415.
Japha u. II, 18. 22. 25. 208. 242.

Japhetus I, 18. 20.
Japhois II, 25.
Jarades I, 10. 13.
Jarda vic. II, 224.
Jardes II, 419.
Jason v. Jesus.
Jason, f. Eleazari I, 627.
Jaziëlus vates I, 473.
Jazorus u. I, 618.
Iberia, - eres I, 20. 538. 627. 677. 881. 917. II, 451.
Ibis avis Aeg. I, 103.
Jde I, 877 sq.
idololatria Hebr. I, 516 sq.
Idumaea, - aei I, 66. 206. 276. 376. 461. 495. 617. 659. semijudaei 729. 764. 855. II, 207. 224. 280 sq. 305. 395. 423. 477.
Jeban I, 371.
Jebostus I, 363. 368 sq.
Jebusaei u. I, 24. 370.
Jede I, 516.
Jehus I, 461. 485 sq. 489. 491.
Jehu vates I, 455.
Jejunium Hieros. celebr. I, 689. 737.
Jenae I, 371.
Jephthes I, 298 sq.
Jerasa I, 501.
Jeremias vates I, 520 — 529.
Jeroboamus v. Hieroboamus.
Jericho l. Hierichus I, 212. 264 sq. 630. 798. II, 66. 91. 99. 106. 297 sq.
Jerusolyma v. Hierosolyma.
Jesraëla I, 461. 487.
Jessaemus I, 401.
Jessaeus, f. Obedae I, 331 sq.
Jesus, Christus I, 876 sq. f. Phabetis I, 771. plebejus quidam II, 389. l. Jason I, 608. Pontif. I, 744. f. Sapphiae II, 7. 13. 207. 211. f. Gamalielis I, 977. P. M. II, 281. 287. f. Damnaei I, 976. f. Gamalae II, 18 sq. f. Naueni l. Josua I, 123 sq. 190. 224. 253. 260. 275. 297. 282. II, 298. f. Saphati II, 10 sq. 253. f. Thebuthi II, 396. f. Josodeci I, 555. f. Siae I, 865.
Jethra I, 283.
Jezanias I, 530.
Jezebela I, 457. 487.
Jezechiëlus vates I, 520. 523. 527.
ignis ratiocinans I, 536. - ne purgata Samaria I, 489.
Ilienses I, 787.
Illyrii II, 188.
imaginum usus Hebr. vetitus I, 132. 441. 767. 772. 843. 875 fin. II, 139.
imitanda patrum virtus I, 417.
immortalitas animae I, 42. 254. - tis vestigia ap. vett. Jud. I, 411. 615. II, 165. ex somniis I, 867. ab Eleazaro vindicata II, 428.
immunes a militia I, 250.
imperabit bene, qui bene obtemperavit I, 227.
impetus coecus non Romanorum sed barbarorum II, 267.
impietas I, 108.
impii puniuntur a deo I, 4. 12 sq.
impostores I, 971. II, 92 sq.
improbi puniuntur a deo I, 190 fin.
impudicitiae summa turpitudo I, 230.
India, - dica, I, 7. 24. 538. II, 428.
inexspectata gravius afficiunt, quam exspectata I, 309.
infanticidium in Aeg. I, 97.
infirmis auxilium latum I, 104.
injustum aliena dicta sua facere I, 223.

innocentiae maximum robur I, 614.
inopes sublevandi I, 238.
instrumenta musica I, 401.
interitus mundi I, 11.
Joabus I, 363. 370. 407. 411.
Joachazus I, 520.
Joacimus, P. M. I, 560. 563. r. Jud. I, 520 sq.
Joannes, al. Hyrcanus I, 656. II, 55—57. Baptista I, 883, II, 2. dictus Gaddis I, 632. f. Levi II, 5. 8. 12. 208 sq. 279. 293. 423. f. Sosae II, 281. Essaeus II, 207, 220. f. Judae I, 577 sq. dux Idum. II, 340. f. Eliasibi I, 562. f. Careae I, 5ː0 sq.
Joasus I, 489. 490. 492 sq.
Joathamus I, 295. 415.
Joazarus I, 644. 865. 869. 872.
Joazus I, 491 sq.
Jobabus I, 25.
Jobelus annus I, 10. 184.
Jodamus I, 569.
Jodaus I, 489 sq.
Jonadabus I, 488.
Jonas vates I, 497 sq.
Jonathas, f. Anani I, 947. II, 175. 177. dictus Apphus I, 611. f. Asamonaei II, 54. f. Dorcadis II, 274. f. Sauli I, 325. 338. 340. 358. Sadducaeus quidam I, 663. alius II, 379. f. Abiathari I, 388. 408. f. Samae I, 383. 385. 401. princ. Sicariorum II, 435. Pontif. I, 972. succ. Judae I, 632 sq. 647 sq. 653.
Jonia I, 20. 786. II, 109. 471.
Jonium mare I, 774. II, 73.
Joppe, -eni I, 251. 497. 555. 641. 650 sq. 674. 690. 704. 761. 862. II, 54. 61. 90. 104. 201. 207. 251.
Joramus, P. M. I, 528. r. Isr. I, 475 sq. 484 sq.
Jordan l. Jordanes fl. I, 31. 211. 263. 278. 288. 418. 445. 620. 632 sq. 776. II, 79. 101. 106. 223. 257. 264.
Josadochus I, 529.
Josaphatus f. Achili I, 376. v. I, 466. 472 sq.
Josephus f. Zachariae I, 620. f. Antipatri I, 695. II, 72. Cabi, f. Sim. I, 975. f. Cami I, 957. 965. dictus Cajaphas I, 873. 881. f. Madicastrae II, 17. f. Dalaei II, 388. f. Ellemi I, 844 sq. sobrinus Archelai II, 155. quaestor I, 757. f. Gorionis II, 207. avunculus Herodis I, 746—748. fr. Herodis I, 730. 885. II, 91. 94. maritus Salomes II, 111. f. Josephi I, 885. f. Tobiae I, 600 sq. 606. f. Jacobi I, 68 sq. 71 sq. 82 sq. 96. f. Matthiae, auctor h. lib. I, 5. 228. 536. 545. 682. 982. II, 1—39. 40 sq. 207 sq. 210 sq. 234 sq. 245 sq. 250 sq. 310. 346. 360 sq. 436. 442.
Josias I, 516 sq. 520.
Josua v. Jesus.
Josabetha I, 489.
Josedecus, P. M. I, 555.
Jotapata, u. II, 18. 30 sq. 208. 229. 232. 214 sq. 263.
Jothamus, r. Jud. I, 501 sq. P. M. I, 529.
Javanus I, 20.
Jovis Casii templ. II, 313. Ἑλληνίου I, 610. Victoris I, 941. Olympii I, 916. II, 448.
Ipan I, 448.
ira sopitur donis I, 57. dei I, 108. pugnantum armis validior II, 278. irae non obtemperandum I, 85.

Irenaeus I, 852. II, 150.
Iris I, 17.
Isaacus I, 33.
Isacharis I, 277.
Isana vic. I, 453. 734.
Isara u. I, 468.
Isidis templ. Romae eversum I, 877 sq.
Ismaël f. Abr. I, 33. - itae 71. Ammanita I, 530 sq. f. Phabi I, 873. 973.
Justus, Judaeus histor. II, 4 sq. 32 sq.
juvenes pulcherrimi Jud. ap. regem Babyl. I, 533. - num errores ignoscendi I, 243.
Izarae l. Israëlae fons I, 468.
Izari u. I, 461.
Izates I, 957 sq. 960 sq. 9 4. II, 594.

K.

Καταπετάσματα templi quomodo confecta I, 694.

L.

Labanus I, 28. 52.
Labatha u. I, 377.
Labimi I, 23.
Labina vic. I, 484.
labori omnia pervia I, 124.-ris praemium nuptiae I, 52 sq.
Laborosoarchodus II, 451.
Labosordachus I, 539.
lac oblatum Deo I, 9.
Lacedaemon, - nii I, 606. 648. 813 sq. II, 109. 422. 479. 488 sq. 493. v. Edicta.
Lacchis u. I, 448. 497.
lacrimae ex gaudio et moerore I, 593.
Lamechus I, 10 sq.
Laodice I, 671.
Laodicea, - enses u. I, 710, 746. II, 80. 109.
largiri aliis sua commendatur I, 238. - gientes non liberaliter, sed propter metum, odio habentur II, 126.
Lasthenes I, 640. 644.
Latopolis v. Letopolis.
latrones I, 968. 971. 973. 977. 981. II, 92 sq.
Legati Judaeorum ad varios I, 514. 627. 648. 705. 752 sq.
legatio prima Jud. ad Rom. I, 627.
legislatoris officia quae II, 481.
Lemba u. I, 675.
Lentulus, Lucius I, 708 sq. v. Edicta.
Leontopolis u. I, 638.
Lepidus I, 920. Larcius II, 384.
leprosi exclusi civitatibus I, 181. - sorum lex 481., 499.
Lesbus ins. I, 786.
Letopolis u. I, 111.
Leuce II, 425.
Levitae uxor stuprata I, 284.
Levitae I, 180. 185. 204 sq.
lex divina I, 129. II, 415 sq. immortalis II, 494. Mosaica I, 2. 180 sq. 226. 231 sq. lex per vicos docta I, 454. 466. 472. denuo reperta 517. 586 sq. 359 sq. Iudaeorum polit. I, 183 sq. 784. 820. immutabilis II, 484. - gis nomen veteribus Graeteribus et Homero incognitum II, 481. - gis divinae amor unde in omnibus Jud. idem II, 484. legis Mos. usus prohibetur I, 610. - ges div. animis inscribendae I, 232. et instit. Hebr. I, 181 sq. Moysis optimae ad pietatem et societatem inter homines servandam II, 480. - gum innovatio praecauta I, 249. le-

rever. ap. Jud. I, 844. II, 456. origo ap. Gr. et Jud. II, 482. acroasis frequens ap. Jud. II, 483. legibus parere dulcissimum II, 495. - ges violare non est fortis viri, sed frenare cupiditates I, 220. jud. alii aemulantur II, 494. Persarum I, 567. talionis I, 234. 246 fin. 574 fin. sq.
Libanus m. et inc. I, 189. 273. 278. 288. 418. 436. 678. 943. II, 6. 95. 224.
liberalitas commendata I, 238. 355 sq.
liberi patribus dissimiles I, 315. - ros pravos non plus quam par est amare I, 308. suos sacrificant Hebr. I, 502.
Liberius Maximus II, 419.
libertas bonum praeclarum I, 189. servanda I, 652. omni studio paranda I, 615. II, 277. quomodo acquirenda I, 314. falsa quae I, 221. 227. voluntatis humanae II, 166. circa religiones summa esse debet I, 801. - tis commendatio I, 932. erepta Judaeis in perpetuum causa I, 690. - ten. vindicare quando ineptum II, 187. - te indignos (malos) deus servos facit alienorum II, 549. pro l. mori commendatur I, 652. II, 247. melius, quam servituti se tradere II, 427.
liberum mori decet patriae amantem II, 343.
Libna v. Lobana.
libri, Salomonis I, 419. sacri Jud. II, 441.
Libya, - es I, 22 sq. 44. 449. 458. II, 200. 472.
ligniferii festum II, 194.
linguae graec. pronuntiatio I, 982. - arum varietas I, 19. - uis exterarum gentium loquentes contemnebant Judaei I, 982.
Litterae Graecorum, unde II, 438.
Livia, Josepho Julia I, 797.
Livias u. I, 684.
Livius, Titus, histor. I, 689.
Lobana I, 520.
longaevitatis ap. Essaeos causa II, 164.
Longus II, 380.
Longinus II, 342. tribunus II, 205. Cassius I, 955 sq.
Lotus I, 27. 31. 35.
Lucilius v. Bassus.
Lucullus I, 677.
Ludas I, 24.
Ludi l. Lydi I, 24. - ia I, 599.
ludi Palatini I, 917. a Tito instituti II, 406. v. Agones.
Ludieimi I, 23.
Lugdunum Gall. u. I, 898.
lugere mortem suam quomodo cogere voluerit Herodes I, 846.
lumina, festum Hebr. I, 617.
Lupus Julius I, 934. 943. praeses Alexandr. II, 433.
Lussa u. I, 684.
lychnuchus sacer I, 137.
Lycii II, 109. 188.
Lycurgus II, 489.
Lycus fl. I, 658.
Lydda u. I, 644. 716. II, 202. 224. 297.
Lydi v. Ludi.
Lysias arx I, 686.
Lysias dux I, 614-624.
Lysimachus I, 584. histor. II, 466. 470. 480. 490.

M.

Mabortha u.,ol.Sichem II,297.
Maccabaei I,611 sq.
Macchida u. I,273.
Macedo II, 480.
Macedonia, -ones I, 23. 579. 580 sq. 584. 596. 631. Macedonum asiaticorum mores sequuntur multi Judaei I, 644. II, 188. 199. 354. 457.
Machaeras I, 732 sq. II, 93 sq.
Machaerus u. mun. et inc. I, 677. 691 sq. 883. II, 70. 199. 223. 296. 416. 418.
Machana I, 448.
Machas I, 28.
Machina u. I, 324 sq. 634.
machinae bell. Rom. II, 358. 440 sq.
Machirus I, 511.
Macro I, 891 sq.
Macrones II, 453.
Madaei l. Medi I, 20.
Madiana, - itae I, 104. 213. 218 sq. 223. 292 sq. 329.
Maeotis palus II, 188. 422.
Magdala v. Gamala.
Mageddo u. I, 435. 487.
magna sine labore non perficiuntur II, 256.
Magogae, - es I, 20.
mala imminentia vitare non turpe II, 347. futura qui praevidet, iisque audacter obviam it, is fortis recte dicitur I, 356. mala malis non rependenda I, 348. praesentia levat praeteritorum gaudiorum recordatio I, 119. - orum fons religio I, 489. malis in rebus desperare non est fortium virorum II, 266. male factorum poenitere non turpe II, 374.
Malaëlus I, 14.
Malatha arx I, 887.
Malchus l. Cleodemus histor. I, 44.
maledicentia v. calumnia.
maleficis templum intrare vetitum II, 276.
Malichus, r. Arab. I, 645. 726. II, 87. Judaeus I, 691. 717. II, 70. 79. 80.
Malla l. Malle u. I, 619.
Mallo I, 304.
Malthace, uxor Herod. I, 855. II, 127.
Maluelus I, 13.
malus nemo deum latet I, 248. 267 sq. - li puniuntur a deo I, 753. homines ab angelis procreati I, 12. non invocant deum, nisi cum pericula vitae inciderunt I, 840 fin. - lorum hom. poena suave bonis spectaculum I, 488 animi turbantur adeo II, 341. spiritus sunt daemonia II, 417. - los punit deus I, 17. 45. II, 456. qui non punit, agit contra naturam I, 839 fin. - lis in rebus qui fortes sunt fortiores erunt meliori utentes fortuna II, 378.
Mambres I, 32. 34.
Manaëmus I, 500.
Manahemus, Essenus I, 777. f. Judae II, 3. 194 sq.
Manalin v. Parembolae.
Manasses, P. I, 515. 609. fr. Jaddi I, 578 sq. r. Jud. I, 615 sq.
Mandra u. I, 531.
mane, thekel, phares I, 540.
Manetho histor. I, 18. II, 444 sq. 459. 464 sq. 468 sq.
Maniathe u. I, 298.
Manlius, L., I, 659.
manna I, 120 sq.
Mannaeus II, 362.

Manoches I, 299.
Maon I, 347.
Mar I, 117.
Maraeothus I, 415.
Marcellus I, 880.
Marcus, al. Murcus I, 715 sq. II, 78 sq.
Mardochaeus I, 568. 570 sq.
Maresa u. I, 448. 454.
Margenus II, 449.
Maria II, 381 sq.
Mariamma I, 207.
Mariamne, filia Agrippae I, 885. II, 172. f. Alexandri I, 759. 760 sq. II, 81. 110. f. Josephi I, 885. II, 125. 127. nupta Archelao I, 969 sq. II, 160.
Mariamne, turris II, 195. 330.
marinis aquis se purgant *οἱ ὁ* I, 594.
Marion I, 718.
maris divisio I, 114.
Marissa, -eni I, 620. 661. 674. 684. 690 sq.
maritis licet repudiare uxores, non uxoribus maritos I, 764 fin.
Marsus I, 947 sq.
Marsyas I, 888. 893. 896.
Maruelus I, 10.
Marullus I, 897.
Masada, u. mun. I, 718. 725. 728 sq. 757. II, 81. 85. 194. 196. 293. 422. 424 sq.
Maspha I, 456.
Masphata, -te I, 298. 314. 319. 529. 531.
Massagetae I, 549.
Mastheron angustiae I, 349.
Mathusalas I, 14.
matrimonium sanctum I, 183. -ia per raptum I, 287 sq. v. Connubiales leges.
Mattathias, f. Asamonaei I, 611 — 615. f. Absalomi I, 648.
Matthes v. Simon.
Matthias, P. M. I, 947. *Κυρτός* II, 1. f. Margalothi I, 842. 845. f. Theophili I, 835. 847. 950. 978. f. Margali II, 139. p. Josephi II, 1. f. Boëthi II, 359.
Mauri I, 22. II, 189.
Maxilla locus I, 302. 402.
Maximus, Liberius II, 419. Frebellius I, 934.
Mazaca u. I, 21.
Mechaeras I, 732 sq.
Medaba, u. Arab. I, 632 sq. 659. 684. Jud. II, 56.
Media, -di I, 20. 503. 506. 519. 539. 541 sq. 962 sq. II, 422.
mediocriter bonum esse non decet regem I, 356.
Megassarus II, 355.
Megasthenes histor. I, 538. II, 451.
Meïrus II, 388.
Mela I, 816.
Melamborea locus II, 251.
Melcha I, 27.
Melchisedecus I, 32.
Melchisus I, 358.
mele utebantur ad conservanda mortuorum corpora II, 73.
Melii II, 158.
Melitina II, 405.
Melos ins. II, 158.
Memnonis monumentum II, 169.
Memphibostus I, 377 sq. 396 sq.
Memphis u. I, 102. 435. 601. II, 74. 445.
Menaïsmus II, 194. 196.
Menander Ephesius histor. I, 434. 458. 506. II, 448.
Mende, u. I, 519.
Mendesius *νόμος* Aeg. II, 313.

Menedemus philosophus I, 594.
Menelaus, l. Onias I, 608. 623.
mens dei varia I, 527. - tis occaecatio poena malefactorum II, 344. - tem sanam et sobriam a deo expetere decet I, 417.
mensa, aurea Ptolemaei I, 590 sq. delphica I, 136. sacra I, 136.
mensurae inventae I, 10.
Mephramuthosis II, 446.
Mephres II, 446.
Merbalus II, 452.
mercenarii milites primum ap. Jud. habiti I, 658. II, 56. ab Herode in Jud. ducti I, 729.
meretrici non licet nubere I, 241.
Meroë u. I, 103.
Mero, l. Meroth l. Amerytha II, 18. 208.
Mesas, - anaei I, 25.
Mescheni I, 21.
Mesopotamia, - itae I, 50 sq. 378 sq. 599.
Messala I, 721.
Messalas I, 727.
Messalina I, 970. II, 176.
messis I, 237 sq.
Mestraei, - stre I, 22.
Mestraïmi filii I, 22.
Metilius II, 196.
Mia vic. I, 955.
Micha, al. Maacha I, 377. 378.
Michaas vates I, 466 sq. 521.
Michala I, 337. 339. 365.
militaris ars Rom, II, 226. 342. res Hebr. I, 185. 249. - res leges II, 228.
milites mercenarii ap. Jud. I, 658. 672. 676. 729. 848. II, 56.
Minaeus I, 435.
Minyas I, 16.
Minucianus, Annius I, 917. 920. M. I, 941.
miraculum I, 539.
miracula φυσικῶς explicare impium I, 447. expetita a prophetis, ut fidem faciant I, 514. - lis firmantur incredibilia I, 514.
miraculosa excusat Josephus I, 115. 128. 497 sq.
Misaches I, 533.
Misaëlus I, 533.
Misan I, 476.
Misenum I, 915.
miseri hom. proni in convicia I, 120. - ris opem fert deus I, 113. bene facere pios decet I, 355 fin. — ros inter societas facile initur I, 75.
Mithradates I, 548. Pergamenus I, 688. 696. II, 66. 73. r. Parth. I, 673. vir nobil. Parth. I, 910 sq.
Mnaseas I, 16. II, 458.
Moabitis, - tae I, 35. 209. 290. 304. 532. 565. 672. II, 225. 298.
Mochus histor. I, 18.
Modeim, - eïn I, 628. 654. II, 52.
moderatio animi I, 348.
modestia I, 73.
Modius Aequus, al. Aequiculus II, 6. 11. 17.
moeroris indicium saccus I, 72.
Molon histor. II, 469. v. Apollonius.
monarchae reguli I, 677.
monarchia Judaeis infensa I, 570. restituta per Aristob. I, 663 fin. - iae l. tyrannidis origo I, 19. vituperium I, 235. 316 sq. 323.
Monobazus, cogn. Bazaeus I,

957 sq. II, 203. fr. Izatis I, 958. 964.
Mons ferreus II, 298.
montes primi hom. incolebant I, 18.
monumentum Anani II, 358. Herodis ib. Joannis II, 337. 341. 379. Alexandri II, 341. Memnonis II, 169.
Mopsvestia I, 671.
morbis corporis qui pereunt excipit nox subterranea II, 370.
mores quomodo regebant Lacedaemonii et Athenienses II, 483.
mori pro patria melius quam turpiter vivere I, 611.
Morius I, 40.
mors animam liberat II, 428. honesta I, 41. pulchra I, 358. non timenda I, 327 sq. 356. pro libertate commendatur I, 652. pro patria subeunda I, 657. cum omnino vitari non possit, praeclare factis est oppetenda I, 843. vitae malis finem imponit II, 370. χρέων dicitur II, 358. – tem fortiter obeuntes excipit immortalitas II, 370. qui subeunt sec. legem naturae, eos exspectat coelum II, 248. cf. fatum.
mortui speliendi I, 244. – orum nullus reditus in vitam I, 411.
Mosochus, – eni I, 21.
Moyses I, 4. 6. 97 — 258. 409. II, 441. 461 sq. quis fuerit sec. Manethonem II, 464. 467. non decepit populum 480 sq. legislatorum antiquisissimus II, 481. 494. – sis cum aliis legislatoribus comparatio II, 481 sq.
Muchaeus I, 567.
Mucianus I, 596. II, 266. 301. 310 sq.
Mulier et muliebria I, 74. m. cur non testis coram judice admittenda I, 234. 250. muliebris calliditas I, 339. 552 sq. 567. 603. per omnia viro deterior ap. Jud. habita II, 486.
multitudo amat conviciari in eos, qui sunt in loco summo I, 199. – dinem cohibere magni ducis I, 119.
Mundus, Decius I, 877 sq.
mundus pulchrior templo II, 354. – di interitus I, 11.
mures, Azotiorum I, 311. aurei I, 312.
mures, pestis I, 311.
Murcus v. Marcus.
murus sacer in templo I, 626 fin. – ri Babyl. a quo exstructi II, 452 init.
muscarum deus I, 474 sq.
musica instrumenta Hebr. I, 401.
mutilatis aliqua corporis parte non licuit pontificatu fungi II, 86.
Mygdonia I, 962.
Mysia, – anum bellum II, 109. 310. 410 sq.
Mytgonus II, 452.
mythologi vitia hum. diis tribuunt I, 4 fin.
Mytilene u. I, 774. 786.

N.

Naamas I, 11.
Naamis I, 304.
Naases I, 320. 337.
Nabadus I, 158. 163. 453.
Nabal I, 349 sq.
Naballo u. I, 684.

Nabataei -ene I, 40. 632.
nabla instrum. mus. I, 401.
Naboandelus I, 539.
Nabonnidus II, 452.
Nabopollassarus II, 450.
Nabosaris I, 526.
Naboth I, 462.
Nabuchodonosorus I, 521 sq. 526. 534 sq.
Nabuthus I, 462.
Nabuzardanes I, 527 sq.
Nacebus I, 812. 818.
Nachores I, 26.
Nahumus vates I, 501 sq.
Naïn u. II, 302.
Narbata, -ena II, 181. 201.
Nasamones II, 189.
natalitia dona I, 605. liberorum celebrare Jud. vetitum II, 487.
Nathan I, 371.
Nathanas vates I, 374. 381. 406.
navigatio Hebraeorum I, 437. 439. 474.
navis in portu retinenda imminente procella II, 191.
Naum v. Nahumus.
Nazaraei I, 204.
Naziraei I, 945.
Neapolis, l. Mabortha, ol. Sichem II, 297.
Neapolitanus II, 12. 185.
Neara I, 865.
Nearda u. I, 906. 912.
Nebrodes I, 19. 23.
necessitas consilia suppeditat II, 240 fin.
Nechao I, 519 sq.
Necropolis u. II, 471.
Nedemi I, 23.
Neemias I, 563 sq. 565 sq.
negotiorum in admin. rep. Hebr. divisionem suadet Raguelus I, 126 sq.
Nephanus I, 401.
Nergelcarus I, 526.
Nerias I, 529.
Neriglissoorus II, 451.
Neronis et bene et male facta non accurate ab historicis exposita I, 970 sq. II, 176. 300.
Neronias I, 977.
Netiras II, 238.
Nicanor Aegypt. I, 593. Syrus I, 610. 625 sq. amicus Titi II, 245 sq. 338.
Nicaso I, 578.
Nicaule I, 436.
Νικητήρια festum Jud. I, 626.
nico, machina bell. II, 341.
Nicolaus Damascenus histor. Herod. I, 16. 18. 29. 375. 597. 658. 668. 683. 689. 693. 787. 813. 816. 820. 837. 854. 862. II, 137. 149. 151. 157.
Nicopolis u. I, 798. II, 313.
Niger Peraïta II, 203. 207. 220 sq. 290.
Niglisarus I, 538.
Nilus fl. I, 7. II, 309. 313.
Nimrodus v. Nebrodes.
Ninus, Nineue, u. I, 24. 498. 501 sq.
Niphates fl. I, 875.
Nisibis u. I, 906. 962.
Noarus II, 199.
Noba I, 342. 344.
nobilitatis testimonium ap. Jud. est dignitas sacerdotalis II, 1.
Noëus I, 12 sq. 16 sq. 24. 27. -i arcae reliquiae I, 958.
Nomades II, 189. -dum vivendi rationem abhorrebant Aegyptii I, 95.
nomen Jehovae II, 335 fin.
Nomus Heliopol. II, 434.
Nooma I, 443.
Norbanus, Flaccus I, 801. v. Edicta.
Norbanus I, 927.

Nosta I, 522.
Numenius I, 649.
nuptiae laboris praemium I, 52 sq. v. connub. leges.
nuptialia dona I, 46.

O.

Oasis, u. II, 470.
Obedamus II, 373.
Obedas l. Obodas, r. Arab. I, 672. 805. II, 60. vates I, 502 sq.
Obedias I, 459.
Obimes I, 450.
obsequium matrimoniale I, 55.
obtemperavit qui bene, bene imperabit I, 227.
obtrectator decipit I, 348.
occaecatio mentis poena ob mala facta II, 344.
occulta videt deus I, 472.
oceanus II, 188.
Ochozias I, 470. 474 sq. 486.
Octavia II, 176.
Octaviae porticus II, 413.
Odeas I, 529.
Odolla, u. I, 448.
Oeus I, 223.
Oges I, 211 sq.
Ogyges ilex I, 33.
Olda I, 517.
olei usus in sacris ap. Hebr. I, 171. 596. 210. 362; oleo graeco uti vetitum II, 8.
oleum calefactum muros conscensuris infusum II, 240 fin.
Olivarum mons I, 388. 972. II, 177. 321. 358. 378.
Olurus vic. v. Alurus.
Olympiaca certam. v. Agones.
Olympii Jovis t. v. Jovis.
Olympias, filiae h. nom. binae Herod. I, 828; II, 127.
Olympus I, 816. 818. II, 124.
omina I, 101.
Ommatos v. Ammata.
omnipraesentia dei I, 70. 445.
onera Jud. ab Herode imposita gravissima II, 148.
Onia, rg. Aeg. I, 696. II, 74. 434.
Onias, et Dositheus II, 472. f. Jaddi I, 582. fr. Jesu I, 744. f. Oniae I, 608. 637 sq. II, 52. 434. f. Simonis I, 600. 606. qui et Menelaus I, 608. 623. vir quidam justus I, 684 sq.
opera Jud. in Aeg. absoluta I, 97. humana senescunt cum hominibus I, 542 fin.
Opheires I, 25.
Ophellius I, 723. II, 84.
Ophir v. Sophira.
Ophlas, locus Hieros. II, 328. 337. 393.
Ophre, Ophres I, 44.
Ophnis I, 306 fin.
opobalsamum unde in Judaeam perlatum I, 438. v. balsamum.
Oracula II, 292. 310. 374 sq. 390.
oratio plurimum efficit, ubi concordes sunt audientes II, 186. Abrami ad Isaacum I, 41. Judae I, 85. Moysis I, 128. 199. 226 sq. Simonis I, 652. Herodis I, 752 sq. 778. 796. II, 135 sq. Antipatri II, 136 sq. Agrippae II, 186. Josephi II, 347 sq. Titi II, 369 fin. sq. H, 392 sq. Anani II, 276. Eleazari, de immortalitate II, 428. Jesu II, 481 sq. Josephi de suicidio II, 247 sq. Simonis Idumaei II, 284. Titi II, 254 fin. Vespasiani II, 291. – nimis fortium virorum vim indit deus I, 191.

Orebus I, 294.
organa bell. II, 338.
Ormiza II, 100.
Oronae u. I, 675. 684.
Oronna Jebusaeus, et ejus area I, 371. 404 sq.
Orpha I, 304.
Orus II, 446.
Oryba u. I, 684.
Osarsiph II, 463. 465.
Oséas I, 504. 506.
Ostracine u. II, 313.
Otho II, 301. 304.
Ozas I, 373.
Ozias I, 497 sq.

P.

Pacis templum II, 415 fin.
Pacorus, r. Med. I, 962. II, 422. r. Parth. I, 722 sq. 732. II, 83 sq.
paedagogi Babyl. I, 533.
Paetus Caesennius II, 420.
Palaetyrus u. I, 507.
Palaestina I, 23. 312. 352 sq. 449.
Palatium Romae I, 938.
Pallas, uxor Herod. I, 828. II, 127.
Pallas, servus I, 891. fr. Felicis I, 974. II, 176.
palmeta Hierich. I, 473. 688. II, 66. 298.
Palmira u. I, 435.
Pamphylia, -ii I, 578. 727. II, 88. 188.
Panias, -eas I, 775. 872. II, 166.
panicus terror II, 323. 541.
Panion m. I, 776. II, 106.
Panion fons II, 257.
Pannonia II, 310. 412.
Pannychis II, 120.
Paphlagones, ol. Rhiph ataei I, 21. 786.
paradisus, prim. hom. I, 6 sq. pensilis I, 538. II, 451.
parare facilius quam parta tueri I, 431.
Parasceue I, 177.
Parembolae, Castra, Μαρνιτά, u. I, 363. 391 sq.
parentum beneficia inserviunt posteris I, 452. honor. I, 198. II, 487.
parere qui novit, bonus imperator I, 227.
Pariani l. -ii ins. I, 705.
Parthenius fl. II, 453.
Parthi I, 543. 695. 722. 724. 986. II, 71 sq. 83 sq. 86.
Parthyaea, -aei I, 673. 695.
Parthyene II, 86.
parvas res auget deus I, 113.
Pascha I, 111. 177. 504 sq. 558. 684. 850. II, 148. 294. 324. 399.
pater immolat filium ad terrendos hostes I, 477. -trum peccata luunt posteri I, 463.
patriae amor I, 55. amantem decet liberum mori II, 543. pro p. mori melius quam turpiter vivere I, 611. mors subeunda I, 657.
Paulina a Mundo stuprata in templo Isidis I, 877.
Paulinus II, 245. 435.
Pausanias I, 578.
pax bonum summum I, 403 sq.
peccant non, qui deum omnia respicere credunt II, 482.
peccata unde I, 330. patrum in posteros redundant impunito auctore I, 416. 453. 463. -torum poena mentis occaecatio II, 344. pestes I, 763. -ta condonare generosi est animi I, 86.
pecuniae magna copia in Dav. monum. I, 412. -nia publica nulla nisi templi I, 694. -nià corrupti judices I, 316.
Pedanius II, 124. 378.

pegmata triumphalia II, 414.
Pella, u. I, 675. 686. 690. II, 62. 66. 69. 197. 223 sq.
Pelusium u. I, 512. 696. II, 72 sq. 104. 300. 313.
Pentecostes festum I, 179 sq. 658. 855. II, 152. 389.
Peraea I, 636. 955. 971. II, 203. 207.
perdit quae habet, qui plura cupit I, 678 fin.
peregrini liberali hospitio excipiendi I, 238. – os erga humanitas II, 487. male habebant Graeci et Lacedaem. II, 492.
perfidia I, 531. 651. 653.
Pergameni I, 711 sq. v. Edicta.
Pergamus II, 109.
pericula instantia non sunt timenda I, 355 sq. – lo hom. singuli plures servare I, 534. – lis futuris fortiter obviam eundum I, 356.
Peristereonos petra II, 358.
perjurium necessarium et malitiosum I, 287.
Persia, – sae I, 506. 539. 540 sq. 549. 550 sq. 567. 572. 623. II, 452. 493.
pestis in Judaea I, 403 sq. 507. 524. 763. 769.
Petilius Cerealis II, 410.
Petina I, 970. II, 176.
Petra magna u. I, 495. II, 65. 80. 122.
Petraea I, 882.
Petronius, Publius I, 770. 900. 946. II, 160 sq.
Phacejas I. Phaceas I, 500. 502 sq.
Phaedra I, 828. II, 127.
Phalaus I, 197.
Phalecus I, 25.
Phalion I, 686. II, 65.
Phalna I, 371.
Phannias II, 275.
Phanuel, v. I, 57. 445.
Pharan, v. II, 302.
Pharanx I, 48. II, 937.
Pharao, – nes I, 435 sq.
Pharathon u. I, 299. 633.
Pharisaei I, 649. et cauti et audaces I, 830. jurejurando se Romanis obstringi non passi sunt ib. – orum secta II, 18. Stoicorum similis II, 2. vis in populum I, 663. 675. II, 63. sex millia Herode regnante I, 830. – is favebant feminae I, 830. cf. Sectae.
Pharisaeismus expositus I, 870 sq. – mi genus alterum I, 872.
Pharnaçes I, 688.
Pharus, ins. et turris II, 309.
Phasaëlis rg. I, 847. 863. u. II, 108 sq.
Phasaëlus I, 695. 726. 741. 828. II, 72. 86.
Phasaëlus turris I, 798. 856. II, 195. 329.
Pheldas I, 28.
Pheltias I, 351. 365.
Phenanna I, 307.
Pherecydes Syrus histor. II, 439.
Pheroras I, 695. 803 sq. 810. 830 sq. II, 72. 116. 128. 132.
Phetrosimi I, 23.
Phiala lacus II, 257.
Phichola vic. I, 600.
Phideas I, 528.
Philadelphia, – ene, – enses I, 955. II, 65. 102. 197. 225.
Philadelphus I, 596. 594.
Philippio I, 696. II, 73.
Philippus, fr. Archel. I, 847. 862. II, 157. 166. Galilaeus II, 238. f. Jacimi I, 829. II, 5. 17. 193. 206. fr. Herod. tetr. I, 882. f. Herodis I, 828 sq. 835. II, 127. 133. r. Syr.

I, 621. 673. ἐπίτροπος regni Syr. I, 621. r. Maced. I, 578.
Philistini, l. Palaestini I, 23.
Philistus histor. II, 439.
Philo, Senior II, 458. Alexandr. I, 899.
philosophia judaica I, 870 sq. II, 472. -ae jud. genus quartum I, 872.
Philostephanus histor. I, 668.
Philostratus histor. I, 538. II, 451.
Phineas II, 281.
Phineeses, f. Eleazari I, 221 sq. 223. 280 sq. 415. f. Eli I, 307 sq.
Phison, i. q. Ganges I, 7.
Phoenice, -ces I, 16 sq. 23. 372. II, 438. 451.
Phora, i. q. Euphrates I, 7.
Phraates I, 741. 874.
Phruraei dies I, 577.
Phryges, -ia I, 599. 786. II, 311.
Phullus I, 500.
Phutes, -ti I, 22.
physiologia Moysis I, 6.
pietas vitae finis II, 484. animo validum et aeternum praebet robur I, 499. in deum excedit robur et vim hominum I, 886. -tis fructus non perit I, 960.
pii felices I, 11. piis prospicit deus I, 76 sq. -os beat deus I, 4. periculis liberat deus I, 960. qui fortiter ferunt mala a deo ipsis imposita, eos exspectat locus in coelo sanctissimus II, 247 fin.
Pilatus, Pontius I, 875 sq. 879. II, 167 sq.
Pileus pontif. I, 151 sq.
Piscinae Hieros. II, 328. 355.
Pisidae rg. I, 672. II, 60.
Pisa I, 889.
Pitholaus I, 692. 695. II, 70 sq.
placare deum munus sacerdotum Jud. II, 485. deos finis religionis gentilium II, 491.
Placidus II, 20. 37. 231. 244. 267. 295.
Planctus I, 372.
Platana vic. I, 819.
Plato II, 482. censetur 489. 492.
Plisti, al. Polistae I, 872.
Plinthine II, 309.
plura cupiens perdit quae habet I, 678 fin.
poenae nimis acerbae male afficiunt spectantium animos I, 202. -arum severitas ap. Jud. summa II, 488.
poetas Plato e rep. excludendos censuit II, 492.
poenitentia I, 74.
Polemon, r. Cilic. I, 970. r. Ponti I, 949.
politia Jud. post captivit. I, 559.
Pollio Pharisaeus I, 740. 776.
polyarchia nocet in rebus celeriter perficiendis I, 250.
Polybius histor. I, 598. 621. II, 475.
Polycrates histor. II, 459.
polygamia mos patrius Hebr. I, 828 init. non concessa regibus I, 235. Hebr. I, 295. 307. 357. 364 sq. 371. a deo sancita I, 382. 440 sq. 453.
polytheismus a malis regibus inventus I, 452.
Pompedius I, 918 sq.
Pompejus, Q. Μάγνος I, 686 sq. 688 sq. 690. 695. II, 65. 67 sq.
Ponti Dynastia I, 949.
Pontifex, -ficatus I, 138. 141. 143. 183. 234. 309. 326. -cum summorum recensio 528 sq. 579. 623 sq. 636. 662. 744. 771. 844. 955 sq. avaritia

turpissima 974. 976 fin. - fices a latronibus creati II, 274. -ficatus erat penes certas familias jure hereditatis II, 275. 304 sq. 335. 359. 375. 485.
pontificalis stola I, 880 sq.
Pontius v. Pilatus.
Poplas II, 149.
Poppaea I, 975. 981. II, 2.
populus ira commotus comiter tractandus I, 443.
Porcius v. Festus.
Posidonius histor. II, 475.
possibilia omnia penes deum I, 114.
posteri puniuntur propter male facta majorum I, 9. 24. 345.
potens deus in maleficos II, 397. -tes vincere, non infirmos, generosi est animi I, 753 fin. in potentes conviciari amat vulgus I, 199.
potentia dei I, 99. -tiae usus qualis esse debeat I, 86 fin. - tiae crescenti resistendum I, 122. -tiam nacti mutant mores, quibus privati utebantur I, 345. affectantes in quaevis prava proni I, 367 init.
praecepta decem Moysis I, 129 sq.
praeda I, 358.
praemia summa virtutis quae I, 227.
praescientia malorum fut. I, 355 sq.
praesentia potius curanda quam futura I, 678.
precantes exaudit deus I, 17.
precum immutabilitas I, 49.
primogenitura vendita I, 66.
Primus, Antonius II, 301. 311 sq.
Priscus II, 379. Tyrannius II, 204 sq.
privatam vitam agentes mutant animos, quando in altiori loco constituti sunt I, 345.
privilegia Jud. conc. ab Alex. M. II, 471.
problemata solvenda propos. I, 301. Solom. et Hiromi II, 448.
proceres univers. regni persici epulis excepti a Dario I, 550 fin. sq.
Proculus Vitellius I, 946.
proditionis exemplum I, 103.
Prophetae I, 218 sq. 469. 543. 545. et συγγραφεῖς II, 49. suppositi II, 388. - as per deus futura indicat I, 547.
prophetia I, 216. 665. a deo datur I, 663 fin. 777. Aegyptiorum I, 97. - ae facultas in Josepho coram Vespasiano II, 249 fin. - ae Esaiae I, 638 sq. Jeremiae et Ezech. oppos. I, 520. 523. 527. Essenorum raro falsae II, 165. in destructionem Hierosolym. II, 292.
proseucha Taricheatum II, 26.
Protagoras II, 493.
providentia divina I, 122. 544 sq.
prudentia humana curta I, 90. σύνεσις est momentum belli II, 153. eadem laude digna ac manuum strenuitas II, 291.
Psephina turris II, 329.
Pseudalexander I, 863 sq. II, 158 sq.
Ptolemaeus I, 809. 815. fr. Cleopatrae I, 748 sq. fr. Nic. Damasc. I, 851. II, 149. Epiphanes I, 597. 607. Euerge-

getesal. Philopator l. Eupator I, 597. 600. II, 472. f. Jamblichi I, 696. II, 73. Lathurus I, 661. 667 sq. II, 59. f. Lagi cogn. Soter I, 3. 584 sq. Philadelphus I, 585. 587. 589. 590. 595. II, 472. Philometor I, 607 sq. 638 sq. 642 sq. II, 472. f. Mennaei I, 677. 686. 718. 696. II, 62. 73. 83. interficit Simonem etc. I, 656. II, 55. procur. Herodis I, 803. II, 12. Physcon I, 607. 660. II, 472 sq. Sextus II, 51.
Ptolemaïs, - ïdes I, 618. 634. 640. 644. 653. 666. 677. 699. II, 169.
Pudens II, 379.
puerorum educationem prae ceteris curabant Jud. II, 443. qualis erat II, 487.
pugna navalis II, 254.
pugnare sabbatis quomodo licitum I, 689.
pulchrum pro libertate mori II, 247.
punitio malorum jucundum spect. I, 488.
purpurea vestis ins. reg. I, 78. 539. 551. 573.
Pygmalion II, 449.
Pyrenaei m. I, 188 sq.
Pythagoras II, 439. 453. 482.
Pythium templ. I, 798.

Q.

Quadratus, v. Ummidius.
quiete suscepta perficere melius, quam incertam armorum aleam experiri II, 291.
Quintilia I, 919.
Quintilius Varus v. Varus.
Quirinius I, 867. 869. II, 422.

R.

Raazarus I, 442.
Rabezacus I, 552.
Rachaba I, 261. 266 sq.
Rachel I, 52. 54 sq. - lis monum. I, 319.
Raëpta arx I, 812.
Ragaba I, 673.
Ragavus I, 26.
Ragmus, - aei I, 22.
Raguelus I, 125 sq. 329.
Ramesses II, 446. 461.
Ramoth l. Aramatha l. Rhamatha l. Rhamathon I, 307. 331. 340. 349. 455. 469.
Raphanaeae, u. II, 405. 411.
Raphia u. I, 670. 674. 691. II, 60. 70. 313.
Raphidim I, 121.
Raphon I, 619.
Rapsaces I, 510 sq.
Rathotis II, 446.
Rathymus I, 549.
ratio αὐτοκράτωρ I, 294.
Rationale I, 146 sq. 151. 164.
Rebecca I, 28. 45. 47. 49.
Reblatha u. 526. 528.
Receme v. Areceme.
Recemus I, 223.
reconciliatio I, 80 sq.
recordatio gaudiorum praeteritorum levat mala praesentia I, 119.
reditus reipubl. Jud. I, 602.
reges ex stirpe Dav. I, 527.
regia Salom. I, 432.
regia potestas I, 551 sq.
regina Aeg. et Aeth. convenit Salom. I, 437 sq.
regnum cui tribuendum I, 332.

Regulus, Aemilius I, 917.
rei quomodo apparebant coram judicibus I, 701.
religio optima est, quae ducit ad virtutem I, 801. instaurata ab Abramo I, 28. -nes Hebr. turbatae I, 505. per Herodem I, 766. malorum fons I, 489. a Jud. inter tela observatae II, 68. -num cultus Jud. prae omnibus observatus I, 763. cuilibet sit liber I, 801. Jud. liber concessus a Ramanis I, 703 sq. -num varia genera non sunt spectanda utilitatem earum perpendentibus, sed utrum ad virtutem ducant annon I, 801. neglectarum supplicia ap. Athenienses II, 492. ap. Persas II, 495.
Renga u. I, 353.
respublica Hebr. quomodo a Moyse instituta I, 228 sq. in monarchiam mutata I, 322. reipublicae formae variae ap. varios populos II, 482.
Ressa arx I, 725. 729. II, 91.
rex qualis esse debet I, 235. 356. 412. 501. qualis solet I, 747. rex Jud. primus post capt. Bab. Aristobulus II, 57 fin. -gem magis decet esse mitem quam irae deditum I, 949. non decet mediocriter esse bonum I, 356. -ges superbi I, 337. aemuli I, 339 sq. Persarum in throno sedentes I, 568. -gum exempla imitantur cives I, 448. in sedibus justitia prae ceteris colenda I, 472. benevolentia emta I, 602 fin. discrimina curat deus II, 321.
Rhabátha I, 379.
Rhapha I, 619.
Rhaphia l. Rhaphia II, 70. 313.
Rhegines vic. I, 21.
Rhenus fl. II, 188 sq.
Rhessa v. Thressa.
Rhinocolura l. Rhinocorura etc. u. I, 674. 726. II, 87. II, 313.
Rhiphathaei I, 21.
Rhoa, arx in des. I, 287.
Rhodus, -ii I, 727. 786. 798. II, 88.
Riceme v. Areceme.
Robees I, 223.
Roboamus I, 386. 443 sq. 448. 450.
Roma, -ani, u. I, 544. 596 sq. 627. 656. 659. 660. 698. 727. 830. II, 2. 187 sq. 190. 226 sq. 237 sq. 245. 342. 346. 397. 471.
Romelia I, 501.
Rooboth I, 48.
Roxane I, 828. II, 127.
Rubrius Gallus II, 411.
Rubrum mare I, 7. 40. II, 189.
Rufus I, 857. II, 153. 155. 418. Terentius II, 406.
Ruma I, 28. vic. Gal. II, 238.
rure abstractus Phannias eligitur pontifex summus II, 275.
ruta mirae magnitud. II, 417.
Rutha I, 305.
Rydda u. I, 684.

S.

Saab II, 237.
Saba I, 103.
Sabaeus I, 398 sq.
Sabathes, -eni I, 22. 399.

Sabactes, -eni I, 22.
Sabas, aei I, 22.
Sabbaeus I, 639.
Sabbaticus, fl. II, 411.
Sabbaticus annus I, 741.
sabbatum et sabbo II, 470.
Sabbatum I, 6. 136 fin. sabbato die olim non, sed post Mattathiam demum pugnabant Jud. 612. 632. -batis iter facere vetitum 658 fin. pugnare quomodo licitum 689. II, 67. 689. I, 788. 907. II, 15. 26. 67. 164. 190. 196. 270. 408. 470.
Sabbion I, 745.
Sabecus I, 379.
Sabinus, Syriae praes. I, 851 sq. 855. II, 149. 150. 152. unus ex interf. Caji I, 942 sq. alius, qui a Vitellio defic. II, 312. Syrus II, 371. Domitius II, 244. 344.
Sacae I, 881. 964.
saccus moeroris indicium I, 72.
sacerdotalis dignitas nobilissima II, 1.
sacerdotes Aegypt. I, 95. 107. Hebraeorum I, 132. vestitus 138. 141. 170 sq. 183 sq. reditus eorum annui 204. 309. 408. 460. 499. II, 440. 457. 464. 477. -um Jud. numerus II, 455 fin. munus II, 484 sq. partes propriae placare deum II, 485. -ibus non licuit uxores ducere nisi ex gente pontificia I, 554. 561.
sacra ab Hebr. pro rege Aegypt. facta I, 590. -orum cultus superstitiosus I, 689.
sacrificia qualia deo grata I, 9. Hebr. I, 169. 170 sq. 230. 555. 604. 975. II, 52. 170. 192. 205. 373 sq. 474.
Sadducaei I, 649. 663. II, 166.
Sadducaeismus I, 871.
Sadocus I, 369. 376. 381. 399. 406. 415. 528.
Sadducus et Judas Sadduc. auctores I, 869.
Sadraces I, 559.
Saïra u. I, 57. 66.
Saïtes, nomos Aeg. II, 445.
sal in ruinis urbis vast. I, 296. tributum I, 636.
Salampsio I, 885.
Salathielus I, 554.
Salatis II, 445.
Sallis vic. II, 221.
Salmana I, 294.
Salmanasares I, 506.
Salephus I, 25.
Sales I, 25.
Solome, soror Herodis I, 695. 748. 765. 785. 790 sq. 804. 827. 830. 847. 863. II, 72. 124. 128. 158. 166. f. Herodis I, 828. II, 127. f. Herodiadis I, 885 sq.
Salomon, v. Solomon.
Samacho I, 958.
Samaca u. II, 56.
Samaraeus I, 24.
Samaria, -itis, -itani I, 375. 456 sq. 480 sq. 507. 532. 556. 559. 582. 600. 610 sq. 636. 639. 661 sq. 674. 690. 761. 763. 768. 872 sq. 889. 967. II, 25. 56 sq. 91. 104. 222 sq. 243. 320.
Sambaba I, 559.
Sameas I, 701 sq. 740. 776.
Samega u. I, 659.
Samosata u. I, 733. II, 94. 420.
Sampho vic. II, 155.
Sampsigeramus I, 885. 949.
Sampson I, 300—304.

Samuelus et filii I, 307 sq. 314 sq. 319. 325. 332. 349. 355.
Samus, -ii ins. I, 786. II, 109.
Sanaballates I, 578. 580. 659.
Sanagarus I, 290.
sanctum sanctorum I, 133. II, 274. 334.
sanguine popularium templum pollutum II, 278.
Saphan u. I, 581.
Saphates I, 418.
Saphatha v. I, 454.
sapientes Jud. dixerunt, qui S. S. docte exponere sciebant I, 982.
sapientia prim. hom. I, 14. dicitur fraus I, 52. a deo expetenda I, 417. Aegypt. eximia I, 419. - tiâ Hebr. incliti I, 419.
Sapinnius I, 809.
Sapphora I, 106 sq.
Sarabazanes I, 548. 556. 558.
Saraim u. I, 448.
Saramala v. Samaralla.
Sarasa I, 304.
Sarasarus I, 513.
Sardiani I, 714 sq. I, 801.
Sardinia ins. I, 879.
Sarcas I, 528 sq.
Sarephtha u. I, 458.
Saris u. I, 344.
Sarmatae, qui et Scythae, rebellantes Romanis II, 410 sq.
Sarra I, 28 sq. 42.
Saruia I, 351. 392.
satum mensura I, 482.
Saturnius, Cn. Sentius I, 817. 820. 827. 832. 836. II, 124.
Saulus, r. Jud. I, 317 sq. 321 sq. 326. 328 sq. 330. 344 sq. 354. 359. dux latronum I, 977.
Saxum praesidii I, 315.
Scala Tyriorum I, 646. II, 169.
Scaurus I, 685 sq. 691. II, 65. 69.
Scenae locus I, 58.
Scenopegia festum I, 173 sq. 427 sq. 555. 745.
Scopas I, 597.
Scopus locus II, 203 sq. 321. 324.
scortum turpissimum I, 230.
scriptores incerti I, 667.
scripturae, publicae Tyr. II, 417. - ram sacram Hebr. qui docte interpretari sciebant, sapientes dicti I, 982.
Scythae, - ica I, 20. 881. II, 410. 443.
Scythopolis, l. Bethsane u. I, 277. 359. 602. 620. 651. 661. 669. 675. 687. 690. 691. II, 5. 32. 57. 69. 197 sq. 222. 253. 270. 297.
Sebas I, 401.
Sebaste, l. Samaria q. cf. I, 765. 768. 785. 822. II, 56. 174. 197. i. q. Caesarea Pal. I, 797. u. Cilic. I, 796.
Sebastus portus Palaest. I, 836. II, 134.
Sebee I, 299.
Sebonitis II, 197.
Secela u. I, 351.
sectae ap. Jud. I, 649. 870 sq. II, 2. 160. 161 sq. - a quaedam praeter Pharis. etc. II, 160 fin.
seditiones a variis motae I, 190. 195 sq. 973. plerumque motae diebus festis II, 60. 83 fin. sq.
Sedecias, pseudopr. I, 468. r. Jud. I, 522 sq. 525. 527 sq.
Sedraches I, 533.
Seiani mors I, 891.

Selamis II, 208.
Selene I, 677.
Seleucia, u. Syriae I, 674. 912. II, 62. vic. Gaulanit. II, 18. 208. 263. u. munit. ad Tigrim I, 875.
Seleucus I. I, 584. Nicator I, 596. Soter I, 606. f. Ant. Grypi I, 670 sq.
Sella I, 10.
Sellumus I, 500.
Selo I, 287.
Semareon l. Samaria I, 456.
Semaron l. Semeron I, 451.
Semechonitis lacus I, 291. II, 258. 263.
Semega v. Samega.
Semeganus I, 526.
Semei I, 388. 396. 411. 416.
Semelius I, 550.
Sempronius, C. I, 659.
Semas I, 18. 24.
Senabares I, 50.
Senacheribus I, 510. 513.
Senatus consulta Rom. de Iudaeis I, 627. 698. 710. cf. Edicta.
senex male vitam finiens valde miserandus I, 757.
Senius Gallus, v. Cestius Gallus.
Seph u. II, 208.
Sepphoris u. I, 668. 692. 730. 857. 859. 872. II, 4. 11 sq. 22. 51 sq. 71. 92. 208. 222.
septimus, annus I, 623. dies I, 788. II, 307.
Septuaginta interpret. legis I, 590. 593 sq.
sepulcrum Rachelae I, 319. Davidis ab Herode apertum I, 802 fin.
Serebaeus I, 555.
Seron I, 613.
Serpens I, 8.
Serpentium piscina ol. Bethura II, 324.
Serritae I, 353.
Serugus I, 26.
servae mulieres non in matrimonium ducendae I, 241.
servus, qui aufugit domino, etiam maligno, puniendus II, 247. -i jobelo anno liberandi I, 245.
Servilius, P. I, 711. cf. Edicta.
servire, deo volente, non turpe I, 409.
servitium non amplius sex annis ap. Jud. durabat I, 784.
servitutem qui exuit, quam sibi imponi passus est, non φιλελεύθερός est, sed αὐθαίρετος δοῦλος II, 187.
Sethon II, 460 sq.
Sethosis II, 447.
Sethus I, 11. 14.
Sextus Caesar I, 700 sq. 715. II, 77 sq.
Sibas I, 377. 388. 396 sq.
Sibylla I, 19.
Sicarii I, 974. II, 177. 293 sq. 433.
Sicella u. I, 353. 357 sq. 362 sq.
Sichon I, 210.
Sicima, -itae u. I, 58. 70. 275. 278. 281. 295. 329. 443 sq. 582. 610. 659. II, 56 sq. 60.
siclus quid sit I, 159.
Sidon u. I, 23 sq. 277. 418. 440. 507. 579. 610. 618. 703 sq. 721. 863. II, 83. 98. 109. 291.
Sidonis campus magnus I, 288.
signa portentosa II, 95. 388 sq. Romanorum I, 875. signis militar. sacrific. mos II, 391.
Sigo u. II, 18. 208.
Silanus I, 875.

Silas, praetor Tiber. II, 9. 25. Judaeus I, 686. socius Agrippae I, 893. 947 sq. 951. Babylonius II, 203. 220.
Silbonites II, 223.
Silo I, 729. 730 sq. II, 89. 90 sq.
Silo, u. I, 307. 309. 442. 450.
Siloa fons II, 185. 275. 285. 287. 337. 358. 395.
Silva fletus, v. Κλαυθμῶνες.
Silva Libani, domus I, 439.
Simeon II, 275.
Simon, f. Boethi I, 771. 835. f. Camithi I, 873. Cantheras I, 945. 947. f. Cathlae II, 281. 337. Justus I, 589. 600. 654 sq. f. Oniae I, 606. Essaeus I, 866. II, 259. f. Giorae II, 203. 301 sq. 405. 415. fr. Judae I, 618. 627. tyrannus II, 406. fr. Jonathae I, 652. II, 54 sq. f. Absalomi I, 653. f. Arini II, 337. f. Dosithei I, 659. Jdumaeus II, 284. Josephi custos II, 13. Hierosolymit. I, 949. Magus I, 969. dict. Matthes I, 611. Pharisaeus II, 18. Psellus II, 1.
Simon, quidam diadema sibi imponit I, 857. II, 153. f. Pauli 198. quidam Agrippam criminatur I, 949.
Simonias vic. II, 11.
Simonides II, 39.
simulacra deorum I, 54. 58. animalium in templo collocare vetitum II, 139. in urbe ponere vetitum II, 167. 170.
Sinaei I, 24.
Sinaeus m. I, 105. 125 sq. 461. II, 470.
Sinope I, 786.
Siphar I, 391.
Sirias I, 12.
Sisa al. Susa I, 376. 399.
Sisares I, 291 sq.
Sisines I, 548. 556-558.
Sitenna I, 48.
Σκηνοπηγία, v. Tabernaculum.
Soba I, 328.
Sobacchis I, 400.
societas inter miseros facile initur I, 75. communis potior vita propria II, 486.
Socrates neci datus ob religionis contemtum II, 493.
Socho u. I, 333. 448.
sodalitia θίασοι Jud. I, 706.
Sodoma, -itae I, 30 sq. 276. II, 299.
Soëmus I, 832. 971. II, 6. 420. Ituraeus I, 757. 759. 762.
Sogane, -anni II, 18. 25. 208. 263.
Solomon I, 371 sq. 382. 407. 410. 416 sq. 420 sq. 428. 430 sq. 440. 443.
Solopades I, 225.
Solyma, -itae I, 32. 370 sq. II, 18 sq. 461.
Solymi montes II, 454.
somnia portentosa I, 50. 54. 68 sq. 75. 89. 293. 431. 581. 866. II, 20. 95. 159 fin. 160. -orum interpretatio I, 534. interpretes Essaei I, 866. interpretandorum facultas Josephi II, 246. -iis probatur animae immortalitas I, 867.
Somorrhôn u. al. Bacra II, 298.
Sonne u. al. Suna I, 354.
Sophaces I, 45.
Sophene I, 375. 442.
Sophira I, 437.
sophista singularis cujusdam haeresis II, 160 fin. -ae judaici II, 139.

Sophonias I, 528.
sorte eventus praediscitur I, 319. deus consulitur I, 203.
Sosibius I, 586.
Sosius I, 733. 736 sq. II, 95. 99.
Souba I, 378.
Soudeas I, 528.
Sparta, - ani I, 648. II, 489.
Spasini charax I, 25. 957.
speluncae Jud. II, 92.
Spinarum vallis v. Vallis.
Spiritus divinus I, 214. 216. 539 fin. 541 init. transit ab altero in alterum I, 332. - tu div. afflati I, 319. 321. - tus malorum hominum sunt daemonia II, 417.
spolia circa templ. Herod. I, 780.
sponsalia ap. Hebr. I, 306. 828.
stellis vis a sole et luna I, 69.
Stephanus I, 966. II, 174.
sterilitas terrae poena I, 374.
stoae exstructae Hierosol. I, 654.
Stoechus I, 893.
Stoici II, 482. - corum similes Pharisaei II, 2.
stola pontif. I, 636. 780. 880 sq. 955 sq.
Straton I, 673.
Stratonis turris l. Caesarea u. mun. I, 665. 674. 690. 761. II, 104. 106.
Stratopedon Dei I, 56. locus Hieros. II, 195. Judaeorum I, 696. II, 74.
Struthii piscinae II, 355.
Strabo histor. I, 662. 666 sq. 686. 689. 693 sq. 697. 741. II, 475.
stultitia hominum I, 527.
subditi regibus blandiuntur, eosque imitantur I, 448 sq.
sues mactatae in templo Hierosol. I, 609. - es mactare coguntur Judaei II, 52.
suffitum in templo dare, cui licitum I, 499.
suffragiis res suas dijudicabant Essaei II, 164.
suicida similis servo, qui aufugit domino II, 247. - das exspectat Hades II, 248.
suicidium liberali homine indignum II, 247.
summa rerum potiri cupientes in quaevis prava proni I, 367 init.
Suna v. Sonne.
superbia hominum I, 12. regum I, 337.
superbos punit deus I, 19. 34.
superstitio Judaeorum I, 585. Josephi et Judaeorum I, 689.
supplicum mos ap. Syros I, 465.
Sures I, 223.
Suses v. Sisa.
Susa u. I, 543. 566 sq. 570 sq.
Susacus I, 375. 443. 449.
suspicionis exempla I, 807.
Sycaminus u. I, 667.
Sycheme l. Sicheme v. Sicima.
Syene u. II, 309.
Sylla II, 36.
Syllaeus I, 805 sq. 811. 817 sq. 832. II, 129.
symbolica interpretatio tabernaculi I, 133 sq. 137. vasorum templi II, 334.
Symoborus I, 30.
Synedrium I, 700. II, 7.
Synope v. Sinope.
Syria, - ri I, 22. 24. 71. 378. 435. 449. 450. 596. 677. II, 224 sq. 316. 453.

Syrtes Africae II, 189.
Syrus I, 378.

T.

Tabaeus I, 28.
tabernaculorum festum I, 427 sq. 431. 658. 671. 746. II, 389.
tabernaculi, symbol. institutio et interpretatio I, 130 sq. 137. 155. 159 sq. 555. 563.
talionis lex I, 234.
Tanaïs fl. I, 20.
Tangana I, 559.
Tanis u. I, 30. II, 313.
Tarentum u. I, 836.
Tarichaeae l. -eae, -aeatae I, 695. 971. II, 15. 26 sq. 37. 72. 176. 208. 211. 216. 254. 263.
Tarsus, -icum mare I, 21. 439. 497.
Tavaus I, 28.
Tauri vic. II, 188.
Taurus m. I, 579.
Techoa I, 633.
Telethon u. I, 675.
telonia Alexandr. vendita I, 601.
Templum Hierosolymit. I, 374. 405. 422 sq. 428 sq. 490. 547. 549. 550. 556 sq. 609. 617. 637. 690. - pli opes 694. 778 sq. 782. 979. II, 68. 105. 287. 331 sq. 334. 385 sq. Samaritanum I, 579 sq. 582. 639. 769. 779. 781. Heliopolitanum I, 624. 638 sq. 662. 979. Bovis aureae II, 464. Templa Gentilium I, 228. 230 sq. 359. 434. 537. 610. 620 sq. 638 sq. Dagonis 641. 670. 699. 776. 798. 860. 871. 916. 941. II, 106. 156. 264. 313. 413. Pacis 415 fin. 448. 449.
tempus serotinum suspicionem movet I, 284.
Tephthaeus II, 355.
terebinthus antiquissima II, 303.
Terentius, v. Rufus.
Teridates al. Tiridates I, 962. II., 422.
termini positi I, 10.
Tero I, 820 sq. II, 125.
terrae hiatus I, 201. motus I, 752. II, 101.
terrorum deus injicit hostibus I, 496 fin.
testudinis genus II, 238 sq.
Tethmosis al. Thumnosis l. Thmosis II, 446. 460.
tetrarchiae I, 644.
Thabnaeus I, 456.
Thadalus I, 31.
Thadamora, Gr. Palmira u. I, 435.
Thaenus I, 376.
Thales II, 439.
Thamara I, 371. 383. 393.
Thamna, -itae, u. et toparch. I, 282. 300 sq. 716. II, 207. 224. 297.
Thannus I, 368.
Tapsa I, 500.
Tharabasa I, 684.
Tharata I, 510.
Tharbis I, 103.
Tharrus I, 26.
Tharsa u. I, 455 sq. 500.
Tharsus, -enses I, 21.
Thaumastus I, 892.
theatra in Jud. I, 766. 773. II, 108.
Thebae, -ani, u. Gr. II, 493. Palaest. I, 297. 381. -aïs u. et rg. Aeg. I, 582. II, 433. 445.
Thecoa al. Thecoë, Thecue, Thecee I, 448. 473. II, 38. 302.

Theglaglassar I, 501.
Thella vic. II, 223.
Themasius I, 552.
theocratica reip. forma Judaeorum II, 482.
Theodectes I, 595.
Theodestes I, 568. 573.
Theodorus I, 670. II, 60.
Theodosius I, 639.
Theodotus II, 458.
Theophilus, f. Anani I, 945. fr. Jonathae I, 884. histor. II, 458.
Theophrastus II, 453.
Theopompus I, 595. II, 459.
thermae Callirhoënses I, 845. Ammauntinae I, 873.
Thermodon fl. II, 453.
Thermudis I, 99 sq.
Thermus II, 472.
Thermusa I, 874.
Thersa v. Tharsa.
thesauri dei II, 184 fin. templi Hieros. unde congesti II, 331.
Thesbona u. I, 457.
Theudas I, 965.
Theudion I, 834.
Thiras, -res I, 21.
Thmosis v. Tethmosis.
Thmuis u. II, 313.
Thobelus et Job. I, 10 sq.
Thochoa u. I, 633.
Tholomaeus, f. Soëmi, al. Ptolemaeus I, 696. II, 73. latro I, 955.
Thracia, -ces I, 21. 474.
Thressa al. Hessa, Resa, Rhessa, arx I, 725. 729. II, 85.
Thucydides II, 439. 444.
Thygrammes, -mmaei I, 21.
Tiberias, u. -rienses I, 873. 887. 949. 971. II, 4. 9. 12. 19. 25. 33. 176. 208. 211 sq. 224. 252. 298.
Tiberis fl. I, 878.
Tiberius Alexander, proc. Jud. I, 965. praef. Alexandr. II, 200. 309 sq. 319. Nero I, 873. 889. 894 sq. II, 167 sq.
Tigranes I, 677. 750. 886. II, 63. 126.
Timaus II, 444.
Timaeus, histor. II, 439. 459.
Timagenes, histor. II, 475.
Timidius I, 918.
Timius I, 885.
Timotheus I, 618. 619.
Tirabatha vic. I, 879. 880.
Tiridates v. Teridates.
Titanum vallis v. Vallis.
Titius I, 810.
Titus et Vespasianus II, 33. 38. 220. 225. 238. 242. 249. 254. 256. 301. 308. 320 sq. 346. 369 sq. 376. 384 sq. 391. 393. 406. 411 sq. 413.
Tobiae filii II, 52.
tonitrua et fulgura dei opem annunciant I, 273. comprobationem I, 323.
toparchiae tres I, 644.
trabs aurea in templo I, 694.
Trachon, -itae, -itis I, 678. 774 sq. 796. 810 sq. 812. 882. 959. II, 11. 24. 105. 153. 224. 260.
traditionis veterum I, 517. Pharisaeorum I, 663.
transfugae Jud. ad Macedones I, 631.
Trajanus II, 242. 253.
tributa I, 598. 600 sq. 636 sq. 644. 654. 658. cf. reditus.
tribuum sortes I, 276 sq.
trimetra et pentametra carmina Davidis I, 401.
Tripolis u. I, 624. 661.
Tripolitici auctor II, 459.

Triumphalis porta Romae II, 413 sq.
Troglodytae I, 44. 104.
Trophaea erecta Hieros. I, 766.
Tryphon, tyrannus I, 646. 651 sq. 655. 656. r. ἄϑιϱμα I, 604. tonsor I, 821. II, 125.
turris Babel I, 19. Joannis II, 381. Psephina II, 320. 329.
Tusculanum Ital. I, 890.
tyrannis malorum fons I, 932 fin.
tyrannis qui favere soleat I, 928 med.
Tyrannus I, 814 sq. II, 123.
Tyrannius, Priscus II, 204 sq.
Tyropöeum, vallis Hieros. II, 327.
Tyrus, -rii u. I, 422 sq. 434. 479. 489. 506 sq. 580. 618. 718. II, 5. 34. 81. 169. 175. 201. 447 sq.
Tyrus turris I, 607.

V.

Vacca, rufa I, 207. aurea I, 489.
Valatha arx I, 829.
Valerianus II, 253.
Valerius, Gratus I, 873. Asiaticus I, 925. 931. 941.
Vallis Antiochi I, 674. II, 62. Cilicum I, 675. Gigantum I, 371. gratiarum I, 474. Hierichuntis l. spinarum I, 798. II, 108. 320. regia I, 393.
Vardanes, v. Bardanes.
Varro I, 774. II, 105.
Varus, Quintilius I, 836. 840. 851. 855. 859 sq. II, 5 sq. 134. 151. 154.
Vasa sacra Hebr. ab Aegypt. rege data I, 591 sq.
Vaste I, 567.
vaticinandi vis a deo datur I, 777.
Vaticinia de captis Hieros. II, 292. 390.
Vatinius I, 924.
Vectigalia Syriae, Phoenices etc. I, 602.
Vela I, 156.
Venationes amphitheatr. I, 766.
venerearum rerum cupido corrumpit bonos I, 220.
Ventidius Bassus I, 728 sq. 732. II, 89. 93.
ventriloqua I, 355. -qui regno pulsi I, 354.
Veranius I, 939.
verecundia Hebr. erga instituta et leges Moysis I, 192.
veritas I, 321. 553. 682. 821.
versio graeca V. T. I, 586. 594 sq. II, 472.
Vespasianus I, 597. v. Titus.
vestes sacerdot. I, 137 sq. II, 335. virgin. I, 384.
viae stratae a Salomone I, 440.
vicissitudo rerum hum. I, 283 fin.
victimarum ratio I, 169. 171. 184. II, 486.
victoria non debetur multitudini sed fortitudini I, 31. crudelitate non est inquinanda I, 322. nulla sine sanguine II, 266. -riae spes in εὐσεβείᾳ I, 614.
Vienna, v. Bienna.
Vindex II, 296 sq.
vindicta crudeliter sumta I, 577. 633.
vini vis I, 551.
Vinicius, Marcus I, 925.
Vipsanius, M. Agrippa I, 774.
virga Aaronis I, 203.

virginum vestes v. Vestes.
virtus regum I, 412. in omnibus adhibenda I, 832 fin. ad - tem (καλοκἀγαθίαν) quae ducit, ea optima religio I, 801. - tis summa praemia I, 227. - ti suae ne homo omnia tribuat I, 302. sine - te felicitas nulla sempiterna I, 916 fin.
vis summa inest insontibus I, 614.
visiones per somnum I, 50. 56. 57. 98. 208. 292 sq. 300. 316. 543 sq. 666. 734.
vita hominis sine peccato Adami I, 11. profundenda pro deo et aris II, 278. - tae hum. duratio I, 17 sq. 27. amor ne sit nimius I, 356. - tam homo accepit a deo, quamobrem impium, se ipsum occidere II, 247.
Vitellius, Syriae praeses I, 780. 880 sq. 883 sq. II, 301. 312. 410. Proculus I, 946.
vitis I, 24. aurea I, 686. 779. II, 533.
vivere velle lex valida in omnibus animantibus II, 247.
Ulatha, v. Valatha.
umbraculorum f., v. Tabernaculorum.
Ummidius Quadratus I, 960. II, 175.
universum creatum a deo I, 5. 410. 428. II, 334. - i dominus deus I, 12. 28. II, 323.
unus deus unorum Hebraeorum I, 229. 279.
Vologasus l. Vologesus I, 963. II, 412. 422.
Volumnius I, 811. 820. II, 124.
de voluntate hum. et fato quid statuant Pharisaei I, 871.
Vonones I, 874 sq.
votum Jephtae I, 298.
vox, foetus e ventre feminae edita I, 957. audita in templo II, 389.
urbes conditae I, 10.
Ure, u. I, 27.
Ures I, 223. 418.
Uria I, 380.
Urias I, 529.
usurae ap. Hebr. II, 499.
usus I, 24.
utile praeferendum decoro, ubi utrumque simul exsequi non licet II, 259 fin.
vulgus temere agere solet I, 843 fin.
uxores legitimae plures Roboamo I, 448. - ibus non licuit repudiare maritos I, 764 fin.
Uaeus I, 27.

X.

Xaloth vic. II, 21. 223.
Xanthicus I, 13.
Xerxes I, 559 sq.
Xylophoria, festum II, 194.
Xystus II, 186. 327. 381.

Z.

Zabelus I, 643.
Zabidus II, 477.
Zabuda I, 520.
Zabulon u. Jud., v. Chabulon. Galil. II, 201. 448.
Zacharias, r. I, 498. 500. vates I, 492. 557 sq. f. Baruchi cf. Matth. 23, 35. II, 288 sq. f. Phaleci II, 280. f. Amasiae I, 502.

Zamares I, 456.
Zamaris I, 829.
Zambrias I, 220 sq.
Zara u. I, 675.
Zaraeus I, 454.
Zebeca, v. Bezeca.
Zebes I, 294.
Zebinas, v. Alexander.
Zebulus I, 296.
Zeca, al. Azeca, u. I, 448.
Zelotae II, 275. 279. 286. 292. 423.
Zeno, Cotylas I, 657. II, 56.
Zenodorus I, 774 sq. II, 105.
Zephyrion pr. II, 115.
Zeugma u. II, 412.
Zeuxis I, 599.
Ζῆνος v. gr. etymol. I, 586.
Zimri, al. Zambrias I, 220.
Ziphene, - eni vic. I, 347. 448.
Zizus I, 673.
Zoara u. I, 684. II, 299.
Zodmielus I, 555.
Zohor, u. I, 35.
Zoïlus I, 666.
Zopyrion II, 458.
Zorobabelus I, 548. 550.

FL. JOSEPHI
JUDAEI
OPERA OMNIA.

TEXTUM EDIDIT

M. CAROL. ERNEST. RICHTER,
DIACONUS AD AED. ST. MARIAE ZWICKAVIENSIUM.

VOL. VI.

BELL. JUD. LIB. V—VII. CONTRA APION. LIB. I. II.
ET DE MACCAB. LIB. CONTINENS.

LIPSIAE
SUMTIBUS E. B. SCHWICKERTI.
1827.

BIBLIOTHECA SACRA

PATRUM ECCLESIAE GRAECORUM.

PARS I.

FL. JOSEPHI

JUDAEI

OPERA OMNIA.

VOL. VI.

LIPSIAE

SUMTIBUS E. B. SCHWICKERTI.

1827.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ 314 315

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ

Η

ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ΙΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ἉΛΩΣΕΩΣ ΛΟΓΟΣ Ε.

Argumentum Lib. V.

(1) Περὶ στασιαστῶν ἐν Ἱεροσολύμοις. (2) Οἵως Τίτος ἤει πρὸς τὰ Ἱεροσόλυμα. (3) Ὡς πάλιν ἔνδον Ἱεροσολύμων ἡ στάσις ἐγείρεται. (4) Ἱοροσολύμων ἔκφρασις. (5) Ἔκφρασις ἱεροῦ. (6) περὶ Σίμωνος καὶ Ἰωάννου τῶν τυράννων. Καὶ ὡς τοξεύεται Νικάνωρ, ὅθεν εἰς πολιορκίαν παροξύνεται ὁ Τίτος. (7) Ὡς μετὰ πολὺν φόνον ἐκράτησαν Ῥωμαῖοι τοῦ πρώτου τείχους, ὥς τε Τίτος τῷ δευτέρῳ τείχει προσβολὰς ἐποιεῖτο. Περί τε Λογγίνου τοῦ Ῥωμαίου καὶ Κάστορος τοῦ Ἰουδαίου. (8) Ὡς τὸ δεύτερον τεῖχος δὶς παρέλαβον οἱ Ῥωμαῖοι. (9) Ὅτι Τίτος πάλιν ὥρμησεν εἰς τὸ πολιορκεῖν, καὶ Ἰώσηπον ὑπέπεμψε διαλέγεσθαι τοῖς ὁμοφύλοις περὶ εἰρήνης. (10) Ὡς πολλοὶ τοῦ δήμου αὐτομολεῖν ὥρμησαν, οἷά τε λιμῷ οἱ μένοντες ἔπασχον. (11) Ὡς Ἰουδαῖοι πρὸ τοῦ τείχους ἀνεσταυροῦντο. Περὶ Ἀντιόχου τοῦ Ἐπιφανοῦς. (12) Τίτῳ ἐδόκει περιβόλῳ τὴν πόλιν κυκλῶσαι. (13) Φόνος ἐν Ἱεροσολύμοις γίνεται πολὺς καὶ ἱεροσυλία.

CAP. I. 1. Ὁ μὲν οὖν Τίτος, ὃν προειρήκαμεν 316
τρόπον, διοδεύσας τὴν ὑπὲρ Αἰγύπτου μέχρι Συρίας
ἐρημίαν, εἰς Καισάρειαν παρῆν, ταύτῃ διεγνωκὼς

προσυντάξασθαι τὰς δυνάμεις. Ἔτι δὲ αὐτοῦ κατὰ τὴν Ἀλεξάνδρειαν συγκαθισταμένου τῷ πατρὶ τὴν ἡγεμονίαν νέον αὐτοῖς ἐγκεχειρισμένην ὑπὸ τοῦ θεοῦ, συνέβη καὶ τὴν ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις στάσιν ἀνακμάσασαν τριμερῆ γενέσθαι, καὶ καθ᾽ αὑτοῦ θάτερον ἐπιστρέψαι μέρος, ὅπερ ἂν τις ὡς ἐν κακοῖς ἀγαθὸν εἴποι καὶ δίκης ἔργον. Ἡ μὲν γὰρ κατὰ τοῦ δήμου τῶν ζηλωτῶν ἐπίθεσις, ἥπερ κατῆρξεν ἁλώσεως τῇ πόλει, προδεδήλωται μετὰ ἀκριβείας, ὅθεν τε ἔφυ, καὶ πρὸς ὅσον κακὸν ἀνηυξήθη. Ταύτην δὲ οὐκ ἂν ἁμάρτοι τις εἰπὼν στάσει στάσιν ἐγγενέσθαι, καὶ καθάπερ θηρίον λυσσῆσαν ἐνδείᾳ τῶν ἔξωθεν ἐπὶ τὰς ἰδίας ἤδη σάρκας ὁρμᾶν.

2. Ἐλεάζαρος γὰρ ὁ τοῦ Σίμωνος, ὃς δὴ καὶ τὰ πρῶτα τοῦ δήμου τοὺς ζηλωτὰς ἀπέστησεν εἰς τὸ
317 τέμενος, ὡς ἀγανακτῶν δῆθεν ἐπὶ τοῖς ὁσημέραι τῷ Ἰωάννῃ τολμωμένοις, — οὐ γὰρ ἀνεπαύετο φονῶν οὗτος, — τὸ δὲ ἀληθὲς αὐτοῦ μεταγενεστέρῳ τυράννῳ μὴ φέρων ὑποτετάχθαι, πόθῳ τῶν ὅλων καὶ δυναστείας ἰδίας ἐπιθυμίᾳ διΐσταται, παραλαβὼν Ἰούδην τε τὸν Χελκία καὶ Σίμωνα τὸν Ἐζρῶνος τῶν δυνατῶν, πρὸς οἷς Ἐζεκίας ἦν Χωβαρὶ παῖς οὐκ ἄσημος. Καθ᾽ ἕκαστον δὲ οὐκ ὀλίγοι τῶν ζηλωτῶν ἠκολούθησαν, καὶ καταλαβόμενοι τὸν ἐνδότερον τοῦ νεῶ περίβολον, ὑπὲρ τὰς ἱερὰς πύλας ἐπὶ τῶν ἁγίων μετώπων τίθενται τὰ ὅπλα. Πλήρεις μὲν οὖν ἐπιτηδείων ὄντες ἐθάῤῥουν, — καὶ γὰρ ἀφθονία τῶν ἱερῶν ἐγένετο πραγμάτων, τοῖς γε μηδὲν ἀσεβὲς ἡγουμένοις, — ὀλιγότητι δὲ τῇ κατὰ σφᾶς ὀῤῥωδοῦντες, ἐγκαθισάμενοι τὰ ὅπλα κατὰ χώραν ἔμενον. Ὁ δὲ Ἰωάννης ὅσον ἀνδρῶν ὑπερεῖχε πλήθει, τοσοῦτον ἐλείπετο τῷ τόπῳ· καὶ κατὰ κορυφὴν ἔχων τοὺς πολεμίους, οὔτ᾽ ἀδεεῖς ἐποιεῖτο τὰς προσβολὰς, οὔτε δι᾽ ὀργὴν ἠρέμει. Κακούμενος δὲ πλέον, ἤπερ διατιθεὶς τοὺς περὶ τὸν Ἐλεάζαρον, ὅμως οὐκ ἀνίει· συνεχεῖς

δὲ ἐκδρομαὶ κατ' ἀλλήλων καὶ βελῶν ἀφέσεις ἐγίνοντο, καὶ φόνοις ἐμιαίνετο πανταχοῦ τὸ ἱερόν.

3. Ὁ δὲ τοῦ Γιώρα Σίμων, ὃν ἐν ταῖς ἀμηχανίαις ἐπίκλητον αὐτῷ τύραννον ἐλπίδι βοηθείας ὁ δῆμος προςηγάγετο, τήν τε ἄνω πόλιν ἔχων καὶ τῆς κάτω πολὺ μέρος, ἐῤῥωμενέστερον ἤδη τοῖς περὶ τὸν Ἰωάννην προςέβαλλεν, ὡς ἂν καὶ καθύπερθεν πολεμουμένοις. Ἦν δὲ ὑπὸ χεῖρα προςιὼν αὐτοῖς, ὥςπερ ἐκεῖνοι τοῖς ἄνωθεν. Καὶ τῷ Ἰωάννῃ, διχόθεν πολεμουμένῳ, συνέβαινε βλάπτεσθαί τε καὶ βλάπτειν εὐκόλως, καὶ καθόσον ἡττᾶτο τῶν ἀμφὶ τὸν Ἐλεάζαρον. ὢν ταπεινότερος, τοσοῦτον ἐπλεονέκτει ἐν ὑψηλῷ τοῦ Σίμωνος. Παρὸ καὶ χειρὶ μὲν τὰς κάτωθεν προςβολὰς εὐμαρῶς εἶργε, τοὺς δὲ ἄνωθεν ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ κατακοντίζοντας ἀνέστελλε τοῖς ὀργάνοις. Ὀξυβελεῖς τε γὰρ αὐτῷ καὶ καταπέλται παρῆσαν οὐκ ὀλίγοι καὶ λιθοβόλοι, δι' ὧν οὐ μόνον ἠμύνετο τοὺς πολεμοῦντας, ἀλλὰ καὶ πολλοὺς τῶν ἱερουργούντων ἀνῄρει. Καίπερ γὰρ πρὸς πᾶσαν ἀσέβειαν ἐκλελυσσηκότες, ὅμως τοὺς θύειν ἐθέλοντας εἰςηφίεσαν, μεθ' ὑποψιῶν μὲν καὶ φυλακῆς τοὺς ἐπιχωρίους προδιερευνώμενοι, τοὺς δὲ ξένους ἀδεέστερον, οἳ καὶ περὶ τὰς εἰςόδους δυςωπήσαντες αὐτῶν τὴν ὠμότητα παρανάλωμα τῆς στάσεως ἐγίνοντο· τὰ γὰρ ἀπὸ τῶν ὀργάνων βέλη μέχρι τοῦ βωμοῦ καὶ τοῦ νεὼ διὰ τὴν βίαν ὑπερφερόμενα, τοῖς τε ἱερεῦσι καὶ τοῖς ἱερουργοῦσιν ἐνέπιπτε. Καὶ πολλοὶ σπεύσαντες ἀπὸ γῆς περάτων, περὶ τὸν διώνυμον καὶ πᾶσιν ἀνθρώποις χῶρον ἅγιον, πρὸ τῶν θυμάτων ἔπεσον αὐτοὶ, καὶ τὸν Ἕλλησι πᾶσι καὶ βαρβάροις σεβάσμιον βωμὸν κατέσπεισαν ἰδίῳ φόνῳ. Νεκροῖς δὲ ἐπιχωρίοις ἀλλόφυλοι, καὶ ἱερεῦσι βέβηλοι συνεφύροντο, καὶ παντοδαπῶν αἷμα πτωμάτων ἐν τοῖς θείοις περιβόλοις ἐλιμνάζετο. Τί τηλικοῦτον, ὦ τλημονεστάτη πόλις, πέπονθας ὑπὸ Ῥωμαίων, οἵ σου τὰ ἐμφύλια μύση 318 περικαθαροῦντες εἰςῆλθον! Θεοῦ μὲν γὰρ οὔτε ἦς

ἔτι χῶρος, οὔτε μένειν ἐδύνασο, τάφος οἰκείων γενομένη σωμάτων, καὶ πολέμου τὸν ναὸν ἐμφυλίου ποιήσασα πολυάνδριον. Δύναιο δ' ἂν γενέσθαι πάλιν ἀμείνων, εἴγε ποτὲ τὸν πορθήσαντα Θεὸν ἐξιλάσῃ! Ἀλλὰ καθεκτέον γὰρ καὶ τὰ πάθη τῷ νόμῳ τῆς συγγραφῆς, ὡς οὐ κατολοφυρμῶν οἰκείων ὁ καιρὸς, ἀλλ' ἀφηγήσεως πραγμάτων. Δίειμι δὲ τὰ ἑξῆς ἔργα τῆς στάσεως.

4. Τριχῇ τῶν ἐπιβούλων τῆς πόλεως διῃρημένων, οἱ μὲν περὶ τὸν Ἐλεάζαρον, τὰς ἱερὰς ἀπαρχὰς διαφυλάσσοντες, κατὰ τοῦ Ἰωάννου τὴν μέθην ἔφερον. Οἱ δὲ σὺν τούτῳ διαρπάζοντες τοὺς δημότας, ἠγείροντο κατὰ τοῦ Σίμωνος. Ἦν δὲ καὶ ἐκείνῳ τροφὴ κατὰ τῶν στασιαστῶν ἡ πόλις. Ὁπότε μὲν οὖν ἀμφοτέρωθεν ἐπιχειροῖτο, τοὺς συνόντας ὁ Ἰωάννης ἀντέστρεφε, καὶ τοὺς μὲν ἐκ τῆς πόλεως ἀνιόντας ἀπὸ τῶν στοῶν βάλλων, τοὺς δὲ ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ κατακοντίζοντας ἠμύνετο τοῖς ὀργάνοις. Εἰ δὲ ἐλευθερωθείη ποτὲ τῶν καθύπερθεν ἐπικειμένων, — διανέπαυε δὲ αὐτοὺς πολλάκις μέθη τε καὶ κάματος, — ἀδεέστερον τοῖς περὶ τὸν Σίμωνα μετὰ πλειόνων ἐπεξέθεεν. Ἀεὶ δὲ ἐφ' ὅσον τρέψαιτο τῆς πόλεως, ὑπεμπίπρα τὰς οἰκίας σίτου μεστὰς καὶ παντοδαπῶν ἐπιτηδείων· τὸ δὲ αὐτὸ πάλιν ὑποχωροῦντος ἐπιὼν ὁ Σίμων ἔπραττεν, ὥςπερ ἐπίτηδες Ῥωμαίοις διαφθείροντες ἃ παρεσκευάσατο πρὸς πολιορκίαν ἡ πόλις, καὶ τὰ νεῦρα τῆς αὐτῶν ὑποκόπτοντες δυνάμεως. Συνέβη γοῦν τὰ μὲν περὶ τὸ ἱερὸν πάντα συμφλεγῆναι, καὶ μεσαίχμιον ἐρημίας γενέσθαι καὶ παρατάξεως τὴν πόλιν· κατακαῆναι δὲ πλὴν ὀλίγου πάντα τὸν σῖτον, ὃς ἂν αὐτοῖς οὐκ ἐπ' ὀλίγα διήρκεσεν ἔτη πολιορκουμένοις. Λιμῷ γοῦν ἑάλωσαν, ὅπερ ἥκιστα δυνατὸν ἦν, εἰ μὴ τοῦτον ἑαυτοῖς προπαρεσκεύασαν.

5. Πανταχόθεν δὲ τῆς πόλεως πολεμουμένης ὑπὸ τῶν ἐπιβούλων καὶ συγκλύδων, μέσος ὁ δῆμος

ὥσπερ μέγα σῶμα διεσπαράσσετο. Γηραιοὶ δὲ καὶ γυναῖκες ὑπ᾽ ἀμηχανίας τῶν εἴσω κακῶν ηὔχοντο Ῥωμαίοις, καὶ τὸν ἔξωθεν πόλεμον ἐπ᾽ ἐλευθερίᾳ τῶν οἰκείων κακῶν ἐκαραδόκουν. Κατάπληξις δὲ δεινὴ καὶ δέος ἦν τοῖς γνησίοις, καὶ οὔτε βουλῆς καιρὸς εἰς μεταβολὴν, οὔτε συμβάσεως ἐλπὶς οὔτε φυγῆς τοῖς ἐθέλουσιν. Ἐφρουρεῖτο γὰρ πάντα, καὶ, τὰ λοιπὰ στασιάζοντες, οἱ ἀρχιλησταὶ τοὺς εἰρηνικὰ Ῥωμαίοις φρονοῦντας, ἢ πρὸς αὐτομολίαν ὑπόπτους ὡς κοινοὺς πολεμίους ἀνῄρουν, καὶ μόνον ὡμονόουν τὸ φονεύειν τοὺς σωτηρίας ἀξίους. Καὶ τῶν μὲν μαχομένων ἀδιάλειπτος ἦν κραυγὴ, μεθ᾽ ἡμέραν τε καὶ νύκτωρ· δεινότεροι δὲ οἱ τῶν πενθούντων ὀδυρμοί. Ἀεὶ καὶ θρήνων μὲν αἰτίας ἐπαλλήλους αἱ συμφοραὶ προσέφερον, τὰς δὲ οἰμωγὰς ἐνέκλειεν ἡ κατάπληξις αὐτῶν. Φιμούμενοι δὲ τῷ γε πάθη τῷ φόβῳ μεμυκόσι τοῖς στεναγμοῖς ἐβασανίζοντο· καὶ οὔτε πρὸς τοὺς ζῶντας ἦν αἰδὼς ἔτι τοῖς προσήκουσιν, οὔτε πρόνοια τῶν ἀπολωλότων ταφῆς. Αἴτιον δὲ ἀμφοτέρων ἡ καθ᾽ ἑαυτὸν ἀπόγνωσις ἑκάστου· παρείθησαν γὰρ εἰς πάντα τὰς προθυμίας οἱ μὴ στασιάζοντες, ὡς ἀπολούμενοι πάντως ὅσον οὐδέπω. Πατοῦντες δὴ τοὺς νεκροὺς, ἐπ᾽ ἀλλήλοις σεσωρευμένους, οἱ στασιασταὶ συνεπλέκοντο, καὶ τὴν ἀπόνοιαν ἀπὸ τῶν ἐν ποσὶ πτωμάτων σπῶντες ἦσαν ἀγριώτεροι. Προσεξευρίσκοντες δὲ ἀεί τι καθ᾽ αὐτῶν ὀλέθριον, καὶ πᾶν τὸ δοχθὲν ἀφειδῶς δρῶντες, οὐδεμίαν οὔτε αἰκίας ὁδὸν οὔτε ὠμότητος παρέλιπον. Ἀμέλει Ἰωάννης τὴν ἱερὰν ὕλην εἰς πολεμιστηρίων κατασκευὴν ὀργάνων ἀπεχρήσατο. Δόξαν γάρ ποτε τῷ λαῷ καὶ τοῖς ἱερεῦσιν ὑποστηρίξαντας τὸν ναὸν εἴκοσι πήχεις προσυψῶσαι, κατάγει μὲν ἀπὸ τοῦ Λιβάνου μεγίστοις ἀναλώμασι καὶ πόνοις τὴν χρήσιμον ὕλην ὁ βασιλεὺς Ἀγρίππας, ξύλα θέας ἄξια τήν τε εὐθύτητα καὶ τὸ μέγεθος. Μεσολαβήσαντος δὲ τοῦ πολέμου τὸ ἔργον, ὁ Ἰωάννης τεμὼν αὐτὰ

πύργους κατεσκεύαζεν, ἐξαρκοῦν τὸ μῆκος εὗρὼν πρὸς
τοὺς ἀπὸ τοῦ καθύπερθεν ἱεροῦ μαχομένους· ἵστη-
σί τε προςαγαγὼν κατόπιν τοῦ περιβόλου, τῆς πρὸς
δύσιν ἐξέδρας ἄντικρυς, ᾗπερ καὶ μόνῃ δυνατὸν ἦν,
τῶν ἄλλων μερῶν βαθμοῖς πόῤῥωθεν διειλημμένων.

6. Καὶ ὁ μὲν τοῖς κατασκευασθεῖσιν ἐξ ἀσε-
βείας ὀργάνοις κρατήσειν ἤλπισε τῶν ἐχθρῶν· ὁ δὲ
θεὸς ἄχρηστον αὐτῷ τὸν πόνον ἀπέδειξε, πρὶν ἐπι-
στῆσαί τινα τῶν πύργων, Ῥωμαίους ἐπαγαγών. Ὁ
γὰρ δὴ Τίτος ἐπειδὴ τὰ μὲν συνήγαγε τῆς δυνάμεως
πρὸς αὐτὸν, τοῖς δὲ ἐπὶ Ἱεροσολύμων συναντᾶν ἐπέ-
στειλεν, ἐξήλαυνε τῆς Καισαρείας. Ἦν δὲ τρία μὲν
τὰ πρότερον αὐτοῦ τῷ πατρὶ συνδῃώσαντα τὴν Ἰου-
δαίαν τάγματα, καὶ τὸ πάλαι σὺν Κεστίῳ πταῖσαν
δωδέκατον, ὅπερ καὶ ἄλλως ἐπίσημον δι᾽ ἀνδρείαν
ὑπάρχον, τότε κατὰ μνήμην ὧν ἔπαθεν εἰς ἄμυναν
ᾔει προθυμότερον. Τούτων μὲν οὖν τὸ πέμπτον δι᾽
Ἀμμαοῦντος ἐκέλευσεν αὐτῷ συναντᾶν, καὶ διὰ Ἱε-
ριχοῦντος τὸ δέκατον ἀναβαίνειν. Αὐτὸς δὲ ἀνέζευξε
μετὰ τῶν λοιπῶν, πρὸς οἷς αἵ τε τῶν βασιλέων συμ-
μαχίαι πᾶσαι πλείους, καὶ συχνοὶ τῶν ἀπὸ τῆς Συ-
ρίας ἐπίκουροι συνῆλθον. Ἀνεπληρώθη δὲ καὶ τοῦ
τεσσάρων ταγμάτων, ὅσον Οὐεσπασιανὸς ἐπιλέξας,
Μουκιανῷ συνέπεμψεν εἰς Ἰταλίαν, ἐκ τῶν ἐπελθόν-
των μετὰ Τίτου. Δισχίλιοι μὲν γὰρ αὐτῷ τῶν ἀπ᾽
Ἀλεξανδρείας στρατευμάτων ἐπίλεκτοι, τρισχίλιοι δὲ
συνείποντο τῶν ἀπ᾽ Εὐφράτου φυλάκων, φίλων δὲ
δοκιμώτατος εὔνοιάν τε καὶ σύνεσιν Τιβέριος Ἀλέ-
ξανδρος, πρότερον μὲν αὐτὸς τὴν Αἴγυπτον διέπων,
τότε δὲ τῶν στρατευμάτων ἄρχων κριθεὶς ἄξιος, ἐξ
ὧν ἐδεξιώσατο πρῶτος ἐγειρομένην ἄρτι τὴν ἡγεμο-
320 νίαν, καὶ μετὰ πίστεως λαμπρᾶς ἐξ ἀδήλου τῇ τύ-
χῃ προςέθετο· σύμβουλός γε μὴν ταῖς τοῦ πολέμου
χρείαις, ἡλικίᾳ τε προέχων καὶ κατ᾽ ἐμπειρίαν
εἵπετο.

CAP. II. 1. Προσιόντι δὲ εἰς τὴν πολεμίαν Τίτῳ, προῆγον μὲν οἱ βασιλικοὶ, καὶ πᾶν τὸ συμμαχικὸν, ἐφ' οἷς ὁδοποιοὶ καὶ μετρηταὶ στρατοπέδων· ἔπειτα τὰ τῶν ἡγεμόνων σκευοφόρα, καὶ μετὰ τοὺς τούτων ὁπλίτας αὐτὸς, τούς τε ἄλλους ἐπιλέκτους καὶ τοὺς λογχοφόρους ἔχων· κατόπιν αὐτῷ τοῦ τάγματος ἱππικόν. Οὗτοι δὲ πρὸ τῶν μηχανημάτων, καὶ ἐπ' ἐκείνοις μετ' ἐπιλέκτων χιλίαρχοι καὶ σπειρῶν ἔπαρχοι. Μετὰ δὲ τούτους περὶ τὸν αἰετὸν αἱ σημαῖαι, καὶ ἔμπροσθεν οἱ σαλπιγκταὶ τῶν σημαιῶν· ἐπὶ δὲ τούτοις ἡ φάλαγξ, τὸ στίφος εἰς ἓξ πλατύνασα. Τὸ δὲ οἰκετικὸν ἑκάστου τάγματος ὀπίσω, καὶ πρὸ τούτων τὰ σκευοφόρα. Τελευταῖοι δὲ πάντων οἱ μίσθιοι, καὶ τούτων φύλακες οἱ οὐραγοί. Προάγων δὲ τὴν δύναμιν ἐν κόσμῳ, καθὰ Ῥωμαίοις σύνηθες, ἐμβάλλει διὰ τῆς Σαμαρείτιδος εἰς Γοφνὰ, κατειλημμένην τε πρότερον ὑπὸ τοῦ πατρὸς, καὶ τότε φρουρουμένην· ἔνθα μίαν ἑσπέραν αὐλισάμενος, ὑπὸ τὴν ἕω πρόεισι· καὶ διανύσας ἡμέρας σταθμὸν στρατοπεδεύεται κατὰ τὸν ὑπὸ Ἰουδαίων πατρίως Ἀκανθῶν αὐλῶνα καλούμενον, πρός τινι κώμῃ Γαβαθσαούλῃ καλουμένῃ, — σημαίνει δὲ τοῦτο λόφον Σαούλου, διέχοντα ἀπὸ τῶν Ἱεροσολύμων, ὅσον ἀπὸ τριάκοντα σταδίων. Ἀναλαβὼν τε ἐντεῦθεν ὅσον εἰς ἑξακοσίους τῶν ἐπιλέκτων ἱππέων, ᾔει τήν τε πόλιν περισκεψόμενος, ὅπως ὀχυρότητος ἔχοι, καὶ τὰ φρονήματα τῶν Ἰουδαίων, εἰ πρὸς τὴν ὄψιν αὐτοῦ, πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν, ὑποδείσαντες ἐνδοῖεν· πέπυστο γὰρ, ὅπερ ἦν ἀληθὲς, τοῖς στασιώδεσι καὶ λῃστρικοῖς τὸν δῆμον ὑποπεπτωκότα ποθεῖν μὲν εἰρήνην, ἀσθενέστερον δὲ ὄντα τῆς ἐπαναστάσεως ἠρεμεῖν.

2. Ἕως μὲν οὖν ὄρθιον ἱππάζετο τὴν λεωφόρον κατατείνουσαν πρὸς τὸ τεῖχος, οὐδεὶς προεφαίνετο τῶν πυλῶν· ἐπεὶ δὲ ἐκ τῆς ὁδοῦ πρὸς τὸν Ψήφινον πύργον ἀποκλίνας, πλάγιον ἦγε τὸ τῶν ἱπ-

πέων στῖφος, προπηδήσαντες ἐξαίφνης ἄπειροι, κατὰ τοὺς Γυναικείους καλουμένους πύργους διὰ τῆς ἀντικρὺ τῶν Ἑλένης μνημείων πύλης, διεκπαίουσι τῆς ἵππου, καὶ τοὺς μὲν ἔτι κατὰ τὴν ὁδὸν θέοντας ἀντιμέτωποι στάντες ἐκώλυσαν συνάψαι τοῖς ἐκκλίνασι, τὸν δὲ Τίτον ἀποτέμνονται σὺν ὀλίγοις. Τῷ δὲ πρόσω μὲν ἦν χωρεῖν ἀδύνατον, ἐκτετάφρευτο γὰρ
321 ἀπὸ τοῦ τείχους περὶ τὰς κηπείας ἅπαντα, κήποις τε ἐπικαρσίοις καὶ πολλοῖς ἕρκεσι διειλημμένα. Τὴν δὲ πρὸς τοὺς σφετέρους ἀναδρομὴν πλήθει τῶν ἐν μέσῳ πολεμίων ἀμήχανον ἑώρα· ὧν οἱ πολλοὶ μηδὲ γινώσκοντες τὸν τοῦ βασιλέως κίνδυνον, ἀλλ' οἰόμενοι συναναστραφῆναι καὶ ἐκείνοις ἀνέφευγον. Ὁ δὲ κατιδὼν, ὡς ἐν μόνῃ τῇ καθ' αὑτὸν ἀλκῇ κεῖται τὸ σώζεσθαι, τόν τε ἵππον ἐπιστρέφει, καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν ἐμβοήσας ἕπεσθαι, μέσοις ἐμπηδᾷ τοῖς πολεμίοις, διεκπαῖσαι πρὸς τοὺς σφετέρους βιαζόμενος. Ἔνθα δὴ μάλιστα πάρεστι νοεῖν, ὅτι καὶ πολέμων ῥοπαὶ καὶ βασιλέων κίνδυνοι μέλονται τῷ θεῷ. Τοσούτων γὰρ ἐπὶ τὸν Τίτον ἀφιεμένων βελῶν, μήτε κράνος ἔχοντα μήτε θώρακα, — προῆλθε γὰρ, ὡς ἔφην, οὐ πολεμιστὴς, ἀλλὰ κατάσκοπος, — οὐδὲν ἥψατο τοῦ σώματος, κενὰ δὲ, ὥςπερ ἐπίτηδες ἀστοχούντων, παρεῤῥοιζοῖτο πάντα. Τῷ δὲ ξίφει τοὺς κατὰ πλευρὸν ἀεὶ διαστέλλων, καὶ πολλοὺς τῶν ἀντιπροςώπων ἀνατρέπων, ἤλαυνεν ὑπὲρ τοὺς ἐριπωμένους τὸν ἵππον. Τῶν δὲ κραυγή τε ἦν πρὸς τὸ παράστημα τοῦ Καίσαρος, καὶ παρακέλευσις ὁρμᾶν ἐπ' αὐτόν· φυγὴ δὲ καὶ διαχωρισμὸς ἄθρους, καθ' οὓς ἐπελαύνων γένοιτο. Συνήπτοντο δὲ οἱ τοῦ κινδύνου μετέχοντες, κατὰ νῶτα καὶ κατὰ πλευρὰ νυσσόμενοι· μία γὰρ ἐλπὶς ἦν σωτηρίας ἑκάστῳ, τὸ συνεξανοίγειν τῷ Τίτῳ μὴ φθάσαντι κυκλωθῆναι. Δύο γοῦν τῶν ἀποτέρω τὸν μὲν σὺν τῷ ἵππῳ περισχόντες κατηκόντισαν, θάτερον δὲ καταπηδήσαντα διαφθείραντες τὸν ἵππον ἀπήγαγον· μετὰ δὲ τῶν λοιπῶν Τίτος ἐπὶ τὸ στρα-

τόπεδον διασώζεται. Τοῖς μὲν οὖν Ἰουδαίοις, πλεονεκτήσασι κατὰ τὴν πρώτην ἐπίθεσιν, ἐπήγειρε τὰς διανοίας ἄσκεπτος ἐλπὶς, καὶ πολὺ θάρσος αὐτοῖς εἰς τὸ μέλλον πρόςκαιρος ῥοπὴ προεξένει.

3. Καῖσαρ δὲ, ὡς αὐτῷ συνέμιξε διὰ νυκτὸς τὸ ἀπὸ τῆς Ἀμμαοῦντος τάγμα, μεθ᾽ ἡμέραν ἐκεῖθεν ἄρας ἐπὶ τὸν Σκοπὸν καλούμενον πρόςεισιν. Ἔνθεν ἥ τε πόλις ἤδη κατεφαίνετο, καὶ τὸ τοῦ ναοῦ μέγεθος ἔκλαμπρον, καθὰ τῷ βορείῳ κλίματι τῆς πόλεως χθαμαλὸς συνάπτων ὁ χῶρος ἐτύμως Σκοπὸς ὠνόμασται. Τῆς δὲ πόλεως σταδίους ἑπτὰ διέχων, ἐκέλευσε περιβάλλεσθαι στρατόπεδον τοῖς δύο τάγμασιν ὁμοῦ, τῷ δὲ πέμπτῳ ὀπίσω τούτων τρισὶ σταδίοις· κόπῳ γὰρ τῆς διὰ νυκτὸς πορείας τετριμμένους ἐδόκει σκέπης ἀξίους εἶναι, ὡς ἂν ἀδεέστερον τειχίσαιντο. Καταρχομένων δὲ ἄρτι τῆς δομήσεως, καὶ τὸ δέκατον τάγμα διὰ Ἱεριχοῦντος ἤδη παρῆν, ἔνθα καθῆστό τις ὁπλιτικὴ μοῖρα φρουροῦσα τὴν ἐμβολὴν, ὑπὸ Οὐεσπασιανοῦ προκατειλημμένην. Προςετέτακτο δὲ αὐτοῖς, ἓξ ἀπέχοντας τῶν Ἱεροσολύμων σταδίους στρατοπεδεύσασθαι κατὰ τὸ Ἐλαιῶν καλούμενον ὄρος, ὃ τῇ πόλει πρὸς ἀνατολὴν ἀντίκειται, μέσῃ φάραγγι βαθείᾳ διειργόμενον, ἣ Κεδρὼν ὠνόμασται.

4. Τῶν δὲ ἀνὰ τὸ ἄστυ συῤῥηγνυμένων ἀδια- 322
λείπτως, τότε πρῶτον ἀνέπαυσε τὴν ἐπ᾽ ἀλλήλοις ἔριν ὁ ἔξωθεν πόλεμος, ἐξαίφνης πολὺς ἐπελθὼν, καὶ μετ᾽ ἐκπλήξεως οἱ στασιασταὶ τοὺς Ῥωμαίους ἀφορῶντες, στρατοπεδευομένους τριχῇ, κακῆς ὁμονοίας κατήρχοντο, καὶ λόγον ἀλλήλοις ἐδίδοσαν, ‛τί μένοιεν ἢ τί παθόντες ἀνέχοιντο τρία ταῖς ἀναπνοαῖς αὐτῶν ἐπιφρασσόμενα τείχη; καὶ τοῦ πολέμου μετ᾽ ἀδείας ἀντιπολίζοντος ἑαυτὸν, οἱ δὲ ὥςπερ θεαταὶ καλῶν καὶ συμφόρων ἔργων καθέζοιντο τειχήρεις, τὼ χεῖρε καὶ τὰς πανοπλίας παρέντες. Κατ᾽ αὐτῶν ἄρα γεν-

ναῖοι μόνον ἡμεῖς, ἐξεβόησαν, Ῥωμαῖοι δὲ ἐκ τῆς ἡμετέρας στάσεως κερδήσουσιν ἀναιμωτὶ τὴν πόλιν.' Τούτοις ἀθροίζοντες ἀλλήλους παρεκρότουν, καὶ τὰς πανοπλίας ἁρπάσαντες αἰφνιδίως ἐπεκθέουσι τῷ δεκάτῳ τάγματι, καὶ διὰ τῆς φάραγγος ἀΐξαντες μετὰ κραυγῆς ἐξαισίου τειχιζομένοις προσπίπτουσι τοῖς Ῥωμαίοις. Οἱ δὲ πρὸς τὸ ἔργον διῃρημένοι, καὶ διὰ τοῦτο τὰ πολλὰ τεθεικότες τῶν ὅπλων, — οὔτε γὰρ θαρσεῖν τοὺς Ἰουδαίους πρὸς ἐκδρομὴν ὑπελάμβανεν, καὶ προθυμουμένων περισπασθήσεσθαι τὰς ὁρμὰς τῇ στάσει, — συνεταράχθησαν ἀδοκήτως, καὶ τῶν ἔργων ἀφέμενοί τινες μὲν ἀνεχώρουν εὐθέως, πολλοὶ δὲ ἐπὶ τὰ ὅπλα θέοντες, πρὶν ἐπιστραφῆναι πρὸς τοὺς ἐχθροὺς, ἐφονεύοντο παιόμενοι. Προσεγίνοντο δὲ τοῖς Ἰουδαίοις ἀεὶ πλείους, ἐπὶ τῷ κρατεῖν τοὺς πρώτους τεθαῤῥηκότες, καὶ τῶν ὄντων πολλαπλασίους ἐδόκουν σφίσι τε καὶ τοῖς πολεμίοις, δεξιᾷ τῇ τύχῃ χρώμενοι. Μάλιστα δὲ τοὺς ἐν ἔθει συντάξεως ὄντας, καὶ μετὰ κόσμου καὶ παραγγελμάτων πολεμεῖν εἰδότας, ἀταξία φθάσασα θορυβεῖ. Διὸ καὶ τότε προληφθέντες οἱ Ῥωμαῖοι ταῖς ἐμβολαῖς εἶκον· καὶ ὁπότε μὲν ἐπιστραφεῖεν οἱ καταλαμβανόμενοι, τοῦ τε δρόμου τοὺς Ἰουδαίους ἐπεῖχον, καὶ διὰ τὴν ὁρμὴν ἧττον φυλαττομένους ἐτίτρωσκον. Ἀεὶ δὲ πληθυούσης τῆς ἐκδρομῆς, μᾶλλον ταραττόμενοι τελευταῖον ἀπὸ τοῦ στρατοπέδου τρέπονται, καὶ ἐδόκει τότε κινδυνεῦσαι τὸ τάγμα πᾶν, εἰ μὴ Τίτος ἀγγελθέντος αὐτῷ διὰ τάχους ἐπεβοήθησε, καὶ πολλὰ ὀνειδίσας εἰς ἀνανδρίαν, ἐπιστρέφει μὲν τοὺς φεύγοντας, αὐτὸς δὲ πλαγίοις τοῖς Ἰουδαίοις προσπεσὼν, μεθ' ὧν ἧκεν ἐπιλέκτων, συχνοὺς μὲν ἀναιρεῖ, τιτρώσκει δὲ πλείους, τρέπεται δὲ πάντας καὶ συνωθεῖ κατὰ τῆς φάραγγος. Οἱ δὲ ἐν τῷ κατάντει πολλὰ κακωθέντες, ὡς διεξέπεσον, ἄντικρυς ἐπιστρέφονται, καὶ μέσην ἔχοντες τὴν χαράδραν τοῖς Ῥωμαίοις διεμάχοντο. Μέχρι μὲν δὴ μέσης ἡμέρας

οὕτως ἐπολέμουν· ὀλίγον δὲ ἀπὸ μεσημβρίας ἐκκλίνοντος ἤδη, Τίτος τοὺς μεθ' ἑαυτοῦ προςβοηθήσαντας, καὶ τοὺς ἀπὸ τῶν σπειρῶν τοῖς ἐκτρέχουσιν ἀντιπαρατάξας, τὸ λοιπὸν τάγμα πρὸς τὸν τειχισμὸν ἀνέπεμπεν εἰς τὴν ἀκρώρειαν.

5. Ἰουδαίοις δὲ τοῦτο ἐδόκει φυγὴ, καὶ τοῦ σκοποῦ κατασείσαντος τὸ ἱμάτιον, ὃς αὐτοῖς ἐπὶ τοῦ τείχους καθῆστο, προπηδῶσι πλῆθος ἀκραιφνέστερον μετὰ τοσαύτης ὁρμῆς, ὡς τὸν δρόμον αὐτῶν τοῖς ἀγριωτάτοις εἰκάζειν θηρίοις. Ἀμέλει τῶν παραταχθέντων οὐδεὶς ἔμεινε τὴν ἐμβολὴν, ἀλλ' ὥςπερ ἐξ ὀργάνου παιόμενοι διέῤῥηξαν τὴν τάξιν, καὶ πρὸς τὸ ὄρος τραπέντες ἀνέφευγον. Λείπεται δὲ ἐν μέσῳ τῷ προςάντει Τίτος μετ' ὀλίγων, καὶ πολλὰ παραινούντων τῶν φίλων, ὅσοι δι' αἰδῶ τὴν πρὸς τὸν ἡγεμόνα τοῦ κινδύνου καταφρονήσαντες ἔστησαν, ‘εἶξαι θανατῶσιν Ἰουδαίοις, καὶ μὴ προκινδυνεύειν τούτων, οὓς ἐχρῆν πρὸ αὐτοῦ μένειν, λαμβάνειν δὲ ἔννοιαν τῆς καθ' αὐτὸν τύχης, καὶ μὴ, στρατιώτου τάξιν ἀποπληροῦντα, καὶ τοῦ πολέμου καὶ τῆς οἰκουμένης δεσπότην, ὀξεῖαν οὕτω ὑφίστασθαι τροπὴν, ἐν ᾧ σαλεύει τὰ πάντα,’ τούτων οὐδὲ ἀκούειν ἔδοξε, τοῖς δὲ κατ' αὐτὸν ἀνατρέχουσιν ἀνθίσταται, καὶ κατὰ στόμα παίων βιαζομένους ἀνῄρει, κατά τε τοῦ πρανοῦς ἀθρόοις ἐμπίπτων ἀνεώθει τὸ πλῆθος. Οἱ δὲ πρός τε τὸ παράστημα καὶ τὴν ἰσχὺν καταπλαγέντες, οὐδὲ οὕτω μὲν ἀνέφευγον εἰς τὴν πόλιν, καθ' ἑκάτερον δὲ ἐγκλίνοντες ἀπ' αὐτοῦ τοῖς ἀνωτέρω φεύγουσι προςέκειντο. Καὶ τούτοις δὲ κατὰ πλευρὰν προςβάλλων, τὰς ὁρμὰς ὑπετέμνετο. Καὶ ἐν τούτῳ καὶ τοῖς ἄνω τειχίζουσιν τὸ στρατόπεδον, ὡς ἐθεάσαντο τοὺς κάτω φεύγοντας, πάλιν ἐμπίπτει ταραχὴ καὶ δέος, καὶ διασκίδναται πᾶν τὸ τάγμα· δοκούντων ἀνυπόστατον μὲν εἶναι τὴν τῶν Ἰουδαίων ἐκδρομὴν, τετράφθαι δὲ αὐτὸν Τίτον, οὐ γὰρ ἄν ποτε τοὺς ἄλλους φυγεῖν ἐκείνου μένοντος. Καὶ κα-

θάπερ πανικῷ δείματι κυκλωθέντες, ἄλλος ἀλλαχῇ διεφέροντο, μέχρι τινὲς κατιδόντες ἐν μέσῳ τοῦ πολέμου τὸν ἡγεμόνα στρεφόμενον, καὶ μέγα δείσαντες ἀμφ᾽ αὐτῷ, διαβοῶσι τὸν κίνδυνον ὅλῳ τῷ τάγματι. Τοὺς δὲ αἰδὼς ἐπέστρεφε, καὶ πλεῖόν τι φυγῆς κακίζοντες ἀλλήλους ἐπὶ τῷ καταλιπεῖν Καίσαρα, πάσῃ βίᾳ κατὰ τῶν Ἰουδαίων ἐχρῶντο, καὶ κλίναντας ἅπαξ ἀπὸ τοῦ κατάντους συνώθουν αὐτοὺς εἰς τὸ κοῖλον. Οἱ δὲ ὑπὸ πόδα χωροῦντες ἐμάχοντο, καὶ πλεονεκτοῦντες οἱ Ῥωμαῖοι τῷ καθύπερθεν εἶναι συνελαύνουσι πάντας εἰς τὴν φάραγγα. Προσέκειτο δὲ τοῖς καθ᾽ αὐτὸν ὁ Τίτος, καὶ τὸ μὲν τάγμα πάλιν ἐπὶ τὴν τειχοποιΐαν ἔπεμψεν. Αὐτὸς δὲ σὺν οἷς πρότερον ἀντιστὰς εἶργε τοὺς πολεμίους, ὥςτε, εἰ χρὴ μήτε θεραπείᾳ τι προςτιθέντα, μήτε ὑφελόντα φθόνῳ τὸ ἀληθὲς εἰπεῖν, αὐτὸς Καῖσαρ δὶς μὲν ἐῤῥύσατο κινδυνεῦον ὅλον τὸ τάγμα, καὶ τοῦ περιβάλλεσθαι δὲ τὸ στρατόπεδον αὐτοῖς ἄδειαν παρέσχε.

824 *CAP. III.* 1. Λωφήσαντος δὲ πρὸς βραχὺ τοῦ θύραθεν πολέμου, πάλιν ἔνδον ἡ στάσις ἐπηγείρετο, καὶ τῆς τῶν ἀζύμων ἐνστάσης ἡμέρας τεσσαρεςκαιδεκάτῃ Ξανθικοῦ μηνὸς, ἐν ᾗ δοκοῦσιν Ἰουδαῖοι τὸν πρῶτον ἀπαλλαγῆναι καιρὸν Αἰγυπτίων, οἱ μὲν περὶ τὸν Ἐλεάζαρον, παρανοίγοντες τὰς πύλας, ἐδέχοντο ἐκ τοῦ δήμου τοὺς προςκυνεῖν ἐθέλοντας εἴσω. Ἰωάννης δὲ προκάλυμμα τῆς ἐπιβουλῆς ποιησάμενος τὴν ἑορτὴν, τῶν σὺν αὐτῷ κρυπτοῖς ὅπλοις ἐνσκευάσας τοὺς ἀσημοτέρους, ὧν οἱ πλείους ἦσαν ἄναγνοι, διὰ σπουδῆς παρειςπέμπει προκαταληψομένους τὸ ἱερόν. Οἱ δὲ, ὡς ἔνδον ἐγένοντο, τὰς ἐσθῆτας ἀποῤῥίψαντες, ἐφάνησαν ἐξαπίνης ὁπλῖται. Ταραχὴ δὲ μεγίστη περὶ τὸν ναὸν αὐτίκα καὶ θόρυβος ἦν, τοῦ μὲν ἔξω τῆς στάσεως λαοῦ, κατὰ πάντων ἄκριτον οἰομένων εἶναι τὴν ἐπίθεσιν, τῶν δὲ ζηλωτῶν ἐπὶ σφίσι

μόνοις. Ἀλλ' οἱ μὲν ἀφέμενοι τὸ φρουρεῖν ἔτι τὰς πύλας, καὶ τῶν ἐπάλξεων καταπηδήσαντες πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν, εἰς τοὺς ὑπονόμους τοῦ ἱεροῦ κατέφυγον· οἱ δὲ ἀπὸ τοῦ δήμου πρὸς τῷ βωμῷ καταπτήσσοντες, καὶ περὶ τὸν ναὸν συνειλούμενοι κατεπατοῦντο, ξύλοις τε ἀνέδην παιόμενοι καὶ σιδήρῳ. Πολλοὺς δὲ τῶν ἡσυχίων κατ' ἔχθραν καὶ μῖσος ἴδιον ὡς ἀντιστασιαστὰς ἀνῄρουν οἱ διάφοροι· καὶ πᾶς ὁ προςκρούσας τινὶ τῶν ἐπιβούλων πάλαι, τηνικαῦτα ἐπιγνωσθεὶς, ὡς ζηλωτὴς πρὸς αἰκίαν ἀνήγετο. Πολλὰ δὲ δεινὰ τοὺς ἀναιτίους διαθέντες ἐκεχειρίαν τοῖς αἰτίοις ἔδοσαν, καὶ προελθόντας ἐκ τῶν ὑπονόμων διΐεσαν. Αὐτοὶ δὲ καὶ τὸ ἐνδότερον ἱερὸν κατασχόντες καὶ τὰς ἐν αὐτῷ παρασκευὰς πάσας, κατεθάῤῥουν ἤδη τοῦ Σίμωνος. Ἡ μὲν οὖν στάσις, οὕτω τριμερὴς οὖσα πρότερον, εἰς δύο μοίρας περιΐσταται.

2. Ὁ δὲ Τίτος ἔγγιον ἀπὸ τοῦ Σκοποῦ τῇ πόλει στρατοπεδεύσασθαι προαιρούμενος, πρὸς μὲν τοὺς ἐκτρέχοντας ἔστησεν, ἐπιλέξας ἱππέων τε καὶ πεζῶν ὅσους ἀρκέσειν ὑπελάμβανε· τῇ δὲ ὅλῃ δυνάμει προςέταξεν ἐξομαλίζειν τὸ μέχρι τοῦ τείχους διάστημα. Καταβληθέντος δὲ παντὸς ἕρκους καὶ περιφράγματος, ὅσα κήπων προανεστήσαντο καὶ δένδρων οἱ οἰκήτορες, ὕλης τε ἡμέρου τῆς μεταξὺ πάσης ἐκκοπείσης, ἀνεπλήσθη μὲν τὰ κοῖλα, καὶ χαραδρώδη τοῦ τόπου. Τὰς δὲ πετρώδεις ἐξοχὰς σιδήρῳ κατεργαζόμενοι, χθαμαλὸν ἐποίουν πάντα τὸν χῶρον ἀπὸ τοῦ Σκοποῦ μέχρι τῶν Ἡρώδου μνημείων, ἃ προςεῖχε τῇ τῶν Ὄφεων ἐπικαλουμένῃ κολυμβήθρᾳ.

3. Καὶ κατ' αὐτὰς τὰς ἡμέρας οἱ Ἰουδαῖοι 325
κατὰ τῶν Ῥωμαίων ἐνέδραν συσκευάζονται τοιάνδε. Τῶν στασιαστῶν οἱ μὲν τολμηρότεροι προελθόντες ἔξω τῶν Γυναικείων καλουμένων πύργων, ὡς ἐκβεβλημένοι δῆθεν ὑπὸ τῶν εἰρηνικὰ φρονούντων, καὶ δεδοικότες τὴν τῶν Ῥωμαίων ἔφοδον ἀνειλοῦντο, καὶ

παρ' ἀλλήλοις ὑπέπτησσον. Οἱ δὲ διαστάντες ἐπὶ τοῦ τείχους δῆμος εἶναι δοκῶν, εἰρήνην ἐβόων, καὶ δεξιὰν ἠτοῦντο, καὶ τοὺς Ῥωμαίους ἐκάλουν, ἀνοίξειν ὑπισχνούμενοι τὰς πύλας. Ἅμα δὲ ταῦτα κεκραγότες, καὶ τοὺς σφετέρους ἔβαλλον λίθοις, ὡς ἀπελαύνοντες τῶν πυλῶν. Καὶ ἐκεῖνοι βιάζεσθαι τὰς εἰςόδους ὑπεκρίνοντο, καὶ τοὺς ἔνδον ἱκετεύειν, συνεχῶς τε πρὸς τοὺς Ῥωμαίους ὁρμήσαντες, ἐπιστρεφόμενοι ταραττομένοις προςεῴκεσαν. Παρὰ μὲν οὖν τοῖς στρατιώταις τὸ πανοῦργον αὐτῶν οὐκ ἐλείπετο πίστεως· ἀλλ' ὡς τοὺς μὲν ἐν χερσὶν ἔχοντες ἑτοίμους πρὸς τιμωρίαν, τοὺς δὲ ἀνοίξειν τὴν πόλιν ἐλπίζοντες, ἐχώρουν ἐπὶ τὴν πρᾶξιν. Τίτῳ δὲ δι' ὑποψίας ἦν τὸ τῆς ἐπικλήσεως παράλογον· καὶ γὰρ πρὸ μιᾶς ἡμέρας προκαλούμενός αὐτοὺς ἐπὶ συμβάσεις διὰ τοῦ Ἰωσήπου, μέτριον οὐδὲν εὕρισκε, καὶ τότε τοὺς στρατιώτας κατὰ χώραν μένειν ἐκέλευσεν. Ἔφθασαν δέ τινες τῶν ἐπὶ τοῖς ἔργοις προτεταγμένων ἁρπάσαντες τὰ ὅπλα πρὸς τὰς πύλας ἐκδραμεῖν. Τούτοις οἱ μὲν ἐκβεβλῆσθαι δοκοῦντες τὸ πρῶτον ὑπεχώρουν· ἐπεὶ δὲ μεταξὺ τῶν τῆς πύλης ἐγίνοντο πύργων, ἐκθέοντες ἐκυκλοῦντο σφᾶς, καὶ προςέκειντο κατόπιν. Οἱ δὲ ἀπὸ τοῦ τείχους πλῆθος χερμάδων καὶ βελῶν παντοίων ἄθρουν κατέχεαν, ὥςτε συχνοὺς μὲν ἀνελεῖν, τρῶσαι δὲ πλείστους· ἦν γὰρ οὐ ῥάδιον τοῦ τείχους διαφυγεῖν τῶν κατόπιν βιαζομένων, καὶ ἄλλως αἰδὼς τῆς διαμαρτίας τῶν ἡγεμόνων καὶ δέος παρεκελεύετο τῷ πταίσματι προςλιπαρεῖν. Διὸ δὴ μέχρι πλείστου διαδορατιζόμενοι, καὶ πολλὰς ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων λαμβάνοντες πληγὰς, ἀμέλει δὲ οὐκ ἐλάττους ἀντιδιδόντες, τέλος ἀνωθοῦσι τοὺς κυκλωσαμένους· ὑποχωροῦσι δὲ αὐτοῖς οἱ Ἰουδαῖοι καὶ μέχρι τῶν Ἑλένης μνημείων εἵποντο βάλλοντες.

4. Ἔπειτα οἱ μὲν ἀπειροκάλως ἐξυβρίζοντες εἰς τὴν τύχην, ἔσκωπτόν τε τοὺς Ῥωμαίους δελεασθέντας ἀπάτῃ, καὶ τοὺς θυρεοὺς ἀνασείοντες ἐσκίρ-

των, καὶ μετὰ χαρᾶς ἀνεβόων. Τοὺς δὲ στρατιώτας ἀπειλή τε τῶν ταξιαρχῶν, καὶ χαλεπαίνων Καῖσαρ ἐξεδέχετο. ‛Ἰουδαῖοι μὲν, οἷς ἀπόνοια μόνη στρατηγεῖ, πάντα μετὰ προνοίας πράττουσι καὶ σκέψεως, ἐπιβουλάς τε συντάσσοντες καὶ λόχους, ἕπεται δὲ αὐτῶν ταῖς ἐνέδραις καὶ τύχη, διὰ τὸ πειθήνιον καὶ τὴν πρὸς ἀλλήλους εὔνοιάν τε καὶ πίστιν. Ῥωμαῖοι δὲ, οἷς δι᾽ εὐταξίαν καὶ τὸ πρὸς τοὺς ἡγεμόνας εὐπειθὲς ἀεὶ δουλεύει καὶ τύχη, νῦν ὑπὸ τῶν ἐναντίων πταίουσι, καὶ διὰ χειρῶν ἀκρασίαν ἁλίσκονται, τὸ πάντων αἴσχιστον, ἀστρατήγητοι μαχόμενοι παρόντος Καίσαρος. Ἦ μεγάλα μὲν στενάξειν, ἔφη, τοὺς τῆς στρατιᾶς νόμους, μεγάλα δὲ αὐτοῦ τὸν πατέρα τήνδε τὴν πληγὴν πυθόμενον, εἴ γε ὁ μὲν ἐν πολέμοις γηράσας οὐδέποτε ἔπταισεν οὕτως, οἱ νόμοι δὲ ἀεὶ καὶ τοὺς βραχύ τι τῆς τάξεως παρακινήσαντας θανάτῳ κολάζουσι. Νῦν δὲ ὅλην στρατιὰν ἑωράκασι λειποτακτεῖν· γνώσεσθαί γε μὴν αὐτίκα τοὺς ἀπαυθαδισαμένους, ὅτι καὶ τὸ νικᾶν παρὰ Ῥωμαίοις δίχα παραγγέλματος ἀδοξεῖται.᾽ Τοιαῦτα διατεινάμενος πρὸς τοὺς ἡγεμόνας, δῆλος ἦν κατὰ πάντων χρῆσθαι τῷ νόμῳ. Καὶ οἱ μὲν παρείθησαν τὰς ψυχὰς, ὡς ὅσον οὐδέπω τεθνηξόμενοι δικαίως· περιχυθέντα δὲ τὰ τάγματα τῷ Τίτῳ περὶ τῶν συστρατιωτῶν ἱκέτευε, καὶ ‛τὴν ὀλίγων προπέτειαν χαρίσασθαι τῇ πάντων εὐπειθείᾳ κατηντιβόλουν· ἀναλήψεσθαι γὰρ αὐτοὺς τὸ παρὸν πταῖσμα ταῖς εἰς τὸ μέλλον ἀρεταῖς.᾽ 326

5. Πείθεται Καῖσαρ ἅμα ταῖς τε ἱκεσίαις καὶ τῷ συμφέροντι. Τὴν μὲν γὰρ καθ᾽ ἑνὸς τιμωρίαν ᾤετο χρῆναι μέχρις ἔργου προκόπτειν· τὴν δὲ ἐπὶ πλήθους, μέχρι λόγου. Τοῖς μὲν οὖν στρατιώταις διηλλάττετο, πολλὰ νουθετήσας αὖθις εἶναι φρονιμωτέρους. Αὐτὸς δὲ ὅπως ἀμύνηται τὴν Ἰουδαίων ἐσκόπει ἐπιβουλήν. Τέσσαρσι δὲ ἡμέραις ἐξισωθέντος τοῦ μέχρι τῶν τειχῶν διαστήματος, βουλόμενος

μετὰ ἀσφαλείας τάς τε ἀποσκευὰς καὶ τὸ λοιπὸν πλῆθος παραγαγεῖν, τὸ καρτερώτατον τῆς δυνάμεως ἀντιπαρεξέτεινε τῷ τείχει κατὰ τὸ βόρειον κλίμα καὶ πρὸς ἑσπέραν ἐφ' ἑπτὰ βαθύνας τὴν φάλαγγα, τῶν τε πεζῶν προτεταγμένων, καὶ κατόπιν τῶν ἱππέων τριστοίχων ἑκατέρων, ἕβδομοι κατὰ μέσον εἱστήκεσαν οἱ τοξόται. Τοσούτῳ δὲ στίφει πεφραγμένων Ἰουδαίοις τῶν ἐκδρομῶν, τά τε ὑποζύγια τῶν τριῶν ταγμάτων καὶ ἡ πληθὺς ἀδεῶς παρώδευσεν. Αὐτὸς μὲν οὖν Τίτος ἀπέχων ὅσον εἰς σταδίους δύο τοῦ τείχους, κατὰ τὸ γωνιαῖον αὐτοῦ μέρος, ἀντικρὺ τοῦ Ψηφίνου καλουμένου πύργου στρατοπεδεύεται, πρὸς ὃν ὁ κύκλος τοῦ τείχους, πρὸς ἄρκτον καθήκων, ἀνακάμπτει πρὸς δύσιν. Ἡ δὲ ἑτέρα μοῖρα τῆς στρατιᾶς κατὰ τὸν Ἱππικὸν προσαγορευθέντα πύργον τειχίζεται, διεστῶσα τῆς πόλεως ὁμοίως δύο σταδίους. Τὸ μέντοι δέκατον τάγμα κατὰ χώραν ἐπὶ τοῦ Ἐλαιῶν ὄρους ἔμενε.

CAP. IV. 1. Τρισὶ δὲ ὠχυρωμένη τείχεσιν ἡ πόλις, καθὰ μὴ ταῖς ἀβάτοις φάραγξιν ἐκυκλοῦτο, — ταύτῃ γὰρ εἷς ἦν περίβολος, — αὐτὴ μὲν ὑπὲρ δύο λόφων ἀντιπρόσωπος ἔκτιστο, μέσῃ φάραγγι διῃρη-
327 μένων, εἰς ἣν ἐπάλληλοι κατέληγον αἱ οἰκίαι. Τῶν δὲ λόφων ὁ μὲν τὴν ἄνω πόλιν ἔχων, ὑψηλότερος πολλῷ, καὶ τὸ μῆκος ἰθύτερος ἦν· διὰ γοῦν τὴν ὀχυρότητα, φρούριον μὲν ὑπὸ Δαβίδου τοῦ βασιλέως ἐκαλεῖτο, — πατὴρ Σολομῶνος ἦν οὗτος, τοῦ πρώτου τὸν νεὼν κτίσαντος, — ἡ δὲ ἄνω ἀγορὰ πρὸς ἡμῶν. Ἅτερος δὲ ὁ καλούμενος Ἄκρα, καὶ τὴν κάτω πόλιν ὑφεστὼς, ἀμφίκυρτος. Τούτου δὲ ἀντικρὺ τρίτος ἦν λόφος, ταπεινότερός τε φύσει τῆς Ἄκρας, καὶ πλατείᾳ φάραγγι διειργόμενος ἄλλῃ πρότερον. Αὖθίς γε μὴν καθ' οὓς οἱ Ἀσαμωναῖοι χρόνους ἐβασίλευον, τήν τε φάραγγα ἔχωσαν, συνάψαι βουλόμενοι τῷ ἱερῷ τὴν πόλιν, καὶ τῆς Ἄκρας κατεργα-

*σάμενοι τὸ ὕψος ἐποιήσαντο χθαμαλώτερον, ὡς ὑπερ-
φαίνοιτο καὶ ταύτῃ τὸ ἱερόν. Ἡ δὲ τῶν Τυροποι-
ῶν προσαγορευομένη φάραγξ, ἣν ἔφαμεν τόν τε τῆς
ἄνω πόλεως καὶ τὸν κάτω λόφον διαστέλλειν, καθή-
κει μέχρι Σιλωάμ· οὕτω γὰρ τὴν πηγήν, γλυκεῖάν τε
καὶ πολλὴν οὖσαν, ἐκαλοῦμεν. Ἔξωθεν δὲ οἱ τῆς
πόλεως δύο λόφοι βαθείαις φάραγξι περιείχοντο,
καὶ διὰ τοὺς ἑκατέρωθεν κρημνοὺς προσιτὸν οὐδα-
μόθεν ἦν.*

2. *Τῶν δὲ τριῶν τειχῶν τὸ μὲν ἀρχαῖον διά
τε τὰς φάραγγας, καὶ τὸν ὑπὲρ τούτων λόφον, ἐφ'
οὗ κατεσκεύαστο, δυςάλωτον ἦν· πρὸς δὲ τῷ πλεο-
νεκτήματι τοῦ τόπου, καὶ καρτερῶς ἐδεδόμητο, Δα-
βίδου τε καὶ Σολομῶνος, ἔτι δὲ τῶν μεταξὺ τούτων
βασιλέων, φιλοτιμηθέντων περὶ τὸ ἔργον. Ἀρχόμενον
δὲ κατὰ βοῤῥᾶν ἀπὸ τοῦ Ἱππικοῦ καλουμένου πύρ-
γου, καὶ διατεῖνον ἐπὶ τὸν Ξυστὸν λεγόμενον, ἔπειτα
τῇ βουλῇ συνάπτον, ἐπὶ τὴν ἑσπέριον τοῦ ἱεροῦ στο-
ὰν ἀπηρτίζετο. Κατὰ θάτερον δὲ πρὸς δύσιν, ἀπὸ
τοῦ αὐτοῦ μὲν ἀρχόμενον χωρίου, διὰ δὲ τοῦ Βηθ-
σὼ καλουμένου κατατεῖνον ἐπὶ τὴν Ἐσσηνῶν πύλην,
καὶ ἔπειτα πρὸς νότον ὑπὲρ τὴν Σιλωὰμ ἐπιστρέφον* 328
*πηγήν, ἔνθεν τε πάλιν ἐκκλῖνον πρὸς ἀνατολὴν ἐπὶ
τὴν Σολομῶνος κολυμβήθραν, καὶ διῆκον μέχρι χώ-
ρου τινός, ὃν καλοῦσιν Ὀφλάν, τῇ πρὸς ἀνατολὴν
στοᾷ τοῦ ἱεροῦ συνῆπται. Τὸ δὲ δεύτερον τὴν μὲν
ἀρχὴν ἀπὸ πύλης εἶχεν, ἣν Γενναθ ἐκάλουν, τοῦ
πρώτου τείχους οὖσαν, κυκλούμενον δὲ τὸ προσάρ-
κτιον κλίμα μόνον ἀνῄει μέχρι τῆς Ἀντωνίας. Τῷ
τρίτῳ δὲ ἦν ἀρχὴ ὁ Ἱππικὸς πύργος, ὅθεν μέχρι
τοῦ βορείου κλίματος κατατεῖνον ἐπὶ τὸν Ψήφινον
πύργον, ἔπειτα καθῆκον ἀντικρὺ τῶν Ἑλένης μνη-
μείων, — Ἀδιαβηνὴ βασιλὶς ἦν αὕτη, Ἰζάτου βα-
σιλέως μήτηρ, — καὶ διὰ σπηλαίων βασιλικῶν μη-
κυνόμενον ἐκάμπτετο μὲν γωνιαίῳ πύργῳ κατὰ τὸ
τοῦ Γναφέως προσαγορευόμενον μνῆμα· τῷ δὲ ἀρ-*

χαίῳ περιβόλῳ συνάπτον εἰς τὴν Κεδρῶνα καλουμένην φάραγγα κατέληγεν. Τοῦτο τῇ προςκτισθείσῃ πόλει περιέθηκεν Ἀγρίππας, ἥπερ ἦν πᾶσα γυμνή· πλήθει γὰρ ὑπερχεομένη, κατὰ μικρὸν ἐξεῖρπε τῶν περιβόλων, καὶ τοῦ ἱεροῦ τὰ προςάρκτια πρὸς τῷ λόφῳ συμπολίζοντες, ἐπ᾽ οὐκ ὀλίγον προῆλθον, καὶ τέταρτον περιοικηθῆναι λόφον, ὃς καλεῖται Βεζεθὰ, κείμενος μὲν ἀντικρὺ τῆς Ἀντωνίας, ἀποτεμνόμενος δὲ ὀρύγματι βαθεῖ, — διεταφρεύθη γὰρ ἐπίτηδες, — ὡς μὴ τῷ λόφῳ συνάπτοντες οἱ θεμέλιοι τῆς Ἀντωνίας εὐπρόςιτοί τε εἶεν, καὶ ἧττον ὑψηλοί. Διὸ δὴ καὶ πλεῖστον ὕψος τοῖς πύργοις προςεδίδου τὸ βάθος τῆς τάφρου· ἐπιχωρίως δὲ ἐκλήθη Βεζεθὰ τὸ νεόκτιστον μέρος, ὃ μεθερμηνευόμενον Ἑλλάδι γλώσσῃ καινὴ λέγοιτ᾽ ἂν πόλις. Δεομένων οὖν τῶν ταύτῃ σκέπης, ὁ πατὴρ τοῦ νῦν βασιλέως, καὶ ὁμώνυμος Ἀγρίππας, ἄρχεται μὲν οὗ προείπομεν τείχους· δείσας δὲ Κλαύδιον Καίσαρα, μὴ τὸ μέγεθος τῆς κατασκευῆς ἐπὶ νεωτερισμῷ πραγμάτων ὑπονοήσῃ καὶ στάσεως, παύεται θεμελίους μόνον βαλόμενος. Καὶ γὰρ οὐδ᾽ ἂν ἦν ἁλώσιμος ἡ πόλις, εἰ προέκοπτε τὸ τεῖχος, ὡς ἤρξατο· λίθοις μέν γε εἰκοσιπήχεσι τὸ μῆκος, καὶ τὸ εὖρος δεκαπήχεσι συνηρμόζετο, μήθ᾽ ὑπορυγῆναι σιδήρῳ ῥᾳδίως, μήθ᾽ ὑπ᾽ ὀργάνοις διασεισθῆναι δυναμένοις· δέκα πήχεις αὐτὸ τὸ τεῖχος ἐπλατύνετο, καὶ τὸ ὕψος πλεῖον μὲν ἂν, ὡς εἰκὸς, ἔσχε, μὴ διακωλυθείσης τῆς τοῦ καταρξαμένου φιλοτιμίας. Αὖθις δὲ, καίτοι μετὰ σπουδῆς ἐγειρόμενον ὑπὸ Ἰουδαίων, εἰς εἴκοσι πήχεις ἀνέστη· καὶ διπήχεις μὲν τὰς ἐπάλξεις, τριπήχεις δὲ τοὺς προμαχῶνας εἶχεν, ὡς τὸ πᾶν ὕψος εἰς εἰκοσιπέντε πήχεις ἀνατετάσθαι.

3. *Τοῦ δὲ τείχους ὑπερεῖχον οἱ πύργοι πήχεις εἴκοσι μὲν εἰς εὖρος, εἴκοσι δὲ εἰς ὕψος, τετράγωνοί τε καὶ πλήρεις, ὥςπερ αὐτὸ τὸ τεῖχος, ὄντες· ἥ γε μὴν ἁρμονία καὶ τὸ κάλλος τῶν λίθων οὐ-*

δὲν ἀπέδει ναοῦ. Μετὰ δὲ τὸ ναστὸν ὕψος τῶν 329
πύργων, ὅπερ ἦν εἰκοσίπηχυ, πολυτελεῖς ἦσαν οἶκοι, καὶ καθύπερθεν ὑπερῷα, δεξάμεναί τε πρὸς τὰς τῶν ὑετῶν ὑποδοχὰς ἐκεῖ πλεῖσται, καὶ πλατεῖαι καθ᾽ ἕκαστον ἄνοδοι. Τοιούτους μὲν οὖν πύργους τὸ τρίτον τεῖχος εἶχεν ἐνενήκοντα, τὰ δὲ μεταπύργια τούτων, ἀνὰ πήχεις διακοσίους· τὸ δὲ μέσον εἰς τεσσαραςκαίδεκα πύργους, τὸ δὲ ἀρχαῖον εἰς ἑξήκοντα μεμέριστο. Τῆς πόλεως δὲ ὁ πᾶς κύκλος σταδίων ἦν τριάκοντα τριῶν· θαυμασίου δὲ ὄντος ὅλου τοῦ τρίτου τείχους, θαυμασιώτερος ἀνεῖχε κατὰ γωνίαν βόρειός τε καὶ πρὸς δύσιν ὁ ψήφινος πύργος, καθ᾽ ὃν ἐστρατοπεδεύσατο Τίτος. Ἐπὶ γὰρ ἑβδομήκοντα πήχεις ὑψηλὸς ὢν, Ἀραβίαν τε ἀνίσχοντος ἡλίου παρεῖχεν ἀφορᾶν, καὶ μέχρι θαλάττης τὰ τῆς Ἑβραίων κληρουχίας ἔσχατα· ὀκτάγωνος δὲ ἦν. Τούτου δὲ ἄντικρυς ὁ Ἱππικὸς, καὶ παρ᾽ αὐτὸν δύο κατεσκευάσθησαν ὑπὸ Ἡρώδου τοῦ βασιλέως ἐν τῷ ἀρχαίῳ τείχει· μέγεθός τε καὶ κάλλος ἦσαν καὶ ὀχυρότητα τῶν κατὰ τὴν οἰκουμένην διάφοροι· πρὸς γὰρ τῷ φύσει μεγαλοψύχῳ, καὶ τῇ περὶ τὴν πόλιν φιλοτιμίᾳ, τὴν ὑπεροχὴν τῶν ἔργων ὁ βασιλεὺς πάθεσιν οἰκείοις ἐχαρίζετο, καὶ τρισὶ τοῖς ἡδίστοις προςώποις, ἀφ᾽ ὧν ὠνόμασε τοὺς πύργους, ἀδελφῷ καὶ φίλῳ καὶ γυναικὶ, τὴν μνήμην ἀνέθηκε· τὴν μὲν, ὡς προειρήκαμεν, κτείνας δι᾽ ἔρωτα, τοὺς δὲ ἀποβαλὼν ἐν πολέμῳ γενναίως ἀγωνισαμένους. Ὁ μὲν οὖν Ἱππικὸς, ἀπὸ τοῦ φίλου προσαγορευθεὶς, τετράγωνος μὲν ἦν, εὖρος δὲ καὶ μῆκος εἴκοσι καὶ πέντε πηχῶν ἕκαστος καὶ ὕψος τριάκοντα, οὐδαμοῦ διάκενος. Ὑπὲρ δὲ τὸ πλῆρες, καὶ ταῖς πέτραις συνηνωμένον, εἰς ἐκδοχὴν τῶν ὄμβρων εἰκοσίπηχυς λάκκος ἦν τὸ βάθος. Ἐπάνω δὲ τούτου δίστεγος οἶκος ἦν, εἴκοσι καὶ πέντε πηχῶν τὸ ὕψος, εἰς ποικίλα τε διῃρημένος, ὑπὲρ ὃν τύρσεις μὲν διπήχεις, προμαχῶνες δὲ περιβέβληντο τριπήχεις· ὡς τὸ πᾶν ὕψος εἰς ὀγδοή-

κοντα πήχεις συναριθμεῖσθαι. Ὁ δὲ δεύτερος πύργος, ὃν ὠνόμασεν ἀπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Φασάηλον, τὸ μὲν πλάτος καὶ τὸ μῆκος ἴσον εἶχε, τεσσαράκοντα πηχῶν ἕκαστον, ἐπὶ τεσσαράκοντα δὲ ἦν τὸ ναστὸν αὐτοῦ ὕψος. Ἐπάνω δὲ αὐτοῦ περιῄει στοὰ δεκαπήχης τὸ ὕψος, θωρακίοις τε καὶ προβόλοις σκεπομένη. Μέσην δὲ ὑπερῳκοδόμητο τὴν στοὰν πύργος ἕτερος, εἴς τε οἴκους πολυτελεῖς, καὶ δὴ καὶ βαλανεῖον διῃρημένος, ὡς μηδὲν ἐνδέοι τῷ πύργῳ βασίλειον δοκεῖν. Τὰ δὲ ἄκρα τοῖς προμαχῶσι καὶ ταῖς τύρσεσι μᾶλλον, ἤπερ ὁ πρὸ αὐτοῦ,
330 κεκόσμητο. Πηχῶν δὴ τὸ πᾶν ὕψος ὡς ἐνενήκοντα, καὶ τὸ μὲν σχῆμα παρεῴκει τῷ κατὰ τὴν Φάρον ἐκπυρσεύοντι τοῖς ἐπ' Ἀλεξανδρείας πλέουσι, τῇ περιοχῇ δὲ πολὺ μεῖζον ἦν· τηνικαῦτά γε μὴν τυραννεῖον ἀπεδείχθη τοῦ Σίμωνος. Ὁ δὲ τρίτος πύργος ἡ Μαριάμμη, τοῦτο γὰρ ἡ βασιλὶς ἐκαλεῖτο, μέχρι μὲν εἴκοσι πηχῶν ναστὸς ἦν, εἴκοσι δὲ πήχεις εὖρος διέβαινε καὶ μῆκος ἴσον. Πολυτελεστέραν δὲ καὶ ποικιλωτέραν τῶν ἄλλων τὴν οἴκησιν εἶχεν ἐπάνω· τοῦ βασιλέως οἰκεῖον ὑπολαβόντος, τὸν ἀπὸ γυναικὸς ὀνομασθέντα κεκοσμῆσθαι πλέον, ἢ τοὺς ἀπ' ἀνδρῶν, ὥςπερ ἐκείνους τοῦ τῆς γυναικὸς ὀχυρωτέρους. Τούτου τὸ πᾶν ὕψος πεντήκοντα καὶ πέντε πηχῶν ἦν.

4. Τηλικοῦτοι δὲ ὄντες οἱ τρεῖς τὸ μέγεθος, πολὺ μείζονες ἐφαίνοντο διὰ τὸν τόπον· αὐτό τε γὰρ τὸ ἀρχαῖον τεῖχος, ἐν ᾧ ἦσαν, ἐφ' ὑψηλῷ λόφῳ δεδόμητο, καὶ τοῦ λόφου καθάπερ κορυφή τις ὑψηλοτέρα προανεῖχεν εἰς τριάκοντα πήχεις, ὑπὲρ ἣν οἱ πύργοι κείμενοι πολύ δή τι τοῦ μετεώρου προςελάμβανον. Θαυμάσιον δὲ καὶ τῶν λίθων ἦν τὸ μέγεθος· οὐ γὰρ ἐξ εἰκαίας χερμάδος, οὐδὲ φορητῶν ἀνθρώποις πετρῶν συνειστήκεσαν, λευκὴ δὲ μάρμαρος ἐτμήθη· καὶ τὸ μὲν μῆκος ἑκάστης πηχῶν ἦν εἴκοσι, δέκα δὲ εὖρος, καὶ βάθος πέντε. Συνήνωντο δ' ἐπ' ἀλλήλοις, ὡς δοκεῖν ἕκαστον πύργον μίαν εἶναι πέ-

τραν ἀναπεφυκυῖαν, ἔπειτα δὲ περιεξέσθαι χερσὶ τεχνιτῶν εἰς σχῆμα καὶ γωνίας· οὕτως οὐδαμόθεν ἡ συνάφεια τῆς ἁρμονίας διεφαίνετο. Κειμένοις δὲ πρὸς ἄρκτον αὐτοῖς ἔνδοθεν ἡ τοῦ βασιλέως αὐλὴ προσέζευκτο, παντὸς λόγου κρείσσων· οὔτε γὰρ πολυτελείας, οὔτε κατασκευῆς τινος ἔλιπεν ὑπερβολὴ, ἀλλὰ τετείχιστο μὲν ἅπασα τριάκοντα πήχεις τὸ ὕψος, κύκλῳ κατ' ἴσον διάστημα κεκοσμημένοις δὲ πύργοις διείληπτο, ἀνδρῶσί τε μεγίστοις, καὶ εἰς ξενῶνας ἑκατοντατρικλίνους· ἐν οἷς ἀδιήγητος μὲν ἡ ποικιλία τῶν λίθων ἦν· συνῆκτο γὰρ πολὺς ὁ πανταχοῦ σπάνιος. Θαυμασταὶ δ' ὀροφαὶ, μήκει τε δοκῶν καὶ λαμπρότητι προκοσμημάτων. Οἴκων δὲ πλῆθος, καὶ διαφοραὶ σχημάτων περὶ τούτους μυρίαι· πᾶσί γε μὴν ἀποσκευαὶ πλήρεις, καὶ τὰ πλείω τῶν ἐν ἑκάστοις κειμένων ἐξ ἀργύρου τε καὶ χρυσοῦ. Περίστοα δὲ δι' ἀλλήλων ἐν κύκλῳ πολλὰ, καὶ στύλοι πρὸς ἑκάστῳ διάφοροι· τά γε μὴν τούτων ὕπαιθρα πανταχοῦ χλοερά. Καὶ ποικίλαι μὲν ὗλαι, μακροὶ δὲ δι' αὐτῶν περίπατοι, καὶ περὶ τούτους εὔριποι βαθεῖς δεξαμεναί τε πολλαχοῦ χαλκουργημάτων περίπλεοι, δι' ὧν τὸ ὕδωρ ἐξεχεῖτο, καὶ πολλοὶ περὶ τὰ νάματα πύργοι πελειάδων ἡμέρων. Ἀλλὰ γὰρ οὐθ' ἑρμηνεῦσαι δυνατὸν ἀξίως τὰ βασίλεια, καὶ φέρει βάσανον ἡ μνήμη, τὰς τοῦ λῃστρικοῦ πυρὸς δαπάνας ἀναφέρουσα· οὐ γὰρ ταῦτα Ῥωμαῖοι κατέφλεξαν, ἀλλ' ὑπὸ τῶν ἔνδον ἐπιβούλων, ὡς προειρήκαμεν, ἐν ἀρχῇ τῆς ἀποστάσεως. Καὶ ἀπὸ μὲν τῆς
Ἀντωνίας ἤρξατο τὸ πῦρ, μετέβη δ' ἐπὶ τὰ βασι- 331
λεια, καὶ τῶν τριῶν πύργων τὰς στέγας ἐπενεμήθη.

CAP. V. 1. Τὸ δὲ ἱερὸν ἵδρυτο μὲν, ὥσπερ ἔφην, ἐπὶ λόφου καρτεροῦ· κατ' ἀρχὰς δὲ μόλις ἐξήρκει τὸ ἀνωτάτω χθαμαλὸν αὐτοῦ τῷ τε ναῷ καὶ τῷ βωμῷ. Τὰ γὰρ πέριξ ἀπόκρημνος ἦν καὶ κατάντης· τοῦ δὲ βασιλέως Σολομῶνος, ὃς δὴ καὶ τὸν ναὸν ἔ-

ἔκτισε, τὸ κατ' ἀνατολὰς μέρος ἐκτειχίσαντος, εἶτ' ἐτέθη μία στοὰ τῷ χώματι· καὶ κατά γε τὰ λοιπὰ μέρη γυμνὸς ὁ ναὸς ἦν. Τοῖς δὲ ἑξῆς αἰῶσιν, ἀεί τι τοῦ λαοῦ προςχωννύντος, ἀνισούμενος ὁ λόφος ηὐρύνετο. Διακόψαντες δὲ καὶ τὸ προςάρκτιον τεῖχος, τοσοῦτον προςέλαβον ὅσον ὕστερον ἐπεῖχεν ὁ τοῦ παντὸς ἱεροῦ περίβολος. Τειχίσαντες δὲ ἐκ ῥίζης τριχῇ κύκλῳ τὸν λόφον, καὶ μεῖζον ἐλπίδος ἐκπονήσαντες ἔργον, — εἰς ὃ μακροὶ μὲν ἐξανηλώθησαν αἰῶνες αὐτοῖς, καὶ οἱ ἱεροὶ δὲ θησαυροὶ πάντες, οὓς ἀνεπίμπλασαν οἱ παρὰ τῆς οἰκουμένης δασμοὶ πεμπόμενοι τῷ θεῷ, — τούς τε ἄνω περιβόλους, καὶ τὸ κάτω ἱερὸν ἀμφεδείμαντο. Τούτου τὸ ταπεινότατον ἀπὸ τριακοσίων ἀνετειχίσαντο πηχῶν, κατὰ δέ τινας τόπους ἐκ πλείονος. Οὐ μέντοι πᾶν τὸ βάθος ἐφαίνετο τῶν θεμελίων· ἐπὶ πολὺ γὰρ ἔχωσαν τὰς φάραγγας, ἀνισοῦν βουλόμενοι τοὺς στενωποὺς τοῦ ἄστεως. Πέτραι δὲ τεσσαρακονταπήχεις τὸ μέγεθος ἦσαν τοῦ δομήματος· ἥ τε γὰρ δαψίλεια τῶν χρημάτων, καὶ ἡ τοῦ λαοῦ φιλοτιμία λόγου μείζονας ἐποιεῖτο τὰς ἐπιβολὰς, καὶ τὸ μηδὲ ἐλπισθὲν ἕξειν πέρας, ἐπὶ μονῇ καὶ χρόνοις ἦν ἀνύσιμον.

2. Ἦν δὲ ἄξια τῶν τοιούτων θεμελίων καὶ τὰ ὑπὲρ αὐτῶν ἔργα· διπλαῖ μὲν γὰρ αἱ στοαὶ πᾶσαι, κίονες δὲ αὐταῖς εἰκοσιπέντε πηχῶν τὸ ὕψος ὑφεστήκεσαν, μονόλιθοι λευκοτάτης μαρμάρου, κεδρίνοις δὲ φατνώμασιν ὠρόφοντο. Τούτων ἡ μὲν φυσικὴ πολυτέλεια, καὶ τὸ εὔξεστον, καὶ τὸ ἁρμόνιον παρεῖχε θεωρίαν ἀξιόλογον· οὐδενὶ δὲ ἔξωθεν οὔτε ζωγραφίας οὔτε γλυφίδος ἔργῳ προςηγλάϊστο. Καὶ πλατεῖαι μὲν ἦσαν ἐπὶ τριάκοντα πήχεις· ὁ δὲ πᾶς κύκλος αὐτῶν εἰς ἓξ σταδίους συνεμετρεῖτο περιλαμβανομένης καὶ τῆς Ἀντωνίας. Τὸ δὲ ὕπαιθρον ἅπαν πεποίκιλτο παντοδαπῶν λίθων κατεστρωμένον. Διὰ τούτου προϊόντων ἐπὶ τὸ δεύτερον ἱερὸν δρύφακτος περιβέβλητο λίθινος, τρίπηχυς μὲν ὕψος, πάνυ δὲ

χαριέντως διειργασμένος· ἐν αὐτῷ δ' εἱστήκεσαν ἐξ
ἴσου διαστήματος στῆλαι, τὸν τῆς ἁγνείας προση- 332
μαίνουσαι νόμον, αἱ μὲν Ἑλληνικοῖς, αἱ δὲ Ῥω-
μαϊκοῖς γράμμασι, μὴ δεῖν ἀλλόφυλον ἐντὸς τοῦ ἁ-
γίου παριέναι· τὸ γὰρ δεύτερον ἱερὸν, ἅγιον ἐκα-
λεῖτο. *Καὶ* τεσσαρεςκαίδεκα μὲν βαθμοῖς ἦν ἀνα-
βατὸν ἀπὸ τοῦ πρώτου, τετράγωνον δὲ ἄνω καὶ τεί-
χει περιπεφραγμένον ἰδίῳ· τούτου τὸ μὲν ἔξωθεν
ὕψος, καίπερ τεσσαράκοντα πηχῶν ὑπάρχον, ὑπὸ
τῶν βαθμῶν ἐκαλύπτετο, τὸ δὲ ἔνδον εἴκοσι καὶ
πέντε πηχῶν ἦν· πρὸς γὰρ ὑψηλοτέρῳ δεδομημένου
βαθμοῖς, οὐκέτι ἦν ἅπαν εἴσω καταφανὲς καλυπτό-
μενον ὑπὸ τοῦ λόφου. *Μετὰ* δὲ τοὺς δεκατέσσαρας
βαθμοὺς τὸ μέχρι τοῦ τείχους διάστημα πηχῶν ἦν
δέκα, πᾶν ἰσόπεδον. Ἔνθεν ἄλλοι πάλιν πεντέβαθ-
μοι κλίμακες ἀνῆγον ἐπὶ τὰς πύλας, αἳ ἀπὸ μὲν ἄρκ-
του καὶ μεσημβρίας ὀκτὼ, καθ' ἑκάτερον τέσσαρες,
δύο δ' ἦσαν ἐξ ἀνατολῆς κατ' ἀνάγκην. *Διατετειχι-*
σμένου γὰρ κατὰ τοῦτο τὸ κλίμα ταῖς γυναιξὶν ἰδίου
πρὸς θρησκείαν χώρου, ἔδει δευτέραν εἶναι πύλην·
τέτμητο δὲ αὕτη τῆς πρώτης ἄντικρυς. *Καὶ* ἐκ τῶν
ἄλλων κλιμάτων, μία μεσημβρινὴ πύλη, καὶ μία βό-
ρειος, δι' ἧς εἰς τὴν γυναικωνῖτιν εἰςῆγον· κατὰ
γὰρ τὰς ἄλλας οὐκ ἐξῆν παρελθεῖν γυναιξὶν, ἀλλ'
οὐδὲ κατὰ τὴν σφετέραν ὑπερβῆναι τὸ διατείχισμα.
Ἀνεῖτό γε μὴν ταῖς τε ἐπιχωρίοις καὶ ταῖς ἔξωθεν
ὁμοφύλοις ἐν ἴσῳ πρὸς θρησκείαν ὁ χῶρος. *Τὸ* δὲ
πρὸς δύσιν μέρος οὐκ εἶχε πύλην, ἀλλὰ διηνεκὲς ἐδε-
δόμητο ταύτῃ τὸ τεῖχος. *Αἱ* στοαὶ δὲ μεταξὺ τῶν
πυλῶν ἀπὸ τοῦ τείχους, ἔνδον ἐστραμμέναι πρὸ τῶν
γαζοφυλακίων, σφόδρα μὲν καλοῖς καὶ μεγάλοις ἀνεί-
χοντο κίοσιν· ἦσαν δὲ ἁπλαῖ, καὶ πλὴν τοῦ μεγέθους
τῶν κάτω κατ' οὐδὲν ἀπελείποντο.

3. *Τῶν* δὲ πυλῶν αἱ μὲν ἐννέα χρυσῷ καὶ ἀρ-
γύρῳ κεκαλυμμέναι πανταχόθεν ἦσαν, ὁμοίως τε
παραστάδες καὶ τὰ ὑπέρθυρα· μία δὲ ἡ ἔξωθεν τοῦ

νεὼ Κορινθίου χαλκοῦ, πολὺ τῇ τιμῇ τὰς καταργύρους καὶ περιχρύσους ὑπεράγουσα. Καὶ δύο μὲν ἑκάστου πυλῶνος θύραι, τριάκοντα δὲ πηχῶν τὸ ὕψος ἑκάστης, καὶ τὸ πλάτος ἦν πεντεκαίδεκα· μετὰ μέντοι τὰς εἰσόδους ἐνδοτέρω πλατυνόμενοι παρ᾽ ἑκάτερον τριάκοντα πήχεις ἐξέδρας εἶχον εὖρός τε καὶ μῆκος πυργοειδεῖς, ὑψηλαὶ δὲ ὑπὲρ τεσσαράκοντα
333 πήχεις. Δύο δ᾽ ἀνεῖχον ἑκάστην κίονες, δώδεκα πηχῶν τὴν περιοχὴν ἔχοντες. Καὶ τῶν μὲν ἄλλων ἴσον ἦν τὸ μέγεθος· ἡ δὲ ὑπὲρ τὴν Κορινθίαν ἀπὸ τῆς γυναικωνίτιδος ἐξ ἀνατολῆς ἀνοιγομένη τῆς τοῦ ναοῦ πύλης ἀντικρὺ, πολὺ μείζων· πεντήκοντα γὰρ πηχῶν οὖσα τὴν ἀνάστασιν, τεσσαράκοντα πήχεις τὰς θύρας εἶχε, καὶ τὸν κόσμον πολυτελέστερον, ἐπὶ δαψιλὲς πάχος ἀργύρου τε καὶ χρυσοῦ· τοῦτο δὲ ταῖς ἐννέα πύλαις ἐπέχεεν ὁ Τιβερίου πατὴρ Ἀλέξανδρος. Βαθμοὶ δὲ δεκαπέντε πρὸς τὴν μείζονα πύλην ἀπὸ τοῦ τῶν γυναικῶν διατειχίσματος ἀνῆγον· τῶν γὰρ κατὰ τὰς ἄλλας πέντε βαθμῶν ἦσαν βραχύτεροι.

4. Αὐτὸς δ᾽ ὁ ναὸς, κατὰ μέσον κείμενος, τὸ ἅγιον ἱερὸν, δώδεκα βαθμοῖς ἦν ἀναβατός· καὶ τὸ μὲν κατὰ πρόσωπον ὕψος τε καὶ εὖρος ἴσον, ἀνὰ πήχεις ἑκατὸν, κατόπιν δὲ τεσσαράκοντα πήχεσι στενότερος· ἔμπροσθεν γὰρ ὥσπερ ὦμοι παρ᾽ ἑκάτερον εἰκοσιπήχεις διέβαινον. Ἡ πρώτη δὲ αὐτοῦ πύλη, πηχῶν ἑβδομήκοντα τὸ ὕψος οὖσα, καὶ εὖρος εἴκοσι καὶ πέντε, θύρας οὐκ εἶχε· τοῦ γὰρ οὐρανοῦ τὸ ἀφανὲς καὶ ἀδιάκλειστον ἐνέφαινε· κεχρύσωτο δὲ τὰ μέτωπα πάντα, καὶ δι᾽ αὐτῆς ὅ τε πρῶτος οἶκος ἔσωθεν ἅπας κατεφαίνετο, μέγιστος ὢν, καὶ τὰ περὶ τὴν εἴσω πύλην πάντα λαμπόμενα χρυσῷ τοῖς ὁρῶσιν ὑπέπιπτεν. Τοῦ δὲ ναοῦ ὄντος εἴσω διστέγου, μόνος ὁ πρῶτος οἶκος προέκειτο, καὶ διηνεκὲς εἰς τὸ ὕψος, ἀνατεινόμενος μὲν ἐπὶ ἐνενήκοντα πήχεις, μηκυνόμενος δὲ ἐπὶ πεντήκοντα, καὶ διαβαίνων ἐπὶ εἴκοσιν. Ἡ δὲ διὰ τοῦ οἴκου πύλη κεχρύσωτο μὲν,

ὡς ἔφην, πᾶσα, καὶ ὅλος περὶ αὐτὴν τεῖχος· εἶχε δὲ καὶ τὰς χρυσᾶς ὑπὲρ αὐτῆς ἀμπέλους, ἀφ' ὧν βότρυες ἀνδρομήκεις κατεκρέμαντο. Ὄντος δὲ ἤδη τοῦ ναοῦ διστέγου, ταπεινοτέρα τῆς ἔξωθεν ὄψεως ἡ ἔνδον ἦν, καὶ θύρας εἶχε χρυσᾶς πεντηκονταπέντε πηχῶν τὸ ὕψος, εὖρος δ' ἑκκαίδεκα. Πρὸ δὲ τούτων ἰσόμηκες καταπέτασμα, πέπλος ἦν Βαβυλώνιος, ποικιλτὸς ἐξ ὑακίνθου, καὶ βύσσου, κόκκου τε καὶ πορφύρας, θαυμαστῶς μὲν εἰργασμένος, οὐκ ἀθεώρητον δὲ τῆς ὕλης τὴν κρᾶσιν ἔχων, ἀλλ' ὥςπερ εἰκόνα τῶν ὅλων· ἐδόκει γὰρ αἰνίττεσθαι τῇ κόκκῳ μὲν τὸ πῦρ, τῇ βύσσῳ δὲ τὴν γῆν, τῇ δὲ ὑακίνθῳ τὸν ἀέρα, καὶ τῇ πορφύρᾳ τὴν θάλασσαν· τῶν μὲν ἐκ τῆς χρόας ὁμοιουμένων, τῆς δὲ βύσσου καὶ τῆς πορφύρας διὰ τὴν γένεσιν, ἐπειδὴ τὴν μὲν ἀναδίδωσιν ἡ γῆ, τὴν δὲ ἡ θάλασσα. Κατεγέγραπτο δὲ ὁ πέπλος πᾶσαν τὴν οὐράνιον θεωρίαν, πλὴν τῶν ζωδίων.

5. Παριόντας δ' εἴσω τὸ ἐπίπεδον τοῦ ναοῦ μέρος ἐξεδέχετο. Τούτου τοίνυν τὸ μὲν ὕψος ἑξή- 334
κοντα πηχῶν, καὶ τὸ μῆκος ἴσον, εἴκοσι δὲ πηχῶν τὸ πλάτος ἦν. Τὸ δὲ ἑξηκοντάπηχυ πάλιν διῄρητο· καὶ τὸ μὲν πρῶτον μέρος, ἀποτετμημένον ἐπὶ τεσσαράκοντα πήχεις, εἶχεν ἐν αὐτῷ τρία θαυμασιώτατα καὶ περιβόητα πᾶσιν ἀνθρώποις ἔργα, λυχνίαν, τράπεζαν, θυμιατήριον. Ἐνέφαινον δὲ οἱ μὲν ἑπτὰ λύχνοι τοὺς πλανήτας· τοσοῦτοι γὰρ ἀπ' αὐτῆς διῄρηντο τῆς λυχνίας. Οἱ δὲ ἐπὶ τῆς τραπέζης ἄρτοι δώδεκα, τόν τε ζωδιακὸν κύκλον, καὶ τὸν ἐνιαυτόν. Τὸ θυμιατήριον δὲ διὰ τῶν τριςκαίδεκα θυμιαμάτων, οἷς ἐκ θαλάσσης ἀνεπίμπλατο, τῆς τ' ἀοικήτου καὶ οἰκουμένης ἐσήμαινεν, ὅτι τοῦ θεοῦ πάντα καὶ τῷ θεῷ. Τὸ δ' ἐνδοτάτω μέρος εἴκοσι μὲν ἦν πηχῶν· διείργετο δὲ ὁμοίως καταπετάσματι πρὸς τὸ ἔξωθεν. Ἔκειτο δὲ οὐδὲν ὅλως ἐν αὐτῷ, ἄβατον δὲ καὶ ἄχραντον καὶ ἀθέατον ἦν πᾶσιν, ἁγίου δὲ ἅγιον

ἐκαλεῖτο. Περὶ δὲ τὰ πλευρὰ τοῦ κάτω ναοῦ, δι' ἀλλήλων ἦσαν οἶκοι τρίστεγοι πολλοὶ, καὶ παρ' ἑκάτερον εἰς αὐτοὺς ἀπὸ τῆς πύλης εἴσοδοι. Τὸ δὲ ὑπερῷον μέρος, τούτους μὲν οὐκ ἔτ' εἶχε τοὺς οἴκους, παρόσον ἦν καὶ στενότερον, ὑψηλότερον δ' ἐπὶ τεσσαράκοντα πήχεις, καὶ λιτότερον τοῦ κάτω· συνάγεται γὰρ οὕτω πρὸς ἑξήκοντα τοῖς τοῦ ἐπιπέδου πηχῶν ἑκατὸν τὸ πᾶν ὕψος.

6. Τὸ δ' ἔξωθεν αὐτοῦ πρόσωπον οὐδὲν οὔτε εἰς ψυχῆς, οὔτε εἰς ὀμμάτων ἔκπληξιν ἀπέλιπε· πλαξὶ γὰρ χρυσοῦ στιβαραῖς κεκαλυμμένος πάντοθεν, ὑπὸ τὰς πρώτας ἀνατολὰς πυρωδεστάτην ἀπέπαλλεν αὐγὴν, καὶ τῶν βιαζομένων ἰδεῖν τὰς ὄψεις ὥςπερ ἡλιακαῖς ἀκτῖσιν ἀπέστρεφε. Τοῖς γε μὴν εἰςαφικνουμένοις ξένοις πόῤῥωθεν ὅμοιος ὄρει χιόνος πλήρει κατεφαίνετο· καὶ γὰρ καθὰ μὴ κεχρύσωτο λευκότατος ἦν. Κατὰ κορυφὴν δὲ χρυσέους ὀβελοὺς ἀνεῖχε τεθηγμένους, ὡς μή τινι προςκαθεζομένῳ μολύνοιτο τῶν ὀρνέων. Τῶν δὲ ἐν αὐτῷ λίθων ἔνιοι μῆκος πέντε καὶ τεσσαράκοντα πηχῶν ἦσαν, ὕψος πέντε, εὖρος δὲ ἕξ. Πρὸ αὐτοῦ δὲ ὁ βωμὸς πεντεκαίδεκα μὲν ὕψος ἦν πηχῶν, εὖρος δὲ καὶ μῆκος ἐκτείνων ἶσον, ἀνὰ πεντήκοντα πήχεις. Τετράγωνος δ' ἵδρυτο, κερατοειδεῖς προανέχων γωνίας, καὶ ἀπὸ μεσημβρίας ἐπ' αὐτὸν ἄνοδος ἠρέμα προςάντης ὑπτίαστο. Κατεσκευάσθη δ' ἄνευ σιδήρου, καὶ οὐδέποτε ἔψαυεν αὐτοῦ σίδηρος. Περιέστεφε δὲ τόν τε ναὸν καὶ τὸν βωμὸν εὔλιθόν τι καὶ χάριεν γείσιον, ὅσον πηχυαῖον ὕψος, ὃ διεῖργεν ἐξωτέρω τὸν δῆμον ἀπὸ τῶν ἱε-
335 ρέων. Γονοῤῥοίοις μὲν δὴ καὶ λεπροῖς ἡ πόλις ὅλη διείργετο, γυναικῶν δὲ ἐμμήνοις ἀπεκέκλειστο, παρελθεῖν δὲ ταύταις οὐδὲ καθαραῖς ἐξῆν ὃν προείπομεν ὅρον. Ἀνδρῶν δὲ οἱ μὴ κατὰ πᾶν ἡγνευκότες εἴργοντο τῆς ἔνδον αὐλῆς, καὶ τῶν ἱερέων πάλιν οἱ μὴ καθαρεύοντες εἴργοντο.

7. Τῶν δὲ ἀπὸ γένους ἱερέων ὅσοι διὰ πήρωσιν οὐκ ἐλειτούργουν, παρῆσάν τε ἅμα τοῖς ὁλοκλήροις ἐνδοτέρω τοῦ γεισίου, καὶ τὰς ἀπὸ τοῦ γένους ἐλάμβανον μερίδας, ταῖς γε μὴν ἐσθήσεσιν ἰδιωτικαῖς ἐχρῶντο· τὴν γὰρ ἱερὰν ὁ λειτουργῶν ἠμφιέννυτο μόνος. Ἐπὶ δὲ τὸ θυσιαστήριον, καὶ τὸν ναὸν ἀνέβαινον οἱ τῶν ἱερέων ἄμωμοι, βύσσον μὲν ἀμπεχόμενοι, μάλιστα δ' ἀπὸ ἀκράτου νήφοντες, δέει τῆς θρησκείας, ὡς μή τι παραβαῖεν ἐν τῇ λειτουργίᾳ. Ὁ δὲ ἀρχιερεὺς ἀνήει μὲν σὺν αὐτοῖς, ἀλλ' οὐκ ἀεὶ, ταῖς δ' ἑβδομάσι καὶ νουμηνίαις, καὶ εἴ τις ἑορτὴ πάτριος ἢ πανήγυρις πάνδημος ἀγομένη δι' ἔτους. Ἐλειτούργει δὲ, τοὺς μηροὺς μὲν ἄχρις αἰδοίου διαζώσματι καλύπτων, λινοῦ τε ὑποδύτην ἔνδοθεν λαμβάνων, καὶ ποδήρες καθύπερθεν ὑακίνθινον ἔνδυμα στρογγύλον θυσανωτὸν ἔργον. Τῶν δὲ θυσάνων ἀπήρτηντο κώδωνες χρύσεοι, καὶ ῥοαὶ παράλληλοι, βροντῆς μὲν οἱ κώδωνες, ἀστραπῆς δὲ αἱ ῥοαὶ σημεῖον. Ἡ δὲ τὸ ἔνδυμα τῷ στέρνῳ προσηλοῦσα ταινία, πέντε διηνθισμένη ζώναις πεποίκιλτο, χρυσοῦ τε καὶ πορφύρας καὶ κόκκου, πρὸς δὲ βύσσου καὶ ὑακίνθου, δι' ὧν, ἔφαμεν, καὶ τὰ τοῦ ναοῦ καταπετάσματα συνυφάνθαι. Τούτοις δὲ καὶ ἐπωμίδα κεκραμένην εἶχεν, ἐν ᾗ πλείων χρυσὸς ἦν· σχῆμα μὲν οὖν ἐνδυτοῦ θώρακος εἶχεν. Δύο δὲ αὐτὴν ἐνεπόρπουν ἀσπιδίσκαι χρυσαῖ, κατεκέκλειντο δ' ἐν ταύταις κάλλιστοί τε καὶ μέγιστοι σαρδώνυχες, τοὺς ἐπωνύμους τῶν τοῦ ἔθνους φυλῶν ἐπιγεγραμμέναι. Κατὰ δὲ θάτερον ἄλλοι προσήρτηντο λίθοι δώδεκα, κατὰ τρεῖς εἰς τέσσαρα μέρη διῃρημένοι, σάρδιον, τόπαζος, σμάραγδος, ἄνθραξ, ἴασπις, σάπφειρος, ἀχάτης, ἀμέθυστος, λιγύριον, ὄνυξ, βήρυλλος, χρυσόλιθος· ὧν ἐφ' ἑκάστου πάλιν εἷς τῶν ἐπωνύμων ἐγέγραπτο. Τὴν δὲ κεφαλὴν βυσσίνη μὲν ἔσκεπε τιάρα, κατέστεπτο δ' ὑακίνθῳ· περὶ ἣν χρυσοῦς ἄλλος ἦν στέφανος, ἐκτύπωμα φέρων τὰ ἱερὰ γράμματα·

336 ταῦτα δέ ἐστι φωνήεντα τέσσαρα. Ταύτην μὲν οὖν τὴν ἐσθῆτα οὐκ ἐφόρει τὸν ἄλλον χρόνον, λιτοτέραν δ' ἀνελάμβανεν, ὁπότε δὲ εἰςίοι εἰς τὸ ἄδυτον, εἰςῄει δ' ἅπαξ κατ' ἐνιαυτὸν μόνος, ἐν ᾗ νηστεύειν ἔθος ἡμέρᾳ πάντας τῷ Θεῷ. Καὶ τὰ μὲν περὶ τῆς πόλεως καὶ τοῦ ναοῦ, τῶν τ' ἐπὶ τούτοις ἐθῶν καὶ νόμων, αὖθις ἀκριβέστερον ἐροῦμεν· οὐ γὰρ ὀλίγος περὶ αὐτῶν καταλείπεται λόγος.

8. Ἡ δὲ Ἀντωνία κατὰ γωνίαν μὲν δύο στοῶν ἔκειτο τοῦ πρώτου ἱεροῦ, τῆς τε πρὸς ἑσπέραν, καὶ τῆς πρὸς ἄρκτον. Δεδόμητο δ' ὑπὲρ πέτρας πεντηκονταπήχους μὲν ὕψος, περικρήμνου δὲ πάσης· ἔργον δὲ ἦν Ἡρώδου βασιλέως, ἐν ᾧ μάλιστα τὸ φύσει μεγαλόνουν ἐπεδείξατο. Πρῶτον μὲν ἐκ ῥίζης ἡ πέτρα πλαξὶ κεκάλυπτο λείαις λίθων, εἴς τε κάλλος, καὶ ὡς ἀπολισθάνοι πᾶς ὁ προςβαίνειν καὶ κατιέναι πειρώμενος. Ἔπειτα πρὸ τῆς τοῦ πύργου δομήσεως, τριῶν πηχῶν τεῖχος ἦν, ἐνδοτέρω δὲ τούτου, τὸ πᾶν διάστημα τῆς Ἀντωνίας, ἐπὶ τεσσαράκοντα πήχεις ἠγείρετο. Τὸ δὲ ἔνδον βασιλείων εἶχε χώραν καὶ διάθεσιν· μεμέριστο γὰρ εἰς πᾶσαν οἴκων ἰδέαν τε καὶ χρῆσιν, περίστοά τε καὶ βαλανεῖα καὶ στρατοπέδων αὐλὰς πλατείας, ὡς τῷ μὲν πάντα ἔχειν τὰ χρειώδη πόλεις εἶναι δοκεῖν, τῇ πολυτελείᾳ δὲ βασίλειον. Πυργοειδὴς δὲ οὖσα τὸ πᾶν σχῆμα, κατὰ γωνίαν τέσσαρσιν ἑτέροις διείληπτο πύργοις· ὧν οἱ μὲν ἄλλοι πεντήκοντα τὸ ὕψος, ὁ δὲ ἐπὶ τῇ μεσημβρινῇ καὶ κατ' ἀνατολὴν γωνίᾳ κείμενος ἑβδομήκοντα πηχῶν ἦν, ὡς καθορᾶν ὅλον ἀπ' αὐτοῦ τὸ ἱερόν. Καθὰ δὲ συνῆπτο ταῖς τοῦ ἱεροῦ στοαῖς, εἰς ἀμφοτέρας εἶχε καταβάσεις· δι' ὧν κατιόντες οἱ φρουροί, καθῆστο γὰρ ἀεὶ ἐπ' αὐτῆς τάγμα Ῥωμαίων, καὶ διϊστάμενοι περὶ τὰς στοὰς μετὰ τῶν ὅπλων, ἐν ταῖς ἑορταῖς τὸν δῆμον, ὡς μή τι νεωτερισθείη, παρεφύλαττον· φρούριον γὰρ ἐπέκειτο τῇ πόλει μὲν τὸ ἱερόν, τῷ ἱερῷ δὲ ἡ Ἀντωνία. Κατὰ δὲ ταύτην οἱ

τῶν τριῶν φύλακες ἦσαν, καὶ τῆς ἄνω πόλεως ἴδιον φρούριον ἦν, τὰ Ἡρώδου βασίλεια. Ἡ Βεζεθὰ δὲ λόφος διῄρητο μὲν, ὡς ἔφην, ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας, πάντων δὲ ὑψηλότατος ὢν μέρει τῆς καινῆς πόλεως προςῴκιστο, καὶ μόνος τῷ ἱερῷ κατ' ἄρκτον ἐπεσκότει. Περὶ μὲν δὴ τῆς πόλεως, καὶ τῶν τειχῶν αὖθις εἰπεῖν ἀκριβέστερον ἕκαστα προτεθειμένος, ἐπὶ τοῦ παρόντος ἀποχρώντως εἴρηκα.

CAP. VI. 1. Τὸ μάχιμον δ' ἐν αὐτῇ καὶ στασιάζον πλῆθος περὶ Σίμωνα μὲν μύριοι ἦσαν, δίχα τῶν Ἰδουμαίων, πεντήκοντα δ' ἡγεμόνες τ῀ν μυρίων, ἐφ' οἷς οὗτος κύριος τῶν ὅλων. Ἰδουμαῖοι δὲ αὐτῷ συντελοῦντες, εἰς πεντακιςχιλίους, ἄρχοντας εἶχον δέκα· τούτων προέχειν ἐδόκουν ὅ τε τοῦ Σωσᾶ Ἰάκωβος, καὶ Σίμων υἱὸς Καθλᾶ. Ἰωάννης δὲ, τὸ ἱερὸν κατειληφὼς, ἑξακιςχιλίους ὁπλίτας εἶχεν ὑφ' ἡγεμόνας εἴκοσι. Προςεγένοντο δὲ αὐτῷ τότε καὶ οἱ ζηλωταὶ, παυσάμενοι τοῦ διαφέρεσθαι, διςχίλιοι μὲν ὄντες καὶ τετρακόσιοι, χρώμενοι δ' ἄρχοντι τῷ καὶ πρότερον Ἐλεαζάρῳ, καὶ Σίμωνι τοῦ Ἀρινοῦ. Πολεμούντων δὲ τούτων, ὡς ἔφαμεν, ἆθλον ὁ δῆμος ἦν ἑκατέρων, καὶ τὸ μὴ συναδικοῦν τοῦ λαοῦ μέρος ὑπ' ἀμφοῖν διηρπάζετο. Κατεῖχε δὲ ὁ μὲν Σίμων τήν τε ἄνω πόλιν καὶ τὸ μέγα τεῖχος ἄχρι τοῦ Κεδρῶνος, τοῦ τε ἀρχαίου τείχους ὅσον ἀπὸ τῆς Σιλωᾶς ἀνακάμπτον εἰς ἀνατολὴν, ὃ μέχρι τῆς Μονοβάζου κατέβαινεν αὐλῆς, — βασιλεὺς δὲ οὗτος ἦν τῶν ὑπὲρ Εὐφράτην Ἀδιαβηνῶν· κατεῖχε δὲ καὶ τὴν πηγὴν, καὶ τὴν Ἄκραν, — αὕτη δὲ ἦν ἡ κάτω πόλις, — καὶ τὰ μέχρι τῶν τῆς Ἑλένης βασιλείων, τῆς τοῦ Μονοβάζου μητρός. Ὁ δὲ Ἰωάννης τό τε ἱερὸν καὶ τὰ πέριξ ἐπ' οὐκ ὀλίγον, τόν τε Ὀφλᾶν καὶ τὴν Κεδρῶνα καλουμένην φάραγγα. Τὸ μεταξὺ δὲ τούτων ἐμπρήσαντες, τῷ πρὸς ἀλλήλους πολέμῳ χώραν ἀν-

εἴσαν· οὐδὲ γὰρ, πρὸς τοῖς τείχεσιν ἐστρατοπεδευμένων Ῥωμαίων, ἔνδον ἡ στάσις ἠρέμει. Βραχὺ δὲ πρὸς τὴν πρώτην ὑπονήψαντες ἐκδρομὴν ἀνενόσουν, καὶ κατὰ σφᾶς πάλιν διαστάντες ἐμάχοντο, κατά τε εὐχὴν πάντα τοῖς πολιορκοῦσιν ἔπραττον. Οὔτε γοῦν αὐτοί τι χεῖρον ὑπὸ Ῥωμαίων ἔπαθον, ὧν ἀλλήλους ἔδρασαν, οὔτε μετὰ τούτους ἡ πόλις ἐπειράθη καινοτέρου πάθους. Ἀλλ' ἡ μὲν χαλεπώτερόν τι πρὸ τοῦ πεσεῖν ἠτύχησεν, οἱ δὲ ἑλόντες αὐτὴν κατώρθωσάν τι μεῖζον. Φημὶ γὰρ, ὡς τὴν μὲν πόλιν ἡ στάσις, Ῥωμαῖοι δὲ εἷλον τὴν στάσιν, ἥπερ ἦν πολὺ τῶν τειχῶν ὀχυρωτέρα· καὶ τὸ μὲν σκυθρωπὸν τοῖς οἰκείοις, τὸ δίκαιον δ' ἄν τις εὐλόγως Ῥωμαίοις προσγράφοι. Νοείτω δ' ὅπη τοῖς πράγμασιν ἕκαστος ἄγεται.

2. Τῶν γε μὴν ἔνδον οὕτω διακειμένων, ὁ Τίτος μετ' ἐπιλέκτων ἱππέων περιϊὼν ἔξωθεν, ᾗ προςβάλλοι τοῖς τείχεσι κατεσκέπτετο. Ἀπορουμένῳ δὲ πάντοθεν — οὔτε γὰρ κατὰ τὰς φάραγγας ἦν που προςιτὸν, καὶ κατὰ θάτερα τὸ πρῶτον τεῖχος ἐφαίνετο τῶν ὀργάνων στερεώτερον — ἐδόκει κατὰ τὸ
338 Ἰωάννου τοῦ ἀρχιερέως μνημεῖον προςβαλεῖν· ταύτῃ γὰρ τό τε πρῶτον ἦν ἔρυμα χθαμαλώτερον, καὶ τὸ δεύτερον οὐ συνῆπτεν, ἀμελησάντων καθ' ἃ μὴ λίαν ἡ καινὴ πόλις συνῴκιστο τειχίζειν· ἀλλ' ἐπὶ τὸ τρίτον ἦν εὐπέτεια, δι' οὗ τὴν ἄνω πόλιν, καὶ διὰ τῆς Ἀντωνίας τὸ ἱερὸν αἱρήσειν ἐπενόει. Ἐν δὲ τούτῳ περιϊόντος αὐτοῦ τοξεύεταί τις τῶν φίλων, ὀνόματι Νικάνωρ, κατὰ τὸν λαιὸν ὦμον, ἔγγιον μετὰ τοῦ Ἰωσήπου προςελθὼν, καὶ πειρώμενος εἰρηνικὰ τοῖς ἐπὶ τοῦ τείχους, οὐ γὰρ ἄγνωστος ἦν, διαλέγεσθαι. Διὰ τοῦτο τὰς ὁρμὰς αὐτῶν ἐπιγνοὺς Καῖσαρ, εἰ μηδὲ τῶν ἐπὶ σωτηρίᾳ προςιόντων ἀπέχοιντο, παροξύνεται πρὸς τὴν πολιορκίαν, ἅμα τε συντάγμασιν δῃοῦν τὰ πρὸ τῆς πόλεως ἠφίει, καὶ συμφέροντας ἐκέλευσε τὴν ὕλην ἐγείρειν χώματα.

Τριχῆ δὲ διατάξας τὴν στρατιὰν πρὸς τὰ ἔργα, μέσους ἵστησι τῶν χωμάτων τούς τε ἀκοντιστὰς καὶ τοξότας, καὶ πρὸ τούτων τοὺς ὀξυβελεῖς καὶ καταπέλτας καὶ τὰς λιθοβόλους μηχανὰς, ὡς τάς τε ἐκδρομὰς εἴργοι τῶν πολεμίων ἐπὶ τὰ ἔργα καὶ τοὺς ἀπὸ τοῦ τείχους κωλύειν πειρωμένους. Κοπτομένων δὲ τῶν δένδρων, τὰ προάστεια μὲν ἐν τάχει γεγύμνωτο· συμφερομένων δὲ ἐπὶ τὰ χώματα τῶν ξύλων, καὶ τῆς στρατιᾶς ἁπάσης ἐπὶ τὸ ἔργον ὡρμημένης, οὐδὲ τὰ παρὰ τῶν Ἰουδαίων ἠρέμει. Τὸν μὲν οὖν δῆμον, ἐν ἁρπαγαῖς ὄντα καὶ φόνοις, συνέβαινε τότε θαῤῥεῖν· ἀναπνεύσειν τε γὰρ περισπωμένων πρὸς τοὺς ἔξωθεν ὑπελάμβανον, καὶ λήψεσθαι παρὰ τῶν αἰτίων αὐτοὶ δίκας, εἰ Ῥωμαῖοι περιγένοιντο.

3. Ἰωάννης δὲ, καίτοι χωρεῖν ἐπὶ τοὺς ἔξω πολεμίους τῶν περὶ αὐτὸν ὡρμημένων, δέει τοῦ Σίμωνος ἔμενεν. Οὐ μὴν ὁ Σίμων ἠρέμει, καὶ γὰρ ἦν ἔγγιον τῇ πολιορκίᾳ· τὰ δὲ ἀφετήρια διΐστησιν ἐπὶ τοῦ τείχους, ὅσα Κέστιόν τε ἀφῄρηντο πρότερον, καὶ τὴν ἐπὶ τῆς Ἀντωνίας φρουρὰν ἑλόντες ἔλαβον. Ἀλλὰ τούτων μὲν τοῖς πολλοῖς ἀχρεῖος ἡ κτῆσις ἦν δι' ἀπειρίαν, ὀλίγοι δὲ, ὑπὸ τῶν αὐτομόλων διδαχθέντες, ἐχρῶντο κακῶς τοῖς ὀργάνοις· χερμάσι δὲ καὶ τόξοις τοὺς χωννύντας ἔβαλλον ἀπὸ τοῦ τείχους, καὶ κατὰ συντάξεις ἐκτρέχοντες αὐτοῖς συνεπλέκοντο. Τοῖς δ' ἐργαζομένοις ἦν ἀπὸ μὲν τῶν βελῶν ἡ σκέπη γέῤῥα, χαρακωμάτων ὑπερτεταμένα, τὰ δ' ἀφετήρια πρὸς τοὺς ἐκθέοντας. Θαυμαστὰ δὲ πᾶσι μὲν κατεσκεύαστο τοῖς τάγμασι· διαφόρως δὲ τῷ δεκάτῳ βιαιότεροί τε ὀξυβελεῖς, καὶ μείζονα λιθοβόλα, δι' ὧν οὐ μόνον τὰς ἐκδρομὰς, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐπὶ τείχους ἀνέτρεπον. Ταλαντιαῖοι μὲν ἦσαν οἱ βαλλόμενοι πέτροι, δύο δὲ καὶ πλεῖον ἀπῄεσαν σταδίους· ἡ πληγὴ δὲ οὐ τοῖς προεντυχοῦσι μόνον, ἐπὶ πολὺ δὲ καὶ τοῖς μετ' ἐκείνους ἦν ἀνυπόστατος. Οἵ γε

μὴν Ἰουδαῖοι τὸ πρῶτον ἐφυλάττοντο τὴν πέτραν,
339 λευκὴ γὰρ ἦν, ὡς μήτε τῷ ῥοίζῳ σημαίνεσθαι μόνῳ, ἀλλὰ καὶ τῇ λαμπρότητι προορᾶσθαι. Σκοποὶ οὖν αὐτοῖς ἐπὶ τῶν πύργων καθεζόμενοι προεμήνυον, ὁπόταν σχασθείη τὸ ὄργανον, καὶ ἡ πέτρα φέροιτο, τῇ πατρίῳ γλώσσῃ βοῶντες, 'ὁ ἰὸς ἔρχεται.' Διΐσταντο δὲ καθ' οὓς ᾔει, καὶ προκατεκλίνοντο. Συνέβαινε δὲ φυλαττομένων ἄπρακτον διεκπίπτειν τὴν πέτραν. Ἀντεπινοοῦσι δὲ Ῥωμαῖοι μελαίνειν αὐτήν· τότε γὰρ οὐκ ἔθ' ὁμοίως προορωμένης εὐστόχουν, καὶ πολλοὺς ἅμα μιᾷ βολῇ διέφθειραν. Ἀλλ' οὐδὲ κακούμενοι μετ' ἀδείας παρεῖχον Ῥωμαίοις ἐγείρειν τὰ χώματα, πάσῃ δ' ἐπινοίᾳ καὶ τόλμῃ χρώμενοι καὶ νύκτωρ καὶ μεθ' ἡμέραν εἶργον.

4. Τῶν δ' ἔργων συντετελεσμένων, μολιβδίδι μὲν καὶ λίνῳ διαμετροῦσιν οἱ τέκτονες τὸ διάστημα πρὸς τὸ τεῖχος, ἀπὸ τῶν χωμάτων ῥίψαντες· οὐ γὰρ ἐνῆν ἄλλως ἄνωθεν βαλλομένοις. Εὑρόντες δ' ἐξικνεῖσθαι δυναμένας τὰς ἑλεπόλεις προςῆγον· καὶ Τίτος ἐγγυτέρω τὰ ἀφετήρια διαστήσας, ὡς μὴ τοὺς κριοὺς εἴργοιεν ἀπὸ τοῦ τείχους, ἐκέλευσε τύπτειν. Τριχόθεν δ' ἐξαισίου κτύπου περιηχήσαντος αἰφνιδίως τὴν πόλιν, κραυγή τε παρὰ τῶν ἔνδον ἤρθη, καὶ τοῖς στασιασταῖς ἴσον ἐμπίπτει δέος. Κοινὸν δ' ἑκάτεροι τὸν κίνδυνον ἰδόντες, κοινὴν ἐπενόουν ἤδη ποιεῖσθαι καὶ τὴν ἄμυναν. Διαβοώντων δὲ πρὸς ἀλλήλους τῶν διαφόρων, 'ὡς πάντα πράττοιεν ὑπὲρ τῶν πολεμίων, δέον, εἰ καὶ μὴ διηνεκῆ δίδωσιν αὐτοῖς ὁμόνοιαν ὁ θεός, ἐν γοῦν τῷ παρόντι, τὴν πρὸς ἀλλήλους φιλονεικίαν ὑπερθεμένους, κατὰ Ῥωμαίων συνελθεῖν,' κηρύσσει μὲν ἄδειαν ὁ Σίμων τοῖς ἀπὸ τοῦ ἱεροῦ παρελθεῖν ἐπὶ τὸ τεῖχος, ἐπιτρέπει δὲ καίπερ ἀπιστῶν ὁ Ἰωάννης. Οἱ δὲ τοῦ μίσους καὶ τῶν ἰδίων διαφορῶν λαβόντες ἀμνηστίαν, ἓν σῶμα γίνονται· καὶ τὸ μὲν τεῖχος περισχόντες ἀπ' αὐτοῦ πυρά τε παμπληθῆ κατὰ τῶν μηχανημάτων ἐνίεσαν, καὶ

τοὺς ἐπιβρίθοντας τὰς ἑλεπόλεις ἀδιαλείπτως ἔβαλλον. Οἱ τολμηρότεροι δὲ κατὰ στίφη προπηδῶντες τὰ γέῤῥα τῶν μηχανημάτων ἐσπάραττον, καὶ τοῖς ἐπ' αὐτῶν προσπίπτοντες, ἐπιστήμῃ μὲν ἐπ' ὀλίγα, τόλμῃ δὲ τὰ πλείω περιεγένοντο. Προσεβοήθει δὲ τοῖς πονοῦσιν αὐτὸς ἀεὶ Τίτος, καὶ παρ' ἑκάτερον τῶν ὀργάνων τούς τε ἱππέας καὶ τοὺς τοξότας διαστήσας, εἶργε μὲν τοὺς τὸ πῦρ ἐπιφέροντας, ἀνέστελλε δὲ τοὺς ἀπὸ τῶν πύργων βάλλοντας, ἐνεργοὺς δὲ ἐποίει τὰς ἑλεπόλεις. Οὐ μὴν ταῖς πληγαῖς ὑπήκουε τὸ τεῖχος, εἰ μὴ καθόσον ὁ τοῦ πεντεκαιδεκάτου τάγματος κριὸς γωνίαν διεκίνησε πύργου. Τὸ δὲ τεῖχος ἀκέραιον ἦν· οὐδὲ γὰρ εὐθέως συνεκινδύνευε τῷ πύργῳ προέχοντι πολὺ, καὶ μὴ δυναμένῳ συναποῤῥῆξαί τι ῥᾳδίως τοῦ περιβόλου.

5. Παυσάμενοι δὲ τῶν ἐκδρομῶν πρὸς ὀλίγον, 340
καὶ τοὺς Ῥωμαίους ἐπιτηρήσαντες ἐσκεδασμένους ἐπὶ τὰ ἔργα καὶ κατὰ τὰ στρατόπεδα, καμάτῳ γὰρ ἀναχωρῆσαι καὶ δέει τοὺς Ἰουδαίους ἠξίουν, ἐκθέουσι κατὰ τὸν Ἱππικὸν πύργον διὰ πύλης ἀφανοῦς πάντες, πῦρ τε τοῖς ἔργοις ἐπιφέροντες, καὶ μέχρι τῶν ἐρυμάτων ἐπὶ τοὺς Ῥωμαίους προσελθεῖν ὡρμημένοι. Πρὸς δὲ τὴν κραυγὴν αὐτῶν οἵ τε πλησίον συνίσταντο ταχέως, καὶ οἱ πόῤῥωθεν συνέθεον. Ἔφθανε δὲ ἡ Ἰουδαίων τόλμα τὴν Ῥωμαίων εὐταξίαν, καὶ τοῖς προεντυγχάνουσι τρεψάμενοι προσέκειντο, καὶ τοῖς συλλεγομένοις. Δεινὴ δὲ περὶ τὰς μηχανὰς συμπίπτει μάχη, τῶν μὲν ὑποπιμπράναι, τῶν δὲ κωλύειν βιαζομένων. Κραυγή τε παρ' ἀμφοτέρων ἄσημαντος ἦν, καὶ πολλοὶ τῶν προαγωνιζομένων ἔπιπτον. Ἰουδαῖοι δὲ ὑπερεῖχον ἀπονοίᾳ, καὶ τῶν ἔργων ἥπτετο τὸ πῦρ, καταφλεγῆναί τ' ἂν ἐκινδύνευσε πάντα μετὰ τῶν ὀργάνων, εἰ μὴ τῶν ἀπ' Ἀλεξανδρείας ἐπιλέκτων ἀντέστησαν οἱ πολλοὶ, παρὰ τὴν σφετέραν ὑπόληψιν ἀνδρισάμενοι, — καὶ γὰρ τῶν ἐνδοξοτέρων διήνεγκαν κατὰ ταύτην τὴν μάχην, —

μέχρι Καῖσαρ τοὺς τῶν ἱππέων δυνατωτάτους ἀναλαβὼν, ἐμβάλλει τοῖς πολεμίοις. Καὶ δώδεκα μὲν αὐτὸς τῶν προμάχων ἀναιρεῖ· πρὸς δὲ τὸ τούτων πάθος ἐκκλίναντος τοῦ λοιποῦ πλήθους, ἑπόμενος συνελαύνει πάντας εἰς τὴν πόλιν, καὶ ἐκ τοῦ πυρὸς διασώζει τὰ ἔργα. Συνέβη δ' ἐν ταύτῃ τῇ μάχῃ καὶ ζωγρηθῆναί τινα τῶν Ἰουδαίων, ὃν ὁ Τίτος ἀνασταυρῶσαι πρὸ τοῦ τείχους ἐκέλευσεν, εἴ τι πρὸς τὴν ὄψιν ἐνδοῖεν οἱ λοιποὶ καταπλαγέντες. Μετὰ δὲ τὴν ἀναχώρησιν καὶ Ἰωάννης ὁ τῶν Ἰδουμαίων ἡγεμὼν, πρὸ τοῦ τείχους γνωρίμῳ τινὶ στρατιώτῃ διαλεγόμενος, ὑπό τινος τῶν Ἀράβων κατὰ τοῦ στέρνου τοξεύεται, καὶ παραχρῆμα θνήσκει, μέγιστον τοῖς τε Ἰουδαίοις πένθος, καὶ λύπην τοῖς στασιασταῖς ἀπολιπών· καὶ γὰρ κατά τε χεῖρα καὶ σύνεσιν διάσημος ἦν.

CAP. VII. 1. Τῇ δ' ἐπιούσῃ νυκτὶ ταραχὴ καὶ τοῖς Ῥωμαίοις ἐμπίπτει παράλογος. Τοῦ γὰρ Τίτου πύργους τρεῖς κατασκευάσαι κελεύσαντος πεντηκονταπήχεις, ἵν' ἑκάστου χώματος ἐπιστήσας ἀπὸ τούτων τοὺς ἐπὶ τοῦ τείχους τρέποιτο, συνέβη ἕνα πεσεῖν αὐτομάτως ἀνὰ μέσης νυκτός. Μεγίστου δ' ἀρθέντος ψόφου, δέος ἐμπίπτει τῷ στρατῷ, καὶ τοὺς πολεμίους ἐπιχειρεῖν σφίσι δόξαντες ἐπὶ τὰ ὅπλα πάντες ἔθεον. Ταραχὴ δὲ τῶν ταγμάτων καὶ θόρυβος
341 ἦν· καὶ τὸ συμβὰν οὐδενὸς εἰπεῖν ἔχοντος, ἐπὶ πλεῖστον ἀποδυρόμενοι διεφέροντο, μηδενός τε φαινομένου πολεμίου δι' ἀλλήλων ἐπτοοῦντο, καὶ τὸ σύνθημα μετὰ σπουδῆς ἕκαστος τὸν πλησίον ἐπηρώτα, καθάπερ Ἰουδαίων ἐμβεβηκότων εἰς τὰ στρατόπεδα. Πανικῷ τε δείματι κυκλουμένοις παρεῴκεσαν, ἄχρι μαθὼν τὸ συμβὰν Τίτος διαγγέλλειν ἐκέλευσε πᾶσι, καὶ μόλις ἐπαύσαντο τῆς ταραχῆς.

2. Ἰουδαίους γε μὴν πρὸς τὰ λοιπὰ καρτερῶς

ἀντέχοντας ἐκάκωσαν οἱ πύργοι· καὶ γὰρ τῶν ὀργάνων τοῖς κουφοτέροις ἀπ᾽ αὐτῶν ἐβάλλοντο, καὶ τοῖς ἀκοντισταῖς, καὶ τοξόταις, καὶ λιθοβόλοις. Οὔτε δὲ τούτων αὐτοὶ διὰ τὸ ὕψος ἐφικνοῦντο, καὶ τοὺς πύργους ἦν ἀμήχανον ἑλεῖν, μήτε ἀνατραπῆναι ῥᾳδίως διὰ τὸ βρίθος, μήτ᾽ ἐμπρησθῆναι διὰ τὸν σίδηρον δυναμένους, ᾧ κατεκαλύπτοντο. Τρεπόμενοι δ᾽ ἐξωτέρω βέλους οὐκ ἔτ᾽ ἐκώλυον τῶν κριῶν τὰς ἐμβολάς, οἳ ἀδιαλείπτως παίοντες ἤνυον κατ᾽ ὀλίγον. Ἤδη δὲ τῷ Νίκωνι τοῦ τείχους ἐνδιδόντος — αὐτοὶ γὰρ τοῦτο Ἰουδαῖοι τὴν μεγίστην ἐκάλεσαν Ῥωμαίων ἑλέπολιν, ἀπὸ τοῦ πάντα νικᾶν — ἀπέκαμνον μὲν πάλαι πρός τε τὰς μάχας καὶ τὰς φυλακὰς πόῤῥωθεν τῆς πόλεως διανυκτερεύοντες, ἄλλως δ᾽ ὑπὸ ῥᾳστώνης, καὶ τοῦ βουλεύεσθαι πάντα κακῶς, περιττὸν αὐτοῖς δόξαν φυλάττειν τὸ τεῖχος, ἑτέρων μετ᾽ αὐτὸ λειπομένων δύο, μαλακισθέντες ἀνεχώρουν οἱ πολλοί. Καὶ τῶν Ῥωμαίων ἐπιβάντων, καθὰ παρέῤῥηξεν ὁ Νίκων, καταλιπόντες τὰς φυλακὰς πάντες εἰς τὸ δεύτερον τεῖχος ἀναφεύγουσιν. Οἱ δὲ ὑπερβάντες, τὰς πύλας ἀνοίξαντες, πᾶσαν εἰςδέχονται τὴν στρατιάν. Καὶ Ῥωμαῖοι μὲν οὕτω τοῦ πρώτου τείχους πεντεκαιδεκάτῃ κρατήσαντες ἡμέρᾳ, ἑβδόμη δ᾽ ἦν Ἀρτεμισίου μηνός, αὐτοῦ τε πολὺ κατασκάπτουσι καὶ τὰ προςάρκτια τῆς πόλεως, ἃ καὶ πρότερον Κέστιος.

3. Μεταστρατοπεδεύεται δὲ Τίτος εἴσω, κατὰ τὴν Ἀσσυρίων παρεμβολὴν καλουμένην, ἐπισχὼν πᾶν τὸ μεταξὺ μέχρι τοῦ Κεδρῶνος, ἀπὸ δὲ τοῦ δευτέρου τείχους ὅσον ἐξωτέρω βέλους εἶναι, προςβολὰς δ᾽ εὐθέως ἐποιεῖτο. Μερισθέντες δὲ οἱ Ἰουδαῖοι καρτερῶς ἀπημύναντο τοῦ τείχους· οἱ μὲν περὶ τὸν Ἰωάννην ἀπό τε τῆς Ἀντωνίας καὶ τῆς προςαρκτίου στοᾶς τοῦ ἱεροῦ, καὶ πρὸ τῶν Ἀλεξάνδρου τοῦ βασιλέως μνημείων μαχόμενοι, τὸ δὲ τοῦ Σίμωνος τάγμα, τὴν παρὰ τὸ Ἰωάννου μνημεῖον ἐμβολὴν διαλα-

βόντες, ἐφράξαντο μέχρι πύλης, καθ' ἣν τὸ ὕδωρ ἐπὶ τὸν Ἱππικὸν πύργον εἰςῆκτο. Προπηδῶντες δὲ πολλάκις ἐκ τῶν πυλῶν συστάδην ἐπολέμουν, καὶ συνδιωχθέντες ἐπὶ τοῦ τείχους, καὶ μὲν τὰς συμπλοκὰς ἡττῶντο, τῆς Ῥωμαίων ἐπιστήμης ὄντες ἄπειροι· περιῆσαν δὲ ταῖς τειχομαχίαις. Καὶ τοὺς μὲν ἰσχὺς μετ' ἐμπειρίας παρεκρότει· Ἰουδαίους δὲ τόλμα δέει τρεφομένη, καὶ τὸ φύσει καρτερικὸν ἐν συμφοραῖς. Προςῆν δ' ἐλπὶς ἔτι σωτηρίας, ἢ καὶ Ῥωμαίοις τοῦ ταχέως κρατήσειν. Οὔθ' ἑτέρων δὲ ἥπτετο κόπος, ἀλλὰ προςβολαὶ καὶ τειχομαχίαι, καὶ
342 κατὰ λόχους ἐκδρομαὶ συνεχεῖς δι' ὅλης ἡμέρας ἦσαν· οὐδέ ἐστιν ἥτις ἰδέα μάχης ἀπελείπετο. Νὺξ δ' ἀνέπαυε μόλις ἕωθεν ἀρχομένους· ἦν δὲ ἄϋπνος ἀμφοτέροις ἡ νὺξ, καὶ χαλεπωτέρα τῆς ἡμέρας, δέει τῶν μὲν ὅσον οὔπω καταληφθήσεσθαι τὸ τεῖχος, τῶν δὲ ἐπιθήσεσθαι Ἰουδαίους τοῖς στρατοπέδοις. Ἔν τε τοῖς ὅπλοις ἑκάτεροι διανυκτερεύοντες, ὑπὸ τὰς πρώτας αὐγὰς ἕτοιμοι πρὸς μάχην ἦσαν. Καὶ παρὰ μὲν Ἰουδαίοις ἔρις ἦν, ὅςτις προκινδυνεύσας χαρίσαιτο τοῖς ἡγεμόσι· μάλιστα δὲ τοῦ Σίμωνος αἰδὼς ἦν καὶ δέος, οὕτω τε προςεῖχεν ἕκαστος αὐτῷ τῶν ὑποτεταγμένων, ὡς καὶ πρὸς αὐτοχειρίαν ἑτοιμότατον εἶναι κελεύσαντος. Ῥωμαίοις δὲ ἐπ' ἀνδρείαν ἦν προτροπὴ, τοῦ τε κρατεῖν ἔθος, καὶ ἥττης ἀήθεια, συνεχεῖς τε στρατεῖαι, καὶ διηνεκεῖς μελέται, καὶ μέγεθος ἡγεμονίας. Πρὸ δὲ πάντων Τίτος, ἀεὶ πᾶσι πανταχοῦ παρατυγχάνων· τότε γὰρ μαλακισθῆναι, παρόντος καὶ συναγωνιζομένου Καίσαρος, δεινὸν ἐδόκει, καὶ τῶν καλῶς ἀγωνισαμένων μάρτυς αὐτὸς, ὁ καὶ τιμήσων, παρῆν· κέρδος δ' ἦν ἤδη καὶ τὸ γνωσθῆναι Καίσαρι γενναῖον ὄντα. Διὰ τοῦτο πολλοὶ τῆς κατὰ σφᾶς ἰσχύος ἀμείνους τῇ προθυμίᾳ διεφάνησαν. Παραταξαμένων γοῦν κατὰ ταύτας τὰς ἡμέρας τῶν Ἰουδαίων πρὸ τοῦ τείχους καρτερῷ στίφει, καὶ διακοντιζομένων ἔτι πόῤῥωθεν

τῶν ταγμάτων ἑκατέρων, Λογγῖνός τις τῶν ἱππέων, ἐξαλλόμενος τῆς Ῥωμαϊκῆς τάξεως, ἐμπηδᾷ τῇ μέσῃ τῶν Ἰουδαίων φάλαγγι. Καὶ διασκεδασθέντων πρὸς τὴν ἐμβολὴν δύο τοὺς γενναιοτάτους ἀναιρεῖ, τὸν μὲν κατὰ στόμα πλήξας ὑπαντιάσαντα, τὸν δ' ἀνασπάσας ἐκ τοῦ προτέρου τὸ δόρυ κατὰ πλευρὰν διαπείρει τραπόμενον, ἐκ μέσων τε τῶν πολεμίων πρῶτος εἰς τοὺς σφετέρους ἔδραμεν. Ὁ μὲν οὖν δι' ἀρετὴν ἐπίσημος ἦν, ζηλωταὶ δὲ τῆς ἀνδρείας ἐγίνοντο πολλοί. Καὶ οἱ Ἰουδαῖοι μὲν ἀμελοῦντες τοῦ παθεῖν, τὸ διαθεῖναι μόνον ἐσκόπουν. Ὅ τε θάνατος αὐτοῖς ἐδόκει κουφότατος, εἰ καὶ μετὰ τοῦ κτεῖναί τινα τῶν πολεμίων προςπέσοι. Τίτος δὲ τῆς τῶν στρατιωτῶν ἀσφαλείας οὐχ ἧττον τοῦ κρατεῖν προενόει, καὶ τὴν μὲν ἀπερίσκεπτον ὁρμὴν ἀπόνοιαν λέγων, μόνην δ' ἀρετὴν τὴν μετὰ προνοίας, καὶ τοῦ μηδὲν τὸν δρῶντα παθεῖν ἐν ἀκινδύνῳ τῷ κατὰ σφᾶς ἐκέλευσεν ἀνδρίζεσθαι.

4. Προςάγει δ' αὐτὸς τοῦ βορείου τείχους τῷ μέσῳ πύργῳ τὴν ἑλέπολιν, ἐν ᾧ τῶν Ἰουδαίων τις ἀνὴρ γόης, ὄνομα Κάστωρ, ἐλόχα μεθ' ὁμοίων δέκα, τῶν λοιπῶν φυγόντων διὰ τοὺς τοξότας. Οὗτοι μέχρι μέν τινος ὑποπεπτηχότες τοῖς θωρακίοις ἠρέμουν, σαλευομένου δὲ τοῦ πύργου διανίστανται, καὶ προτείνας ὁ Κάστωρ τὰς χεῖρας, ὡς ἱκετεύων δῆθεν, ἐκάλει τὸν Καίσαρα, καὶ τῇ φωνῇ κατοικτιζόμενος ἐλεῆσαι σφᾶς παρεκάλει. Πιστεύσας δ' ἐξ ἁπλότητος ὁ Τίτος, καὶ μετανοεῖν ἤδη τοὺς Ἰουδαίους ἐλπίσας, ἐπέχει μὲν τοῦ κριοῦ τὴν ἐμβολήν, κωλύει τε τοξεύειν τοὺς ἱκέτας. Λέγειν δ' ἐκέλευσεν, ὅ τι βούλεται, τῷ Κάστορι. Τοῦ δὲ εἰπόντος 'ἐπὶ δεξιᾷ καταβῆναι θέλειν,' ὁ Τίτος 'συνήδεσθαι μὲν αὐτῷ τῆς εὐβουλίας ἔφη, συνήδεσθαι δέ, εἰ πάντες ἤδη τὰ αὐτὰ φρονοῦσι, καὶ τῇ πόλει διδόναι γε πίστιν 343
ἑτοίμως.' Τῶν δέκα δὲ οἱ πέντε μὲν αὐτῷ συνυπεκρίνοντο τὴν ἱκετηρίαν· οἱ λοιποὶ δὲ 'οὐκ ἄν ποτε

δουλεύσειν Ῥωμαίοις ἐβόων, παρὸν ἐλευθέρους ἀποθανεῖν.’ Καὶ μέχρι πολλοῦ διαφερομένων, ἐτρίβετο μὲν ἡ προςβολή. Πέμπων δὲ ὁ Κάστωρ πρὸς τὸν Σίμωνα, σχολῇ βουλεύεσθαι περὶ τῶν ἐπειγόντων ἔλεγεν, ὡς οὐκ ἐπ’ ὀλίγον αὐτὸς διαπαίζοι τὴν Ῥωμαίων ἀρχήν. Ἅμα δὲ ταῦτα πέμπων, καταφανὴς ἦν καὶ τοὺς ἀπειθοῦντας ἐπὶ τὴν δεξιὰν παρακαλῶν. Οἳ δὲ ὥςπερ ἀγανακτοῦντες, ὑπὲρ τὰ θωράκια διήρουν τε τὰ ξίφη γυμνὰ, καὶ τοὺς θώρακας αὐτῶν πλήξαντες, ὡς ἀπεσφαγμένοι κατέπεσον. Θάμβος δὲ τὸν Τίτον καὶ τοὺς περὶ αὐτὸν εἰςῄει τοῦ τῶν ἀνδρῶν παραστήματος, καὶ μὴ δυνάμενοι κάτωθεν ἀκριβῶς τὸ γεγενημένον ἰδεῖν, ἐθαύμαζόν τε τῆς εὐτολμίας αὐτοὺς, καὶ τοῦ πάθους ἠλέουν. Τοξεύει δέ τις ἐν τούτῳ παρὰ τὴν ῥῖνα τὸν Κάστορα, καὶ ἐκεῖνος εὐθέως ἀνασπάσας τὸ βέλος ἐπεδείκνυ τῷ Τίτῳ, καὶ ὡς οὐ δίκαια πάσχων κατεμέμφετο. Πρὸς δὲ τὸν βαλόντα σχετλιάσας Καῖσαρ, ἔπεμπε παρεστῶτα τὸν Ἰώσηπον δοῦναι τῷ Κάστορι δεξιάν. Ἀλλ’ ὁ μὲν ‘οὔτ’ αὐτὸς ἔφη προςελεύσεσθαι, φρονεῖν γὰρ οὐδὲν ὑγιὲς τοὺς δεομένους,’ καὶ τοὺς ὡρμημένους τῶν φίλων κατέσχεν. Αἰνείας δέ τις τῶν αὐτομόλων, ‘αὐτὸς ἔφη προςελεύσεσθαι.’ Καὶ τοῦ Κάστορος καλοῦντος, ὅπως δέξαιτό τις καὶ τὸ ἀργύριον, ὃ φέρει μετ’ αὐτοῦ, σπουδαιότερον ὁ Αἰνείας διαπετάσας τὸν κόλπον προςέδραμεν. Ἀράμενος δὲ ὁ Κάστωρ πέτραν ἐπαφίησιν αὐτῷ, καὶ τούτου μὲν διήμαρτε φυλαξαμένου, τιτρώσκει δὲ στρατιώτην ἕτερον προςελθόντα. Συννοήσας δὲ Καῖσαρ τὴν ἀπάτην, πρὸς βλάβης μὲν ἔγνω τὸν ἐν πολέμοις ἔλεον· τὸ γὰρ ἀπηνέστερον ἧττον ὑποπίπτειν τῷ πανούργῳ. Τὰς δ’ ἐμβολὰς τῆς ἑλεπόλεως ὀργῇ τῆς χλεύης ἐποιεῖτο δυνατωτέρας· ὑποδιδόντα δὲ τὸν πύργον ἐμπιπρᾶσιν οἱ περὶ τὸν Κάστορα, καὶ διὰ τῆς φλογὸς εἰς τὴν ὑπ’ αὐτῷ κρυπτὴν ἁλλόμενοι, πάλιν δόξαν ἀνδρεί-

ας Ῥωμαίοις παρέσχον, ὡς ῥίψαντες σφᾶς αὐτοὺς εἰς τὸ πῦρ.

*CAP. VIII. 1. Αἱρεῖ δὲ Καῖσαρ ταύτῃ τὸ τεῖχος
ἡμέρᾳ πέμπτῃ μετὰ τὸ πρῶτον, καὶ τῶν Ἰουδαίων
φυγόντων ἀπ' αὐτοῦ, παρέρχεται μετὰ χιλίων ὁπλι-
τῶν ἔνδον, καὶ τῶν περὶ αὐτὸν ἐπιλέκτων, καθὸ καὶ
τῆς Καινῆς πόλεως ἐριοπώλιά τε ἦν καὶ χαλκεῖα, καὶ
ἱματίων ἀγορὰ, πρὸς δὲ τὸ τεῖχος πλάγιοι κατέτει-
νον οἱ στενωποί. Εἰ μὲν οὖν ἢ τοῦ τείχους πλέον
εὐθέως διέλυσεν, ἢ πολέμου νόμῳ παρελθὼν ἐπόρ-* 344
*θει τὸ ληφθὲν, οὐκ ἂν, οἶμαι, τις ἐμίγη βλάβη τῷ
κράτει· νῦν δὲ Ἰουδαίους μὲν ἐλπίσας δυσωπήσειν
ἐξὸν κακοῦν τὸ μὴ θέλειν, πρὸς δ' ἀναχώρησιν εὐ-
μαρῆ τὴν εἰςβολὴν οὐκ ἐπλάτυνεν· οὐ γὰρ ἐπιβου-
λεύσειν οὓς εὐεργετεῖν ὑπελάμβανεν. Παρελθὼν γοῦν
οὔτε κτείνειν τινὰ τῶν καταλαμβανομένων ἐπέτρεψεν,
οὔθ' ὑποπιμπράναι τὰς οἰκίας· ἀλλ' ἅμα μὲν τοῖς στα-
σιασταῖς εἰ βούλοιντο μάχεσθαι δίχα τῆς τοῦ δήμου
βλάβης, ἄδειαν ἐδίδου, τῷ δήμῳ δὲ τὰς κτήσεις ὑ-
πισχνεῖτο δώσειν· περὶ πλείστου γὰρ ἐποιεῖτο σῶσαι
τὴν μὲν πόλιν αὐτῷ, τὸν δὲ ναὸν τῇ πόλει. Τὸν
μὲν οὖν λαὸν ἕτοιμον εἶχεν εἰς ἃ προέτρεπε καὶ πά-
λαι· τοῖς μαχίμοις δὲ ἐδόκει τὸ φιλάνθρωπον ἀσθέ-
νεια, καὶ τὸν Τίτον ἀδυναμίᾳ τοῦ τὴν ἄλλην πόλιν
ἑλεῖν ταῦτα προτείνειν ὑπελάμβανον. Διαπειλοῦντες
δὲ τοῖς δημόταις θάνατον, εἰ περὶ παραδόσεως μνη-
σθείη τις αὐτῶν, καὶ τοὺς παραφθεγγομένους εἰρή-
νην ἀποσφάττοντες, ἐπιτίθενται καὶ τοῖς εἰςελθοῦσι
Ῥωμαίων, οἱ μὲν κατὰ τοὺς στενωποὺς ὑπαντιά-
σαντες, οἱ δὲ ἀπὸ τῶν οἰκιῶν, ἄλλοι δ' ἔξω τοῦ
τείχους κατὰ τὰς ἄνω προπηδήσαντες πύλας, πρὸς
οὓς ταραχθέντες οἱ φρουροὶ τοῦ τείχους, καθαλλόμε-
νοι τῶν πύργων ἀνεχώρουν εἰς τὰ στρατόπεδα. Κραυ-
γὴ δ' ἦν τῶν μὲν εἴσω πάντοθεν πολεμίοις κεκυκλω-
μένων, τῶν δ' ἔξωθεν περὶ τοῖς ἀπολειφθεῖσι δεδοι-*

κότων. Πληθύνοντες δὲ ἀεὶ οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ πολλὰ πλεονεκτοῦντες κατ᾽ ἐμπειρίαν τῶν στενωπῶν, ἐτίτρωσκόν τε πολλοὺς, καὶ προςπίπτοντες ἐξώθουν. Οἱ δὲ κατ᾽ ἀνάγκην τὸ πλέον ἀντεῖχον· οὐ γὰρ ἦν ἀθρόους διαφυγεῖν διὰ στενοῦ τοῦ τείχους. Δοκοῦσι δ᾽ ἂν κατακοπῆναι πάντες οἱ παρελθόντες, μὴ προςαμύναντος τοῦ Τίτου. Διαστήσας γὰρ ἐπ᾽ ἄκροις τοῖς στενωποῖς τοὺς τοξότας, καὶ κατὰ τὸν μάλιστα πληθύοντα σταθεὶς αὐτὸς, ἀνέστελλε τοῖς βέλεσι τοὺς πολεμίους, καὶ σὺν αὐτῷ Δομίτιος Σαβῖνος, ἀνὴρ ἀγαθὸς καὶ κατὰ ταύτην φανεὶς τὴν μάχην. Παρέμεινε δὲ συνεχῶς τοξεύων Καῖσαρ, καὶ τοὺς Ἰουδαίους κωλύων παρελθεῖν, μέχρι πάντες ἀνεχώρησαν οἱ στρατιῶται.

2. *Ῥωμαῖοι μὲν οὕτω κρατήσαντες τοῦ δευτέρου τείχους ἐξεώθησαν· τῶν δ᾽ ἀνὰ τὸ ἄστυ μαχίμων ἐπήρθη τὰ φρονήματα, καὶ μετέωροι πρὸς τὴν εὐπραγίαν ἦσαν, οὔτ᾽ ἂν Ῥωμαίους εἰς τὴν πόλιν τολμήσειν ἔτι παρελθεῖν, οὔτ᾽ ἂν αὐτοὶ παρελθόντες ἡττηθήσεσθαι δοκοῦντες. Ἐπεσκότει γὰρ αὐτῶν ταῖς γνώμαις διὰ τὰς παρανομίας ὁ θεὸς, καὶ οὔτε τὴν Ῥωμαίων ἰσχὺν ὅσῳ πλείων κατελείπετο τῆς ἐξελασθείσης ἔβλεπον, οὔτε τὸν ὑφέρποντα λιμὸν αὐτοῖς· ἔτι γὰρ παρῆν ἐσθίειν ἐκ τῶν δημοσίων κακῶν, καὶ τὸ τῆς πόλεως αἷμα πίνειν. Ἔνδεια δὲ τοὺς ἀγαθοὺς ἐπεῖχε πάλαι, καὶ σπάνει τῶν ἐπιτηδείων ἤδη διελύοντο πολλοί. Τὴν δὲ τοῦ λαοῦ φθορὰν ἑαυτῶν οἱ στασιασταὶ κουφισμὸν ὑπελάμβανον· μόνους γὰρ ἠξίουν σώζεσθαι τοὺς μὴ ζητοῦντας εἰρήνην, καὶ κατὰ Ῥωμαίων ζῆν προῃρημένους, τοῦ δ᾽ ἐναντίου*
345 *πλήθους ὥςπερ ὑπερβάλλοντος βάρους ἥδοντο δαπανωμένων. Τοιοῦτοι μὲν δὴ πρὸς τοὺς ἔνδον ἦσαν· Ῥωμαίους δὲ πάλιν τῆς εἰςόδου πειρωμένους ἐκώλυον φραξάμενοι, καὶ τὸ καταῤῥιφθὲν ἀντιτειχίσαντες τοῖς σώμασι. Τρισὶ μὲν ἀντέσχον ἡμέραις καρτερῶς ἀμυνόμενοι, τῇ τετάρτῃ δὲ προςβάλλοντα*

γενναίως Τίτον οὐκ ἤνεγκαν, ἀλλὰ βιασθέντες ἢ καὶ πρότερον ἀναφεύγουσιν. Ὁ δὲ πάλιν τοῦ τείχους κρατήσας, τὸ προςάρκτιον μὲν εὐθέως κατέῤῥιψε πᾶν· ἐπὶ δὲ τοῦ κατὰ μεσημβρίαν φρουροὺς τοῖς πύργοις ἐγκαταστήσας, τῷ τρίτῳ προςβάλλειν ἐπενόει.

CAP. IX. 1. Δόξαν δ' ἐπανιέναι πρὸς ὀλίγον τὴν πολιορκίαν, καὶ διωρίαν βουλῆς τοῖς στασιασταῖς παρασχεῖν, εἴ τι πρὸς τὴν καθαίρεσιν ἐνδοῖεν τοῦ δευτέρου τείχους, ἢ καὶ τὸν λιμὸν ὑποδείσαντες, — οὐ γὰρ εἰς πολὺ τὰς ἁρπαγὰς αὐτοῖς ἐξαρκέσειν, — εἰς δέον κατεχρῆτο τὴν ἄνεσιν· ἐνστάσης γὰρ τῆς προθεσμίας, καθ' ἣν ἔδει διαδοῦναι τοῖς στρατιώταις τροφὰς, ἐν ἀπόπτῳ τοῖς πολεμίοις ἐκέλευσε τοὺς ἡγεμόνας ἐκτάξαντας τὴν δύναμιν ἀπαριθμεῖν ἑκάστῳ τὸ ἀργύριον. Οἱ δὲ, ὥςπερ ἔθος, ἀποκαλύψαντες τὰ ὅπλα θήκαις ἐσκεπασμένα τέως κατάφρακτοι προςῄεσαν, καὶ τοὺς ἵππους ἄγοντες οἱ ἱππεῖς κεκοσμημένους. Ἐπὶ πλεῖστον δὲ τὰ πρὸς τῆς πόλεως ἀργύρῳ καὶ χρυσῷ περιελάμπετο, καὶ τῆς ὄψεως ἐκείνης οὐδὲν οὔτε τοῖς σφετέροις ἐπιτερπέστερον, οὔτε τοῖς πολεμίοις παρέστη φοβερώτερον. Κατεπλήσθη γὰρ ἀφορώντων τό τε ἀρχαῖον τεῖχος ἅπαν, καὶ τοῦ ἱεροῦ τὸ βόρειον κλίμα, τάς τε οἰκίας μεστὰς ἦν προκυπτόντων ὑπεριδεῖν, καὶ τῆς πόλεως οὐδὲν, ὃ μὴ κεκάλυπτο πλήθει, διεφαίνετο. Κατάπληξις δὲ δεινὴ καὶ τοῖς τολμηροτάτοις ἐνέπεσε, τήν τε δύναμιν ἐπὶ ταυτὸ πᾶσαν ὁρῶσι, καὶ τὸ κάλλος τῶν ὅπλων, καὶ τὴν εὐταξίαν τῶν ἀνδρῶν. Δοκοῦσί τ' ἄν μοι πρὸς ἐκείνην οἱ στασιασταὶ μεταβαλέσθαι τὴν ὄψιν, εἰ μὴ δι' ὑπερβολὴν ὧν τὸν δῆμον ἔδρασαν κακῶν, συγγνώμην παρὰ Ῥωμαίοις ἀπήλπιζον. Ἀποκειμένου δὲ τοῦ μετὰ κολάσεως, εἰ παύσαιντο, πολὺ κρείττονα τὸν ἐν πολέμῳ θάνατον ἡγοῦντο. Καὶ 346
τὸ χρεὼν δ' ἐκράτει τούς τε ἀναιτίους τοῖς αἰτίοις συναπολέσθαι, καὶ τῇ στάσει τὴν πόλιν.

2. Τέσσαρσι μὲν οὖν ἡμέραις οἱ Ῥωμαῖοι καθ᾽ ἕκαστον τάγμα διετέλεσαν τὰς τροφὰς κομιζόμενοι· τῇ πέμπτῃ δὲ ὡς οὐδὲν ἀπήντα παρὰ τῶν Ἰουδαίων εἰρηνικὸν, διελὼν τὰ τάγματα Τίτος ἤρχετο χωμάτων, κατά τε τὴν Ἀντωνίαν καὶ τὸ τοῦ Ἰωάννου μνημεῖον· ταύτῃ μὲν τὴν ἄνω πόλιν αἱρήσειν ἐπινοῶν, τὸ δὲ ἱερὸν κατὰ τὴν Ἀντωνίαν· τούτου γὰρ μὴ ληφθέντος, οὐδὲ τὸ ἄστυ κατέχειν ἀκίνδυνον ἦν. Πρὸς ἑκατέρῳ δὴ μέρει δύο ἠγείρετο χώματα, καθ᾽ ἓν ἑκάστου τάγματος. Καὶ τοὺς μὲν παρὰ τὸ μνημεῖον ἐργαζομένους οἵ τε Ἰδουμαῖοι, καὶ τὸ μετὰ τοῦ Σίμωνος ὁπλιτικὸν εἶργον ἐπεκθέοντες, τοὺς δὲ πρὸ τῆς Ἀντωνίας οἱ περὶ τὸν Ἰωάννην καὶ τὸ τῶν ζηλωτῶν πλῆθος. Ἐπλεονέκτουν δὲ οὐ κατὰ χεῖρα μόνον ἀφ᾽ ὑψηλοτέρων μαχόμενοι, καὶ τοῖς ὀργάνοις δ᾽ ἤδη χρῆσθαι μεμαθηκότες· ἡ γὰρ καθ᾽ ἡμέραν τριβὴ κατὰ μικρὸν ἔθρεψε τὴν ἐμπειρίαν. Εἶχον δ᾽ ὀξυβελεῖς μὲν τριακοσίους, τεσσαράκοντα δὲ τῶν λιθοβόλων, δι᾽ ὧν τὰ χώματα τοῖς Ῥωμαίοις ἐποίουν δυσεργότερα. Τίτος δὲ σώζεσθαί τε τὴν πόλιν καὶ ἀπόλλυσθαι εἰδὼς ἑαυτῷ, ἅμα καὶ τῇ πολιορκίᾳ προσέκειτο, καὶ τοῦ παραινεῖν Ἰουδαίοις μετάνοιαν οὐκ ἠμέλει. Τοῖς δὲ ἔργοις ἀνέμισγε συμβουλίαν, καὶ πολλάκις γινώσκων ἀνυτικώτερον ὅπλων τὸν λόγον, αὐτούς τε σώζεσθαι παρεκάλει παραδόντας τὴν πόλιν ἤδη παρειλημμένην, καὶ τὸν Ἰώσηπον καθίει τῇ πατρίῳ γλώσσῃ διαλέγεσθαι, τάχα ἐνδοῦναι πρὸς ὁμόφυλον δοκῶν αὐτούς.

3. Οὗτος περιϊὼν τὸ τεῖχος, καὶ πειρώμενος ἐξωτέρω βέλους εἶναι καὶ ἐν ἐπηκόῳ, πολλὰ κατηντιβόλει, ‛φείσασθαι μὲν ἑαυτῶν καὶ τοῦ δήμου, φείσασθαι δὲ καὶ τῆς πατρίδος καὶ τοῦ ἱεροῦ, μηδὲ γενέσθαι πρὸς ταῦτα τῶν ἀλλοφύλων ἀπαθεστέρους. Ῥωμαίους μέν γε τοὺς μὴ μετέχοντας ἐντρέπεσθαι τὰ τῶν πολεμίων ἅγια, καὶ μέχρι νῦν τὰς χεῖρας ἐπέχειν·

τοὺς δ᾽ ἐντραφέντας αὐτοῖς, καὶ ἂν περισωθῇ μό-
νους ἕξοντας, ὡρμῆσθαι πρὸς ἀπώλειαν αὐτῶν.
Ἦ μὴν τὰ καρτερώτερα μὲν αὐτῶν ὁρᾷν τείχη
πεπτωκότα, λειπόμενον δὲ τὸ τῶν ἑαλωκότων ἀσθε-
νέστερον· γιγνώσκειν δὲ τὴν Ῥωμαίων ἰσχὺν ἀνυ-
πόστατον, καὶ τὸ δουλεύειν τούτοις οὐκ ἀπείρα-
στον αὐτοῖς. Εἰ γὰρ δὴ καὶ πολεμεῖν ὑπὲρ ἐλευθε-
ρίας καλὸν, χρῆναι τὸ πρῶτον· τὸ δ᾽ ἅπαξ ὑποπε-
σόντας, καὶ μακροῖς εἴξαντας χρόνοις, ἔπειτα ἀπο-
σείεσθαι τὸν ζυγὸν, δυςθανατώντων οὐ φιλελευθέρων
εἶναι. Δεῖ μέντοι καὶ δεσπότας ἀδοξεῖν ταπεινοτέ-
ρους, οὐχ οἷς ὑπὸ χεῖρα τὰ πάντα. Τί γὰρ Ῥω-
μαίους διαπεφευγέναι, πλὴν εἰ μή τι διὰ θάλπος
ἢ κρύος ἄχρηστον; Μεταβῆναι δὲ πρὸς αὐτοὺς πάν-
τοθεν τὴν τύχην, καὶ κατὰ ἔθνος τὸν θεὸν ἐμπεριά- 347
γοντα τὴν ἀρχὴν νῦν ἐπὶ τῆς Ἰταλίας εἶναι. Νό-
μον γε μὴν ὡρίσθαι, καὶ παρὰ θηρσὶν ἰσχυρότατον,
καὶ παρὰ ἀνθρώποις, εἴκειν τοῖς δυνατωτέροις, καὶ
τὸ κρατεῖν παρ᾽ οἷς ἀκμὴ τῶν ὅπλων εἶναι. Διὰ
τοῦτο καὶ τοὺς προγόνους αὐτῶν, καὶ πολὺ ταῖς ψυ-
χαῖς καὶ τοῖς σώμασι, ἔτι δὲ καὶ ταῖς ἄλλαις ἀφορ-
μαῖς ἀμείνους ὄντας, εἶξαι Ῥωμαίοις· οὐκ ἂν εἰ μὴ
τὸν θεὸν ᾔδεσαν σὺν αὐτοῖς τοῦθ᾽ ὑπομείναντας.
Αὐτοὺς δὲ τίνι καὶ πεποιθότας ἀντέχειν, ἑαλωκυίας
μὲν ἐκ πλείστου τῆς πόλεως μέρους, τῶν δ᾽ ἔνδον,
εἰ καὶ τὰ τείχη παρέμενεν, ἁλώσεως χεῖρον διακει-
μένων; Οὐ γὰρ λανθάνειν Ῥωμαίους τὸν ἐν τῇ πό-
λει λιμὸν, ᾧ νῦν μὲν τὸν δῆμον, μετ᾽ οὐ πολὺ δὲ
διαφθαρήσεσθαι καὶ τοὺς μαχίμους. Εἰ γὰρ δὴ καὶ
παύσαιντο Ῥωμαῖοι τῆς πολιορκίας, μηδὲ ἐπειςπίπ-
τοιεν τῇ πόλει ξιφήρεις, αὐτοῖς γε τὸν ἄμαχον πό-
λεμον ἔνδον παρακαθῆσθαι καθ᾽ ἑκάστην ὥραν τρε-
φόμενον, εἰ μὴ καὶ πρὸς τὸν λιμὸν ἆραι τὰ ὅπλα,
καὶ μάχεσθαι δύναιντο, μόνοι τε καὶ παθῶν ἐπι-
κρατεῖν.᾽ Προςετίθει δὲ, ῾ὡς καλὸν πρὸ ἀνηκέστου

συμφορᾶς μεταβαλέσθαι, καὶ πρὸς τὸ σωτήριον, ἕως ἔξεστι, ῥέψαι· καὶ γὰρ οὐδὲ μνησικακήσειν αὐτοῖς Ῥωμαίους τῶν γεγενημένων, εἰ μὴ μέχρι τέλους ἀπαυθαδιάσαιντο· φύσει τε γὰρ ἐν τῷ κρατεῖν ἡμέρους εἶναι, καὶ πρὸ τῶν θυμῶν θήσεσθαι τὸ συμφέρον· Τοῦτο δ' εἶναι μήτε τὴν πόλιν ἀνδρῶν κενὴν, μήτε τὴν χώραν ἔρημον ἔχειν. Διὸ καὶ νῦν Καίσαρα βούλεσθαι δεξιὰν αὐτοῖς παρασχεῖν· οὐ γὰρ ἂν σῶσαί τινα βίᾳ λαβὼν τὴν πόλιν, καὶ μάλιστα μηδ' ἐν ἐσχάταις συμφοραῖς ὑπακουσάντων παρακαλοῦντι. Τοῦ γε μὴν ταχέως τὸ τρίτον τεῖχος ἁλώσεσθαι, τὰ προεαλωκότα πίστιν εἶναι· καὶ ἂν ἄῤῥηκτον δὲ ᾖ τὸ ἔρυμα, τὸν λιμὸν ὑπὲρ Ῥωμαίων αὐτοῖς μάχεσθαι.

4. Ταῦτα τὸν Ἰώσηπον παραινοῦντα πολλοὶ μὲν ἔσκωπτον ἀπὸ τοῦ τείχους, πολλοὶ δ' ἐβλασφήμουν, ἔνιοι δὲ ἔβαλλον. Ὁ δὲ, ὡς ταῖς φανεραῖς οὐκ ἔπειθε συμβουλίαις, ἐπὶ τὰς ὁμοφύλους μετέβαινεν ἱστορίας, "Ὦ δείλαιοι, καὶ τῶν ἰδίων ἀμνήμονες συμμάχων, ὅπλοις καὶ χερσὶ πολεμεῖτε Ῥωμαίοις; Τίνα γὰρ ἄλλον οὕτως ἐνικήσαμεν; Πότε δὲ οὐ θεὸς ὁ κτίσας ἂν ἀδικῶνται Ἰουδαίων ἔκδικος; Οὐκ ἐπιστραφέντες ὄψεσθε, πόθεν ὁρμώμενοι μάχεσθε, καὶ πηλίκον ἐμιάνατε σύμμαχον; Οὐκ ἀναμνήσεσθε πατέρων ἔργα δαιμόνια, καὶ τὸν ἅγιον τόνδε χῶρον ἡλίκους ἡμῖν πάλαι πολεμίους καθεῖλεν; Ἐγὼ μὲν φρίττω τὰ ἔργα τοῦ θεοῦ λέγων εἰς ἀναξίους ἀκοάς. Ἀκούετε δὲ ὅμως, ἵνα γνῶτε μὴ μόνον Ῥωμαίοις πολεμοῦντες, ἀλλὰ καὶ τῷ θεῷ. Βασιλεὺς ὁ τότε Νεχαὼς Αἰγυπτίων, ὁ δ' αὐτὸς ἐκαλεῖτο καὶ Φαραὼ, μυρίᾳ χειρὶ καταβὰς, ἥρπασε Σάῤῥαν βασιλίδα, τοῦ
348 γένους ἡμῶν τὴν μητέρα. Τί οὖν ὁ ταύτης ἀνὴρ Ἀβράαμος, προπάτωρ δὲ ἡμέτερος; Ἆρα τὸν ὑβριστὴν ἠμύνατο τοῖς ὅπλοις, καίτοι ὀκτωκαίδεκα μὲν καὶ τριακοσίους ὑπάρχους ἔχων, δύναμιν δ' ὑφ' ἑκάστου τούτων ἄπειρον· ἢ αὐτοὺς μὲν ἐρημίαν ἡγήσατο μὴ συμπαρόντος θεοῦ, καθαρὰς δ' ἀνατείνας τὰς

χεῖρας εἰς ὃν νῦν ἐμιάνατε χῶρον ὑμεῖς, τὸν ἀνίκητον αὐτῷ βοηθὸν ἐστρατολόγησεν; Οὐ μετὰ μίαν ἑσπέραν ἄχραντος μὲν ἡ βασίλισσα ἀνεπέμφθη πρὸς τὸν ἄνδρα· προσκυνῶν δὲ τὸν ὑφ᾽ ὑμῶν αἱμαχθέντα χῶρον ὁμοφύλῳ φόνῳ, καὶ τρέμων ἀπὸ τῶν ἐν νυκτὶ φαντασμάτων, ἔφευγεν ὁ Αἰγύπτιος, ἀργύρῳ δὲ καὶ χρυσῷ τοὺς θεοφιλεῖς Ἑβραίους ἐδωρεῖτο; Σιγῶ ἢ εἴπω τὴν εἰς Αἴγυπτον μετοικίαν τῶν πατέρων, οἳ τυραννούμενοι καὶ βασιλεῦσιν ἀλλοφύλοις ὑποπεπτωκότες τετρακοσίοις ἔτεσι, παρὸν ὅπλοις ἀμύνασθαι καὶ χερσὶ, σφᾶς αὐτοὺς ἐπέτρεψαν τῷ θεῷ; Τίς οὐκ οἶδε τὴν ἐκ παντὸς θηρίου καταπλησθεῖσαν Αἴγυπτον, καὶ πάσῃ φθαρεῖσαν νόσῳ, τὴν ἄκαρπον γῆν, τὸν ἐπιλείποντα Νεῖλον, τὰς ἐπαλλήλους δέκα πληγὰς, τοὺς διὰ ταῦτα μετὰ φρουρᾶς προπεμπομένους πατέρας ἡμῶν, ἀναιμάκτους, ἀκινδύνους, οὓς ὁ θεὸς ἑαυτῷ νεωκόρους ἦγεν; Ἀλλὰ τὴν ὑπ᾽ Ἀσσυρίων ἁρπαγεῖσαν ἁγίαν ἡμῖν λάρνακα οὐκ ἐστέναξε μὲν ἡ Παλαιστίνη καὶ Δαγὼν τὸ ξόανον, ἐστέναξε δὲ πᾶν τὸ τῶν ἁρπαζομένων ἔθνος, σηπόμενοι δὲ τὰ κρυπτὰ τοῦ σώματος, καὶ δι᾽ αὐτῶν τὰ σπλάγχνα μετὰ τῶν σιτίων καταφέροντες, χερσὶ ταῖς λῃϊσαμέναις ἀνεκόμισαν, κυμβάλων καὶ τυμπάνων ἤχῳ, καὶ πᾶσι μειλικτηρίοις ἱλασκόμενοι τὸ ἅγιον; Θεὸς ἦν ὁ ταῦτα πατράσιν ἡμετέροις στρατηγῶν, ὅτι τὰς χεῖρας καὶ τὰ ὅπλα παρέντες, αὐτῷ κρῖναι τὸ ἔργον ἐπέτρεψαν. Βασιλεὺς Ἀσσυρίων Σενναχήριβος, ὅ τε πᾶσαν τὴν Ἀσίαν ἐπισυρόμενος τήνδε περιεστρατοπεδεύσατο τὴν πόλιν, ἆρα χερσὶν ἀνθρωπίναις ἔπεσεν; Οὐχ αἱ μὲν ἀπὸ τῶν ὅπλων ἠρεμοῦσαι ἐν προσευχαῖς ἦσαν, ἄγγελος δὲ τοῦ θεοῦ μιᾷ νυκτὶ τὴν ἄπειρον στρατιὰν ἐλυμήνατο, καὶ μεθ᾽ ἡμέραν ἀναστὰς ὁ Ἀσσύριος, ὀκτωκαίδεκα μυριάδας ἐπὶ πεντακισχιλίους νεκρῶν εὗρε, μετὰ δὲ τῶν καταλειπομένων ἀνόπλους καὶ μὴ διώκοντας Ἑβραίους ἔφυγεν; Ἴστε δὲ καὶ τὴν ἐν Βαβυλῶνι δουλείαν, ἔν-

θα μετανάστης ὢν ὁ λαὸς ἔτεσιν ἑβδομήκοντα αὖ πρότερον εἰς ἐλευθερίαν ἀνεχαίτισεν, ἢ Κῦρον τοῦτο χαρίσασθαι τῷ θεῷ. Προεπέμφθησαν γοῦν ὑπ' αὐτοῦ, καὶ πάλιν τὸν αὐτῶν σύμμαχον ἐνεωκόρουν. Καθόλου δ' οὐκ ἔστιν εἰπεῖν, ὅ τι κατώρθωσαν οἱ
349 πατέρες ἡμῶν τοῖς ὅπλοις, ἢ δίχα τούτων διήμαρτον ἐπιτρέψαντες τῷ θεῷ. Μένοντες μέν γε κατὰ χώραν ἐνίκων, ὡς ἐδόκει τῷ κριτῇ, μαχόμενοι δὲ ἔπταισαν ἀεί. Τοῦτο μέν, ἡνίκα βασιλεὺς Βαβυλωνίων ἐπολιόρκει ταύτην τὴν πόλιν, συμβαλὼν Σεδεκίας ὁ ἡμέτερος βασιλεὺς παρὰ τὰς Ἱερεμίου προφητείας, αὐτός τε ἑάλω, καὶ τὸ ἄστυ μετὰ τοῦ ναοῦ κατασκαπτόμενον εἶδε· καίτοι πόσῳ μετριώτερος ὁ μὲν βασιλεὺς ἐκεῖνος τῶν ὑμετέρων ἡγεμόνων ἦν, ὁ δὲ ὑπ' αὐτῷ λαὸς ὑμῶν. Βοῶντα γοῦν τὸν Ἱερεμίαν, ὡς ἀπεχθάνοιντο μὲν τῷ θεῷ διὰ τὰς εἰς αὐτὸν πλημμελείας, ἁλώσοιντο δέ, εἰ μὴ παραδοῖεν τὴν πόλιν, οὔθ' ὁ βασιλεὺς οὔθ' ὁ δῆμος ἀνεῖλεν. Ἀλλ' ὑμεῖς — ἵνα ἐάσω τὰ ἔνδον, οὐ γὰρ ἑρμηνεῦσαι δυναίμην τὰς παρανομίας ὑμῶν ἀξίως — ἐμὲ τὸν παρακαλοῦντα πρὸς σωτηρίαν ὑμᾶς βλασφημεῖτε, καὶ βάλλετε, παροξυνόμενοι πρὸς τὰς ὑπομνήσεις τῶν ἁμαρτημάτων, καὶ μηδὲ τοὺς λόγους φέροντες, ὧν τὰ ἔργα δρᾶτε καθ' ἡμέραν. Τοῦτο δέ, ἡνίκα, Ἀντιόχου τοῦ κληθέντος Ἐπιφανοῦς προσκαθεζομένου τῇ πόλει, πολλὰ πρὸς τὸ θεῖον ἐξυβρικότος, οἱ πρόγονοι μετὰ τῶν ὅπλων προῆλθον· αὐτοὶ μὲν ἀπεσφάγησαν ἐν τῇ μάχῃ, διηρπάγη δὲ καὶ τὸ ἄστυ τοῖς πολεμίοις, ἠρημώθη δ' ἔτη τρία καὶ μῆνας ἓξ τὸ ἅγιον. Καὶ τί δεῖ τὰ ἄλλα λέγειν; Ἀλλὰ Ῥωμαίους τίς ἐστρατολόγησε κατὰ τοῦ ἔθνους; Οὐχ ἡ τῶν ἐπιχωρίων ἀσέβεια; Πόθεν δ' ἠρξάμεθα δουλείας; Ἆρ' οὐχὶ ἐκ στάσεως τῶν προγόνων, ὅτε ἡ Ἀριστοβούλου καὶ Ὑρκανοῦ μανία, καὶ ἡ πρὸς ἀλλήλους ἔρις Πομπήϊον ἐπήγαγε τῇ πόλει, καὶ Ῥωμαίοις ὑπέταξεν ὁ θεὸς τοὺς οὐκ ἀξίους ἐλευθερίας; Τρισὶ γοῦν μησὶ

πολιορκηθέντες ἑαυτοὺς παρέδοσαν, οὔτε ἁμαρτόντες εἰς τὰ ἅγια καὶ τοὺς νόμους, ἡλίκα ὑμεῖς, καὶ πολὺ μείζοσιν ἀφορμαῖς πρὸς τὸν πόλεμον χρώμενοι. Τὸ δὲ Ἀντιγόνου τέλος τοῦ Ἀριστοβούλου παιδὸς οὐκ ἴσμεν, οὗ βασιλεύοντος ὁ θεὸς ἁλώσει πάλιν τὸν λαὸν ἤλαυνε πλημμελοῦντα; Καὶ Ἡρώδης μὲν ὁ Ἀντιπάτρου Σόσιον, Σόσιος δὲ Ῥωμαίων στρατιὰν ἤγαγε· περισχεθέντες δ' ἐπὶ μῆνας ἓξ ἐπολιορκοῦντο, μέχρι δίκας τῶν ἁμαρτιῶν δόντες ἑάλωσαν, καὶ διηρπάγη τοῖς πολεμίοις ἡ πόλις. Οὕτως οὐδέποτε τῷ ἔθνει τὰ ὅπλα δέδοται· τῷ δὲ πολεμεῖσθαι καὶ τὸ ἁλώσεσθαι πάντως πρόςεστι. Δεῖ γάρ, οἶμαι, τοὺς χωρίον ἅγιον νεμομένους ἐπιτρέπειν πάντα τῷ θεῷ δικάζειν, καὶ καταφρονεῖν τότε χειρὸς ἀνθρωπίνης, ὅτε αὐτοὶ πείθωσι τὸν ἄνω δικαστήν. Ὑμῖν δὲ τί τῶν εὐλογηθέντων ὑπὸ τοῦ νομοθέτου πέπρακται; Τί δὲ τῶν ὑπ' ἐκείνου κατηραμένων παραλέλειπται; Πόσῳ δὲ ἐστὲ τῶν τάχιον ἁλόντων ἀσεβέστεροι; Οὐ τὰ κρυπτὰ μὲν τῶν ἁμαρτημάτων ἠδοξήκατε, κλοπὰς λέγω καὶ ἐνέδρας καὶ μοιχείας· ἁρπαγαῖς δ' ἐρίζετε καὶ φόνοις, καὶ ξένας καινοτομεῖτε κακίας ὁδούς. Ἐκδοχεῖον δὲ πάντων τὸ ἱερὸν γέγονε, καὶ χερσὶν ἐμφυλίοις ὁ θεῖος μεμίανται χῶρος, ὃν καὶ Ῥωμαῖοι πόῤῥωθεν προςεκύνουν, πολλὰ τῶν ἰδίων ἐθῶν παραλύοντες εἰς τὸν ἡμέτερον νόμον. Εἶτα ἐπὶ τούτοις τὸν ἀσεβηθέντα σύμμαχον προςδοκᾶτε; Πάνυ γοῦν ἐστὲ δίκαιοι ἱκέται, καὶ χερσὶν καθαραῖς τὸν βοη- 350
θὸν ὑμῶν παρακαλεῖτε. Τοιαύταις ὁ βασιλεὺς ἡμῶν ἱκέτευσεν ἐπὶ τὸν Ἀσσύριον, ὅτε τὸν μέγαν ἐκεῖνον στρατὸν μιᾷ νυκτὶ κατέστρωσεν ὁ θεός. Ὅμοια δὲ τῷ Ἀσσυρίῳ Ῥωμαῖοι δρῶσιν, ἵνα καὶ ἄμυναν ὑμεῖς ὁμοίαν ἐλπίσητε; Οὐχ ὁ μὲν χρήματα παρὰ τοῦ βασιλέως ὑμῶν λαβὼν ἐφ' ᾧ μὴ πορθήσῃ τὴν πόλιν, κατέβη παρὰ τοὺς ὅρκους ἐμπρῆσαι τὸν ναόν; Ῥωμαῖοι δὲ τὸν συνήθη δασμὸν αἰτοῦσιν, ὃν οἱ πατέρες ἡμῶν τοῖς ἐκείνων πατράσι παρέσχον· καὶ τού-

του τυχόντες οὔτε πορθοῦσι τὴν πόλιν, οὔτε ψαύουσι τῶν ἁγίων· δίδόασι δὲ ὑμῖν τὰ ἄλλα γενεάς τε ἐλευθέρας, καὶ κτήσεις τὰς ἑαυτῶν νέμεσθαι, καὶ τοὺς ἱεροὺς νόμους σώζουσι. Μανία δὴ τὸν Θεὸν προσδοκᾶν ἐπὶ δικαίοις, οἷος ἐπ' ἀδίκοις ἐφάνη· καὶ παραχρῆμα δ' ἀμύνειν οἶδεν, ὅταν δέῃ. Τοὺς γοῦν Ἀσσυρίους κατὰ νύκτα τὴν πρώτην παραστρατοπεδευσαμένους ἔκλασεν· ὥστε, εἰ καὶ τὴν ἡμετέραν γενεὰν ἐλευθερίας, ἢ Ῥωμαίους κολάσεως ἀξίους ἔκρινε, καὶ ἂν παραχρῆμα καθάπερ τοῖς Ἀσσυρίοις ἐνέσκηψεν, ὅτε τοῦ ἔθνους ἥπτετο Πομπήϊος, ὅτε μετ' αὐτὸν ἀνήει Σόσιος, ὅτε Οὐεσπασιανὸς ἐπόρθει τὴν Γαλιλαίαν, τὰ τελευταῖα νῦν, ὅτε ἤγγιζε Τίτος τῇ πόλει. Καίτοι Μάγνος μὲν, καὶ Σόσιος πρὸς τὸ μηδὲν παθεῖν, καὶ ἀνὰ κράτος ἔλαβον τὴν πόλιν, Οὐεσπασιανὸς δ' ἐκ τοῦ πρὸς ἡμᾶς πολέμου καὶ βασιλείας ἤρξατο. Τίτῳ μὲν γὰρ καὶ πηγαὶ πλουσιώτεραι ῥέουσιν, αἱ ξηρανθεῖσαι πρότερον ὑμῖν· πρὸ γοῦν τῆς αὐτοῦ παρουσίας τήν τε Σιλωὰμ ἐπιλιποῦσαν ἴστε, καὶ τὰς ἔξω τοῦ ἄστεος ἁπάσας, ὥστε πρὸς ἀμφορεῖς ὠνεῖσθαι τὸ ὕδωρ· τὸ δὲ νῦν οὕτω πληθύουσι τοῖς πολεμίοις ὑμῶν, ὡς μὴ μόνον αὐτοῖς καὶ κτήνεσιν, ἀλλὰ καὶ κήποις διαρκεῖν. Τό γε μὴν τέρας τοῦτο πεπείρασθε καὶ πρότερον ἐφ' ἁλώσει τῆς πόλεως γεγενημένον, ὅθ' ὁ προειρημένος Βαβυλώνιος ἐπεστράτευσεν, ὃς τήν τε πόλιν ἑλὼν ἐνέπρησε καὶ τὸν ναὸν, οὐδὲν οἶμαι τῶν τότε ἠσεβηκότων τηλικοῦτον, ἡλίκα ὑμεῖς· ὥστε ἔγωγε πεφευγέναι μὲν ἐκ τῶν ἁγίων οἶμαι τὸν Θεὸν, ἑστάναι δὲ παρ' οἷς πολεμεῖτε νῦν. Ἀλλ' ἀνὴρ μὲν ἀγαθὸς οἰκίαν ἀσελγῆ φεύξεται, καὶ τοὺς ἐν αὐτῇ στυγήσει· τὸν δὲ Θεὸν ἔτι πείθεσθε τοῖς ὑμετέροις κακοῖς παραμένειν, ὃς τά τε κρυπτὰ πάντα ἐφορᾷ, καὶ τῶν σιγωμένων ἀκούει; Τί δὲ σιγᾶται παρ' ὑμῖν, ἢ τί κρύπτεται, τί δ' οὐχὶ καὶ τοῖς ἐχθροῖς φανερὸν γέγονε; Πομπεύετε γὰρ παρανομοῦντες, καὶ καθ' ἡμέραν ἐρίζετε,

τὶς χείρων γένηται, τῆς ἀδικίας ὥσπερ ἀρετῆς ἐπί-
δειξιν ποιούμενοι. Καταλείπεται δὲ ὅμως ἔτι σωτη-
ρίας ὁδὸς, ἐὰν θέλητε, καὶ τὸ θεῖον εὐδιάλλακτον ἐ-
ξομολογουμένοις καὶ μετανοοῦσιν. Ὦ σιδήρειοι, ῥί-
ψατε τὰς πανοπλίας, λάβετε ἤδη κατερειπομένης αἰ-
δῶ πατρίδος, ἐπιστράφητε, καὶ θεάσασθε τὸ κάλλος
ἧς προδίδοτε, οἷον ἄστυ, οἷον ἱερὸν, ὅσων ἐθνῶν
δῶρα! Ἐπὶ ταῦτα τίς ὁδηγεῖ φλόγας; Ταῦτα τίς
μηκέτι εἶναι θέλει; Καὶ τί σώζεσθαι τούτων ἀξιώτε- 351
ρον; Ἄτεγκτοι καὶ λίθων ἀπαθέστεροι! Καὶ εἰ μὴ
ταῦτα γνησίοις ὄμμασι βλέπετε, γενεὰς γοῦν ὑμετέ-
ρας οἰκτείρατε, καὶ πρὸ ὀφθαλμῶν ἑκάστῳ γενέσθω
τέκνα καὶ γυνὴ καὶ γονεῖς, οὓς ἀναλώσει κατὰ μι-
κρὸν ἢ λιμὸς ἢ πόλεμος. Οἶδα, ὅτι μοι συγκινδυ-
νεύει μήτηρ καὶ γυνὴ καὶ γένος οὐκ ἄσημον, καὶ
πάλαι λαμπρὸς οἶκος, καὶ τάχα δοκῶ διὰ ταῦτα συμ-
βουλεύειν. Ἀποκτείνατε αὐτοὺς, λάβετε μισθὸν τῆς
ἑαυτῶν σωτηρίας τὸ ἐμὸν αἷμα· καὶ ἐγὼ θνήσκειν
ἕτοιμος, εἰ μετ᾽ ἐμὲ σωφρονεῖν μέλλετε."

CAP. X. 1. Τοιαῦτα τοῦ Ἰωσήπου μετὰ δακρύων ἐμβοῶντος, οἱ στασιασταὶ μὲν οὔτε ἐνέδοσαν, οὔτε ἀσφαλῆ τὴν μεταβολὴν ἔκρινον· ὁ δὲ δῆμος ἐκινήθη πρὸς αὐτομολίαν. Καὶ οἱ μὲν τὰς κτήσεις ἐλαχίστου πωλοῦντες, οἱ δὲ τὰ πολυτελέστερα τῶν κειμηλίων, τοὺς μὲν χρυσοῦς, ὡς μὴ φωραθεῖεν ὑπὸ τῶν λῃστῶν, κατέπινον, ἔπειτα πρὸς τοὺς Ῥωμαίους διαδιδράσκοντες, ὁπότε κατενέγκαιεν, εὐπόρουν πρὸς ἃ δέοιντο. Διηφίει γὰρ τοὺς πολλοὺς ὁ Τίτος εἰς τὴν χώραν, ὅπου βούλοιτο ἕκαστος· καὶ τοῦτο αὐτοὺς μᾶλλον πρὸς αὐτομολίαν παρεκάλει, τῶν μὲν εἴσω κακῶν στερησομένους, μὴ δουλεύσοντας δὲ Ῥωμαίοις. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰωάννην καὶ τὸν Σίμωνα περιεφύλαττον τὰς τούτων ἐξόδους πλέον, ἢ τὰς Ῥωμαίων εἰςόδους, καὶ σκιάν τις ὑπονοίας παρασχὼν μόνον εὐθέως ἀπεσφάττετο.

2. Τοῖς γε μὴν εὐπόροις καὶ τὸ μένειν πρὸς
ἀπώλειαν ἴσον ἦν· προφάσει γὰρ αὐτομολίας ἀνῃρεῖ-
τό τις διὰ τὴν οὐσίαν. Τῷ λιμῷ δὲ ἡ ἀπόνοια τῶν
στασιαστῶν συνήκμαζεν, καὶ καθ᾽ ἡμέραν ἀμφότερα
προςεξεκαίετο τὰ δεινά. Φανερὸς μὲν γὰρ οὐδαμοῦ
σῖτος ἦν, ἐπειςπηδῶντες δὲ διηρεύνων τὰς οἰκίας·
ἔπειθ᾽ εὑρόντες μὲν ὡς ἀρνησαμένους ᾐκίζοντο, μὴ
εὑρόντες δὲ ὡς ἐπιμελέστερον κρύψαντας ἐβασάνιζον.
Τεκμήριον δὲ τοῦ τε ἔχειν καὶ μὴ τὰ σώματα τῶν
ἀθλίων· ὧν οἱ μὲν ἔτι συνεστῶτες εὐπορεῖν τροφῆς
ἐδόκουν, οἱ τηκόμενοι δὲ ἤδη παρωδεύοντο. Καὶ
κτείνειν ἄλογον ἐδόκει τοὺς ὑπ᾽ ἐνδείας τεθνηξομέ-
νους αὐτίκα. Πολλοὶ δὲ λάθρα τὰς κτήσεις ἑνὸς ἀν-
τηλλάξαντο μέτρου πυρῶν μὲν, εἰ πλουσιώτεροι τυγ-
χάνοιεν ὄντες, οἱ δὲ πενέστεροι κριθῆς. Ἔπειτα κα-
τακλείοντες ἑαυτοὺς εἰς τὰ μυχαίτατα τῶν οἰκιῶν,
352 τινὲς μὲν ὑπ᾽ ἄκρας ἐνδείας ἀνέργαστον τὸν σῖτον
ἤσθιον, οἱ δὲ ἔπεσσον, ὡς ἥ τε ἀνάγκη καὶ τὸ
δέος παρῄνει. Καὶ τράπεζα μὲν οὐδαμοῦ παρετί-
θετο, τοῦ δὲ πυρὸς ἐφέλκοντες ἔτ᾽ ὠμὰ τὰ σιτία
διήρπαζον.

3. Ἐλεεινὴ δ᾽ ἦν ἡ τροφὴ, καὶ δακρύων ἄξιος
ἡ θέα, τῶν μὲν δυνατωτέρων πλεονεκτούντων, τῶν δὲ
ἀσθενῶν ὀδυρομένων. Πάντων μὲν δὴ παθῶν ὑπερ-
ίσταται λιμὸς, οὐδὲν δὲ οὕτως ἀπόλλυσιν, ὡς αἰδῶ·
τὸ γὰρ ἄλλως ἐντροπῆς ἄξιον, ἐν τούτῳ καταφρονεῖ-
ται. Γυναῖκες γοῦν ἀνδρῶν, καὶ παῖδες πατέρων,
καὶ — τὸ οἰκτρότατον! — μητέρες νηπίων ἐξήρπα-
ζον ἐξ αὐτῶν τῶν στομάτων τὰς τροφάς· καὶ τῶν
φιλτάτων ἐν χερσὶ μαραινομένων, οὐκ ἦν φειδὼ τοὺς
τοῦ ζῆν ἀφελέσθαι σταλαγμούς. Τοιαῦτα δ᾽ ἐσθίον-
τες, ὅμως οὐ διελάνθανον· πανταχοῦ δ᾽ οὖν ἐφίσταν-
το οἱ στασιασταὶ καὶ τούτων ταῖς ἁρπαγαῖς. Ὁπότε
γὰρ κατίδοιεν ἀποκεκλεισμένην οἰκίαν, σημεῖον ἦν
τοῦτο, τοὺς ἔνδον προσφέρεσθαι τροφῆς· εὐθέως δ᾽
ἐξαράξαντες τὰς θύρας εἰςεπήδων, καὶ μόνον οὐκ ἐκ

τῶν φαρύγγων ἀναθλίβοντες τὰς ἀκόλους ἀνέφερον.
Ἐτύπτοντο δὲ γέροντες ἀντεχόμενοι τῶν σιτίων, καὶ
κόμας ἐσπαράττοντο γυναῖκες συγκαλύπτουσαι τὰ ἐν
χερσίν. Οὐδέ τις ἦν οἶκτος πολιᾶς ἢ νηπίων, ἀλλὰ
συνεπαίροντες τὰ παιδία τῶν ψωμῶν ἐκκρεμάμενα,
κατέσειον εἰς ἔδαφος. Τοῖς δὲ φθάσασι τὴν εἰςδρο-
μὴν αὐτῶν, καὶ προκαταπιοῦσι τὸ ἁρπαγησόμενον,
ὡς ἀδικηθέντες ἦσαν ὠμότεροι. Δεινὰς δὲ βασάνων
ὁδοὺς ἐπενόουν πρὸς ἔρευναν τροφῆς, ὀρόβοις μὲν
ἐμφράττοντες τοῖς ἀθλίοις τοὺς τῶν αἰδοίων πόρους,
ῥάβδοις δ' ὀξείαις ἀναπείροντες τὰς ἕδρας. Τὰ φρι-
κτὰ δὲ καὶ ἀκοαῖς ἔπασχέ τις εἰς ἐξομολόγησιν ἑνὸς
ἄρτου, καὶ ἵνα μηνύσῃ δράκα μίαν κεκρυμμένων ἀλ-
φίτων. Οἱ βασανισταὶ δ' οὐκ ἐπείνων, — καὶ γὰρ
ἧττον ἂν ὠμὸν ἦν τὸ μετ' ἀνάγκης, — γυμνάζοντες
δὲ τὴν ἀπόνοιαν, καὶ προπαρασκευάζοντες αὐτοῖς εἰς
τὰς ἑξῆς ἡμέρας ἐφόδια. Τοῖς δ' ἐπὶ τὴν Ῥωμαίων
φρουρὰν νύκτωρ ἐξερπύσασιν ἐπὶ λαχάνων συλλογὴν
ἀγρίων καὶ πόας, ὑπαντῶντες, ὅτε ἤδη διαπεφευγέ-
ναι τοὺς πολεμίους ἐδόκουν, ἀφήρπαζον τὰ κομισθέν-
τα· καὶ πολλάκις ἱκετευόντων, καὶ τὸ φρικτὸν ἐπι-
καλουμένων ὄνομα τοῦ θεοῦ, μεταδοῦναί τι μέρος
αὐτοῖς ὧν κινδυνεύσαντες ἤνεγκαν, οὐδ' ὁτιοῦν μετέ-
δοσαν. Ἀγαπητὸν δ' ἦν τὸ μὴ καὶ προςαπολέσθαι
σεσυλημένον.

4. Οἱ μὲν δὴ ταπεινότεροι τοιαῦτα πρὸς τῶν
δορυφόρων ἔπασχον, οἱ δὲ ἐν ἀξιώματι καὶ πλούτῳ
πρὸς τοὺς τυράννους ἀνήγοντο. Τούτων οἱ μὲν ἐπι-
βουλὰς ψευδεῖς ἐγκαλούμενοι διεφθείροντο, οἱ δὲ ὡς
προδιδοῖεν Ῥωμαίοις τὴν πόλιν. Τὸ δὲ ἑτοιμότατον
ἦν μηνυτής τις ὑποβλητὸς, ὡς αὐτομολεῖν διεγνω-
κότων. Ὁ δὲ ὑπὸ Σίμωνος γυμνωθεὶς πρὸς Ἰωάν-
νην ἀνεπέμπετο, καὶ τῶν ὑπὸ Ἰωάννου σεσυλημένων
ὁ Σίμων μετελάμβανεν· ἀντιπροέπινον δ' ἀλλήλοις 353
τὸ αἷμα τῶν δημοτῶν, καὶ τὰ πτώματα τῶν ἀθλίων
διεμερίζοντο. Καὶ τοῦ μὴν κρατεῖν στάσις ἦν ἐν ἀμ-

φοτέροις· τῶν δὲ ἀσεβημάτων ὁμόνοια. Καὶ γὰρ ὁ μὴ μεταδοὺς ἐκ τῶν ἀλλοτρίων κακῶν θατέρῳ, μονοτρόπως ἐδόκει πονηρός· καὶ ὁ μὴ μεταλαβὼν, ὡς ἀγαθοῦ τινος ἤλγει τὸν νοσφισμὸν τῆς ὠμότητος.

5. Καθέκαστον μὲν οὖν ἐπεξιέναι τὴν παρανομίαν αὐτῶν, ἀδύνατον· συνελόντα δ᾽ εἰπεῖν, μήτε πόλιν ἄλλην τοιαῦτα πεπονθέναι, μήτε γενεὰν ἐξ αἰῶνος γεγονέναι κακίας γονιμωτέραν. Οἵ γε τελευταῖον καὶ τὸ γένος ἐφαύλιζον τῶν Ἑβραίων, ὡς ἧττον ἀσεβεῖς δοκοῖεν πρὸς ἀλλοτρίους. Ἐξωμολογήσαντο δὲ, ὅπερ ἦσαν, εἶναι δοῦλοι, σύγκλυδες, καὶ νόθα τοῦ ἔθνους φθάρματα. Τὴν μέν γε πόλιν ἀνέτρεψαν αὐτοί· Ῥωμαίους δὲ ἄκοντας ἠνάγκασαν ἐπιγραφῆναι σκυθρωπῷ κατορθώματι, καὶ μόνον οὐχ εἵλκυσαν ἐπὶ τὸν ναὸν βραδύνον τὸ πῦρ. Ἀμέλει καιόμενον ἐκ τῆς ἄνω πόλεως ἀφορῶντες οὔτε ἤλγησαν, οὔτε ἐδάκρυσαν, ἀλλὰ ταῦτα τὰ πάθη παρὰ Ῥωμαίους εὑρέθη. Καὶ ταῦτα μὲν κατὰ χώραν ὕστερον μετὰ ἀποδείξεως τῶν πραγμάτων ἐροῦμεν.

CAP. XI. 1. Τίτῳ δὲ τὰ μὲν χώματα προέκοπτε, καίτοι πολλὰ κακουμένων ἀπὸ τοῦ τείχους τῶν στρατιωτῶν. Πέμψας δὲ αὐτὸς μοῖραν τῶν ἱππέων ἐκέλευσε τοὺς κατὰ τὰς φάραγγας ἐπὶ συγκομιδῇ τροφῆς ἐξιόντας ἐνεδρεύειν. Ἦσαν δέ τινες μὲν καὶ τῶν μαχίμων, οὐκ ἔτι διαρκούμενοι ταῖς ἁρπαγαῖς, τὸ δὲ πλέον ἐκ τοῦ δήμου πένητες, οὓς αὐτομολεῖν ἀπέτρεπε τὸ περὶ τῶν οἰκείων δέος· οὔτε γὰρ λήσεσθαι τοὺς στασιαστὰς ἤλπιζον μετὰ γυναικῶν καὶ παιδίων διαδιδράσκοντες, καὶ καταλιπεῖν ταῦτα τοῖς λησταῖς οὐχ ὑπέμενον ὑπὲρ αὐτῶν σφαγησόμενα. Τολμηροὺς δὲ πρὸς τὰς ἐξόδους ὁ λιμὸς ἐποίει· καὶ κατελείπετο λανθάνοντας εἰς τοὺς πολεμίους ἁλίσκεσθαι. Λαμβανόμενοι δὲ κατ᾽ ἀνάγκην ἠμύνοντο δέει τῆς κολάσεως, καὶ μετὰ μάχην ἱκετεύειν ἄωρον ἐδόκει. Μαστιγούμενοι δὴ καὶ προβασανιζόμενοι τοῦ θανάτου πᾶσαν αἰκίαν, ἀνεσταυροῦντο τοῦ τείχους

ἀντικρύ. Τίτῳ μὲν οὖν οἰκτρὸν τὸ πάθος κατεφαίνετο, πεντακοσίων ἑκάστης ἡμέρας, ἔστι δ' ὅτε καὶ πλειόνων ἁλισκομένων· οὔτε δὲ τοὺς βίᾳ ληφθέντας ἀφεῖναι ἀσφαλὲς, καὶ φυλάττειν τοσούτους φρουρὰν τῶν φυλαξάντων ἑώρα· τό γε μὴν πλέον οὐκ ἐκώλυε, τάχα δ' ἂν ἐνδοῦναι πρὸς τὴν ὄψιν ἐλπίσας αὐτοὺς, εἰ μὴ παραδοῖεν ὅμοια πεισομένους. Προςήλουν 354
δὲ οἱ στρατιῶται δι' ὀργὴν καὶ μῖσος τοὺς ἁλόντας, ἄλλον ἄλλῳ σχήματι πρὸς χλεύην, καὶ διὰ τὸ πλῆθος χώρα τε ἐνελείπετο τοῖς σταυροῖς, καὶ σταυροὶ τοῖς σώμασιν.

2. Οἱ στασιασταὶ δὲ τοσοῦτον ἀπεδέησαν τοῦ μεταβαλέσθαι πρὸς τὸ πάθος, ὥςτε καὶ τὸ ἐναντίον αὐτοῖς σοφίσασθαι πρὸς τὸ λοιπὸν πλῆθος. Σύροντες γὰρ τοὺς τῶν αὐτομόλων οἰκείους ἐπὶ τὸ τεῖχος, καὶ τῶν δημοτῶν τοὺς ἐπὶ πίστιν ὡρμημένους, οἷα πάσχουσιν οἱ Ῥωμαίοις προςφεύγοντες ἐπεδείκνυσαν, καὶ τοὺς κεκρατημένους ἱκέτας ἔλεγον οὐκ αἰχμαλώτους. Τοῦτο πολλοὺς τῶν αὐτομολεῖν ὡρμημένων, μέχρι τὸ ἀληθὲς ἐγνώσθη, κατέσχεν εἴσω· ἔνιοι δὲ καὶ παραχρῆμα διέδρασαν, ὡς ἐπὶ βέβαιον τιμωρίαν, ἀνάπαυσιν ἡγούμενοι τὸν ἐκ τῶν πολεμίων θάνατον ἐν λιμοῦ συγκρίσει. Πολλοὺς δὲ καὶ χειροκοπῆσαι κελεύσας Τίτος τῶν ἑαλωκότων, ὡς μὴ δοκοῖεν αὐτόμολοι, καὶ πιστεύοιντο διὰ τὴν συμφορὰν, εἰςέπεμψε πρὸς τὸν Ἰωάννην καὶ τὸν Σίμωνα, 'νῦν γε ἤδη παύσασθαι παραινῶν, καὶ μὴ πρὸς ἀναίρεσιν τῆς πόλεως αὐτὸν βιάζεσθαι, κερδῆσαι δ' ἐκ τῆς ἐν ὑστάτοις μεταμελείας τάς τε αὐτῶν ψυχὰς, καὶ τηλικαύτην πατρίδα, καὶ ναὸν ἀκοινώνητον ἄλλοις.' Περιϊὼν δὲ τὰ χώματα τοὺς ἐργαζομένους ἅμα κατήπειγεν, ὡς οὐκ εἰς μακρὰν ἀκολουθήσειν ἔργοις τῷ λόγῳ. Πρὸς ταῦτα αὐτόν τε ἐβλασφήμουν ἀπὸ τοῦ τείχους Καίσαρα, καὶ τὸν πατέρα αὐτοῦ, καὶ 'τοῦ μὲν θανάτου καταφρονεῖν ἐβόων, ᾑρῆσθαι γὰρ αὐτὸν πρὸ δουλείας καλῶς· ἐργάσασθαι δὲ ὅσα ἂν δύναν-

ται κακὰ Ῥωμαίους, ἕως ἐμπνέωσι, πατρίδος δ' οὐ μέλειν τοῖς, ὡς αὐτός φησιν, ἀπολουμένοις, καὶ ναοῦ ἀμείνω τούτου τῷ θεῷ τὸν κόσμον εἶναι. Σωθήσεσθαί γε μὴν καὶ τοῦτον ὑπὸ τοῦ κατοικοῦντος, ὃν καὶ αὐτοὶ σύμμαχον ἔχοντες πᾶσαν χλευάζειν ἀπειλὴν ὑστεροῦσαν ἔργων· τὸ γὰρ τέλος εἶναι τοῦ θεοῦ.' Τοιαῦτα ταῖς λοιδορίαις ἀναμίσγοντες ἐκεκράγεσαν.

3. Ἐν δὲ τούτῳ καὶ ὁ Ἐπιφανὴς Ἀντίοχός παρῆν, ἄλλους τε ὁπλίτας συχνοὺς ἔχων, καὶ περὶ αὐτὸν στίφος Μακεδόνων καλούμενον, ἥλικας πάντας, ὑψηλούς, ὀλίγον ὑπὲρ ἀντίπαιδας, τὸν Μακεδονικὸν τρόπον ὡπλισμένους τε καὶ πεπαιδευμένους, ὅθεν καὶ τὴν ἐπίκλησιν εἶχον, ὑστεροῦντες οἱ πολλοὶ τοῦ γένους. Εὐδαιμονῆσαι γὰρ μάλιστα τῶν ὑπὸ Ῥωμαίοις βασιλέων τὸν Κομμαγηνὸν συνέβη, πρὶν γεύσασθαι μεταβολῆς. Ἀπέφηνε δὲ καὶ ἐκεῖνος ἐπὶ γήρως, ὡς οὐδένα χρὴ λέγειν πρὸ θανάτου μακάριον. Ἀλλ' ὅ γε παῖς ἀκμάζοντος αὐτοῦ τηνικαῦτα παρὼν 'θαυμάζειν ἔφασκε, τί δήποτε Ῥωμαῖοι κατοκνοῖεν προσιέναι τῷ τείχει.' Πολεμιστὴς δέ τις αὐτὸς ἦν,
255 καὶ φύσει παράβολος, κατά τε τὴν ἀλκὴν τοσοῦτος, ὡς ὀλίγῳ τὴν τόλμαν διαμαρτάνειν. Μειδιάσαντος δὲ τοῦ Τίτου, καὶ κοινὸς ὁ πόνος εἰπόντος, ὡς εἶχεν ὥρμησεν ὁ Ἀντίοχος μετὰ τῶν Μακεδόνων πρὸς τὸ τεῖχος. Αὐτὸς μὲν οὖν διά τε ἰσχὺν καὶ κατ' ἐμπειρίαν ἐφυλάττετο τὰ τῶν Ἰουδαίων βέλη, τοξεύων εἰς αὐτούς· τὰ μειράκια δὲ αὐτῷ συνετρίβη πάντα, πλὴν ὀλίγων. Διὰ γὰρ αἰδῶ τῆς ὑποσχέσεως προσεφιλονείκει μαχόμενα, καὶ τέλος ἀνεχώρουν τραυματίαι πολλοί, συννοοῦντες, ὅτι καὶ τοῖς ἀληθῶς Μακεδόσιν, εἰ μέλλοιεν κρατεῖν, δέοι τῆς Ἀλεξάνδρου τύχης.

4. Τοῖς δὲ Ῥωμαίοις, ἀρξαμένοις δωδεκάτῃ μηνὸς Ἀρτεμισίου, συνετελέσθη τὰ χώματα μόλις ἐνάτῃ καὶ εἰκάδι, ταῖς δεκαεπτὰ συνεχῶς πονουμένων ἡμέραις· μέγιστα γὰρ ἐχώσθη τὰ τέσσαρα, καὶ θά-

τερον μὲν τὸ ἐπὶ τὴν Ἀντωνίαν ὑπὸ τοῦ πέμπτου τάγματος ἐβλήθη κατὰ μέσον τῆς Στρουθίου καλουμένης κολυμβήθρας· τὸ δὲ ἕτερον ὑπὸ τοῦ δωδεκάτου διεστῶτος ὅσον εἰς πήχεις εἴκοσι. Τῷ δεκάτῳ δὲ τάγματι, διέχοντι πολὺ τούτων, κατὰ βόρειον κλίμα τὸ ἔργον ἦν καὶ κολυμβήθραν Ἀμύγδαλον προςαγορευομένην. Τούτου δὲ τὸ πεντεκαιδέκατον ἀπὸ τριάκοντα πηχῶν ἔχον κατὰ τὸ τοῦ ἀρχιερέως μνημεῖον. Προςαγομένων δ' ἤδη τῶν ὀργάνων, ὁ μὲν Ἰωάννης ἔνδοθεν ὑπορύξας τὸ κατὰ τὴν Ἀντωνίαν μέχρι τῶν χωμάτων διάστημα, καὶ διαλαβὼν σταυροῖς τοὺς ὑπονόμους ἀνακρήμνησι τὰ ἔργα· πίσσῃ δὲ καὶ ἀσφάλτῳ διακεχρισμένην ὕλην εἰςκομίσας ἐνίησι πῦρ, καὶ τῶν σταυρῶν ὑποκαέντων ἥ τε διώρυξ ἐνέδωκεν ἀθρόα, καὶ μετὰ μεγίστου ψόφου κατεσείσθη τὰ χώματα εἰς αὐτήν. Τὸ μὲν οὖν πρῶτον μετὰ τοῦ κονιορτοῦ καπνὸς ἠγείρετο βαθὺς, πνιγομένου τῷ πταίσματι τοῦ πυρός· τῆς δὲ θλιβούσης ὕλης διαβιβρωσκομένης ἤδη φανερὰ φλὸξ ἐῤῥήγνυτο. Καὶ τοῖς Ῥωμαίοις ἔκπληξις μὲν πρὸς τὸ αἰφνίδιον, ἀθυμία δὲ πρὸς τὴν ἐπίνοιαν ἐμπίπτει. Καὶ κρατήσειν οἰομένοις ἤδη τὸ συμβὰν καὶ πρὸς τὸ μέλλον ἔψυξε τὴν ἐλπίδα· τὸ δὲ ἀμύνειν ἀχρεῖον ἐδόκει πρὸς τὸ πῦρ, καὶ εἰ σβεσθείη, τῶν χωμάτων καταποθέντων.

5. Μετὰ δὲ ἡμέρας δύο καὶ τοῖς ἄλλοις ἐπιτίθενται χώμασιν οἱ περὶ τὸν Σίμωνα· καὶ γὰρ δὴ προςαγαγόντες ταύτῃ τὰς ἑλεπόλεις οἱ Ῥωμαῖοι, διέσειον ἤδη τὸ τεῖχος. Τεφθαῖος δέ τις ἀπὸ Γαρσὶς πόλεως τῆς Γαλιλαίας, καὶ Μεγάσσαρος τῶν βασιλικῶν Μαριάμμης θεράπων, μεθ' ὧν Ἀδιαβηνός τις υἱὸς Ναβαταίου, τὸ ὄνομα κληθεὶς ἀπὸ τῆς τύχης Χαγείρας, ὅπερ σημαίνει χωλὸς, ἁρπάσαντες λαμπάδας, προςεπήδησαν ἐπὶ τὰς μηχανάς. Τούτων τῶν ἀνδρῶν οὔτε τολμηρότεροι κατὰ τόνδε τὸν πόλεμον ἐκ τῆς πόλεως ἐφάνησαν, οὔτε φοβερώτεροι·

καθάπερ γὰρ εἰς φίλους ἐκτρέχοντες οὐ πολεμίων στῖφος
356 οὔτε ἔδεισαν, οὔτε ἐμέλλησαν, οὔτε ἀπέστησαν, ἀλλὰ διὰ μέσων ἐκθοροῦντες τῶν ἐχθρῶν ὑφῆψαν τὰς μηχανάς. Βαλλόμενοι δὲ, καὶ τοῖς ξίφεσιν ἀνωθούμενοι πάντοθεν, οὐ πρότερον ἐκ τοῦ κινδύνου μετεκινήθησαν, ἢ δράξασθαι τῶν ὀργάνων τὸ πῦρ. Αἰρομένης δ' ἤδη τῆς φλογὸς, Ῥωμαῖοι μὲν ἀπὸ τῶν στρατοπέδων συνθέοντες ἐβοήθουν· Ἰουδαῖοι δὲ ἐκ τοῦ τείχους ἐκώλυον, καὶ τοῖς σβεννύειν πειρωμένοις συνεπλέκοντο, κατὰ μηδὲν τῶν ἰδίων φειδόμενοι σωμάτων. Καὶ οἱ μὲν εἷλκον ἐκ τοῦ πυρὸς τὰς ἑλεπόλεις, τῶν ὑπὲρ αὐτὰς γέῤῥων φλεγομένων· οἱ δὲ Ἰουδαῖοι καὶ διὰ τῆς φλογὸς ἀντελαμβάνοντο, καὶ τοῦ σιδήρου ζέοντος δρασσόμενοι τοὺς κριοὺς οὐ μεθίεσαν. Διέβαινε δ' ἀπὸ τούτων ἐπὶ τὰ χώματα τὸ πῦρ, καὶ τοὺς ἀμύνοντας προελάμβανεν. Ἐν τούτῳ δὲ οἱ μὲν Ῥωμαῖοι κυκλούμενοι τῇ φλογὶ, καὶ τὴν σωτηρίαν τῶν ἔργων ἀπογνόντες, ἀνεχώρουν ἐπὶ τὰ στρατόπεδα. Ἰουδαῖοι δὲ προσέκειντο πλείους ἀεὶ γινόμενοι, τῶν ἔνδοθεν προσβοηθούντων, καὶ τῷ κρατεῖν τεθαῤῥηκότες ἀταμιεύτοις ἐχρῶντο ταῖς ὁρμαῖς· προσελθόντες δὲ μέχρι τῶν ἐρυμάτων, ἤδη συνεπλέκοντο τοῖς φρουροῖς. Τάξις δ' ἐστὶν ἐκ διαδοχῆς ἱσταμένη πρὸ τοῦ στρατοπέδου μετὰ τῶν ὅπλων, καὶ δεινὸς ἐπ' αὐτῇ Ῥωμαίων νόμος, τὸν ὑποχωρήσαντα καθ' ἣν δήποτ' οὖν αἰτίαν θνήσκειν. Οὗτοι, τοῦ μετὰ κολάσεως τὸν μετ' ἀρετῆς θάνατον προκρίναντες, ἵστανται· καὶ πρὸς τὴν τούτων ἀνάγκην πολλοὶ τῶν τραπέντων ἐπεστράφησαν αἰδούμενοι. Διαθέντες δὲ καὶ τοὺς ὀξυβελεῖς ἐπὶ τοῦ τείχους εἶργον τὸ προσγινόμενον πλῆθος ἐκ τῆς πόλεως, οὐδὲν εἰς ἀσφάλειαν ἢ φυλακὴν τῶν σωμάτων προνοουμένους· συνεπλέκοντο γὰρ οἱ Ἰουδαῖοι τοῖς προστυχοῦσι, καὶ ταῖς αἰχμαῖς ἀφυλάκτως ἐμπίπτοντες, αὐτοῖς τοῖς σώμασι τοὺς ἐχθροὺς ἔπαιον· οὔτε γὰρ ἔργοις αὐτοὶ

πλέον, ἢ τῷ θαῤῥεῖν περιῆσαν, καὶ Ῥωμαῖοι τῇ τόλμῃ πλέον εἶκον, ἢ τῷ κακοῦσθαι.

6. Παρῆν δ' ἤδη Τίτος ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας, ὅπου κεχώριστο, κατασκεπτόμενος τόπον ἄλλοις χώμασι· καὶ πολλὰ τοὺς στρατιώτας φαυλίσας, εἰ κρατοῦντες τῶν πολεμίων τειχῶν κινδυνεύουσι ταῖς ἰδίοις, καὶ πολιορκουμένων ὑπομένουσιν αὐτοὶ τύχην, ὥςπερ ἐκ δεσμωτηρίου καθ' αὐτῶν Ἰουδαίους ἀνέντες, περιῄει μετὰ τῶν ἐπιλέκτων κατὰ πλευρὰ τοὺς πολεμίους αὐτός. Οἱ δὲ κατὰ στόμα παιόμενοι, καὶ πρὸς τοῦτον ἐπιστραφέντες ἐκαρτέρουν. Μιγείσης δὲ τῆς παρατάξεως, ὁ μὲν κονιορτὸς τῶν ὀμμάτων, ἡ κραυγὴ δὲ τῶν ἀκοῶν ἐπεκράτει, καὶ οὐδ' ἑτέρῳ παρῆν ἔτι τεκμήρασθαι τὸ ἐχθρὸν, ἢ τὸ φίλον. Ἰουδαίων δὲ οὐ τοσοῦτον ἔτι κατ' ἀλκὴν, ὅσον ἀπογνώσει σωτηρίας, παραμενόντων, καὶ Ῥωμαίους ἐτόνωσεν αἰδὼς δόξης τε καὶ τῶν ὅπλων, καὶ προκινδυνεύοντος Καίσαρος· ὥςτε μοι δοκοῦσι τὰ τελευταῖα δι' ὑπερβολὴν θυμῶν καὶ ἂν ὅλον ἁρπάσαι τὸ τῶν Ἰουδαίων πλῆθος, εἰ μὴ τὴν ῥοπὴν τῆς παρατάξεως φθάσαντες ἀνεχώρησαν εἰς τὴν πόλιν. Διεφθαρμένων δὲ τῶν χωμάτων, Ῥωμαῖοι μὲν ἦσαν ἐν ἀθυμίαις, τὸν μακρὸν κάματον ἐπὶ μιᾶς ὥρας ἀπολέσαντες· καὶ πολλοὶ μὲν ταῖς συνήθεσι μηχαναῖς ἀπήλπιζον ἁλώσεσθαι τὴν πόλιν.

CAP. XII. 1. Τίτος δὲ μετὰ τῶν ἡγεμόνων ἐβουλεύετο· καὶ τοῖς μὲν θερμοτέροις ἐδόκει 'πᾶσαν προςάγοντα τὴν δύναμιν ἀποπειρᾶσθαι τοῦ τείχους βίᾳ· μέχρι μὲν γὰρ νῦν κατάσπασμα Ἰουδαίοις τῆς στρατιᾶς συμπεπλέχθαι, προςιόντων δὲ ἀθρόων οὐδὲ τὴν ἔφοδον οἴσειν, καταχωσθήσεσθαι γὰρ ὑπὸ τῶν βελῶν.' Τῶν δὲ ἀσφαλεστέρων οἱ μὲν καὶ 'τὰ χώματα ποιεῖν πάλιν,' οἱ δὲ καὶ 'δίχα τούτων προςκαθέζεσθαι, μόνον παραφυλάττοντας τάς τε ἐξόδους 357

αὐτῶν καὶ τὰς εἰςκομιδὰς τῶν ἐπιτηδείων παρῄνουν, καὶ τῷ λιμῷ καταλιπεῖν τὴν πόλιν, μηδὲ συμπλέκεσθαι κατὰ χεῖρα τοῖς πολεμίοις· ἄμαχον γὰρ εἶναι τὴν ἀπόγνωσιν, οἷς εὐχὴ μὲν τῷ σιδήρῳ πεσεῖν, ἀπόκειται δὲ καὶ δίχα τούτου πάθος χαλεπώτερον.' Αὐτῷ δὲ 'τὸ μὲν ἀργεῖν καθόλου μετὰ τοσαύτης δυνάμεως οὐκ ἐδόκει πρέπειν, καὶ τὸ μάχεσθαι περιττὸν πρὸς ἀλλήλων φθαρησομένοις· βάλλεσθαι δὲ χώματα δύςεργον ἀπέφαινεν ὕλης ἀπορίᾳ, καὶ τὸ παραφυλάττειν τὰς ἐξόδους δυςεργότερον. Κυκλώσασθαί τε γὰρ τῇ στρατιᾷ τὴν πόλιν, διὰ τὸ μέγεθος καὶ δυςχωρίαν, οὐκ εὐμαρὲς εἶναι, καὶ σφαλερὸν ἄλλως πρὸς τὰς ἐπιθέσεις. Τῶν δὲ φανερῶν φυλαττομένων, ἀφανεῖς ἐπινοεῖσθαι Ἰουδαίοις ὁδοὺς κατά τε ἀνάγκην καὶ δι' ἐμπειρίαν· εἰ δέ τι λάθρα παρειςκομισθήσοιτο τριβὴν ἔσεσθαι πλείω τῇ πολιορκίᾳ. Δεδιέναι τε, μὴ τὴν δόξαν τοῦ κατορθώματος αὐτῷ τὸ μῆκος ἐλαττώσῃ τοῦ χρόνου· τούτῳ μὲν γὰρ εἶναι πᾶν ἀνύσιμον, πρὸς δὲ τῆς εὐκλείας τὸ τάχος. Δεῖν μέν γε εἰ καὶ τῷ τάχει μετ' ἀσφαλείας βούλοιντο χρήσασθαι, περιτειχίζειν ὅλην τὴν πόλιν· μόνως γὰρ οὕτως ἂν πάσας ἀποφράξαι τὰς ἐξόδους, καὶ Ἰουδαίους ἢ πρὸς ἅπαντα ἀπογνόντας τὴν σωτηρίαν παραδώσειν τὴν πόλιν, ἢ λιμώττοντας χειρωθήσεσθαι ῥᾳδίως· οὐδὲ γὰρ ἠρεμήσειν αὐτὸν ἄλλως, ἀλλὰ καὶ τῶν χωμάτων ἐπιμελήσεσθαι πάλιν, χρώμενον τοῖς κωλύουσιν ἀτονωτέροις. Εἰ δέ τῳ μέγα δοκεῖ καὶ δυςήνυτον τὸ ἔργον, χρῆναι σκοπεῖν, ὡς οὔτε Ῥωμαίοις τι μικρὸν ἐνεργεῖν πρέπει, καὶ δίχα πόνου κατορθοῦν τι τῶν μεγάλων οὐδενὶ ῥᾴδιον, ἀλλ' ἢ θεῷ μόνῳ.'

2. Τούτοις πείσας τοὺς ἡγεμόνας, διανέμειν ἐκέλευσε τὰς δυνάμεις ἐπὶ τὸ ἔργον. Ὁρμὴ δέ τις ἐμπίπτει δαιμόνιος τοῖς στρατιώταις· καὶ μερισαμένων τὸν περίβολον οὐ μόνον πρὸς τάγματα ἦν ἔρις, ἀλλὰ καὶ τῶν ἐν αὐτοῖς τάξεων πρὸς ἀλλήλας· καὶ στρατιώτης μὲν δεκαδάρχην, δεκαδάρχης δὲ ἑκατον-

τάρχην, οὗτος δὲ ἐσπούδαζεν ἀρέσασθαι χιλίαρχον, 358
τῶν δὲ χιλιάρχων ἐπὶ τοὺς ἡγεμόνας ἔτεινεν ἡ φιλοτιμία, καὶ τῶν ἡγεμόνων τὴν ἅμιλλαν ἐβράβευε Καῖσαρ. Περιϊὼν γὰρ αὐτὸς ἑκάστης ἡμέρας πολλάκις, ἐπεσκόπει τὸ ἔργον. Ἀρξάμενος δὲ ἀπὸ τῆς Ἀσσυρίων παρεμβολῆς, καθ' ἣν αὐτὸς ἐστρατοπεδεύετο, ἐπὶ τὴν κατωτέρω Καινόπολιν ἦγε τὸ τεῖχος, ἔνθεν διὰ τοῦ Κεδρῶνος ἐπὶ τὸ Ἐλαιῶν ὄρος· εἶτα ἀνακάμπτων κατὰ μεσημβρίαν περιλαμβάνει τὸ ὄρος ἄχρι τῆς Περιστερεῶνος καλουμένης πέτρας, τόν τε ἑξῆς λόφον, ὃς ἐπίκειται τῇ κατὰ τὴν Σιλωὰμ φάραγγι. Καὶ ἐκεῖθεν ἐκκλίνας πρὸς δύσιν, εἰς τὴν τῆς Πηγῆς κατήει φάραγγα. Μεθ' ἣν ἀναβαίνων κατὰ τὸ Ἀνάνου τοῦ ἀρχιερέως μνημεῖον, καὶ διαλαβὼν τὸ ὄρος, ἔνθα Πομπήϊος ἐστρατοπεδεύσατο, πρὸς κλίμα βόρειον ἐπέστρεψε, καὶ προελθὼν μέχρι κώμης τινός, Ἐρεβίνθων οἶκος καλεῖται, καὶ μετ' ἐκείνην τὸ Ἡρώδου μνημεῖον περισχὼν κατ' ἀνατολὴν τῷ ἰδίῳ στρατοπέδῳ συνῆπτεν, ὅθεν περ ἤρξατο. Τὸ μὲν οὖν τεῖχος ἑνὸς δέοντος τεσσαράκοντα σταδίων ἦν, ἔξωθεν δὲ αὐτῷ προςῳκοδομήθη τρισκαίδεκα φρούρια, καὶ τούτων οἱ κύκλοι δέκα συνηριθμοῦντο σταδίων. Τρισὶ δ' ᾠκοδομήθη τὸ πᾶν ἡμέραις· ὡς τὸ μὲν ἔργον μηνῶν εἶναι ἄξιον, τὸ δὲ τάχος ἡττῆσθαι πίστεως. Περικλείσας δὲ τῷ τείχει τὴν πόλιν, καὶ δύναμιν τοῖς φρουρίοις ἐγκαταστήσας, τὴν μὲν πρώτην φυλακὴν τῆς νυκτὸς περιϊὼν αὐτὸς ἀπεσκέπτετο, τὴν δευτέραν δὲ ἐπέτρεψεν Ἀλεξάνδρῳ, τὴν τρίτην δὲ ἔλαχον οἱ τῶν ταγμάτων ἡγεμόνες. Διεκληροῦντο δὲ οἱ φύλακες τοὺς ὕπνους, καὶ δι' ὅλης νυκτὸς περιῄεσαν κατὰ διάστημα τῶν φρουρίων.

3. Ἰουδαίοις δὲ μετὰ τῶν ἐξόδων ἀπεκόπη πᾶσα σωτηρίας ἐλπίς, καὶ βαθύνας ἑαυτὸν ὁ λιμὸς κατ' οἴκους καὶ γενεὰς τὸν δῆμον ἐπεβόσκετο. Καὶ τὰ μὲν τέγη πεπλήρωτο γυναικῶν καὶ βρεφῶν λελυμένων, οἱ στενωποὶ δὲ γερόντων νεκρῶν· παῖδες δὲ

*καὶ νεανίαι διοιδοῦντες ὥςπερ εἴδωλα κατὰ τὰς ἀ-
γορὰς ἀνειλοῦντο, καὶ κατέπιπτον, ὅπη τινὰ τὸ πά-
θος καταλαμβάνοι. Θάπτειν δὲ τοὺς προςήκοντας
οὔτε ἴσχυον οἱ κάμνοντες, καὶ τὸ διευτονοῦν ὤκνει
διὰ τὸ πλῆθος τῶν νεκρῶν, καὶ τὸ κατὰ σφᾶς ἄδη-
λον. Πολλοὶ γὰρ τοῖς ὑπ' αὐτῶν θαπτομένοις ἐπαπ-
έθνησκον, πολλοὶ δ' ἐπὶ τὰς θήκας, πρὶν ἐπιστῆ-
ναι τὸ χρεὼν, προῆλθον· οὔτε δὲ θρῆνος ἐν ταῖς συμ-
φοραῖς, οὔτ' ὀλοφυρμὸς ἦν, ἀλλ' ὁ λιμὸς ἤλεγχε τὰ
πάθη· Ξηροῖς γὰρ τοῖς ὄμμασι, καὶ σεσηρόσι τοῖς
στόμασιν οἱ δυςθανατοῦντες ἐφεώρων τοὺς φθάσαν-
τας ἀναπαύσασθαι. Βαθεῖα δὲ τὴν πόλιν περιεῖχε
σιγὴ, καὶ νὺξ θανάτου γέμουσα, καὶ τούτων οἱ λῃ-
359 σταὶ χαλεπώτεροι. Τυμβωρυχοῦντες γὰρ τὰς οἰκίας
ἐσύλων τοὺς νεκροὺς, καὶ τὰ κατακαλύμματα τῶν
σωμάτων περισπῶντες, μετὰ γέλωτος ἐξήεσαν. Τάς
τε ἀκμὰς τῶν ξιφῶν ἐδοκίμαζον ἐν τοῖς πτώμασι,
καί τινας τῶν ἐῤῥιμμένων ἔτι ζῶντας διήλαυνον ἐπὶ
πείρᾳ τοῦ σιδήρου· τοὺς δὲ ἱκετεύοντας χρῆσαι σφίσι
δεξιὰν καὶ ξίφος, τῷ λιμῷ κατέλιπον ὑπερηφανοῦν-
τες. Καὶ τῶν ἐκπνεόντων ἕκαστος ἀτενίσας εἰς τὸν
ναὸν ἀφεώρα τοὺς στασιαστὰς ζῶντας ἀπολιπών. Οἱ
δὲ τὸ μὲν πρῶτον ἐκ τοῦ δημοσίου θησαυροῦ τοὺς
νεκροὺς θάπτειν ἐκέλευον, τὴν ὀσμὴν οὐ φέροντες·
ἔπειθ' ὡς οὐ διήρκουν, ἀπὸ τῶν τειχῶν ἐῤῥίπτουν
εἰς τὰς φάραγγας.*

4. *Περιιὼν δὲ ταύτας ὁ Τίτος ὡς ἐθεά-
σατο πεπλησμένας τῶν νεκρῶν, καὶ βαθὺν ἰχῶ-
ρα μυδώντων τὸν ὑποῤῥέοντα τῶν σωμάτων, ἐστέ-
ναξέ τε, καὶ τὰς χεῖρας ἀνατείνας, κατεμαρτύρετο
τὸν θεὸν, ὡς οὐκ εἴη τὸ ἔργον αὐτοῦ. Τὰ μὲν δὴ
κατὰ τὴν πόλιν εἶχεν οὕτω. Ῥωμαῖοι δὲ, μηδενὸς
ἔτι τῶν στασιαστῶν ἐκτρέχοντος, ἤδη γὰρ καὶ τού-
των ἀθυμία καὶ λιμὸς ἐφήπτετο, ἐπ' εὐθυμίαις ἦσαν,
σίτου τε ἀφθονίαν καὶ τῶν ἄλλων ἐπιτηδείων ἐκ τῆς
Συρίας, καὶ τῶν πλησίον ἐπαρχιῶν ἔχοντες· ἱστά-*

μενοι δὲ πολλοὶ τοῦ τείχους πλησίον, καὶ πολὺ πλῆθος τῶν ἐδωδίμων ἐπιδεικνύμενοι, τῷ κατὰ σφᾶς κόρῳ τὸν λιμὸν τῶν πολεμίων ἐξέκαιον. Πρὸς δὲ τὸ πάθος τῶν στασιαστῶν μηδὲν ἐνδιδόντων, Τίτος, οἰκτείρων τὰ λείψανα τοῦ δήμου, καὶ σπουδάζων τὸ γοῦν περιὸν ἐξαρπάσαι, πάλιν ἤρχετο χωμάτων, χαλεπῶς αὐτῷ τῆς ὕλης ποριζομένης. Ἡ μὲν γὰρ περὶ τὴν πόλιν πᾶσα τοῖς προτέροις ἔργοις ἐκέκοπτο, συνεφόρουν δ' ἄλλην ἀπ' ἐνενήκοντα σταδίων οἱ στρατιῶται, καὶ πρὸς μόνης ὕψουν τῆς Ἀντωνίας κατὰ μέρη τέσσαρα πολὺ μείζονα τῶν προτέρων χώματα. Περιιὼν δὲ ὁ Καῖσαρ τὰ τάγματα, καὶ κατεπείγων τὸ ἔργον, ἐπεδείκνυ τοῖς λῃσταῖς, ὡς ἐν χερσὶν εἴησαν αὐτοῦ. Μόνοις δ' ἐκείνοις ἄρα κακῶν ἀπολώλει μεταμέλεια· καὶ τὰς ψυχὰς χωρίσαντες ἀπὸ τῶν σωμάτων, ἀμφοτέροις ὡς ἀλλοτρίοις ἐχρῶντο. Οὔτε γὰρ πάθος αὐτῶν ἥμερον τῆς ψυχῆς, οὔτε ἀλγηδὼν ἥπτετο τοῦ σώματος· οἵ γε καὶ νεκρὸν τὸν δῆμον ὥσπερ κύνες ἐσπάραττον, καὶ τὰ δεσμωτήρια τῶν ἀῤῥώστων ἐνεπίπλασαν.

CAP. XIII. 1. Σίμων γοῦν οὐδὲ Ματθίαν, δι' ὃν
κατέσχε τὴν πόλιν, ἀβασάνιστον ἀνεῖλε. Βοηθοῦ
παῖς ἦν οὗτος ἐκ τῶν ἀρχιερέων, ἐν τοῖς μάλιστα
τῷ δήμῳ πιστὸς καὶ τίμιος· ὅς, ὑπὸ τοῖς ζηλωταῖς
κακουμένου τοῦ πλήθους, οἷς ἤδη καὶ Ἰωάννης προς-
ῆν, πείθει τὸν δῆμον εἰςαφεῖναι τὸν Σίμωνα βοη- 360
θὸν, οὐδὲν οὔτε προσυνθέμενος, οὔτε προςδοκήσας
φαῦλον ἐξ αὐτοῦ. Παρελθὼν δ' ἐκεῖνος, ὡς ἐκράτησε τῆς
πόλεως, ἐχθρὸν ἐν ἴσῳ τοῖς ἄλλοις ἡγεῖτο καὶ τὸν ὑπὲρ
αὐτοῦ σύμβουλον, ὡς ἂν ἐξ ἁπλότητος γεγενημένον.
Ἀχθέντα δὲ τηνικαῦτα, καὶ κατηγορούμενον τὰ Ῥω-
μαίων φρονεῖν, κατακρίνει μὲν θανάτῳ, μηδὲ ἀπο-
λογίας ἀξιώσας, σὺν τρισὶν υἱοῖς· ὁ γὰρ τέταρτος
ἔφθη διαδρὰς πρὸς Τίτον. Ἱκετεύοντα δ' ἀναιρε-
θῆναι πρὸ τῶν τέκνων, καὶ ταύτην αἰτούμενον τὴν

χάριν ἀνθ᾽ ὧν ἀνοίξειεν αὐτῷ τὴν πόλιν, τελευταῖον ἀνελεῖν ἐκέλευσεν. Ὁ μὲν οὖν ἐν ὄψει φονευθεῖσιν ἐναπεσφάγη τοῖς παισὶν, ἄντικρυς τῶν Ῥωμαίων προαχθεὶς, — οὕτω γὰρ ὁ Σίμων Ἀνάνῳ τῷ Βαμάδου προςέταξεν, ὃς ἦν ὠμότατος αὐτῷ τῶν δορυφόρων, — ἐπειρωνευόμενος, εἴ τι βοηθήσουσιν αὐτῷ πρὸς οὓς ἐξελθεῖν εἵλετο· θάπτειν δὲ ἀπεῖπε τὰ σώματα. Μετὰ τούτους ἱερεύς τις Ἀκανίας υἱὸς Μασαμβάλου τῶν ἐπισήμων, καὶ ὁ γραμματεὺς τῆς βουλῆς Ἀριστεὺς, γένος ἐξ Ἀμμαοῦς, καὶ σὺν τούτοις πεντεκαίδεκα τῶν ἀπὸ τοῦ δήμου λαμπρῶν ἀναιροῦνται. Τὸν δὲ τοῦ Ἰωσήπου πατέρα συγκλείσαντες ἐφύλαττον, κηρύττουσι δὲ μηδένα τῶν κατὰ τὴν πόλιν μήτε συνομιλεῖν, μήτε ἐπὶ τὸ αὐτὸ συναθροίζεσθαι, δέει προδοσίας, καὶ τοὺς συνολοφυρομένους πρὸ ἐξετάσεως ἀνῄρουν.

2. Ταῦτα ὁρῶν Ἰούδης τις υἱὸς Ἰούδου, τῶν ὑπάρχων τοῦ Σίμωνος εἷς ὢν, καὶ πεπιστευμένος ὑπ᾽ αὐτοῦ πύργον φυλάττειν, τάχα μέν τι καὶ οἴκτῳ τῶν ὠμῶς ἀπολλυμένων, τὸ δὲ πλέον ἑαυτοῦ προνοίᾳ, συγκαλέσας τοὺς πιστοτάτους τῶν ὑπ᾽ αὐτοῦ δέκα, "Μέχρι τίνος ἀνθέξομεν," ἔφη, "τοῖς κακοῖς; Ἢ τίνας σωτηρίας ἔχομεν ἐλπίδας πιστοὶ πονηρῷ μένοντες; Οὐχ ὁ μὲν λιμὸς ἤδη καθ᾽ ἡμῶν, Ῥωμαῖοι δὲ παρὰ μικρὸν ἔνδον, Σίμων δὲ καὶ πρὸς εὐεργέτας ἄπιστος, καὶ δέος μὲν ἤδη παρ᾽ αὐτοῦ κολάσεως, ἡ δὲ παρὰ Ῥωμαίοις δεξιὰ βέβαιος; Φέρε, παραδόντες τὸ τεῖχος σώσωμεν ἑαυτοὺς καὶ τὴν πόλιν. Πείσεται δὲ οὐδὲν δεινὸν Σίμων, ἐὰν ἀπεγνωκὼς ἑαυτοῦ τάχιον δῷ δίκην." Τούτοις τῶν δέκα πεισθέντων, ὑπὸ τὴν ἕω τοὺς λοιποὺς τῶν ὑποτεταγμένων ἄλλων ἀλλαχόσε διέπεμπεν, ὡς μὴ φωραθείη τι τῶν βεβουλευμένων· αὐτὸς δὲ περὶ τρίτην ὥραν ἀπὸ τοῦ πύργου ἐκάλει τοὺς Ῥωμαίους. Τῶν δὲ οἱ μὲν ὑπερηφάνουν, οἱ δ᾽ ἠπίστουν, οἱ πολλοὶ δ᾽ ὤκνουν ὡς μετὰ μικρὸν ἀκινδύνως ληψόμενοι τὴν πό-

λιν. Ἐν ὅσῳ δὲ Τίτος μεθ' ὁπλιτῶν παρῄει πρὸς τὸ τεῖχος, ἔφθη γνοὺς ὁ Σίμων, καὶ μετὰ τάχους τόν τε πύργον προκαταλαμβάνει, καὶ τοὺς ἄνδρας συλλαβὼν ἐν ὄψει τῶν Ῥωμαίων ἀναιρεῖ, καὶ πρὸ 361
τοῦ τείχους λωβησάμενος ἔῤῥιψε τὰ σώματα.

3. Καὶ ἐν τούτῳ περιιὼν Ἰώσηπος, οὐ γὰρ ἀνίει παρακαλῶν, βάλλεται τὴν κεφαλὴν λίθῳ, καὶ παραχρῆμα πίπτει καρωθείς. Ἐκδρομὴ δ' ἐπὶ τῷ πτώματι τῶν Ἰουδαίων γίνεται· καὶ ἂν ἔφθη συρεὶς εἰς τὴν πόλιν, εἰ μὴ ταχέως Καῖσαρ ἔπεμψε τοὺς ὑπερασπίζοντας. Μαχομένων δὲ τούτων, ὁ Ἰώσηπος μὲν αἴρεται, βραχὺ τῶν πραττομένων ἐπαΐων. Οἱ στασιασταὶ δὲ, ὡς ἀνελόντες ὃν ἐπεθύμουν μάλιστα, μετὰ χαρᾶς ἀνεβόων. Διαγγέλλεται δὲ εἰς τὴν πόλιν, καὶ τὸ καταλειπόμενον πλῆθος ἐπέσχεν ἀθυμία, πεπεισμένους οἴχεσθαι τῷ ὄντι, δι' ὃν αὐτομολεῖν ἐθάῤῥουν. Ἀκούσασα δὲ ἡ τοῦ Ἰωσήπου μήτηρ ἐν τῷ δεσμωτηρίῳ, τεθνάναι τὸν υἱὸν, πρὸς μὲν τοὺς φύλακας ἀπὸ Ἰωταπάτων τοῦτ' ἔφη πεπεῖσθαι, καὶ γὰρ οὐδὲ ζῶντος ἀπολαύειν· ἰδίᾳ δ' ὀλοφυρομένη, πρὸς τὰς θεραπαινίδας τοῦτον εἰληφέναι τῆς εὐτεκνίας ἔλεγε καρπὸν, τὸ μηδὲ θάψαι τὸν υἱὸν, ὑφ' οὗ ταφήσεσθαι προςεδόκησεν. Ἀλλὰ γὰρ, οὔτε ταύτην ἐπὶ πλέον ὠδίνατο τὸ ψεῦδος, οὔτε τοὺς λῃστὰς ἔθαλπε· ταχέως γὰρ ἐκ τῆς πληγῆς ἀνήνεγκεν ὁ Ἰώσηπος, καὶ προελθὼν, τοὺς μὲν οὐκ εἰς μακρὰν, ἐβόα, δίκας αὐτῷ δώσειν τοῦ τραύματος· τὸν δὲ δῆμον πάλιν ἐπὶ πίστιν προεκαλεῖτο. Θάρσος δὲ τῷ λαῷ, καὶ τοῖς στασιασταῖς ἔκπληξις ἐμπίπτει πρὸς τὴν ὄψιν αὐτοῦ.

4. Τῶν δὲ αὐτομόλων οἱ μὲν ὑπ' ἀνάγκης ἀπὸ τοῦ τείχους ἐπήδων ταχέως· οἱ δὲ προϊόντες ὡς ἐπὶ μάχῃ μετὰ χερμάδων, ἔπειτα πρὸς τοὺς Ῥωμαίους ἔφευγον. Συνείπετο δὲ τούτοις τύχη τῶν εἴσω χαλεπωτέρα, καὶ τοῦ παρὰ σφίσι λιμοῦ συντονώτερον εὕρισκον πρὸς ὄλεθρον τὸν παρὰ Ῥωμαίοις κόρον.

Παρεγίνοντο μὲν γὰρ ἀπὸ τῆς ἐνδείας πεφυσημένοι, καὶ ὥσπερ ὑδρωπιῶντες, ἔπειτα ἀθρόως κενοῖς ὑπερεμπιπλάμενοι τοῖς σώμασιν ἐῤῥήγνυντο, πλὴν τῶν δι᾽ ἐμπειρίαν ταμιευσαμένων τὰς ὀρέξεις, καὶ κατ᾽ ὀλίγον προσθέντων τροφὴν ἀπειθισμένῳ τῷ σώματι φέρειν. Καὶ τοὺς οὕτω δὲ σωζομένους ἑτέρα πληγὴ μετελάμβανε. Τῶν γὰρ παρὰ τοῖς Σύροις τις αὐτομόλων φωρᾶται τῶν τῆς γαστρὸς λυμάτων χρυσοὺς ἐκλέγων· καταπίνοντες δὲ, ὡς ἔφαμεν, αὐτοὺς προῄεσαν, ἐπειδὴ ἀνηρεύνων πάντας οἱ στασιασταί, καὶ πολὺ πλῆθος ἦν ἐν τῇ πόλει χρυσοῦ· δώδεκα γοῦν Ἀττικῶν ὠνοῦντο τὰ πρότερον ἰσχύοντα πέντε καὶ εἴκοσιν. Ἀλλά τοι τῆς ἐπινοίας ἐλεγχθείσης δι᾽ ἑνὸς, ἀναπίπλαται μὲν φήμη εἰς τὰ στρατόπεδα, ὡς μεστοὶ χρυσίου παρεῖεν οἱ αὐτόμολοι, τὸ δὲ τῶν Ἀράβων πλῆθος καὶ οἱ Σύροι[4] τοὺς ἱκέτας ἀνατέμνοντες, ἠρεύνων τὰς γαστέρας· καὶ τούτου τοῦ πάθους οὐδὲν ἔμοιγε δοκεῖ συμβῆναι Ἰουδαίοις χαλεπώτερον. Μιᾷ γοῦν ἀνεσχίσθησαν νυκτὶ πρὸς δισχιλίους.

5. Καὶ γνοὺς τὴν παρανομίαν Τίτος, ὀλίγου μὲν ἐδέησε τὸ ἱππικὸν περιστήσας κατακοντίσαι τοὺς αἰτίους, εἰ μὴ πολὺ πλῆθος ἐνείχετο, καὶ τῶν ἀνῃρημένων πολλαπλασίους ἦσαν οἱ κολασθησόμενοι. Συγκαλέσας δὲ τούς τε τῶν συμμάχων ἡγεμόνας καὶ τοὺς τῶν ταγμάτων, — συνδιεβάλλοντο γὰρ καὶ τῶν
362 στρατιωτῶν τινες, — πρὸς ἑκατέρους ἀγανακτῶν ἔλεγεν, 'εἰ τῶν μὲν αὐτῷ στρατευομένων τινὲς τοιαῦτα δρῶσι κέρδους ἕνεκεν ἀδήλου, μηδὲ τὰ ὅπλα σφῶν αὐτῶν αἰδούμενοι πεποιημένα ἐξ ἀργύρου τε καὶ χρυσοῦ;' Τοῖς δὲ Ἄραψι καὶ τοῖς Σύροις, 'εἰ πρῶτον μὲν ἐν ἀλλοτρίῳ πολέμῳ τοῖς πάθεσιν αὐτεξουσίως χρῶνται, ἔπειτα τῇ περὶ φόνους ὠμότητι καὶ τῷ πρὸς Ἰουδαίους μίσει Ῥωμαίους ἐπιγράφουσι; Καὶ γὰρ νῦν ἐνίους αὐτῷ τῶν στρατιωτῶν συναπολαύειν τῆς κακοδοξίας.' Τούτοις μὲν οὖν διηπείλησε θάνατον, εἴ τις εὑρεθείη πάλιν τὸ αὐτὸ τολ-

μῶν, τοῖς δὲ ἀπὸ τῶν ταγμάτων ἐπέστελλεν ἐρευνήσοντας τοὺς ὑπόπτους ἀνάγειν ἐπ᾽ αὐτόν. Κατεφρόνει δὲ, ὡς ἔοικε, φιλοχρηματία πάσης κολάσεως, καὶ δεινὸς ἐμπέφυκεν ἀνθρώποις τοῦ κερδαίνειν ἔρως, οὐδὲν δὲ οὕτω πάθος, ὡς πλεονεξία, παραβάλλεται. Ἢ ταῦτα μὲν ἄλλως καὶ μέτρον ἔχει καὶ φόβοις ὑποτάσσεται· θεὸς δὲ ἦν ὁ τοῦ λαοῦ παντὸς κατακρίνας, καὶ πάσαν αὐτοῖς σωτηρίας ὁδὸν εἰς ἀπώλειαν ἀποστρέφων. Ὃ γοῦν μετὰ ἀπειλῆς ἀπεῖπεν ὁ Καῖσαρ, λάθρα κατὰ τῶν αὐτομόλων ἐτολμᾶτο. Καὶ τοὺς διαδιδράσκοντας, πρὶν πᾶσιν ὀφθῆναι, προαπαντῶντες ἔσφαττον οἱ βάρβαροι. Περισκοπούμενοι δὲ, μή τις ἐπίδοι Ῥωμαίων, ἀνέσχιζον, καὶ ἐκ τῶν σπλάγχνων τὸ μιαρὸν κέρδος εἷλκον. Ὀλίγοις δ᾽ ἐνευρίσκετο, καὶ τοὺς πολλοὺς παρανήλισκεν ἐλπὶς μόνη. Τοῦτο μὲν δὴ τὸ πάθος πολλοὺς τῶν αὐτομόλων ἐπανήγαγεν.

6. Ἰωάννης δὲ ὡς ἐπέλιπον αἱ ἁρπαγαὶ παρὰ τοῦ δήμου, πρὸς ἱεροσυλίαν ἐτρέπετο. Καὶ πολλὰ μὲν ἐκ τῶν ἀναθημάτων κατεχώνευε τοῦ ναοῦ, πολλὰ δὲ τῶν πρὸς τὰς λειτουργίας ἀναγκαίων σκεύη, κρατῆράς τε καὶ πίνακας καὶ τραπέζας. Ἀπέσχετο δὲ οὐδὲ τῶν ὑπὸ τοῦ Σεβαστοῦ καὶ τῆς γυναικὸς αὐτοῦ πεμφθέντων ἀκρατοφόρων· οἱ μὲν γὰρ Ῥωμαίων βασιλεῖς ἐτίμησάν τε καὶ προσεκόσμησαν τὸ ἱερὸν ἀεί. Τότε δὲ ὁ Ἰουδαῖος καὶ τὰ τῶν ἀλλοφύλων κατέσπα· πρὸς δὲ τοὺς συνόντας ἔλεγεν, ὡς ‘δεῖ μετὰ ἀδείας καταχρήσασθαι τοῖς θείοις ὑπὲρ τοῦ θείου, καὶ τοὺς τῷ ναῷ στρατευομένους ἐξ αὐτοῦ τρέφεσθαι.’ Διὰ τοῦτο καὶ τὸν ἱερὸν οἶνον καὶ τὸ ἔλαιον, ὃ τοῖς ὁλοκαυτώμασιν οἱ ἱερεῖς ἐφύλαττον ἐπιχεῖν, ἐκκενώσας, ἦν δ᾽ ἐν τῷ ἐνδοτέρῳ ἱερῷ, διένειμε τῷ πλήθει, καὶ ἐκεῖνοι δίχα φρίκης πλέον τοῦ ἵν ἠλείφοντο, καὶ ἔπινον ἐξ αὐτῶν. Οὐκ ἂν ὑποστειλαίμην εἰπεῖν, ἅ μοι κελεύει τὸ πάθος· οἶμαι, Ῥωμαίων βραδυνόντων ἐπὶ τοὺς ἀλιτηρίους, ἢ καταποθῆ-

ναι ἂν ὑπὸ χάσματος, ἢ καταπλυσθῆναι τὴν πόλιν, ἢ τοὺς τῆς Σοδομηνῆς μεταλαβεῖν κεραυνούς· πολὺ γὰρ τῶν ταῦτα παθόντων ἤνεγκε γενεὰν ἀθεωτέραν. Τῇ γοῦν τούτων ἀπονοίᾳ πᾶς ὁ λαὸς συναπώλετο.

7. Καὶ τί δεῖ κατὰ μέρος ἐκδιηγεῖσθαι τὰς συμφοράς; Ἀλλὰ πρὸς Τίτον ἐν ταύταις ταῖς ἡμέ-
363 ραις Μανναῖος ὁ Λαζάρου φυγὼν, διὰ μιᾶς ἔλεγεν ἐκκεκομίσθαι πύλης, ἣν αὐτὸς ἐπεπίστευτο, μυριάδας ἕνδεκα νεκρῶν ἐπὶ πεντακισχιλίοις ὀκτακοσίοις ὀγδοήκοντα, ἀφ᾽ ἧς αὐτοῖς ἡμέρας παρεστρατοπεδεύσατο, τεσσαρεςκαιδεκάτῃ Ξανθικοῦ μηνὸς, ἄχρι Πανέμου νουμηνίας. Τοῦτο δὲ ἦν πλῆθος ἄπειρον· καὶ οὐδὲ αὐτὸς ἐφεστὼς, ἀλλὰ δημοσίᾳ μισθὸν διδοὺς ἐξ ἀνάγκης ἠρίθμει. Τοὺς δὲ λοιποὺς οἱ προςήκοντες ἔθαπτον· ταφὴ δ᾽ ἦν τὸ προκομίσαντας ἐκ τοῦ ἄστεος ῥίψαι. Μετὰ δὲ τοῦτον διαδράντες πολλοὶ τῶν ἐπισήμων, τὰς πάσας τῶν ἀπόρων νεκρῶν ἀπήγγελλον, μυριάδας ἑξήκοντα διὰ τῶν πυλῶν ἐκριφῆναι· τῶν δὲ ἄλλων ἀνεξεύρετον εἶναι τὸν ἀριθμόν. Μηκέτι δὲ εὐτονούντων τοὺς πτωχοὺς ἐκφέρειν, ἔλεγον συσσωρεύοντας εἰς τοὺς μεγίστους οἴκους τὰ πτώματα ἀποκλείειν. Καὶ τοῦ μὲν σίτου τὸ μέτρον πραθῆναι ταλάντου. Μετὰ ταῦτα δὲ, ὡς οὐδὲ ποηλογεῖν ἔτι οἷόν τε ἦν, περιτειχισθείσης τῆς πόλεως, προελθεῖν τινας εἰς τοσοῦτον ἀνάγκης, ὥςτε τὰς ἀμάρας ἐρευνῶντας, καὶ παλαιὸν ὄνθον βοῶν, προςφέρεσθαι τὰ ἐκ τούτων σκύβαλα, καὶ τὸ μηδὲ ὄψει φορητὸν πάλαι τότε γενέσθαι τροφήν. Ταῦτα Ῥωμαῖοι μὲν ἀκούοντες ἠλέησαν· οἱ στασίασται δὲ καὶ βλέποντες οὐ μετενόουν, ἀλλ᾽ ἠνείχοντο μέχρις αὐτῶν προελθεῖν· πεπήρωντο γὰρ ὑπὸ τοῦ χρεὼν, ὃ τῇ τε πόλει καὶ αὐτοῖς ἤδη παρῆν.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ 364 366

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ

Η

ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ἹΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ἉΛΩΣΕΩΣ

ΛΟΓΟΣ ΣΤ.

Argumentum Lib. VI.

(1) Ὡς τῇ Ἀντωνίᾳ προςβάλλουσιν οἱ Ῥωμαῖοι. (2) Τίτος κατασκάψαι προστάσσει τὴν Ἀντωνίαν. (3) Περὶ Ἰουδαίων δόλου, ᾧ πολλοὺς Ῥωμαίων ἐνέπρησαν. Ἄλλη τοῦ λιμοῦ ἔκφρασις. (4) Ὁ ναὸς ἐνεπρήσθη, ἄκοντος Τίτου. (5) Ἡ τῶν Ἰουδαίων ἐκ τοῦ ναοῦ καιομένου ταλαιπωρία. (6) Ὡς Ῥωμαῖοι, κομίσαντες τὰς σημαίας εἰς τὸ ἱερὸν, Τίτον εὐφημίαις ἐγέραιρον· οἷα Τίτος ἔλεξεν πρὸς τοὺς Ἰουδαίους ἱκετεύοντας τυχεῖν σωτηρίας. (7) Ὡς τῆς ἄνω πόλεως ἐγκρατὴς γένεται Καῖσαρ. (8) Ὅπως Τίτος ἐγκρατὴς τῆς ὅλης πόλεως ἐγέγονεν. (9) Οἷα Καῖσαρ εἴσω παρελθὼν προςέταξε. (10) Σύντομος τῶν Ἱεροσολύμων ἱστορία.

CAP. I. 1. Τὰ μὲν οὖν τῶν Ἱεροσολύμων πάθη 367
προὔκοπτε καθ' ἡμέραν ἐπὶ τὸ χεῖρον, τῶν τε στασιαστῶν μᾶλλον παροξυνομένων ἐν ταῖς συμφοραῖς, καὶ τοῦ λιμοῦ μετὰ τὸν δῆμον ἤδη καὶ ἐκείνους νεμομένου. Τό γε μὴν πλῆθος τῶν σεσωρευμένων ἀνὰ τὴν πόλιν πτωμάτων ὄψει τε φρικῶδες ἦν, καὶ λοιμώδη προςέβαλλεν ὀσμὴν, πρός τε τὰς ἐκδρομὰς ἐμ-

πόδιον τοῖς μαχομένοις. Ὥςπερ γὰρ διὰ παρατάξεως φόνῳ μυρίῳ γεγυμνασμένους, χωροῦντας ἔδει τὰ σώματα πατεῖν, οἱ δὲ ἐπιβαίνοντες οὔτε ἔφριττον, οὔτε ἠλέουν, οὔτε κληδόνα κακὴν σφῶν αὐτῶν ὑπελάμβανον τὴν εἰς τοὺς κατοιχομένους ὕβριν· πεφυρμένοι δ' ὁμοφύλῳ φόνῳ τὰς δεξιὰς, ἐπὶ τὸν πρὸς τοὺς ἀλλοφύλους πόλεμον ἐξέθεον, ὀνειδίζοντες, ἔμοιγε δοκεῖ, τὸ θεῖον εἰς βραδύτητα τῆς ἐπ' αὐτοῖς κολάσεως· οὐ γὰρ ἐλπίδι νίκης ὁ πόλεμος, ἤδη δὲ ἀπογνώσει σωτηρίας ἐθρασύνετο. Ῥωμαῖοι δὲ, καίτοι πολλὰ περὶ τὴν τῆς ὕλης συγκομιδὴν ταλαιπωρούμενοι, τὰ χώματα διήγειραν μιᾷ καὶ εἴκοσι ἡμέραις, κείραντες, ὡς προείρηται, τὴν περὶ τὸ ἄστυ χώραν ἐπ' ἐνενήκοντα σταδίους ἐν κύκλῳ πᾶσαν.
368 Ἦν δὲ ἐλεεινὴ καὶ τῆς γῆς ἡ θέα· τὰ γὰρ πάλαι δένδρεσι καὶ παραδείσοις κεκοσμημένα, τότε πανταχόθεν ἠρήμωτο καὶ περικέκοπτο τὴν ὕλην· οὐδείς τε τὴν πάλαι Ἰουδαίαν καὶ τὰ περικαλλῆ προάστεια τῆς πόλεως ἑωρακὼς ἀλλόφυλος, ἔπειτα τὴν τότε βλέπων ἐρημίαν, οὐκ ὠλοφύρατο, καὶ κατεστέναξε τὴν μεταβολὴν παρ' ὅσον γένοιτο· πάντα γὰρ ἐλυμήνατο τὰ σημεῖα τοῦ κάλλους ὁ πόλεμος, καὶ οὐκ ἄν τις ἐξαπίνης ἐπιστὰς τῶν προεγνωκότων ἐγνώρισε τὸν τόπον, ἀλλὰ παρὼν ἐζήτει τὴν πόλιν.

2. Ῥωμαίοις δὲ καὶ Ἰουδαίοις τὸ τέλος τῶν χωμάτων ἴσην ἐνεποίει δέους ἀρχήν. Οἱ μὲν γὰρ, εἰ μὴ καὶ ταῦτα καύσειαν, ἁλώσεσθαι τὴν πόλιν προςεδόκων· Ῥωμαῖοι δὲ οὐκ ἂν ἔτι αἱρήσειν, καὶ ἐκείνων διαφθαρέντων. Ὕλης γάρ τε ἦν ἀπορία, καὶ τῶν μὲν πόνων ἤδη τὸ σῶμα, τῶν δ' ἐπαλλήλων πταισμάτων αἱ ψυχαὶ τοῖς στρατιώταις ἐλείποντο. Τάς γε μὴν κατὰ τὴν πόλιν συμφορὰς Ῥωμαίοις πλέον εἶναι συνέβαινε πρὸς ἀθυμίας, ἢ τοῖς ἐν αὐτῇ· παρὰ γὰρ τὰ τηλικαῦτα πάθη τοῖς μαχομένοις οὐδὲν ἐχρῶντο μαλακωτέροις, ἀλλ' ἐθραύοντο πάντοτε τὰς ἐλπίδας, τῶν μὲν χωμάτων ταῖς ἐπιβουλαῖς,

τῶν δὲ ὀργάνων στεῤῥότητι τοῦ τείχους, τῆς δὲ κατὰ χεῖρα μάχης ταῖς τῶν συμπλεκομένων τόλμαις πλεονεκτούμενοι. Τὸ δὲ μέγιστον, στάσεώς τε, καὶ λιμοῦ καὶ πολέμου, καὶ τοσούτων κακῶν εὑρίσκοντες ἐπάνω τὸ παράστημα τῆς ψυχῆς Ἰουδαίους ἔχοντας, ὑπελάμβανόν τε τῶν ἀνδρῶν ἀμάχους μὲν τὰς ὁρμὰς, ἀνάλωτον δὲ τὴν ἐπὶ συμφοραῖς εὐθυμίαν εἶναι. Τί γὰρ ἂν μὴ ὑποστῆναι δεξιᾷ τύχῃ χρωμένους, τοὺς ὑπὸ κακῶν πρὸς ἀλκὴν τρεπομένους; Οἱ μὲν οὖν ἐῤῥωμενεστέρας διὰ ταῦτα τῶν χωμάτων ἐποιοῦντο τὰς φυλακάς.

3. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰωάννην κατὰ τὴν Ἀντωνίαν ἅμα καὶ πρὸς τὸ μέλλον, εἰ καταῤῥιφθείη τὸ τεῖχος, ἠσφαλίζοντο, καὶ πρὶν ἐπιστῆναι τοὺς κριοὺς ἐπέθεντο τοῖς ἔργοις. Οὐ μὴν ἐκράτησάν γε τῆς ἐπιχειρήσεως· ἀλλὰ προελθόντες μετὰ λαμπάδων, πρὶν ἐγγίσαι τοῖς χώμασι, ψυχρότεροι τῆς ἐλπίδος ὑπέστρεψαν. Πρῶτον μὲν γὰρ οὐδὲ ὁμονοεῖν ἡ σκέψις αὐτῶν ἐδόκει, κατὰ μέρος ἐκπηδώντων, καὶ ἐκ διαλειμμάτων, καὶ μεμελλημένως μετὰ δέους, καθόλου τε εἰπεῖν, οὐκ Ἰουδαϊκῶς· τὰ γὰρ ἴδια τοῦ ἔθνους ὑστέρητο ἅμα, τόλμα, καὶ ὁρμὴ, καὶ δρόμος ὁμοῦ πάντων, καὶ τὸ μηδὲ πταίοντας ἀναστρέφειν. Ἀτονώτεροι δὲ ἑαυτῶν προελθόντες, καὶ τοὺς Ῥωμαίους εὗρον ἐῤῥωμενέστερον τοῦ συνήθους παρατεταγμένους· τοῖς μέν γε σώμασι καὶ ταῖς πανοπλίαις οὕτως ἐφράξαντο τὰ χώματα πάντοθεν, ὡς τῷ πυρὶ μηδαμόθεν καταλιπεῖν παράδυσιν· τὴν δὲ ψυχὴν ἐτόνωσαν ἕκαστος, μὴ μετακινηθῆναι τῆς τάξεως πρὸ θανάτου. Πρὸς γὰρ τὸ πάσας αὐτῶν ὑποκόπτεσθαι τὰς ἐλπίδας, εἰ καὶ ἐκεῖνα καταφλεγείη τὰ ἔργα, δεινὴ τοὺς στρατιώτας εἶχεν αἰδὼς, εἰ πάντα κρατήσειαν, πανουργία μὲν ἀρετῆς, ἀπόνοια δὲ ὅπλων, πλῆθος δὲ ἐμπειρίας, Ἰουδαῖοι δὲ Ῥωμαίων. Ἅμα δέ τι καὶ τὰ ἀφετήρια συνήργει τῶν προπηδώντων ἐφικνούμενα, καὶ πεσών τις τῷ μεθ' ἑαυτὸν ἐμπόδιον

369 ἦν, ὅ τε κίνδυνος τοῦ πρόσω χωρεῖν ἐποίει μαλακωτέρους. Τῶν δ' ἐνδοτέρω βέλους ὑποδραμόντων, οἱ μὲν, πρὶν εἰς χεῖρας ἐλθεῖν, τὴν εὐταξίαν καὶ τὸ πύκνωμα τῶν πολεμίων καταπλαγέντες, οἱ δὲ νυττόμενοι τοῖς ξυστοῖς ἐπαλινδρόμουν· καὶ τέλος ἀλλήλους κακίζοντες εἰς δειλίαν, ἀνεχώρουν ἄπρακτοι. Νουμηνίᾳ Πανέμου μηνὸς ἡ ἐπιχείρησις ἦν. Ἀναχωρησάντων δὲ τῶν Ἰουδαίων προςῆγον οἱ Ῥωμαῖοι τὰς ἑλεπόλεις, βαλλόμενοι πέτραις τε ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας, καὶ πυρὶ καὶ σιδήρῳ, καὶ παντὶ τῷ χορηγουμένῳ Ἰουδαίοις ὑπὸ τῆς ἀνάγκης βέλει. Καίπερ γὰρ πολὺ τῷ τείχει πεποιθότες, καὶ τῶν ὀργάνων καταφρονοῦντες, ὅμως ἐκώλυον τοὺς Ῥωμαίους προςάγειν. Οἱ δὲ τὴν σπουδὴν τῶν Ἰουδαίων τοῦ μὴ πληγῆναι τὴν Ἀντωνίαν ὑπολαμβάνοντες γίνεσθαι δι' ἀσθένειαν τοῦ τείχους, καὶ σαθροὺς ἐλπίσαντες εἶναι τοὺς θεμελίους, ἀντεφιλονείκουν. Οὐ μὴν ὑπήκουε τὸ τυπτόμενον· ἀλλ' οἱ μὲν συνεχῶς βαλλόμενοι, καὶ πρὸς μηδένα τῶν καθύπερθεν κινδύνων ἐνδιδόντες, ἐνεργοὺς παρεῖχον τὰς ἑλεπόλεις. Ὡς δ' ἦσαν ἐλάττους, καὶ περιεθραύοντο ταῖς πέτραις, ἕτεροι τοὺς θυρεοὺς ὀροφώσαντες ὑπὲρ τῶν σωμάτων, χερσὶ καὶ μοχλοῖς ὑπώρυττον τοὺς θεμελίους, καὶ τέσσαράς γε λίθους προςκαρτερήσαντες ἐξέσεισαν. Ἀνέπαυσε δὲ νὺξ ἑκατέρους, καὶ ἐν ταύτῃ τὸ τεῖχος ὑπὸ τῶν κριῶν σεσαλευμένον, καθ' ὃ τοῖς προτέροις ἐπιβουλεύων χώμασιν ὁ Ἰωάννης ὑπώρυξεν, ἐνδούσης τῆς διώρυχος, ἐξαπίνης κατερείπεται.

4. Τούτου συμβάντος παραδόξως, ἑκατέροις διετέθη τὰ φρονήματα. Ἰουδαίους μὲν γὰρ, οὓς ἀθυμεῖν εἰκὸς ἦν τῷ παρ' ἐλπίδα γενέσθαι τὸ πτῶμα, καὶ μὴ προησφαλίσθαι πρὸς αὐτὸ, θαῤῥεῖν ὡς μενούσης συνέβαινε τῆς Ἀντωνίας· Ῥωμαίων δέ γε τὴν παρ' ἐλπίδα χαρὰν ἐπὶ τῷ καταῤῥιφθέντι ταχέως ἔσβεσεν ὄψις ἑτέρου τείχους, ὅπερ ἔνδοθεν οἱ περὶ τὸν Ἰωάννην ἀντῳκοδομήκεσαν. Εὐμαρεστέρα

μέν γε τῆς πρότερον ἡ προςβολὴ κατεφαίνετο. Τότε γὰρ ἀναβῆναι διὰ τῶν καταῤῥιφθέντων ῥᾷον ἐδόκει, καὶ τὸ τεῖχος ἀσθενέστερόν τε πολλῷ τῆς Ἀντωνίας, καὶ ταχέως τῷ πρόςκαιρον εἶναι λύειν ὑπελάμβανον. Οὐ μὴν ἐτόλμα τις ἀναβῆναι· προὖπτος γὰρ τοῖς ἀρξαμένοις ἦν ἀπώλεια.

5. Νομίζων δὲ ὁ Τίτος ἐγείρεσθαι μάλιστα τὰς τῶν πολεμούντων προθυμίας ἐλπίδι καὶ λόγῳ, τάς τε προτροπὰς καὶ τὰς ὑποσχέσεις πολλάκις μὲν λήθην ἐργάζεσθαι τῶν κινδύνων, ἔστι δ' ὅτε καὶ θανάτου καταφρόνησιν, συναγαγὼν ἐπὶ ταὐτὸ τοὺς ἀλκίμους, ἐπειρᾶτο τῶν ἀνδρῶν, "Ὦ συστρατιῶται," λέγων, "τὸ μὲν παρακελεύειν ἐπὶ τὰ μὴ φέροντα κίνδυνον, αὐτόθεν τοῖς παρακελευομένοις ἀκλεές, ἀμέλει δὲ καὶ τῷ παρακελεύοντι φέρει κατάγνωσιν ἀνανδρίας. Δεῖ δέ, οἶμαι, προτροπῆς εἰς μόνα τὰ σφαλερὰ τῶν πραγμάτων, ὡς ἐκεῖνά γε καθ' αὑτοὺς πράττειν ἄξιον. Ὥςτε ἔγωγε τὸ μὲν ὑπάρχειν χαλεπὴν τὴν ἐπὶ τὸ τεῖχος ἄνοδον, αὐτὸς ὑμῖν προτίθημι· τὸ δὲ ὅτι μάλιστα προςήκει μάχεσθαι τοῖς δυςκόλοις τοὺς ἀρετῆς ἐφιεμένους, καὶ ὅτι καλὸν ἐν εὐκλείᾳ τελευτή, καὶ ὡς οὐκ ἄκαρπον ἔσται τοῖς καταρξαμένοις τὸ γενναῖον, διέξειμι. Πρῶτον μὲν οὖν ὑμῖν γενέσθω προτροπή, τὸ τινὰς ἴσως ἀποτρέπον, 370
ἡ Ἰουδαίων μακροθυμία, καὶ τὸ καρτερικὸν ἐν οἷς κακοπαθοῦσιν· αἰσχρὸν γάρ, Ῥωμαίους τε ὄντας καὶ στρατιώτας ἐμούς, καὶ διδακτὸν μὲν ἐν εἰρήνῃ τὸ πολεμεῖν, ἔθιμον δ' ἐν πολέμῳ τὸ κρατεῖν ἔχοντας, ἡττᾶσθαι κατὰ χεῖρα Ἰουδαίων, ἢ κατὰ ψυχήν, καὶ ταῦτα πρὸς τέλει τῆς νίκης καὶ συνεργουμένους ὑπὸ τοῦ θεοῦ. Τὰ μὲν γὰρ ἡμέτερα πταίσματα τῆς Ἰουδαίων ἐστὶν ἀπονοίας, τὰ δ' ἐκείνων πάθη ταῖς τε ὑμετέραις ἀρεταῖς καὶ ταῖς τοῦ θεοῦ συνεργίαις αὔξεται· στάσις γὰρ καὶ λιμός, καὶ πολιορκία, καὶ δίχα μηχανημάτων πίπτοντα τείχη, τί ἂν ἀλλ' ἢ

θεοῦ μὲν εἴη μῆνις ἐκείνοις, βοήθεια δ' ἡμετέρα; Τὸ τοίνυν μὴ μόνον ἐλαττοῦσθαι χειρόνων, ἀλλὰ καὶ τὴν θείαν συμμαχίαν προδιδόναι, πρὸς ὑμῶν οὐκ ἂν εἴη. Πῶς δ' οὐκ αἰσχρὸν, Ἰουδαίους μὲν, οἷς πολλὴν αἰσχύνην οὐ φέρει τὸ λείπεσθαι μαθοῦσι δουλεύειν, ὑπὲρ τοῦ μηκέτι τοῦτο πάσχειν θανάτου καταφρονεῖν, καὶ πολλάκις εἰς μέσους ἡμᾶς ἐκτρέχειν, οὐκ ἐλπίδι τοῦ κρατήσειν, ἀλλὰ διὰ ψιλὴν ἐπίδειξιν ἀνδρείας· ἡμᾶς δὲ τοὺς γῆς ὀλίγου δεῖν ἁπάσης καὶ θαλάσσης κρατοῦντας, οἷς καὶ τὸ μὴ νικᾶν ὄνειδος, μηδὲ ἅπαξ εἰς τοὺς πολεμίους παραβάλλεσθαι, περιμένειν δὲ τὸν λιμὸν κατ' αὐτῶν καὶ τὴν τύχην ἀργοὺς καθεζομένους μετὰ τοιούτων ὅπλων, καὶ ταῦτα δι' ὀλίγου τοῦ παραβόλου τὸ πᾶν κατορθῶσαι δυναμένους; Ἀναβάντες γοῦν ἐπὶ τὴν Ἀντωνίαν, ἔχομεν τὴν πόλιν. Καὶ γὰρ ἂν γίνηταί τις ἔτι πρὸς τοὺς ἔνδον, ὅπερ οὐκ οἴομαι, μάχη, τό γε κατὰ κορυφὴν εἶναι, καὶ ταῖς ἀναπνοαῖς ἐπικαθῆσθαι τῶν πολεμίων, ταχέως τὴν ὁλοσχερῆ νίκην ἐγγυᾶται. Καὶ ἔγωγε, τὸ μὲν ὑμνεῖν ἄρτι τὴν ἐν πολέμῳ τελευτὴν, καὶ τὴν ἐπὶ τοῖς ἀρειμανίοις πεσοῦσιν ἀθανασίαν παραλείπω, ἐπαρασαίμην δ' ἂν τοῖς ἄλλως ἔχουσι τὸν κατ' εἰρήνην ἐκ νόσου θάνατον, οἷς μετὰ τοῦ σώματος καὶ ἡ ψυχὴ τάφῳ κατακρίνεται. Τίς γὰρ οὐκ οἶδε τῶν ἀγαθῶν ἀνδρῶν, ὅτι τὰς μὲν ἐν παρατάξει ψυχὰς, σιδήρῳ τῶν σαρκῶν ἀπολυθείσας, τὸ καθαρώτατον στοιχεῖον αἰθὴρ ξενοδοχῶν ἄστροις ἐγκαθιδρύει, δαίμονες δ' ἀγαθοὶ, καὶ ἥρωες εὐμενεῖς, ἰδίοις ἐκγόνοις ἐμφανίζονται· τὰς δ' ἐν νοσοῦσι τοῖς σώμασι συντακείσας, καὶ ἂν τὰ μάλιστα κηλίδων ἢ μιασμάτων ὦσι καθαραὶ, νὺξ ὑπόγειος ἀφανίζει, καὶ λήθη βαθεῖα δέχεται, λαμβάνουσά τε ἅμα τοῦ τε βίου καὶ τῶν σωμάτων, ἔτι δὲ τῆς μνήμης περιγραφήν; Εἰ δὲ κέκλωσται μὲν ἀνθρώποις ἀναγκαία τελευτὴ, κουφότερος δ' εἰς αὐτὴν νόσου πάσης σίδηρος ὑπηρέτης, πῶς

οὐκ ἀγεννὲς μὴ διδόναι ταῖς χρείαις, ὃ τῷ χρεὼν ἀποδώσομεν; Καὶ ταῦτα μὲν, ὡς οὐ δυναμένων σωθῆναι τῶν ἐπιχειρησόντων, διεξῆλθον. Ἔνεστι δὲ σώζεσθαι τοῖς ἀνδριζομένοις, καὶ ἐκ τῶν σφαλερωτάτων. Πρῶτον μὲν γὰρ τὸ καταῤῥιφθὲν εὐεπίβατον, ἔπειτα πᾶν τὸ οἰκοδομηθὲν εὐδιάλυτον· ὑμεῖς τε πλείους, θαρσήσαντες ἐπὶ τὴν πρᾶξιν, ἀλλήλοις προτροπὴ καὶ βοήθεια γίνεσθε, καὶ τοῖς πολεμίοις τὸ ὑμέτερον παράστημα ταχέως κλάσει τὰ φρονήματα. Καὶ τάχα ἂν ὑμῖν ἀναίμακτον τὸ κατόρθωμα 371
γένοιτο, μόνον καταρξαμένοις. Ἀναβαίνοντας μὲν γὰρ κωλύειν πειράσονται κατὰ τὸ εἰκὸς, λαθόντας δὲ καὶ βιασαμένους ἅπαξ, οὐκ ἂν ὑποσταῖεν ἔτι, καὶ ἂν ὀλίγοι φθάσητε· τὸν δὲ καταρξάμενον, αἰσχυνοίμην ἂν, εἰ μὴ ποιήσαιμι ζηλωτὸν ἐν ταῖς ἐπικαρπίαις· καὶ ὁ μὲν ζῶν ἄρξει τῶν νῦν ὁμοίων, μακάρια δ᾽ ἀκολουθήσει καὶ τοῖς πεσοῦσι τὰ ἀριστεῖα."

6. Τοιαῦτα τοῦ Τίτου διεξιόντος, τὸ μὲν ἄλλο πλῆθος ἔδεισε τοῦ κινδύνου τὸ μέγεθος· τῶν δ᾽ ἐν ταῖς σπείραις στρατευομένων Σαβῖνος τὸ ὄνομα, γένος ἀπὸ Συρίας, ἀνὴρ καὶ κατὰ χεῖρα καὶ κατὰ ψυχὴν ἄριστος ἐφάνη, καίτοι προϊδὼν ἄν τις αὐτὸν ἀπό γε τῆς σωματικῆς ἕξεως οὐ δίκαιον εἶναι στρατιώτην ἔδοξε· μέλας μὲν γὰρ ἦν τὴν χρόαν, ἰσχνὸς, τὴν σάρκα πεπιλημένος, ἀλλ᾽ ἐνῴκει τις ἡρωϊκὴ ψυχὴ λεπτῷ σώματι, καὶ πολὺ τῆς ἰδίας ἀλκῆς στενοτέρῳ. Πρῶτος γοῦν ἀναστὰς, "Ἐπιδίδωμί σοι, Καῖσαρ," ἔφη, "προθύμως ἐμαυτόν. Πρῶτος ἀναβαίνω τὸ τεῖχος· καὶ εὔχομαι μὲν μου τῇ τε ἰσχύϊ καὶ τῇ γνώμῃ τὴν σὴν ἀκολουθῆσαι τύχην. Εἰ δὲ νεμεσηθείην τῆς ἐπιβολῆς, ἴσθι με, μὴ πταίσαντα παρ᾽ ἐλπίδας, ἀλλ᾽ ὑπὲρ σοῦ κρίσει τὸν θάνατον ᾑρημένον." Ταῦτα εἰπὼν καὶ τῇ μὲν ἀριστερᾷ χειρὶ τὸν θυρεὸν ὑπὲρ τῆς

κεφαλῆς προανατείνας, τῇ δεξιᾷ δὲ τὸ ξίφος σπασάμενος, ἐχώρει πρὸς τὸ τεῖχος, μάλιστα περὶ ὥραν τῆς ἡμέρας ἕκτην. Εἵποντο δὲ αὐτῷ καὶ τῶν ἄλλων ἕνδεκα μόνοι ζηλωταὶ τῆς ἀνδρείας γενόμενοι. Προῆγε δὲ πολὺ πάντας ὁ ἀνὴρ ὁρμῇ τινι δαιμονίῳ χρώμενος. Οἱ φρουροὶ δ' ἀπὸ τοῦ τείχους κατηκόντιζόν τε αὐτοὺς, καὶ βέλεσι πάντοθεν ἀπείροις ἔβαλλον, καὶ πέτρας ἐξαισίους κατεκύλιον, αἳ ἐκ τῶν μὲν ἕνδεκα παρέσυραν ἐνίους. Ὁ δὲ Σαβῖνος ἀπαντῶν τοῖς ἀφιεμένοις, καὶ καταχωννύμενος ὑπὸ τῶν βελῶν, οὐ πρότερον ἐπέσχε τὴν ὁρμὴν, ἢ γενέσθαι ἐπ' ἄκρῳ, καὶ τρέψασθαι τοὺς πολεμίους. Καταπλαγέντες γὰρ αὐτοῦ τήν τε δύναμιν οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ τὸ παράστημα τῆς ψυχῆς, ἅμα δὲ καὶ πλείους ἀναβεβηκέναι δόξαντες ἐτράπησαν. Ἔνθα δὴ καταμέμψαιτ' ἄν τις ὡς φθονερὰν ἐπὶ ταῖς ἀρεταῖς τὴν τύχην, καὶ κωλύουσαν ἀεὶ τὰ παράδοξα τῶν κατορθωμάτων. Ὁ γοῦν ἀνὴρ οὗτος, ὅτε ἐκράτησε τῆς ἐπιβολῆς, ἐσφάλη, καὶ πταίσας πρός τινα πέτραν, πρηνὴς ἐπ' αὐτῆς μετὰ μεγίστου ψόφου κατέπεσεν. Ἐπιστραφέντες δὲ οἱ Ἰουδαῖοι καὶ κατιδόντες μόνον τε αὐτὸν καὶ πεπτωκότα, πάντοθεν ἔβαλλον. Ὁ δ' εἰς γόνυ διαναστὰς, καὶ προκαλυψάμενος τὸν θυρεὸν, τὸ μὲν πρῶτον ἠμύνατο, καὶ πολλοὺς τῶν πλησιασάντων ἔτρωσεν. Αὖθις δ' ἀπὸ πλήθους τραυμάτων παρῆκε τὴν δεξιὰν, καὶ τέλος, πρὶν ἀποδοῦναι τὴν ψυχὴν, κατεχώσθη τοῖς βέλεσιν· ἀνὴρ ἄξιος μὲν ἀμείνονι χρῆσθαι δι' ἀνδρείαν τύχῃ, πεσὼν δὲ τῆς ἐπιβολῆς ἀναλόγως. Τῶν δ' ἄλλων τρεῖς μὲν τοὺς ἤδη πρὸς τοῖς ἄκροις ὄντας συντρίψαντες ἀπέκτειναν τοῖς λίθοις· οἱ δ' ὀκτὼ τραυματίαι κατασυρέντες ἀνεκομίσθησαν εἰς τὸ στρατόπεδον. Ταῦτα μὲν οὖν τρίτῃ Πανέμου μηνὸς ἐπράχθη.

723 7. Μετὰ δὲ ἡμέρας δύο τῶν προκοιτούντων τινὲς ἐπὶ τοῖς χώμασι φυλάκων εἴκοσι συνελθόντες,

προςκαλοῦνται μὲν τὸν τοῦ πέμπτου τάγματος σημαιοφόρον, καὶ δύο τινὰς τῶν ἐν ταῖς ἴλαις ἱππέων, καὶ σαλπιγκτὴν ἕνα. Κατὰ δὲ ὥραν τῆς νυκτὸς ἐννάτην προβαίνουσι μὲν ἡσυχῇ διὰ τῶν ἐρειπίων ἐπὶ τὴν Ἀντωνίαν· ἀποσφάξαντες δὲ τοὺς πρώτους τῶν φρουρῶν κοιμωμένους κρατοῦσι τοῦ τείχους, καὶ τῷ σαλπιγκτῇ σημαίνειν ἐκέλευσαν. Πρὸς ὃ τῶν μὲν ἄλλων φυλάκων ἐξανάστασίς τε αἰφνίδιος ἦν καὶ φυγὴ, πρίν τινα τὸ πλῆθος ἐπιδεῖν τῶν ἐπιβεβηκότων· ὅ τε γὰρ φόβος καὶ ἡ σάλπιγξ φαντασίαν αὐτοῖς τοῦ πλήθους ἀναβεβηκέναι πολεμίων παρεῖχε. Καῖσαρ δὲ τοῦ σημείου κατακούσας, ἐξοπλίζει τήν τε δύναμιν διὰ τάχους, καὶ μετὰ τῶν ἡγεμόνων πρῶτος ἀναβαίνει, τοὺς ἐπιλέκτους ἔχων. Καταφευγόντων δὲ Ἰουδαίων εἰς τὸ ἱερὸν, καὶ αὐτοὶ διὰ τῆς διώρυχος εἰςέπιπτον, ἣν ὁ Ἰωάννης ὑπὸ τὰ χώματα τῶν Ῥωμαίων ὑπώρυξε. Καὶ διαστάντες ἀπ᾽ ἀμφοτέρων οἱ στασιασταὶ τῶν ταγμάτων, τοῦ τε Ἰωάννου καὶ τοῦ Σίμωνος, εἶργον αὐτοὺς, οὐδεμίαν οὔτε ἰσχύος οὔτε προθυμίας ἐλλείποντες ὑπερβολήν. Πέρας γὰρ ἁλώσεως ὑπελάμβανον, τὸ Ῥωμαίους παρελθεῖν εἰς τὸ ἅγιον, ὃ δὴ καὶ ἐκεῖνοι, τοῦ κρατεῖν ἀρχήν. Συῤῥήγνυται δὲ περὶ τὰς εἰςόδους μάχη καρτερὰ, τῶν μὲν καταλαβέσθαι καὶ τὸ ἱερὸν εἰςβιαζομένων, τῶν δὲ Ἰουδαίων ἐξωθούντων αὐτοὺς ἐπὶ τὴν Ἀντωνίαν. Καὶ τὰ βέλη μὲν ἦν ἀμφοτέροις ἄχρηστα, καὶ τὰ δόρατα· σπασάμενοι δὲ τὰ ξίφη συνεπλέκοντο, καὶ περὶ τὴν συμβολὴν ἄκριτον ἦν, ὁποτέρωθεν ἕκαστοι μάχοιντο, πεφυρμένων μὲν τῶν ἀνδρῶν καὶ περὶ τὴν στενοχωρίαν διηλλαγμένων, τῆς δὲ βοῆς ἀσημάντου προςπιπτούσης διὰ τὸ μέγεθος. Φόνος τε ἦν ἑκατέρωθεν πολὺς, καὶ τῶν πεσόντων τά τε σώματα καὶ τὰς πανοπλίας πατοῦντες ἔθραυον οἱ μαχόμενοι. Ἀεὶ δ᾽ ἐφ᾽ ὁπότερον βρίσειε ῥέπων ὁ πόλεμος, παρακέλευσις μὲν ἦν τῶν πλεονεκτούντων, οἰμωγαὶ δὲ τῶν τρεπομένων. Οὔτε δὲ αἱ φυγαὶ τόπον εἶχον, οὔθ᾽ αἱ

διώξεις, ἀλλ᾽ ἀνώμαλοι ῥοπαὶ καὶ μετακλίσεις μεμιγμένης ἐγίνοντο τῆς παρατάξεως. Τοῖς δ᾽ ἔμπροσθεν γινομένοις ἢ τοῦ κτείνειν ἢ τοῦ θνήσκειν ἀνάγκη παρῆν, οὐκ οὔσης ἀναφυγῆς· οἱ γὰρ κατὰ νώτου, πρόσω βιαζόμενοι τοὺς σφετέρους παρ᾽ ἀμφοῖν, οὐδὲ τῇ μάχῃ μεσαίχμιον κατέλιπον. Πλεονεκτούντων δὲ τῶν Ἰουδαίων τοῖς θυμοῖς τὴν Ῥωμαίων ἐμπειρίαν, καὶ κλινομένης καθάπαν ἤδη τῆς παρατάξεως, ἀπὸ γὰρ ἐννάτης νυκτὸς ὥρας εἰς ἑβδόμην τῆς ἡμέρας ἐπολέμουν, οἱ μὲν ἀθρόοι, καὶ τὸν τῆς ἁλώσεως κίνδυνον ἔχοντες ἀνδρείας ἐφόδιον, Ῥωμαῖοι δὲ μέρει τῆς δυνάμεως, οὔπω γὰρ ἐπαναβεβήκει τὰ τάγματα, καὶ ἐκείνοις ἐπανεῖχον οἱ μαχόμενοι, τότε κρατεῖν τῆς Ἀντωνίας ἀποχρῆν ἐπὶ τοῦ παρόντος ἐδόκει.

8. Ἰουλιανός δέ τις ἑκατοντάρχης τῶν ἀπὸ τῆς Βιθυνίας, οὐκ ἄσημος ὢν ἀνήρ, ὃν ἐγὼ κατ᾽ ἐκεῖνον ἱστόρησα τὸν πόλεμον, ὅπλων τε ἐμπειρίᾳ, καὶ ἀλκῇ σώματος, καὶ ψυχῆς παραστήματι πάντων ἄριστος, ὁρῶν τοὺς Ῥωμαίους ἐνδιδόντας ἤδη καὶ κακῶς ἀμυνομένους, — παρειστήκει δὲ Τίτῳ κατὰ τὴν Ἀντωνίαν, — προπηδᾷ, καὶ νικῶντας ἤδη τοὺς Ἰουδαίους τρέπεται μόνος μέχρι τῆς τοῦ ἐνδοτέρω ἱεροῦ γωνίας.
373 Ἔφευγε δὲ τὸ πλῆθος ἄθρουν, οὔτε τὴν ἰσχὺν, οὔτε τὴν τόλμαν ἀνθρωπίνην ὑπολαμβάνοντες. Ὁ δὲ διὰ μέσων τῶν σκεδαννυμένων ἄλλοτε ἄλλῃ διάττων, ἐφόνευε τοὺς καταλαμβανομένους· καὶ τῆς ὄψεως ἐκείνης οὐδὲν οὔτε τῷ Καίσαρι θαυμασιώτερον, οὔτε τοῖς ἄλλοις παρέστη φρικωδέστερον. Ἐδιώκετο δ᾽ ἄρα καὶ αὐτὸς ὑπὸ τῆς εἱμαρμένης, ἣν ἀμήχανον διαφυγεῖν θνητὸν ὄντα. Τὰ γὰρ ὑποδήματα πεπαρμένα πυκνοῖς καὶ ὀξέσιν ἥλοις ἔχων, ὥςπερ τῶν ἄλλων στρατιωτῶν ἕκαστος, καὶ κατὰ λιθοστρώτου τρέχων ὑπολισθαίνει. Πεσὼν δὲ ὕπτιος, μετὰ μεγίστου τῆς πανοπλίας ἤχου, τοὺς φεύγοντας ἐπιστρέφει. Καὶ τῶν μὲν ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας Ῥωμαίων ἤρθη βοὴ,

περὶ τῷ ἀνδρὶ δεισάντων· οἱ δὲ Ἰουδαῖοι περιστάντες αὐτὸν ἀθρόοι, τοῖς τε ξυστοῖς, καὶ ταῖς ῥομφαίαις πάντοθεν ἔπαιον. Ὁ δὲ πολὺν μὲν τῷ θυρεῷ σίδηρον ἐξεδέχετο, πολλάκις δ' ἀναστῆναι πειράσας, ὑπὸ τοῦ πλήθους τῶν τυπτόντων ἀνετράπη, καὶ κείμενος δὲ ὅμως ἔνυττε τῷ ξίφει πολλούς. Οὐδὲ γὰρ ἀνηρέθη ταχέως, τῷ τε κράνει καὶ τῷ θώρακι πεφραγμένος πάντα τὰ καίρια πρὸς σφαγὴν, καὶ τὸν αὐχένα συνέλκων, μέχρι κοπτομένων αὐτῷ τῶν ἄλλων μελῶν, καὶ μηδενὸς προςαμῦναι τολμῶντος, ἐνέδωκε. Δεινὸν δὲ πάθος εἰςῄει Καίσαρα ἀνδρὸς οὕτως ἐναρέτου, καὶ ἐν ὄψει τοσούτων φονευομένου· καὶ αὐτὸν μὲν ὁ τόπος διέκλειε τοῦ βοηθεῖν ἐθέλοντα, τοὺς δυναμένους δὲ κατάπληξις. Ἰουλιανὸς μὲν οὖν πολλὰ δυςθανατήσας, καὶ τῶν κτεινάντων ὀλίγους ἀπλῆγας καταλιπὼν, μόλις ἀποσφάττεται, μέγιστον οὐ παρὰ Ῥωμαίοις καὶ Καίσαρι μόνον, ἀλλὰ καὶ παρὰ τοῖς πολεμίοις κλέος καταλιπών. Ἰουδαῖοι δὲ, καὶ τὸν νεκρὸν ἁρπασάμενοι, πάλιν τοὺς Ῥωμαίους τρέπονται, καὶ κατακλείουσιν εἰς τὴν Ἀντωνίαν. Ἠγωνίσαντο δ' ἐξ αὐτῶν ἐπισήμως κατὰ ταύτην τὴν μάχην Ἀλεξᾶς μέν τις καὶ Γυφθαῖος τοῦ Ἰωάννου τάγματος· ἐκ δὲ τῶν περὶ Σίμωνα Μαλαχίας τε, καὶ ὁ τοῦ Μέρτωνος Ἰούδας, καὶ Σωσᾶ υἱὸς Ἰάκωβος τῶν Ἰδουμαίων ἡγεμὼν, τῶν δὲ ζηλωτῶν ἀδελφοὶ δύο, παῖδες Ἰαείρου Σίμων τε καὶ Ἰούδης.

CAP. II. 1. Τίτος δὲ τοῖς μὲν σὺν αὐτῷ στρατιώταις κατασκάπτειν προςέταξε τοὺς θεμελίους τῆς Ἀντωνίας, καὶ τῇ δυνάμει πάσῃ ῥᾳδίαν τὴν ἄνοδον εὐτρεπίζειν. Αὐτὸς δὲ τὸν Ἰώσηπον παραστησάμενος, — ἐπέπυστο γὰρ ἐπ' ἐκείνης τῆς ἡμέρας, Πανέμου δ' ἦν ἑπτακαιδεκάτη, τὸν ἐνδελεχισμὸν καλούμενον, ἀνδρῶν ἀπορίᾳ διαλελοιπέναι τῷ θεῷ, καὶ τὸν δῆμον ἐπὶ τούτῳ δεινῶς ἀθυμεῖν, — λέγειν τῷ Ἰωάν- 374

νῃ πάλιν ἐκέλευσεν ἃ καὶ πρότερον, ‘ὡς, εἰ καί τις αὐτὸν ἔρως κακὸς ἔχοι τοῦ μάχεσθαι, προελθόντι μεθ᾽ ὅσων βούλεται πολεμεῖν ἐξίῃ, δίχα τοῦ συναπολέσθαι τήν τε πόλιν καὶ τὸν ναὸν αὐτῷ. Μηκέτι μέντοι μιαίνειν τὸ ἅγιον, μηδὲ εἰς τὸν Θεὸν πλημμελεῖν· παρεῖναι δὲ αὐτῷ τὰς ἐπιλελοιπυίας θυσίας ἐκτελεῖν, δι᾽ ὧν ἂν ἐπιλέξηται Ἰουδαίων.’ Καὶ ὁ Ἰώσηπος, ὡς ἂν εἰ μὴ τῷ Ἰωάννῃ μόνον, ἀλλὰ καὶ τοῖς πολλοῖς, ἐν ἐπηκόῳ στὰς, τά τε τοῦ Καίσαρος διήγγειλεν Ἑβραΐζων, καὶ πολλὰ προσηντιβόλει, ‘φείσασθαι τῆς πατρίδος, καὶ διασκεδάσαι τοῦ ναοῦ γενόμενον ἤδη τὸ πῦρ, τούς τε ἐναγισμοὺς ἐπιδιδόναι τῷ Θεῷ.’ Πρὸς ταῦτα τοῦ δήμου μὲν ἦν κατήφεια καὶ σιγή· πολλὰ δὲ ὁ τύραννος λοιδορηθείς τε τῷ Ἰωσήπῳ καὶ καταρασάμενος, τὸ τελευταῖον προσέθηκεν, ‘ὡς οὐκ ἄν ποτε δείσειεν ἅλωσιν, Θεοῦ γὰρ ὑπάρχειν τὴν πόλιν.’ Καὶ ὁ Ἰώσηπος πρὸς ταῦτα ἀνέκραγεν, “Πάνυ γοῦν καθαρὰν τῷ Θεῷ τετήρηκας αὐτὴν, ἀμίαντον δὲ μένει τὸ ἅγιον! Εἰς ὃν δὲ ἐλπίζεις σύμμαχον, οὐδὲν ἠσέβησας, τὰς δὲ ἐθίμους θυσίας ἀπολαμβάνει! Καὶ ἐὰν μέν σου τις ἀφέληται τὴν καθ᾽ ἡμέραν τροφὴν, ἀσεβέστατε, τοῦτον ἡγήσῃ πολέμιον· αὐτὸν δὲ, ὃν τῆς αἰωνίου θρησκείας ἐστέρησας Θεὸν, ἐλπίζεις σύμμαχον ἔχειν ἐν τῷ πολέμῳ; Καὶ Ῥωμαίοις τὰς ἁμαρτίας ἀνατίθῃς, οἳ μέχρι νῦν κήδονται τῶν ἡμετέρων νόμων, καὶ τὰς ὑπὸ σοῦ διακοπείσας θυσίας ἀποδίδοσθαι τῷ Θεῷ βιάζονται; Τίς οὐκ ἂν στενάξειεν, καὶ κατολοφύραιτο τῆς παραδόξου μεταβολῆς τὴν πόλιν, εἴ γε ἀλλόφυλοι μὲν καὶ πολέμιοι τὴν σὴν ἀσέβειαν ἐπανορθοῦνται, σὺ δὲ Ἰουδαῖος, ὁ τοῖς νόμοις ἐντραφεὶς, καὶ ἐκείνων πρὸς αὐτοὺς γίνῃ χαλεπώτερος; Ἀλλά τοι, Ἰωάννη, καὶ μετανοῆσαι μὲν ἐκ κακῶν οὐκ αἰσχρὸν ἐν ἐσχάτοις, καὶ καλὸν ὑπόδειγμα βουλομένῳ σώζειν τὴν πατρίδα σοι πρόκειται, βασιλεὺς Ἰουδαίων Ἰεχωνίας· ὅς ποτε στρατεύσαντι τῷ Βαβυ-

λωνίῳ δι᾽ αὐτὸν ἑκὼν ἐξέστη, πρὶν ἁλῶναι τῆς πόλεως, καὶ μετὰ γενεᾶς αἰχμαλωσίαν ὑπέμεινεν ἐθελούσιον, ὑπὲρ τοῦ μὴ παραδοῦναι ταῦτα πολεμίοις τὰ ἅγια, καὶ τὸν οἶκον τοῦ θεοῦ περιϊδεῖν φλεγόμενον. Διὰ τοῦτο λόγος τε αὐτὸν πρὸς ἁπάντων Ἰουδαίων ἱερὸς ἀνυμνεῖ, καὶ μνήμη ῥέουσα δι᾽ αἰῶνος ἀεὶ νέα τοῖς ἐπιγενομένοις παραδίδωσιν ἀθάνατον. Καλὸν, ὦ Ἰωάννη, ὑπόδειγμα, καὶ ἂν προσῇ κίνδυνος. Ἐγὼ δέ σοι καὶ τὴν ἀπὸ Ῥωμαίων συγγνώμην ἐγγυῶμαι· μέμνησο δὲ, ὡς ὁμόφυλος ὢν παραινῶ, καὶ Ἰουδαῖος ὢν ἐπαγγέλλομαι· καὶ χρὴ σκοπεῖν, τίς ὁ συμβουλεύων, καὶ πόθεν. Μὴ γὰρ ἔγωγέ ποτε γενοίμην ζῶν οὕτως αἰχμάλωτος, ἵνα παύσωμαι τοῦ γένους, ἢ τῶν πατρίων ἐπιλάθωμαι. Πάλιν ἀγανακτεῖς, καὶ κέκραγάς μοι λοιδορούμενος. Ἄξιός γε καὶ χαλεπωτέρων, ὅς ἄντικρυς εἱμαρμένης τι παραινῶ, καὶ τοὺς ὑπὸ θεοῦ βιάζομαι κατακρίτους σώζειν. Τίς οὐκ οἶδε τὰς τῶν παλαιῶν προφητῶν ἀναγραφὰς, καὶ τὸν ἐπιῤῥέποντα τῇ τλήμονι πόλει χρησμὸν, ἤδη ἐνεστῶτα; Τότε γὰρ ἅλωσιν αὐτῆς προεῖπον, ὅταν ὁμοφύλου τις ἄρξῃ φόνου. Τῶν ὑμετέρων δὲ πτωμάτων οὐχ ἡ πόλις, καὶ τὸ ἱερὸν δὲ πᾶν πεπλήρωται; Θεὸς ἄρα, θεὸς αὐτὸς ἐπάγει μετὰ Ῥωμαίων καθάρσιον αὐτῷ πῦρ, καὶ τὴν τοσούτων μιασμάτων γέμουσαν πόλιν ἀναρπάζει."

2. Ταῦτα λέγων ὁ Ἰώσηπος μετ᾽ ὀδυρμοῦ καὶ δακρύων, λυγμῷ τὴν φωνὴν ἀνεκόπη. Καὶ Ῥωμαῖοι μὲν ᾤκτειράν τε τοῦ πάθους, καὶ τῆς προαιρέσεως αὐτὸν ἐθαύμασαν. Οἱ δὲ περὶ τὸν Ἰωάννην παρωξύνοντο μᾶλλον ἐπὶ τοὺς Ῥωμαίους, ἐπιθυμοῦντες ἐγκρατεῖς καὶ ἐκείνου γενέσθαι. Τῶν γε μὴν εὐγενῶν πολλοὺς ἐκίνησεν ὁ λόγος· καὶ τινὲς μὲν, ὀῤῥωδοῦντες τὰς φυλακὰς τῶν στασιαστῶν, κατὰ χώραν ἔμενον, ἀπώλειαν μέντοι σφῶν τε αὐτῶν καὶ τῆς πόλεως κατεγνώκεσαν. Εἰσὶ δὲ οἳ, καιροφυλακήσαντες ἄδειαν ἀναχωρήσεως, πρὸς τοὺς Ῥωμαίους κα-

τέφυγον· ὧν ἦσαν ἀρχιερεῖς μὲν Ἰώσηπός τε καὶ Ἰησοῦς, υἱοὶ δ' ἀρχιερέων, τρεῖς μὲν Ἰσμαήλου τοῦ καρατομηθέντος ἐν Κυρήνῃ, καὶ τοῦ Ματθίου τέσσαρες, καὶ εἷς ἑτέρου Ματθίου παῖς, διαδρὰς μετὰ τὴν πατρὸς ἀπώλειαν, ὃν ὁ τοῦ Γιώρα Σίμων ἀπέκτεινε, σὺν τρισὶν υἱοῖς, ὡς προείρηται. Πολλοὶ δὲ καὶ τῶν ἄλλων εὐγενῶν τοῖς ἀρχιερεῦσι συμμετεβάλλοντο. Καῖσαρ δὲ αὐτοὺς τά τε ἄλλα φιλοφρόνως ἐδέξατο, καὶ γινώσκων ἀλλοφύλοις ἤθεσιν ἀηδῆ τὴν διατριβὴν ἕξειν, ἀπέπεμψεν αὐτοὺς εἰς Γόφναν, τέως ἐκεῖ παραινῶν μένειν· ἀποδώσειν γὰρ ἑκάστῳ τὰς κτήσεις, κατὰ σχολὴν ἀπὸ τοῦ πολέμου γενόμενος. Οἱ μὲν οὖν εἰς τὸ δοθὲν πολίχνιον, μετὰ πάσης ἀσφαλείας, ἀνεχώρουν ἄσμενοι. Μὴ φαινομένων δὲ αὐτῶν, διεφήμισαν οἱ στασιασταὶ πάλιν, ὡς ἀποσφαγεῖεν ὑπὸ Ῥωμαίων οἱ αὐτόμολοι, δηλονότι τοὺς λοιποὺς ἀποτρέποντες τῷ φόβῳ διαδιδράσκειν. Ἤνυστο δὲ, ὡς καὶ πρότερον, αὐτοῖς τὸ πανούργημα πρὸς καιρόν· ἐπεσχέθησαν γὰρ ὑπὸ τοῦ δέους αὐτομολεῖν.

3. Αὖθις δὲ, ὡς ἀνακαλέσας τοὺς ἄνδρας ἀπὸ τῆς Γόφνας Τίτος ἐκέλευσε μετὰ τοῦ Ἰωσήπου περιελθόντας τὸ τεῖχος ὀφθῆναι τῷ δήμῳ, πλεῖστοι πρὸς τοὺς Ῥωμαίους ἔφευγον. Γινόμενοι δ' ἀθρόοι, καὶ πρὸ τῶν Ῥωμαίων ἱστάμενοι, μετ' οἰμωγῆς καὶ δακρύων ἱκέτευον τοὺς στασιαστὰς, 'τὸ μὲν πρῶτον, ὅλῃ τοὺς Ῥωμαίους δέξασθαι τῇ πόλει, καὶ τὴν πατρίδα σῶσαι πάλιν· εἰ δὲ μὴ, τοῦ τε ἱεροῦ πάντως ὑπεξελθεῖν, καὶ ῥύσασθαι τὸν ναὸν αὐτοῖς· οὐ γὰρ ἂν τολμῆσαι Ῥωμαίους μὴ μετὰ μεγίστης ἀνάγκης καταφλέξαι τὰ ἅγια.' Τούτοις μᾶλλον ἀντεφιλονείκουν, καὶ πολλὰ βλάσφημα τοῖς αὐτομόλοις ἀντικεκραγότες, ἐπὶ τῶν ἱερῶν πυλῶν τούς τε ὀξυβελεῖς καὶ καταπέλτας καὶ λιθοβόλους μηχανὰς διέστησαν· ὡς τὸ κύκλῳ μὲν ἱερὸν ἀπὸ πλήθους νεκρῶν προσεοικέναι πολυανδρίῳ, τὸν δὲ ναὸν αὐτὸν φρουρίῳ.

Τοῖς δὲ ἁγίοις καὶ ἀβάτοις μετὰ τῶν ὅπλων εἰςεπήδων, θερμὰς ἔτι τὰς χεῖρας ἐξ ὁμοφύλων ἔχοντες φόνων· καὶ προέκοψαν εἰς τοσοῦτον παρανομίας, 376
ὥςτε, ἣν ἂν εἰκὸς ἀγανάκτησιν γενέσθαι Ἰουδαίων, εἰ Ῥωμαῖοι ταῦτα ἐξυβρίζοιεν εἰς αὐτοὺς, ταύτην εἶναι παρὰ Ῥωμαίων τότε πρὸς Ἰουδαίους ἀσεβοῦντας εἰς τὰ ἴδια. Τῶν μέν γε στρατιωτῶν οὐκ ἔστιν ὅςτις οὐ μετὰ φρίκης εἰς τὸν ναὸν ἀφεώρα καὶ προςεκύνει, τούς τε λῃστὰς ηὔχετο, πρὶν ἀνηκέστου πάθους, μετανοῆσαι.

4. Τίτος δὲ ὑπερπαθήσας πάλιν ἐξωνείδιζε τοὺς περὶ τὸν Ἰωάννην, λέγων, "Ἆρ' οὐχ ὑμεῖς, ὦ μιαρώτατοι, τὸν δρύφακτον τοῦτον προεβάλεσθε τῶν ἁγίων; Οὐχ ὑμεῖς δὲ τὰς ἐν αὐτῷ στήλας διεστήσατε, γράμμασιν Ἑλληνικοῖς καὶ ἡμετέροις κεχαραγμένας, ἃ μηδένα τὸ γείσιον ὑπερβαίνειν παραγγέλλει; Οὐχ ἡμεῖς δὲ τοὺς ὑπερβάντας ὑμῖν ἀναιρεῖν ἐπετρέψαμεν, καὶ ἐὰν Ῥωμαῖός τις ᾖ; Τί οὖν νῦν, ἀλιτήριοι, καὶ νεκροὺς ἐν αὐτῷ καταπατεῖτε; Τί δὲ τὸν ναὸν αἵματι ξένῳ καὶ ἐγχωρίῳ φύρετε; Μαρτύρομαι θεοὺς ἐγὼ πατρίους, καὶ εἴ τις ἐφεώρα ποτὲ τόνδε τὸν χῶρον, νῦν μὲν γὰρ οὐκ οἴομαι, μαρτύρομαι δὲ καὶ στρατιὰν ἐμὴν, καὶ τοὺς παρ' ἐμοὶ Ἰουδαίους, καὶ ὑμᾶς αὐτοὺς, ὡς οὐκ ἐγὼ ταῦθ' ὑμᾶς ἀναγκάζω μιαίνειν· καὶ ἐὰν ἀλλάξητε τῆς παρατάξεως τὸν τόπον, οὔτε προςελεύσεταί τις Ῥωμαίων τοῖς ἁγίοις, οὔτε ἐνυβρίσει· τηρήσω δὲ τὸν ναὸν ὑμῖν, καὶ μὴ θέλουσι."

5. Ταῦτα τοῦ Ἰωσήπου διαγγέλλοντος ἐκ τοῦ Καίσαρος, οἱ λῃσταὶ καὶ ὁ τύραννος, οὐκ ἀπ' εὐνοίας, ἀλλὰ κατὰ δειλίαν γίνεσθαι τὰς παρακλήσεις δοκοῦντες, ὑπερηφάνουν. Τίτος δὲ ὡς οὔτε οἶκτον ἑαυτῶν τοὺς ἄνδρας οὐδὲ φειδώ τινα τοῦ ναοῦ ποιουμένους ἑώρα, πάλιν πρὸς πόλεμον ἄκων ἐχώρει. Πᾶσαν μὲν οὖν τὴν δύναμιν ἐπάγειν αὐτοῖς οὐχ οἷόν τε

ἦν, μὴ χωρουμένην τῷ τόπῳ· τριάκοντα δ' ἐπιλέξας ἀφ' ἑκάστης ἑκατονταρχίας τοὺς ἀρίστους, καὶ τοῖς χιλιάρχοις ἀνὰ χιλίους παραδοὺς, τούτων δ' ἐπιτάξας ἡγεμόνα Κερεάλιον, ἐπιθέσθαι προςέταξε ταῖς φυλακαῖς περὶ ὥραν τῆς νυκτὸς ἐννάτην. Ὄντα δὲ καὶ αὐτὸν ἐν τοῖς ὅπλοις, καὶ συγκαταβαίνειν παρεσκευασμένον, οἵ τε φίλοι διὰ τὸ μέγεθος τοῦ κινδύνου κατέσχον, καὶ τὰ παρὰ τῶν ἡγεμόνων λεγόμενα· 'πλέον γὰρ αὐτὸν ἀνύσειν, ἔφασαν, ἐπὶ τῆς Ἀντωνίας καθεζόμενον, καὶ τὴν μάχην ἀγωνοθετοῦντα τοῖς στρατιώταις, ἢ εἰ καταβὰς προκινδυνεύοι· πάντας γὰρ, ὁρῶντος Καίσαρος, ἀγαθοὺς πολεμιστὰς ἔσεσθαι.' Τούτοις πεισθεὶς ὁ Καῖσαρ, 'δι' ἓν τοῦτο τοῖς στρατιώταις ὑπομένειν εἰπὼν, ἵνα κρίνῃ τὰς ἀρετὰς αὐτῶν, καὶ μήτε τῶν ἀγαθῶν τις ἀγέραστος, μήτε τῶν ἐναντίων ἀτιμώρητος διαλάθῃ, γένηται δ' αὐτόπτης καὶ μάρτυς ἁπάντων, ὁ καὶ τοῦ κολάζειν καὶ τοῦ τιμᾶν κύριος,' τοὺς μὲν ἐπὶ τὴν πρᾶξιν ἔπεμπε καθ' ἣν ὥραν καὶ προείρηται, προελθὼν δὲ αὐτὰς εἰς τὸ κάτοπτον ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας ἐκαραδόκει τὸ μέλλον.

6. Οὐ μὴν οἵ γε πεμφθέντες τοὺς φύλακας εὗρον κοιμωμένους, ὡς ἤλπισαν, ἀλλ' ἀναπηδήσασι μετὰ κραυγῆς εὐθέως συνεπλέκοντο. Πρὸς δὲ τὴν τῶν ἐκκοιτούντων βοὴν ἔνδοθεν οἱ λοιποὶ κατὰ στίφος ἐξέθεον. Τῶν μὲν δὴ πρώτων τὰς ὁρμὰς ἐξεδέχοντο
377 Ῥωμαῖοι· περιέπιπτον δὲ οἱ μετ' ἐκείνους τῷ σφετέρῳ τάγματι, καὶ πολλοὶ τοῖς οἰκείοις ὡς πολεμίοις ἐχρῶντο. Τὴν μὲν γὰρ διὰ βοῆς ἐπίγνωσιν ἡ κραυγὴ συγχυθεῖσα παρ' ἀμφοῖν, τὴν δὲ ὀμμάτων ἡ νὺξ ἕκαστον ἀφείλετο, καὶ τυφλώττειν ἄλλως οὓς μὲν οἱ θυμοὶ παρεσκεύαζον, οὓς δὲ οἱ φόβοι· διὰ τοῦτο τὸν προςτυχόντα πλήττειν ἦν ἄκριτον. Ῥωμαίους μὲν οὖν συνησπικότας, καὶ κατὰ συντάξεις προπηδῶντας, ἧττιον ἔβλαπτεν ἄγνοια· καὶ γὰρ ἦν παρ' ἑκάστῳ μνήμη τοῦ συνθήματος. Ἰουδαῖοι δ' ἀεὶ σκε-

θαννύμενοι, καὶ τάς τε προςβολὰς, καὶ τὰς ὑποχωρήσεις ἀνέδην ποιούμενοι, πολλάκις φαντασίαν παρεῖχον ἀλλήλοις πολεμίων· τὸν ὑποστρέφοντα γὰρ ἕκαστος οἰκεῖον διὰ σκότους ὡς ἐπιόντα Ῥωμαῖον ἐξεδέχετο. Πλείους γοῦν ὑπὸ τῶν ἰδίων, ἢ τῶν πολεμίων, ἐτρώθησαν, ἕως, ἡμέρας γενομένης, ὄψει τὸ λοιπὸν ἡ μάχη διεκρίνετο· καὶ κατὰ φάλαγγα διαστάντες, τοῖς τε βέλεσιν εὐτάκτοις ἐχρῶντο καὶ ταῖς ἀμύναις. Οὐδ' ἕτεροι δὲ οὔτ' εἶκον, οὔτ' ἐκοπίων· ἀλλ' οἱ μὲν, ὡς ἐφορῶντος Τίτου, κατ' ἄνδρα καὶ κατὰ συντάξεις ἤριζον ἀλλήλοις, καὶ προκοπῆς ἕκαστος ἐκείνην αὐτῷ τὴν ἡμέραν ἄρξειν ὑπελάμβανεν, εἰ γενναίως ἀγωνίσαιτο. Ἰουδαίοις δ' ἐβράβευε τὰς τόλμας ὅ τε περὶ σφῶν αὐτῶν καὶ τοῦ ἱεροῦ φόβος, καὶ ὁ τύραννος ἐφεστὼς, καὶ τοὺς μὲν παρακαλῶν, τοὺς δὲ μαστιγῶν καὶ διεγείρων ἀπειλαῖς. Συνέβαινε δὲ τὸ μὲν πλεῖστον σταδιαίαν εἶναι τὴν μάχην, ἐν ὀλίγῳ δὲ καὶ ταχέως ἀντιστρέφεσθαι τὰς ῥοπάς. Οὐδ' ἕτεροι γὰρ οὔτε φυγῆς οὔτε διώξεως μῆκος εἶχον· ἀεὶ δὲ πρὸς τὸ συμβαῖνον οἰκεῖος ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας ὁ θόρυβος ἦν, θαῤῥεῖν δὲ καὶ κρατοῦσι τοῖς σφετέροις ἐπεβόων, καὶ μένειν τρεπομένοις. Ἦν δὲ ὥςπερ τι πολέμου θέατρον· οὐδὲν γὰρ οὔτε Τίτον, οὔτε τοὺς περὶ αὐτὸν ἐλάνθανε τῶν κατὰ τὴν μάχην. Τὸ δὲ πέρας ἀρξάμενοι τῆς νυκτὸς ἐννάτης ὥρας, ὑπὲρ πέμπτην τῆς ἡμέρας διελύθησαν, ἀφ' οὗπερ ἤρξαντο τόπου τῆς συμβολῆς, μηδ' ἕτεροι βεβαίως κλίναντες τοὺς ἑτέρους, ἀλλὰ τὴν νίκην μέσην ἐν ἀγχωμάλῳ τῇ παρατάξει καταλιπόντες. Καὶ Ῥωμαίων μὲν ἐπισήμως ἠγωνίσαντο πολλοί· Ἰουδαίων δ' ἐκ μὲν τῶν περὶ Σίμωνα Ἰούδας ὁ τοῦ Μέρτωνος, καὶ Σίμων ὁ τοῦ Ἰωσίου, τῶν δὲ Ἰδουμαίων Ἰάκωβος καὶ Σίμων, Καθλᾶ μὲν οὗτος παῖς, Σωσᾶ δὲ ὁ Ἰάκωβος, τῶν δὲ μετὰ Ἰωάννου Γυφθαῖος καὶ Ἀλεξᾶς, τῶν δὲ ζηλωτῶν Σίμων υἱὸς Ἰαείρου.

7. Ἐν τούτῳ δὲ ἡ λοιπὴ τῶν Ῥωμαίων δύναμις, ἡμέραις ἑπτὰ καταστρεψαμένη τοὺς τῆς Ἀντωνίας θεμελίους, μέχρι τοῦ ἱεροῦ πλατεῖαν ἄνοδον εὐτρεπίσαντο. Πλησιάσαντα δὲ τῷ πρώτῳ περιβόλῳ τὰ τάγματα κατήρχετο χωμάτων· τὸ μὲν ἄντικρυς τῆς τοῦ εἴσω ἱεροῦ γωνίας, ἥτις ἦν κατ' ἄρκτον καὶ δύσιν, τὸ ἰδὲ κατὰ τὴν βόρειον ἐξέδραν, ἣ μεταξὺ τῶν δύο πυλῶν ἦν, τῶν δὲ λοιπῶν δύο, θάτερον μὲν κατὰ τὴν ἑσπέριον στοὰν τοῦ ἔξωθεν ἱεροῦ, τὸ δὲ ἕτερον ἔξω κατὰ τὴν βόρειον. Προέκοπτε μέντοι μετὰ πολλοῦ καμάτου καὶ ταλαιπωρίας αὐτοῖς τὰ ἔργα, καὶ τὴν ὕλην ἀφ' ἑκατὸν σταδίων συγκομίζουσιν. Ἐ-
378 κακοῦντο δ' ἔσθ' ὅπη καὶ κατ' ἐπιβουλὰς αὐτοὶ, διὰ περιουσίαν τοῦ κρατεῖν ὄντες ἀδεέστεροι, καὶ δι' ἀπόγνωσιν ἤδη σωτηρίας χρώμενοι τολμηροτέροις τοῖς Ἰουδαίοις. Τῶν γὰρ ἱππέων τινὲς, ὁπότε προέλθοιεν ἐπὶ ξυλείαν ἢ χόρτου συλλογὴν, τὸν τῆς κομιδῆς χρόνον ἀνίεσαν βόσκεσθαι τοὺς ἵππους ἀποχαλινοῦντες, οὓς οἱ Ἰουδαῖοι κατὰ στίφος ἐκπηδῶντες ἥρπαζον. Καὶ τούτου συνεχῶς γινομένου, νομίσας Καῖσαρ, ὅπερ ἦν, ἀμελείᾳ τῶν σφετέρων πλέον ἢ τῇ Ἰουδαίων ἀνδρείᾳ γίνεσθαι τὰς ἁρπαγὰς, ἔγνω σκυθρωπότερον τοὺς λοιποὺς πρὸς φυλακὴν τῶν ἱππέων ἐπιστρέψαι· καὶ κελεύσας ἀπαχθῆναι τὴν ἐπὶ θάνατον τῶν ἀπολεσάντων στρατιωτῶν ἕνα, φόβῳ τοῖς ἄλλοις ἐτήρησε τοὺς ἵππους. Οὐκέτι γὰρ εἴων νέμεσθαι, καθάπερ δὲ συμπεφυκότες αὐτοῖς ἐπὶ τὰς χρείας ἐξῄεσαν. Οἱ μὲν οὖν προσεπολέμουν τῷ ἱερῷ, καὶ τὰ χώματα διήγειραν.

8. Μετὰ δὲ μίαν ἡμέραν αὐτῶν τῆς ἀνόδου πολλοὶ τῶν στασιαστῶν, οἷς ἁρπαγαί τε ἐπέλιπον ἤδη, καὶ ὁ λιμὸς ἤπειγε, συνελθόντες ταῖς κατὰ τὸ Ἐλαιῶν ὄρος Ῥωμαίων φυλακαῖς ἐπιτίθενται, περὶ ὥραν ἑνδεκάτην τῆς ἡμέρας, οἰόμενοι πρῶτον μὲν ἀδοκήτων, ἔπειτα πρὸς θεραπείας ἤδη τοῦ σώματος ὄντων, ῥᾳδίως διεκπεσεῖν. Προαισθόμενοι δὲ τὴν

ἔφοδον αὐτῶν οἱ Ῥωμαῖοι, καὶ ταχέως ἐκ τῶν πλησίον φρουρίων συνδραμόντες, εἶργον ὑπερπηδᾶν καὶ διακόπτειν τὸ περιτείχισμα βιαζομένους. Γενομένης δὲ καρτερᾶς τῆς συμβολῆς, ἄλλα τε πολλὰ παρ' ἑκατέρων γενναίως ἐπράχθη, Ῥωμαίων μὲν μετὰ τῆς ἰσχύος ἐμπειρίᾳ τοῦ πολεμεῖν χρωμένων, Ἰουδαίων δ' ἀφειδέσι ταῖς ὁρμαῖς καὶ τοῖς θυμοῖς ἀκατασχέτοις. Ἐστρατήγει δὲ τῶν μὲν αἰδὼς, τῶν δὲ ἀνάγκη. Τότε γὰρ ἐξαφεῖναι Ἰουδαίους, ὥςπερ ἄρκυσιν ἐνειλημμένους, Ῥωμαίοις αἴσχιστον ἐδόκει. Καὶ ἐκεῖνοι μίαν ἐλπίδα σωτηρίας εἶχον, εἰ βιασάμενοι ῥήξειαν τὸ τεῖχος. Καὶ τῶν ἀπὸ σπείρας τις ἱππέων, Πεδάνιος τὸ ὄνομα, τρεπομένων ἤδη τῶν Ἰουδαίων, καὶ κατὰ τῆς φάραγγος συνωθουμένων, ῥόθιον ἐκ πλαγίου παρελαύνων τὸν ἵππον, ἁρπάζει τινὰ φεύγοντα τῶν πολεμίων, νεανίαν, στιβαρόν τε ἄλλως τὸ σῶμα, καὶ καθωπλισμένον, δραξάμενος ἐκ τοῦ σφυροῦ. Τοσοῦτον μὲν ἑαυτὸν ἐκτρέχοντος ἐπέκλινε τοῦ ἵππου, τοσοῦτον δ' ἐπεδείξατο τῆς τε δεξιᾶς τὸν τόνον, καὶ τοῦ λοιποῦ σώματος, ἔτι δ' ἐμπειρίας ἱππικῆς. Ὁ μὲν οὖν ὥςπερ τι κειμήλιον ἁρπασάμενος ἧκε φέρων Καίσαρι τὸν αἰχμάλωτον. Τίτος δὲ τὸν μὲν λαβόντα τῆς δυνάμεως θαυμάσας, τὸν δὲ ληφθέντα τῆς περὶ τὸ τεῖχος ἐπιχειρήσεως κολάσαι κελεύσας, αὐτὸς ἐν ταῖς περὶ τὸ ἱερὸν διαμάχαις ἦν, καὶ τὰ χώματα κατήπειγεν.

9. Ἐν ᾧ Ἰουδαῖοι κακούμενοι τοῖς συμβολαῖς, ἀεὶ κατ' ὀλίγον κορυφουμένου τοῦ πολέμου καὶ τῷ ναῷ προςέρποντος, καθάπερ σηπομένου σώματος, ἀπέκοπτον τὰ προειλημμένα μέλη, φθάνοντες τὴν εἰς τὸ πρόσω νομήν. Τῆς γὰρ βορείου καὶ κατὰ δύσιν στοᾶς τὸ συνεχὲς πρὸς τὴν Ἀντωνίαν ἐμπρήσαντες, ἔπειτα ἀπέῤῥηξαν ὅσον πήχεις εἴκοσι, ταῖς ἰδίαις χερσὶν ἀρξάμενοι καίειν τὰ ἅγια. Μετὰ δὲ ἡμέρας δύο, τετάρτῃ καὶ εἰκάδι τοῦ προειρημένου μηνὸς, τὴν πλησίον στοὰν ὑποπιπρῶσι Ῥωμαῖοι, καὶ μέχρι

δυναμένου. Τοῦτο γοῦν παραμύθιον ἦν τοῖς φθειρομένοις, τὸ βλέπειν ὑπὲρ οὗ τις ἠφίει τὴν ψυχὴν ὀδυνώμενον· βοῶν τε γὰρ αὐτοῖς καὶ προπηδῶν, καὶ τοῖς περὶ αὐτὸν ἐκ τῶν ἐνόντων ἐπαμύνειν παρακαλῶν, δῆλος ἦν. Τὰς δὲ φωνὰς ἕκαστος καὶ τὴν διάθεσιν, ὥςπερ τι λαμπρὸν ἀποφέρων ἐντάφιον, εὔθυμος ἀπέθνησκεν. Ἔνιοί γε μὴν, ἐπὶ τὸν τοῖχον τῆς στοᾶς ὄντα πλατὺν ἀναχωρήσαντες, ἐκ μὲν τοῦ πυρὸς διεσώθησαν, ὑπὸ δὲ τῶν Ἰουδαίων περισχεθέντες ἐπιπολὺ μὲν ἀντέσχον διατιτρωσκόμενοι· τέλος δὲ πάντες ἔπεσον.

2. Καὶ τελευταῖόν τις αὐτῶν νεανίας, ὀνόματι Λόγγος, ὅλον ἐπικοσμήσας τὸ πάθος, καὶ κατ' ἄνδρα μνήμης ἀξίων ὄντων πάντων τῶν ἀπολωλότων, ἄριστος φανείς. Ὃν οἱ μὲν Ἰουδαῖοι τῆς τε ἀλκῆς ἀγάμενοι, καὶ ἄλλως ἀνελεῖν θέλοντες, καταβῆναι πρὸς αὐτοὺς ἐπὶ δεξιᾷ παρεκάλουν· ὁ δὲ ἀδελφὸς Κορνήλιος ἐκ θατέρου, μὴ καταισχῦναι τὸ σφέτερον κλέος, καὶ τὴν Ῥωμαίων στρατιάν. Τούτῳ πεισθεὶς, καὶ διαράμενος φανερὸν ἑκατέροις τοῖς τάγμασι τὸ ξίφος, ἑαυτὸν ἀναιρεῖ. Τῶν δὲ τῷ πυρὶ περισχεθέντων, Ἀρτώριός τις πανουργίᾳ διασώζεται. Προςκαλεσάμενος γάρ τινα τῶν συστρατιωτῶν Λούκιον, ᾧ συνεσκήνει, μεγάλῃ τῇ φωνῇ, "Κληρονόμον," ἔφη, "καταλείπω σε τῶν ἐμαυτοῦ κτημάτων, εἰ προςελθών με δέξαιο." Τοῦ δὲ ἑτοίμως προςδραμόντος, ὁ μὲν ἐπ' αὐτὸν κατενεχθεὶς ἔζησεν· ὁ δὲ δεξάμενος ὑπὸ τοῦ βάρους τῷ λιθοστρώτῳ προςαραχθεὶς, παραχρῆμα θνήσκει. Τοῦτο τὸ πάθος πρὸς καιρὸν μὲν Ῥωμαίοις ἐνεποίησεν ἀθυμίαν, πρὸς δὲ τὸ μέλλον ὅμως κατεσκεύασε φυλακτικωτέρους, καὶ πρὸς τὰς Ἰουδαίων ἀπάτας ὠφέλησεν, ἐν αἷς τὰ πολλὰ δι' ἄγνοιαν τῶν τόπων καὶ τὸ ἦθος τῶν ἀνδρῶν ἐβλά-
881 πτοντο. Κατεκάη δὲ ἡ στοὰ μέχρι τοῦ Ἰωάννου πύργου, ὃν ἐκεῖνος ἐν τῷ πρὸς Σίμωνα πολέμῳ κατεσκεύασεν, ὑπὲρ τὰς ἐξαγούσας ὑπὲρ τὸν ξυστὸν πύλας· τὸ δὲ λοιπὸν ἐπιδιεφθαρμένοις ἤδη Ἰουδαίοι

τοῖς ἀναβᾶσιν ἀπέκοψαν. Τῇ δὲ ὑστεραίᾳ καὶ Ῥωμαῖοι τὴν βόρειον στοὰν ἐνέπρησαν μέχρι τῆς ἀνατολικῆς ὅλην, ὧν ἡ συνάπτουσα γωνία τῆς Κεδρῶνος καλουμένης φάραγγος ὑπερδεδόμητο, παρ᾽ ὃ καὶ φοβερὸν ἦν τὸ βάθος. Καὶ τὰ μὲν περὶ τὸ ἱερὸν ἐν τούτοις ἦν.

3. Τῶν δὲ ὑπὸ τοῦ λιμοῦ φθειρομένων κατὰ τὴν πόλιν ἄπειρον μὲν ἔπιπτε τὸ πλῆθος· ἀδιήγητα δὲ συνέβαινε τὰ πάθη. Καθ᾽ ἑκάστην γὰρ οἰκίαν, εἴ που τροφῆς παραφανείη σκιὰ, πόλεμος ἦν, καὶ διὰ χειρῶν ἐχώρουν οἱ φίλτατοι πρὸς ἀλλήλους, ἐξαρπάζοντες τὰ ταλαίπωρα τῆς ψυχῆς ἐφόδια. Πίστις δ᾽ ἀπορίας οὐδὲ τοῖς θνήσκουσιν ἦν· ἀλλὰ καὶ τοὺς ἐκπνέοντας οἱ λησταὶ διηρεύνων, μή τις ὑπὸ κόλπον ἔχων τροφὴν σκήπτοιτο τὸν θάνατον αὑτῷ. Οἱ δὲ ὑπ᾽ ἐνδείας κεχηνότες, ὥςπερ λυσσῶντες κύνες ἐσφάλλοντο, καὶ παρεφέροντο. Ταῖς τε θύραις ἐνσειόμενοι μεθυόντων τρόπον, καὶ ὑπ᾽ ἀμηχανίας εἰς τοὺς αὐτοὺς οἴκους εἰςεπήδων δὶς ἢ τρὶς ὥρᾳ μιᾷ. Πάντα δὲ ὑπ᾽ ὀδόντας ἦγεν ἡ ἀνάγκη, καὶ τὰ μηδὲ τοῖς ῥυπαρωτάτοις τῶν ἀλόγων ζώων πρόσφορα συλλέγοντες ἐσθίειν ὑπέφερον· ζωστήρων γοῦν καὶ ὑποδημάτων τὸ τελευταῖον οὐκ ἀπέσχοντο, καὶ τὰ δέρματα τῶν θυρεῶν ἀποδέροντες ἐμασσῶντο. Τροφὴ δὲ ἦν καὶ χόρτου τισὶ παλαιοῦ σπαράγματα· τὰς γὰρ ἶνας ἔνιοι συλλέγοντες, ἐλάχιστον σταθμὸν ἐπώλουν Ἀττικῶν τεσσάρων. Καὶ τί δεῖ τὴν ἐπ᾽ ἀψύχοις ἀναίδειαν τοῦ λιμοῦ λέγειν; Εἶμι γὰρ αὐτοῦ δηλώσων ἔργον, οἷον μήτε παρ᾽ Ἕλλησι, μήτε παρὰ Βαρβάροις ἱστόρηται, φρικτὸν μὲν εἰπεῖν, ἄπιστον δ᾽ ἀκοῦσαι. Καὶ ἐγὼ δὲ μὴ δόξαιμι τερατεύεσθαι τοῖς αὖθις ἀνθρώποις, καὶ ἂν παρέλιπον τὴν συμφορὰν ἡδέως, εἰ μὴ τῶν κατ᾽ ἐμαυτὸν εἶχον ἀπείρους μάρτυρας. Ἄλλως τε καὶ ψυχρὰν ἂν καταθείμην τῇ πατρίδι χάριν, καθυφέμενος τὸν λόγον οὗ πέπονθε τὰ ἔργα.

4. *Γυνή τις τῶν ὑπὲρ τὸν Ἰορδάνην κατοικούντων, Μαρία τὸ ὄνομα, πατρὸς Ἐλεαζάρου, κώ-*
882 *μης Βηθεζὼβ, σημαίνει δὲ τοῦτο οἶκος ὑσσώπου, διὰ γένος καὶ πλοῦτον ἐπίσημος, μετὰ τοῦ λοιποῦ πλήθους εἰς τὰ Ἱεροσόλυμα καταφυγοῦσα συνεπολιορκεῖτο. Ταύτης τὴν μὲν ἄλλην κτῆσιν οἱ τύραννοι διήρπασαν, ὅσην ἐκ τῆς Περαίας ἀνασκευασαμένη μετήνεγκεν εἰς τὴν πόλιν· τὰ δὲ λείψανα τῶν κειμηλίων, καὶ ἂν εἴ τι τροφῆς ἐπινοηθείη, καθ' ἡμέραν εἰςπηδῶντες ἥρπαζον οἱ δορυφόροι. Δεινὴ δὴ τὸ γύναιον ἀγανάκτησις εἰςῄει, καὶ πολλάκις λοιδοροῦσα καὶ καταρωμένη τοὺς ἅρπαγας ἐφ' ἑαυτὴν ἠρέθιζεν. Ὡς δ' οὔτε παροξυνόμενός τις οὔτ' ἐλεῶν αὐτὴν ἀνῄρει, καὶ τὸ μὲν εὑρεῖν τι σιτίου ἄλλοις ἐκοπία, πανταχόθεν δ' ἄπορον ἦν ἤδη καὶ τὸ εὑρεῖν, ὁ λιμὸς δὲ διὰ σπλάγχνων καὶ μυελῶν ἐχώρει, καὶ τοῦ λιμοῦ μᾶλλον ἐξέκαιον οἱ θυμοὶ, σύμβουλον λαβοῦσα τὴν ὀργὴν μετὰ τῆς ἀνάγκης ἐπὶ τὴν φύσιν ἐχώρει, καὶ τὸ τέκνον, ἦν δ' αὐτῇ παῖς ὑπομάστιος, ἁρπασαμένη, "Βρέφος," εἶπεν, "ἄθλιον, ἐν πολέμῳ καὶ λιμῷ καὶ στάσει, τίνι σε τηρήσω; Τὰ μὲν παρὰ Ῥωμαίοις, δουλεία, καὶ ἂν ζήσωμεν ἐπ' αὐτοῖς· φθάνει δὲ καὶ δουλείαν ὁ λιμὸς, οἱ στασιασταὶ δ' ἀμφοτέρων χαλεπώτεροι. Ἴθι, γενοῦ μοι τροφὴ, καὶ τοῖς στασιασταῖς ἐριννὺς, καὶ τῷ βίῳ μῦθος, ὁ μόνος ἐλλείπων ταῖς Ἰουδαίων συμφοραῖς." Καὶ ταῦθ' ἅμα λέγουσα κτείνει τὸν υἱὸν, ἔπειτ' ὀπτήσασα τὸ μὲν ἥμισυ κατεσθίει, τὸ δὲ λοιπὸν κατακαλύψασα ἐφύλαττεν. Εὐθέως δὲ οἱ στασιασταὶ παρῆσαν, καὶ τῆς ἀθεμίτου κνίσσης σπάσαντες ἠπείλουν, εἰ μὴ δείξειε τὸ παρασκευασθὲν, ἀποσφάξειν αὐτὴν εὐθέως. Ἡ δὲ καὶ μοῖραν αὐτοῖς εἰποῦσα καλὴν τετηρηκέναι, τὰ λείψανα τοῦ τέκνου διεκάλυψε. Τοὺς δὲ εὐθέως φρίκη καὶ φρενῶν ἔκστασις ᾕρει, καὶ παρὰ τὴν ὄψιν ἐπεπήγεσαν. Ἡ δὲ, "Ἐμὸν," ἔφη, "τοῦτο τὸ τέκνον γνήσιον, καὶ τὸ ἔργον ἐμόν. Φάγετε, καὶ*

γὰρ ἐγὼ βέβρωκα. Μὴ γένησθε μήτε μαλακώτεροι
γυναικὸς, μήτε συμπαθέστεροι μητρός. Εἰ δὲ καὶ
ὑμεῖς εὐσεβεῖς, καὶ τὴν ἐμὴν ἀποστρέφεσθε θυσίαν,
ἐγὼ μὲν ἥμισυ βέβρωκα, καὶ τὸ λοιπὸν δ' ἐμοὶ μενέτω." Μετὰ ταῦτα οἱ μὲν τρέμοντες ἐξῄεσαν, πρὸς
ἓν τοῦτο δειλοὶ, καὶ μόλις ταύτης τῆς τροφῆς τῇ
μητρὶ παραχωρήσαντες. Ἀνεπλήσθη δὲ εὐθέως ὅλη
τοῦ μύσους ἡ πόλις, καὶ πρὸ ὀμμάτων ἕκαστος τὸ
πάθος λαμβάνων, ὡς παρ' αὐτῷ καινοτομηθὲν ἔφριττεν. Σπουδὴ δὲ τῶν λιμωττόντων ἐπὶ τὸν 383
θάνατον ἦν, καὶ μακαρισμὸς τῶν φθασάντων, πρὶν
ἀκοῦσαι καὶ θεάσασθαι κακὰ τηλικαῦτα.

5. Ταχέως δὲ καὶ Ῥωμαίοις διηγγέλθη τὸ πάθος. Τῶν δὲ οἱ μὲν ἠπίστουν, οἱ δὲ ᾤκτειραν, τοὺς δὲ πολλοὺς εἰς μῖσος τοῦ ἔθνους σφοδρότερον συνέβη προελθεῖν. Καῖσαρ δ' ἀπελογεῖτο καὶ περὶ τούτου τῷ θεῷ, φάσκων, 'παρὰ μὲν αὐτοῦ Ἰουδαίοις εἰρήνην καὶ αὐτονομίαν προτείνεσθαι, καὶ πάντων ἀμνηστίαν τῶν τετολμημένων. Τοὺς δὲ ἀντὶ μὲν ὁμονοίας στάσιν, ἀντὶ δὲ εἰρήνης πόλεμον, πρὸ κόρου δὲ καὶ εὐθηνίας λιμὸν αἱρουμένους, ἰδίαις δὲ χερσὶν ἀρξαμένους καίειν τὸ συντηρούμενον ὑφ' ἡμῶν ἱερὸν, αὐτοὺς εἶναι καὶ τοιαύτης τροφῆς ἀξίους. Καλύψειν μέντοι τὸ τῆς τεκνοφαγίας μύσος αὐτῷ τῷ τῆς πατρίδος πτώματι, καὶ οὐ καταλείψειν ἐπὶ τῆς οἰκουμένης ἡλίῳ καθορᾶν πόλιν, ἐν ᾗ μητέρες οὕτω τρέφονται. Προσήκειν μέντοι πρὸ μητέρων πατράσι τὴν τοιαύτην τροφὴν, οἳ καὶ μετὰ τηλικαῦτα πάθη μένουσιν ἐν τοῖς ὅπλοις.' Ταῦθ' ἅμα διεξιὼν ἐνενόει καὶ τὴν ἀπόγνωσιν τῶν ἀνδρῶν· οὐ γὰρ ἂν ἔτι σωφρονῆσαι τοὺς πάντα προπεπονθότας, ἐφ' οἷς εἰκὸς ἦν μεταβαλέσθαι, μὴ παθοῦσιν.

CAP. IV. 1. Ἤδη δὲ τῶν δύο ταγμάτων συντετελεκότων τὰ χώματα Λώου μηνὸς ὀγδόῃ, προσάγειν ἐ-

κέλευσε τοὺς κριοὺς κατὰ τὴν ἑσπέριον ἐξέδραν τοῦ ἔσωθεν ἱεροῦ. Πρὸ δὲ τούτων ἓξ ἡμέραις ἀδιαλείπτως ἡ στεῤῥοτάτη πασῶν ἑλέπολις, τύπτουσα τὸν τοῖχον, οὐδὲν ἤνυσεν· ἀλλὰ καὶ ταύτης καὶ τῶν ἄλλων τὸ μέγεθος καὶ ἡ ἁρμονία τῶν λίθων ἦν ἀμείνων. Τῆς δὲ βορείου πύλης ὑπώρυττον ἕτεροι τοὺς θεμελίους, καὶ πολλὰ ταλαιπωρήσαντες τοὺς ἔμπροσθεν λίθους ἐξεκύλισαν. Ἀνείχετο δὲ ὑπὸ τῶν ἐνδοτέρω καὶ διέμενεν ἡ πύλη, μέχρι τὰς διὰ τῶν ὀργάνων καὶ τῶν μοχλῶν ἐπιχειρήσεις ἀπογνόντες, κλίμακας ταῖς στοαῖς προσέφερον. Οἱ δὲ Ἰουδαῖοι κωλῦσαι μὲν οὐκ ἔφθασαν, ἀναβᾶσι δὲ συμπεσόντες ἐμάχοντο· καὶ τοὺς μὲν ἀνωθοῦντες εἰς τὸ ὀπίσω κατεκρήμνιζον, τοὺς δὲ ὑπαντιάζοντες ἀνῄρουν. Πολλοὺς δὲ τῶν κλιμάκων ἀποβαίνοντας, πρὶν φράξασθαι τοῖς θυρεοῖς, παίοντες ταῖς ῥομφαίαις ἔφθανον· ἐνίας δὲ γεμούσας ὁπλιτῶν κλίμακας παρακλίνοντες ἄνωθεν κατέσειον. Ἦν δὲ οὐκ ὀλίγος καὶ αὐτῶν φόνος. Οἱ δ᾽ ἀνενέγκαντες τὰς σημαίας περὶ αὐτῶν ἐπολέμουν, δεινὴν ἡγούμενοι καὶ πρὸς αἰσχύνης τούτων τὴν ἁρπαγήν. Τέλος δὲ καὶ τῶν σημαιῶν οἱ Ἰουδαῖοι κρα-
384 τοῦσι, καὶ τοὺς ἀναβάντας διαφθείρουσιν· οἱ δὲ λοιποὶ πρὸς τὸ τῶν ἀπολωλότων πάθος ὀῤῥωδοῦντες ἀνεχώρουν. Τῶν μὲν οὖν Ῥωμαίων ἄπρακτος οὐδεὶς ἀπέθανε, τῶν δὲ στασιαστῶν οἳ κατὰ τὰς προτέρας μάχας ἠγωνίσαντο γενναίως καὶ τότε, καὶ Ἐλεάζαρος ὁ ἀδελφιδοῦς τοῦ τυράννου Σίμωνος. Ὁ δὲ Τίτος ὡς ἑώρα τὴν ἐπὶ τοῖς ἀλλοτρίοις ἱεροῖς φειδὼ πρὸς βλάβης τοῖς στρατιώταις γινομένην καὶ φόνου, τὰς πύλας προσέταξεν ὑφάπτειν.

2. Ἐν δὲ τούτῳ πρὸς αὐτὸν αὐτομολοῦσιν Ἄνανός τε ὁ ἀπ᾽ Ἀμμαοῦς, τῶν Σίμωνος δορυφόρων ὁ φονικώτατος, καὶ Ἀρχέλαος υἱὸς Μαγαδάτου, συγγνώμην ἐλπίσαντες, ἐπειδὴ κρατούντων Ἰουδαίων ἀπεχώρουν. Τίτος δὲ καὶ τοῦτο πανούργημα προεβάλλετο τῶν ἀνδρῶν, καὶ τὴν ἄλλην περὶ τοὺς Ἰουδαίους

ὠμότητα πεπυσμένος, ὥρμητο κτείνειν ἑκατέρους, ‘ὑπ᾽ ἀνάγκης ἦχθαι, λέγων, αὐτοὺς, οὐκ ἐκ προαιρέσεως παρεῖναι, καὶ σωτηρίας οὐκ ἀξίους εἶναι τοὺς φλεγομένης ἤδη δι᾽ αὐτοὺς τῆς πατρίδος ἐξαλλομένους.’ Ἐκράτει δὲ ὅμως τοῦ θυμοῦ ἡ πίστις, καὶ ἀφίησι τοὺς ἄνδρας· οὐ μὴν ἐν ἴσῃ μοίρᾳ κατέτασσε τοῖς ἄλλοις. Ἤδη δὲ ταῖς πύλαις οἱ στρατιῶται προσῆγον τὸ πῦρ, καὶ περιτηκόμενος ὁ ἄργυρος διεδίδου ταχέως εἰς τὴν ξυλείαν τὰς φλόγας, ἔνθεν ἀθρόως ἐκφερόμεναι τῶν στοῶν ἐπελαμβάνοντο. Τοῖς δὲ Ἰουδαίοις, ὁρῶσι τὸ πῦρ ἐν κύκλῳ, μετὰ τῶν σωμάτων παρείθησαν αἱ ψυχαὶ, καὶ διὰ τὴν κατάπληξιν ἀμύνειν μὲν ἢ σβεννύειν ὥρμησεν οὐδεὶς, αὖοι δὲ ἑστῶτες ἀφεώρων. Οὐ μὴν πρὸς τὸ δαπανώμενον ἀθυμοῦντες, εἰς γοῦν τὸ λοιπὸν ἐσωφρόνουν, ἀλλ᾽ ὡς ἤδη καὶ τοῦ ναοῦ καιομένου τοὺς θυμοὺς ἐπὶ Ῥωμαίους ἔθηγον. Ἐκείνην μὲν οὖν τὴν ἡμέραν καὶ τὴν ἐπιοῦσαν νύκτα τὸ πῦρ ἐπεκράτει· κατὰ μέρος γὰρ οὐχ ὁμοῦ πάντοθεν ἴσχυσαν ὑφάψαι τὰς στοάς.

3. Τῇ δ᾽ ἐπιούσῃ Τίτος μέρει τῆς δυνάμεως σβεννύειν τε καὶ παρὰ τὰς πύλας ὁδοποιεῖν εἰς εὐμαρεστέραν τῶν ταγμάτων ἄνοδον κελεύσας, αὐτὸς συνῆγε τοὺς ἡγεμόνας. Καὶ συνελθόντων ἓξ τῶν κορυφαιοτάτων, Τιβερίου τε Ἀλεξάνδρου τοῦ πάντων τῶν στρατευμάτων ἐπάρχοντος, καὶ Σέξτου Κερεαλίου τὸ πέμπτον ἄγοντος τάγμα, καὶ Λαρκίου Λεπίδου τὸ δέκατον, καὶ Τίτου Φρυγίου τὸ πεντεκαιδέκατον, πρὸς οἷς Φρόντων ἦν Αἰτέρνιος, στρατοπεδάρχης τῶν ἀπ᾽ Ἀλεξανδρείας δύο ταγμάτων, καὶ Μάρκος Ἀντώνιος Ἰουλιανὸς, ὁ τῆς Ἰουδαίας ἐπίτροπος, καὶ μετὰ τούτους ἐπιτρόπων καὶ χιλιαρχῶν ἀθροισθέντων, βουλὴν περὶ τοῦ ναοῦ προετίθει. Τοῖς μὲν οὖν ἐδόκει ‘χρῆσθαι τῷ τοῦ πολέμου νόμῳ· μὴ γὰρ ἄν ποτε Ἰουδαίους παύσασθαι νεωτερίζοντας τοῦ ναοῦ μένοντος, ἐφ᾽ ὃν οἱ πανταχόθεν

συλλέγονται.' Τινὲς δὲ παρῄνουν 'εἰ μὲν καταλίποιεν αὐτὸν οἱ Ἰουδαῖοι, καὶ μηδεὶς ἐπ' αὐτοῦ τὰ ὅπλα θείη, σώζειν· εἰ δὲ πολεμῷεν ἐπιβάντες, καταφλέγειν· φρούριον γὰρ, οὐκέτι ναὸν εἶναι. Καὶ τὸ λοιπὸν ἔσεσθαι τῶν ἀναγκασάντων ἀσέβειαν, οὐκ αὐ-
385 τῶν.' Ὁ δὲ Τίτος, 'οὐδ' ἂν ἐπιβάντες ἐπ' αὐτοῦ πολεμῷεν Ἰουδαῖοι, ἔφη, ἀντὶ τῶν ἀνδρῶν ἀμύνεσθαι τὰ ἄψυχα, οὐδὲ καταφλέξειν ποτὲ τηλικοῦτον ἔργον. Ῥωμαίων γὰρ ἔσεσθαι τὴν βλάβην, ὥσπερ καὶ κόσμον τῆς ἡγεμονίας αὐτοῦ μένοντος.' Θαῤῥοῦντες δ' ἤδη προσετίθεντο τῇ γνώμῃ Φρόντων τε καὶ Ἀλέξανδρος καὶ Κερεάλιος. Τότε μὲν οὖν διαλύει τὸ συνέδριον, καὶ τὰς ἄλλας δυνάμεις διαναπαῦσαι κελεύσας τοῖς ἡγεμόσιν, ὅπως ἐῤῥωμενέστερον ἐν τῇ παρατάξει χρήσαιντο, τοῖς ἀπὸ τῶν σπειρῶν ἐπιλέκτοις ὁδοποιεῖν διὰ τῶν ἐρειπίων προςέταξεν, καὶ τὸ πῦρ σβεννύειν.

4. Κατ' ἐκείνην μὲν δὴ τὴν ἡμέραν Ἰουδαίων κάματός τε καὶ κατάπληξις ἐκράτησε τὰς ὁρμάς· τῇ δ' ἐπιούσῃ συλλεξάμενοί τε τὴν ἰσχὺν, καὶ ἀναθαρσήσαντες, ἐπεκθέουσι διὰ τῆς ἀνατολικῆς πύλης· τοῖς φύλαξι τοῦ ἔξωθεν ἱεροῦ περὶ δευτέραν ὥραν. Οἱ δὲ καρτερῶς μὲν ἐδέξαντο αὐτῶν τὴν ἐμβολὴν, καὶ φραξάμενοι τοῖς θυρεοῖς κατὰ μέτωπον ὥσπερ τεῖχος ἐπύκνωσαν τὴν φάλαγγα. Δῆλοί τε ἦσαν οὐκ ἐπὶ πολὺ συμμένοντες, πλήθει τε τῶν ἐκτρεχόντων καὶ θυμοῖς ἡττώμενοι. Φθάσας δὲ τῆς παρατάξεως τὴν ῥοπὴν Καῖσαρ, καθεώρα γὰρ ἀπὸ τῆς Ἀντωνίας, ἐπήμυνε μετὰ τῶν ἐπιλέκτων ἱππέων. Ἰουδαῖοι δὲ τὴν ἔφοδον οὐχ ὑπέμειναν, ἀλλὰ τῶν πρώτων πεσόντων, ἐτράπησαν οἱ πολλοί. Καὶ ὑποχωροῦσι μὲν τοῖς Ῥωμαίοις ἐπιστρεφόμενοι προςέκειντο. Μεταβαλλομένων δ' ἀνέφευγον πάλιν, ἕως περὶ πέμπτην τῆς ἡμέρας ὥραν οἱ μὲν βιασθέντες εἰς τὸ ἔνδον συνεκλείσθησαν ἱερόν.

5. Τίτος δ' ἀνεχώρησεν εἰς τὴν Ἀντωνίαν, διεγνωκὼς τῇ ἐπιούσῃ ἡμέρᾳ ὑπὸ τὴν ἕω μετὰ πάσης ἐμβαλεῖν τῆς δυνάμεως καὶ τὸν ναὸν περικατασχεῖν. Τοῦ δὲ ἄρα κατεψήφιστο μὲν τὸ πῦρ ὁ θεὸς πάλαι· παρῆν δὲ ἡ εἱμαρμένη χρόνων περίοδος, ἡμέρα δεκάτη Λώου μηνὸς, καθ' ἣν καὶ τὸ πρότερον ὑπὸ τοῦ τῶν Βαβυλωνίων βασιλέως ἐνεπρήσθη. Λαμβάνουσι δὲ αἱ φλόγες ἐκ τῶν οἰκείων τὴν ἀρχὴν καὶ τὴν αἰτίαν. Ὑποχωρήσαντος γὰρ τοῦ Τίτου, πρὸς ὀλίγον λωφήσαντες οἱ στασιασταὶ, πάλιν τοῖς Ῥωμαίοις ἐπιτίθενται, καὶ τῶν τοῦ ναοῦ φρουρῶν γίνεται συμβολὴ πρὸς τοὺς σβεννύντας τὸ πῦρ τοῦ ἔξωθεν ἱεροῦ, οἳ τρεψάμενοι τοὺς Ἰουδαίους μέχρι τοῦ ναοῦ παρῆλθον. Ἔνθα δή τῶν στρατιωτῶν τις, οὔτε παράγγελμα περιμείνας, οὔτε ἐπὶ τηλικούτῳ δείσας ἐγχειρήματι, δαιμονίῳ ὁρμῇ ὕλης, τινι χρώμενος ἁρπάζει μὲν ἐκ τῆς φλεγομένης ἀνακουφισθεὶς δὲ ὑπὸ στρατιώτου, τὸ πῦρ ἐνίησι θυρίδι χρυσῇ, καθ' ἣν εἰς τοὺς περὶ τὸν ναὸν οἴκους εἰςιτὸν ἦν ἐκ τοῦ βορείου κλίματος. Αἰρομένης δὲ τῆς φλογὸς Ἰουδαίων μὲν ἐγείρεται κραυγὴ τοῦ πάθους ἀξία, καὶ πρὸς τὴν ἄμυναν συνέθεον, οὔτε τοῦ ζῆν ἔτι φειδὼ λαμβάνοντες, οὔτε ταμιευόμενοι τὴν ἰσχὺν, δι' ὃ καὶ φυλακτικοὶ πρότερον ἦσαν οἰχομένου.

6. Δραμὼν δέ τις ἀγγέλλει Τίτῳ· καὶ ἐκεῖνος — ἔτυχε δὲ κατὰ σκηνὴν ἀναπαυόμενος ἐκ τῆς μάχης — ὡς εἶχεν ἀναπηδήσας, ἔθεε πρὸς τὸν ναὸν εἶρξων τὸ πῦρ. Κατόπιν δὲ οἵ τε ἡγεμόνες εἵποντο πάντες, καὶ πτοηθέντα τούτοις ἠκολούθει τὰ τά- 396
γματα. Βοὴ δ' ἦν καὶ θόρυβος, ἅτε τηλικαύτης δυνάμεως ἀτάκτως κεκινημένης. Ὁ μὲν οὖν Καῖσαρ τῇ τε βοῇ καὶ τῇ δεξιᾷ διεσήμαινε τοῖς μαχομένοις τὸ πῦρ σβεννύειν· οὔτε δὲ βοῶντος ἤκουον, μείζονι κραυγῇ τὰς ἀκοὰς προκατειλημμένοι, καὶ τῷ νεύματι τῆς χειρὸς οὐ προσεῖχον, οἱ μὲν τῷ πολεμεῖν οἱ δὲ ὀργῇ περισπώμενοι. Τῶν δὲ ταγμάτων εἰςθε-

όντων οὔτε παραίνεσις οὔτε ἀπειλὴ κατεῖχε τὰς ὁρμάς, ἀλλὰ θυμὸς ἁπάντων ἐστρατήγει· καὶ περὶ τὰς εἰςόδους συνωθούμενοι, πολλοὶ μὲν ὑπ' ἀλλήλων κατεπατοῦντο, πολλοὶ δὲ, θερμοῖς ἔτι καὶ τυφομένοις τοῖς ἐρειπίοις τῶν στοῶν ἐμπίπτοντες, ἡττωμένων συμφοραῖς ἐχρῶντο. Πλησίον δὲ τοῦ ναοῦ γινόμενοι, τῶν μὲν τοῦ Καίσαρος παραγγελμάτων προςεποιοῦντο μηδὲ κατακούειν, τοῖς πρὸ αὐτῶν δὲ τὸ πῦρ ἐνιέναι παρεκελεύοντο. Τῶν δὲ στασιαστῶν ἀμηχανία μὲν ἦν ἤδη τοῦ βοηθεῖν· φόνος δὲ πανταχοῦ καὶ τροπή. Τὸ δὲ πλέον ἀπὸ τοῦ δήμου, λαὸς ἀσθενὴς καὶ ἄνοπλος, ὅπου καταληφθείη τις ἀπεσφάττετο. Καὶ περὶ μὲν τὸν βωμὸν πλῆθος ἐσωρεύετο νεκρῶν, κατὰ δὲ τῶν τοῦ βωμοῦ βάθρων αἷμά τε ἔῤῥει πολὺ, καὶ τὰ τῶν ἄνω φονευομένων σώματα κατωλίσθανε.

7. Καῖσαρ δὲ ὡς οὔτε τὰς ὁρμὰς ἐνθουσιώντων τῶν στρατιωτῶν κατασχεῖν οἷός τε ἦν, καὶ τὸ πῦρ ἐπεκράτει, παρελθὼν μετὰ τῶν ἡγεμόνων ἔνδον ἐθεάσατο τοῦ ναοῦ τὸ ἅγιον καὶ τὰ ἐν αὐτῷ, πολὺ μὲν τῆς παρὰ τοῖς ἀλλοφύλοις φήμης ἀμείνω, τοῦ δὲ κόμπου καὶ τῆς παρὰ τοῖς οἰκείοις δόξης οὐκ ἐλάττω. Τῆς φλογὸς δ' οὐδέπω διϊκνουμένης οὐδαμόθεν εἴσω, τοὺς δὲ περὶ τὸν ναὸν οἴκους νεμομένης, νομίσας, ὅπερ ἦν, ἔτι σώζεσθαι τὸ ἔργον δύνασθαι, προπηδᾷ, καὶ αὐτός τε παρακαλεῖν τοὺς στρατιώτας ἐπειρᾶτο τὸ πῦρ σβεννύειν, καὶ Λιβεράλιον ἑκατοντάρχην τῶν περὶ αὐτὸν λογχοφόρων ξύλοις παίοντα τοὺς ἀπειθοῦντας ἐκέλευσεν εἴργειν. Τῶν δὲ καὶ τὴν πρὸς Καίσαρα αἰδῶ, καὶ τὸν ἀπὸ τοῦ κωλύοντος φόβον ἐνίκων οἱ θυμοὶ, καὶ τὸ πρὸς Ἰουδαίους μῖσος, καὶ πολεμική τις ὁρμὴ λαβροτέρα. Τοὺς δὲ πολλοὺς ἐνῆγεν ἁρπαγῆς ἐλπὶς, δόξαν τε ἔχοντας, ὡς τὰ ἔνδον ἅπαντα χρημάτων μεστὰ εἴη, καὶ τὰ πέριξ ὁρῶντας χρυσοῦ πεποιημένα. Φθάνει δέ τις καὶ τῶν εἴσω παρεληλυθότων, ἐκπηδήσαντος τοῦ Καίσαρος πρὸς ἐποχὴν τῶν στρατιωτῶν, πῦρ εἰς τοὺς στροφέας ἐμβαλὼν

τῆς πύλης ἐν σκότῳ, ἐξαπίνης τ᾽ ἔνδοθεν ἐκφανείσης φλογὸς, οἵ τε ἡγεμόνες μετὰ τοῦ Καίσαρος ἀνεχώρουν, καὶ τοὺς ἔξωθεν οὐδεὶς ὑφάπτειν ἐκώλυεν. Ὁ μὲν οὖν ναὸς οὕτως, ἄκοντος Καίσαρος, ἐμπιπρᾶται.

8. Πολλὰ δ᾽ ἄν τις ἐπολοφυράμενος ἔργῳ, πάντων ὧν ὄψει καὶ ἀκοῇ παρειλήφαμεν θαυμασιωτάτῳ, κατασκευῆς τε ἕνεκα καὶ μεγέθους, ἔτι τε τῆς καθ᾽ ἕκαστον πολυτελείας, καὶ τῆς περὶ τὰ ἅγια δόξης, μεγίστην λάβοι παραμυθίαν τὴν εἱμαρμένην, ἄφυκτον οὖσαν, ὥςπερ ἐμψύχοις, οὕτω καὶ ἔργοις καὶ τόποις. Θαυμάσαι δ᾽ ἄν τις ἐν αὐτῇ τῆς περιόδου τὴν ἀκρίβειαν. Καὶ μῆνα γοῦν, ὡς ἔφην, καὶ ἡμέραν ἐπετήρησε τὴν αὐτὴν, ἐν ᾗ πρότερον ὑπὸ Βα- 387
βυλωνίων ὁ ναὸς ἐνεπρήσθη. Καὶ ἀπὸ μὲν τῆς πρώτης κτίσεως, ἣν κατεβάλετο Σολομὼν ὁ βασιλεὺς, μέχρι τῆς νῦν ἀναιρέσεως, ἣ γέγονεν ἔτει δευτέρῳ τῆς Οὐεσπασιανοῦ ἡγεμονίας, ἔτη συνάγεται χίλια ἑκατὸν τριάκοντα, πρὸς δὲ μῆνες ἑπτὰ καὶ πεντεκαίδεκα ἡμέραι. Ἀπὸ δὲ τῆς ὕστερον, ἣν ἔτει δευτέρῳ Κύρου βασιλεύοντος ἐποιήσατο Ἀγγαῖος, ἔτη μέχρι τῆς ὑπὸ Οὐεσπασιανοῦ ἁλώσεως, τριάκοντα ἐννέα πρὸς ἑξακοσίοις, καὶ ἡμέραι τεσσαράκοντα πέντε.

CAP. V. 1. Καιομένου δὲ τοῦ ναοῦ, τῶν μὲν προςπιπτόντων ἦν ἁρπαγὴ, φόνος δὲ τῶν καταλαμβανομένων μυρίος. Οὔτε δὲ ἡλικίας ἦν ἔλεος, οὔτ᾽ ἐντροπὴ σεμνότητος· ἀλλὰ καὶ παιδία καὶ γέροντες, καὶ βέβηλοι καὶ ἱερεῖς ὁμοίως ἀνῃροῦντο, καὶ πᾶν γένος ἐπεξῄει περισχὼν ὁ πόλεμος, ὁμοῦ τούς τε ἱκετεύοντας καὶ ἀμυνομένους. Συνήχει δὲ ἡ φλὸξ ἐπὶ πλεῖστον ἐκφερομένη τοῖς τῶν πιπτόντων στεναγμοῖς· καὶ διὰ μὲν τὸ ὕψος τοῦ λόφου, καὶ τὸ τοῦ φλεγομένου μέγεθος ἔργου, πᾶσαν ἄν τις ἔδοξε καίεσθαι τὴν πόλιν. Τῆς δὲ βοῆς ἐκείνης οὐδὲν ἐπινοηθῆναι δύναιτ᾽ ἂν ἢ μεῖζον ἢ φοβερώτερον· τῶν τε γὰρ Ῥω-

μαϊκῶν ταγμάτων ἀλαλαγμὸς ἦν συμφερομένων, καὶ
τῶν στασιαστῶν πυρὶ καὶ σιδήρῳ κεκυκλωμένων κραυ-
γὴ, τοῦ τε ἀπολειφθέντος ἄνω λαοῦ τροπή τε μετ'
ἐκπλήξεως εἰς τοὺς πολεμίους, καὶ πρὸς τὸ πάθος
οἰμωγαί. Συνεβόα δὲ τοῖς ἐπὶ τοῦ λόφου τὸ κατὰ
τὴν πόλιν πλῆθος· ἤδη δὲ πολλοὶ τῷ λιμῷ μαραινό-
μενοι καὶ μεμυκότες, ὡς εἶδον τὸ τοῦ ναοῦ πῦρ, εἰς
ὀδυρμοὺς πάλιν καὶ κραυγὴν εὐτόνησαν. Συνήχει δὲ
ἥ τε Περαία, καὶ τὰ πέριξ ὄρη, βαρυτέραν ποιοῦν-
τα τὴν ὁρμήν. Ἦν δὲ τοῦ θορύβου τὰ πάθη φοβε-
ρώτερα. Τὸν μέν γε τοῦ ἱεροῦ λόφον ἐκ ῥιζῶν ἄν
τις ἔδοξε βράττεσθαι, πάντοθεν τοῦ πυρὸς καταγέ-
μοντα· δαψιλέστερον δὲ τὸ αἷμα τοῦ πυρὸς εἶναι,
καὶ τῶν φονευόντων πλείους τοὺς φονευομένους· οὐ-
δαμοῦ γὰρ ἡ γῆ διεφαίνετο ἐκ τῶν νεκρῶν, ἀλλὰ σω-
ροῖς ἐπεμβαίνοντες οἱ στρατιῶται σωμάτων ἐπὶ τοὺς
διαφεύγοντας ἔθεον. Τὸ μὲν οὖν ληστρικὸν πλῆθος
ὠσάμενοι τοὺς Ῥωμαίους, μόλις εἰς τὸ ἔξω διεκπί-
πτουσιν ἱερὸν, καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν πόλιν. Τοῦ δη-
μοτικοῦ δὲ τὸ λειφθὲν ἐπὶ τὴν ἔξω στοὰν κατέφυγε.
Τῶν δὲ ἱερέων τινὲς τὸ μὲν πρῶτον ἀπὸ τοῦ ναοῦ
τούς τε ὀβελοὺς, καὶ τὰς ἕδρας αὐτῶν μολίβδου πε-
ποιημένας ἀνασπῶντες, εἰς τοὺς Ῥωμαίους ἠφίεσαν.
Αὖθις δὲ ὡς οὔτ' ἤνυόν τι, καὶ τὸ πῦρ ἐπ' αὐτοὺς
ἀνεῤῥήγνυτο, ἐπὶ τὸν τοῖχον ἀναχωρήσαντες, ὄντα
388 ὀκτάπηχυν τὸ εὖρος, ἔμενον. Δύο γε μὴν τῶν ἐ-
πισήμων, παρὸν σωθῆναι πρὸς Ῥωμαίους μεταστᾶ-
σιν, ἢ διακαρτερεῖν πρὸς τὴν μετὰ τῶν ἄλλων τύ-
χην, ἑαυτοὺς ἔῤῥιψαν εἰς τὸ πῦρ, καὶ τῷ ναῷ συγ-
κατεφλέγησαν, Μήϊρός τε υἱὸς Βελγᾶ, καὶ Ἰώσηπος
Δαλαίου.

2. Ῥωμαῖοι δὲ, μάταιον τὴν ἐπὶ τοῖς πέριξ
φειδὼ κρίναντες, τοῦ ναοῦ φλεγομένου, πάντα συν-
επίπρασαν, τά τε λείψανα τῶν στοῶν, καὶ τὰς πύ-
λας, πλὴν δύο, τῆς μὲν ἐκ τῶν ἀνατολικῶν, τῆς δὲ
ἐκ μεσημβρίας, καὶ ταύτας ὕστερον κατέσκαψαν.

Ἔκαιον δὲ καὶ τὰ γαζοφυλάκια, ἐν οἷς ἄπειρον μὲν χρημάτων πλῆθος, ἄπειροι δὲ ἐσθῆτες, καὶ ἄλλα κειμήλια, συνελόντι δ᾽ εἰπεῖν, πᾶς ὁ Ἰουδαίων σεσώρευτο πλοῦτος, ἀνασκευασαμένων ἐκεῖ τοὺς οἴκους τῶν εὐπόρων. Ἧκον δὲ καὶ ἐπὶ τὴν λοιπὴν στοὰν τοῦ ἔξωθεν ἱεροῦ· καταφεύγει δ᾽ ἐπ᾽ αὐτὴν ἀπὸ τοῦ δήμου γύναια καὶ παιδία, καὶ σύμμικτος ὄχλος πλεῖστος εἰς ἑξακισχιλίους. Πρὶν δὲ Καίσαρα κρῖναί τι περὶ αὐτῶν ἢ κελεῦσαι τοὺς ἡγεμόνας, φερόμενοι τοῖς θυμοῖς οἱ στρατιῶται, τὴν στοὰν ὑφάπτουσι. Καὶ συνέβη τοὺς μὲν ῥιπτοῦντας αὐτοὺς ἐκ τῆς φλογὸς διαφθαρῆναι, τοὺς δ᾽ ἐν αὐτῇ. Περιεσώθη δ᾽ ἐκ τοσούτων οὐδείς. Τούτοις αἴτιος τῆς ἀπωλείας ψευδοπροφήτης τις κατέστη, κατ᾽ ἐκείνην κηρύξας τὴν ἡμέραν τοῖς ἐπὶ τῆς πόλεως, ὡς ‘ὁ θεὸς ἐπὶ τὸ ἱερὸν ἀναβῆναι κελεύει, δεξομένους τὰ σημεῖα τῆς σωτηρίας.’ Πολλοὶ δὲ ἦσαν ἐγκάθετοι παρὰ τῶν τυράννων τότε πρὸς τὸν δῆμον προφῆται, προσμένειν τὴν ἀπὸ τοῦ θεοῦ βοήθειαν καταγγέλλοντες, ὡς ἧττον αὐτομολοῖεν, καὶ τοὺς ἐπάνω δέους καὶ φυλακῆς γινομένους ἐλπὶς παρακρατοίη. Πείθεται δὲ ταχέως ἄνθρωπος ἐν συμφοραῖς· ὅταν δὲ δὴ καὶ τῶν κατεχόντων δεινῶν ἀπαλλαγὴν ὁ ἐξαπατῶν ὑπογράφῃ, τόθ᾽ ὁ πάσχων ὅλος γίνεται τῆς ἐλπίδος.

3. Τὸν γοῦν ἄθλιον δῆμον οἱ μὲν ἀπατεῶνες, καὶ καταψευδόμενοι τοῦ θεοῦ τηνικαῦτα παρέπειθον· τοῖς δὲ ἐναργέσι, καὶ προσημαίνουσι τὴν μέλλουσαν ἐρημίαν τέρασιν οὔτε προσεῖχον οὔτε ἐπίστευον, ἀλλ᾽ ὡς ἐμβεβροντημένοι, καὶ μήτ᾽ ὄμματα μήτε ψυχὴν ἔχοντες τῶν τοῦ θεοῦ κηρυγμάτων παρήκουσαν. Τοῦτο μὲν ὅτε ὑπὲρ τὴν πόλιν ἄστρον ἔστη ῥομφαίᾳ παραπλήσιον, καὶ παρατείνας ἐπ᾽ ἐνιαυτὸν κομήτης. Τοῦτο δὲ ἡνίκα πρὸ τῆς ἀποστάσεως καὶ τοῦ πρὸς τὸν πόλεμον κινήματος, ἀθροιζομένου τοῦ λαοῦ πρὸς τὴν τῶν Ἀζύμων ἑορτήν, ὀγδόη δ᾽ ἦν Ξανθικοῦ μηνός, κατὰ νυκτὸς ἐννάτην ὥραν, τοσοῦ-

τόν φῶς περιέλαμψε τὸν βωμὸν καὶ τὸν ναὸν, ὡς δοκεῖν ἡμέραν εἶναι λαμπρὰν, καὶ τοῦτο παρέτεινεν ἐφ' ἡμίσειαν ὥραν, ὃ τοῖς μὲν ἀπείροις ἀγαθὸν ἐδόκει· τοῖς δ' ἱερογραμματεῦσι, πρὸς τῶν ἀποβεβηκότων εὐθέως ἐκρίθη. Καὶ κατὰ τὴν αὐτὴν ἑορτὴν
389 βοῦς μὲν, ἀχθεῖσα ὑπὸ τοῦ ἀρχιερέως πρὸς τὴν θυσίαν, ἔτεκεν ἄρνα ἐν τῷ ἱερῷ μέσῳ. Ἡ δὲ ἀνατολικὴ πύλη τοῦ ἐνδοτέρου, χαλκῆ μὲν οὖσα καὶ στιβαρωτάτη, κλειομένη δὲ περὶ δείλην μόλις ὑπ' ἀνδρῶν εἴκοσι, καὶ μοχλοῖς μὲν ἐπερειδομένη σιδηροδέτοις, καταπῆγας δ' ἔχουσα βαθυτάτους, εἰς τὸν οὐδὸν ὄντα διηνεκοῦς λίθου καθιεμένους, ὤφθη κατὰ νυκτὸς ὥραν ἕκτην αὐτομάτως ἠνεῳγμένη. Δραμόντες δὲ οἱ τοῦ ἱεροῦ φύλακες, ἤγγειλαν τῷ στρατηγῷ. Καὶ ἐκεῖνος ἀναβὰς, μόλις αὐτὴν ἴσχυσε κλεῖσαι. Πάλιν τοῦτο τοῖς μὲν ἰδιώταις κάλλιστον ἐδόκει τέρας· ἀνοῖξαι γὰρ τὸν θεὸν αὐτοῖς τὴν τῶν ἀγαθῶν πύλην. Οἱ λόγιοι δὲ λυομένην αὐτομάτως τοῦ ναοῦ τὴν ἀσφάλειαν ἐνενόουν, καὶ πολεμίοις δῶρον ἀνοίγεσθαι τὴν πύλην, δηλωτικόν τ' ἐρημίας ἀπέφαινον ἐν ἑαυτοῖς τὸ σημεῖον. Μετὰ δὲ τὴν ἑορτὴν ἡμέραις ὕστερον οὐ πολλαῖς, μιᾷ καὶ εἰκάδι Ἀρτεμισίου μηνὸς, φάσμα τι δαιμόνιον ὤφθη μεῖζον πίστεως. Τερατεία δ' ἂν ἔδοξεν οἶμαι τὸ ῥηθησόμενον, εἰ μὴ καὶ παρὰ τοῖς θεασαμένοις ἱστόρητο, καὶ τὰ ἐπακολουθήσαντα πάθη τῶν σημείων ἦν ἄξια. Πρὸ γὰρ ἡλίου δύσεως ὤφθη μετέωρα περὶ πᾶσαν τὴν χώραν ἅρματα καὶ φάλαγγες ἔνοπλοι διάττουσαι τῶν νεφῶν, καὶ κυκλούμεναι τὰς πόλεις. Κατὰ δὲ τὴν ἑορτὴν, ἣ Πεντηκοστὴ καλεῖται, νύκτωρ οἱ ἱερεῖς παρελθόντες εἰς τὸ ἔνδον ἱερὸν, ὥσπερ αὐτοῖς ἔθος ἦν πρὸς τὰς λειτουργίας, πρῶτον μὲν κινήσεως ἀντιλαβέσθαι ἔφασαν καὶ κτύπου, μετὰ δὲ ταῦτα καὶ φωνῆς ἀθρόας, "Μεταβαίνωμεν ἐντεῦθεν!" Τὸ δὲ τούτων φοβερώτερον· Ἰησοῦς γάρ τις υἱὸς Ἀνάνου τῶν ἰδιωτῶν ἄγροικος, πρὸ τεσσάρων

ἐτῶν τοῦ πολέμου, τὰ μάλιστα τῆς πόλεως εἰρηνευ-
σμένης καὶ εὐθηνούσης, ἐλθὼν εἰς τὴν ἑορτὴν, ἐν ᾗ
σκηνοποιεῖσθαι πάντας ἔθος τῷ θεῷ, κατὰ τὸ ἱε-
ρὸν ἐξαπίνης ἀναβοᾶν ἤρξατο, "Φωνὴ ἀπ' ἀνατολῆς,
φωνὴ ἀπὸ δύσεως, φωνὴ ἀπὸ τῶν τεσσάρων ἀνέμων,
φωνὴ ἐπὶ Ἱεροσόλυμα καὶ τὸν ναὸν, φωνὴ ἐπὶ νυμ-
φίους καὶ νύμφας, φωνὴ ἐπὶ τὸν λαὸν πάντα!"
Τοῦτο μεθ' ἡμέραν καὶ νύκτωρ, κατὰ πάντας τοὺς
στενωποὺς περιῄει κεκραγώς. Τῶν δ' ἐπισήμων τι-
νὲς δημοτῶν, ἀγανακτήσαντες πρὸς τὸ κακόφημον,
συλλαμβάνουσι τὸν ἄνθρωπον, καὶ πολλαῖς αἰκίζον- 390
ται πληγαῖς. Ὁ δὲ οὔθ' ὑπὲρ ἑαυτοῦ φθεγξάμενος,
οὔτ' ἰδίᾳ πρὸς τοὺς παίοντας, ἃς καὶ πρότερον φω-
νὰς βοῶν διετέλει. Νομίσαντες δὲ οἱ ἄρχοντες, ὅπερ
ἦν, δαιμονιώτερον εἶναι τὸ κίνημα τοῦ ἀνδρὸς, ἀνά-
γουσιν αὐτὸν ἐπὶ τὸν παρὰ Ῥωμαίοις ἔπαρχον, ἔν-
θα μάστιξι μέχρις ὀστέων ξαινόμενος οὔθ' ἱκέτευσεν,
οὔτ' ἐδάκρυσεν· ἀλλ' ὡς ἐνῆν μάλιστα τὴν φωνὴν
ὀλοφυρτικῶς παρεγκλίνων, πρὸς ἑκάστην ἀπεκρίνατο
πληγὴν, "Αἲ αἲ Ἱεροσολύμοις!" Τοῦ δὲ Ἀλβίνου
διερωτῶντος, οὗτος γὰρ ἔπαρχος ἦν, 'τίς εἴη, καὶ
πόθεν, καὶ διὰ τί ταῦτα φθέγγοιτο;' πρὸς ταῦτα
μὲν οὐδ' ὁτιοῦν ἀπεκρίνατο· τὸν δ' ἐπὶ τῇ πόλει θρῆ-
νον εἴρων οὐ διέλειπε, μέχρι καταγνοὺς μανίαν ὁ
Ἀλβῖνος ἀπέλυσεν αὐτόν. Ὁ δὲ τὸν μέχρι τοῦ πο-
λέμου χρόνον οὔτε προςῄει τινὶ τῶν πολιτῶν, οὔτ'
ὤφθη λαλῶν, ἀλλὰ καθ' ἡμέραν ὥςπερ εὐχὴν μεμε-
λετηκὼς, "Αἲ αἲ Ἱεροσολύμοις!" ἐθρήνει. Οὔτε
δέ τινι τῶν τυπτόντων αὐτὸν ὁσημέραι κατηρᾶτο,
οὔτε τοὺς τροφῆς μεταδιδόντας εὐλόγει· μία δὲ πρὸς
πάντας ἦν ἡ σκυθρωπὴ κληδὼν ἀπόκρισις. Μάλι-
στα δ' ἐν ταῖς ἑορταῖς ἐκεκράγει, καὶ τοῦτ' ἐφ' ἑπτὰ
ἔτη, καὶ μῆνας πέντε εἴρων, οὔτ' ἠμβλύνθη τὴν φω-
νὴν, οὔτε ἔκαμεν, μέχρις οὗ κατὰ τὴν πολιορκίαν
ἔργῳ τοὺς κληδόνας ἰδὼν ἀνεπαύσατο· περιϊὼν γὰρ
ἐπὶ τοῦ τείχους "Αἲ αἲ!" πάλιν τῇ πόλει καὶ τῷ

λαῷ καὶ τῷ ναῷ διαπρύσιον ἐβόα. Ὡς δὲ τελευταῖον προςέθηκεν "Αἲ αἲ δὲ καὶ ἐμοί!" λίθος ἐκ τοῦ πετροβόλου σχασθεὶς, καὶ πλήξας αὐτὸν παραχρῆμα κτείνει· φθεγγόμενος δ' ἔτι τὰς κληδόνας ἐκείνας τὴν ψυχὴν ἀφῆκεν.

4. Ταῦτά τις ἐννοῶν εὑρήσει τὸν μὲν θεὸν ἀνθρώπων κηδόμενον, καὶ παντοίως προσημαίνοντα τῷ σφετέρῳ γένει τὰ σωτήρια· τοὺς δ' ὑπ' ἀνοίας καὶ κακῶν αὐθαιρέτων ἀπολλυμένους. Ὅπου γε Ἰουδαῖοι καὶ τὸ ἱερὸν μετὰ τὴν καθαίρεσιν τῆς Ἀντωνίας τετράγωνον ἐποιήσαντο, ἀναγεγραμμένον ἐν τοῖς λογίοις ἔχοντες, 'ἁλώσεσθαι τὴν πόλιν καὶ τὸν ναὸν, ἐπειδὰν τὸ ἱερὸν γένηται τετράγωνον.' Τὸ δὲ ἐπᾶραν αὐτοὺς μάλιστα πρὸς τὸν πόλεμον, ἦν χρησμὸς ἀμφίβολος ὁμοίως ἐν τοῖς ἱεροῖς εὑρημένος γράμμασιν, ὡς 'κατὰ τὸν καιρὸν ἐκεῖνον ἀπὸ τῆς χώρας τις αὐτῶν ἄρξει τῆς οἰκουμένης.' Τοῦτο οἱ μὲν ὡς οἰκεῖον ἐξέλαβον, καὶ πολλοὶ τῶν σοφῶν ἐπλανήθησαν περὶ τὴν κρίσιν. Ἐδήλου δ' ἄρα περὶ τὴν Οὐεσπασιανοῦ τὸ λόγιον ἡγεμονίαν, ἀποδειχθέντος ἐπὶ Ἰουδαίας αὐτοκράτορος. Ἀλλὰ γὰρ οὐ δυνατὸν ἀνθρώποις τὸ χρεὼν διαφυγεῖν, οὐδὲ προορωμένοις. Οἱ δὲ καὶ τῶν σημείων, ἃ μὲν ἔκριναν πρὸς ἡδονὴν,
391 ἃ δὲ ἐξουθένισαν, μέχρις οὗ τῇ τε ἁλώσει τῆς πατρίδος, καὶ τῷ σφῶν αὐτῶν ὀλέθρῳ διηλέγχθησαν τὴν ἄνοιαν.

CAP. VI. 1. Ῥωμαῖοι δὲ, τῶν μὲν στασιαστῶν καταπεφευγότων εἰς τὴν πόλιν, καιομένου δὲ αὐτοῦ τε τοῦ ναοῦ, καὶ τῶν πέριξ ἁπάντων, κομίσαντες τὰς σημαίας εἰς τὸ ἱερὸν, καὶ θέμενοι τῆς ἀνατολικῆς πύλης ἄντικρυς, ἔθυσάν τε αὐταῖς αὐτόθι, καὶ τὸν Τίτον μετὰ μεγίστων εὐφημιῶν ἀπέφηναν αὐτοκράτορα. Ταῖς δὲ ἁρπαγαῖς οὕτως ἐνεπλήσθησαν οἱ στρατιῶται πάντες, ὥστε κατὰ τὴν Συρίαν πρὸς ἡ-

μισυ τῆς πάλαι τιμῆς τὸν σταθμὸν τοῦ χρυσίου πιπράσκεσθαι. Τῶν δὲ ἀνὰ τὸν τοῖχον τοῦ ναοῦ ἱερέων διακαρτερούντων, παῖς διψήσας ἱκέτευε τοὺς φύλακας τῶν Ῥωμαίων δοῦναι δεξιὰν αὐτῷ, καὶ τὸ δίψος ἐξωμολογεῖτο. Τῶν δὲ τῆς ἡλικίας καὶ τῆς ἀνάγκης οἶκτον λαβόντων καὶ δόντων δεξιὰς, καταβὰς αὐτός τε πίνει, καὶ ὃ φέρων ἧκεν ἀγγεῖον πλήσας ὕδατος ᾤχετο φεύγων πρὸς τοὺς σφετέρους. Τῶν δὲ φυλάκων καταλαβεῖν μὲν οὐδεὶς ἴσχυσε, πρὸς δὲ τὴν ἀπιστίαν ἐβλασφήμουν. Καὶ ἐκεῖνος ‘οὐδὲν, ἔφη, παραβεβηκέναι τῶν συνθηκῶν· λαβεῖν γὰρ δεξιὰν οὐ τοῦ μένειν παρ᾽ αὐτοῖς, ἀλλὰ τοῦ καταβῆναι μόνον καὶ λαβεῖν ὕδωρ, ἅπερ ἀμφότερα πεποιηκὼς, πιστὸς ἔδοξεν εἶναι.’ Τὸ μὲν δὴ πανούργημα, διὰ τὴν ἡλικίαν μάλιστα τοῦ παιδὸς, ἀπεθαύμαζον οἱ πλανηθέντες· πέμπτῃ δὲ ἡμέρᾳ λιμώττοντες οἱ ἱερεῖς καταβαίνουσι, καὶ πρὸς Τίτον ἀναχθέντες ὑπὸ τῶν φυλάκων, ἱκέτευον τυχεῖν σωτηρίας. Ὁ δὲ ‘τὸν μὲν τῆς συγγνώμης καιρὸν αὐτοῖς παρῳχηκέναι, φήσας, οἴχεσθαι δὲ δι᾽ ὃν εὐλόγως ἂν αὐτοὺς ἔσωζε, πρέπειν δὲ τοῖς ἱερεῦσι τῷ ναῷ συναπολέσθαι,’ κελεύει κολάσαι τοὺς ἄνδρας.

2. Οἱ δὲ περὶ τοὺς τυράννους ὡς τῷ τε πολέμῳ πανταχόθεν ἐκρατοῦντο, καὶ περιτετειχισμένοις διαφυγεῖν οὐδαμόθεν ἦν, προςκαλοῦνται τὸν Τίτον εἰς λόγους. Ὁ δὲ διὰ τὸ φιλάνθρωπον φύσει τό γοῦν ἄστυ περισῶσαι προαιρούμενος, καὶ τῶν φίλων ἐναγόντων, ἤδη γὰρ μετριάζειν τοὺς λῃστὰς ὑπελάμβανον, ἵσταται κατὰ τὸ πρὸς δύσιν μέρος τοῦ ἔξωθεν ἱεροῦ. Ταύτῃ γὰρ ὑπὲρ τὸν ξυστὸν ἦσαν πύλαι, καὶ γέφυρα συνάπτουσα τῷ ἱερῷ τὴν ἄνω πόλιν· αὕτη τότε μέση τῶν τυράννων ἦν καὶ τοῦ Καίσαρος. Τὸ δὲ πλῆθος ἑκατέροις βύζην ἐφειστήκει. Ἰουδαῖοι μὲν περὶ Σίμωνα καὶ Ἰωάννην, μετέωροι 392
συγγνώμης ἐλπίδι· Ῥωμαῖοι δὲ Καίσαρι, καραδοκοῦντες αὐτῶν τὴν ἀξίωσιν. Παραγγείλας δὲ τοῖς

στρατιώταις Τίτος, θυμοῦ τε καὶ βελῶν μένειν ἐγκρατεῖς, καὶ τὸν ἑρμηνέα παραστησάμενος, ὅπερ ἦν τεκμήριον τοῦ κρατεῖν, πρῶτος ἤρξατο λέγειν· "Ἆρά γε ἤδη κεκόρεσθε τῶν τῆς πατρίδος κακῶν, ἄνδρες, οἱ μήτε τῆς ἡμετέρας τῆς δυνάμεως, μήτε τῆς ἑαυτῶν ἀσθενείας ἔννοιαν λαβόντες, ὁρμῇ δὲ ἀσκέπτῳ καὶ μανίᾳ τόν τε δῆμον καὶ τὴν πόλιν καὶ τὸν ναὸν ἀπολωλεκότες, ἀπολούμενοι δὲ καὶ αὐτοὶ δικαίως, οἳ πρῶτον μὲν, ἀφ' οὗ Πομπήϊος εἷλεν ὑμᾶς κατὰ κράτος, οὐκ ἐπαύσασθε νεωτεροποιΐας, ἔπειτα καὶ φανερὸν ἐξηνέγκατε πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον; Ἆρά γε πλήθει πεποιθότες; Καὶ μὴν ἐλάχιστον ὑμῖν μέρος ἀντήρκεσε τοῦ Ῥωμαίων στρατιωτικοῦ. Πίστει τοιγαροῦν συμμάχων; Καὶ τί τῶν ἔξω τῆς ἡμετέρας ἡγεμονίας ἐθνῶν ἔμελλεν αἱρήσεσθαι Ἰουδαίους πρὸ Ῥωμαίων; Ἀλλ' ἀλκῇ σωμάτων; Καὶ μὴν ἴστε Γερμανοὺς δουλεύοντας ἡμῖν. Ὀχυρότητι δὲ τειχῶν; Καὶ τί μεῖζον ὠκεανοῦ τεῖχους κώλυμα, ὃν πεπιβεβλημένοι Βρεττανοὶ τὰ Ῥωμαίων ὅπλα προςκυνοῦσι; Καρτερίᾳ ψυχῆς καὶ πανουργίᾳ στρατηγῶν; Ἀλλὰ μὴν ᾔδειτε καὶ Καρχηδονίους ἁλόντας. Τοιγαροῦν ὑμᾶς ἐπήγειρε κατὰ Ῥωμαίων ἡ Ῥωμαίων φιλανθρωπία· οἳ πρῶτον μὲν ὑμῖν τήν τε χώραν ἔδομεν νέμεσθαι, καὶ βασιλεῖς ὁμοφύλους ἐπεστήσαμεν, ἔπειτα τοὺς πατρίους νόμους ἐτηρήσαμεν, καὶ ζῆν οὐ μόνον καθ' ἑαυτοὺς, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἄλλους ἐπετρέψαμεν, ὡς ἐβούλεσθε· τὸ δὲ μέγιστον, δασμολογεῖν τε ὑμῖν ἐπὶ τῷ θεῷ, καὶ ἀναθήματα συλλέγειν ἐπετρέψαμεν, καὶ τοὺς ταῦτα φέροντας οὔτε ἐνουθετήσαμεν οὔτε ἐκωλύσαμεν, ἵν' ἡμῶν γένησθε πλουσιώτεροι πολέμιοι, καὶ παρασκευάσησθε τοῖς ἡμετέροις χρήμασι καθ' ἡμῶν. Ἔπειτα τηλικούτων ἀγαθῶν ἀπολαύοντες, ἐπὶ τοὺς παρασχόντας ἠνέγκατε τὸν κόρον, καὶ δίκην τῶν ἀτιθασσεύτων ἑρπετῶν τοῖς σαίνουσι τὸν ἰὸν ἐναφήκατε. Ἔστω γοῦν, κατεφρονήσατε τῆς Νέρωνος ῥᾳθυμίας,

καὶ καθάπερ ῥήγματα ἢ σπάσματα, τὸν ἄλλον χρόνον κακοήθως ἠρεμοῦντες, ἐν τῇ μείζονι νόσῳ διεφάνητε, καὶ πρὸς ἐλπίδας ἀναιδεῖς καὶ ἀμέτρους ἐξετείνατε τὰς ἐπιθυμίας. Ἧκεν ὁ πατὴρ ὁ ἐμὸς εἰς τὴν χώραν, οὐ τιμωρησόμενος ὑμᾶς τῶν κατὰ Κέστιον, ἀλλὰ νουθετήσων. Δέον γοῦν, εἴπερ ἐπ' ἀναστάσει τοῦ ἔθνους παρῆν, ἐπὶ τὴν ῥίζαν ὑμῶν δραμεῖν, καὶ ταύτην ἐκπορθεῖν τὴν πόλιν εὐθέως· ὁ δὲ Γαλιλαίαν ἐδῄου καὶ τὰ πέριξ, ἐπιδιδοὺς ὑμῖν χρόνον εἰς μετάνοιαν. Ἀλλ' ὑμῖν ἀσθένεια τὸ φιλάνθρωπον ἐδόκει καὶ ἐκ τῆς ἡμετέρας πρᾳότητος τὴν τόλμαν ἐπεθρέψατε. Νέρωνος οἰχουμένου, τοῦτο, ὅπερ ἐχρῆν τοὺς πονηροτάτους, ἐποιήσατε, ταῖς ἐμφυλίοις ἡμῶν ταραχαῖς ἐπεθαῤῥήσατε, καὶ χωρισθέντων εἰς τὴν Αἴγυπτον ἐμοῦ τε καὶ τοῦ πατρὸς, εἰς παρασκευὰς τοῦ πολέμου κατεχρήσασθε τοῖς καιροῖς· καὶ οὐκ ᾐδέσθητε ταράσσειν αὐτοκράτορας γεγενημένους, οὓς καὶ στρατηγοὺς φιλανθρώπους ἐπειράσατε. Προσφυγούσης γοῦν ἡμῖν τῆς ἡγεμονίας, καὶ τῶν μὲν κατὰ ταύτην ἠρεμούντων πάντων, πρεσβευομένων δὲ καὶ συνηδομένων τῶν ἔξωθεν ἐθνῶν, πάλιν οἱ Ἰουδαῖοι 393
πολέμιοι· καὶ πρεσβεῖαι μὲν ὑμῶν πρὸς τοὺς ὑπὲρ Εὐφράτην ἐπὶ νεωτερισμῷ, περίβολοι δὲ τειχῶν ἀνοικοδομούμενοι καινοὶ, στάσεις δὲ καὶ τυράννων φιλονεικίαι, καὶ πόλεμος ἐμφύλιος, μόνα τοῖς οὕτω πονηροῖς πρέποντα. Ἧκον ἐπὶ τὴν πόλιν ἐγὼ, παρὰ τοῦ πατρὸς ἄκοντος λαβὼν σκυθρωπὰ παραγγέλματα· τὸν δῆμον ἀκούσας εἰρηνικὰ φρονεῖν, ἥσθην. Ὑμᾶς παύσασθαι πρὸ πολέμου παρεκάλουν, μέχρι πολλοῦ πολεμούντων ἐφειδόμην, δεξιὰς αὐτομόλοις δέδωκα, καταφυγοῦσι πίστιν ἐτήρησα, πολλοὺς αἰχμαλώτους ἠλέησα, τοὺς ἐπείγοντας βασανίσας ἐκώλυσα, τείχεσιν ὑμετέροις μηχανὰς ἄκων προσήγαγον, ἀεὶ φονῶντας τοὺς στρατιώτας ἐφ' ὑμῖν κατέσχον, καθ' ἑκάστην νίκην ὡς ἡττώμενος ὑμᾶς εἰς εἰρήνην προσεκαλεσάμην. Τοῦ ἱεροῦ πλησίον γενόμενος, πάλιν ἐ-

κῶν ἐξελαθόμην τῶν τοῦ πολέμου νόμων· φείσασθαι δὲ παρεκάλουν τῶν ἰδίων ὑμᾶς ἁγίων, καὶ σῶσαι τὸν ναὸν ἑαυτοῖς, διδοὺς ἄδειάν τε ἐξόδου καὶ πίστιν σωτηρίας, εἰ δὲ βούλησθε, καὶ μάχης καιρὸν ἐν ἄλλῳ τόπῳ, πάντων ὑπερείδετε, καὶ τὸν ναὸν ἰδίαις χερσὶν ἐνεπρήσατε. Ἔπειτα, μιαρώτατοι, προκαλεῖσθέ με πρὸς λόγους νῦν; Ἵνα τί σώσητε τοιοῦτον, οἷον ἀπόλωλεν; Οἵας ὑμᾶς αὐτοὺς ἀξιοῦτε μετὰ τὸν ναὸν σωτηρίας; Ἀλλὰ καὶ νῦν μετὰ τῶν ὅπλων ἑστήκατε, καὶ οὐδ᾽ ἐν ἐσχάτοις ὑποκρίνεσθε γοῦν ἱκέτας. Ὦ ταλαίπωροι, τίνι πεποιθότες, οὐ νεκρὸς μὲν ὑμῶν ὁ δῆμος, οἴχεται δὲ ὁ ναὸς, ὑπ᾽ ἐμοὶ δὲ ἡ πόλις, ἐν χερσὶ δὲ ταῖς ἐμαῖς ἔχετε τὰς ψυχάς, εἶθ᾽ ὑπολαμβάνετε δόξαν ἀνδρείας τὸ θανατᾶν; Οὐ μὴν ἐγὼ φιλονεικήσω πρὸς τὴν ἀπόνοιαν ὑμῶν. Ῥίψασι δὲ τὰ ὅπλα, καὶ παραδοῦσι τὰ σώματα, χαρίζομαι τὸ ζῆν· ὥσπερ ἐν οἰκίᾳ πρᾶος δεσπότης τὰ μὲν ἀνήκεστα κολάσας, τὰ δὲ λοιπὰ σώζων ἐμαυτῷ."

3. Πρὸς δὲ ταῦτα ἀποκρίνονται, ‛δεξιὰν μὲν μὴ δύνασθαι παρ᾽ αὐτοῦ λαβεῖν, ὀμωμοκέναι γὰρ, μηδέποτε τοῦτο ποιήσειν. Ἔξοδον δ᾽ ᾐτοῦντο διὰ τοῦ περιτειχίσματος μετὰ γυναικῶν καὶ τέκνων. Ἀπελεύσεσθαι γὰρ εἰς τὴν ἔρημον, καὶ καταλείψειν αὐτῷ τὴν πόλιν.᾽ Πρὸς ταῦτα ἀγανακτήσας Τίτος, εἰ τύχην ἑαλωκότων ἔχοντες αἱρέσεις αὐτῷ προτείνουσιν νενικηκότων, κηρύξαι μὲν ἐκέλευσεν εἰς αὐτοὺς, ‛μήτε αὐτομολεῖν ἔτι, μήτε δεξιὰν ἐλπίζειν· φείσεσθαι γὰρ οὐδενός· ἀλλὰ ἁπάσῃ δυνάμει μάχεσθαι, καὶ σώζειν ἑαυτοὺς, ὅπως ἂν δύναιντο. Πάντα γὰρ αὐτὸς ἤδη πράξειν πολέμου νόμῳ.᾽ Τοῖς δὲ στρατιώταις ἐμπιπράναι καὶ διαρπάζειν ἐκέλευσε τὴν πόλιν. Οἱ δ᾽ ἐκείνην μὲν ἐπέσχον τὴν ἡμέραν, τῇ δὲ ὑστεραίᾳ τό τε ἀρχεῖον καὶ τὴν Ἄκραν καὶ τὸ βουλευτήριον καὶ τὸν Ὀφλᾶν καλούμενον ὑφῆψαν, καὶ προέκοψε τὸ πῦρ μέχρι τῶν Ἑλένης βασιλείων, ἃ δὴ

κατὰ μέσην τὴν Ἄκραν ἦν. Ἐκαίοντο δὲ οἵ τε στε- 394
νωποὶ, καὶ αἱ οἰκίαι νεκρῶν ὑπὸ τοῦ λιμοῦ διεφθαρμένων πλήρεις.

4. Κατὰ ταύτην τὴν ἡμέραν οἵ τε Ἰζάτου βασιλέως υἱοὶ καὶ ἀδελφοὶ, πρὸς οἷς πολλοὶ τῶν ἐπισήμων δημοτῶν ἐκεῖ συνελθόντες, ἱκέτευσαν Καίσαρα δοῦναι δεξιὰν αὐτοῖς. Ὁ δὲ, καίτοι πρὸς πάντας τοὺς ὑπολοίπους διωργισμένος, οὐκ ἤλλαξε τὸ ἦθος, δέχεται δὲ τοὺς ἄνδρας. Καὶ τότε μὲν ἐν φρουρᾷ πάντας εἶχε· τοὺς δὲ τοῦ βασιλέως παῖδας καὶ συγγενεῖς δήσας, ὕστερον εἰς Ῥώμην ἀνήγαγε, πίστιν ὁμήρων παρέξοντας.

CAP. VII. 1. Οἱ στασιασταὶ δ' ἐπὶ τὴν βασιλικὴν ὁρμήσαντες αὐλὴν, εἰς ἣν δι' ὀχυρότητα πολλοὶ τὰς κτήσεις ἀπέθεντο, τούς τε Ῥωμαίους ἀπ' αὐτῆς τρέπονται, καὶ τὸ συνηθροισμένον αὐτόθι τοῦ δήμου πᾶν φονεύσαντες, ὄντας εἰς ὀκτακισχιλίους καὶ τετρακοσίους, τὰ χρήματα διήρπασαν. Ἐζώγρησαν δὲ καὶ Ῥωμαίων δύο, τὸν μὲν ἱππέα, τὸν δὲ πεζόν· καὶ τὸν μὲν πεζὸν ἀποσφάξαντες εὐθέως ἔσυρον περὶ ὅλην τὴν πόλιν, ὥσπερ ἐν ἑνὶ σώματι πάντας Ῥωμαίους ἀμυνόμενοι. Ὁ δὲ ἱππεὺς ὠφέλιμόν τι αὐτοῖς πρὸς σωτηρίαν ὑποθήσεσθαι λέγων, ἀνάγεται πρὸς Σίμωνα· παρ' ᾧ μηδὲν εἰπεῖν ἔχων, Ἀρδάλᾳ τινὶ τῶν ἡγεμόνων παραδίδοται κολασθησόμενος. Ὁ δὲ αὐτοῦ ὀπίσω τὼ χεῖρε δήσας, καὶ ταινίᾳ τοὺς ὀφθαλμοὺς, ἀντικρὺ τῶν Ῥωμαίων προήγαγεν ὡς καρατομήσων· φθάνει δ' ἐκεῖνος εἰς τοὺς Ῥωμαίους διαφυγὼν, ἐν ὅσῳ τὸ ξίφος ἐσπάσατο ὁ Ἰουδαῖος. Τοῦτον διαφυγόντα ἐκ τῶν πολεμίων ἀνελεῖν μὲν οὐχ ὑπέμεινε Τίτος, ἀνάξιον δὲ Ῥωμαίων εἶναι στρατιώτην κρίνας, ὅτι ζῶν ἐλήφθη· τά τε ὅπλα ἀφείλετο, καὶ τοῦ τάγματος ἐξέβαλεν, ἅπερ ἦν αἰσχυνομένῳ θανάτου χαλεπώτερα.

2. Τῇ δὲ ἑξῆς Ῥωμαῖοι τρεψάμενοι τοὺς λῃστὰς ἐκ τῆς κάτω πόλεως, τὰ μέχρι τοῦ Σιλωᾶμ πάντα ἐνέπρησαν· καὶ τοῦ μὲν ἄστεος ἥδοντο δαπανωμένου, τῶν δὲ ἁρπαγῶν διημάρτανον, ἐπειδὴ πάνθ᾽ οἱ στασιασταὶ προκενοῦντες ἀνεχώρουν εἰς τὴν ἄνω πόλιν· ἦν γὰρ αὐτοῖς μετάνοια μὲν οὐδεμία τῶν κακῶν, ἀλαζονεία δὲ ὡς ἐπ᾽ ἀγαθοῖς. Καιομένην γοῦν ἀφορῶντες τὴν πόλιν, ἱλαροῖς τοῖς προςώποις εὔθυμοι τὴν τελευτὴν προςδέχεσθαι ἔλεγον, πεφονευμένου μὲν τοῦ δήμου, κεκαυμένου δὲ τοῦ ναοῦ, φλεγομένου δὲ τοῦ ἄστεος, μηδὲν καταλιπόντες τοῖς πολεμίοις. Οὐ μὴν ὅ γε Ἰώσηπος ἐν ἐσχάτοις ἱκετεύων αὐτοὺς ὑπὲρ τῶν λειψάνων τῆς πόλεως ἔκαμνεν· ἀλλὰ πολλὰ μὲν πρὸς τὴν ὠμότητα καὶ τὴν ἀσέβειαν εἰπὼν, πολλὰ δὲ συμβουλεύσας πρὸς σωτηρίαν οὐδὲν τοῦ χλευασθῆναι πλέον ἀπηνέγκατο. Ἐπεὶ δὲ οὔτε παραδοῦναι διὰ τὸν ὅρκον ἑαυτοὺς ὑπέμενον, οὔτε πολεμεῖν ἐξ ἴσου Ῥωμαίοις ἔθ᾽ οἷοί τε ἦσαν, ὥςπερ εἱρκτῇ περιειλημμένοι, τό τε τοῦ φονεύειν ἔθος ἐκί-
395 νει τὰς δεξιὰς, σκιδνάμενοι κατὰ τὰ ἔμπροσθεν τῆς πόλεως, τοῖς ἐρειπίοις ὑπελόχων τοὺς αὐτομολεῖν ὡρμημένους. Ἡλίσκοντο δὲ πολλοὶ, καὶ πάντας ἀποσφάττοντες, ὑπὸ γὰρ ἐνδείας οὐδὲ φυγεῖν ἴσχυον, ἐῤῥίπτουν αὐτῶν κυσὶ τοὺς νεκρούς. Ἐδόκει δὲ πᾶς τρόπος ἀπωλείας τοῦ λιμοῦ κουφότερος, ὥςτε καὶ Ῥωμαίοις ἀπηλπικότες ἤδη τὸν ἔλεον ὅμως προςέφευγον, καὶ φονεύουσι τοῖς στασιασταῖς ἑκόντες ἐνέπιπτον. Τόπος τε ἐπὶ τῆς πόλεως οὐδεὶς γυμνὸς ἦν, ἀλλὰ ἅπας ἢ λιμοῦ νεκρὸν εἶχεν ἢ στάσεως, καὶ πεπλήρωτο νεκρῶν ἢ διὰ στάσιν ἢ διὰ λιμὸν ἀπολωλότων.

3. Ἔθαλπε δὲ τούς τε τυράννους, καὶ τὸ σὺν αὐτοῖς λῃστρικὸν ἐλπὶς ἐσχάτη περὶ τῶν ὑπονόμων, εἰς οὓς καταφεύγοντες οὐ προςεδόκων ἐρευνηθήσεσθαι. Μετὰ δὲ τὴν παντελῆ τῆς πόλεως ἅλωσιν, ἀναζευξάντων τῶν Ῥωμαίων προελθόντες, ἀποδρά-

σεσθαι ἐπεχείρουν. Τὸ δ' ἦν ἄρα ὄνειρος αὐτοῖς· οὔτε γὰρ τὸν Θεὸν, οὔτε Ῥωμαίους λήσειν ἔμελλον. Τηνικαῦτά γε μὴν τοῖς ὑπογείοις πεποιθότες, αὐτοὶ πλείονα τῶν Ῥωμαίων ἐνέπιπρασαν. Καὶ τοὺς ἐκ τῶν καιομένων καταφεύγοντας εἰς τὰς διώρυχας ἔκτεινόν τε ἀναίδην καὶ ἐσύλων· καὶ ἄν εἴ τινος εὕροιεν τροφὴν ἁρπάζοντες, αἵματι πεφυρμένην κατέπινον. ³Ην δὲ καὶ πρὸς ἀλλήλους ἐν ταῖς ἁρπαγαῖς ἤδη πόλεμος αὐτοῖς. Δοκοῦσι δ' ἄν μοι, μὴ φθασθέντες ὑπὸ τῆς ἁλώσεως, δι' ὑπερβολὴν ὠμότητος γεύσασθαι καὶ τῶν νεκρῶν.

CAP. VIII. 1. Καῖσαρ δὲ ὡς ἀμήχανον ἦν ἐξελεῖν δίχα χωμάτων τὴν ἄνω πόλιν περίκρημνον οὖσαν, διανέμει τοῖς ἔργοις τὴν δύναμιν Λώου μηνὸς εἰκάδι. Χαλεπὴ δ' ἦν τῆς ὕλης ἡ κομιδὴ, πάντων, ὡς ἔφην, τῶν περὶ τὴν πόλιν ἐφ' ἑκατὸν σταδίους ἐψιλωμένων εἰς τὰ πρότερον χώματα. Τῶν μὲν οὖν τεσσάρων ταγμάτων ἠγείρετο τὰ ἔργα κατὰ τὸ πρὸς δύσιν κλίμα τῆς πόλεως, ἄντικρυς τῆς βασιλικῆς αὐλῆς· τὸ δὲ συμμαχικὸν πλῆθος, καὶ ὁ λοιπὸς ὄχλος, κατὰ τὸν ξυστὸν, ἐξ οὗ καὶ τὴν γέφυραν, καὶ τὸν Σίμωνος πύργον, ὃν ᾠκοδόμησε πρὸς Ἰωάννην πολεμῶν ἑαυτῷ φρούριον.

2. Κατὰ ταύτας τὰς ἡμέρας οἱ τῶν Ἰδουμαίων ἡγεμόνες, κρύφα συνελθόντες, ἐβουλεύσαντο περὶ παραδόσεως σφῶν αὐτῶν, καὶ πέμψαντες ἄνδρας πέντε πρὸς Τίτον, ἱκέτευον δοῦναι δεξιὰν αὐτοῖς. Ὁ δὲ καὶ τοὺς τυράννους ἐνδώσειν ἐλπίσας, ἀποσπασθέντων τῶν Ἰδουμαίων, οἳ πολὺ τοῦ πολέμου μέρος ἦσαν, βραδέως μὲν, ἀλλ' οὖν κατανεύει τε τὴν σωτηρίαν αὐτοῖς, καὶ τοὺς ἄνδρας ἀνέπεμψε. Παρασκευαζομένων δ' ἀποχωρεῖν αἰσθάνεται Σίμων, καὶ πέντε μὲν τοὺς ἀπελθόντας πρὸς Τίτον εὐθέως ἀ- 396
ναιρεῖ· τοὺς δὲ ἡγεμόνας, ὧν ἐπισημότατος ἦν ὁ τοῦ

Σωσᾶ Ἰάκωβος, συλλάβων εἴργνυσι· τὸ δὲ πλῆθος τῶν Ἰδουμαίων, ἀμηχανοῦν διὰ τὴν ἀφαίρεσιν τῶν ἡγεμόνων, οὐκ ἀφύλακτον εἶχε, καὶ τὸ τεῖχος φρουραῖς ἐπιμελεστέραις διελάμβανεν. Οὐ μὴν ἀντέχειν οἱ φρουροὶ πρὸς τὰς αὐτομολίας ἴσχυον, ἀλλὰ καίτοι πλείστων φονευομένων, πολὺ πλείους οἱ διαφεύγοντες ἦσαν. Ἐδέχοντο δὲ Ῥωμαῖοι πάντας, τοῦ τε Τίτου διὰ πρᾳότητα τῶν προτέρων ἀμελήσαντος παραγγελμάτων, καὶ αὐτοὶ κόρῳ τοῦ κτείνειν ἀπεχόμενοι, καὶ κέρδους ἐλπίδι· τοὺς γὰρ δημοτικοὺς καταλιπόντες μόνους, τὸν ἄλλον ὄχλον ἐπώλουν σὺν γυναιξὶ καὶ τέκνοις, ἐλαχίστης τιμῆς ἕκαστον, πλήθει τε τῶν πιπρασκομένων, καὶ ὀλιγότητι τῶν ὠνουμένων. Καίπερ δὲ προκηρύξας μηδένα μόνον αὐτομολεῖν, ὅπως καὶ γενεὰς ἐξαγάγοιεν, ὅμως καὶ τούτους ἐδέχετο. Ἐπέστησε μέντοι τοὺς διακρινοῦντας ἀπ' αὐτῶν, εἴ τις εἴη κολάσεως ἄξιος. Καὶ τῶν μὲν ἀπεμποληθέντων ἄπειρον τὸ πλῆθος ἦν· οἱ δημοτικοὶ δὲ διεσώθησαν ὑπὲρ τετρακισμυρίους, οὓς διαφῆκε Καῖσαρ, ᾗ φίλον ἦν ἑκάστῳ.

3. Ἐν δὲ ταῖς αὐταῖς ἡμέραις καὶ τῶν ἱερέων τις Θεβουθὶ παῖς, Ἰησοῦς ὄνομα, λαβὼν περὶ σωτηρίας ὅρκους παρὰ Καίσαρος, ἐφ' ᾧ παραδώσει τινὰ τῶν ἱερῶν κειμηλίων, ἔξεισι, καὶ παραδίδωσιν ἀπὸ τοῦ τοίχου τοῦ ναοῦ λυχνίας δύο ταῖς κατὰ τὸν ναὸν κειμέναις παραπλησίας, τραπέζας τε καὶ κρατῆρας καὶ φιάλας, πάνθ' ὁλόχρυσα καὶ στιβαρώτατα. Παραδίδωσι δὲ καὶ τὰ καταπετάσματα, καὶ τὰ ἐνδύματα τῶν ἀρχιερέων σὺν τοῖς λίθοις, καὶ πολλὰ τῶν πρὸς τὰς ἱερουργίας σκευῶν ἄλλα. Συλληφθεὶς δὲ καὶ ὁ γαζοφύλαξ τοῦ ἱεροῦ Φινέας ὄνομα, τούς τε χιτῶνας καὶ τὰς ζώνας ἐπέδειξε τῶν ἱερέων, πορφύραν τε πολλὴν καὶ κόκκον, ἃ πρὸς χρείας ἀπέκειτο τοῦ καταπετάσματος, σὺν οἷς κιννάμωμόν τε πολὺ καὶ κασσίαν, καὶ πλῆθος ἑτέρων ἀρωμάτων, ἃ συμμίσγοντες ἐθυμίων ὁσημέραι τῷ θεῷ. Παρεδόθη δὲ

ὑπ' αὐτοῦ πολλὰ καὶ τῶν ἄλλων κειμηλίων, κόσμος τε ἱερὸς οὐκ ὀλίγος, ἅπερ αὐτῷ βίᾳ ληφθέντι τὴν τῶν αὐτομόλων συγγνώμην ἔδωκε.

4. Συντετελεσμένων δὲ ἤδη καὶ τῶν χωμάτων ἑβδόμῃ Γορπιαίου μηνὸς, ἐν ὀκτωκαίδεκα ἡμέραις, Ῥωμαῖοι μὲν προςῆγον τὰς μηχανάς. Τῶν δὲ στασιαστῶν οἱ μὲν ἀπεγνωκότες ἤδη τὴν πόλιν, ἀνεχώρουν τοῦ τείχους εἰς τὴν Ἄκραν, οἱ δ' ἐγκατεδύοντο τοῖς ὑπονόμοις, πολλοὶ δὲ διαστάντες ἠμύνοντο τοὺς προςάγοντας τὰς ἑλεπόλεις. Ἐκράτουν δὲ καὶ τούτων Ῥωμαῖοι, πλήθει τε καὶ βίᾳ, καὶ τὸ μέγιστον, εὐθυμοῦντες ἀθύμων ἤδη καὶ παρειμένων. Ὡς δὲ περιεῤῥάγη μέρος τι τοῦ τείχους, καί τινες τῶν πύργων τυπτόμενοι τοῖς κριοῖς ἐνέδοσαν, φυγὴ μὲν ἦν εὐθέως τῶν ἀμυνομένων, δέος δὲ καὶ τοῖς τυράννοις ἐμπίπτει σφοδρότερον τῆς ἀνάγκης· πρὶν γὰρ ὑπερβῆναι τοὺς πολεμίους, ἐνάρκων τε καὶ μετέωροι πρὸς φυγὴν ἦσαν. Ἦν δ' ἰδεῖν τοὺς πάλαι σοβαροὺς καὶ τοῖς ἀσεβήμασιν ἀλαζόνας, τότε ταπεινοὺς καὶ τρέμοντας, ὡς ἐλεεινὴν εἶναι καίπερ ἐν πονηροτάτοις τὴν μεταβολήν. Ὥρμησαν μὲν οὖν ἐπὶ τὸ περιτείχισμα δραμόντες, ὤσασθαί τε τοὺς φρουροὺς, καὶ διακόψαντες ἐξελθεῖν. Ὡς δὲ τοὺς μὲν πάλαι πιστοὺς ἑώρων οὐδαμοῦ, διέφυγον γὰρ ὅπῃ τινὶ συνεβούλευσεν ἡ ἀνάγκη, προθέοντες δὲ, οἱ μὲν ὅλον ἀνατετράφθαι τὸ πρὸς δύσιν τεῖχος ἤγγελλον, οἱ δ' ἐμβεβληκέναι τοὺς Ῥωμαίους, οἱ δ' ἤδη τε πλησίον εἶναι ζητοῦντας αὐτοὺς, ἕτεροι δ' ἀφορᾶν ἐπὶ τῶν πύργων πολεμίους ἔλεγον, πλάζοντος τὰς ὄψεις τοῦ δέους, ἐπὶ στόμα πεσόντες, ἀνῴμωξαν τὴν ἑαυτῶν φρενοβλάβειαν, καὶ καθάπερ ὑποκεκομμένοι τὰ νεῦρα, τῆς φυγῆς ἠπόρουν. Ἔνθα δὴ μάλιστ' ἄν τις καταμάθοι τήν τε τοῦ θεοῦ δύναμιν ἐπὶ τοῖς ἀνοσίοις, καὶ τὴν Ῥωμαίων τύχην· οἱ μὲν γὰρ τύραννοι τῆς ἀσφαλείας ἐγύμνωσαν ἑαυτοὺς, καὶ ἐκ τῶν πύργων κατέβησαν ἑκόντες, ἐφ' ὧν βίᾳ μὲν οὐδέποτ' ἀ- 397

λῶναι μόνῳ δ' ἐδύναντο λιμῷ. Ῥωμαίοις δὲ τοσαῦτα περὶ τοῖς ἀσθενεστέροις τείχεσι καμόντες παρέλαβον τύχη τὰ μὴ δυνατὰ τοῖς ὀργάνοις· παντὸς γὰρ ἰσχυρότεροι μηχανήματος ἦσαν οἱ τρεῖς πύργοι, περὶ ὧν ἀνωτέρω δεδηλώκαμεν.

5. Καταλιπόντες δὴ τούτους, μᾶλλον δὲ ὑπὸ τοῦ θεοῦ καταβληθέντες ἀπ' αὐτῶν, παραχρῆμα μὲν εἰς τὴν ὑπὸ Σιλωὰμ φάραγγα καταφεύγουσιν. Αὖθις δὲ ὀλίγον ἀνακύψαντες ἐκ τοῦ δέους, ὥρμησαν ἐπὶ τὸ τῇδε περιτείχισμα. Χρησάμενοι δὲ ταῖς τόλμαις ἀγεννεστέραις· τῆς ἀνάγκης, κατεάγησαν γὰρ ἤδη τὴν ἰσχὺν ἅμα τῷ δέει καὶ ταῖς συμφοραῖς, ὑπὸ τῶν φρουρῶν ἀνωθοῦνται, καὶ σκεδασθέντες ὑπ' ἀλλήλων κατέδυσαν εἰς τοὺς ὑπονόμους. Ῥωμαῖοι δὲ τῶν τειχῶν κρατήσαντες, τάς τε σημαίας ἔστησαν ἐπὶ τῶν πύργων, καὶ μετὰ κρότου καὶ χαρᾶς ἐπαιάνιζον ἐπὶ τῇ νίκῃ, πολὺ τῆς ἀρχῆς κουφότερον τοῦ πολέμου τὸ τέλος εὑρηκότες. Ἀναιμωτὶ γοῦν τοῦ τελευταίου τείχους ἐπιβάντες ἠπίστουν, καὶ μηδένα βλέποντες ἀντίπαλον, ἀήθως ἠπόρηντο. Εἰςχυθέντες δὲ τοῖς στενωποῖς ξιφήρεις, τούς τε καταλαμβανομένους ἐφόνευον ἀνέδην, καὶ τῶν συμφευγόντων τὰς οἰκίας αὐτάνδρους ὑπεπίπρασαν. Πολλὰ δὲ κεραΐζοντες, ὁπότ' ἔνδον παρέλθοιεν ἐφ' ἁρπαγὴν, γενεὰς ὅλας νεκρῶν κατελάμβανον, καὶ τὰ δωμάτια πλήρη τῶν τοῦ λιμοῦ πτωμάτων. Ἔπειτα πρὸς τὴν ὄψιν πεφρικότες, κεναῖς χερσὶν ἐξῄεσαν. Οὐ μὴν οἰκτείροντες τοὺς οὕτως ἀπολωλότας, ταυτὸ καὶ πρὸς τοὺς ζῶντας ἔπασχον· ἀλλὰ τὸν ἐντυχόντα διελαύνοντες, ἀπέφραξαν μὲν τοὺς στενωποὺς νεκροῖς, αἵματι δὲ ὅλην τὴν πόλιν κατέκλυσαν, οἷς πολλὰ τῶν φλεγομένων σβεσθῆναι τῷ φόνῳ. Καὶ οἱ μὲν κτείνοντες ἐπαύσαντο πρὸς ἑσπέραν, ἐν δὲ τῇ νυκτὶ τὸ πῦρ ἐπεκράτει. Φλεγομένοις δ' ἐπανέτειλεν Ἱεροσολύμοις ἡμέρα Γορπιαίου μηνὸς ὀγδόη, πόλει τοσαύταις χρησαμένῃ συμφοραῖς κατὰ τὴν πολιορκίαν, ὅσοις ἀπὸ

τῆς κτίσεως ἀγαθοῖς κεχρημένη πάντως ἂν ἐπίφθονος ἔδοξεν, οὐ μὴν ἀξία κατ᾽ ἄλλο τι τῶν τηλικούτων ἀτυχημάτων, ἢ τὸ γενεὰν τοιαύτην ἐνεγκεῖν, ὑφ᾽ ἧς ἀνετράπη.

CAP. IX. 1. Παρελθὼν δὲ Τίτος εἴσω τά τε ἄλ- 398
λα τῆς ὀχυρότητος τὴν πόλιν καὶ τῶν πύργων ἀπεθαύμασεν, οὓς οἱ τύραννοι κατὰ φρενοβλάβειαν ἀπέλιπον. Κατιδὼν γοῦν τό τε ναστὸν αὐτῶν ὕψος, καὶ τὸ μέγεθος ἑκάστης πέτρας, τήν τε ἀκρίβειαν τῆς ἁρμονίας, καὶ ὅσοι μὲν εὖρος, ἡλίκοι δὲ ἦσαν τὴν ἀνάτασιν, "Σὺν θεῷ γ᾽ ἐπολεμήσαμεν," ἔφη, "καὶ θεὸς ἦν ὁ τῶνδε τῶν ἐρυμάτων Ἰουδαίους καθελών, ἐπεὶ χεῖρές τε ἀνθρώπων ἢ μηχαναὶ τί πρὸς τούτους τοὺς πύργους δύνανται;" Τότε μὲν οὖν πολλὰ τοιαῦτα διελέχθη πρὸς τοὺς φίλους· τοὺς δὲ τῶν τυράννων δεσμώτας, οἳ κατελήφθησαν ἐν τοῖς φρουρίοις, ἀνῆκεν. Αὖθις δὲ τὴν ἄλλην ἀφανίζων πόλιν, καὶ τὰ τείχη κατασκάπτων, τούτους τοὺς πύργους κατέλιπε μνημεῖον εἶναι τῆς αὐτοῦ τύχης, ᾗ συστρατιώτιδι χρησάμενος ἐκράτησε τῶν ἁλῶναι μὴ δυναμένων.

2. Ἐπεὶ δὲ οἱ στρατιῶται μὲν ἔκαμνον ἤδη φονεύοντες, πολὺ δέ τι πλῆθος τῶν περιόντων ἀνεφαίνετο, κελεύει Καῖσαρ, μόνους μὲν τοὺς ἐνόπλους καὶ χεῖρας ἀντισχόντας κτείνειν, τὸ δὲ λοιπὸν πλῆθος ζωγρεῖν. Οἱ δὲ μετὰ τῶν παρηγγελμένων τό τε γηραιὸν καὶ τοὺς ἀσθενεῖς ἀνῄρουν· τὸ δὲ ἀκμάζον καὶ χρήσιμον εἰς τὸ ἱερὸν συνελάσαντες, ἐγκατέκλεισαν τῷ τῶν γυναικῶν περιτειχίσματι· καὶ φρουρὸν μὲν ἐπέστησε Καῖσαρ ἕνα τῶν ἀπελευθέρων, Φρόντωνα δὲ τῶν φίλων, ἐπικρινοῦντα τὴν ἀξίαν ἑκάστῳ τύχην. Ὁ δὲ τοὺς μὲν στασιώδεις καὶ λῃστρικοὺς πάντας, ὑπ᾽ ἀλλήλων ἐνδεικνυμένους, ἀπέκτεινε· τῶν δὲ νέων τοὺς ὑψηλοτάτους καὶ καλοὺς ἐπιλέξας ἐτή-

ρει τῷ θριάμβῳ. Τοῦ δὲ λοιποῦ πλήθους τοὺς ὑπὲρ ἑπτακαίδεκα ἔτη δήσας ἔπεμψεν εἰς τὰ κατ᾽ Αἴγυπτον ἔργα, πλείστους δ᾽ εἰς τὰς ἐπαρχίας διεδωρήσατο Τίτος, φθαρησομένους ἐν τοῖς θεάτροις σιδήρῳ καὶ θηρίοις. Οἱ δὲ ἐντὸς ἑπτακαίδεκα ἐτῶν ἐπράθησαν. Ἐφθάρησαν δὲ αὐτῶν ἐν αἷς διέκρινεν ὁ Φρόντων ἡμέραις ὑπ᾽ ἐνδείας χίλιοι πρὸς τοῖς μυρίοις, οἱ μὲν ὑπὸ μίσους τῶν φυλάκων μὴ μεταλαμβάνοντες τροφῆς, οἱ δὲ οὐ προσιέμενοι διδομένην· πρὸς δὲ τὸ πλῆθος ἦν ἔνδεια καὶ σίτου.

3. Τῶν μὲν οὖν αἰχμαλώτων πάντων, ὅσα καθ᾽ ὅλον ἐλήφθη τὸν πόλεμον, ἀριθμὸς ἐννέα μυριάδες καὶ ἑπτακισχίλιοι συνήχθη· τῶν δ᾽ ἀπολουμένων κατὰ πᾶσαν τὴν πολιορκίαν μυριάδες ἑκατὸν καὶ δέκα. Τούτων τὸ πλέον ὁμόφυλον μέν, ἀλλ᾽ οὐκ ἐπιχώριον· ἀπὸ γὰρ τῆς χώρας ὅλης ἐπὶ τὴν τῶν Ἀζύμων ἑορτὴν συνεληλυθότες, ἐξαπίνης τῷ πολέμῳ περιεσχέθησαν, ὥςτε τὸ μὲν πρῶτον αὐτοῖς τὴν στε-
399 νοχωρίαν γενέσθαι λοιμώδη φθοράν, αὖθις δὲ καὶ λιμὸν ὠκύτερον. Ὅτι δ᾽ ἐχώρει τοσούτους ἡ πόλις, δῆλον ἐκ τῶν ἐπὶ Κεστίου συναριθμηθέντων, ὅς, τὴν ἀκμὴν τῆς πόλεως διαδηλῶσαι Νέρωνι βουλόμενος καταφρονοῦντι τοῦ ἔθνους, παρεκάλεσε τοὺς ἀρχιερεῖς, εἴ πως δυνατὸν εἴη τὴν πληθὺν ἐξαριθμήσασθαι· οἳ δὲ ἐνστάσης ἑορτῆς, Πάσχα καλεῖται, καθ᾽ ἣν θύουσι μὲν ἀπὸ ἐννάτης ὥρας μέχρι ἑνδεκάτης, ὥςπερ δὲ φρατρία περὶ ἑκάστην γίνεται θυσίαν, οὐκ ἔλασσον ἀνδρῶν δέκα, μόνον γὰρ οὐκ ἔξεστι δαίνυσθαι, πολλοὶ δὲ καὶ σὺν εἴκοσιν ἀθροίζονται. Τῶν μὲν οὖν θυμάτων εἴκοσι πέντε μυριάδας ἠρίθμησαν, πρὸς δὲ ἑξακισχίλια καὶ πεντακόσια. Γίνονται δ᾽ ἀνδρῶν, ἵν᾽ ἑκάστου δέκα δαιτυμόνας θῶμεν, μυριάδες ἑβδομήκοντα καὶ διακόσιαι, καθαρῶν ἁπάντων καὶ ἁγίων· οὔτε γὰρ λεπροῖς, οὔτε γονοῤῥοίαις, οὔτε γυναιξὶν ἐπεμμήνοις, οὔτε τοῖς ἄλλως μεμιασμένοις

ἐξῆν τῆςδε τῆς θυσίας μεταλαμβάνειν· ἀλλ' οὐδὲ τοῖς ἀλλοφύλοις, ὅσοι κατὰ θρησκείαν παρῆσαν.

4. Πολὺ δὲ τοῦτο πλῆθος ἔξωθεν συλλέγεται· τότε γε μὴν ὥςπερ εἰς εἱρκτὴν ὑπὸ τῆς εἱμαρμένης πᾶν συνεκλείσθη τὸ ἔθνος, καὶ ναστὴν ὁ πόλεμος τὴν πόλιν ἀνδρῶν ἐκυκλώσατο. Πᾶσαν γοῦν ἀνθρωπίνην καὶ δαιμόνιον φθορὰν ὑπερβάλλει τὸ πλῆθος τῶν ἀπολωλότων. Ἐπὶ γοῦν τῶν φανερῶν οὓς μὲν ἀνεῖλον, οὓς δ' ᾐχμαλωτίσαντο Ῥωμαῖοι, οὓς δ' ἐν τοῖς ὑπονόμοις ἀνηρεύνων, καὶ τὸ ἔδαφος ἀναῤῥηγνύντες ὅσοις μὲν ἐνετύγχανον ἔκτεινον. Εὑρέθησαν δὲ καὶ ἐκεῖ νεκροὶ πλείους δισχιλίων, οἱ μὲν ὑπὸ σφῶν αὐτῶν, οἱ δ' ὑπ' ἀλλήλων, τὸ πλέον δ' ὑπὸ τοῦ λιμοῦ διεφθαρμένοι. Δεινὴ δὲ ὑπήντα τοῖς ἐπειςπίπτουσιν ὀδμὴ τῶν σωμάτων, ὡς πολλοὺς μὲν ἀναχωρεῖν εὐθέως, τοὺς δὲ ὑπὸ πλεονεξίας εἰςδύεσθαι, νεκροὺς σεσωρευμένους ἐμπατοῦντας· πολλὰ γὰρ τῶν κειμηλίων ἐν ταῖς διώρυξιν εὑρίσκετο, καὶ πᾶσαν θεμιτὴν τὴν ὁδὸν ἐποίει τὸ κέρδος. Ἀνήγοντο δὲ καὶ δεσμῶται πολλοὶ τῶν τυράννων· οὐδὲ γὰρ ἐν ἐσχάτοις ἐπαύσαντο τῆς ὠμότητος. Ἀπετίσατό γε μὴν ὁ θεὸς ἀμφοτέρους ἀξίως· καὶ Ἰωάννης μὲν, λιμώττων μετὰ τῶν ἀδελφῶν ἐν τοῖς ὑπονόμοις, ἣν πολλάκις ὑπερηφάνησε δεξιὰν παρὰ Ῥωμαίων λαβεῖν ἱκέτευε· Σίμων δὲ, πολλὰ διαμαχήσας πρὸς τὴν ἀνάγκην, ὡς διὰ τῶν ἑξῆς δηλώσομεν, ἑαυτὸν παραδίδωσιν. Ἐφυλάχθη δὲ ὁ μὲν τῷ θριάμβῳ σφάγιον, ὁ δὲ Ἰωάννης δεσμοῖς αἰωνίοις. Ῥωμαῖοι δὲ τάς τε ἐσχατιὰς τοῦ ἄστεος ἐνέπρησαν, καὶ τὰ τείχη κατέσκαψαν.

CAP. X. 1. Ἑάλω μὲν οὕτως Ἱεροσόλυμα ἔτει δευτέρῳ τῆς Οὐεσπασιανοῦ ἡγεμονίας, Γορπιαίου μηνὸς ὀγδόῃ. Ἁλοῦσα δὲ καὶ πρότερον πεντάκις, τοῦτο δεύτερον ἠρημώθη. Ἀσωχαῖος μὲν γὰρ ὁ τῶν 400

Αἰγυπτίων βασιλεὺς, καὶ μετ᾽ αὐτὸν Ἀντίοχος, ἔπειτα Πομπήϊος, ἐπὶ τούτοις σὺν Ἡρώδῃ Σόσσιος ἑλόντες ἐτήρησαν τὴν πόλιν. Πρὸ δὲ τούτων ὁ τῶν Βαβυλωνίων βασιλεὺς κρατήσας ἠρήμωσεν αὐτὴν μετὰ ἔτη τῆς κτίσεως χίλια τετρακόσια ἑξήκοντα ὀκτὼ μῆνας ἕξ. Ὁ δὲ πρῶτος κτίσας ἦν Χαναναίων δυνάστης, ὁ τῇ πατρίῳ γλώσσῃ κληθεὶς βασιλεὺς δίκαιος· ἦν γὰρ δὴ τοιοῦτος. Διὰ τοῦτο ἱεράσατό τε τῷ θεῷ πρῶτος, καὶ τὸ ἱερὸν πρῶτος δειμάμενος, Ἱεροσόλυμα τὴν πόλιν προςηγόρευσε, Σόλυμα καλουμένην πρότερον. Τὸν μὲν δὴ τῶν Χαναναίων λαὸν ἐκβαλὼν ὁ τῶν Ἰουδαίων βασιλεὺς Δαυΐδης κατοικίζει τὸν ἴδιον· καὶ μετ᾽ αὐτὸν ἔτεσι τετρακοσίοις ἑβδομήκοντα καὶ ἑπτὰ, μησὶν ἓξ, ὑπὸ Βαβυλωνίων κατασκάπτεται. Ἀπὸ δὲ Δαυΐδου τοῦ βασιλέως, ὃς πρῶτος αὐτῆς ἐβασίλευσεν Ἰουδαῖος, μέχρι τῆς ὑπὸ Τίτου γενομένης κατασκαφῆς, ἔτη χίλια καὶ ἑκατὸν ἑβδομήκοντα ἐννέα. Ἀπὸ δὲ τῆς πρώτης κτίσεως ἔτη μέχρι τῆς ἐσχάτης ἁλώσεως διςχίλια ἑκατὸν, ἑβδομήκοντα καὶ ἑπτά. Ἀλλὰ γὰρ οὔθ᾽ ἡ ἀρχαιότης, οὔθ᾽ ὁ βαθὺς πλοῦτος, οὔτε τὸ διαπεφοιτηκὸς ὅλης τῆς οἰκουμένης ἔθνος, οὔθ᾽ ἡ μεγάλη δόξα τῆς θρησκείας ἤρκεσέ τι πρὸς ἀπώλειαν αὐτῇ. Τοιοῦτον μὲν δὴ τὸ τέλος τῆς Ἱεροσολύμων πολιορκίας.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ ΤΟΥ ΙΟΥΔΑΙΚΟΥ ΠΟΛΕΜΟΥ

Η

ΙΟΥΔΑΙΚΗΣ ἹΣΤΟΡΙΑΣ ΠΕΡΙ ἉΛΩΣΕΩΣ

ΛΟΓΟΣ Ζ.

Argumentum Lib. VII.

(1) Ὡς κατεσκάφη πᾶσα ἡ πόλις Ἱεροσολύμων, πλὴν τριῶν πύργων. (2) Ὡς Τίτος ἐν Καισαρείᾳ Φιλίππου παντοίας θεωρίας ἐπιτελεῖ. Περὶ Σίμωνος τοῦ τυράννου. (3) Ὅπως Τίτος τὴν γενέθλιον ἡμέραν τοῦ ἀδελφοῦ καὶ πατρὸς ἄγων πολλοὺς τῶν Ἰουδαίων ἀνάλωσεν. (4) Ὅπως Οὐεσπασιανὸν ἐδέξατο ἡ Ῥώμη. (5) Περὶ τοῦ ποταμοῦ Σαββατικοῦ, καὶ ὅπως Ἀντιοχεῖς κατὰ Ἰουδαίων προσελθόντες Τίτῳ παρηκούσθησαν. (6) Περὶ Μαχαιροῦντος· καὶ ὡς τὸ φρούριον, ἄλλους τε τόπους αἱρεῖ Λουκίλιος Βάσσος. (7) Περὶ συμφορᾶς Ἀντιόχου τοῦ Κομμαγηνῶν βασιλέως· περί τε τῶν Ἀλανῶν. (8) Περὶ Μασάδας· καὶ ὡς Σίλβας εἰς τὴν φρουρίου πολιορκίαν ἐτράπετο. (9) Ὅπως οἱ κατὰ τὸ φρούριον, πλὴν δύο γυναικῶν καὶ παιδίων πέντε, πάντες ἑαυτοὺς ἀπέσφαξαν. (10) Ὅπως καὶ κατὰ τὴν Ἀλεξάνδρειαν τῶν σικαρίων συμφυγόντων πολλοὶ μὲν ἐκινδύνευσαν. (11) Περὶ Ἰωνάθου σικαρίων ἑνὸς ἐν Κυρήνῃ.

CAP. I. 1. Ἐπεὶ δὲ οὔτε φονεύειν οὔτε διαρπάζειν εἶχεν ἡ στρατιά, πάντων τοῖς θυμοῖς ἐπιλιπόντων, 403

— οὐ γὰρ δή γε φειδοῖ τινὸς ἔμελλον ἀφέξασθαι δρᾶν ἔχοντες, — κελεύει Καῖσαρ ἤδη τήν τε πόλιν ἅπασαν καὶ τὸν νεὼν κατασκάπτειν, πύργους μὲν, ὅσοι τῶν ἄλλων ὑπερανεστήκεσαν, καταλιπόντας, Φασάηλον, Ἱππικὸν, Μαριάμμην, τεῖχος δὲ ὅσον ἦν ἐξ ἑσπέρας τὴν πόλιν περιέχον· τοῦτο μὲν, ὅπως εἴη τοῖς ὑπολειφθησομένοις φρουροῖς στρατόπεδον, τοὺς πύργους δὲ, ἵνα τοῖς ἔπειτα σημαίνωσιν, οἵας πόλεως, καὶ τίνα τρόπον ὀχυρᾶς οὕτως, ἐκράτησεν ἡ Ῥωμαίων ἀνδραγαθία. Τὸν δ' ἄλλον ἅπαντα τῆς πόλεως περίβολον οὕτως ἐξωμάλισαν οἱ κατασκάπτοντες, ὡς μηδὲ πώποτ' οἰκηθῆναι πίστιν ἂν ἔτι παρασχεῖν τοῖς προςελθοῦσι. Τοῦτο μὲν οὖν τέλος ἐκ τῆς τῶν νεωτερισάντων ἀνοίας Ἱεροσολύμοις ἐγένετο, λαμπρᾷ τε πόλει καὶ παρὰ πᾶσιν ἀνθρώποις διαβοηθείσῃ.

404 2. Καῖσαρ δὲ φυλακὴν μὲν αὐτόθι καταλιπεῖν ἔγνω τῶν ταγμάτων τὸ δέκατον, καί τινας ἴλας ἱππέων καὶ λόχους πεζῶν· πάντα δὲ ἤδη τὰ τοῦ πολέμου διῳκηκὼς, ἐπαινέσαι τε σύμπασαν ἐπόθει στρατιὰν ἐπὶ τοῖς κατωρθωμένοις, καὶ τὰ προςήκοντα γέρα τοῖς ἀριστεύσασιν ἀποδοῦναι. Ποιηθέντος οὖν αὐτῷ μεγάλου κατὰ μέσην τὴν πρότερον παρεμβολὴν, βήματος, καταστὰς ἐπὶ τούτῳ μετὰ τῶν ἡγεμονικωτάτων, εἰς ἐπήκοον ἁπάσῃ τῇ στρατιᾷ ἔλεγε, 'χάριν μὲν πολλὴν ἔχειν αὐτοῖς τῆς πρὸς αὐτὸν εὐνοίας, ᾗ χρώμενοι διατελοῦσιν. Ἐπῄνει δὲ τῆς ἐν παντὶ πολέμῳ πειθαρχίας, ἣν ἐν πολλοῖς καὶ μεγάλοις κινδύνοις ἅμα τῇ κατὰ σφᾶς ἀνδρείᾳ παρέσχον, τῇ μὲν πατρίδι καὶ δι' αὐτῶν τὸ κράτος αὔξοντες, φανερὸν δὲ πᾶσιν ἀνθρώποις καθιστάντες, ὅτι μήτε πλῆθος πολεμίων, μήτε χωρίων ὀχυρότητες, ἢ μεγέθη πόλεων, ἢ τῶν ἀντιτεταγμένων ἀλόγιστοι τόλμαι, καὶ θηριώδεις ἀγριότητες, δύναιντ' ἄν ποτε τὴν Ῥωμαίων ἀρετὴν διαφυγεῖν, καὶ ἐὰν εἰς πολλά τινές τὴν τύχην εὕρωνται συναγωνιζομένην. Καλὸν μὲν οὖν, ἔφη, καὶ τῷ πολέμῳ τέλος αὐτοὺς ἐπιθεῖναι, πολλῷ

χρόνῳ γενομένῳ· μηδὲ γὰρ εὔξασθαί τι τούτων ἄμεινον, ὅτ' εἰς αὐτὸν καθίσταντο. Τούτου δὲ κάλλιον αὐτοῖς, καὶ λαμπρότερον ὑπάρχειν, ὅτι τοὺς ἡγησομένους καὶ τῆς Ῥωμαίων ἀρχῆς ἐπιτροπεύσοντας, αὐτῶν χειροτονησάντων, εἴς τε τὴν πατρίδα προπεμψάντων ἄσμενοι πάντες προςίενται, καὶ τοῖς ὑπ' αὐτῶν ἐγνωσμένοις ἐμμένουσι, χάριν ἔχοντες τοῖς ἑλομένοις. Θαυμάζειν μὲν οὖν, ἔφη, πάντας καὶ ἀγαπᾶν, εἰδὼς, ὅτι τοῦ δυνατοῦ τὴν προθυμίαν οὐδεὶς ἔσχε βραδυτέραν· τοῖς μέντοι διαπρεπέστερον ἀγωνισαμένοις, ὑπὸ ῥώμης πλείονος, καὶ τὸν μὲν ἑαυτῶν βίον ἀριστείαις κεκοσμηκόσι, τὴν δὲ αὐτοῦ στρατιὰν ἐπιφανεστέραν διὰ τῶν κατορθωμάτων πεποιηκόσιν, ἔφη, τὰ γέρα, καὶ τὰς τιμὰς εὐθὺς ἀποδώσειν, καὶ μηδένα τῶν πλέον πονεῖν ἑτέρου θελησάντων τῆς δικαίας ἀμοιβῆς ἁμαρτήσεσθαι. Πλείστην γὰρ αὐτῷ τούτου γενήσεσθαι τὴν ἐπιμέλειαν, ἐπεὶ καὶ μᾶλλον ἐθέλειν τὰς ἀρετὰς τιμᾶν τῶν συστρατευομένων, ἢ κολάζειν τοὺς ἁμαρτάνοντας.'

3. Εὐθέως οὖν ἐκέλευσεν ἀναγινώσκειν τοῖς ἐπὶ τούτῳ τεταγμένοις, ὅσοι τι λαμπρὸν ἦσαν ἐν πολέμῳ κατωρθωκότες. Καὶ κατ' ὄνομα καλῶν, ἐπῄνει τε παρόντας, ὡς ἂν ὑπερευφραινόμενός τις ἐπ' οἰκείοις κατορθώμασι; καὶ στεφάνους ἐπετίθει χρυσοῦς, περιαυχένιά τε χρυσᾶ, καὶ δόρατα μακρὰ χρυσᾶ, καὶ σημαίας ἐδίδου πεποιημένας ἐξ ἀργύρου, καὶ τὴν ἑκάστου τάξιν ἤλλαττεν εἰς τὸ κρεῖττον. Οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ ἐκ τῶν λαφύρων ἄργυρον, καὶ χρυσὸν, ἐσθῆτάς τε, καὶ τῆς ἄλλης αὐτοῖς λείας δαψιλῶς ἀπένειμε. Πάντων δὲ τετιμημένων, ὅπως ἂν αὐτὸς ἕκαστον ἠξίωσε, τῇ συμπάσῃ στρατιᾷ ποιησάμενος εὐχὰς, ἐπὶ πολλῇ κατέβαινεν εὐφημίᾳ, τρέπεταί τε πρὸς θυσίας ἐπινικίους· καὶ πολλοῦ βοῶν πλήθους 405
τοῖς βωμοῖς παρεστηκότος, καταθύσας ἅπαντας, τῇ στρατιᾷ διαδίδωσιν εἰς εὐωχίαν. Αὐτὸς δὲ τοῖς ἐν τέλει τρεῖς ἡμέρας συνεορτάσας, τὴν μὲν ἄλλην στρα-

τιὰν διαφίησιν, ᾗ καλῶς ἔχειν ἑκάστους ἀπιέναι· τῷ δεκάτῳ δὲ τάγματι τὴν τῶν Ἱεροσολύμων ἐπέτρεψε φυλακὴν, οὐκέτ' αὐτοὺς ὑπὸ τὸν Εὐφράτην ἀποστείλας, ἔνθα πρότερον ἦσαν. Μεμνημένος δὲ τοῦ δωδεκάτου τάγματος, ὅτι Κεστίου στρατηγοῦντος ἐνέδωκαν τοῖς Ἰουδαίοις, τῆς μὲν Συρίας αὐτὸ παντάπασιν ἐξήλασεν, ἦν γὰρ τὸ παλαιὸν ἐν Ῥαφαναίαις, εἰς δὲ τὴν Μελιτινὴν καλουμένην ἀπέστειλε, παρὰ τὸν Εὐφράτην ἐν μεθορίοις τῆς Ἀρμενίας ἐστὶ καὶ Καππαδοκίας. Δύο δὲ ἠξίωσεν αὐτῶν μέχρι τῆς εἰς Αἴγυπτον ἀφίξεως, τὸ πέμπτον καὶ τὸ πεντεκαιδέκατον, παραμένειν. Καὶ καταβὰς ἅμα τῷ στρατῷ πρὸς τὴν ἐπὶ τῇ θαλάττῃ Καισάρειαν, εἰς ταύτην τό τε πλῆθος τῶν λαφύρων ἀπέθετο, καὶ τοὺς αἰχμαλώτους προσέταξεν ἐν αὐτῇ φυλάττεσθαι· τὸν γὰρ εἰς τὴν Ἰταλίαν πλοῦν ὁ χειμὼν ἐκώλυε.

CAP. II. 1. Καθ' ὃν δὲ καιρὸν Τίτος Καῖσαρ τοῖς Ἱεροσολύμοις πολιορκῶν προσήδρευεν, ἐν τούτῳ νεὼς φορτίδος Οὐεσπασιανὸς ἐπιβὰς ἀπὸ τῆς Ἀλεξανδρείας εἰς Ῥόδον διέβαινεν. Ἐντεῦθεν δὲ πλέων ἐπὶ τριηρῶν, καὶ πάσας τὰς ἐν τῷ παράπλῳ πόλεις ἐπελθὼν, εὐκταίως αὐτὸν δεχομένας, ἀπὸ τῆς Ἰωνίας εἰς τὴν Ἑλλάδα περαιοῦται, καὶ ἐκεῖθεν ἀπὸ Κερκύρας ἐπ' ἄκραν Ἰαπυγίαν, ὅθεν ἤδη κατὰ γῆν ἐποιεῖτο τὴν πορείαν. Τίτος δὲ ἀπὸ τῆς ἐπὶ θαλάττῃ Καισαρείας ἀναζεύξας εἰς τὴν Φιλίππου καλουμένην Καισάρειαν ἧκεν, συχνόν τ' ἐν αὐτῇ χρόνον ἐπέμενε, παντοίας θεωρίας ἐπιτελῶν. Καὶ πολλοὶ τῶν αἰχμαλώτων ἐνταῦθα διεφθάρησαν, οἱ μὲν θηρίοις παραβληθέντες, οἱ δὲ κατὰ πληθὺν ἀλλήλοις ἀναγκαζόμενοι χρήσασθαι πολεμίοις. Ἐνταῦθα καὶ τὴν Σίμωνος τοῦ Γιώρα σύλληψιν ἐπύθετο, τοῦτον γενομένην τὸν τρόπον.

2. Σίμων οὗτος, Ἱεροσολύμων πολιορκουμένων,

ἐπὶ τῆς ἄνω πόλεως ὢν, ἐπεὶ τῶν τειχῶν ἐντὸς ἡ Ῥωμαίων στρατιὰ γενομένη πᾶσαν ἐπόρθει τὴν πόλιν, τότε τῶν φίλων τοὺς πιστοτάτους παραλαβὼν, καὶ σὺν αὐτοῖς λιθοτόμους τε καὶ τὸν πρὸς τὴν ἐργασίαν ἐπιτήδειον τούτοις σίδηρον τροφήν τε διαρκεῖν εἰς πολλὰς ἡμέρας δυναμένην, σὺν ἐκείνοις ἅπασιν καθίησιν ἑαυτὸν εἴς τινα τῶν ἀφανῶν ὑπονόμων· καὶ μέχρι μὲν ἦν τὸ παλαιὸν ὄρυγμα, προεχώρουν δι᾽ αὐτοῦ. Τῆς στερεᾶς δὲ γῆς ὑπαντώσης, ταύτην ὑπενόμευον, ἐλπίδι τοῦ πορρωτέρω δυνήσεσθαι προελθόντες, ἐν ἀσφαλεῖ ποιησάμενοι τὴν ἀνάδυσιν ἀποσώζεσθαι. Ψευδῆ δὲ τὴν ἐλπίδα διήλεγχεν ἡ πεῖρα τῶν ἔργων· ὀλίγον τε γὰρ μόλις προ- 460
έβαινον οἱ μεταλλεύοντες, ἥ τε τροφὴ, καίτοι ταμιευομένοις, ἔμελλεν ἐπιλείψειν. Τότε δὴ τοίνυν, ὡς δι᾽ ἐκπλήξεως ἀπατῆσαι τοὺς Ῥωμαίους δυνησόμενος, λευκοὺς ἐνδιδύσκει χιτωνίσκους, καὶ πορφυρᾶν ἐμπεροναησάμενος χλανίδα, κατ᾽ αὐτὸν ἐκεῖνον τὸν τόπον, ἐν ᾧ τὸ ἱερὸν ἦν πρόσθεν, ἐκ γῆς ἀνεφάνη. Τὸ μὲν οὖν πρῶτον τοῖς ἰδοῦσι θάμβος προσέπεσε, καὶ κατὰ χώραν ἔμενον· ἔπειτα δ᾽ ἐγγυτέρω προσελθόντες, 'ὅςτις ἐστὶν,' ἤροντο. Καὶ τοῦτο μὲν οὐκ ἐδήλου Σίμων αὐτοῖς, καλεῖν δὲ τὸν ἡγεμόνα προσέταττεν. Καὶ ταχέως πρὸς αὐτὸν δραμόντων, ἧκε Τερέντιος Ῥοῦφος· οὗτος γὰρ ἄρχων τῆς στρατιᾶς κατελέλειπτο. Πυθόμενός τε παρ᾽ αὐτοῦ πᾶσαν τὴν ἀλήθειαν, τὸ μὲν ἐφύλαττε δεδεμένον, Καίσαρι δὲ, ὅπως τε εἴη συνειλημμένος, ἐδήλου. Σίμωνα μὲν οὖν εἰς δίκην τῆς κατὰ τῶν πολιτῶν ὠμότητος, ὧν πικρῶς αὐτὸς ἐτυράννησεν, ὑπὸ τοῖς μάλιστα μισοῦσι πολεμίοις ἐποίησεν ὁ θεὸς, οὐ βίᾳ γενόμενον αὐτοῖς ὑποχείριον, ἀλλ᾽ ἑαυτὸν ἑκουσίως εἰς τὴν τιμωρίαν περιβαλόντα, δι᾽ ὃ πολλοὺς αὐτὸς ὠμῶς ἀπέκτεινε, ψευδεῖς αἰτίας ἐπιφέρων τῆς πρὸς Ῥωμαίους μεταβολῆς. Οὐ γὰρ διαφεύγει πονηρία θεοῦ χόλον, οὐδὲ ἀσθενήσει δίκη· χρόνῳ δὲ μέτεισι τοὺς

εἰς αὐτὴν παρανομήσαντας, καὶ χείρω τὴν τιμωρίαν ἐπιφέρει τοῖς πονηροῖς, ὅτι καὶ προςεδόκησαν αὐτῆς ἀπηλλάχθαι, μὴ παραυτίκα κολασθέντες. Ἔγνω τοῦτο καὶ Σίμων εἰς τὰς Ῥωμαίων ὀργὰς ἐμπεσών. Ἡ δὲ ἐκείνου γῆθεν ἄνοδος πολὺ καὶ τῶν ἄλλων στασιαστῶν πλῆθος, ὑπ᾽ ἐκείνας τὰς ἡμέρας, ἐν τοῖς ὑπονόμοις φωραθῆναι παρεσκεύασε. Καίσαρι δὲ εἰς τὴν παράλιον ἐπανελθόντι Καισάρειαν, Σίμων προςήχθη δεδεμένος· καὶ ἐκεῖνον μέν, εἰς ὃν ἐπιτελεῖν ἐν Ῥώμῃ παρεσκευάζετο θρίαμβον, προςέταξε φυλάττειν.

CAP. III. 1. Διατρίβων δὲ αὐτόθι τὴν τοῦ ἀδελ-
φοῦ γενέθλιον ἡμέραν ἐπιφανῶς ἑώρταζε, πολὺ καὶ
τῆς τῶν Ἰουδαίων κολάσεως εἰς τὴν ἐκείνου τιμὴν
ἀνατιθείς. Ὁ γὰρ ἀριθμὸς τῶν ἔν τε ταῖς πρὸς τὰ
θηρία μάχαις, καὶ τῶν καταπιπραμένων, ἔν τε ταῖς
ἀλληλοκτονίαις ἀναιρουμένων, πεντακοσίους ἐπὶ τοῖς
διςχιλίοις ὑπερέβαλε. Πάντα μέντοι Ῥωμαίοις ἐδό-
κει ταῦτα, μυρίοις αὐτῶν ἀπολλυμένων τρόποις, ἐ-
λάττων κόλασις εἶναι. Μετὰ τοῦτο Καίσαρ εἰς Βη-
ρυτὸν ἧκεν· ἡ δὲ ἔστιν ἐν τῇ Φοινίκῃ πόλις, Ῥω-
μαίων ἄποικος. Καὶ ἐνταῦθα χρονιωτέραν ἐποιή-
σατο τὴν ἐπιδημίαν, πλείονι χρώμενος τῇ λαμπρό-
τητι, περὶ τὴν τοῦ πατρὸς ἡμέραν γενέθλιον, ἔν τε
407 ταῖς τῶν θεωριῶν πολυτελείαις, καὶ κατὰ τὴν ἄλ-
λην ἐπίνοιαν τῶν ἄλλων ἀναλωμάτων. Τὸ δὲ τῶν
αἰχμαλώτων πλῆθος τὸν αὐτὸν τρόπον, ὡς πρόσθεν,
ἀπώλλυτο.

2. Γενέσθαι δὲ συνέβη περὶ τὸν καιρὸν τοῦτον καὶ τοῖς ἐν Ἀντιοχείᾳ τῶν Ἰουδαίων ὑπολιπομένοις ἐγκλήματα καὶ κίνδυνον ὀλέθρου, τῆς πόλεως ἐπ᾽ αὐτοὺς τῶν Ἀντιοχέων ἐκταραχθείσης, διά τε τὰς ἐν τῷ παρόντι διαβολὰς αὐτοῖς ἐπενεχθείσας, καὶ διὰ τὰ προϋπηργμένα χρόνῳ πρόσθεν οὐ πολλῷ. Περὶ ὧν ἀναγκαῖόν ἐστι διὰ συντόμων προειπεῖν, ἵνα

καὶ τῶν μετὰ ταῦτα πραχθέντων εὐπαρακολούθητον ποιήσωμαι τὴν διήγησιν.

3. Τὸ γὰρ Ἰουδαίων γένος πολὺ μὲν κατὰ πᾶσαν τὴν οἰκουμένην παρέσπαρται τοῖς ἐπιχωρίοις· πλεῖστον δὲ τῇ Συρίᾳ κατὰ τὴν γειτνίασιν ἀναμεμιγμένον, ἐξαιρέτως δ' ἐπὶ τῆς Ἀντιοχείας ἦν πολὺ, διὰ τὸ τῆς πόλεως μέγεθος, μάλιστα δὲ αὐτοῖς ἀδεᾶ τὴν ἐκεῖ κατοίκησιν οἱ μετ' Ἀντίοχον βασιλεῖς παρέσχον. Ἀντίοχος μὲν γὰρ, ὁ κληθεὶς Ἐπιφανὴς, Ἱεροσόλυμα πορθήσας, τὸν ναὸν ἐσύλησεν· οἱ δὲ μετ' αὐτὸν τὴν βασιλείαν παραλαβόντες τῶν ἀναθημάτων, ὅσα χαλκᾶ πεποίηντο, πάντα τοῖς ἐπ' Ἀντιοχείας Ἰουδαίοις ἀπέδοσαν, εἰς τὴν συναγωγὴν αὐτῶν ἀναθέντες, καὶ συνεχώρησαν αὐτοῖς ἐξ ἴσου τῆς πόλεως τοῖς Ἕλλησι μετέχειν. Τὸν αὐτὸν δὲ τρόπον καὶ τῶν μετὰ ταῦτα βασιλέων αὐτοῖς προςφερομένων, εἴς τε τὸ πλῆθος ἐπέδωκαν, καὶ τῇ κατασκευῇ, καὶ τῇ πολυτελείᾳ τῶν ἀναθημάτων τὸ ἱερὸν ἐξελάμπρυναν. Ἀεί τε προςαγόμενοι ταῖς θρησκείαις πολὺ πλῆθος Ἑλλήνων, καὶ ἐκείνους τρόπῳ τινὶ μοῖραν αὐτῶν πεποίηντο. Καθ' ὃν δὲ καιρὸν ὁ πόλεμος ἀνεκεκήρυκτο, νεωστὶ δὲ εἰς τὴν Συρίαν Οὐεσπασιανὸς κατεπεπλεύκει, τὸ δὲ κατὰ τῶν Ἰουδαίων παρὰ πᾶσιν ἤκμαζε μῖσος, τότε δή τις Ἀντίοχος εἷς ἐξ αὐτῶν τὰ μάλιστα διὰ τὸν πατέρα τιμώμενος, ἦν γὰρ ἄρχων τῶν ἐπ' Ἀντιοχείας Ἰουδαίων, τοῦ δήμου τῶν Ἀντιοχέων ἐκκλησιάζοντος, εἰς τὸ θέατρον παρελθὼν, τόν τε πατέρα τὸν αὐτοῦ καὶ τοὺς ἄλλους ἐνεδείκνυτο κατηγορῶν, ὅτι νυκτὶ μιᾷ καταπρῆσαι τὴν πόλιν ἅπασαν διεγνώκεισαν, καὶ παρεδίδου ξένους Ἰουδαίους τινὰς, ὡς κεκοινωνηκότας τῶν βεβουλευμένων. Ταῦτα δ' ἀκούων ὁ δῆμος τὴν ὀργὴν οὐ κατεῖχεν, ἀλλ' ἐπὶ μὲν τοὺς παραδοθέντας πῦρ εὐθὺς ἐκέλευον κομίζειν, καὶ παραχρῆμα πάντες ἐπὶ τοῦ θεάτρου κατεφλέγησαν· ἐπὶ δὲ τὸ πλῆθος ὥρμηντο τῶν Ἰουδαίων, ἐν τῷ τάχιον ἐκείνους τιμωρίᾳ περιβαλεῖν τὴν

αὐτῶν πατρίδα σώζειν νομίζοντες. Ἀντίοχος δὲ προςεπέτεινε τὴν ὀργὴν, περὶ μὲν τῆς αὐτοῦ μεταβολῆς, καὶ τοῦ μεμισηκέναι τὰ τῶν Ἰουδαίων ἔθη, τεκμήριον ἐμπαρέχειν οἰόμενος τὸ ἐπιθύειν, ὥςπερ νόμος ἐστὶ τοῖς Ἕλλησιν· ἐκέλευε δὲ καὶ τοὺς ἄλλους ταὐτὸ ποιεῖν ἀναγκάζειν, φανεροὺς γὰρ γενήσεσθαι
408 τῷ μὴ θέλειν τοὺς ἐπιβεβουλευκότας. Χρωμένων δὲ τῇ πείρᾳ τῶν Ἀντιοχέων, ὀλίγοι μὲν ὑπέμειναν· οἱ δὲ μὴ βουληθέντες, ἀνῃρέθησαν. Ἀντίοχος δὲ στρατιώτας παρὰ τοῦ Ῥωμαίων ἡγεμόνος λαβὼν, χαλεπὸς ἐφειστήκει τοῖς αὐτοῦ πολίταις, ἀργεῖν τὴν ἑβδόμην οὐκ ἐπιτρέπων, ἀλλὰ βιαζόμενος πάντα πράττειν, ὅσα δὴ καὶ ταῖς ἄλλαις ἡμέραις· οὕτω τε τὴν ἀνάγκην ἰσχυρὰν ἐποίησεν, ὡς μὴ μόνον ἐπ᾽ Ἀντιοχείας καταλυθῆναι τὴν ἑβδομάδα ἀργὴν ἡμέραν, ἀλλ᾽ ἐκεῖθεν ἀρξαμένου τοῦ πράγματος, καὶ ἐν ταῖς ἄλλαις πόλεσιν ὁμοίως, βραχύν τινα χρόνον.

4. Τοιούτων δὴ τοῖς ἐπὶ τῆς Ἀντιοχείας Ἰουδαίοις τῶν κατ᾽ ἐκεῖνον τὸν καιρὸν κακῶν γεγενημένων, δευτέρα πάλιν συμφορὰ προςέπεσε· περὶ ἧς ἀφηγεῖσθαι ἐπιχειρήσαντες, καὶ ταῦτα διεξήλθομεν. Ἐπεὶ γὰρ συνέβη καταπρησθῆναι τὴν τετράγωνον ἀγορὰν, ἀρχεῖά τε καὶ γραμματοφυλάκιον, καὶ τὰς βασιλικὰς, μόλις τε τὸ πῦρ ἐκωλύθη μετὰ πολλῆς βίας ἐπὶ πᾶσαν τὴν πόλιν περιφερόμενον, ταύτην Ἀντίοχος τὴν πρᾶξιν Ἰουδαίων κατηγόρει. Καὶ τοὺς Ἀντιοχεῖς, εἰ καὶ μὴ πρότερον εἶχον πρὸς αὐτοὺς ἀπεχθῶς, τάχιστα τῇ διαβολῇ παρὰ τὴν ἐκ τοῦ συμβεβηκότος ταραχὴν ὑπαχθέντας, πολὺ μᾶλλον ἐκ τῶν προϋπηργμένων τοῖς ὑπ᾽ αὐτοῦ λεγομένοις, πιστεύειν παρεσκεύασεν, ὡς μόνον οὐκ ἐπ᾽ αὐτοὺς τὸ πῦρ ἐνιέμενον ὑπὸ τῶν Ἰουδαίων ἑωρακότας, καὶ καθάπερ ἐμμανεῖς γεγενημένοι μετά πολλοῦ τινος οἴστρου πάντες ἐπὶ τοὺς διαβεβλημένους ὥρμηντο. Μόλις δὲ αὐτῶν ἐδυνήθη τὰς ὁρμὰς ἐπισχεῖν Κνέος Κολλήγας τις, πρεσβευτὴς, ἀξιῶν ἐπιτρέψαι Καίσα-

ρι δηλωθῆναι περὶ τῶν γεγονότων. Τὸν γὰρ ἡγεμονεύοντα τῆς Συρίας Καισέννιον Παῖτον ἤδη μὲν Οὐεσπασιανὸς ἐξαπεστάλκει, συνέβαινε δὲ παρεῖναι μηδέπω. Ποιούμενος δ' ἐπιμελῆ τὴν ζήτησιν ὁ Κολλήγας, ἐξεῦρε τὴν ἀλήθειαν, καὶ τῶν μὲν τὴν αἰτίαν ὑπ' Ἀντιόχου λαβόντων Ἰουδαίων, οὐδεὶς οὐδ' ἐκοινώνησεν, ἅπαν δὲ τὸ ἔργον ἔπραξαν ἄνθρωποί τινες ἀλιτήριοι, διὰ χρεῶν ἀνάγκας, νομίζοντες, εἰ τὴν ἀγορὰν καὶ τὰ δημόσια καταπρήσειαν γράμματα, τῆς ἀπαιτήσεως ἀπαλλαγὴν ἕξειν. Ἰουδαῖοι μὲν οὖν ἐπὶ μετεώροις ταῖς αἰτίαις τὸ μέλλον ἔτι καραδοκοῦντες, ἐν φόβοις χαλεποῖς ἐπεσάλευον.

CAP. IV. 1. Τίτος δὲ Καῖσαρ, τῆς περὶ τοῦ πατρὸς ἀγγελίας αὐτῷ κομισθείσης, ὅτι πάσαις μὲν ποθεινὸς ταῖς κατὰ τὴν Ἰταλίαν πόλεσιν ἐπῆλθε, μάλιστα δὲ ἡ Ῥώμη μετὰ πολλῆς αὐτὸν ἐδέξατο προθυμίας καὶ λαμπρότητος, εἰς πολλὴν χαρὰν καὶ θυμηδίαν ἐτράπετο, τῶν περὶ αὐτοῦ φροντίδων ὡς ἥδιστον ἦν ἀπηλλαγμένος. Οὐεσπασιανὸν γὰρ, ἔτι μὲν καὶ μακρὰν ἀπόντα, πάντες οἱ κατὰ τὴν Ἰταλίαν ἄνθρωποι ταῖς γνώμαις περιεῖπον ὡς ἥκοντα, τὴν προςδοκίαν ἐκ τοῦ πάνυ θέλειν ἄφιξιν αὐτοῦ νομίζοντες, καὶ πάσης ἀνάγκης ἐλευθέραν τὴν πρὸς αὐτὸν ἔχοντες εὔνοιαν. Τῇ τε γὰρ βουλῇ κατὰ μνήμην τῶν γεγενημένων ἐν ταῖς τῶν ἡγεμόνων μεταβολαῖς συμφορῶν, εὐκταῖον ἦν ἀπολαβεῖν ἡγεμόνα, γήρως σεμνότητι καὶ πράξεων ἀκμῇ πολεμικῶν κεκοσμημένον, ᾧ τὴν ὑπεροχὴν πρὸς μόνην ἠπίσταντο τὴν τῶν ἀρχομένων σωτηρίαν ἐσομένην. Καὶ μὴν ὁ δῆμος ὑπὸ τῶν ἐμφυλίων κακῶν τετρυχωμένος ἔτι μᾶλλον ἐλθεῖν αὐτὸν ἔσπευδε· τότε δὴ βεβαίως μὲν ἀπαλλαγήσεσθαι τῶν συμφορῶν ὑπολαμβάνων, ἀπολήψεσθαι δὲ τὴν ἄδειαν μετὰ τῆς εὐετηρίας πεπιστευκώς. Ἐξαιρέτως δὲ τὸ στρατιωτικὸν εἰς αὐτὸν ἀφ-

εώρα· μάλιστα γὰρ οὗτοι τῶν κατωρθωμένων αὐτῷ πολέμων ἐγίνωσκον τὸ μέγεθος. Τῆς ἀπειρίας δὲ τῶν ἄλλων ἡγεμόνων καὶ τῆς ἀνανδρίας πεπειραμένοι, πολλῆς μὲν αἰσχύνης αὐτοὺς ἐπεθύμουν ἀπηλλάχθαι, τὸν μόνον δὲ καὶ σώζειν αὐτοὺς καὶ κοσμεῖν δυνάμενον ἀπολαβεῖν ηὔχοντο. Τοιαύτης δὲ εὐνοίας ἐξ ἁπάντων ὑπαρχούσης, τοῖς μὲν κατὰ τὰς ἀξιώσεις προέχουσι τῶν ἀνδρῶν οὐκ ἔτ' ἀνεκτὸν ἦν ἀναμένειν, ἀλλὰ πορρωτάτω τῆς Ῥώμης αὐτῷ προεντυχεῖν ἔσπευδον. Οὐ μὴν οὐδὲ τῶν ἄλλων τις ἠνείχετο τῆς ἐντεύξεως τὴν ἀναβολὴν, ἀλλ' οὕτως ἐξεχέοντο πάντες ἀθρόοι, καὶ πᾶσιν εὐπορώτερον καὶ ῥᾷον ἐδόκει τοῦ μένειν τὸ ἀπιέναι, ὡς καὶ τὴν πόλιν αὐτὴν τότε πρῶτον ἐν ἑαυτῇ λαβεῖν ὀλιγανθρωπίας αἴσθησιν ἡδεῖαν· ἦσαν γὰρ ἐλάττους τῶν ἀπιόντων οἱ μένοντες. Ἐπεὶ δὲ προσιὼν ἠγγέλλετο, καὶ τὴν ἡμερότητα τῆς εὐτεύξεως αὐτοῦ τὴν πρὸς ἑκάστους ἐδήλουν οἱ προελθόντες, ἅπαν ἤδη τὸ λοιπὸν πλῆθος ἅμα γυναιξὶ καὶ παισὶν ἐπὶ ταῖς παρόδοις ἐξεδέχετο, καὶ καθ' οὓς γένοιτο παριὼν πρὸς τὴν ἡδονὴν τῆς θέας καὶ τὸ μειλίχιον αὐτοῦ τῆς ὄψεως παντοίας ἠφίεσαν φωνὰς, τὸν εὐεργέτην καὶ σωτῆρα καὶ μόνον ἄξιον ἡγεμόνα τῆς Ῥώμης ἀποκαλοῦντες. Ἅπασα δὲ ἡ πόλις ὡς νεὼς ἦν, στεφανωμάτων καὶ θυμιαμάτων ἀνάπλεως. Μόλις δὲ ὑπὸ πλήθους τῶν περὶ αὐτὸν ἱσταμένων δυνηθεὶς εἰς τὸ βασίλειον ἐλθεῖν, αὐτὸς μὲν τοῖς ἔνδον θεοῖς θυσίας τῆς ἀφίξεως χαριστηρίους ἐπετέλει. Τρέπεται δὲ τὰ πλήθη πρὸς εὐωχίαν, καὶ κατὰ φυλὰς, καὶ γένη, καὶ γειτονίας ποιούμενοι τὰς ἑστιάσεις, ηὔχοντο τῷ θεῷ σπένδοντες, αὐτόν τ' ἐπὶ πλεῖσιον χρόνον Οὐεσπασιανὸν ἐπιμεῖναι τῇ Ῥωμαίων ἡγεμονίᾳ, καὶ παισὶν αὐτοῦ, καὶ τοῖς ἐξ ἐκείνων ἀεὶ γινομένοις, φυλαχθῆναι τὸ κράτος ἀνανταγώνιστον. Ἡ μὲν οὖν Ῥωμαίων πόλις, οὕτως Οὐεσπασιανὸν ἐκδεξαμένη προθύμως, εὐθὺς εἰς πολλὴν εὐδαιμονίαν ἐπεδίδου.

2. *Πρὸ δὲ τούτων ἔτι τῶν χρόνων, ἐν οἷς Οὐ-
εσπασιανὸς μὲν περὶ Ἀλεξάνδρειαν ἦν, Τίτος δὲ τῇ
τῶν Ἱεροσολύμων προςήδρευε πολιορκίᾳ, πολὺ μέρος
Γερμανῶν ἐκινήθη πρὸς ἀπόστασιν, οἷς καὶ Γαλα-
τῶν οἱ πλησίον συμφρονήσαντες, κοινῇ μεγάλας ἐλ-
πίδας αὐτοῖς συνέθεσαν, ὡς καὶ τῆς Ῥωμαίων ἀπ-
αλλαξόμενοι δεσποτείας. Ἐπῆρε δὲ αὐτοὺς Γερμα-
νοὺς ἅψασθαι τῆς ἀποστάσεως καὶ τὸν πόλεμον ἐξε- 410
νεγκεῖν πρῶτον μὲν ἡ φύσις, οὖσα λογισμῶν ἔρημος
ἀγαθῶν, καὶ μετὰ μικρᾶς ἐλπίδος ἑτοίμως ῥιψοκίν-
δυνος· ἔπειτα δὲ καὶ μῖσος τὸ πρὸς τοὺς κρατοῦν-
τας, ἐπεὶ μόνοις ἴσασι Ῥωμαίοις τὸ γένος αὐτῶν
δουλεύειν βιασαμένοις. Οὐ μὴν ἀλλὰ μάλιστά γε
πάντων ὁ καιρὸς αὐτοῖς θάρσος ἐνεποίησεν. Ὁρῶν-
τες γὰρ τὴν Ῥωμαίων ἀρχὴν ταῖς συνεχέσι τῶν αὐ-
τοκρατόρων ἀλλαγαῖς ἐν ἑαυτῇ τεταραγμένην, πᾶν τε
μέρος τῆς ὑπ᾽ αὐτοῖς οἰκουμένης πυνθανόμενοι με-
τέωρον εἶναι καὶ κραδαίνεσθαι, τοῦτον σφίσιν αὐ-
τοῖς ἄριστον ὑπὸ τῆς ἐκείνων κακοπραγίας καὶ στά-
σεως καιρὸν ᾠήθησαν παραδεδόσθαι. Ἐνῆγον δὲ
τὸ βούλευμα, καὶ ταύταις αὐτοὺς ταῖς ἐλπίσιν ἐτύ-
φουν Κλασσικός τις καὶ Οὐϊτέλλιος, τῶν παρ᾽ αὐ-
τοῖς ὄντες ἡγεμόνων, οἳ δῆλον μὲν ὡς ἐκ μακροῦ
ταύτης ἐφίεντο τῆς νεωτεροποιΐας, ὑπὸ τοῦ καιροῦ
δὲ θαρσῆσαι προαχθέντες, τὴν αὐτῶν γνώμην ἐξέφη-
ναν· ἔμελλον δὲ προθύμως διακειμένοις τὴν πεῖραν
τοῖς πλήθεσι προςφέρειν. Πολλοῦ δὴ μέρους ἤδη
τῶν Γερμανῶν τὴν ἀπόστασιν ἀνωμολογηκότος, καὶ
τῶν ἄλλων οὐκ ἂν δίχα φρονησάντων, ὥςπερ ἐκ δαι-
μονίου προνοίας Οὐεσπασιανὸς πέμπει γράμματα Πε-
τιλίῳ Κερεαλίῳ τὸ πρότερον ἡγεμόνι Γερμανίας γε-
νομένῳ, τὴν ὕπατον διδοὺς τιμήν, καὶ κελεύων ἄρ-
ξαντα Βρεττανίας ἀπιέναι. Πορευόμενος οὖν ἐκεῖ-
νος ὅποι προςετέτακτο, καὶ τὰ περὶ τὴν ἀπόστασιν
τῶν Γερμανῶν πυθόμενος, ἤδη συνειλεγμένοις αὐ-
τοῖς ἐπιπεσὼν καὶ παραταξάμενος, πολύ τε πλῆθος*

αὐτῶν ἀναιρεῖ κατὰ τὴν μάχην, καὶ τῆς ἀνοίας παυ-
σαμένους ἠνάγκασε σωφρονεῖν. Ἔμελλον δὲ, καὶ ἐ-
κείνου μὴ θᾶττον εἰς τοὺς τόπους παραβαλόντος, δί-
κην οὐκ εἰς μακρὰν ὑφέξειν· ἡνίκα γὰρ πρῶτον ἡ
περὶ τῆς ἀποστάσεως αὐτῶν ἀγγελία τῇ Ῥώμῃ προς-
έπεσε, Δομετιανὸς Καῖσαρ πυθόμενος, οὐχ ὡς ἂν
ἕτερος ἐν τούτῳ τῆς ἡλικίας, νέος γὰρ ἦν ἔτι παν-
τάπασι, τηλικοῦτον ἄρασθαι μέγεθος πραγμάτων
ὤκνησεν· ἔχων δὲ πατρόθεν ἔμφυτον τὴν ἀνδραγα-
θίαν, καὶ τελειοτέραν τὴν ἄσκησιν τῆς ἡλικίας πε-
ποιημένος, ἐπὶ τοὺς βαρβάρους εὐθὺς ἤλαυνεν. Οἱ
δὲ πρὸς τὴν φήμην τῆς ἐφόδου καταπεσόντες, ἐπ' αὐτῷ
σφᾶς αὐτοὺς ἐποιήσαντο μετὰ τοῦ φόβου, κέρδος εὑρά-
μενοι τὸ χωρὶς συμφορῶν ὑπὸ τὸν αὐτὸν πάλιν ζυγὸν
ὑπαχθῆναι. Πᾶσιν οὖν ἐπιθεὶς τοῖς περὶ τὴν Γαλατίαν
τάξιν τὴν προςήκουσαν Δομετιανὸς, ὡς μηδ' αὖθις ἂν
ποτε ῥᾳδίως ἔτι τὰ ἐκεῖ ταραχθῆναι, λαμπρὸς καὶ περί-
βλεπτος, ἐπὶ κρείττοσι μὲν τῆς ἡλικίας, πρέπουσι δὲ
τῷ πατρὶ κατορθώμασιν, εἰς τὴν Ῥώμην ἀνέζευξεν.

3. Τῇ δὲ προειρημένῃ Γερμανῶν ἀποστάσει
κατὰ τὰς αὐτὰς ἡμέρας καὶ Σκυθικὸν τόλμημα πρὸς
Ῥωμαίους συνέδραμεν. Οἱ γὰρ καλούμενοι Σκυθῶν
Σαρμάται, πολὺ πλῆθος ὄντες, ἄδηλοι μὲν τὸν Ἴ-
στρον ἐπεραιώθησαν εἰς τὴν Μυσίαν, ἔπειτα δὲ πολ-
411 λῇ τε βίᾳ, καὶ χαλεποὶ διὰ τὸ παντάπασιν ἀνέλ-
πιστον τῆς ἐφόδου προςπεσόντες, πολλοὺς μὲν τῶν
ἐπὶ τῆς φρουρᾶς Ῥωμαίων ἀναιροῦσι, καὶ τὸν πρε-
σβευτὴν τὸν ὑπατικὸν Φοντήϊον Ἀγρίππαν ὑπαν-
τιάσαντα καρτερῶς μαχόμενον κτείνουσι, τὴν δὲ ὑ-
ποκειμένην χώραν ἅπασαν κατέτρεχον, ἄγοντες καὶ
φέροντες ὅτῳ περιπέσοιεν. Οὐεσπασιανὸς δὲ τὰ γε-
γενημένα καὶ τὴν πόρθησιν τῆς Μυσίας πυθόμενος,
Ῥούβριον Γάλλον ἐκπέμπει, δίκην ἐπιθήσοντα τοῖς
Σαρμάταις. Ὑφ' οὗ πολλοὶ μὲν αὐτῶν ἐν ταῖς μά-
χαις ἀπέθανον, τὸ δὲ περισωθὲν μετὰ δέους εἰς τὴν
οἰκείαν διέφυγε. Τούτῳ δὲ τῷ πολέμῳ τέλος ἐπι-

θεὶς ὁ στρατηγὸς, καὶ τῆς εἰς τὸ μέλλον ἀσφαλείας προενόησε. Πλείοσι γὰρ καὶ μείζοσι φυλακαῖς τὸν τόπον διέλαβεν, ὡς εἶναι τοῖς βαρβάροις τὴν διάβασιν τελέως ἀδύνατον. Ὁ μὲν οὖν περὶ τὴν Μυσίαν πόλεμος ταχεῖαν οὕτως ἔλαβε τὴν κρίσιν.

CAP. V. 1. Τίτος δὲ Καῖσαρ χρόνον μέν τινα διέτριψεν ἐν Βηρυτῷ, καθὰ προειρήκαμεν. Ἐκεῖθεν δ' ἀναζεύξας, καὶ δι' ὧν ᾔει πόλεων τῆς Συρίας, ἐν πάσαις θεωρίας τε συντελῶν πολυτελεῖς, καὶ τῶν Ἰουδαίων τοῖς αἰχμαλώτοις εἰς ἐπίδειξιν τῆς ἑαυτῶν ἀπωλείας καταχρώμενος, θεᾶται κατὰ τὴν πορείαν ποταμοῦ φύσιν, ἀξίαν ἱστορηθῆναι. Ῥεῖ μὲν γὰρ μέσος Ἀρκαίας τῆς Ἀγρίππα βασιλείας καὶ Ῥαφαναίας, ἔχει δὲ θαυμαστὴν ἰδιότητα. Πολὺς γὰρ ὤν, ὅτε ῥεῖ, καὶ κατὰ τὴν φορὰν οὐ σχολαῖος, ἔπειτα δὲ πᾶς ἐκ τῶν πηγῶν ἐπιλείπων ἓξ ἡμερῶν ἀριθμὸν, ξηρὸν παραδίδωσιν ὁρᾷν τὸν τόπον· εἶθ', ὥςπερ οὐδεμιᾶς γενομένης μεταβολῆς, ὅμοιος κατὰ τὴν ἑβδόμην ἐκδίδωσι, καὶ ταύτην ἀεὶ τὴν τάξιν ἀκριβῶς τετήρηται διαφυλάττων. Ὅθεν δὴ καὶ Σαββατικὸν αὐτὸν κεκλήκασιν, ἀπὸ τῆς ἱερᾶς τῶν Ἰουδαίων ἑβδόμης οὕτως ὀνομάσαντες.

2. Ὁ δὲ τῶν Ἀντιοχέων δῆμος ἐπεὶ πλησίον ὄντα Τίτον ἐπυνθάνοντο, μένειν μὲν ἐντὸς τειχῶν ὑπὸ χαρᾶς οὐχ ὑπέμενον, ἔσπευδον δ' ἐπὶ τὴν ὑπάντησιν, καὶ τριάκοντα σταδίων ἐπὶ πλέον προῆλθον, οὐκ ἄνδρες μόνον, ἀλλὰ καὶ γυναίων πλῆθος ἅμα 412
παισὶ, τῆς πόλεως ἐκχεόμενοι. Καὶ ἐπειδήπερ ἐθεάσαντο προςιόντα παρὰ τὴν ὁδὸν ἑκατέρωθεν παρακαταστάντες, τάς τε δεξιὰς προέτεινον προςαγορεύοντες, καὶ παντοίοις ἐπιφημίσμασι χρώμενοι συνεπέστρεφον. Συνεχὴς δὲ ἦν αὐτῶν παρὰ πάσας ἅμα τὰς εὐφημίας δέησις, ἐκβαλεῖν τῆς πόλεως τοὺς Ἰουδαίους. Τίτος μὲν οὖν οὐδὲν ἐνέδωκε πρὸς ταύτην τὴν δέησιν, ἀλλ' ἡσυχῆ τῶν λεγομένων ἐπήκουεν. Ἐπ' ἀδήλῳ δὲ τὸ 'τί φρονεῖ; καὶ τί ποιήσει;' πολὺς καὶ

χαλεπὸς τοῖς Ἰουδαίοις ὁ φόβος ἦν· οὐδὲ γὰρ ἐπέμεινεν ἐν Ἀντιοχείᾳ Τίτος, ἀλλ' εὐθὺς ἐπὶ τὸ Ζεῦγμα, τὸ κατὰ τὸν Εὐφράτην, συνέτεινε τὴν πορείαν· ἔνθα δὴ καὶ παρὰ τοῦ Πάρθων βασιλέως Βολογέσου πρὸς αὐτὸν ἧκον; στέφανον χρυσοῦν ἐπὶ τῇ κατὰ τῶν Ἰουδαίων νίκῃ κομίζοντες. Ὃν δεξάμενος εἱστία τοὺς βασιλικοὺς, καὶ ἐκεῖθεν εἰς τὴν Ἀντιόχειαν ἐπανέρχεται. Τῆς δὲ βουλῆς καὶ τοῦ δήμου τῶν Ἀντιοχέων πολλὰς ποιησαμένων δεήσεις, ἐλθεῖν εἰς τὸ θέατρον αὐτῶν, ἐν ᾧ πᾶν τὸ πλῆθος ἠθροισμένον ἐξεδέχετο, φιλανθρώπως ὑπήκουσε. Πάλιν δὲ αὐτῶν σφόδρα λιπαρῶς ἐγκειμένων, καὶ συνεχῶς δεομένων ἐξελάσαι τῆς πόλεως τοὺς Ἰουδαίους, εὔστοχον ἐποιήσατο τὴν ἀπόκρισιν, εἰπὼν, „Ἀλλ' ἥ γε πατρὶς αὐτῶν εἰς ἣν ἐμβαλεῖν ἐχρῆν τοὺς Ἰουδαίους ἀρήρηται, καὶ δέξαιτ' ἂν οὐδεὶς αὐτοὺς ἔτι τόπος." Ἐπὶ δευτέραν οὖν Ἀντιοχεῖς τρέπονται δέησιν, τῆς προτέρας ἁμαρτόντες· τὰς γὰρ χαλκᾶς ἠξίουν δέλτους ἀνελεῖν αὐτὸν, ἐν αἷς γέγραπται τὰ δικαιώματα τῶν Ἰουδαίων. Οὐ μὴν οὐδὲ τοῦτο Τίτος ἐπένευσεν αὐτοῖς, ἀλλ' ἐάσας πάντα κατὰ χώραν τοῖς ἐπ' Ἀντιοχείας Ἰουδαίοις ὡς πρότερον ἔχειν, εἰς Αἴγυπτον ἀπηλλάττετο. Καὶ κατὰ τὴν πορείαν τοῖς Ἱεροσολύμοις προσελθὼν, καὶ τὴν λυπρὰν ἐρημίαν βλεπομένην ἀντιθεὶς τῇ ποτὲ τῆς πόλεως λαμπρότητι, καὶ τὸ μέγεθος τῶν ἐῤῥηγμένων κατασκευασμάτων, καὶ τὸ πάλαι κάλλος εἰς μνήμην βαλλόμενος, ᾤκτειρε τῆς πόλεως τὸν ὄλεθρον, οὐχ ὥσπερ ἄλλος ἄν τις αὐχῶν, ὅτι τηλικαύτην οὖσαν καὶ τοσαύτην εἷλε κατὰ κράτος· ἀλλὰ πολλάκις ἐπαρώμενος τοῖς αἰτίοις τῆς ἀποστάσεως ὑπάρξασι, καὶ ταύτην ἐπὶ τῇ πόλει τὴν τιμωρίαν γενέσθαι παρασκευάσασιν, οὕτως ἔκδηλος ἦν, οὐκ ἂν ἐθελήσας ἐκ τῆς συμφορᾶς τῶν κολασθέντων γενέσθαι τῆς ἀρετῆς αὐτοῦ ἐπιφάνειαν. Τοῦ δὲ πολλοῦ πλούτου τῆς πόλεως ἔτι καὶ ἐν τοῖς ἐρειπίοις οὐκ ὀλίγον μέρος ἀνευρίσκετο·

τὰ μὲν γὰρ πολλὰ ἀνέσκαπτον οἱ Ῥωμαῖοι, τὰ πλείω δ' ἐκ μηνύσεως τῶν αἰχμαλώτων ἀνηροῦντο, χρυσόν τε καὶ ἄργυρον, καὶ τὰ τῆς ἄλλης τιμιώτατα κατασκευῆς, ἅπερ οἱ κεκτημένοι πρὸς τὰς ἀδήλους τοῦ πολέμου τύχας κατὰ γῆς ἀποτεθησαυρίκεσαν.

3. Τίτος δὲ τὴν προκειμένην ποιούμενος πορείαν ἐπ' Αἴγυπτον, καὶ τὴν ἔρημον ᾗ τάχιστα διανύσας ἧκεν εἰς Ἀλεξάνδρειαν· καὶ πλεῖν ἐπὶ τῆς Ἰταλίας διεγνωκὼς, δυοῖν αὐτῷ ταγμάτων συνηκολουθηκότων, ἑκάτερον ὅθεν περ ἀφῖκτο πάλιν ἀπέστειλεν, εἰς μὲν τὴν Μυσίαν τὸ πέμπτον, εἰς Παννονίαν δὲ τὸ πεντεκαιδέκατον. Τῶν αἰχμαλώτων δὲ 413
τοὺς μὲν ἡγεμόνας Σίμωνα καὶ Ἰωάννην, τόν τε ἄλλον ἀριθμὸν ἑπτακοσίους ἄνδρας ἐπιλέξας μεγέθει τε καὶ κάλλει σωμάτων ὑπερβάλλοντας, προςέταξεν εἰς τὴν Ἰταλίαν αὐτίκα μάλα κομίζεσθαι, βουλόμενος αὐτοὺς ἐν τῷ θριάμβῳ παραγαγεῖν. Τοῦ πλοῦ δὲ αὐτῷ κατὰ νοῦν ἀνυσθέντος, ὁμοίως μὲν ἡ Ῥώμη περὶ τὴν ὑποδοχὴν εἶχε καὶ τὰς ὑπαντήσεις, ὥςπερ ἐπὶ τοῦ πατρός. Λαμπρότατον δὲ ἦν Τίτῳ, καὶ αὐτὸς ὁ πατὴρ ὑπαντῶν καὶ δεχόμενος. Τῷ δὲ πλήθει τῶν πολιτῶν δαιμονίαν τινα τὴν χαρὰν παρεῖχεν, τὸ βλέπειν αὐτοὺς ἤδη τοὺς τρεῖς ἐν ταὐτῷ γεγονότας. Οὐ πολλῶν δὲ ἡμερῶν διελθουσῶν, ἕνα καὶ κοινὸν ἔγνωσαν τὸν ἐπὶ τοῖς κατωρθωμένοις ποιήσασθαι θρίαμβον, καίπερ ἑκατέρῳ τῆς βουλῆς ἴδιον ψηφισαμένης. Προδιασαφηθείσης δὲ τῆς ἡμέρας, ἐφ' ἧς ἔμελλεν ἡ πομπὴ γενήσεσθαι τῶν ἐπινικίων, οὐδεὶς οἴκοι καταλέλειπτο τῆς ἀμέτρου πληθύος ἐν τῇ πόλει. Πάντες δὲ ὅπῃ καὶ στῆναι μόνον ἦν οἷον προεληλυθότες, τοὺς τόπους κατειλήφεισαν, ὅσον τοῖς ὀφθησομένοις μόνον εἰς πάροδον ἀναγκαίαν καταλιπόντες.

4. Τοῦ δὲ στρατιωτικοῦ παντὸς ἔτι νύκτωρ κατὰ λόχους καὶ τάξεις ὑπὸ τοῖς ἡγεμόσι προεξωδευκότος, καὶ περὶ θύρας ὄντος οὐ τῶν ἄνω βασιλείων, ἀλλὰ πλησίον τοῦ τῆς Ἴσιδος ἱεροῦ· ἐκεῖ γὰρ ἀνε-

παύοντο τῆς νυκτὸς ἐκείνης οἱ αὐτοκράτορες. Περὶ αὐτὴν ἀρχομένην ἤδη τὴν ἕω προΐασιν Οὐεσπασιανὸς καὶ Τίτος, δάφνῃ μὲν ἐστεφανωμένοι, πορφυρᾶς δὲ ἐσθῆτας πατρίους ἀμπεχόμενοι, καὶ παρίασιν εἰς τοὺς Ὀκταουΐας περιπάτους· ἐνταῦθα γὰρ ἥ τε βουλὴ καὶ τὰ τέλη τῶν ἀρχόντων, οἵ τε ἀπὸ τῶν τιμημάτων ἱππεῖς, τὴν ἄφιξιν αὐτῶν ἀνέμενον. Πεποίητο δὲ βῆμα πρὸ τῶν στοῶν, δίφρων αὐτοῖς ἐλεφαντίνων ἐπ' αὐτοῦ κειμένων, ἐφ' οὓς παρελθόντες ἐκαθέσθησαν, καὶ τὸ στρατιωτικὸν εὐθέως ἐπευφήμει, πολλὰς αὐτοῖς τῆς ἀρετῆς μαρτυρίας ἀποδιδόντες ἅπαντες· καὶ ἐκεῖνοι χωρὶς ὅπλων ἦσαν ἐσθήσεσι σηρικαῖς, ἐστεφανωμένοι δάφναις. Δεξάμενος δὲ αὐτῶν τὴν εὐφημίαν Οὐεσπασιανὸς, ἔτι βουλομένων λέγειν, τὸ τῆς σιγῆς ἐποιήσατο σύμβολον. Καὶ πολλῆς ἐκ πάντων ἡσυχίας γενομένης, ἀναστὰς, καὶ τῷ περιβλήματι τὸ πλέον τῆς κεφαλῆς μέρος ἐπικαλυψάμενος, εὐχὰς ἐποιήσατο τὰς νενομισμένας, ὁμοίως δὲ καὶ Τίτος ηὔξατο. Μετὰ δὲ τὰς εὐχὰς εἰς κοινὸν ἅπασιν Οὐεσπασιανὸς βραχέα διαλεχθεὶς, τοὺς μὲν στρατιώτας ἀπέλυσεν ἐπὶ τὸ νενομισμένον ἄριστον αὐτοῖς ὑπὸ τῶν αὐτοκρατόρων εὐτρεπισθέν· πρὸς δὲ τὴν πύλην αὐτὸς ἀνεχώρει, τὴν ἀπὸ τοῦ πέμπεσθαι δι' αὐτῆς αἰεὶ τοὺς θριάμβους τῆς προσηγορίας ἀπ' αὐτῶν τετυχυῖαν. Ἐνταῦθα τροφῆς τε προαπογεύονται, καὶ τὰς θριαμβικὰς ἐσθῆτας ἀμφιεσάμενοι, τοῖς τε παριδρυμένοις τῇ πύλῃ θύσαντες θεοῖς, ἔπεμπον τὸν θρίαμβον, διὰ τῶν θεάτρων διεξελαύνοντες, ὅπως εἴη τοῖς πλήθεσιν ἡ θέα ῥάων.

5. Ἀμήχανον δὲ κατὰ τὴν ἀξίαν εἰπεῖν τῶν
414 θεαμάτων ἐκείνων τὸ πλῆθος, καὶ τὴν μεγαλοπρέπειαν ἐν ἅπασιν, οἷς ἄν τις ἐπινοήσειεν, ἢ τεχνῶν ἔργοις, ἢ πλούτου μέρεσιν, ἢ φύσεως σπανιότησι· σχεδὸν γὰρ ὅσα τοῖς πώποτ' ἀνθρώποις εὐδαιμονήσασιν ἐκτήθη κατὰ μέρος, ἄλλα παρ' ἄλλοις θαυμαστὰ καὶ πολυτελῆ, ταῦτ' ἐπὶ τῆς ἡμέρας ἐκείνης ἀθρόα τῆς

Ῥωμαίων ἡγεμονίας ἔδειξε τὸ μέγεθος. Ἀργύρου τε γὰρ καὶ χρυσοῦ καὶ ἐλέφαντος ἐν παντοίαις ἰδέαις κατασκευασμάτων ἦν ὁρᾷν, οὐχ ὥσπερ ἐν πομπῇ κομιζόμενον, πλῆθος, ἀλλ', ὡς ἂν εἴποι τις, ῥέοντα ποταμόν. Καὶ τὰ μὲν ἐκ πορφύρας ὑφάσματα τῆς σπανιωτάτης φερόμενα, τὰ δ' εἰς ἀκριβῆ ζωγραφίαν πεποικιλμένα τῇ Βαβυλωνίων τέχνῃ· λίθοι τε διαφανεῖς, οἱ μὲν χρυσοῖς ἐμπεπλεγμένοι στεφάνοις, οἱ δὲ κατ' ἄλλας ποιήσεις, τοσοῦτοι παρηνέχθησαν, ὥστε μαθεῖν, ὅτι μάτην εἶναί τι τούτων σπάνιον ὑπειλήφαμεν. Ἐφέρετο δὲ καὶ θεῶν ἀγάλματα, τῶν παρ' αὐτοῖς μεγέθεσι θαυμαστὰ, καὶ κατὰ τὴν τέχνην οὐ παρέργως πεποιημένα· καὶ τούτων οὐδὲν, ὅ τι μὴ τῆς ὕλης τῆς πολυτελοῦς. Ζώων τε πολλαὶ φύσεις παρήγοντο, κόσμον οἰκεῖον ἁπάντων περικειμένων. Ἦν δὲ καὶ τὸ κομίζον ἕκαστα τούτων ἀνθρώπων πλῆθος, ἁλουργαῖς ἐσθήσεσι καὶ διαχρύσοις κεκοσμημένον· οἵ τ' εἰς αὐτὸ τὸ πομπεύειν διακριθέντες, ἐξαίρετον εἶχον καὶ καταπληκτικὴν περὶ αὐτοὺς τοῦ κόσμου τὴν πολυτέλειαν. Ἐπὶ τούτοις οὐδὲ τῶν αἰχμαλώτων ἦν ἰδεῖν ὄχλον ἀκόσμητον· ἀλλ' ἡ τῶν ἐσθήτων ποικιλία, καὶ τὸ κάλλος αὐτῆς τὴν ἀπὸ τῆς κακώσεως τῶν σωμάτων ἀειδίαν ἔκλεπτε τῆς ὄψεως. Θαῦμα δὲ ἐν τοῖς μάλιστα παρεῖχεν ἡ τῶν φερομένων πηγμάτων κατασκευή· καὶ γὰρ διὰ μέγεθος ἦν δεῖσαι τῷ βεβαίῳ τῆς φορᾶς ἀπαντήσαντα. Τριώροφα γὰρ αὐτῶν καὶ τετρώροφα πολλὰ πεποίητο, καὶ τῇ πολυτελείᾳ τῇ περὶ τὴν κατασκευὴν ἦν ἡσθῆναι μετ' ἐκπλήξεως· καὶ γὰρ ὑφάσματα πολλοῖς διάχρυσα περιεβέβλητο, καὶ χρυσὸς καὶ ἐλέφας οὐκ ἀποίητος πᾶσι περιεπεπήγει. Διὰ πολλῶν δὲ μιμημάτων ὁ πόλεμος, ἄλλως εἰς ἄλλα μεμερισμένος, ἐναργεστάτην ὄψιν ἑαυτοῦ παρεῖχεν· ἦν γὰρ ὁρᾷν χώραν μὲν εὐδαίμονα δῃουμένην, ὅλας δὲ φάλαγγας κτεινομένας πολεμίων, καὶ τοὺς μὲν φεύγοντας, τοὺς δὲ εἰς αἰχμαλωσίαν ἀγομένους, τείχη δὲ ὑπερβάλλοντα μεγέ-

θει μηχαναῖς ἐρειπόμενα, καὶ φρουρίων ἁλισκομένας ὀχυρότητας, καὶ πόλεων πολυανθρώπων περιβόλους κατ' ἄκρας ἐχομένους, καὶ στρατιὰν ἔνδον τειχῶν εἰσχεομένην, καὶ πάντα φόνου πληθύοντα τόπον, καὶ τῶν ἀδυνάτων χεῖρας ἀνταιρεῖν ἱκεσίας, πῦρ τε ἐνιέμενον ἱεροῖς, καὶ κατασκαφὰς οἴκων ἐπὶ τοῖς δεσπόταις, καὶ μετὰ πολλὴν ἐρημίαν κατηφῆ ποταμοὺς ῥέοντας οὐκ ἐπὶ γῆν γεωργουμένην, οὐδὲ ποτὸν ἀνθρώποις ἢ βοσκήμασιν, ἀλλὰ διὰ τῆς ἔτι πανταχόθεν φλεγομένης· ταῦτα γὰρ Ἰουδαῖοι πεισομένους αὐτοὺς τῷ πολέμῳ παρέδοσαν. Ἡ τέχνη δὲ καὶ τῶν κα-
415 τασκευασμάτων ἡ μεγαλουργία τοῖς οὐκ εἰδόσι τὰ γινόμενα τότε ἐδείκνυεν ὡς παροῦσι. Τέτακτο δ' ἐφ' ἑκάστῳ τῶν πηγμάτων ὁ τῆς ἁλισκομένης πόλεως στρατηγὸς, ὃν τρόπον ἐλήφθη. Πολλαὶ δὲ καὶ νῆες εἵποντο. Λάφυρα δὲ τὰ μὲν ἄλλα χύδην ἐφέρετο. Διέπρεπε δὲ πάντων τὰ ἐγκαταληφθέντα τῷ ἐν Ἱεροσολύμοις ἱερῷ· χρυσῆ τε τράπεζα τὴν ὁλκὴν πολυτάλαντος, καὶ λυχνία χρυσοῦ μὲν ὁμοίως ποποιημένη· τὸ δὲ ἔργον ἐξήλλακτο τῆς κατὰ τὴν ἡμετέραν χρῆσιν συνηθείας. Ὁ μὲν γὰρ μέσος ἦν κίων ἐκ τῆς βάσεως πεπηγὼς, λεπτοὶ δ' ἀπ' αὐτοῦ μεμήκυντο καυλίσκοι, τριαίνης σχήματι παραπλησίαν τὴν θέσιν ἔχοντες, λύχνον ἕκαστος αὐτῶν ἐπ' ἄκρων κεχαλκευμένος. Ἑπτὰ δὲ ἦσαν οὗτοι, τῆς παρὰ τοῖς Ἰουδαίοις ἑβδομάδος τὴν τιμὴν ἐμφανίζοντες. Ὅ τε νόμος ὁ τῶν Ἰουδαίων ἐπὶ τούτοις ἐφέρετο τῶν λαφύρων τελευταῖος. Ἐπὶ τούτοις παρῄεσαν πολλοὶ, νίκης ἀγάλματα κομίζοντες. Ἐξ ἐλέφαντος δὲ ἦν πάντων καὶ χρυσοῦ ἡ κατασκευή. Μεθ' ἃ Οὐεσπασιανὸς ἤλαυνε πρῶτος, καὶ Τίτος εἵπετο, Δομετιανὸς δὲ περιΐππευεν, αὐτός τε διαπρεπῶς κεκοσμημένος, καὶ τὸν ἵππον παρέχων θέας ἄξιον.

6. Ἦν δὲ τῆς πομπῆς τὸ τέλος ἐπὶ τὸν νεὼν τοῦ Καπετωλίου Διὸς, ἐφ' ὃν ἐλθόντες ἔστησαν· ἦν γὰρ παλαιὸν πάτριον περιμένειν, μέχρις ἂν τὸν τοῦ στρατηγοῦ

τῶν πολεμίων θάνατον ἀπαγγείλῃ τις. Σίμων οὗτος ἦν ὁ Γιώρα, τότε πεπομπευκὼς ἐν τοῖς αἰχμαλώτοις· βρόχῳ δὲ περιβληθεὶς εἰς τὸν ἐπὶ τῆς ἀγορᾶς ἐσύρετο τόπον, αἰκιζομένων αὐτὸν ἅμα τῶν ἀγόντων. Νόμος δ' ἐστὶ Ῥωμαίοις ἐκεῖ κτείνειν τοὺς ἐπὶ κακουργίᾳ θάνατον κατεγνωσμένους. Ἐπεὶ δ' ἀπηγγέλθη τέλος ἔχων, καὶ πάντες εὐφήμησαν, ἤρχοντο τῶν θυσιῶν, ἃς ἐπὶ ταῖς νομιζομέναις καλλιερήσαντες εὐχαῖς, ἀπῄεσαν εἰς τὸ βασίλειον. Καὶ τοὺς μὲν αὐτοὶ πρὸς εὐωχίαν ὑπεδέχοντο, τοῖς δ' ἄλλοις ἅπασιν εὐπρεπεῖς κατὰ τὸ οἰκεῖον αἱ τῆς ἑστιάσεως ἦσαν παρασκευαί. Ταύτην γὰρ τὴν ἡμέραν ἡ Ῥωμαίων πόλις ἑώρταζεν, ἐπινίκιον μὲν τῆς κατὰ τῶν πολεμίων στρατείας, πέρας δὲ τῶν ἐμφυλίων κακῶν, ἀρχὴν δὲ τῶν ὑπὲρ τῆς εὐδαιμονίας ἐλπίδων.

7. Μετὰ δὲ τοὺς θριάμβους, καὶ τὴν βεβαιοτάτην τῆς Ῥωμαίων ἡγεμονίας κατάστασιν Οὐεσπασιανὸς ἔγνω τέμενος Εἰρήνης κατασκευάσαι· ταχὺ δὲ δὴ μάλα, καὶ πάσης ἀνθρωπίνης κρεῖττον ἐπινοίας ἐτετελείωτο. Τῇ γὰρ ἐκ τοῦ πλούτου χορηγίᾳ δαιμονίῳ χρησάμενος, ἔτι καὶ τοῖς ἔκπαλαι κατωρθωμένοις, γραφῇ τε καὶ πλαστικοῖς ἔργοις αὐτὸ κατεκόσμησε· πάντα γὰρ εἰς ἐκεῖνον τὸν νεὼν συνήχθη καὶ κατετέθη, δι' ὧν τὴν θέαν ἄνθρωποι πρότερον περὶ πᾶσαν ἐπλανῶντο τὴν οἰκουμένην, ὡς ἄλλο παρ' ἄλλοις ἦν κείμενον ἰδεῖν ποθοῦντες. Ἀνέθηκε δὲ ἐνταῦθα καὶ τὰ ἐκ τοῦ ἱεροῦ τῶν Ἰουδαίων χρυσᾶ κατασκευάσματα, σεμνυνόμενος ἐπ' αὐτοῖς. Τὸν δὲ νόμον αὐτῶν, καὶ τὰ πορφυρᾶ τοῦ σηκοῦ καταπετά- 416
σματα, προσέταξεν ἐν τοῖς βασιλείοις ἀποθεμένους φυλάττειν.

CAP. VI. 1. Εἰς δὲ τὴν Ἰουδαίαν πρεσβευτὴς Λουκίλιος Βάσσος ἐκπεμφθείς, καὶ τὴν στρατιὰν παρὰ Κερεαλίου Οὐϊτελλιανοῦ παραλαβών, τὸ μὲν ἐν τῷ Ἡρωδείῳ φρούριον προσηγάγετο μετὰ τῶν ἐχόντων.

Μετὰ ταῦτα δὲ πᾶν ὅσον ἦν στρατιωτικὸν συναγαγὼν, πολὺ δὲ ἦν κατὰ μέρη διῃρημένον, καὶ τῶν ταγμάτων τὸ δέκατον, ἔγνω στρατεύειν ἐπὶ Μαχαιροῦντα· πάνυ γὰρ ἦν ἀναγκαῖον ἐξαιρεθῆναι τὸ φρούριον, μὴ διὰ τὴν ὀχυρότητα πολλοὺς εἰς ἀπόστασιν ἐπαγάγηται. Καὶ γὰρ τοῖς κατέχουσι βεβαίαν ἐλπίδα σωτηρίας, καὶ τοῖς ἐπιοῦσιν ὄκνον καὶ δέος ἡ τοῦ χωρίου φύσις ἦν παρασχεῖν ἱκανωτάτη· αὐτὸ μὲν γὰρ τὸ τετειχισμένον, πετρώδης ὄχθος ἐστὶν, εἰς μήκιστον ὕψος ἐγηγερμένος, ὡς εἶναι καὶ διὰ τοῦτο δυςχείρωτος. Μεμηχάνηται δὲ ὑπὸ τῆς φύσεως εἶναι μηδὲ προςβατός· φάραγξι γὰρ πάντοθεν ἀσύνοπτον ἐχούσαις τὸ βάθος περιτετάφρευται, μήτε περαθῆναι ῥᾳδίως δυναμέναις, καὶ χωσθῆναι παντάπασιν ἀμηχάνοις. Ἡ μὲν γὰρ ἀπὸ τῆς ἑσπέρας περιτέμνουσα παρατείνει σταδίους ἑξήκοντα, πέρας αὐτῆς τὴν Ἀσφαλτῖτιν ποιουμένη λίμνην. Κατὰ τοῦτο δέ πη καὶ αὐτὸς ὁ Μαχαιροῦς τὴν ὑψηλοτάτην ἔχει κορυφὴν ὑπερανίσχουσαν. Αἱ δὲ ἀπὸ τῆς ἄρκτου καὶ μεσημβρίας φάραγγες μεγέθει μὲν ἀπολείπονται τῆς προειρημένης, ὁμοίως δ' εἰσὶν ἀμήχανοι πρὸς ἐπιχείρησιν. Τῆς δὲ πρὸς τὴν ἀνατολὴν φάραγγος τὸ μὲν βάθος οὐκ ἔλαττον ἑκατὸν εὑρίσκεται πηχῶν, τέρμα δὲ γίνεται πρὸς ὄρος ἀπαντικρὺ κείμενον Μαχαιροῦντος.

2. Ταύτην τοῦ τόπου κατιδὼν τὴν φύσιν βασιλεὺς Ἰουδαίων Ἀλέξανδρος, πρῶτος ἐπ' αὐτοῦ τειχίζει φρούριον, ὃ μετὰ ταῦτα Γαβίνιος Ἀριστοβούλῳ πολεμῶν καθεῖλεν. Ἡρώδῃ δὲ βασιλεύοντι παντὸς ἔδοξε μᾶλλον ἐπιμελείας ἄξιον εἶναι, καὶ κατασκευῆς ὀχυρωτάτης, μάλιστα καὶ διὰ τὴν τῶν Ἀράβων γειτνίασιν· κεῖται γὰρ ἐν ἐπικαίρῳ πρὸς τὴν ἐκείνων γῆν ἀποβλέπον. Μέγαν μὲν οὖν τόπον τείχεσι καὶ πύργοις περιβαλὼν πόλιν ἐνταῦθα κατῴκισεν, ἐξ ἧς ἄνοδος εἰς αὐτὴν ἔφερε τὴν ἀκρώρειαν. Οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ περὶ αὐτὴν ἄνω τὴν κορυφὴν τεῖχος ἐδείματο, καὶ πύργους ἐπὶ ταῖς γωνίαις ἑκατὸν

ἑξήκοντα πήχεων ἀνέστησε. Μέσον δὲ τοῦ περιβόλου βασίλειον ᾠκοδομήσατο, μεγέθει τε καὶ κάλλει τῶν οἰκήσεων πολυτελές. Πολλὰς δὲ καὶ δεξαμενὰς εἰς ὑποδοχὴν ὕδατος, καὶ χορηγίαν ἄφθονον, ἐν τοῖς ἐπιτηδειοτάτοις τῶν τόπων κατεσκεύασεν, ὥςπερ πρὸς τὴν φύσιν ἁμιλληθεὶς, ἵνα αὐτὸς τὸ κατ᾽ ἐκείνην τοῦ τόπου δυςάλωτον ὑπερβάλληται ταῖς χειροποιήτοις ὀχυρώσεσιν. Ἔτι τε γὰρ καὶ βελῶν πλῆθος καὶ μηχανημάτων ἐγκατέθετο, καὶ πᾶν ἐπενόησεν ἑτοιμάσασθαι τὸ παρασχεῖν δυνάμενον τοῖς ἐνοικοῦσι μηκίστης πολιορκίας καταφρόνησιν.

3. Ἐπεφύκει δ᾽ ἐν τοῖς βασιλείοις καὶ πήγανον, ἄξιον τοῦ μεγέθους θαυμάσαι· συκῆς γὰρ οὐδεμιᾶς ὕψους καὶ πάχους ἀπελείπετο. Λόγος δὲ ἦν ἀπὸ τῶν Ἡρώδου χρόνων αὐτὸ διαρκέσαι· καὶ ἂν ἐπιπλεῖστον ἴσως ἔμεινεν, ἐξεκόπη δὲ ὑπὸ τῶν παραλαβόντων τὸν τόπον Ἰουδαίων. Τῆς φάραγγος δὲ τῆς κατὰ τὴν ἄρκτον περιεχούσης τὴν πόλιν Βαάρας ὀνομάζεταί τις τόπος, φύει τε ῥίζαν ὁμωνύμως λεγομένην αὐτῷ. Αὕτη φλογὶ μὲν τὴν χροιὰν ἔοικε, περὶ δὲ τὰς ἑσπέρας σέλας ἀπαστράπτουσα· τοῖς δ᾽ ἐπιοῦσι καὶ βουλομένοις λαβεῖν αὐτὴν οὐκ ἔστιν εὐχείρωτος, ἀλλ᾽ ὑποφεύγει, καὶ οὐ πρότερον ἵσταται, πρὶν ἄν τις οὖρον γυναικὸς, ἢ τὸ ἔμμηνον αἷμα χέῃ κατ᾽ αὐτῆς· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ τότε τοῖς ἁψαμένοις πρόδηλός ἐστι θάνατος, εἰ μὴ τύχῃ τις αὐτὴν ἐκείνην ἐπενεγκάμενος τὴν ῥίζαν ἐκ τῆς χειρὸς ἀπηρτημένην. Ἁλίσκεται δὲ καὶ καθ᾽ ἕτερον τρόπον ἀκινδύνως, ὅς ἐστι τοιόςδε. Κύκλῳ πᾶσαν αὐτὴν περιορύσσουσιν, ὡς εἶναι τὸ κρυπτόμενον τῆς ῥίζης βραχύτατον. Εἶτ᾽ ἐξ αὐτῆς ἀποδοῦσι κύνα, καὶ ἐκείνου τῷ δήσαντι συνακολουθεῖν ὁρμήσαντος, ἡ μὲν ἀνασπᾶται ῥᾳδίως, θνήσκει δ᾽ εὐθὺς ὁ κύων, ὥςπερ ἀντιδοθεὶς τοῦ μέλλοντος τὴν βοτάνην ἀναιρήσεσθαι. Φόβος δ᾽ οὐδεὶς τοῖς μετὰ ταῦτα λαμβάνουσιν. Ἔστι δὲ μετὰ τοσούτων κινδύνων διὰ μίαν ἰσχὺν περι-

σπούδαστος. Τὰ γὰρ καλούμενα δαιμόνια, ταῦτα δὲ πονηρῶν ἐστιν ἀνθρώπων πνεύματα, τοῖς ζῶσιν εἰςδυόμενα καὶ κτείνοντα τοὺς βοηθείας μὴ τυγχάνοντας, αὕτη ταχέως ἐξελαύνει, καὶ ἐὰν προςενεχθῇ μόνον τοῖς νοσοῦσι. Ῥέουσι δὲ καὶ θερμῶν ὑδάτων πηγαὶ κατὰ τὸν τόπον, πολὺ τὴν γεῦσιν ἀλλήλων διαφέρουσαι. Πικραὶ μὲν γὰρ αὐτῶν τινές εἰσιν, αἱ δὲ γλυκύτητος οὐδὲν ἀπολείπουσι. Πολλαὶ δὲ καὶ ψυχρῶν ὑδάτων ἀναδόσεις, οὐ μόνον ἐν τῷ χθαμαλωτέρῳ τὰς πηγὰς παραλλήλους ἔχουσιν· ἀλλ', ὡς ἂν καὶ μᾶλλόν τις θαυμάσειε, σπήλαιόν τι πλησίον ὁρᾶται, κοιλότητι μὲν οὐ βαθὺ, τῇ πέτρᾳ δὲ προεχούσῃ σκεπόμενον. Ταύτης ἄνωθεν οἱςανεὶ μαστοὶ δύο ἀνέχουσιν, ἀλλήλων ὀλίγῳ διεστῶτες, καὶ ψυχροτάτην μὲν ἅτερος πηγὴν, ἅτερος δὲ θερμοτάτην ἐκδίδωσιν· αἳ μισγόμεναι ποιοῦσι λουτρὸν ἥδιστον, παιώνιόν τε νοσημάτων, πολλῷ δὲ μάλιστα νεύρων ἄκεσιν. Ἔχει δὲ ὁ τόπος καὶ θείου καὶ στυπτηρίας μέταλλα.

4. Βάσσος δὲ πάντῃ περισκεψάμενος τὸ χωρίον, ἔγνω ποιεῖσθαι τὴν πρόςοδον, χωννὺς τὴν φάραγγα τὴν πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς. Καὶ τῶν ἔργων εἴχετο, σπουδὴν ποιούμενος ᾗ τάχος ἐξᾶραι τὰ χώματα, καὶ δι' αὐτῶν ῥᾳδίαν ποιῆσαι τὴν πολιορκίαν. Οἱ δ' ἔνδον ἀπειλημμένοι τῶν Ἰουδαίων, αὐτοὶ καθ' ἑαυτοὺς ἀπὸ τῶν ξένων διακριθέντες, ἐκείνους μὲν ἠνάγκασαν, ὄχλον ἄλλως εἶναι νομίζοντες, ἐν τῇ κάτω πόλει παραμένειν, καὶ τοὺς κινδύνους προεκδέχεσθαι. Τὸ δ' ἄνω φρούριον αὐτοὶ καταλαβόντες εἶχον, καὶ διὰ τὴν ἰσχὺν τῆς ὀχυρότητος, καὶ προνοίᾳ τῆς σωτηρίας αὐτῶν· τεύξεσθαι γὰρ ἀφέσεως
418 ὑπελάμβανον, εἰ τὸ χωρίον Ῥωμαίοις ἐγχειρίσειαν. Πεῖρᾳ δὲ πρότερον ἐβούλοντο τὰς ὑπὲρ τοῦ διαφεύξεσθαι τὴν πολιορκίαν ἐλπίδας ἐλέγξαι. Διὰ τοῦτο καὶ προθύμως ἐποιοῦντο τὰς ἐξόδους ἀνὰ πᾶσαν ἡμέραν, καὶ τοῖς τυχοῦσι συμπλεκόμενοι, πολλοὶ μὲν

ἔθνησκον, πολλοὺς δὲ τῶν Ῥ[illegible] δὲ τοῦ κρατεῖν ὁ καιρὸ[illegible] τὸ πλέον· τοῖς μὲν Ἰουδαί[illegible] ἀφυλακτοτέρους προςπέσοιεν, τοῖς δὲ ἐπὶ [illegible] χωμάτων, εἰ προειδόμενοι τὴν ἐκδρομὴν αὐτῶν δέχοιντο πεφραμένως. Ἀλλ' οὐκ ἐν τούτοις ἔμελλε γενήσεσθαι τὸ πέρας τῆς πολιορκίας. Ἔργον δέ τι πραχθὲν ἐκ συντυχίας παράλογον τῆς παραδόσεως τοῦ φρουρίου τὴν ἀνάγκην ἐπέστησε τοῖς Ἰουδαίοις. Ἦν ἐν τοῖς πολιορκουμένοις νεανίας τολμῆσαί τε θρασὺς καὶ κατὰ χεῖρα δραστήριος, Ἐλεάζαρος ὄνομα. Ἐγεγόνει δὲ οὗτος ἐν ταῖς ἐκδρομαῖς ἐπιφανὴς, τοὺς πολλοὺς ἐξιέναι καὶ κωλύειν τὴν χῶσιν παρακαλῶν, καὶ κατὰ τὰς μάχας πολλὰ καὶ δεινὰ τοὺς Ῥωμαίους διατιθείς. Τοῖς δὲ σὺν αὐτῷ τολμῶσιν ἐπεκτρέχειν ῥᾳδίαν μὲν τὴν προςβολὴν τιθέμενος, ἀκίνδυνον δὲ παρέχων τὴν ἀναχώρησιν τῷ τελευταῖος ἀπιέναι. Καὶ δή ποτε τῆς μάχης διακριθείσης, καὶ γεγονυίας ἀμφοτέρων ἀναχωρήσεως, αὐτὸς ἅτε δὴ περιφρονῶν, καὶ νομίζων οὐκ ἂν ἔτι τῶν πολεμίων οὐδένα τότε μάχης ἄρξειν, μείνας τῶν πυλῶν ἔξω, τοῖς ἐπὶ τοῦ τείχους διελάλει, καὶ πᾶς πρὸς ἐκείνους τὴν διάνοιαν ἦν. Ὁρᾷ δὲ τὸν καιρὸν τοῦ Ῥωμαϊκοῦ τις στρατοπέδου Ῥοῦφος, γένος Αἰγύπτιος· καὶ μηδενὸς ἂν προςδοκήσαντος ἐξαίφνης ἐπιδραμὼν, σὺν αὐτοῖς ἀράμενος αὐτὸν τοῖς ὅπλοις, ἕως κατεῖχε τοὺς ἀπὸ τῶν τειχῶν ἰδόντας ἔκπληξις, φθάνει τὸν ἄνδρα μεταθεὶς πρὸς τὸ Ῥωμαίων στρατόπεδον. Τοῦ δὲ στρατηγοῦ κελεύσαντος γυμνὸν διαλαβεῖν αὐτὸν, καὶ καταστήσαντας εἰς τὸ φανερώτατον τοῖς ἐκ τῆς πόλεως ἀποβλέπουσι μάστιξιν αἰκίζεσθαι, σφόδρα τοὺς Ἰουδαίους, τὸ περὶ τὸν νεανίαν πάθος συνέχεεν, ἀθρόα δὲ ἡ πόλις ἀνῴμωξε, καὶ θρῆνος ἦν μείζων, ἢ καθ' ἑνὸς ἀνδρὸς συμφοράν. Τοῦτο συνιδὼν ὁ Βάσσος κατὰ τῶν πολεμίων ἀρχὴν ἐποιήσατο στρατηγήματος, καὶ βουληθεὶς αὐτῶν ἐπιτεῖναι τὸ περι-

ἀλγεῖς, ἵνα βιασθῶσιν ἀντὶ τῆς σωτηρίας τοῦ ἀνδρὸς ποιήσασθαι τοῦ [illegible]ρίου παράδοσιν, τῆς ἐλπίδος οὐ διήμαρτεν. [illegible]ν γὰρ προςέταξε καταπήγνυσθαι σταυρὸν, ὡς αὐτίκα κρεμῶν τὸν Ἐλεάζαρον. Τοῖς δὲ ἀπὸ τοῦ φρουρίου τοῦτο θεασαμένοις ὀδύνη τε πλείων προςέπεσε, καὶ διωλύγιον ἀνῴμωζον, οὐκ ἀνασχετὸν εἶναι τὸ πάθος βοῶντες. Ἐνταῦθα δὴ τοίνυν Ἐλεάζαρος ἱκέτευεν αὐτοὺς, μήτ' αὐτὸν περιϊδεῖν ὑπομείναντα θάνατον τὸν οἴκτιστον, καὶ σφίσιν αὐτοῖς τὴν σωτηρίαν παρασχεῖν τῇ Ῥωμαίων εἴξαντας ἰσχύϊ καὶ τύχῃ, μετὰ πάντας ἤδη κεχειρωμένους. Οἱ δὲ καὶ πρὸς τοὺς ἐκείνου λόγους κατακλώμενοι, καὶ πολλῶν ἔνδον ὑπὲρ αὐτοῦ δεομένων, ἦν γὰρ ἐκ μεγάλης καὶ σφόδρα πολυανθρώπου συγγενείας, παρὰ τὴν αὐτῶν φύσιν εἰς οἶκτον ἐνέδωκαν· καί τινας ἐξαποστείλαντες κατὰ τάχος, διελέγοντο ποιεῖσθαι τὴν παράδοσιν τοῦ φρουρίου, ἀξιοῦντες, ἵνα ἀδεεῖς ἀπαλλάττωνται κομισάμεναι τὸν
419 Ἐλεάζαρον. Δεξαμένων δὲ τῶν Ῥωμαίων καὶ τοῦ στρατηγοῦ ταῦτα, τὸ πλῆθος τῶν ἐν τῇ κάτω πόλει, τὴν γεγενημένην ἰδίᾳ τοῖς Ἰουδαίοις πυθόμενοι σύμβασιν, αὐτοὶ κατὰ νύκτα λαθόντες ἔγνωσαν ἀποδρᾶναι. Τὰς πύλας δὲ αὐτῶν ἀνοιξάντων, παρὰ τῶν τὴν ὁμολογίαν πεποιημένων πρὸς τὸν Βάσσον ἧκε μήνυσις, εἴτ' οὖν τῆς σωτηρίας αὐτοῖς φθονησάντων, εἴτε καὶ διὰ δέος, μὴ τὴν αἰτίαν αὐτοὶ λάβωσι τῆς ἐκείνων ἀποδράσεως. Οἱ μὲν οὖν ἀνδρειότατοι τῶν ἐξιόντων ἔφθασαν διεκπέσασθαι, καὶ διέφυγον· τῶν δ' ἔνδον καταληφθέντων ἄνδρες μὲν ἀνῃρέθησαν ἐπὶ τοῖς χιλίοις ἑπτακόσιοι, γύναια δὲ καὶ παῖδες ἠνδραποδίσθησαν. Τὰς δὲ πρὸς τοὺς παραδόντας τὸ φρούριον ὁμολογίας οἰόμενος δεῖν ὁ Βάσσος διαφυλάττειν, αὐτούς τε ἀφίησι καὶ τὸν Ἐλεάζαρον ἀπέδωκεν.

5. Ταῦτα δὲ διοικησάμενος, ἠπείγετο τὴν στρατιὰν ἄγων ἐπὶ τὸν προςαγορευόμενον Ἰάρδην δρυ-

μόν· πολλοὶ γὰρ εἰς αὐτὸν ἠγγέλθησαν ἠθροῖσθαι, τῶν κατὰ τὰς πολιορκίας πρότερον ἔκ τε Ἱεροσολύμων καὶ Μαχαιροῦντος ἀποδράντων. Ἐλθὼν οὖν ἐπὶ τὸν τόπον, καὶ γνοὺς τὴν ἀγγελίαν οὐκ ἐψευσμένην, πρῶτον μὲν τοῖς ἱππεῦσιν ἅπαν κυκλοῦται τὸ χωρίον, ὅπως τοῖς διεκπαίεσθαι τολμῶσι τῶν Ἰουδαίων ἄπορος ἡ φυγὴ γίνηται διὰ τοὺς ἱππέας· τοὺς δὲ πεζοὺς ἐκέλευσε δενδροτομεῖν τὴν ὕλην, εἰς ἣν καταπεφεύγεσαν. Καθίστανται δὲ διὰ τοῦτο πρὸς ἀνάγκην οἱ Ἰουδαῖοι τοῦ δρᾶν τι γενναῖον, ὡς ἐκπαραβόλως ἀγωνισάμενοι τάχα ἂν καὶ διαφύγοιεν. Ἀθρόοι δὴ, καὶ μετὰ βοῆς ἀΐξαντες, ἐνέπιπτον τοῖς κεκυκλωμένοις. Οἱ δὲ αὐτοὺς ἐδέχοντο καρτερῶς, καὶ πολλῇ τῶν μὲν ἀπονοίᾳ, τῶν δὲ φιλονεικίᾳ χρωμένων, χρόνος μὲν οὐκ ὀλίγος διὰ τοῦτο τῇ μάχῃ προέβη, τέλος δὲ αὐτοῖς οὐχ ὅμοιον ἀπέβη τοῖς ἀγωνισαμένοις. Ῥωμαίων μὲν γὰρ δώδεκα τοὺς πάντας συνέβη πεσεῖν, ὀλίγους τε τρωθῆναι· τῶν Ἰουδαίων δ' ἐκ τῆς μάχης ταύτης οὐδεὶς διέφυγεν, ἀλλ' ὄντες οὐκ ἐλάττους τρισχιλίων πάντες ἀπέθανον, καὶ στρατηγὸς αὐτῶν Ἰούδας ὁ Ἰαείρου παῖς, περὶ οὗ πρότερον εἰρήκαμεν, ὅτι τάξεως ἡγούμενός τινος ἐν τῇ πολιορκίᾳ τῶν Ἱεροσολύμων κατά τινας διαδὺς τῶν ὑπονόμων ἔλαθεν ἀποδράς.

6. Περὶ δὲ τὸν αὐτὸν καιρὸν ἐπέστειλε Καῖσαρ Βάσσῳ, καὶ Λιβερίῳ Μαξίμῳ, οὗτος δὲ ἦν ἐπίτροπος, κελεύων πᾶσαν γῆν ἀποδόσθαι τῶν Ἰουδαίων. Οὐ γὰρ κατῴκισεν ἐκεῖ πόλιν, ἰδίαν αὐτῷ τὴν χώραν φυλάττων· ὀκτακοσίοις δὲ μόνοις, ἀπὸ τῆς στρατιᾶς διαφειμένοις, χωρίον ἔδωκεν εἰς κατοίκησιν, ὃ καλεῖται μὲν Ἀμμαοῦς, ἀπέχει δὲ τῶν Ἱεροσολύμων σταδίους ἑξήκοντα. Φόρον δὲ τοῖς ὅπου δήποτ' οὖσιν Ἰουδαίοις ἐπέβαλε, δύο δραχμὰς ἕκαστον κελεύσας ἀνὰ πᾶν ἔτος εἰς τὸ Καπετώλιον
φέρειν, ὥσπερ πρότερον εἰς τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις 420

νέων συνετέλουν. Καὶ τὰ μὲν Ἰουδαίων τότε τοιαύτην εἶχε κατάστασιν.

CAP. VII. 1. Ἤδη δὲ ἔτος τέταρτον Οὐεσπασιανοῦ διέποντος τὴν ἡγεμονίαν, συνέβη τὸν βασιλέα τῆς Κομμαγηνῆς Ἀντίοχον μεγάλαις συμφοραῖς πανοικεσίᾳ περιπεσεῖν, ἀπὸ τοιαύτης αἰτίας. Καισέννιος Παῖτος, ὁ τῆς Συρίας ἡγεμὼν τότε καθεστηκὼς, εἴτ᾽ οὖν ἀληθεύων, εἴτε καὶ διὰ τὴν πρὸς Ἀντίοχον ἔχθραν, οὐ σφόδρα γὰρ τὸ σαφὲς ἠλέγχθη, γράμματα πρὸς Καίσαρα διεπέμψατο, λέγων 'τὸν Ἀντίοχον μετὰ τοῦ παιδὸς Ἐπιφανοῦς διεγνωκέναι Ῥωμαίων ἀφίστασθαι, συνθήκας πρὸς τὸν βασιλέα τῶν Πάρθων πεποιημένον· δεῖν οὖν προκαταλαβεῖν αὐτοὺς, μὴ φθάσαντες τῶν πραγμάτων ἄρξασθαι πᾶσαν τὴν Ῥωμαίων ἀρχὴν πολέμῳ συνταράξωσιν. Ἔμελλε δὲ Καῖσαρ τοιούτου μηνύματος αὐτῷ προςπεσόντος μὴ περιορᾶν. Καὶ γὰρ ἡ γειτνίασις τῶν βασιλέων ἐποίει τὸ πρᾶγμα μείζονος ἄξιον προνοίας. Τὰ γὰρ Σαμόσατα, τῆς Κομμαγηνῆς μεγίστη πόλις, κεῖται παρὰ τὸν Εὐφράτην, ὥςτε εἶναι τοῖς Πάρθοις, εἴ τι τοιοῦτον διενενόηντο, ῥάστην μὲν τὴν διάβασιν, βεβαίαν δὲ τὴν ὑποδοχήν.' Πιστευθεὶς οὖν ὁ Παῖτος, καὶ λαβὼν ἐξουσίαν πράττειν ἃ δοκεῖ συμφέρειν, οὐκ ἐμέλλησεν· ἐξαίφνης δὲ, τῶν περὶ τὸν Ἀντίοχον οὐδὲ προςδοκώντων, εἰς τὴν Κομμαγηνὴν ἐνέβαλε, τῶν μὲν ταγμάτων ἄγων τὸ ἕκτον, καὶ πρὸς τοῦτο λόχους καί τινας ἴλας ἱππέων. Συνεμάχουν δὲ καὶ βασιλεῖς αὐτῷ, τῆς μὲν Χαλκιδικῆς λεγομένης Ἀριστόβουλος, τῆς Ἐμέσης δὲ καλούμενος Σόεμος. Ἦν δὲ αὐτοῖς τὰ περὶ τὴν εἰςβολὴν ἀνανταγώνιστα· τῶν γὰρ κατὰ τὴν χώραν οὐδεὶς ἤθελε χεῖρας ἀνταίρειν. Ἀντίοχος δὲ, ἀγγελίας ἀδοκήτως προςπεσούσης, πολέμου μὲν οὐδ᾽ ἐπίνοιαν πρὸς Ῥωμαίους ἔσπασεν· ἔγνω δὲ, πᾶσαν τὴν βασιλείαν ὡς εἶχεν ἐπὶ σχήμα-

τος καταλιπὼν, μετὰ γυναικὸς καὶ τέκνων ὑπεξελθεῖν, οὕτως ἂν οἰόμενος καθαρὸν Ῥωμαίοις ἑαυτὸν ἀποδεῖξαι τῆς ἐπενηνεγμένης αἰτίας. Καὶ προελθὼν ἀπὸ τῆς πόλεως ἑκατὸν σταδίους πρὸς τοῖς εἴκοσιν εἰς τὸ πεδίον, ἐν αὐτῷ καταυλίζεται.

2. Παῖτος δ' ἐπὶ μὲν τὰ Σαμόσατα τοὺς καταληψομένους ἀποστέλλει, καὶ δι' ἐκείνων εἶχε τὴν πόλιν· αὐτὸς δὲ μετὰ τῆς ἄλλης δυνάμεως ἐπ' Ἀντίοχον ἐποιεῖτο τὴν ὁρμήν. Οὐ μὴν ὁ βασιλεὺς οὐδ' ὑπὸ τῆς ἀνάγκης προήχθη πρᾶξαί τι πρὸς Ῥωμαίους πολεμικὸν, ἀλλὰ τὴν αὐτοῦ τύχην ὀδυρόμενος ὅ,τι δέοι παθεῖν ὑπέμενε· νέοις δὲ, καὶ πολέμων ἐμπείροις, καὶ ῥώμῃ σωμάτων διαφέρουσιν, οὐ ῥᾴδιον ἦν τοῖς παισὶν αὐτοῦ τὴν συμφορὰν ἀμαχεὶ καρτερεῖν. Τρέπονται οὖν πρὸς ἀλκὴν Ἐπιφανής τε καὶ Καλλίνικος. Σφοδρᾶς δὲ τῆς μάχης καὶ παρ' 421
ὅλην τὴν ἡμέραν γενομένης, αὐτοὶ τὴν ἀνδρίαν διαπρεπῆ παρέσχον, καὶ μηδὲν ἐλαττωθείσῃ τῇ σφετέρᾳ δυνάμει, ἑσπέρας διελύθησαν. Ἀντιόχῳ δὲ οὐδ' ἐπὶ τῇ μάχῃ τοῦτον κεχωρηκυίᾳ τὸν τρόπον, μένειν ἀνεκτὸν ἐδόκει· λαβὼν δὲ τὴν γυναῖκα καὶ τὰς θυγατέρας, μετ' ἐκείνων ἐποιεῖτο φυγὴν εἰς Κιλικίαν, καὶ τοῦτο πράξας τὰ φρονήματα τῶν οἰκείων στρατιωτῶν κατέκλασεν. Ὡς γὰρ ἀπεγνωσμένης ὑπ' αὐτοῦ τῆς βασιλείας ἀπέστησαν, καὶ πρὸς τοὺς Ῥωμαίους μετεβάλλοντο, καὶ πάντων πρόδηλος ἦν ἀπόγνωσις. Πρὶν οὖν τελέως ἐρημωθῆναι τῶν συμμάχων, τοῖς περὶ τὸν Ἐπιφανῆ σώζειν αὐτοὺς ἐκ τῶν πολεμίων ἦν ἀναγκαῖον. Καὶ γίνονται δέκα σύμπαντες ἱππεῖς οἱ μετ' αὐτοῦ τὸν Εὐφράτην διαβάντες, ἔνθεν ἤδη μετ' ἀδείας πρὸς τὸν βασιλέα τῶν Πάρθων Βολογέσην κομισθέντες, οὐχ ὡς φυγάδες ὑπερηφανήθησαν, ἀλλ' ὡς ἔτι τὴν παλαιὰν ἔχοντες εὐδαιμονίαν πάσης τιμῆς ἠξιώθησαν.

3. Ἀντιόχῳ δὲ εἰς Ταρσὸν ἀφιγμένῳ τῆς Κιλικίας, ἑκατοντάρχην Παῖτος ἐπιπέμψας, δεδεμένον

αὐτὸν εἰς Ῥώμην ἀπέστειλεν. Οὐεσπασιανὸς δὲ οὐχ ὑπέμεινεν οὕτω πρὸς αὐτὸν ἀναχθῆναι τὸν βασιλέα, τῆς παλαιᾶς ἀξιῶν φιλίας μᾶλλον αἰδῶ λαβεῖν, ἢ διὰ τὴν τοῦ πολέμου πρόφασιν ἀπαραίτητον ὀργὴν διαφυλάττειν. Κελεύει δὴ καθ' ὁδὸν ἔτ' ὄντος αὐτοῦ τῶν δεσμῶν ἀφαιρεθέντα, καὶ παρέντα τὴν εἰς τὴν Ῥώμην ἄφιξιν, τὸ νῦν ἐν Λακεδαίμονι διάγειν· δίδωσί τε μεγάλας αὐτῷ προςόδους χρημάτων, ὅπως μὴ μόνον ἄφθονον, ἀλλὰ καὶ βασιλικὴν ἔχοι τὴν δίαιταν. Ταῦτα τοῖς περὶ τὸν Ἐπιφανῆ πυθομένοις, πρότερον σφόδρα περὶ τοῦ πατρὸς δεδιόσιν, ἀνείθησαν αἱ ψυχαὶ μεγάλης καὶ δυςδιαθέτου φροντίδος. Ἐλπὶς δὲ καὶ αὐτοῖς τῶν παρὰ Καίσαρος διαλλαγῶν ἐγένετο, Βολογέσου περὶ αὐτῶν ἐπιστείλαντος· οὐδὲ γὰρ εὐδαιμονοῦντες ὑπέμενον ἔξω τῆς Ῥωμαίων ζῆν ἡγεμονίας. Δόντος δὲ Καίσαρος ἠμέρως αὐτοῖς τὴν ἄδειαν, εἰς Ῥώμην παρεγένοντο· τοῦ τε πατρὸς ὡς αὐτοὺς ἐκ τῆς Λακεδαίμονος εὐθὺς ἐλθόντος, πάσης ἀξιούμενοι τιμῆς κατέμενον ἐνταῦθα.

4. Τὸ δὲ τῶν Ἀλανῶν ἔθνος, ὅτι μὲν εἰσὶ Σκύθαι περὶ τὸν Τάναϊν καὶ τὴν Μαιῶτιν λίμνην κατοικοῦντες, πρότερον δήπου δεδηλώκαμεν, κατὰ τούτους δὲ τοὺς χρόνους διανοηθέντες εἰς τὴν Μηδίαν, καὶ προσωτέρω ταύτης ἔτι καθ' ἁρπαγὴν ἐμβαλεῖν, τῷ βασιλεῖ τῶν Ὑρκανῶν διαλέγονται· τῆς παρόδου γὰρ οὗτος δεσπότης ἐστὶν, ἣν ὁ βασιλεὺς Ἀλέξανδρος πύλαις σιδηραῖς κλειστὴν ἐποίησε. Καὶ ἐκείνου τὴν εἴςοδον αὐτοῖς παρασχόντος, ἀθρόοι καὶ μηδὲν προεποπτεύσασι τοῖς Μήδοις ἐπιπεσόντες, χώραν πολυάνθρωπον καὶ παντοίων ἀνάμεστον βοσκημάτων διήρπαζον, μηδενὸς αὐτοῖς τολμῶντος ἀνθίστασθαι. Καὶ γὰρ ὁ βασιλεύων τῆς χώρας Πάκορος ὑπὸ δέους εἰς τὰς δυςχωρίας ἀναφυγὼν, τῶν μὲν
422 ἄλλων ἁπάντων παρακεχωρήκει, μόλις δὲ παρ' αὐτῶν ἐῤῥύσατο τήν τε γυναῖκα καὶ τὰς παλλακὰς αἰχμαλώτους γενομένας, ἑκατὸν δοὺς τάλαντα. Μετὰ

πολλῆς σὺν ῥαστώνης ἀμαχεὶ ποιούμενοι τὰς ἁρπαγὰς, μέχρι τῆς Ἀρμενίας προῆλθον, πάντα λεηλατοῦντες. Τηριδάτης δὲ αὐτῆς ἐβασίλευεν, ὃς ὑπαντιάσας αὐτοῖς, καὶ ποιησάμενος μάχην, παρὰ μικρὸν ἦλθεν ἐπ' αὐτῆς ζωὸς ἁλῶναι τῆς παρατάξεως. Βρόχον γὰρ αὐτῷ τις πόῤῥωθεν περιβαλὼν ἔμελλεν ἐπισπάσειν, εἰ μὴ τῷ ξίφει θᾶττον ἐκεῖνος τὸν τόνον κόψας ἔφθη διαφυγεῖν. Οἱ δὲ καὶ διὰ τὴν μάχην ἔτι μᾶλλον ἀγριωθέντες, τὴν μὲν χώραν ἐλυμήναντο· πολὺ δὲ πλῆθος ἀνθρώπων καὶ τῆς ἄλλης λείας ἄγοντες ἐξ ἀμφοῖν τῶν βασιλειῶν, πάλιν εἰς τὴν οἰκείαν ἐκομίσθησαν.

CAP. VIII. 1. Ἐπὶ δὲ τῆς Ἰουδαίας Βάσσου τελευτήσαντος, Φλαούϊος Σίλβας διαδέχεται τὴν ἡγεμονίαν· καὶ τὴν μὲν ἄλλην ἅπασαν ὁρῶν τῷ πολέμῳ κεχειρωμένην, ἓν δὲ μόνον ἔτι φρούριον ἀφεστηκὸς, ἐστράτευσεν ἐπὶ τοῦτο πᾶσαν τὴν ἐν τοῖς τόποις δύναμιν συναγαγών. Καλεῖται δὲ τὸ μὲν φρούριον Μασάδα, προειστήκει δὲ τῶν κατειληφότων αὐτὸ σικαρίων δυνατὸς ἀνὴρ Ἐλεάζαρος, ἀπόγονος Ἰούδα τοῦ πείσαντος Ἰουδαίων οὐκ ὀλίγους, ὡς πρότερον δεδηλώκαμεν, μὴ ποιεῖσθαι τὰς ἀπογραφὰς, ὅτε Κυρήνιος τιμητὴς εἰς τὴν Ἰουδαίαν ἐπέμφθη. Τότε γὰρ οἱ σικάριοι συνέστησαν ἐπὶ τοὺς ὑπακούειν Ῥωμαίων θέλοντας, καὶ πάντα τρόπον ὡς πολεμίοις προσεφέροντο, τὰς μὲν κτήσεις ἁρπάζοντες, καὶ περιελαύνοντες, ταῖς δὲ οἰκήσεσιν αὐτῶν πῦρ ἐνιέντες· οὐδὲν γὰρ ἀλλοφύλων αὐτοὺς ἔφασκον διαφέρειν, οὕτως ἀγεννῶς τὴν περιμάχητον Ἰουδαίοις ἐλευθερίαν προϊεμένους, καὶ δουλείαν αἱρεῖσθαι τὴν ὑπὸ Ῥωμαίοις ἀνωμολογηκότας. Ἦν δὲ ἄρα τοῦτο πρόφασις εἰς παρακάλυμμα τῆς ὠμότητος καὶ τῆς πλεονεξίας ὑπ' αὐτῶν λεγόμενον· σαφὲς δὲ διὰ τῶν ἔργων ἐποίησαν. Οἱ μὲν γὰρ αὐτοῖς τῆς ἀποστάσεως ἐκοι-

νώνησαν, καὶ τοῦ πρὸς Ῥωμαίους συνήραντο πολέμου, τὰ παρ' ἐκείνων δὲ τολμήματα χείρω πρὸς αὐτοὺς ἐγένετο. Καὶ ἐπὶ τῷ ψεύδεσθαι πάλιν τὴν πρόφασιν ἐξελεγχόμενοι, μᾶλλον ἐκάκουν τοὺς τὴν πονηρίαν αὐτῶν διὰ τῆς δικαιολογίας ὀνειδίζοντας. Ἐγένετο γάρ πως ὁ χρόνος ἐκεῖνος παντοδαπῆς ἐν τοῖς Ἰουδαίοις πονηρίας πολυφόρος, ὡς μηδὲν κακίας ἔργον ἄπρακτον καταλιπεῖν, μηδ' εἴ τις ἐπινοίᾳ διαπλάττειν ἐθελήσειεν ἔχειν ἄν τι καινότερον ἐξευρεῖν. Οὕτως ἰδίᾳ τε καὶ κοινῇ πάντες ἐνόσησαν, καὶ πρὸς
423 ὑπερβαλεῖν ἀλλήλους ἔν τε ταῖς πρὸς τὸν θεὸν ἀσεβείαις, καὶ ταῖς εἰς τοὺς πλησίον ἀδικίαις, ἐφιλονείκησαν· οἱ μὲν δυνατοὶ τὰ πλήθη κακοῦντες, οἱ πολλοὶ δὲ τοὺς δυνατοὺς ἀπολλύναι σπεύδοντες. Ἦν γὰρ ἐκείνοις μὲν ἐπιθυμία τοῦ τυραννεῖν, τοῖς δὲ τοῦ βιάζεσθαι καὶ τὰ τῶν εὐπόρων διαρπάζειν. Πρῶτοι μὲν οὖν οἱ σικάριοι τῆς παρανομίας, καὶ τῆς πρὸς τοὺς συγγενεῖς ἤρξαντο ὠμότητος, μήτε λόγον ἄῤῥητον εἰς ὕβριν, μήτ' ἔργον ἀπείραστον εἰς ὄλεθρον τῶν ἐπιβουλευθέντων παραλείποντες. Ἀλλὰ καὶ τούτους Ἰωάννης ἀπέδειξεν ἑαυτοῦ μετριωτέρους· οὐ γὰρ μόνον ἀνῄρει πάντας, ὅσοι τὰ δίκαια καὶ συμφέροντα συνεβούλευον, καθάπερ ἐχθίστοις μάλιστα δὴ τῶν πολιτῶν τοῖς τοιούτοις προσφερόμενος· ἀλλὰ καὶ κοινῇ τὴν πατρίδα μυρίων ἐνέπλησε κακῶν, ὁποῖα πράξειν ἔμελλεν ἄνθρωπος ἤδη καὶ τὸν θεὸν ἀσεβεῖν τετολμηκώς. Τράπεζάν τε γὰρ ἄθεσμον παρετίθετο, καὶ τὴν νενομισμένην καὶ πάτριον ἐξεδιῄτησεν ἁγνείαν, ἵνα ᾖ μηκέτι θαυμαστὸν, εἰ τὴν πρὸς ἀνθρώπους ἡμερότητα καὶ κοινωνίαν οὐκ ἐτήρησεν, ὁ τῆς πρὸς θεὸν ἀσεβείας οὕτω καταμανείς. Πάλιν τοίνυν ὁ Γιώρα Σίμων, τί κακὸν οὐκ ἔδρασεν; Ἢ ποίας ὕβρεως ἐλευθέρων ἀπέσχετο σωμάτων, οἳ τοῦτον ἀνέδειξαν τύραννον; Ποία δὲ αὐτοὺς φιλία, ποία δὲ συγγένεια πρὸς τοὺς ἐφ' ἑκάστης ἡμέρας φόνους οὐχὶ θρασυτέρους ἐποίησε; Τὸ μὲν γὰρ τοὺς

ἀλλοτρίους κακῶς ποιεῖν ἀγεννοῦς ἔργον εἶναι πονη-
ρίας ὑπελάμβανον, λαμπρὰν δὲ φέρειν ἐπίδειξιν ἡ-
γοῦντο τὴν ἐν τοῖς οἰκειοτάτοις ὠμότητα. Παρημιλ-
λήσατο δὲ καὶ τὴν τούτων ἀπόνοιαν ἡ τῶν Ἰδου-
μαίων. Ἐκεῖνοι γὰρ οἱ μιαρώτατοι τοὺς ἀρχιερέας
κατασφάξαντες, ὅπως μηδὲ μέρος τι τῆς πρὸς θεὸν
εὐσεβείας διαφυλάττηται, πᾶν ὅσον ἦν λείψανον ἔτι
πολιτικοῦ σχήματος ἐξέκοψαν, καὶ τὴν τελεωτάτην
εἰςήγαγον διὰ πάντων ἀνομίαν. Ἐν ᾗ τὸ τῶν ζη-
λωτῶν κληθέντων γένος ἤκμαζεν, οἳ τὴν προςηγο-
ρίαν τοῖς ἔργοις ἐπηλήθευσαν. Πᾶν γὰρ κακίας ἔρ-
γον ἐξεμιμήσαντο, μηδ᾽ εἴ τι πρότερον προϋπαρχθὲν
ἡ μνήμη παραδέδωκεν αὐτοὶ παραλιπόντες ἀζήλω-
τον· καίτοι τὴν προςηγορίαν αὐτοῖς ἀπὸ τῶν ἐπ᾽ ἀ-
γαθῷ ζηλουμένων ἐπέθεσαν, ἢ κατειρωνευόμενοι τῶν
ἀδικουμένων, διὰ τὴν αὐτῶν θηριώδη φύσιν, ἢ τὰ
μέγιστα τῶν κακῶν ἀγαθὰ νομίζοντες. Τοιγαροῦν
προςῆκον ἕκαστοι τὸ τέλος εὕροντο, τοῦ θεοῦ τὴν
ἀξίαν ἐπὶ πᾶσιν αὐτοῖς τιμωρίαν βραβεύσαντος. Ὅ-
σας γὰρ ἀνθρώπου δύναται φύσις κολάσεις ὑπομεῖ-
ναι, πᾶσαι κατέσκηψαν εἰς αὐτοὺς, μέχρι καὶ τῆς
ἐσχάτης τοῦ βιοῦ τελευτῆς, ἣν ὑπέμειναν ἐν πολυ-
τρόποις αἰκίαις ἀποθανόντες. Οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ φαίη
τις ἂν αὐτοὺς ἐλάττω παθεῖν ὧν ἔδρασαν· τὸ γὰρ
δικαίως ἐπ᾽ αὐτῶν οὐ προςῆν. Τοὺς δὲ ταῖς ἐ-
κείνων ὠμότησι περιπεσόντας, οὐ τοῦ παρόντος
ἂν εἴη καιροῦ κατὰ τὴν ἀξίαν ὀδύρεσθαι. Πά-
λιν οὖν ἐπάνειμι πρὸς τὸ καταλειπόμενον μέρος τῆς
διηγήσεως.

2. Ἐπὶ γὰρ τὸν Ἐλεάζαρον, καὶ τοὺς κατέ-
χοντας σὺν αὐτῷ τὴν Μασάδαν σικαρίους ὁ τῶν
Ῥωμαίων στρατηγὸς ἧκε τὰς δυνάμεις ἄγων. Καὶ
τῆς μὲν χώρας ἁπάσης εὐθὺς ἐκράτει, φρουρὰς ἐν
τοῖς ἐπικαιροτάτοις αὐτῆς μέρεσιν ἐγκαταστήσας. 424
Τεῖχος δὲ περιέβαλε κύκλῳ περὶ πᾶν τὸ φρούριον,
ὅπως μηδενὶ τῶν πολιορκουμένων ᾖ ῥᾴδιον διαφυγεῖν,

καὶ διανέμει τοὺς φυλάξοντας. Αὐτὸς δὲ καταστρατοπεδεύει τόπον, ὡς μὲν πρὸς τὴν πολιορκίαν ἐπιτηδειότατον ἐκλαβὼν, καθ' ὃν αἱ τοῦ φρουρίου πέτραι τῷ πλησίον ὄρει συνήγγιζον, ἄλλως δὲ πρὸς ἀφθονίαν τῶν ἐπιτηδείων δύςκολον. Οὐ γὰρ ἡ τροφὴ μόνον πόῤῥωθεν ἐκομίζετο, καὶ σὺν μεγάλῃ ταλαιπωρίᾳ τῶν ἐπὶ τούτῳ τεταγμένων Ἰουδαίων, ἀλλὰ καὶ τὸ ποτὸν ἦν ἀγώγιμον εἰς τὸ στρατόπεδον, τοῦ τόπου μηδεμίαν ἐγγὺς πηγὴν ἀναδιδόντος. Ταῦτ' οὖν προοικονομησάμενος ὁ Σίλβας ἐπὶ τὴν πολιορκίαν ἐτράπετο, πολλῆς ἐπιτεχνήσεως καὶ ταλαιπωρίας δεομένην, διὰ τὴν ὀχυρότητα τοῦ φρουρίου τοιοῦδε τὴν φύσιν ὑπάρχοντος.

3. Πέτραν οὐκ ὀλίγην τῇ περιόδῳ καὶ μῆκος ὑψηλὴν, πανταχόθεν περιεῤῥώγασι βαθεῖαι φάραγγες κάτωθεν ἐξ ἀοράτου τέρματος κρημνώδεις, καὶ πάσῃ βάσει ζώων ἀπρόςιτοι, πλὴν ὅσον κατὰ δύο τόπους τῆς πέτρας, εἰς ἄνοδον οὐκ εὐμαρῆ παρεικούσης. Ἔστι δὲ τῶν ὁδῶν ἡ μὲν ἀπὸ τῆς Ἀσφαλτίτιδος λίμνης πρὸς ἥλιον ἀνίσχοντα, καὶ πάλιν ἀπὸ τῆς δύσεως, ᾗ ῥᾷον πορευθῆναι. Καλοῦσι δὲ τὴν ἑτέραν ὄφιν, τῇ στενότητι προςεικάσαντες καὶ τοῖς συνεχέσιν ἑλιγμοῖς· κλᾶται γὰρ περὶ τὰς τῶν κρημνῶν ἐξοχὰς, καὶ πολλάκις εἰς αὑτὴν ἀναστρέφουσα, καὶ κατὰ μικρὸν αὖθις ἐκμηκυνομένη μόλις ψαύει τοῦ πρόσω. Δεῖ δὲ παραλλὰξ τὸν δι' αὐτῆς βαδίζοντα τὸν ἕτερον τοῖν ποδοῖν ἐρείδεσθαι. Ἔστι δὲ καὶ τῷ παρολισθάνειν πρόδηλος ὄλεθρος· ἑκατέρωθεν γὰρ βάθος κρημνῶν ὑποκέχηνε, τῇ φοβερότητι πᾶσαν εὐτολμίαν ἐκπλῆξαι δυνάμενον. Διὰ τοιαύτης οὖν ἐλθόντι σταδίους τριάκοντα κορυφὴ τὸ λοιπόν ἐστιν, οὐκ εἰς ὀξὺ τέρμα συνηγμένη, ἀλλ' ὡς εἶναι κατ' ἄκρας ἐπίπεδος. Ἐπὶ ταύτῃ πρῶτος μὲν ὁ ἀρχιερεὺς ᾠκοδομήσατο φρούριον Ἰωνάθης, καὶ προςηγόρευσε Μασάδαν. Ὕστερον δὲ Ἡρώδῃ τῷ βασιλεῖ διὰ πολλῆς ἐγένετο σπουδῆς ἡ τοῦ χωρίου

κατασκευή. Τεῖχός τε γὰρ ἤγειρε περὶ πάντα τὸν
κύκλον τῆς κορυφῆς ἑπτὰ σταδίων ὄντα, λευκοῦ μὲν
λίθου πεποιημένον, ὕψος δὲ δώδεκα, καὶ πλάτος ὀκ-
τὼ πήχεις ἔχον, τριάκοντα δὲ αὐτῷ καὶ ἑπτὰ πύρ-
γοι πεντηκονταπήχεις ἀνειστήκεσαν, ἐξ ὧν ἦν εἰς οἰ-
κήματα διελθεῖν περὶ πᾶν τὸ τεῖχος ἔνδον ᾠκοδομη-
μένα. Τὴν γὰρ κορυφὴν πίονα, καὶ πεδίου παντὸς
οὖσαν μαλακωτέραν, ἀνῆκεν εἰς γεωργίαν ὁ βασιλεὺς,
ἵνα, εἴ ποτε τῆς ἔξω τροφῆς ἀπορία γένοιτο, μὴ δὲ
ταύτῃ κάμοιεν οἱ τὴν αὐτῶν σωτηρίαν τῷ φρουρίῳ
πεπιστευκότες. Καὶ βασίλειον δὲ κατεσκεύασεν ἐν
αὐτῷ κατὰ τὴν ἀπὸ τῆς ἑσπέρας ἀνάβασιν, ὑποκάτω
μὲν τῶν τῆς ἄκρας τειχῶν, πρὸς δὲ τὴν ἄρκτον ἐγ-
κλίνον. Τοῦ δὲ βασιλείου τὸ τεῖχος ἦν ὕψει μέγα
καὶ καρτερὸν, πύργους ἔχον ἑξηκονταπήχεις ἐγγωνί-
ους τέτταρας. Ἥ τε τῶν οἰκημάτων ἔνδον καὶ
στοῶν καὶ βαλανείων κατασκευὴ παντοία καὶ πολυτε-
λὴς ἦν, κιόνων μὲν ἁπανταχοῦ μονολίθων ὑφεστηκό-
των, τοίχων δὲ καὶ τῶν ἐν τοῖς οἰκήμασιν ἐδαφῶν
λίθου στρώσει πεποικιλμένων. Πρὸς ἕκαστον δὲ τῶν
οἰκουμένων τόπων ἄνω τε καὶ περὶ τὸ βασίλειον, καὶ
πρὸ τοῦ τείχους πολλοὺς καὶ μεγάλους ἐτετμήκει λάκ-
κους ἐν ταῖς πέτραις, φυλακτῆρας ὑδάτων, μηχα- 425
νώμενος εἶναι χορηγίαν, ὅση τῶν ἐκ πηγῶν ἐστι
χρωμένοις. Ὀρυκτὴ δὲ ὁδὸς ἐκ τοῦ βασιλείου πρὸς
ἄκραν τὴν κορυφὴν ἀνεφέρετο, τοῖς ἔξωθεν ἀφανής.
Οὐ μὴν οὐδὲ ταῖς φανεραῖς ὁδοῖς ἦν οἷόν τε χρή-
σασθαι ῥᾳδίως πολεμίους. Ἡ μὲν γὰρ ἑῴα διὰ τὴν
φύσιν, ὡς προείπομεν, ἐστὶν ἄβατος· τὴν δ' ἀπὸ
τῆς ἑσπέρας μεγάλῳ κατὰ τὸ στενότατον πύργῳ διε-
τείχισε, ἀπέχοντι τῆς ἄκρας πήχεων οὐκ ἔλαττον
διάστημα χιλίων, ὃν οὔτε παρελθεῖν δυνατὸν ἦν, οὔτε
ῥᾴδιον ἑλεῖν. Δυσέξοδος δὲ καὶ τοῖς μετ' ἀδείας βα-
δίζουσιν ἐπεποίητο· οὕτω μὲν οὖν πρὸς τὰς τῶν πο-
λεμίων ἐφόδους, φύσει τε καὶ χειροποιήτως τὸ φρού-
ριον ὠχύρωτο.

4. Τῶν δ' ἔνδον ἀποκειμένων παρασκευῶν ἔτι μᾶλλον ἄν τις ἐθαύμασε τὴν λαμπρότητα καὶ τὴν διαμονήν. Σῖτός τε γὰρ ἀπέκειτο πολὺς καὶ πολὺν χρόνον ἀρκεῖν ἱκανώτατος, οἶνός τε πολὺς ἦν καὶ ἔλαιον· ἔτι δὲ παντοῖος ὀσπρίων καρπὸς καὶ φοίνικες ἐσεσώρευντο. Πάντα δὲ εὗρεν ὁ Ἐλεάζαρος τοῦ φρουρίου μετὰ τῶν σικαρίων ἐγκρατὴς δόλῳ γενόμενος, ἀκμαῖα καὶ μηδὲν τῶν νεωστὶ κειμένων ἀποδέοντα, καίτοι σχεδὸν ἀπὸ τῆς παρασκευῆς εἰς τὴν ὑπὸ Ῥωμαίοις ἅλωσιν ἑκατὸν ἦν χρόνος ἐτῶν. Ἀλλὰ καὶ Ῥωμαῖοι τοὺς περιλειφθέντας τῶν καρπῶν εὗρον ἀδιαφθόρους. Αἴτιον δ' οὐκ ἂν ἁμάρτοι τις ὑπολαμβάνων εἶναι τὸν ἀέρα τῆς διαμονῆς, ὕψει τῶν περὶ τὴν ἄκραν, πάσης ὄντα γεώδους καὶ θολερᾶς ἀμιγῆ κράσεως. Εὑρέθη δὲ καὶ παντοίων πλῆθος ὅπλων ὑπὸ τοῦ βασιλέως ἀποτεθησαυρισμένον, ὡς ἀνδράσιν ἀρκεῖν μυρίοις, ἀργός τε σίδηρος καὶ χαλκὸς, ἔτι δὲ καὶ μόλυβδος, ἅτε δὴ τῆς παρασκευῆς ἐπὶ μεγάλαις αἰτίαις γενομένης. Λέγεται γὰρ ἑαυτῷ τὸν Ἡρώδην τοῦτο τὸ φρούριον εἰς ἀποφυγὴν ἑτοιμάζειν, διπλοῦν ὑφορώμενον κίνδυνον· τὸν μὲν παρὰ τοῦ πλήθους τῶν Ἰουδαίων, μὴ καταλύσαντες ἐκεῖνον, τοὺς πρὸ αὐτοῦ βασιλέας ἐπὶ τὴν ἀρχὴν καταγάγωσι· τὸν μείζω δὲ καὶ χαλεπώτερον ἐκ τῆς βασιλευούσης Αἰγύπτου Κλεοπάτρας. Αὕτη γὰρ τὴν αὑτῆς γνώμην οὐκ ἐπεῖχεν, ἀλλὰ πολλάκις Ἀντωνίῳ λόγους προσέφερε, τὸν μὲν Ἡρώδην ἀνελεῖν ἀξιοῦσα, χαρίσασθαι δὲ αὐτῇ τὴν βασιλείαν τῶν Ἰουδαίων δεομένη. Καὶ μᾶλλον ἄν τις ἐθαύμασεν, ὅτι μηδέπω τοῖς προστάγμασιν Ἀντώνιος ὑπηκηκόει, κακῶς ὑπὸ τοῦ πρὸς αὐτὴν ἔρωτος δεδουλωμένος, οὐχ ὅτι περὶ τοῦ μὴ χαρίσασθαι προσεδόκησε. Διὰ τοιούτους μὲν φόβους Ἡρώδης Μασάδαν κατασκευασάμενος, ἔμελλε Ῥωμαίοις ἀπολείψειν ἔργον τοῦ πρὸς Ἰουδαίους πολέμου τελευταῖον.

5. Ἐπεὶ γὰρ ἔξωθεν ἤδη περιτετειχίκει πάντα

τὸν τόπον ὁ τῶν Ῥωμαίων, ὡς προείπομεν, ἡγεμὼν, καὶ τοῦ μή τινα ἀποδράναι πρόνοιαν ἐπεποίητο τὴν ἀκριβεστάτην, ἐνεχείρει τῇ πολιορκίᾳ, μόνον εὑρὼν ἕνα τόπον, ἐπιβολὴν χωμάτων δέξασθαι δυνάμενον. Μετὰ γὰρ τὸν διατειχίζοντα πύργον τὴν ἀπὸ τῆς δύσεως ὁδὸν ἄγουσαν εἴς τε τὸ βασίλειον καὶ τὴν ἀκρώρειαν, ἦν τις ἐξοχὴ πέτρας εὐμεγέθης τῷ πλάτει καὶ πολὺ προκύπτουσα, τοῦ δὲ ὕψους τῆς Μασάδας τριακοσίους πήχεις ὑποκάτω, Λευκὴν δὲ αὐτὴν ὠνόμαζον. Ἐπὶ ταύτην οὖν ἀναβὰς, καὶ κατασχὼν αὐτὴν ὁ Σίλβας ἐκέλευσε τὸν στρατὸν χοῦν ἐπιφέρειν. Τῶν δὲ προθύμως καὶ μετὰ πολλῆς χειρὸς ἐργασαμένων, στερεὸν εἰς διακοσίους πήχεις ὑψώθη 426
τὸ χῶμα. Οὐ μὴν οὔτε βέβαιον οὔτε αὔταρκες ἐδόκει τοῦτο τὸ μέτρον εἶναι τοῖς μηχανήμασιν εἰς ἐπιβάθραν, ἀλλ' ἐπ' αὐτοῦ βῆμα λίθων μεγάλων συνηρμοσμένων ἐποιήθη, πεντήκοντα πηχῶν εὖρός τε καὶ ὕψος. Ἦν δὲ ἄλλων τε μηχανημάτων ἡ κατασκευὴ παραπλησία τοῖς ὑπὸ μὲν Οὐεσπασιανοῦ πρότερον, μετὰ ταῦτα δὲ ὑπὸ Τίτου πρὸς τὰς πολιορκίας ἐπινοηθεῖσι· καὶ πύργος ἑξηκοντάπηχυς συνετέθη, σιδήρῳ καταπεφραγμένος ἅπας, ἐξ οὗ πολλοῖς ὀξυβέλεσι καὶ πετροβόλοις βάλλοντες οἱ Ῥωμαῖοι τοὺς ἀπὸ τοῦ τείχους μαχομένους ταχέως ἀνέστειλαν, καὶ προκύπτειν ἐκώλυσαν. Ἐνταῦθα δὲ καὶ κριὸν ὁ Σίλβας μέγαν κατασκευασάμενος, συνεχεῖς ποιεῖσθαι κελεύσας τῷ τείχει τὰς ἐμβολὰς, μόλις μὲν, ἀλλ' οὖν ἀναῤῥήξας τι μέρος αὐτοῦ, κατήρειψε. Φθάνουσι δὲ οἱ σικάριοι ταχέως ἔνδοθεν οἰκοδομησάμενοι τεῖχος ἕτερον, ὃ μηδ' ὑπὸ τῶν μηχανημάτων ἔμελλεν ὅμοιόν τι πείσεσθαι· μαλακὸν γὰρ αὐτὸ καὶ τὴν σφοδρότητα τῆς ἐμβολῆς ὑπεκλύειν δυνάμενον, τοιῷδε τρόπῳ κατεσκεύασαν. Δοκοὺς μεγάλας ἐπὶ μῆκος προσεχεῖς ἀλλήλαις κατὰ τὴν τομὴν συνέθεσαν. Δύο δὲ ἦσαν στίχοι παράλληλοι τοσοῦτον διεστῶτες, ὅσον εἶναι πλάτος τείχους, καὶ μέσον ἀμφοῖν τὸν

χοῦν ἐνεφόρουν. Ὅπως δὲ μὴ, ὑψουμένου τοῦ χώματος, ἡ γῆ διαχέοιτο, πάλιν ἑτέραις δοκοῖς ἐπικαρσίαις τὰς κατὰ μῆκος κειμένας διέδεον. Ἦν οὖν ἐκείνοις μὲν οἰκοδομίᾳ τὸ ἔργον παραπλήσιον. Τῶν μηχανημάτων δὲ αἱ πληγαὶ φερόμεναι πρὸς εἰκὸς ἐξελύοντο, καὶ τῷ σάλῳ συνιζάνον ἐποίουν αὐτὸ στεριφώτερον. Τοῦτο συνιδὼν ὁ Σίλβας πυρὶ μᾶλλον αἱρήσειν ἐνόμισε τὸ τεῖχος, καὶ τοῖς στρατιώταις προςέταττε λαμπάδας αἰθομένας ἀθρόους εἰςακοντίζειν. Τὸ δὲ, οἷα δὴ ξύλων τὸ πλέον πεποιημένον, ταχὺ τοῦ πυρὸς ἀντελάβετο, καὶ τῇ χαυνότητι πυρωθὲν διὰ βάθους φλόγα πολλὴν ἐξεπύρσευσεν. Ἀρχομένου μὲν οὖν ἔτι τοῦ πυρὸς, βοῤῥᾶς ἐμπνέων τοῖς Ῥωμαίοις φοβερὸς ἦν· ἄνωθεν γὰρ ἀποστρέφων ἐπ᾽ ἐκείνους ἤλαυνε τὴν φλόγα. Καὶ σχεδὸν ἤδη τῶν μηχανημάτων, ὡς συμφλεγησομένων, ἀπεγνώκεσαν. Ἔπειτα δὲ αἰφνίδιον νότος μεταβαλὼν, καθάπερ ἐκ δαιμονίου προνοίας, καὶ πολὺς ἐναντίος πνεύσας, τῷ τείχει φέρων αὐτὴν προςέβαλε, καὶ πᾶν ἤδη διὰ βάθους ἐφλέγετο. Ῥωμαῖοι μὲν οὖν τῇ παρὰ τοῦ θεοῦ συμμαχίᾳ κεχρημένοι, χαίροντες εἰς τὸ στρατόπεδον ἀπηλλάττοντο, μεθ᾽ ἡμέραν ἐπιχειρεῖν τοῖς πολεμίοις διεγνωκότες· καὶ τὰς φυλακὰς νύκτωρ ἐπιμελεστέρας ἐποιήσαντο, μή τινες αὐτῶν λάθωσιν ἀποδράντες.

6. Οὐ μὴν οὔτ᾽ αὐτὸς Ἐλεάζαρος ἐν νῷ δρασμὸν ἔλαβεν, οὔτ᾽ ἄλλῳ τινὶ τοῦτο ποιεῖν ἔμελλεν ἐπιτρέψειν. Ὁρῶν δὲ τὸ μὲν τεῖχος ὑπὸ τοῦ πυρὸς ἀνακαιόμενον, ἄλλον δὲ οὐδένα σωτηρίας τρόπον οὐδ᾽ ἀλκῆς ἐπινοῶν, ἃ δὲ ἔμελλον Ῥωμαῖοι δράσειν αὐτοὺς καὶ τέκνα καὶ γυναῖκας αὐτῶν, εἰ κρατήσειαν, ὑπ᾽ ὀφθαλμοὺς αὐτῶν τιθέμενος, θάνατον κατὰ πάντων ἐβουλεύσατο. Καὶ τοῦτο κρίνας ἐκ τῶν παρόντων ἄριστον, τοὺς ἀνδρωδεστάτους τῶν ἑταίρων συναγαγὼν, τοιούτοις ἐπὶ τὴν πρᾶξιν λόγοις παρεκάλει· "Πάλαι διεγνωκότας ἡμᾶς, ἄνδρες ἀγαθοὶ, μήτε

'Ρωμαίοις, μήτ' ἄλλῳ τινὶ δουλεύειν, ἢ θεῷ, μόνος 427
γὰρ οὗτος ἀληθής ἐστι καὶ δίκαιος ἀνθρώπων δε-
σπότης, ἥκει νῦν καιρὸς, ἐπαληθεῦσαι κελεύων τὸ
φρόνημα τοῖς ἔργοις. Πρὸς ὃν ἑαυτοὺς μὴ καται-
σχύνωμεν, πρότερον μηδὲ δουλείαν ἀκίνδυνον ὑπο-
μείναντες, νυνὶ δὲ μετὰ δουλείας ἑλόμενοι τιμωρίας
ἀνηκέστους, εἰ ζῶντες ὑπὸ 'Ρωμαίοις ἐσόμεθα. Πρῶ-
τοί τε γὰρ πάντων ἀπέστημεν, καὶ πολεμοῦμεν αὐ-
τοῖς τελευταῖοι. Νομίζω δὲ καὶ παρὰ θεοῦ ταύτην
ἡμῖν δεδόσθαι χάριν, τοῦ δύνασθαι καλῶς καὶ ἐλευ-
θέρως ἀποθανεῖν, ὅπερ ἄλλοις οὐκ ἐγένετο παρ' ἐλ-
πίδα κρατηθεῖσιν. Ἡμῖν δὲ ὑπόδηλος μὲν ἐστιν ἡ
γενησομένη μεθ' ἡμέραν ἅλωσις· ἐλευθέρα δὲ ἡ τοῦ
γενναίου θανάτου μετὰ τῶν φιλτάτων αἵρεσις. Οὔτε
γὰρ τοῦτο ἀποκωλύειν οἱ πολέμιοι δύνανται, πάντως
εὐχόμενοι ζῶντας ἡμᾶς παραλαβεῖν, οὔθ' ἡμεῖς ἐκεί-
νους ἔτι νικᾶν μαχόμενοι. Ἔδει μὲν γὰρ εὐθὺς, ἴ-
σως ἐξ ἀρχῆς, ὅτι τῆς ἐλευθερίας ἡμῖν ἀντιποιεῖσθαι
θελήσασι πάντα καὶ παρ' ἀλλήλων ἀπέβαινε χαλεπὰ
καὶ παρὰ τῶν πολεμίων χείρω, τῆς τοῦ θεοῦ γνώ-
μης στοχάζεσθαι, καὶ γινώσκειν, ὅτι τὸ πάλαι φίλον
αὐτῷ φῦλον Ἰουδαίων ἀπωλείᾳ κατέγνωστο. Μένων
γὰρ εὐμενὴς, ἢ μετρίως γοῦν ἡμῖν ἀπηχθημένος,
οὐκ ἂν τοσούτων μὲν ἀνθρώπων περιεῖδεν ὄλεθρον,
προήκατο δὲ τὴν ἱερωτάτην αὐτοῦ πόλιν πυρὶ καὶ
κατασκαφαῖς πολεμίων. Ἡμεῖς δὲ ἄρα καὶ μόνοι τοῦ
παντὸς Ἰουδαίων γένους ἠλπίσαμεν περιέσεσθαι τὴν
ἐλευθερίαν φυλάξαντες, ὥσπερ ἀναμάρτητοι πρὸς τὸν
θεὸν γενόμενοι, καὶ μηδεμιᾶς μετασχόντες ἁμαρτίας,
οἳ καὶ τοὺς ἄλλους ἐδιδάξαμεν; Τοιγαροῦν ὁρᾶτε,
πῶς ἡμᾶς ἐλέγχει μάταια προσδοκήσαντας, κρείττονα
τῶν ἐλπίδων τὴν ἐν τοῖς δεινοῖς ἀνάγκην ἐπαγαγών·
οὔτε γὰρ ἡμᾶς ἡ τοῦ φρουρίου φύσις ἀνάλωτος οὖσα
πρὸς σωτηρίαν ὠφέληκεν, ἀλλὰ καὶ τροφῆς ἀφθο-
νίαν καὶ πλῆθος ὅπλων, καὶ τὴν ἄλλην ἔχοντες παρα-
σκευὴν περιττεύουσαν, ὑπ' αὐτοῦ περιφανῶς τοῦ

θεοῦ τὴν ἐλπίδα τῆς σωτηρίας ἀφῃρήμεθα. Τὸ γὰρ πῦρ, εἰς τοὺς πολεμίους φερόμενον, οὐκ αὐτομάτως ἐπὶ τὸ κατασκευασθὲν τεῖχος ὑφ' ἡμῶν ἀνέστρεφεν· ἀλλ' ἔστι ταῦτα χόλος πολλῶν ἀδικημάτων, ἃ μανέντες εἰς τοὺς ὁμοφύλους ἐτολμήσαμεν, ὑπὲρ ὧν μὴ τοῖς ἐχθίστοις Ῥωμαίοις δίκας, ἀλλὰ τῷ θεῷ δι' ἡμῶν αὐτῶν ὑπόσχωμεν. Αὗται δ' εἰσὶν ἐκείνων μετριώτεραι. Θνησκέτωσαν γὰρ γυναῖκες ἀνύβριστοι, καὶ παῖδες δουλείας ἀπείρατοι, μετὰ δὲ αὐτοὺς ἡμεῖς εὐγενῆ χάριν ἀλλήλοις παράσχωμεν, καλὸν ἐντάφιον τὴν ἐλευθερίαν φυλάξαντες. Πρότερον δὲ καὶ τὰ χρήματα καὶ τὸ φρούριον πυρὶ διαφθείρωμεν· λυπηθήσονται γὰρ Ῥωμαῖοι, σαφῶς οἶδα, μήτε τῶν ἡμετέρων σωμάτων κρατήσοντες, καὶ τοῦ κέρδους ἁμαρτόντες. Τὰς τροφὰς μόνας ἐάσωμεν· αὗται γὰρ ἡμῖν τεθνηκόσι μαρτυρήσουσιν, ὅτι μὴ δι' ἔνδειαν ἐκρατήθημεν, ἀλλ', ὥςπερ ἐξ ἀρχῆς διέγνωμεν, θάνατον εἱλάμεθα πρὸ δουλείας.

7. Ταῦτα Ἐλεάζαρος ἔλεγεν, οὐ μὴν κατ' αὐτὸ ταῖς γνώμαις προσέπιπτε τῶν παρόντων. Ἀλλ' οἱ μὲν ἔσπευδον ὑπακούειν, καὶ μόνον οὐχ ἡδονῆς
428 ἐνεπίπλαντο, καλὸν εἶναι τὸν θάνατον νομίζοντες. Τοὺς δὲ αὐτῶν μαλακωτέρους γυναικῶν καὶ γενεᾶς οἶκτος εἰςῄει· πάντως δὲ καὶ τῆς ἑαυτῶν προδήλου τελευτῆς, εἰς ἀλλήλους ἀποβλέποντες τοῖς δακρύοις τὸ μὴ βουλόμενον τῆς γνώμης ἐσήμαινον. Τούτους ἰδὼν Ἐλεάζαρος ἀποδειλιῶντας, καὶ πρὸς τὸ μέγεθος τοῦ βουλεύματος τὰς ψυχὰς ὑποκλωμένους, ἔδεισε, μή ποτε καὶ τοὺς ἐῤῥωμένως τῶν λόγων ἀκούσαντας αὐτοὶ συνεκθηλύνωσι ποτνιώμενοι καὶ δακρύοντες. Οὔκουν ἀνῆκε τὴν παρακέλευσιν, ἀλλ' ἑαυτὸν ἐπεγείρας, καὶ πολλοῦ λήματος πλήρης γενόμενος, λαμπροτέροις ἐνεχείρει λόγοις, περὶ ψυχῆς ἀθανασίας, μέγα τε σχετλιάσας καὶ τοῖς δακρύουσιν ἀτενὲς ἐμβλέψας, "Ἦ πλεῖστον," εἶπεν, "ἐψεύσθην, νομίζων ἀνδράσιν ἀ-

γαθοῖς τῶν ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας ἀγώνων συναίρεσθαι, ζῆν καλῶς ἢ τεθνάναι διεγνωκόσιν. Ὑμεῖς δὲ ἦτε τῶν τυχόντων οὐδὲν εἰς ἀρετὴν οὐδ' εἰς εὐτολμίαν διαφέροντες, οἵ γε καὶ τὸν ἐπὶ μεγίστων ἀπαλλαγῇ κακῶν φοβεῖσθε θάνατον· δέον ὑπὲρ τούτου μήτε μελλῆσαι, μήτε σύμβουλον ἀναμεῖναι. Πάλαι γὰρ εὐθὺς ὑπὸ τῆς πρώτης αἰσθήσεως παιδεύοντες ἡμᾶς οἱ πάτριοι καὶ θεῖοι λόγοι διετέλουν, ἔργοις τε καὶ φρονήμασι τῶν ἡμετέρων προγόνων αὐτοὺς βεβαιούντων, ὅτι συμφορὰ τὸ ζῆν ἐστιν ἀνθρώποις, οὐχὶ θάνατος. Οὗτος μὲν γὰρ ἐλευθερίαν διδοὺς ψυχαῖς, εἰς τὸν οἰκεῖον καὶ καθαρὸν ἀφίησι τόπον ἀπαλλάσσεσθαι, πάσης συμφορᾶς ἀπαθεῖς ἐσομένας. Ἕως δὲ εἰσὶν ἐν σώματι θνητῷ δεδεμέναι, καὶ τῶν τούτου κακῶν συναναπίπλανται, τὸ ἀληθέστατον εἰπεῖν, τεθνήκασι· κοινωνία γὰρ θείῳ πρὸς θνητὸν ἀπρεπής ἐστι. Μέγα μὲν οὖν δύναται ψυχὴ καὶ σώματι συνδεδεμένη· ποιεῖ γὰρ αὐτῆς ὄργανον αἰσθανόμενον ἀοράτως αὐτὸ κινοῦσα, καὶ θνητῆς φύσεως περαιτέρω προάγουσα ταῖς πράξεσιν. Οὐ μὴν ἀλλ' ἐπειδὰν ἀπολυθεῖσα τοῦ καθέλκοντος αὐτὴν βάρους ἐπὶ γῆν, καὶ προςκρεμαμένου, χῶρον ἀπολάβῃ τὸν οἰκεῖον, τότε δὴ μακαρίας ἰσχύος καὶ πανταχόθεν ἀκωλύτου μετέχει δυνάμεως, ἀόρατος μένουσα τοῖς ἀνθρωπίνοις ὄμμασιν, ὥςπερ αὐτὸς ὁ θεός. Οὐδὲ γὰρ, ἕως ἐστὶν ἐν σώματι, θεωρεῖται· πρόςεισι γὰρ ἀφανῶς, καὶ μὴ βλεπομένη πάλιν ἀπαλλάττεται, μίαν μὲν αὐτὴ φύσιν ἔχουσα τὴν ἄφθαρτον, αἰτία δὲ σώματι γινομένη μεταβολῆς. Ὅτου γὰρ ἂν ψυχὴ προςάψηται, τοῦτο ζῇ καὶ τέθηλεν. Ὅτου δὲ ἂν ἀπαλλαγῇ, μαρανθὲν ἀποθνήσκει. Τοσοῦτον περίεστιν αὐτῇ ἀθανασίας. Ὕπνος δὲ τεκμήριον ὑμῖν ἔστω τῶν λόγων ἐναργέστατον, ἐν ᾧ ψυχαὶ, τοῦ σώματος αὐτὰς μὴ περισπῶντος, ἡδίστην μὲν ἔχουσιν ἀνάπαυσιν ἐφ' ἑαυτῶν γενόμεναι· θεῷ δὲ ὁμιλοῦσαι κατὰ συγγένειαν πάντῃ μὲν ἐπιφοιτῶσι, πολλὰ δὲ τῶν

ἐσομένων προθεσπίζουσι. Τί δὲ δεῖ δεδιέναι θάνατον, τὴν ἐν ὕπνῳ γινομένην ἀνάπαυσιν ἀγαπῶντας; Πῶς δὲ οὐκ ἀνόητόν ἐστιν, τὴν ἐν τῷ ζῆν ἐλευθερίαν διώκοντας, τῆς ἀϊδίου φθονεῖν ἑαυτοῖς; Ἔδει μὲν οὖν ἡμᾶς, οἴκοθεν πεπαιδευμένους, ἄλλοις εἶναι παράδειγμα τῆς πρὸς θάνατον ἑτοιμότητος. Οὐ μὴν ἀλλ᾽ εἰ καὶ τῆς παρὰ τῶν ἀλλοφύλων δεόμεθα πίστεως, βλέψωμεν εἰς Ἰνδοὺς τοὺς σοφίαν ἀσκεῖν ὑπισχνουμένους. Ἐκεῖνοί τε γὰρ, ὄντες ἄνδρες ἀγαθοὶ,
429 τὸν μὲν τοῦ ζῆν χρόνον, ὥςπερ ἀναγκαίαν τινὰ τῇ φύσει λειτουργίαν, ἀκουσίως ὑπομένουσι. Σπεύδουσι δὲ τὰς ψυχὰς ἀπολῦσαι τῶν σωμάτων, καὶ μηδενὸς αὐτοὺς κατεπείγοντος κακοῦ, μηδὲ ἐξελαύνοντος, πόθῳ τῆς ἀθανάτου διαίτης, προλέγουσι μὲν τοῖς ἄλλοις, ὅτι μέλλουσιν ἀπιέναι, καὶ ἔστιν ὁ κωλύσων οὐδείς· ἀλλὰ πάντες αὐτοὺς εὐδαιμονίζοντες, πρὸς τοὺς οἰκείους ἕκαστοι διδόασιν ἐπιστολάς. Οὕτω βεβαίαν καὶ ἀληθεστάτην ταῖς ψυχαῖς τὴν μετ᾽ ἀλλήλων εἶναι δίαιταν πεπιστεύκασιν. Οἱ δὲ, ἐπειδὰν ἐπακούσωσι τῶν ἐντεταλμένων αὐτοῖς, πυρὶ τὸ σῶμα παραδόντες, ὅπως δὴ καὶ καθαρωτάτην ἀποκρίνωσι τοῦ σώματος τὴν ψυχὴν, ὑμνούμενοι τελευτῶσι. Ῥᾷον γὰρ ἐκείνους εἰς τὸν θάνατον οἱ φίλτατοι προπέμπουσι, ἢ τῶν ἄλλων ἀνθρώπων ἕκαστος τοὺς πολίτας εἰς μηκίστην ἀποδημίαν· καὶ σφᾶς μὲν αὐτοὺς δακρύουσιν, ἐκείνους δὲ μακαρίζουσιν, ἤδη τὴν ἀθάνατον τάξιν ἀπολαμβάνοντας. Ἆρ᾽ οὖν οὐκ αἰδούμεθα χεῖρον Ἰνδῶν φρονοῦντες, καὶ διὰ τῆς ἑαυτῶν ἀτολμίας τοὺς πατρίους νόμους, οἳ πᾶσιν ἀνθρώποις εἰς ζῆλον ἥκουσιν, αἰσχρῶς ὑβρίζοντες; Ἀλλ᾽ εἴ γε καὶ τοὺς ἐναντίους ἐξ ἀρχῆς λόγους ἐπαιδεύθημεν, ὡς ἄρα μέγιστον ἀγαθὸν ἀνθρώποις ἐστὶ τὸ ζῆν, συμφορὰ δὲ ὁ θάνατος. Ὁ γοῦν καιρὸς ἡμᾶς παρακαλεῖ φέρειν εὐκαρδίως αὐτὸν, Θεοῦ γνώμῃ καὶ κατ᾽ ἀνάγκας τελευτήσαντας. Πάλαι γὰρ, ὡς ἔοικε, κατὰ τοῦ κοινοῦ παντὸς Ἰουδαίων γένους,

ταύτην ἔθετο τὴν ψῆφον ὁ θεός· ὥςτε ἡμᾶς τοῦ ζῆν ἀπηλλάχθαι μὴ μέλλοντας αὐτῷ χρῆσθαι κατὰ τρόπον. Μὴ γὰρ αὐτοῖς ὑμεῖν ἀνάπτετε τὰς αἰτίας, μηδὲ χαρίζεσθε τοῖς Ῥωμαίοις, ὅτι πάντας ἡμᾶς ὁ πρὸς αὐτοὺς πόλεμος διέφθειρεν· οὐ γὰρ ἐκείνων ἰσχύϊ ταῦτα συμβέβηκεν, ἀλλὰ κρείττων αἰτία γενομένη τὸ νικᾶν ἐκείνοις δοκεῖν παρέσχηκεν. Ποίοις γὰρ ὅπλοις Ῥωμαίων τεθνήκασιν οἱ Καισάρειαν Ἰουδαῖοι κατοικοῦντες; Ἀλλὰ οὐδὲ μελλήσοντας αὐτοὺς ἐκείνων ἀφίστασθαι, μεταξὺ δὲ τὴν ἑβδόμην ἑορτάζοντας, τὸ πλῆθος τῶν Καισαρέων ἐπιδραμὸν, μηδὲ χεῖρας ἀνταίροντας ἅμα γυναιξὶ καὶ τέκνοις κατέσφαξαν, οὐδὲ αὐτοὺς Ῥωμαίους ἐντραπέντες, οἳ μόνους ὡς ἡμᾶς ἡγοῦντο πολεμίους τοὺς ἀφεστηκότας. Ἀλλὰ φήσει τις, ὅτι Καισαρεῦσιν ἦν ἀεὶ διαφορὰ πρὸς τοὺς παρ᾽ αὐτοῖς, καὶ τοῦ καιροῦ λαβόμενοι τὸ παλαιὸν μῖσος ἀπεπλήρωσαν. Τί οὖν τοὺς ἐν Σκυθοπόλει φῶμεν; Ἡμῖν γὰρ ἐκεῖνοι διὰ τοὺς Ἕλληνας πολεμεῖν ἐτόλμησαν, ἀλλ᾽ οὐ μετὰ τῶν συγγενῶν ἡμῶν Ῥωμαίους ἀμύνεσθαι. Πολὺ τοίνυν ὤνησεν αὐτοὺς ἡ πρὸς ἐκείνους εὔνοια καὶ πίστις· ὑπ᾽ αὐτῶν μέντοι πανοικεσίᾳ πικρῶς κατεφονεύθησαν, ταύτης τῆς συμμαχίας ἀμοιβὴν ἀπολαβόντες. Ἃ γὰρ ἐκείνους ὑφ᾽ ἡμῶν ἐκώλυσαν, ταῦθ᾽ ὑπέμειναν, ὡς αὐτοὶ δρᾶσαι θελήσαντες. Μακρὸν ἂν εἴη νῦν ἰδίᾳ περὶ ἑκάστων λέγειν. Ἴστε γὰρ, ὅτι τῶν ἐν Συρίᾳ πόλεων οὐκ ἔστιν ἥτις τοὺς παρ᾽ αὐτῇ κατοικοῦντας Ἰουδαίους οὐκ ἀνῄρηκεν, ἡμῖν πλέον, ἢ Ῥωμαίοις ὄντας πολεμίους. Ὅπου γε Δαμασκηνοὶ μηδὲ πρόφασιν εὔλογον πλάσαι δυνηθέντες, φόνου μιαρωτάτου τὴν αὐτῶν πόλιν ἐνέπλησαν, ὀκτακιςχιλίους πρὸς τοῖς μυρίοις Ἰουδαίους ἅμα γυναιξὶ καὶ γενεαῖς ἀποσφάξαντες. Τὸ δὲ ἐν Αἰγύπτῳ πλῆθος τῶν μετ᾽ αἰκίας ἀνῃρημένων, ἕξ που μυριάδας ὑπερβαλεῖν ἐπυνθανόμεθα. Καὶ ἐκεῖνοι μὲν ἴσως ἐπ᾽ ἀλλοτρίας γῆς οὐδὲν ἀντίπαλον εὑράμενοι τοῖς πολεμίοις οὕτως ἀπέ-

θανον. Τοῖς δὲ ἐπὶ τῆς οἰκείας τὸν πρὸς Ῥωμαίους πόλεμον ἀραμένοις ἅπασί τε τὴν ἐλπίδα νίκης ἐχυρᾶς παρασχεῖν δυνάμεων οὐχ ὑπῆρξε; Καὶ γὰρ ὅπλα, καὶ τείχη, καὶ φρουρίων δυσάλωτα κατασκευαὶ, καὶ φρόνημα πρὸς τοὺς ὑπὲρ τῆς ἐλευθερίας κινδύνους ἄτρεστον, πάντας πρὸς τὴν ἀπόστασιν ἐπέῤῥωσεν. Ἀλλὰ ταῦτα πρὸς βραχὺν χρόνον ἀρκέσαντα καὶ ταῖς ἐλπίσιν ἡμᾶς ἐπάραντα, μειζόνων ἀρχὴ κακῶν ἐφάνη. Πάντα γὰρ ἥλω, καὶ πάντα τοῖς πολεμίοις ὑπέπεσεν, ὥςπερ εἰς τὴν ἐκείνων εὐκλεεστέραν νίκην, οὐκ εἰς τὴν τῶν παρασκευασαμένων σωτηρίαν εὐτρεπισθέντα. Καὶ τοὺς μὲν ἐν ταῖς μάχαις ἀποθνήσκοντας εὐδαιμονίζειν προςῆκεν· ἀμυνόμενοι γὰρ καὶ τὴν ἐλευθερίαν οὐ προέμενοι τεθνήκασι. Τὸ δὲ πλῆθος τῶν ὑπὸ Ῥωμαίοις γενομένων τίς οὐκ ἂν ἐλεήσειεν; Ἢ τίς οὐκ ἂν ἐπειχθείη πρὸ τοῦ ταὐτὰ παθεῖν ἐκείνοις ἀποθανεῖν; Ὧν οἱ μὲν στρεβλούμενοι, καὶ πυρὶ καὶ μάστιξιν αἰκιζόμενοι τεθνήκασιν. Οἱ δὲ ἀπὸ θηρίων ἡμίβρωτοι πρὸς δευτέραν αὐτοῖς τροφὴν ζῶντες ἐφυλάχθησαν, γέλωτα καὶ παιδιὰν τοῖς πολεμίοις παρασχόντες. Ἐκείνων μὲν οὖν ἀθλιωτάτους ὑποληπτέον τοὺς ἔτι ζῶντας, οἳ πολλάκις εὐχόμενοι τὸν θάνατον λαβεῖν οὐκ ἔχουσι. Ποῦ δὲ ἡ μεγάλη πόλις ἡ τοῦ παντὸς Ἰουδαίων γένους μητρόπολις, ἡ τοσούτοις μὲν ἐρυμνὴ τειχῶν περιβόλοις, τοσαῦτα δὲ αὐτῆς φρούρια καὶ μεγέθη πύργων προβεβλημένη, μόλις δὲ χωροῦσα τὰς εἰς τὸν πόλεμον παρασκευὰς, τοσαύτας δὲ μυριάδας ἀνδρῶν ἔχουσα τῶν ὑπὲρ αὐτῆς μαχομένων; Ποῦ γέγονεν ἡμῖν ἡ τὸν θεὸν ἔχειν οἰκιστὴν πεπιστευμένη; Πρόῤῥιζος ἐκ βάθρων ἀνήρπασται, καὶ μόνον αὐτῆς μνημεῖον ὑπολέλειπται, τὸ τῶν ἀνῃρηκότων αὐτὴν στρατόπεδον, ἔτι τοῖς λειψάνοις ἐποικοῦν. Πρεσβῦται δὲ δύστηνοι τῇ σποδῷ τοῦ τεμένους παρακάθηνται, καὶ γυναῖκες ὀλίγαι πρὸς ὕβριν αἰσχίστην ὑπὸ τῶν πολεμίων τετηρημέναι. Ταῦτα

τίς ἐν νῷ βαλλόμενος ἡμῶν καρτερήσει τὸν ἥλιον ὁ-
ρᾶν, καὶ ἂν δύνηται ζῆν ἀκινδύνως; Τίς οὕτω τῆς
πατρίδος ἐχθρὸς, ἢ τίς οὕτως ἄνανδρος καὶ φιλό-
ψυχος, ὡς μὴ καὶ περὶ τοῦ μέχρι νῦν ζῆσαι μετα-
νοεῖν; Ἀλλ' εἴθε πάντες ἐτεθνήκειμεν, πρὶν τὴν ἱε-
ρὰν ἐκείνην πόλιν χερσὶν ἰδεῖν κατασκαπτομένην πο-
λεμίων, πρὶν τὸν ναὸν τὸν ἅγιον οὕτως ἀνοσίως ἐξ-
ορωρυγμένον. Ἐπεὶ δὲ ἡμᾶς οὐκ ἀγεννὴς ἐλπὶς ἐ-
βουκόλησεν, ὡς τάχα που δυνήσεσθαι πολεμίους ὑ-
πὲρ αὐτῆς ἀμύνεσθαι, φρούδη δὲ γέγονε νῦν, καὶ
μόνους ἡμᾶς ἐπὶ τῆς ἀνάγκης καταλέλοιπε, σπεύσω-
μεν καλῶς ἀποθανεῖν· ἐλεήσομεν ἡμᾶς αὐτοὺς. καὶ
τὰ τέκνα, καὶ τὰς γυναῖκας, ἕως ἡμῖν ἔξεστι παρ'
ἡμῶν αὐτῶν λαβεῖν τὸν ἔλεον. Ἐπὶ μὲν γὰρ θάνα-
τον ἐγεννήθημεν, καὶ τοὺς ἐξ αὐτῶν ἐγεννήσαμεν,
καὶ τοῦτον οὐδὲ τοῖς εὐδαιμονοῦσιν ἔστι διαφυγεῖν.
Ὕβρις δὲ καὶ δουλεία, καὶ τὸ βλέπειν γυναῖκας 431
εἰς αἰσχύνην ἀγομένας μετὰ τέκνων, οὐκ ἔστιν ἀν-
θρώποις κακὸν ἐκ φύσεως ἀναγκαῖον, ἀλλὰ ταῦτα
διὰ τὴν αὐτῶν δειλείαν ὑπομένουσιν, οἱ παρὸν πρὸ
αὐτῶν ἀποθανεῖν μὴ θελήσαντες. Ἡμεῖς δὲ ἐπ' ἀν-
δρείᾳ μέγα φρονοῦντες Ῥωμαίων ἀπέστημεν, καὶ τὰ
τελευταῖα νῦν ἐπὶ σωτηρίᾳ προκαλουμένων ἡμᾶς, οὐχ
ὑπηκούσαμεν. Τίνι τοίνυν οὐκ ἔστιν ὁ θυμὸς αὐ-
τῶν πρόδηλος, εἰ ζώντων ἡμῶν κρατήσουσιν; Ἄθλι-
οι μὲν οἱ νέοι τῆς ῥώμης τῶν σωμάτων εἰς πολλὰς
αἰκίας ἀρκέσοντες· ἄθλιοι δὲ οἱ παρηβηκότες, φέρειν
τῆς ἡλικίας τὰς συμφορὰς οὐ δυναμένης. Ὄψεταί
τις γυναῖκα πρὸς βίαν ἀγομένην, φωνῆς ἐπακούσεται
τέκνου, πατέρα βοῶντος χεῖρας δεδεμένον· ἀλλ' ἕως
εἰσὶν ἐλεύθεραι καὶ ξίφος ἔχουσι, καλὴν ὑπουργίαν
ἡμῖν ὑπουργείτωσαν. Ἀδούλωτοι μὲν ὑπὸ τῶν πολε-
μίων ἀποθάνωμεν, ἐλεύθεροι δὲ μετὰ τέκνων καὶ γυ-
ναικῶν τοῦ ζῆν συνεξέλθωμεν. Ταῦθ' ἡμᾶς οἱ νόμοι
κελεύουσι, ταῦθ' ἡμᾶς γυναῖκες καὶ παῖδες ἱκετεύου-
σι. Τούτων τὴν ἀνάγκην θεὸς ἀπέσταλκε, τούτων

Ῥωμαῖοι τὰ ἐναντία θέλουσι, καὶ μή τις ἡμῶν πρὸ τῆς ἁλώσεως ἀποθάνῃ δεδοίκασι. Σπεύσωμεν οὖν, ἀντὶ τῆς ἐλπιζομένης αὐτοῖς καθ' ἡμῶν ἀπολαύσεως, ἔκπληξιν τοῦ θανάτου καὶ θαῦμα τῆς τόλμης καταλιπεῖν.

CAP. IX. 1. Ἔτι γε βουλόμενον αὐτὸν παρακαλεῖν πάντες ὑπετέμνοντο, καὶ πρὸς τὴν πρᾶξιν ἤπειγον, ἀνεπισχέτου τινὸς ὁρμῆς πεπληρωμένοι, καὶ δαιμονῶντες ἀπῄεσαν, ἄλλος πρὸ ἄλλου φθάσαι γλιχόμενος, καὶ ταύτην ἐπίδειξιν εἶναι τῆς ἀνδρείας καὶ τῆς εὐβουλίας νομίζοντες, τὸ μή τις ἐν ὑστάτοις γενόμενος ὀφθῆναι· τοσοῦτος αὐτοῖς γυναικῶν καὶ παιδίων καὶ τῆς αὐτῶν σφαγῆς ἔρως ἐνέπεσεν. Καὶ μὴν οὐδ' ὥσπερ ἄν τις ᾠήθη τῇ πράξει προσιόντες ἠμβλύνθησαν, ἀλλ' ἀτενῆ τὴν γνώμην διεφύλαξαν, οἵαν ἔσχον τῶν λόγων ἀκροώμενοι, τοῦ μὲν οἰκείου καὶ φιλοστόργου πάθους ἅπασι παραμένοντος, τοῦ λογισμοῦ δὲ ὡς τὰ κράτιστα βεβουλευκότος τοῖς φιλτάτοις ἐπικρατοῦντος. Ὁμοῦ γὰρ ἠσπάζοντο γυναῖκας περιπτυσσόμενοι, καὶ τέκνα προσηγκαλίζοντο, τοῖς ὑστάτοις φιλήμασιν ἐμφυόμενοι καὶ δακρύοντες· Ὁμοῦ δὲ, καθάπερ ἀλλοτρίαις χερσὶν ὑπουργούμενοι, συνετέλουν τὸ βούλευμα· τὴν ἐπίνοιαν ὧν πείσονται κακῶν ὑπὸ τοῖς πολεμίοις γενόμενοι, παραμύθιον τῆς ἐν τῷ κτείνειν ἀνάγκης ἔχοντες. Καὶ πέρας οὐδεὶς τηλικούτου τολμήματος ἥττων εὑρέθη· πάντες δὲ διὰ τῶν οἰκειοτάτων διεξῆλθον. Ἄθλιοι τῆς ἀνάγκης, οἷς αὐτοχειρὶ γυναῖκας τὰς αὐτῶν καὶ τέκνα κτεῖναι, κακῶν ἔδοξεν εἶναι τὸ κουφότατον! Οὗτοι δὴ τοίνυν τὴν ἐπὶ τοῖς πεπραγμένοις ὀδύνην οὐκέτι φέροντες, καὶ τοὺς ἀνῃρημένους νομίζοντες ἀδικεῖν, καὶ ἐὰν βραχὺν αὐτοῖς ἔτι χρόνον ἐπιζήσωσι, ταχὺ
432 μὲν τὴν κτῆσιν ἅπασαν εἰς ταὐτὸ σωρεύσαντες πῦρ
εἰς αὐτὴν ἐνέβαλλον· κλήρῳ δ' ἐξ αὐτῶν ἑλόμενοι δέκα τοὺς ἁπάντων σφαγεῖς ἐσομένους, καὶ γυναικί τις

αὐτὸν καὶ παισὶ κειμένοις παραστρώσας, καὶ τὰς χεῖρας περιβαλὼν, παρεῖχον ἑτοίμους τὰς σφαγὰς, τοῖς τὴν δύστηνον ὑπουργίαν ἐκτελοῦσιν. Οἱ δὲ ἀτρέπτως πάντας φονεύσαντες, τὸν αὐτὸν ἐπ' ἀλλήλοις τοῦ κλήρου νόμον ὥρισαν, ἵνα ὁ λαχὼν τοὺς ἐννέα κτείνας ἑαυτὸν ἐπὶ πᾶσιν ἀνέλῃ. Πάντες οὕτως ἐθάῤῥουν ἑαυτοῖς, μήτ' εἰς τὸ δρᾶν μήτ' εἰς τὸ παθεῖν ἄλλον ἄλλου διαφέρειν. Καὶ τέλος, οἱ μὲν τὰς σφαγὰς ὑπέθεσαν, ὁ δὲ εἷς καὶ τελευταῖος, τὸ πλῆθος τῶν κειμένων περιαθρήσας, μή που τις ἔτι ἐν πολλῷ φόνῳ τῆς αὐτοῦ λείπεται χειρὸς δεόμενος, ὡς ἔγνω πάντας ἀνῃρημένους, πῦρ μὲν τοῖς βασιλείοις ἐνίησιν· ἀθρόᾳ δὲ τῇ χειρὶ δι' αὐτοῦ πᾶν ἐλάσας τὸ ξίφος, πλησίον τῶν οἰκείων κατέπεσε. Καὶ οἱ μὲν ἐτεθνήκεσαν ὑπειληφότες οὐδεμίαν ψυχὴν ὑποχείριον ἐξ αὐτῶν Ῥωμαίοις καταλιπεῖν. Ἔλαθε δὲ γυνὴ πρεσβῦτις καὶ συγγενὴς ἑτέρα τις Ἐλεαζάρου, φρονήσει καὶ παιδείᾳ πλείστων γυναικῶν διαφέρουσα, καὶ πέντε παιδία τοῖς ὑπονόμοις, οἱ ποτὸν ἦγον ὕδωρ διὰ γῆς, ἐγκατακρυβῆναι, τῶν ἄλλων πρὸς τῇ σφαγῇ τὰς διανοίας ἐχόντων, οἱ τὸν ἀριθμὸν ἦσαν ἑξήκοντα πρὸς τοῖς ἐννακοσίοις, γυναικῶν ἅμα καὶ παίδων αὐτοῖς συναριθμουμένων. Καὶ τὸ πάθος ἐπράχθη πεντεκαιδεκάτῃ Ξανθικοῦ μηνός.

2. Οἱ δὲ Ῥωμαῖοι, μάχην ἔτι προσδοκῶντες, ὑπὸ τὴν ἕω διασκευασάμενοι, καὶ τὰς ἀπὸ τῶν χωμάτων ἐφόδους ταῖς ἐπιβάθραις γεφυρώσαντες, προσβολὴν ἐποίουν. Βλέποντες δὲ οὐδένα τῶν πολεμίων, ἀλλὰ δεινὴν πανταχόθεν ἐρημίαν, καὶ πῦρ ἔνδον καὶ σιωπὴν, ἀπόρως εἶχον τὸ γεγονὸς συμβαλεῖν· καὶ τέλος ὡς εἰς ἄφεσιν βολῆς ἠλάλαξαν, εἴ τινα τῶν ἔνδον προκαλέσαιντο. Τῆς δὲ βοῆς αἴσθησις γίνεται τοῖς γυναίοις, καὶ ἐκ τῶν ὑπονόμων ἀναδύσασαι, τὸ πραχθὲν, ὡς εἶχε, πρὸς τοὺς Ῥωμαίους ἐμήνυον, πάντα τῆς ἑτέρας, ὡς ἐλέχθη καὶ τίνα τρόπον ἐπράχθη, σαφῶς ἐκδιηγουμένης. Οὐ μὴν ῥαδίως αὐ-

τῇ προςεῖχον τῷ μεγέθει τοῦ τολμήματος ἀπιστοῦντες, ἐπεχείρουν τε τὸ πῦρ σβεννύναι, καὶ ταχέως ὁδὸν δι' αὐτοῦ τεμόντες, τῶν βασιλείων ἐντὸς ἐγένοντο. Καὶ τῷ πλήθει τῶν πεφονευμένων ἐπιτυχόντες, οὐχ ὡς ἐπὶ πολεμίοις ἥσθησαν· τὴν δὲ γενναιότητα τοῦ βουλεύματος, καὶ τὴν ἐν τοσούτοις ἄτρεπτον ἐπὶ τῶν ἔργων ἐθαύμασαν τοῦ θανάτου καταφρόνησιν.

433 *CAP. X.* 1. Τοιαύτης δὲ τῆς ἁλώσεως γενομένης, ἐπὶ μὲν τοῦ φρουρίου καταλείπει φυλακὴν ὁ στρατηγὸς, αὐτὸς δὲ μετὰ τῆς δυνάμεως ἀπῆλθεν εἰς Καισάρειαν. Οὐδὲ γὰρ ὑπελείπετό τις τῶν κατὰ τὴν χώραν πολεμίων, ἀλλ' ἤδη πᾶσα διὰ μακροῦ τοῦ πολέμου κατέστραπτο, πολλοῖς καὶ τῶν ἀπωτάτω κατοικούντων, αἴσθησιν καὶ κίνδυνον ταραχῆς παρασχόντος. Ἔτι δὲ καὶ περὶ Ἀλεξάνδρειαν τὴν ἐν Αἰγύπτῳ μετὰ ταῦτα συνέβη πολλοὺς Ἰουδαίων ἀποθανεῖν. Τοῖς γὰρ ἐκ τῆς στάσεως τῶν σικαρίων ἐκεῖ διαφυγεῖν δυνηθεῖσιν οὐκ ἀπέχρη τὸ σώζεσθαι. Πάλιν δὲ καινοτέροις ἐνεχείρουν πράγμασι, καὶ πολλοὺς τῶν ὑποδεξαμένων ἔπειθον τῆς ἐλευθερίας ἀντιποιεῖσθαι, καὶ Ῥωμαίους μὲν μηδὲν κρείττους ἑαυτῶν ὑπολαμβάνειν, θεὸν δὲ μόνον ἡγεῖσθαι δεσπότην. Ἐπεὶ δὲ αὐτοῖς τῶν οὐκ ἀφανῶν τινες Ἰουδαίων ἀντέβαινον, τοὺς μὲν ἀπέσφαξαν, τοῖς δὲ ἄλλοις ἐνέκειντο πρὸς τὴν ἀπόστασιν παρακαλοῦντες. Ὁρῶντες δὲ αὐτῶν τὴν ἀπόνοιαν οἱ πρωτεύοντες τῆς γερουσίας, οὐκ ἔτ' ἀσφαλὲς αὐτοῖς ἐνόμιζον περιορᾶν, ἀλλὰ πάντας ἀθροίσαντες εἰς ἐκκλησίαν τοὺς Ἰουδαίους, ἤλεγχον τὴν ἀπόνοιαν τῶν σικαρίων, πάντων αἰτίους ἀποφαίνοντες ἐκείνους τῶν κακῶν. Καὶ νῦν, ἔφασαν, αὐτοὺς, ἐπείπερ οὐδὲ πεφευγότες τῆς σωτηρίας ἐλπίδα βεβαίαν ἔχουσι, γνωσθέντες γὰρ ὑπὸ Ῥωμαίων εὐθὺς ἀπολεῖσθαι, τῆς αὐτοῖς προςηκούσης συμφορᾶς ἀναπιμπλάναι τοὺς μηδενὸς

τῶν ἁμαρτημάτων μετασχόντας.᾽ Φυλάξασθαι τοίνυν τὸν ἐξ αὐτῶν ὄλεθρον τὸ πλῆθος παρεκάλουν, καὶ περὶ αὐτῶν πρὸς Ῥωμαίους ἀπολογήσασθαι τῇ τούτων παραδόσει. Συνιδόντες οὖν τοῦ κινδύνου τὸ μέγεθος, ἐπείσθησαν τοῖς λεγομένοις, καὶ μετὰ πολλῆς ὁρμῆς ἐπὶ τοὺς σικαρίους ἀΐξαντες, συνήρπαζον αὐτούς. Τῶν δὲ ἑξακόσιοι μὲν εὐθὺς ἑάλωσαν, ὅσοι δ᾽ εἰς τὴν Αἴγυπτον καὶ τὰς ἐκεῖ Θήβας διέφυγον, οὐκ εἰς μακρὰν συλληφθέντες ἐπανήχθησαν. Ἐφ᾽ ὧν οὐκ ἔστιν ὃς οὐ τὴν καρτερίαν, καὶ τὴν εἴτε ἀπόνοιαν εἴτε τῆς γνώμης τὴν ἰσχὺν χρὴ λέγειν, οὐ κατεπλάγη. Πάσης γὰρ ἐπ᾽ αὐτοὺς βασάνου καὶ λύμης τῶν σωμάτων ἐπινοηθείσης, ἐφ᾽ ἓν τοῦτο μόνον, ὅπως αὐτῶν Καίσαρα δεσπότην ὁμολογήσωσιν, οὐδεὶς ἐνέδωκεν, οὐδ᾽ ἐμέλλησεν εἰπεῖν, ἀλλὰ πάντες ὑπερτέραν τῆς ἀνάγκης τὴν αὐτῶν γνώμην διεφύλαξαν, ὥςπερ ἀναισθήτοις σώμασι, χαιρούσῃ μονονουχὶ τῇ ψυχῇ τὰς βασάνους καὶ τὸ πῦρ δεχόμενοι. Μάλιστα δὲ ἡ τῶν παίδων ἡλικία τοὺς θεωμένους ἐξέπληξεν· οὐδὲ γὰρ ἐκείνων τις ἐξενικήθη, Καίσαρα δεσπότην ἐξονομάσαι. Τοσοῦτον ἄρα τῆς τῶν σωμάτων ἀσθενείας ἡ τῆς τόλμης ἰσχὺς ἐπεκράτει.

2. Λοῦπος τότε διῴκει τὴν Ἀλεξάνδρειαν, καὶ περὶ τοῦ κινήματος τούτου Καίσαρι κατὰ τάχος ἐπέστειλεν. Ὁ δὲ τῶν Ἰουδαίων τὴν ἀκατάπαυστον ὑφορώμενος νεωτεροποιΐαν, καὶ δείσας, μὴ πάλιν εἰς ἓν ἀθρόοι συλλεγῶσι, καί τινας αὐτοῖς συνεπισπάσωνται, προςέταξε τῷ Λούπῳ τὸν ἐν τῇ Ὀνίου καλουμένῃ νεὼν καθελεῖν τῶν Ἰουδαίων. 435 Ὁ δὲ ἐστιν ἐν Αἰγύπτῳ, καὶ διὰ τοιαύτην αἰτίαν ᾠκίσθη τε καὶ τὴν ἐπίκλησιν ἔλαβεν. Ὀνίας Σίμωνος υἱὸς εἷς τῶν ἐν Ἱεροσολύμοις ἀρχιερέων, φεύγων Ἀντίοχον τῆς Συρίας βασιλέα πολεμοῦντα τοῖς Ἰουδαίοις, ἧκεν εἰς Ἀλεξάνδρειαν. Καὶ δεξαμένου Πτολεμαίου φιλοφρόνως αὐτὸν διὰ τὴν πρὸς Ἀντίοχον ἀπέχθειαν, ἔφη ‛σύμμαχον αὐτῷ ποιήσειν τὸ τῶν Ἰουδαίων ἔθνος,

εἰ πεισθείη τοῖς ὑπ' αὐτοῦ λεγομένοις. Ποιήσειν δὲ τὰ δυνατὰ τοῦ βασιλέως ὁμολογήσαντος, ἠξίωσεν ἐπιτρέπειν αὐτῷ νεών τε που τῆς Αἰγύπτου κατασκευάσασθαι, καὶ τοῖς πατρίοις ἔθεσι θεραπεύειν τὸν θεόν· οὕτω γὰρ Ἀντιόχῳ μὲν ἔτι μᾶλλον ἐκπολεμώσεσθαι τοὺς Ἰουδαίους, τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις νεὼν πεπορθηκότι· πρὸς αὐτὸν δὲ εὐνοϊκωτέρως ἥξειν, καὶ πολλοὺς ἐπ' ἀδείᾳ εὐσεβείας ὡς αὐτὸν συλλεγήσεσθαι.

3. Πεισθεὶς Πτολεμαῖος τοῖς λεγομένοις, δίδωσιν αὐτῷ χώραν ἑκατὸν ἐπὶ τοῖς ὀγδοήκοντα σταδίοις ἀπέχουσαν Μέμφεως. Νόμος δὲ οὗτος Ἡλιουπολίτης καλεῖται. Ἔνθα φρούριον κατασκευασάμενος Ὀνίας, τὸν μὲν ναὸν οὐχ ὅμοιον ᾠκοδόμησε τῷ ἐν Ἱεροσολύμοις, ἀλλὰ πύργῳ παραπλήσιον, λίθων μεγάλων εἰς ἑξήκοντα πήχεις ἀνεστηκότα. Τοῦ βωμοῦ δὲ τὴν κατασκευὴν πρὸς τὸν οἴκοι ἐξεμιμήσατο, καὶ τοῖς ἀναθήμασιν ὁμοίως ἐκόσμησε, χωρὶς τῆς περὶ τὴν λυχνίαν κατασκευῆς. Οὐ γὰρ ἐποίησε λυχνίαν· αὐτὸν δὲ χαλκευσάμενος τὸν λύχνον χρυσοῦν ἐπιφαίνοντα σέλας, χρυσῆς ἁλύσεως ἐξεκρέμασε. Τὸ δὲ τέμενος πᾶν ὀπτῇ πλίνθῳ περιετετείχιστο, πύλας ἔχοντι λιθίνας. Ἀνῆκε δὲ καὶ χώραν πολλὴν ὁ βασιλεὺς εἰς χρημάτων πρόσοδον, ὅπως εἴη καὶ τοῖς ἱερεῦσιν ἀφθονία, καὶ τῷ θεῷ πολλὰ τὰ πρὸς τὴν εὐσέβειαν. Οὐ μὴν Ὀνίας ἐξ ὑγιοῦς γνώμης ταῦτα ἔπραττεν, ἀλλ' ἦν αὐτῷ φιλονεικία πρὸς τοὺς ἐν τοῖς Ἱεροσολύμοις Ἰουδαίους, ὀργὴν τῆς φυγῆς ἀπομνημονεύοντι. Καὶ τοῦτο ἱερὸν ἐνόμιζε κατασκευάσας εἰς αὐτὸ περισπάσειν ἀπ' ἐκείνων τὸ πλῆθος. Ἐγεγόνει δέ τις καὶ παλαιὰ πρόῤῥησις ἔτεσί που πρόσθεν ἑξακοσίοις, Ἡσαΐας ὄνομα τῷ προαγορεύσαντι τοῦδε τοῦ ναοῦ τὴν ἐν Αἰγύπτῳ γενησομένην ὑπ' ἀνδρὸς Ἰουδαίου κατασκευήν. Τὸ μὲν οὖν ἱερὸν οὕτως ἐπεποίητο.

4. Λοῦπος δὲ ὁ τῆς Ἀλεξανδρείας ἡγεμὼν τὰ παρὰ Καίσαρος λαβὼν γράμματα, καὶ παραγενόμενος εἰς τὸ ἱερὸν, καί τινα τῶν ἀναθημάτων ἐκ- 435
φορήσας, τὸν ναὸν ἀπέκλεισε. Λούπου δὲ μετὰ βραχὺ τελευτήσαντος, Παυλῖνος διαδεξάμενος τὴν ἡγεμονίαν, οὔτε τῶν ἀναθημάτων οὐθὲν κατέλιπεν, πολλὰ γὰρ διηπείλησε τοῖς ἱερεῦσι, εἰ μὴ πάντα προκομίσειαν, οὔτε προςιέναι τῷ τεμένει τοὺς θρησκεύειν βουλομένους ἀφῆκεν. Ἀλλ' ἀποκλείσας τὰς πύλας ἀπρόςιτον αὐτὸ παντελῶς ἐποίησεν, ὡς μηδ' ἴχνος ἔτι τῆς εἰς θεὸν θεραπείας ἐν τῷ τόπῳ καταλιπεῖν. Χρόνος ἦν εἰς τὴν ἀπόκλεισιν τοῦ ναοῦ γεγονὼς ἀπὸ τῆς κατασκευῆς ἔτη τρία καὶ τεσσαράκοντα καὶ τριακόσια.

CAP. XI. 1. Ἥψατο δὲ καὶ τῶν περὶ Κυρήνην πόλεων ἡ τῶν σικαρίων ἀπόνοια, καθάπερ νόσος. Διαπεσὼν γὰρ εἰς αὐτὴν Ἰωνάθης, πονηρότατος ἄνθρωπος, καὶ τὴν τέχνην ὑφάντης, οὐκ ὀλίγους τῶν ἀπόρων ἀνέπεισε προςέχειν αὐτῷ, καὶ προήγαγεν εἰς τὴν ἔρημον, σημεῖα καὶ φάσματα δείξειν ὑπισχνούμενος. Καὶ τοὺς μὲν ἄλλους ἐλάνθανε ταῦτα διαπραττόμενος καὶ φενακίζων. οἱ δὲ τοῖς ἀξιώμασι προέχοντες τῶν ἐπὶ τῆς Κυρήνης Ἰουδαίων τὴν ἔξοδον αὐτοῦ καὶ παρασκευὴν τῷ τῆς Πενταπόλεως Λιβύης ἡγεμόνι Κατύλλῳ προςαγγέλλουσιν. Ὁ δὲ ἱππέας τε καὶ πεζοὺς ἀποστείλας ῥᾳδίως ἐκράτησεν ἀνόπλων· καὶ τὸ μὲν πλέον ἐν χερσὶν ἀπώλετο, τινὲς δὲ καὶ ζωγρηθέντες ἀνήχθησαν πρὸς τὸν Κάτυλλον. Ὁ δὲ ἡγεμὼν τοῦ βουλεύματος Ἰωνάθης τότε μὲν διέφυγε· πολλῆς δὲ καὶ λίαν ἐπιμελοῦς ἀνὰ πᾶσαν τὴν χώραν ζητήσεως γινομένης, ἥλω. Καὶ πρὸς τὸν ἡγεμόνα Κάτυλλον ἀναχθεὶς ἑαυτῷ μὲν ἐμηχανᾶτο τῆς τιμωρίας ἀπαλλαγὴν, τῷ Κατύλλῳ δὲ ἔδωκεν ἀφορμὴν ἀδικημάτων· ὁ μὲν γὰρ τοὺς πλουσιωτάτους τῶν Ἰου-

δαίων ἔλεγε καταψευδόμενος διδασκάλους αὐτῷ τοῦ βουλεύματος γεγονέναι.

2. Προθύμως δὲ τὰς διαβολὰς ἐκεῖνος ἐξεδέχετο, καὶ τῷ πράγματι πολὺν ὄγκον περιετίθει, μεγάλα προςτραγῳδῶν, ἵνα δὴ δόξειε καὶ αὐτὸς Ἰουδαϊκὸν πόλεμον κατωρθωκέναι. Τὸ δὲ δὴ τούτου χαλεπώτερον, πρὸς γὰρ τῷ πιστεύειν ῥᾳδίως, ἔτι καὶ διδάσκαλος ἦν τῶν σικαρίων τῆς ψευδολογίας. Κελεύσας γοῦν αὐτὸν ὀνομάσαι τινὰ τῶν Ἰουδαίων Ἀλέξανδρον, ᾧ πάλαι προςκεκρουκὼς φανερὸν ἐξενηνόχει τὸ μῖσος, τήν τε γυναῖκα τὴν ἐκείνου Βερνίκην ταῖς αἰτίαις συνεμπλέξας, τούτους μὲν πρῶτον ἀνεῖλεν· ἐπὶ δὲ αὐτοῖς ἅπαντας τοὺς εὐπορίᾳ χρημάτων διαφέροντας, ὁμοῦ τριςχιλίους ἐφόνευσεν ἄνδρας. Καὶ ταῦτα πράττειν ἐνόμιζεν ἀσφαλῶς, ὅτι τὰς οὐσίας αὐτῶν εἰς τὰς τοῦ Καίσαρος προςόδους ἀνελάμβανεν.

3. Ὅπως δὲ μηδ᾽ ἀλλαχοῦ τινες τῶν Ἰουδαίων
456 ἐλέγξωσιν αὐτοῦ τὴν ἀδικίαν, ποῤῥωτέρω τὸ ψεῦδος ἐξέτεινε· καὶ πείθει τὸν Ἰωνάθην καί τινας τῶν ἅμα ἐκείνῳ συνειλημμένων, νεωτερισμοῦ κατηγορίαν ἐπιφέρειν τοῖς ἐν Ἀλεξανδρείᾳ τε καὶ Ῥώμῃ τῶν Ἰουδαίων δοκιμωτάτοις. Τούτων εἷς τῶν ἐξ ἐπιβουλῆς αἰτιαθέντων ἦν Ἰώσηπος, ὁ ταῦτα συγγραψάμενος. Οὐ μὴν κατ᾽ ἐλπίδα τῷ Κατύλλῳ τὸ σκευώρημα προεχώρησεν· ἧκεν μὲν γὰρ εἰς τὴν Ῥώμην, τοὺς περὶ τὸν Ἰωνάθην ἄγων δεδεμένους, καὶ πέρας ᾤετο τῆς ἐξετάσεως εἶναι, τὴν ἐπ᾽ αὐτοῦ καὶ δι᾽ αὐτοῦ γενομένην ψευδολογίαν. Οὐεσπασιανὸς δὲ, τὸ πρᾶγμα ὑποπτεύσας, ἀναζητεῖ τὴν ἀλήθειαν, καὶ γνοὺς ἄδικον τὴν αἰτίαν τοῖς ἀνδράσιν ἐπενηνεγμένην, τοὺς μὲν ἀφίησι τῶν ἐγκλημάτων Τίτου σπουδάσαντος, δίκην δ᾽ ἐπέθηκεν Ἰωνάθῃ τὴν προςήκουσαν. Ζῶν γὰρ κατεκαύθη, πρότερον αἰκισθείς.

4. Κατύλλῳ δὲ τότε μὲν ὑπῆρξε διὰ τὴν πρᾳ-

ότητα τῶν αὐτοκρατόρων μηδὲν πλέον ὑπομεῖναι καταγνώσεως· οὐκ εἰς μακρὰν δὲ νόσῳ καταληφθεὶς πολυτρόπῳ καὶ δυςιάτῳ χαλεπῶς ἀπαλλάττεται, οὐ τὸ σῶμα μόνον κολαζόμενος, ἀλλ' ἦν ἡ τῆς ψυχῆς αὐτῷ νόσος βαρυτέρα. Δείμασι γὰρ ἐξεταράττετο, καὶ συνεχῶς ἀνεβόα, βλέπειν εἴδωλα τῶν ὑπ' αὐτοῦ πεφονευμένων ἐφεστηκότα. Καὶ κατέχειν ἑαυτὸν οὐ δυνάμενος, ἐξήλλετο τῆς εὐνῆς, ὡς βασάνων αὐτῷ καὶ πυρὸς προςφερομένων. Τοῦ δὲ κακοῦ πολλὴν ἀεὶ τὴν ἐπίδοσιν λαμβάνοντος, καὶ τῶν ἐντέρων αὐτῷ κατὰ διάβρωσιν ἐκπεσόντων, οὕτως ἀπέθανεν, οὐδενὸς ἧττον ἑτέρου τῆς προνοίας τοῦ θεοῦ τεκμήριον γενόμενος, ὅτι τοῖς πονηροῖς δίκην ἐπιτίθησιν.

5. Ἐνταῦθα τῆς ἱστορίας ἡμῖν τὸ πέρας ἐστὶν, ἣν ἐπηγγειλάμεθα μετὰ πάσης ἀκριβείας παραδώσειν τοῖς βουλομένοις μαθεῖν, τίνα τρόπον οὗτος ὁ πόλεμος Ῥωμαίοις πρὸς Ἰουδαίους ἐπολεμήθη. Καὶ πῶς μὲν ἡρμήνευται, τοῖς ἀναγνωσομένοις κρίνειν ἀπολελείφθω· περὶ τῆς ἀληθείας δὲ οὐκ ἂν ὀκνήσαιμι θαῤῥῶν λέγειν, ὅτι μόνης ταύτης παρὰ πᾶσαν τὴν γραφὴν ἐστοχασάμην.

---

437 # ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ

ΑΡΧΑΙΟΤΗΤΟΣ ΙΟΥΔΑΙΩΝ

ΚΑΤΑ ΑΠΙΩΝΟΣ

ΛΟΓΟΣ Α'.

---

1. Ἱκανῶς μὲν ὑπολαμβάνω καὶ διὰ τῆς περὶ τὴν ἀρχαιολογίαν συγγραφῆς, κράτιστε ἀνδρῶν Ἐπαφρόδιτε, τοῖς ἐντευξομένοις αὐτῇ πεποιηκέναι φανερὸν περὶ τοῦ γένους ἡμῶν τῶν Ἰουδαίων, ὅτι καὶ παλαιότατόν ἐστι καὶ τὴν πρώτην ὑπόστασιν ἔσχεν ἰδίαν, καὶ πῶς τὴν χώραν, ἣν νῦν ἔχομεν, κατῴκησεν, ἣν πεντακιςχιλίων ἐτῶν ἱστορίαν περιέχουσαν, ἐκ τῶν παρ' ἡμῖν ἱερῶν βίβλων διὰ τῆς Ἑλληνικῆς φωνῆς συνεγραψάμην. Ἐπεὶ δὲ συχνοὺς ὁρῶ ταῖς
438 ὑπὸ δυςμενείας ὑπό τινων εἰρημέναις προςέχοντας βλασφημίαις, καὶ τοῖς περὶ τὴν ἀρχαιολογίαν ὑπ' ἐμοῦ. γεγραμμένοις ἀπιστοῦντας, τεκμήριόν τε ποιουμένους τοῦ νεώτερον εἶναι τὸ γένος ἡμῶν, διὰ τὸ μηδεμιᾶς παρὰ τοῖς ἐπιφανέσι τῶν Ἑλληνικῶν ἱστοριογράφων μνήμης ἠξιῶσθαι, περὶ τούτων ἁπάντων ᾠήθην δεῖν γράψαι συντόμως, τῶν μὲν λοιδορούντων τὴν δυςμένειαν καὶ τὴν ἑκούσιον ἐλέγξαι ψευδολογίαν, τῶν δὲ τὴν ἄγνοιαν ἐπανορθώσασθαι, διδάξαι δὲ πάντας, ὅσοι τὸ ἀληθὲς εἰδέναι βούλονται,

περὶ τῆς ἡμετέρας ἀρχαιότητος. Χρήσομαι δὲ τῶν μὲν ὑπ᾽ ἐμοῦ λεγομένων μάρτυσι, τοῖς ἀξιοπιστοτάτοις εἶναι περὶ πάσης ἀρχαιολογίας ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων κεκριμένοις· τοὺς δὲ βλασφήμως περὶ ἡμῶν καὶ ψευδῶς γεγραφότας, αὐτοὺς δι᾽ ἑαυτῶν ἐλεγχομένους παρέξω. Πειράσομαι δὲ καὶ τὰς αἰτίας ἀποδοῦναι, δι᾽ ἃς οὐ πολλοὶ τοῦ ἔθνους ἡμῶν ἐν ταῖς ἱστορίαις Ἕλληνες ἐμνημονεύκασιν· ἔτι μέν τοι καὶ τοὺς οὐ παραλιπόντας τὴν περὶ ἡμῶν ἱστορίαν ποιήσω φανεροὺς τοῖς μὴ γινώσκουσιν ἢ προςποιουμένοις ἀγνοεῖν.

2. Πρῶτον οὖν ἐπέρχεταί μοι πάνυ θαυμάζειν τοὺς οἰομένους δεῖν περὶ τῶν παλαιοτάτων ἔργων μόνοις προςέχειν τοῖς Ἕλλησι, καὶ παρὰ τούτων πυνθάνεσθαι τὴν ἀλήθειαν, ἡμῖν δὲ καὶ τοῖς ἄλλοις ἀνθρώποις ἀπιστεῖν. Πᾶν γὰρ ἐγὼ τὸ ἐναντίον ὁρῶ συμβεβηκὸς, εἴ γε δεῖ μὴ ταῖς ματαίαις δόξαις ἐπακολουθεῖν, ἀλλ᾽ ἐξ αὐτῶν τὸ δίκαιον τῶν πραγμάτων λαμβάνειν. Τὰ μὲν γὰρ παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ἅπαντα νέα, καὶ χθὲς καὶ πρώην, ὡς ἂν εἴποι τις, εὑρήσεις γεγονότα· λέγω δὴ τὰς κτίσεις τῶν πόλεων, καὶ τὰ περὶ τὰς ἐπινοίας τῶν τεχνῶν, καὶ τὰ περὶ τὰς τῶν νόμων ἀναγραφάς· πάντων δὲ νεωτάτη σχεδόν ἐστι παρ᾽ αὐτοῖς ἡ περὶ τοῦ συγγράφειν τὰς ἱστορίας ἐπιμέλεια. Τὰ μέντοι παρ᾽ Αἰγυπτίοις τε καὶ Χαλδαίοις καὶ Φοίνιξιν (ἐῶ γὰρ νῦν ἡμᾶς ἐκείνοις συγκαταλέγειν) αὐτοὶ δήπουθεν ὁμολογοῦσιν ἀρχαιοτάτην τε καὶ μονιμωτάτην ἔχειν τῆς μνήμης τὴν παράδοσιν. Καὶ γὰρ τόπους ἅπαντες οἰκοῦσιν, ἥκιστα ταῖς ἐκ τοῦ περιέχοντος φθοραῖς ὑποκειμένους, καὶ πολλὴν ἐποιήσαντο πρόνοιαν, τοῦ μηδὲν ἄμνηστον τῶν παρ᾽ αὐτοῖς πραττομένων παραλιπεῖν, ἀλλ᾽ ἐν δημοσίαις ἀναγραφαῖς ὑπὸ τῶν σοφωτάτων ἀεὶ καθιεροῦσθαι. Τὸν δὲ περὶ τὴν Ἑλλάδα τόπον μυρίαι μὲν φθοραὶ κατέσχον, ἐξαλείφουσαι τὴν μνήμην τῶν γεγονότων· ἀεὶ δὲ καινοὺς καθιστάμενοι βίους, τοῦ παντὸς ἐνό-

μιζον ἄρχειν ἕκαστοι τὸν ἀφ᾽ ἑαυτῶν. Ὀψὲ δὲ καὶ μόλις ἔγνωσαν φύσιν γραμμάτων· οἱ γὰρ ἀρχαιοτάτην αὐτῶν τὴν χρῆσιν εἶναι θέλοντες, παρὰ Φοινίκων καὶ Κάδμου σεμνύνονται μαθεῖν. Οὐ μὴν οὐδ᾽ ἐπ᾽ ἐκείνου τοῦ χρόνου δύναιτό τις ἂν δεῖξαι σωζομένην ἀναγραφὴν, οὔτ᾽ ἐν ἱεροῖς, οὔτ᾽ ἐν δημοσίοις ἀναθήμασιν. Ὅπου γε καὶ περὶ τῶν ἐπὶ Τροίαν τοσούτοις ἔτεσι στρατευσάντων ὕστερον, πολλὴ γέγονεν ἀπορία τε καὶ ζήτησις, εἰ γράμμασιν ἐχρῶντο. Καὶ τὸ ἀληθὲς ἐπικρατεῖ μᾶλλον, περὶ τοῦ τὴν νῦν οὖσαν τῶν γραμμάτων χρῆσιν ἐκείνους ἀγνοεῖν. Ὅλως δὲ παρὰ τοῖς Ἕλλησιν οὐδὲν ὁμολογούμενον εὑρίσκεται γράμμα τῆς Ὁμήρου ποιήσεως πρεσβύτερον.
439 Οὗτος δὲ καὶ τῶν Τρωϊκῶν ὕστερον φαίνεται γενόμενος· καί φασιν οὐδὲ τοῦτον ἐν γράμμασι τὴν αὐτοῦ ποίησιν καταλιπεῖν, ἀλλὰ διαμνημονευομένην ἐκ τῶν ᾀσμάτων ὕστερον συντεθῆναι, καὶ διὰ τοῦτο πολλὰς ἐν αὐτῇ σχεῖν τὰς διαφωνίας. Οἱ μέντοι τὰς ἱστορίας ἐπιχειρήσαντες συγγράφειν παρ᾽ αὐτοῖς, λέγω δὲ τοὺς περὶ Κάδμον τε τὸν Μιλήσιον, καὶ τὸν Ἀργεῖον Ἀκουσίλαον, καὶ μετὰ τοῦτον εἴ τινες ἄλλοι λέγονται γενέσθαι, βραχὺ τῆς Περσῶν ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα στρατείας τῷ χρόνῳ προέλαβον. Ἀλλὰ μὴν καὶ τοὺς περὶ τῶν οὐρανίων τε καὶ θείων πρώτους παρ᾽ Ἕλλησι φιλοσοφήσαντας, οἷον Φερεκύδην τε τὸν Σύριον καὶ Πυθαγόραν καὶ Θάλητα, πάντες συμφώνως ὁμολογοῦσιν Αἰγυπτίων καὶ Χαλδαίων γενομένους μαθητὰς ὀλίγα συγγράψαι· καὶ ταῦτα τοῖς Ἕλλησιν εἶναι δοκεῖ πάντων ἀρχαιότατα, καὶ μόλις αὐτὰ πιστεύουσιν ὑπ᾽ ἐκείνων γεγράφθαι.

3. Πῶς οὖν οὐκ ἄλογον τετυφῶσθαι τοὺς Ἕλληνας ὡς μόνους ἐπισταμένους τὰ ἀρχαῖα, καὶ τὴν ἀλήθειαν περὶ αὐτῶν ἀκριβῶς παραδιδόντας; Ἢ τίς οὐ παρ᾽ αὐτῶν συγγραφέων μάθοι ῥᾳδίως, ὅτι μηδὲν βεβαίως εἰδότες συνέγραφον, ἀλλ᾽ ὡς ἕκαστοι περὶ τῶν πραγμάτων εἰκάζοιντο; Πλεῖον γοῦν διὰ

τῶν βιβλίων ἀλλήλους ἐλέγχουσι, καὶ τὰ ἐναντιώτατα περὶ τῶν αὐτῶν λέγειν οὐκ ὀκνοῦσι. Περίεργος δ' ἂν εἴην ἐγὼ τοὺς ἐμοῦ μᾶλλον ἐπισταμένους διδάσκων, ὅσα μὲν Ἑλλάνικος Ἀκουσιλάῳ περὶ τῶν γενεαλογιῶν διαπεφώνηκεν, ὅσα δὲ διορθοῦται τὸν Ἡσίοδον Ἀκουσίλαος, ἢ τίνα τρόπον Ἔφορος μὲν Ἑλλάνικον ἐν τοῖς πλείστοις ψευδόμενον ἐπιδείκνυσιν, Ἔφορον δὲ Τίμαιος, καὶ Τίμαιον οἱ μετ' ἐκεῖνον γεγονότες, Ἡρόδοτον δὲ πάντες. Ἀλλ οὐδὲ περὶ τῶν Σικελῶν τοῖς περὶ Ἀντίοχον καὶ Φίλιστον ἢ Καλλίαν Τίμαιος συμφωνεῖν ἠξίωσεν· οὐδ' αὖ περὶ τῶν Ἀττικῶν οἱ τὰς Ἀτθίδας συγγεγραφότες, ἢ περὶ τῶν Ἀργολικῶν οἱ τὰ περὶ Ἄργος ἱστοροῦντες ἀλλήλοις κατηκολουθήκασι. Καὶ τί δεῖ λέγειν περὶ τῶν κατὰ πόλεις καὶ βραχυτέρων, ὅπου περὶ τῆς περιηγήσεως τῆς Περσικῆς στρατιᾶς καὶ τῶν ἐν αὐτῇ πραχθέντων οἱ δοκιμώτατοι διαπεφωνήκασιν; Πολλὰ δὲ καὶ Θουκυδίδης ὡς ψευδόμενος ὑπό τινων κατηγορεῖται, καίτοι δοκῶν ἀκριβεστάτην καθ' αὐτὸν ἱστορίαν συγγράφειν.

4. Αἰτίαι δὲ τῆς τοσαύτης διαφωνίας πολλαὶ μὲν ἴσως ἂν καὶ ἕτεραι τοῖς βουλομένοις ζητεῖν ἀναφανεῖεν, ἐγὼ δὲ δυσὶ ταῖς λεχθησομέναις τὴν μεγίστην ἰσχὺν ἀνατίθημι. Καὶ προτέραν ἐρῶ τὴν κυριωτέραν εἶναί μοι δοκοῦσαν. Τὸ γὰρ ἐξ ἀρχῆς μὴ σπουδασθῆναι παρὰ τοῖς Ἕλλησι δημοσίας γενέσθαι περὶ τῶν ἑκάστοτε πραττομένων ἀναγραφὰς, τοῦτο μάλιστα δὴ καὶ τὴν πλάνην καὶ τὴν ἐξουσίαν τοῦ ψεύδεσθαι, τοῖς μετὰ ταῦτα βουληθεῖσι περὶ τῶν παλαιῶν τι γράφειν παρέσχεν. Οὐ γὰρ μόνον παρὰ τοῖς ἄλλοις Ἕλλησιν ἠμελήθη τὰ περὶ τῆς ἀναγραφῆς, ἀλλ' οὐδὲ παρὰ τοῖς Ἀθηναίοις, οὓς αὐτόχθονας 440
εἶναι λέγουσι καὶ παιδείας ἐπιμελεῖς, οὐδὲν τοιοῦτον εὑρίσκεται γενόμενον· ἀλλὰ τῶν δημοσίων γραμμάτων ἀρχαιοτάτους εἶναί φασι τοὺς ὑπὸ Δράκοντος αὐτοῖς περὶ τῶν φονικῶν γραφέντας νόμους, ὀλίγῳ

πρότερον τῆς Πεισιστράτου τυραννίδος ἀνθρώπου γεγονότος. Περὶ μὲν γὰρ Ἀρκάδων τί δεῖ λέγειν αὐχούντων ἀρχαιότητα; Μόλις γὰρ οὗτοι καὶ μετὰ ταῦτα γράμμασιν ἐπαιδεύθησαν.

5. Ἅτε δὴ τοίνυν οὐδεμιᾶς προκαταβεβλημένης ἀναγραφῆς, ἣ καὶ τοὺς μαθεῖν βουλομένους διδάξειν ἔμελλε, καὶ τοὺς ψευδομένους ἐλέγξειν, ἡ πολλὴ πρὸς ἀλλήλους ἐγένετο διαφωνία τοῖς συγγραφεῦσι. Δευτέραν δὲ πρὸς ταύτῃ θετέον ἐκείνην τὴν αἰτίαν. Οἱ γὰρ ἐπὶ τὸ γράφειν ὁρμήσαντες οὐ περὶ τὴν ἀλήθειαν ἐσπούδασαν, καίτοι τοῦτο πρόχειρόν ἐστιν ἀεὶ τὸ ἐπάγγελμα, λόγων δὲ δύναμιν ἐπεδείκνυντο· καὶ καθ᾽ ὅντινα τρόπον ἐν τούτῳ παρευδοκιμήσειν τοὺς ἄλλους ὑπελάμβανον, κατὰ τοῦτον ἡρμόζοντο. Τινὲς μὲν ἐπὶ τὸ μυθολογεῖν τρεπόμενοι, τινὲς δὲ πρὸς χάριν ἢ τὰς πόλεις ἢ τοὺς βασιλέας ἐπαινοῦντες, ἄλλοι δὲ ἐπὶ τὸ κατηγορεῖν τῶν πράξεων ἢ τῶν γεγραφότων ἐχώρησαν, ἐνευδοκιμήσειν τούτῳ νομίζοντες. Ὅλως δὲ τὸ πάντων ἐναντιώτατον ἱστορίᾳ πράττοντες διατελοῦσι. Τῆς μὲν γὰρ ἀληθοῦς ἐστι τεκμήριον ἱστορίας, εἰ περὶ τῶν αὐτῶν ἅπαντες ταὐτὰ καὶ λέγοιεν καὶ γράφοιεν. Οἱ δὲ εἰ ταὐτὰ γράψειαν ἑτέρως, οὕτως ἐνόμιζον αὐτοὶ φανεῖσθαι πάντων ἀληθέστατοι. Λόγων μὲν οὖν ἕνεκα καὶ τῆς ἐν τούτοις δεινότητος δεῖ παραχωρεῖν ἡμᾶς τοῖς συγγραφεῦσι τοῖς Ἑλληνικοῖς· οὐ μὴν καὶ τῆς περὶ τῶν ἀρχαίων ἀληθοῦς ἱστορίας, καὶ μάλιστά γε τῆς περὶ τῶν ἑκάστοις ἐπιχωρίων.

6. Ὅτι μὲν οὖν παρ᾽ Αἰγυπτίοις τε καὶ Βαβυλωνίοις, ἐκ μακροτάτων ἄνωθεν χρόνων, τὴν περὶ τὰς ἀναγραφὰς ἐπιμέλειαν, ὅπου μὲν οἱ ἱερεῖς ἦσαν ἐγκεχειρισμένοι, καὶ περὶ ταύτας ἐφιλοσόφουν, Χαλδαῖοι δὲ παρὰ τοῖς Βαβυλωνίοις, καὶ ὅτι μάλιστα δὲ τῶν Ἕλλησιν ἐπιμιγνυμένων ἐχρήσαντο Φοίνικες γράμμασιν, εἴς τε τὰς περὶ τὸν βίον οἰκονομίας, καὶ πρὸς τὴν τῶν κοινῶν ἔργων παράδοσιν, ἐπειδὴ συγ-

χωροῦσιν ἅπαντες, ἐάσειν μοι δοκῶ. Περὶ δὲ τῶν ἡμετέρων προγόνων, ὅτι τὴν αὐτὴν, ἐῶ γὰρ λέγειν, εἰ καὶ πλείω τῶν εἰρημένων ἐποιήσαντο τὴν περὶ τὰς ἀναγραφὰς ἐπιμέλειαν, τοῖς ἀρχιερεῦσι καὶ τοῖς προφήταις τοῦτο προστάξαντες. Καὶ ὡς μέχρι τῶν καθ᾽ ἡμᾶς χρόνων πεφύλακται πολλῆς ἀκριβείας· εἰ δὲ θρασύτερον εἰπεῖν καὶ φυλαχθήσεται, πειράσομαι συντόμως διδάσκειν.

7. Οὐ γὰρ μόνον ἐξ ἀρχῆς ἐπὶ τούτων τοὺς ἀρίστους, καὶ τῇ θεραπείᾳ τοῦ θεοῦ προσεδρεύοντας κατέστησαν, ἀλλ᾽ ὅπως τὸ γένος τῶν ἱερέων ἄμικτον καὶ καθαρὸν διαμένῃ, προενόησαν. Δεῖ γὰρ τὸν μετέχοντα τῆς ἱερωσύνης ἐξ ὁμοεθνοῦς γυναικὸς παιδοποιεῖσθαι, καὶ μὴ πρὸς χρήματα μηδὲ τὰς ἄλλας ἀποβλέπειν τιμὰς, ἀλλὰ τὸ γένος ἐξετάζειν ἐκ τῶν ἀρχαίων λαμβάνοντα τὴν διαδοχὴν, καὶ πολλοὺς παρασχόμενον μάρτυρας. Καὶ ταῦτα πράττομεν οὐ μόνον ἐπ᾽ αὐτῆς Ἰουδαίας, ἀλλ᾽ ὅπου ποτὲ σύστημα τοῦ γένους ἐστὶν ἡμῶν, καὶ ἐκεῖ τὸ ἀκριβὲς ἀποσώζεται τοῖς ἱερεῦσι περὶ τοὺς γάμους· λέγω δὲ τοὺς ἐν Αἰγύπτῳ καὶ Βαβυλῶνι, καὶ εἴπου τῆς ἄλλης οἰκουμένης τοῦ γένους τῶν ἱερέων εἰσί τινες διεσπαρμένοι. Πέμπουσι γὰρ εἰς Ἱεροσόλυμα συγγράψαντες πατρόθεν τὸ ὄνομα τῶν γειναμένων καὶ τῶν ἐπάνω προγόνων, καὶ τίνες οἱ μαρτυροῦντες. Πόλεμος δ᾽ εἰ κατάσχοι, καθάπερ ἤδη γέγονεν πολλάκις, Ἀντιόχου τε τοῦ Ἐπιφανοῦς εἰς τὴν χώραν ἐμβαλόντος, καὶ Πομπηΐου Μάγνου, καὶ Κυϊντιλλίου Οὐάρου, μάλιστα δὲ καὶ ἐν τοῖς καθ᾽ ἡμᾶς χρόνοις, οἱ περιλειπόμενοι τῶν ἱερέων καινὰ πάλιν ἐκ τῶν ἀρχαίων γραμμάτων συνίστανται, καὶ δοκιμάζουσι τὰς ὑπολειφθείσας γυναῖκας. Οὐ γὰρ ἔτι τὰς αἰχμαλώτους γενομένας προσίενται, πολλάκις γεγονυῖαν αὐταῖς τὴν πρὸς ἀλλόφυλον κοινωνίαν ὑφορώμενοι. Τεκμήριον δὲ μέγιστον τῆς ἀκριβείας· οἱ γὰρ ἀρχιερεῖς οἱ παρ᾽ ἡμῖν ἀπὸ δισχιλίων ἐτῶν ὀνομαστοὶ παῖδες ἐκ πατρὸς εἰ-

σιν ἐν ταῖς ἀναγραφαῖς. Τοῖς δὲ τῶν εἰρημένων ὅτι οὖν γένοιτο εἰς παράβασιν, ἀπηγόρευται μήτε τοῖς βωμοῖς παρίστασθαι, μήτε μετέχειν τῆς ἄλλης ἁγιστείας. Εἰκότως οὖν, μᾶλλον δὲ ἀναγκαίως, ἅτε μήτε τοῦ ὑπογράφειν αὐτεξουσίου πᾶσιν ὄντος, μήτε τινὸς ἐν τοῖς γραφομένοις ἐνούσης διαφωνίας· ἀλλὰ μόνων τῶν προφητῶν τὰ μὲν ἀνωτάτω καὶ τὰ παλαιότατα κατὰ τὴν ἐπίπνοιαν τὴν ἀπὸ τοῦ θεοῦ μαθόντων, τὰ δὲ καθ' αὑτοὺς ὡς ἐγένετο σαφῶς συγγραφόντων.

8. Οὐ γὰρ μυριάδες βιβλίων εἰσὶ παρ' ἡμῖν, ἀσυμφώνων καὶ μαχομένων· δύο δὲ μόνα πρὸς τοῖς εἴκοσι βιβλία, τοῦ παντὸς ἔχοντα χρόνου τὴν ἀναγραφὴν, τὰ δικαίως θεῖα πεπιστευμένα. Καὶ τούτων πέντε μέν ἐστι τὰ Μωϋσέως, ἃ τούς τε νόμους περιέχει, καὶ τὴν τῆς ἀνθρωπογονίας παράδοσιν, μέχρι τῆς αὐτοῦ τελευτῆς· οὗτος ὁ χρόνος ἀπολείπει τρισχιλίων ὀλίγον ἐτῶν. Ἀπὸ δὲ τῆς Μωϋσέως τελευτῆς μέχρι τῆς Ἀρταξέρξου τοῦ μετὰ Ξέρξην Περσῶν βασιλέως ἀρχῆς, οἱ μετὰ Μωϋσῆν προφῆται τὰ κατ' αὐτοὺς πραχθέντα συνέγραψαν ἐν τρισὶ καὶ δέκα βιβλίοις· αἱ δὲ λοιπαὶ τέσσαρες ὕμνους εἰς τὸν θεὸν καὶ τοῖς ἀνθρώποις ὑποθήκας τοῦ βίου περιέχουσιν. Ἀπὸ δὲ Ἀρταξέρξου μέχρι τοῦ καθ' ἡμᾶς χρόνου γέγραπται μὲν ἕκαστα· πίστεως δὲ οὐχ ὁμοίας ἠξίωται τοῖς πρὸ αὐτῶν, διὰ τὸ μὴ γενέσθαι τὴν τῶν προφητῶν ἀκριβῆ διαδοχήν. Δῆλον δὲ ἐστὶν ἔργῳ, πῶς ἡμεῖς τοῖς ἰδίοις γράμμασι πεπιστεύκαμεν. Τοσούτου γὰρ αἰῶνος ἤδη παρῳχηκότος, οὔτε
442 προσθεῖναί τις οὐδὲν, οὔτε ἀφελεῖν αὐτῶν, οὔτε μεταθεῖναι τετόλμηκεν. Πᾶσι δὲ σύμφυτόν ἐστιν εὐθὺς ἐκ τῆς πρώτης γενέσεως Ἰουδαίοις τὸ νομίζειν αὐτὰ θεοῦ δόγματα, καὶ τούτοις ἐμμένειν, καὶ ὑπὲρ αὐτῶν, εἰ δέοι, θνήσκειν ἡδέως· ἤδη οὖν πολλοὶ πολλάκις ἑώρανται τῶν αἰχμαλώτων, στρέβλας καὶ παντοίων θανάτων τρόπους ἐν θεάτροις ὑπομένοντες,

ἐπὶ τὸ μηδὲν ῥῆμα προίεσθαι παρὰ τοὺς νόμους καὶ τὰς μετὰ τούτων ἀναγραφάς. Ὃ τίς ἂν ὑπομείνειεν Ἑλλήνων ὑπὲρ αὐτοῦ, ἀλλ' οὐδ' ὑπὲρ τοῦ καὶ πάντα τὰ παρ' αὐτοῖς ἀφανισθῆναι συγγράμματα, τὴν τυχοῦσαν ὑποστήσεται βλάβην; Λόγους γὰρ αὐτὰ νομίζουσιν εἶναι, κατὰ τὴν τῶν γραψάντων βούλησιν ἐσχεδιασμένους. Καὶ τοῦτο δικαίως καὶ περὶ τῶν παλαιοτέρων φρονοῦσιν, ἐπειδὴ καὶ τῶν νῦν ἐνίους ὁρῶσι τολμῶντας περὶ τούτων συγγράφειν, οἷς μήτ' αὐτοὶ παρεγένοντο, μήτε πυθέσθαι παρὰ τῶν εἰδότων ἐφιλοτιμήθησαν. Ἀμέλει καὶ περὶ τοῦ γενομένου νῦν ἡμῖν πολέμου τινὲς ἱστορίας ἐπιγράψαντες ἐξενηνόχασιν, οὔτ' εἰς τοὺς τόπους παραβαλόντες, οὔτε πλησίον τούτων πραττομένων προσελθόντες· ἀλλ' ἐκ παρακουσμάτων ὀλίγα συνθέντες, τῷ τῆς ἱστορίας ὀνόματι λίαν ἀναιδῶς ἐνεπαροίνησαν.

9. Ἐγὼ δὲ καὶ περὶ τοῦ πολέμου παντὸς, καὶ περὶ τῶν ἐν αὐτῷ κατὰ μέρος γενομένων, ἀληθῆ τὴν ἀναγραφὴν ἐποιησάμην, τοῖς πράγμασιν αὐτὸς ἅπασι παρατυχών. Ἐστρατήγουν μὲν γὰρ τῶν παρ' ἡμῖν Γαλιλαίων ὀνομαζομένων, ἕως ἀντέχειν δυνατὸν ἦν, ἐγενόμην δὲ παρὰ Ῥωμαίοις συλληφθεὶς αἰχμάλωτος. Καί με διὰ φυλακῆς Οὐεσπασιανὸς καὶ Τίτος ἔχοντες, ἀεὶ προσεδρεύειν αὐτοῖς ἠνάγκασαν τὸ μὲν πρῶτον δεδεμένον· αὖθις δὲ λυθεὶς συνεπέμφθην ἀπὸ τῆς Ἀλεξανδρείας Τίτῳ πρὸς τὴν Ἱεροσολύμων πολιορκίαν. Ἐν ᾧ χρόνῳ γενομένων τῶν πραττομένων οὐκ ἔστιν ὃ τὴν ἐμὴν γνῶσιν διέφυγε· καὶ γὰρ τὰ κατὰ τὸ στρατόπεδον τὸ Ῥωμαίων ὁρῶν ἐπιμελῶς ἀνέγραφον, καὶ τὰ παρὰ τῶν αὐτομόλων ἀπαγγελλόμενα μόνος αὐτὸς συνίην· εἶτα σχολῆς ἐν τῇ Ῥώμῃ λαβόμενος, πάσης μοι τῆς πραγματείας ἐν παρασκευῇ γεγενημένης, χρησάμενος τισὶ πρὸς τὴν Ἑλληνίδα φωνὴν συνεργοῖς, οὕτως ἐποιησάμην τῶν πράξεων τὴν παράδοσιν. Τοσοῦτον δέ μοι περιῆν θάρσος τῆς ἀληθείας, ὥστε πρώτους πάντων

τοὺς αὐτοκράτορας τοῦ πολέμου γενομένους Οὐεσπασιανὸν καὶ Τίτον ἠξίωσα λαβεῖν μάρτυρας. Πρώτοις γὰρ δέδωκα τὰ βιβλία· καὶ μετ' ἐκείνους πολλοῖς μὲν Ῥωμαίων τοῖς συμπεπολεμηκόσι, πολλοῖς δὲ τῶν ἡμετέρων ἐπίπρασκον, ἀνδράσι καὶ τῆς Ἑλληνικῆς σοφίας μετεσχηκόσιν, ὧν ἐστιν Ἰούλιος Ἀρχέλαος, Ἡρώδης ὁ σεμνότατος, καὶ αὐτὸς ὁ θαυμασιώτατος βασιλεὺς Ἀγρίππας. Οὗτοι μὲν οὖν ἅπαντες ἐμαρτύρησαν, ὅτι τῆς ἀληθείας προέστην ἐπιμελῶς, οὐκ ἂν ὑποστειλάμενοι καὶ σιωπήσαντες, εἴ τι κατὰ ἄγνοιαν ἢ χαριζόμενος μετέθηκα τῶν γεγονότων ἢ παρέλιπον.

10. *Φαῦλοι δέ τινες ἄνθρωποι διαβάλλειν μου τὴν ἱστορίαν ἐπικεχειρήκασιν, ὥςπερ ἐν σχολῇ μειρακίων γύμνασμα προκεῖσθαι νομίζοντες. Κατηγορίας παραδόξου καὶ διαβολῆς! Δέον ἐκεῖνο γινώσκειν, ὅτι δεῖ τὸν ἄλλοις παράδοσιν πράξεων ἀληθινῶν ὑπισχνούμενον, αὐτὸν ἐπίστασθαι ταύτας πρότερον*
443 *ἀκριβῶς, ἢ παρηκολουθηκότα τοῖς γεγονόσιν, ἢ παρὰ τῶν εἰδότων πυνθανόμενον. Ὅπερ ἐγὼ μάλιστα περὶ ἀμφοτέρας νομίζω πεποιηκέναι τὰς πραγματείας. Τὴν μὲν γὰρ ἀρχαιολογίαν, ὥςπερ ἔφην, ἐκ τῶν ἱερῶν γραμμάτων μεθηρμήνευκα, γεγονὼς ἱερεὺς ἐκ γένους, καὶ μετεσχηκὼς τῆς φιλοσοφίας τῆς ἐν ἐκείνοις τοῖς γράμμασι· τοῦ δὲ πολέμου τὴν ἱστορίαν ἔγραψα, πολλῶν μὲν αὐτουργὸς πράξεων, πλείστων δ' αὐτόπτης γενόμενος, ὅλως δὲ τῶν λεχθέντων ἢ πραχθέντων οὐδοτιοῦν ἀγνοήσας. Πῶς οὖν οὐκ ἂν θρασεῖς τις ἡγήσαιτο τοὺς ἀνταγωνίζεσθαί μοι περὶ τῆς ἀληθείας ἐπικεχειρηκότας. Οἳ καὶ ἐν τοῖς τῶν αὐτοκρατόρων ὑπομνήμασιν ἐντυχεῖν λέγουσιν, ἀλλ' οὔ γε καὶ τοῖς ἡμετέροις τῶν ἀντιπολεμούντων πράγμασι παρέτυχον.*

11. *Περὶ μὲν οὖν τούτων ἀναγκαίαν ἐποιησάμην τὴν παρέκβασιν, ἐπισημήνασθαι βουλόμενος τῶν*

ἐπαγγελλομένων τὰς ἱστορίας συγγράφειν τὴν εὐχέρειαν· ἱκανῶς δὲ φανερὸν, ὡς οἶμαι, πεποιηκὼς, ὡς ὅτι πάτριός ἐστιν ἡ περὶ τῶν παλαιῶν ἀναγραφὴ τοῖς βαρβάροις μᾶλλον, ἢ τοῖς Ἕλλησιν. Βούλομαι δὴ μικρὰ πρότερον διαλεχθῆναι πρὸς τοὺς ἐπιχειροῦντας νέαν ἡμῶν ἀποφαίνειν τὴν κατάστασιν, ἐκ τοῦ μηδὲν περὶ ἡμῶν, ὥς φασιν ἐκεῖνοι, λελέχθαι παρὰ τοῖς Ἑλληνικοῖς συγγραφεῦσιν· εἶτα δὲ τὰς μαρτυρίας τῆς ἀρχαιότητος ἐκ τῶν παρ᾽ ἄλλοις γραμμάτων παρέξω, καὶ τοὺς μὲν βεβλασφημηκότας ἡμῶν τὸ γένος ἀποδείξω λίαν ἀλόγως βλασφημοῦντας.

12. Ἡμεῖς τοίνυν οὔτε χώραν οἰκοῦμεν παράλιον, οὔτ᾽ ἐμπορίαις χαίρομεν, οὐδὲ ταῖς πρὸς ἄλλους διὰ τούτων ἐπιμιξίαις. Ἀλλ᾽ εἰσὶν μὲν ἡμῶν αἱ πόλεις μακρὰν ἀπὸ θαλάσσης ἀπῳκισμέναι, χώραν δὲ ἀγαθὴν νεμόμενοι ταύτην ἐκπονοῦμεν· μάλιστα δὲ πάντων περὶ παιδοτροφίαν φιλοκαλοῦντες, καὶ τὸ φυλάττειν τοὺς νόμους, καὶ τὴν κατὰ τούτους παραδεδομένην εὐσέβειαν, ἔργον ἀναγκαιότατον παντὸς τοῦ βίου πεποιημένοι. Προςούσης τοίνυν τοῖς εἰρημένοις καὶ τῆς περὶ τὸν βίον ἡμῶν ἰδιότητος, οὐδὲν ἦν ἐν τοῖς παλαιοῖς χρόνοις τὸ ποιοῦν πρὸς τοὺς Ἕλληνας ἡμῖν ἐπιμιξίαν, ὥςπερ Αἰγυπτίοις μὲν τὰ παρ᾽ αὐτῶν ἐξαγόμενα καὶ πρὸς αὐτοὺς εἰςαγόμενα· τοῖς δὲ τὴν παράλιον τῆς Φοινίκης κατοικοῦσιν ἡ περὶ τὰς καπηλείας καὶ τὰς ἐμπορίας σπουδὴ διὰ τὸ φιλοχρηματεῖν. Οὐ μὴν οὐδὲ πρὸς λῃστείας, ὥςπερ ἄλλοι τινὲς, ἢ τὸ πλέον ἔχειν ἀξιοῦν, πολεμοῦντες ἐτράπησαν ἡμῶν οἱ πατέρες, καίτοι πολλὰς τῆς χώρας ἐχούσης μυριάδας ἀνδρῶν οὐκ ἀτόλμων. Διὰ τοῦτο Φοίνικες μὲν αὐτοὶ κατ᾽ ἐμπορίαν τοῖς Ἕλλησιν ἐπειςπλέοντες εὐθὺς ἐγνώσθησαν, καὶ δι᾽ ἐκείνων Αἰγύπτιοι, καὶ πάντες, ἀφ᾽ ὧν τὸν φόρτον εἰς τοὺς Ἕλληνας διεκόμιζον, μεγάλα πελάγη διαίροντες. Μῆδοι δὲ μετὰ ταῦτα καὶ Πέρσαι φανεροὶ κατέστησαν, τῆς Ἀσίας ἐπάρξαντες, οἱ δὲ καὶ μέχρι τῆς ἑτέρας

ἠπείρου Πέρσαι στρατεύσαντες. Θρᾷκες δὲ διὰ γειτονίαν, καὶ τὸ Σκυθικὸν ἀπὸ τῶν εἰς τὸν Πόντον ἐγνώσθη πλεόντων. Ὅλως γὰρ ἅπαντες οἱ παρὰ τὴν θάλατταν, καὶ τὴν πρὸς ταῖς ἀνατολαῖς καὶ πρὸς τὴν ἑσπέριον κατοικοῦντες, τοῖς συγγράφειν τι βουλομένοις γνωριμώτεροι κατέστησαν. Οἱ δὲ ταύτης ἀνωτέρω τὰς οἰκήσεις ἔχοντες ἐπιπλεῖστον ἠγνοήθησαν. Καὶ τοῦτο φαίνεται καὶ περὶ τὴν Εὐρώπην συμβεβηκός, ὅπου γε τῆς Ῥωμαίων
444 πόλεως, τοιαύτην ἐκ μακροῦ δύναμιν κεκτημένης, καὶ τοιαύτας πράξεις κατορθούσης πολεμικάς, οὔθ' ὁ Ἡρόδοτος, οὔθ' ὁ Θουκυδίδης, οὔτε τῶν ἅμα τούτοις γενομένων οὐδὲ εἷς ἐμνημόνευκεν, ἀλλ' ὀψέ ποτε καὶ μόλις αὐτῶν εἰς τοὺς Ἕλληνας ἡ γνῶσις διεξῆλθεν. Περὶ μὲν γὰρ Γαλατῶν τε καὶ Ἰβήρων οὕτως ἠγνόησαν οἱ δοκοῦντες ἀκριβέστατοι συγγραφεῖς, ὧν ἐστιν Ἔφορος, ὥςτε πόλιν οἴεται μίαν εἶναι τοὺς Ἴβηρας, τοὺς τοσοῦτο μέρος τῆς ἑσπερίου γῆς κατοικοῦντας· καὶ τὰ μήτε γενόμενα παρ' αὐτοῖς ἔθη, μήτε λεγόμενα γράφειν, ὡς ἐκείνων αὐτοῖς χρωμένων, ἐτόλμησαν. Αἴτιον δὲ τοῦ μὲν μὴ γινώσκειν τὸ ἀληθὲς, τὸ λίαν ἀνεπίμικτον· τοῦ δὲ γράφειν ψευδῆ, τὸ βούλεσθαι δοκεῖν τι πλέον τῶν ἄλλων ἱστορεῖν. Πῶς οὖν ἔτι θαυμάζειν προςῆκεν, εἰ μηδὲ τὸ ἡμέτερον ἔθνος πολλοῖς ἐγιγνώσκετο, μηδὲ τῆς ἐν τοῖς συγγράμμασι μνήμης ἀφορμὴν παρέσχεν, οὕτω μὲν ἀπῳκισμένον τῆς θαλάσσης, οὕτω δὲ βιοτεύειν προῃρημένον; —

13. Φέρε τοίνυν ἡμᾶς ἀξιοῦν τεκμηρίῳ χρήσασθαι περὶ τῶν Ἑλλήνων, ὅτι μὴ παλαιόν ἐστιν αὐτῶν τὸ γένος, τῷ μηδὲν ἐν ταῖς ἡμετέραις ἀναγραφαῖς περὶ αὐτῶν εἰρῆσθαι. Ἆρ' οὐχὶ πάντας ἂν κατεγέλων, αὐτὰς οἶμαι τὰς ὑπ' ἐμοῦ νῦν εἰρημένας κομίζοντες αἰτίας, καὶ μάρτυρας ἂν τοὺς πλησιοχώρους παρείχοντο τῆς αὐτῶν ἀρχαιότητος; Καὶ ἐγὼ τοίνυν πειράσομαι τοῦτο ποιεῖν. Αἰγυπτίοις γὰρ

καὶ Φοίνιξι μάλιστα δὴ χρήσομαι μάρτυσιν, οὐκ ἄν τινος ὡς ψευδῆ τὴν μαρτυρίαν διαβάλλειν δυνηθέντος· φαίνονται γὰρ καὶ δὴ μάλιστα πρὸς ἡμᾶς δυςμενῶς διατεθέντες, κοινῇ μὲν ἅπαντες Αἰγύπτιοι, Φοινίκων δὲ Τύριοι. Περὶ μέντοι Χαλδαίων οὐκέτι δυναίμην ἂν ταὐτὸ λέγειν, ἐπεὶ καὶ τοῦ γένους ἡμῶν ἀρχηγοὶ καθεστήκασι, καὶ διὰ τὴν συγγένειαν ἐν ταῖς αὐτῶν ἀναγραφαῖς Ἰουδαίων μνημονεύουσιν. Ὅταν δὲ τὰς περὶ τούτων πίστεις παράσχω, τότε καὶ τῶν Ἑλλήνων συγγραφέων ἀποφανῶ τοὺς μνήμην Ἰουδαίων πεποιηκότας, ἵνα μηδὲ ταύτην ἔτι τὴν πρόφασιν οἱ βασκαίνοντες ἔχωσι τῆς πρὸς ἡμᾶς ἀντιλογίας.

14. Ἄρξομαι δὴ πρῶτον ἀπὸ τῶν παρ' Αἰγυπτίοις γραμμάτων. Αὐτὰ μὲν οὖν οὐχ οἷόν τε παρατίθεσθαι καὶ ἐκείνων. Μανεθὼν δὲ ἦν τὸ γένος ἀνὴρ Αἰγύπτιος, τῆς Ἑλληνικῆς μετεσχηκὼς παιδείας, ὡς δῆλός ἐστι· γέγραφε γὰρ Ἑλλάδι φωνῇ τὴν πάτριον ἱστορίαν, ἔκ τε τῶν ἱερῶν, ὥς φησιν αὐτὸς, μεταφράσας, καὶ πολλὰ τὸν Ἡρόδοτον ἐλέγχει τῶν Αἰγυπτιακῶν ὑπ' ἀγνοίας ἐψευσμένων. Αὐτὸς δὴ τοίνυν ὁ Μανεθὼν ἐν τῇ δευτέρᾳ τῶν Αἰγυπτιακῶν ταῦτα περὶ ἡμῶν γράφει. Παραθήσομαι δὲ τὴν λέξιν αὐτοῦ, καθάπερ αὐτὸν ἐκεῖνον παραγαγὼν μάρτυρα· „Ἐγένετο βασιλεὺς ἡμῖν, Τίμαος ὄνομα. Ἐπὶ τούτου οὐκ οἶδ' ὅπως ὁ θεὸς ἀντέπνευσεν, καὶ παραδόξως ἐκ τῶν πρὸς ἀνατολὴν μερῶν, ἄνθρωποι τὸ γένος ἄσημοι, καταθαρσήσαντες ἐπὶ τὴν χώραν ἐστράτευσαν, καὶ ῥᾳδίως ἀμαχητὶ ταύτην κατὰ κράτος εἷλον. Καὶ τοὺς ἡγεμονεύσαντας ἐν αὐτῇ χειρωσάμενοι, τὸ λοιπὸν τάς τε πόλεις ὠμῶς ἐνέπρησαν, καὶ τὰ ἱερὰ τῶν θεῶν κατέσκαψαν. Πᾶσι δὲ τοῖς
ἐπιχωρίοις ἐχθρότατά πως ἐχρήσαντο, τοὺς μὲν σφά- 445
ζοντες, τῶν δὲ καὶ τὰ τέκνα καὶ γυναῖκας εἰς δουλείαν ἄγοντες. Πέρας δὲ καὶ βασιλέα ἕνα ἐξ αὐτῶν ἐποίησαν, ᾧ ὄνομα ἦν Σάλατις. Καὶ οὗτος ἐν τῇ

Μέμφιδι κατεγίνετο, τήν τε ἄνω καὶ κάτω χώραν δασμολογῶν, καὶ φρουρὰν ἐν τοῖς ἐπιτηδειοτάτοις καταλείπων τόποις. Μάλιστα δὲ καὶ τὰ πρὸς ἀνατολὴν ἠσφαλίσατο μέρη, προορώμενος Ἀσσυρίων, τότε μεῖζον ἰσχυόντων, ἐσομένην ἐπιθυμίαν τῆς αὐτῆς βασιλείας ἐφόδου. Εὑρὼν δὲ ἐν νομῷ τῷ Σαΐτῃ πόλιν ἐπικαιροτάτην, κειμένην μὲν πρὸς ἀνατολὴν τοῦ Βουβαστίτου ποταμοῦ, καλουμένην δ' ἀπό τινος ἀρχαίας θεολογίας Αὔαριν, ταύτην ἔκτισέν τε, καὶ τοῖς τείχεσιν ὀχυρωτάτην ἐποίησεν, ἐνοικίσας αὐτῇ καὶ πλῆθος ὁπλιτῶν εἰς εἴκοσι καὶ τέσσαρας μυριάδας ἀνδρῶν πρὸς φυλακήν. Ἐνθάδε κατὰ θέρειαν ἤρχετο, τὰ μὲν σιτομετρῶν καὶ μισθοφορίαν παρεχόμενος, τὰ δὲ καὶ ταῖς ἐξοπλισίαις πρὸς φόβον τῶν ἔξωθεν ἐπιμελῶς γυμνάζων. Ἄρξας δὲ ἐννεακαίδεκα ἔτη τὸν βίον ἐτελεύτησεν. Μετὰ τοῦτον δὲ ἕτερος ἐβασίλευσεν τέσσαρα καὶ τετταράκοντα ἔτη, καλούμενος Βηών. Μεθ' ὃν ἄλλος Ἀπαχνὰς, ἓξ καὶ τριάκοντα ἔτη καὶ μῆνας ἑπτά. Ἔπειτα δὲ καὶ Ἄπωφις ἓν καὶ ἑξήκοντα, καὶ Ἰανίας πεντήκοντα καὶ μῆνα ἕνα. Ἐπὶ πᾶσι δὲ καὶ Ἄσσις ἐννέα καὶ τεσσαράκοντα καὶ μῆνας δύο. Καὶ οὗτοι μὲν ἓξ ἐν αὐτοῖς ἐγενήθησαν πρῶτοι ἄρχοντες, πολεμοῦντες ἀεὶ καὶ ποθοῦντες μᾶλλον τῆς Αἰγύπτου ἐξᾶραι τὴν ῥίζαν. Ἐκαλεῖτο δὲ τὸ σύμπαν αὐτῶν ἔθνος ὑκσώς, τοῦτο δέ ἐστι βασιλεῖς ποιμένες. Τὸ γὰρ ὑκ καθ' ἱερὰν γλῶσσαν βασιλέα σημαίνει, τὸ δὲ σῶς ποιμήν ἐστι καὶ ποιμένες κατὰ τὴν κοινὴν διάλεκτον· καὶ οὕτω συντιθέμενον γίνεται ὑκσώς. Τινὲς δὲ λέγουσιν αὐτοὺς Ἄραβας εἶναι." Ἐν δὲ ἄλλῳ ἀντιγράφῳ οὐ βασιλεῖς σημαίνεσθαι διὰ τῆς τοῦ ὑκ προσηγορίας, ἀλλὰ τὸ ἐναντίον αἰχμαλώτους δηλοῦσθαι ποιμένας· τὸ γὰρ ὑκ πάλιν Αἰγυπτιαστὶ καὶ τὸ ἀκ δασυνόμενον, αἰχμαλώτους ῥητῶς μηνύει. Καὶ τοῦτο μᾶλλον πιθανώτερόν μοι φαίνεται, καὶ παλαιᾶς ἱστορίας ἐχόμενον. ‘Τούτους δὲ τοὺς προκατω-

νομασμένους βασιλέας τοὺς τῶν ποιμένων καλουμέ-
νων, καὶ τοὺς ἐξ αὐτῶν γενομένους, κρατῆσαι τῆς
Αἰγύπτου φησὶν ἔτη πρὸς τοῖς πεντακοσίοις ἕνδεκα.
Μετὰ ταῦτα δὲ, τῶν ἐκ τῆς Θηβαΐδος καὶ τῆς ἄλ-
λης Αἰγύπτου βασιλέων γενέσθαι φησὶν ἐπὶ τοὺς
ποιμένας ἐπανάστασιν, καὶ πόλεμον αὐτοῖς συῤῥα-
γῆναι μέγαν καὶ πολυχρόνιον. Ἐπὶ δὲ βασιλέως,
ᾧ ὄνομα εἶναι Ἀλισφραγμούθωσις, ἡττωμένους φησὶ
τοὺς ποιμένας ὑπ' αὐτοῦ, ἐκ μὲν τῆς ἄλλης Αἰγύ-
πτου πάσης ἐκπεσεῖν, κατακλεισθῆναι δὲ εἰς τό- 446
πον, ἀρουρῶν ἔχοντα μυρίων τὴν περίμετρον. Αὔ-
αριν ὄνομα τῷ τόπῳ. Τοῦτον φησὶν ὁ Μανεθὼν
ἅπαντα, τείχει τε μεγάλῳ καὶ ἰσχυρῷ περιβαλεῖν τοὺς
ποιμένας, ὅπως τήν τε κτῆσιν ἅπασαν ἔχωσιν ἐν
ὀχυρῷ, καὶ τὴν λείαν τὴν ἑαυτῶν. Τὸν δὲ Ἀλι-
σφραγμουθώσεως υἱὸν Θούμμωσιν ἐπιχειρῆσαι μὲν
αὐτοὺς διὰ πολιορκίας ἑλεῖν κατὰ κράτος, ὀκτὼ καὶ
τεσσαράκοντα μυριάσι προσεδρεύσαντα τοῖς τείχεσιν·
ἐπεὶ δὲ τῆς πολιορκίας ἀπέγνω, ποιήσασθαι συμ-
βάσεις, ἵνα τὴν Αἴγυπτον ἐκλιπόντες ὅποι βούλονται
πάντες ἀβλαβεῖς ἀπέλθωσι. Τοὺς δὲ ἐπὶ ταῖς ὁμο-
λογίαις πανοικεσίᾳ μετὰ τῶν κτήσεων οὐκ ἐλάττους
μυριάδων ὄντας εἴκοσι καὶ τεσσάρων ἀπὸ τῆς Αἰ-
γύπτου τὴν ἔρημον εἰς Συρίαν ὁδοιπορῆσαι. Φο-
βουμένους δὲ τὴν Ἀσσυρίων δυναστείαν, τότε γὰρ
ἐκείνους τῆς Ἀσίας κρατεῖν, ἐν τῇ νῦν Ἰουδαίᾳ κα-
λουμένῃ πόλιν οἰκοδομησαμένους τοσαύταις μυριάσιν
ἀνθρώπων ἀρκέσουσαν, Ἱεροσόλυμα ταύτην ὀνομά-
σαι. Ἐν ἄλλῃ δέ τινι βίβλῳ τῶν Αἰγυπτιακῶν
Μανεθὼν τοῦτό φησιν ἔθνος τοὺς καλουμένους ποι-
μένας, αἰχμαλώτους ἐν ταῖς ἱεραῖς αὐτῶν βίβλοις
γεγράφθαι,' λέγων ὀρθῶς· καὶ γὰρ τοῖς ἀνωτάτω
προγόνοις ἡμῶν τὸ ποιμαίνειν πάτριον ἦν, καὶ νο-
μαδικὸν ἔχοντες τὸν βίον, οὕτως ἐκαλοῦντο ποιμένες.
Αἰχμάλωτοί τε πάλιν οὐκ ἀλόγως ὑπὸ τῶν Αἰγυ-
πτίων ἀνεγράφησαν, ἐπειδήπερ ὁ πρόγονος ἡμῶν Ἰω-

σηπος ἑαυτὸν ἔφη πρὸς τὸν βασιλέα τῶν Αἰγυπτίων αἰχμάλωτον εἶναι, καὶ τοὺς ἀδελφοὺς εἰς τὴν Αἴγυπτον ὕστερον μετεπέμψατο, τοῦ βασιλέως ἐπιτρέψαντος. Ἀλλὰ περὶ μὲν τούτων ἐν ἄλλοις ποιήσομαι τὴν ἐξέτασιν ἀκριβεστέραν.

15. Νυνὶ δὲ τῆς ἀρχαιότητος ταύτης παρατί-
θεμαι τοὺς Αἰγυπτίους μάρτυρας. Πάλιν οὖν τὰ
τοῦ Μενεθῶνος, πῶς ἔχει πρὸς τὴν τῶν χρόνων τά-
ξιν, ὑπογράψω. Φησὶ δὲ οὕτω· "Μετὰ τὸ ἐξελ-
θεῖν ἐξ Αἰγύπτου τὸν λαὸν τῶν ποιμένων εἰς Ἱερο-
σόλυμα, ὁ ἐκβαλὼν αὐτοὺς ἐξ Αἰγύπτου βασιλεὺς Τέ-
θμωσις ἐβασίλευσεν μετὰ ταῦτα ἔτη εἴκοσι πέντε
καὶ μῆνας τέσσαρας, καὶ ἐτελεύτησεν· καὶ παρέλαβε
τὴν ἀρχὴν αὐτοῦ υἱὸς Χέβρων ἔτη δεκατρία. Μεθ᾽
ὃν Ἀμένωφις εἴκοσι καὶ μῆνας ἑπτά· τοῦ δὲ ἀδελφὴ
Ἀμεσσὴς οἴκοσι ἓν καὶ μῆνας ἐννέα. Τῆς δὲ Μή-
φρης δώδεκα καὶ μῆνας ἐννέα. Τοῦ δὲ Μηφραμού-
θωσις εἴκοσι πέντε καὶ μῆνας δέκα. Τοῦ δὲ Θμῶ-
σις ἐννέα καὶ μῆνας ὀκτώ. Τοῦ δὲ Ἀμένωφις τριά-
κοντα καὶ μῆνας δέκα. Τοῦ δὲ Ὧρος τριάκοντα
ἓξ καὶ μῆνας πέντε. Τοῦ δὲ θυγάτηρ Ἀκεγχρὴς
δώδεκα καὶ μῆνα ἕνα. Τῆς δὲ Ῥάθωτις ἀδελφὸς ἐν-
νέα. Τοῦ δὲ Ἀκεγχήρης δώδεκα καὶ μῆνας πέν-
τε. Τοῦ δὲ Ἀκεγχήρης ἕτερος δώδεκα καὶ μῆνας
τρεῖς. Τοῦ δὲ Ἅρμαϊς τέσσαρα καὶ μῆνα ἕνα. Τοῦ
δὲ Ῥαμέσσης ἓν καὶ μῆνας τέσσαρας. Τοῦ δὲ Ἀρ-
447 μέσσης Μιαμμοῦ ἑξήκοντα ἓξ καὶ μῆνας δύο. Τοῦ
δὲ Ἀμένωφις δέκα καὶ ἐννέα καὶ μῆνας ἕξ. Τοῦ δὲ
Σέθωσις, καὶ Ῥαμέσσης, ἱππικὴν καὶ ναυτικὴν ἔ-
χων δύναμιν. Οὗτος τὸν μὲν ἀδελφὸν Ἅρμαϊν ἐπί-
τροπον τῆς Αἰγύπτου κατέστησεν, καὶ πᾶσαν μὲν
αὐτῷ τὴν ἄλλην βασιλικὴν περιέθηκεν ἐξουσίαν, μό-
νον δὴ ἐνετείλατο διάδημα μὴ φορεῖν, μηδὲ τὴν βα-
σιλίδα μητέρα τε τῶν τέκνων ἀδικεῖν, ἀπέχεσθαι
δὲ καὶ τῶν ἄλλων βασιλικῶν παλλακίδων. Αὐτὸς δὲ
ἐπὶ Κύπρον καὶ Φοινίκην καὶ πάλιν Ἀσσυρίους τε

καὶ Μήδους στρατεύσας, ἅπαντας, τοὺς μὲν δόρατι, τοὺς δὲ ἀμαχητὶ, φόβῳ δὲ τῆς πολλῆς δυνάμεως, ὑποχειρίους ἔλαβε· καὶ μέγα φρονήσας ἐπὶ ταῖς εὐπραγίαις, ἔτι καὶ θαρσαλεώτερον ἐπορεύετο, τὰς πρὸς ἀνατολὰς πόλεις τε καὶ χώρας καταστρεφόμενος. Χρόνου τε ἱκανοῦ γεγονότος, Ἁρμαῒς ὁ καταλειφθεὶς ἐν Αἰγύπτῳ πάντα τοὔμπαλιν, οἷς ἀδελφὸς παρῄνει μὴ ποιεῖν, ἀδεῶς ἔπραττεν. Καὶ γὰρ τὴν βασιλίδα βιαίως ἔσχεν, καὶ ταῖς ἄλλαις παλλακίσιν ἀφειδῶς διετέλει χρώμενος. Πειθόμενος δὲ ὑπὸ τῶν φίλων διάδημα ἐφόρει, καὶ ἀντῆρε τῷ ἀδελφῷ. Ὁ δὲ τεταγμένος ἐπὶ τῶν ἱερῶν τῆς Αἰγύπτου, γράψας βιβλίον ἔπεμψε τῷ Σεθώσει, δηλῶν αὐτῷ πάντα, καὶ ὅτι ἀντῆρεν ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ Ἁρμαῒς. Παραχρῆμα οὖν ὑπέστρεψεν εἰς Πηλούσιον, καὶ ἐκράτησεν τῆς ἰδίας βασιλείας. Ἡ δὲ χώρα ἐκλήθη ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ ὀνόματος Αἴγυπτος. Λέγει γὰρ, ὅτι ὁ μὲν Σέθωσις ἐκαλεῖτο Αἴγυπτος, Ἁρμαῒς δὲ ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ Δαναός.'

16. Ταῦτα μὲν ὁ Μανεθών. Δῆλον δέ ἐστιν ἐκ τῶν εἰρημένων ἐτῶν τοῦ χρόνου συλλογισθέντος, ὅτι οἱ καλούμενοι ποιμένες, ἡμέτεροι δὲ πρόγονοι, τρισὶ καὶ ἐνενήκοντα καὶ τριακοσίοις πρόσθεν ἔτεσιν, ἐκ τῆς Αἰγύπτου ἀπαλλαγέντες, τὴν χώραν ταύτην ἀπῴκησαν, ἢ Δαναὸν εἰς Ἄργος ἀφικέσθαι. Καίτοι τοῦτον ἀρχαιότατον Ἀργεῖοι νομίζουσι. Δύο τοίνυν ὁ Μανεθὼν ἡμῖν τὰ μέγιστα μεμαρτύρηκεν ἐκ τῶν παρ' Αἰγυπτίοις γραμμάτων· πρῶτον μὲν τὴν ἑτέρωθεν ἄφιξιν εἰς Αἴγυπτον, ἔπειτα δὲ τὴν ἐκεῖθεν ἀπαλλαγὴν, οὕτως ἀρχαίαν τοῖς χρόνοις, ὡς ἐγγύς που προτερεῖν αὐτὴν τῶν Ἰλιακῶν ἔτεσι χιλίοις. Ὑπὲρ ὧν δὲ ὁ Μανεθὼν οὐκ ἐκ τῶν παρ' Αἰγυπτίοις γραμμάτων, ἀλλ', ὡς αὐτὸς ὡμολόγηκεν, ἐκ τῶν ἀδεσπότως μυθολογουμένων προστέθεικεν, ὕστερον ἐξελέγξω κατὰ μέρος, ἀποδεικνὺς τὴν ἀπίθανον αὐτοῦ ψευδολογίαν.

17. *Βούλομαι τοίνυν ἀπὸ τούτων ἔτι μετελθεῖν ἐπὶ τὰ παρὰ τοῖς Φοίνιξιν ἀναγεγραμμένα περὶ τοῦ γένους ἡμῶν, καὶ τὰς ἐξ ἐκείνων μαρτυρίας παρασχεῖν. Ἔστι τοίνυν παρὰ Τυρίοις πολλῶν ἐτῶν γράμματα, δημοσίᾳ γεγραμμένα, καὶ πεφυλαγμένα λίαν ἐπιμελῶς, περὶ τῶν παρ' αὐτοῖς γενομένων καὶ*
448 *πρὸς ἀλλήλους πραχθέντων μνήμης ἀξίων. Ἐν τούτοις γέγραπται, ὅτι 'ἐν Ἱεροσολύμοις ᾠκοδομήθη ναὸς ὑπὸ Σολομῶνος τοῦ βασιλέως, ἔτεσι θᾶττον ἑκατὸν τεσσαράκοντα καὶ τρισὶν καὶ μησὶν ὀκτὼ τοῦ κτίσαι Τυρίους Καρχηδόνα.' ἀνεγράφη δὲ παρ' ἐκείνοις ἡ τοῦ ναοῦ κατασκευὴ τοῦ παρ' ἡμῖν. Εἴρωμος γὰρ, ὁ τῶν Τυρίων βασιλεὺς, φίλος ἦν τοῦ βασιλέως ἡμῶν Σολομῶνος, πατρικὴν πρὸς αὐτὸν φιλίαν διαδεδεγμένος. Αὐτὸς οὖν συμφιλοτιμούμενος εἰς τὴν τοῦ κατασκευάσματος τῷ Σολομῶνι λαμπρότητα, χρυσίου μὲν εἴκοσι καὶ ἑκατὸν ἔδωκε τάλαντα· τεμὼν δὲ καλλίστην ὕλην ἐκ τοῦ ὄρους, ὃ καλεῖται Λίβανος, εἰς τὸν ὄροφον ἀπέστειλεν. Ἀντεδωρήσατο δὲ αὐτῷ ὁ Σολομὼν ἄλλοις τε πολλοῖς, καὶ γῇ κατὰ χώραν τῆς Γαλιλαίας τῇ Χαβουλὼν λεγομένῃ. Μάλιστα δὲ αὐτοὺς εἰς φιλίαν τῆς σοφίας συνῆγεν ἐπιθυμία· προβλήματα γὰρ ἀλλήλοις ἀντεπέστελλον λύειν κελεύοντες, καὶ κρείττων ἐν τούτοις ἦν ὁ Σολομὼν, καὶ τὰ ἄλλα σοφώτερος. Σώζονται δὲ μέχρι νῦν παρὰ τοῖς Τυρίοις πολλαὶ τῶν ἐπιστολῶν, ἃς ἐκεῖνοι πρὸς ἀλλήλους ἔγραψαν. Ὅτι δὲ οὐ λόγος ἐστὶν ὑπ' ἐμοῦ συγκείμενος, ὁ περὶ τῶν παρὰ τοῖς Τυρίοις γραμμάτων, παραθήσομαι μάρτυρα Δῖον, ἄνδρα περὶ τὴν Φοινικικὴν ἱστορίαν ἀκριβῆ γεγονέναι πεπιστευμένον. Οὗτος τοίνυν ἐν ταῖς περὶ Φοινίκων ἱστορίαις γράφει τὸν τρόπον τοῦτον· "Ἀβιβάλου τελευτήσαντος, ὁ υἱὸς αὐτοῦ Εἴρωμος ἐβασίλευσεν. Οὗτος τὰ πρὸς ἀνατολὰς μέρη τῆς πόλεως προσέχωσεν, καὶ μεῖζον τὸ ἄστυ πεποίηκεν, καὶ τοῦ Ὀλυμπίου Διὸς τὸ ἱερὸν καθ' ἑαυτὸ ὂν ἐν νήσῳ, χώσας τὸν μεταξὺ τόπον, συνῆψε*

τῇ πόλει, καὶ χρυσοῖς ἀναθήμασιν ἐκόσμησεν· ἀναβὰς δὲ εἰς τὸν Λίβανον ὑλοτόμησε πρὸς τὴν τῶν ναῶν κατασκευήν· Τὸν δὲ τυραννοῦντα Ἱεροσολύμων Σολομῶνα πέμψαι φασὶ πρὸς τὸν Εἴρωμον αἰνίγματα, καὶ παρ᾽ αὐτοῦ λαβεῖν ἀξιοῦν· τὸν δὲ μὴ δυνηθέντα διακρῖναι, τῷ λύσαντι χρήματα ἀποτίνειν. Ὁμολογήσαντα δὲ τὸν Εἴρωμον, καὶ μὴ δυνηθέντα λῦσαι τὰ αἰνίγματα, πολλὰ τῶν χρημάτων εἰς τὸ ἐπιζήμιον ἀναλῶσαι. Εἶτα δὴ Ἀβδήμονόν τινα Τύριον ἄνδρα τὰ προτεθέντα λῦσαι, καὶ αὐτὸν ἄλλα προβαλεῖν. Ἃ μὴ λύσαντα τὸν Σολομῶνα, πολλὰ τῷ Εἰρώμῳ προσαποτίσαι χρήματα." Δῖος μὲν οὕτω περὶ τῶν προειρημένων ἡμῖν μεμαρτύρηκεν.

18. Ἀλλὰ πρὸς τούτῳ παραθήσομαι Μένανδρον τὸν Ἐφέσιον. Γέγραφε δὲ οὗτος τὰς ἐφ᾽ ἑκάστου τῶν βασιλέων πράξεις παρὰ τοῖς Ἕλλησι καὶ βαρβάροις γενομένας, ἐκ τῶν παρ᾽ ἐκείνοις ἐπιχωρίων γραμμάτων σπουδάσας τὴν ἱστορίαν μαθεῖν. Γράφων δὴ περὶ τῶν βεβασιλευκότων ἐν Τύρῳ, ἔπειτα γενόμενος κατὰ τὸν Εἴρωμον, ταῦτά φησι· "Τελευτήσαντος δὲ Ἀβιβάλου, διεδέξατο τὴν βασιλείαν ὁ υἱὸς αὐτοῦ Εἴρωμος, ὃς βιώσας ἔτη πεντήκοντα τρία ἐβασίλευσεν ἔτη τριάκοντα τέσσαρα. 449
Οὗτος ἔχωσε τὸν εὐρύχωρον, τόν τε χρυσοῦν κίονα τὸν ἐν τοῖς τοῦ Διὸς ἀνέθηκεν· ἔτι τε ὕλην ξύλων ἀπελθὼν ἔκοψεν, ἀπὸ τοῦ λεγομένου ὄρους Λιβάνου, κέδρινα ξύλα εἰς τὰς τῶν ἱερῶν στέγας· καθελών τε τὰ ἀρχαῖα ἱερὰ καινοὺς ναοὺς ᾠκοδόμησε, τό τε τοῦ Ἡρακλέους καὶ τῆς Ἀστάρτης τέμενος ἀνιέρευσεν, καὶ τὸ μὲν τοῦ Ἡρακλέους πρῶτον ἐποιήσατο ἐν τῷ Περιτίῳ μηνὶ, εἶτα τὸ τῆς Ἀστάρτης, ὁπότε Τιτυοῖς ἐπεστράτευσεν, μὴ ἀποδιδοῦσι τοὺς φόρους· οὓς καὶ ὑποτάξας ἑαυτῷ πάλιν ἀνέστρεψεν. Ἐπὶ τούτου δέ τις ἦν Ἀβδήμονος παῖς νεώτερος, ὃς ἐνίκα τὰ προβλήματα, ἃ ἐπέτασσε Σολομὼν ὁ Ἱεροσολύμων

βασιλεύς." Ψηφίζεται δὲ ὁ χρόνος ἀπὸ τούτου τοῦ βασιλέως ἄχρι τῆς Καρχηδόνος κτίσεως οὕτως. "Τελευτήσαντος Εἰρώμου, διεδέξατο τὴν βασιλείαν Βαλεάζαρος ὁ υἱὸς, ὃς βιώσας ἔτη τεσσαράκοντα τρία, ἐβασίλευσεν ἔτη ἑπτά. Μετὰ τοῦτον Ἀβδάσταρτος ὁ αὐτοῦ υἱὸς, βιώσας ἔτη εἴκοσιν ἐννέα, ἐβασίλευσεν ἔτη ἐννέα. Τοῦτον οἱ τῆς τροφοῦ αὐτοῦ υἱοὶ τέσσαρες ἐπιβουλεύσαντες ἀπώλεσαν, ὧν ὁ πρεσβύτερος ἐβασίλευσεν ἔτη δεκαδύο. Μεθ᾽ οὓς Ἄσταρτος ὁ Δελαιαστάρτου, ὃς βιώσας ἔτη πεντήκοντα τέσσαρα, ἐβασίλευσεν ἔτη δώδεκα. Μετὰ τοῦτον ὁ ἀδελφὸς αὐτοῦ Ἀσέρυμος, βιώσας ἔτη τέσσαρα καὶ πεντήκοντα, ἐβασίλευσεν ἔτη ἐννέα. Οὗτος ἀπώλετο ὑπὸ τοῦ ἀδελφοῦ Φέλητος, ὃς λαβὼν τὴν βασιλείαν ἦρξε μῆνας ὀκτὼ, βιώσας ἔτη πεντήκοντα. Τοῦτον ἀνεῖλεν Εἰθώβαλος ὁ τῆς Ἀστάρτης ἱερεὺς, ὃς βασιλεύσας ἔτη τριάκοντα δύο, ἐβίωσεν ἔτη ἑξήκοντα ὀκτώ. Τοῦτον διεδέξατο Βαδέζωρος υἱὸς, ὃς βιώσας ἔτη τεσσαράκοντα πέντε, ἐβασίλευσεν ἔτη ἕξ. Τούτου διάδοχος γέγονε Μάτγηνος ὁ υἱὸς, ὃς βιώσας ἔτη τριάκοντα δύο, ἐβασίλευσεν ἔτη ἐννέα. Τούτου διάδοχος γέγονε Φυγμαλίων, βιώσας δ᾽ ἔτη πεντήκοντα ἓξ, ἐβασίλευσεν ἔτη τεσσαράκοντα ἑπτά. Ἐν δὲ τῷ ἐπ᾽ αὐτοῦ ἑβδόμῳ ἔτει ἡ ἀδελφὴ αὐτοῦ φυγοῦσα ἐν τῇ Λιβύῃ πόλιν ᾠκοδόμησε Καρχηδόνα." Συνάγεται δὴ πᾶς ὁ χρόνος ἀπὸ τῆς Εἰρώμου βασιλείας ἄχρι Καρχηδόνος κτίσεως, ἔτη ἑκατὸν πεντήκοντα πέντε, μῆνες ὀκτώ. Ἐπεὶ δὲ δωδεκάτῳ ἔτει τῆς Εἰρώμου βασιλείας ἐν Ἱεροσολύμοις ᾠκοδομήθη ὁ ναὸς, γέγονεν οὖν ἀπὸ τῆς οἰκοδομήσεως τοῦ ναοῦ ἄχρι Καρχηδόνος κτίσεως, ἔτη ἑκατὸν τεσσαράκοντα τρία, μῆνες ὀκτώ. Τῆς μὲν οὖν παρὰ Φοινίκων μαρτυρίας τί δεῖ προςθεῖναι πλείω; Βλέπεται γὰρ τὸ ἀληθὲς ἰσχυρῶς ὡμολογημένον. Καὶ πολὺ δήπου προάγει τῆς τοῦ νεὼ κατασκευῆς ἡ τῶν προγόνων ἡμῶν εἰς τὴν χώραν ἄφιξις. Ὅτε γὰρ

αὐτὴν πᾶσαν πολέμῳ παρέλαβον, τότε τὸν νεὼν κατεσκεύασαν. Καὶ ταῦτα σαφῶς ἐκ τῶν ἱερῶν γραμμάτων ὑπ' ἐμοῦ δεδήλωται διὰ τῆς ἀρχαιολογίας.

19. Λέξω δὲ νῦν ἤδη τὰ παρὰ Χαλδαίοις ἀναγεγραμμένα καὶ ἱστορούμενα περὶ ἡμῶν, ἅπερ ἔχει πολλὴν ὁμολογίαν καὶ περὶ τῶν ἄλλων τοῖς ἡμετέροις γράμμασι. Μάρτυς δὲ τούτων Βηρωσσὸς, 450
ἀνὴρ Χαλδαῖος μὲν τὸ γένος, γνώριμος δὲ τοῖς περὶ παιδείαν ἀναστρεφομένοις, ἐπειδὴ περί τε ἀστρονομίας, καὶ περὶ τῶν παρὰ Χαλδαίοις φιλοσοφουμένων αὐτὸς εἰς τοὺς Ἕλληνας ἐξήνεγκε τὰς συγγραφάς. Οὗτος τοίνυν ὁ Βηρωσσὸς ταῖς ἀρχαιοτάταις ἐπακολουθῶν ἀναγραφαῖς, περί τε τοῦ γενομένου κατακλυσμοῦ καὶ τῆς ἐν αὐτῷ φθορᾶς τῶν ἀνθρώπων, καθάπερ Μωϋσῆς οὕτως ἱστόρηκε· καὶ περὶ τῆς λάρνακος, ἐν ᾗ Νῶχος ὁ τοῦ γένους ἡμῶν ἀρχηγὸς διεσώθη, προσενεχθείσης αὐτῆς ταῖς ἀκρωρείαις τῶν Ἀρμενίων ὀρῶν. Εἶτα τοὺς ἀπὸ Νώχου καταλέγων, καὶ τοὺς χρόνους αὐτοῖς προστιθεὶς, ἐπὶ Ναβολάσσαρον παραγίνεται, τὸν Βαβυλῶνος καὶ Χαλδαίων βασιλέα, καὶ τὰς τούτου πράξεις ἀφηγούμενος λέγει τίνα τρόπον πέμψας ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον καὶ ἐπὶ τὴν ἡμετέραν γῆν τὸν υἱὸν τὸν ἑαυτοῦ Ναβουχοδονόσορον μετὰ πολλῆς δυνάμεως, ἐπειδήπερ ἀφεστῶτας αὐτοὺς ἐπύθετο, πάντων ἐκράτησε, καὶ τὸν ναὸν ἐνέπρησε τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις, ὅλως τε πάντα τὸν παρ' ἡμῶν λαὸν ἀναστήσας εἰς Βαβυλῶνα μετῴκισεν. Συνέβη δὲ καὶ τὴν πόλιν ἐρημωθῆναι χρόνον ἐτῶν ἑβδομήκοντα, μέχρι Κύρου τοῦ Περσῶν βασιλέως. Κρατῆσαι δέ φησι τὸν Βαβυλώνιον Αἰγύπτου, Συρίας, Φοινίκης, Ἀραβίας, πάντας δὲ ὑπερβαλλόμενον ταῖς πράξεσι τοὺς πρὸ αὐτοῦ Χαλδαίων καὶ Βαβυλωνίων βεβασιλευκότας.' Εἶθ' ἑξῆς ὑποκαταβὰς ὀλίγον ὁ Βηρωσσὸς, πάλιν παρατίθεται ἐν τῇ τῆς ἀρχαιότητος ἱστοριογραφίᾳ. Αὐτὰ δὲ παραθήσομαι τὰ τοῦ

Βηρωσσοῦ τοῦτον ἔχοντα τὸν τρόπον· „Ἀκούσας δὲ ὁ πατὴρ αὐτοῦ Ναβολάσσαρος, ὅτι ὁ τεταγμένος σατράπης ἔν τε Αἰγύπτῳ καὶ τοῖς περὶ τὴν Συρίαν τὴν Κοίλην καὶ τὴν Φοινίκην τόποις ἀποστάτης γέγονεν, οὐ δυνάμενος αὐτὸς ἔτι κακοπαθεῖν, συστήσας τῷ υἱῷ Ναβουχοδονοσόρῳ ὄντι ἔτι ἐν ἡλικίᾳ μέρη τινὰ τῆς δυνάμεως, ἐξέπεμψεν ἐπ' αὐτόν. Συμμίξας δὲ Ναβουχοδονόσορος τῷ ἀποστάτῃ, καὶ παραταξάμενος, αὐτοῦ τε ἐκυρίευσεν, καὶ τὴν χώραν ἐξ ἀρχῆς ὑπὸ τὴν αὐτοῦ βασιλείαν ἐποίησεν. Τῷ δὲ πατρὶ αὐτοῦ συνέβη Ναβολασσάρῳ, κατὰ τοῦτον τὸν καιρὸν ἀῤῥωστήσαντι, ἐν τῇ Βαβυλωνίων πόλει μεταλλάξαι τὸν βίον, ἔτη βεβασιλευκότι εἴκοσιν ἐννέα. Αἰσθόμενος δὲ μετ' οὐ πολὺ τὴν τοῦ πατρὸς τελευτὴν Ναβουχοδονόσορος, καταστήσας τὰ κατὰ τὴν Αἴγυπτον πράγματα καὶ τὴν λοιπὴν χώραν, καὶ τοὺς αἰχμαλώτους Ἰουδαίων τε καὶ Φοινίκων καὶ Σύρων καὶ τῶν κατὰ τὴν Αἴγυπτον ἐθνῶν συντάξας τισὶ τῶν φίλων, μετὰ βαρυτάτης δυνάμεως καὶ τῆς λοιπῆς ὠφελείας ἀνακομίζειν εἰς τὴν Βαβυλωνίαν, αὐτὸς ὁρμήσας ὀλιγοστὸς παρεγένετο διὰ τῆς ἐρήμου εἰς Βαβυλῶνα. Καταλαβὼν δὲ τὰ πράγματα διοικούμενα ὑπὸ Χαλδαίων, καὶ διατηρουμένην τὴν βασιλείαν ὑπὸ τοῦ βελτίστου αὐτῶν, κυριεύσας ἐξ ὁλοκλήρου τῆς πατρικῆς ἀρχῆς, τοῖς μὲν αἰχμαλώτοις παραγενόμενος συνέταξεν αὐτοῖς ἀποικίας ἐν τοῖς ἐπιτηδειοτάτοις τῆς Βαβυλωνίας τόποις ἀποδεῖξαι. Αὐτὸς δὲ ἀπὸ τῶν ἐκ τοῦ πολέμου λαφύρων τό τε Βήλου ἱερὸν καὶ τὰ λοιπὰ κοσμήσας φιλοτίμως,
451 τήν τε ὑπάρχουσαν ἐξ ἀρχῆς πόλιν, καὶ ἑτέραν ἔξωθεν προσχαρισάμενος καὶ ἀνακαινίσας, πρὸς τὸ μηκέτι δύνασθαι τοὺς πολιορκοῦντας τὸν ποταμὸν ἀναστρέφοντας ἐπὶ τὴν πόλιν κατασκευάζειν, ὑπερεβάλετο τρεῖς μὲν τῆς ἔνδον πόλεως περιβόλους, τρεῖς δὲ τῆς ἔξω τούτων, τοὺς μὲν ἐξ ὀπτῆς πλίνθου καὶ ἀσφάλτου, τοὺς δὲ ἐξ αὐτῆς τῆς πλίνθου. Καὶ τει-

χίσας ἀξιολόγως τὴν πόλιν, καὶ τοὺς πυλῶνας κοσμήσας ἱεροπρεπῶς, προςκατεσκεύακεν τοῖς πατρικοῖς βασιλείοις ἕτερα βασίλεια ἐχόμενα ἐκείνων, ὑπεραίροντα ἀνάστημα καὶ τὴν πολλὴν πολυτέλειαν. Μακρὰ δὲ ἴσως ἔσται, ἐάν τις ἐξηγῆται. Πλὴν ὄντα γε εἰς ὑπερβολὴν ὡς μεγάλα καὶ ὑπερήφανα, συνετελέσθη ἡμέραις δέκα πέντε. Ἐν δὲ τοῖς βασιλείοις τούτοις ἀναλήμματα λίθινα ὑψηλὰ ἀνοικοδομήσας, καὶ τὴν ὄψιν ἀποδοὺς ὁμοιοτάτην τοῖς ὄρεσι, καταφυτεύσας δένδρεσι παντοδαποῖς ἐξειργάσατο, καὶ κατασκευάσας τὸν καλούμενον κρεμαστὸν παράδεισον, διὰ τὸ τὴν γυναῖκα αὐτοῦ ἐπιθυμεῖν τῆς ὀρείας διαθέσεως, τεθραμμένην ἐν τοῖς κατὰ τὴν Μηδίαν τόποις."

20. Ταῦτα μὲν οὗτος ἱστόρησε περὶ τοῦ προειρημένου βασιλέως, καὶ πολλὰ πρὸς τούτοις ἐν τῇ τρίτῃ βίβλῳ τῶν Χαλδαϊκῶν, ἐν ᾗ μέμφεται τοῖς Ἑλληνικοῖς συγγραφεῦσιν, ὡς μάτην οἰομένοις ὑπὸ Σεμιράμιδος τῆς Ἀσσυρίας κτισθῆναι τὴν Βαβυλῶνα, καὶ τὰ θαυμάσια κατασκευασθῆναι περὶ αὐτὴν ὑπ' ἐκείνης ἔργα ψευδῶς γεγραφόσι. Καὶ κατὰ ταῦτα τὴν μὲν τῶν Χαλδαίων γραφὴν ἀξιόπιστιν ἡγητέον· οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ ἐν τοῖς ἀρχείοις τῶν Φοινίκων σύμφωνα τοῖς ὑπὸ Βηρωσσοῦ λεγομένοις ἀναγέγραπται περὶ τοῦ τῶν Βαβυλωνίων βασιλέως, ὅτι καὶ τὴν Συρίαν καὶ τὴν Φοινίκην ἅπασαν ἐκεῖνος κατεστρέψατο. Περὶ τούτων γοῦν συμφωνεῖ καὶ Φιλόστρατος ἐν ταῖς ἱστορίαις, μεμνημένος τῆς Τύρου πολιορκίας. Καὶ Μεγασθένης ἐν τῇ τετάρτῃ τῶν Ἰνδικῶν, δι' ἧς ἀποφαίνειν πειρᾶται, τὸν προειρημένον βασιλέα τῶν Βαβυλωνίων Ἡρακλέους ἀνδρείᾳ καὶ μεγέθει πράξεων διενηνοχέναι. Καταστρέψασθαι γὰρ αὐτὸν φησὶ καὶ Λιβύης τὴν πολλὴν καὶ Ἰβηρίαν. Τὰ δὲ περὶ τοῦ ναοῦ προειρημένα τοῦ ἐν Ἱεροσολύμοις, ὅτι κατεπρήσθη μὲν ὑπὸ τῶν Βαβυλωνίων ἐπιστρατευσάντων, ἤρξατο δὲ πάλιν ἀνοικο-

δομεῖσθαι Κύρου τῆς Ἀσίας τὴν βασιλείαν παρει-
ληφότος, ἐκ τῶν Βηρωσσοῦ σαφῶς ἐπιδειχθήσεται
παρατεθέντων. Λέγει γὰρ οὕτω διὰ τῆς τρίτης.
"Ναβουχοδονόσορος μὲν οὖν μετὰ τὸ ἄρξασθαι τοῦ
προειρημένου τείχους, ἐμπεσὼν εἰς ἀῤῥωστίαν, με-
τηλλάξατο τὸν βίον, βεβασιλευκὼς ἔτη τεσσαράκοντα
τρία. Τῆς δὲ βασιλείας κύριος ἐγένετο ὁ υἱὸς αὐ-
τοῦ Εὐειλμαράδουχος. Οὗτος προστὰς τῶν πραγμά-
των ἀνόμως καὶ ἀσελγῶς, ἐπιβουλευθεὶς ὑπὸ τοῦ
τὴν ἀδελφὴν ἔχοντος αὐτοῦ Νηριγλισσοόρου ἀνῃρέ-
θη, βασιλεύσας ἔτη δύο. Μετὰ δὲ τὸ ἀναιρεθῆναι
τοῦτον, διαδεξάμενος τὴν ἀρχὴν ὁ ἐπιβουλεύσας αὐ-
τῷ Νηριγλισσόορος, ἐβασίλευσεν ἔτη τέσσαρα. Τού-
του υἱὸς Λαβοροσοάρχοδος ἐκυρίευσε μὲν τῆς βασι-
λείας παῖς ὢν μῆνας ἐννέα· ἐπιβουλευθεὶς δὲ, διὰ
τὸ πολλὰ ἐμφαίνειν κακοήθη, ὑπὸ τῶν φίλων ἀπε-
152 τυμπανίσθη. Ἀπολομένου δὲ τούτου, συνελθόν-
τες οἱ ἐπιβουλεύσαντες αὐτῷ, κοινῇ τὴν βασιλείαν
περιέθηκαν Ναβοννήδῳ τινὶ τῶν ἐκ Βαβυλῶνος, ὄν-
τι ἐκ τῆς αὐτῆς ἐπισυστάσεως. Ἐπὶ τούτου τὰ πε-
ρὶ τὸν ποταμὸν τείχη τῆς Βαβυλωνίων πόλεως ἐξ
ὀπτῆς πλίνθου καὶ ἀσφάλτου κατεκοσμήθη. Οὔσης
δὲ τῆς βασιλείας αὐτοῦ ἐν τῷ ἑπτακαιδεκάτῳ ἔτει,
προεξεληλυθὼς Κῦρος ἐκ τῆς Περσίδος μετὰ δυνάμεως
πολλῆς, καὶ καταστρεψάμενος τὴν λοιπὴν Ἀσίαν πᾶ-
σαν, ὥρμησεν ἐπὶ τῆς Βαβυλωνίας. Αἰσθόμενος δὲ
Ναβόννηδος τὴν ἔφοδον αὐτοῦ, ἀπαντήσας μετὰ τῆς
δυνάμεως καὶ παραταξάμενος, ἡττηθεὶς τῇ μάχῃ καὶ
φυγὼν ὀλιγοστὸς, συνεκλείσθη εἰς τὴν Βορσιππηνῶν
πόλιν. Κῦρος δὲ Βαβυλῶνα καταλαβόμενος, καὶ συν-
τάξας τὰ ἔξω τῆς πόλεως τείχη κατασκάψαι, διὰ τὸ
λίαν αὐτῷ πραγματικὴν καὶ δυσάλωτον φανῆναι τὴν
πόλιν, ἀνέζευξεν ἐπὶ Βόρσιππον, ἐκπολιορκήσων τὸν
Ναβόννηδον. Τοῦ δὲ Ναβοννήδου οὐχ ὑπομείναντος
τὴν πολιορκίαν, ἀλλ' ἐγχειρήσαντος αὑτὸν, πρότερον
χρησάμενος Κῦρος φιλανθρώπως, καὶ δοὺς οἰκητή-

ριον αὐτῷ Καρμανίαν, ἐξέπεμψεν ἐκ τῆς Βαβυλω-
νίας. Ναβόννηδος μὲν οὖν τὸ λοιπὸν τοῦ χρόνου
διαγενόμενος ἐν ἐκείνῃ τῇ χώρᾳ κατέστρεψε τὸν βίον."

21. Ταῦτα σύμφωνον ἔχει ταῖς ἡμετέραις βί-
βλοις τὴν ἀλήθειαν. Γέγραπται γὰρ ἐν αὐταῖς, ὅτι
Ναβουχοδονόσορος ὀκτωκαιδεκάτῳ τῆς αὐτοῦ βασι-
λείας ἔτει τὸν παρ' ἡμῖν ναὸν ἠρήμωσε, καὶ ἦν ἀ-
φανὴς ἐπὶ ἔτη πεντήκοντα· δευτέρῳ δὲ τῆς Κύρου
βασιλείας ἔτει τῶν θεμελίων ὑποβληθέντων, δευτέρῳ
πάλιν τῆς Δαρείου βασιλείας ἀπετελέσθη. Προς-
θήσω δὲ καὶ τὰς τῶν Φοινίκων ἀναγραφάς· οὐ γὰρ
παραλειπτέον τῶν ἀποδείξεων τὴν περιουσίαν. Ἔστι
δὲ τοιαύτη τῶν χρόνων ἡ καταρίθμησις· "Ἐπὶ
Εἰθωβάλου τοῦ βασιλέως ἐπολιόρκησε Ναβουχοδο-
νόσορος τὴν Τύρον ἐπ' ἔτη δέκα τρία. Μετὰ τοῦ-
τον ἐβασίλευσε Βαὰλ ἔτη δέκα. Μετὰ τοῦτον
δικασταὶ κατεστάθησαν, καὶ ἐδίκασαν Ἐκνίβα-
λος Βασλάχου μῆνας δύο, Χέλβης Ἀβδαίου μῆνας
δέκα, Ἄββαρος ἀρχιερεὺς μῆνας τρεῖς, Μύτγονος
καὶ Γεράστρατος τοῦ Ἀβδηλέμου δικασταὶ ἔτη ἕξ, ὧν
μεταξὺ ἐβασίλευσε Βαλάτορος ἐνιαυτὸν ἕνα. Τούτου
τελευτήσαντος, ἀποστείλαντες μετεπέμψαντο Μέρβα-
λον ἐκ τῆς Βαβυλῶνος, καὶ ἐβασίλευσεν ἔτη τέσσαρα.
Τούτου τελευτήσαντος, μετεπέμψαντο τὸν ἀδελφὸν
αὐτοῦ Εἴρωμον, ὃς ἐβασίλευσεν ἔτη εἴκοσιν. Ἐπὶ τού-
του Κῦρος Περσῶν ἐδυνάστευσεν." Οὐκοῦν ὁ σύμπας
χρόνος ἔτη πεντήκοντα τέσσαρα καὶ τρεῖς μῆνες πρὸς
αὐτοῖς. Ἑβδόμῳ μὲν γὰρ περὶ τῆς Ναβουχοδονο-
σόρου βασιλείας ἤρξατο πολιορκεῖν Τύρον· τεσσαρες-
καιδεκάτῳ δ' ἔτει τῆς Εἰρώμου Κῦρος ὁ Πέρσης τὸ
κράτος παρέλαβεν. Καὶ σύμφωνα μὲν ἐπὶ τοῦ να-
οῦ τοῖς ἡμετέροις γράμμασι τὰ Χαλδαίων καὶ Τυ- 453
ρίων. Ὡμολογημένη δὲ καὶ ἀναντίῤῥητος ἡ περὶ
τῶν εἰρημένων μοι μαρτυρία τῆς τοῦ γένους ἡμῶν
ἀρχαιότητος. Τοῖς μὲν οὖν μὴ σφόδρα φιλονείκοις
ἀρκέσειν ὑπολαμβάνω τὰ προειρημένα.

22. *Δεῖ δὲ ἄρα καὶ τῶν ἀπιστούντων ταῖς μὲν ἐν τοῖς βαρβάροις ἀναγραφαῖς, μόνοις δὲ τοῖς Ἕλλησι πιστεύειν ἀξιούντων, ἀποπληρῶσαι τὴν ἐπιζήτησιν, καὶ παρασχεῖν πολλοὺς καὶ τούτων ἐπισταμένους τὸ ἔθνος ἡμῶν, καὶ καθ' ὃ καιρὸς ἦν αὐτοῖς, μνημονεύοντας παραθέσθαι ἐν ἰδίοις αὐτῶν συγγράμμασιν. Πυθαγόρας τοίνυν ὁ Σάμιος ἀρχαῖος ὢν, σοφίᾳ δὲ καὶ τῇ περὶ τὸ θεῖον εὐσεβείᾳ πάντων ὑπειλημμένος διενεγκεῖν τῶν φιλοσοφησάντων, οὐ μόνον ἐγνωκὼς τὰ παρ' ἡμῖν δῆλός ἐστιν, ἀλλὰ καὶ ζηλωτὴς αὐτῶν ἐκ πλείστου γεγενημένος. Αὐτοῦ μὲν οὖν οὐδὲν ὁμολογεῖται σύγγραμμα, πολλοὶ δὲ τὰ περὶ αὐτὸν ἱστορήκασι, καὶ τούτων ἐπισημότατός ἐστιν Ἕρμιππος, ἀνὴρ περὶ πᾶσαν ἱστορίαν ἐπιμελής. Λέγει τοίνυν ἐν τῷ πρώτῳ τῶν περὶ Πυθαγόρου βιβλίων, ὅτι 'Πυθαγόρας, ἑνὸς αὐτῶν τῶν συνουσιαστῶν τελευτήσαντος, τὸ ὄνομα Καλλιφῶντος, τὸ γένος Κροτωνιάτου, τὴν ἐκείνου ψυχὴν ἔλεγε συνδιατρίβειν αὐτῷ καὶ νύκτωρ καὶ καθ' ἡμέραν· καὶ ὅτι παρεκελεύετο μὴ διέρχεσθαι τόπον, ἐφ' ὃν ἂν ὄνος ὀκλάσῃ, καὶ τῶν διψίων ὑδάτων ἀπέχεσθαι, καὶ πάσης ἀπέχειν βλασφημίας.' Εἶτα προςτίθησι μετὰ ταῦτα καὶ τάδε· "Ταῦτα δὲ ἔπραττε καὶ ἔλεγε, τὰς Ἰουδαίων καὶ Θρακῶν δόξας μιμούμενος, καὶ μεταφέρων εἰς ἑαυτόν." Λέγεται γὰρ ὡς ἀληθῶς ὁ ἀνὴρ ἐκεῖνος πολλὰ τῶν παρὰ Ἰουδαίοις νομίμων εἰς τὴν αὐτοῦ μετενεγκεῖν φιλοσοφίαν. Ἦν δὲ καὶ κατὰ πόλεις οὐκ ἄγνωστον ἡμῶν πάλαι τὸ ἔθνος, καὶ πολλὰ τῶν ἐθῶν εἴς τινας ἤδη διαπεφοιτήκει, καὶ ζήλου παρ' ἐνίοις ἠξιοῦτο. Δηλοῖ δὲ ὁ Θεόφραστος ἐν τοῖς περὶ νόμων. Λέγει γὰρ, ὅτι 'κωλύουσιν οἱ Τυρίων νόμοι ξενικοὺς ὅρκους ὀμνύειν,' ἐν οἷς μετά τινων ἄλλων καὶ τὸν καλούμενον ὅρκον Κορβὰν καταριθμεῖ. Παρ' οὐδενὶ δ' ἂν οὗτος εὑρεθείη πλὴν μόνοις Ἰουδαίοις· δηλοῖ δὲ, ὡς ἂν εἴποι τις ἐκ τῆς Ἑβραίων μεθερμηνευόμενος δωαλέ-*

κτου 'δῶρον θεοῦ.' Καὶ μὴν οὐδὲ Ἡρόδοτος ὁ Ἁλικαρνασσεὺς ἠγνόηκεν ἡμῶν τὸ ἔθνος, ἀλλὰ τρόπῳ τινὶ φαίνεται μεμνημένος. Περὶ γὰρ Κόλχων ἱστορῶν ἐν τῇ δευτέρᾳ βίβλῳ, φησὶν οὕτως· "Μοῦνοι δὲ πάντων," φησὶ, "Κόλχοι καὶ Αἰγύπτιοι καὶ Αἰθίοπες περιτέμνονται ἀπ' ἀρχῆς τὰ αἰδοῖα. Φοίνικες δὲ καὶ Σύριοι οἱ ἐν τῇ Παλαιστίνῃ, καὶ οὗτοι ὁμολογοῦσι παρ' Αἰγυπτίων μεμαθηκέναι. Σύριοι δὲ οἱ περὶ Θερμώδοντα καὶ Παρθένιον ποταμὸν, καὶ Μάκρωνες οἱ τούτοισιν ἀστυγείτονες ὄντες, ἀπὸ Κόλχων φασὶ νεωστὶ μεμαθηκέναι· οὗτοι γάρ εἰσιν οἱ περιτεμνόμενοι ἀνθρώπων μοῦνοι, καὶ οὗτοι Αἰγυπτίοισι φαίνονται ποιεῦντες κατὰ ταὐτά. Αὐτῶν δὲ Αἰγυπτίων καὶ Αἰθιόπων οὐκ ἔχω εἰπεῖν, ὁπότεροι παρὰ τῶν ἑτέρων ἐξέμαθον." Οὐκοῦν εἴρηκε Σύρους τοὺς ἐν τῇ Παλαιστίνῃ περιτέμνεσθαι· τῶν δὲ τὴν Παλαιστίνην κατοικούντων μόνοι τοῦτο ποιοῦσιν Ἰουδαῖοι. Τοῦτο ἄρα γινώσκων εἴρηκεν περὶ
αὐτῶν. Καὶ Χοιρίλος δὲ ἀρχαιότερος γενόμενος ποι- 454
ητὴς μέμνηται τοῦ ἔθνους ἡμῶν, ὅτι συνεστράτευται Ξέρξῃ τῷ Περσῶν βασιλεῖ ἐπὶ τὴν Ἑλλάδα. Καταριθμησάμενος γὰρ πάντα τὰ ἔθνη, τελευταῖον καὶ τὸ ἡμέτερον ἐνέταξε λέγων·

Τῷ δ' ὄπιθεν διέβαινε γένος θαυμαστὸν ἰδέσθαι,
Γλῶσσαν μὲν Φοίνισσαν ἀπὸ στομάτων ἀφιέντες.
Ὤκεετ' ἐν Σολύμοις ὄρεσι πλατέῃ ἐνὶ λίμνῃ,
Αὐχμαλέοι κορυφὰς, τροχοκούριδες· αὐτὰρ ὕπερθεν
Ἵππων δαρτὰ πρόσωπ' ἐφόρουν ἐσκληκότα καπνῷ.

Δῆλον οὖν ἐστιν, ὡς οἶμαι, πᾶσιν ἡμῶν αὐτὸν μεμνῆσθαι, τῷ καὶ τὰ Σόλυμα ὄρη ἐν τῇ ἡμετέρᾳ εἶναι χώρᾳ, ἃ κατοικοῦμεν, καὶ τὴν Ἀσφαλτῖτιν λε-

γομένην λίμνην· αὕτη γὰρ πασῶν τῶν ἐν τῇ Συρίᾳ λίμνη πλατυτέρα καὶ μείζων καθέστηκεν. Καὶ Χοιρίλος μὲν οὕτω μέμνηται ἡμῶν. Ὅτι δὲ οὐ μόνον ἠπίσταντο τοὺς Ἰουδαίους, ἀλλὰ καὶ ἐθαύμαζον, ὅσοις αὐτῶν ἐντύχοιεν, οὐχ οἱ φαυλότατοι τῶν Ἑλλήνων, ἀλλ' οἱ ἐπὶ σοφίᾳ μάλιστα τεθαυμασμένοι, ῥάδιον γνῶναι. Κλέαρχος γὰρ ὁ Ἀριστοτέλους ὢν μαθητὴς, καὶ τῶν ἐκ τοῦ Περιπάτου φιλοσόφων οὐδενὸς δεύτερος, ἐν τῷ πρώτῳ περὶ ὕπνου βιβλίῳ φησὶν, Ἀριστοτέλην τὸν διδάσκαλον αὐτοῦ περί τινος ἀνδρὸς Ἰουδαίου ταῦτα ἱστορεῖν, αὐτόν τε τὸν λόγον Ἀριστοτέλει παρατιθείς. Ἔστι δὲ οὕτω γεγραμμένον· „Ἀλλὰ τὰ μὲν πολλὰ μακρὸν ἂν εἴη λέγειν· ὅσα δ' ἔχει τῶν ἐκείνου θαυμασιότητά τινα, καὶ φιλοσοφίαν ὁμοίως, διελθεῖν οὐ χεῖρον. Ὡς σαφῶς δὲ σοὶ εἰπεῖν, Ὑπεροχίδη, θαυμαστόν τι ὀνείροις ἴσα σοὶ δόξω λέγειν. Καὶ ὁ Ὑπεροχίδης εὐλαβούμενος, δι' αὐτὸ γὰρ ἔφη τοῦτο, καὶ ζητοῦμεν ἀκοῦσαι πάντες. Οὐκοῦν, εἶπεν ὁ Ἀριστοτέλης, κατὰ τὸ τῶν ῥητορικῶν παράγγελμα, τὸ γένος αὐτοῦ πρῶτον διέλθωμεν, ἵνα μὴ ἀπειθῶμεν τοῖς τῶν ἀπαγγελιῶν διδασκάλοις. Λέγε, εἶπεν ὁ Ὑπεροχίδης, ὅτι σοι δοκεῖ. Καὶ ἐκεῖνος τοίνυν τὸ μὲν γένος ἦν Ἰουδαῖος ἐκ τῆς Κοίλης Συρίας. Οὗτοι δέ εἰσιν ἀπόγονοι τῶν ἐν Ἰνδοῖς φιλοσόφων. Καλοῦνται δὲ, ὥς φασιν, οἱ φιλόσοφοι παρὰ μὲν Ἰνδοῖς Καλανοὶ, παρὰ δὲ Σύροις Ἰουδαῖοι, τὸ ὄνομα λαβόντες ἀπὸ τοῦ τόπου· προςαγορεύεται γὰρ, ὃν κατοικοῦσι τόπον, Ἰου-
455 δαία. Τὸ δὲ τῆς πόλεως αὐτῶν ὄνομα πάνυ σκολιόν ἐστιν, Ἱερουσαλὴμ γὰρ αὐτὴν καλοῦσιν. Οὗτος οὖν ὁ ἄνθρωπος ἐπιξενούμενός τε πολλοῖς, καὶ ἐκ τῶν ἄνω τόπων εἰς τοὺς ἐπιθαλαττίους ὑποκαταβαίνων Ἑλληνικὸς ἦν, οὐ τῇ διαλέκτῳ μόνον, ἀλλὰ καὶ τῇ ψυχῇ. Καὶ τότε διατριβόντων ἡμῶν περὶ τὴν Ἀσίαν, παραβαλὼν εἰς αὐτοὺς τόπους, ἐν οἷς ἦμεν, ἐντυγχάνει ἡμῖν τε καί τισιν ἑτέροις τῶν σχολαστι-

κῶν, πειρώμενος αὐτῶν τῆς σοφίας. Ὡς δὲ πολλοῖς τῶν ἐν παιδείᾳ συνῳκείωτο, παρεδίδου τι μᾶλλον ὧν εἶχεν." Ταῦτ' εἴρηκεν Ἀριστοτέλης παρὰ τῷ Κλεάρχῳ, καὶ προςέτι πολλὴν καὶ θαυμάσιον καρτερίαν τοῦ Ἰουδαίου ἀνδρὸς ἐν τῇ διαίτῃ καὶ σωφροσύνῃ διεξιών. Ἔνεστι δὲ τοῖς βουλομένοις ἐξ αὐτοῦ τὸ πλέον γνῶναι τοῦ βιβλίου. Φυλάττομαι γὰρ ἐγὼ τὰ πλείω τῶν ἱκανῶν παρατίθεσθαι. Κλέαρχος μὲν οὖν ἐν παρεκβάσει ταῦτ' εἴρηκεν, — τὸ γὰρ προκείμενον αὐτῷ ἦν ἕτερον, — οὕτως ἡμῶν μνημονεύσας. Ἑκαταῖος δὲ ὁ Ἀβδηρίτης, ἀνὴρ φιλόσοφος ἅμα καὶ περὶ τὰς πράξεις ἱκανώτατος, Ἀλεξάνδρῳ τῷ βασιλεῖ συνακμάσας, καὶ Πτολεμαίῳ τῷ Λάγου συγγενόμενος, οὐ παρέργως, ἀλλὰ περὶ αὐτῶν Ἰουδαίων συγγέγραφε βιβλίον, ἐξ οὗ βούλομαι κεφαλαιωδῶς ἐπιδραμεῖν ἔνια τῶν εἰρημένων. Καὶ πρῶτον ἐπιδείξω τὸν χρόνον. Μνημονεύει γὰρ τῆς Πτολεμαίου περὶ Γάζαν πρὸς Δημήτριον μάχης· αὕτη δὲ γέγονεν ἑνδεκάτῳ μὲν ἔτει τῆς Ἀλεξάνδρου τελευτῆς, ἐπὶ δὲ Ὀλυμπιάδος ἑβδόμης καὶ δεκάτης καὶ ἑκατοστῆς, ὡς ἱστορεῖ Κάστωρ. Προςθεὶς γὰρ ταύτην τὴν Ὀλυμπιάδα φησίν, ἐπὶ ταύτης Πτολεμαῖος ὁ Λάγου ἐνίκα κατὰ Γάζαν μάχῃ Δημήτριον τὸν Ἀντιγόνου, τὸν ἐπικληθέντα Πολιορκητήν. Ἀλέξανδρον δὲ τεθνάναι πάντες ὁμολογοῦσιν ἐπὶ τῆς ἑκατοστῆς τεσσαρεςκαιδεκάτης Ὀλυμπιάδος. Δῆλον οὖν, ὅτι καὶ κατ' ἐκεῖνον καὶ κατὰ Ἀλέξανδρον ἤκμαζεν ἡμῶν τὸ ἔθνος. Λέγει τοίνυν ὁ Ἑκαταῖος πάλιν τάδε, ὅτι ‚μετὰ τὴν ἐν Γάζῃ μάχην ὁ Πτολεμαῖος ἐγένετο τῶν περὶ Συρίαν τόπων ἐγκρατής. Καὶ πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων πυνθανόμενοι τὴν ἠπιότητα καὶ φιλανθρωπίαν τοῦ Πτολεμαίου, συναπαίρειν εἰς Αἴγυπτον αὐτῷ, καὶ κοινωνεῖν τῶν πραγμάτων ἐβουλήθησαν. Ὧν εἷς ἦν, φησίν, Ἐζεκίας ὁ ἀρχιερεὺς τῶν Ἰουδαίων, ἄνθρωπος τὴν μὲν ἡλικίαν ὡς ἑξήκοντα ἓξ ἐτῶν, τῷ δ' ἀξιώματι τῷ παρὰ τοῖς ὁμο-

ἔθνοις μέγας, καὶ τὴν ψυχὴν οὐκ ἀνόητος, ἔτι δὲ καὶ λέγειν δυνατὸς, καὶ τοῖς περὶ τῶν πραγμάτων, εἴπερ τις ἄλλος, ἔμπειρος. Καίτοι, φησὶν, οἱ πάντες ἱερεῖς τῶν Ἰουδαίων, οἱ τὴν δεκάτην τῶν γινομένων λαμβάνοντες, καὶ τὰ κοινὰ διοικοῦντες, περὶ χιλίους μάλιστα καὶ πεντακοσίους εἰσίν.' Πάλιν δὲ τοῦ προειρημένου μνημονεύων ἀνδρὸς, 'οὗτος, φησὶν, ὁ ἄνθρωπος τετευχὼς τῆς τιμῆς ταύτης, καὶ συνήθης ἡμῖν γενόμενος, παραλαβών τινας τῶν μεθ' ἑαυτοῦ, τὴν διαφορὰν ἀνέγνω πᾶσαν αὐτοῖς, εἶχε
456 γὰρ τὴν κατοίκησιν αὐτῶν καὶ τὴν πολιτείαν γεγραμμένην.' Εἶτα Ἑκαταῖος δηλοῖ πάλιν, πῶς ἔχομεν πρὸς τοὺς νόμους, ὅτι 'πάντα πάσχειν ὑπὲρ τοῦ μὴ παραβῆναι τούτους προαιρούμεθα, καλὸν εἶναι νομίζοντες. Τοιγαροῦν, φησὶ, καὶ κακῶς ἀκούοντες ὑπὸ τῶν ἀστυγειτόνων, καὶ τῶν εἰςαφικνουμένων πάντων, καὶ προπηλακιζόμενοι πολλάκις ὑπὸ τῶν Περσικῶν βασιλέων καὶ σατραπῶν, οὐ δύνανται μεταπεισθῆναι τῇ διανοίᾳ, ἀλλὰ γεγυμνωμένως περὶ τούτων καὶ αἰκίας καὶ θανάτοις δεινοτάτοις μάλιστα πάντων ἀπαντῶσι, μὴ ἀρνούμενοι τὰ πατρῷα.' Παρέχεται δὲ καὶ τεκμήρια τῆς ἰσχυρογνωμοσύνης τῆς περὶ τῶν νόμων οὐκ ὀλίγα. Φησὶ γὰρ, 'Ἀλεξάνδρου ποτὲ ἐν Βαβυλῶνι γενομένου, καὶ προελομένου τὸ τοῦ Βήλου πεπτωκὸς ἱερὸν ἀνακαθᾶραι, καὶ πᾶσιν αὐτοῦ τοῖς στρατιώταις ὁμοίως φέρειν τὸν χοῦν προςτάξαντος, μόνους τοὺς Ἰουδαίους οὐ προσχεῖν· ἀλλὰ καὶ πολλὰς ὑπομεῖναι πληγὰς, καὶ ζημίας ἀποτίσαι μεγάλας, ἕως αὐτοῖς συγγνόντα τὸν βασιλέα δοῦναι τὴν ἄδειαν. Τῶν γε μὴν τῶν εἰς τὴν χώραν, φησὶ, πρὸς αὐτοὺς ἀφικνουμένων, καὶ νεὼς καὶ βωμοὺς κατασκευασάντων, ἅπαντα ταῦτα κατέσκαπτον. Καὶ τῶν μὲν ζημίαν τοῖς σατράπαις ἐξέτεινον, περί τινων δὲ καὶ συγγνώμης μετελάμβανον.' Καὶ προςεπιτίθησιν, ὅτι 'δίκαιον ἐπὶ τούτοις αὐτούς ἐστι θαυμάζειν.' Λέγει δὲ καὶ περὶ τοῦ 'πο-

λυανθρωπότατον γεγονέναι ἡμῶν τὸ ἔθνος· πολλὰς μὲν γὰρ ἡμῶν, φησὶν, ἀνασπάστους εἰς Βαβυλῶνα Πέρσαι πρότερόν αὐτῶν ἐποίησαν μυριάδας· οὐκ ὀλίγαι δὲ καὶ μετὰ τὸν Ἀλεξάνδρου θάνατον εἰς Αἴγυπτον καὶ Φοινίκην μετέστησαν, διὰ τὴν ἐν Συρίᾳ στάσιν.' Ὁ δὲ αὐτὸς οὗτος ἀνὴρ καὶ τὸ μέγεθος τῆς χώρας, ἣν κατοικοῦμεν, καὶ τὸ κάλλος ἱστόρηκε, τριακοσίας γὰρ μυριάδας ἀρουρῶν, σχεδὸν τῆς ἀρίστης καὶ παμφορωτάτης χώρας, νέμονται, φησίν· ἡ γὰρ Ἰουδαία τοσαύτη πλάτος ἐστίν.' Ἀλλὰ μὴν ὅτι καὶ τὴν πόλιν αὐτὴν τὰ Ἱεροσόλυμα καλλίστην τε καὶ μεγίστην ἐκ παλαιοτάτου κατοικουμένην, καὶ περὶ πλήθους ἀνδρῶν, καὶ περὶ τῆς τοῦ νεὼ κατασκευῆς, οὕτως αὐτὸς διηγεῖται. "Ἔστι γὰρ τῶν Ἰουδαίων τὰ μὲν πολλὰ ὀχυρώματα κατὰ τὴν χώραν καὶ κῶμαι. Μία δὲ πόλις ὀχυρὰ πεντήκοντα μάλιστα σταδίων τὴν περίμετρον, ἣν οἰκοῦσι μὲν ἀνθρώπων περὶ δώδεκα μυριάδες· καλοῦσι δὲ αὐτὴν Ἱεροσόλυμα. Ἐνταῦθα δ' ἔστι κατὰ μέσον μάλιστα τῆς πόλεως περίβολος λίθινος, μῆκος ὡς πεντάπλεθρος, εὖρος δὲ πηχῶν ἑκατὸν, ἔχων διπλᾶς πύλας· ἐν ᾧ βωμός ἐστι τετράγωνος, οὐκ ἐκ τμητῶν, ἀλλ' ἐκ συλλέκτων ἀργῶν λίθων οὕτω συγκείμενος· πλευρὰν μὲν ἑκάστην εἴκοσι πηχῶν, ὕψος δὲ δεκάπηχυ. 457
Καὶ παρ' αὐτὸν οἴκημα μέγα, οὗ βωμός ἐστι καὶ λυχνίον, ἀμφότερα χρυσᾶ, δύο τάλαντα τὴν ὁλκήν. Ἐπὶ τούτων φῶς ἐστιν ἀναπόσβεστον καὶ τὰς νύκτας καὶ τὰς ἡμέρας. Ἄγαλμα δὲ οὐκ ἔστιν οὐδὲ ἀνάθημα τοπαράπαν· οὐδὲ φύτευμα παντελῶς οὐδὲν, οἷον ἀλσῶδες ἢ τι τοιοῦτον. Διατρίβουσι δ' ἐν αὐτῷ καὶ τὰς νύκτας καὶ τὰς ἡμέρας ἱερεῖς, ἁγνείας τινὰς ἁγνεύοντες, καὶ τοπαράπαν οἶνον οὐ πίνοντες ἐν τῷ ἱερῷ." Ἔτι γε μὴν ὅτι καὶ Ἀλεξάνδρῳ τῷ βασιλεῖ συνεστρατεύομεν, καὶ μετὰ ταῦτα τοῖς διαδόχοις αὐτοῦ μεμαρτύρηκεν. Οἷς αὐτὸς παρατυχεῖν φησιν ὑπ' ἀνδρὸς Ἰουδαίου κατὰ τὴν στρατείαν γε-

νομένοις, τοῦτο παραθήσομαι. Λέγει δὲ οὕτως· "Ἐμοῦ γοῦν ἐπὶ τὴν Ἐρυθρὰν θάλασσαν βαδίζοντος, συνηκολούθει τις μετὰ τῶν ἄλλων τῶν παραπεμπόντων ἡμᾶς ἱππέων Ἰουδαίων, ὄνομα Μοσόλλαμος, ἄνθρωπος ἱκανὸς κατὰ ψυχὴν, εὔρωστος, καὶ τοξότης ὑπὸ δὴ πάντων ὁμολογούμενος καὶ τῶν Ἑλλήνων καὶ τῶν βαρβάρων ἄριστος. Οὗτος οὖν ὁ ἄνθρωπος, διαβαδιζόντων πολλῶν κατὰ τὴν ὁδὸν, καὶ μάντεώς τινος ὀρνιθευομένου, καὶ πάντας ἐπισχεῖν ἀξιοῦντος, ἠρώτησε, διὰ τί προςμένουσι. Δείξαντος δὲ τοῦ μάντεως αὐτῷ τὸν ὄρνιθα, καὶ φήσαντος, ἐὰν μὲν αὐτοῦ μένῃ, προςμένειν συμφέρει πᾶσιν, ἂν δ' ἀναστὰς εἰς τοὔμπροσθεν πέτηται, προάγειν, ἐὰν δὲ εἰς τοὔπισθεν, ἀναχωρεῖν αὖθις, σιωπήσας καὶ παρελκύσας τὸ τόξον ἔβαλε, καὶ τὸν ὄρνιθα πατάξας ἀπέκτεινεν. Ἀγανακτούντων δὲ τοῦ μάντεως καί τινων ἄλλων, καὶ καταρωμένων αὐτῷ, 'τί μαίνεσθε, ἔφη, κακοδαιμονέστατον ὄρνιθα λαβόντες εἰς τὰς χεῖρας; Πῶς γὰρ οὗτος, τὴν αὑτοῦ σωτηρίαν οὐ προϊδὼν, περὶ τῆς ἡμετέρας πορείας ἡμῖν ἄν τι ὑγιὲς ἀπήγγελλεν; Εἰ γὰρ ἠδύνατο προγινώσκειν τὸ μέλλον, εἰς τὸν τόπον τοῦτον οὐκ ἂν ἦλθε, φοβούμενος, μὴ τοξεύσας αὐτὸν ἀποκτείνῃ Μοσόλλαμος Ἰουδαῖος.'" Ἀλλὰ τῶν μὲν Ἑκαταίου μαρτυριῶν ἅλις. Τοῖς γὰρ βουλομένοις πλείω μαθεῖν, τῷ βιβλίῳ ῥᾴδιόν ἐστιν ἐντυχεῖν. Οὐκ ὀκνήσω δὲ καὶ τὸν ἐπ' εὐηθείας διασυρμῷ, καθάπερ αὐτὸς οἴεται, μνήμην πεποιημένον ἡμῶν Ἀγαθαρχίδην ὀνομάσαι. Διηγούμενος γὰρ τὰ περὶ Στρατονίκην, 'ὃν τρόπον ἦλθε μὲν εἰς Συρίαν ἐκ Μακεδονίας, καταλιποῦσα τὸν ἑαυτῆς ἄνδρα Δημήτριον, Σελεύκου δὲ γαμεῖν αὐτὴν οὐ θελήσαντος, ὅπερ ἐκείνη προςεδόκησε, ποιουμένου δὲ τὴν ἀπὸ Βαβυλῶνος στρατιὰν αὐτοῦ, τὰ περὶ τὴν Ἀντιόχειαν ἐνεωτέρισεν. Εἶθ' ὡς ἀνέστρεψεν ὁ βασιλεὺς, ἁλισκομένης τῆς Ἀντιοχείας, εἰς Σελεύκειαν φυγοῦσα, παρὸν αὐτῇ ταχέως ἀποπλεῖν, ἐνυπνίῳ

κωλύοντι πεισθεῖσα ἐλήφθη καὶ ἀπέθανεν." Ταῦτα 158
προειπὼν ὁ Ἀγαθαρχίδης, καὶ ἐπισκώπτων τῇ Στρατονίκῃ τὴν δεισιδαιμονίαν, παραδείγματι χρῆται τῷ περὶ ἡμῶν λόγῳ, καὶ γέγραφεν οὕτως· "Οἱ καλούμενοι Ἰουδαῖοι πόλιν οἰκοῦντες ὀχυρωτάτην πασῶν, ἣν καλεῖν Ἱεροσόλυμα συμβαίνει τοὺς ἐγχωρίους, ἀργεῖν εἰθισμένοι δι' ἑβδόμης ἡμέρας, καὶ μηδὲ τὰ ὅπλα βαστάζειν ἐν τοῖς εἰρημένοις χρόνοις, μήτε γεωργίας ἅπτεσθαι, μήτε ἄλλης ἐπιμελεῖσθαι λειτουργίας μηδεμιᾶς, ἀλλ' ἐν τοῖς ἱεροῖς ἐκτετακότες τὰς χεῖρας εὔχεσθαι μέχρι τῆς ἑσπέρας, εἰσιόντος εἰς τὴν πόλιν Πτολεμαίου τοῦ Λάγου μετὰ τῆς δυνάμεως, καὶ τῶν ἀνθρώπων ἀντὶ τοῦ φυλάττειν τὴν πόλιν διατηρούντων τὴν ἄνοιαν, ἡ μὲν πατρὶς εἰλήφει δεσπότην πικρὸν, ὁ δὲ νόμος ἐξηλέγχθη φαῦλον ἔχων ἐθισμόν. Τὸ δὲ συμβὰν πλὴν ἐκείνων τοὺς ἄλλους πάντας δεδίδαχε, τηνικαῦτα φυγεῖν ἐνύπνια, καὶ τὴν περὶ τοῦ νόμου παραδεδομένην ὑπόνοιαν, ἡνίκ' ἂν τοῖς ἀνθρωπίνοις λογισμοῖς περὶ τῶν διαπορουμένων ἐξασθενήσουσιν." Τοῦτο μὲν Ἀγαθαρχίδῃ καταγέλωτος ἄξιον δοκεῖ· τοῖς δὲ μὴ μετὰ δυσμενείας ἐξετάζουσι φαίνεται μέγα καὶ πολλῶν ἄξιον ἐγκωμίων, εἰ καὶ σωτηρίας καὶ πατρίδος ἄνθρωποί τινες νόμων φυλακὴν καὶ τὴν πρὸς θεὸν εὐσέβειαν ἀεὶ προτιμῶσιν.

23. Ὅτι δὲ οὐκ ἀγνοοῦντες ἔνιοι τῶν συγγραφέων τὸ ἔθνος ἡμῶν, ἀλλ' ὑπὸ φθόνου τινὸς, ἢ δι' ἄλλας αἰτίας οὐχ ὑγιεῖς τὴν μνήμην παρέλιπον, τεκμήριον οἶμαι παρέξειν. Ἱερώνυμος γὰρ, ὁ τὴν περὶ τῶν διαδόχων ἱστορίαν συγγεγραφὼς, κατὰ τὸν αὐτὸν μὲν ἦν Ἑκαταίῳ χρόνον, φίλος δ' ὢν Ἀντιγόνου τοῦ βασιλέως, τὴν Συρίαν ἐπετρόπευεν. Ἀλλ' ὅμως Ἑκαταῖος μὲν καὶ βιβλίον ἔγραψε περὶ ἡμῶν, Ἱερώνυμος δὲ οὐδαμοῦ κατὰ τὴν ἱστορίαν ἐμνημόνευσε, καίτοι σχεδὸν ἐν τοῖς τόποις διατετροφώς·

τοσοῦτον αἱ προαιρέσεις τῶν ἀνθρώπων διήνεγκαν. Τῷ μὲν γὰρ ἐδόξαμεν καὶ σπουδαίας εἶναι μνήμης ἄξιοι, τῷ δὲ πρὸς τὴν ἀλήθειαν πάντως τι πάθος οὐκ εὔγνωμον ἐπεσκότησεν. Ἀρκοῦσι δὲ ὅμως εἰς τὴν ἀπόδειξιν τῆς ἀρχαιότητος αἵ τε Αἰγυπτίων καὶ Χαλδαίων καὶ Φοινίκων ἀναγραφαὶ, πρὸς ἐκείναις τε τοσοῦτοι τῶν Ἑλλήνων συγγραφεῖς· ἔτι δὲ καὶ πρὸς τοῖς εἰρημένοις, Θεόφιλος, καὶ Θεόδοτος, καὶ Μνασέας, καὶ Ἀριστοφάνης, καὶ Ἑρμογένης, Εὐήμερός τε καὶ Κόνων, καὶ Ζωπυρίων, καὶ πολλοί τινες ἄλλοι τάχα — οὐ γὰρ ἔγωγε πᾶσιν ἐντετύχηκα τοῖς βιβλίοις — οὐ παρέργως ἡμῶν ἐμνημονεύκασιν. Οἱ πολλοὶ δὲ τῶν εἰρημένων ἀνδρῶν τῆς μὲν ἀληθείας τῶν ἐξ ἀρχῆς πραγμάτων διήμαρτον, ὅτι μὴ ταῖς ἱεραῖς ἡμῶν βίβλοις ἐνέτυχον· κοινῶς μέντοι περὶ τῆς ἀρχαιότητος ἅπαντες μεμαρτυρήκασιν, ὑπὲρ ἧς τὰ νῦν λέγειν προεθέμην. Ὁ μέντοι Φαληρεὺς Δημήτριος, καὶ Φίλων ὁ πρεσβύτερος, καὶ Εὐπόλεμος οὐ πολὺ τῆς ἀληθείας διήμαρτον. Οἷς συγγιγνώσκειν ἄξιον, οὐ γὰρ ἐνῆν αὐτοῖς μετὰ πάσης ἀκριβείας τοῖς ἡμετέροις γράμμασι παρακολουθεῖν.

459 24. Ἓν ἔτι μοι κεφάλαιον ὑπολείπεται τῶν κατὰ τὴν ἀρχὴν προτεθέντων τοῦ λόγου, τὰς διαβολὰς καὶ τὰς λοιδορίας, αἷς κέχρηνταί τινες κατὰ τοῦ γένους ἡμῶν, ἀποδεῖξαι ψευδεῖς, καὶ τοῖς γεγραφόσι ταύτας καθ᾽ ἑαυτῶν χρήσασθαι μάρτυσιν. Ὅτι μὲν οὖν καὶ ἑτέροις τοῦτο πολλοῖς συμβέβηκε, διὰ τὴν ἐνίων δυςμένειαν οἶμαι γιγνώσκειν τοὺς πλέον ταῖς ἱστορίαις ἐντυγχάνοντας· καὶ γάρ ἐθνῶν τινες καὶ τῶν ἐνδοξοτάτων πόλεων ῥυπαίνειν τὴν εὐγένειαν, καὶ τὰς πολιτείας ἐπεχείρησαν λοιδορεῖν. Θεόπομπος μὲν τὴν Ἀθηναίων, τὴν δὲ Λακεδαιμονίων Πολυκράτης, ὁ δὲ τὸν Τριπολιτικὸν γράψας — οὐ γὰρ δὴ Θεόπομπός ἐστιν, ὥς τινες οἴονται — καὶ τὴν Θηβαίων πόλιν διέβαλε. Πολλὰ δὲ καὶ Τί-

μαιος ἐν ταῖς ἱστορίαις περὶ τῶν προειρημένων καὶ περὶ ἄλλων βεβλασφήμηκεν. Μάλιστα δὲ τοῦτο ποιοῦσι, τοῖς ἐνδοξοτάτοις πρόςπλεκόμενοι, τινὲς μὲν διὰ φθόνον καὶ κακοήθειαν, ἄλλοι δὲ διὰ τοῦ κενολογεῖν μνήμης ἀξιωθήσεσθαι νομίζοντες. Παρὰ μὲν οὖν τοῖς ἀνοήτοις ταύτης οὐδαμῶς ἁμαρτάνουσι τῆς ἐλπίδος, οἱ δὲ ὑγιαίνοντες τῇ κρίσει πολλὴν αὐτῶν μοχθηρίαν καταδικάζουσι.

25. *Τῶν δὲ εἰς ἡμᾶς βλασφημιῶν ἤρξαντο μὲν Αἰγύπτιοι. Βουλόμενοι δὲ ἐκείνοις τινὲς χαρίζεσθαι, παρατρέπειν ἐπεχείρησαν τὴν ἀλήθειαν, οὔτε τὴν εἰς Αἴγυπτον ἄφιξιν, ὡς ἐγένετο, τῶν ἡμετέρων προγόνων ὁμολογοῦντες, οὔτε τὴν ἔξοδον ἀληθεύοντες. Αἰτίας δὲ πολλὰς ἔλαβον τοῦ μισεῖν καὶ φθονεῖν, τὸ μὲν ἐξ ἀρχῆς, ὅτι κατὰ τὴν χώραν αὐτῶν ἐδυνάστευσαν ἡμῶν οἱ πρόγονοι, καὶ ἐκεῖθεν ἀπαλλαγέντες ἐπὶ τὴν οἰκείαν πάλιν εὐδαιμόνησαν, εἶθ' ἡ τῶν ἱερῶν ὑπεναντιότης πολλὴν αὐτοῖς ἐνεποίησεν ἔχθραν, τοσοῦτον τῆς ἡμετέρας διαφερούσης εὐσεβείας πρὸς τὴν ὑπ' ἐκείνων νενομισμένην, ὅσον θεοῦ φύσις ζώων ἀλόγων διέστηκεν. Κοινὸν μὲν γὰρ αὐτοῖς ἐστι πάτριον τὸ ταῦτα θεοὺς νομίζειν, ἰδίᾳ δὲ πρὸς ἀλλήλους ἐν ταῖς τιμαῖς αὐτῶν διαφέρονται. Κοῦφοι δὲ καὶ ἀνόητοι παντάπασιν ἄνθρωποι, κακῶς ἐξ ἀρχῆς εἰθισμένοι δοξάζειν περὶ θεῶν, μιμήσασθαι μὲν τὴν σεμνότητα τῆς ἡμετέρας θεολογίας οὐκ ἐχώρησαν· ὁρῶντες δὲ ζηλουμένους ὑπὸ πολλῶν ἐφθόνησαν. Εἰς τοσοῦτον γὰρ ἦλθον ἀνοίας καὶ μικροψυχίας ἔνιοι τῶν παρ' αὐτοῖς, ὥςτ' οὐδὲ ταῖς ἀρχαίαις αὐτῶν ἀναγραφαῖς ὤκνησαν τὰ ἐναντία λέγειν, ἀλλὰ καὶ σφίσιν αὐτοῖς ἐναντία γράφοντες ὑπὸ τυφλότητος τοῦ πάθους ἠγνόησαν.*

26. *Ἐφ' ἑνὸς δὴ πρώτου στήσω τὸν λόγον, ᾧ καὶ μάρτυρι μικρὸν ἔμπροσθεν τῆς ἀρχαιότητος ἐχρησάμην. Ὁ γὰρ Μανεθὼς οὗτος, ὁ τὴν Αἰγυπτια-*

κὴν ἱστορίαν ἐκ τῶν ἱερῶν γραμμάτων μεθερμηνεύ-
ειν ὑπεσχημένος, προειπὼν ‘τοὺς ἡμετέρους προγό-
νους πολλαῖς μυριάσιν ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον ἐλθόντας
κρατῆσαι τῶν ἐνοικούντων, εἶτ᾽ αὐτὸς ὁμολογῶν χρό-
νῳ πάλιν ὕστερον ἐκπεσόντας τὴν νῦν Ἰουδαίαν κα-
τασχεῖν, καὶ κτίσαντες Ἱεροσόλυμα τὸν νέω κατα-
σκευάσασθαι,’ μέχρι μὲν τούτων ἠκολούθησε ταῖς
ἀναγραφαῖς· ἔπειτα δὲ δοὺς ἐξουσίαν αὐτῷ, διὰ τοῦ
φάναι γράψειν τὰ μυθευόμενα καὶ λεγόμενα περὶ τῶν
Ἰουδαίων, λόγους ἀπιθάνους παρενέβαλεν, ‘ἀναμῖξαι
460 βουλόμενος ἡμῖν Αἰγυπτίων πλῆθος λεπρῶν, καὶ
ἐπὶ ἄλλοις ἀῤῥωστήμασιν, ὥς φησι, φυγεῖν ἐκ τῆς
Αἰγύπτου καταγνωσθέντων. Ἀμένωφιν γὰρ βασιλέα
προςθεὶς, ψευδὲς ὄνομα, καὶ διὰ τοῦτο χρόνον αὐ-
τοῦ τῆς βασιλείας ὁρίσαι μὴ τολμήσας, καίτοι γε
ἐπὶ τῶν ἄλλων βασιλέων ἀκριβῶς τὰ ἔτη προςτιθεὶς,
τούτῳ προςάπτει τινὰς μυθολογίας, ἐπιλαβόμενος
σχεδὸν, ὅτι πεντακοσίοις ἔτεσι καὶ δεκαοκτὼ πρότε-
ρον ἱστόρηκε γενέσθαι τὴν τῶν ποιμένων ἔξοδον εἰς
Ἱεροσόλυμα.’ Τέθμωσις γὰρ ἦν βασιλεὺς, ὅτε ἐξήε-
σαν. Ἀπὸ δὲ τούτων μεταξὺ τῶν βασιλέων κατ᾽
αὐτόν ἐστι τριακόσια ἐνενήκοντα τρία ἔτη, μέχρι
τῶν δύο ἀδελφῶν Σέθω καὶ Ἑρμαίου, ὧν τὸν μὲν
Σέθων Αἴγυπτον, τὸν δὲ Ἕρμαιον Δαναὸν μετονο-
μασθῆναί φησιν. Ὃν ἐκβαλὼν ὁ Σέθως ἐβασίλευ-
σεν ἔτη πεντήκοντα ἐννέα· καὶ μετ᾽ αὐτὸν ὁ πρε-
σβύτερος τῶν υἱῶν αὐτοῦ Ῥάμψης ἑξήκοντα ἕξ. Το-
σούτοις οὖν πρότερον ἔτεσιν ἀπελθεῖν ἐξ Αἰγύπτου
τοὺς πατέρας ἡμῶν ὡμολογηκὼς, εἶτα τὸν Ἀμένω-
φιν εἰςποιήσας ἐμβόλιμον βασιλέα, φησὶ ‘τοῦτον ἐπι-
θυμῆσαι θεῶν γενέσθαι θεατὴν, ὥςπερ Ὧρος εἷς τῶν
πρὸ αὐτοῦ βεβασιλευκότων· ἀνενεγκεῖν δὲ τὴν ἐπιθυμίαν
ὁμωνύμῳ μὲν αὐτῷ Ἀμενώφει, πατρὸς δὲ Πάπιος
ὄντι, θείας δὲ δοκοῦντι μετεσχηκέναι φύσεως, κατά
τε σοφίαν καὶ πρόγνωσιν τῶν ἐσομένων. Εἰπεῖν οὖν
αὐτῷ τοῦτον τὸν ὁμώνυμον, ὅτι δυνήσεται θεοὺς ἰ-

δεῖν, εἰ καθαρὰν ἀπό τε λεπρῶν καὶ τῶν ἄλλων
μιαρῶν ἀνθρώπων τὴν χώραν ἅπασαν ποιήσειεν.
Ἡσθέντα δὲ τὸν βασιλέα πάντας τοὺς τὰ σώματα
λελωβημένους ἐκ τῆς Αἰγύπτου συναγαγεῖν· γενέσθαι
δὲ τοῦ πλήθους μυριάδας ὀκτώ· καὶ τούτους εἰς τὰς
λιθοτομίας τὰς ἐν τῷ πρὸς ἀνατολὴν μέρει τοῦ Νεί-
λου ἐμβαλεῖν αὐτὸν, ὅπως ἐργάζοιντο καὶ τῶν ἄλλων
Αἰγυπτίων οἱ ἐγκεχωρισμένοι. Εἶναι δέ τινας ἐν
αὐτοῖς καὶ τῶν λογίων ἱερέων, φησὶ, λέπρᾳ συγκε-
χυμένους. Τὸν δὲ Ἀμένωφιν ἐκεῖνον, τὸν σοφὸν καὶ
μαντικὸν ἄνδρα, ὑποδεῖσθαι πρὸς αὐτόν τε καὶ τὸν
βασιλέα χόλον τῶν θεῶν, εἰ βιασθέντες ὀφθήσονται.'
Καὶ προςθέμενον εἰπεῖν, ὅτι 'συμμαχήσουσί τινες
τοῖς μιαροῖς, καὶ τῆς Αἰγύπτου κρατήσουσιν ἐπ' ἔτη
δέκα τρία· μὴ τολμῆσαι μὲν αὐτὸν εἰπεῖν ταῦτα τῷ
βασιλεῖ, γραφὴν δὲ καταλιπόντα περὶ πάντων ἑαυτὸν
ἀνελεῖν. Ἐν ἀθυμίᾳ δὲ εἶναι τὸν βασιλέα.' Καὶ
ἔπειτα κατὰ λέξιν οὕτω γέγραφεν. "Τῶν δὲ ταῖς
λατομίαις, ὡς χρόνος ἱκανὸς διῆλθεν, ταλαιπωρούν-
των ἀξιωθεὶς ὁ βασιλεὺς, ἵνα πρὸς κατάλυσιν αὐτοῖς
καὶ σκέπην ἀπομερίσῃ τὴν τότε τῶν ποιμένων ἐρη-
μωθεῖσαν πόλιν, Αὔαριν συνεχώρησεν· ἔστι δὲ ἡ
πόλις κατὰ τὴν θεολογίαν ἄνωθεν Τυφώνιος. Οἱ δὲ
εἰς ταύτην εἰςελθόντες, καὶ τὸν τόπον τοῦτον εἰς
ἀπόστασιν ἔχοντες, ἡγεμόνα αὐτῶν λεγόμενόν τινα
τῶν Ἡλιοπολιτῶν ἱερέων Ὀσάρσιφον ἐστήσαντο, καὶ
τούτῳ πειθαρχήσοντες ἐν πᾶσιν ὡρκομότησαν. Ὁ
δὲ πρῶτον μὲν αὐτοῖς νόμον ἔθετο, μήτε προςκυ-
νεῖν θεοὺς, μήτε τῶν μάλιστα ἐν Αἰγύπτῳ θεμιστευ-
ομένων ἱερῶν ζώων ἀπέχεσθαι μηδενὸς, πάντα τε
θύειν καὶ ἀναλοῦν· συνάπτεσθαι δὲ μηδενὶ πλὴν
τῶν συνωμοσμένων. Τοιοῦτα δὲ νομοθετήσας, καὶ 461
πλεῖστα ἄλλα, μάλιστα τοῖς Αἰγυπτίοις ἐθισμοῖς ἐ-
ναντιούμενα, ἐκέλευσεν πολυχειρίᾳ τὰ τῆς πόλεως ἐ-
πισκευάζειν τείχη, καὶ πρὸς πόλεμον ἑτοίμους γίνε-
σθαι τὸν πρὸς Ἀμένωφιν τὸν βασιλέα. Αὐτὸς δὲ

προςλαβόμενος μεθ' ἑαυτοῦ καὶ τῶν ἄλλων ἱερέων καὶ συμμεμιασμένων, ἔπεμψε πρέσβεις πρὸς τοὺς ὑπὸ Τεθμώσεως ἀπελασθέντας ποιμένας, εἰς πόλιν τὴν καλουμένην Ἱεροσόλυμα. Καὶ τὰ καθ' ἑαυτὸν καὶ τοὺς ἄλλους τοὺς συνατιμασθέντας δηλώσας, ἠξίου συνεπιστρατεύειν ὁμοθυμαδὸν ἐπ' Αἴγυπτον. Ἐπάξειν μὲν οὖν αὐτοὺς ἐπηγγείλατο, πρῶτον μὲν εἰς Αὔαριν τὴν προγονικὴν αὐτῶν πατρίδα, καὶ τὰ ἐπιτήδεια τοῖς ὄχλοις παρέξειν ἀφθόνως, ὑπερμαχήσεσθαι δὲ, ὅτε δέοι, καὶ ῥᾳδίως ὑποχείριον αὐτοῖς τὴν χώραν ποιήσειν. Οἱ δὲ ὑπερχαρεῖς γενόμενοι πάντες προθύμως εἰς εἴκοσι μυριάδας ἀνδρῶν συνεξώρμησαν, καὶ μετ' οὐ πολὺ ἧκον εἰς Αὔαριν. Ἀμένωφις δὲ ὁ τῶν Αἰγυπτίων βασιλεὺς, ὡς ἐπύθετο τὰ κατὰ τὴν ἐκείνων ἔφοδον, οὐ μετρίως συνεχύθη, τῆς παρ' Ἀμενώφεως τοῦ Πάπιος μνησθεὶς προδηλώσεως. Καὶ πρότερον συναγαγὼν πλῆθος Αἰγυπτίων, καὶ βουλευσάμενος μετὰ τῶν ἐν τούτοις ἡγεμόνων, τά τε ἱερὰ ζῶα τὰ πρῶτα μάλιστα ἐν τοῖς ἱεροῖς τιμώμενα ὥς γ' ἑαυτὸν μετεπέμψατο, καὶ τοῖς κατὰ μέρος ἱερεῦσι παρήγγειλεν, ὡς ἀσφαλέστατα τῶν θεῶν συγκρύψαι τὰ ξόανα. Τὸν δὲ υἱὸν Σέθων τὸν καὶ Ῥαμέσσην ἀπὸ Ῥάμψεως τοῦ πατρὸς ὠνομασμένον, πενταέτη ὄντα, ἐξέθετο πρὸς τὸν ἑαυτοῦ φίλον. Αὐτὸς δὲ διαβὰς τοῖς ἄλλοις Αἰγυπτίοις, οὖσιν εἰς τριάκοντα μυριάδας ἀνδρῶν μαχιμωτάτων, καὶ τοῖς πολεμίοις ἀπαντήσασιν οὐ συνέβαλεν· ἀλλὰ μέλλειν θεομαχεῖν νομίσας, παλινδρομήσας ἧκεν εἰς Μέμφιν. Ἀναλαβών τε τόν τε Ἆπιν, καὶ τὰ ἄλλα τὰ ἐκεῖσε μεταπεμφθέντα ἱερὰ ζῶα, εὐθὺς εἰς Αἰθιοπίαν σὺν ἅπαντι τῷ στόλῳ καὶ πλήθει τῶν Αἰγυπτίων ἀνήχθη· χάριτι γὰρ ἦν αὐτῷ ὑποχείριος ὁ τῶν Αἰθιόπων βασιλεύς. Ὅθεν ὑποδεξάμενος, καὶ τοὺς ὄχλους πάντας ὑπολαβὼν, οἷς ἔσχεν ἡ χώρα τῶν πρὸς ἀνθρωπίνην τροφὴν ἐπιτηδείων, καὶ πόλεις καὶ κώμας πρὸς τὴν τῶν πεπρωμένων τριςκαίδεκα ἐτῶν ἀπὸ

τῆς ἀρχῆς αὐτοῦ ἔκπτωσιν αὐτάρκεις, οὐχ ἧττόν γε καὶ στρατόπεδον Αἰθιοπικὸν πρὸς φυλακὴν ἐπέταξε τοῖς παρ' Ἀμενώφεως τοῦ βασιλέως ἐπὶ τῶν ὁρίων τῆς Αἰγύπτου. Καὶ τὰ μὲν κατὰ τὴν Αἰθιοπίαν τοιαῦτα. Οἱ δὲ Σολυμῖται κατελθόντες, σὺν τοῖς μιαροῖς τῶν Αἰγυπτίων οὕτως ἀνοσίως τοῖς ἀνθρώποις προςηνέχθησαν, ὥςτε τὴν τῶν προειρημένων κράτησιν χειρίστην φαίνεσθαι τοῖς τότε τὰ τούτων ἀσεβήματα θεωμένοις. Καὶ γὰρ οὐ μόνον πόλεις καὶ κώμας ἐνέπρησαν, οὐδὲ ἱεροσυλοῦντες, οὐδὲ λυμαινόμενοι ξόανα θεῶν ἠρκοῦντο, ἀλλὰ καὶ τοῖς αὐτοῖς ὀπτανίοις τῶν σεβαστευομένων ἱερῶν ζώων χρώμενοι διετέλουν, καὶ θύτας καὶ σφαγεῖς τούτων ἱερεῖς καὶ προφήτας ἠνάγκαζον γίνεσθαι, καὶ γυμνοὺς ἐξέβαλον. Λέγεται δὲ, ὅτι τὴν πολιτείαν καὶ τοὺς νόμους αὐτοῖς καταβαλόμενος ἱερεὺς, τὸ γένος Ἡλιουπολίτης, ὄνομα Ὀσαρσὶφ, ἀπὸ τοῦ ἐν Ἡλίου πόλει θεοῦ Ὀσίρεως, ὡς μετέβη εἰς τοῦτο τὸ γένος, μετετέθη τὸ ὄνομα καὶ προςηγορευθη Μωϋσῆς."

27. Ἃ μὲν οὖν Αἰγύπτιοι φέρουσι περὶ τῶν 462
Ἰουδαίων, ταῦτ' ἐστὶ καὶ ἕτερα πλείονα, ἃ παρίημι συντομίας ἕνεκα. Λέγει δὲ ὁ Μανεθὼν πάλιν, ὅτι "μετὰ ταῦτα ἐπῆλθεν ὁ Ἀμένωφις ἀπὸ Αἰθιοπίας μετὰ μεγάλης δυνάμεως, καὶ ὁ υἱὸς αὐτοῦ Ῥάμψης καὶ αὐτὸς ἔχων δύναμιν· καὶ συμβαλόντες οἱ δύο τοῖς ποιμέσι, καὶ τοῖς μιαροῖς, ἐνίκησαν αὐτοὺς, καὶ πολλοὺς ἀποκτείναντες ἐδίωξαν αὐτοὺς ἄχρι τῶν ὁρίων τῆς Συρίας." Ταῦτα μὲν καὶ τὰ τοιαῦτα Μανεθὼν συνέγραψεν. Ὅτι δὲ ληρεῖ καὶ ψεύδεται περιφανῶς, ἐπιδείξω, προδιαστειλάμενος ἐκεῖνο τῶν ὕστερον πρὸς αὐτὸν λεχθησομένων ἕνεκα. Δέδωκε γὰρ οὗτος ἡμῖν καὶ ὡμολόγηκεν, ἐξ ἀρχῆς τε μὴ εἶναι τὸ γένος Αἰγυπτίους, ἀλλ' αὐτοὺς ἔξωθεν ἐπελθόντας κρατῆσαι τῆς Αἰγύπτου, καὶ πάλιν ἐξ αὐτῆς ἀπελθεῖν. Ὅτι δὲ οὐκ ἀνεμίχθησαν ἡμῖν ὕστερον τῶν Αἰγυπτίων οἱ τὰ σώματα λελωβημένοι, καὶ ὅτι ἐκ τούτων οὐκ ἦν Μω-

ὕσης ὁ τὸν λαὸν ἀγαγὼν, ἀλλὰ πολλαῖς ἐγεγόνει γενεαῖς πρότερον, ταῦτα πειράσομαι διὰ τῶν ὑπ' αὐτοῦ λεγομένων ἐλέγχειν.

28. Πρώτην δὴ τὴν αἰτίαν τοῦ πλάσματος ὑποτίθεται καταγέλαστον. ‘Ὁ βασιλεὺς γὰρ, φησὶν, Ἀμένωφις ἐπεθύμησε τοὺς θεοὺς ἰδεῖν.’ Ποίους; Εἰ μὲν τοὺς παρ' αὐτοῖς νενομοθετημένους, τὸν βοῦν, καὶ τράγον, καὶ κροκοδείλους, καὶ κυνοκεφάλους, ἑώρα. Τοὺς οὐρανίους δὲ πῶς ἠδύνατο; Καὶ διατὶ ταύτην ἔσχε τὴν ἐπιθυμίαν; Ὅτι νὴ Δία καὶ πρότερος αὐτοῦ βασιλεὺς ἄλλος ἑωράκει. Παρ' ἐκείνου τοίνυν ἐπέπυστο, ποταποί τινές εἰσι, καὶ τίνα τρόπον αὐτοὺς εἶδεν, ὥςτε καινῆς αὐτῷ τέχνης οὐκ ἔδει. Ἀλλὰ σοφὸς ἦν ὁ μάντις, δι' οὗ τοῦτο κατορθώσειν ὁ βασιλεὺς ὑπελάμβανε. Καὶ πῶς οὐ προέγνω τὸ ἀδύνατον αὐτοῦ τῆς ἐπιθυμίας; Οὐ γὰρ ἀπέβη. Τίνα δὲ καὶ λόγον εἶχε, διὰ τοὺς ἠκρωτηριασμένους ἢ λεπρῶντας ἀφανεῖς εἶναι τοὺς θεούς; Ὀργίζονται γὰρ ἐπὶ τοῖς ἀσεβήμασιν, οὐκ ἐπὶ τοῖς ἐλαττώμασι τῶν σωμάτων. Ὀκτὼ δὲ μυριάδας τῶν λεπρῶν καὶ κακῶς διακειμένων πῶς οἷόν τε μιᾷ σχεδὸν ἡμέρᾳ συλλεγῆναι; Πῶς δὲ παρήκουσε τοῦ μάντεως ὁ βασιλεύς; Ὁ μὲν γὰρ αὐτὸν ἐκέλευσεν ἐξορίσαι τῆς Αἰγύπτου τοὺς λελωβημένους. Ὁ δὲ αὐτοὺς εἰς τὰς λιθοτομίας ἐνέβαλεν, ὥςπερ τῶν ἐργαζομένων δεόμενος, ἀλλ' οὐχὶ καὶ καθᾶραι τὴν χώραν προαιρούμενος. Φησὶ δὲ ‘τὸν μὲν μάντιν αὐτὸν ἀνελεῖν, τὴν ὀργὴν τῶν θεῶν προορώμενον, καὶ τὰ συμβησόμενα περὶ τὴν Αἴγυπτον, τῷ δὲ βασιλεῖ γεγραμμένην τὴν πρόῤῥησιν καταλιπεῖν.’ Εἶτα πῶς οὐκ ἐξ ἀρχῆς ὁ μάντις τὸν αὐτοῦ θάνατον προηπίστατο; Πῶς δὲ οὐκ εὐθὺς ἀντεῖπεν τῷ βασιλεῖ βουλομένῳ τοὺς θεοὺς ἰδεῖν; Πῶς δὲ εὔλογος ὁ φόβος τῶν μὴ παρ' αὐτὸν συμβησομένων κακῶν; Ἢ τί χεῖρον ἔδει παθεῖν, διὸ ἀνελεῖν ἑαυτὸν ἔσπευδεν; Τὸ δὲ δὴ πάντων εὐηθέστατον ἴδωμεν. Πυθόμενος γὰρ ταῦτα

καὶ περὶ τῶν μελλόντων φοβηθεὶς τοὺς λελωβημένους ἐκείνους, ὧν αὐτῷ καθαρεῦσαι προείρητο τὴν Αἴγυπτον, οὐδὲ τότε τῆς χώρας ἐξήλασεν· 'ἀλλὰ δεηθεῖσιν αὐτοῖς ἔδωκε πόλιν, ὥς φησι, τὴν πάλαι μὲν οἰκηθεῖσαν ὑπὸ τῶν Ποιμένων, Αὔαριν δὲ καλουμένην. Εἰς ἣν ἀθροισθέντας αὐτοὺς ἡγεμόνα φησὶν ἐξελέσθαι τῶν ἐξ Ἡλιουπόλεως πάλαι γεγονότων ἱερέων. Καὶ τοῦτον αὐτοῖς εἰσηγήσασθαι, μήτε θεοὺς προσκυνεῖν, μήτε τῶν ἐπ' Αἰγύπτῳ θρησκευο- 463
μένων ζώων ἀπέχεσθαι, πάντα δὲ θύειν καὶ κατεσθίειν, συνάπτεσθαι δὲ μηδενὶ πλὴν τῶν συνωμοσμένων· ὅρκοις τε τὸ πλῆθος ἐνδησάμενον, ἦ μὴν τούτοις ἐμμένειν τοῖς νόμοις, καὶ τειχίσαντα τὴν Αὔαριν πρὸς τὸν βασιλέα πόλεμον ἐξενεγκεῖν.' Καὶ προστίθησιν, ὅτι 'ἔπεμψεν εἰς Ἱεροσόλυμα, παρακαλῶν ἐκείνους αὐτοῖς συμμαχεῖν, καὶ δώσειν αὐτοῖς τὴν Αὔαριν ὑπισχνούμενος. Εἶναι γὰρ αὐτὴν τοῖς ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων ἀφιξομένοις προγονικήν· ἀφ' ἧς ὁρμωμένους αὐτοὺς πᾶσαν τὴν Αἴγυπτον καθέξειν.' Εἶτα, 'τοὺς μὲν ἐπελθεῖν εἴκοσι στρατοῦ μυριάσι, λέγει· τὸν δὲ βασιλέα τῶν Αἰγυπτίων Ἀμένωφιν, οὐκ οἰόμενον δεῖν θεομαχεῖν, εἰς τὴν Αἰθιοπίαν εὐθὺς ἀποδράναι, τὸν δὲ Ἆπιν καί τινα τῶν ἄλλων ἱερῶν ζώων παρατεθεικέναι τοῖς ἱερεῦσι, διαφυλάττεσθαι κελεύσαντα.' Εἶτα 'τοὺς Ἱεροσολυμίτας ἐπελθόντας, τάς τε πόλεις ἀνιστάναι, καὶ τὰ ἱερὰ κατακαίειν, καὶ τοὺς ἱππέας ἀποσφάττειν, ὅλως τε μηδεμιᾶς ἀπέχεσθαι παρανομίας, μηδὲ ὠμότητος. Ὁ δὲ τὴν πολιτείαν καὶ τοὺς νόμους αὐτοῖς καταβαλόμενος ἱερεὺς, φησὶν, ἦν τὸ γένος Ἡλιουπολίτης, ὄνομα δὲ Ὀσαρσὶφ, ἀπὸ τοῦ ἐν Ἡλιουπόλει θεοῦ Ὀσίρεως· μεταθέμενος δὲ Μωϋσῆν αὐτὸν προσηγόρευσεν. Τρισκαιδεκάτῳ δὲ, φησὶν, ἔτει τὸν Ἀμένωφιν — τοσοῦτον γὰρ αὐτῷ χρόνον εἶναι τῆς ἐκπτώσεως πεπρωμένον — ἐξ Αἰθιοπίας ἐπελθόντα μετὰ πολλῆς στρατιᾶς, καὶ συμβαλόντα τοῖς ποι-

μέσι καὶ τοῖς μιαροῖς, νικῆσαί τε τῇ μάχῃ, καὶ κτεῖναι πολλοὺς ἐπιδιώξαντα μέχρι τῶν τῆς Συρίας ὅρων.'

29. Ἐν τούτοις πάλιν οὐ συνίησιν ἀπιθάνως ψευδόμενος. Οἱ γὰρ λεπροὶ καὶ τὸ μετ' αὐτῶν πλῆθος, εἰ καὶ πρότερον ὠργίζοντο τῷ βασιλεῖ, καὶ τοῖς τὰ περὶ αὐτοὺς πεποιηκόσι, κατά τε τὴν τοῦ μάντεως προαγόρευσιν, ἀλλ' ὅτε τῶν λιθοτομιῶν ἐξῆλθον, καὶ πόλιν παρ' αὐτοῦ καὶ χώραν ἔλαβον, πάντως ἂν ἐγεγόνεισαν πρᾳότεροι πρὸς αὐτόν. Εἰ δὲ δὴ καὶ ἐκεῖνον ἐμίσουν, ἰδίᾳ μὲν ἂν αὐτῷ ἐπεβούλευον, οὐκ ἂν δὲ πρὸς ἅπαντας ἤραντο πόλεμον, δηλονότι πλείστας ἔχοντες συγγενείας, τοσοῦτοί γε τὸ πλῆθος ὄντες. Ὅμως δὲ καὶ τοῖς ἀνθρώποις πολεμεῖν διεγνωκότες, οὐκ ἂν εἰς τοὺς αὐτῶν θεοὺς πολεμεῖν ἐτόλμησαν, οὐδ' ὑπεναντιωτάτους ἔθεντο νόμους τοῖς πατρίοις αὐτῶν καὶ οἷς ἐνετράφησαν. Δεῖ δὲ ἡμᾶς τῷ Μανεθῶνι χάριν ἔχειν, ὅτι ταύτης τῆς παρανομίας οὐχὶ τοὺς ἐξ Ἱεροσολύμων ἐλθόντας ἀρχηγοὺς γενέσθαι φησὶν, ἀλλ' αὐτοὺς ἐκείνους ὄντας Αἰγυπτίους, καὶ τούτων μάλιστα τοὺς ἱερέας ἐπινοῆσαί τε ταῦτα καὶ ὁρκωμοτῆσαι τὸ πλῆθος. Ἐκεῖνο μέντοι πῶς οὐκ ἄλογον; Τῶν μὲν οἰκείων αὐτοῖς καὶ τῶν φίλων συναποστῆσαι οὐδένα, μηδὲ τοῦ πολέμου τὸν κίνδυνον συνάρασθαι· πέμψαι δὲ τοὺς μιαροὺς εἰς Ἱεροσόλυμα, καὶ τὴν παρ' ἐκείνων ἐπάγεσθαι συμμαχίαν. Ποίας αὐτοῖς φιλίας, ἢ τίνος αὐτοῖς οἰκειότητος προϋπηργμένης; Τὸ ἐναντίον γὰρ ἦσαν πολέμιοι, καὶ τοῖς ἔθεσι πλεῖστον διέφερον. Ὁ δέ φησιν εὐθὺς ὑπακοῦσαι τοῖς ὑπισχνουμένοις, ὅτι τὴν Αἴγυπτον καθέξουσιν, ὥςπερ αὐτῶν οὐ σφόδρα τῆς χώρας ἐμπείρως ἐχόντων, ἧς βιασθέντες ἐκπεπτώκασιν. Εἰ μὲν οὖν ἀπόρως ἢ κακῶς ἔπραττον, ἴσως ἂν καὶ παρεβάλλοντο. Πόλιν δὲ κατοικοῦντες εὐδαίμονα, καὶ χώραν πολλὴν κρείττω τῆς Αἰγύπτου καρπούμενοι, διατί ποτ' ἂν ἐχθροῖς μὲν πάλαι, τὰ δὲ σώματα λελωβημένοις, οὓς μηδὲ τῶν

οἰκείων οὐδεὶς ὑπομένει, τούτοις ἔμελλον παρακιν- 464
δυνεύσειν βοηθοῦντες· οὐ γὰρ δή γε τὸν γενησόμενον προῄδεσαν δρασμὸν τοῦ βασιλέως. Τὸ ἐναντίον γὰρ αὐτὸς εἴρηκεν, ‘ὡς ὁ παῖς τοῦ Ἀμενώφιος τριάκοντα μυριάδας ἔχων, εἰς Πηλούσιον ὑπηντίαζεν.’ Καὶ τοῦτο μὲν ᾔδεισαν πάντως οἱ παραγινόμενοι, τὴν δὲ μετάνοιαν αὐτοῦ καὶ τὴν φυγὴν πόθεν εἰκάζειν ἔμελλον; ‘Τὰ σιτία κρατήσαντάς, φησι, τῆς Αἰγύπτου πολλὰ καὶ δεινὰ δρᾶν τοὺς ἐκ τῶν Ἱεροσολύμων ἐπιστρατεύσαντας.’ Καὶ περὶ τούτων ὀνειδίζει, καθάπερ οὐ πολεμίους αὐτοῖς ἐπαγαγὼν, ἢ δέον τοῖς ἔξωθεν ἐπικληθεῖσιν ἐγκαλεῖν, ὁπότε ταῦτά πρὸ τῆς ἐκείνων ἀφίξεως ἔπραττον, καὶ πράξειν ὡμωμόκεσαν οἱ τὸ γένος Αἰγύπτιοι. ‘Ἀλλὰ καὶ χρόνοις ὕστερον Ἀμένωφις ἐπελθὼν ἐνίκησε μάχῃ, καὶ κτείνων τοὺς πολεμίους μέχρι τῆς Συρίας ἤλασεν.’ Οὕτω γὰρ παντάπασίν ἐστιν ἡ Αἴγυπτος τοῖς ὁποθενδηποτοῦν ἐπιοῦσιν εὐάλωτος· καὶ οἱ τότε πολέμῳ κρατοῦντες αὐτὴν, ζῆν πυνθανόμενοι τὸν Ἀμένωφιν, οὔτε τὰς ἐκ τῆς Αἰθιοπίας ἐμβολὰς ὠχύρωσαν, πολλὴν εἰς τοῦτο παρασκευὴν ἔχοντες, οὔτε τὴν ἄλλην ἡτοίμασαν δύναμιν. ‘Ὁ δὲ καὶ μέχρι τῆς Συρίας ἀναιρῶν, φησὶν, αὐτοὺς ἠκολούθησε διὰ τῆς ψάμμου τῆς ἀνύδρου,’ δηλονότι οὐ ῥᾴδιον ὂν ἀμαχεὶ στρατοπέδῳ διελθεῖν.

30. Κατὰ μὲν οὖν τὸν Μανεθῶνα οὔτε ἐκ τῆς Αἰγύπτου τὸ γένος ἡμῶν ἐστιν, οὔτε τῶν ἐκεῖθέν τινες ἀνεμίχθησαν. Τῶν γὰρ λεπρῶν καὶ νοσούντων πολλοὺς μὲν εἰκὸς ἐν ταῖς λιθοτομίαις ἀποθανεῖν, πολὺν χρόνον ἐκεῖ γενομένους καὶ κακοπαθοῦντας· πολλοὺς δ' ἐν ταῖς μετὰ ταῦτα μάχαις, πλείστους δ' ἐν τῇ τελευταίᾳ καὶ τῇ φυγῇ.

31. Λοιπόν μοι πρὸς αὐτὸν εἰπεῖν περὶ Μωϋσέως. Τοῦτον δὲ τὸν ἄνδρα θαυμαστὸν μὲν Αἰγύπτιοι καὶ θεῖον νομίζουσι· βούλονται δὲ προσποι-

ξὶν αὐτοῖς μετὰ βλασφημίας ἀπιθάνου, λέγοντες Ἡλιουπολίτην εἶναι τῶν ἐκεῖθεν ἱερέων ἕνα, διὰ τὴν λέπραν συνεξεληλασμένον. Δείκνυται δ' ἐν ταῖς ἀναγραφαῖς, ὀκτωκαίδεκα σὺν τοῖς πεντακοσίοις πρότερον ἔτεσι γεγονὼς, καὶ τοὺς ἡμετέρους ἐξαγαγὼν ἐκ τῆς Αἰγύπτου πατέρας εἰς τὴν χώραν τὴν νῦν οἰκουμένην ὑφ' ἡμῶν. Ὅτι δὲ οὐδὲ συμφορᾷ τινι τοιαύτῃ περὶ τὸ σῶμα κεχρημένος ἦν, ἐκ τῶν λεγομένων ὑπ' αὐτοῦ δῆλόν ἐστι. Τοῖς γὰρ λεπρῶσιν ἀπείρηκε μήτε μένειν ἐν πόλει, μήτ' ἐν κώμῃ κατοικεῖν, ἀλλὰ μόνους περιπατεῖν κατεσχισμένους τὰ ἱμάτια. Καὶ τὸν ἁψάμενον αὐτῶν, ἢ ὁμώροφον γενόμενον, οὐ καθαρὸν ἡγεῖται. Καὶ μὴν καὶ ἐὰν θεραπευθῇ τὸ νόσημα, καὶ τὴν αὐτοῦ φύσιν ἀπολάβῃ, προείρηκέ τινας ἁγνείας, καθαρμοὺς πηγαίων ὑδάτων λουτροῖς, καὶ ξυρήσεις πάσης τριχὸς, πολλάς τε κελεύει καὶ παντοίας ἐπιτελέσαντα θυσίας τότε παρελθεῖν εἰς τὴν ἱερὰν πόλιν. Καίτοι τὸ ἐναντίον εἰκὸς ἦν προνοίᾳ τινὶ καὶ φιλανθρωπίᾳ χρήσασθαι, τὴν ἐν τῇ συμφορᾷ ταύτῃ γεγονότα, πρὸς τοὺς ὁμοίως αὐτῷ δυςτυχήσαντας· οὐ μόνον δὲ περὶ τῶν λεπρῶν οὕτως ἐνομοθέτησεν, ἀλλ' οὐδὲ τοῖς καὶ τὸ βραχύτατόν τι τοῦ σώματος ἠκρωτηριασμένοις ἱερᾶσθαι συγκεχώρηκεν. Ἀλλ' εἰ καὶ μεταξύ τις ἱερωμένος τοιαύτῃ χρήσαιτο συμφορᾷ, τὴν τιμὴν αὐτὸν ἀφείλετο.
465 Πῶς οὖν εἰκὸς ἐκεῖνον ταῦτα νομοθετεῖν καθ' ἑαυτοῦ, εἰς ὄνειδός τε καὶ βλάβην νόμους συντιθεμένους; Ἀλλὰ μὴ καὶ τὸ ὄνομα λίαν ἀπιθάνως μετατέθεικεν. «Ὀσαρσὶφ γὰρ, φησὶν, ἐκαλεῖτο.» Τοῦτο μὲν οὖν εἰς τὴν μετάθεσιν οὐκ ἐναρμόζει. Τὸ δὲ ἀληθὲς ὄνομα δηλοῖ τὸν ἐκ τοῦ ὕδατος σωθέντα Μωϋσῆν· τὸ γὰρ ὕδωρ οἱ Αἰγύπτιοι Μῶϋ καλοῦσιν. Ἱκανῶς οὖν γεγονέναι νομίζω καὶ δῆλον, ὅτι Μανεθὼς, ἕως μὲν ἠκολούθει ταῖς ἀρχαίαις ἀναγραφαῖς, οὐ πολὺ τῆς ἀληθείας διημάρτανεν. Ἐπὶ δὲ τοὺς ἀδεσπότους μύθους τραπόμενος ἢ συνέθηκεν

αὐτοὺς ἀπιθάνως, ἢ τισι τῶν πρὸς ἀπέχθειαν εἰρηκότων ἐπίστευσεν.

32. *Μετὰ τοῦτον ἐξετάσαι βούλομαι Χαιρήμονα. Καὶ γὰρ οὗτος Αἰγυπτιακὴν φάσκων ἱστορίαν συγγράφειν, καὶ προςθεὶς ταυτὸ ὄνομα τοῦ βασιλέως, ὅπερ ὁ Μανεθὼς, Ἀμένωφιν, καὶ τὸν υἱὸν αὐτοῦ Ῥαμέσσην, φησὶν, ὅτι, 'κατὰ τοὺς ὕπνους ἡ Ἶσις ἐφάνη τῷ Ἀμενώφει, μεμφομένη αὐτὸν, ὅτι τὸ ἱερὸν αὐτῆς ἐν τῷ πολέμῳ κατέσκαπται. Φριτιφάντην δὲ ἱερογραμματέα φᾶναι, ἐὰν τῶν τοὺς μολυσμοὺς ἐχόντων ἀνδρῶν καθάρῃ [τὴν Αἴγυπτον, παύσασθαι τῆς πτοίας αὐτόν. Ἐπιλέξαντα δὲ τῶν ἐπισινῶν μυριάδας εἴκοσι πέντε ἐκβαλεῖν. Ἡγεῖσθαι δὲ αὐτῶν γραμματέας Μωϋσῆν τε καὶ Ἰώσηπον, καὶ τοῦτον ἱερογραμματέα· Αἰγύπτια δὲ αὐτοῖς ὀνόματα εἶναι, τῷ μὲν Μωϋσῇ Τισιθὲν, τῷ δὲ Ἰωσήπῳ Πετεσήφ. Τούτους δ' εἰς Πηλούσιον ἐλθεῖν καὶ ἐπιτυχεῖν μυριάσι τριάκοντα ὀκτὼ καταλελειμμέναις ὑπὸ τοῦ Ἀμενώφιος, ἃς οὐ θέλειν εἰς τὴν Αἴγυπτον διακομίζειν. Οἷς φιλίαν συνθεμένους ἐπὶ τὴν Αἴγυπτον στρατεῦσαι. Τὸν δὲ Ἀμένωφιν οὐχ ὑπομείναντα τὴν ἔφοδον αὐτῶν, εἰς Αἰθιοπίαν φυγεῖν καταλιπόντα τὴν γυναῖκα ἔγκυον· ἣν κρυπτομένην ἔν τισι σπηλαίοις τεκεῖν παῖδα, ὄνομα Μεσσήνην, ὃν ἀνδρωθέντα ἐκδιῶξαι τοὺς Ἰουδαίους εἰς τὴν Συρίαν, ὄντας περὶ εἴκοσι μυριάδας, καὶ τὸν πατέρα Ἀμένωφιν ἐκ τῆς Αἰθιοπίας καταδέξασθαι.'*

33. *Καὶ ταῦτα μὲν ὁ Χαιρήμων. Οἶμαι δὲ αὐτόθεν φανερὰν εἶναι ἐκ τῶν εἰρημένων τὴν ἀμφοῖν ψευδολογίαν. Ἀληθείας μὲν γάρ τινος ὑποκειμένης, ἀδύνατον ἦν διαφωνεῖν ἐπὶ τοσοῦτον. Οἱ δὲ τὰ ψευδῆ συντιθέντες οὐχ ἑτέροις σύμφωνα γράφουσιν, ἀλλ' αὐτοῖς τὰ δόξαντα πλάττουσιν. Ἐκεῖνος μὲν οὖν ἐπιθυμίαν τοῦ βασιλέως, ἵνα τοὺς θεοὺς ἴ-*

δη, φησὶν ἀρχὴν γενέσθαι τῆς τῶν μιαρῶν ἐκβολῆς· ὁ δὲ Χαιρήμων ἴδιον ὡς τῆς Ἴσιδος ἐνύπνιον συντέθεικεν. Καὶ ἐκεῖνος μὲν Ἀμένωφιν εἶναι λέγει, τὸν προειπόντα τῷ βασιλεῖ τὸν καθαρμόν· οὗτος δὲ Φριτιφάντην. Ὁ δὲ δὴ τοῦ πλήθους ἀριθμὸς καὶ σφόδρα σύνεγγυς, ὀκτὼ μὲν μυριάδας ἐκείνου λέγοντος· τούτου δὲ πέντε πρὸς ταῖς εἴκοσιν. Ἔτι τοίνυν ὁ μὲν Μανεθὼς πρότερον εἰς τὰς λιθοτομίας τοὺς μιαροὺς ἐκβαλὼν, εἶτα αὐτοῖς τὴν Αὔαριν δοὺς ἐγκατοικεῖν, καὶ τὰ πρὸς τοὺς ἄλλους Αἰγυπτίους ἐκπολεμώσας, τότε φησὶν ἐπικαλέσασθαι τὴν παρὰ τῶν Ἱεροσολυμιτῶν αὐτοὺς ἐπικουρίαν· ὁ δὲ Χαιρήμων ἀπαλλαττομένους ἐκ τῆς Αἰγύπτου, περὶ Πηλούσιον εὑρεῖν ὀκτὼ καὶ τριάκοντα μυριάδας ἀνθρώπων, καταλελειμμένας ὑπὸ τοῦ Ἀμενώφιος, καὶ μετ' ἐκείνων πάλιν εἰς τὴν Αἴγυπτον ἐμβαλεῖν, φυγεῖν δὲ τὸν Ἀμένωφιν εἰς τὴν Αἰθιοπίαν. Τὸ δὲ δὴ γενναιότατον, οὐδὲ τίνες ἢ πόθεν ἦσαν αἱ τοσαῦται τοῦ στρατοῦ μυριάδες εἴρηκεν, εἴτε Αἰγύπτιοι τὸ γένος, εἴτ' ἔξωθεν ἥκοντες. Ἀλλ' οὐδὲ τὴν αἰτίαν διεσάφησε, δι' ἣν αὐτοὺς ὁ βασιλεὺς εἰς τὴν Αἴγυπτον ἀγαγεῖν οὐκ ἠθέληκεν, ὁ περὶ τῶν λεπρῶν τὸ
466 τῆς Ἴσιδος ἐνύπνιον συμπλάσας. Τῷ δὲ Μωϋσεῖ καὶ τὸν Ἰώσηπον ὁ Χαιρήμων, ὡς ἐν ταὐτῷ χρόνῳ συνεξηλασμένον, προςτέθεικεν, τὸν πρὸ Μωϋσέως πρεσβύτερον τέσσαρσι γενεαῖς τετελευτηκότα, ὧν ἐστιν ἔτη σχεδὸν ἑβδομήκοντα καὶ ἑκατόν. Ἀλλὰ μὴν ὁ Ῥαμέσσης ὁ τοῦ Ἀμενώφιος υἱὸς, κατὰ μὲν τὸν Μανεθῶνα, νεανίας συμπολεμεῖ τῷ πατρὶ, καὶ συνεκπίπτει, φυγὼν εἰς τὴν Αἰθιοπίαν, οὗτος δὲ πεποίηκεν αὐτὸν μετὰ τὴν τοῦ πατρὸς τελευτὴν, ἐν σπηλαίῳ τινὶ γεγεννημένον, καὶ μετὰ ταῦτα νικῶντα μάχῃ, καὶ τοὺς Ἰουδαίους εἰς Συρίαν ἐξελαύνοντα, τὸν ἀριθμὸν ὄντας περὶ μυριάδας εἴκοσιν. Ὢ τῆς εὐχερείας! Οὔτε γὰρ πρότερον οἵτινες ἦσαν αἱ τριάκοντα καὶ ὀκτὼ μυριάδες εἶπεν, οὔτε πῶς αἱ

τεσσαράκοντα καὶ τρεῖς διεφθάρησαν, πότερον ἐν τῇ μάχῃ κατέπεσον, ἢ πρὸς τὸν Ῥαμέσσην μετεβάλλοντο. Τὸ δὲ δὴ θαυμασιώτατον, οὐδὲ τίνας καλεῖ τοὺς Ἰουδαίους δυνατόν ἐστι παρ᾽ αὐτοῦ μαθεῖν, ἢ ποτέροις αὐτῶν τίθεται ταύτην τὴν προσηγορίαν· ταῖς εἴκοσι πέντε μυριάσι τῶν λεπρῶν, ἢ ταῖς ὀκτὼ καὶ τριάκοντα ταῖς περὶ τὸ Πηλούσιον. Ἀλλὰ γὰρ εὔηθες ἴσως ἂν εἴη διὰ πλειόνων ἐλέγχειν τοὺς ὑφ᾽ ἑαυτῶν ἐληλεγμένους. Τὸ γὰρ ὑπ᾽ ἄλλων ἦν μετριώτερον.

34. Ἐπεισάξω δὲ τούτοις Λυσίμαχον, εἰληφότα μὲν τὴν αὐτὴν τοῖς προειρημένοις ὑπόθεσιν τοῦ ψεύσματος, ὑπερπεπαικότα δὲ τὴν ἐκείνων ἀπιθανότητα τοῖς πλάσμασι· δι᾽ ὃ καὶ δῆλός ἐστι συντεθεικὼς κατὰ πολλὴν ἀπέχθειαν. Λέγει γὰρ, ἐπὶ Βοκχόρεως τοῦ Αἰγυπτίων βασιλέως τὸν λαὸν τῶν Ἰουδαίων λεπροὺς ὄντας καὶ ψωροὺς, καὶ ἄλλα νοσήματά τινα ἔχοντας, εἰς τὰ ἱερὰ καταφεύγοντας μεταιτεῖν τροφήν. Παμπόλλων δὲ ἀνθρώπων νοσηλίᾳ περιπεσόντων, ἀκαρπίαν ἐν τῇ Αἰγύπτῳ γενέσθαι. Βόκχοριν δὲ, τὸν τῶν Αἰγυπτίων βασιλέα, εἰς Ἄμμωνα πέμψαι περὶ τῆς ἀκαρπίας τοὺς μαντευσομένους· τὸν θεὸν δὲ εἰπεῖν, τὰ ἱερὰ καθᾶραι ἀπ᾽ ἀνθρώπων ἀνάγνων καὶ δυσσεβῶν, ἐκβαλόντα αὐτοὺς ἐκ τῶν ἱερῶν εἰς τόπους ἐρήμους, τοὺς δὲ ψωροὺς καὶ λεπροὺς βυθίσαι, ὡς τοῦ ἡλίου ἀγανακτοῦντος ἐπὶ τῇ τούτων ζωῇ, καὶ τὰ ἱερὰ ἁγνίσαι, καὶ οὕτω τὴν γῆν καρποφορήσειν. Τὸν δὲ Βόκχοριν τοὺς χρησμοὺς λαβόντα, τούς τε ἱερεῖς καὶ ἐπιβωμίτας προσκαλεσάμενον, κελεῦσαι ἐπιλογὴν ποιησαμένους τῶν ἀκαθάρτων, τοῖς στρατιώταις τούτους παραδοῦναι κατάξειν αὐτοὺς εἰς τὴν ἔρημον· τοὺς δὲ λεπροὺς εἰς μολυβδίνους χάρτας ἐνδήσαντας, ἵνα καθῶσιν εἰς τὸ πέλαγος. Βυθισθέντων δὲ τῶν λεπρῶν καὶ ψωρῶν, τοὺς ἄλλους συναθροισθέντας εἰς τόπους ἐρήμους ἐκτεθῆναι ἐπ᾽ ἀπωλείᾳ· συναχθέν-

τας δὲ βουλεύσασθαι περὶ αὐτῶν, νυκτὸς δ' ἐπιγενομένης, πῦρ καὶ λύχνους καύσαντας φυλάττειν ἑαυτοὺς, τήν τ' ἐπιοῦσαν νύκτα νηστεύσαντας ἱλάσκεσθαι τοὺς θεοὺς περὶ τοῦ σῶσαι αὐτούς. Τῇ δὲ ἐπιούσῃ ἡμέρᾳ Μωϋσῆν τινα συμβουλεῦσαι αὐτοῖς, παραβαλλομένους μίαν ὁδὸν τέμνειν, ἄχρις ἂν ἔλθωσιν εἰς τόπους οἰκουμένους, παρακελεύσασθαί τε αὐτοῖς, μήτε ἀνθρώπων τινὶ εὐνοήσειν, μήτε ἄριστα συμβουλεύσειν, ἀλλὰ τὰ χείρονα· θεῶν τε ναοὺς καὶ βωμοὺς, οἷς ἂν περιτύχωσιν, ἀνατρέπειν. Συναινεσάντων δὲ τῶν ἄλλων, τὰ δοχθέντα ποιοῦντας διὰ τῆς ἐρήμου πορεύεσθαι, ἱκανῶς δὲ ὀχληθέντας ἐλθεῖν εἰς τὴν οἰκουμένην χώραν, καὶ τούς τε ἀνθρώπους ὑβρίζοντας, καὶ τὰ ἱερὰ συλῶντας καὶ
467 ἐμπρήσαντας, ἐλθεῖν εἰς τὴν νῦν Ἰουδαίαν προσαγορευομένην, κτίσαντας δὲ πόλιν ἐνταῦθα κατοικεῖν. Τὸ δὲ ἄστυ τοῦτο Ἱερόσυλα ἀπὸ τῆς ἐκείνων διαθέσεως ὠνομάσθαι. Ὕστερον δὲ αὐτοὺς ἐπικρατήσαντας, χρόνῳ διαλλάξαι τὴν ὀνομασίαν πρὸς τὸ μὴ ὀνειδίζεσθαι, καὶ τήν τε πόλιν Ἱεροσόλυμα, καὶ αὐτοὺς Ἱεροσολύμους προσαγορεύεσθαι.'

35. Οὗτος δ' οὐ τὸν αὐτὸν ἐκείνοις εὗρεν εἰπεῖν βασιλέα, καινότερον δὲ ὄνομα συντέθεικεν, καὶ παρεὶς ἐνύπνιον καὶ προφήτην Αἰγύπτιον, εἰς Ἄμμωνα ἀπελήλυθε περὶ τῶν ψωρῶν καὶ λεπρῶν χρησμὸν οἴσων. Φησὶ γὰρ 'εἰς τὰ ἱερὰ συλλέγεσθαι πλῆθος Ἰουδαίων.' Ἆρά γε τούτοις τοῖς λεπροῖς ὄνομα θέμενος, ἢ μόνων τῶν Ἰουδαίων τοῖς νοσήμασι περιπεσόντων; Λέγει γὰρ 'ὁ λαὸς τῶν Ἰουδαίων.' Ὁποῖος; Ἔπηλυς, ἢ τὸ γένος ἐγχώριος; Διατί τοίνυν Αἰγυπτίους αὐτοὺς ὄντας Ἰουδαίους καλεῖς; Εἰ δὲ ξένοι, διατὶ, πόθεν, οὐ λέγεις; Πῶς δὲ, τοῦ βασιλέως πολλοὺς μὲν αὐτῶν βυθίσαντος εἰς τὴν θάλασσαν, τοὺς δὲ λοιποὺς εἰς ἐρήμους τόπους ἐκβαλόντος, τοσοῦτοι τὸ πλῆθος ὑπελείφθησαν; Ἢ

τίνα τρόπον διεξῆλθον μὲν τὴν ἔρημον, ἐκράτησαν δὲ τῆς χώρας, ἧς νῦν κατοικοῦμεν, ἔκτισαν δὲ καὶ πόλιν, καὶ νεὼν ᾠκοδομήσαντο πᾶσι περιβόητον; Ἐχρῆν δὲ καὶ περὶ τοῦ νομοθέτου μὴ μόνον εἰπεῖν τὸ ὄνομα, δηλῶσαι δὲ καὶ τὸ γένος ὅςτις ἦν καὶ τίνων, διατὶ δὲ τοιούτους ἂν αὐτοῖς ἐπεχείρησε τιθέναι νόμους περὶ θεῶν, καὶ τῆς πρὸς ἀνθρώπους ἀδικίας κατὰ τὴν πορείαν. Εἴτε γὰρ Αἰγύπτιοι τὸ γένος ἦσαν, οὐκ ἂν ἐκ τῶν πατρίων ἐθῶν οὕτω ῥᾳδίως μετεβάλλοντο· εἴτ᾽ ἀλλαχόθεν ἦσαν, πάντως τινὲς ὑπῆρχον αὐτοῖς νόμοι, διὰ μακρᾶς συνηθείας πεφυλαγμένοι. Εἰ μὲν οὖν περὶ τῶν ἐξελασάντων αὐτοὺς ὤμοσαν μηδέ ποτε εὐνοήσειν, λόγον εἶχεν εἰκότα, πᾶσι δὲ πόλεμον ἀνθρώποις ἀκήρυκτον ἄρασθαι τούτους, εἴπερ ἔπραττον, ὡς αὐτὸς λέγει κακῶς, παρὰ πάντων βοηθείας δεομένους, ἄνοιαν οὐκ ἐκείνων, ἀλλὰ τοῦ ψευδομένου πάνυ πολλὴν παρίστησιν· ὅς γε καὶ τὸ ὄνομα θέσθαι τῇ πόλει ἀπὸ τῆς ἱεροσυλίας αὐτοὺς ἐτόλμησεν εἰπεῖν, τοῦτο δὲ μετὰ ταῦτα παρατρέψαι. Δῆλον γάρ, ὅτι τοῖς μὲν ὕστερον γενομένοις αἰσχύνην τὸ ὄνομα καὶ μῖσος ἔφερεν· αὐτοὶ δὲ οἱ κτίζοντες τὴν πόλιν, κοσμήσειν αὐτοὺς ὑπελάμβανον οὕτως ὀνομάσαντες. Ὁ δὲ γενναῖος ὑπὸ πολλῆς τοῦ λοιδορεῖν ἀκρασίας οὐ συνῆκεν, ὅτι ἱεροσυλεῖν οὐ κατὰ τὴν αὐτὴν φωνὴν Ἰουδαῖοι τοῖς Ἕλλησιν ὀνομάζομεν. Τί οὖν ἔτι πλείω τις λέγοι πρὸς τὸν ψευδόμενον οὕτως ἀναισχύντως; Ἀλλ᾽ ἐπειδὴ σύμμετρον ἤδη τὸ βιβλίον εἴληφε μέγεθος, ἑτέραν ποιησάμενος ἀρχήν, τὰ λοιπὰ τῶν εἰς τὸ προκείμενον πειράσομαι προςαποδοῦναι.

ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΠΕΡΙ

ΑΡΧΑΙΟΤΗΤΟΣ ΙΟΥΔΑΙΩΝ

ΚΑΤΑ ΑΠΙΩΝΟΣ

ΛΟΓΟΣ Β'.

---

1. Διὰ μὲν οὖν τοῦ προτέρου βιβλίου, τιμιώτατέ μοι Ἐπαφρόδιτε, περί τε τῆς ἀρχαιότητος ἡμῶν ἐπέδειξα τοῖς Φοινίκων καὶ Χαλδαίων καὶ Αἰγυπτίων γράμμασι πιστωσάμενος τὴν ἀλήθειαν, καὶ πολλοὺς τῶν Ἑλλήνων συγγραφεῖς παρασχόμενος μάρτυρας· τήν τε ἀντίῤῥησιν ἐποιησάμην πρὸς Μανεθῶνα καὶ Χαιρήμονα καί τινας ἑτέρους. Ἄρξομαι δὲ νῦν τοὺς ὑπολειπομένους τῶν γεγραφότων τι καθ' ἡμῶν ἐλέγχειν· καίτοι περὶ τῆς πρὸς Ἀπίωνα τὸν γραμματικὸν ἀντιῤῥήσεως ἐπῆλθέ μοι διαπορεῖν, εἰ χρὴ σπουδάσαι. Τὰ μὲν γάρ ἐστι τῶν ὑπ' αὐτοῦ γεγραμμένων τοῖς ὑπ' ἄλλων εἰρημένοις ὅμοια, τὰ δὲ λίαν ψυχρῶς προςτέθεικεν, τὰ πλεῖστα δὲ βωμολοχίαν ἔχει, καὶ πολλὴν, εἰ δεῖ τὸ ἀληθὲς εἰπεῖν, ἀπαιδευσίαν, ὡς ἂν ὑπ' ἀνθρώπου συγκείμενα καὶ φαύλου τὸν τρόπον, καὶ παρὰ πάντα τὸν βίον ὀχλαγωγοῦ γεγονότος. Ἐπεὶ δὲ οἱ πολλοὶ τῶν ἀνθρώπων διὰ τὴν ἄνοιαν ὑπὸ τῶν τοιού-

των ἁλίσκονται λόγων μᾶλλον, ἢ τῶν μετά τινος
σπουδῆς γεγραμμένων, καὶ χαίρουσι μὲν ταῖς λοιδο-
ρίαις, ἄχθονται δὲ τοῖς ἐπαίνοις, ἀναγκαῖον ἡγησά-
μην εἶναι, μηδὲ τοῦτον ἀνεξέταστον καταλιπεῖν, κα-
τηγορίαν ἡμῶν ἄντικρυς ὡς ἐν δίκῃ γεγραφότα. Καὶ
γὰρ αὖ καὶ ἐκεῖνο τοῖς πολλοῖς ἀνθρώποις ὁρῶ παρ-
ακολουθοῦν, τὸ λίαν ἐφήδεσθαι, ὅταν τις ἀρξάμενος
βλασφημεῖν ἕτερον, αὐτὸς ἐλέγχηται περὶ τῶν αὐτῷ
προςόντων κακῶν. Ἔστι μὲν οὖν οὐ ῥᾴδιον αὐτοῦ
διελθεῖν τὸν λόγον, οὐδὲ σαφῶς γνῶναι, τί λέγειν
βούλεται. Σχεδὸν δὲ ὡς ἐν πολλῇ ταραχῇ καὶ ψευ- 469
σμάτων συγχύσει, τὰ μὲν εἰς τὴν ὁμοίαν ἰδέαν πί-
πτει τοῖς προεξητασμένοις, περὶ τῆς ἐξ Αἰγύπτου
τῶν ἡμετέρων προγόνων μεταναστάσεως· τὰ δ' ἐστὶ
κατηγορία τῶν ἐν Ἀλεξανδρείᾳ κατοικούντων Ἰου-
δαίων. Τρίτον δὲ ἐπὶ τούτοις μέμικται, περὶ τῆς
ἁγιστίας τῆς κατὰ τὸ ἱερὸν ἡμῶν καὶ τῶν ἄλλων νο-
μίμων κατηγορίας.

2. Ὅτι μὲν οὖν οὔτε Αἰγύπτιοι τὸ γένος ἦ-
σαν ἡμῶν οἱ πατέρες, οὔτε διὰ λύμην σωμάτων, ἢ
τοιαύτας ἄλλας συμφορὰς τινας ἐκεῖθεν ἐξηλάθησαν,
οὐ μόνον μετρίως, ἀλλὰ καὶ πέρα τοῦ συμμέτρου
προαποδεδεῖχθαι νομίζω. Περὶ ὧν δὲ προςτίθησιν ὁ
Ἀπίων ἐπιμνησθήσομαι συντόμως. Φησὶ γὰρ ἐν
τῇ τρίτῃ τῶν Αἰγυπτιακῶν τάδε· "Μωϋσῆς, ὡς ἤ-
κουσα παρὰ τῶν πρεσβυτέρων τῶν Αἰγυπτίων, ἦν
Ἡλιουπολίτης· ὃς πατρίοις ἔθεσι κατηγγυημένος, αἰ-
θρίους προςευχὰς ἀνῆγεν εἰς οἵους εἶχεν ἡ πόλις
περιβόλους. Πρὸς ἀφηλιώτην δὲ πᾶσαν ἀπέστρεφεν·
ὧδε γὰρ καὶ Ἡλίου κεῖται πόλις. Ἀντὶ δὲ ὀβελῶν
ἔστησε κίονας, ὑφ' οἷς ἦν ἐκτύπωμα σκάφης, σκιὰ
δ' ἀπ' ἄκρων ἐπ' αὐτὴν διακειμένη, ὡς, ὃν ἐν αἰ-
θέρι, τοῦτον ἀεὶ τὸν δρόμον Ἡλίῳ συμπεριπολεῖ."
Τοιαύτη μέν τις ἡ θαυμαστὴ τοῦ γραμματικοῦ φρά-
σις. Τὸ δὲ ψεῦσμα λόγων οὐ δεόμενον, ἀλλ' ἐκ τῶν

ἔργων περιφανές· οὔτε γὰρ αὐτὸς Μωϋσῆς, ὅτε τὴν πρώτην σκηνὴν τῷ Θεῷ κατεσκεύασεν, οὐθὲν ἐκτύπωμα τοιοῦτον εἰς αὐτὴν ἐνέθηκεν, οὔτε ποιεῖν τοῖς ἔπειτα προςέταξεν· ὅ τε μετὰ ταῦτα κατασκευάσας τὸν ναὸν τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις Σολομὼν πάσης ἀπέσχετο τοιαύτης περιεργίας, οἵαν συμπέπλεκεν Ἀπίων. Ἀκοῦσαι δὲ, φησὶ, τῶν πρεσβυτέρων, ὅτι Μωϋσῆς ὁ Ἡλιουπολίτης,' δηλονότι νεώτερος μὲν ὢν αὐτὸς, ἐκείνοις δὲ πιστεύσας, τοῖς διὰ τὴν ἡλικίαν ἐπισταμένοις αὐτὸν καὶ συγγενομένοις. Καὶ περὶ μὲν Ὁμήρου τοῦ ποιητοῦ, γραμματικὸς ὢν αὐτὸς, οὐκ ἂν ἔχοι, τίς αὐτοῦ πατρίς ἐστι, διαβεβαιωσάμενος εἰπεῖν, οὐδὲ περὶ Πυθαγόρου μόνον οὐκ ἐχθὲς καὶ πρώην γεγονότος· περὶ δὲ Μωϋσέως τοσούτῳ πλήθει προάγοντος ἐκείνους ἐτῶν, οὕτως ἀποφαίνεται ῥᾳδίως πιστεύων ἀκοῇ πρεσβυτέρων, ὡς δῆλός ἐστι καταψευσάμενος. Τὰ δὲ δὴ τῶν χρόνων, ἐν οἷς φησι τὸν Μωϋσῆν ἐξαγαγεῖν τοὺς λεπρῶντας καὶ τυφλοὺς καὶ τὰς βάσεις πεπηρωμένους, σφόδρα δὴ τοῖς πρὸ αὐτοῦ συμπεφώνηκεν, ὡς οἶμαι, ὁ γραμματικὸς ὁ ἀκριβέστατος. Μανεθὼς μὲν γὰρ κατὰ τὴν Τεθμώσιος βασιλείαν ἀπαλλαγῆναί φησιν ἐξ Αἰγύπτου τοὺς Ἰουδαίους, πρὸ ἐτῶν τριακοσίων ἐνενήκοντα τριῶν τῆς εἰς Ἄργος Δαναοῦ φυγῆς· Λυσίμαχος δὲ κατὰ Βόκχωριν τὸν βασιλέα, τουτέστι πρὸ ἐτῶν χιλίων ἑπτακοσίων. Μόλων δὲ καὶ ἄλλοι τινές, ὡς αὐτοῖς ἔδοξεν. Ὁ δέ γε πάντων πιστότατος Ἀπίων ὡρίσατο τὴν ἔξοδον ἀκριβῶς, κατὰ τὴν ἑβδόμην Ὀλυμπιάδα, καὶ ταύτης ἔτος εἶναι πρῶτον, 'ἐν ᾧ, φησι, Καρχηδόνα Φοίνικες ἔκτισαν.' Τοῦτο δὲ πάντως προςέθηκε τὸ 'Καρχηδόνα' τεκμήριον οἰόμενος αὐτῷ γενέσθαι τῆς ἀληθείας ἐναργέστατον· οὐ συνῆκε δὲ καθ' ἑαυτοῦ τὸν ἔλεγχον ἐπισπώμενος. Εἰ γὰρ περὶ τῆς ἀποικίας πιστεύειν δεῖ ταῖς Φοινίκων ἀναγραφαῖς, ἐν ἐκείναις Εἴρωμος ὁ βασιλεὺς γέγραπται πρεσβύτερος τῆς Καρχηδόνος κτίσεως, ἔτεσι πλείοσι

πρὸς τοῖς πεντήκοντα καὶ ἑκατὸν, περὶ οὗ τὰς πίστεις ἀνωτέρω παρέσχον ἐκ τῶν Φοινίκων ἀνα- 470
γραφῶν, καὶ ὅτι Σολομῶντι, τῷ τὸν ναὸν οἰκοδομησαμένῳ τὸν ἐν Ἱεροσολύμοις, φίλος ἦν Εἴρωμος, καὶ πολλὰ συνεβάλλετο πρὸς τὴν τοῦ ναοῦ κατασκευήν. Αὐτὸς δὲ ὁ Σολομῶν ᾠκοδόμησε τὸν ναὸν, μετὰ τὸ ἐξελθεῖν ἐξ Αἰγύπτου τοὺς Ἰουδαίους, δώδεκα καὶ ἑξακοσίοις ἔτεσιν ὕστερον. Τὸν δὲ ἀριθμὸν τῶν ἐλασθέντων τὸν αὐτὸν Λυσιμάχῳ σχεδιάσας, ἕνδεκα γὰρ αὐτοὺς εἶναι φησὶ μυριάδας, θαυμαστήν τινα καὶ πιθανὴν ἀποδίδωσιν αἰτίαν, ἀφ' ἧς φησι τὸ σάββατον ὠνομάσθαι. "Ὁδεύσαντες γὰρ," φησὶν, "ἓξ ἡμερῶν ὁδὸν βουβῶνας ἔσχον, καὶ διὰ ταύτην τὴν αἰτίαν τῇ ἑβδόμῃ ἡμέρᾳ ἀνεπαύσαντο σωθέντες εἰς τὴν χώραν τὴν νῦν Ἰουδαίαν λεγομένην, καὶ ἐκάλεσαν τὴν ἡμέραν σάββατον, σώζοντες τὴν Αἰγυπτίων γλῶτταν. Τὸ γὰρ βουβῶνος ἄλγος καλοῦσιν Αἰγύπτιοι σαββάτωσιν." Οὐκ ἂν οὖν τις ἢ καταγελάσειε τῆς φλυαρίας, ἢ τὸ ἐναντίον μισήσειε τὴν ἐν τῷ τοιαῦτα γράφειν ἀναίδειαν; Δῆλον γὰρ, ὅτι πάντες ἐβουβωνίασαν ἕνδεκα μυριάδες ἀνθρώπων. Ἀλλ' εἰ μὲν ἦσαν ἐκεῖνοι τυφλοὶ καὶ χωλοὶ καὶ πάντα τρόπον νοσοῦντες, ὁποίους αὐτοὺς εἶναι φησὶν Ἀπίων, οὐδ' ἂν μιᾶς ἡμέρας προελθεῖν ὁδὸν ἠδυνήθησαν· εἰ δὲ οἷοι βαδίζειν διὰ πολλῆς ἐρημίας, καὶ προσέτι νικᾶν τοὺς αὐτοῖς ἀνθισταμένους μαχόμενοι πάντες, οὐκ ἂν ἀθρόοι μετὰ τὴν ἕκτην ἡμέραν ἐβουβωνίασαν· οὔτε γὰρ φύσει πως γίνεται τοιοῦτον τοῖς βαδίζουσιν ἐξ ἀνάγκης. Ἀλλὰ πολλαὶ μυριάδες στρατοπέδων τὸ σύμμετρον ἀεὶ βαδίζουσιν· οὔτε κατ' αὐτόματον εἰκὸς οὕτω συμβῆναι· πάντων γὰρ ἀλογώτατον. Ὁ δὲ θαυμαστὸς Ἀπίων, 'διὰ μὲν ἓξ ἡμερῶν αὐτοὺς ἐλθεῖν εἰς τὴν Ἰουδαίαν προείρηκεν, πάλιν δὲ τὸν Μωϋσῆν εἰς τὸ μεταξὺ τῆς Αἰγύπτου καὶ τῆς Ἀραβίας ὄρος, ὃ καλεῖται Σίναιον, ἀναβάντα φησὶν ἡμέραις τεσσαράκοντα κρυφθῆναι. καὶ

ἐκεῖθεν καταβάντα, δοῦναι τοῖς Ἰουδαίοις τοὺς νόμους.' Καίτοι πῶς οἷόν τε τοὺς αὐτοὺς καὶ τεσσαράκοντα μένειν ἡμέρας ἐν ἐρήμῳ καὶ ἀνύδρῳ τόπῳ, καὶ τὴν μεταξὺ πᾶσαν ἐν ἡμέραις ἓξ διελθεῖν; Ἡ δὲ περὶ τὴν ὀνομασίαν τοῦ σαββάτου γραμματικὴ μετάθεσις ἀναίδειαν ἔχει πολλὴν, ἢ δεινὴν ἀμαθίαν. Τὸ γὰρ σαββὼ καὶ σάββατον πλεῖστον ἀλλήλων διαφέρει· τὸ μὲν γὰρ σάββατον κατὰ τὴν Ἰουδαίαν διάλεκτον ἀνάπαυσίς ἐστιν ἀπὸ παντὸς ἔργου, τὸ δὲ σαββὼ, καθάπερ ἐκεῖνός φησι, δηλοῖ παρ' Αἰγυπτίοις τὸ βουβῶνος ἄλγος.

3. Τοιαῦτα μέν τινα περὶ Μωϋσέως καὶ τῆς ἐξ Αἰγύπτου γενομένης τοῖς Ἰουδαίοις ἀπαλλαγῆς ὁ Αἰγύπτιος Ἀπίων ἐκαινοποίησε, παρὰ τοὺς ἄλλους ἐπινοήσας. Καὶ τί γε δεῖ θαυμάζειν, εἰ περὶ τῶν ἡμετέρων ψεύδεται προγόνων, λέγων αὐτοὺς εἶναι τὸ γένος Αἰγυπτίους; Αὐτὸς γὰρ περὶ αὐτοῦ τὸ ἐναντίον ἐψεύδετο. Καὶ γεγενημένος ἐν Ὀάσει τῆς Αἰγύπτου, πάντων Αἰγυπτίων πρῶτος ὢν, ὡς ἂν εἴποι τις, τὴν μὲν ἀληθῆ πατρίδα καὶ τὸ γένος ἐξωμόσατο. Ἀλεξανδρεὺς δὲ εἶναι καταψευδόμενος, ὁμολογεῖ τὴν μοχθηρίαν τοῦ γένους. Εἰκότως οὖν οὓς μισεῖ καὶ βούλεται λοιδορεῖν, τούτους Αἰγυπτίους καλεῖ. Εἰ μὴ γὰρ φαυλοτάτους εἶναι ἐνόμιζεν Αἰγυπτίους, οὐκ ἂν τοῦ γένους αὐτὸς ἔφυγεν· ὡς οἵ γε μεγαλοφρονοῦντες ἐπὶ ταῖς ἑαυτῶν πατρίσι, σεμνύνονται μὲν ἀπὸ τούτων αὐτοὶ χρηματίζοντες, τοὺς ἀδίκως δὲ αὐτῶν ἀντιποιουμένους ἐλέγχουσι.
471 Πρὸς ἡμᾶς δὲ δυοῖν θάτερον Αἰγύπτιοι πεπόνθασιν· ἢ γὰρ οἷς ἐπισεμνυνόμενοι προσποιοῦνται τὴν συγγένειαν, ἢ κοινωνοὺς ἡμᾶς ἐπισπῶνται τῆς αὐτῶν κακοδοξίας. Ὁ δὲ γενναῖος Ἀπίων δοκεῖ μὲν τὴν βλασφημίαν τὴν καθ' ἡμῶν ὥσπερ τινὰ μισθὸν ἐθελῆσαι παρασχεῖν Ἀλεξανδρεῦσι τῆς δοθείσης αὐτῷ πολιτείας· καὶ τὴν ἀπέχθειαν αὐτῶν ἐπιστάμενος τὴν πρὸς τοὺς συνοικοῦντας αὐτοῖς ἐπὶ τῆς Ἀ-

λεξανδρείας Ἰουδαίους, [προετέθειτο μὲν ἐκείνοις λοιδορεῖσθαι, συμπεριλαμβάνει δὲ καὶ τοὺς ἄλλους ἅπαντας, ἐν ἀμφοτέροις ἀναισχύντως ψευδόμενος.

4. *Τίνα τοίνυν ἐστὶ τὰ δεινὰ καὶ σχέτλια τῶν ἐν Ἀλεξανδρείᾳ κατοικούντων Ἰουδαίων, ἃ κατηγόρηκεν αὐτῶν, ἴδωμεν. "Ἐλθόντες," φησὶν, "ἀπὸ Συρίας ᾤκησαν πρὸς ἀλίμενον θάλασσαν, γειτνιάσαντες ταῖς τῶν κυμάτων ἐκβολαῖς." Οὐκ οὖν; Ὁ τόπος εἰ λοιδορίαν ἔχει, τὴν οὐ πατρίδα μὲν, λεγομένην δὲ αὐτοῦ τὴν Ἀλεξάνδρειαν λοιδορεῖ· ἐκείνης γὰρ καὶ τὸ παράλιόν ἐστι μέρος, ὡς πάντες ὁμολογοῦσιν, εἰς κατοίκησιν τὸ κάλλιστον. Ἰουδαῖοι δὲ εἰ μὲν βιασάμενοι κατέσχον, ὡς μηδ' ὕστερον ἐκπεσεῖν, ἀνδρείας τεκμήριόν ἐστ' αὐτοῖς. Εἰς κατοίκησιν δὲ αὐτοῖς ἔδωκε τόπον Ἀλέξανδρος, καὶ ἴσης παρὰ τοῖς Μακεδόσι τιμῆς ἐπέτυχον. Οὐκ οἶδα δὲ, τί ποτ' ἂν ἔλεγεν Ἀπίων, εἰ πρὸς τῇ Νεκροπόλει κατῴκουν, καὶ μὴ πρὸς τοῖς βασιλείοις ἦσαν ἱδρυμένοι, καὶ μέχρι νῦν αὐτῶν ἡ φυλὴ τὴν προσηγορίαν εἶχε Μακεδόνες. Εἰ μὲν οὖν ἀναγνοὺς τὰς ἐπιστολὰς Ἀλεξάνδρου τοῦ βασιλέως, καὶ τοῦ Πτολεμαίου τοῦ Λάγου, καὶ τῶν μετ' ἐκεῖνον τῆς Αἰγύπτου βασιλέων ἐντυχὼν τοῖς γράμμασι, καὶ τὴν στήλην τὴν ἑστῶσαν ἐν Ἀλεξανδρείᾳ καὶ τὰ δικαιώματα περιέχουσαν, ἃ Καῖσαρ ὁ μέγας τοῖς Ἰουδαίοις ἔδωκεν — εἰ μὲν οὖν ταῦτα, φημὶ, γινώσκων, τὰ ἐναντία γράφειν ἐτόλμησε, πονηρὸς ἦν· εἰ δὲ μηδὲν ἠπίστατο τούτων, ἀπαίδευτος. Τὸ δὲ δὴ θαυμάζειν, πῶς Ἰουδαῖοι ὄντες Ἀλεξανδρεῖς ἐκλήθησαν, τῆς ὁμοίας ἀπαιδευσίας· πάντες γὰρ οἱ εἰς ἀποικίαν τινὰ κατακληθέντες, καὶ ἐὰν πλεῖστον ἀλλήλων τοῖς γένεσι διαφέρωσιν, ἀπὸ τῶν οἰκιστῶν τὴν προσηγορίαν λαμβάνουσι. Καὶ τί δεῖ περὶ τῶν ἄλλων λέγειν; Αὐτῶν γὰρ ἡμῶν οἱ τὴν Ἀντιόχειαν κατοικοῦντες, Ἀντιοχεῖς ὀνομάζονται· τὴν γὰρ πολιτείαν αὐτοῖς ἔδωκεν ὁ κτίστης Σέλευκος. Ὁμοίως οἱ ἐν Ἐφέσῳ καὶ κα-*

τὰ τὴν ἄλλην Ἰωνίαν, τοῖς αὐθιγενέσι πολίταις ὁμω-
νυμοῦσι, τοῦτο παρασχόντων αὐτοῖς τῶν διαδόχων.
Ἡ δὲ Ῥωμαίων φιλανθρωπία πᾶσιν μικροῦ δεῖν τῆς
αὐτῶν προσηγορίας μεταδέδωκεν, οὐ μόνον ἀνδράσιν
ἀλλὰ καὶ μεγάλοις ἔθνεσιν ὅλοις. Ἴβηρες γοῦν οἱ
πάλαι καὶ Τυῤῥηνοὶ καὶ Σαβῖνοι Ῥωμαῖοι καλοῦν-
ται. Εἰ δὲ τοῦτον ἀφαιρεῖται τὸν τρόπον τῆς πολι-
τείας Ἀπίων, παυσάσθω λέγων αὑτὸν Ἀλεξανδρέα.
Γεννηθεὶς γὰρ, ὡς προεῖπον, ἐν τῷ βαθυτάτῳ τῆς
Αἰγύπτου, πῶς ἂν Ἀλεξανδρεὺς εἴη, τῆς κατὰ δό-
σιν πολιτείας, ὡς αὐτὸς ἐφ' ἡμῶν ἠξίωκεν, ἀναιρου-
μένης; Καίτοι μόνοις Αἰγυπτίοις οἱ κύριοι νῦν Ῥω-
μαῖοι τῆς οἰκουμένης μεταλαμβάνειν ἡςτινοςοῦν πο-
λιτείας ἀπειρήκασιν. Ὁ δὲ οὕτως ἐστὶ γενναῖος, ὡς
μετέχειν ἀξιῶν αὐτὸς, ὧν τυχεῖν ἐκωλύετο, συκοφαν-
τεῖν ἐπεχείρησε τοὺς δικαίως λαβόντας· οὐ γὰρ ἀπο-
ρίᾳ γε τῶν οἰκησόντων τὴν μετὰ σπουδῆς ὑπ' αὐτοῦ
πόλιν κτιζομένην Ἀλέξανδρος τῶν ἡμετέρων τινὰς
ἐκεῖ συνήθροισεν, ἀλλὰ πάντας δοκιμάζων ἐπιμελῶς
ἀρετῆς καὶ πίστεως, τοῦτο τοῖς ἡμετέροις τὸ γέρας
472 ἔδωκεν. “Ἐτίμα γὰρ ἡμῶν τὸ ἔθνος,” ὥς καί φη-
σιν Ἑκαταῖος περὶ ἡμῶν, “ὅτι διὰ τὴν ἐπιείκειαν
καὶ πίστιν, ἣν αὐτῷ παρέσχον Ἰουδαῖοι, τὴν Σα-
μαρεῖτιν χώραν προσέθηκεν ἔχειν αὐτοῖς ἀφορολό-
γητον. Ὅμοια δὲ Ἀλεξάνδρου καὶ Πτολεμαῖος ὁ
Λάγου περὶ τῶν ἐν Ἀλεξανδρείᾳ κατοικούντων ἐφρό-
νησε.” Καὶ γὰρ τὰ κατὰ τὴν Αἴγυπτον αὐτοῖς ἐν-
εχείρισε φρούρια, πιστῶς ἅμα καὶ γενναίως φυλάξειν
ὑπολαμβάνων· καὶ Κυρήνης ἐγκρατῶς ἄρχειν βουλό-
μενος, καὶ τῶν ἄλλων τῶν ἐν τῇ Λιβύῃ πόλεων, εἰς
αὐτὰς μέρος Ἰουδαίων ἔπεμψε κατοικῆσον. Ὁ δὲ
μετ' αὐτὸν Πτολεμαῖος, ὁ Φιλάδελφος ἐπικληθεὶς,
οὐ μόνον εἴ τινες ἦσαν αἰχμάλωτοι παρ' αὐτῷ τῶν
ἡμετέρων πάντας ἀπέδωκεν, ἀλλὰ καὶ χρήματα πολ-
λάκις ἐδωρήσατο. Καὶ, τὸ μέγιστον ἐπιθυμητὴς ἐ-
γένετο τοῦ γνῶναι τοὺς ἡμετέρους νόμους, καὶ ταῖς

τῶν ἱερῶν γραφῶν βίβλοις ἐντυχεῖν. Ἔπεμψε γοῦν ἀξιῶν ἄνδρας ἀποσταλῆναι, τοὺς ἑρμηνεύσοντας αὐτῷ τὸν νόμον, καὶ τοῦ γραφῆναι ταῦτα καλῶς τὴν ἐπιμέλειαν ἐπέταξεν οὐ τοῖς τυχοῦσιν· ἀλλὰ Δημήτριον τὸν Φαληρέα, καὶ Ἀνδρέαν, καὶ Ἀριστέα, τὸν μὲν παιδείᾳ τῶν καθ' ἑαυτὸν διαφέροντα Δημήτριον, τοὺς δὲ τὴν τοῦ σώματος αὐτοῦ φυλακὴν ἐγκεχειρισμένους, ἐπὶ τῆς ἐπιμελείας ταύτης ἔταξεν, οὐκ ἂν δήπου τοὺς νόμους καὶ τὴν πάτριον ἡμῶν φιλοσοφίαν ἐπιθυμήσας ἐκμαθεῖν, εἰ τῶν χρωμένων αὐτοῖς ἀνδρῶν κατεφρόνει, καὶ μὴ λίαν ἐθαύμαζεν.

5. Ἀπίωνα δὲ σχεδὸν ἐφ' ἑξῆς πάντες ἔλαθον οἱ τῶν προγόνων αὐτοῦ Μακεδόνων βασιλεῖς, οἰκειότατα πρὸς ἡμᾶς διατεθέντες. Καὶ γὰρ τρίτος Πτολεμαῖος, ὁ λεγόμενος Εὐεργέτης, κατασχὼν ὅλην Συρίαν κατὰ κράτος, οὐ τοῖς ἐν Αἰγύπτῳ θεοῖς χαριστήρια τῆς νίκης ἔθυσεν· ἀλλὰ παραγενόμενος εἰς Ἱεροσόλυμα, πολλάς, ὡς ἡμῖν νόμιμόν ἐστιν ἐπετέλεσε θυσίας τῷ θεῷ, καὶ ἀνέθηκεν ἀναθήματα τῆς νίκης ἄξια. Ὁ δὲ Φιλομήτωρ Πτολεμαῖος καὶ ἡ γυνὴ αὐτοῦ Κλεοπάτρα, τὴν βασιλείαν ὅλην τὴν ἑαυτῶν Ἰουδαίοις ἐπίστευσαν, καὶ στρατηγοὶ πάσης τῆς δυνάμεως ἦσαν Ὀνίας καὶ Δοσίθεος Ἰουδαῖοι· ὧν Ἀπίων σκώπτει τὰ ὀνόματα, δέον τὰ ἔργα θαυμάζειν καὶ μὴ λοιδορεῖν, ἀλλὰ χάριν αὐτοῖς ἔχειν, ὅτι διεσώσαντο τὴν Ἀλεξάνδρειαν, ἧς ὡς πολίτης ἀντιποιεῖται. Πολεμούντων γὰρ αὐτῶν τῇ βασιλίσσῃ Κλεοπάτρᾳ, καὶ κινδυνευόντων ἀπολέσθαι κακῶς, οὗτοι συμβάσεις ἐποίησαν, καὶ τῶν ἐμφυλίων κακῶν ἀπήλλαξαν. Ἀλλὰ "Μετὰ ταῦτα," φησίν, "Ὀνίας ἐπὶ τὴν πόλιν ἤγαγε στρατὸν ὀλίγον, ὄντος ἐκεῖ Θέρμου τοῦ παρὰ Ῥωμαίων πρεσβευτοῦ καὶ παρόντος." Ὀρθῶς δὲ ποιῶν φαίην ἂν καὶ μάλα δικαίως. Ὁ γὰρ Φύσκων ἐπικληθεὶς Πτολεμαῖος, ἀποθανόντος αὐτῷ τοῦ ἀδελφοῦ Πτολεμαίου τοῦ Φιλομήτορος, ἀπὸ Κυρήνης ἐξῆλθε Κλεοπάτραν ἐκβαλεῖν βουλόμενος τῆς βασι-

λείας *** [*Plurima hoc loco in graeco Josephi contextu desiderantur. Expletur haec lacuna in versionibus antiquis latinis his fere verbis:* Ptolemaeus enim cognomine Physcon, mortuo suo fratre Ptolemaeo Philometore, egressus est de Cyrene, eo animo, ut Cleopatram e regno ejiceret et filios regis, ut ipse regnum injuste sibimet applicaret; propter haec ergo Onias adversus eum bellum pro Cleopatra suscepit; et fidem, quam habuit circa reges, nequaquam in necessitate deseruit. Testis autem Deus justitiae ejus manifestus apparuit. Nam Physcon Ptolemaeus, cum adversum exercitum quidem Oniae pugnare praesumeret, omnes vero Judaeos in civitate positos cum filiis et uxoribus capiens nudos
473 atque vinctos elephantis subjecisset, ut ab eis conculcati deficerent, et ad hoc etiam bestias ipsas inebriasset, in contrarium, quae praeparaverat, evenere. Elephanti enim relinquentes sibi appositos Judaeos, impetu facto super amicos ejus, multos ex ipsis interemere. Et post haec Ptolemaeus quidem adspectum terribilem contemplatus est, prohibentem se, ut illis noceret hominibus. Concubina vero sua carissima, quam alii quidem Ithacam, alii vero Irenen denominant, supplicante, ne tantam impietatem perageret, ei concessit, et ex his, quae jam egerat vel acturus erat, poenitentiam egit. Unde recte hanc diem Judaei Alexandriae constituti, eo quod aperte a Deo salutem promeruere, celebrare noscuntur. Apion autem, omnium calumniator, etiam propter bellum adversus Physconem gestum, Judaeos accusare praesumsit, cum eos laudare debuerit. Is autem etiam

ultimae Cleopatrae reginae Alexandrinorum meminit, veluti nobis improperans, quoniam circa nos fuit ingrata: et non potius illam redarguere studuit, cui nihil omnino injustitiae et malorum operum defuit, vel circa generis necessarios, vel circa maritos suos, qui etiam dilexerint eam, vel in communi contra Romanos omnes, et benefactores suos imperatores, quae etiam sororem Arsinoën occidit in templo, nihil sibi nocentem. Peremit autem et fratrem insidiis; paternosque deos, et sepulcra progenitorum depopulata est. Percipiensque regnum a primo Caesare, ejus filio et successori rebellare praesumsit; Antoniumque corrumpens amatoriis rebus et patriae inimicum fecit, et infidelem circa suos amicos instituit, alios quidem genere regali spolians, alios autem demens ad mala gerenda compellens. Sed quid oportet amplius dicere, cum illum ipsum in navali certamine relinquens, id est maritum et parentem communium filiorum, tradere cum exercitu principatum, et se sequi coëgit? Novissime vero Alexandria a Caesare capta, ad hoc usque perducta est, ut saltem hinc sperare se judicaret, si posset ipse manu sua Judaeos perímere; eo quod circa omnes crudelis et infidelis exstaret. Putasne gloriandum nobis non esse, si, quemadmodum dicit Apion, famis tempore Judaeis triticum non est mensa? Sed illa quidem poenam subiit competentem. Nos autem maximo Caesare utimur teste auxilii atque fidei, quam circa eum contra Aegyptios gessimus; necnon et senatu ejusque consultis, et epistolis Caesaris Augusti, quibus nostra merita comprobantur. Has literas Apionem oporte-

bat inspicere, et secundum genera examinare testimonia sub Alexandro facta, et omnibus Ptolemaeis, et quae a senatu constituta sunt, necnon et maximis Romanis imperatoribus. Si vero Germanicus frumenta cunctis in Alexandria commorantibus metiri non potuit, hoc indicium est sterilitatis ac penuriae frumentorum, non accusatio Judaeorum. Quid enim sentiant omnes imperatores de Judaeis in Alexandria commorantibus, palam est; nam administratio tritici nihilo magis ab eis, quam ab aliis Alexandrinis, translata est. Maximam vero eis fidem olim a regibus datam conservare voluerunt, id est, fluminis custodiam, totiusque custodiae, nequaquam his rebus indignos esse judicantes.

6. Sed super hoc: 'quomodo ergo, inquit, si sunt cives, eosdem deos, quos Alexandrini, non colunt?' Cui respondeo: Quomodo etiam, cum vos sitis Aegyptii, inter alterutros praelio magno et sine foedere de re-
474 ligione contenditis? Aut certe propterea non
vos omnes dicimus Aegyptios, et neque communiter homines, quoniam bestias adversantes naturae nostrae colitis, multa diligentia nutrientes? Cum genus utique nostrorum unum atque idem esse videatur. Si autem in vobis Aegyptiis tantae differentiae opinionum sunt, quid miraris super his, qui aliunde in Alexandriam advenerunt, si, legibus a principio constitutis, circa talia permansere? Is autem seditionis causas nobis apponit; qui si cum veritate ob hoc accusat Judaeos in Alexandria constitutos, cur omnes non culpare possit, eo quod noscamur habere concordiam? Porro etiam seditionis auctores, quilibet in-

veniet Apionis similes Alexandrinorum fuisse cives. Donec enim Graeci fuere et Macedones hanc civitatem habentes, nullam seditionem adversus nos gessere, sed antiquis cessere solennitatibus. Cum vero multitudo Aegyptiorum crevisset inter eos, propter confusiones temporum, etiam hoc opus semper est additum. Nostrum vero genus permansit purum. Ipsi igitur molestiae hujus fuere principium, nequaquam populo Macedonicam habente constantiam, neque prudentiam Graecam, sed cunctis scilicet utentibus malis moribus Aegyptiorum, et antiquas inimicitias adversum nos exercentibus. E diverso namque factum est, quod nobis improperare praesumunt; nam cum plurimi eorum non opportune jus ejus civitatis obtineant, peregrinos vocantes eos, qui hoc privilegium ad omnes impetrasse noscuntur. Nam Aegyptiis neque regum quisquam videtur jus civitatis fuisse largitus, neque nunc quilibet imperatorum. Nos autem Alexander quidem introduxit, reges autem auxere, Romani vero semper custodire dignati sunt. Itaque derogare nobis Apion voluit, quia imperatorum non statuamus imagines, tanquam illis hoc ignorantibus, aut defensione Apionis indigentibus; cum potius debuerit admirari magnanimitatem modestiamque Romanorum, quoniam subjectos non cogunt patria jura transscendere: sed suscipiunt honores, sicut dare offerentes pium atque legitimum est. Non enim honoribus gratiam habent, qui ex necessitate et violentia conferuntur. Graecis itaque et aliis quibusdam bonum esse creditur imagines instituere. Denique et patrum et uxorum filiorumque figuras depingentes ex-

sultant, quidam vero etiam nihil sibi competentium sumunt imagines; alii vero et servos diligentes, hoc faciunt. Quid ergo mirum est, si etiam principibus ac dominis hunc honorem praebere videantur? Porro autem Legislator, non quasi prophetans Romanorum potentiam non honorandam, sed tamquam causam neque Deo neque hominibus utilem despiciens, et quoniam totius animati, multo magis Dei inanimati, probatur hoc inferius, interdixit imagines fabricare. Aliis autem honoribus post Deum colendos non prohibuit viros bonos, quibus nos et imperatores et pop. Rom. dignitatibus ampliamus. Facimus autem pro eis continua sacrificia; et non solum quotidianis diebus ex impensa communi omnium Judaeorum talia celebramus: verum cum nullas alias hostias ex communi, neque pro filiis peragamus, solis imperatoribus hunc honorem praecipuum pariter exhibemus, quem hominum nulli persolvimus. Haec itaque communiter satisfactio posita sit adversus Apionem pro his, quae de Alexandria dicta sunt.

475 7. Admiror autem etiam eos, qui ei hujusmodi fomitem praebuere, id est, Posidonium et Apollonium Molonis: quoniam accusant quidem nos, quare nos eosdem deos cum aliis non colimus. Mentientes autem pariter, et de nostro templo blasphemias componentes incongruas, non se putant impie agere: cum sit valde turpissimum liberis, qualibet ratione mentiri, multo magis de templo apud cunctos homines nominato, tanta sanctitate pollente. In hoc enim sacrario, Apion praesumsit edicere, 'asini caput collocasse Judaeos, et id colere, ac dignum facere tanta religione; et

hoc affirmat fuisse depalatum, dum Antiochus Epiphanes et exspoliasset templum, et illud caput invenisset ex auro compositum multis pecuniis dignum.' Ad hoc igitur primum quidem respondeo, quoniam Aegyptius, vel si aliquid tale apud nos fuisset, nequaquam debuerat increpare, cum non sit deterior asinus furonibus et hircis et aliis, qui sunt apud eos Dii. Deinde quomodo non intellexit, operibus increpatus, de incredibili suo mendacio? Legibus namque semper utimur iisdem, in quibus sine fine consistimus. Et cum varii casus nostram civitatem, sicut etiam aliorum, vexaverint, et Theos, ac Pompejus Magnus, ac Licinius Crassus, et ad novissimum Titus Caesar, bello vincentes obtinuerint templum, nihil huiusmodi illic invenere: sed purissimam pietatem, de qua nihil nobis est apud alios effabile. Quia vero Antiochus neque justam fecit templi depraedationem, sed egestate pecuniarum ad hoc accessit, cum non esset hostis, et socios insuper nos suos et amicos aggressus est, nec aliquid dignum derisione illic invenit. Multi et digni conscriptores super hoc quoque testantur: Polybius Megalopolitanus, Strabo Cappadox, Nicolaus Damascenus, Timagenes, et Castor chronographus, et Apollodorus; qui omnes dicunt, pecuniis indigentem Antiochum transgressum foedera Judaeorum et spoliasse templum auro argentoque plenum. Haec igitur Apion debuit respicere, nisi cor asini ipse potius habuisset, et impudentiam canis, qui apud ipsos assolet coli; neque enim extrinsecus alia ratiocinatione mentitus est. Nos itaque asinis neque honorem neque potestatem aliquam damus, sicut

Aegyptii crocodilis et aspidibus: quando eos, qui ab istis mordentur, et a crocodilis rapiuntur, felices et Deo dignos arbitrantur. Sed sunt apud nos asini, quod apud alios sapientes viros, onera sibimet imposita sustinentes. Etsi ad areas accedentes comedant, aut proposita non adimpleant, multas valde plagas accipiunt, quippe operibus et ad agriculturam rebus necessariis ministrantes. Sed aut omnium rudissimus fuit Apion ad componendum verba fallacia, aut certe ex rebus initia sumens, haec implere non valuit, quando nulla potest contra nos blasphemia provenire.

8. Alteram vero fabulam, derogatione nostra plenam, de Graecis apposuit; de quo dicere sat erit, quoniam, qui de pietate loqui praesumunt, oportet eos non ignorare, minus esse immundum per templa transire, quam sacerdotibus scelesta verba confingere. Isti vero magis studuere defendere sacrilegium regem, quam justa et veracia de nostris et de templo conscribere. Volentes enim Antiocho gratificari et perfidiam ac sacrilegium ejus tegere, quo circa gentem nostram est usus pro-
476 pter egestatem pecuniarum, detrahentes nobis etiam, quae in futuris essent, mentiti sunt. Propheta vero aliorum factus est Apion, et dixit 'Antiochum in templo invenisse lectum et hominem in eo jacentem, et appositam ei mensulam maritimis terrenisque volatilium dapibus plenam, et quod obstupuisset his homo. Illum vero mox adorasse regis ingressum, tanquam maximam sibi opem praebituri; ac procidentem ad ejus genus, extensa dextera poposcisse libertatem; et jubente rege, ut consideret, et diceret, quis esset, vel cur ibidem

habitaret, vel qnae esset causa ciborum ejus, tunc hominem cum gemitu et lacrymis lamentabiliter suam narrasse necessitatem. Ait, inquit, esse se Graecum: et dum peragraret provinciam parandi victus causa, correptum se subito ab alienigenis hominibus, atque deductum ad templum, et inclusum illic, et a nullo conspici, sed cuncta dapium apparatione saginari. Et primum quidem haec sibi inopinabilia beneficia visa attulisse laetitiam; deinde suspicionem, postea stuporem; postremum consulentem a ministris ad se accedentibus audisse legem ineffabilem Judaeorum, pro qua nutriebatur; et hoc illos facere singulis annis quodam tempore constituto. 'Et comprehendere quidem Graecum peregrinum, eumque annuo tempore saginare, et deductum ad quandam sylvam occidere quidem eum hominem, ejusque corpus sacrificare secundum suas solennitates, et gustare ex ejus visceribus, et jusjurandum facere in immolatione Graeci, ut inimicitias contra Graecos haberent: et tunc in quandam foveam reliqua hominis pereuntis abjicere.' Deinde refert, eum dixisse, 'paucos jam dies debitos sibimet superesse; atque rogasse, ut reveritus Graecorum deos, et superans in suo sanguine insidias Judaeorum, de malis eum circumstantibus deliberaret.' Hujusmodi ergo fabula non tantum omni tragoedia plenissima est, sed etiam crudeli impudentia redundat. Non tamen a sacrilegio privat Antiochum, sicut arbitrati sunt, qui haec ad illius gratiam conscripsere. Non enim praesumsit aliquid tale, ut ad templum accederet: sed sic invenit non sperans. Fuit ergo voluntatibus iniquis impius, et nihilomi-

nus sine Deo, quicquid jussit mendacii superfluitas, quam ex ipsa re cognoscere valde facillimum est. Non enim circa solos Graecos discordia legum esse dignoscitur, sed maxime adversus Aegyptios, et plurimos alios. Cujus enim regionis homines non contigit aliquando apud nos peregrinari? Ut adversus solos Graecos renovata conjuratione per effusionem sanguinis ageremus; vel quomodo possibile, ut ad has hostias omnes Judaei colligerentur, et tantis millibus ad gustandum viscera illa sufficerent, sicut ait Apion? Vel cur inventum hominem, quicunque fuit, — non enim suo nomine conscripsit, — aut quomodo eum in suam patriam rex non cum pompa deduxit? Dum posset, hoc faciens, ipse quidem putari pius, et Graecorum amator eximius, assumere vero contra Judaeorum odium auxilia magna cunctorum. Sed haec relinquo. Insensatos enim, non verbis, sed operibus, decet arguere. Sciunt igitur omnes, qui videre constructionem templi nostri, qualis fuerit, et intransgressibilem ejus purificationis integritatem. Quatuor enim porticus habuit in circuitu, et harum singulae propriam secundum legem habuere custodiam. In exteriorem itaque ingredi licentia fuit omnibus etiam alienis; mulieres tantummodo menstruatae transire prohibebantur. In secundam vero porticum cuncti Judaei ingrediebantur, eorumque conjuges, cum essent ab omni pollutione mundae. In tertiam, masculi Judaeorum mundi existentes atque purificati. In quartam autem sacerdotes, stolis induti sacerdotalibus. In adytum vero soli principes sacerdotum, propria stola circumamicti. Tanta vero est circa omnia

providentia pietatis, ut secundum quasdam horas sacerdotes ingredi constitutum sit. Mane etiam aperto templo oportebat facientes traditas hostias introire; et meridie rursus, dum clauderetur templum. Denique ne vas quidem aliquod portari licet in templum, sed erant in eo solummodo posita, altare, mensa, thuribulum, candelabrum, quae omnia in lege conscripta sunt. Etenim nihil amplius neque mysteriorum aliquorum ineffabilium agitur, neque intus ulla epulatio administratur. Haec enim, quae praedicta sunt, habent totius populi testimonium manifestum, rationemque gestorum. Licet enim sint tribus quatuor sacerdotum, et harum tribuum singulae habeant hominum plus, quam quinque millia, fit tamen observatio particulariter per dies certos; et his transactis, alii succedentes ad sacrificia veniunt; et congregati in templum mediante die a praecedentibus claves templi, et ad numerum vasa omnia percipiunt, nulla re, quae ad cibum aut potum attineat, in templum delata. Talia namque etiam ad altaria offerre prohibitum est, praeter illa, quae ad sacrificia praeparantur. Quid ergo Apionem dicimus, nisi, nihil horum examinantem, verba incredula protulisse? Sed turpe est, historiae veram notitiam si proferre grammaticus non possit. Et sciens templi nostri pietatem, hanc quidem praetermisit. Hominis autem Graeci comprehensionem finxit, pabulum ineffabile, et ciborum opulentissimam claritatem; et pravos ingredientes, ubi nec nobilissimos Judaeorum licet intrare, nisi fuerint sacerdotes. Haec ergo pessima est impietas, atque mendacium spontaneum, ad eorum se-

ductionem, qui noluerunt discutere veritatem. Per ea siquidem mala ineffabilia, quae praedicta sunt, nobis detrahere tentavere.

9. Rursumque tanquam piissimus deridet, adjiciens fabulae inania facta. Ait enim, illum retulisse, 'dum bellum Judaei contra Idumaeos haberent longo quodam tempore, ex aliqua civitate Idumaeorum, qui in ea Apollinem colebat venisse ad Judaeos, cujus hominis nomen dicitur Zabidus, deinde eis promisisse, traditurum se eis Apollinem Deum Dorensium; venturumque illum ad nostrum templum, si omnes adscenderent, et adducerent omnem multitudinem Judaeorum. Zabidum vero fecisse quoddam machinamentum ligneum, et circumposuisse sibi, et in eo tres ordines finxisse lucernarum, et ita ambulasse, ut procul stantibus appareret, quasi stella per terram iter agens] *τὴν πορείαν ποιουμένων. Τοὺς μὲν Ἰουδαίους ὑπὸ τοῦ παραδόξου τῆς θέας καταπεπληγμένους, πόῤῥω μὲν ὄντας ἡσυχίαν ἄγειν· τὸν δὲ Ζάβιδον ἐπὶ πολλῆς ἡσυχίας εἰς τὸν ναὸν παρελθεῖν, καὶ τὴν χρυσῆν ἀποσῦραι τοῦ κάνθωνος κεφαλὴν, — οὕτω γὰρ ἀστεϊζόμενος γέγραφεν, — καὶ πάλιν εἰς Δῶραν κατὰ τάχος ἀπελθεῖν.' Ἆρ' οὖν καὶ ἡμεῖς ἂν εἴποιμεν, ὅτι τὸν κάνθωνα, τουτέστιν ἑαυτὸν, Ἀπίων ἐπιφορτίζει, καὶ ποιεῖ τῆς μωρολογίας ἅμα καὶ τῶν ψευσμάτων κατάγομον· καὶ γὰρ*
478 *τόπους οὐκ ὄντας γράφει, καὶ πόλεις οὐκ εἰδὼς μετατίθησιν. Ἡ μὲν γὰρ Ἰδουμαία τῆς ἡμετέρας χώρας ἐστὶν ὅμορος, κατὰ Γάζαν κειμένη, καὶ Δῶρα ταύτης ἐστὶν οὐδεμία πόλις· τῆς μέντοι Φοινίκης παρὰ τὸ Καρμήλιον ὄρος Δῶρα πόλις ὀνομάζεται, μηδὲν ἐπικοινωνοῦσα τοῖς Ἀπίωνος φλυαρήμασι· τεσσάρων γὰρ ἡμερῶν ὁδὸν τῆς Ἰουδαίας ἀφέστηκεν. Τί δὲ ἡμῶν ἔτι κατηγορεῖ τὸ μὴ κοινοὺς ἔχειν τοῖς*

ἄλλοις θεοὺς, εἰ ῥᾳδίως οὕτως ἐπείσθησαν οἱ πατέρες ἡμῶν, ἥξειν τὸν Ἀπόλλωνα πρὸς αὐτοὺς, καὶ μετὰ τῶν ἄστρων ἐπὶ τῆς γῆς ᾠήθησαν ὁρᾶν αὐτὸν περιπατοῦντα; Λύχνον γὰρ οὐδέπω δῆλον ὅτι πρόσθεν ἑωράκασιν, οἱ τὰς τοσαύτας καὶ τηλικαύτας λυχνοκαΐας ἐπιτελοῦντες. Ἀλλ' οὐδέ τις αὐτῷ βαδίζοντι κατὰ τὴν χώραν τῶν τοσούτων μυριάδων ὑπήντησεν· ἔρημα δὲ καὶ τὰ τείχη φυλάκων εὗρε πολέμου συνεστηκότος. Ἐῶ τὰ ἄλλα. Τοῦ ναοῦ δὲ αἱ θύραι τὸ μὲν ὕψος ἦσαν ἑπτὰ πηχῶν, εἴκοσι δὲ τὸ πλάτος. Κατάχρυσοι δὲ πᾶσαι καὶ μικροῦ δεῖν σφυρήλατοι. Ταύτας ἔκλειον οὐκ ἐλάττους ὄντες ἄνδρες διακόσιοι καθ' ἑκάστην ἡμέραν, καὶ τὸ καταλιπεῖν ἠνοιγμένας ἦν ἀθέμιτον· ῥᾳδίως οὖν αὐτὰς ὁ λυχνοφόρος ἐκεῖνος ἠνέῳξεν ἂν ἀνοίξειν οἰόμενος, καὶ τὴν τοῦ κάνθωνος, ὡς ᾤετο, κεφαλὴν ἔχων. Πότερον οὖν αὐτὴν πάλιν ὡς ἡμᾶς ἀνέστρεψεν, ἢ λαβὼν Ἀπίων αὐτὴν εἰςεκόμισεν, ἵν' Ἀντίοχος εὕρῃ πρὸς δευτέραν Ἀπίωνι μυθολογίαν.

10. Καταψεύδεται δὲ καὶ ὅρκον ἡμῶν, ὡς ὀμνυόντων τὸν θεὸν, τὸν ποιήσαντα τὸν οὐρανὸν καὶ τὴν γῆν καὶ τὴν θάλασσαν, μηδενὶ εὐνοήσειν ἀλλοφύλῳ, μάλιστα δὲ Ἕλλησιν. Ἔδει δὲ καταψευδόμενον ἅπαξ εἰπεῖν, μηδενὶ εὐνοήσειν ἀλλοφύλῳ, μάλιστα δ' Αἰγυπτίοις· οὕτω γὰρ ἂν τοῖς ἐξ ἀρχῆς αὐτοῦ πλάσμασιν ἥρμοττε τὰ περὶ τὸν ὅρκον, εἴπερ ἦσαν ὑπὸ Αἰγυπτίων τῶν συγγενῶν οἱ πατέρες ἡμῶν, οὐχὶ διὰ πονηρίαν, ἀλλ' ἐπὶ συμφοραῖς ἐξεληλαμένοι. Τῶν Ἑλλήνων δὲ πλέον τοῖς τόποις, ἢ τοῖς ἐπιτηδεύμασιν, ἀφεστήκαμεν, ὥστε μηδεμίαν ἡμῖν εἶναι πρὸς αὐτοῖς ἔχθραν, μηδὲ ζηλοτυπίαν. Τὸ ἐναντίον μέντοι πολλοὶ παρ' αὐτῶν εἰς τοὺς ἡμετέρους νόμους συνέβησαν εἰςελθεῖν, καί. τινες μὲν ἔμειναν, εἰσὶ δὲ, οἳ, τὴν καρτερίαν οὐχ ὑπομείναντες, πάλιν ἀπέστησαν. Καὶ τοῦτον οὐδεὶς πώποτε τὸν ὅρκον εἶπεν ἀκοῦσαι παρ' ἡμῖν ὠμοσμένον, ἀλλὰ μό-

νος Ἀπίων, ὡς ἔοικεν, ἤκουσεν· αὐτὸς γὰρ ὁ συνθεὶς αὐτὸν ἦν.

11. Σφόδρα τοίνυν τῆς πολλῆς συνέσεως, καὶ ἐπὶ τῷ μέλλοντι ῥηθήσεσθαι θαυμάζειν ἄξιόν ἐστιν Ἀπίωνα, τεκμήριον γὰρ εἶναι, φησὶ, τοῦ μήτε νόμοις ἡμᾶς χρῆσθαι δικαίοις, μήτε τὸν θεὸν εὐσεβεῖν, ὡς προςῆκε, τὸ μὴ ἄρχειν, δουλεύειν δὲ μᾶλλον ἔθνεσι καὶ ἄλλοτε ἄλλοις, καὶ τὸ κεχρῆσθαι συμφοραῖς τισι περὶ τὴν πόλιν, αὐτῶν δηλονότι πόλεως ἡγεμονικωτάτης ἐκ τῶν ἄνωθεν ἄρχειν, ἀλλὰ μὴ Ῥωμαίοις δουλεύειν συνηθισμένων· καίτοι τούτων ἄν τις ἀπόσχοιτο τοιαύτης μεγαλοψυχίας. Τῶν μὲν γὰρ ἄλλων οὐκ ἔστιν ὅςτις ἀνθρώπων οὐχ ἱκανῶς καθ' αὑτοῦ φαίη τοῦτον ὑπ' Ἀπίωνος λελέχθαι τὸν λόγον· ὀλίγοις μὲν γὰρ ὑπῆρξεν ἐφ' ἡγεμονίας διὰ καιροπτίας γενέσθαι, καὶ τούτους αἱ μεταβολαὶ πάλιν ἄλλοις δουλεύειν ὑπεζεύξαν. Τὸ πλεῖστον δὲ φῦλον ἄλλων ὑπακήκοεν πολλάκις. Αἰγύπτιοι δ' ἄρα μόνοι διὰ τὸ καταφυγεῖν, ὡς φασὶν, εἰς τὴν χώραν αὐτῶν τοὺς θεοὺς, καὶ σωθῆναι μεταβαλόντας εἰς μορφὰς θηρίων, ἐξαίρετον γέρας εὕροντο τὸ μηδενὶ δουλεύειν τῶν τῆς Ἀσίας ἢ τῆς Εὐρώπης κρατησάντων· οἳ μίαν ἡμέραν ἐκ τοῦ παντὸς αἰῶνος ἐλευθερίας οὐ τυχόντες φαίνονται, ἀλλ' οὐδὲ παρὰ τῶν οἰκοδεσποτῶν. Ὅντινα μὲν γὰρ αὐτοῖς ἐχρήσαντο Πέρσαι τρόπον, οὐχ ἅπαξ μόνον, ἀλλὰ καὶ πολλάκις πορθοῦντες τὰς πόλεις, ἱερὰ κατασκάπτοντες, τοὺς παρ' αὐτῶν νομιζομένους θεοὺς κατασφάζοντες, οὐκ ἂν ὀνειδίσαιμι. Μιμεῖσθαι γὰρ οὐ προςῆκε τὴν Ἀπίωνος ἀπαιδευσίαν, ὃς οὔτε τὰς Ἀθηναίων τύχας, οὔτε τὰς Λακεδαιμονίων ἐνενόησεν, ὧν τοὺς μὲν ἀνδρειοτάτους, τοὺς δὲ εὐσεβεστάτους τῶν Ἑλλήνων ἅπαντες λέγουσιν. Ἐῶ βασιλέας τοὺς ἐπ' εὐσεβείᾳ διαβοηθέντας, ὧν ἕνα Κροῖσον, οἵαις ἐχρήσατο συμφοραῖς βίου. Ἐῶ τὴν καταπρησθεῖσαν Ἀθηναίων ἀκρόπολιν, τὸν ἐν Ἐφέσῳ ναὸν, τὸν ἐν Δελφοῖς, ἄλλους μυρίους

καὶ οὐδεὶς ὠνείδισε ταῦτα τοῖς παθοῦσιν, ἀλλὰ τοῖς δράσασι. Καινὸς δὲ κατήγορος ἡμῶν Ἀπίων εὑρέθη, τῶν ἰδίων αὐτοῦ περὶ τὴν Αἴγυπτον κακῶν ἐκλαθόμενος. Ἀλλὰ Σέσωστρις αὐτὸν ὁ μυθευόμενος Αἰγύπτου βασιλεὺς ἐτύφλωσεν· ἡμεῖς δὲ τοὺς ἡμετέρους οὐκ ἂν εἴποιμεν βασιλέας, Δαυΐδην καὶ Σολομῶνα, πολλὰ χειρωσαμένους ἔθνη. Τούτους μὲν οὖν παραλίπωμεν. Τὰ δὲ γνώριμα πᾶσιν Ἀπίων ἠγνόηκεν· ὅτι Περσῶν καὶ μετ᾽ ἐκείνους ἡγουμένων, τῆς Ἀσίας Μακεδόνων, Αἰγύπτιοι μὲν ἐδούλευον ἀνδραπόδων οὐδὲν διαφέροντες, ἡμεῖς δὲ ὄντες ἐλεύθεροι προσέτι καὶ τῶν πέριξ πόλεων ἤρχομεν ἔτη σχεδὸν εἴκοσί που καὶ ἑκατὸν, μέχρι Μάγνου Πομπηΐου, καὶ πάντων ἐκπολεμηθέντων πρὸς Ῥωμαίων τῶν πανταχοῦ βασιλέων, μόνοι διὰ πίστιν οἱ παρ᾽ ἡμῖν σύμμαχοι καὶ φίλοι διεφυλάχθησαν.

12. *„Ἀλλὰ θαυμαστοὺς ἄνδρας οὐ παρεσχήκαμεν, οἷον τεχνῶν τινων εὑρετὰς, ἢ σοφίᾳ διαφέροντας.“ Καὶ καταριθμεῖ Σωκράτην, καὶ Ζήνωνα, καὶ Κλεάνθην, καὶ τοιούτους τινάς. Εἶτα τὸ θαυμασιώτατον τῶν εἰρημένων αὐτὸς ἑαυτὸν προστίθησι, καὶ μακαρίζει τὴν Ἀλεξάνδρειαν, ὅτι τοιοῦτον ἔχει πολίτην. Ἔδει γὰρ αὐτῷ μάρτυρος ἑαυτοῦ. Τοῖς μὲν γὰρ ἄλλοις ἅπασιν ὀχλαγωγὸς ἐδόκει πονηρὸς εἶναι, καὶ τῷ βίῳ καὶ τῷ λόγῳ διεφθαρμένος· ὥστε εἰκότως ἐλεῆσαι τις ἂν τὴν Ἀλεξάνδρειαν, εἴπερ ἐπὶ τούτῳ μέγα ἐφρόνει. Περὶ δὲ τῶν παρ᾽ ἡμῖν ἀνδρῶν γεγονότων, οὐδενὸς ἧττον ἐπαίνου τυγχάνειν ἀξίων, ἴσασιν οἱ ταῖς ἡμετέραις ἀρχαιολογίαις ἐντυγχάνοντες.*

13. *Τὰ δὲ λοιπὰ τῶν ἐν τῇ κατηγορίᾳ γεγραμμένων ἄξιον ἦν ἴσως ἀναπολόγητα παραλιπεῖν, ἵν᾽ αὐτὸς αὐτοῦ καὶ τῶν ἄλλων Αἰγυπτίων ᾖ ὁ κατήγορων. Ἐγκαλεῖ γὰρ, ὅτι ‚ζῶα θύομεν, καὶ χοῖρον οὐκ ἐσθίομεν, καὶ τὴν τῶν αἰδοίων χλευάζει περιτομήν.‘ Τὸ μὲν οὖν περὶ τῆς τῶν ἡμέρων ζώων ἀναι-*

ρίσεως κοινόν ἐστι καὶ πρὸς τοὺς ἄλλους ἀνθρώπους ἅπαντας. Ἀπίων δὲ 'τοῖς θύουσιν ἐγκαλῶν,' αὐτὸν ἐξήλεγξεν ὄντα τὸ γένος Αἰγύπτιον· οὐ γὰρ ἂν Ἕλλην ὢν ἢ Μακεδὼν ἐχαλέπαινεν· οὗτοι γὰρ εὔχονται θύειν ἑκατόμβας τοῖς θεοῖς, καὶ χρῶνται τοῖς ἱερείοις πρὸς εὐωχίαν. Καὶ οὐ διὰ τοῦτο συμβέβηκεν 'ἐρημοῦσθαι τὸν κόσμον τῶν βοσκημάτων,' ὅπερ Ἀπίων ἔδεισεν. Εἰ μέντοι τοῖς Αἰγυπτίων ἔθεσιν ἠκολούθουν ἅπαντες, ἠρήμωτο μὲν ἂν ὁ κόσμος τῶν ἀνθρώπων, τῶν ἀγριωτάτων δὲ θηρίων ἐπληθύνθη, ἃ θεοὺς οὗτοι νομίζοντες ἐπιμελῶς ἐκτρέφουσι. Καὶ μὴν εἴ τις αὐτὸν ἤρετο, τῶν πάντων Αἰγυπτίων τίνας εἶναι καὶ σοφωτάτους καὶ θεοσεβεῖς νομίζει, πάντως ἂν ὡμολόγησε τοὺς ἱερεῖς. Δύο γὰρ αὐτούς φασιν ὑπὸ τῶν βασιλέων ἐξ ἀρχῆς ταῦτα προςτετάχθαι τήν τε τῶν θεῶν θεραπείαν, καὶ τῆς σοφίας τὴν ἐπιμέλειαν. Ἐκεῖνοι τοίνυν ἅπαντες καὶ περιτέμνονται, καὶ χοιρείων ἀπέχονται βρωμάτων. Οὐ μὴν οὐδὲ τῶν ἄλλων Αἰγυπτίων οὐδὲ εἷς συνθύει τοῖς θεοῖς. Ἆρ' οὖν τυφλὸς ἦν τὸν νοῦν Ἀπίων ὑπὲρ Αἰγυπτίων ἡμᾶς λοιδορεῖν συνθέμενος, ἐκείνων δὲ κατηγορῶν, οἵ γε μὴ μόνον χρῶνται τοῖς ὑπὸ τούτου λοιδορουμένοις ἔθεσιν, ἀλλὰ καὶ τοὺς ἄλλους ἐδίδαξαν περιτέμνεσθαι, καθάπερ εἴρηκεν Ἡρόδοτος. Ὅθεν εἰκότως μοι δοκεῖ τῆς εἰς τοὺς πατρίους αὐτοῦ νόμους βλασφημίας δοῦναι δίκην Ἀπίων τὴν πρέπουσαν. Περιετμήθη γὰρ ἐξ ἀνάγκης, ἑλκώσεως αὐτῷ περὶ τὸ αἰδοῖον γενομένης· καὶ μηδὲν ὠφεληθεὶς ὑπὸ τῆς περιτομῆς, ἀλλὰ σηπόμενος ἐν δειναῖς ὀδύναις ἀπέθανεν. Δεῖ γὰρ τοὺς εὐφρονοῦντας τοῖς μὲν οἰκείοις νόμοις περὶ τὴν εὐσέβειαν ἀκριβῶς ἐμμένειν, τοὺς δὲ τῶν ἄλλων μὴ λοιδορεῖν. Ὁ δὲ τούτους μὲν ἔφυγε, τῶν ἡμετέρων δὲ κατεψεύσατο. Τοῦτο μὲν Ἀπίωνι τοῦ βίου τὸ τέλος ἐγένετο, καὶ τοῦτο παρ' ἡμῶν ἐνταῦθα τὸ πέρας ἔστω τοῦ λόγου.

14. Ἐπειδὴ καὶ Ἀπολλώνιος ὁ Μόλων, καὶ Λυσίμαχος, καί τινες ἄλλοι τὰ μὲν ὑπ' ἀγνοίας, τὸ πλεῖστον δὲ κατὰ δυςμένειαν περί τε τοῦ νομοθετήσαντος ἡμῖν Μωϋσέως, καὶ περὶ τῶν νόμων πεποίηνται λόγους οὔτε δικαίους, οὔτε ἀληθεῖς, τὸν μὲν ὡς γόητα καὶ ἀπατεῶνα διαβάλλοντες, τοὺς νόμους δὲ κακίας ἡμῖν καὶ οὐδεμιᾶς ἀρετῆς φάσκοντες εἶναι διδασκάλους, βούλομαι συντόμως καὶ περὶ τῆς ὅλης ἡμῶν καταστάσεως τοῦ πολιτεύματος, καὶ περὶ τῶν κατὰ μέρος, ὡς ἂν ὦ δυνατὸς, εἰπεῖν. Οἶμαι γὰρ ἔσεσθαι φανερὸν, ὅτι καὶ πρὸς εὐσέβειαν, καὶ πρὸς κοινωνίαν τὴν μετ' ἀλλήλων, καὶ πρὸς τὴν καθόλου φιλανθρωπίαν, ἔτι δὲ πρὸς δικαιοσύνην καὶ τὴν ἐν τοῖς πόνοις καρτερίαν, καὶ θανάτου περιφρόνησιν ἄριστα κειμένους ἔχομεν τοὺς νόμους. Παρακαλῶ δὲ τοὺς ἐντευξομένους τῇ γραφῇ, μὴ μετὰ φθόνου ποιεῖσθαι τὴν ἀνάγνωσιν. Οὐ γὰρ ἐγκώμιον ἡμῶν αὐτῶν προειλόμην συγγράφειν, ἀλλὰ πολλὰ καὶ ψευδῆ κατηγορημένοις ἡμῖν ταύτην ἀπολογίαν δικαιοτάτην εἶναι νομίζω, τὴν ἀπὸ τῶν νόμων, καθ' οὓς ζῶντες διατελοῦμεν. Ἄλλως τε καὶ τὴν κατηγορίαν ὁ Ἀπολλώνιος οὐκ ἀθρόαν, ὥςπερ ὁ Ἀπίων, ἔταξεν, ἀλλὰ σποράδην καὶ διὰ πάσης τῆς συγγραφῆς. Ποτὲ μὲν ὡς 'ἀθέους καὶ μισανθρώπους' λοιδορεῖ, ποτὲ δ' αὖ 'δειλίαν' ἡμῖν ὀνειδίζει· καὶ τὸ ἔμπαλιν ἔστιν ὅπου 'τόλμαν κατηγορεῖ καὶ ἀπόνοιαν·' λέγει δὲ καὶ 'ἀφυεστάτους εἶναι τῶν βαρβάρων· καὶ διὰ τοῦτο μηδὲν εἰς τὸν βίον εὕρημα συμβεβλῆσθαι μόνους.' Ταῦτα δὲ πάντα διελεγχθήσεσθαι νομίζω σαφῶς, εἰ τὰ ἐναντία τῶν εἰρημένων φανείη, διὰ τῶν νόμων ἡμῖν προςτεταγμένα, καὶ πραττόμενα μετὰ πάσης ἀκριβείας 181
ὑφ' ἡμῶν. Εἰ δ' ἄρα βιασθείην μνησθῆναι τῶν παρ' ἑτέροις ὑπεναντίως νενομισμένων, τούτου δίκαιοι τὴν αἰτίαν ἔχειν εἰσὶν, οἱ τὰ παρ' ἡμῖν ὡς χείρω παραβάλλειν ἀξιοῦντες. Οἷς οὐδέτερον ἀπολειφθήσεσθαι νομίζω λέγειν, οὔθ' ὡς οὐχὶ τούτους ἔχομεν

τοὺς νόμους, ὧν ἐγὼ παραθήσομαι τοὺς κεφαλαιωδεστάτους, οὔθ᾽ ὡς οὐχὶ μάλιστα πάντων ἐμμένομεν τοῖς ἑαυτῶν νόμοις.

15. *Μικρὸν οὖν ἀναλαβὼν τὸν λόγον, τοῦτ᾽ ἂν εἴποιμι πρῶτον, ὅτι τῶν ἀνόμως καὶ ἀτάκτως βιούντων, οἱ τάξεως καὶ νόμου κοινωνίας ἐπιθυμηταὶ γενόμενοι, καὶ πρῶτοι κατάρξαντας, εἰκότως ἂν ἡμερότητι καὶ φύσεως ἀρετῇ διενεγκεῖν μαρτυρηθεῖεν. Ἀμέλει πειρῶνται τὰ παρ᾽ ἑαυτοῖς ἕκαστοι πρὸς τὸ ἀρχαιότατον ἀνάγειν, ἵνα μὴ μιμεῖσθαι δόξωσιν ἑτέρους, ἀλλ᾽ αὐτοὶ τοῦ ζῆν νομίμως ἄλλοις ὑφηγήσασθαι. Τούτων δὲ τοῦτον ἐχόντων τὸν τρόπον, ἀρετὴ μὲν ἐστι νομοθέτου, τὰ βέλτιστα συνιδεῖν, καὶ πεῖσαι τοὺς χρησομένους περὶ τῶν ὑπ᾽ αὐτῷ τιθεμένων· πλήθους δὲ, τὸ πᾶσι τοῖς δόξασιν ἐμμεῖναι, καὶ μήτε εὐτυχίαις μήτε συμφοραῖς αὐτῶν μηδὲν μεταβάλλειν. Φημὶ τοίνυν, τὸν ἡμέτερον νομοθέτην τῶν ὁπουδηποτοῦν μνημονευομένων νομοθετῶν προάγειν ἀρχαιότητι. Λυκοῦργοι γὰρ καὶ Σόλωνες, καὶ Ζάλευκος ὁ τῶν Λοκρῶν, καὶ πάντες οἱ θαυμαζόμενοι παρὰ τοῖς Ἕλλησιν, ὡς ἐχθὲς δὴ καὶ πρώην, ὡς πρὸς ἐκεῖνον παραβαλλόμενοι, φαίνονται γεγονότες, ὅπου γε μηδ᾽ αὐτὸ τὸ ὄνομα πάλαι ἐγιγνώσκετο τοῦ νόμου παρὰ τοῖς Ἕλλησι· καὶ μάρτυς Ὅμηρος οὐδαμοῦ τῆς ποιήσεως αὐτῷ χρησάμενος. Οὐδὲ γὰρ ἦν κατὰ τοῦτον, ἀλλὰ γνώμαις ἀρίστοις τὰ πλήθη διῳκεῖτο, καὶ προστάγμασι τῶν βασιλέων. Ἀφ᾽ οὗ καὶ μέχρι πολλοῦ διέμειναν ἔθεσιν ἀγράφοις χρώμενοι, καὶ πολλὰ τούτων ἀεὶ πρὸς τὸ συντυγχάνον μετατιθέντες. Ὁ δὲ ἡμέτερος νομοθέτης, ἀρχαιότατος γεγονὼς, τοῦτο γὰρ δήπουθεν ὁμολογεῖται καὶ παρὰ τοῖς πάντα καθ᾽ ἡμῶν λέγουσιν, ἑαυτόν τε παρέσχεν ἄριστον τοῖς πλήθεσιν ἡγεμόνα καὶ σύμβουλον· τήν τε κατασκευὴν αὐτοῖς ὅλην τοῦ βίου τῷ νόμῳ παραλαβὼν, ἔπεισεν παραδέξασθαι, καὶ βοβαιοτάτην ἴσασι φυλαχθῆναι παρεσκεύασεν.*

16. Ἴδωμεν δὲ τῶν ἔργων αὐτοῦ τὸ πρῶτον μεγαλεῖον. Ἐκεῖνος γὰρ τοὺς προγόνους ἡμῶν, ἐπείπερ ἔδοξεν αὐτοῖς τὴν Αἴγυπτον ἐκλιποῦσιν ἐπὶ τὴν πάτριον γῆν ἐπανιέναι, πολλὰς τὰς μυριάδας παραλαβὼν, ἐκ πολλῶν καὶ ἀμηχάνων διέσωσεν εἰς ἀσφάλειαν· καὶ γὰρ τὴν ἄνυδρον αὐτοὺς καὶ πολλὴν ψάμμον ἔδει διοδοιπορῆσαι, καὶ νικῆσαι πολέμους, καὶ τέκνα καὶ γυναῖκας καὶ λείαν ὁμοῦ σώζειν μαχομένους. Ἐν οἷς ἅπασι καὶ στρατηγὸς ἄριστος ἐγένετο, καὶ σύμβουλος συνετώτατος, καὶ πάντων κηδεμὼν ἀληθέστατος. Ἅπαν δὲ τὸ πλῆθος εἰς ἑαυτὸν ἀνηρτῆσθαι παρεσκεύασεν, καὶ περὶ παντὸς ἔχων πεισθέντας αὐτοὺς τοῦ κελευσθέντος, εἰς οὐδεμίαν οἰκείαν ἔλαβε ταῦτα πλεονεξίαν. Ἐν ᾧ μάλιστα τῷ καιρῷ δυνάμεις μὲν αὐτοῖς περιβάλλονται καὶ τυραννίδας οἱ προεστηκότες, ἐθίζουσι δὲ τὰ πλήθη μετὰ πολλῆς ἀνομίας ζῆν, ἐν τούτῳ τῆς ἐξουσίας ἐκεῖνος καθεστηκὼς, τὸ ἐναντίον ᾠήθη δεῖν εὐσεβεῖν, καὶ πολλὴν εὔνοιαν τοῖς λαοῖς ἐμπαρασχεῖν· οὕτως αὐτός τε τὰ μάλιστα τὴν ἀρετὴν ἐπιδείξειν τὴν αὐτοῦ νομίζων, καὶ σωτηρίαν τοῖς αὐτὸν ἡγεμόνα ποιουμένοις βεβαιοτάτην παρέξειν. Καλῆς οὖν αὐτῷ προαιρέσεως καὶ πράξεων μεγάλων ἐπιτυγχανομένων, εἰκότως ἐνομίζομεν ἡγεμόνα τε καὶ σύμβουλον θεῖον ἔχειν· καὶ πείσας πρότερον ἑαυτὸν, ὅτι κατὰ τὴν ἐκείνου βούλησιν ἅπαντα πράττει καὶ διανοεῖται, ταύτην ᾤετο δεῖν πρὸ παντὸς ἐμποιῆσαι τὴν ὑπόληψιν τοῖς πλήθεσιν. Οἱ γὰρ πιστεύσαντες ἐπισκοπεῖν θεὸν τοὺς ἑαυτῶν βίους, οὐθὲν ἀνέχονται ἐξαμαρτεῖν. Τοιοῦτος μὲν δή τις αὐτὸς ἡμῶν ὁ νομοθέτης, οὐ γόης, οὐδ᾽ ἀπατεὼν, ἅπερ λοιδοροῦντες λέγουσιν ἀδίκως· ἀλλ᾽ οἷον παρὰ τοῖς Ἕλλησιν αὐχοῦσιν τὸν Μίνω γεγονέναι, καὶ μετ᾽ αὐτὸν τοὺς ἄλλους νομοθέτας. Οἱ μὲν γὰρ αὐτῶν τοὺς νόμους ὑποτίθενται· ὁ δέ γε Μίνως ἔλεγεν, ὅτι εἰς τὸν Ἀπόλλω καὶ τὸ Δελφικὸν αὐτοῦ μαντεῖον τὰς τῶν νόμων μαντείας ἀνέφερεν, ἤτοι τὸ

482

ἀληθὲς οὕτως ἔχειν νομίζοντες, ἢ πείσειν ῥᾷον ὑπολαμβάνοντες. Τίς δὲ ἦν ὁ μάλιστα κατορθώσας τοὺς νόμους, καὶ τίς ὁ δικαιότατα περὶ τῆς τοῦ θεοῦ πίστεως ἐπιτυχὼν, πάρεστιν ἐξ αὐτῶν κατανοεῖν τῶν νόμων ἀντιπαραβάλλοντας. Ἤδη γὰρ περὶ τούτων λεκτέον. Οὐκοῦν ἄπειροι μὲν αἱ κατὰ μέρος τῶν ἐθῶν καὶ τῶν νόμων παρὰ τοῖς ἅπασιν ἀνθρώποις διαφοραὶ, οὕτω δὲ ταύτας κεφαλαιωδῶς ἂν ἐπίοι τις. Οἱ μὲν γὰρ μοναρχίαις, οἱ δὲ ταῖς ὀλίγων δυναστείαις, ἄλλοι δὲ τοῖς πλήθεσιν ἐπέτρεψαν τὴν ἐξουσίαν τῶν πολιτευμάτων. Ὁ δὲ ἡμέτερος νομοθέτης εἰς μὲν τούτων οὐδοτιοῦν ἀπεῖδεν· ὡς δ' ἄν τις εἴποι βιασάμενος τὸν λόγον, θεοκρατίαν ἀπέδειξε τὸ πολίτευμα, θεῷ τὴν ἀρχὴν καὶ τὸ κράτος ἀναθεὶς, καὶ πείσας εἰς ἐκεῖνον ἅπαντας ἀφορᾷν, ὡς αἴτιον μὲν ἁπάντων ὄντα τῶν ἀγαθῶν, ἃ κοινῇ τε πᾶσιν ἀνθρώποις ἰδίᾳ τε ἑκάστοις ὑπάρχει, καὶ ὅσον ἔτυχον αὐτοὶ δεηθέντες ἐν ἀμηχάνοις· λαθεῖν δὲ τὴν ἐκείνου γνώμην οὐκ ἐνὸν, οὔτε τι τῶν πραττομένων οὐδὲν, οὔθ' ὧν ἄν τις παρ' αὐτῷ διανοηθείη. Ἀλλ' αὐτὸν ἀπέφηνε καὶ ἀγένητον, καὶ πρὸς τὸν αἴδιον χρόνον ἀναλλοίωτον, πάσης ἰδέας θνητῆς κάλλει διαφέροντα, καὶ δυνάμει μὲν ἡμῖν γνώριμον, ὁποῖος δὲ κατ' οὐσίαν ἐστὶν ἄγνωστον. Ταῦτα περὶ θεοῦ φρονεῖν οἱ σοφώτατοι παρ' Ἕλλησιν ὅτι μὲν ἐδιδάχθησαν, ἐκείνου τὰς ἀρχὰς παρασχόντος, ἐῶ νῦν λέγειν. Ὅτι δ' ἐστὶ καλὰ καὶ πρέποντα τῇ τοῦ θεοῦ φύσει καὶ μεγαλειότητι, σφόδρα μεμαρτυρήκασι. Καὶ γὰρ Πυθαγόρας καὶ Ἀναξαγόρας καὶ Πλάτων, καὶ οἱ μετ' ἐκείνους ἀπὸ τῆς Στοᾶς φιλόσοφοι, καὶ μι-
483 κροῦ δεῖν ἅπαντες οὕτω φαίνονται, περὶ τῆς τοῦ θεοῦ φύσεως πεφρονηκότες. Ἀλλ' οἱ μὲν πρὸς ὀλίγους φιλοσοφοῦντες εἰς πλήθη δόξαις προκατειλημμένα, τὴν ἀλήθειαν τοῦ δόγματος ἐξενεγκεῖν οὐκ ἐτόλμησαν. Ὁ δὲ ἡμέτερος νομοθέτης, ἅτε δὴ τὰ ἔργα παρέχων τοῖς νόμοις σύμφωνα, οὐ μόνον τοὺς

καθ᾽ αὐτὸν ἔπεισεν, ἀλλὰ καὶ τοῖς ἐξ ἐκείνων ἀεὶ γενησομένοις τὴν περὶ τοῦ θεοῦ πίστιν ἐνέφυσεν ἀμετακίνητον. Αἴτιον δὲ, ὅτι καὶ τῷ τρόπῳ τῆς νομοθεσίας πρὸς τὸ χρήσιμον πάντων ἀεὶ πολὺ διήνεγκεν· οὐ γὰρ μέρος τῆς ἀρετῆς ἐποίησε τὴν εὐσέβειαν, ἀλλὰ ταύτης τὰ μέρη τὰ ἄλλα συνεῖδε καὶ κατέστησε· λέγω δὲ τὴν δικαιοσύνην, τὴν καρτερίαν, τὴν σωφροσύνην, τὴν τῶν πολιτῶν πρὸς ἀλλήλους ἐν ἅπασι συμφωνίαν. Ἅπασαι γὰρ αἱ πράξεις καὶ διατριβαὶ καὶ λόγοι πάντες ἐπὶ τὴν πρὸς θεὸν ἡμῖν εὐσέβειαν ἔχουσι τὴν ἀναφοράν· οὐδὲν γὰρ τούτων ἀνεξέταστον οὐδὲ ἀόριστον παρέλιπε. Δύο μὲν γάρ εἰσιν ἁπάσης παιδείας τρόποι καὶ τῆς περὶ τὰ ἔθη κατασκευῆς, ὧν ὁ μὲν λόγων διδασκαλικὸς, ἕτερος δὲ ὁ διὰ τῆς ἀσκήσεως τῶν ἐθῶν. Οἱ μὲν οὖν ἄλλοι νομοθέται ταῖς γνώμαις διέστησαν, καὶ τὸν ἕτερον αὐτῶν, ὃν ἔδοξαν ἕκαστοι ἑλόμενοι, τὸν ἄλλον παρέλιπον. Οἷον Λακεδαιμόνιοι μὲν καὶ Κρῆτες ἔθεσιν ἐπαίδευον, οὐ λόγοις, Ἀθηναῖοι δὲ καὶ σχεδὸν οἱ ἄλλοι πάντες Ἕλληνες, ἃ μὲν χρὴ πράττειν, ἢ μὴ, προςέτασσον διὰ τῶν νόμων, τοῦ δὲ πρὸς αὐτὰ διὰ τῶν ἔργων ἐθίζειν ὠλιγώρησαν.

17. Ὁ δὲ ἡμέτερος νομοθέτης ἄμφω ταῦτα συνήρμοσε κατὰ πολλὴν ἐπιμέλειαν· οὔτε γὰρ κωφὴν ἀπέλιπε τὴν τῶν ἐθῶν ἄσκησιν, οὔτε τὸν ἐκ τοῦ λόγου νόμον ἄπρακτον εἴασεν. Ἀλλ᾽ εὐθὺς ἀπὸ τῆς πρώτης ἀρξάμενος τροφῆς, καὶ τῆς κατὰ τὸ οἰκεῖον ἑκάστῳ διαίτης, οὐδὲν οὔτε τῶν βραχυτάτων αὐτεξούσιον ἐπὶ ταῖς βουλήσεσι τῶν χρησομένων κατέλιπεν. Ἀλλὰ καὶ περὶ σιτίων, ὅσων ἀπέχεσθαι χρὴ, καὶ τίνα προςφέρεσθαι, καὶ περὶ τῶν κοινωνησόντων τῆς διαίτης, ἔργων τε εὐτονίας περὶ τὰς τέχνας, καὶ τοὔμπαλιν ἀναπαύσεως, ὅρον ἔθηκεν αὐτὸς καὶ κανόνα τὸν νόμον, ἵν᾽ ὥςπερ ὑπὸ πατρὶ τούτῳ καὶ δεσπότῃ ζῶντες, μήτε βουλόμενοι μηθὲν, μήθ᾽

ὑπ᾽ ἀγνοίας ἁμαρτάνωμεν. Οὐδὲ γὰρ τὴν ἀπ᾽ ἀγνοίας ὑποτίμησιν ἠνέσχετο καταλιπεῖν, ἀλλὰ καὶ κάλλιστον καὶ ἀναγκαιότατον ἀπέδειξεν παιδευμάτων τὸν νόμον· οὐκ εἰςάπαξ ἀκροασαμένους, οὐδὲ δὶς, ἢ πολλάκις, ἀλλ᾽ ἑκάστης ἑβδομάδος τῶν ἄλλων ἔργων ἀφεμένους, ἐπὶ τὴν ἀκρόασιν τοῦ νόμου ἐκέλευσε συλλέγεσθαι, καὶ τοῦτον ἀκριβῶς ἐκμανθάνειν. Ὃ δὴ πάντες οἱ νομοθέται ἐοίκασι παραλιπεῖν.

18. *Καὶ* τοσοῦτον οἱ πλεῖστοι τῶν ἀνθρώπων ἀπέχουσι, τοῦ κατὰ τοὺς οἰκείους ζῆν νόμους, ὥςτε
484 σχεδὸν αὐτοὺς οὐδ᾽ ἴσασιν· ἀλλ᾽ ὅταν ἐξαμάρτωσι, τότε παρ᾽ ἄλλων μανθάνουσιν, ὅτι τὸν νόμον παραβεβήκασιν. Οἵ τε τὰς μεγίστας καὶ κυριωτάτας παρ᾽ αὐτοῖς ἀρχὰς διοικοῦντες ὁμολογοῦσι τὴν ἄγνοιαν· ἐπιστάτας γὰρ παρακαθίστανται τῆς τῶν πραγμάτων οἰκονομίας, τοὺς ἐμπειρίαν ἔχειν τῶν νόμων ὑπισχνουμένους. Ἡμῶν δὲ ὁντινοῦν εἴ τις ἔροιτο τοὺς νόμους, ῥᾷον ἂν εἴποι πάντα, ἢ τὸ ὄνομα τὸ ἑαυτοῦ. Τοιγαροῦν ἀπὸ τῆς πρώτης εὐθὺς αἰσθήσεως αὐτοὺς ἐκμανθάνοντες, ἔχομεν ἐν ταῖς ψυχαῖς ὥςπερ ἐγκεχαραγμένους. Καὶ σπάνιος μὲν ὁ παραβαίνων, ἀδύνατος δὲ ἡ τῆς κολάσεως παραίτησις.

19. Τοῦτο πρῶτον ἁπάντων τὴν θαυμαστὴν ὁμόνοιαν ἡμῖν ἐμπεποίηκεν. Τὸ γὰρ μίαν μὲν ἔχειν καὶ τὴν αὐτὴν δόξαν περὶ θεοῦ, τῷ βίῳ δὲ καὶ τοῖς ἔθεσι μηδὲν ἀλλήλων διαφέρειν, καλλίστην ἐν ἔθεσιν ἀνθρώπων συμφωνίαν ἀποτελεῖ. Παρ᾽ ἡμῖν γὰρ μόνοις οὔτε περὶ τοῦ θεοῦ λόγους ἀκούσεταί τις ἀλλήλοις ὑπεναντίους, ὁποῖα πολλὰ παρ᾽ ἑτέροις· οὐδ᾽ ὑπὸ τῶν τυχόντων μόνον κατὰ τὸ προςπεσὸν ἑκάστῳ λέγεται πάθος, ἀλλὰ καὶ παρά τισι τῶν φιλοσόφων αὐτῶν τετόλμηται, τῶν μὲν τὴν ὅλην τοῦ θεοῦ φύσιν ἀναιρεῖν τοῖς λόγοις ἐπικεχειρηκότων, ἄλλων δὲ τὴν ὑπὲρ ἀνθρώπων αὐτοῦ πρόνοιαν ἀφαιρουμένων. Οὐδ᾽ ἐν τοῖς ἐπιτηδεύμασι τῶν βίων ὄψεται διαφοράν· ἀλλὰ κοινὰ μὲν ἔργα πάντων παρ᾽ ἡμῖν, εἷς

δὲ ὁ λόγος ὁ τῷ νόμῳ συμφωνῶν περὶ θεοῦ, πάντα λέγων ἐκεῖνον ἐφορᾶν. Καὶ μὴν περὶ τῶν κατὰ τὸν βίον ἐπιτηδευμάτων, ὅτι δεῖ πάντα τὰ ἄλλα τέλος ἔχειν τὴν εὐσέβειαν, καὶ γυναικῶν ἀκούσειεν ἄν τις καὶ τῶν οἰκετῶν.

20. *Ὅθεν δὴ καὶ τὸ προφερόμενον ἡμῖν ὑπό τινων ἔγκλημα, τὸ δὴ ‘μὴ καινῶν εὑρετὰς ἔργων ἢ λόγων ἄνδρας παρασχεῖν,’ ἐντεῦθεν συμβέβηκεν. Οἱ μὲν γὰρ ἄλλοι τὸ μηδενὶ τῶν πατρίων ἐμμένειν, καλὸν εἶναι νομίζουσι, καὶ τοῖς μάλιστα τολμῶσι ταῦτα παραβαίνειν σοφίας δεινότητα μαρτυροῦσιν· ἡμεῖς δὲ τὸ ἐναντίον μίαν εἶναι καὶ φρόνησιν καὶ ἀρετὴν ὑπειλήφαμεν, τὸ μηδὲν ὅλως ὑπεναντίον μήτε πρᾶξαι μήτε διανοηθῆναι τοῖς ἐξ ἀρχῆς νομοθετηθεῖσιν. Ὅπερ εἰκότως ἂν εἴη τεκμήριον τοῦ κάλλιστα τεθῆναι τὸν νόμον· τὰ γὰρ μὴ τοῦτον ἔχοντα τὸν τρόπον, αἱ πεῖραι δεόμενα διορθώσεως ἐλέγχουσιν.*

21. *Ἡμῖν δὲ τοῖς πεισθεῖσιν ἐξ ἀρχῆς τεθῆναι τὸν νόμον κατὰ θεοῦ βούλησιν, οὐδ᾽ εὐσεβὲς ἦν ἔτι τοῦτο μὴ φυλάττειν. Τί γὰρ αὐτοῦ τις ἂν μετακινήσειεν, ἢ τί κάλλιον ἐξεύροι, ἢ τί παρ᾽ ἑτέρων ὡς ἄμεινον ἐξενέγκοι; Ἆρά γε τὴν ὅλην κατάστασιν τοῦ πολιτεύματος; Καὶ τίς ἂν καλλίων ἢ δικαιοτέρα γένοιτο, τῆς θεὸν μὲν ἡγεμόνα τῶν ὅλων ἡγεῖσθαι πεποιημένης, τοῖς ἱερεῦσι δὲ κοινῇ μὲν τὰ μέγιστα διοικεῖν ἐπιτρεπούσης, τῷ δὲ πάντων ἀρχιερεῖ πάλιν αὖ πεπιστευκυίας τὴν τῶν ἄλλων ἱερέων ἡγεμο-* 485
νίαν; Οὓς οὐ κατὰ πλοῦτον, οὐδέ τισιν ἄλλαις προὔχοντας αὐτομάτοις πλεονεξίαις, πρῶτον εὐθὺς ὁ νομοθέτης ἐπὶ τὴν τιμὴν ἔταξεν· ἀλλ᾽ ὅσοι τῶν μετ᾽ αὐτοῦ πειθοῖ τε καὶ σωφροσύνῃ τῶν ἄλλων διέφερον, τούτοις τὴν περὶ τὸν θεὸν μάλιστα θεραπείαν ἐνεχείρισεν. Τούτοις δὲ ἦν καὶ τοῦ νόμου καὶ τῶν ἄλλων ἐπιτηδευμάτων ἀκριβὴς ἐπιμέλεια· καὶ γὰρ ἐπόπται πάντων καὶ δικασταὶ τῶν ἀμφισβητουμένων,

καὶ κολασταὶ τῶν κατεγνωσμένων οἱ ἱερεῖς ἐτάχθησαν.

22. Τίς ἂν οὖν ἀρχὴ γένοιτο ταύτης ὁσιωτέρα; Τίς δὲ θεῷ τιμὴ μᾶλλον ἁρμόζουσα; Παντὸς μὲν τοῦ πλήθους κατεσκευασμένου πρὸς τὴν εὐσέβειαν, ἐξαίρετον δὲ τὴν ἐπιμέλειαν τῶν ἱερέων πεπιστευμένων, ὥςπερ δὲ τελετῆς τινος τῆς ὅλης πολιτείας οἰκονομουμένης; Ἃ γὰρ ὀλίγων ἡμερῶν ἀριθμὸν ἐπιτηδεύοντες ἀλλόφυλοι φυλάττειν οὐ δύνανται, μυστήρια καὶ τελετὰς ὀνομάζοντες, ταῦτα μετὰ πολλῆς ἡδονῆς καὶ γνώμης ἀμεταπείστου φυλάττομεν ἡμεῖς διὰ τοῦ παντὸς αἰῶνος. Τίνες οὖν εἰσιν αἱ προῤῥήσεις καὶ ἀπαγορεύσεις; Ἁπλαῖ τε καὶ γνώριμοι. Πρώτη δὲ ἡγεῖται περὶ θεοῦ, λέγουσα, ὁ θεὸς ἔχει τὰ πάντα παντελὴς καὶ μακάριος, αὐτὸς ἑαυτῷ καὶ πᾶσιν αὐτάρκης, ἀρχὴ, καὶ μέσα, καὶ τέλος πάντων· οὗτος ἔργοις μὲν καὶ χάρισιν ἐναργὴς, καὶ παντὸς οὐτινοσοῦν φανερώτερος, μορφήν τε καὶ μέγεθος ἡμῖν ἀφανέστατος· πᾶσα μὲν γὰρ ὕλη πρὸς εἰκόνα τὴν τούτου, καὶ ἂν ᾖ πολυτελὴς, ἄτιμος, πᾶσα δὲ τέχνη πρὸς μιμήσεως ἐπίνοιαν ἄτεχνος. Οὐδὲν ὅμοιον οὔτ' ἴδομεν, οὔτ' ἐπινοοῦμεν, οὔτ' εἰκάζειν ἐστὶν ὅσιον. Ἔργα βλέπομεν αὐτοῦ, φῶς, οὐρανὸν, γῆν, ἥλιον καὶ σελήνην, ὕδατα, ζώων γενέσεις, καρπῶν ἀναδύσεις. Ταῦτα ὁ θεὸς ἐποίησεν οὐ χερσὶν, οὐ πόνοις, οὐδέ τινων συνεργασαμένων ἐπιδεηθείς· ἀλλ' αὐτοῦ καλὰ θελήσαντος, καλῶς ἦν εὐθὺς γεγονότα. Τούτῳ δεῖ πάντας ἀκολουθεῖν, καὶ θεραπεύειν αὐτὸν ἀσκοῦντας ἀρετήν· τρόπος γὰρ θεοῦ θεραπείας οὗτος ὁσιώτατος.

23. Εἷς ναὸς ἑνὸς θεοῦ — φίλον γὰρ ἀεὶ παντὶ τὸ ὅμοιον — κοινὸς ἁπάντων, κοινοῦ θεοῦ ἁπάντων. Τοῦτον θεραπεύουσι μὲν διὰ παντὸς οἱ ἱερεῖς, ἡγεῖται δὲ τούτων ὁ πρῶτος ἀεὶ κατὰ γένος. Οὗτος μετὰ τῶν συνιερέων θύσει τῷ θεῷ, φυλάξει

τοὺς νόμους, δικάσει περὶ τῶν ἀμφισβητουμένων, κολάσει τοὺς ἐλεγχθέντας ἐπ᾽ ἀδίκῳ. Ὁ δέ γε τούτῳ 486
μὴ πειθόμενος, ὑφέξει δίκην ὡς εἰς τὸν θεὸν αὐτὸν ἀσεβῶν. Θύομεν τὰς θυσίας, οὐκ εἰς πλήρωσιν ἑαυτῶν καὶ μέθην· ἀβούλητα γὰρ τῷ θεῷ τάδε, καὶ πρόφασις ἂν ὕβρεως γένοιτο καὶ πολυτελείας· ἀλλὰ σώφρονας, εὐτάκτους, εὐσταλεῖς, ὅπως μάλιστα σωφρονῶσι. Καὶ ἐπὶ ταῖς θυσίαις ὑπὲρ τῆς κοινῆς εὔχεσθαι δεῖ πρῶτον σωτηρίας, εἶθ᾽ ὑπὲρ ἑαυτῶν. Ἐπὶ γὰρ κοινωνίᾳ γεγόναμεν, καὶ ταύτην ὁ προτιμῶν τοῦ καθ᾽ ἑαυτὸν ἰδίου, μάλιστα εἴη θεῷ κεχαρισμένος. Παράκλησις δὲ πρὸς τὸν θεὸν ἔστω διὰ τῆς εὐχῆς καὶ δέησις, οὐχ ὅπως διδῷ τὰ ἀγαθά· δέδωκε γὰρ αὐτὸς ἑκὼν, καὶ πᾶσιν εἰς μέσον κατέθηκεν· ἀλλ᾽ ὅπως δέχεσθαι δυνώμεθα, καὶ λαβόντες φυλάττωμεν. Ἁγνείας ἐπὶ ταῖς θυσίαις διήρηκεν ὁ νόμος, ἀπὸ κήδους, ἀπὸ λέχους, ἀπὸ κοινωνίας τῆς πρὸς γυναῖκα, καὶ πολλῶν ἄλλων, ἃ μακρὸν ἂν εἴη νῦν γράφειν. Τοιοῦτος μὲν ὁ περὶ θεοῦ καὶ τῆς ἐκείνου θεραπείας λόγος ἡμῖν ἐστιν, ὁ δὲ αὐτὸς ἅμα καὶ νόμος.

24. Τίνες δὲ οἱ περὶ γάμων; Μῖξιν μόνην οἶδεν ὁ νόμος κατὰ φύσιν τὴν πρὸς γυναῖκα, καὶ ταύτην, εἰ μέλλοι τέκνων ἕνεκα γίνεσθαι. Τὴν δὲ πρὸς ἄῤῥενας ἀῤῥένων ἐστύγηκεν, καὶ θάνατος τὸ ἐπιτίμιον, εἴ τις ἐπιχειρήσειεν. Γαμεῖν δὲ κελεύει μὴ προικὶ προσέχοντας, μηδὲ βιαίαις ἁρπαγαῖς, μηδ᾽ ἂν δόλῳ καὶ ἀπάτῃ πείσαντας, ἀλλὰ μνηστεύειν παρὰ τοῦ δοῦναι κυρίου, καὶ κατὰ συγγένειαν ἐπιτήδειον. Γυνὴ δὲ χείρων, φησὶν, ἀνδρὸς εἰς ἅπαντα. Τοιγαροῦν ὑπακουέτω, μὴ πρὸς ὕβριν, ἀλλ᾽ ἵνα ἄρχηται· θεὸς γὰρ ἀνδρὶ τὸ κράτος ἔδωκε. Ταύτῃ συνεῖναι δεῖ τὸν γήμαντα μόνῃ· τὸ δὲ τὴν ἄλλου πειρᾶν ἀνόσιον. Εἰ δέ τις τοῦτο πράξειεν, οὐδεμία θανάτου παραίτησις, οὔτ᾽ εἰ βιάσαιτο παρθένον ἑτέρῳ

προσωμολογημένην, οὔτ' εἰ πείσαιε γεγαμημένην· τέ-
κνα τρέφειν ἅπαντα προσέταξε. Καὶ γυναιξὶν ἀπεῖ-
πεν μήτ' ἀμβλοῦν τὸ σπαρὲν, μήτε διαφθείρειν· ἀλ-
λὰ ἣν φανείη, τεκνοκτόνος ἂν εἴη ψυχὴν ἀφανίζου-
σα, καὶ τὸ γένος ἐλαττοῦσα. Τοιγαροῦν εἴ τις ἐπὶ
λέχος ἢ φθορὰν παρέλθοι, καθαρὸς εἶναι οὐ δύνα-
ται. Ἢ καὶ μετὰ τὴν νόμιμον συνουσίαν ἀνδρὸς καὶ
γυναικὸς ἀπολούσασθαι κελεύει ὁ νόμος· ψυχῆς τε
487 γὰρ καὶ σώματος ἐγγίνεται μολυσμὸς, ὡς πρὸς ἄλ-
λην χώραν ὑποβαλόντων. Καὶ γὰρ ἐμφυομένη σώ-
μασι κακοπαθεῖ ἡ ψυχὴ, καὶ τούτων αὖ πάλιν ὡς
θανάτῳ διακριθεῖσα. Δι' ὅπερ ἁγνείας ἐπίτασιν τοῖς
τοιούτοις προσέταξεν.

25. Οὐ μὴν οὐδ' ἐπὶ ταῖς τῶν παίδων γενέσεσιν ἐπέτρεπεν εὐωχίας συνάγειν, καὶ προφάσεις ποιεῖσθαι μέθης· ἀλλὰ σώφρονα τὴν ἀρχὴν εὐθὺς τῆς τροφῆς ἔταξε, καὶ γράμματα παιδεύειν ἐκέλευσε, περί τε τοὺς νόμους ἀναστρέφεσθαι, καὶ τῶν προγόνων τὰς πράξεις ἐπίστασθαι· τὰς μὲν ἵνα μιμῶνται, τοῖς δ' ἵνα συντρεφόμενοι μήτε παραβαίνωσι, μήτε σκῆψιν ἀγνοίας ἔχωσι.

26. Τῆς δὲ εἰς τοὺς τετελευτηκότας προενόησεν ὁσίας, οὔτε πολυτελείαις ἐνταφίων, οὔτε κατασκευαῖς μνημείων ἐπιφανῶν· ἀλλὰ τὰ μὲν περὶ τὴν κηδείαν προσέταξε τοῖς οἰκειοτάτοις ἐπιτελεῖν. Πᾶσι δὲ τοῖς παριοῦσι θαπτομένου τινὸς, καὶ συνελθεῖν καὶ συναποδύρασθαι ἐποίησε νόμιμον. Καθαίρειν δὲ καὶ τὸν οἶκον καὶ τοὺς ἐνοικοῦντας ἀπὸ κήδους· ἵνα πλεῖστον ἀπέχῃ τοῦ δοκεῖν καθαρὸς εἶναί τις φόνον ἐργασάμενος.

27. Γονέων τιμὴν μετὰ τὴν πρὸς θεὸν δευτέραν ἔταξε, καὶ τὸν οὐκ ἀμειβόμενον τὰς παρ' αὐτῶν χάριτας, ἀλλ' εἰς ὁτιοῦν ἐλλείποντα, λευσθησόμενον παραδίδωσι. Καὶ παντὸς τοῦ πρεσβυτέρου

τιμὴν ἔχειν τοὺς νέους φησὶν, ἐπεὶ πρεσβύτατον ὁ Θεός. Κρύπτειν οὐδὲν ἐᾷ πρὸς φίλους· οὐ γὰρ εἶναι φιλίαν τὴν μὴ πάντα πιστεύουσαν. Καὶ ἐὰν συμβῇ δέ τις ἔχθρα, τούτων ἀπόῤῥητα λέγειν κεκώλυκε. Δικάζων εἰ δῶρά τις λάβοι, θάνατος ἡ ζημία. Περιορῶν ἱκέτην, βοηθεῖν ἐνὸν, ὑπεύθυνος. Ὃ μὴ κατέθηκέ τις, οὐκ ἀναιρήσεται. Τῶν ἀλλοτρίων οὐδενὸς ἅψεται. Δανείσας, τόκον οὐ λήψεται. Ταῦτα, καὶ πολλὰ τούτοις ὅμοια, τὴν πρὸς ἀλλήλους ἡμῶν συνέχει κοινωνίαν.

28. Πῶς δὲ καὶ περὶ τῆς πρὸς ἀλλοφύλους ἐπιεικείας ἐφρόνησεν ὁ νομοθέτης, ἄξιον ἰδεῖν. Φανεῖται γὰρ ἄριστα πάντων προνοησάμενος, ὅπως μήτε τὰ οἰκεῖα διαφθείρωμεν, μήτε φθονήσωμεν τοῖς μετέχειν τῶν ἡμετέρων προαιρουμένοις. Ὅσοι μὲν γὰρ θέλουσιν ὑπὸ τοὺς αὐτοὺς ἡμῖν νόμους ζῆν ὑπελθόντες, δέχεται φιλοφρόνως· οὐ τῷ γένει μόνον, ἀλλὰ καὶ τῇ προαιρέσει τοῦ βίου νομίζων εἶναι τὴν οἰκειότητα. Τοὺς δ᾽ ἐκ παρέργου προσιόντας ἀναμίγνυσθαι ταῖς συνηθείαις οὐκ ἠθέλησε.

29. Τὰ ἄλλα δὲ προείρηκεν, ὧν ἐστιν ἡ μετάδοσις ἀναγκαία· πᾶσι παρέχειν τοῖς δεομένοις πῦρ, ὕδωρ, τροφὴν, ὁδοὺς φράζειν, ἄταφον μὴ περιορᾶν. 488
Ἐπιεικῆ δὲ καὶ τὰ πρὸς τοὺς πολεμίους κριθέντα εἶναι· οὐδὲ γὰρ ἐᾷ τὴν γῆν αὐτῶν πυρπολεῖν, οὐδὲ κόπτειν ἥμερα δένδρα συγκεχώρηκεν· ἀλλὰ καὶ σκυλεύειν ἀπείρηκε τοὺς ἐν μάχῃ πεσόντας· Καὶ τῶν αἰχμαλώτων προενόησεν, ὅπως αὐτῶν ὕβρις ἀπῇ, μάλιστα δὲ γυναικῶν. Οὕτως δὲ ἡμερότητα καὶ φιλανθρωπίαν ἡμᾶς ἐπαίδευσεν, ὡς οὐδὲ τῶν ἀλόγων ζώων ὠλιγώρηκεν. Ἀλλὰ μόνην μὲν ἀφῆκε τούτων χρῆσιν τὴν νόμιμον, πᾶσαν δὲ ἑτέραν ἐκώλυσεν. Ἃ δὲ ὥσπερ ἱκετεύοντα προσφεύγει ταῖς οἰκίαις, ἀπεῖπεν ἀνελεῖν. Οὐδὲ νεοττοῖς ἐπέτρεψε τοὺς γονέας αὐτῶν συνεξαίρειν. Φείδεσθαι δὲ καὶ ἐν τῇ πολεμίᾳ τῶν

ἐργαζομένων ζώων, καὶ μὴ φονεύειν. Οὕτω πανταχόθεν τὰ πρὸς ἐπιείκειαν περιεσκέψατο, διδασκαλικοῖς μὲν τοῖς προειρημένοις χρησάμενος νόμοις· τοὺς δὲ αὖ κατὰ τῶν παραβαινόντων τιμωρητικοὺς τάξας ἄνευ προφάσεως.

30. Ζημία γὰρ ἐπὶ τοῖς πλείστοις τῶν παραβαινόντων ἐστὶ θάνατος, ἂν μοιχεύσῃ τις, ἂν βιάσηται κόρην, ἂν ἄρσενι τολμήσῃ πεῖραν προσφέρειν, ἂν ὑπομείνῃ παθεῖν πειρασθείς. Ἔστι δὲ καὶ ἐπὶ δούλοις ὁμοίως ὁ νόμος ἀπαραίτητος. Ἀλλὰ καὶ περὶ μέτρων εἴ τις κακουργήσειεν, ἢ σταθμῶν, ἢ περὶ πράσεως ἀδίκου καὶ δόλῳ γενομένης, καὶ ἂν ὑφέληταί τις ἀλλότριον, καὶ ἂν ὃ μὴ κατέθηκεν ἀνέληται, πάντων εἰσὶ κολάσεις, οὐχ οἷαι παρ' ἑτέροις, ἀλλ' ἐπὶ τὸ μεῖζον. Περὶ μὲν γὰρ γονέων ἀδικίας, ἢ τῆς εἰς τὸν θεὸν ἀσεβείας, καὶ ἂν μέλλῃ τις, εὐθέως ἀπόλλυται. Τοῖς μέντοι γε κατὰ τοὺς νόμους πάντα πράττουσι, τὸ γέρας ἐστὶν οὐκ ἄργυρος, οὐδὲ χρυσὸς, οὐ μὴν οὐδὲ κοτίνου στέφανος, ἢ σελίνου, καὶ τοιαύτη τις ἀνακήρυξις, ἀλλ' αὐτὸς ἕκαστος αὐτῷ τὸ συνειδὸς ἔχων μαρτυροῦν, πεπίστευκε· τοῦ μὲν νομοθέτου προφητεύσαντος, τοῦ δὲ θεοῦ τὴν πίστιν ἰσχυρὰν παρεσχηκότος, ὅτι τοῖς τοὺς νόμους διαφυλάξασι, καὶ ἂν, εἰ δέοι θνήσκειν ὑπὲρ αὐτῶν, προθύμως ἀποθανοῦσιν, ἔδωκεν ὁ θεὸς γενέσθαι τε πάλιν, καὶ βίον ἀμείνω λαβεῖν ἐκ περιτροπῆς. Ὤκνουν δ' ἂν ἐγὼ νῦν ταῦτα γράφειν, εἰ μὴ διὰ τῶν ἔργων ἅπασιν ἦν φανερὸν, ὅτι πολλοὶ καὶ πολλάκις ἤδη τῶν ἡμετέρων, περὶ τοῦ μηδὲ ῥῆμα φθέγξασθαι παρὰ τὸν νόμον, πάντα παθεῖν γενναίως προείλοντο.

31. Καίτοι γε εἰ μὴ συμβεβήκει γνώριμον ἡμῶν τὸ ἔθνος ἅπασιν ἀνθρώποις ὑπάρχειν, καὶ ἐν φανερῷ κεῖσθαι τὴν ἐθελούσιον ἡμῶν τοῖς νόμοις
489 ἀκολουθίαν, ἀλλά τις ἢ συγγράψαι λέγων αὐτὸς ἀν-

εγίνωσκε τοῖς Ἕλλησιν, ἤ πού γε περιτυχεῖν ἔξω τῆς γινωσκομένης γῆς ἔφασκεν ἀνθρώποις, τοιαύτην μὲν ἔχουσι δόξαν οὕτω σεμνὴν περὶ τοῦ θεοῦ, τοιούτοις δὲ νόμοις πολὺν αἰῶνα βεβαίως ἐμμεμενηκόσι· πάντας ἂν οἶμαι θαυμάσαι, διὰ τὰς συνεχεῖς παρ᾽ αὐτοῖς μεταβολάς. Ἀμέλει τῶν γράψαι τι παραπλήσιον εἰς πολιτείαν καὶ νόμους ἐπιχειρησάντων, ὡς θαυμαστὰ συνθέντων κατηγοροῦσι, φάσκοντες αὐτοὺς λαβεῖν ἀδυνάτους ὑποθέσεις· Καὶ τοὺς μὲν ἄλλους παραλείπω φιλοσόφους, ὅσοι τι τοιοῦτον ἐν τοῖς συγγράμμασιν ἐπραγματεύσαντο. Πλάτων δὲ θαυμαζόμενος παρὰ τοῖς Ἕλλησιν, ὡς καὶ σεμνότητι βίου διενεγκὼν καὶ δυνάμει λόγων, καὶ πειθοῖ πάντας ὑπεράρας τοὺς ἐν φιλοσοφίᾳ γεγονότας, ὑπὸ τῶν φασκόντων δεινῶν εἶναι τὰ πολιτικὰ, μικροῦ δεῖν χλευαζόμενος, καὶ κωμῳδούμενος διατελεῖ. Καίτοι τὰ ἐκείνου σκοπῶν συχνῶς τις, ἂν εὕροι ῥᾴονα ὄντα καὶ τὰς τῶν πολλῶν ἐγγιον συνηθείας. Αὐτὸς δὲ Πλάτων ὡμολόγησεν, ὅτι τὴν ἀληθῆ περὶ τοῦ θεοῦ δόξαν εἰς τὴν τῶν ὄχλων ἄγνοιαν οὐκ ἦν ἀσφαλὲς ἐξενεγκεῖν. Ἀλλὰ τὰ μὲν Πλάτωνος λόγους τινὰς εἶναι κενοὺς νομίζουσι, κατὰ πολλὴν ἐξουσίαν κεκαλλιγραφημένους. Μάλιστα δὲ τῶν νομοθετῶν Λυκοῦργόν τε θαυμάζουσι, καὶ τὴν Σπάρτην ἅπαντες ὑμνοῦσιν, ὅτι τοῖς ἐκείνου νόμοις ἐπὶ πλεῖστον ἐνεκαρτέρησεν. Οὐκοῦν τοῦτο μὲν ὁμολογείσθω τεκμήριον ἀρετῆς εἶναι, τὸ πείθεσθαι τοῖς νόμοις. Οἱ δὲ Λακεδαιμονίους θαυμάζοντες, τὸν ἐκείνων χρόνον ἀντιπαραβαλλέτωσαν τοῖς πλείοσιν ἢ δισχιλίοις ἔτεσι τῆς ἡμετέρας πολιτείας, καὶ προσέτι λογιζέσθωσαν, ὅτι Λακεδαιμόνιοι μὲν ὅσον ἐφ᾽ ἑαυτῶν χρόνον εἶχον τὴν ἐλευθερίαν, ἀκριβῶς ἔδοξαν τοὺς νόμους διαφυλάττειν. Ἐπεὶ μέντοι περὶ αὐτοὺς ἐγένοντο μεταβολαὶ τῆς τύχης, μικροῦ δεῖν ἁπάντων ἐξελάθοντο τῶν νόμων. Ἡμεῖς δὲ ἐν τύχαις μυρίαις γεγονότες, διὰ τὰς τῶν βασιλευσάντων τῆς Ἀσίας μεταβολὰς, οὐδ᾽

ἐν τοῖς ἐσχάτοις τῶν δεινῶν τοὺς νόμους προείδομεν, οὐκ ἀργίας οὐδὲ τροφῆς αὐτοὺς χάριν περιέποντες· ἀλλ' εἴ τις ἐθέλοι σκοπεῖν, πολλῷ τινι τῆς δοκούσης ἐπιτετάχθαι Λακεδαιμονίοις καρτερίας, μείζονας ἄθλους καὶ πόνους ἡμῖν ἐπιτιθέντας, οἱ μέν γε μήτε γῆν ἐργαζόμενοι, μήτε περὶ τέχνας πονοῦντες, ἀλλὰ πάσης ἐργασίας ἄφετοι, λιπαροὶ, καὶ τὰ σώματα πρὸς κάλλος ἀσκοῦντες, ἐπὶ τῆς πόλεως διῆγον· ἄλλοις ὑπηρέταις πρὸς ἅπαντα τὰ τοῦ βίου χρώμενοι, καὶ τὴν τροφὴν ἑτοίμην παρ' ἐκείνων λαμβάνοντες. Ἐφ' ἣν δὴ τοῦτο μόνον τὸ καλὸν ἔργον καὶ φιλάνθρωπον, ἅπαντα καὶ πράττειν καὶ πάσχειν ὑπομένοντες, τὸ κρατεῖν πάντων, ἐφ' οὓς ἂν στρατεύωσιν.
490 Ὅτι δὲ μηδὲ τοῦτο κατώρθωσαν, ἐῶ λέγειν· οὐ γὰρ καθ' ἕνα μόνον, ἀλλὰ πολλοὶ πολλάκις ἀθρόως τῶν τοῦ νόμου προσταγμάτων ἀμελήσαντες, αὐτοὺς μετὰ τῶν ὅπλων παρέδοσαν τοῖς πολεμίοις.

32. Ἆρ' οὖν καὶ παρ' ἡμῖν, οὐ λέγω τοσούτους, ἀλλὰ δύο ἢ τρεῖς ἔγνω τις προδότας γενομένους τῶν νόμων, ἢ θάνατον φοβηθέντας, οὐχὶ τὸν ῥᾷστον ἐκεῖνον λέγω, τὸν συμβαίνοντα τοῖς μαχομένοις, ἀλλὰ τὸν μετὰ λύμης τῶν σωμάτων, ὁποῖος εἶναι δοκεῖ πάντων χαλεπώτατος; Ὥστ' ἐγὼ νομίζω, τινὰς κρατήσαντας ἡμῶν οὐχ ὑπὸ μίσους προσφέρεσθαι ὡς ὑποχειρίοις, ἀλλ' ὡς θαυμαστόν τι θέαμα βουλομένους ἰδεῖν· εἴ τινές εἰσιν ἄνθρωποι, οἱ μόνον εἶναι κακὸν αὐτοῖς πεπιστευκότες, εἰ πρᾶξαί τι παρὰ τοὺς ἑαυτῶν νόμους, ἢ λόγον εἰπεῖν παρ' ἐκείνους παραβιασθεῖεν. Οὐ χρὴ δὴ θαυμάζειν, εἰ πρὸς θάνατον ἀνδρείως ἔχομεν ὑπὲρ τῶν νόμων παρὰ τοὺς ἄλλους ἅπαντας· οὐδὲ γὰρ τὰ ῥᾷστα δοκοῦντα τῶν ἡμετέρων ἐπιτηδευμάτων ἄλλοι ῥᾳδίως ὑπομένουσιν, αὐτουργίαν λέγω, καὶ τροφῆς λιτότητα, καὶ τὸ μηδὲν εἰκῇ, μηδ' ὡς ἔτυχεν ἕκαστος, ἐπιτεθυμηκὼς φαγεῖν, ἢ πιεῖν, ἢ συνουσίᾳ προσελθεῖν, ἢ πολυτελείᾳ, καὶ πάλιν ἀργίας ὑπομεῖναι τάξιν ἀμετακίνητον. Ἀλλ'

οἱ τοῖς ξίφεσιν ὁμόσε χωροῦντες, καὶ τοὺς πολεμίους
ἐξ ἐφόδου τρεπόμενοι, τοῖς προστάγμασι τοῖς περὶ δι-
αίτης οὐκ ἀντέβλεψαν. Ἡμῖν δὲ πάλιν ἐκ τοῦ περὶ
ταῦτα τῷ νόμῳ πειθαρχεῖν ἡδέως, καὶ ἐκεῖ περίε-
στιν ἐπιδείκνυσθαι τὸ γενναῖον.

33. Εἶτα Λυσίμαχοι καὶ Μόλωνες, καὶ τοιοῦ-
τοί τινες ἄλλοι συγγραφεῖς, ἀδοκίμαστοι σοφισταὶ,
μειρακίων ἀπατεῶνες, ὡς πάνυ ἡμᾶς ‘φαυλοτάτους
ἀνθρώπων’ λοιδοροῦσιν. Ἐγὼ δ' οὐκ ἂν ἐβουλόμην
περὶ τῶν παρ' ἑτέροις νομίμων ἐξετάζειν. Τὰ γὰρ
αὐτῶν ἡμῖν φυλάττειν πάτριόν ἐστιν, οὐ τῶν ἀλλο-
τρίων κατηγορεῖν· καὶ περί γε τοῦ μήτε χλευάζειν
μήτε βλασφημεῖν τοὺς νομιζομένους θεοὺς παρ' ἑτέ-
ροις, ἄντικρυς ἡμῖν ὁ νομοθέτης ἀπείρηκεν, αὐτῆς
ἕνεκα προσηγορίας τοῦ θεοῦ. Τῶν δὲ κατηγόρων
διὰ τῆς ἀντιπαραθέσεως ἡμᾶς ἐλέγχειν οἰομένων, οὐχ
οἷόν τε κατασιωπᾶν, ἄλλως τε καὶ τοῦ λόγου μέλλον-
τος οὐχ ὑφ' ἡμῶν ἐλεγχθήσεσθαι τῶν νῦν αὐτὸν συν-
τιθέντων, ἀλλ' ὑπὸ πολλῶν εἰρημένου καὶ λίαν εὐδο-
κιμούντων. Τίς γὰρ τῶν παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ἐπὶ σο-
φίᾳ τεθαυμασμένων οὐκ ἐπιτετίμηκε καὶ ποιητῶν τοῖς
ἐπιφανεστάτοις, καὶ νομοθετῶν τοῖς μάλιστα πεπι-
στευμένοις, ὅτι τοιαύτας δόξας περὶ θεῶν ἐξ ἀρχῆς
τοῖς πλήθεσιν ἐγκατέσπειραν; Ἀριθμῷ μὲν ὁπόσους
ἂν αὐτοὶ ἐθελήσωσιν ἀποφήνασθαι, ἐξ ἀλλήλων δὲ γι-
νομένους, καὶ κατὰ παντοίους τρόπους γενέσεων·
τούτους δὲ καὶ διαιροῦντες τόποις καὶ διαίταις, ὥς-
περ τῶν ζώων τὰ γένη, τοὺς μὲν ὑπὸ γῆν, τοὺς δὲ
ἐν θαλάττῃ, τοὺς μέντοι πρεσβυτάτους αὐτῶν ἐν
ταρτάρῳ δεδεμένους· ὅσοις δὲ τὸν οὐρανὸν ἀπένει-
μαν, τούτοις πατέρα μὲν τῷ λόγῳ, τύραννον δὲ τοῖς
ἔργοις καὶ δεσπότην ἐφιστάντες· καὶ διὰ τοῦτο συν-
ισταμένην ἐπιβουλὴν ἐπ' αὐτὸν ὑπὸ γυναικὸς καὶ ἀ-
δελφοῦ καὶ θυγατρὸς, ἣν ἐκ τῆς ἑαυτοῦ κεφαλῆς ἐ- 491
γέννησεν, ἵνα δὴ συλλαβόντες αὐτὸν καθείρξωσιν, ὥς-
περ αὐτὸς ἐκεῖνος τὸν πατέρα τὸν ἑαυτοῦ!

34. *Ταῦτα δικαίως μέμψεως πολλῆς ἀξιοῦσιν οἱ φρονήσει διαφέροντες, καὶ πρὸς τούτοις καταγελῶσιν, εἰ τῶν θεῶν τοὺς μὲν ἀγενείους καὶ μειράκια, τοὺς δὲ πρεσβυτέρους καὶ γενειῶντας εἶναι χρὴ δοκεῖν, ἄλλους δὲ τετάχθαι πρὸς ταῖς τέχναις, χαλκεύοντά τινα, τὴν δὲ ὑφαίνουσαν, τὸν δὲ πολεμοῦντα καὶ μετὰ ἀνθρώπων μαχόμενον, τοὺς δὲ κιθαρίζοντας, ἢ τοξικῇ χαίροντας· εἶτ' αὐτοῖς ἐγγινομένας πρὸς ἀλλήλους στάσεις, καὶ περὶ ἀνθρώπων φιλονεικίας, μέχρι τοῦ μὴ μόνον ἀλλήλοις τὰς χεῖρας προςφέρειν, ἀλλὰ καὶ ὑπ' ἀνθρώπων τραυματιζομένους ὀδύρεσθαι καὶ κακοπαθεῖν. Τὸ δὴ δὲ πάντων ἀσελγέστερον, τὴν περὶ τὰς μίξεις ἀκρασίαν, καὶ τοὺς ἔρωτας, πῶς οὐκ ἄτοπον μικροῦ δεῖν ἅπασι προςάψαι, καὶ τοῖς ἄῤῥεσι τῶν θεῶν καὶ ταῖς θηλείαις; Εἶθ' ὁ γενναιότατος καὶ πρῶτος αὐτὸς ὁ πατὴρ, τὰς ἀπατηθείσας ὑπ' αὐτοῦ καὶ γενομένας ἐγκύους, καθειργνυμένας ἢ καταποντιζομένας περιορᾷ· καὶ τοὺς ἐξ αὐτοῦ γεγονότας οὔτε σώζειν δύναται, κρατούμενος ὑπὸ τῆς εἱμαρμένης, οὔτ' ἀδακρυτὶ τοὺς θανάτους αὐτῶν ὑπομένειν. Καλά γε ταῦτα καὶ τούτοις ἄλλα ἑπόμενα — μοιχείας μὲν ἐν οὐρανῷ βλεπομένους οὕτως ἀναισχύντως ὑπὸ τῶν θεῶν, ὥςτε τινὰς καὶ ζηλοῦν ὁμολογεῖν τοὺς ἐπ' αὐτῇ δεδεμένους! Τί γὰρ οὐκ ἔμελλον, ὁπότε μηδ' ὁ πρεσβύτατος καὶ βασιλεὺς ἐδυνήθη τῆς πρὸς τὴν γυναῖκα μίξεως ἐπισχεῖν τὴν ὁρμὴν, ὅσον γοῦν εἰς τὸ δωμάτιον ἀπελθεῖν; Οἱ δὲ δὴ δουλεύοντες τοῖς ἀνθρώποις θεοὶ, καὶ νῦν μὲν οἰκοδομοῦντες ἐπὶ μισθῷ, νῦν δὲ ποιμαίνοντες, ἄλλοι δὲ τρόπον κακούργων ἐν χαλκῷ δεδεμένοι δεσμωτηρίῳ, τίνα τῶν εὖ φρονούντων οὐκ ἂν παροξύνειαν, καὶ τοῖς ταῦτα συνθεῖσιν ἐπιπλῆξαι, καὶ πολλὴν εὐήθειαν καταγνῶναι τῶν προϊεμένων; Οἱ δὲ καὶ δεῖμόν τινα καὶ φόβον, ἤδη δὲ καὶ λύσσαν καὶ ἀπάτην, καὶ τί γὰρ οὐχὶ τῶν κακίστων παθῶν εἰς θεοῦ φύσιν καὶ μορφὴν ἀνέπλασαν; τοῖς δὲ*

εὐφημοτέροις τούτων καὶ θύειν τὰς πόλεις ἔπεισαν! Τοιγαροῦν εἰς πολλὴν [ἀνάγκην καθίστανται, τοὺς μέν τινας τῶν θεῶν νομίζειν δοτῆρας ἀγαθῶν, τοὺς δὲ καλεῖν ἀποτροπαίους· εἶτα δὲ τούτους, ὥσπερ τοὺς πονηροτάτους ἀνθρώπων, χάρισι καὶ δώροις ἀποσείονται, μέγα τι λήψεσθαι κακὸν ὑπ' αὐτῶν προσδοκῶντες, εἰ μὴ μισθὸν αὐτοῖς παράσχοιεν.

35. Τί τοίνυν τὸ αἴτιον τῆς τοσαύτης ἀνωμαλίας, καὶ περὶ τὸ θεῖον πλημμελείας; Ἐγὼ μὲν ὑπολαμβάνω, τὸ μήτε τὴν ἀληθῆ τοῦ θεοῦ φύσιν ἐξ ἀρχῆς συνιδεῖν αὐτῶν τοὺς νομοθέτας· μήθ' ὅσον καὶ λαβεῖν ἠδυνήθησαν ἀκριβῆ γνῶσιν διορίσαντας, πρὸς τοῦτο ποιήσασθαι τὴν ἄλλην τάξιν τοῦ πολιτεύματος. Ἀλλ' ὥσπερ ἄλλο τι τῶν φαυλοτάτων ἐφῆκαν, τοῖς μὲν ποιηταῖς, οὕστινας ἂν βούλωνται θεοὺς εἰσάγειν, πάντα πάσχοντας· τοῖς δὲ ῥήτορσι, πολιτογραφεῖν διὰ ψηφισμάτων ξένων θεῶν τὸν ἐπιτήδειον. Πολλῆς δὲ καὶ ζωγράφοι καὶ πλάσται τῆς εἰς τοῦτο παρὰ τῶν Ἑλλήνων ἀπήλαυσαν ἐξουσίας, αὐτὸς ἕκαστός τινα μορφὴν ἐπινοῶν, ὁ μὲν ἐκ πηλοῦ πλάττων, ὁ δὲ γράφων. Οἱ δὲ μάλιστα θαυμαζόμενοι τῶν δη- 492
μιουργῶν τὸν ἐλέφαντα καὶ τὸν χρυσὸν ἔχουσι τῆς ἀεὶ καινουργίας τὴν ὑπόθεσιν.] Καὶ τὰ μὲν τῶν ἱερῶν ἐν ἐρημίᾳ παντελῶς εἰσιν, τὰ δὲ ἐμπερισπούδαστα καθάρσεσι παντοδαπαῖς περικοσμούμενα. Εἶθ' οἱ μὲν πρότερον ἐν ταῖς τιμαῖς ἀκμάσαντες θεοὶ γεγηράκασιν· οἱ δὲ ἐπακμάζοντες τούτων ἐν δευτέρᾳ τάξει ὑποβέβληνται· οὕτω γὰρ εὐφημότερον λέγειν. Ἄλλοι δὲ καινοί τινες εἰσαγόμενοι θρησκείας τυγχάνουσιν, ὡς, ἐν παρεκβάσει ὧν προείπομεν, τοὺς τόπους ἐρημωθέντας καταλιπεῖν. Καὶ τῶν ἱερῶν τὰ μὲν ἐρημοῦνται, τὰ δὲ νεωστὶ κατὰ τὴν τῶν ἀνθρώπων βούλησιν ἕκαστος ἱδρύεται, δέον τὸ ἐναντίον τὴν περὶ τοῦ θεοῦ δόξαν αὐτοὺς, καὶ τὴν πρὸς αὐτὸν τιμὴν ἀμετακίνητον διαφυλάττειν.

36. Ἀπολλώνιος μὲν οὖν ὁ Μόλων τῶν ἀνοήτων εἷς ἦν καὶ τετυφωμένων. Τοὺς μέντοι κατὰ ἀλήθειαν ἐν τοῖς Ἑλληνικοῖς φιλοσοφήσαντας οὔτε τῶν προειρημένων οὐδὲν διέλαθεν, οὔτε τὰς ψυχρὰς προφάσεις τῶν ἀλληγοριῶν ἠγνόησαν· δι' ὅπερ τῶν μὲν εἰκότως κατεφρόνησαν, εἰς δὲ τὴν ἀληθῆ καὶ πρέπουσαν περὶ τοῦ Θεοῦ δόξαν ἡμῖν συνεφώνησαν. Ἀφ' ἧς ὁρμηθεὶς ὁ Πλάτων οὔτε τῶν ἄλλων οὐδένα ποιητῶν φησὶ δεῖν εἰς τὴν πολιτείαν παραδέχεσθαι, καὶ τὸν Ὅμηρον εὐφήμως ἀποπέμπεται, στεφανώσας, καὶ μύρον αὐτοῦ καταχέας, ἵνα δὴ μὴ τὴν ὀρθὴν δόξαν περὶ Θεοῦ τοῖς μύθοις ἀφανίσῃ. Μάλιστα δὲ Πλάτων μεμίμηται τὸν ἡμέτερον νομοθέτην, καὶ ἐν τῷ μηδὲν οὕτω παίδευμα προςτάττειν τοῖς πολίταις, ὡς τὸ πάντας ἀκριβῶς τοὺς νόμους ἐκμανθάνειν, καὶ μὴν καὶ περὶ τοῦ μὴ δεῖν ὡς ἔτυχεν ἐπιμίγνυσθαί τινας ἔξωθεν, ἀλλ' εἶναι καθαρὸν τὸ πολίτευμα τῶν ἐμμενόντων τοῖς νόμοις προενόησεν. Ὧς οὐδὲν λογισάμενος ὁ Μόλων Ἀπολλώνιος ἡμῶν κατηγόρησεν, ὅτι μὴ παραδεχόμεθα τοὺς ἄλλαις προκατειλημμένους δόξαις περὶ θεοῦ, μηδὲ κοινωνεῖν ἐθέλομεν τοῖς καθ' ἑτέραν συνήθειαν βίου ζῆν προαιρουμένοις. Ἀλλ' οὐδὲ τοῦτ' ἐστὶν ἴδιον ἡμῶν, κοινὸν δὲ πάντων, οὐχ Ἑλλήνων δὲ μόνων, ἀλλὰ καὶ τῶν ἐν τοῖς Ἕλλησιν εὐδοκιμωτάτων. Λακεδαιμόνιοι δὲ καὶ ξενηλασίας ποιούμενοι διετέλουν, καὶ τοῖς αὐτῶν ἀποδημεῖν πολίταις οὐκ ἐπέτρεπον· διαφθορὰν ἐξ ἀμφοῖν ὑφορώμενοι γενήσεσθαι περὶ τοὺς νόμους. Ἐκείνοις μὲν οὖν τάχα δυςκολίαν τις ὀνειδίσειεν ἂν εἰκότως· οὐδενὶ γὰρ οὔτε τῆς πολιτείας, οὔτε τῆς παρ' αὐτοῖς μετεδίδοσαν διατριβῆς. Ἡμεῖς δὲ τὰ μὲν τῶν ἄλλων ζηλοῦν οὐκ ἀξιοῦμεν· τοὺς μέντοι μετέχειν τῶν ἡμετέρων βουλομένους ἡδέως δεχόμεθα. Καὶ τοῦτο ἂν εἴη τεκμήριον, οἶμαι, φιλανθρωπίας ἅμα καὶ μεγαλοψυχίας.

37. Ἐῶ περὶ Λακεδαιμονίων ἐπὶ πλείω λέγειν. Οἱ δὲ κοινὴν εἶναι τὴν ἑαυτῶν δόξαντες πόλιν Ἀθηναῖοι, πῶς περὶ τούτων εἶχον, Ἀπολλώνιος ἠγνόησεν, ὅτι καὶ τοὺς ῥῆμα μόνον παρὰ τοὺς ἐκείνων νόμους φθεγξαμένους περὶ θεῶν ἀπαραιτήτως ἐκόλασαν. Τίνος γὰρ ἑτέρου χάριν Σωκράτης ἀπέθανεν; Οὐ γὰρ δὴ προεδίδου τὴν πόλιν τοῖς πολεμίοις; οὐδὲ τῶν ἱερῶν ἐσύλησεν οὐδέν. Ἀλλ' ὅτι καινοὺς ὅρκους ὤμνυε, καί τι δαιμόνιον αὐτῷ σημαίνειν ἔφασκεν, ἢ σπουδάζων, ἢ διαπαίζων, ὡς ἔνιοι λέγουσι, διὰ ταῦτα κατεγνώσθη κώνειον πιὼν ἀποθανεῖν. Καὶ 493
διαφθείρειν δὲ τοὺς νέους ὁ κατήγορος αὐτὸν ἠτιᾶτο, τῆς πατρίου πολιτείας καὶ τῶν νόμων ὅτι προῆγεν αὐτοὺς καταφρονεῖν. Σωκράτης μὲν οὖν πολίτης Ἀθηναίων τοιαύτην ὑπέμεινε τιμωρίαν. Ἀναξαγόρας δὲ Κλαζομένιος ἦν. Ἀλλ' ὅτι νομιζόντων Ἀθηναίων τὸν ἥλιον εἶναι θεὸν, ὅδ' αὐτὸν ἔφη μύδρον εἶναι διάπυρον, θάνατον αὐτοῦ παρ' ὀλίγας ψήφους κατέγνωσαν. Καὶ Διαγόρᾳ τῷ Μηλίῳ τάλαντον ἐπεκήρυξαν, εἴ τις αὐτὸν ἀνέλοι, ἐπεὶ τὰ παρ' αὐτοῖς μυστήρια χλευάζειν ἐλέγετο. Καὶ Πρωταγόρας, εἰ μὴ θᾶττον ἔφυγε, συλληφθεὶς ἂν ἐτεθνήκει, γράψαι τι δόξας οὐχ ὁμολογούμενον τοῖς Ἀθηναίοις περὶ θεῶν. Τί δὲ δεῖ θαυμάζειν, εἰ πρὸς ἄνδρας οὕτως ἀξιοπίστους διετέθησαν, οἵ γε μηδὲ γυναικῶν ἐφείσαντο; Νῦν μὲν γάρ τινα ἱέρειαν ἀπέκτειναν, ἐπεί τις αὐτῆς κατηγόρησεν, ὅτι ξένους ἐμύει θεούς. Νόμῳ δὲ ἦν τοῦτο παρ' αὐτοῖς κεκωλυμένον, καὶ τιμωρία κατὰ τῶν ξένον εἰσαγόντων θεὸν ὥριστο θάνατος. Οἱ δὲ τοιούτῳ νόμῳ χρώμενοι δηλονότι τοὺς τῶν ἄλλων οὐκ ἐνόμιζον εἶναι θεούς· οὐ γὰρ ἂν αὑτοῖς πλειόνων ἀπολαύειν ἐφθόνουν. Τὰ μὲν οὖν Ἀθηναίων ᾤχετο καλῶς. Σκύθαι δὲ φόνοις χαίροντες ἀνθρώπων, καὶ βραχὺ τῶν θηρίων διαφέροντες, ὅμως τὰ παρ' αὐτοῖς οἴονται δεῖν περιστέλλειν· καὶ τὸν ὑπὸ τῶν Ἑλλήνων ἐπὶ

σοφίᾳ θαυμασθέντα τὸν Ἀνάχαρσιν, ἐπανελθόντα πρὸς αὐτοὺς ἀνεῖλον, ἐπεὶ τῶν Ἑλληνικῶν ἐθῶν ἔδοξεν ἥκειν ἀνάπλεως. Πολλοὺς δὲ καὶ παρὰ Πέρσαις ἄν τις εὕροι καὶ διὰ τὴν αὐτὴν αἰτίαν κεκολασμένους. Ἀλλὰ δηλονότι τοῖς Περσῶν ἔχαιρε νόμοις ὁ Ἀπολλώνιος, καὶ ἐκείνους ἐθαύμαζεν, ὅτι τῆς ἀνδρείας αὐτῶν ἀπήλαυσαν οἱ Ἕλληνες, καὶ τῆς ὁμογνωμοσύνης ἧς εἶχον περὶ θεῶν· ταύτης μὲν οὖν, ἐν τοῖς ἱεροῖς, οἷς κατέπρησαν, τῆς ἀνδρείας δὲ, δουλῶσαι παρὰ μικρὸν ἐλθόντες. Ἁπάντων δὲ καὶ τῶν ἐπιτηδευμάτων μιμητὴς ἐγένετο τῶν Περσικῶν, γυναῖκας ἀλλοτρίας ὑβρίζων, καὶ παῖδας ἐκτέμνων. Παρ' ἡμῖν δὲ θάνατος ὥρισται, καὶ ἐὰν ἄλογόν τις ζῶον οὕτως ἀδικῇ· καὶ τούτων ἡμᾶς τῶν νόμων ἀπαγαγεῖν, οὔτε φόβος ἴσχυσε τῶν κρατησάντων, οὔτε ζῆλος τῶν παρὰ τοῖς ἄλλοις τετιμημένων. Οὐδὲ τὴν ἀνδρείαν ἠσκήσαμεν ἐπὶ τῷ πολέμους ἄρασθαι χάριν πλεονεξίας, ἀλλ' ἐπὶ τῷ τοὺς νόμους διαφυλάττειν. Τὰς γοῦν ἄλλας ἐλαττώσεις πρᾴως ὑπομένοντες, ἐπειδὰν τινες ἡμᾶς τὰ νόμιμα κινεῖν ἀναγκάζωσι, τότε καὶ παρὰ δύναμιν αἱρούμεθα πολέμους, καὶ μέχρι τῶν ἐσχάτων ταῖς συμφοραῖς ἐγκαρτεροῦμεν. Διὰ τί γὰρ ἂν καὶ ζηλώσαιμεν τοὺς ἑτέρων νόμους, ὁρῶντες μήτε παρὰ τοῖς θεμένοις αὐτοὺς τετηρημένους; Πῶς γὰρ οὐκ ἔμελλον Λακεδαιμόνιοι μὲν τῆς ἀνεπιμίκτου καταγνώσεσθαι πολιτείας, καὶ τῆς περὶ τοὺς γάμους ὀλιγωρίας· Ἠλεῖοι δὲ καὶ Θηβαῖοι τῆς παρὰ φύσιν καὶ ἄγαν ἀνέδην πρὸς τοὺς ἄῤῥενας μίξεως; Ἃ γοῦν πάλαι κάλλιστα καὶ συμφορώτατα πράττειν ὑπελάμβανον, ταῦτ' εἰ μὴ καὶ παντάπασι τοῖς ἔργοις πεφεύγασιν, οὐχ ὁμολογοῦσιν. Ἀλλὰ καὶ τοὺς περὶ αὐτῶν νόμους ἀπομίγνυνται, τοσοῦτόν ποτε παρὰ τοῖς Ἕλλησιν ἰσχύσαντας, ὥστε καὶ τοῖς θεοῖς τὰς
494 τῶν ἀῤῥένων μίξεις ἐπεφήμισαν· κατὰ τὸν αὐτὸν δὲ λόγον καὶ τοὺς τῶν γνησίων ἀδελφῶν γάμους, ταύ-

την ἀπολογίαν αὐταῖς τῶν ἀτόπων καὶ παρὰ φύσιν ἡδονῶν συντιθέντες.

38. Ἐῶ νῦν περὶ τῶν τιμωριῶν λέγειν, ὅσας μὲν ἐξ ἀρχῆς ἔδοσαν οἱ πλεῖστοι νομοθέται τοῖς πονηροῖς διαλύσεις· ἐπὶ μοιχείας μὲν ζημίας χρημάτων, ἐπὶ φθορὰς δὲ γάμους νομοθετήσαντες. Ὅσας καὶ περὶ τῆς ἀσεβείας προφάσεις περιέχουσιν ἀρνήσεως, εἰ καί τις ἐπιχειρήσειεν ἐξετάζειν! Ἤδη γὰρ παρὰ τοῖς πλείοσι μελέτη γέγονε τοῦ παραβαίνειν τοὺς νόμους· οὐ μὴν καὶ παρ' ἡμῖν. Ἀλλὰ καὶ ἐὰν πλούτου, καὶ πόλεων, καὶ τῶν ἄλλων ἀγαθῶν στερηθῶμεν, ὁ γοῦν νόμος ἡμῖν ἀθάνατος διαμένει· καὶ οὐδεὶς Ἰουδαίων, οὔτε μακρὰν οὕτως ἂν ἀπέλθοι τῆς πατρίδος, οὐδ' ἐπίπικρον φοβηθήσεται δεσπότην, ὡς μὴ πρὸ ἐκείνου δεδιέναι τὸν νόμον. Εἰ μὲν οὖν διὰ τὴν ἀρετὴν τῶν νόμων οὕτω πρὸς αὐτοὺς διακείμεθα, συγχωρησάτωσαν, ὅτι κρατίστους ἔχομεν νόμους. Εἰ δὲ φαύλοις οὕτως ἡμᾶς ἐμμένειν ὑπολαμβάνουσι, τί οὐκ ἂν αὐτοὶ δικαίως πάθοιεν, τοὺς κρείττονας οὐ φυλάττοντες; Ἐπεὶ τοίνυν ὁ πολὺς χρόνος πιστεύεται πάντων εἶναι δοκιμαστὴς ἀληθέστατος, τοῦτον ἂν ποιησαίμην ἐγὼ μάρτυρα τῆς ἀρετῆς ἡμῶν τοῦ νομοθέτου, καὶ τῆς ὑπ' ἐκείνου φήμης περὶ τοῦ θεοῦ παραδοθείσης. Ἀπείρου γὰρ τοῦ χρόνου γεγονότος, εἴ τις αὐτὸν παραβάλλοι ταῖς τῶν ἄλλων ἡλικίαις νομοθετῶν, παρὰ πάντας εὕροι τοῦτον.

39. Ὑφ' ἡμῶν τε διηλέγχθησαν οἱ νόμοι καὶ τοῖς ἄλλοις ἅπασιν ἀνθρώποις, ἀεὶ καὶ μᾶλλον αὐτῶν ζῆλον ἐμπεποιήκασι. Πρῶτοι μὲν γὰρ οἱ παρὰ τοῖς Ἕλλησι φιλοσοφήσαντες, τῷ μὲν δοκεῖν τὰ πάτρια διεφύλαττον· ἐν δὲ τοῖς πράγμασι καὶ τῷ φιλοσοφεῖν ἐκείνῳ κατηκολούθησαν, ὅμοια μὲν περὶ θεοῦ φρονοῦντες, εὐτέλειαν δὲ βίου καὶ τὴν πρὸς ἀλλήλους κοινωνίαν διδάσκοντες. Οὐ μὴν ἀλλὰ καὶ πλήθεσιν ἤδη πολὺς ζῆλος γέγονεν ἐκ μακροῦ τῆς

ἡμετέρας εὐσεβείας· οὐδ' ἔστιν οὐ πόλις Ἑλλήνων οὐδητισοῦν, οὐδὲ βάρβαρος, οὐδὲ ἓν ἔθνος, ἔνθα μὴ τὸ τῆς ἑβδομάδος, ἣν ἀργοῦμεν ἡμεῖς, τὸ ἔθος οὐ διαπεφοίτηκε· καὶ αἱ νηστεῖαι, καὶ λύχνων ἀνακαύσεις, καὶ πολλὰ τῶν εἰς βρῶσιν ἡμῖν οὐ νενομισμένων παρατετήρηται. Μιμεῖσθαι δὲ πειρῶνται καὶ τὴν πρὸς ἀλλήλους ἡμῶν ὁμόνοιαν, καὶ τὴν τῶν ὄντων ἀνάδοσιν, καὶ τὸ φιλεργὸν ἐν ταῖς τέχναις, καὶ τὸ καρτερικὸν ἐν ταῖς ὑπὲρ τῶν νόμων ἀνάγκαις. Τὸ γὰρ θαυμασιώτατον, ὅτι χωρὶς τοῦ τῆς ἡδονῆς ἐπαγωγοῦ οὐ δελεαστὸς αὐτὸς καθ' αὑτὸν ἴσχυσεν ὁ νόμος· καὶ ὥσπερ ὁ θεὸς διὰ παντὸς τοῦ κόσμου πεφοίτηκεν, οὕτως ὁ νόμος διὰ πάντων ἀνθρώπων βαβάδικεν. Αὐτὸς δέ τις ἕκαστος τὴν πατρίδα καὶ τὸν οἶκον ἐπισκοπῶν τὸν αὑτοῦ, τοῖς ὑπ' ἐμοῦ λεγομένοις οὐκ ἀπιστήσει. Χρὴ τοίνυν πάντων ἀνθρώπων καταγνῶναι πονηρίαν ἐθελούσιον, εἰ τὰ ἀλ-
495 λότρια καὶ φαῦλα πρὸ τῶν οἰκείων καὶ καλῶν ζηλοῦν ἐπιτεθυμήκασιν· ἢ παύσασθαι βασκαίνοντας ἡμῖν τοὺς κατηγοροῦντας. Οὐδὲ γὰρ ἐπιφθόνου τινὸς ἀντιποιούμεθα πράγματος, τὸν αὐτῶν τιμῶντες νομοθέτην, καὶ τοῖς ὑπ' ἐκείνου προφητευθεῖσι περὶ τοῦ θεοῦ πεπιστευκότες. Καὶ γὰρ εἰ μὴ συνίεμεν αὐτοὶ τῆς ἀρετῆς τῶν νόμων ἁπάντων, ὑπὸ τοῦ πλήθους γοῦν τῶν ζηλούντων μέγα φρονεῖν ἐπ' αὐτοῖς προήχθημεν.

40. Ἀλλὰ γὰρ περὶ μὲν τῶν νόμων καὶ τῆς πολιτείας τὴν ἀκριβῆ πεποίημαι παράδοσιν ἐν τοῖς περὶ ἀρχαιολογίας μοι γραφεῖσι. Νυνὶ δὲ αὐτῶν ἐπεμνήσθην, ἐφ' ὅσον ἦν ἀναγκαῖον, οὔτε τὰ τῶν ἄλλων ψέγειν, οὔτε τὰ παρ' ἡμῖν ἐγκωμιάζειν προθέμενος· ἀλλ' ἵνα τοὺς περὶ ἡμῶν ἀδίκως γεγραφότας ἐλέγξω, πρὸς αὐτὴν ἀναιδῶς τὴν ἀλήθειαν πεφιλονεικότας. Καὶ δή μοι δοκῶ πεπληρῶσθαι διὰ τῆς γραφῆς ἱκανῶς ἃ προὐπεσχόμην. Καὶ γὰρ ἀρ-

χαιότητι προϋπάρχον ἐπέδειξα τὸ γένος, τῶν κατηγόρων, ὅτι νεώτατόν ἐστιν, εἰρηκότων· καὶ γὰρ πολλοὺς ἐν τοῖς συγγράμμασιν ἐμνημονευκότας ἡμῶν ἀρχαίους παρέσχομεν μάρτυρας, ἐκείνων, ὅτι μηδείς ἐστι, διαβεβαιουμένων. Ἀλλὰ μὴν Αἰγυπτίους ἔφασαν ἡμῶν τοὺς προγόνους· ἐδείχθησαν δὲ εἰς Αἴγυπτον ἐλθόντες ἑτέρωθεν. Διὰ δὲ λύμην σωμάτων αὐτοὺς ἐκβληθῆναι κατεψεύσαντο· προαιρέσει καὶ περιουσίᾳ ῥώμης ἐφάνησαν ἐπὶ τὴν οἰκείαν ὑποστρέψαντες γῆν. Οἱ μὲν ὡς φαυλότατον ἡμῶν τὸν νομοθέτην ἐλοιδόρησαν· τῷ δὲ τῆς ἀρετῆς πάλαι μὲν ὁ θεὸς, μετ᾽ ἐκεῖνον δὲ μάρτυς ὁ χρόνος εὕρηται γεγενημένος.

41. Περὶ τῶν νόμων οὐκ ἐδέησε λόγου πλείονος. Αὐτοὶ γὰρ ἑωράθησαν δι᾽ αὐτῶν, οὐκ ἀσέβειαν μὲν, εὐσέβειαν δὲ ἀληθεστάτην διδάσκοντες· οὐδ᾽ ἐπὶ μισανθρωπίαν, ἀλλ᾽ ἐπὶ τὴν τῶν ὄντων κοινωνίαν παρακαλοῦντες, ἀδικίας ἐχθροὶ, δικαιοσύνης ἐπιμελεῖς, ἀργίαν καὶ πολυτέλειαν ἐξορίζοντες, αὐτάρκεις καὶ φιλοπόνους εἶναι διδάσκοντες, πολέμων μὲν ἀπείργοντες εἰς πλεονεξίαν, ἀνδρείους δὲ ὑπὲρ αὐτῶν εἶναι παρασκευάζοντες, ἀπαραίτητοι πρὸς τὰς τιμωρίας, ἀσόφιστοι λόγων παρασκευαῖς, τοῖς ἔργοις ἀεὶ βεβαιούμενοι· ταῦτα γὰρ ἀεὶ ἡμεῖς παρέχομεν τῶν γραμμάτων ἐναργέστερα. Δι᾽ ὅπερ ἐγὼ θαρσήσας ἂν εἴποιμι, πλείστων ἅμα καὶ καλλίστων ἡμᾶς εἰςηγητὰς τοῖς ἄλλοις γεγονέναι. Τί γὰρ εὐσεβείας ἀπαραβάτου κάλλιον; Τί δὲ τοῦ πειθαρχεῖν τοῖς νόμοις δικαιότερον; Ἢ τί συμφορώτερον τοῦ πρὸς ἀλλήλους ὁμονοεῖν, καὶ μήτ᾽ ἐν συμφοραῖς διΐστασθαι, μήτ᾽ ἐν εὐτυχίαις στασιάζειν ἐξυβρίζοντας· ἀλλ᾽ ἐν πολέμῳ μὲν θανάτου καταφρονεῖν, ἐν εἰρήνῃ δὲ τέχναις ἢ γεωργίαις προςανέχειν, πάντα δὲ καὶ πανταχοῦ πεπεῖσθαι τὸν θεὸν ἐποπτεύοντα διέπειν; Ταῦτ᾽ εἰ μὲν παρ᾽ ἑτέροις ἢ ἔγραφεν πρῶτον, ἢ

ἐφυλάχθη βεβαιότερον, ἡμεῖς ἂν ἐκείνοις χάριν ὀφεί-
λομεν, ὡς μαθηταὶ γεγονότες. Εἰ δὲ καὶ ἐχρώμενοι
μάλιστα πάντων βλεπόμεθα, καὶ τὴν πρώτην εὕρε-
496 σιν αὐτῶν ἡμετέραν οὖσαν ἐπεδείξαμεν, Ἀπίωνες
μὲν καὶ Μόλωνες, καὶ πάντες, ὅσοι τῷ ψεύδεσθαι
καὶ λοιδορεῖν χαίρουσιν, ἐξελέγχθωσαν. Σοὶ δὲ, Ἐπ-
αφρόδιτε, μάλιστα τὴν ἀλήθειαν ἀγαπῶντι, καὶ διὰ
σε τοῖς ὁμοίως βουλευσαμένοις περὶ τοῦ γένους ἡ-
μῶν εἰδέναι, τοῦτό τε καὶ τὸ πρὸ αὐτοῦ γεγράφθω
βιβλίον.

497 # ΦΛ. ΙΩΣΗΠΟΥ

ΕΙΣ

ΜΑΚΚΑΒΑΙΟΥΣ

ΛΟΓΟΣ

Η

ΠΕΡΙ ΑΥΤΟΚΡΑΤΟΡΟΣ ΛΟΓΙΣΜΟΥ.

1. Φιλοσοφώτατον λόγον ἐπιδείκνυσθαι μέλλων,
εἰ αὐτοδέσποτός ἐστι τῶν παθῶν ὁ εὐσεβὴς λογισμὸς,
συμβουλεύσαιμι ἂν ὑμῖν ὀρθῶς, ὅπως προσέχητε
προθύμως τῇ φιλοσοφίᾳ. Καὶ γὰρ ἀναγκαῖος εἰς
498 ἐπιστήμην παντὶ ὁ λόγος, καὶ ἄλλως τῆς μεγίστης

ἀρετῆς. Λέγω δὴ, ὅτι φρονήσεως περιέχει ἔπαινον· εἴ ἄρα τῶν σωφροσύνης κωλυτικῶν παθῶν ὁ λογισμὸς φαίνεται ἐπικρατεῖν, γαστριμαργίας τε καὶ ἐπιθυμίας. Ἀλλὰ καὶ τῶν τῆς δικαιοσύνης ἐμποδιστικῶν παθῶν κυριεύειν ἀναφαίνεται, οἷον κακοηθείας· καὶ τῶν τῆς ἀνδρείας ἐμποδιστικῶν παθῶν, θυμοῦ τε καὶ φόβου καὶ πόνου. Πῶς οὖν, ἴσως εἴποιεν ἄν τινες, εἰ τῶν παθῶν ὁ λογισμὸς κρατεῖ, λήθης καὶ ἀγνοίας οὐ δεσπόζει; Γελοῖον ἐπιχειροῦντες λέγειν. Οὐ γὰρ τῶν ἑαυτοῦ παθῶν ὁ λογισμὸς κρατεῖ, ἀλλὰ τῶν τῆς δικαιοσύνης καὶ ἀνδρείας καὶ σωφροσύνης ἐναντίων· καὶ τούτων, οὐχ ὥςτε αὐτὰ καταλῦσαι, ἀλλ' ὥςτε αὐτοῖς μὴ εἶξαι. Πολλαχόθεν μὲν οὖν καὶ ἀλλαχόθεν ἔχοιμ' ἂν ὑμῖν ἐπιδεῖξαι, ὅτι αὐτοκράτωρ ἐστὶ τῶν παθῶν ὁ λογισμός· πολὺ δὲ πλέον τοῦτο ἀποδεῖξαι ἀπὸ τῆς ἀνδραγαθίας τῶν ὑπὲρ ἀρετῆς ἀποθανόντων, Ἐλεαζάρου τε καὶ τῶν ἑπτὰ ἀδελφῶν καὶ τῆς τούτων μητρός. Ἅπαντες γὰρ οὗτοι τῶν ὑπὲρ τῶν Θεοῦ νόμων ἕως θανάτου πόνων καταφρονήσαντες, καὶ ὑπὲρ θεοσεβείας τὸ ζῆν αὐτῶν ὑπεριδόντες, ὑπέδειξαν, ὅτι περικρατεῖ τῶν παθῶν ὁ λογισμός. Τῶν μὲν οὖν ἀρετῶν ἔπεστί μοι ἐπαινεῖν τοὺς κατ' ἐκεῖνον τὸν καιρὸν ὑπὲρ τῆς καλοκἀγαθίας ἀποθανόντας μετὰ τῆς μητρὸς ἄνδρας· τῶν δὲ τιμῶν μακαρίσαιμι ἂν αὐτούς. Θαυμασθέντες γὰρ ἐκεῖνοι οὐ μόνον ὑπὸ πάντων ἀνθρώπων ἐπὶ τῇ ἀνδρείᾳ καὶ ὑπομονῇ, ἀλλὰ καὶ ὑπὸ τῶν καταικισαμένων, αἴτιοι κατέστησαν τοῦ καταλυθῆναι τὴν κατὰ τοῦ ἔθνους τυραννίδα, νικήσαντες τὸν τύραννον τῇ ὑπομονῇ, ὥςτε καθαρισθῆναι δι' αὐτῶν τὴν πατρίδα. Ἀλλὰ καὶ περὶ τοῦ ζητουμένου αὐτίκα δὴ λέγειν ἐξέσται ἀρξαμένῳ τῆς ὑποθέσεως, ὥςπερ εἰώθαμεν ποιεῖν, καὶ οὕτως εἰς τὸν περὶ αὐτῶν τρέψομαι λόγον, δόξαν διδοὺς τῷ πανσόφῳ Θεῷ.

2. Ζητοῦμεν δὲ τοίνυν, εἰ αὐτοκράτωρ ἐστὶ τῶν παθῶν ὁ λογισμὸς, καὶ διακρίνομεν τί ποτέ ἐστι

λογισμὸς, καὶ τί πάθος καὶ πόσαι αἱ τῶν παθῶν ἰδέαι, καὶ εἰ πάντων ἐπικρατεῖ τούτων ὁ λογισμός. Λογισμὸς μὲν τοίνυν ἐστὶ νοῦς μετὰ ὀρθοῦ λόγου προτιμῶν τὸν τῆς σοφίας βίον. Σοφία δέ ἐστι γνῶσις θείων καὶ ἀνθρωπίνων πραγμάτων, καὶ τῶν τούτων αἰτίων. Αὕτη δὲ τοίνυν ἐστὶν ἡ τοῦ νόμου παιδεία, δι᾽ ἧς τὰ θεῖα σεμνῶς καὶ τὰ ἀνθρώπινα συμφερόντως μανθάνομεν. Τῆς δὲ σοφίας ἰδέαι καθεστᾶσι τέσσαρες, φρόνησις, δικαιοσύνη, ἀνδρεία, καὶ σωφροσύνη· κυριωτάτη δὲ πασῶν ἡ φρόνησις, ἐξ ἧς δὴ τῶν παθῶν ὁ λογισμὸς ἐπικρατεῖ. Παθῶν δὲ φύσεις εἰσὶν αἱ περιεκτικώταται δύο, ἡδονή τε καὶ πόνος. Τούτων δὲ ἑκάτερον καὶ περὶ τὸ σῶμα καὶ περὶ τὴν ψυχὴν πέφυκε. Πολλαὶ δὲ καὶ περὶ τὴν ἡδονὴν καὶ τὸν πόνον παθῶν εἰσὶν ἀκολουθίαι. Πρὸ μὲν οὖν τῆς ἡδονῆς ἐστὶν ἐπιθυμία, μετὰ δὲ τὴν ἡδονὴν χαρά. Πρὸ δὲ τοῦ πόνου ἐστὶ φόβος, μετὰ δὲ πόνον λύπη. Θυμὸς δὲ κοινὸν πάθος ἐστὶν ἡδονῆς τε καὶ πόνου, ἐὰν ἐννοηθῇ τις, ὅτι αὐτῷ περιέπεσεν. Ἐν τῇ ἡδονῇ δέ ἐστι καὶ ἡ κακοήθης διάθεσις πο-
499 *λυτροπωτάτη πάντων οὖσα τῶν παθῶν. Κατὰ μὲν τὴν ψυχὴν ἀλαζονεία, φιλαργυρία, φιλοδοξία, φιλονεικία, καὶ βασκανία· κατὰ δὲ τὸ σῶμα, παντοφαγία, λαιμαργία, μονοφαγία. Καθάπερ οὖν δυοῖν τοῦ σώματος καὶ τῆς ψυχῆς φυτῶν ὄντων ἡδονῆς τε καὶ πόνου, πολλαὶ τούτων τῶν φυτῶν εἰσὶ παραφυάδες· ὧν ἑκάστην ὁ παγγέωργος λογισμὸς, περικαθαίρων τε καὶ ἀποκνίζων καὶ περιπλέκων καὶ ἐπάρδων καὶ πάντα τρόπον μετοχετεύων, ἐξημεροῖ τὰς τῶν ἠθῶν καὶ παθῶν ὕλας. Ὁ μὲν γὰρ λογισμὸς τῶν μὲν ἀρετῶν ἐστὶν ἡγεμὼν, τῶν δὲ παθῶν αὐτοκράτωρ. Ἐπιθεώρει δὲ, τί πρῶτον δι᾽ αὐτῶν κωλυτικῶν τῆς σωφροσύνης ἔργων, ὅτι αὐτοδέσποτός ἐστι τῶν παθῶν ὁ λογισμός. Σωφροσύνη δέ τοι ἐστὶν ἐπικράτεια τῶν ἐπιθυμιῶν. Τῶν δὲ ἐπιθυμιῶν αἱ μέν εἰσι ψυχικαὶ, αἱ δὲ σωματικαί. Τούτων δὲ*

ἀμφοτέρων ἐπικρατεῖν ὁ λογισμὸς φαίνεται. Ἐπεὶ πόθεν κινούμενοι πρὸς τὰς ἀπειρημένας τροφὰς, ἀποστρεφόμεθα τὰς ἐξ αὐτῶν ἡδονάς; Οὐχ ὅτι δύναται τῶν ὀρέξεων ἐπικρατεῖν ὁ λογισμός; Ἐγὼ μὲν οἶμαι τοιγαροῦν ἐνύδρων ἐπιθυμοῦντες καὶ ὀρνέων καὶ τετραπόδων καὶ παντοίων βρωμάτων τῶν ἀπηγορευμένων ἡμῖν κατὰ τὸν νόμον ἀπεχόμεθα διὰ τὴν τοῦ λογισμοῦ ἐπικράτειαν. Ἀνέχεται γὰρ τὰ τῶν ὀρέξεων πάθη ὑπὸ τοῦ σώφρονος νοὺς ἀνακαμπτόμενα, καὶ φιμοῦται πάντα τὰ τοῦ σώματος κινήματα ὑπὸ τοῦ λογισμοῦ.

3. Καὶ τί θαυμαστὸν, εἰ αἱ τῆς ψυχῆς ἐπιθυμίαι πρὸς τοῦ κάλλους μετουσίαν ἀκυροῦνται; Ταύτῃ γοῦν ὁ σώφρων Ἰωσὴφ ἐπαινεῖται, ὅτι τῷ λογισμῷ καὶ τῇ διανοίᾳ περιεκράτησε τῆς ἡδυπαθείας. Νέος γὰρ ὢν καὶ ἀκμάζων πρὸς συνουσιασμὸν, ἠκύρωσε τῷ λογισμῷ τὸν τῶν παθῶν οἶστρον. Οὐ μόνον δὲ τὴν ἐπὶ τῆς ἡδυπαθείας οἰστρηλασίαν ἐπικρατεῖν ὁ λογισμὸς φαίνεναι, ἀλλὰ καὶ πάσης ἐπιθυμίας δεσπόζειν ἀναδείκνυται. Λέγει γοῦν ὁ νόμος· "Οὐκ ἐπιθυμήσεις τὴν γυναῖκα τοῦ πλησίον σου, οὐδὲ ὅσα τοῦ πλησίον σου ἐστί." Καίτοι ὅτε μηδ' ἐπιθυμεῖν ἡμᾶς εἴρηκεν ὁ νόμος, πολὺ πλέον πείσειεν ἂν ἡμᾶς, ὅτι τῶν ἐπιθυμιῶν κρατεῖν δύναιτ' ἂν ὁ λογισμὸς, ὥσπερ καὶ τῶν κωλυτικῶν τῆς δικαιοσύνης παθῶν. Ἐπεὶ τίνα τρόπον μονοφάγος τις ὢν τὸ ἦθος, καὶ γαστρίμαργος καὶ μέθυσος, μεταπαιδεύεται, εἰ μὴ δῆλον, ὅτι κύριός ἐστι τῶν παθῶν ὁ λογισμός; Αὐτίκα γοῦν ὁ τῷ νόμῳ πολιτευόμενος, καὶ ἂν φιλάργυρός τις ᾖ, βιάζεται τὸν αὐτοῦ τρόπον, τοῖς δεομένοις δανείζων χωρὶς τόκων, καὶ τὸ δάνειον τῶν ἑβδομάδων ἐνστασῶν χρεωκοπούμενος. Καὶ ἐὰν φειδωλός τις ᾖ, ὑπὸ τοῦ νόμου κρα- 500
τεῖται διὰ τὸν λογισμὸν, μήτε ἐπικαρπολογούμενος τοὺς ἀμητοὺς, μήτε ἐπιρρωγολογούμενος τοὺς ἀμπελῶνας. Καὶ ἐπὶ τῶν ἑτέρων δὲ ἐστὶν ἐπιγνῶναι τοῦ-

το, ὅτι τῶν παθῶν ἐστιν αὐτοκράτωρ ὁ λογισμός. Ὁ γὰρ νόμος καὶ τῆς πρὸς γονεῖς εὐνοίας κρατεῖ, μὴ καταπροδιδοὺς τὴν ἀρετὴν δι' αὐτούς. Καὶ τῆς πρὸς γαμετὴν φιλίας ἐπικρατεῖ, διὰ παρανομίαν αὐτὴν ἀπελέγχων. Καὶ τῆς τῶν τέκνων φιλίας κυριεύει, διὰ κακίαν αὐτὰ κολάζων. Καὶ τῆς φίλων συνηθείας δεσπόζει, διὰ πονηρίαν αὐτοὺς ἐλέγχων. Καὶ μὴ νομίσητε παράδοξον εἶναι, ὅπου τε καὶ ἔχθρας ἐπικρατεῖν ὁ λογισμὸς δύναται διὰ τὸν νόμον, μήτε δενδροτομῶν τὰ ἥμερα τῶν πολεμίων φυτὰ, τά τε τῶν ἐχθρῶν τοῖς ἀπολέσασι διασώζων καὶ τὰ πεπτωκότα συνεγείρων. Καὶ τῶν βιαιοτέρων δὲ παθῶν ἐπικρατεῖν ὁ λογισμὸς φαίνεται, φιλαρχίας καὶ κενοδοξίας καὶ ἀλαζονείας καὶ μεγαλαυχίας καὶ βασκανίας. Πάντα γὰρ ταῦτα τὰ κακοήθη πάθη ὁ σώφρων νοῦς εἰς ἀγαθὸν προτρέπων ἀπωθεῖται καὶ βιάζεται, ὥσπερ καὶ τὸν θυμόν· καὶ γὰρ καὶ τούτου δεσπόζει. Θυμούμενός γέ τοι Μωϋσῆς κατὰ Δαθὰν καὶ Ἀβιρὰμ οὐ θυμῷ τι κατ' αὐτῶν ἐποίησεν, ἀλλὰ λογισμῷ τὸν θυμὸν διήτησε· δυνατὸς γὰρ ὁ σώφρων νοῦς, ὡς ἔφην, κατὰ τῶν παθῶν ἀριστεῦσαι, καὶ τὰ μὲν αὐτῶν μεταθεῖναι, τὰ δὲ καὶ ἀκυρῶσαι. Ἐπεὶ διὰ τί ὁ πάνσοφος ἡμῶν πατὴρ Ἰακὼβ τοὺς περὶ Συμεὼν καὶ Λευῒ αἰτιᾶται, μὴ λογισμῷ τοὺς Σικιμίτας ἐθνηδὸν ἀποσφάξαντας, λέγων· "Ἐπικατάρατος ὁ θυμὸς αὐτῶν." Εἰ μὴ γὰρ ἐδύνατο ὁ λογισμὸς τοῦ θυμοῦ κρατεῖν, οὐκ ἂν εἶπεν οὕτως. Ὁπηνίκα γὰρ ὁ θεὸς τὸν ἄνθρωπον κατεσκεύαζε, λόγῳ καὶ αὐτεξουσιότητι κοσμήσας, τηνίκα δὲ καὶ τὰ πάθη αὐτῷ καὶ τὰ ἤθη περιεφύτευσε, καὶ τὸν ἡγεμόνα νοῦν διὰ τῶν ἔνδον αἰσθητηρίων ἐνεθρόνισε· καὶ τούτῳ νόμον ἔδωκε, καθ' ὃν πολιτευόμενος βασιλεύσει βασιλείαν σώφρονά τε καὶ δικαίαν καὶ ἀγαθὴν καὶ ἀνδρείαν. Πῶς οὖν, εἴποι τις ἂν, εἰ τῶν παθῶν δεσπότης ἐστὶν ὁ λογισμὸς, λήθης καὶ ἀγνοίας οὐ κρατεῖ; Ἔστι δὲ κομιδῇ γελοῖος ὁ λόγος· οὐ γὰρ

τῶν ἑαυτοῦ παθῶν ὁ λογισμὸς ἐπικρατεῖν φαίνεται, ἀλλὰ τῶν σώματος· οἷον ἐπιθυμίαν τις οὐ δύναται ἐκκόψαι ἡμῶν, ἀλλὰ τὸ μὴ δουλωθῆναι τῇ ἐπιθυμίᾳ δύναται ὁ λογισμὸς παρασχέσθαι. Θυμόν τις οὐ δύναται ἐκκόψαι ἡμῶν τῆς ψυχῆς, ἀλλὰ τὸ μὴ δουλωθῆναι τῷ θυμῷ δυνατὸς ὁ λογισμὸς βοηθεῖν. Κακοήθειάν τις ἡμῶν οὐ δύναται ἐκκόψαι, ἀλλὰ τὸ μὴ καμφθῆναι τῇ κακοηθείᾳ δύναται ὁ λογισμὸς συμμαχῆσαι· οὐ γὰρ ἐκριζωτὴς τῶν παθῶν ὁ λογισμός ἐστιν, ἀλλ' ἀνταγωνιστής. Ἔστι γοῦν τοῦτο διὰ τῆς τοῦ Δαυὶδ τοῦ βασιλέως δίψης διασαφέστερον ἐπιλογίσασθαι. Ἐπεὶ γὰρ δι' ὅλης τῆς ἡμέρας πολεμῶν τοὺς ἀλλοφύλους καὶ πολλοὺς ἐξ αὐτῶν ἀποκτείνας ὁ Δαυὶδ μετὰ τοῦ ἔθνους στρατιωτῶν· τότε δὴ γενομένης ἑσπέρας, ἱδρῶν καὶ σφόδρα κεκμηκὼς ἐπὶ τὴν βασίλειον σκηνὴν ἦλθε, 501
περὶ ἣν ὁ πᾶς τῶν προγόνων στρατὸς ἐστρατοπεδεύκει. Οἱ μὲν οὖν ἄλλοι πάντες ἐπὶ τὸ δεῖπνον εἶσαν· ὁ δὲ βασιλεὺς ὡς μάλιστα διψῶν, καίπερ ἀφθόνους ἔχων πηγὰς, οὐκ ἐδύνατο δι' αὐτῶν ἰάσασθαι τὴν δίψαν· ἀλλά τις αὐτὸν ἀλόγιστος ἐπιθυμία τοῦ παρὰ τοῖς πολεμίοις ὕδατος ἐπιτείνουσα συνέφρυγε καὶ λύουσα κατέφλεγεν. Ὅθεν τῶν ὑπερασπιστῶν ἐπὶ τῇ τοῦ βασιλέως δίψῃ σχετλιαζόντων, τρεῖς νεανίσκοι στρατιῶται καρτεροὶ, καταιδεσθέντες τὴν τοῦ βασιλέως ἐπιθυμίαν, τὰς παντευχίας καθωπλίσαντο, καὶ κάλπην λαβόντες ὑπερέβησαν τοὺς τῶν πολεμίων χάρακας. Καὶ λαθόντες τοὺς τῶν πυλῶν ἀκροφύλακας, διεξῄεσαν, ἀνερευνώμενοι κατὰ πᾶν τὸ τῶν πολεμίων στρατόπεδον, καὶ ἀνευράμενοι τὴν πηγὴν ἐξ αὐτῆς θαῤῥαλέως τῷ βασιλεῖ ἐκόμισαν. Ὁ δὲ, καίπερ τῇ δίψῃ διαπυρούμενος, ἐλογίσατο πάνδεινον εἶναι κίνδυνον ψυχῇ λογισθὲν ἰσοδύναμον ποτὸν αἵματι. Ὅθεν ἀντιθεὶς τῇ ἐπιθυμίᾳ τὸν λογισμὸν, ἔσπεισε τὸ πόμα τῷ θεῷ. Δυνατὸς γὰρ ὁ σώφρων, ἔφην, νοῦς νικῆσαι τὰς τῶν παθῶν ἀνάγκας καὶ σβέσαι τὰς τῶν οἴστρων φλεγμονὰς, καὶ τὰς

τῶν σωμάτων ἀλγηδόνας καθ' ὑπερβολὴν οὔσας καταπαλαῖσαι, καὶ τῇ καλοκἀγαθίᾳ τοῦ λογισμοῦ διαπτύσαι πάσας τὰς τῶν παθῶν ἐπικρατείας. Ἤδη δὲ καὶ ὁ καιρὸς ἡμᾶς καλεῖ ἐπὶ τὴν ἀπόδειξιν τῆς θεωρίας τοῦ σώφρονος λογισμοῦ.

4. Ἐπειδὴ γὰρ βαθεῖαν εἰρήνην διὰ τὴν εὐνομίαν οἱ πατέρες ἡμῶν εἶχον καὶ ἔπραττον καλῶς, ὥςτε καὶ τὸν τῆς Ἀσίας βασιλέα Σέλευκον τὸν Νικάνορα χρήματα εἰς τὴν ἱερουργίαν αὐτοῖς ἀφορίσαι, καὶ τὴν πολιτείαν αὐτῶν ἀποδέχεσθαι, τότε δή τινες πρὸς τὴν κοινὴν νεωτερίσαντες ὁμόνοιαν, πολυτρόποις ἐχρήσαντο συμφοραῖς. Σίμων γάρ τις πρὸς Ὀνίαν ἀντιπολιτευόμενος, τόν ποτε τὴν ἀρχιερωσύνην ἔχοντα διὰ βίου, καλὸν καὶ ἀγαθὸν ἄνδρα, ἐπει-
502 δὴ πάντα τρόπον διαβάλλων ὑπὲρ τοῦ ἔθνους οὐκ ἴσχυσε κακῶσαι, φυγὰς ᾤχετο, τὴν πατρίδα προδώσων. Ὅθεν ἥκων ὡς Ἀπολλώνιον τὸν Συρίας τε καὶ Φοινίκης καὶ Κιλικίας στρατηγὸν, ἔλεγεν· “Εὔνους ὢν τοῖς τοῦ βασιλέως πράγμασιν ἥκω μηνύσων, πολλὰς ἰδιωτικῶν χρημάτων μυριάδας ἐν τοῖς Ἱεροσολύμων γαζοφυλακίοις τεθησαυρίσθαι, τῷ ἱερῷ μὴ ἐπικοινωνούσας, καὶ προςήκειν ταῦτα Σελεύκῳ τῷ βασιλεῖ.” Τούτων δὲ ἕκαστα γνοὺς ὁ Ἀπολλώνιος, τὸν μὲν Σίμωνα τῆς εἰς τὸν βασιλέα κηδεμονίας ἐπῄνει, πρὸς δὲ τὸν Σέλευκον ἀναβὰς κατεμήνυσε τὸν τῶν χρημάτων θησαυρόν· καὶ λαβὼν τὴν περὶ αὐτῶν ἐξουσίαν, ταχὺ εἰς τὴν πατρίδα ἡμῶν μετὰ τοῦ καταράτου Σίμωνος καὶ βαρυτάτου στρατοῦ ἀνέβη. Καὶ προςελθὼν, ταῖς τοῦ βασιλέως ἐντολαῖς ἥκειν ἔλεγεν, ὅπως τὰ ἰδιωτικὰ τοῦ γαζοφυλακίου λάβοι χρήματα. Καὶ τοῦ ἔθνους πρὸς τὸν λόγον σχετλιάζοντος, ἀντιλέγοντός τε, πάνδεινον εἶναι νομίσαντες, εἰ οἱ τὰς παραθήκας πιστεύσαντες τῷ ἱερῷ θησαυρῷ στερηθήσονται, ὡς οἷόν τε ἦν, ἐκώλυον. Μετὰ ἀπειλῶν δὲ ὁ Ἀπολλώνιος ἀπῄει εἰς τὸ ἱερόν. Τῶν

δὲ ἱερέων μετὰ γυναικῶν καὶ παιδίων ἐν τῷ ἱερῷ
ἱκετευσάντων τῷ θεῷ ὑπερασπίσαι τοῦ ἱεροῦ κατα-
φρονουμένου τοῦ τόπου, ἀνιόντος τε μετὰ καθωπλι-
σμένης τῆς στρατιᾶς τοῦ Ἀπολλωνίου πρὸς τὴν τῶν
χρημάτων ἁρπαγὴν, οὐρανόθεν ἔφιπποι προςεφάνη-
σαν ἄγγελοι περιαστράπτοντες τοῖς ὅπλοις, καὶ πο-
λὺν αὐτοῖς φόβον τε καὶ τρόμον ἐνιόντες. Καταπεσὼν
δὲ ἡμιθανὴς ὁ Ἀπολλώνιος ἐπὶ τὸν πάμφυλον τοῦ
ἱεροῦ περίβολον τὰς χεῖρας ἐξέτεινεν εἰς τὸν οὐρανὸν,
καὶ μετὰ δακρύων τοὺς Ἑβραίους παρεκάλει, ὅπως
προσευξάμενοι περὶ αὐτοῦ τὸν οὐράνιον ἐξευμενίσων-
ται στρατόν. Τούτοις ἐπαχθεὶς τοῖς λόγοις Ὀνίας
ὁ ἀρχιερεὺς, καίπερ ἄλλως εὐλαβηθεὶς, μήποτε νο-
μίσειεν ὁ βασιλεὺς Σέλευκος ἐξ ἀνθρωπίνης ἐπιβολῆς
καὶ οὐ θείας δίκης ἀνηρῆσθαι τὸν Ἀπολλώνιον, εὔ-
ξατο περὶ αὐτοῦ. Καὶ ὁ μὲν παραδόξως διασωθεὶς
ᾤχετο δηλώσων τῷ βασιλεῖ τὰ συμβάντα αὐτῷ. Τε-
λευτήσαντος δὲ Σελεύκου τοῦ βασιλέως, διαδέχεται
τὴν ἀρχὴν Ἀντίοχος Ἐπιφανὴς υἱὸς αὐτοῦ, ἀνὴρ
πάνδεινος καὶ ὑπερήφανος, ὃς καταλύσας τὸν Ὀνίαν
τῆς ἀρχιερωσύνης Ἰάσονα τὸν ἀδελφὸν αὐτοῦ κατέ-
στησεν ἀρχιερέα, συνθέμενον δώσειν, εἰ ἐπιτρέψειεν
αὐτῷ τὴν ἀρχὴν, κατ' ἐνιαυτὸν τάλαντα τριςχίλια
ἑξακόσια ἑξήκοντα. Ὁ δὲ ἐπέτρεψεν αὐτῷ καὶ ἀρ-
χιερᾶσθαι καὶ τοῦ ἔθνους ἀφηγεῖσθαι· ὃς καὶ ἐξεδι-
ῄτησε τὸ ἔθνος καὶ ἐξεπολίτευσεν ἐπὶ πᾶσαν παρανο-
μίαν, ὥςτε μὴ μόνον ἐπ' αὐτῇ τῇ ἄκρᾳ τῆς πατρί-
δος ἡμῶν γυμνάσιον κατασκευάσαι, ἀλλὰ καὶ κατα-
λῦσαι τὴν τοῦ ἱεροῦ κηδεμονίαν. Ἐφ' οἷς ἀγανα-
κτήσασα ἡ θεία δίκη αὐτὸν αὐτοῖς τὸν Ἀντίοχον 503
ἐπολέμωσεν. Ἐπειδὴ γὰρ πολεμῶν ἦν κατ' Αἴγυ-
πτον Πτολεμαίῳ, ἤκουσέ τε, ὅτι φήμης διαδοθείσης
περὶ τοῦ τεθνάναι αὐτὸν, ὡς ἔνι μάλιστα χαίροιεν
οἱ Ἱεροσολυμῖται, ταχέως ἐπ' αὐτοὺς ἀνέζευξεν. Καὶ
ὡς ἐπόρθησεν αὐτοὺς, δόγμα ἔθετο, ‛ὅπως, οἵτινες
αὐτῶν φανοῖεν τῷ πατρίῳ πολιτευόμενοι νόμῳ, κο-

λασθέντες θάνοιεν.' Ἐπειδὴ δὲ κατὰ μηδένα τρόπον ἴσχυε καταλῦσαι διὰ τῶν δογμάτων τὴν εὐνομίαν τοῦ ἔθνους, ἀλλὰ πάσας τὰς ἀπειλὰς αὐτοῦ καὶ τιμωρίας ἑώρα καταλυομένας, ὥςτε καὶ γυναῖκας, ὅτι περιέτεμνον παιδία, μετὰ τῶν βρεφῶν κατακρημνισθῆναι, προειδυίας, ὅτι τοῦτο πείσονται· ἐπεὶ οὖν τὰ δόγματα αὐτοῦ κατεφρονεῖτο ὑπὸ τοῦ λαοῦ, αὐτὸς διὰ βασάνων ἕνα ἕκαστον ἠνάγκαζε μιαρῶν απογευσαμένους ἐδεσμάτων ἐξόμνυσθαι τὸν Ἰουδαϊσμόν.

5. Προκαθίσας γέ τοι μετὰ τῶν συνέδρων ὁ τύραννος Ἀντίοχος ἐπί τινος ὑψηλοῦ τόπου, καὶ τῶν στρατευμάτων αὐτῷ παρεστηκότων κυκλόθεν ἐνόπλων, παρεκέλευσεν αὐτοῖς ἕνα ἕκαστον τῶν Ἑβραίων ἐπισπᾶσθαι, καὶ κρεῶν ὑείων καὶ εἰδωλοθύτων ἀναγκάζειν ἀπογεύεσθαι. Εἰ δέ τινες μὴ θελήσειαν μιαροφαγῆσαι, τούτους τροχισθέντας ἀναιρεθῆναι. Πολλῶν οὖν ἀναρπασθέντων ἐκ τοῦ ὄχλου, ἀνήρ τις ὀνόματι Ἐλεάζαρος, τὸ γένος ἱερεὺς, τὴν ἐπιστήμην νομικὸς, καὶ τὴν ἡλικίαν προήκων, καὶ πολλοῖς τῶν περὶ τὸν τύραννον διὰ τὴν ἡλικίαν γνώριμος, παρήχθη πλησίον αὐτοῦ. Καὶ ἰδὼν αὐτὸν ὁ Ἀντίοχος, ἔφη, "Ἐγὼ, πρὶν ἄρξασθαι τῶν κατά σου βασάνων, ὦ πρεσβῦτα, συμβουλεύσω σοί, ὅπως ἀπογευσάμενος ὑείων σώζοιο· αἰδοῦμαι γάρ σου καὶ τὴν ἡλικίαν καὶ τὴν πολιὰν, ἣ μετὰ τοσοῦτον χρόνον ἔχων οὔ μοι δοκεῖς φιλοσοφεῖν, τῇ Ἰουδαίων χρώμενος θρησκείᾳ. Διὰ τί γὰρ τῆς φύσεως κεχαρισμένης καλλίστην τὴν τοῦδε τοῦ ζώου σαρκοφαγίαν βδελύττῃ; Καὶ γὰρ ἀνόητον τοῦτο δοκεῖ, τὸ μὴ ἀπολαύειν τῶν χωρὶς ὀνείδους ἡδέων, καὶ ἄδικον ἀποστρέφεσθαι τὰς τῆς φύσεως χάριτας. Σὺ δέ μοι καὶ ἀνοητότερον ποιήσειν δοκεῖς, εἰ κενοδοξῶν περὶ τὸ ἀληθὲς, ἔτι καὶ ἐμοῦ καταφρονήσεις ἐπὶ τῇ ἰδίᾳ τιμωρίᾳ. Οὐκ ἐξυπνώσεις ἀπὸ τῆς φιλοσοφίας ὑμῶν, καὶ ἀποσκεδάσεις τῶν λογισμῶν σου τὸν λῆρον, καὶ ἄξιον νοῦν τῆς ἡλικίας ἀναλαβὼν φιλοσοφήσεις τὴν σύμφορον

ἀλήθειαν· καὶ προσκυνήσας μου τὴν φιλάνθρωπον
παρηγορίαν οἰκτείρησαι τὸ σεαυτοῦ γῆρας. Καὶ γὰρ
ἐνθυμήθητι ὡς, εἰ καί τις ἐστὶ τῆςδε τῆς θρησκείας
ὑμῶν ἐποπτικὴ δύναμις, συγγνωμονήσειεν ἄν σοι 504
ἐπὶ πάσῃ τῇ δι' ἀνάγκην παρανομίᾳ γινομένῃ." Τοῦ-
τον οὖν τὸν τρόπον ἐπὶ τὴν ἔκθεσμον σαρκοφαγίαν
ἐποτρύναντος τοῦ τυράννου, λόγον ᾔτησεν ὁ Ἐλεάζα-
ρος. Καὶ λαβὼν τοῦ λέγειν ἐξουσίαν, ἤρξατο δημη-
γορεῖν, λέγων οὕτως· "Ἡμεῖς, Ἀντίοχε, θείῳ πε-
πεισμένοι νόμῳ πολιτεύεσθαι, οὐδεμίαν ἀνάγκην βι-
αιοτέραν εἶναι νομίζομεν τῆς πρὸς τὸν νόμον ἡμῶν
ἀπειθείας. Διὸ δὴ κατ' οὐδένα τρόπον παρανομεῖν
ἀξιοῦμεν. Καίτοι εἰ καὶ κατ' ἀλήθειαν μὴ ἦν ὁ νό-
μος ἡμῶν, ὡς σὺ ὑπολαμβάνεις, θεῖος, ἄλλως δὲ ἐ-
νομίζομεν αὐτὸν εἶναι θεῖον, οὐδὲ οὕτως ἐξὸν ἦν ἡμῖν
τὴν ἐπὶ τῇ εὐσεβείᾳ δόξαν ἀκυρῶσαι. Μὴ μικρὰν
οὖν εἶναι νομίσῃς ταύτην, εἰ μιαροφαγήσαιμεν, ἁ-
μαρτίαν. Τὸ γὰρ ἐπὶ μικροῖς καὶ μεγάλοις παρανο-
μεῖν ἰσοδύνατόν ἐστι· δι' ἑκατέρου γὰρ ὁ νόμος ὁ-
μοίως ὑπερηφανεῖται. Χλευάζεις δὲ ἡμῶν τὴν φιλο-
σοφίαν, ὥςπερ οὐ μετ' εὐλογιστίας ἐν αὐτῇ βιούν-
των. Σωφροσύνην τε γὰρ ἡμᾶς ἐκδιδάσκει, ὥςτε
πασῶν τῶν ἡδονῶν καὶ ἐπιθυμιῶν κρατεῖν· καὶ ἀν-
δρείαν ἐξασκεῖ, ὥςτε πάντα πόνον ἑκουσίως ὑπομέ-
νειν· καὶ δικαιοσύνην καὶ εὐσέβειαν παιδεύει, ὥςτε
μόνον τὸν ὄντα θεὸν εὐσεβεῖν μεγαλοπρεπῶς. Διὸ
οὐ μιαροφαγοῦμεν· πιστεύοντες γὰρ θεοῦ καθεστά-
ναι τὸν νόμον, οἴδαμεν ὅτι κατὰ φύσιν ἡμῖν συμπα-
θεῖ ὁ νομοθετῶν. Ὁ τοῦ νόμου κτίστης, τὰ μὲν
οἰκειωθησόμενα ἡμῶν ταῖς ψυχαῖς ἐπέτρεψεν ἐσθίειν,
τὰ δὲ ἐναντιωθησόμενα ἐκώλυσε σαρκοφαγεῖν. Τυ-
ραννικὸν οὖν ἐστιν οὐ μόνον τὸ ἀναγκάζειν ἡμᾶς
παρανομεῖν, ἀλλὰ καὶ ἐσθίειν, ὅπως τῇ ἐχθίστῃ ἡ-
μῶν μιαροφαγίᾳ ταύτῃ ἐπιγελάσῃς ἡμᾶς. Ἀλλ' οὐ
γελάσεις κατ' ἐμοῦ τοῦτον τὸν γέλωτα· μα τοὺς ἱεροὺς
τῶν προγόνων περὶ τοῦ φυλάξαι τὸν νόμον ὅρκους,

οὐδ' ἂν ἐκκόψειάς μου τὰ ὄμματα καὶ τὰ σπλάγχνα τήξειας. Οὐχ οὕτως εἰμὶ γέρων ἐγὼ καὶ ἄνανδρος ὑπάρχω, ὥςτε μοι διὰ τὴν εὐσέβειαν μὴ νεάζειν τὸν λογισμόν. Πρὸς ταῦτα τροχοὺς εὐτρέπιζε καὶ τὸ πῦρ ἐκφύσα σφοδρότερον· οὐχ οὕτως οἰκτείρομαι τὸ ἐμαυτοῦ γῆρας, ὥςτε με δι' αὐτοῦ τὸν πάτριον καταλῦσαι νόμον. Οὐ ψεύσομαί σε, παιδευτὰ νόμε, οὐδ' ἐξομοῦμαί σε, φίλη ἐγκράτεια, οὐδὲ καταισχυνῶ σε, φιλόσοφε λόγε, οὐδ' ἐξαρνήσομαί σε, ἱερωσύνη τιμία, καὶ νομοθεσίας ἐπιστήμη· οὐδὲ μιανεῖ μοι τὸ σεμνὸν γῆρας στόμα, οὐδὲ νομίμου βίου ἡλικίαν. Ἁγνὸν δέ με εἰςδέξονται οἱ πατέρες, μὴ φοβηθέντα σου τὰς μέχρι θανάτου ἀνάγκας. Ἀσεβῶν γάρ με τυραννήσεις· τῶν δὲ ἐμῶν ὑπὲρ τῆς εὐσεβείας λογισμῶν οὔτε διὰ λόγων οὔτε δι' ἔργων δεσπόσεις.

505 6. Τοῦτον τὸν τρόπον ἀντιῤῥητορεύσαντα ταῖς τοῦ τυράννου παρηγορίαις περιστάντες οἱ δορυφόροι πικρῶς ἔσυρον ἐπὶ τὰ βασανιστήρια τὸν Ἐλεάζαρον. Καὶ πρῶτον μὲν περιέδυσαν τὸν γηραιὸν εὐκοσμούμενον τῇ περὶ τῆς εὐσεβείας εὐσχημοσύνῃ· ἔπειτα περιαγκωνίσαντες ἑκατέρωθεν, μάστιξι κατῄκιζον, "Πείσθητι ταῖς τοῦ βασιλέως ἐντολαῖς" ἑτέρωθι κήρυκος ἐπιβοῶντος. Ὁ δὲ μεγαλόφρων καὶ εὐγενὴς ἀληθῶς Ἐλεάζαρος, ὥςπερ ἐν ὀνείρῳ βασανιζόμενος, κατ' οὐδένα τρόπον μετετρέπετο· ἀλλ' ὑψηλοὺς ἀνατείνας εἰς οὐρανοὺς τοὺς ὀφθαλμούς, ἀπεξαίνετο ταῖς μάστιξι τὰς σάρκας ὁ γέρων, καὶ κατεῤῥεῖτο τῷ αἵματι, καὶ τὰ πλευρὰ κατετιτρώσκετο, καὶ πίπτων εἰς τὸ ἔδαφος ἐκ τοῦ μηκέτι φέρειν τὸ σῶμα τὰς ἀλγηδόνας, ὀρθὸν εἶχε καὶ ἀκλινῆ τὸν λογισμόν. Λάξ γέ τοι τῶν πικρῶν τις δορυφόρων εἰς τοὺς κενεῶνας ἐναλλόμενος ἔτυπτεν, ὅπως ἐξανίσταιτο πίπτων. Ὁ δὲ τυπτόμενος ὑπέμενε τοὺς πόνους, καὶ περιεφρόνει τῆς ἀνάγκης, καὶ διεκαρτέρει τοὺς αἰκισμούς, καὶ ὡς γενναῖος ἀθλητὴς ὁ γέρων ἐνίκα

τοὺς βασανίζοντας· ἱδρῶν δὲ τὸ πρόςωπον καὶ σφό-
δρα ἐπασθμαίνων, καὶ ὑπ' αὐτῶν τῶν βασανιστῶν
ἐθαυμάζετο τὴν εὐψυχίαν. Ὅθεν τὰ μὲν ἐλεοῦντες
τὰ τοῦ γήρως αὐτοῦ, τὰ δὲ ἐν συμπαθείᾳ διὰ τὴν
συνήθειαν ὄντες, τὰ δὲ ἐν θαυμασμῷ τῆς καρτερίας,
προςιόντες αὐτῷ τινες τῶν τοῦ βασιλέως ἔλεγον·
„Τί τοῖς κακοῖς τούτοις σεαυτὸν ἀλογίστως παραβάλ-
λεις, Ἐλεάζαρε; Ἡμεῖς μέν σοι τῶν ἡψημένων
κρεῶν παραθήσομεν, σὺ δὲ ὑποκρινόμενος τῶν ὑείων
ἀπογεύσασθαι, σώθητι." Ὁ δὲ ὡς πικρότερον αἰ-
κισθεὶς διὰ τῆς συμβουλίας, ἔκραξε λέγων. „Μὴ
γένοιτο, ἵνα οὕτω κακῶς φρονήσωμεν οἱ παῖδες Ἀ-
βραάμ, ὥςτε μαλακοψυχήσαντας ἀπρεπὲς ἡμῖν δρά-
μα ὑποκρίνασθαι. Καὶ γὰρ ἀλόγιστον, πρὸς ἀλήθειαν
ζήσαντες τὸν μέχρι γήρως βίον, καὶ τὴν ἐπ' αὐτῷ
δόξαν νομίμως φυλάξαντες, εἰ νῦν μεταβαλοίμεθα,
καὶ αὐτοὶ μὲν ἡμεῖς γενοίμεθα τοῖς νέοις ἀσεβείας
τύπος; ἵνα καὶ παράδειγμα γενώμεθα τῆς μιαροφα-
γίας. Αἰσχρὸν δὲ ἐπιβιώσωμεν ὀλίγον χρόνον, καὶ
τοῦτον καταγελώμενοι πρὸς ἁπάντων ἐπὶ τῇ δειλίᾳ. 506
Καὶ ὑπὸ μὲν τοῦ τυράννου ὡς ἄνανδροι καταφρονη-
θῶμεν, τὸν δὲ θεῖον ἡμῶν νόμον μὴ μέχρι θανάτου
προασπίσαιμεν. Πρὸς ταῦτα ὑμεῖς μὲν, ὦ Ἀβραὰμ
παῖδες, εὐγενῶς ὑπὲρ τῆς εὐσεβείας τελευτᾶτε. Οἱ
δὲ τοῦ τυράννου δορυφόροι, τί μέλλετε;" Ἰδόντες
οὖν αὐτὸν οὕτω πρὸς τὰς ἀνάγκας μεγαλοφρονούμενον,
καὶ μηδὲ πρὸς τὸν οἰκτιρμὸν αὐτῶν μεταβαλλόμενον,
ἐπὶ τὸ πῦρ ἀνῆγον. Ἔνθα διὰ κακοτέχνων ὀργάνων
καταφλέγοντες αὐτὸν ὑπέρριπτον, καὶ δυςώδεις χυ-
λοὺς εἰς τοὺς μυκτῆρας αὐτοῦ κατέχεον. Ὁ δὲ μέ-
χρι τῶν ὀστέων ἤδη κατακεκαυμένος καὶ μέλλων λει-
ποθυμεῖν, ἀνατείνας τὰ ὄμματα πρὸς τὸν θεὸν, εἶπε·
„Σὺ οἶσθα, θεὲ, ὅτι, παρόν μοι σώζεσθαι, βασά-
νοις καυστικαῖς ἀποθνήσκω διὰ τὸν νόμον. Τοιγαρ-
οῦν ἵλεως γενοῦ τῷ ἔθνει σου, ἀρκεσθεὶς τῇ ἡμετέ-
ρᾳ ὑπὲρ αὐτῶν δίκῃ, καθάρσιον αὐτῶν ποίησαι τὸ

ἐμὸν αἷμα, καὶ ἀντὶ ψυχῶν αὐτῶν λάβε τὴν ἐμὴν ψυχήν." Καὶ ταῦτα εἰπὼν ὁ ἱερὸς ἀνὴρ, εὐγενῶς ταῖς βασάνοις ἐναπέθανεν, καὶ μέχρι τῶν τοῦ θανάτου βασάνων ἀντέστη τῷ λογισμῷ διὰ τὸν νόμον. Ὁμολογουμένως οὖν δεσπότης τῶν παθῶν ἐστιν ὁ εὐσεβὴς λογισμός. Εἰ γὰρ τὰ πάθη τοῦ λογισμοῦ ἐκεκρατήκει, τούτοις οὖν ἀπεδόμην τὴν τῆς ἐπικρατείας μαρτυρίαν. Νυνὶ δὲ τοῦ λογισμοῦ τὰ πάθη νικήσαντος, αὐτῷ προσηκόντως τὴν τῆς ἡγεμονίας προσνέμομεν ἐξουσίαν. Καὶ δίκαιόν ἐστιν ὁμολογεῖν ἡμᾶς, τὸ κράτος εἶναι τοῦ λογισμοῦ, ὅπου γε τῶν ἔξωθεν ἀλγηδόνων ἐπικρατεῖ, ἐπεὶ καὶ γελοῖον· καὶ οὐ μόνον δὲ τῶν ἀλγηδόνων ἐπιδείκνυμι κεκρατηκέναι τὸν λογισμὸν, ἀλλὰ καὶ τῶν ἡδονῶν κρατεῖν καὶ μηδὲ αὐταῖς ὑπείκειν.

7. Ὥςπερ γὰρ ἄριστος κυβερνήτης ὁ τοῦ πατρὸς ἡμῶν Ἐλεαζάρου λογισμὸς πηδαλιουχῶν τὴν τῆς εὐσεβείας ναῦν ἐν τῷ τῶν παθῶν πελάγει, καὶ καταικιζόμενος ταῖς τοῦ τυράννου ἀπειλαῖς, καὶ καταντλούμενος ταῖς τῶν βασάνων τρικυμίαις, κατ' οὐδένα τρόπον ἔτρεψε τοὺς τῆς εὐσεβείας οἴακας, ἕως οὗ ἔπλευσεν ἐπὶ τὸν τῆς ἀθανάτου νίκης λιμένα. Οὐχ οὕτω πόλις πολλοῖς καὶ ποικίλοις μηχανήμασιν ἀντέσχε ποτὲ πολιορκουμένη, ὡς ὁ πανάγιος Ἐλεάζαρος τὴν ἱερὰν ψυχὴν αἰκισμοῖς τε καὶ στρέβλαις πυρπολούμενος, ἐνίκησε τοὺς πολιορκοῦντας διὰ τὸν ὑπερασπίζοντα τῆς εὐσεβείας λογισμόν. Ὥςπερ γὰρ πρόκρημνον ἄκραν τὴν ἑαυτοῦ διάνοιαν ὁ πατὴρ Ἐλεάζαρος ἐκτείνας περιέκλασε τοὺς ἐπιμαινομένους τῶν παθῶν κλύδωνας. Ὦ ἄξιε τῆς ἱερωσύνης ἱερεῦ, οὐκ ἐμίανας τοὺς ἱεροὺς ὀδόντας, οὐδὲ τὴν θεοσέβειαν χωρήσασαν γαστέρα ἐκοίνωσας μιαροφαγίᾳ! Ὦ σύμφωνε νόμου καὶ φιλόσοφε θείου λόγου! Τοιούτους δεῖ εἶναι τοὺς ἱερουργοῦντας τὸν νόμον ἰδίῳ αἵματι, καὶ γενναίῳ ἱδρῶτι τοῖς μέχρι θανάτου πάθεσιν ὑπερ-
307 ασπίζοντας. Σὺ, πάτερ, τὴν εὐνομίαν ἡμῶν διὰ τῶν

ὑπομανῶν εἰς δόξαν ἐκύρωσας, καὶ τὴν ἁγιστείαν σεμνολογήσας οὐ κατέλυσας, καὶ διὰ τῶν ἔργων πιστοποιήσας τοὺς τῆς θείας φιλοσοφίας λόγους, ὦ βασάνων βιαιότερε γέρων, καὶ πυρὸς εὐτονώτερε πρέσβυ, καὶ μέγιστε παθῶν βασιλεῦ Ἐλεάζαρε! Ὥσπερ γὰρ ὁ πατὴρ Ἀαρὼν τῷ θυμιατηρίῳ καθωπλισμένος διὰ τοῦ ἐθνοπλήκτου πυρὸς ἐπιτρέχων τὸν ἐμπυριστὴν ἐνίκησεν ἄγγελον· οὕτως ὁ Ἀαρωνίδης Ἐλεάζαρος διὰ τοῦ πυρὸς ὑπερτηκόμενος, οὐ μετετράπη τὸν λογισμόν. Καὶ τὸ θαυμασιώτατον, γέρων ὤν, λελυμένων μὲν ἤδη τῶν τοῦ σώματος τόνων, περικεχαλασμένων δὲ τῶν σαρκῶν, κεκμηκότων δὲ τῶν νεύρων, ἀνενέασε τῷ πνεύματι διὰ τοῦ λογισμοῦ. Ὦ μακαρίου γήρως, καὶ σεμνῆς πολιᾶς, καὶ βίου νομίμου, ὃ πιστὴ θανάτου σφραγὶς ἐτελείωσεν! Εἰ δὲ τοίνυν γέρων ἀνὴρ τῶν μέχρι θανάτου βασάνων περιεώρα δι' εὐσέβειαν, ὁμολογουμένως ἡγεμών ἐστι τῶν παθῶν ὁ εὐσεβὴς λογισμός. Ἴσως δ' ἂν εἴποιέν τινες, τῶν παθῶν οὐ πάντες ἐπικρατοῦσιν, ὅτι μηδὲ πάντες φρόνιμον ἔχουσι τὸν λογισμόν. Ἀλλ' ὅσοι ἔχονται τῆς εὐσεβείας, τὸν λογισμὸν φρόνιμον ἔχειν ἐξ ὅλης καρδίας προνοοῦσι· καὶ αὐτοὶ μόνοι δύνανται κρατεῖν τῶν τῆς σαρκὸς παθῶν. Οὐδὲν οὖν ἐναντιοῦσθαι φαίνεται διὰ τὸν ἀσθενῆ λογισμόν. Ἐπεί τις πρὸς ὅλον τὸν τῆς φιλοσοφίας κανόνα φιλοσοφῶν, καὶ πεπιστευκὼς τῷ θεῷ, καὶ εἰδὼς ὅτι τὸ δι' ἀρετὴν πάντα πόνον ὑπομένειν, μακάριόν ἐστιν, οὐκ ἂν περικρατήσειεν τῶν παθῶν διὰ τὴν θεοσέβειαν. Μόνος γὰρ ὁ σοφὸς καὶ ἀνδρεῖός ἐστι καὶ τῶν παθῶν κύριος.

8. Διὰ τοῦτό γέ τοι καὶ μειρακίσκοι τῷ τῆς εὐσεβείας λογισμῷ φιλοσοφοῦντες, χαλεπωτέρων βασανιστηρίων ἐπεκράτησαν. Ἐπειδὴ γὰρ κατὰ τὴν πρώτην πεῖραν ἐνικήθη περιφανῶς ὁ τύραννος, μὴ δυνηθεὶς ἀναγκάσαι γέροντα μιαροφαγῆσαι, τότε σφόδρα περιπαθῶς ἐκέλευσεν ἄλλους ἐκ τῆς τῶν Ἑβραί-

ων λείας ἀγαγεῖν. Καὶ εἰ μὲν μιαροφαγήσαιεν, ἀπο-
λύειν φαγόντας· εἰ δὲ ἀντιλέγοιεν, πικρότερον βα-
σανίζειν. Ταῦτα διαταξαμένου τοῦ τυράννου, παρῆ-
σαν ἀγόμενοι μετὰ γηραιᾶς μητρὸς ἑπτὰ ἀδελφοὶ κα-
λοί τε καὶ αἰδήμονες καὶ γενναῖοι καὶ τὸν θεὸν φο-
βούμενοι, καὶ ἐν παντὶ χαρίεντες. Οὓς ἰδὼν ὁ τύ-
ραννος καθάπερ ἐν χορῷ μέσην τὴν μητέρα περιέχον-
τας, ἥσθετο ἐπ' αὐτοῖς, καὶ τῆς εὐπρεπείας ἐκπλα-
γεὶς καὶ τῆς εὐγενείας, προσεμειδίασεν αὐτοῖς, καὶ
πλησίον καλέσας ἔφη· "Ὦ νεανίαι, φιλοφρόνως ἐγὼ
ἑνὸς ἑκάστου ὑμῶν τὸ κάλλος θαυμάζω. Καὶ τὸ
308 πλῆθος τοσούτων ἀδελφῶν ὑπερτιμῶν, οὐ μόνον
συμβουλεύω μὴ μανῆναι τὴν αὐτὴν τῷ προβασανι-
σθέντι γέροντι μανίαν· ἀλλὰ καὶ παρακαλῶ συνείξαν-
τάς μου τῇ συμβουλίᾳ τῆς ἐμῆς ἀπολαύειν φιλίας.
Δυναίμην γὰρ, ὥσπερ κολάζειν τοὺς ἀπειθοῦντάς μου
τοῖς ἐπιτάγμασιν, οὕτω καὶ εὐεργετεῖν τοὺς εὐπειθοῦντάς
μοι. Πεισθέντες οὖν μοι, καὶ ἀρχὰς, καὶ ἐπὶ τῶν
ἐμῶν πραγμάτων ἡγεμονίας λήψεσθε· ἀρνηθέντες τὸν
πάτριον ὑμῶν τῆς πολιτείας θεσμὸν, καὶ μεταλαβόν-
τες Ἑλληνικοῦ βίου, καὶ μεταδιαιτηθέντες ἐντρυφή-
σατε ταῖς νεότησιν ὑμῶν. Ἐπεὶ, ἐὰν ὀργίλως με
διάθησθε διὰ τῆς ἀπειθείας, ἀναγκάσετέ με ἐπὶ δει-
ναῖς κολάσεσιν ἕνα ἕκαστον ὑμῶν διὰ τῶν βασάνων
ἀπολέσαι. Κατελεήσατε οὖν ἑαυτοὺς, οὓς καὶ ὁ πολέ-
μιος ἔγωγε καὶ τῆς ἡλικίας καὶ τῆς εὐμορφίας οἰ-
κτείρομαι· καὶ διαλογίσασθε τοῦτο, ὅτι οὐδὲν ὑμῖν
ἀπειθήσασι, πλὴν τοῦ μετὰ στρεβλῶν ἀποθανεῖν,
ἀπόκειται." Ταῦτα δὲ εἰπὼν, ἐκέλευσεν εἰς τὸ ἔμπρο-
σθεν τεθῆναι τὰ βασανιστήρια, ὅπως καὶ διὰ τοῦ
φόβου πείσειεν αὐτοὺς μιαροφαγῆσαι. Ὡς δὲ τρο-
χούς τε καὶ ἀρθρέμβολα, στρεβλωτήριά τε καὶ τροχαν-
τῆρας, καὶ καταπέλτας καὶ λέβητας, τήγανά τε καὶ δα-
κτυλήθρας καὶ χεῖρας σιδηρᾶς καὶ σφῆνας καὶ τὰ
ζώπυρα τοῦ πυρὸς οἱ δορυφόροι προέθεσαν, ὑπολα-
βὼν ὁ τύραννος ἔφη· "Μειράκια, φοβήθητε, καὶ ἣν

σέβεσθε δίκην ἵλεως ὑμῖν ἔσται δι' ἀνάγκην παρα-
νομήσασιν." Οἱ δὲ ἀκούσαντες ἐπαγωγὰ ῥήματα,
καὶ ὁρῶντες δεινὰ, οὐ μόνον οὐκ ἐφοβήθησαν, ἀλλὰ
καὶ ἀντεφιλοσόφησαν τῷ τυράννῳ, καὶ διὰ τῆς εὐλο-
γιστίας τὴν τυραννίδα αὐτοῦ κατέλυσαν. Καὶ τί λο-
γισώμεθα; Εἰ δειλοψυχοί τινες ἦσαν καὶ ἄνανδροι
ἐν αὐτοῖς, ποίοις ἂν ἐχρήσαντο τοῖς λόγοις; Οὐχὶ
τούτοις; "Ὦ τάλανες ἡμεῖς καὶ λίαν ἀνόητοι, βασι-
λέως ἡμᾶς παρακαλοῦντος καὶ ἐπὶ εὐεργεσίᾳ καλοῦν-
τος, εἰ πεισθείημεν αὐτῷ· τί τοῖς βουλεύμασι κενοῖς
ἑαυτοὺς εὐφραίνομεν, καὶ θανατηφόρον ἀπείθειαν
τολμῶμεν; Οὐ φοβηθησόμεθα, ἄνδρες ἀδελφοὶ, τὰ
βασανιστήρια, καὶ λογιούμεθα τὰς τῶν βασάνων ἀπ-
ειλὰς, καὶ φευξώμεθα τὴν κενοδοξίαν ταύτην καὶ ὀ-
λεθροφόρον ἀλαζονείαν; Ἐλεήσωμεν τὰς ἑαυτῶν ἡ-
λικίας, καὶ κατοικτειρήσωμεν τὸ τῆς μητρὸς γῆρας·
καὶ ἐνθυμηθῶμεν, ὅτι ἀπειθοῦντες τεθνηξόμεθα,
συγγνώσεται δὲ ἡμῖν καὶ ἡ θεία δίκη δι' ἀνάγκην τὸν
βασιλέα φοβηθεῖσι. Τί ἐξάγομεν ἑαυτοὺς τοῦ ἡδί-
στου βίου, καὶ ἀποστεροῦμεν ἑαυτοὺς τοῦ γλυκέος
κόσμου; Μὴ βιαζώμεθα τὴν ἀνάγκην, μηδὲ φιλοδο-
ξήσωμεν ἐπὶ τῇ ἑαυτῶν στρέβλῃ. Οὐδ' αὐτὸς ὁ νό-
μος ἀκουσίους ἡμᾶς θανατοῖ, φοβηθέντας τὰ βασα-
νιστήρια. Πόθεν ἡμῖν ἡ τοσαύτη ἐντέτηκε φιλονει-
κία καὶ ἡ θανατηφόρος ἀρέσκει καρτερία, παρὸν με-
τὰ ἀδείας ζῆν, τῷ βασιλεῖ πεισθέντας;" Ἀλλὰ τού-
των οὐδὲν εἶπον οἱ νεανίαι βασανίζεσθαι μέλλοντες,
οὐδ' ἐνεθυμήθησαν. Ἦσαν γὰρ περίφρονες τῶν 509
παθῶν καὶ αὐτοκράτορες τῶν ἀλγηδόνων· ὥστε ἅμα
τῷ παύσασθαι τὸν τύραννον συμβουλεύοντα αὐτοῖς
τοῦ μιαροφαγῆσαι, πάντες διὰ μιᾶς φωνῆς ὁμοῦ,
ὥσπερ ἀπὸ τῆς αὐτῆς ψυχῆς; εἶπον πρὸς αὐτόν·

9. "Τί μέλλεις, ὦ τύραννε; Σὺ ὄψει, τί
ποιεῖν προαιρῇ. Ἕτοιμοι γάρ ἐσμεν ἀποθνή-
σκειν, ἢ παραβαίνειν τὰς πατρίους ἡμῶν ἐντο-

λάς. Αἰσχυνόμεθα γὰρ καὶ τοὺς προγόνους εἰκότως, εἰ μὴ τῇ τοῦ νόμου εὐπειθείᾳ καὶ συμβούλῳ Μωϋσῇ χρησαίμεθα. Μὴ συμβούλευε, τύραννε, παρανομίας· μὴ ἡμᾶς μισῶν, ὑπὲρ ἑαυτοὺς ἡμᾶς ἐλέησαι. Χαλεπώτερον γὰρ αὐτοῦ τοῦ θανάτου νομίζομεν εἶναί σου τὸν ἐπὶ τῇ παρανόμῳ σωτηρίᾳ ἡμῶν ἔλεον. Ἐκφοβεῖς δὲ ἡμᾶς, τὸν διὰ τῶν βασάνων ἡμῖν θάνατον ἀπειλῶν, ὥςπερ οὐχὶ πρὸς βραχέως παρ' Ἐλεαζάρου μαθών. Εἰ δὲ οἱ γέροντες τῶν Ἑβραίων διὰ τὴν εὐσέβειαν καὶ βασανισμοὺς ὑπομείναντες εὐσέβησαν, ἀποθάνωμεν ἂν δικαιότερον ἡμεῖς οἱ νέοι, τὰς βασάνους τῶν σῶν ἀναγκῶν ὑπεριδόντες, ἃς καὶ ὁ παιδευτὴς ἡμῶν γέρων ἐνίκησε. Πείραζε τοιγαροῦν τύραννε. Καὶ τὰς ἡμῶν ψυχάς, εἰ θανατώσεις διὰ τὴν εὐσέβειαν, μὴ νομίσῃς ἡμᾶς βλάπτειν βασανίζων. Ἡμεῖς μὲν γὰρ διὰ τῆςδε τῆς κακοπαθείας καὶ ὑπομονῆς τὰ τῆς ἀρετῆς ἆθλα οἴσομεν, καὶ ἐσόμεθα παρὰ θεῷ, δι' ὃν καὶ πάσχομεν· σὺ δὲ διὰ τὴν ἡμῶν μιαιφονίαν αὐτάρκη καρτερήσεις ὑπὸ τῆς θείας δίκης αἰώνιον βάσανον." Τούτων οὕτως εἰπόντων, οὐ μόνον ὡς κατὰ ἀπειθούντων ἐχαλέπαινεν ὁ τύραννος, ἀλλὰ καὶ ὡς κατὰ ἀχαρίστων ὠργίσθη. Εὐθὺς οὖν τὸν πρεσβύτατον αὐτῶν κελευσθέντες παρῆγον οἱ ὑπασπισταί, καὶ διαῤῥήξαντες τὸν χιτῶνα, διέδησαν τὰς χεῖρας αὐτοῦ καὶ τοὺς βραχίονας ἱμάσιν ἑκατέρωθεν. Ὡς δὲ τύπτοντες ταῖς μάστιξιν ἐκοπίασαν, οὐδὲν ἀνύοντες, ἀνέβαλον αὐτὸν ἐπὶ τὸν τροχόν· περὶ ὃν κατατεινόμενος ὁ εὐγενὴς νεανίας, ἔξαρθρος ἐγίνετο. Καὶ κατὰ πᾶν μέλος κλώμενος, ἐκακηγόρει λέγων: "Τύραννε μιαρώτατε καὶ τῆς οὐρανίου δίκης ἐχθρὲ καὶ ὠμόφρον, οὐκ ἀνδροφονήσαντά με τοῦτον καταικίζεις τὸν τρόπον, οὐδ' ἀσεβήσαντα, ἀλλὰ θείου νόμου προασπίζοντα." Καὶ τῶν δορυφόρων λεγόντων αὐτῷ, "Ὁμολόγησον φαγεῖν, ὅπως ἀπαλλαγείης τῶν βασάνων," αὐτὸς εἶπεν αὐτοῖς, "Οὐχ οὕτως ἰσχυρότερός ἐστιν ὑμῶν

ὁ τροχὸς, ὦ μιαροὶ διάκονοι, ὥστε μου τὸν λογισμὸν ἄγξαι· τέμνετέ μου τὰ μέλη, καὶ πυροῦτέ μου τὰς σάρκας καὶ στρεβλοῦτε τὰ ἄρθρα. Διὰ πασῶν γὰρ ὑμᾶς πείσω τῶν βασάνων, ὅτι μόνοι παῖδες Ἑβραίων ὑπὲρ ἀρετῆς εἰσιν ἀνίκητοι." Ταῦτα λέγοντι πῦρ ὑπέστρωσαν, καὶ διηρέθισαν τὸν τροχὸν προςεπικατατείνοντες· ἐμολύνετο δὲ πάντοθεν αἵματι ὁ τρο- 510
χὸς, καὶ ὁ σωρὸς τῆς ἀνθρακιᾶς τοῖς τῶν ἰχώρων ἐσβέννυτο σταλαγμοῖς, καὶ περὶ τοὺς ἄξονας τοῦ ὀργάνου περιέῤῥεον αἱ σάρκες. Καὶ περιτετμημένον ἤδη ἔχων τὸ τῶν ὀστέων πῆγμα ὁ μεγαλόφρων καὶ Ἀβραμιαῖος νεανίας οὐκ ἐστέναξεν, ἀλλ' ὥςπερ ἐν πυρὶ μετασχηματιζόμενος εἰς ἀφθαρσίαν, ὑπέμεινεν εὐγενῶς τὰς στρέβλας; "Μιμήσασθέ με, ἀδελφοὶ, λέγων, μή μου τὸν αἰῶνα λειποτακτήσητε, μηδ' ἐξομόσησθέ μου τὴν τῆς εὐψυχίας ἀδελφότητα. Ἱερὰν καὶ εὐγενῆ στρατείαν στρατεύσασθε ὑπὲρ τῆς εὐσεβείας, δι' ἧς ἵλεως ἡ δικαία καὶ πάτριος ἡμῶν πρόνοια τῷ ἔθνει γενηθεῖσα τιμωρήσῃ τὸν ἀλάστορα τύραννον." Καὶ ταῦτα εἰπὼν ὁ ἱεροπρεπὴς νεανίας, ἀπέῤῥηξε τὴν ψυχήν. Θαυμασάντων δὲ πάντων τὴν καρτεροψυχίαν αὐτοῦ, ἦγον οἱ δορυφόροι τὸν καθ' ἡλικίαν τοῦ προτέρου δεύτερον, καὶ σιδηρᾶς ἐναρμοσάμενοι χεῖρας ὀξέσι τοῖς ὄνυξιν ὀργάνῳ καταπέλτῃ προςέδησαν αὐτόν. Ὡς δὲ, εἰ φαγεῖν βούλοιτο πρὶν βασανίζεσθαι πυνθανόμενοι, τὴν εὐγενῆ γνώμην ἤκουσαν· ἀπὸ τῶν τενόντων ταῖς σιδηραῖς χερσὶν ἐπισπώμενοι, μέχρι γε τῶν γενείων τὴν σάρκα πᾶσαν, καὶ τὴν τῆς κεφαλῆς δορὰν οἱ παρδάλειοι θῆρες ἀπέσυραν. Ὁ δὲ ταύτην βαρέως τὴν ἀλγηδόνα καρτερῶν, ἔλεγεν· "Ὡς ἡδὺς πᾶς θανάτου τρόπος διὰ τὴν πάτριον ἡμῶν εὐσέβειαν! Οὐ δοκεῖς, πάντων ὠμότατε τύραννε, πλεῖον ἐμοῦ σε νῦν βασανίζεσθαι, ὁρῶν σου νικώμενον τὸν τῆς τυραννίδος ὑπερήφανον λογισμὸν ὑπὸ τῆς διὰ τὴν εὐσέβειαν ἡμῶν ὑπομονῆς; Ἐγὼ μὲν γὰρ ταῖς διὰ τὴν ἀρετὴν ἡδοναῖς τῶν πό-

511 νων ἐπικουφίζομαι. Σὺ δὲ ἐν ταῖς τῆς ἀσεβείας ἀπειλαῖς βασανίζῃ. Οὐκ ἐκφεύξῃ δὲ, μιαρώτατε τύραννε, τὰς τῆς θείας ὀργῆς δίκας."

10. *Καὶ τούτου ἀοίδιμον θάνατον καρτερήσαντος, ὁ τρίτος ἤγετο, παρακαλούμενος πολλὰ ὑπὸ πολλῶν, ὅπως ἀπογευσάμενος σώζοιτο. Ὁ δὲ ἀναβοήσας ἔφη· "Ἀγνοεῖτε, ὅτι ὁ αὐτός με τοῖς ἀποθανοῦσιν ἔσπειρε πατὴρ, καὶ ἡ αὐτὴ μήτηρ ἐγέννησε, καὶ ἐπὶ τοῖς αὐτοῖς ἀνετράφημεν δόγμασιν; Οὐκ ἐξομοῦμαι τὴν εὐγενῆ τῆς ἀδελφότητός μου συγγένειαν." Οἱ δὲ πικρῶς ἐνέγκαντες τὴν παῤῥησίαν τοῦ ἀνδρὸς, ἀρθρεμβόλοις ὀργάνοις τὰς χεῖρας αὐτοῦ καὶ τοὺς πόδας ἐξήρθρουν, καὶ ἐξ ἁρμῶν ἀναμοχλεύσαντες ἐξεμέλιζον, καὶ τοὺς δακτύλους, βραχίονας, καὶ σκέλη καὶ ἀγκῶνας περιέκλων. Καὶ κατὰ μηδένα τρόπον ἰσχύοντες αὐτὸν ἄγξαι, περισύραντες τὸ δέρμα σὺν ἄκραις τῶν δακτύλων κορυφαῖς ἀπεσκύθιζον. Καὶ εὐθέως ἦγον ἐπὶ τὸν τροχόν· περὶ ὃν ἐκ σφονδύλων ἐκμελιζόμενος, ἑώρα τὰς ἑαυτοῦ σάρκας περιλακιζομένας, καὶ κατὰ σπλάγχνων σταγόνας αἵματος ἀποῤῥεούσας. Μέλλων δὲ ἀποθνήσκειν, ἔφη· "Ἡμεῖς μὲν, ὦ μιαρώτατε τύραννε, διὰ παιδείαν καὶ ἀρετὴν θεοῦ ταῦτα πάσχομεν. Σὺ δὲ διὰ τὴν ἀσέβειαν καὶ μιαιφονίαν ἀκαταλύτους καρτερήσεις βασάνους." Καὶ τούτου θανόντος ἀδελφοπρεπῶς, τὸν τέταρτον ἐπεσπῶντο, λέγοντες· "Μὴ συμμανῇς καὶ σὺ τοῖς ἀδελφοῖς σου τὴν αὐτὴν μανίαν;" Ὁ δὲ αὐτοῖς ἔφη, "Οὐχ οὕτω καυστικώτερον ἔχετε κατ' ἐμοῦ τὸ πῦρ, ὥστε με δειλανδρῆσαι. Μὰ τὸν μακάριον τῶν ἀδελφῶν μου θάνατον, καὶ τὸν αἰώνιον τοῦ τυράννου ὄλεθρον, καὶ τὸν ἀοίδιμον τῶν εὐσεβῶν βίον, οὐκ ἀρνήσομαι τὴν εὐγενῆ ἀδελφότητα! Ἐπινόει, τύραννε, βασάνους, ἵνα καὶ δι' αὐτῶν μάθῃς, ὅτι ἀδελφός εἰμι τῶν προβασανισθέντων." Ταῦτα ἀκούσας ὁ αἱμοβόρος καὶ φονώδης καὶ*

παμμιαρώτατος Ἀντίοχος, ἐκέλευσε τὴν γλῶτταν αὐ-
τοῦ ἐκτμηθῆναι. Ὁ δὲ ἔφη, "Καὶ ἐὰν ἀφέλῃς τὸ
τῆς φωνῆς ὄργανον, καὶ σιωπώντων εἰσακούει ὁ Θεός.
Ἰδοὺ προκεχάλασται ἡ γλῶττα. Τέμνετε. Οὐ γὰρ
παρὰ τοῦτο τὸν λογισμὸν ἡμῶν γλωσσοτομήσεις. Ἡ-
δέως ὑπὲρ τοῦ νόμου τοῦ Θεοῦ τὰ τοῦ σώματος
μέλη ἀκρωτηριαζόμεθα. Σὲ δὲ ἐν τάχει μετελεύσε-
ται ὁ Θεὸς, ἐπεὶ τὴν τῶν θείων ὕμνων μελῳδὸν γλῶσ- 512
σαν ἐκτέμνεις."

11. Ὡς δὲ καὶ οὗτος ταῖς βασάνοις καταικι-
σθεὶς ἀπέθανεν, ὁ πέμπτος παρεπήδησε λέγων· "Οὐ
μέλλω, τύραννε, πρὸς τὸν ὑπὲρ τῆς ἀρετῆς βασανι-
σμόν. Αὐτὸς δὲ ἀπ' ἐμαυτοῦ παρῆλθον, ὅπως καὶ
ἐμὲ κατακτείνας περὶ πλειόνων ἀδικημάτων ὀφλήσῃς
τῇ οὐρανίῳ δίκῃ τιμωρίαν. Ὦ μισάνθρωπε καὶ μι-
σάρετε, τί δράσαντας ἡμᾶς τοῦτον πορθεῖς τὸν τρό-
πον; Ὅτι τὸν πάντων κτίστην εὐσεβοῦμεν, καὶ κατὰ
τὸν ἐνάρετον αὐτοῦ ζῶμεν νόμον; Ἀλλὰ ταῦτα τιμῶν,
οὐ βασάνων, εἰσὶν ἄξια." Τοιαῦτα λέγοντα οἱ δορυ-
φόροι δήσαντες, αὐτὸν εἷλκον ἐπὶ τὸν καταπέλτην.
Ἐφ' ὃν δήσαντες αὐτὸν ἐπὶ τὰ γόνατα, καὶ ταῦτα
ποδάγραις σιδηραῖς ἐφαρμόσαντες, τὴν ὀσφὺν αὐτοῦ
περὶ τροχαῖον σφῆνα κατέκαμψαν· περὶ ὃν ὅλος περὶ
τὸν τροχὸν σκορπίου τρόπον ἀνακλώμενος ἐξεμελίζετο.
Καὶ κατὰ τοῦτον τὸν τρόπον τὸ πνεῦμα στενοχωρού-
μενος καὶ τὸ σῶμα ἀγχόμενος, "Καλὰς," ἔλεγεν,
"ἄκων, ὦ τύραννε, χάριτας ἡμῖν χαρίζῃ, διὰ γεν-
ναιοτέρων πόνων ἐπιδείξασθαι παρέχων τὴν εἰς τὸν
νόμον ἡμῶν καρτερίαν." Τελευτήσαντος δὲ καὶ τού-
του, ὁ ἕκτος ἤγετο μειρακίσκος, ὃς, πυνθανομένου
τοῦ τυράννου, 'εἰ βούλοιτο φαγὼν ἀπολύεσθαι,' ἔ-
φη, "Ἐγὼ τὴν μὲν ἡλικίαν τῶν ἀδελφῶν μου εἰμὶ
νεώτερος, τὴν δὲ διάνοιαν ἡλικιώτης. Εἰς τὰ αὐ-
τὰ γὰρ καὶ γεννηθέντες καὶ τραφέντες, ὑπὲρ τῶν
αὐτῶν καὶ ἀποθνήσκειν ὀφείλομεν ὁμοίως· ὥστε, εἰ

δοκεῖ σοι βασανίζειν μὴ μιαροφαγοῦντας, βασάνιζε.' Ταῦτα αὐτὸν εἰπόντα παρῆγον ἐπὶ τὸν τροχὸν, ἐφ' οὗ κατατεινόμενος ἐκμελῶς καὶ ἐκσφονδυλιζόμενος ὑπεκαίετο. Καὶ ὀβελίσκους δὲ ὀξεῖς πυρώσαντες, τοῖς νώτοις προςέφερον, καὶ τὰ πλευρὰ διαπείραντες αὐτοῦ καὶ τὰ σπλάγχνα διέκαιον. Ὁ δὲ βασανιζόμενος, "Ὦ ἱεροπρεποῦς ἀγῶνος," ἔλεγεν, "ἐφ' ὃν διὰ τὴν εὐσέβειαν εἰς πόνων γυμνασίαν ἀδελφοὶ τοσοῦτοι κληθέντες οὐκ ἐνικήθημεν! Ἀνίκητος γάρ ἐστιν, ὦ τύραννε, ἡ εὐσεβὴς ἐπιστήμη. Καλοκἀγαθίᾳ καθωπλισμένος τεθνήξομαι μὲν καὶ ἐγὼ μετὰ τῶν ἀδελφῶν μου· σὺ δὲ, ὦ τύραννε, μέγαν προςλαβὼν καὶ αὐτὸς τιμωρόν. Καινουργὲ τῶν βασάνων καὶ πολέμιε τῶν ἀληθῶς εὐσεβούντων, ἓξ μειράκια κατελύσαμέν σου τὴν τυραννίδα. Τὸ γὰρ μὴ δυνηθῆναί σε μεταπεῖσαι τὸν λογισμὸν ἡμῶν, μήτε βιάσασθαι πρὸς τὴν μιαροφαγίαν, οὐ κατάλυσις ἐστί σου; Τὸ πῦρ σου ψυχρὸν ἡμῖν, καὶ ἄπονοι οἱ καταπέλται, καὶ ἀδύνατος ἡ βία. Οὐ γὰρ τυράννου, ἀλλὰ θείου νόμου, παρεστήκασιν ἡμῖν δορυφόροι· διὰ τοῦτο ἀνίκητον ἔχομεν τὸν λογισμόν.

12. Ὡς δὲ καὶ οὗτος μακαρίως ἀπέθανε καταβληθεὶς εἰς λέβητα, ὁ ἕβδομος παραγίνεται πάντων νεώτερος. Ὃν κατοικτειρήσας ὁ τύραννος, καίτοι δεινῶς ὑπὸ πάντων τῶν ἀδελφῶν αὐτοῦ κακισθεὶς, ὁρῶν ἤδη τὰ δεσμὰ περικείμενον, πλησιέστερον αὐτοῦ μετεπέμψατο, καὶ παρηγορεῖν ἐπειρᾶτο λέγων· "Τῆς μὲν τῶν ἀδελφῶν σου ἀπονοίας τὸ
513 τέλος ὁρᾷς· διὰ γὰρ ἀπείθειαν στρεβλωθέντες τεθνᾶσι. Σὺ καὶ εἰ μὴ πεισθείης, τάλας βασανισθεὶς καὶ αὐτὸς τεθνήξῃ ἄωρος. Πεισθεὶς δὲ, φίλος ἔσῃ καὶ τῶν ἐπὶ τῆς βασιλείας ἀφηγήσῃ πραγμάτων." Καὶ ταῦτα παρακαλῶν, τὴν μητέρα τοῦ παιδὸς μετεπέμψατο, ὅπως αὐτὴν ἐλεήσας τοσούτων υἱῶν στερηθεῖσαν παρορμήσειεν ἐπὶ τὴν σωτηρίαν, εὐπειθῆ

ποιῆσαι τὸν περιλειπόμενον. Ὁ δὲ, τῆς μητρὸς τῇ Ἑβραΐδι φωνῇ προτρεψαμένης αὐτὸν, ὡς ἐροῦμεν μικρὸν ὕστερον, "Λύσατέ με," φησὶν, "εἴπω τι τῷ βασιλεῖ καὶ τοῖς σὺν αὐτῷ φίλοις πᾶσι." Καὶ ἐπιχαρέντες ὅ τε βασιλεὺς καὶ οἱ σὺν αὐτῷ μάλιστα ἐπὶ τῇ ἐπαγγελίᾳ τοῦ παιδὸς, ταχέως ἔλυσαν αὐτόν. Ὁ δὲ δραμὼν ἔστη πλησίον τῶν τηγάνων, καὶ ἔφη· „Ὦ ἀνόσιε καὶ πάντων τῶν πονηρῶν ἀσεβέστατε τύραννε, οὐκ ᾐδέσθης παρὰ τοῦ θεοῦ λαβὼν τὰ ἀγαθὰ καὶ τὴν βασιλείαν, καὶ τοὺς θεράποντας αὐτοῦ κατακτεῖναι καὶ τοὺς τῆς εὐσεβείας ἀσκητὰς στρεβλῶσαι; Ἀνθ' ὧν ταμιεύεταί σε ἡ θεία δίκη πυκνοτέρῳ καὶ αἰωνίῳ πυρὶ καὶ βασάνοις, αἳ εἰς ὅλον τὸν αἰῶνα οὐκ ἀνήσουσί σε. Οὐκ ᾐδέσθης ἄνθρωπος ὢν, θηριωδέστατε, τοὺς ὁμοιοπαθεῖς καὶ ἐκ τῶν αὐτῶν γεγονότας στοιχείων γλωττοτομῆσαι, καὶ τοῦτον καταικίσας τὸν τρόπον βασανίσαι; Ἀλλ' οἱ μὲν εὐγενῶς ἀποθανόντες ἐπλήρωσαν τὴν εἰς θεὸν εὐσέβειαν· σὺ δὲ κακὸς κακῶς οἰμώξεις, τοὺς τῆς ἀρετῆς ἀγωνιστὰς ἀναιτίως ἀποκτείνας. Ὅθεν καὶ αὐτὸς ἀποθνήσκειν μέλλων οὐκ ἀπαυτομολῶ τῆς τῶν ἀδελφῶν μου ἀριστείας. Ἐπικαλοῦμαι δὲ τὸν πατρῷον θεὸν, ὅπως ἵλεως γένηται τῷ ἔθνει ἡμῶν· σὲ δὲ καὶ ἐν τῷ νῦν βίῳ καὶ θανόντα τιμωρήσεται." Καὶ ταῦτα κατευξάμενος, ἑαυτὸν ἔῤῥιψε κατὰ τῶν τηγάνων, καὶ οὕτως ἀπέδωκε τὴν ψυχήν.

13. Εἰ δὲ τοίνυν τῶν μέχρι θανάτου πόνων ὑπερεφρόνησαν οἱ ἑπτὰ ἀδελφοί· συνομολογεῖται πανταχόθεν, ὅτι αὐτοδέσποτός ἐστι τῶν παθῶν ὁ εὐσεβὴς λογισμός. Ὥςπερ γὰρ, εἰ τοῖς πάθεσι δουλωθέντες ἐμιαροφάγησαν, ἐλέγομεν ἂν τούτους αὐτοὺς νενικῆσθαι, νυνὶ δὲ οὐχ οὕτως, ἀλλὰ τῷ ἐπαινουμένῳ παρὰ θεῷ λογισμῷ περιεγένοντο τῶν παθῶν, καὶ οὐκ ἔστι παριδεῖν τὴν ἡγεμονίαν τῆς διανοίας, ἐπεκράτησε γὰρ καὶ πάθους καὶ πόνων. Πῶς οὖν οὐκ ἔστι τούτοις τὴν τῆς εὐλογιστίας παθοκρατο-

ρίαν ὁμολογεῖν, οἳ τῶν διὰ πυρὸς ἀλγηδόνων οὐκ ἐπεστράφησαν; Καθάπερ γὰρ προβλῆτες λιμένων πύργοι, τὰς τῶν κυμάτων ἀπειλὰς ἀνακόπτοντες, γαληνὸν παρέχουσι τοῖς ἐμπλέουσι τὸν ὅρμον· οὕτως ἡ ἑπτάπυργος τῶν νεανίσκων εὐλογιστία τὸν τῆς εὐσεβείας ὀχυρώσασα λιμένα, τὴν τῶν παθῶν ἐνίκησεν ἀκολασίαν. Ἱερὸν γὰρ εὐσεβείας στήσαντες χορὸν παρεθάῤῥυναν ἀλλήλους, λέγοντες· Ἀδελφικῶς ἀποθάνοιμεν, ἀδελφοὶ, περὶ τοῦ νόμου. Μιμησώμεθα τοὺς τρεῖς τοὺς ἐπὶ τῆς Ἀσσυρίας νεανίας οἳ τῆς
514 ἰσοπάλιδος καμίνου κατεφρόνησαν. Μὴ δειλανδρήσωμεν πρὸς τὴν τῆς εὐσεβείας ἐπίδειξιν." Καὶ ὁ μὲν, "Θάῤῥει, ἀδελφὲ," ἔλεγεν· ὁ δὲ, "Εὐγενῶς καρτέρησον·" ὁ δὲ καταμνησθεὶς ἔλεγε, "Μνήσθητε, πόθεν ἐστὲ, ἢ τινος πατρὸς χειρὶ σφαγιασθῆναι διὰ τὴν εὐσέβειαν ὑπέμεινεν ὁ Ἰσαάκ." Εἷς δὲ ἕκαστος ἀλλήλους ὁμοῦ πάντες ἐφορῶντες φαιδροὶ καὶ μάλα θαῤῥαλέοι, "Ἑαυτοὺς," ἔλεγον, "τῷ θεῷ ἀφιερώσωμεν ἐξ ὅλης τῆς καρδίας τῷ δόντι τὰς ψυχὰς, καὶ χρήσωμεν τῇ περὶ τὸν νόμον φυλακῇ τὰ σώματα· μὴ φοβηθῶμεν τὸν δοκοῦντα ἀποκτεῖναι τὸ σῶμα. Μέγας γὰρ ψυχῆς κίνδυνος ἐν αἰωνίῳ βασανισμῷ κείμενος τοῖς παραβαίνουσι τὴν ἐντολὴν τοῦ θεοῦ. Καθοπλισώμεθα τοιγαροῦν τὴν τοῦ θείου λογισμοῦ παθοκράτειαν. Οὕτω γὰρ θανόντας ἡμᾶς Ἀβραὰμ καὶ Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ ὑποδέξονται εἰς τοὺς κόλπους αὐτῶν, καὶ πάντες οἱ πατέρες ἐπαινέσουσι." Καὶ ἑνὶ ἑκάστῳ τῶν ἀποσπωμένων αὐτῷ ἀδελφῶν ἔλεγον οἱ περιλειπόμενοι· "Μὴ καταισχύνῃς ἡμᾶς, ἀδελφὲ, μηδὲ ψεύσῃ τοὺς προαποθανόντας ἡμῶν ἀδελφούς. Οὐκ ἀγνοεῖτε δὲ τὰ τῆς ἀδελφότητος φίλτρα, ἅπερ ἡ θεία καὶ πάνσοφος πρόνοια διὰ πατέρων τοῖς γενομένοις ἐμέρισε καὶ διὰ τῆς μητρῴας ἐφύτευσε γαστρός· ἐν ᾗ τὸν ἴσον ἀδελφοὶ κατοικήσαντες χρόνον, καὶ ἐν τῷ αὐτῷ χρόνῳ πλασθέντες, καὶ ἀπὸ τοῦ αὐτοῦ αἵματος αὐξηθέντες, καὶ διὰ τῆς αὐτῆς ψυχῆς τελε-

σφορηθέντες, καὶ διὰ τῶν ἴσων ἀποτεχθέντες χρόνων, καὶ ἐκ τῶν αὐτῶν γαλακτοποτοῦντες πηγῶν, ἀφ' ὧν συντρέφονται ἐν ἀγκάλαις μαστῶν φιλάδελφοι ψυχαὶ, καὶ αὔξονται σφοδρότερον διὰ τῆς συντροφίας καὶ διὰ τῆς καθ' ἡμέραν συνηθείας καὶ τῆς ἄλλης παιδείας καὶ τῆς ἡμετέρας ἐν νόμῳ θεοῦ ἀσκήσεως." Οὕτω δὴ τοίνυν καθεστώσης συμπαθῶς τῆς φιλαδελφίας, οἱ ἑπτὰ ἀδελφοὶ συμπαθέστερον ἔσχον πρὸς ἀλλήλους. Νόμῳ γὰρ τῷ αὐτῷ παιδευθέντες καὶ τὰς αὐτὰς ἐξασκήσαντες ἀρετὰς, καὶ τῷ δικαίῳ συντραφέντες βίῳ, μᾶλλον ἑαυτοὺς ἠγάπων. Ἡ γὰρ ὁμοζηλία τῆς καλοκἀγαθίας ἐπέτεινεν αὐτοῖς τὴν πρὸς ἀλλήλους ὁμόνοιαν. Σὺν γὰρ τῇ εὐσεβείᾳ ποθεινοτέραν ἑαυτοῖς κατεσκεύαζον τὴν φιλαδελφίαν. Ἀλλ' ὅμως καὶ περὶ τῆς φύσεως καὶ τῆς συνηθείας καὶ τῶν τῆς ἀρετῆς ἠθῶν τὰ τῆς ἀδελφότητος αὐτοῖς φίλτρα συναυξανόντων, ἀνέσχοντο διὰ τὴν εὐσέβειαν τοὺς ἀδελφοὺς οἱ ὑπολειπόμενοι τοὺς καταικιζομένους, ὁρῶντες καὶ μέχρι θανάτου βασανιζομένους.

14. Προσέτι δὲ καὶ ἐπὶ τὸν αἰκισμὸν ἐποτρύνοντες, ὡς μὴ μόνον τῶν ἀλγηδόνων περιφρονῆσαι αὐτοὺς, ἀλλὰ καὶ τῶν τῆς φιλαδελφίας παθῶν κρατῆσαι. Ὦ βασιλέων λογισμοὶ βασιλικώτεροι, καὶ ἐλευθέρων ἐλευθερώτεροι! Ὦ ἱερᾶς καὶ ἁρμονίου περὶ τῆς εὐσεβείας τῶν ἑπτὰ ἀδελφῶν συμφωνίας! Οὐδεὶς ἐξ αὐτῶν ἐδειλίασεν, οὐδὲ ἐπὶ τὸν θάνατον ἐλθεῖν ὤκνησεν. Ἀλλὰ πάντες ὥςπερ ἐπ' ἀθανασίας ὁδὸν τρέχοντες ἐπὶ τὸν διὰ τῶν βασάνων θάνατον ἔσπευδον. Καθάπερ γὰρ χεῖρες συμφώνως καὶ πόδες συμφώνως τοῖς τῆς ψυχῆς ἀφηγήμασι κινοῦνται, οὕτως οἱ ἱεροὶ μείρακες ἐκεῖνοι, ὡς ὑπὸ ψυχῆς μιᾶς τῆς ἀθανάτου εὐσεβείας κινούμενοι, πρὸς τὸν ὑπὲρ αὐτῆς συνεφώνησαν θάνατον. Ὦ παναγίας συμφώνων ἀδελφῶν ἑβδομάδος! Καθάπερ γὰρ ἑπτὰ τῆς κοσμοποιΐας ἡμέραι περὶ τὴν εὐσέβειαν, οὕτω περὶ

τὴν ἑβδομάδα χορεύοντες οἱ μείρακες ἐκύκλουν, τὸν τῶν βασάνων φόβον καταλύοντες. Νῦν ἡμεῖς ἀκούοντες τὴν θλίψιν, τῶν νεανιῶν ἐκείνων, φρίττομεν. Οἱ δὲ οὐ μόνον ἀκούοντες τὴν θλίψιν, ἀλλὰ καὶ ὁρῶντες τὸν παραχρῆμα τῆς ἀπειλῆς λόγον ἐμακαρίζοντο, θαυμαζόμενοι πῶς πάσχοντες ἐνεκαρτέρουν, καὶ τοῦτο ταῖς διὰ πυρὸς ὀδύναις. Ὧν τί ἂν γένοιτο ἐπαλγέστερον; Ὀξεῖα γὰρ καὶ σύντομος ἡ τοῦ πυρὸς οὖσα δύναμις, ταχέως διέλυσε τὰ σώματα αὐτῶν. Καὶ μὴ θαυμαστὸν ἡγεῖσθαι, εἰ ὁ λογισμὸς περιεκράτησε τῶν ἀνδρῶν ἐκείνων ἐν ταῖς βασάνοις, ὅπου γε καὶ γυναικὸς νοῦς πολυτροπωτέρων ὑπερεφρόνησεν ἀλγηδόνων· ἡ μήτηρ γὰρ τῶν ἑπτὰ νεανίσκων ἐκείνων ὑπήνεγκε τὰς ἐφ' ἑνὶ ἑκάστῳ τῶν τέκνων στρέβλας. Θεωρεῖτε δὲ, πῶς πολύτεκνός ἐστιν ἡ τῆς φιλοτεκνίας στοργὴ, ἕλκουσα πάντα πρὸς τὴν τῶν τέκνων συμπάθειαν. Ὅπου γε καὶ τὰ ἄλογα ζῶα ὁμοίαν τὴν πρὸς ἐξ αὐτῶν γενόμενα συμπάθειαν καὶ στοργὴν ἔχει τοῖς ἀνθρώποις. Καὶ γὰρ τῶν πετεινῶν τὰ μὲν ἥμερα, κατὰ τὰς οἰκίας ὀροφοιτῶντα, προασπίζει τῶν νεοττῶν· τὰ δὲ κατὰ κορυφὰς τῶν ὀρέων καὶ ἀποῤῥῶγας τῶν φαράγγων καὶ δένδρων ὀπὰς καὶ τὰς τούτων ἄκρας ἐννεοσσοποιησάμενα ἀποτίκτει καὶ τὸν προσιόντα κωλύει. Εἰ δὲ καὶ μὴ δύναται κωλύειν, περιιπτάμενα κυκλόθεν αὐτῶν ἀλγοῦντα τῇ στοργῇ, ἀνακαλούμενα τῇ ἰδίᾳ φωνῇ, καθ' ὃν δύναται τρόπον βοηθεῖ τοῖς τέκνοις. Καὶ τί δεῖ τὸν διὰ τῶν ἀλόγων ζώων ἐπιδείκνυσθαι πρὸς τὰ τέκνα συμπάθειαν; Ὅπου γε καὶ μέλισσαι περὶ τὸν τῆς κηρογονίας καιρὸν ἀπαμύνονται τοὺς προσιόντας, καὶ καθάπερ σιδήρῳ τῷ κέντρῳ πλήσσουσι τοὺς προσιόντας τῇ νεοσσιᾷ αὐτῶν καὶ ἐπαμύνονται ἕως θανάτου. Ἀλλ' οὐχὶ τὴν τοῦ Ἀβραὰμ ὁμόψυχον τῶν νεανίσκων μητέρα μετεκίνησε συμπάθεια τῶν τέκνων.

15. Ὦ λογισμὲ τύραννε παθῶν, καὶ εὐσέβεια μητρὶ τέκνων ποθεινοτέρα! Μήτηρ, δυοῖν προκει-

*μένων, εὐσεβείας, καὶ τῆς τῶν ἑπτὰ υἱῶν σωτηρίας
προςκαίρου, κατὰ τὴν τοῦ τυράννου ὑπόσχεσιν, τὴν
εὐσέβειαν μᾶλλον ἠγάπησε τὴν σώζουσαν εἰς αἰώνιον
ζωὴν κατὰ θεόν. Ὦ τίνα τρόπον ἠθολογήσαιμι φι-
λότεκνα γονέων πάθη, ψυχῆς τε καὶ μορφῆς ὁμοιό-
τητα εἰς μικρὸν παιδὸς χαρακτῆρα θαυμάσιον ἐνα-
ποσφραγίζοντα, μάλιστα διὰ τὸ πάθος τοῖς γεννη-
θεῖσι τὰς μητέρας τῶν πατέρων καθεστάναι συμπα-
θεστέρας! Ὅσῳ γὰρ καὶ ἀσθενόψυχοι καὶ φιλογο-
νώτεραι ὑπάρχουσιν αἱ μητέρες, τοσούτῳ μᾶλλόν εἰσι
φιλοτεκνότεραι. Πασῶν δὲ τῶν μητέρων ἐγένετο ἡ
τῶν ἑπτὰ μήτηρ φιλοτεκνοτέρα, ἥτις ἑπτὰ κυοφορί-
αις τὴν πρὸς αὐτοὺς ἐπιφυτευομένην φιλοστοργίαν,
καὶ διὰ πολλὰς τὰς καθ᾽ ἕκαστον αὐτῶν ὀδύνας ἠ-
ναγκασμένη τὴν εἰς αὐτοὺς ἔχειν συμπάθειαν, διὰ* 516
*τὸν πρὸς θεὸν φόβον ὑπερεῖδε τὴν τῶν τέκνων πρός-
καιρον σωτηρίαν. Οὐ μὴν δὲ ἀλλὰ καὶ διὰ τὴν κα-
λοκἀγαθίαν τῶν υἱῶν καὶ τὴν πρὸς τὸν νόμον αὐ-
τῶν εὐπείθειαν, μείζω τὴν ἐν αὐτοῖς εἶχε φιλοστορ-
γίαν. Δίκαιοί τε γὰρ ἦσαν καὶ σώφρονες, καὶ μεγα-
λόψυχοι καὶ φιλάδελφοι, καὶ φιλομήτορες οὕτως, ὥςτε
καὶ μέχρι θανάτου τὰ νόμιμα φυλάσσοντας πείθε-
σθαι αὐτῇ. Ἀλλ᾽ ὅμως, καίπερ τοσούτων ὄντων πε-
ρὶ τὴν φιλοτεκνίαν εἰς συμπάθειαν ἑλκόντων τὴν
μητέρα, ἐπ᾽ οὐδενὸς αὐτῶν τὸν λογισμὸν αὐτῆς αἱ
παμποίκιλοι βάσανοι ἴσχυσαν μετατρέψαι. Ἀλλὰ
καὶ καθ᾽ ἕνα παῖδα καὶ ὁμοῦ πάντας ἡ μήτηρ ἐπὶ
τὸν ὑπὲρ τῆς εὐσεβείας προετρέπετο θάνατον. Ὦ
φύσις ἱερὰ, καὶ φίλτρα γονέων καὶ σύνεσις φιλόστορ-
γε, καὶ τροφεῖα, καὶ μητέρων ἀδάμαστα πάθη!
Καθ᾽ ἕνα στρεβλούμενον καὶ φλεγόμενον ὁρῶσα ἡ
μήτηρ, οὐ μετεβάλετο διὰ τὴν εὐσέβειαν· τὰς σάρ-
κας τῶν τέκνων ἑώρα περὶ τὸ πῦρ τηκομένας, καὶ
τοὺς τῶν ποδῶν καὶ χειρῶν δακτύλους ἐπὶ γῆς σπαί-
ροντας, καὶ τὰς τῶν κεφαλῶν μέχρι τῶν περὶ τὰ
γένεια σάρκας ὥςπερ προςωπεῖα προκειμένας. Ὦ*

πικροτέρων νῦν μήτηρ πόνων πειρασθεῖσα ὑπὲρ τῶν ἐπ' αὐτοῖς ὠδίνων! Ὦ μόνη γυνὴ τὴν εὐσέβειαν ὁλόκληρον ἀποκυήσασα! Οὐ μετέτρεψέ σε πρωτοτόκως ἀποπνέων, οὐδὲ δεύτερος εἰς σὲ οἰκτρὸν ἐν βασάνοις βλέπων, οὐ τρίτος ἀποψύχων, οὐδὲ τοὺς ὀφθαλμοὺς ἑνὸς ἑκάστου θεωροῦσα ταυρηδὸν ἐπὶ τῶν βασάνων ὁρῶντας τὸν ἑαυτῶν αἰκισμὸν καὶ τοὺς μυκτῆρας προσημειουμένους τὸν θάνατον αὐτῶν. Οὐκ ἔκλαυσας ὁρῶσα σάρκας τέκνων ἀποκαιομένας, καὶ ἐπὶ χερσὶ χεῖρας ἀποτεμνομένας, καὶ ἐπὶ κεφαλαῖς κεφαλὰς ἀποδειροτομουμένας, καὶ ἐπὶ νεκροῖς νεκροὺς πίπτοντας, καὶ πολυάνδριον ὁρῶσα τῶν τέκνων τὸ χορεῖον διὰ τῶν βασάνων, οὐκ ἐδάκρυσας. Οὐχ οὕτω σειρήνειοι μελῳδίαι, οὐδὲ κύκνειοι πρὸς φιληκοΐαν φωναὶ τοὺς ἀκούοντας ἐφέλκονται, ὡς τέκνων φωναὶ μετὰ βασάνων μητέρα φωνούντων. Πηλίκαις καὶ πόσαις τότε ἡ μήτηρ, τῶν υἱῶν βασανιζομένων τροχοῖς τε καὶ καυστηρίοις, ἐβασανίζετο βασάνοις; Ἀλλὰ τὰ σπλάγχνα αὐτῆς ὁ εὐσεβὴς λογισμὸς ἐν αὐτοῖς τοῖς πάθεσιν ἀνδρειώσασα ἐπέτεινε τὴν πρόσκαιρον φιλοτεκνίαν παριδεῖν, καίπερ ἑπτὰ τέκνων ἀπώλειαν ὁρῶσα καὶ τὴν τῶν στρεβλῶν πολυπλόκον ποικιλίαν· ἃς ἁπάσας ἡ γενναία μήτηρ ἐξέλυσε διὰ τὴν πρὸς θεὸν πίστιν. Καθάπερ γὰρ ἐν βουλευτηρίῳ τῇ ἑαυτῆς ψυχῇ δεινοὺς ὁρῶσα συμβούλους φύσιν τε καὶ γένεσιν καὶ φιλοτεκνίαν καὶ τέκνων στρε-
517 βλας, δύο ψήφους κρατοῦσα ἡ μήτηρ θανατηφόρον τε καὶ σωτήριον ὑπὲρ τέκνων, οὐκ ἔγνω τὴν σώζουσαν ἑπτὰ υἱοὺς πρὸς ὀλίγον χρόνον σωτηρίαν· ἀλλὰ τῆς θεοσεβοῦς Ἀβραὰμ καρτερίας ἡ θυγάτηρ ἐμνήσθη. Ὦ μήτηρ ἔθνους, ἔκδικε τοῦ νόμου, καὶ ὑπερασπίστρια τῆς εὐσεβείας, καὶ τοῦ διὰ σπλάγχνων ἀγῶνος ἀθλοφόρε! Ὦ ἀῤῥένων πρὸς καρτερίαν γενναιοτέρα, καὶ ἀνδρῶν πρὸς ὑπομονὴν ἀνδρειοτέρα! Καθάπερ γὰρ ἡ τοῦ Νῶε κιβωτὸς ἐν τῷ κοσμοπληθεῖ κατακλυσμῷ κοσμοφοροῦσα καρτε-

ρῶς ὑπέμεινε τοὺς κλύδωνας· οὕτω καὶ σὺ ἡ νομοφύλαξ πανταχόθεν τῷ τῶν παθῶν περιαντλουμένη κατακλυσμῷ, καὶ καρτεροῖς ἀνέμοις, τῶν υἱῶν βασάνοις, συνεχομένη, γενναίως ὑπέμεινας τὸν ὑπὲρ τῆς εὐσεβείας χειμῶνα.

16. *Εἰ δὲ τοίνυν καὶ γυνὴ, καὶ γηραιὰ, καὶ ἑπτὰ παίδων μήτηρ, ὑπέμεινεν ὁρῶσα τὰς μέχρι θανάτου τῶν τέκνων βασάνους· ὁμολογουμένως αὐτοκράτωρ ἐστὶ τῶν παθῶν ὁ εὐσεβὴς λογισμός. Ἀπέδειξα οὖν, ὅτι οὐ μόνον ἄνδρες τῶν παθῶν ἐκράτησαν, ἀλλὰ καὶ γυνὴ τῶν μεγίστων βασάνων ὑπερεφρόνησε. Καὶ οὐχ οὕτως οἱ περὶ τὸν Δανιὴλ λέοντες ἦσαν ἄγριοι, οὐδὲ ἡ μετὰ τὸν Μισαὴλ ἐκφλεγομένη κάμινος λαβροτάτῳ πυρὶ, ὡς ἡ τῆς φιλοτεκνίας περιέκαιεν ἐκείνην φύσις, ὁρῶσαν αὐτοὺς οὕτω ποικίλως βασανιζομένους τοὺς ἑπτὰ υἱούς. Ἀλλὰ τῷ λογισμῷ τῆς εὐσεβείας κατέσβεσε τὰ τοσαῦτα καὶ τηλικαῦτα πάθη ἡ μήτηρ. Καὶ γὰρ τοῦτο ἐστὶν ἐπιλογίσασθαι, ὅτι, δειλόψυχος εἰ ἦν ἡ γυνὴ, καίπερ μήτηρ οὖσα ὠλοφύρατο ἂν ἐπ᾽ αὐτοῖς. Καὶ ἴσως ταῦτα ἂν οὕτως εἶπεν· "Ὦ μελέα ἔγωγε καὶ πολλάκις τριςαθλία, ἥτις ἑπτὰ παῖδας τεκοῦσα, οὐδενὸς μήτηρ γεγένημαι! Ὦ μάταιοι ἑπτὰ κυοφορίαι, καὶ ἀνόνητοι ἑπτὰ δεκάμηνοι, καὶ ἄκαρποι τιθηνίαι, καὶ ταλαίπωροι γαλακτοτροφίαι! Μάτην ἐφ᾽ ὑμῖν, ὦ παῖδες, πολλὰς ὑπέμεινα ὀδύνας, καὶ χαλεπωτέρας φροντίδας ἀνατροφῆς. Ὦ τῶν ἐμῶν παίδων οἱ μὲν ἄγαμοι, οἱ δὲ γήμαντες ἀνόνητοι! Οὐκ ὄψομαι ὑμῶν τέκνα, οὐδὲ μάμμη κληθεῖσα μακαρισθήσομαι. Ὦ ἡ πολύπαις καὶ καλλίπαις ἐγὼ γυνὴ χήρα καὶ μόνη πολύθρηνος! Οὐδὲ, ἂν ἀποθάνω, θάψοντα τῶν υἱῶν ἕξω τινά." Ἀλλὰ τούτῳ τῷ θρήνῳ οὐδένα ὠλοφύρατο ἡ ἱερὰ καὶ εὐσεβὴς μήτηρ, οὐδ᾽ ἵνα μὴ ἀποθάνωσιν, ἀπέτρεπεν αὐτῶν τινα, ὡς οὐδὲ ἀποθνησκόντων ἐλυπήθη. Ἀλλ᾽ ὥςπερ ἀδαμάντινον ἔχουσα τὸν νοῦν, καὶ εἰς ἀθανασίαν ἀνακτίζουσα τὸν τῶν*

υἱῶν ἀριθμὸν, μᾶλλον ὑπὲρ τῆς εὐσεβείας ἐπὶ τὸν θάνατον αὐτοὺς προετρέπετο ἱκετεύουσα. Ὦ μήτηρ δι' εὐσέβειαν θεοῦ στρατιῶτι πρεσβῦτι! Καὶ γυνὴ διὰ καρτερίαν καὶ τύραννον ἐνίκησας, καὶ ἔργοις εὑρέθης ἀνδρὸς καὶ λόγοις δυνατωτέρα. Καὶ γὰρ, ὅτε συνελήφθης μετὰ τῶν παίδων, εἱστήκεις τὸν Ἐλεάζαρον ὁρῶσα βασανιζόμενον καὶ ἔλεγες τοῖς παισὶ τῇ Ἑβραΐδι διαλέκτῳ· „Ὦ παῖδες, γενναῖος ὁ ἀγών· ἐφ' ὃν κληθέντες ὑπὲρ τῆς διαμαρτυρίας τοῦ ἔθνους,
518 ἐναγωνίσασθε προθύμως ὑπὲρ τοῦ πατρῴου νόμου. Καὶ γὰρ αἰσχρὸν, τὸν μὲν γέροντα τοῦτον ὑπομένειν τὰς διὰ τὴν εὐσέβειαν ἀλγηδόνας, ὑμᾶς δὲ, τοὺς νεανίσκους, καταπλαγῆναι τὰς βασάνους. Ἀναμνήσθητε, ὅτι διὰ τὸν θεὸν τοῦ κόσμου μετελάβετε καὶ τοῦ βίου ἀπελαύσατε. Καὶ διὰ τοῦτο ὀφείλετε πάντα πόνον ὑπομεῖναι διὰ τὸν θεόν· δι' ὃν καὶ ὁ πατὴρ ἡμῶν Ἀβραὰμ ἔσπευδε τὸν ἐθνοπάτορα υἱὸν σφαγιάσαι Ἰσαὰκ, καὶ τὴν πατρῴαν χεῖρα ξιφηφόρον καταφερομένην ἐπ' αὐτὸν ὁρῶν ὁ Ἰσαὰκ, οὐκ ἔπτηξε. Καὶ Δανιὴλ ὁ δίκαιος εἰς λέοντας ἐβλήθη· καὶ Ἀνανίας καὶ Ἀζαρίας καὶ Μισαὴλ εἰς κάμινον πυρὸς ἀπεσφενδονίσθησαν, καὶ ὑπέμειναν διὰ τὸν θεόν. Καὶ ὑμεῖς οὖν τὴν αὐτὴν πίστιν εἰς τὸν θεὸν ἔχοντες, μὴ χαλεπαίνετε. Ἀλόγιστον γὰρ τοὺς εἰδότας εὐσέβειαν μὴ ἀντισταθῆναι τοῖς πόνοις." Διὰ τούτων τῶν λόγων ἡ ἑπταμήτωρ ἕνα ἕκαστον τῶν υἱῶν παρακαλοῦσα ἀποθανεῖν ἔπεισε μᾶλλον, ἢ παραβῆναι τὴν ἐντολὴν τοῦ θεοῦ· ἐπειδὴ καὶ ταῦτα εἰδότες, ὅτι οἱ διὰ τὸν θεὸν ἀποθνήσκοντες ζῶσι τῷ θεῷ, ὥσπερ Ἀβραὰμ, Ἰσαὰκ καὶ Ἰακὼβ, καὶ πάντες οἱ πατριάρχαι.

17. Ἔλεγον δὲ καὶ τῶν δορυφόρων τινὲς, ὡς, ὅτε ἔμελλε συλλαμβάνεσθαι καὶ αὐτὴ πρὸς θάνατον, ἵνα μὴ ψαύσειέ τις τοῦ σώματος αὐτῆς, ἑαυτὴν ἔρριψε κατὰ τῆς πυρᾶς. Ὦ μήτηρ σὺν ἑπτὰ παισὶ καταλύσασα τὴν τοῦ τυράννου βίαν καὶ ἀκυρώσασα τὰς κακὰς ἐπινοίας αὐτοῦ, καὶ δείξασα τὴν τῆς πί-

ὅτεως γενναιότητα! Καθάπερ γὰρ στέγη ἐπὶ τοῖς στύλοις, οὕτω καὶ σὺ ἐπὶ παισὶ γενναίως ἱδρυμένη ἀκλινὴς ὑπήνεγκας τὸν διὰ τῶν βασάνων σεισμόν. Θάῤῥει τοιγαροῦν, ὦ μήτηρ ἱερόψυχε, τὴν ἐλπίδα τῆς ὑπομονῆς ἔχουσα βεβαίαν πρὸς τὸν Θεόν. Οὐχ οὕτω σελήνη κατ' οὐρανὸν σὺν ἄστροις σεμνὴ καθέστηκεν, ὡς σὺ τοὺς ἰσαστέρους ἑπτὰ παῖδας φωταγωγήσασα πρὸς τὴν εὐσέβειαν ἔντιμος καθέστηκας τῷ Θεῷ, καὶ ἐστήριξαι ἐν οὐρανῷ σὺν αὐτοῖς· ἦν γὰρ ἡ παιδοποιΐα σου ἀπὸ Ἀβραὰμ τοῦ πατρός. Εἰ δὲ ἐξὸν ἡμῖν ὥσπερ ἐπί τινος πίνακος ζωγραφῆσαι τὴν τῆς εὐσεβείας ἱστορίαν, οὐκ ἂν ἔφριττον οἱ θεωροῦντες μητέρα ἑπτὰ τέκνων δι' εὐσέβειαν ποικίλας βασάνους μέχρι θανάτου γινομένας ὑπομένουσαν; Καὶ γὰρ ἄξιον ἦν ἐπὶ τοῦ αὐτοῦ τοῦ τάφου ἀναγράψαι καὶ ταῦτα τοῖς ἀπὸ τοῦ ἔθνους εἰς μνείαν, λεγόμενα· ΕΝΤΑΥΘΑ Ο ΙΕΡΟΣ ΓΕΡΩΝ ΚΑΙ ΕΠΤΑ ΠΑΙΔΕΣ ΕΓΚΕΚΗΔΕΥΤΑΙ ΔΙΑ ΤΥΡΑΝΝΟΥ ΒΙΑΝ ΤΗΝ ΕΒΡΑΙΩΝ ΠΟΛΙΤΕΙΑΝ ΚΑΤΑΛΥΣΑΙ ΘΕΛΟΝΤΟΣ. ΟΙ ΚΑΙ ΕΞΕΔΙΚΗΣΑΝ ΤΟ ΕΘΝΟΣ ΕΙΣ ΤΟΝ ΘΕΟΝ ΑΦΟΡΩΝΤΕΣ, ΚΑΙ ΜΕΧΡΙ ΘΑΝΑΤΟΥ ΤΑΣ ΒΑΣΑΝΟΥΣ ΥΠΟΜΕΙΝΑΝΤΕΣ. Ἀληθῶς γὰρ 519
ὁ ἀγὼν θεῖος ὁ δι' αὐτῶν γεγενημένος. Ἠθλοθέτει γὰρ τότε ἀρετὴ δι' ὑπομονῆς δοκιμάζουσα· τὸ νῖκος ἀφθαρσία ἐν ζωῇ πολυχρονίῳ. Ἐλεάζαρος δὲ προηγωνίζετο· ἡ δὲ μήτηρ τῶν ἑπτὰ παίδων ἐνήθλει· οἱ δὲ ἀδελφοὶ ἠγωνίζοντο, ὁ τύραννος ἀντεγωνίζετο· ὁ δὲ κόσμος καὶ ὁ τῶν ἀνθρώπων βίος ἐθεώρει. Θεοσέβεια δὲ ἐνίκα, τοὺς ἑαυτῆς ἀθλητὰς στεφανοῦσα. Τίνες οὐκ ἐθαύμασαν τοὺς τῆς θείας νομοθεσίας ἀθλητάς; Τίνες οὐκ ἐξεπλάγησαν; Αὐτός γέ τοι ὁ τύραννος καὶ ὅλον τὸ συμβούλιον αὐτῶν ἐξεθαύμασαν αὐτῶν τὴν ὑπομονήν. Δι' ἣν καὶ τῷ θείῳ νῦν παρεστήκασι θρόνῳ, καὶ μακάριον αἰῶνα βιοῦσι. Καὶ γάρ φησιν ὁ Μωϋσῆς, "Καὶ πάντες

οἱ ἡγιασμένοι ὑπὸ τὰς χεῖράς σου." *Καὶ οὗτοι οὖν οἱ ἁγιασθέντες διὰ θεὸν τετίμηνται· οὐ μόνον ταύτῃ τῇ τιμῇ, ἀλλὰ καὶ τῷ δι᾽ αὐτοὺς τοῦ ἔθνους ἡμῶν τοὺς πολεμίους μὴ ἐπικρατῆσαι, καὶ τὸν τύραννον τιμωρηθῆναι, καὶ τὴν πατρίδα καθαρισθῆναι, ὥσπερ ἀντίψυχον γεγονότας τῆς τοῦ ἔθνους ἁμαρτίας. Καὶ διὰ τοῦ αἵματος τῶν εὐσεβῶν ἐκείνων καὶ τοῦ ἱλαστηρίου τοῦ θανάτου αὐτῶν ἡ θεία πρόνοια τὸν Ἰσραὴλ προκακωθέντα διέσωσε. Πρὸς γὰρ τὴν ἀνδρείαν αὐτῶν τῆς ἀρετῆς τὴν ἐπὶ ταῖς βασάνοις αὐτῶν ὑπομονὴν ὁ τύραννος ἀπιδὼν, ἀνεκήρυξεν ὁ Ἀντίοχος τοῖς στρατιώταις αὐτοῦ εἰς ὑπόδειγμα τὴν ἐκείνων ὑπομονήν. Ἔσχε τε αὐτοὺς γενναίους καὶ ἀνδρείους εἰς πεζομαχίαν καὶ πολιορκίαν· καὶ ἐκπορθήσας ἐνίκησε τοὺς πάντας πολεμίους. Ὦ τῶν Ἀβραμιαίων σπερμάτων ἀπόγονοι παῖδες Ἰσραηλῖται, πείθεσθε τῷ νόμῳ τούτῳ, καὶ πάντα τρόπον εὐσεβεῖτε, γινώσκοντες, ὅτι τῶν παθῶν δεσπότης ἐστὶν ὁ εὐσεβὴς λογισμὸς, καὶ οὐ μόνον τῶν ἔνδοθεν, ἀλλὰ καὶ τῶν ἔξωθεν πόνων.*

18. *Ἀνθ᾽ ὧν διὰ τὴν εὐσέβειαν προϊέμενοι τὰ σώματα τοῖς πόνοις ἐκεῖνοι, οὐ μόνον ὑπὸ τῶν ἀνθρώπων ἐθαυμάσθησαν, ἀλλὰ καὶ θείας μερίδος κατηξιώθησαν, καὶ δι᾽ αὐτοὺς εἰρήνευσε τὸ ἔθνος, καὶ τὴν εὐνομίαν τὴν ἐπὶ τῆς πατρίδος ἀνανεωσάμενοι, ἐξεπολιόρκησαν τοὺς πολεμίους. Καὶ ὁ τύραννος Ἀντίοχος καὶ ἐπὶ γῆς τετιμώρηται, καὶ ἀποθανὼν κολάζεται. Ὡς γὰρ οὐδὲν οὐδαμῶς ἴσχυσεν ἀναγκάσαι τοὺς Ἱεροσολυμίτας ἀλλοφυλῆσαι, καὶ τῶν πατρίων ἐθῶν ἐκδιαιτηθῆναι, τότε ἀπάρας ἀπὸ τῶν Ἱεροσολύμων ἐστράτευσεν ἐπὶ Πέρσας. Ἔλεγε δὲ ἡ μήτηρ τῶν ἑπτὰ παίδων καὶ ταῦτα ἡ δικαία τοῖς τέκνοις, ὅτι "Ἐγὼ ἐγενήθην παρθένος ἁγνὴ, οὐδὲ ὑπερέβην πατρικὸν οἶκον, ἐφύλασσον δὲ τὴν ᾠκοδομημένην πλευράν. Οὐ διέφθειρέ με λυμεὼν ἐρημίας φθορεὺς ἐν πεδίῳ· οὐδ᾽ ἐλυμήνατό μου τὰ ἁγνὰ τῆς παρθε-*

νίας λυμεὼν ἀπατηλὸς ὄφις. Ἔμεινα δὲ χρόνον ἀκμῆς σὺν ἀνδρί· τούτων δὲ ἐνηλίκων γενομένων, ἐτελεύτησεν ὁ πατὴρ, μακαρίως μὲν, τὸν γὰρ τῆς εὐτεκνίας βίον ἐπιζήσας, τὸν τῆς ἀτεκνίας οὐκ ὠδυνήθη καιρόν. Ὅς ἐδίδασκεν ἡμᾶς, ἔτι ὢν σὺν ἡμῖν, τὸν νόμον καὶ τοὺς προφήτας. Τὸν ἀναιρεθέντα Ἀβὲλ ὑπὸ τοῦ Κάϊν ἀνεγίνωσκεν ἡμῖν, καὶ τὸν ὁλοκαυτούμενον Ἰσαὰκ, τὸν ἐν φυλακῇ Ἰωσήφ. Ἔλεγε δὲ ἡμῖν τὸν ζηλωτὴν Φινεές. Ἐδίδασκε δὲ ἡμᾶς τοὺς ἐν πυρὶ Ἀνανίαν καὶ Ἀζαρίαν καὶ Μισαήλ. Ἐδόξασε δὲ καὶ τὸν ἐν λάκκῳ λεόντων Δανιὴλ, ὃν ἐμακάριζεν. Ὑπεμίμνησκε δὲ ἡμᾶς τὴν Ἡσαΐου γραφὴν, τὴν λέγουσαν· "Καὶ ἐὰν διὰ πυρὸς διέλθῃς, φλὸξ οὐ κατακαύσει σε." Τὸν ὑμνῳδογράφον ἐμελῴδει ἡμῖν Δαυΐδ, λέγοντα· "Πολλαὶ αἱ θλίψεις τῶν δικαίων, καὶ ἐκ πασῶν αὐτῶν ῥύσεται αὐτοὺς ὁ κύριος." Τὸν Σολομῶντα ἐπαροιμίαζεν ἡμῖν λέγοντα· "Ξύλον ζωῆς ἐστι πᾶσι τοῖς ποιοῦσιν αὐτοῦ τὸ θέλημα." Τὸν Ἰεζεκιὴλ ἐπιστοποιεῖτο λέγοντα· "Εἰ ζήσεται τὰ ὀστᾶ τὰ ξηρὰ ταῦτα;" Ὠιδὴν μὲν, ἣν ἐδίδαξε Μωϋσῆς, οὐκ ἐπελάθετο, διδάσκουσαν καὶ λέγουσαν· "Ἐγὼ ἀποκτενῶ καὶ ζῆν ποιήσω, αὕτη ἡ ζωὴ ὑμῶν καὶ ἡ μακρότης ἡμερῶν."" Ὢ πικρᾶς τῆς τότε ἡμέρας, καὶ οὐ πικρᾶς, ὅτε ὁ πικρὸς Ἑλλήνων τύραννος πῦρ φλέξας λέβησιν ὠμοῖς καὶ ζέουσι θυμοῖς ἀγαγὼν ἐπὶ τὸ καταπέλτην καὶ πάσας τὰς βασάνους αὐτοῦ ἐπὶ τοὺς ἑπτὰ παῖδας τῆς Ἀβρααμίτιδος, καὶ τὰς τῶν ὀμμάτων κόρας ἐπήρωσε, καὶ γλώσσας ἐξέτεμε, καὶ βασάνοις ποικίλαις ἀπέκτεινεν! Ὑπὲρ ὧν ἡ θεία δίκη μετῆλθε καὶ μετελεύσεται τὸν ἀλάστορα. Οἱ δὲ Ἀβραμιαῖοι παῖδες, σὺν τῇ ἀθλοφόρῳ μητρὶ, εἰς πατέρων χορὸν συναγελάζονται, ψυχὰς ἁγνὰς καὶ ἀθανάτους ἀπειληφότες παρὰ τοῦ θεοῦ· ᾧ ἡ δόξα εἰς τοὺς αἰῶνας τῶν αἰώνων. Ἀμήν.